

PĀIA-SADDA-MAHANNAVO

A COMPREHENSIVE PRAKRIT HINDI DICTIONARY

with Sanskrit equivalents, quotations

AND

complete references

BY

PANDIT HARGOVIND DAS T SHETH

Nyaya Vyakarana-tirtha Lecturer in Sanskrit, Prakrit and Gujrati

Calcutta University Author of "Haribhadrasuri Charitra

Late Editor of Yashovijaya Jaina Granthamala ,

Jaina Vividha Sahitya Shastra

mala etc etc.

GENERAL EDITORS

Dr V S AGRAWALA

Banaras Hindu University

PL DALSUKH BHAI MALVANIA

Lalbhai Dalpatbhai Vidya Bhavan Ahmedabad

PRAKRIT TEXT SOCIETY

V A R A N A S I - 5

SECOND EDITION

1963

{ १ }
Published by
DALSUKH MALVANIA :
Secretary
PRAKRIT TEXT SOCIETY
VARANASI-5

SECOND EDITION—1963
ALL RIGHTS RESERVED

Students Edition Rs. 20/-
Library Edition Rs. 30/-

Available from —

- 1 NOTILAL BANARASI DASS, NEPALI KHAPRA POST BOX 75 VARANASI
2. CHOWKHAMBA VIDYABHAVAN CHOWK, VARANASI
- 3 GURJAR GRANTHARATNA KARYALAYA GANDHI ROAD AHMEDABAD-1
- 4 SARASWATI PUSTAK BHANDAR RATANPOLE, HATHIKHANA AHMEDABAD-1

Printed at
THE TARA PRINTING WORKS
VARANASI

पाइअ-सद्-महणणवो

(प्राकृत-शब्द-महार्णव)

श्रीमान फतेसालबी धीबन्दजी गोमेछ
जयपुर वारों की ओर से भेंट ॥

अर्थात्

विविध प्राकृत भाषाओं के शब्दों का संस्कृत प्रतिशब्दों से युक्त,
हिन्दी अर्थों से अलंकृत, प्राचीन ग्रन्थों के अनन्य अवतरणों
और परिपूर्ण प्रमाणों से विभूषित शृङ्खले

कर्ता—

गुर्जरदेशान्तर्गत-राधनपुर-नगर-वास्तव्य कच्छकला-विश्वविद्यालय के संस्कृत
प्राकृत और गुजराती भाषा के अध्यापक “हरिमद्रसुरिचरित” के कर्ता
“यशोविरजय-वैत-सत्यमाता” और “वैत-विश्व-साहित्य
शास्त्रमाता” के भूतपूर्व संपादक स्याय-स्वाकरण-दीर्घ

स्व० पंडित हरगोविन्ददास त्रिकमचंद सेठ

संपादक

डा० वासुदेव शरण अग्रवाल

प्राध्यापक, काशी विश्वविद्यालय

प० दत्तसुख भाई मालवणिया

संचालक, साक्षरभाई दत्तपतभाई विद्याभवन, अहमदाबाद-१

प्रकाशिका

प्राकृत ग्रन्थ परिपद,

धाराणसी-८

प्रकारक

वल्लभुस मालवणिया

सम्प्री प्राकृत टेक्स्ट सोसायटी

धारापसी-५

द्वितीय संस्करण—१९६३

सर्व स्वत्व संरक्षित

मूल्य—आचारण संस्करण २०)

पुस्तकालय संस्करण ३०)

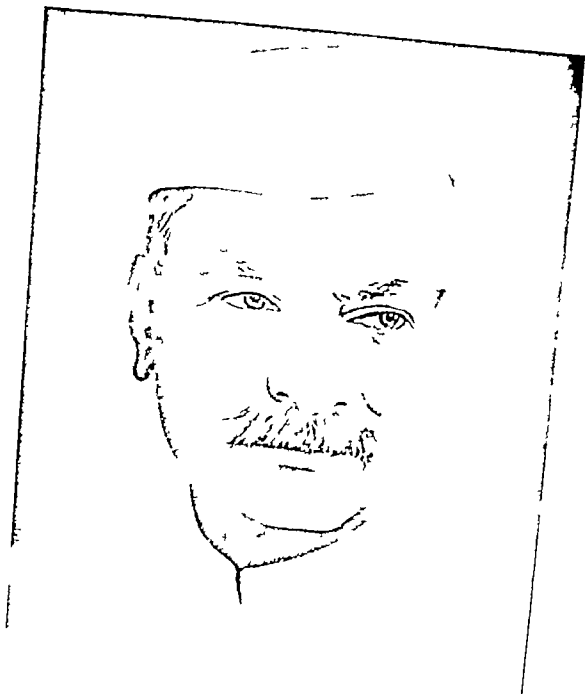
प्राप्ति स्थान

- १ मोदीनास बनारसीदास मेगधी बनडा पोस्ट बाकस ५५, धारापसी ।
- २ श्रीरामा विद्या मदन श्रीक धारापसी ।
- ३ पुनर द्रव्य रत्न कामसिधायि श्री मार्ग बहुमदाबाद-१
- ४ धारापसी पुस्तक भंडार, रामचेल हाथीबाग, बहुमदाबाद-१

मुद्रक

वाप प्रिंटिंग प्रकर्स,

कमलध धारापसी-१



डॉ० राजेन्द्रप्रसाद जी

श्री प्राचार्य बिरबलप्रसाद शर्मा मण्डार, जयपुर

समर्पण

प्राकृत भाषा का यह महाकोश

स्वतन्त्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति तथा प्राकृत-ग्रन्थ-परिपद (प्रा०टे०सो०) के
संस्थापक एवं प्रधान संरक्षक, भारतीय संस्कृति के अनन्य अद्भुत देशरत्न

स्व० डॉ० श्रीराजेन्द्र प्रसाद जी

को सादर समर्पित है,

जिनकी अध्यक्षता में इस कोश के पुनः मुद्रण का निश्चय किया
गया और जिनके करकमलों से इसका प्रकाशन समारोह
सम्पन्न होना प्रस्तावित था, किन्तु दैवेच्छ से २८

फरवरी १९६३ को जिनका स्वर्गवास हो जाने
के कारण अब परिपद की ओर से यह

अद्यावधि रूप में समर्पित किया
जा रहा है ।

—प्राकृत ग्रन्थ परिपद के सदस्य

प्रकाशककी ओरसे

प्रस्तुत महान् कोपके कर्ता स्व प श्री हरगोविंददास त्रिकमचन्द सेठका जन्म राधनपुर (गुजरात) में जैन कुटुम्बमे वि स १९४५ में हुआ था। बनारसमें आचार्यश्री विजयधर्मसूरि द्वारा स्थापित श्री यशोविजय जैन पाठशाला में संस्कृत और प्राकृतभाषाका अध्ययन तथा सिलोनमें जाकर पालिभाषाका अध्ययन उन्होंने किया था। कलकत्तेकी न्याय-व्याकरणतीर्थ परीक्षा उत्तीर्ण करके कलकत्ता युनिवर्सिटीमें संस्कृत, प्राकृत और गुजरातीके अध्यापक नियुक्त हुए थे। उन्होंने यशोविजय जैन ग्रन्थमालामें संस्कृत-प्राकृतभाषाके कई ग्रन्थोंका संपादन कौशलसे किया है। प्रस्तुत 'पाइय-सद्-महणव'-प्राकृत शब्दमहार्णव कोपकी रचना उन्होंने बिना किसीकी सहायताके अकेले ही की थी और उसका प्रकाशन भी स्वयं ही किया था। उनका निधन वि स १९९७ में हुआ। उनकी सम्पत्तिका कुल अधिकार उनकी धर्मपत्नी सुशीला आ सुमद्रावहनको प्राप्त हुआ है।

श्री पं हरगोविंददासके संसारपक्षके छोटेभाई सुनिराज श्री विशालविजयजी तथा भावू आदि कई जैन तीर्थोंके इतिहास ग्रन्थोंके लेखक स्व सुनिराज श्री जयंत विजयजी एवं श्रीयशोविजय जैन ग्रन्थमालाके मंत्री श्री भगवचन्द गाधीकी प्रेरणासे और अपनी उदारतासे श्री सुमद्रावहनने प्रस्तुत ग्रन्थकी कौपीराइट मावनगरस्थित यशोविजय जैन ग्रन्थमालाको समर्पित कर दिया है। श्री सुमद्रावहनकी ही प्रेरणासे श्री यशोविजय जैन ग्रन्थमालाकी कार्यकारिणी समिति और मानाह मंत्री श्री बालाभाई वीरचंद देसाईने प्राकृत टेक्स्ट सोसायटीको प्रस्तुत द्वितीय आवृत्तिके प्रकाशनकी अनुमति दी है। मैं यहाँ श्री सुमद्रावहन तथा ग्रन्थमालाका आभार मानता हूँ।

प्रस्तुत कोपमे संमिलित करनेके लिये पू. सुनिराज श्री पुण्यविजयजीने कुछ शब्दोंकी सूची दी थी, जो इसमें यथास्थान दिये गये हैं। इस उदारताके लिये मैं यहाँ उनका आभार मानता हूँ। प्रस्तुत कोपके मुद्रणका कार्य अस्वस्थ होते हुए भी जिस तत्परता से डॉ॰ वासुदेवशरण अग्रवाल ने करवाया है उसके लिये मैं उनका विशेषतः कृतज्ञ हूँ।

their literary value has to be assessed specially from the point of view of new words and meanings incorporated in them. The interpretation of the texts already known when the first edition of the Dictionary was compiled has also progressed and the technical meanings of many words have been recovered. They need to be incorporated in a revised edition or in a new presentation of word material of the Prākṛit language as recorded in its literature. The problem is no doubt vast requiring stout organisation and finances but the work has to be done. The Govt. of India, various Universities Prākṛit Institutes and the All-India Oriental Conference should put their heads together for evolving a scheme for the accomplishment of this task viz the preparation of an up-to-date dictionary on scientific principles of the Prākṛit and Apabhraṃśa literatures which have contributed so much to the Middle Indo-Aryan languages and which truly hold the key to the problem of etymology and semantics relating to the many literary dialects of the medieval and modern period.

It is gratifying that a rich literature of such magnitude as that of Prākṛit has been preserved as our heritage and it is high time when we should wake up to our responsibility. The Prākṛit Text Society is keenly alive to this need but it has already committed itself to the publication of the critical texts of the Āgamas and their commentaries and therefore its resources for some years cannot be diverted to the needs however urgent they may be, of a fresh dictionary of Prākṛit language as envisaged above.

I cannot close this short statement without making a special appeal to those friends who are engaged on an intensive study of the difficult texts of Old-Hindi Old Gujarati etc. They should cultivate the habit of going to the Prākṛit and Apabhraṃśa sources for recovering the meanings of the obscure vocabulary used in those texts which were written at a time when Prākṛit and Apabhraṃśa words found a predominant place in the linguistic consciousness of the people. I would give a few examples —

1. "पद्मो वल्ल पद्म पर वीर" (Padmāvat 149 4) The crux of the meaning of the simple line like this lies in the word *para* meaning to turn as *वर्तमान* of Skt. *dhrama* (पर = वर्तमान, Hemchandra, 4 16 Pāṇḍa)—the earth and the sky both are turning like a mill.

2. "नारद नाथ वीर इति वीर । पद्मे वल्ल पद्म पर वीर" (1) This is one of the most difficult lines of the Padmāvat and it had never been correctly understood by any previous translator. The secret of the meaning lies in the word *पर* (wrongly translated previously as 'bends') which as recorded in the Pāṇḍa, denoted a naval merchant. The meaning is that to take a sea faring merchant in the midst of the ocean and there to kill him is a mean thing, said Sarja (the Chief of Alauddin). The meaning of this word is recorded in the Pāṇḍa with only one reference to Haribhadra Suri (8th century), but I thought that its usage in the Padmāvat in the 16th century must be evident in the literature of the intervening period. My search proved fruitful and I found it in the Bhavisyata Kāvī of Dhanaṇḍa (दीनानन्द) (दीनानन्द काव्य) (वर्तमान इति वीर) (वर्तमान इति वीर) Bhavisyata Kāvī, 831 1 Baroda edition p. 52—then the sea merchants met together and began to discuss joyfully their problems of sale and purchase. The word has also been used in the Apabhraṃśa poem Paum-charita-नागर पद्मे वल्ल पद्म पर वीर (Paum-charita 317 L. Singhi Jain Granthamālā). On an inscription from Anbilavada dated VS 1349 its Skt. form *Nan-vittaka* has been used (Indian Antiquary 1912 p. 21) and

Muni Chandra in his commentary on Haribhadra's Upadeś-pada record a नैमित्तिक as the Skt. form of *Nayatta*. This accumulation of evidence is the proper field of a dictionary and it is of value to show how our correct understanding of the old-texts may benefit from utilising the Prakrit and Apabhraṃśa sources. I should like to reinforce this point by drawing attention to some other words from the Avahatṭa text, Kirtitattva of which in the recently published Sanjivani commentary* much valuable assistance from the Pāṣa-sadda-mahāṅgavo has been taken. To take another pointed example :

- १५ ६ उवह = समोप बाधा है। ६ क्त + ह > प्रा उवे उवि = पास बाधा। उवेह उवह (पासह)।
- १६ माव = मनुष्य करना जानना। ६० मान् > प्रा माव (पासह)।
- १७ साह्व = ६ साव = वर में करना > प्रा साह > बव साह्व (पासह)।
- १८ क्यपरि = ६ प्रा + क्त् + रि (= धाक्यमय करना बहाना) का बालादेश क्य क्यपरि = आक्रमण करके (पासह)।
- १९ सम्यो = ६० सम् + क्यम् = धर्म्य करना स्या > प्रा सम्य > बप सम्य सपयो (पासह)।
- २० वेष्ट्रम = ६ पूय् (> पूर करना) का बालादेश वेष्ट्र वेष्ट्रह (पासह)। प्रकृत में वेष्ट्र वातु के चार अर्थ हैं—१ ६ विप् का बालादेश वेष्ट्र = फेंकना। २ ६ मेर्य का बालादेश वेष्ट्र = प्रेरित करना। ३ ६ वीर्य का बालादेश वेष्ट्र = दबाना। ४ ६ पूर्य का बालादेश वेष्ट्र = पूर करना मरना।
- २१ मूर = ६ मूठ > प्रा मूठ > मय मूर = मुड़कना मोटना (पासह)।
- २२ रिक् = ६ रिक् > प्रा बप रिक्क = चीन्हा प्रसन्न होना रिक्कह (पासह)।
- २३ छाह्व = छुवर। ६ छाया (= कानि शोभा) > प्रा छाया (पासह)।
- २४ विक्परि = विदुरे हुए। ६ विस्तु > प्रा० विस्वर = फैलाना बड़ाना (पासह)।
- २५ बारे = मर्षित बरिष्ठ, धरमन्दी रोक्काम जाने। ६ रत्तम् > प्रा बरुह (पासह) > बरु > बाव > बार + ब = बाय बारे।
- २६ विवासिक = निवट गया चुक गया। ६ मुक् (= मुकना चुकना) का प्रा बालादेश विक्क (पासह)।
- २७ क्यपरि ६ काम् का बालादेश क्य = आक्रमण करना बहाना (पासह)।
- २८ उवि ६ धा = डा का प्रा बालादेश उव्हा हुनुम स्या बालेष्ट करना करना। उव्हा (पासह)।
- २९ पड् = ६ प्रकट्य का बालादेश पन (पासह) ६ प्य का भी धप में पड बालादेश होता है (= पड़ना गिरना)।
- ३० मवासि = ६ डा वातु का बालादेश एवा, धवाय = पहचानना (पासह)।
- ३१ बरमजिब = मरिष्ट, क्षुमिष्ट। ६ मर्य्य का बालादेश प्रा बप बरमज = चुर्ल करना रक्तना मरम (पासह)।
- ३२ क्त = प्रा धक् (६ विप् का बालादेश) = फेंकना डालना बालना (पासह)।
- ३३ बोलप = ६ वीर्यम वातु का बालादेश प्रा बोव = कर्त्तव्य करना धोना। बोलह, बोलप (पासह)।
- ३४ मून = बायोमन खीर। ६ ठक् 'जायोक्' का प्रा बालादेश मून (पासह)।
- ३५ छाव ६ राव का बालादेश धन = शीमना रोमिष्ट करना (हे ४१)।
- ३६ मोव = ६ मय का बालादेश मोव = बसना समन करना (पासह)।
- ३७ कर्कडा = पण्डे हुए। प्रा कर्कड = पड़ना उधारण करना, ६ डप् का बालादेश कर्कड = पड़ना उधारण करना (हे ४१) ३७ मोवपु में 'कण्ठ कम्पना कण्ठो' बर्णित गीत उधारण करो बयो उक्क कहा जाता है।
- ३८ पाव = ६ ठक् का प्राड्य बालादेश पाव = लकना समर्थ होना (हे ४८)।
- ३९ वेष्ट्रपर्व = ६ पूर्य का प्रा बालादेश वेष्ट्र = पूरना मरना (पासह)।
- ४० पंडव = ६ विष्णु का बालादेश प्रा बप पंडव = विष्णव।
- ४१ उलय = ६ तप् का बालादेश तलय = उलाना, बर्न होना (पासह)।
- ४२ पयमह = कर्तुनी लया। ६ प्रमय का बालादेश पयप = कड़ना बीतना। पयपय पयवह (पासह)।
- ४३ पावे = बोह वर सहाय कसकट, बध को कनय से उन्मिष्ट करके। ६० संतप्य का बालादेश पवकट (पासह)।
- ४४ वैर = ६ वृक् का बालादेश प्रा वयप = मित्र वेष्ट्र = धोना त्यागना।
- ४५ वैव = वएह = बहारे की कुली। ६ विपव का बालादेश विव वेव > वैव = टुक सहाय (पासह)।

"नरकस्य नरकस्य दोम बजो ह्यस्य वस्य वस्य कार्त्तव्ये ॥" (Kīrtīlata 2.190 Sanjivani edition) In this line all seven words excepting the first depend on their meaning on a good Prākṛit dictionary e. g.

नरकस्य—यं नरकस्यसि—या वस्यस्य, वस्यस्य, वस्यस्य—वस्यस्य नरकस्य—वस्यस्य king of hell;

दोम—to cause pain from Sanskrit root *g*—Prākṛit: वस्यस्येण ह्यम (Iambhadrā 1.23)

बजो—Skt. वज्र—Prākṛit बजो;

ह्यस्य—hastily, in quick succession; desya Prākṛit ह्यस्य (Desināma-māla, 8.59, See Prāsāda).

Such a seemingly simple word cannot be understood without the help of Prākṛit. In Hindi it means a hand, but its Prākṛit meaning was also as shown above, and that alone suits the context.

वस्य—an Avahatja form of Arabic *hadās* signifying *hazrat* or showing the spirits.

वस—shows; from Skt. वसि—Prākṛit वस्य—Avahatja वस

कार्त्तव्ये—spirits living in hell, from Skt. कार्त्तव्य—Prākṛit कार्त्तव्य (Prāsāda)

The line thus means—the Makhadīm (religious priest) like the king of hell was frightening the people when quickly he was showing the spirits by performing *hadās*. This is an example which brings home how the problem of understanding the Middle Indo-Aryan literature is closely connected with our understanding of the Prākṛit and Apabhraṃśa literature. For this purpose the Pīṭa-Sadda-Mahābhāṣya Dictionary will prove of inestimable help. With this hope it is now being offered in a second edition which the Prākṛit Text Society is making available in an accessible form.

The editors wish to record their grateful thanks to Shri Kapil Deva Giri Sahityacharya, Asst. Research Scholar P. T. S. and Pt. Madhucharya, Parkatirttha Vimanāśāhārī who have put in their best efforts in correcting the proofs of the work with praise worthy devotion.

24-8-1968.

VASUDEVA S. AGRAWALA

Professor

BANARAS HINDU UNIVERSITY

सकेत—सूची

प्र	=	प्रत्यय ।
प्रक	=	प्रक्रमक वातु ।
(प्रान)	=	प्रान्न रा मया ।
(प्रष्टे)	=	प्रष्टोक शिवासेव ।
प्रय	=	प्रक्रमक तथा प्रक्रमक वातु ।
क्रम	=	क्रमणि-वाच्य ।
कवकु	=	कर्मणि-वर्तमान-कृतम् ।
क	=	कृत्य-प्रत्ययात् ।
कि	=	क्रियात् ।
किमि	=	क्रिया विरोधण ।
कु	=	कुत्र-प्रत्यय ।
(कृषि)	=	कृषिकारिणी मया ।
मि	=	मिसिद्ध ।
[रे]	=	रेय-प्रत्यय ।
म	=	मनुष्यमिद्ध ।
मु	=	मुसिद्ध ।
मुन	=	मुसिद्ध तथा मनुष्यमिद्ध ।
मुनी	=	मुसिद्ध तथा मीसिद्ध ।

(पि)	=	पैशाची मया ।
प्रयो	=	प्रेरणार्थक शिवात् ।
ब	=	बहुवचन ।
मकु	=	मकृत्य-प्रत्यय ।
ममि	=	मकृत्य-प्रत्यय ।
मुस	=	मुस-प्रत्यय ।
मुक	=	मुक-प्रत्यय ।
(मा)	=	मायची मया ।
वह	=	वर्तमान कृतम् ।
वि	=	विरोधण ।
(रौ)	=	रौरवेणी मया ।
ख	=	खर्चाम ।
खकु	=	खर्चक कृतम् ।
खक	=	खर्चक वातु ।
मी	=	मीसिद्ध ।
मीन	=	मीसिद्ध तथा मनुष्यमिद्ध ।
है	=	है-प्रत्यय ।

प्रमाण-ग्रन्थों [रेफरेन्सेज] के संकेता का विवरण

[illegible][illegible]

+ इन संस्कारों में पुनर्जन्म सम्पन्न होकर ब्रह्म के बहुत समान होने पर भी सुखों के बहुत विभिन्न हैं। इसी दृष्टि को ध्यान में रखकर वे भी स्वयं लिख गया है कहीं ना सुधख्ख भवो पर विना मया है। भोक्ता भी किसी जगह और न य सम्पन्न के प्रथम रूप से प्राप्त हो गई है।

† एडोब कीमुत कैरुवावावाई त्रैमयन्त बीवी, बी. ए. एम्. एम्., बी. वे प्रात

संकेत	ग्रन्थ का नाम	संस्करण धारि	वित्तक की किय कर है वह
भाष	= भाषाव्याकरण	राय बालाभाई कुरुमाई, पद्मदाशर, संवत् १८६२	गाथा
भाषा	= भाषाव्याधार	मानिकचंद-विश्वरूप-वीर-दशमासा संवत् १८७१	"
भाष	= भाषाव्यक्रम	हस्तलिखित	"
भाषादि	= भाषाव्यक टिप्पण	देवचन्द सासमाई	"
भाषादी	= भाषाव्यक दीपिका	विजयदासपुरी दशमासा (हस्तिल टीका)	"
भाषाव्या	= भाषाव्यक्रम पत्रे गाथा	हस्तलिखित	"
भाषाव	= भाषाव्यक्रम मस्यपरि टीका	भीमसिंह माणिक, बम्बई, संवत् १८१८	गाथा
हिरि	= हिरिपारायणपठक	० डॉ. डबल्यु. किरकेल-कृष्ण साहयसि १८२	"
हृद	= हि कोलोपाथी रेड् डियर	१ राय बलराजसिंह बहादुर, बलकृष्ण, संवत् १८१६ अम्यपन, गाथा २ स्व-संपादित बलकृष्ण १८११	"
उत्त	= उत्तराध्यायन	+ १ हस्तलिखित	"
उत्त	= उत्तराध्यायन सूत्र	देवचन्द सासमाई	"
उत्त का	= "	डी जे कार्पेसियर-संपादित १८२१	"
उत्तमि	= उत्तराध्यायनसिद्धि	हस्तलिखित	"
उत्तर	= उत्तराध्यायन	निर्णयवापर प्रेस, बम्बई, १८१२	पुच्छ
उत्त	= उत्तराध्याय	हस्तलिखित	गाथा
उत्त दी	= उत्तराध्याय-टीका	हस्तलिखित	मूल-गाथा
उत्तप	= उत्तराध्याय-टीका	† "	गाथा
उत्त पु	= उत्तराध्याय	श्रीन विद्या-प्रचारक बर्गे पासीतल्ला	पुच्छ
उत्त	= उत्तराध्यायनाकर	देवचन्द सासमाई पुस्तकालयकार फंड बम्बई, १८१४	पेरा तरंग
उत्त	= उत्तराध्याय	० डॉ. एल्. वी. टैबोरी-संपादित १८११	"
उत्त	= उत्तराध्याय	† हस्तलिखित	गाथा
उत्त	= उत्तराध्याय	मनमोहनसाई भगुमाई, पद्मदाशर संवत् १८१७	"
उत्त	= उत्तराध्याय	० एडिथार्ड घोसाट्टी ईश्वर कृष्णकृष्ण, १८८२	"
उत्त	= उत्तराध्याय	विश्वरूप संस्कृत-विपीय	पुच्छ
उत्त	= उत्तराध्याय	माधमोदक समिति बम्बई, १८१८	गाथा
उत्त	= उत्तराध्याय	"	"
उत्त	= उत्तराध्याय	० डॉ. ड. भुजेश-संपादित साहयसि, १८८३	"
उत्त	= उत्तराध्याय	० डॉ. एल्. जेम्स-संपादित साहयसि, १८७८	"
उत्त	= उत्तराध्याय	० हाबर्ट ओरिएन्टल विपीय, १८०१	"
उत्त	= उत्तराध्याय	० धारवाज-कै-मुस्तक-प्रचारक पण्डित पापरा १८१८	गाथा
उत्त	= उत्तराध्याय	० " "	"
उत्त	= उत्तराध्याय	० " "	१८१८ "
उत्त	= उत्तराध्याय	० " "	१८११ "

+ मुद्राव्यापक प्रकाश-कृष्ण टीका से विमुक्ति पर उत्तराध्यायन मूल की हस्त-लिखित प्रति धारणी भोजन-वैयर्थ्य-वैयर्थ्य के संसार से भोजन पीपुल के से, भीटी हाथ माल्य हई से हस्त मति के पत्र १८११ है।

† एडिथार्ड घोसाट्टी के से भीटी हाथ माल्य।

अक्षर	इस का नाम	संस्करण आदि	वित्त के बीच निर ण्ड है वह
गुरु	= गुरुमन्त्रिणाभुक्तक	धर्मशास्त्र गोपबर्णदास बम्बई, १९६१	गाथा
गीत	= गीतमनुक्तक	मीमंसिह्वा माणिक बम्बई, संवत् १९६२	---
गत	= गतसंस्तुतपदी	१ कैल बर्मे प्रद्वारक-बन्दा भारतपुर, संवत् १९६१	---
		२ हा बालामाई कमलमाई ग्रन्थमहाबाह, संवत् १९६२	---
कड	= कडपलमहापुरिसचरित	प्राहल-कप-परिवद, बारमण्डी—२ १९६१	---
कंड	= प्राहलचरण	● पक्षिपटिक सोसायामटी बंगाल कलकत्ता १८८	---
कंद	= कंदपमति	हस्तलिखित	पाहुड
कार	= कारक	निवेश-संस्तुत-सिटीय	पुठ
केदर	= केदरबाहुनहाभास	कैल बालामन्त्र सभा, भारतपुर, संवत् १९६२	गाथा
केय	= केयबन्धन ग्रन्थ	मीमंसिह्वा माणिक बम्बई, संवत् १९६२	---
क	= ककुडीप्रसक्ति	१ केयबन्धन बालमाई पुठ बम्बई, १९६१	--- बालकदार
		२ हस्तलिखित	---
कय	= कयसिंहमण-स्तीय	कैल प्रभाकर प्रिंटिंग प्रेस, रत्ननाथ प्रभाकपुरि	गाथा
जिन	= जिनसत्तास्थान	सिटी कैल सिटीय	---
जो	= जोबविचार	बालामन्त्र कैल-मुस्तक-प्रचारक-मन्त्र बापरा संवत् १९७८	---
जीत	= जीतधन्य	हस्तलिखित	---
जीव	= जीवजोबाभिमन्त्र	केयबन्धन बालमाई मुस्तकोदार पुठ बम्बई, १९६१	प्रतिपति
जीवज	= जीवजमासप्रकरण	† हस्तलिखित	गाथा
जीवा	= जीवजुतासमनुक्तक	धर्मशास्त्र गोपबर्णदास बम्बई, १९६१	---
जो	= ज्योतिष्कण्डक	हस्तलिखित	---
टि	= + टिप्पण (पाठान्तर)	---	---
टी	= † टीका	---	---
ख	= छाण्डोग्य (स्वर्णवृक्ष)	बापमोक्ष-समिति बम्बई, १९६१-१९७०	---
खि	= खिसिपुत्र	१ हस्तलिखित	---
		२ बापमोक्ष समिति बम्बई, १९२४	---
खमि	= खमिज्ज-स्वरण	स्व-संपादित कलकत्ता संवत् १९७८	गाथा
खामा	= खामाभ्यन्तकामुष्ट	बापमोक्ष समिति बम्बई, १९६१	---
खु	= खुबबेवालिदयप्रो	१ हस्तलिखित	---
		२ कैल मुस्तकोदार पुठ बम्बई, १९६२	पत्र
खि	= खिज्ज-स्वरण	कैल-स्व-प्रचारक-मन्त्र बम्बई, १९६१	गाथा
खिज	= खिज्ज-स्वरण	हस्तलिखित	---
खी	= खीबन्धन	हस्तलिखित	---
खि	= खिज्ज-स्वरण (प्रिन्ट)	गायकनाथ प्रिण्टिंग सिटीय नै १९६८	पुठ

† पञ्चमं स्त्रीपुत्रं के प्रे मोरी हाथ प्राप्त ।

+ पाठान्तर बाले संस्करणों के बी पाठान्तर हैं उपरोक्त माधुम के जे जम्हें नी इत कीय में स्थाप किया है बीर प्रमाण के पास रि' शब्द जोड़ दिया है जिससे उन शब्द को सही स्थान के स्थान का समझना चाहिए ।

* जहाँ पर प्रमाण में द्रव-अक्षर बीर स्थापन-निर्देश के अन्तर 'टी' शब्द लिखा है वहाँ जहाँ द्रव के सही स्थान की टीका के प्राहलवांत् से मेलन है ।

हस्त	ग्रन्थ का नाम	संस्करण यादि	जिसके अंग किए गए हैं वह
नव	= नवतत्त्वप्रकरण	१ व्यासभास्व-भैम-सभा भावनपर २ भास्व-भैम-भर्म प्रवर्तक-सभा, बह्वनबाबा १२ ६	गाथा "
माट	= † मल्लिकार्जुनप्रकरणसूची		
मिष्ट	= मिष्टीपञ्चमि	हस्तलिखित	उद्देश
मिर	= मिरमावलीसूत्र	१ हस्तलिखित २ भायमोक्ष-समिति सम्पादित १२ २२	भर्म, भास्व "
मिष्टा	= मिष्टाविद्यामुद्रमक	† हस्तलिखित	गाथा
मिष्टी	= मिष्टीविद्युत	हस्तलिखित	उद्देश
पदम	= पदमचरित्र	भैम-भर्म प्रसारक-सभा भावनपर, प्रथमावृत्ति	पद पाठा
पद्म	= पद्मचरित्र	प्राकृत-संस्कृत-संस्कृत भाषाछन्दो-२	"
पंच	= पंचसंग्रह	१ हस्तलिखित २ भैम व्यासभास्व सभा भावनपर, १२ १२	ब्राह्म, पाथा
पंचमा	= पंचकण्ठभाष्य	हस्तलिखित	
पंचम	= पंचमस्तु	"	ब्राह्म
पञ्चा	= पञ्चाक्षरप्रकरण	भैम-भर्म-प्रसारक सभा भावनपर, प्रथमावृत्ति	पञ्चाक्षर
पञ्च	= पञ्चकण्ठवृत्ति	हस्तलिखित	"
पंक्ति	= पंक्तिप्रवर्तकप्रकरण	व्यासभास्व-भैम सभा भावनपर, संस्करण १२ ७४	पाथा
पद्य	= पद्यराज	विशेष संस्कृत-सिरीज	पद्य
पद्य	= पद्यसूत्र	हस्तलिखित	सूत्र

† सेंट्रल लाइब्रेरी बङ्गोरा में स्थित एक मुद्राग्रह-हीन पुस्तक से प्रकृत जिसके पूर्व भाग में कमवीरवर का प्राकृत व्याकरण और उत्तर भाग में 'प्राकृतप्रवर्तक' टीपिक से कतिपय श्रवणों से लदित प्राकृत शब्दों की एक छोटी सी सूची दी हुई है। इस सूची में उन श्रवणों के जो उचित नाम और प्रकाश किए गये हैं वे ही नाम तथा प्रकाश श्रवणों के लिये प्रस्तुत कोष में भी व्यासभास्व 'माट' के बार लगे गये हैं। कुछ पुस्तक में उन श्रवणों के संक्षिप्त नामों तथा संस्करणों का विवरण इस तरह है,—

मासली	for	मासलीभाष्य	Calcutta Edition of 1830
मैत्र	"	मैत्रभाष्यटीका	" 1854
मिक्त	"	मिक्तनीर्यटी	" 1880
समिष्ट	"	समिष्टवर्ण	Edition of Asiatic Society
उत्तर	"	उत्तरपदमवर्ण	Calcutta Edition of 1881
उत्तर	"	उत्तराक्षरी	" 1882
मुष्क	"	मुष्कप्रतिक	" 1882
प्राय	"	प्राकृतप्रकरण	Mr Cowell's Edition of 1854
राहु	"	राहुतन्त्रा	Calcutta Edition of 1810
मानवि	"	मानविकानिनिध	Tulberg's Edition of 1860
वैशि	"	वैशिचङ्कार	Muktaram's Edition of 1886
पाथ	"	संक्षिप्तपाथस्य प्राकृतव्यासः	
महात्मी	"	महात्मीरचण्डिर	Trithen's Edition of 1848
विम	"	विमल	M.

उचित	ग्रन्थ का नाम	संस्करण आदि	बिछके धंक स्थ पर हैं वह	
मणि	=	मनिसतकहा	● १ बा. एच्. जेकोबी-संपादित १९१५ ● २ गायकबाड़ योरिएण्टल सिटीज १९२३	
माक	=	माकबुलक	बंभाल गोबर्धनदास बम्बई, १९११	पाया
मयस	=	मापारहस्य	छेठ मनमुक्कमाई मधुमाई मद्रासबाद	"
मंगल	=	मंगलकुरुक	† हस्तलिखित	"
मध्य	=	मध्यमव्यायोग	विषय-सङ्कट-सिरीज	---
मन	=	मनोनिधनुमावना	† हस्तलिखित	उठ
महा	=	मातस्येभ्यामले एरस्यानुबम् हन् महापत्नी	छे बां एच्. जेकोबी-संपादित लाहौरजिय १८५६	गाथा
महानि	=	महानिरोधसूत्र	हस्तलिखित	ग्रन्थयन
मा	=	मामबिद्धमिनिब	मिर्णसागर प्रेस बम्बई १९१२	उठ
माल	=	मालतीमाचक	" "	"
मुण्डि	=	मुनिमुपलम्बामिचरित	हस्तलिखित	"
मुद्रा	=	मुद्रापाठस	बम्बई-संस्कृत-सिरीज १९१३	ग्रन्थ
मुच्छ	=	मुच्छकटिक	१ मिर्णसागर प्रेस बम्बई, १९१६ २ बम्बई-संस्कृत-सिरीज १८९६	उठ
मे	=	मैल्लिकम्पारा	याणिकबन्ध-विषय-बैन-ग्रन्थमाला बम्बई १९७१	"
मोह	=	मोहदावचनय	गायकबाड़ योरिएण्टल सिटीज भां ९ १९१८	"
मथि	=	मथिदिशायंवाणिषा	† हस्तलिखित	---
रंभा	=	रंभाभरती	● मिर्णसागर प्रेस बम्बई, १८ ९	पाया
रल	=	रलप्रमदुलक	† हस्तलिखित	"
रमण	=	रमणसेहर्षनकहा	स्व-संपादित बनारस १९१८	पाया
रात्र	=	रात्रिचलपत्रेन्द्र	● बैन-प्रभाकर प्रिन्टिग प्रेस, रतनाम	उठ
राय	=	रायपसेसुमुत	१ हस्तलिखित २ भागमोक्ष-समिति बम्बई, १९२३	
रुचि	=	रुचिखली-हृदय (ईशानुय)	गायकबाड़ योरिएण्टल सिटीज भां ५ १९१५	पत्र
लकु	=	लकुसंघर्षली	मीमसिङ्ग मालोक बम्बई, १९ ८	उठ
लहुप	=	लहुपबिठलानि त्यण्ण	स्व-संपादित कलकत्ता, लवण १९७५	पाया
लीर	=	लीरप्रक्रम	देवचन्द लालबाई	"
बला	=	बलातप	एथिपेटिक घोसाइटी बंभाल कलकत्ता	
बन	=	बनहारपूत्र लमप्य	१ हस्तलिखित	उठ
बपु	=	बपुदेवहिरी	१ मुनि मालोक संपादित भावनगर, १९२६ १ हस्तलिखित	उठ
बा	=	बापुष्टकाम्यनुशासन	२ भागमानन्द सभा	
बाध	=	बापुष्टकालकार	मिर्णसागर प्रेस बम्बई, १९१२	उठ
बि	=	बिचनलामोरदेण्डुलक	" १९१६ † हस्तलिखित	---

[illegible]

प्रथम संस्करण में लेखक का निवेदन

कोई भी भाषा के ज्ञात के लिए उक्त भाषा का व्याकरण और कोश प्रथम साधन है। प्राकृत भाषा के प्राचीन व्याकरण धनेक हैं, जिनमें सबसे बड़ा प्राकृतसमुद्रा वररुचि का प्राकृतप्रद्योत, हेमाचार्य का मित्रहोम (षष्ठ पद्याव) मार्कण्डेय का प्राकृतसर्वस्य और जम्माधर की पहमापापमित्ररथ ग्रन्थ हैं। और सर्वाधीन प्राकृत व्याकरणों की संख्या बहुत होने पर भी उनमें बनेंसी के सुप्रसिद्ध प्राकृत-विशाल डॉ. पिराल का प्राकृतव्याकरण सर्वश्रेष्ठ है जो पठितरिक्त और सुतनात्मक है। परन्तु प्राकृत-कोष के विषय में यह बात नहीं है। प्राकृत के प्राचीन कोशों में पद्याति पर्यन्त केवल दो ही कोष उत्तम हैं—पश्चिम घनपाल-कृत पाण्ड्यलक्ष्मणानामाला और हेमाचार्य की प्रणीत देवरीनामाला। इनमें पहमा पठितरिक्त—जो भी ये भी कम पद्यों में ही समाप्त और कुछ केवल शैव शब्दों का कोष है। इनके विना अन्य कोई भी प्राकृत का कोष न होनेसे प्राकृत के द्वारा पद्याती को पद्यने पद्याय में बहुत समुचित होती थी और मुझे भी इनसे प्राकृत-शब्दों के पद्युत्पत्ति-काल में इस प्रकार का कुछ अनुभव हुआ करता था। इनसे पद्य से करीब पद्यरु सत्य पहले पुण्याव प्राप्त स्मरणीय पुनर्य शास्त्र-विशाल हेमाचार्य को १८ वीं विजययमसूरीचरत्री महाराज की प्रेरणा से प्राकृत का एक बसुद्ध कोष बनाने का मेरे विचार किया था।

हरी घरे में श्री राजेन्द्र सरिजा का अभिधान राजेन्द्र नामक कोष का प्रथम भाग प्रकाशित हुआ और यही दो वर्ष हुए अन्तका प्रतिष्ठान भाग को बाहर हो गया है। बड़ी बड़ी मात्रा जिल्लों में यह कोष समाप्त हुआ है। इस संशुद्ध कोष का मूल्य २६) रुपये हैं और परिधम और अन्त्य-परिभाषा में अधिक नहीं कहे जा सकत। यद्यपि इस कोष की विस्तृत प्राप्ति करना करने की न तो यहाँ कम्बु है न आशयकता ही तथापि यह नही बिना नहीं रहा जा सकता कि इसकी तत्प्राप्ति में इसके कर्ता और उसके सहकारियों को सम्मुख और परिधम करना पड़ा है और प्रकाशन में भी ऐतद्गोचर रूप को भारी बत-व्यय। परन्तु लेख के साथ कहुना पड़ता है कि इसमें कर्ता की सकलता की ध्येयता निष्कलता ही अधिक निमी है और प्रकाशक के जनका समर्थ्य ही विशेष हुआ है। सकलता न मिलने का कारण भी स्पष्ट है। इस ग्रन्थ को जोड़े और से देखने पर यह सहज ही सामान्य होता है कि इसके कर्ता की न तो प्राज्ञता भाषाधी की न प्रतिज्ञा ज्ञान का और न प्राज्ञत-रूप-ही के निर्माण की उद्यमों प्रवृत्त दम्प्य। किन्तु भी बल-रक्षण और उद्योग के नियमों में यत्ने पाठ्यक्रम-व्यापार को भूल। इसी दृष्टि से यद्यपि परिधम को योग्य विद्या में से आनेवालों विवेक-बुद्धि की भी आवश्यक दिया है। यही कारण है कि इस कोष का निर्माण केवल पत्र-हस्त से ही कम प्राज्ञत और पुस्तकों के ही जिनमें धर्म-मायधी के दर्शन-विषयक ग्रंथों को बहुलता है आचार पर किया गया है और प्राज्ञत की ही हस्त सुवन छात्राधी के तथा विभिन्न विषयों के अनेक और तथा वैदिक ग्रंथों में एक का भी उद्योग नहीं किया गया है। इसके यह कोष व्यापक न होकर प्राज्ञत तथा एक-द्वैतीय कोष हुआ है। इसके विना प्राज्ञत तथा संस्कृत ग्रंथों के विस्तृत ग्रंथों को और नहीं-नहीं तो छोड़े-छोड़े संशुद्ध ग्रन्थ को ही प्रवृत्त के रूप में उत्पन्न करने के कारण वृत्त-व्यय में बहुत बड़ा होने पर भी ग्रन्थ-व्यय में कम ही नहीं अधिक आचार-भूत ग्रंथों में प्राप्त हुए कई उपबुद्ध ग्रन्थों को छोड़ देने से और किन्तु-गोचर-हीन अधिधीय व्यापकिक ग्रंथों की मर्यादी से आचारिक ग्रन्थ-व्यय में यह कोष प्रविष्ट न ही है। अतः कोष नहीं इन कोष में आचार पुस्तकों की प्रवृत्त-व्यय की और प्रेष की तो धर्म-संस्कृतियों हैं ही प्राज्ञत तथा प्रवृत्त का प्रवृत्त रचनेवालों भूलों की भी नहीं है। और सबसे बड़ा कारण यह कोष में यह है कि पाठ्य-व्यय अनेक-अनेक-व्यय अथवा रचना-व्यय-व्यय आदि केवल संस्कृत के और जैन-व्यय-व्यय

- [illegible]

एक वेद भाषा प्राचीन होने पर भी वह वैदिक युग में जन-साधारण की कथ्य भाषा न थी, ऋषि-जनों की साहित्य-भाषा थी। उस समय जन-साधारण में वैदिक भाषा के अनुरूप अनेक प्रादेशिक भाषाएँ (dialects) कथ्य रूप से प्रचलित थी। इन प्रादेशिक भाषाओं में से एक ने परिमार्जित होकर वैदिक साहित्य में स्थान पाया है। ऊपर वैदिक युग से पूर्व ऋग्वेद में आप ह्रस्व प्रथम दृढ़ के त्रिस भाषाओं के सम्मिश्रण के चारों तरफ के प्रदेशों में उपनवेशों का वस्तुस्थिति किया गया है उन्होंने वैदिक युग अथवा उसके पूर्व-ऋग्वेद में अपने अपने प्रदेशों की कथ्य भाषाओं में दूसरे दृढ़ के भाषों की वेश-रचना की वर्य, किसी साहित्य की रचना नहीं की थी। इससे उन प्रादेशिक भाषाओं का वास्तविक साहित्य में कोई निर्धारण न रहने से उनके प्राचीन रूपों का संपूर्ण खोप हो गया है। वैदिक ऋग्वेद की ओर इसके पूर्व की जन समस्त कथ्य भाषाओं को सर मियर्सन ने प्राथमिक प्राकृत (Primary Prākṛita) नाम दिया है। यही प्राकृत भाषा-समूह का प्रथम स्तर (1st stage) है। इसका समय क्रिस्त-पूर्व २०० से क्रिस्त-पूर्व ६०० तक का निर्दिष्ट किया गया है। प्रथम स्तर की ये समस्त प्राकृत भाषाएँ खर और व्यञ्जन आदि के सम्भारण में तथा विभक्तियों के प्रयोग में वैदिक भाषा के अनुरूप थी। इससे ये भाषाएँ विभक्ति-बहुल (synthetic) कही जाती हैं।

वैदिक युग में जो प्रादेशिक प्राकृत भाषाएँ कथ्य रूप से प्रचलित थी, उनमें परवर्ति-ऋग्वेद में अनेक परिवर्तन हुए जिनमें ऋग्वेद आदि स्वरों का शब्दों के अन्तिम व्यञ्जनों का, संयुक्त व्यञ्जनों का तथा विभक्ति और वचन-समूह का खोप या रूपान्तर मुख्य हैं। इन परिवर्तनों से ये कथ्य भाषाएँ प्रचुर परिमाण में रूपान्तरित हुईं। इस वर्य द्वितीय स्तर (second stage) की प्राकृत भाषाओं की उत्पत्ति हुई। द्वितीय स्तर की ये भाषाएँ जैन और बौद्ध धर्म के प्रचार के समय से अर्थात् क्रिस्त-पूर्व पाठ शताब्दी से लेकर क्रिस्तिय नवम आ दशम शताब्दी पर्यन्त प्रचलित रही। अगस्त्य महावीर और बुद्धदेव के समय ये समस्त प्रादेशिक प्राकृत भाषाएँ, अपने द्वितीय स्तर के आधार में, मिश्र-मिश्र प्रदेशों में कथ्य भाषा के वीर पर व्यपकृत होती थीं। उन्होंने अपने सिद्धान्तों का उपदेश इनकी कथ्य प्राकृत भाषाओं में से एक में दिया था। इतना ही नहीं, बल्कि बुद्धदेव ने अपना उपदेश संस्कृत भाषा में न लिखकर कथ्य प्राकृत भाषा में लिखने के छिय अपने शिष्यों को आदेश दिया था। इस वर्य प्राकृत भाषाओं का क्रमशः साहित्य की भाषाओं में परिवर्तन होने का सूत्रपात हुआ, जिसके फलस्वरूप परिचय मगध और वुरसेन देश के सम्भवर्ती प्रदेश में प्रचलित कथ्य भाषा से जैनो के धर्म-ग्रन्थों की अर्ध भाषा की और पूर्व मगध में प्रचलित लोक-भाषा से बौद्ध धर्म-ग्रन्थों की पाक्षी भाषा उत्पन्न हुई। पाक्षी भाषा के उत्पत्ति-स्थान के सम्भवर्ती में पादशास्य विद्वानों का जो मत है वह उसका विचार इस भागे का कर करेंगे। क्रिस्ताब्द से २५० वर्ष पहले सम्राट् अशोक ने बुद्धदेव के उपदेशों को मिश्र-मिश्र प्रदेशों में बर्हि-बर्हि की विभिन्न प्रादेशिक प्राकृत भाषाओं में सुवर्णित। इन अशोक शिलालेखों में द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं के उत्सर्गिक सब-श्रापीन निर्धारण संशुद्ध है। द्वितीय स्तर के मध्य भाग में—प्रायः क्रिस्तिय पंचम शताब्दी के पूर्व में मिश्र-मिश्र प्रदेशों की अपभ्रंश भाषाओं की उत्पत्ति हुई। इस स्तर की भाषाओं में बहुधा विभक्ति का, सब विभक्तियों के द्विवचनों का और आख्यात की अधिकतर विभक्तियों का खोप होने पर भी विभक्तियों का प्रयोग अधिक मात्रा में विद्यमान था। इससे इस स्तर की भाषाएँ भी विभक्ति-बहुल कही जाती हैं।

सर मियर्सन ने यह सिद्धान्त दिया है कि आधुनिक भारतीय भाषाओं की उत्पत्ति द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं से, आसकर उसके शेष भाग में प्रचलित विभिन्न अपभ्रंश भाषाओं से हुई है और आधुनिक भाषाओं को 'तृतीय प्राकृत भाषाओं का तृतीय स्तर' (Tertiary Prākṛita) कह कर निर्दिष्ट किया है। इन भाषाओं की उत्पत्ति का समय क्रिस्तिय दशम शताब्दी है। इनका साधारण अर्थ यह है कि इनमें अधिकतर विभक्तियों का खोप हुआ है, एवं भाषाओं की प्रकृति विभक्ति-बहुल न होकर विभक्तियों के बोधक स्वतन्त्र शब्दों का व्यवहार हुआ है। इससे ये पिरलपगरीक भाषाएँ (Analytical Languages) कही जाती हैं।

जिस प्रादेशिक अपभ्रंश से जिस आधुनिक भारतीय भाषा की उत्पत्ति हुई है उसका विवरण भाग 'अपभ्रंश' शीर्षक में दिया जायगा।

यदि मेरी आशुभावा हिन्दी नहीं है तबानि बड़े सम्मान आचार्य श्री-सामाजिक व्यवस्था की दृष्टि से बहुत-बहुत के योग्य होने के कारण यही कार्य के लिए विशेष उपयुक्त समझी गई है ।

अस्य में कार्य से मेरे मनमोहा तक की आहत भावनों के विविध-विधमक वैन एवं केन्दर प्राचीन वनों के (जिनकी मुख्य संख्या बाई बी के ली व्यास है) अतिरिक्त अन्य वानि है, अतः प्रविष्टियों से हिन्दी वनों के लम्बी धारणक व्यवस्था से और लंबूली वानियों के विरुद्ध इस वृत्त आहत-वोन में अनेक धारणक रखने पर जो जो कुछ मनुष्य-व्यवस्था-मनुष्य वृष्टि का मुझे हुई हो उनकी धारण के लिए विज्ञानों से लाभ प्राप्ति करता हुआ यह समझ रखता हूँ कि वे ऐसी वृष्टि के विषय में मुझे बताने करने ताकि विहीन-वृष्टि में उपयुक्त संशोधन का कार्य करना हो । जो विज्ञान मेरे धर्म-श्रमों की आचार्यिक वृष्टि से मनुष्य वने, मैं उनका विर-वृष्टि रखूँगा ।

जहाँ मेरी इस वृष्टि से आहत-वृष्टि के सम्मान में जोड़ी की वृष्टि वृष्टि की ही मैं अपने इस दो-का-व्यवस्था परिपक्व हो लाना समझूँगा ।

अथर्वना
ता १ १ ८ }

हरगोविन्द दास टि सेठ

प्रथम संस्करण का उपोद्घात

जो माया व्यवस्थानीय काल में इस देश के भार्य लोगों की कथ्य माया—बौद्धधर्म की माया—थी जिस माया में भगवान् महावीर और बुद्ध ने अपने पवित्र सिद्धान्तों का उपदेश दिया था, जिस माया को जैन और बौद्ध विद्वानों ने विविध-विषयक विपुल साहित्य की रचना कर अपनाई है, जिस माया में श्रेष्ठ धर्म-निर्माण द्वारा प्रचलित, हाथ आदि प्राकृत किये गये हैं ? महाकवियों ने अपनी अनुपम प्रतिभा का परिचय दिया है, जिस माया के मौखिक साहित्य के आधार

पर संस्कृत के अनेक उत्तम ग्रंथों की रचना हुई है संस्कृत के नाटक ग्रंथों में संस्कृत-भिन्न जिस माया का प्रयोग दृष्टिगोचर होता है, जिस माया में भारतवर्ष की वर्तमान समस्त भार्य भाषाओं की उत्पत्ति हुई है और जो भाषाएँ भारत के अनेक प्रदेशों में आजकल भी बोली जाती हैं उन सब भाषाओं का साधारण नाम है प्राकृत, क्योंकि ये सब भाषाएँ एकमात्र प्राकृत के ही विभिन्न रूपान्तर हैं जो समय और स्थान की भिन्नता के कारण उत्पन्न हुई हैं। इसीसे इन भाषाओं के व्यक्ति-वाचक नामों के आगे 'प्राकृत' शब्द का प्रयोग आवश्यक किया जाता है जैसे प्राथमिक प्राकृत भार्य या अर्धमागधी प्राकृत पाळी प्राकृत पेशावी प्राकृत, औरसेनी प्राकृत, महाराष्ट्री प्राकृत, अपभ्रंश प्राकृत, हिन्दी प्राकृत बंगला प्राकृत आदि।

भारतवर्ष की अशाचीन और प्राचीन भाषाएँ और उनका परम्पर सम्बन्ध

भाषातत्त्व के अनुसार भारतवर्ष की आधुनिक कथ्य भाषाएँ दन पौंच भागों में विभक्त की जा सकती हैं—(१) भार्य (Aryan) (२) द्राविड (Dravidian) (३) मुण्डा (Munda) (४) मन्-ख्मेर (Mon-Khmer) और (५) तिबेट-चीन (Tibeto-Chinese)।

भारत की वर्तमान भाषाओं में मराठी बँगला, आड़िया, बिहारी, हिन्दी, राजस्थानी, गुजराती, पंजाबी, सिन्धी और अरबीभाषी भाषा भार्य भाषा से उत्पन्न हुई हैं। पारसा तथा अग्नेजी अग्नेनी आदि अनेक आधुनिक युरोपीय भाषाओं की उत्पत्ति भी इसी भार्य भाषा से है। प्राचीन साहित्य को देखकर भाषा-तत्त्वज्ञानियों का यह अनुमान है कि इस समय विश्वभर और बहु-दूरवर्ती भारतीय भार्य-भाषा भाषा समस्त आधियों और एक युरोपीय भाषा भारी सङ्घटित आधियों एक ही भार्य-भाषा से उत्पन्न हुई हैं।

तैत्तिरीय, सामिख और महाभारत प्रभृति भाषाएँ द्राविड भाषा के सम्बन्ध में हैं; कोङ तथा सौपादी भाषा मुण्डा भाषा के सम्बन्ध में हैं, खासी भाषा मन्-ख्मेर भाषा का और मोटांगी तथा नागा भाषा तिबेट-चीन भाषा का निर्वरीन है। इन समस्त भाषाओं की उत्पत्ति किसी भार्य भाषा से सम्बन्ध नहीं रखती, अतएव ये सभी अग्नेनी भाषाएँ हैं। यद्यपि य अग्नेनी भाषाएँ भारत के ही दक्षिण, उत्तर और पूर्य भाग में बोल्य जाती हैं तथापि अग्नेनी आदि सुदूरवर्ती भाषाओं के साथ हिन्दी आदि भार्य भाषाओं का जो घनिष्ठ-तत्त्व एक उत्पन्न होता है इन अग्नेनी भाषाओं के साथ वह सम्बन्ध नहीं बना जाता है।

ये सब कथ्य भाषाएँ आजकल जिस रूप में प्रचलित हैं, पूर्वकाल में उसी रूप में न थी, क्योंकि कोङ की कथ्य भाषा कभी एक रूप में नहीं रहती। लम्प्य वस्तुओं की तरह इसका रूप भी सर्वदा बदलता ही रहता है—व्यय, अक्षर और व्यक्तिगत उच्चारण के मेङ से भाषा का परिवर्तन अनिवार्य होता है। यद्यपि यह परिवर्तन जो लोग भाषा का व्यवहार करते हैं उनके द्वारा ही होता है तथापि उस समय वह व्यय में नहीं आता। पूर्वकाल की भाषा के संरक्षित भाष्य के साथ तुलना करने पर कार्य में ही यह जाना जाता है। प्राचीन काल की जिन भारतीय भाषाओं के आदर्श संरक्षित हैं—जिन भाषाओं ने साहित्य में स्थान पाया है, उनके नाम ये हैं—पेरिक संस्कृत, ओङिक संस्कृत, पाळी, अरोगिक बिपि तथा उसके बाद की बिपि की भाषा और प्राकृत भाषा-समूह। इनमें प्रथम की दो भाषाएँ कभी अस साधारण की कथ्य भाषा न थी कथ्य लेख्य—साहित्यिक भाषा—ही थी। अक्षरित भाषाएँ कथ्य और लेख्य समय रूप में प्रचलित थी। इस

समय व समस्त भाषाएँ कथ्य रूप से स्पष्ट नहीं होतीं इसी कारण मृत भाषा (dead language) कहायी है। वल वैदिक आदि सब भाषाएँ आर्य भाषा के अन्तर्गत हैं और इन्हीं प्राचीन आर्य भाषाओं में से कई एक क्रमशः व्याप्त होकर आधुनिक समस्त आर्य भाषाएँ उत्पन्न हुई हैं।

ये प्राचीन आर्य भाषाएँ कौन युग में किस रूप में परिवर्तित होकर क्रमशः आधुनिक कथ्य भाषाओं में परिवर्तित हुईं इसका संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जाता है।

प्राचीन भारतीय आर्य भाषाओं का परिवर्तन-क्रम

सर जॉर्ज मिणलेन ने अपने लिङ्ग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया (Linguistic survey of India) नामक पुस्तक में भारतवर्षीय समस्त आर्य भाषाओं के परिणाम का जो क्रम दिखाया है उसका अनुसार वैदिक भाषा उच्च साहित्य-भाषाओं में सर्वे प्राचीन है। इसका समय अनक विद्वानों के मत में ख्रिस्ताब्द पूर्व सा हजार वर्ष (2000 B C) और जो संस्कृतमूलक के मत में ख्रिस्ताब्द-पूर्व सा हजार वर्ष (1200 B C) है। यह वेद-भाषा क्रमशः परिमार्जित होती हुई ब्राह्मण उपनिषद् और बाद के निरुक्त की भाषा में और बाद में पाणिनि-व्युत्पत्ति के व्याकरण-द्वारा निष्पन्न होकर औक्तिक संस्कृत में परिवर्तित हुई है। पाणिनि आदि के पद-व्युत्पत्ति के नियम-रूप संस्कारों को मान करके के कारण यह संस्कृत कहायी है। मुख्य रूप से 'संस्कृत' शब्द का प्रयोग इसी भाषा के कार्य में किया जाता है। यह संस्कृत भाषा वैदिक भाषा से उत्पन्न होने से उसके साथ घनिष्ठ सम्बन्ध रहने से वेद भाषा के कार्य में भी 'संस्कृत' शब्द बाद के समय से प्रयुक्त होने लगा गया है। पाणिनि के बाद संस्कृत भाषा का कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। यह परिवर्तन होने में—बड़ भाषा का औक्तिक संस्कृत के रूप में परिवर्तन होने में—प्रायः देहू हजार वर्ष लग हैं। पाणिनि का समय गोरखपुर के मत में ख्रिस्ताब्द-पूर्व सप्तम शताब्दी और बोमबेई के मत में ख्रिस्ताब्द-पूर्व चतुर्थ शताब्दी है।

यहाँ पर इस बात का इच्छेय करना आवश्यक है कि डॉ. हॉर्नेड और सर मिणलेन के मन्तव्य के अनुसार आर्य जातों के हाथ बल भिन्न-भिन्न समय में भारतवर्ष में आया था। पहले आर्यों के एक बल न यहाँ आकर मध्यदेश में अपने उपनिवेश की स्थापना की थी। इसके कई ही वर्षों के बाद आर्यों के दूसरे बल न भारत में प्रवेश कर प्रथम बल के वेद और वैदिक सम्प्रदाय आर्यों को मध्यदेश की जाते आर भगा कर इनके स्थान को अपने अधिकार में किया और मध्यदेश की अपनी शासनायता कायम किया। कुछ विद्वानों को यह मन्तव्य इसलिये करना पड़ा है कि मध्यदेश के जाते आर्यों में स्वयं पंचाज सिन्धु गुजरात राजपूताना महाराष्ट्र बयोधवा बिहार, बंगाल और उड़ीसा प्रदेशों की आधुनिक आर्य कथ्य भाषाओं में उत्तर जो निरुक्ता देखी जाती है तथा मध्यदेश की आधुनिक हिन्दी भाषा [पाश्चात्य हिन्दी] के साथ इन सब प्रांतों की भाषाओं में जो मूल भाषा आया है उस निरुक्ता और मूल का अर्थ कोई कारण दिखाना असम्भव है। मध्यदेशवासी उस दूसरे बल के आर्यों का उस समय का जो साहित्य और जो सम्प्रदाय की बली के क्रमशः नाम हैं वेद और वैदिक सम्प्रदाय।

1. आर्य लोगों के धार्मिक वाच-स्वभाव के विषय में आधुनिक विद्वानों में बहुत मत-भेद है। कोई लाटिनीयान को, कोई जर्मनी को और वील्हेलम को, कोई ईरपी को, कोई वील्हेलम एरिन्स को, कोई बल एरिन्स को आर्यों की धार्मिक विचार-धर्मि मानते हैं तो कोई-कौन पंचाज और वज्रवीर को ही इसका प्रथम वसति-स्थान मानते हैं। किन्तु अधिकतर विद्वान् प्रायः प्रायः के हाथ फेले-लेखों और ईरपी में एक बात देखे और एक ही बात देखी की कल्पना करते हैं। उनके मत में की विभिन्न होकर एक रूप प्राप्त में आती और अन्य रूप में अन्तर्निहित के बीच होकर आद्यवर्ष में प्रवेश और निवास किया। वलुन केन और मिन्सु राज्यों के अनुसार आद्यवर्ष ही विचारण वे आर्यों का धार्मिक विचार-स्थान है। कोई-कौन आधुनिक विद्वान् ने उत्तराल की दृष्टि को के आकार पर आद्यवर्ष से ही कुछ आर्य लोगों का ईरपी प्रायः देहू में कम और विस्तार-वाप स्थित किया है, विभिन्न बल राजनीति प्राचीन मत का लक्षण होता है।

उक्त बह-भाषा प्राचीन होने पर भी यह वैदिक युग में जन-साधारण की कथ्य भाषा न थी, ऋषि-योगों की साहित्य-भाषा थी। उस समय जन-साधारण में वैदिक भाषा के अनुरूप अनेक प्रादेशिक भाषाएँ (dialects) कथ्य रूप से प्रचलित थीं। इन प्रादेशिक भाषाओं में से एक ने परिमार्जित होकर वैदिक साहित्य में स्थान पाया है। ऊपर वैदिक युग से पूर्व काळ में आए हुए प्रथम काल के जिन भाषों के मध्यदेश के चारों तरफ के प्रदेशों में उपनवेशों की वस्तुस्थिति किया गया है उन्होंने वैदिक युग अथवा उसके पूर्व काळ में अपने अपने प्रदेशों की कथ्य भाषाओं में दूसरे काल के भाषों की वेद-रचना की तरह, किसी साहित्य की रचना नहीं की थी। इससे उन प्रादेशिक भाषाओं का वाक्प्राकृतिक साहित्य में कोई निर्वहण न रहने से उनके प्राचीन रूपों का संपूर्ण लोप हो गया है। वैदिक काल की और इसके पूर्व की उन समस्त कथ्य भाषाओं को सर प्रियर्सन ने प्राथमिक प्राकृत (Primary Prākṛit) नाम दिया है। यही प्राकृत भाषा-समूह का प्रथम स्तर (First stage) है। इसका समय ख्रिस्त-पूर्व २००० से ख्रिस्त-पूर्व ६०० तक का निर्दिष्ट किया गया है। प्रथम स्तर की ये समस्त प्राकृत भाषाएँ स्वर और व्यञ्जन आदि के उच्चारण में तथा विभक्तियों के प्रयोग में वैदिक भाषा के अनुरूप थीं। इससे ये भाषाएँ विभक्ति-बहुल (synthetic) कही जाती हैं।

वैदिक युग में जो प्रादेशिक प्राकृत भाषाएँ कथ्य रूप से प्रचलित थीं, उनमें परवर्ति-श्रद्ध में अनेक परिवर्तन हुए जिनमें का व आदि स्वरों का शब्दों के अन्तिम व्यञ्जनों का, संयुक्त व्यञ्जनों का तथा विभक्ति और वचन-समूह का लोप या रूपान्तर मुख्य है। इन परिवर्तनों से ये कथ्य भाषाएँ प्रचुर परिमाण में रूपान्तरित हुईं। इस तरह द्वितीय स्तर (second stage) की प्राकृत भाषाओं की उत्पत्ति हुई। द्वितीय स्तर की ये भाषाएँ तीन और चौथे चरण के प्रचार के समय से अर्थात् ख्रिस्त-पूर्व पाँच शताब्दी से लेकर ख्रिस्तीय नवम या दशम शताब्दी पर्यन्त प्रचलित रही। मगधात् महावीर और बुद्धदेव के समय ये समस्त प्रादेशिक प्राकृत भाषाएँ, अपने द्वितीय स्तर के आकर में, मिश्र-मिश्र प्रदेशों में कथ्य भाषा के तौर पर व्यवहृत होती थीं। उन्होंने अपने सिद्धान्तों का उपदेश नहीं कथ्य प्राकृत भाषाओं में से एक में दिया था। इतना ही नहीं, बल्कि बुद्धदेव ने अपना उपदेश संस्कृत भाषा में न लिखकर कथ्य प्राकृत भाषा में लिखने के लिए अपन शिष्यों को आदेश दिया था। इस तरह प्राकृत भाषाओं का क्रमशः साहित्य की भाषाओं में परिवर्तन होने का सूत्रपात हुआ, जिसके फलस्वरूप परिचय मगध और वृत्तेन देश के मध्यवर्ती प्रदेशों में प्रचलित कथ्य भाषा से जैनों के धर्म-मुत्तकों की अर्थ भाषा की और पूर्व मगध में प्रचलित लोक भाषा से बौद्ध धर्म-ग्रन्थों की प्राची भाषा उत्पन्न हुई। प्राची भाषा के उत्पत्ति-स्थान के सम्बन्ध में पादशास्त्र विद्वानों का जो मतभेद है उसका विचार हम आगे जा कर करेंगे। ख्रिस्ताब्द से २५० वर्ष पहले सम्राट् अशोक ने बुद्धदेव के उपदेशों को मिश्र-मिश्र प्रदेशों में पहली-बारी की विभिन्न प्रादेशिक प्राकृत भाषाओं में सुव्याप्य। इन अशोक सिमलेखों में द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं के असंविध्य सर्व-प्राचीन निर्वहण संरक्षित हैं। द्वितीय स्तर के मध्य भाग में—प्रायः ख्रिस्तीय पंचम शताब्दी के पूर्व में मिश्र-मिश्र प्रदेशों की अपभ्रंश भाषाओं की उत्पत्ति हुई। इस स्तर की भाषाओं में चतुर्थी विभक्ति का, सप्त विभक्तियों के द्विचरों का और आकाश की अधिकता विभक्तियों का लोप होने पर भी विभक्तियों का प्रयोग अधिक मात्रा में विद्यमान था। इससे इस स्तर की भाषाएँ भी विभक्ति-बहुल कही जाती हैं।

सर प्रियर्सन ने यह सिद्धान्त किया है कि आधुनिक भारतीय भाषाओं की उत्पत्ति द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं से, खासकर उसके मध्य भाग में प्रचलित विविध अपभ्रंश भाषाओं से हुई है और आधुनिक भाषाओं की तृतीय प्राकृत भाषाओं का तृतीय स्तर का आधुनिक भारतीय भाषाओं की उत्पत्ति का समय ख्रिस्तीय दशम शताब्दी है। इनका साधारण लक्षण यह है कि इनमें अधिकतर विभक्तियों का लोप हुआ है एवं भाषाओं की प्रकृति विभक्ति-बहुल न होकर विभक्तियों के बोधक स्थान पर का व्यापार हुआ है। इससे ये विरलेपणशील भाषाएँ (Analytical Languages) कही जाती हैं।

जिस प्रादेशिक अपभ्रंश से जिस आधुनिक भारतीय भाषा की उत्पत्ति हुई है उसका विवरण भाग 'अपभ्रंश' शीर्षक में दिया जाएगा।

‘तम्’ राज्य का सम्बन्ध संस्कृत से स्पष्ट है इस मत का अनुसरण किया है। कनिष्क प्राकृत-व्याकरणों में प्राकृत राज्य की व्युत्पत्ति इस तरह की गई है —

‘प्रकृति संस्कृतं तत्र सर्वं तत् वापत्तं वा प्राकृतम्’ (ह्रस्वतः प्रा० ध्या०) ।

‘प्रकृति संस्कृतं तत्र सर्वं प्राकृतवृत्त्यै’ (प्राकृतवर्त्तक) ।

‘प्रकृति संस्कृतं तत्र मन्वात् प्राकृतं स्पृष्टम्’ (प्राकृतवर्त्तिका) ।

‘प्रकृते संस्कृतावास्तु विहितं प्राकृती मता’ (पदभाषावर्त्तिका) ।

‘प्राकृत्य तु सर्वत्र संस्कृतं योगि’ (प्राकृतसंजीवनी) ।

इन व्युत्पत्तियों का तात्पर्य यह है कि प्राकृत राज्य ‘प्रकृति’ राज्य से बना है, ‘प्रकृति’ का अर्थ है संस्कृत भाषा, संस्कृत भाषा से जो उत्पन्न हुई है यह है प्राकृत भाषा ।

प्राकृत वैयाकरणों की प्राकृत राज्य की यह व्याख्या अप्रामाणिक और अव्यापक ही नहीं है, भाषा-तत्त्व से असंगत भी है। अप्रामाणिक इसलिए कही जा सकती है कि प्रकृति राज्य का मुख्य अर्थ संस्कृत भाषा कभी नहीं होता—संस्कृत का किसी क्षेत्र में प्राकृत राज्य का यह अर्थ उपलब्ध नहीं है। और गीता या व्याकरणिक अर्थ तथैव नहीं दिया जाता जबतक मुख्य अर्थ में वाच न हो। यहाँ प्रकृति राज्य का मुख्य अर्थ स्वभाव अथवा जन-साधारण जन में किसी तरह का भाषा भी नहीं है। इससे एक व्युत्पत्ति का स्थान में ‘प्रत्यय स्वभावेन विद्धं प्राकृतम्’ अथवा ‘प्रकृतीनां साधारणभाषाविद् प्राकृतम्’ यही व्युत्पत्ति संगत और प्रामाणिक हो सकती है। अव्यापक कहने का कारण यह है कि प्राकृत का पूर्णतः तान प्रकृते में तत्त्व और तत्त्व शब्दों की ही प्रकृति नहीं संस्कृत मानी है, वैसे प्रकृत का द्रव्य शब्दों का नहीं, अथवा द्रव्य का भी प्राकृत कहा है। इससे द्रव्य प्राकृत में वह व्युत्पत्ति व्यर्थ नहीं होती। प्राकृत का संस्कृत से उत्पन्न भाषा-तत्त्व का सिद्धान्त से भी संगति नहीं रखती, क्योंकि वैदिक संस्कृत और छोटिक संस्कृत ये दोनों ही साहित्य की माजिन भाषाएँ हैं। इन दोनों भाषाओं का व्यवहार शिक्षा की अवस्था रखता है। अशिक्षित अथ और बाधक लोग किसी कष्ट में साहित्य की भाषा का न तो स्वयं व्यवहार कर सकते हैं और न समझ ही पाते हैं। इसलिए समस्त जगत् में सर्वदा ही अशिक्षित लोगों के व्यवहार के लिए एक कठ्य भाषा बालू रखी है जो साहित्य की भाषा से स्वतंत्र—अलग होता है। विभिन्न जगत् की भी अशिक्षित लोगों के साथ वाचपीठ के प्रसंग में इस कठ्य भाषा का ही व्यवहार करना पड़ता है। वैदिक समय में भी ऐसी कठ्य भाषा प्रचलित थी। और जिस समय छोटिक संस्कृत भाषा प्रचलित हुई उस समय भी साधारण लोगों की स्वतन्त्र कठ्य भाषा विद्यमान थी यह भाषा कदापि न संस्कृत भाषा का साथ प्राकृत भाषा पात्रों का उत्कृष्ट से प्रमाणित होता है।

प्राग्निने संस्कृत भाषा को जो छोटिक भाषा कही है और पञ्चमन्त्रिने इसका जो शिष्ट-भाषा का नाम दिया है, उसका मतलब यह नहीं है कि उस समय प्राकृत भाषा थी ही नहीं, परन्तु उसका अर्थ यह है कि उस समय के शिष्ट लोगो के आपस के वार्तालाप में, वर्तमान काय के परिदृष्ट लोगों में संस्कृत की वृद्ध और मिश्रदेशीय लोगों के साथ के व्यवहार Lingua Franca की भाँति संस्कृत भाषा व्यवहृत होती थी। किन्तु बाधक, विचर्यों और अशिक्षित लोग अपनी मातृ भाषा में बातचीत करते थे जो संस्कृत जिन्हें साधारण कठ्य भाषा थी। साधारण कठ्य भाषा किसी जगत् में किसी कष्ट में साहित्य की भाषा से गूढ़ीव नहीं होती, बल्कि साहित्य-भाषा ही जन-साधारण की कठ्य भाषा से उत्पन्न होती है। इसलिए ‘संस्कृत से प्राकृत भाषा की उत्पत्ति हुई है’ इसकी अवस्था ‘क्या तो वैदिक संस्कृत और क्या छोटिक संस्कृत दोनों ही उस समय की प्राप्य भाषाओं से उत्पन्न हुई हैं’ यही सिद्धान्त विशेष युक्ति-संगत है। भाषा-तत्त्व का भाषा-तत्त्वों में इसी सिद्धान्त का अधिक आदर रखा जाता है। यह सिद्धान्त पारंपार्य विद्वानों का कोई नूतन आविष्कार नहीं है, भारतवर्ष के

१ ‘प्रकृति संस्कृतावास्तु प्राकृतम्’ (वाग्यसंज्ञाटीका २ २); संस्कृतभाषा प्राकृतवर्त्तक प्राकृतम्’ (कल्पतरु की प्रेरणा वर्तमान-कृत टीका १ ३१) ।

२ ‘प्रकृतिसंस्कृतसिद्धेः । वीरभाषासिद्धिरेव उपजायत्वमवश्यम्’ । प्राकृत वृत्तिकाएँ ४ (वर्तमानसंस्कृत ४३१-४) ।

३ स्वाम्यभाषा दुर्गादेयैः प्राकृतसंज्ञाति ४ ।

४ भाषाद्विनि प्राकृतम् । वीरभाषासिद्धिरेव उपजायत्वमवश्यम् । (वर्तमानसंस्कृत ३ ३००) ।

५ ‘मयं प्राकृतम्’—वर्तमानसंज्ञा वीरभाषासिद्धिरेव उपजायत्वमवश्यम् । (व ३ ३०० की टीका) ।

६ कोई कोई व्याकरणिक सिद्धान्त प्राकृत भाषा की उत्पत्ति वैदिक संस्कृत से मानते हैं, जैसे ‘वर्तमानसंस्कृत’ का प्रेरणक सूत्र १० ११ ।

किया है और मार्कण्डेय न अपने प्राकृतसंस्कृत में प्राकृतचरित्र के अतिथय इसीसे को उद्धृत कर महापद्मी, आयम्बी शीरसेनी, अर्धमागधी, वाह्मी, मागधी, प्राच्या और क्षात्रियात्या इन आठ मापाओं के, छह विभाओं में द्राविड़ और ओड्ड इत दो विभाओं के, ग्यारह पिताय मापाओं में क्वाचाद्वीय, पाण्डय, पाण्डा, गीह, मागय, प्राचड, क्षात्रियात्या, शीरसेम केय और द्राविड़ इन दस पिताय मापाओं के और सदाईस अपभ्रंशों में प्राचड, आव, वेदम, वार्य, आचम्य पाण्डाड, टाक माचय केय, गीह, उड्ड, हेव पाण्डय, कोरल, सिंह क्वात्रि, प्राचय क्वाण्टि क्वात्रि द्राविड़, गीह, आभीर और मण्डेशाय इन तेइस अपभ्रंशों के तिन नामों का बल्लेय किया है वे उस भिन्न-भिन्न दश से ही संभव रखते हैं जहाँ जहाँ यह-वह भाषा उत्पन्न हुई है। पञ्चमाषाचरित्र के कर्ता ने 'शूरेन' देश में उत्पन्न भाषा शीरसेनी कही जायी है, मागय दश में उत्पन्न भाषा को मागधी कहते हैं और पिताय-दशों की भाषा पिताधी और चूत्रियापिशाचा हैं यह लिखते हुए यहा बात अधिक स्पष्ट रूप में कही है।

पूर्व में प्राकृत भाषाओं के शब्दों के जा बात प्रकर विचार है उनमें प्रथम प्रकर के उत्तम शब्द संस्कृत से ही सय प्राकृत वैजाग्र्यों के मत से द्वितीय प्रकर के उत्तम शब्द संस्कृत से उत्पन्न होने पर भी तृतीय प्रकर के उत्तम शब्द संस्कृत से उत्पन्न नहीं हुए हैं, किन्तु भिन्न-भिन्न देश में प्रचलित भाषाओं से गृहीत हुए हैं। प्राकृत वैजाग्र्यों का यही मत है।

द्वितीय प्रकर

पहले प्राकृत भाषाओं का जो भौगोलिक विभाग बताया गया है, ये द्वितीय प्रकर के देशीय शब्द उसी भौगोलिक विभाग से उत्पन्न हुए हैं। पश्चिम और दक्षिण संस्कृत भाषा पञ्जाब और मण्डेशाय में प्रचलित वैदिक काल की प्राकृत भाषा से उत्पन्न हुई है। पञ्जाब और मण्डेशाय के बाहर के अन्य प्रदेशों में इस समय आर्य लोगो की जो प्रादेशिक प्राकृत भाषाएँ प्रचलित थीं जन्हीं से ये देशीय शब्द गृहीत हुए हैं। यही धारणा है कि वैदिक और संस्कृत साहित्य में देशीय शब्दों का अनुरूप कोई शब्द (प्रतिशब्द) नहीं पाया जाता है।

प्राचीन काल में भिन्न-भिन्न प्रादेशिक प्राकृत भाषाएँ हवाय थीं, इस बात का प्रमाण क्या है महाभारत, मनु के मान्यशास्त्र और वात्स्यायन के क्षममून आदि प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों में और जैनो के शास्त्रार्थकथा, विषाकभूत, भीषापाठि कमून तथा राजप्रदीप आदि प्राचीन प्राकृत ग्रन्थों में भी मिलता है। इन ग्रन्थों में 'नानामाया' 'दशभाषा' या 'देशीभाषा' शब्द का प्रयोग प्रादेशिक प्राकृत के अर्थ में ही किया गया है। चूँकि उन अपन प्राकृत व्याकरण में जहाँ देशीय शब्दों प्राकृत

१ ये शब्दों 'देशीय' और 'अपभ्रंश' के प्रकरण में दिए गए हैं।

२ शूरसेनोद्देशा नामा शीरसेनीय नीयते।

मनवीपमयां तो मानवीं संव्रचयते।

विशाचष्टविषयं पिशाचिष्टविषयं च ॥" (पञ्चमाषाचरित्र पृष्ठ २)।

३ "नाताचर्मपिण्डपदा नानाभाषाया भावः। कुरुता दशभाषाया जगत्तोष्योपनीयता" (महाभारत उत्तरार्ध ५६ १ १)।

"यत ऊर्ध्वं प्रवर्धयति द्वेषभाषाविक्रमस्तथा।

"यवका चन्द्रवत् बाणं देशभाषा प्रयोजयति" (तात्पर्यशास्त्र १७ २४ ४६)।

"नापाठं संस्कृतैव नाम्नां देशभाषया। कर्मा मोक्षिण्यु कर्माङ्गीके बहुवचो भवेत्" (काव्यमूत्र १ ४ १)।

"उते एते ये देशीयमाते. अद्वारसदसभासाविकाराय ... होत्या" "तत्र एते देशाय वयतेय देशता नाम दक्षिणा परिवर्तय सदा ... अद्वारसदसभासाविकाराय" (आश्रमपरमकाव्य पृष्ठ १८० ६२)।

"तत्र एते दक्षिणायमे काव्यकथा ज्ञानं दक्षिणा होत्या ... अद्वारसदसभासाविकाराय" (विषाकभूत पृष्ठ २१ २२)।

उत् एव वदन्त्येते वदन्त्ये ... अद्वारसदसभासाविकाराय" (वीरार्थक मूत्र, पृष्ठ १ ६)।

"उत् एते ये दक्षिणायमे वदन्त्ये ... अद्वारसदसभासाविकाराय" (पञ्चमाषाचरित्र पृष्ठ १८०)।

४ "भिन्ने प्रविष्टे प्राकृते वेदा विप्रतरं वरति—वैदिकतोपि ... अद्वारसदसभासाविकाराय" (प्राकृतप्रकरण पृष्ठ १-२)।

‘तन्’ शब्द का सम्बन्ध संस्कृत से लगाकर इस मत का अनुसरण किया है^१। कनिषथ प्राकृत-व्याकरणों में प्राकृत शब्द की व्युत्पत्ति इस तरह की गई है —

‘प्रकृति’ संस्कृतं तत्र भवं तत् प्राकृतं वा प्राकृतम् (हैमचन्द्र प्रा. व्या.) ।

‘प्रकृति’ संस्कृतं तत्र भवं प्राकृतमुच्यते (प्राकृतवर्षिणः) ।

‘प्रकृति’ संस्कृतं तत्र यत्प्राकृतं प्राकृतं स्मृतम् (प्राकृतवर्षिणः) ।

‘प्रकृतेः संस्कृतायास्तु प्रकृतिः प्राकृती मया’ (वट्टभाषावर्षिणः) ।

‘प्राकृतस्य तु सर्वमेव संस्कृतं भवति’ (प्राकृतवर्षीयणी) ।

इन व्युत्पत्तियों का तात्पर्य यह है कि प्राकृत शब्द प्रकृति शब्द से बना है, ‘प्रकृति’ का अर्थ है संस्कृत भाषा, संस्कृत भाषा से जो उत्पन्न हुई है यह है प्राकृत भाषा ।

प्राकृत वैभाषणों की प्राकृत शब्द की यह व्याख्या अप्रामाणिक और अश्यायक ही नहीं है, भाषा-तत्त्व से असंगत भी है। अप्रामाणिक इसलिए कही जा सकती है कि प्रकृति शब्द का मुख्य अर्थ संस्कृत भाषा कभी नहीं होता—संस्कृत का किसी घेप में प्राकृत शब्द का यह अर्थ उपलब्ध नहीं है और गीण या सांख्यिक अर्थ तत्त्वतः नहीं लिया जावा अवतक मुख्य अर्थ में बाध न हो। यहाँ प्रकृति शब्द के मुख्य अर्थ स्वभाव अथवा ‘जन-साधारण जन में किसी तरह का बाध भी नहीं है। इसमें उक्त व्युत्पत्ति का स्थान में ‘प्रकृत्य स्वभावेन विवं प्राकृतम्’ अथवा ‘प्रकृतीनां साधारणजनानि प्राकृत्य’ यही व्युत्पत्ति संगत और प्रामाणिक हो सकती है। अश्यायक कहने का कारण यह है कि प्राकृत का पूर्वीक ज्ञान प्रभरों में उत्तम और वद्वप शब्दों की ही प्रकृति उद्गोहन संस्कृत मानी है वीसरं प्रकर का द्रव्य शब्दों की मही, अथवा द्रव्य का भी प्राकृत कहा है। इसमें द्रव्य प्राकृत में यह व्युत्पत्ति लागू नहीं होती। प्राकृत की संयुत से उत्पत्ति भाषा-तत्त्व का सिद्धान्त से भी संगति नहीं रखती, क्योंकि वैदिक संस्कृत और कौटिलिक संस्कृत से दोनों ही माहिल्य की मात्रित भाषाएँ हैं। इन दोनों भाषाओं का व्यवहार शिक्षा की अवस्था रखता है। अशिक्षित लक्ष और बाह्य क्षेत्र किसी प्रकार में साहित्य की भाषा का न हो स्वयं व्यवहार कर सकते हैं और न समझ ही पाते हैं। इसलिए समस्त दूरों में सर्वत्र ही अशिक्षित लोगों के व्यवहार के लिए पर कथ्य भाषा बाध रहती है जो साहित्य की भाषा से स्वतन्त्र—अलग होता है। शिक्षित लोगों के भी अशिक्षित लोगों के साथ बातचीत का प्रयोग में इस कथ्य भाषा का ही व्यवहार करना पड़ता है। वैदिक समय में भी ऐसी कथ्य भाषा प्रचलित थी। और जिस समय कौटिलिक संस्कृत भाषा प्रचलित हुई उस समय भी साधारण लोगों की स्वतन्त्र कथ्य भाषा विद्यमान थी यह नाटक आदि में संस्कृत भाषा के साथ प्राकृत भाषा पात्रों के वक्तव्य से प्रमाणित होता है।

पाणिनि न संस्कृत भाषा को जो कौटिलिक भाषा कही है और पतञ्जलि ने इससे जो शिष्ट-भाषा का नाम दिया है, उसका मतलब यह नहीं है कि उस समय प्राकृत भाषा थी ही नहीं, परन्तु तबका अर्थ यह है कि उस समय के शिक्षित लोगों के भाषण का पाठोपास में, वर्तमान पाठ के परिहत लोगों में संस्कृत की तरह और मिश्रदेशीय लोगों के साथ के व्यवहार Lingua Franca की भाँति संस्कृत भाषा व्यवहृत होती थी। किन्तु बाह्य, स्थित और अशिक्षित लोग अपनी मातृ भाषा में बातचीत करते थे जो संस्कृत भिन्न साधारण कथ्य भाषा थी। साधारण कथ्य भाषा किसी दूर में किसी प्रकार में साहित्य की भाषा से गृहीत नहीं होती, बरिक्त साहित्य भाषा ही जन-साधारण की कथ्य भाषा से उत्पन्न होती है। इसलिए ‘संस्कृत से मातृ भाषा की उत्पत्ति हुई है’ इसकी अपेक्षा ‘क्या वो वैदिक संस्कृत और क्या कौटिलिक संस्कृत दोनों ही उस समय की प्राकृत भाषाओं से उत्पन्न हुई हैं’ यही सिद्धान्त विशेष युक्ति-संगत है। आजकल का भाषा-तत्त्वज्ञान में इसी सिद्धान्त का अधिक आग्रह रखा जाता है। यह सिद्धान्त पाश्चात्य विद्वानों का कोई मूल आधार नहीं है भारतवर्ष के

१ ‘प्रकृतेः संस्कृतायास्तु प्राकृतं (वामनवर्षीयटीका २) संस्कृतभाषा प्रकृतप्राकृतं प्राकृतं (काम्यारटी की टीकावृत्त टीका १ ११) ।

२ ‘प्रकृतिर्वा प्रकृतियुक्ता’ । शेषभाषावर्षिणोः उपमायास्तमात्रयोः । प्रकृत्य पुनिरुच्यते च (सतेषां संस्कृत ४०१-४०) ।

३ ‘साम्यभाषा’ बुद्धकेन्द्रिय राज्यदुर्लभप्रतिपत्ति च ।

४ ‘प्रकृत्य’ प्रकृत्य वीर्यवर्षीयटीका ॥ (प्रतिपत्तिविवरणित्ति १ १०५) ।

५ ‘यत् कथ्य’—साम्यभाषा वीर्यवर्षीयटीका ॥ (प्र. वि. १ १०८ की टीका) ।

६ ‘वोई वोई प्राकृतिक विद्वान् प्रकृत कथा की कर्तव्य वैदिक संस्कृत से मालते हैं, देखो ‘पाणी-प्रमाण’ का प्रकरण ४३ १४ १६ ।

केवल जैन विद्वानों में ही यह मत प्रचलित न था। अस्तु की आठवीं शताब्दी के जैनतर महाकवि चाकपतिराज ने भी अपने 'गठबबहो' नामक महाकाव्य में इसी मत को इन स्पष्ट शब्दों में व्यक्त किया है —

‘सन्तसामो इन बासा विपति पत्तो य खँति बापासो ।

एवि समुहू विव खँति सायसामो विव बसाई ॥६१॥’

अर्थात् इसी प्रसङ्ग भाग में सब भाग्यार्थ प्रवेश करती हैं और इस प्राकृत भाषा से ही सब भाग्यार्थ निर्गत हुई हैं। अतः (या कर) समुहू में ही प्रवेश करता है और समुहू से ही (बाग्य बन से) बाहर होता है। वास्तविक के इस पक्ष का मर्म यही है कि प्राकृत भाषा की उत्पत्ति चाप्य किसी भाषा से नहीं हुई है, बल्कि संस्कृत प्रायः सब भाग्यार्थ प्राकृत से ही उत्पन्न हुई हैं।

अस्तु की नवम शताब्दी के जैनतर कवि राजशेखर ने भी अपने 'बाह्यसामायण' में नीचे का श्लोक लिखकर यही मत प्रकट किया है —

‘यद् योगि किं संस्कृतस्य मुखो जिह्वायु यमोक्ते यत्र धीमत्पावतादिषु कर्तुर्गोपायगणा रत ।

यत्तुं कृतार्थं परं रचितवत्सत्त्वं प्राकृतं यद्वत्सत्संसाद्योक्तमिति वाङ्मय परमं मुखो ह्येति नेपथ्यम् ॥’ (पृ० ४६) ।

जैन और जैनतर विद्वानों के एक ध्येयों से यह स्पष्ट है कि प्राचीन काल के भारतीय भाषातत्त्वज्ञों में भी यह मत प्रबल रूप से प्रचलित था कि प्राकृत की उत्पत्ति संस्कृत भाषा से नहीं है।

प्राकृत भाषा लौकिक संस्कृत से उत्पन्न नहीं हुई है इसका और भी एक प्रमाण है। यह यह कि प्राकृत के अनेक शब्द और प्रत्ययों का लौकिक संस्कृत की अपेक्षा वैदिक भाषा के साथ अधिक मेल देखने में आता है। प्राकृत भाषा साम्राज्य से लौकिक संस्कृत से उत्पन्न होने पर यह कभी संभव नहीं हो सकता। वैदिक साहित्य में भी प्राकृत के अनुरूप धनंजय शब्द और प्रत्ययों का प्रयोग विद्यमान है। इससे यह अनुमान करना किसी तरह असंगत नहीं है कि वैदिक संस्कृत और प्राकृत ये दोनों ही एक प्राचीन प्राकृत भाषा से उत्पन्न हुई हैं और यही इस साक्ष्य का कारण है। वैदिक भाषा और प्राकृत के सादृश्य के कतिपय उदाहरण हम नीचे उद्धृत करते हैं, ताकि एक ध्यान की सत्यता में कोई संदेह नहीं हो सके।

वैदिक भाषा और प्राकृत में सादृश्य

१ प्राकृत में अनेक अगह संस्कृत शब्दों के स्थान में वक्षर होता है, जैसे—दुन्द = दुन्द, अणु = अणु, प्रियवी = प्रुषी वैदिक साहित्य में भी ऐसे प्रयोग पाये जाते हैं जैसे—द्वस = दुत (अथर्व १ ४१ ४) ।

२ प्राकृत में संयुक्त वर्णवाचक ह्रस्व स्थानों में एक व्यञ्जन का छेप होकर पूर्व के ह्रस्व स्वर का दीर्घ होता है जैसे—दुर्लभ = दुर्लभ, विश्राम = वीश्राम, वरुण = वारुण। वैदिक भाषा में भी वैसा होता है, यथा—दुर्लभ = दुर्लभ (अथर्व ४ ६, ८), दुर्गन्ध = दुर्गन्ध (शुक्लयजुः प्रातिश्रक् ३ ४१) ।

३ संस्कृत व्यञ्जनवाचक शब्दों के अन्त्य व्यञ्जन का प्राकृत में सर्वत्र छेप होता है, जैसे—तावत् = ताय वरुण = वरुण, वैदिक साहित्य में भी इस नियम का अभाव नहीं है यथा—पञ्चात् = पञ्चा (प्रथमपर्विका १ ४ ११) वञ्चात् = वञ्चा (तैत्तिरीयसंहिता २, १ ४५) नीचात् = नीचा (तैत्तिरीयसंहिता १ २ १४) ।

४ प्राकृत में संयुक्त र और म का छेप होता है जैसे—प्रगम्भ = प्रगम्भ, दयामा = दयामा वैदिक साहित्य में भी यह पाया जाता है यथा—अ प्रगम्भ = अ-प्रगम्भ (तैत्तिरीयसंहिता ४ १, ११) वयम = विम (छठपञ्चमसंहिता १ १ ११) ।

५ प्राकृत में संयुक्त वर्ण का पूर्व स्वर ह्रस्व होता है यथा—पात्र = पत्र, रात्रि = रात्रि साम्य = मग्न इत्यादि वैदिक भाषा में भी ऐसे प्रयोग हैं, जैसे—रोक्षीमा = रोक्षिमा (अथर्व १ ५८, १) अमात्र = अमात्र (अथर्व १ ११ ४) ।

६ प्राकृत में संस्कृत के अनेक अगह व होता है जैसे—दण्ड = दण्ड, बंस = बंस, बोध = बोध, वैदिक साहित्य में भी ऐसे प्रयोग दुर्लभ नहीं हैं जैसे—दुर्लभ = दुर्लभ (बाणकनैयसंहिता १ ११) पुरात्रास = पुरेवात्रा (शुक्ल-यजुःप्रातिश्रक् ३ ४४) ।

केवल जैन विद्वानों में ही यह मत प्रचलित न था सिद्ध की आठवीं शताब्दी के जैनतर महाकवि पादपविजय ने भी अपने 'गडबहो' नामक महाकाव्य में इसी मत को इन स्पष्ट शब्दों में व्यक्त किया है —

“सत्तामो ह्यं भावा विवर्ति एतो न लोति भावामो ।

एति समुत्तं विष लोति सावयवा विष बलाई ॥२१॥”

अर्थात् इसी प्राकृत भाषा में सब भाषाएँ प्रवेश करती हैं और इस प्राकृत भाषा से ही सब भाषाएँ निर्गत हुई हैं जल (या कर) समुद्र में ही प्रवेश करता है और समुद्र से ही (बात कर से) बाहर होता है । वास्तविक के इस पक्ष का मैं यही है कि प्राकृत भाषा को कल्पित भाषा किसी भाषा से नहीं हुई है, बल्कि संस्कृत भाषा सब भाषाएँ प्राकृत से ही उत्पन्न हुई हैं ।

सिद्ध की नवम शताब्दी के जैनतर कवि राजशेखर न भी अपने 'वासुरामायण' में नीचे का श्लोक लिखकर यही मत प्रकट किया है —

“भू गोभि ऋक् संख्यवत्स मुह्यो विद्वान्पु नवीर्यो यत्र मोक्षपावतापिण्ड कटुपापासयणा रव ।

पर्व इहोपदं पर्व एतिपरेष्ठत् प्राकृतं यश्चस्तत्सादात्मनितार्त्तं परमं मुच्यते ह्येतिनेपब्रज ॥” (४६, ४८) ।

जैन और जैनतर विद्वानों के एक वर्णों से यह स्पष्ट है कि प्राचीन काल के भारतीय भाषाविद्वानों में भी यह मत प्रबल रूप से प्रचलित था कि प्राकृत की कल्पित संस्कृत भाषा से नहीं है ।

प्राकृत भाषा औक्तिक संस्कृत से उत्पन्न नहीं हुई है इसका और भी एक प्रमाण है । वह यह कि प्राकृत के अनेक वाच्य और प्रत्ययों का औक्तिक संस्कृत की अपेक्षा पौष्टिक भाषा के साथ अधिक मेल देखने में आता है । प्राकृत भाषा साधारण से औक्तिक संस्कृत से उत्पन्न होने पर यह कभी संभव नहीं हो सकता । वैदिक साहित्य में भी प्राकृत के अनुरूप अनेक शब्द और प्रत्ययों के प्रयोग विद्यमान हैं । इससे यह अनुमान करना किसी तरह असंगत नहीं है कि वैदिक संस्कृत और प्राकृत ये दोनों ही एक प्राचीन प्राकृत भाषा से उत्पन्न हुई हैं और यही इस सादृश्य का कारण है । पौष्टिक भाषा और प्राकृत के सादृश्य के कतिपय उदाहरण हम नीचे उद्धृत करते हैं ताकि एक कथन की सत्यता में कोई संदेह नहीं हो सकता ।

वैदिक भाषा और प्राकृत में सादृश्य

१ प्राकृत में अनेक जगह संस्कृत अक्षर के स्थान में उच्चार होता है, जैसे—**कुन्** = कुन्, **कसु** = कठ, **पुयिरी** = पुषी वैदिक साहित्य में भी ऐसे प्रयोग पाये जाते हैं, जैसे—**कृत्** = कुट (**अथर्व** १ ४६, ४) ।

२ प्राकृत में संयुक्त वर्णवाक्य कई स्थानों में एक व्यञ्जन का छेप होकर पूर्ण एक ह्रस्व स्वर का होच होता है जैसे—**दुर्धम** = **दुम्ह** विग्राम = वीसाम, **सर्ग** = **फास**, पौष्टिक भाषा में भी ऐसा होता है, यथा—**दुर्धम** = **दूम** (**अथर्व** ४ २, ८) **दुर्धारा** = **दुधारा** (**गुणवत्** प्रातिपदिक १ ४१) ।

३ संस्कृत व्यञ्जनात् शब्दों के अन्त्य व्यञ्जन का प्राकृत में सर्वत्र छेप होता है, जैसे—**वापत्** = **वाप** परास = **जस**, वैदिक साहित्य में भी इस नियम का अभाव नहीं है, यथा—**परास** = **पमा** (**अथर्वसंहिता** १ ४ ११) **कषात्** = **कषा** (**तैत्तिरीयसंहिता** २ १ १४) **मीचात्** = **मीषा** (**तैत्तिरीयसंहिता** १ २ १४) ।

४ प्राकृत में संयुक्त र और य का छेप होता है, जैसे—**परास** = **परास** **यमा** = **सामा**, वैदिक साहित्य में भी यह पाया जाता है, यथा—**य** **परास** = **य-परास** (**तैत्तिरीयसंहिता** ४ १, ११), **इय** = **यिष** (**अथर्वसंहिता** १ १ ११) ।

५ प्राकृत में संयुक्त वर्ण का पूर्ण स्वर ह्रस्व होता है, यथा—**वात्र** = **पत्र**, **रत्रि** = **रत्रि**, **साम्य** = **सम** इत्यादि वैदिक भाषा में भी ऐसे प्रयोग हैं, जैसे—**रोक्षसीमा** = **रोक्षसिमा** (**अथर्व** १ ८०) **अमात्र** = **अमत्र** (**अथर्व** १ १६, ४) ।

६ प्राकृत में संस्कृत व का गणक जगह व होता है जैसे—**वण्ड** = **वण्ड**, **वंस** = **वंस** **होव** = **होव**, वैदिक साहित्य में भी ऐसे प्रयोग सुखी हैं, जैसे—**दुर्धम** = **दूम** (**अथर्वसंहिता** १ ११) **पुरास** = **पुरोवारा** (**गुणवत्** प्रातिपदिक १ ४४) ।

७. प्राकृत में ब ब ह हावा है, बधा—बधिर = बहिर, बधान = बाह बह-भावा में भा ऐसा पाया जाता है, जैसे—प्रतिस्थाप = प्रतिस्थाप (लेखनप्रमाण १ ४) ।

८. प्राकृत में अनेक शब्दों में संयुक्त व्यञ्जनों के बाब में स्वर का आगम होता है, जैसे—क्रिष्ट = क्रिष्टि, ख = सुख वन्दी = वन्दी वैदिक साहित्य में भी ऐसे प्रयोग मिले नहीं हैं बधा—सहस्र = सहस्रपा स्त्री = सुपा (ऐतिहासिकता ४ २, १) ; वन्द = वन्दु, ख = सुख (ऐतिहासिकता ४ २२, १ १ २, ७) ।

९. प्राकृत में अक्षरात्मक पुञ्जि कम्ब के प्रयोग के एकचरण में हो होता है, जैसे—देवो जिणो सो इत्थानि, वैदिक भाषा में भी प्रयोग के एकचरण में 'ह्री-ह्री' या 'ह्री-ह्री' का प्रयोग है बधा—सर्वस्वो जगत्पति (आनेन्दिका १ १९ १), सो विन् (आनेन्दिका १ ११ १-२) ।

१०. पृथीया विमर्षि के बहुचरण में प्राकृत में देव आदे अक्षरात्मक शब्दों के रूप देवेदि गंधीरेदि, जेठुदि आदि होते हैं, वैदिक साहित्य में भी इसी के अनुरूप देवेमि गन्धीरेमि, ज्येष्ठेमि आदि रूप मिलते हैं ।

११. प्राकृत की तरह वैदिक भाषा में भी जतुर्वा के स्थान में पृथी विमर्षि होती है ।

१२. प्राकृत में पञ्चमी के एकचरण में देवा बध्ना जिना आदि रूप होते हैं, वैदिक साहित्य में भी इसी तरह के तथा नीचा पद्या प्रभृति रूप मिलते हैं ।

१३. प्राकृत में शिवन के स्थान में बहुचरण ही होता है वैदिक भाषा में भी इस तरह के अनेकों प्रयोग मिलते हैं बधा—इन्द्रावन्तो के स्थान में 'इन्द्रावन्ता' 'मित्रावन्तो' का अर्थ 'मित्रावन्ता' 'यो सुरावो रविपथी विपितृशावन्तो' के अर्थ 'वा सुराया पृथ्वीया विपितृशावन्ता' 'मरी' के स्थान में 'मर' है आदि ।

इस तरह अनेक पुष्टि और प्रमाणों से यह साबित होता है कि प्राकृत की उत्पत्ति वैदिक अवस्था की किञ्चित् संस्कृत से नहीं किन्तु वैदिक संस्कृत की उत्पत्ति जिस समय स्वर की प्रादेशिक प्राकृत भाषा से पूर्व में 'ह्री' गई है वहीसे हुई है । इससे पता चलता है कि संस्कृत के अनेक आक्षेपों को ले कर प्राकृत के प्राब समस्त विचारों में 'व' शब्द से संस्कृत को लेकर 'वज्र' शब्द का जो व्यवहार 'संस्कृतम' अर्थ में किया है वह किता तरह सत्य नहीं हो सकता । इसमें वही 'व' शब्द संस्कृत के स्थान में वैदिक अर्थ के प्राकृत का महत्व कर 'वज्र' शब्द का प्रयोग 'वैदिक अर्थ के प्राकृत से जो शब्द संस्कृत में जिना गया है वहीसे अर्थ ही अर्थ में करवा चाहिए । संस्कृत शब्द और प्राकृत वज्र शब्द इन दोनों का साधारण मूल वैदिक अर्थ का प्राकृत वर्णों पूर्व के प्राकृतिक प्राकृत या प्रथम स्तर का प्राकृत है । इससे पता चलता है कि 'वज्र' शब्द का वैदिक अर्थ 'संस्कृतम' नहीं किन्तु 'वैदिक अर्थ के प्राकृत से उत्पन्न' पृथी समझना चाहिए ।

द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं का उत्पत्ति-क्रम और उनके प्रमाण मेद

अब हम उस समय के अनुसार वैदिक तथा ऐतिहासिक संस्कृत और समस्त प्राकृत भाषाओं का मूल एक ही है और वैदिक तथा ऐतिहासिक संस्कृत द्वितीय स्तर की सभी प्राकृत भाषाओं से प्रमाण है वह यह बताने की कोशिश करनी नहीं है कि द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं के उत्पत्ति-क्रम का निर्णय एकमात्र ही साधारण के आधारे पर निर्भर करता है जो समय संस्कृत और प्राकृत वज्र रूपों में पाया जाता है । जिस प्राकृत भाषा के वज्र शब्दों का वैदिक और ऐतिहासिक अर्थ का साथ जितना अधिक सादर होगा वह जितनी ही प्राचीन और जिसके वज्र शब्दों का समय संस्कृत के साथ जितना अधिक मेद होगा वह जितनी ही अतीतानीयानी या सकती है, क्योंकि अधिक मेद के उत्पन्न होने में समय भी अधिक लगता है वह निश्चित है ।

द्वितीय स्तर की जिस प्राकृत भाषाओं में साहित्य में अवस्था शिखरों में स्थान पाया है उनके शब्दों की वैदिक और ऐतिहासिक संस्कृत के साथ अनुपम पड़ती से जुड़ना करने पर, जो मेद पारंपरिक देवता में आते हैं उनके अनुसार द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं के निम्नोक्त प्रमाण मेद (प्रमाण) होते हैं, जो क्रम से इन तीन मुख्य अक्षर-विभागों में बँटे हैं : (१) प्रथम युग—जिसमें पूर्व बार से दो बार लिख के बार एक से बार एक (100 A. C. to 500 A. D) ; (२) मध्यम युग—जिसमें बार एक से बार एक (400 B. C. to 100 A. D) ; (३) तीसरा युग—जिसमें बार एक से बार एक (600 A. D. to 1000 A. D) । (१) प्रथम युग—जिसमें

१ देखो, निपाकम्, त (१५ १८ १९) ।

भाषणों की हा और से इस भाषा की तरफ अपनी स्वाभाविक प्रवृत्ति को व्यक्त करने के लिए इसका यह नाम देना जाना और अधिक प्रमिद हो जाने के कारण पीछे से बौद्ध विद्वानों का भी मागधी की जगह इस शब्द का प्रयोग करना व्याख्या-खतक नहीं जान पड़ता ।

एक प्राकृत भाषा-समूह में पाणि भाषा के साथ वैदिक संस्कृत का अधिक सादृश्य देखा जाता है । इसी कारण से द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं में पाणि भाषा सवर्षिषा प्राचीन मान्य पड़ती है ।

पाणि भाषा का उत्पत्ति-स्थान के बारे में विद्वानों का मत-भेद है । बौद्ध लोग इसी भाषा को मागधी कहते हैं और उनके मत से 'म भाषा का उत्पत्ति-स्थान मगध देश है । परन्तु इस भाषा का मागधी प्राकृत के साथ कोई सादृश्य नहीं है । डॉ. कोनो (Dr. Konow) और सर मिणसेन ने इस भाषा का पेशाबी भाषा के साथ सादृश्य इतकर पेशाबी भाषा जिस देश में प्रचलित थी उसी देश को इसका उत्पत्ति-स्थान बताया है, यद्यपि पेशाबी भाषा के उत्पत्ति-स्थान के विषय में इन दोनों विद्वानों का मतभेद नहीं है । डॉ. कोनो का मत है पेशाबी भाषा का उत्पत्ति-स्थान बिम्बावज्ज का दक्षिण प्रदेश है और सर मिणसेन का मत यह है कि 'इसका उत्पत्ति-स्थान भारतवर्ष का उत्तर-पश्चिम प्रांत है, वहाँ उत्पन्न होने के बाद संभव है कि केंद्र-प्रदेश-पर्यन्त इसका विस्तार हुआ हो और वहाँ इससे पाळी भाषा की उत्पत्ति हुई हो ।' परन्तु पाणि भाषा अनेक के गुजरात-प्रदेश-निवस गिरनार के शिखरकेस के अनुरूप होने के कारण यह भाषा में नहीं किन्तु 'भारतवर्ष के पश्चिम प्रांत में उत्पन्न हुई है और वहाँ से सिंधु देश में आ गई है' यही मत विशेष संगत प्रतीत होता है, क्योंकि निम्नोक्त ब्राह्मणों से पाणिभाषा का गिरनार-शिखरकेस के साथ सादृश्य और पूर्व-प्रांत-निवस पीछि (अहमिर) शिखरकेस के साथ पार्यव्य देखा जाता है—

संस्कृत	पाळी	गिरनारपिछा	बीकनिराज
राजः	राजानो उज्जो	उज्जो	अजिते
हव्य	हव	हव	हवे

इस विषय में डॉ. मुन्नाविज्जुमार कटर्जी का कहना है कि "बुद्धदेव" के समस्त उपदेश मागधी भाषासे बाद के समय में मध्यदेश (Domb) की धीरसेनी प्राकृत में अनुवादित हुए थे और वे ही निम्न-यूने प्रायः की सी वर्ष से पाणि-भाषा के नाम से प्रसिद्ध हुए हैं । किन्तु सब ता यह है कि पाणि भाषा का धीरसेनी और मागधी की अपेक्षा पेशाबी के साथ ही अधिक सादृश्य है जो निम्नोक्त ब्राह्मणों से स्पष्ट जाना जाता है ।

संस्कृत	पाणि	पेशाबी	धीरसेनी	मागधी
०३ (लोक)	क (बोड)	क (बोड)	(बोड)	(बोड)
०४ (वज)	ग (वज)	ग (वज)	(वज)	(वज)
०५ (वपी)	व (वपी)	व (वपी)	(वपी)	(वपी)
०६ (वज)	ज (वज)	ज (वज)	(वज)	(वज)
०७ (वज)	व (वज)	व (वज)	व (वज)	व (वज)
०८ (वज)	र (वज)	र (वज)	र (वज)	र (वज)

१ "लोहापर्व बुद्ध के शब्द
२ लोहापर्व शिखरकेसो मण्डि

३ The Origin and D

४ इन शब्दों में वज
५ वज शब्द में वपी

६ वज शब्दों के मध्यवर्ती सर्वसुख

संस्कृत	पाळि	पैशाची	शीरसेनी	मागधी
रा (बरा)	स (बस)	स (बस)	स (बस)	दा (बरा)
प (पेय)	स (पेय)	स (पेय)	स (पेय)	रा (पेय)
स (घास)	स (घास)	स (घास)	स (घास)	रा (घास)
न (बचन)	न (बचन)	न (बचन)	ण (बघण)	ण (बघण)
ट्ट (पट्ट)	ट्ट (पट्ट)	ट्ट (पट्ट)	ट्ट (पट्ट)	स्ट (पट्ट)
थे (धर्म)	थ (धर्म)	थ (धर्म)	थ (धर्म)	स्ट (धर्म)
स (बुद्ध)	ओ (बुद्धो)	ओ (बुद्धो)	ओ (बुद्धो)	ए (बुद्धे)

पाळि भाषा की उत्पत्ति का समय जिसके पूर्व पठ शताब्दी कहा जाता है, किन्तु यह आज कुछ इस की सम उत्पत्ति-समय सामयिक कथ्य मागधी भाषा का हो सकता है। पाळि कथ्य भाषा नहीं, परन्तु बोद्ध धर्म-साहित्य की भाषा है। संभव यह भाषा जिसके पूर्व बहुत या पञ्चम शताब्दी में पश्चिम भारत में उत्पन्न हुई थी।

इस पाळि-भाषा से आधुनिक सिन्धी भाषा की उत्पत्ति हुई है।

प्राकृत राज्य से साधारणतः पाळि-भिन्न अन्य भाषाएँ ही समझ जानी हैं। इससे, और पाळि भाषा के जनक स्वयम् क्षेत्र होने से प्राकृत क्षेत्र में पाळि भाषा के क्षयों को स्थान नहीं दिया गया है। इसलिये पाळि भाषा की विशेष आलोचना करने की यहाँ आवश्यकता नहीं है।

(२) पैशाची

गुप्ताब्द ने बुद्धकथा पैशाची भाषा में लिखी थी जो छुप्त हो गई है। इस समय पैशाची भाषा के उदाहरण निम्न प्राकृतमध्य भाषाएँ हेमचन्द्र का प्राकृतव्याकरण, पञ्चभाषाचरित्र, प्राकृत-सर्वस्व और संक्षिप्तसार आदि प्राकृत-व्याकरणों में आचार्य हेमचन्द्र के कुमारपाठ-चरित्र तथा अश्वानुशासन में, मोहराज पराजय नामक नाटक में और दो-एक पञ्चभाषास्तोत्रों में मिलते हैं।

भरत के नाट्यशास्त्र में पैशाचा नाम का उल्लेख देखने में नहीं आता है, परन्तु इसके परवर्ती 'कूट', 'केशव' निम्न आदि संस्कृत के भाषाकारिकों ने इसका उल्लेख किया है। पागमन ने इस भाषा को 'भूतभाषित' के नाम से अभिहित की है।

'पागमन' तथा 'केशवनिम्न' नम से भूत और पिशाच-प्रभृति पात्रों के छिप और 'पञ्चभाषा-चरित्र'कार ने पिशाच, पिशाच और नीच पात्रों के छिप इसका भिनियोग बतलाया है।

१. बुद्धिय में ब्रह्मा के एक बचन का प्रत्यय।

२. आचार्य जयसिंह की द्रुवतय-माना में बहरी के काव्याश्रित में बाण के हचरित में पनञ्चक के बहकन में, मुद्राङ्ग की बासवदा में और मध्यय प्राकृत-संहार में इसका उल्लेख पाया जाता है। ऐतिहासिक बुद्धकथा-ग्रन्थों और सोमवैश्वदेव प्रणीत कथाचरित्पात्र इन्हीं बुद्धकथा का संस्कृत अनुवाद है। इन बुद्धकथा के ही निम्न-निम्न धर्मों के साधारण पर बाण कीहर्ष मन्त्रुति आदि संस्कृत के महाकवियों की कालवर्ती माधवीयाध-ग्रन्थि धर्म संस्कृत धर्मों की रचना की गई है।

३. उट २२१: २११।

४. काव्यालंकार १ १२।

५. 'संहार प्राकृत' और पैशाची भाषा का 'पञ्च' (पञ्चकार लेख, उट २)।

६. 'संहार प्राकृत' तत्प्राप्त्यर्थी द्रुवतयचरित्र (सामयिकद्वार २ १)।

७. 'यद् बुद्धिचरिते विविध' दर्शनविधिविध 'मृग' (सामयिकद्वार २ १)।

८. 'पैशाचीं तु पिशाचायाः प्राहुः' (पञ्चकारलेख, उट २)।

९. उट-पिशाचनीयेषु पैशाचीरित्यं भवेत् ॥११॥ (पञ्चभाषा-चरित्र उट १)।

भाषाओं की ही ओर से इस भाषा की तरफ अपनी स्वाभाविक पूर्णा को व्यक्त करने के लिए इसका यह तन्म दिया जाना और अधिक प्रसिद्ध हो जान के कारण पीछे से बौद्ध विद्वानों का भी मागधी की ओर इस शब्द का प्रयोग करना आसानी बनक नहीं जान पड़ता ।

इस प्राकृत भाषा-समूह में पाणि भाषा के साथ बहुरि संस्कृत का अधिक सादृश्य देखा जाता है । इसी कारण से द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं में पाणि भाषा सबभेदा प्राचीन मान्य पड़ती है ।

पाणि भाषा के उत्पत्ति-स्थान के बारे में विद्वानों का मत-भेद है । बौद्ध लोग इसी भाषा को मागधी कहते हैं और उनके मत से नम भाषा का उत्पत्ति-स्थान मगध देश है । परन्तु इस भाषा का मागधी प्राकृत के साथ कोई सादृश्य नहीं है । डॉ. कोने (Dr. Koner) और सर मिचर्सन ने इस भाषा का पेशाबी भाषा के साथ सादृश्य देखा और पेशाबी भाषा जिस देश में प्रचलित थी वही देश को इसका उत्पत्ति-स्थान बताया है,

उत्पत्ति-स्थान

मगध पेशाबी भाषा के उत्पत्ति-स्थान के विषय में इन दोनों विद्वानों का मतभेद नहीं है । डॉ. कोने का मत है पेशाबी भाषा का उत्पत्ति-स्थान बिन्ध्याचल का दक्षिण प्रदेश है और सर मिचर्सन का मत यह है कि इसका उत्पत्ति-स्थान भारतवर्ष का उत्तर-पश्चिम प्रांत है; वहाँ बस्य होन के बाद संभव है कि कोंकण प्रदेश-पर्यन्त इसका विस्तार हुआ हो और वहाँ इससे पाळी भाषा की उत्पत्ति हुई हो । परन्तु पाणि भाषा अशोक के गुजरात-प्रदेश-स्थित गिरनार के शिलालेख के अनुरूप होन के कारण यह मगध में नहीं, किन्तु भारतवर्ष के पश्चिम प्रांत में उत्पन्न हुई है और वहाँ से सिन्धु देश में से आई गई है । यही मत बिरोप संगत प्रतीय होता है, क्योंकि निम्नेछ उदाहरणों से पाळीभाषा का गिरनार-शिलालेख के साथ सादृश्य और पूर्व-प्रांत-स्थित जीकि (जड़गिरि) शिलालेख के साथ पार्ष्वक देखा जाता है—

संस्कृत	पाळी	गिरनारलिखितः	बीकानेरलिखितः
पञ्च	पञ्चमो, पञ्चो	पञ्चो	बचिने
इष्ट	कटं	कटं	कवे

इस विषय में डॉ. मुनेरिङ्गमार चटर्जी का कहना है कि “बुद्धदेव” के समस्त उपदेश मागधी भाषासे बाद के समय में मध्यदेश (Doab) की शीरसेनी प्राकृत में अनुधारित हुए थे और वे ही सिन्धु-पूर्व प्रायः का सी बर्ष से पाळी-भाषा के नाम से प्रसिद्ध हुए हैं । किन्तु सब भी यह है कि पाळी भाषा का शीरसेनी और मागधी की अपेक्षा पेशाबी के साथ ही अधिक सादृश्य है या निम्नाछ उदाहरणों से स्पष्ट आत्म जाता है ।

संस्कृत	पाळी	पेशाबी	शीरसेनी	मागधी
० ड (डोक)	क (डोक)	क (डोक)	(डीम)	(डीम)
ग (गव)	ग (गव)	ग (गव)	(छव)	(छव)
ब (लयी)	ब (लयी)	ब (लयी)	(छई)	० (छई)
० अ (लवट)	अ (लवट)	अ (लवट)	(लवट)	(लवट)
० न (कट)	व (कट)	व (कट)	व (कट)	व (कट)
र (कर)	र (कर)	र (कर)	र (कर)	स (कर)

१. “जीरानरं बुद्धं च साहसं मीनक्षयसिद्धम् ।

न बोधयं विनेयस्वी मय्येति एव विनम्” (पञ्चपुराण पूर्वखण्ड २० पृ०) ।

२. The Origin and Development of the Bengalee Language Vol. I page 67

३. इन उदाहरणों में कवम यह मजबूत दिया गया है किनका इन कव प्रका के बीच रिद कव मजबूत में परिवर्तन होता है और कवम के बाद शीरसेनी की धाराप्रवाह रूप लटका के लिए दिया गया है ।

४. एतत् बली के मध्यस्थी धर्मदुक्त कर्तुः ।

संस्कृत	पाळि	पैशाची	शीरसेनी	मागधी
रा (बरा)	स (बर)	स (बर)	स (बर)	श (बरा)
प (मेघ)	स (मेघ)	स (मेघ)	स (मघ)	श (मेघ)
स (घास)	म (सारस)	म (सारस)	स (सारस)	श (शालस)
न (बचन)	न (बचन)	न (बचन)	ण (बघण)	ण (बघण)
ट्ट (पट्ट)	ट्ट (पट्ट)	ट्ट (पट्ट)	ट्ट (पट्ट)	स्ट (पस्ट)
थै (घर्ष)	त्थ (घस्य)	त्थ (घस्य)	त्थ (घस्य)	स्त्र (घस्य)
सु (ह्य)	ओ (स्फो)	ओ (स्फो)	ओ (स्फो)	प (झुप्पे)

पाळि भाषा की उत्पत्ति का समय जित्त के पूर्वे पड़ शताब्दी कहा जाता है, किन्तु वह कल मुद्रण की सम
उत्पत्ति-समय सामयिक कथ्य मागधी भाषा का हो सकता है। पाळि कथ्य भाषा नहीं, परन्तु बौद्ध धर्म-साहित्य
की भाषा है। संभवतः यह भाषा जित्त के पूर्वे चतुर्थ या पञ्चम शताब्दी में पश्चिम भारत में
उत्पन्न हुई थी।

इस पाळि-भाषा से आपुनिष्ठ सिद्धि भाषा की उत्पत्ति हुई है।

प्राकृत राष्ट्र से साधारणतः पाळि-भिन्न अथवा भाषाएँ ही सम्भवतः जात हैं। इससे, और पाळि भाषा के अनक
स्वतन्त्र रूप होने से प्रस्तुत रूप में पाळि भाषा के शब्दों को खान नहीं दिया गया है। इसलिये पाळि भाषा की विशेष
आलोचना करने की यहाँ आवश्यकता नहीं है।

(२) पैशाची

गुणाध्याय ने 'बृहद्रथ्या पैशाची भाषा में लिखी थी जो लुप्त हो गई है। इस समय पैशाची भाषा के उदाहरण
विशेष प्राकृत-प्रकरण, आचार्य हेमचन्द्र का प्राकृत-व्याकरण, पद्मभाषा-वर्णिक, प्राकृत-सर्वस्य और संक्षिप्तसार
आदि प्राकृत-व्याकरणों में आचार्य हेमचन्द्र के कुमारपाल बलि तथा 'काष्ठापुनरासन' में, मोहज
पराजय नामक नाटक में और दो-एक पद्मभाषा-स्तोत्रों में मिलते हैं।

भरत के न्यायशास्त्र में पैशाचा नाम का उल्लेख देखने में नहीं आता है परन्तु इसके पर्यायी 'कट्ट', 'केटाव
भिन्न आदि संस्कृत के आसन्नशब्दों ने इसका उल्लेख किया है। वाग्भट ने इस भाषा को 'मूत्रमापित' के नाम से
अभिहित की है।

'वाग्भट तथा 'करायमिन्न ने क्रम से मूत्र और पिशाच-प्रवृत्ति पात्रों के छिद्र और 'पद्मभाषा-वर्णिक' ने
विभिन्न पिशाच, पिशाच और नीच पात्रों के छिद्र इसका विनियोग समझाया है।

१. बुद्धि में प्रथमा के एक बचन का प्रथम।

२. आचार्य जयसिंह की धुनय-भाषा में बगरी के अन्वयार्थ में बाण के हर्षवर्धन में पञ्चम्य के वृत्तारम्भ में, सुबन्धु की
बाणवर्धन में शीर सन्ध्या प्राकृत-संहिता में हैं। इनका उल्लेख पाया जाता है। येनेप्रकृत बृहत्कामाग्रते शीर सौपदेवक
प्रणीत बगवत्सिंहार इती बृहत्का का संस्कृत अनुवाद है। इस बृहत्का के ही भिन्न-भिन्न संघों के वाचार पर बाण धीर्ज्ञ
महर्षि धारि संस्कृत के महाविद्यालय की कारम्भते एतावन्ती मातृजीवावर प्रवृत्ति धनेक संस्कृत संघों की रचना की गई है।

३. इ. १२२। १३३।

४. कम्पार्वर २ १२।

५. 'संहर्ष प्राकृत' शिव पैशाची भाषा की वक्ता (मनमोहन शेषर, इ. १)।

६. 'संहर्ष प्राकृत' लयाचम दो मूत्रमापित' (बालभट्टार २, १)।

७. मद्र मूर्तिरव्यते विविध वक्ता-विनिर्माण मूत्रम (शामभट्टार २, १)।

८. पैशाची गुणभाषा प्राकृत (मनमोहन शेषर, इ. १)।

९. एता पिशाचोपैशु पैशाचीविम्व जनेव ॥११॥ (पद्मभाषा-वर्णिक इ. १)।

शौरसेनी भाषा के साथ कोई भी संबंध प्रतीत नहीं होता, क्योंकि कैठ्य-पैशाची के साथ शौरसेन-पैशाची के जो मेव बहनें कदापि हैं वे मागधी भाषा के ही अनुरूप हैं, न कि शौरसेनी के। इससे इनसे शौरसेन-पैशाची न कह कर मागधी पैशाची कहना ही संगत जान पड़ता है।

प्राकृत वैयाकरणों के मत से पैशाची भाषा का मूल शौरसेनी अथवा संस्कृत भाषा है, किन्तु हम पहले यह मस्तीमति बिना चुके हैं कि कोई भी प्रादेशिक कथ्य भाषा संस्कृत अथवा अन्य प्रादेशिक भाषा से व्यपन्न नहीं है, परन्तु वह वही कथ्य अथवा प्राकृत भाषा से व्यपन्न हुई है जो वैदिक युग में उस प्रदेश में प्रचलित थी। इस लिए पैशाची भाषा का भी मूल संस्कृत या शौरसेनी नहीं, किन्तु वह प्राकृत भाषा ही है जो वैदिक युग में भारतवर्ष के उत्तर-पश्चिम प्रांत की या अफगानिस्तान के पूर्व प्रांत-वर्ती प्रदेश की कथ्य भाषा थी।

प्रथम युग की पैशाची भाषा का कोई निर्देश साहित्य में नहीं मिलता है। गुणाक्ष्य की बृहत्सभा संभवतः इसी प्रथम युग की पैशाची भाषा में रची गई थी; किन्तु वह व्याजक्षर वपक्षर्य नहीं है। इस समय हम व्याकरण, नाटक और चरित्र में पैशाची भाषा के जो निर्देश पाते हैं वह मध्ययुग की पैशाची भाषा का है। मध्ययुग की यह पैशाची भाषा हिन्द की द्वितीय शताब्दी से पौर्वी शताब्दी पर्यन्त प्रचलित थी।

पैशाची भाषा का शौरसेनी भाषा के साथ जिस-किस ढंग में मेव है वह सामान्य रूप से नीचे दिया जाता है। इसके सिवा अन्य सभी अर्थों में यह शौरसेनी के ही समान है। इससे इसके बाकी के लक्षण शौरसेनी के प्रकरण से जाने जा सकते हैं।

पूर्ण-मेव

१. न्य और रूप के स्थान में न्य होता है; यथा—पद्मा = पद्म्या; ज्ञान = ज्ञमान; कथय = कथ्मय; अग्नि मय्यु = अग्निमय्यु; पुण्य = पुक्क्य।
२. छ और ण के स्थान में ण होता है, जैसे—गुण = गुण ण्मक = ण्मक।
३. व और व की जगह व होता है, जैसे—मगवती = मगवती; खट = खट; मयन = मयन; वैवन्तव = वैवन्तव।
४. लस्यर = लै वरजाता है; यथा—लील = लील कुल = कुल।
५. ड की जगह ड और ण होता है, जैसे—कुट्टयक, कुट्टयक, कुट्टयक।
६. महाप्राची के अक्षरों में असंयुक्त-व्यञ्जन-परिवर्तन के १ से १३, १४ और १६ लक्षणों को नियम कदापि गप है वे शौरसेनी भाषा में लागू होते हैं, किन्तु पैशाची में नहीं; यथा—ओक = ओक; याला = साला; सट = सट मट = मट; गरुड = गरुड; प्रतिमास = प्रतिमास कनक = कनक; उपप = उपप रेक = रेक राषक = राषक; यक्ष = यक्ष; यक्ष = यक्ष; अंगार = अंगार; वाह = वाह।
७. पाटश यावि अर्थों का इ परिवर्त होता है कि में; यथा—पाटश = याविस सटश = सविस।

नाम-विभक्ति

१. अक्षयम् अक्ष की पञ्चमी का पञ्चम्यन भाग और पालु होता है, जैसे—जिनातो, जिनातु।

व्याख्या

१. शौरसेनी के वि और रे प्रत्ययों की जगह वि और रे होता है, यथा—गच्छवि गच्छन; रमति, रमते।
२. अविष्य-अक्ष में ति के बगैरे एय हाता है, जैसे—अविष्यति = हुवेत्य।
३. भाव और कर्म में ईय तथा ह्य के स्थान में ह्य हाता है; यथा—पश्यते = पठित्यते हसित्यते।

ह्यन्त

१. ला प्रत्यय के स्थान में वही तुल और वही तुल और ह्य होते हैं; यथा पठित्वा = पठितुन; गत्वा = गतुन मट्वा = मट्पुन, नट्पुन; उट्वा = उट्पुन वट्पुन।

(३) वृत्तिप्राप्त्याची

चूल्हियापंथायी भाषा के कथन आचार्य हेमचन्द्र ने अपन माहृत-म्हाकरण में और पंडित लक्ष्मीधर ने अपनी पहभाषाचरित्र में दिए हैं। आचार्य हेमचन्द्र के कुमारपालचरित और अभ्यानुशासन में इस भाषा के निर्दान पाये जाते हैं। इनके अतिरिक्त हमीरमहाहन नामक नटक में और श-एक जोड़े-जोड़े पहभाषास्तोत्रों में भी इसके कुछ समन पंक्तन में आते हैं।

प्राकृतकण्व प्राकृतप्रकाश, संक्षिप्तसार और प्राकृतसंस्कृत कौशिक प्राकृत व्याकरणों में और मीमांसक अष्टाध्यायी में वृत्तिप्रदेशाधी का कोई उल्लेख नहीं है अब व आचार्य हेमचन्द्र ने और व इसीपर ने वृत्तिप्रदेशाधी के जो छह विप हैं वे ऋ, वररुचि, वयरीद्वार और मार्कण्डेय प्रवृत्ति वैयाकरणों ने पेशाधी भाषा के लक्षणों में ही अन्तर्गत किए हैं। इससे यह स्पष्ट जाना जाता है कि वह वैयाकरण-ग्रन्थ वृत्तिप्रदेशाधी को पेशाधी भाषा के अन्तर्गत ही मानने के स्वतन्त्र भाषा के रूप में नहीं। आचार्य हेमचन्द्र भी अपने अभिधानचिन्तामणि नामक संस्कृत कोष ग्रन्थ के पाठा पर संक्षेपिका (काष्ठ ११६६) इस वचन की 'संस्कृत-प्राकृत-भाषा-सीतेनी-पेशाकप्ररजससा' यह व्याख्या करते हुए वृत्तिप्रदेशाधी का अन्तर्गत करने नहीं करते। इससे मात्स्य पर्वत है कि व वृत्तिप्रदेशाधी को पेशाधी का ही एक भू मानत हैं। इसका भी यही मत है। इससे बर्हो पर इस विषय में पेशाधी भाषा के अन्तर्गत को विषय से कुछ अधिक ध्यान की व्यापकता नहीं रही। सिर्फ आचार्य हेमचन्द्र ने और बन्धी का पूरा अनुसरण कर ५० इसीपर न इस भाषा के जो छह विप हैं वे सीधे लक्ष्य किए जाते हैं। इनके सिवा सभी अंशों में 'स' भाषा का पेशाधी से कोई संबंध नहीं है।

संक्षेप

१. वार्ग के कृतीय और वस्तु के अर्थों के स्थान में क्रमशः प्रथम और द्वितीय होता है; यथा—मगर = मगर, व्याघ्र = व्याघ्र, राज्ञः = राजा निर्मल = निर्मल राजाग = राजाग, ठण्डा = ठण्डा मदन = मदन मसुर = मसुर, वासक = वासक, भगवती = भगवती।

२. र के स्थान में विकल्पिक स होता है, यथा—रु = रु, रु ।

(५) अर्धमराठी

महात्मा महावीर अपना बर्मापेहरा लक्ष्मणागमी भाषा में बोलें थे। इसी उपेहरा के अनुसार उनके समसामयिक गजपति ७ सुप्रसंगामो न लक्ष्मणागमी भाषा में ही भाषावाह-मण्डित-सुप्रसंगों की रचना की थी। वे प्रत्येक इस समय मिलें नहीं गए व परन्तु विजय परम्परा में कण्ट-पाठ द्वारा संक्षिप्त होते हैं। विगम्बर जैनों के मत से व समस्त प्रसन्न किशुल्य कापीन जैन पुत्रों की कथा लक्ष्मणागमी काटिआवाह) में ७८ वर्षावृद्धावस्था में वर्तमान आश्रम में स्थितवत् फिए। इस समय छिड़े जान पर भी इन प्रसंगों की भाषा प्राधान्य है। इसका एक कारण यह है कि जैसे ब्राह्मणों में कण्ट-पाठ-द्वारा बन्धु-शास्त्राधीन पर्यन्त वेदों की रक्षा की थी वैसे ही जन सुनियों ने भी अपनी शिष्य-परम्परा से सुप्रसंग-पाठ द्वारा कठिन एक हजार पर्व तक अपने इन पवित्र प्रसंगों को बाढ़ रखा था। दूसरा यह है कि जैन धर्म में सुत्र-पाठों के मुख्य ब्यवहार के लिए सुत्र और विद्या गया है, वहीं तक कि मात्रा या अक्षर के भी अशुद्ध या विरहीत ब्यवहार करने में दोष माना गया है। इस पर भी सुत्र-प्रसंगों की भाषा व लक्ष्मण निर्दिष्टावन वरन स इस बात का स्वीकार करना ही पड़ेगा कि महात्मा महावीर के समय की लक्ष्मणागमी भाषा ही महात्मा महावीर के समय की लक्ष्मणागमी भाषा थी।

१. धर्म वैचारकों के मन के बड़े निष्पक्ष राज्य के धर्म के धर्मों में बाध नहीं होता है (हि मा ४ ३२७)।

१ "मनसं च तं प्रत्यक्षणीयं ध्यामात् सम्प्रसादयन्" (मनसाध्यातं सुखं पश्य ३) ।

"तय लं तमसे बका मदापीरे दूणिप्यन रहणी निजिप्रवृत्तम्" - "अष्टमाध्याय आचार्य आसाह ।....." या वि य

१. 'अथ नाना धर्म्या, नूनं सर्वेन कथय्य विष्णुः (आचार्यविरचित)।

मागधी भाषा के इन प्रश्नों में, अज्ञातभाव से ही क्यों न हो भाषा-विषयक परिवर्तन अवश्य हुआ है। यह परिवर्तन होना जर्सीमव भी नहीं है, क्योंकि ये सूत्र-ग्रन्थ वेदों की तरह राज्य-प्रधान नहीं, किन्तु अर्थ-प्रधान हैं। इतना ही नहीं बल्कि ये ग्रन्थ जन-साधारण के बोध के लिये ही उस समय की कथ्य भाषा में रचे गये थे और कथ्य भाषा में समय गुजरने के साथ-साथ अक्षर्य होनेवाले परिवर्तन का प्रभाव कण्ठ-पाठ के रूप में स्थित इन सूत्रों की भाषा पर पड़ना अन्ततः उस उस समय के लोगों को समझने के लक्ष्य से भी, आवश्यक नहीं है। इसके सिवा, भाषा-परिवर्तन का यह भी एक मुख्य कारण माना जा सकता है कि भगवान् महाभारत के निर्वाण से करीब दो सौ वर्षों के बाद (ख्रिस्त-पूर्व २१०) चत्वारंगुप्त के राज्य कायम मगध देश में बारह वर्षों का सुदीर्घ अकाल पड़ने पर साधु लोगों को न्याय के लिये समुद्र-तीर-वर्षी प्रदेश (दक्षिण देश) में आना पड़ा था। उस समय वे सूत्र-ग्रन्थों का परिशीलन न कर सकने के कारण उन्हें मूल से गये। इससे अकाल के बाद पाटलिपुत्र में संपने एकत्रित होकर जिस-जिस साधु का जिस-जिस अङ्ग-ग्रन्थ का जो-जो अंश जिस-जिस आश्रम में याद रह गया था उस-उस से उस-उस अङ्ग-ग्रन्थ के उस-उस अंश को उस-उस रूप में प्राप्त कर ग्यारह अङ्ग-ग्रन्थों का संकलन किया। इस घटना से जैस अङ्ग-ग्रन्थों की भाषा के परिवर्तन का कारण समझ में आ सकता है, वैसे इन ग्रन्थों की वर्तमान भाषा में मगध के पार्श्वर्ती प्रबन्धों की भाषाओं की तुलना में दूरवर्षी महापद्मप्रदेश की भाषा का जो अधिक साम्य देखा जाता है उसके कारण का भी पता चलता है। जब ऐतिहासिक प्रमाणों से यह बात सिद्ध है कि दक्षिण प्रदेश में प्राचीन काल में जैन धर्म का अच्छी तरह प्रचार और प्रभाव हुआ था तब यह अनुमान करना अशुभ नहीं है कि उक्त धर्मैकलिक अकाल के समय साधु लोग समुद्र-तीर-वर्षी इस दक्षिण देश में ही गए थे और वहाँ उन्होंने उपदेश-द्वारा जैन धर्म का प्रचार किया था। यह कहने की कोई आवश्यकता नहीं है कि उक्त साधुओं को दक्षिण प्रदेश में उस समय जो भाषा प्रचलित थी वसन्त अच्छी तरह ज्ञात हो गया था, क्योंकि उसके बिना उपदेश द्वारा धर्म-प्रचार का कार्य वे कर ही नहीं सकते थे। इससे यह अस्मभव नहीं है कि उक्त साधुओं की इस नव-वर्णित भाषा का प्रभाव उनके कण्ठ-स्थित सूत्रों की भाषा पर भी पड़ा था। इसी प्रभाव को देखकर हमें से कई एक साधु-लोग पाटलिपुत्र के उक्त संमेलन में उपस्थित हुए थे जिससे अहाँ के पुनः संकलन में उस प्रभाव ने न्यूनाधिक अंश में स्थान पाया था।

उक्त घटना से करीब आठ सौ वर्षों के बाद बस्मी (सौराष्ट्र) और मधुर में जैन ग्रन्थों को लिपि बद्ध करने के लिये मुनि-समेलन किया गया था, क्योंकि इन सूत्र-ग्रन्थों का और उस समय तक अन्य को जैन ग्रन्थ रचे गए थे उनको भी क्रमशः बिस्मरण हो गया था और यदि वही ब्रह्मा कुछ अधिक समय तक चालू रखी तो समग्र जैन शास्त्रों के बोध हो जाने का डर था जो वास्तव में सत्य था। संभवतः इस समय तक जैन साधुओं का भारतवर्ष के अनेक प्रदेशों में विस्तार हो चुका था और इन समस्त प्रदेशों से बह्मणाधिक संख्या में आकर साधु लोगों ने इन संमेलनों में योगदान किया था। मिस्र-मिस्र प्रदेशों से आया इन मुनियों से जो ग्रन्थ अथवा ग्रन्थ के अंश जिस रूप में प्राप्त हुआ उसी रूप में यह लिपि-बद्ध किया गया। उक्त मुनियों के मिस्र-मिस्र प्रदेशों में विर-काल तक विचरने का कारण इन प्रदेशों का मिस्र-मिस्र भाषाओं का,

१ "मुमुक्षु विधिनाम कतिपयव्याप्तिवर्णितम् ।

वीमावकाशालं पादमधुरं त्रिलोचनम् ।

(भाषापरितर्क में वीरमालासूरि द्वारा उद्धृत की हुई प्राचीन भाषा) ।

२ "वसन्तमधुराणी नृणां वारिचकणि कालम् ।

अनुपहारं तल्लवः त्रिदण्डं प्रकृतं ह्यम् ।

(हरिहरपुरी की वसन्तकालिक टीका में वीर हेमचन्द्र के काव्यानुशासन में उद्धृत प्राचीन श्लोक) ।

३ See Annual Report of Asiatic Society Bengal 1896 में डॉ. हार्निल का लेख ।

४ "इत्यहं तस्मिन् बुद्धाले कपले क्लमपविषत् । निबन्धनं साधुब्रह्मलौक्योपनिषदम् ॥१२॥

अनुपममार्गं तु तथा साधुनां तिसृषु धृतम् । धनमपगतो नृपयवनीर्धं वीरवापि ॥१३॥

संपन्नं पद्मोत्तरे बुद्धावन्तैश्चिन्तोपनिषत् । यरङ्गाभ्ययनीर्देशास्तस्य कथं वतावरे ॥१४॥

तदवैकल्यं तद्गतिं धीर्योपनिषत् । तदा । दृष्टवार्तिमिति च तत्त्वो किञ्चिद्विचिन्तयत् ॥१५॥

महासंन्यासीनं महाभारतं च धृतिम् । शाला वीर समाह्वानं तदा प्रीत्युत्पन्नम् ॥१६॥

(विविधपत्रिकापिठं वर्ष २) ।

वजारणों का और विभिन्न प्रमुख भाषाओं के व्याकरणों का कुछ-न-कुछ लक्षित प्रभाव बनने काष्ठ-स्थित धर्म-ग्रन्थों की भाषा पर भी पड़ना अनिवार्य था। यही कारण है कि धर्म-ग्रन्थों में, एक ही अङ्ग-ग्रन्थ के अलग-अलग अंशों में और यही-ही तो एक ही अङ्ग-ग्रन्थ के एक ही भाष्य में परस्पर भाषा भेद नजर आता है। संभवतः भिन्न-भिन्न प्रदेशों की भाषाओं के प्रभाव से कुछ इसी भाषा-भेद की खोज में सेक्टर जित्त की सप्तम सलाखी के प्रभावपर धीरे-धीरे साधारण ने अपनी निरीक्षण-बुद्धि में धर्मग्रन्थों की भाषा का "पठ्यासच्छेदनातिवर्तना या घटाना" वह वैश्विक सङ्ग्रह किया है। भाषा-परिवर्तन के लक्ष्य के लक्ष्य प्रकट कारण उपस्थित होने पर भी अंग-ग्रन्थों की धर्मग्रन्थों की भाषा में पाठ्यपुत्र के संस्करण के बाद से, आसुष्ट का अधिक परिवर्तन न होकर उसके लक्ष्य जो सूत्र या अथवा ही भाषा-भेद हुआ है और सैद्धों की वादा में उसके प्राचीन रूप अपने लक्ष्य आधार में जो संश्लेष या सके है उससे भेद सुनों के अङ्ग वजारण आदि के लिए प्रदर्शित पाप-ग्रन्थ के लक्ष्य प्राचीन नियम को है जो संभवतः पाठ्यपुत्र के संस्करण के बाद निर्मित या दृष्ट किया गया था।

महोदय पर प्रसंग-वश इस बात का उल्लेख करना उचित प्रतीत होता है कि 'समाचारों' में विविध अंग-प्रत्य-
सम्बन्धी विषय और परिमाण का वर्तमान अङ्क-प्रयोगों में कहीं-कहीं जो बाधा-बहुत कमरा बिस्तार और हास पाया जाना
है और अङ्क-प्रयोगों में ही बाद के 'व्याख्या'ओं का और बाद की 'प्रस्तावों' का जो उल्लेख दृष्टिपूर्वक होता है उसका
समाधान भी हमारे एक सम्प्रदायों की कल्पनाओं से अच्छी तरह मिल जाता है।

“सप्तमापाङ्ग सूत्र व्याख्याप्रकृति सूत्र औपपादिक सूत्र और प्रज्ञापना सूत्र में तथा अस्यान्य प्राचीन जैन ग्रन्थों में जिस भाषा को अर्धमागधी नाम दिया गया है, त्यागाङ्गसूत्र और अनुपाङ्गसूत्र में जिस भाषा को ‘श्रुतिमापिता’ कहा गया है और सम्भवतः इसी ‘श्रुतिमापिता’ पर से ‘आचार्य हेमचन्द्र’ बानि ने जिस भाषा की आर्य-वर्णमापी और आर्य-एक है (श्रुतियों की भाषा) संज्ञा रखी है वह वस्तुतः एक ही भाषा है अर्थात् अर्धमागधी, श्रुतिमापिता और आर्य ये तीनों एक ही भाषा के निम्न-निम्न नाम हैं, जिनमें परस्पर इसके उत्पत्ति-स्वात से और बाकी के दो इस भाषा के सप्त-प्रथम साहित्य में स्थान देनेवाले से सम्बन्ध रखते हैं। जैन धर्म की भाषा यही अर्ध-मागधी, श्रुतिमापिता वा आर्य है। आचार्य हेमचन्द्र ने अपने प्राकृत-व्याकरण में वहाँ प्राकृत के जो व्यंजन और वृत्तारज

१. अमरावती नदी पत्र १ ६ से १२३।

२. “ब्रह्मा पश्यन्नायं ब्रह्मण्येवास्तीत्युच्यते” (व्याख्याप्रवृत्तिः कृष्ण १ : १—अथ १६) ।

१. ऐसी स्थिति में नृप ५२ में वर्णित विधान-संग्रह ।

- ४ कैथी गड १६ में स्थित गुप्ता समवायानुसूच प्रीर अतिपाठिकसुत्र का पठ

पैसा लुं भिं । बरअए पाबअए पाबअि ? कयअ बा माता पाबिअमाएरी निमिअरि ? सोमा । पैसा लुं कअमाअमाअ
पाबअए माअिं ताबि ब लुं अअमाअमा अता पाबिअमाएरी निमिअरि । (माअमाअमाअिअ ४, ४—५ १११)

“दे किं तं महापरिणामं ? महापरिणामं हि यं जगत्समाग्राह्यं भावस्य भवति” (महापरिणामसूत्र १—पत्र १३)

नरसुखविष्णुनाथसिंहस्य अग्रसमागच्छ, मनुष्यप्रैतिकाशासिकस्य वा अग्रसमागच्छ" (मिथीबहासि) ।

“घरिबबन्धे छिन्हें लोखें अइमागहा बानी” (अभ्यासकार की बनिहाउवादीय २, १३)

“हर्षार्थमागधी हर्षकषान्दु हरिषुपमिनीम् ।

सर्वेषां सर्वेष्टी वाचं सर्वेष्टी प्रविरह्यते ॥ (वाग्व्याक्याय्यसूत्रम्, १४४ पृ.)

६. "सदृशं वापसां विव दृष्ट्वा भवितुमीदं चाश्लेष ।

ब्रह्मेणैव विद्यते न कदा इति भासिता ॥” (स्वात्मसूत्र ४—वच ३३४) ।

आदवा बाबबा येव कलिईपो होति कोटिछा बा ।

सर्वव्याप्त्यै विद्यते न कदा इतिमासिम् ॥* (मनुस्मृत्यनुव, पत्र १११)

१. रिजो, रिमपन्त-माहव्यापारुण्डा वा लुन १ ३०

“साबोपनार्त्तुम् न द्विषिषि आरुतं विदुः” (मित्रप्रणयार्थीतः शत्रुं काम्यनर्तयिष्या ? इह ये कथं विद्यां कुर्यान्वच्छिन्तयन्ति) ।

प्रथम एषीय के वचन में हमें यहाँ अपिष्ट करने की कोई आवश्यकता नहीं, इसी प्रकार के अन्त में महापट्टी से अर्धमागधी की विशेषताओं की जो संक्षिप्त सूची दी गई है वही पर्याप्त है। इसके अतिरिक्त डॉ. बनारसीदास की 'अर्धमागधी रीढ़' मुनि औरल्लवज्जी की 'जैन-सिद्धान्त कोश' और डॉ. पिरास का 'प्राकृत-व्याकरण' मौजूद है। जिनमें कमरा' अधिभूमिक संख्या में अर्धमागधी की विशेषताओं का संभव है। आचार्य हेमचन्द्र के ही प्राकृत-व्याकरण के 'आर्यम्' सूत्र से इसकी स्पष्ट और सर्व-सोपे-माही व्यापक व्याख्या से और अगह-अगह किए हुए आप के सोराहरज तकसे जो संसारी एषीय की निर्मुखा सिद्ध होती है। यदि आचार्य हेमचन्द्र द्वारा ही निर्दिष्ट की हुई हो-यक विशेषताओं के कारण बृद्धिप्रेरणा की लक्ष्य भाषा मानी जा सकती है अथवा अष्ट-सप्त विशेषताओं को केन्द्र धारिणी मागधी और पेशा की भाषाओं को मिस-भिन्न भाषा स्वीकार करने में आपत्ति नहीं की जा सकती, तो कोई बहस नहीं है कि वही व्याकरण के द्वारा प्रचलित रूप से व्यवहृत रूप से बर्णित हुई वही ही अनेक विशेषताओं का कारण आप या अर्धमागधी की मिस भाषा न बनी भाषा। तीसरी एषीय की अब यह भाव्य संस्कार है कि 'वही भाषा अर्धमागधी बनी जान पाय हो सकती है जिसमें मागधी भाषा का आभा भंग हो'। इसी भाव्य संस्कार का कारण योभी एषीय में बहुभूत निरीयभूमि के अर्धमागधी के प्रथम स्तर का सत्य और सोचा चपे मो लक्ष्य पंडित की समझ में नहीं आया है। इस भाव्य संस्कार का निराकरण और निरीयभूमि और द्वारा बनाए हुए अर्धमागधी का प्रथम स्तर का और उसके वास्तविक अर्थ का निर्देश इसी प्रकार में आगे बढकर अर्धमागधी के सूत्र की आलस्यता के समय किया जाएगा जिससे इन दोनों एषीयों के वक्तों को यहाँ सुझाने की आवश्यकता नहीं है। पाँचवीं एषीय की प्राचीन आचार्यों के द्वारा जैन ग्रन्थ-ग्रन्थों की भाषा के अर्थ में प्रयुक्त किए हुए प्राकृत' राज्य को 'महापट्टी' का अर्थ में पसंदने से ही हुई है। माधव पंडित है, पंडितजी ने जैसे अपने व्याकरण में 'प्राकृत' राज्य का कवक महापट्टी का किये रखने का रखा है, वैसे सभी प्राचीन आचार्यों के 'प्राकृत' राज्य को भी वे एकमात्र महापट्टी के ही अर्थ में सुझाकर किता हुआ समझ बैठे हैं। परन्तु यह समझ गलत है। प्राकृत राज्य का मुख्य अर्थ है प्रादेशिक कव्य भाषा—लोक-भाषा। प्राकृत राज्य की व्युत्पत्ति भी वास्तव में इसी अर्थ से संगति रखती है यह हम पहले ही अच्छा ठहर प्रमाणित कर चुके हैं। सिद्ध की पट्ट राधाजी के आचार्य एषीय ने अपने व्याख्याइसे में—

'तीरंजी न बीधे न बाधे भाषा न तस्यै। वाति प्राकृत्योर्लक्ष्यं व्याहारेषु प्रतिष्ठितम्।' (१ ३६)।

इन लक्ष्ये वक्तों में यही बात बरी है। इससे भी यह स्पष्ट है कि प्राकृत राज्य मुख्यतः प्रादेशिक लोक-भाषा का ही वाचक है और इससे माधवत सभी प्रादेशिक कव्य भाषाओं का अर्थ में इसका प्रयोग होया जाया है। एषीय के प्रथम तक के सभी प्राचीन ग्रंथों में इसी अर्थ में प्राकृत राज्य का व्यवहार देखा जाता है। सुत्र बंकी ने भी महापट्टी भाषा में प्राकृत राज्य के अंश का 'प्रकृत' शब्द से विशेषित करते हुए इसी बात का समर्थन किया है। एषीय के महापट्टी को 'प्राकृत प्राकृत' करने का बाव ही स विशेष प्रसिद्धि होने के कारण, महापट्टी के अर्थ में 'प्रकृत' शब्द को छोड़ कर केवल प्राकृत राज्य का ही प्रयोग हेमचन्द्र आदि किन्तु एषीय के पीछे के ही विद्वानों ने बनी बनी किया है। पंडितजी ने बरहमि के समय से लेकर पीछे के आचार्यों का महापट्टी के ही अर्थ में प्राकृत राज्य का व्यवहार करने की जो बात बच टिप्पणी में ही लिखी है उससे प्रतीत होता है कि उन्होंने न तो बरहमि का ही व्याकरण देखा है और न उनके पीछे के आचार्यों के ही ग्रंथों का निरीक्षण करने की कोशिश की है, क्योंकि बरहमि ने तो 'शैव व्यापट्टीय' (आकृत्यमस १२, ३२) करते हुए इस अर्थ में महापट्टी राज्य का ही प्रयोग किया है न कि प्राकृत राज्य का। आचार्य हेमचन्द्र ने भी कुमारविक्रमचरित में 'प्रापट्टी' का अर्थ (१ १) में बहुवचन का निर्देश कर और एषीयामागधी (१ ५) में 'लितेय' राज्यकाकार 'प्राकृत' का प्रयोग साधवत

- १ 'आपे प्राकृतं बहुधं सवति। तस्मिन् वचनानां वृत्तिव्यापः। आपे हि सर्वे विचनो विकृतव्यन्ते' (हि भा १ १)।
- २ 'को, हेमचन्द्र-प्राकृत व्याकरण के १ ५१; १ ६०; १ ७२; १ ११५; १ ११६; १ १५१; १ १७०; १ २२५; १ २५५; १ २७५; १ २८१; १ २८२; १ २८३; १ २८४; १ २८५; १ २८६; १ २८७; १ २८८; १ २८९; १ २९०; १ २९१; १ २९२; १ २९३; १ २९४; १ २९५; १ २९६; १ २९७; १ २९८; १ २९९; १ ३००; १ ३०१; १ ३०२; १ ३०३; १ ३०४; १ ३०५; १ ३०६; १ ३०७; १ ३०८; १ ३०९; १ ३१०; १ ३११; १ ३१२; १ ३१३; १ ३१४; १ ३१५; १ ३१६; १ ३१७; १ ३१८; १ ३१९; १ ३२०; १ ३२१; १ ३२२; १ ३२३; १ ३२४; १ ३२५; १ ३२६; १ ३२७; १ ३२८; १ ३२९; १ ३३०; १ ३३१; १ ३३२; १ ३३३; १ ३३४; १ ३३५; १ ३३६; १ ३३७; १ ३३८; १ ३३९; १ ३४०; १ ३४१; १ ३४२; १ ३४३; १ ३४४; १ ३४५; १ ३४६; १ ३४७; १ ३४८; १ ३४९; १ ३५०; १ ३५१; १ ३५२; १ ३५३; १ ३५४; १ ३५५; १ ३५६; १ ३५७; १ ३५८; १ ३५९; १ ३६०; १ ३६१; १ ३६२; १ ३६३; १ ३६४; १ ३६५; १ ३६६; १ ३६७; १ ३६८; १ ३६९; १ ३७०; १ ३७१; १ ३७२; १ ३७३; १ ३७४; १ ३७५; १ ३७६; १ ३७७; १ ३७८; १ ३७९; १ ३८०; १ ३८१; १ ३८२; १ ३८३; १ ३८४; १ ३८५; १ ३८६; १ ३८७; १ ३८८; १ ३८९; १ ३९०; १ ३९१; १ ३९२; १ ३९३; १ ३९४; १ ३९५; १ ३९६; १ ३९७; १ ३९८; १ ३९९; १ ४००; १ ४०१; १ ४०२; १ ४०३; १ ४०४; १ ४०५; १ ४०६; १ ४०७; १ ४०८; १ ४०९; १ ४१०; १ ४११; १ ४१२; १ ४१३; १ ४१४; १ ४१५; १ ४१६; १ ४१७; १ ४१८; १ ४१९; १ ४२०; १ ४२१; १ ४२२; १ ४२३; १ ४२४; १ ४२५; १ ४२६; १ ४२७; १ ४२८; १ ४२९; १ ४३०; १ ४३१; १ ४३२; १ ४३३; १ ४३४; १ ४३५; १ ४३६; १ ४३७; १ ४३८; १ ४३९; १ ४४०; १ ४४१; १ ४४२; १ ४४३; १ ४४४; १ ४४५; १ ४४६; १ ४४७; १ ४४८; १ ४४९; १ ४५०; १ ४५१; १ ४५२; १ ४५३; १ ४५४; १ ४५५; १ ४५६; १ ४५७; १ ४५८; १ ४५९; १ ४६०; १ ४६१; १ ४६२; १ ४६३; १ ४६४; १ ४६५; १ ४६६; १ ४६७; १ ४६८; १ ४६९; १ ४७०; १ ४७१; १ ४७२; १ ४७३; १ ४७४; १ ४७५; १ ४७६; १ ४७७; १ ४७८; १ ४७९; १ ४८०; १ ४८१; १ ४८२; १ ४८३; १ ४८४; १ ४८५; १ ४८६; १ ४८७; १ ४८८; १ ४८९; १ ४९०; १ ४९१; १ ४९२; १ ४९३; १ ४९४; १ ४९५; १ ४९६; १ ४९७; १ ४९८; १ ४९९; १ ५००; १ ५०१; १ ५०२; १ ५०३; १ ५०४; १ ५०५; १ ५०६; १ ५०७; १ ५०८; १ ५०९; १ ५१०; १ ५११; १ ५१२; १ ५१३; १ ५१४; १ ५१५; १ ५१६; १ ५१७; १ ५१८; १ ५१९; १ ५२०; १ ५२१; १ ५२२; १ ५२३; १ ५२४; १ ५२५; १ ५२६; १ ५२७; १ ५२८; १ ५२९; १ ५३०; १ ५३१; १ ५३२; १ ५३३; १ ५३४; १ ५३५; १ ५३६; १ ५३७; १ ५३८; १ ५३९; १ ५४०; १ ५४१; १ ५४२; १ ५४३; १ ५४४; १ ५४५; १ ५४६; १ ५४७; १ ५४८; १ ५४९; १ ५५०; १ ५५१; १ ५५२; १ ५५३; १ ५५४; १ ५५५; १ ५५६; १ ५५७; १ ५५८; १ ५५९; १ ५६०; १ ५६१; १ ५६२; १ ५६३; १ ५६४; १ ५६५; १ ५६६; १ ५६७; १ ५६८; १ ५६९; १ ५७०; १ ५७१; १ ५७२; १ ५७३; १ ५७४; १ ५७५; १ ५७६; १ ५७७; १ ५७८; १ ५७९; १ ५८०; १ ५८१; १ ५८२; १ ५८३; १ ५८४; १ ५८५; १ ५८६; १ ५८७; १ ५८८; १ ५८९; १ ५९०; १ ५९१; १ ५९२; १ ५९३; १ ५९४; १ ५९५; १ ५९६; १ ५९७; १ ५९८; १ ५९९; १ ६००; १ ६०१; १ ६०२; १ ६०३; १ ६०४; १ ६०५; १ ६०६; १ ६०७; १ ६०८; १ ६०९; १ ६१०; १ ६११; १ ६१२; १ ६१३; १ ६१४; १ ६१५; १ ६१६; १ ६१७; १ ६१८; १ ६१९; १ ६२०; १ ६२१; १ ६२२; १ ६२३; १ ६२४; १ ६२५; १ ६२६; १ ६२७; १ ६२८; १ ६२९; १ ६३०; १ ६३१; १ ६३२; १ ६३३; १ ६३४; १ ६३५; १ ६३६; १ ६३७; १ ६३८; १ ६३९; १ ६४०; १ ६४१; १ ६४२; १ ६४३; १ ६४४; १ ६४५; १ ६४६; १ ६४७; १ ६४८; १ ६४९; १ ६५०; १ ६५१; १ ६५२; १ ६५३; १ ६५४; १ ६५५; १ ६५६; १ ६५७; १ ६५८; १ ६५९; १ ६६०; १ ६६१; १ ६६२; १ ६६३; १ ६६४; १ ६६५; १ ६६६; १ ६६७; १ ६६८; १ ६६९; १ ६७०; १ ६७१; १ ६७२; १ ६७३; १ ६७४; १ ६७५; १ ६७६; १ ६७७; १ ६७८; १ ६७९; १ ६८०; १ ६८१; १ ६८२; १ ६८३; १ ६८४; १ ६८५; १ ६८६; १ ६८७; १ ६८८; १ ६८९; १ ६९०; १ ६९१; १ ६९२; १ ६९३; १ ६९४; १ ६९५; १ ६९६; १ ६९७; १ ६९८; १ ६९९; १ ७००; १ ७०१; १ ७०२; १ ७०३; १ ७०४; १ ७०५; १ ७०६; १ ७०७; १ ७०८; १ ७०९; १ ७१०; १ ७११; १ ७१२; १ ७१३; १ ७१४; १ ७१५; १ ७१६; १ ७१७; १ ७१८; १ ७१९; १ ७२०; १ ७२१; १ ७२२; १ ७२३; १ ७२४; १ ७२५; १ ७२६; १ ७२७; १ ७२८; १ ७२९; १ ७३०; १ ७३१; १ ७३२; १ ७३३; १ ७३४; १ ७३५; १ ७३६; १ ७३७; १ ७३८; १ ७३९; १ ७४०; १ ७४१; १ ७४२; १ ७४३; १ ७४४; १ ७४५; १ ७४६; १ ७४७; १ ७४८; १ ७४९; १ ७५०; १ ७५१; १ ७५२; १ ७५३; १ ७५४; १ ७५५; १ ७५६; १ ७५७; १ ७५८; १ ७५९; १ ७६०; १ ७६१; १ ७६२; १ ७६३; १ ७६४; १ ७६५; १ ७६६; १ ७६७; १ ७६८; १ ७६९; १ ७७०; १ ७७१; १ ७७२; १ ७७३; १ ७७४; १ ७७५; १ ७७६; १ ७७७; १ ७७८; १ ७७९; १ ७८०; १ ७८१; १ ७८२; १ ७८३; १ ७८४; १ ७८५; १ ७८६; १ ७८७; १ ७८८; १ ७८९; १ ७९०; १ ७९१; १ ७९२; १ ७९३; १ ७९४; १ ७९५; १ ७९६; १ ७९७; १ ७९८; १ ७९९; १ ८००; १ ८०१; १ ८०२; १ ८०३; १ ८०४; १ ८०५; १ ८०६; १ ८०७; १ ८०८; १ ८०९; १ ८१०; १ ८११; १ ८१२; १ ८१३; १ ८१४; १ ८१५; १ ८१६; १ ८१७; १ ८१८; १ ८१९; १ ८२०; १ ८२१; १ ८२२; १ ८२३; १ ८२४; १ ८२५; १ ८२६; १ ८२७; १ ८२८; १ ८२९; १ ८३०; १ ८३१; १ ८३२; १ ८३३; १ ८३४; १ ८३५; १ ८३६; १ ८३७; १ ८३८; १ ८३९; १ ८४०; १ ८४१; १ ८४२; १ ८४३; १ ८४४; १ ८४५; १ ८४६; १ ८४७; १ ८४८; १ ८४९; १ ८५०; १ ८५१; १ ८५२; १ ८५३; १ ८५४; १ ८५५; १ ८५६; १ ८५७; १ ८५८; १ ८५९; १ ८६०; १ ८६१; १ ८६२; १ ८६३; १ ८६४; १ ८६५; १ ८६६; १ ८६७; १ ८६८; १ ८६९; १ ८७०; १ ८७१; १ ८७२; १ ८७३; १ ८७४; १ ८७५; १ ८७६; १ ८७७; १ ८७८; १ ८७९; १ ८८०; १ ८८१; १ ८८२; १ ८८३; १ ८८४; १ ८८५; १ ८८६; १ ८८७; १ ८८८; १ ८८९; १ ८९०; १ ८९१; १ ८९२; १ ८९३; १ ८९४; १ ८९५; १ ८९६; १ ८९७; १ ८९८; १ ८९९; १ ९००; १ ९०१; १ ९०२; १ ९०३; १ ९०४; १ ९०५; १ ९०६; १ ९०७; १ ९०८; १ ९०९; १ ९१०; १ ९११; १ ९१२; १ ९१३; १ ९१४; १ ९१५; १ ९१६; १ ९१७; १ ९१८; १ ९१९; १ ९२०; १ ९२१; १ ९२२; १ ९२३; १ ९२४; १ ९२५; १ ९२६; १ ९२७; १ ९२८; १ ९२९; १ ९३०; १ ९३१; १ ९३२; १ ९३३; १ ९३४; १ ९३५; १ ९३६; १ ९३७; १ ९३८; १ ९३९; १ ९४०; १ ९४१; १ ९४२; १ ९४३; १ ९४४; १ ९४५; १ ९४६; १ ९४७; १ ९४८; १ ९४९; १ ९५०; १ ९५१; १ ९५२; १ ९५३; १ ९५४; १ ९५५; १ ९५६; १ ९५७; १ ९५८; १ ९५९; १ ९६०; १ ९६१; १ ९६२; १ ९६३; १ ९६४; १ ९६५; १ ९६६; १ ९६७; १ ९६८; १ ९६९; १ ९७०; १ ९७१; १ ९७२; १ ९७३; १ ९७४; १ ९७५; १ ९७६; १ ९७७; १ ९७८; १ ९७९; १ ९८०; १ ९८१; १ ९८२; १ ९८३; १ ९८४; १ ९८५; १ ९८६; १ ९८७; १ ९८८; १ ९८९; १ ९९०; १ ९९१; १ ९९२; १ ९९३; १ ९९४; १ ९९५; १ ९९६; १ ९९७; १ ९९८; १ ९९९; १ १०००; १ १००१; १ १००२; १ १००३; १ १००४; १ १००५; १ १००६; १ १००७; १ १००८; १ १००९; १ १०१०; १ १०११; १ १०१२; १ १०१३; १ १०१४; १ १०१५; १ १०१६; १ १०१७; १ १०१८; १ १०१९; १ १०२०; १ १०२१; १ १०२२; १ १०२३; १ १०२४; १ १०२५; १ १०२६; १ १०२७; १ १०२८; १ १०२९; १ १०३०; १ १०३१; १ १०३२; १ १०३३; १ १०३४; १ १०३५; १ १०३६; १ १०३७; १ १०३८; १ १०३९; १ १०४०; १ १०४१; १ १०४२; १ १०४३; १ १०४४; १ १०४५; १ १०४६; १ १०४७; १ १०४८; १ १०४९; १ १०५०; १ १०५१; १ १०५२; १ १०५३; १ १०५४; १ १०५५; १ १०५६; १ १०५७; १ १०५८; १ १०५९; १ १०६०; १ १०६१; १ १०६२; १ १०६३; १ १०६४; १ १०६५; १ १०६६; १ १०६७; १ १०६८; १ १०६९; १ १०७०; १ १०७१; १ १०७२; १ १०७३; १ १०७४; १ १०७५; १ १०७६; १ १०७७; १ १०७८; १ १०७९; १ १०८०; १ १०८१; १ १०८२; १ १०८३; १ १०८४; १ १०८५; १ १०८६; १ १०८७; १ १०८८; १ १०८९; १ १०९०; १ १०९१; १ १०९२; १ १०९३; १ १०९४; १ १०९५; १ १०९६; १ १०९७; १ १०९८; १ १०९९; १ ११००; १ ११०१; १ ११०२; १ ११०३; १ ११०४; १ ११०५; १ ११०६; १ ११०७; १ ११०८; १ ११०९; १ १११०; १ ११११; १ १११२; १ १११३; १ १११४; १ १११५; १ १११६; १ १११७; १ १११८; १ १११९; १ ११२०; १ ११२१; १ ११२२; १ ११२३; १ ११२४; १ ११२५; १ ११२६; १ ११२७; १ ११२८; १ ११२९; १ ११३०; १ ११३१; १ ११३२; १ ११३३; १ ११३४; १ ११३५; १ ११३६; १ ११३७; १ ११३८; १ ११३९; १ ११४०; १ ११४१; १ ११४२; १ ११४३; १ ११४४; १ ११४५; १ ११४६; १ ११४७; १ ११४८; १ ११४९; १ ११५०; १ ११५१; १ ११५२; १ ११५३; १ ११५४; १ ११५५; १ ११५६; १ ११५७; १ ११५८; १ ११५९; १ ११६०; १ ११६१; १ ११६२; १ ११६३; १ ११६४; १ ११६५; १ ११६६; १ ११६७; १ ११६८; १ ११६९; १ ११७०; १ ११७१; १ ११७२; १ ११७३; १ ११७४; १ ११७५; १ ११७६; १ ११७७; १ ११७८; १ ११७९; १ ११८०; १ ११८१; १ ११८२; १ ११८३; १ ११८४; १ ११८५; १ ११८६; १ ११८७; १ ११८८; १ ११८९; १ ११९०; १ ११९१; १ ११९२; १ ११९३; १ ११९४; १ ११९५; १ ११९६; १ ११९७; १ ११९८; १ ११९९; १ १२००; १ १२०१; १ १२

श्लोक-भाषा के ही अर्थ में ही किया है। आचार्य वृष्ठी और हेमचन्द्र ही नहीं, बल्कि सिद्ध की नववीं शताब्दी के कवि राजसेन, ग्यारहवीं शताब्दी के नमिसाधु, बाराहसी शताब्दी के प्रेमचन्द्रकृतगीता प्रसूति प्रभूत जैन और जैनोत्तर विद्वानों ने इसी अर्थ में प्राकृत शब्द का प्रयोग किया है। इस तरह जब यह अभिप्राय सत्य है कि प्राचीन काल से लेकर आधुनिक प्राकृत राज्य प्रादेशिक कल्प भाषा के अर्थ में व्यवहृत होता आया है और इसका मुख्य और प्राचीन अर्थ साधारणतः सभी और बिरोध कोई भी प्रादेशिक भाषा है, तब प्राचीन आचार्यों द्वारा मगधान महावीर की उपदेश भाषा के और उनके समसामयिक शिष्य सुषर्म्मस्वामि-प्रणीत जैन सूत्रों की भाषा के ही अभिप्राय में प्रयुक्त किए हुए 'प्राकृत' शब्द का 'अर्थ मगध-प्रदेश (वहाँ मगध महावीर और सुषर्म्मस्वामी का उपदेश और निष्पन्न होता प्रसिद्ध है) की श्लोक-भाषा (अर्थमागधी)' इस सुसंगत अर्थ को जोड़ कर भाषा से सुदूरवर्ती प्रदेश 'महापट्ट' (वहाँ न तो मगध महावीर का और न सुषर्म्मस्वामी का ही अर्थ या बिहार होता जाता था) की भाषा (महापट्टी) यह असंगत अर्थ लगाना, अपनी हीन विवेचना शक्ति का परिचय देना है। इसी सिद्धिसे मैं पंडितजी ने अनुयोगद्वारा सूत्र की एक अपूर्ण गाथा उद्धृत की है। यदि वह पंडितजी अनुयोगद्वारा की गाथा के पूर्णार्थ का यहाँ पर हल्लेख करने के पहले इस गाथा के मूल स्थान को ढूँढ़ पात और वे प्राकृत शब्द से जिस भाषा (महापट्टी) का ग्रहण करते हैं इसके और प्राचीन सूत्रों की अर्थमागधी भाषा के इतिहास को न जानन हुए भी सिर्फ चत्वार्ष-सहित इस गाथा पर ही प्रकरण-संगति के साथ अथ गौर से विचार करने का फल उठाते तो हमारा यह विश्वास है कि वे कम से कम इस गाथा का यहाँ हुआ अर्थ देने का सख्त और अनुयोगद्वारा के कर्त्ता पर अर्थमागधी का विस्मरण का व्यक्त-भाषा छोड़ने की वृत्ता क्षान्ति नहीं कर पाते। क्योंकि इस गाथा का मूल स्थान है द्वावी अर्ध-ग्रन्थ जिसका नाम स्थानाङ्ग-सूत्र है। इसी स्थानाङ्ग-सूत्र का सम्पूर्ण स्वर प्रकरण को अनुयोगद्वारा-सूत्र में उद्धृत किया गया है जिसमें वह गाथा भी शामिल है। वह सम्पूर्ण गाथा इस तरह है :—

“संस्कृतं पाठ्यं येन ब्रह्म मणिर्यो बाह्वि । सर्वमस्मिन्नि विवर्तते पठता इतिमासिता ।”

इसका शाब्दार्थ है—“संस्कृत और प्राकृत के दो प्रकार की भाषाएँ कही गई हैं, गाये जाते स्वर-समूह (वर्ण-मण्डल) में क्षतिपातिता—भार्य भाषा प्रशस्त है।” यहाँ पर प्रकरण है सामान्यतः गीत की भाषा का। वर्तमान समय की तरह उस समय भी सभी भाषाओं में गीत होते थे। इससे यहाँ पर इन सभी भाषाओं का निर्देश करना ही सूत्रकार का अभिप्रेत है जो उन्होंने संस्कृत—व्याकरण-संस्कार मुक्त भाषा और प्राकृत—व्याकरण-संस्कार-रहित—श्लोक-भाषा इन दो मुख्य विभागों में किया है। इस तरह इस गाथा में पहले गीत की भाषाओं का सामान्य रूप से निर्देश कर बाद में इन भाषाओं में जो प्रशस्त है वह क्षतिपातिता” इस विषय रूप से बताई गई है। यदि यहाँ पर प्राकृत शब्द का प्रादेशिक श्लोक-भाषा यह सामान्य अर्थ न संकर पंडितजी के पठनानुसार ‘महापट्टी’ यह विशेष अर्थ लिया जाय तो गीत की सभी भाषाओं का निर्देश, जो सूत्रकार का करना आवश्यक है कैसे हो सकता है ? क्या उस समय अन्य श्लोक-भाषाओं में गीत होते ही न थे ? गीत का ठेका क्या संस्कृत और महापट्टी इन दो भाषाओं को ही मिला हुआ था ? यह कभी संभावित नहीं है। इसी गाथा के उत्तरार्ध के “पठता इतिमासिता” इस पठन से अर्थमागधी की सूचना ही नहीं बल्कि इसका भ्रमण भी सूत्रकार ने स्पष्ट रूप में बताया है। इससे पंडितजी के उस कथन में कुछ भी संशय गहर नहीं जाता है, जो उनके सूत्रकार का अर्थमागधी की अलग सूचना न करने के बारे में किया गया है।

जैसे वीरसूत्रों की मागधी (पाकि) संनाथ शास्त्र या प्राकृत-व्याकरणों में निविष्ट मागधी मिला है वैसे जैन सूत्रों की अर्थमागधी से नाथ-शास्त्र की या प्राकृत व्याकरणों की अर्थमागधी भी अलग है। इससे वीरसूत्रों की मागधी नाथ-शास्त्र या प्राकृत-व्याकरणों की मागधी से भिन्न न रहने के कारण जैसे महापट्टी न कही जाकर मागधी कही जाती है वैसे जैन सूत्रों की अर्थमागधी भाषा भी नाथ शास्त्र या प्राकृत-व्याकरणों की अर्थमागधी से समान न होने की वजह से ही महापट्टी न कही जाकर अर्थमागधी ही कही जा सकती है।

१ ‘अस्यो सप्तक-वर्त्तो पाठ्य-वर्त्तोय होइ मुन्यार्थ’ (कुरंगमन्त्र टीका १)।

२ ‘सूत्रेण्यपि प्राकृतवर्त्तय तथा प्राकृतवर्त्तयपय य’ (कात्यायन-टीका १, १२)।

३ ‘अर्थमागधे प्राकृतभाषायां’—(कात्यायन-टीका १ ११), ‘तादृशीयेनैव वैतानोपसृतिता’ सर्वा एव भाषाः प्राकृतवर्त्तनोपसृतिता इति सुचितम्’ (कात्यायन-टीका १ ११)।

मरत-रचित कहे जाते नाट्य-शास्त्र में जिन साठ मापाओं का उल्लेख है उनमें एक अर्धमागधी भी है।^१ इसी नाट्यशास्त्र में नाटकों के नीकर, राजपुत्र और भेरी इन पात्रों के लिए इस भाषा का प्रयोग निर्दिष्ट किया गया है। इससे नाटकों में इन पात्रों की जो भाषा है वह अर्धमागधी रही जाती है। परन्तु नाटकों की अर्धमागधी वीर जैन सूत्रों की अर्धमागधी में परस्पर समानता की अपेक्षा इतना अधिक है कि यह एक दूसरे से अभिन्न कभी नाटकीय अर्धमागधी नहीं रही जा सकती। मार्कण्डेय ने अपने प्राकृत-व्याकरण में मागधी भाषा के उद्गम बताकर उसी जैन-सूत्रों की अर्धमागधी प्रकरण का रूप में अर्धमागधी भाषा का यह लक्षण कहा है—“तौरेण्णा वरुणपरिवर्त्तमानाया”^२ से जिन है अर्थात् वीरसेनी भाषा के निरुद्ध-वर्ती होने के कारण मागधी ही अर्धमागधी है। इस उद्गम के अनन्तर उन्होंने उक्त नाट्य-शास्त्र के इस वचन को उद्धृत किया है, जिसमें अर्धमागधी के प्रयोगों पात्रों का निर्देश है और इसके बाद उदाहरण के तौर पर वेणीसहार की राक्षसी की एक उक्ति का उल्लेख कर अर्धमागधी का प्रकरण करने किता है। इससे यह स्पष्ट साह्य होता है कि मरत का अर्धमागधी-विवयक उक्त वचन और मार्कण्डेय का अर्धमागधी-विवयक उक्त उद्गम नाटकीय अर्धमागधी के लिए ही रचित है; जैन सूत्रों की अर्धमागधी के साथ इसका कोई संबंध नहीं है। क्रमवीर ने अपने प्राकृत-व्याकरण में अर्धमागधी का जो उद्गम किया है वह यह है—“महापदीमिषत् रत्नसौ” अर्थात् महापदी से मिलित मागधी भाषा ही अर्धमागधी है। जान पड़ता है क्रमवीर का यह लक्षण भी नाटकीय अर्धमागधी के लिए ही प्रयोग है, क्योंकि उक्त नाट्यशास्त्र में जिन पात्रों के लिए अर्धमागधी के प्रयोग का निम्न बताया गया है, उनमें नाटकों में इन पात्रों की भाषा मिलित मिलित है।^३ संभवतः इसी मिश्रता के कारण ही क्रमवीर ने वीर मार्कण्डेय ने अर्धमागधी के मिश्र-मिश्र उद्गम किए हैं।

जब हम पहले कह चुके हैं, जैन सूत्रों की अर्धमागधी में इन मापाओं की अपेक्षा महापदी के उद्गम अधिक देखने में आते हैं। किन्तु यह याद रखना चाहिए कि यह लक्षण साहित्यिक महापदी से जैन अर्धमागधी में नहीं आते हैं। इसका कारण यह है कि जैन सूत्रों की अर्धमागधी भाषा साहित्यिक महापदी भाषा से अधिक प्राचीन है और इससे पुरी (अर्धमागधी) महापदी का मूल रही जा सकती है।^४ बौद्धों ने जैन अर्धमागधी महापदी से अर्धमागधी का ही भाव प्राकृत कहाकर इसका परस्पर काट में उत्पन्न नाटकीय अर्धमागधी, महापदी और वीरसेनी भाषाओं का मूल माना है। आचार्य हेमचन्द्र ने अपने प्राकृत-व्याकरण में महापदी नाम में एक प्राकृत के सामान्य नाम से एक भाषा के उद्गम दिए हैं और उनके उदाहरण साधारण तौर पर अर्धमागधी-साहित्य से उद्धृत किए हैं; परन्तु जहाँ अर्धमागधी के प्राचीन जैन सूत्रों से उदाहरण दिए हैं वहाँ इसका भाव प्राकृत का जिसका नाम दिया है। इससे प्रतीत होता है कि आचार्य हेमचन्द्र ने भी एक ही भाषा के प्राचीन रूप का भाव प्राकृत और अर्धमागधी रूप का महापदी मानते हुए भाव प्राकृत को महापदी का मूल स्वीकार किया है।

नाटकीय अर्धमागधी में मागधी भाषा के उद्गम अधिकांश में पाये जाते हैं। इससे मागधी से ही अर्धमागधी भाषा की उत्पत्ति हुई है और जैन सूत्रों की भाषा में मागधी के उद्गम अधिक न मिलने से वह अर्धमागधी कहाकरने योग्य नहीं। वह जो भाषा संसार के लोगों के मन में जमा हुआ है, उसका मूल है अर्धमागधी भाषा को मागधी भाषा के अर्थों

१ “मागधपरिवर्त्तना शब्दा वरुणपरिवर्त्तना। बाह्यीया वरुणपरिवर्त्तना न मरत भाषा प्रतीयते” (१७ ४५)।

२ “वेदतो यमपुत्राणां वरुणो वरुणपरिवर्त्तना” (मरुदेव नाट्यशास्त्र निर्णयभाष्ये उल्लेख १० १)।

वरुणदेव ने अपने व्याकरण में इस विषय में मरत का नाम देकर जो वचन उद्धृत किया है वह इस तरह है—“उदासी-वर्त्तितानुवर्त्तितवर्त्तना” इति मरत” का प्रमाण देता होता है।

३ शाक्यवर्त्तन (उप १ ३)।

४ उक्तिवार (उप १०)।

५ देवी मरत-उक्ति कहते हैं “मरत” और “मरतमरत” में क्रमशः केर तथा केरी की जगह वीर सूत्र के “मरुदेव” में केर और पक्षी मरुदेव की जगह।

६ “It thus seems to me very clear that the Prākṛit of Chanda is the ARSHTA or ancient (Purana) form of the Ardhamāgadhī Mahāśāstrī and Sauraseni.” (Introduction to Prākṛita Lokasana of Chanda, Page XIX).

तद्धित

१. वर प्रत्यय का वचन रूप होता है, यथा—पण्डितवरम्, मन्त्रवरम्, बहुवरम् अथवरम् इत्यादि ।
 २. पाचको पाचनको सोमी, बुधिमं मनबुधो, पुरीषम पचरिषम प्रीयसी दीविछो, कोरेवच आदि प्रयोगों में मधुप्, और अन्य तद्धित प्रत्ययों के जैसे रूप जैन अर्धमागधी में वृत्त जाते हैं, महापट्टी में वे मिलन तरह के होते हैं ।

महापट्टी से जैन अर्धमागधी में इनके अतिरिक्त और भी अनक सूक्ष्म भेद हैं, जिनका वस्तुस्थिति विस्तार-भय से यहाँ नहीं किया गया है ।

(५) जैन महाराष्ट्री

जैन सूत्र-ग्रन्थों के सिवा श्वेताम्बर जैनों के रचे हुए अन्य ग्रन्थों की प्राकृत भाषा को 'जैन महाराष्ट्री' नाम दिया जान-निश्चय और गया है । इस भाषा में तीर्थंकर और प्राचीन मुनियों के चरित्र, कथाएँ, दूरान, तर्क व्योत्पत्ति, मूर्तोल, साहित्य स्तुति आदि विषयों का विशाल साहित्य विद्यमान है ।

प्राकृत के प्राचीन वैयाकरणों ने 'जैन महाराष्ट्री' यह नाम देकर किसी मिलन भाषा का चल्ते-चल नहीं किया है । किन्तु आधुनिक पाश्चात्य विद्वानों ने व्याकरण, धर्म्य और नाटक-ग्रन्थों में महाराष्ट्री का जो रूप देखा जाता है उससे श्वेताम्बर जैनों के प्राचीन की भाषा में कुछ कुछ पार्यवय वृत्त कर इसका 'जैन महाराष्ट्री' नाम दिया है । इस भाषा में प्राकृत-व्याकरणों में बताये हुए महाराष्ट्री भाषा के लक्षण क्रोश रूप से मीसूत होने पर भी जैन अर्धमागधी का बहुत-कुछ प्रभाव इसका जाता है ।

जैन महाराष्ट्री के कविवय प्रम्य प्राचीन है । यह द्वितीय स्तर के प्रथम युग के प्राकृतों में स्थान पा सकती है । पयसा प्रम्य नियुक्तिर्षो, पयमचरिष, उपदेशमाला प्रभृति प्रम्य प्रथम युग की जैन महाराष्ट्री के उदाहरण हैं । बृहत्संख्य मान्य, व्यवहारमूल-मान्य, विरोधावश्यक मान्य निरीक्षणीय धर्मसंग्रहणी, समपार्श्वचक्रा प्रभृति प्रथम प्रम्य युग और शेष-युग में रचित होने पर भी इनकी भाषा प्रथम युग की जैन महाराष्ट्री के समान है । प्रथम शताब्दी के बाद रचे गये प्रयत्न-साधेष्टार, उपदेशपट्टीका, सुपासनाहचरित्र, उपदेशावस्थ प्रभृति ग्रन्थों की भाषा भी प्रथम प्रम्य युग की जैन महाराष्ट्री के ही अनुरूप है । इससे यहाँ पर यह कहना होगा कि जैन महाराष्ट्री के प्रम्य आधुनिक काल में रचित होने पर भी उसकी भाषा संरक्षण की तरह, अतिप्राचीन काल में ही उत्पन्न हुई थी और यह भी अनुमान किया जा सकता है कि जैन महाराष्ट्री क्रमशः परिवर्तित होकर मध्य-युग की व्यञ्जन-लोप-बहुल महाराष्ट्री में रूपान्तरित हुई है ।

अर्धमागधी के जो लक्षण पहले बताये गए हैं उनमें से अनक इस भाषा में भी पाये जाते हैं । ऐसे लक्षणों में लक्षण कुछ ये हैं—

१. क के स्थान में अनेक स्थलों में ब ।
२. छुम व्यञ्जनों के स्थान में म् ।
३. शब्द के आदि और मध्य में भी ए की तरह ब ।
४. मण और पाण के स्थान में क्रमशः यहा और जाव की तरह यहा और पाव भी ।
५. समाम में उत्तर पद के पूर्व में 'म्' का आगम ।
६. पाव नाम ऐतिह्य, बहुलण आदि सुप्रसुत बुद्धि आदि शब्दों का भी पत वेत वैदग्ध्य आदि की तरह प्रयोग ।
७. दूरंगा के पञ्चपन से कही कही छ प्रत्यय ।
८. धारण्य, दुग्ध प्रभृति धातु-रूप ।
९. लोच, पिच वरितु आदि ला प्रत्यय के रूप ।
१०. का शब्द बहु प्रभृति व-प्रत्ययान्त रूप ।

(६) यक्षोक्त-लिपि

सम्राट् अशोक ने भारतवर्ष के निम्न-निम्न स्थानों में अपने भर्मे के उपदेशों को शिलानों में खुदवाये थे। ये सब शिलालेख उस समय में प्रचलित निम्न-निम्न प्रादेशिक भाषाओं में रचित हैं। भाषा-साम्य की दृष्टि से ये सब शिलालेख 'प्रकृत' इन तीन भागों में विभक्त किये जा सकते हैं—

- (१) पंचाब के शिलालेख। इनकी भाषा संस्कृत के अनुरूप है। इसमें र का खोप नहीं देखा जाता।
- (२) पूर्वी भारत के शिलालेख। इनकी भाषा अब मागधी के साथ सादृश्य देखने में आता है। इनमें र के स्थान में सर्वत्र न है।
- (३) पश्चिम भारत के शिलालेख। ये इन्द्रप्रिया की इस भाषा में हैं जिसका पाकि के साथ अधिक साम्य है। इन तीनों प्रकार के शिलालेखों के कुछ उदाहरण नीचे दिए जाते हैं जिन पर से इनका भेद अच्छी तरह समझ में आ सकता है।

संस्कृत	कर्मगिर (पंचाल)	पौडि (बड़ीपा)	मिरतार (डुमराठ)
देवनाग्रिकृत	देवनाग्रिकृत	देवनाग्रिकृत	देवनाग्रिकृत
एव	एव	बलि	एव
एव	—	बुद्धि	बुद्धि
मुपवा	मुपवा	मुपवा	मुपवा
वसि	वसि, वसि	वसि, वसि, वसि	वसि

इन शिलालेखों का समय क्रिस्त-पूर्व २५० वर्ष का है।

इन शिलालेखों की भाषा की उत्पत्ति मगधात् महावीर की एवं सम्भवतः मुद्रगैव की उपदेश-भाषा से ही हुई है।^१

(७) सौरसेनी

सौरसेनी-नाटकों में प्राकृत वर्णाक्षर सामान्य रूप से सौरसेनी भाषा में लिखा गया है। बरहचोप के नाटकों में एक नाट्य की सौरसेनी के उदाहरण पाये जाते हैं, जो पाकि और यक्षोक्तलिपि की भाषा के अनुरूप और निम्न

विद्यते अथ के नाटकों में प्रयुक्त सौरसेनी की अपेक्षा प्राचीन है। मास के अविश्वास के और इनके बाद के अधिक नाटकों में सौरसेनी के मिश्रित देखे जाते हैं।

वर्द्धि हेमचन्द्र कनरीरव, अस्तीपर और मार्कण्डेय आदि के प्राकृत-व्याकरणों में सौरसेनी भाषा के अक्षर और उदाहरण पाये जाते हैं।

बुद्धी, छट और बागम आदि संस्कृत के अर्थ-अर्थों ने भी इस भाषा का लक्ष्य किया है।

भारत के नाट्यशास्त्र में सौरसेनी भाषा का लक्ष्य है उन्होंने अष्टक में न्यायिक और सक्तिपों के छिप इस भाषा विधियों का प्रयोग बताया है।^२

भारत ने बिपूक की भाषा प्राकृत की है परन्तु मार्कण्डेय के व्याकरण में प्राकृत भाषा के जो अक्षर दिये गये हैं प्राकृत भाषा सौरसेनी के इनसे और नाटकों में प्रयुक्त बिपूक की भाषा पर से यह माहुर होया है कि सौरसेनी से इस भाषा प्राकृत (प्राकृत) का कुछ विशेष भेद नहीं है। इससे हमने भा प्रस्तुत रूप में वचन अक्षर लक्ष्य न करके सौरसेनी में ही अन्तर्भाव किया है।

विगम्वर जैनो के प्रचनस्यार, इन्द्रसमय प्रयुक्त मन्त्र भी एक तरह की सौरसेनी भाषा में ही रचित है। यह भाषा शतसाहसों की अर्थमागधी और प्राकृत-व्याकरणों में निर्दिष्ट सौरसेनी के विभक्त से बनी हुई है। इस भाषा को 'जैन सौरसेनी' नाम दिया गया है। जैन सौरसेनी मध्ययुग की जैन महापट्टी की अपेक्षा जैन अर्थमागधी से अधिक निष्ठा रखती है और मध्ययुग की जैन महापट्टी से प्राचीन है।

१. हम ही में डॉ. विपुलचन्द्र बहुरेव ने अपने एक डुमराठी लेख में जोर देकर इनका और बुद्धि से यह लिख किया है कि यही के लिखने के समय के अष्टक लिखित ब्रह्म अशोक के बड़ी परन्तु जैन ब्रह्म समिति के अनुसार है।

२. See Dr A B Keith's Sanskrit Drama, Page 87

३. "अविश्वास बर्द्धि व बुद्धिपिठिपिठि" (अवस्था १ २१)।

४. "आप्य विपूकपिठि" (अवस्था १ २१)।

सीरसेनी भाषा की उत्पत्ति^१ मूरसेन देश अर्थात् मधुप प्रदेश से हुई है।

परन्तु ने अपने व्याकरण में संस्कृत को ही सीरसेनी भाषा की प्रकृति अर्थात् मूल कहा है^२। किन्तु यह हम पहले ही प्रमाणित कर चुके हैं कि किसी प्राकृत भाषा का उत्पत्ति संस्कृत से नहीं हुई है। सुवर्ण, सोरसेना प्राकृत का मूल भी वैदिक या जौहिक संस्कृत नहीं है। सीरसेना और संस्कृत ये दोनों ही वैदिक युग में प्रचलित मूरसेन अथवा मध्यदेश की कथ्य प्राकृत भाषा से ही उत्पन्न हुई हैं। संस्कृत भाषा पाणिनि प्रणालि के व्याकरण द्वारा नियन्त्रित होने के कारण परिवर्तनहीन सूत भाषा में परिणत हुई। वैदिक काल का सोरसेना ने प्राकृत-व्याकरण द्वारा नियन्त्रित न होने के कारण क्रमशः परिवर्तित होते हुए पिछले समय का सोरसेनी भाषा का आधार कारण किया। पिछले समय की यह सोरसेनी भी बाद में प्राकृत-व्याकरणों के द्वारा बड़बड़े आने के कारण संस्कृत की तरह परिवर्तन-शून्य होकर सूत-भाषा में परिणत हुई है।

अखण्डों के नाटकों में जिस सीरसेनी भाषा के उदाहरण मिलते हैं वह अशोभकृषि के सम-सामयिक कहा जा सकती है। भास के नाटकों की सीरसेनी का और जैन सीरसेनी का समय सम्भवतः श्रित्त का प्रथम या द्वितीय शताब्दी माहम होता है।

महाराष्ट्री भाषा के साथ सीरसेनी भाषा का जिस जिस अंश में भेद है वह नीचे दिया जाता है। इसके सिवा महाराष्ट्री भाषा के जो मुख्य लक्षक प्रकरण में दिय जायेंगे उनमें महाराष्ट्री के साथ सीरसेनी का कोई भेद नहीं है। इन भेदों पर यह बात होता है कि अनेक स्थानों में महाराष्ट्री की अपेक्षा सीरसेनी का संस्कृत के साथ पाठ्य कम और सादर्य अधिक है।

वर्ण-भेद

- १ स्वर-वर्णों के सम्बन्धों अर्थात् व और ष के स्थान में व होता है। यथा—रजत = रषत, यय = यव।
- २ स्वरों के बीच अर्थात् व व ह और व दानो होते हैं। जैसे—गाव = खाव खाह।
- ३ व के स्थान में य्य और ञ होता है। यथा—घाव = घय्य घञ; वृष = वृय्य वृञ।

नाम-विभक्ति

- १ पञ्चमी के उक्तपदान में दो और दु य दो ही प्रत्यय होते हैं और इनके योग में पूर्व के अक्षर का दोष होता है। यथा—जिमाद = जिजायो, जिजायु।

आख्यात

- १ शि और ट प्रत्ययों के स्थान में रि और रे होता है। जैसे—हचि, हचरे, रचि, रचरे।
- २ मविप्परछल के प्रत्यय के पूर्व में मि छटावा है। यथा—हचिसिचि, करिसिचि।

संज्ञि

- १ अल्प मगर के बाद व और ए होने पर ए का वैकल्पिक आगम होता है। यथा—गुह्य इव = गुह्य छिन्; पुलमिन्; एव एव = एव लेव, एवमेव।

कृत्य

- १ एा प्रत्यय के स्थान में एप हण और ता होते हैं। यथा—पठिषा = पठिष, पठिहण पठिता।

१ ब्रह्मलान्क के "वीतियमहा (१५५) कैरी वीयवर्ण विपुलनीरा। मरुता व मुरलेणा वावा भोगी व मावुरिगटा" (पृ ११)। इस पाठ पर "विपु शुक्तिरावरी वीतमर्ष निम्बु वीतीरेण मरुत मुरलेण वावा मने(१) विपु मावुरिगटा" इस तरह व्याख्या करते हुए पाषाण मगधवर्ष में मूरसेन देश की राज्याधी वावा ब्रह्माक्षर व्याकरण के बिहार प्रदेश की ही मूरसेन कहा है। विपिनमरुति ने अपने प्रत्ययकारोद्धारनामक ग्रंथ में ब्रह्मलान्क के एक पाठ की प्रतिभक्त कर में उद्धृत किया है। उद्धरी टीका में वीगिहनेमरुति ने पाषाण मगधवर्ष की एक व्याख्या की "वितियमहर्ष" बह्मर, एक मूल पाठ की व्याख्या इस तरह की है— "शुद्धीमयी नगरी वेदो देशः वीतमर्ष नगर निम्बुवीतीरा जनन मरुत नगरी मुरलेणवरी देशः पला नगरी मरुतो देशः, मावुरी नगरी वरी देशः (दे ता अक्षरान् पृ ४४६)।

(६) अशोक-लिपि

सम्राट् अशोक ने भारतवर्ष के विभिन्न-विभिन्न स्थानों में अपने धर्म के उपदेशों को शिलालेखों में खुदवाये थे। ये सब शिलालेख इस समय में प्रचलित विभिन्न-विभिन्न प्रादेशिक भाषाओं में रचित हैं। भाषा-साम्य की दृष्टि से ये सब शिलालेखों को 'प्राकृत' इन तीन भाषाओं में विभक्त किये जा सकते हैं—

(१) पञ्जाब के शिलालेख। इनकी भाषा संस्कृत के अनुरूप है। इनमें २ का उल्लेख नहीं किया जाता।

(२) पूर्वी भारत के शिलालेख। इनकी भाषा का मागधी के साथ सादृश्य देखने में आता है। इनमें २ के स्थान में सर्वत्र स है।

(३) परिषद भारत के शिलालेख। ये त्रिजयिना की इस भाषा में हैं जिसका पाणिनि के साथ अधिक साम्य है।

इन तीनों प्रकार के शिलालेखों के कुछ उदाहरण नीचे दिए जाते हैं जिन पर से इनका भेद अच्छी तरह समझ में आ सकता है।

संस्कृत	कपर्दीगिरि (पञ्जाब)	पौडि (लखीम)	गिरनार (गुजरात)
देवनागिरियस	देवनागिरियस	देवनागिरियस	देवनागिरियस
राज	राज	राज	राज, राज
गुप्त	—	गुप्त	गुप्त
गुप्त	गुप्त	गुप्त	गुप्त
गुप्त	गुप्त	गुप्त	गुप्त

इन शिलालेखों का समय क्रिस्तपूर्व २५० वर्ष का है।

इन शिलालेखों की भाषा की उत्पत्ति महावीर की पूर्ण सम्भवन बुद्धदेव की उपदेश-भाषा से ही हुई है।^१

(७) सौरसेनी

मौर्य-नाटकों में प्राकृत तथापि सामान्य रूप से सौरसेनी भाषा में लिखा गया है। अरवभोज के नाटकों में एक नाटक की सौरसेनी के उदाहरण पाये जाते हैं, जो पांडि और अशोकलिपि की भाषा के अनुरूप और विद्वत् अर्थ के नाटकों में प्रयुक्त सौरसेनी की अपेक्षा प्राचीन है। भाषा के अविश्रुत के लिये इनके बाद के अधिक नाटकों में सौरसेनी के निर्धारण देखे जाते हैं।

पार्श्व हेमचन्द्र, कर्मवीररत्न, सन्धीर और माकण्डेय आदि के प्राकृत व्याकरणों में सौरसेनी भाषा के अक्षर और उदाहरण पाये जाते हैं।

हजारी, छट्ठी और पार्श्व आदि संस्कृत के लेखकों ने भी इस भाषा का उल्लेख किया है।

भारत के नाट्यशास्त्र में सौरसेनी भाषा का उल्लेख है जहाँने नाटकों में नायिका और सखियों के लिए इस भाषा विशेष का प्रयोग बताया है।^२

भारत न बिदुषः की भाषा प्राकृत की है परन्तु मार्कण्डेय के व्याकरण में प्राकृत भाषा के जो अक्षर दिये गये हैं प्राकृत भाषा सौरसेनी के उनसे और नाटकों में प्रयुक्त बिदुषः की भाषा पर से यह साबित होता है कि सौरसेनी से इस भाषा (प्राकृत) का कुछ विस्तार भ्रष्ट नहीं है। इससे हमन सा प्रमाण कोप में इसका अर्थ उल्लेख न करके सौरसेनी में ही अन्तर्भाव किया है।

दिगम्बर जैनो के प्रवचनसार, इन्द्रवर्धन प्रभृति ग्रन्थ भी एक तरह से सौरसेनी भाषा में ही रचित हैं। यह भाषा महावीर की अष्टमागधी और प्राकृत-व्याकरणों में निर्दिष्ट सौरसेनी के मिश्रण से बनी हुई है। इस भाषा का 'जैन सौरसेनी' नाम दिया गया है। जैन सौरसेनी मध्ययुग की जैन महाकाव्यों की अपेक्षा जैन अष्टमागधी से अधिक निष्ठावा रखती है और मध्ययुग की जैन महाकाव्यों से प्राचीन है।

१. इस ही में डॉ. विदुषः ने देखा है कि एक गुजराती शब्द में अनेक प्रकार की लिपियों से यह लिखा गया है कि अशोक के दिगम्बरों के नाम के अनेक लिपिलेख अशोक अशोक के लिये परन्तु वेन कदाचित् समिति के द्वारा ही है।

२. See Dr. A. B. Keith's Sanskrit Drama, Page 87

३. "विदुषः की भाषा न बिदुषः की भाषा" (पृष्ठ १०२)

४. "प्राकृत विदुषः की भाषा" (पृष्ठ १०२)

सीरसेनी भाषा की उत्पत्ति^१ सूरसेन देश अर्थात् मधुप प्रदेश से हुई है।

वररूपि ने अपने व्याकरण में संस्कृत को ही सीरसेनी भाषा की प्रकृति अर्थात् मूल कहा है^२। किन्तु यह हम पहले ही प्रमाणित कर चुके हैं कि किसी प्राकृत भाषा का उत्पत्ति संस्कृत से नहीं हुई है। सुवर्ण, सोरसेना प्राकृत का मूल की प्रकृति या औपिक संस्कृत नहीं है। सीरसेनी और संस्कृत ये दोनों ही ऐहिक युग में प्रचलित सूरसेन अथवा मध्यदेश की कथ्य प्राकृत भाषा से ही उत्पन्न हुई हैं। संस्कृत भाषा पाणिनि प्रभृति के व्याकरण द्वारा नियन्त्रित होने के कारण परिवर्तनहीन मूल भाषा में परिणत हुई। वैदिक काल का सोरसेना ने प्राकृत-व्याकरण द्वारा नियन्त्रित न होने के कारण क्रमशः परिवर्तित होते हुए पिछले समय का सोरसेनी भाषा का आधार धारण किया। पिछले समय की यह सीरसेनी भी बाद में प्राकृत-व्याकरणों के द्वारा जरूरी जान के कारण संस्कृत की तरह परिवर्तन-शून्य होकर मूल-भाषा में परिणत हुई है।

अक्षरपाप के नाटकों में जिस सीरसेनी भाषा के उदाहरण मिलते हैं वह अश्लेषिणी की सम-सामयिक कही जा सकती है। आस के नाटकों की सीरसेनी का और तीन सीरसेनी का समय सम्भवतः खिल का प्रथम या द्वितीय शताब्दी मान्य होता है।

महापट्टी भाषा के साथ सीरसेनी भाषा का जिस-जिस अंश में भेद है वह नीचे दिया जाता है। इसके सिवा महापट्टी भाषा के जो ध्वन्य उसका प्रकरण में दिए जायेंगे उनमें महापट्टी के साथ सीरसेनी का कोई भेद नहीं है। इन भेदों पर यह ध्यान होता है कि अनक स्थलों में महापट्टी की अपेक्षा सीरसेनी का संस्कृत के साथ पाश्चात्य कम और सादृश्य अधिक है।

धर्मे-भृ

- १ स्वर-बर्णों का मध्यबर्ण अर्द्धयुक्त व ओर व के स्थान में व होता है; यथा—रज्ज = रज्ज, कता = कता।
- २ स्वरों के बीच अर्द्धयुक्त व का ओर व शानो हात है; जैसे—नाथ = छात्र छाह।
- ३ व के स्थान में व्य और व होता है; यथा—माय = धम्म मज्ज; दूय = दुष्प मुज्ज।

नाम-धिमक्ति

- १ पञ्चमी का पञ्चम्य में दो और दु य दो ही प्रत्यय होते हैं और इनके योग में पूर्व का अक्षर का दोष होता है; यथा—
किपाद् = विष्णो, विष्णुः।

आकषात

- १ ति और ऐ प्रत्ययों का स्थान में रि और रे होता है; जैसे—हृषि, हृषे, रमदि, रमरे।
- २ भक्तिप्रत्यय के प्रत्यय के पूर्व में ति छटा है; यथा—हृषिस्तिदि, कस्तिस्तिदि।

सम्धि

- १ अस्य मकार के बाद व और ए होने पर ए का वैकल्पिक आगम होता है; यथा—युक्त इत्य = कुतं छिन्नु कुत्तमिन्; एवम् एवम् = एव एव एवम्।

कृदन्त

- १ एता प्रत्यय का स्थान में एव हूय और ता होते हैं; यथा—पठिषा = पठिष, पठिषू पठिषा।

१ ब्रह्मण्यस्य “श्रीतियमहा (१२१) में वैदी वीथकन विष्णुश्रीरा। महुप व मूरुणा वाषा श्री व मासुरिषट्ट” (पत्र ११)। इस पाठ पर “वेदिशु शुक्तिप्रारो बोधकं विष्णु श्रीवेदि महुप मूरुनेव वाषा, महे (१) विष्णु मासुरिषट्ट” इस तरह व्याख्या करते हुए व्याख्या मलयगिरि ने मूरुनेव देश की राजधानी वाषा बतनाकर राजकन के बिहार प्रदेश की ही मूरुनेव कहा है। मैत्रिकान्तपुरि में धाने प्रचक्ष्णारोप्राप्त्यक रूप में वररुणामूरु के उक्त पाठ की परिकल्पना में वररुण दिया है। इसी ही देश में श्रीविजयेनमूरि ने व्याख्या मलयगिरि की उक्त व्याख्या को “पठिष्यवट्ट” कहकर, उक्त मूल पाठ की व्याख्या इस तरह की है—“श्रीवीथी नगरे वेदि देश” श्रीवर्धन नगर विष्णुश्रीरा जनक महुप मयदी मूरुनेवकी देश बला मयदी महुप देश मासुरी मयदी मयदी देश” (१ ला संस्कृत पत्र ४४१)।

२ महापट्टाष्ट (१२ १)।

(८) मागधी

मागधी प्राकृत के सर्व प्राचीन सिद्धांत अशोक-साम्राज्य के उत्तर और पूरव भागों के साखसी, मिराट, जीरिका (Jaunpur), सहस्रगाम, बरबर (Barabar), रामगढ़, चौबिसी और जोगम्बा (Jogmudha) प्रभृति स्थानों के अशोक-लिपिलेखों में पाये जाते हैं। इसके बाद मध्यम प्राकृतों में मागधी भाषा के उदाहरण देखे जाते हैं।

मध्यम मागधी के सर्व-प्राचीन समूह अश्वघोष के नाटकों के लिखित अंशों में मिलते हैं। भास के नाटकों में, अश्विनाम के नाटकों में और सुवर्णवर्ण के नाटकों में मागधी भाषा के उदाहरण विद्यमान हैं।

बहराच के प्राकृतमहाकव्य, बण्ड के प्राकृतवर्णन, हेमचन्द्र के सिद्धहेमचन्द्र (अष्टम अध्याय), कमवीरार के संक्षिप्त-सार, हर्षवीरार की परमायाचमित्रिका और मार्कण्डेय के प्राकृतसर्वस्व आदि ग्रन्थ समस्त प्राकृत-व्याकरणों में मागधी भाषा के अत्यन्त और उदाहरण दिए गए हैं।

मरठ के नाट्यग्रन्थ में मागधी भाषा का उल्लेख है और उन्होंने नाटकों में राजा के अन्तर्पुर में रहनेवाले, सुरंग खोदनेवाले कर्मचार, अश्वघोषक वगैरह पात्रों के लिए और विपत्ति में त्रास के लिए भी इस भाषा का प्रयोग करने को कहा है। परन्तु मार्कण्डेय द्वारा अपने प्राकृतसर्वस्व में उद्धृत किये हुए कोइल के "एतद्विस्तृतप्रत्ययव्याख्या" नामक प्राकृत-भाषा-इतिहास से सादृश्य होता है कि मरठ के कोइल हुए एक पात्रों के अतिरिक्त मिथु, अश्वघोषक आदि अन्य लोग भी इस भाषा का व्यवहार करते थे। खट्ट, बामरठ, हेमचन्द्र आदि व्याकरणकारियों ने भी अपने-अपने व्याकरण-ग्रन्थों में इस भाषा का उल्लेख किया है।

मागध देश ही मागधी भाषा का उत्पत्ति-स्थान है। मागध देश की सीमा के बाहर भी अत्यधिक के शिखरलेखों में जो इसके निर्धारण पाये जाते हैं उसका कारण यह है कि मागधी भाषा उस समय राज-भाषा होने के कारण मगध के बाहर भी इसका प्रचार हुआ था। सम्भव राज-भाषा होने के कारण ही नाटकों में सचित्र ही राजा के अन्तर्पुर के लोगों के लिए इस भाषा का व्यवहार करने का नियम हुआ था। प्राचीन मिथु और अश्वघोष भी मगध के ही निवासी होने से सम्भव है नाटकों में इनकी भाषा भी मगधी ही निर्दिष्ट की गई है।

बहराच ने अपने प्राकृत व्याकरण में मागधी की प्रकृति—मूल होने का सम्मान सीरसेनी को दिया है। इसीप्रकार अनुसरण कर मार्कण्डेय ने भी सीरसेनी से ही मागधी की उत्पत्ति कही है। किन्तु मागधी और सीरसेनी आज प्रादेशिक भाषाओं का भेद अशोक के शिखरलेखों में भी देला जाता है। इससे यह सिद्ध है कि ये सब प्रादेशिक भेद प्राचीन और समसामयिक हैं, एक प्रदेश की भाषा से दूसरे प्रदेश में रहस्य नहीं हुए हैं। जैसे सीरसेनी सम्प्रदाय में प्रचलित वैदिक युग की कम्प भाषा से उत्पन्न हुई है वैसे मगधी ने भी उस कम्प भाषा से उत्पन्न किया है जो वैदिक-युग में मगध युद्ध में प्रचलित थी।

अशोक-शिखरलेखों की और अश्वघोष के नाटकों की मागधी भाषा प्रथम युग की मागधी भाषा के निर्धारण है। भास के और परसूरी आदि के अन्य नाटकों की और प्राकृत-व्याकरणों की मागधी द्वय-युग की मागधी भाषा का उदाहरण है।

शाक्यरी बाण्डाजी और शाक्यी ये तीन भाषाएँ मागधी के ही प्रकार-मेव—रूपान्तर हैं। मरठ ने शाक्यरी भाषा का व्यवहार कर राजा आदि और वही प्रकृति के अन्य लोगों के लिए कहा है किन्तु मार्कण्डेय ने राजा के साथ ही मागधी शाक्यरी वगैरह है। मरठ पुनः आदि बातों की व्यवहार-भाषा को बाण्डाजी और शाक्यरी, व्याप-

१. "मागधी यु वरेप्रजापत्य-पुत्रिगमिनाम्" (नाट्यग्रन्थ १७ ५)।

"पुराणाकर्मणा युवराजपुत्रिगमिनाम्। व्यसने शाक्यगोत्रात्प्राप्तमागधीः" (नाट्यग्रन्थ १७ २९)।

२. "मगधी सीरसेनी" (प्राकृतमहाकव्य ११ ९)।

३. "मागधी सीरसेनी" (प्राकृतसर्वस्व ३३ १)।

४. "एतद्विस्तृतप्रत्ययव्याख्या" (प्राकृतमहाकव्य १७ ५९)।

५. "अश्वघोषेण व्यापरी उदाहरण"

"उद्योगप्रजापत्या राजासर्वप्रसन्नम्।

अश्वघोषिणाम्नी उदाहरण इति बुद्धवीर्यं स्वयं दृष्टुम्" (प्राकृतसर्वस्व ३३ १)।

साधारण भाषि भाषार्थ
मागधी के प्रत्यय हैं। कटहार और पन्त-जीवी छोगों की भाषा को शाबरी कहते हैं। इन तीनों भाषाओं के जो छमण और
उच्चारण मार्कण्डेय के प्राकृत-व्याकरण में और नाटके के एक पात्रों की भाषा में पाये जाते हैं उनमें
और इतर प्राकृत-व्याकरणों की मागधी भाषा के छमण और उच्चारणों में क्या नाटकों के मागधी-
भाषा-भाषी पात्रों की भाषा में इतना कम भेद और इतना अधिक साम्य है कि एक हीन भाषाओं को मागधी से अलग नहीं
कही जा सकती। यही कारण है कि हमने प्रस्तुत रूप में इन भाषाओं पर मागधी में ही समावेश किया है।

सूक्तफटिक के पात्र माधुर और सो घृतधरों की भाषा को 'डक्की' नाम दिया गया है। यह भी मागधी भाषा का
ही एक रूपान्तर प्रतीत होता है। मार्कण्डेय ने 'डक्की' को ही 'टाक्की' नाम से निर्देश किया है, यह उनके यहाँ पर उच्चारण
क्रमेण एक श्लोक से ज्ञात होता है। मार्कण्डेय ने पदान्त में व सूचीया के एकवचन में व, पञ्चमी के बहुवचन में ह्य
आदि जो इस भाषा के छमण दिए हैं उनपर से इसमें अपभ्रंश का ही विरोध साम्य नजर आता है।
इस लिए मार्कण्डेय ने यहाँ पर जो यह कहा है कि 'हरिभद्र इस भाषा को अपभ्रंश मानता है'
यह मत हमें भी संगत मान्य पड़ता है।

मागधी भाषा पर सीरसेनी के साथ जो प्रमाण भेद है वह नीचे दिया जाता है। इसके सिवा अन्य अंशों में मागधी
भाषा साधारणतः सीरसेनी के ही अनुरूप है।

धर्माभेद

१. र के स्थान में सरंज व होता है; यथा—नर = एत कर = कत।
२. ठ व और ष के स्थान में ठाकम्य व होता है; यथा—शोम = शोष्ण पुरष = पुस्तिरा सारस = स्रस्र।
३. संयुक्त व और ष के स्थान में वक्ष्य सञ्चर होता है; यथा—वृष्क = वृष्क कट = कटस स्ववति = स्ववति बृहस्पति = बृहस्पति।
४. ट और ढ के स्थान में ल होता है; यथा—पट = पल्ल पटु = पल्लु।
५. ल और व की जगह ल होता है, जैसे—वत्सिल = वत्सिल सार = सार।
६. न व और ष के वक्षे व होता है; यथा—जाति = माणति दुर्ज = दुर्जय मघ = मय्य मघ = मय्य षति = मति,
मघ = मय।
७. य ए इ और व के स्थान में इ होता है; यथा—मय्य = मय्य पुरष = पुष्य प्रभा = प्रभा धम्मति = धम्मति।
८. अनादि व के स्थान में व होता है; यथा—वय्य = वय विभिन्न = विभिन्न।
९. व की जगह ल होता है; जैसे—पल्ल = पल्लय मघ = मय्य।

नाम-विभक्ति

१. अक्षरान्त पुल्लिङ्ग-शब्द के प्रथमा के एकवचन में ए होता है; यथा—जिन = मिले पुष्य = पुस्तिरे।
२. अक्षरान्त शब्द के पथी का एकवचन ल और मय होता है; यथा—जितल = मिलल मिलाह।
३. अक्षरान्त शब्द के पथी के बहुवचन में भाछ और भाई ये दोनों होते हैं; जैसे—जिनाभाह = मिलाह मिलाह।
४. अस्मन् शब्द के एकवचन और बहुवचन का रूप ही होता है।

१ "नारगती पुष्पारिपु । अमारकल्ययवर्मा काठमनोपवीविनाय । योग्या शबरमाया दु" (नाट्यशास्त्र १७ २१ ४)।

२ "प्रमुग्धे नाटगरी वृत्तवित्तवर्माविनि ।

वपिपुष्पिनिहैव लघुहृदवपिनिहै" (प्राकृतवर्णिक ५४ ११)।

३ "हरिचन्द्रसिन्धो भाषापत्र व इतीच्छति" (प्राकृतव ५३ ११)।

४ मार्कण्डेय यह नियम वैदिक भाषा में है "रस्य को वा मयै" (प्राकृतव ५३ ११)।

५. इनका प्राकृत-व्याकरण के अनुसार 'व' की बगल विज्ञानुनीय 'व' होता है येनी है प्रा ४ २२६।

(९) महाराष्ट्री

प्राकृत काव्य और गीति की भाषा महाराष्ट्री कही जाती है। संतुल्य, गद्यमण्डराती, गडबडहो, कुमाएलचरित प्रभृति मन्त्रों में इस भाषा के निरूपण पाये जाते हैं। गाथा (गीति-साहित्य) में महाराष्ट्री प्राकृत न इतनी प्रसिद्धि प्राप्त की कि बाह्य के नाटकों में गद्य में सीरसेनी योजनवाला पात्रों के लिए संगीत या क्या में महाराष्ट्री भाषा का व्यवहार करने का रिवाज सा बन गया था। यही कारण है कि आम्नास से लेकर उसके बाह्य तक सभी नाटकों में क्या में भाषा महाराष्ट्री भाषा का ही व्यवहार देखा जाता है।

यह ने अपने प्राकृतध्वज में 'महाराष्ट्री' इस नाम का उल्लेख और इसके विशेष ध्वज न देकर भी आर्ष-प्राकृत काव्य लक्ष्यमायी के और जैन महाराष्ट्री के ध्वजों के साथ साधारण भाषा से इसके ध्वज दिए हैं। परस्मिन् ने अपने प्राकृत-व्याकरण में इस भाषा के 'महाराष्ट्री' नाम का उल्लेख किया है और इसके विशेष ध्वज और उदाहरण दिए हैं। आचार्य हेमचन्द्र ने अपने व्याकरण में 'महाराष्ट्री' नाम का निर्देश न कर प्राकृत' इस साधारण नाम से महाराष्ट्री के ही ध्वज और उदाहरण बताए हैं। क्रमदीपक का संक्षिप्तसार विविध नाम की प्राकृतव्याकरणसूत्रप्रति ध्वजीपर की पद्यभाषाविवेक और मार्कण्डेय का अष्टाध्यायी प्रभृति प्राकृत-व्याकरणों में इस भाषा के ध्वज और उदाहरण पाये जाते हैं। बंकेश्वर सभी प्राकृत व्याकरणों ने महाराष्ट्री का मुख्य रूप से विवरण दिया है और सीरसेनी, मागधी प्रभृति भाषाओं के महाराष्ट्री के साथ जो भेद हैं वे ही बतलाए हैं।

संस्कृत के अष्टाध्यायी-शास्त्रों में भी भिन्न-भिन्न प्राकृत भाषाओं का उल्लेख मिलता है। भट्ट के साङ्ग-शास्त्र में 'वाङ्मिताया' भाषा का निर्देश है किन्तु इसके विशेष ध्वज नहीं दिए गए हैं। संभवतः वह महाराष्ट्री भाषा ही हो सकती है, क्योंकि सरत ने महाराष्ट्री का अर्थ उल्लेख नहीं किया है। परन्तु मार्कण्डेय के प्राकृतसर्वस्व में उद्धृत प्राकृतविवेक के 'बचन' में और प्राकृतसर्वस्व के सूत्र मार्कण्डेय के 'बचन' में महाराष्ट्री और वाङ्मिताया का भिन्न भिन्न भाषा के रूप में उल्लेख किया गया है। इन्हीं के व्याख्यातों के

'महाराष्ट्रमन्त्रा कथां प्रकृतं प्राकृतं विदुः।

प्राकृतं मुक्तिप्राप्तं तुमुकचरितं कथयत् ॥" (१ ४४)।

इस श्लोक में महाराष्ट्री भाषा का और उसकी वक्तव्यता का स्पष्ट उल्लेख है। इन्हीं के समय में महाराष्ट्री प्राकृत का इतना उल्लेख हुआ था कि इसके परवर्ती अनेक ग्रन्थकारों ने केवल इस महाराष्ट्री के ही अर्थ में इस प्राकृत शब्द का प्रयोग किया है जो सामान्यतः सर्व प्रादेशिक भाषाओं का वाचक है। छत्र का व्यासार्थकर, वाग्मदाह-भर, पाण्ड्यध्वज-मममात्र हेमचन्द्र का प्राकृत-व्याकरण प्रभृति मन्त्रों में महाराष्ट्री के ही अर्थ में प्राकृत शब्द व्यवहृत हुआ है। अष्टाध्यायी-मित्र-मित्र पाण्ड्यध्वजनाममात्रा और वैरीनाममात्रा इन कोष-मन्त्रों में भी महाराष्ट्री के उदाहरण हैं।

होर्नोल्ड के मत में महाराष्ट्री भाषा महाराष्ट्र देश में उत्पन्न नहीं हुई है। वे मानते हैं कि महाराष्ट्री का अर्थ 'विशाल राज्य की भाषा' है और राजपूताना तथा मध्यप्रदेश प्रभृति इसी विशाल राज्य के अन्तर्गत हैं, इसीसे 'महाराष्ट्री' मुख्य प्राकृत कही गई है। किन्तु इन्हीं ने इस भाषा को महाराष्ट्र देश की ही भाषा कही है। सर मिचर्सन के मत में महाराष्ट्री प्राकृत से ही आधुनिक मराठी भाषा उत्पन्न हुई है। इससे महाराष्ट्री प्राकृत का उत्पत्ति-स्थान महाराष्ट्र देश ही है वह बात निश्चयेष्ट कही जा सकती है।

आचार्य हेमचन्द्र ने अपने व्याकरण में महाराष्ट्र को ही 'प्राकृत' नाम दिया है और इसकी प्रभृति संस्कृत कही है।
 प्रभृति इसी तरह चण्ड कम्पीवर, मार्कण्डेय आदि व्याकरणों ने साधारण रूप से सभी प्राकृत भाषाओं का मुख्य (प्रभृति) संस्कृत बताया है। किन्तु हम यह पढ़ते ही अचम्बी तरह प्रभावित कर जाए हैं कि कोई भी प्राकृत भाषा संस्कृत से उत्पन्न नहीं हुई है; बल्कि वैदिक अथवा मित्र-मित्र प्रदेशों में प्रचलित भाषाओं की कथ्य भाषाओं

१ "ऐवं महाराष्ट्रीकृत" (वाङ्मिताया १२, १२)।

२ "महाराष्ट्री कथाकरी सीरसेनीनाममात्रा। वाङ्मिताया वाङ्मिताया प्रकृतं तुमुकचरितं कथयत् ॥" (भा. व. इ. १)।

३ ऐवं प्राकृतसर्वस्व १४ १ और १४।

- ४ ए व्य और म क्य ह होता है; यथा—मय = मय कय = मय कय = मय ।
- ५ व्य और म क्य ह होता है; यथा—मय = मय कय = मय कय = मय ।
- ६ ए व्य और म क्य ह होता है; जैसे—मय = मय कय = मय कय = मय ।
- ७ ए व्य और म क्य ह होता है; यथा—मय = मय कय = मय कय = मय ।
- ८ म क्य और म क्य ह होता है; यथा—मय = मय कय = मय कय = मय ।
- ९ ए व्य और म क्य ह होता है; जैसे—मय = मय कय = मय कय = मय ।
- १० ए व्य और म क्य ह होता है; जैसे—मय = मय कय = मय कय = मय ।
- ११ ए व्य और म क्य ह होता है; यथा—मय = मय कय = मय कय = मय ।
- १२ ए व्य और म क्य ह होता है; यथा—मय = मय कय = मय कय = मय ।
- १३ ए व्य और म क्य ह होता है; यथा—मय = मय कय = मय कय = मय ।
- १४ ए व्य और म क्य ह होता है; जैसे—मय = मय कय = मय कय = मय ।
- १५ ए व्य और म क्य ह होता है; यथा—मय = मय कय = मय कय = मय ।
- १६ ए व्य और म क्य ह होता है; यथा—मय = मय कय = मय कय = मय ।
- १७ ए व्य और म क्य ह होता है; यथा—मय = मय कय = मय कय = मय ।
- १८ संयोग में पूर्ववर्ती क म ट, क क व न य और स का जोन होता है, जैसे—मय = मय कय = मय कय = मय ।
- १९ संयोग में परवर्ती क म और व का खेप होता है; यथा—मय = मय कय = मय कय = मय ।
- २० संयोग में पूर्ववर्ती और परवर्ती सभी क म और व का खेप होता है; यथा—मय = मय कय = मय कय = मय ।
- २१ संयुक्त अक्षरों के स्थान में जो जो आदेश उपर कहा है उसका और संयुक्त व्यञ्जन के खेप होने पर जो जो व्यञ्जन पाये रहता है उसका यदि वह शब्द के आदि में न हो तो द्वित्व होता है; जैसे—मय = मय कय = मय कय = मय ।

चिरन्तन

- १ हं शं वं के मय में और संयोग में परवर्ती क के पूर्व में एर का आगम होकर संयुक्त व्यञ्जनों का चिरन्तन मया जाता है; यथा—मय = मय कय = मय कय = मय ।

व्यत्यय

- १ अनन्त शब्दों में व्यञ्जन के स्थान का व्यत्यय होता है; यथा—मय = मय कय = मय कय = मय ।

संघि

- १ समान में कनी कनी हय एर के स्थान में हाय और हय के स्थान में हय होता है; यथा—मय = मय कय = मय कय = मय ।
- २ एर पर एर पर पूर्व एर का खेप होता है; जैसे—मय = मय कय = मय कय = मय ।
- ३ संयुक्त व्यञ्जन वा पूर्व एर हय होता है; जैसे—मय = मय कय = मय कय = मय ।

संघि-निवृत्ति

- १ उद्गृह (व्यञ्जन का खेप होने पर अक्षरों के शब्द) एर का पूर्व एर का साथ प्रायः संघि मदी होती है; यथा—मय = मय कय = मय कय = मय ।

२. एक पद में स्वरों की सन्धि नहीं होती है; जैसे—पार = पाठ, पति = पठ, गवर = लघर ।
३. इ, ई, और ऊ की असमान स्वर पर रहने पर, सन्धि नहीं होती है; यथा—बाधेति बाधायो धुन्येति ।
४. ए और ओ की परवर्ती स्वर के साथ सन्धि नहीं होती है; यथा—कने पावरो, घालिबनो एरिह ।
५. आस्माक के स्वर की सन्धि नहीं होता है; जैसे—होह ध ।

प्रथम-विभक्ति

१. अस्मान् पुंलिङ्ग राज्य के एकवचन में जो होता है, जैसे—विज = विजो वृषा = वृषो ।
२. पञ्चमी के एकवचन में तो जो च, छि और लोप होगा वे और तोमिन्न अन्य प्रत्ययों के प्रसंग में अस्तर अन्त्य होना है; जैसे—विजम् = विजातो, विजापो विजात विजाहि विजा ।
३. पञ्चमी के बहुवचन का प्रत्यय तो जो उ और णि होता है जब तो से अन्य प्रत्यय में पूर्व के व का वा होता है, वि के प्रसंग में ए भी होता है; यथा—विजतो विजातो, विजात विजहि, विजेहि ।
४. पञ्चमी के एकवचन के प्रत्यय के स्थान में द्विती और बहुवचन के प्रत्यय के स्थान में द्विती और तुंको इन स्वयम्भूत शब्दों का जो प्रयोग होता है, यथा—विजम् = विजा द्विती; विजेम् = विजा द्विती, विजे द्विती, विजा तुंको विजे तुंको ।
५. पती के एकवचन का प्रत्यय ल होता है; यथा—विजलम् वृक्षल लक्ष ।
६. अस्मन् राज्य के प्रथमा के एकवचन के रूप म्मि यमि यमिह इ महे और महेन होता है ।
७. अस्मन् राज्य के प्रथमा के बहुवचन के रूप मम्, मम्ह, मम्ही, जो वं और में होता है ।
८. अस्मन् राज्य के पती का बहुवचन ली लो, मम्, मम्ह, मम्ह मम्हो मम्हाल ममम् म्हाल और मम्मल होता है ।
९. तुष्मन् राज्य के पती का एकवचन ल, लु है तुम्हं लुह, लुहं, लुच, लुच तुम्ही, तुम्हा, वि, हे, ह, ए, तुम्ह तुम्ह, तुम्ह लम् लम्ह लम्ह और लम्ह होता है ।

त्रिज-प्रत्यय

१. संज्ञा में आ राज्य केवल पुंलिङ्ग है जन्म से कईएक महापुष्पा में स्त्रीलिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग भी है; यथा—प्रस = पश्यो पश्वा पुष्पा = पृथा पृथारं देवा = देवा देवाणि ।
२. अनेक जगत् स्त्रालिङ्ग के स्थान में पुंलिङ्ग होता है, यथा—रण = रणो, मावृह = वावृहो, विपुता = विज्वृता ।
३. संज्ञक के अनेक त्रिविजि शब्दों का प्रयोग महापुष्पा में पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग में भी होता है; यथा—कत = कतो, लम् = लम्हो, पति = पत्नी इत्यम् = द्विती और्य = और्यो ।

आख्यात

१. वि और हे प्रत्ययों के उ का छप होता है, जैसे—हपति = हाप, हकए एते = एपह एपय ।
२. परमेपद और आमतपद का विभाग नहीं है, महापुष्पा में सभी पातु समयपदों की तरह हैं ।
३. मूलशब्द के सम्बन्ध अचयन और पदार्थ विभाग न होकर एक ही तरह के रूप होते हैं और मूलशब्द में आख्यात की जगह अवयवात्मक रूप ली ही प्रयोग अधिक होता है ।
४. भविष्यत्-काल का भी संज्ञक की तरह भूतन और भविष्यत् ऐसे दो विभाग नहीं है ।
५. भविष्यत्-काल के प्रत्ययों के पद वि होता है; यथा—हविष्यति = हविह, कविष्यति = कविह ।
६. वर्तमान काल के, भविष्यत्-काल के और विधि-लिङ्ग और आख्यात प्रत्ययों के स्थान में एन और एका होता है, यथा—हनि हनिन्ति हनेह, हवु = हवेय हवेयम् ।
७. माघ और कर्म में ईव और एव प्रत्यय होते हैं, यथा—हवो = हवीप, हविम् ।

कृत्य

१. शोभापथेक कृत्य के स्थान में हर होता है, यथा—कृत् = कवि, कनकटीक = कवि ।
२. शास्त्रय के स्थान में गुप् य गुल गुफा और वा हाप है जैसे—पठित = पठित, पवित्र पठित पठित पठित पठित ।

तद्वि

१. ल प्रत्यय के स्थान में ल और लु होता है, यथा—लार = लार, लारल ।

(१०) अपम्रंश

महर्षि पतञ्जलि ने अपने महाभाष्य में लिखा है कि "सूर्यादीनां शब्दाः शब्दाः"। एतेष्वपि हि शब्दस्य बहुवचनं या
तथा—सौरित्यस्य शब्दस्य बाधो येषां गोवा गोपौतलिक इत्येवमाद्येष्वन्यथा" अर्थात् आपराध बहुत और शब्द (शब्द) योके हैं,
क्योंकि एक एक शब्द के बहुत अपभ्रंश हैं जैसे 'गो' इस शब्द के गोमी, गोपी, गोवा गोपौतलिक इत्यादि अपभ्रंश हैं।

“पद्मपत्र” शब्द का सामान्य और विशेष अर्थ यहाँ पर ‘अपमत्र’ अथवा अपमत्र के अर्थ में ही व्यवहृत है और अपमत्र का अर्थ भी ‘संस्कृत व्याकरण से अविदित शब्द’ है यह स्पष्ट है। उक्त उदाहरणों में ‘गामी’ और ‘गोणी’ ये दो शब्दों का प्रयोग प्राचीन जैन-मूल-ग्रन्थों में पाया जाता है और ‘पंड तथा आचार्य’ इनका आदि प्राकृत-संस्कृतियों में भी ये दो शब्द अपने अपने प्राकृत-व्याकरणों में लक्ष्य-व्याप्त सिद्ध किये हैं। इन्हीं ने अपने ग्रन्थाद्वयों में पहले प्राकृत और अपमत्र का अन्वय-अन्ते निर्दिष्ट करत हुए चक्षुषों में व्यवहृत आमीर-प्रभृति की माया को अपमत्र शब्दी है और बाद में यह लिखा है कि ‘शब्द में संस्कृत मिश्र सभी मायाएँ अपमत्र शब्दी गई हैं। यहाँ पर इन्हीं ने शब्द शब्द का प्रयोग महासाध्य-प्रभृति व्याकरण के अर्थ में ही किया है। पतञ्जलि-प्रभृति संस्कृत-संस्कृतियों के मत में संस्कृत-मिश्र सभी प्राकृत मायाएँ अपमत्र शब्द के अन्तर्गत हैं, यह ऊपर के उनके लेख से स्पष्ट है। परन्तु प्राकृत-संस्कृतियों के मत में अपमत्र शब्द माया प्राकृत का ही एक अन्तर्गत भेद है। कात्यायन-शब्द की टीका में नमिसाधु ने लिखा है कि “शब्दमेवमपमत्रः” (२ १२) अर्थात् अपमत्र शब्द भी शीतलेनी समापी आदि की तरह एक प्रकार का प्राकृत ही है। उक्त भूमिक उद्देशों से यह स्पष्ट है कि पतञ्जलि के समय में जिस अपमत्र शब्द का ‘संस्कृत-व्याकरण-असिद्ध (काही भी प्राकृत)’ इस सामान्य अर्थ में प्रयोग होता था उसने आगे आकर क्रमशः ‘प्राकृत का एक भेद’ इस विशेष अर्थ का धारण किया है। हमने भी यहाँ पर अपमत्र शब्द का इस विशेष अर्थ में ही व्यवहार किया है।

अपन्न श भाषा के निदर्शन विष्णोवर्षी, पराम्पुष्य आदि नाटक-ग्रन्थों में, हरिचरमुपल पद्मचरित (स्वयंमूर्तेपण्डित)

विश्वरूपं यन्निवसतकृद्वा संनमयन्तौ महापुरुषं तयोर्बर्चसि त्वात्तुमारचयिष्ये कथाश्रोतुं, पार्श्वपुरुषं सुवर्तनचरितं करहृत्पुत्रिं बर्चसिहृन्मुखतोऽनं निवासयन्निह। सत्त्वोद्गुमारचरिष्ये मुगासहाह्वरिष्ये, दूमारासहाह्वरिष्ये दूमारासहाह्वरिष्ये प्रभृति ब्रह्मयन्त्रयोऽपि प्राप्स्यन्तस्तस्य द्विद्वेष्टमन्त्रव्याकरणं (अष्टम अध्यायः) संक्षिप्तं वा, बन्धुभाषाचार्यिकम्, त्वं करहृत् व्याकरणं च। और प्राप्स्यन्तस्तस्य नामकं सन्तु-मन्त्रं च पाठ्ये जातं हे।

बौ. हॉर्नेसि के मत में जिस तरह आर्य स्त्रियों की कथ्य मापाएँ अनार्य स्त्रियों के मुख स उच्चारित हान के कारण

ब्रह्मि और समय जिस विवृत रूप को धारण कर पायी थी वह पैराबो भाषा है और वह कोई भी प्रादेशिक भाषा

नहीं है, उस तरह जाया की कल्पना माया पर भरोसा के आधुनिक-नवजात अनाथ लोगों की मिथ्या-चिन्तन कल्पनाओं को जगह तक ही देना जिस-जिस अर्थपर या मायाओं के बीच से महाभाष्य की

अतः भारतीय क कला के इतिहास के अन्तर्गत यह प्रश्न उभर आया कि किस प्रकार के कलाकारों ने भारतीय कला का विकास किया? वे कौन-कौनसे कला-प्रकारों में कार्य किया? वे किस-किसी सामाजिक वर्गों के थे? इतिहास के मत से यह प्रश्न परिवर्तन-प्रवृत्ति आधुनिक भाषापरम्परा स्वीकार नहीं करता है। सर प्रिन्सेन के मत में भिन्न-भिन्न प्राकृत भाषाएँ साहित्य और व्याकरण में नियन्त्रित होकर जन-साधारण में अप्रचलित हान के कारण जिन नूतन कल्प भाषाओं की उत्पत्ति हुई या वे ही अपभ्रंश हैं। ये अपभ्रंश भाषाएँ दिल्लीय पञ्चम शताब्दी के बहुत प्रायः पृथक् से ही कल्प भाषाओं के रूप में व्यपकृत हुईं थी क्योंकि वण्ड के प्राह्म-व्याख्य में और वाय्नास के विक्रमोत्तरी में इससे निश्चयन प्राप्त जान के कारण यह निश्चिन्त है कि सिन्धीय पञ्चम शताब्दी के पहले से ही वे साहित्य में स्थान प्राप्त करी थी। ये अपभ्रंश भाषाएँ प्रायः दश शताब्दी पर्यन्त साहित्य की भाषाएँ थी। इनके बाद फिर जन-साधारण में अप्रचलित हान से जिन नूतन कल्प भाषाओं की उत्पत्ति हुई वे ही हिन्दी, बंगला गजपती योगीश आदि हैं।

१. श्रीपैरिपादो नाभीषौ" "गोमं मियात्" (भाषा २ व ५) ।

"हनुमन्नामो" (विद्या १ २ वचन २६) ।

“ଦୋଳୀଏ ଶୁଣିବ” (ସ୍ବପ୍ନାବଳୀ ପ ୪) ।

५. "गोर्वाही" (शास्त्रजयन्त २ १६) : १ "गोर्वाह्य" (ई. आ. २ १७५) :

४ *धामोपदिष्टः काण्डेप्वरप्रश्नं ध्वनिं स्तुतः ।

शास्त्रं तु संन्यासस्यैव उपपत्तिरित्युक्तं" (१. १५)।

महापद्मे-अपभ्रंश से मण्ठी और कौटली मापा ।

मागधी-अपभ्रंश की पूर्व शाखा से रंगल वज्जि और आसामी मापा ।

मागधी अपभ्रंश की बिहारी शाखा से मैथिली, मगही और भोजपुरिया ।

अर्धमागधी अपभ्रंश से पूर्वीय हिन्दी मापाई अर्धमागधी, बघेली और छत्तीसगढ़ी ।

सौरसेनी-अपभ्रंश से पुन्नेजी कन्नौजी, मलभाया बंगाल हिन्दी या उर्दू ये पाश्चात्य हिन्दी मापाई

नागर अपभ्रंश से राजस्थानी, माछवी, मेवाड़ा जयपुरी, मारवाड़ी तथा गुजराती मापा ।

पाळि से सिंहली और मालदीव ।

टाक्षी अथवा डाखा से छहण्डी या पश्चिमीय पंजाबी ।

टाक्षी-अपभ्रंश (सौरसेनी के प्रमाण युक्त) से पूर्वीय पंजाबी ।

माचड़ अपभ्रंश से सिन्धी मापा ।

पैशाची-अपभ्रंश से खरमीरी मापा ।

संज्ञा नागर अपभ्रंश के प्रधान वृक्षण ये हैं —

वर्ण-परिवर्तन

१. भिन्न-भिन्न स्वरों के स्थान में भिन्न भिन्न स्वर होते हैं। यथा—इत्थ = कथ कथ बचन = बेल बीण बाहु = बाह, बाह्य बाहु; वृत्त = वट्टि विट्टि पुट्टि वृत्त = तल विल वृण मुहत्त = मुक्ति मुहत्त, सेधा = तिर सोह सेह ।
२. स्वरों के मध्यवर्ती असंयुक्त क, ख व, ब व ओर क के स्थान में प्रायः क्रमशः म य व ब व ओर म होता है यथा—विष्णोत्तर = विष्णोत्तर मुहत्त = मुह कथित = कथित, शनय = शनय शनय = शनय ।
३. अनादि और असंयुक्त म के स्थान में वैकल्पिक सातुनासिक व होता है। यथा—कमल = कर्न कमल प्रवर = प्रवर, मवर ।
४. संयोग में परवर्ती र का विकल्प से हो जाता है। यथा—प्रिय = प्रिय प्रिय पत्र = पत्र पत्र ।
५. यही-वही संयोग के परवर्ती व का विकल्प से र होता है। जैसे—स्वात = स्वात स्वात स्वाकण = स्वाकण स्वाकण ।
६. महापद्मे में यहाँ म् होता है वहाँ अथवा श में म् ओर म् दोनों होते हैं। यथा—दीप्य = दीप्य गिम्हा श्लेष = गिम्हा, गिम्हा ।

नाम-विभक्ति

१. विभक्ति के प्रसंग में ह्रस्व स्वर का दीर्घ और दार्ढ्य का ह्रस्व प्रायः होता है। यथा—रघामन = रामन बह्मा = बह्मा; इष्टि = इष्टि; वृष्टि = वृष्टि ।
२. साधारणतः नामों विभक्ति के अंश प्रत्यय हैं व न य द्विप जान हैं। जिम में ओर शब्द भव में अनेक विरुद्ध प्रत्यय भी हैं जो पितार-भय से यहाँ नहीं द्विप गए हैं ।

एकवचन

अवना	उ, हो
छिटीया	"
सुतोय	ए
बनुवी	गु, हो, लु
पञ्चमी	ह, ह
कही	गु, हो, लु
बतनी	र दि

बहुवचन

.
हि
ह .
ह
ह
हि

आश्चर्य-विभक्ति

एकवचन

१ गु	घ
२ गु	दि
३ गु	ह, प

बहुवचन

ह
ह
हि

२ मध्यम प्रत्यय के एकचरण में आध्याय में ६ व और ९ होते हैं यथा—दुःख=करि, कर, करे ।

३ सविभ्यस्तत्र के प्रत्यय के पूर्वे में ५ आगम होता है; यथा—सविभ्यति = होसत ।

कृत्य

१ लभ-प्रत्यय के स्थान में इत्यन्त एवन्त और इया होता है; यथा—करीष्य = करिष्यन्त करिष्यत करेता ।

२ ला के स्थान में ६, इत्, इति एति एत्ति, एत्सि एति एत्सि होते हैं; यथा—कृता = करि, करित करिति करति करेति करेति ।

३ दुप-प्रत्यय की आहृ एवं पल पलई पलई एत्ति एत्सि, एति, एत्सि होते हैं; यथा—कृत् = करेत् करत करतई कर एति, करेत् करेत्सि करेत् करेत्सि ।

४ शीघ्रचरक दु-प्रत्यय के स्थान में मल्ल होता है जैसे—कृत् = करक मारिषु = मारक्य ।

वर्धित

१ ल और ला के स्थान में पल होता है; यथा—कैल = वैपल्य पाल = पल्लव ।

इस पदसे यह कह लाये हैं कि वैदिक और क्रीक संस्कृत के राज्यों के साथ तुलना करने पर जिस प्राकृत भाषा में वर्ण-श्रेण प्रकृति परिवर्तन बिना अधिक प्रतीय हो, वह ब्रजनी हो परवर्ती क्यो मे उत्पन्न मानी जानी चाहिए । इस सिद्ध के अनुसार, हम देखते हैं कि महाप्राची प्राकृत में व्यञ्जनो का श्रेण छपेपिशा अधिक है, इससे यह अभ्यास प्राकृत-भाषाओं के पीछे उत्पन्न हुई है ऐसा अनुमान किया जाता है । परन्तु अपभ्रंश में एक नियम का व्यवहार देखने में आता है, क्योंकि मिश्र-मिश्र प्रदेशों की अपभ्रंश भाषाएँ यद्यपि महाप्राची के बन्नी कथन हुई हैं तथापि महाप्राची में जो व्यञ्जन-वर्ण-श्रेण पैदा जाता है, अपभ्रंश में किसी अपेक्षा अधिक नहीं बरिक्त का ही वर्ण-श्रेण पाया जाता है और अ स्वर तथा संयुक्त रश्मि भी विद्यमान है । इस पर से यह अनुमान करना असंगत नहीं है कि वर्ण-श्रेण की गर्त ने महाप्राची प्राकृत में अपनी चरम सीमा को पहुँच कर उसको (महाप्राची को) अरि हीन-मौस पिण्ड की तरह स्वर-बहुल आकार में परिवर्तन कर दिया । अपभ्रंश में किसी प्रतिष्ठिता राह हुई और प्राचीन स्वर एवं व्यञ्जनों को फिर स्थान देकर भाषा को मिश्र आधारा में गठित करने की चेष्टा हुई । इस चेष्टा का ही यह फल है कि विज्ञेय समय में संस्कृत-भाषा का प्रभाव फिर प्रतिष्ठित होकर आधुनिक आर्य कथ भाषाएँ उत्पन्न हुई हैं ।

प्राकृत पर संस्कृत का प्रभाव

जैन और बौद्धों ने संस्कृत भाषा का परिहाय कर उस समय की कथ भाषा में वर्णोपदेश को अभिव्यक्त करने की प्रथा प्रचलित की थी । इससे जो ही नया साहित्य भाषाओं का जन्म हुआ था वे जैन सूत्रों की भाषाभाषी और बौद्ध-वर्ण प्रत्यय को पात्रि भाषा है । परन्तु ये वा साहित्य-भाषाएँ और अभ्यास समस्त प्राकृत-भाषाएँ संस्कृत के प्रभाव का उच्छेपन नहीं कर सही हैं । इस बात का एक प्रमाण तो यह है कि इन समस्त प्राकृत-भाषाओं में संस्कृत-भाषा के अनेक शब्द अधिक रूप में गृहीत हुए हैं । ये शब्द तस्मिन् को आते हैं । यद्यपि इन तस्मिन् शब्दों ने प्रथम स्तर की प्राकृत भाषाओं से ही संस्कृत में स्थान और राज पाया था तो भी वह स्वीकार करना ही होगा कि वे सब शब्द परवर्ती क्यो की प्राकृत भाषाओं में जो अपरिचित रूप में व्यवहृत होते थे वह संस्कृत-साहित्य का ही प्रमाण था ।

इसके अतिरिक्त संस्कृत की ही प्रभाव से बौद्धों में एक मिश्र भाषा उत्पन्न हुई थी । महापद्म-बौद्धों के महापद्म सूत्र-नामक अधिप सूत्र प्रमाण है । अतिरिक्त, सज्जमे-पुष्करिक चरमोपसूत्र प्रकृति इसका उत्पत्ति है । इन दोनों की भाषा में अभिव्यक्ति छत्र तो संस्कृत के ही अनेक प्राकृत शब्दों के आगे भी संस्कृत की विभक्ति आग-रिपा है । परन्तु बौद्धों पर यह करना आवश्यक है कि इसका वह भाषा नाम असंगत है, क्योंकि वह संस्कृत-मिश्र-प्राकृत का प्रमाण एक प्रमाण के केवल प्रमाणों में ही नहीं बरिक्त गणों में भी देखा जाता है । इससे इस प्रमाण की भाषा को भाषा का कहकर 'प्राकृत-मिश्र-संस्कृत' या 'संस्कृत-मिश्र-प्राकृत' कहा जा संचय में मिश्र-भाषा ही कहा जानि है ।

हैं नलेत और बौद्धों राजेश्वर क्यो मिश्र का मत है कि संस्कृत भाषा, कमरा परिवर्तित होती हुई प्रथम भाषा भाषा का रूप में और बाद के पात्रि-भाषा का आकार में परिवर्तित हुई है । इस तरह भाषा भाषा संस्कृत और पात्रि की सम्पर्क

होने के कारण इन दोनों के (संस्कृत और पाणि के) छद्मों से आक्रान्त है । यह सिद्धान्त सर्वथा भ्रान्त है; क्योंकि हम यह पहले ही अच्छी तरह स्थापित कर चुके हैं कि संस्कृत भाषा क्रमशः परिपक्व होकर पाणि-भाषा में परिणत नहीं हुई है किन्तु पाणि-भाषा वैदिक-युग की एक प्रादेशिक भाषा से ही व्युत्पन्न हुई है । और, गाथा भाषा पाणि-भाषा के पहले प्रचलित न थी, क्योंकि गाथा भाषा के समस्त प्रयोगों का रचना-काल ख्रिस्त-पूर्व दो सौ वर्षों से लेकर ख्रिस्त की द्वावीय शताब्दी पर्यन्त का है, इससे गाथा-भाषा बहुत ही पाणि-भाषा की समकालीन हो सकती है न कि पाणि भाषा की पूर्ववस्था । यह भाषा संस्कृत के प्रभाव को कायम रखकर विभिन्न प्राकृत भाषाओं के मिश्रण से बनी है, इसमें सन्देह नहीं है । यही कारण है कि इसके शब्दों को प्रस्तुत रूप में स्थान नहीं दिया गया है ।

गाथा-भाषा का बोझ नगूना सलिलविस्तर से यहाँ उद्धृत किया जाता है —

“आयुर्न किमर्न शरत्प्रतिमं कटरङ्गसमा जपि जपि कृति ।

मिरित्तसमं सङ्गृहीतमर्न वसतामु बने यत्र विष्णु नने ॥ १ ॥

“अरुच्यप्रसन्ना इमि कमगुलाः । प्रतिबिम्ब इवा विरिषीय यथा ।

प्रतिभासयमा कटरङ्गसमात्तत्र स्वजसमा निरितार्थमनैः ॥ १ ॥” (छंद २ ४ २ ६) ।

गुह्यदेव और उसके सारथी की आपस में बातचीत —

“एवो हि केन पुंसो वर्यामिषुतः क्षीणेन्द्रिय सुषुब्धितो वसनीर्दीर्घा ।

कानुक्तेन परिमुत प्रनाममुतः, कामसिम्बं परविष्ट बनेव वात ॥

दुःखचर्न एव वयमप्य हि त्वं मरुगृहि अपवापि सर्वैकमोक्षस्य इव क्षमत्वा ।

दीर्घं मरुगृहि वचनं कबहुदमेतत् मृत्वा तवार्थमिह दोति संविस्तमित्ये ॥

मैतल्य देव दुःखचर्न न मरुदुर्गमं सर्वं वयस्य कर दीर्घत वर्यमाति ।

तुम्यपि मातृपितृवाक्यमवधारितं वीर्या वसुधैः नहि धर्म्यपरिर्वनस्य ॥

किं सारथे मनुष्यवाक्यमस्य बुद्धिर्नैव दीर्घतेन वसमत करो न परये ।

धार्मत्वंतिह रथं पुनरहं प्रवेष्टे किं मया कीदृशतिमिर्नरया पितृस्य ॥”

संस्कृत पर प्राकृत का प्रभाव

पहले जो यह कहा था चुन है कि वैदिक काल के मध्यदेश-प्रचलित प्राकृत से ही वैदिक संस्कृत उत्पन्न हुआ है और वह साहित्य और व्याकरण के द्वारा क्रमशः मासित और नियन्त्रित होकर अन्त में औचित्य संस्कृत में परिणत हुआ है; परन्तु प्राकृत के अन्तर्गत समस्त वसम वक्ष्य संस्कृत से नहीं, परन्तु प्रथम स्तर के प्राकृत से ही संस्कृत में और द्वितीय स्तर के प्राकृत में आये हैं। प्राकृत के अन्तर्गत तद्वय शब्द भी संस्कृत से प्राकृत में गृहीत न होकर प्रथम स्तर के प्राकृत से ही क्रमशः परिपक्व होकर परवर्ती काल के प्राकृत में स्थान पाये हैं और संस्कृत व्याकरण-द्वारा नियन्त्रित होने से वे शब्द संस्कृत में अपरिचित रूप में ही रह गये हैं। इसी तरह प्राकृत के अविच्छेद्य वैदिक-शब्द भी वैदिक काल के मध्यदेश-प्रचलित व्याख्या प्रवेशों के कार्य-व्यतिरेकों की प्राकृत भाषाओं से ही बाद की प्राकृत-भाषाओं में आये हैं। इससे उन्हीं (वैदिक शब्दों न) मध्यदेश के प्राकृत से उत्पन्न वैदिक और औचित्य संस्कृत में कोई स्थान नहीं पाया है । इस पर से यह सहज ही समझ आ सकता है कि प्राकृत ही संस्कृत भाषा का मूल है ।

अब इस बावद हम यह बताना चाहते हैं कि प्राकृत से न केवल वैदिक और औचित्य संस्कृत भाषाएँ उत्पन्न ही हुई हैं वरिष्ठ संस्कृत ने सूत होकर साहित्य-भाषा में परिणत होने पर भी अपनी वीर्य-मूर्ति के स्वरूप प्राकृत से ही अनन्य शब्दों का समग्र किया है । अग्रेयद् बादि में प्रयुक्त बंध (बन्ध) वद् (वधु), मंड (मण्ड), पुण (पुण्य), विवत् (विलम्ब), वल्लभ (वल्लभ), मरुति शब्द और औचित्य संस्कृत में प्रचलित विवत् (विलम्ब) बाधुत् (वधुवत्), मुर (मुर), गेसुर (गेसुर), गुग्गुल (गुग्गुल), क्षुरिच (क्षुरिच), अरुच (अरुच), कण्ड (कण्ड), विपाड (विपाड), गड (गड), बन्दिर (बन्ध) इन्दिर (इन्द्र) विविध (विविध) मरुत् (मरुत्) किलत् (किलत्) बाध (बाध), विवत् (विवत्) इत्यादि (अथवा) बाडा (बाण), विवत् (विवत्) मरुत् (मरुत्) किलत् (किलत्) बाध (बाध), विवत् (विवत्) मरुत् (मरुत्) किलत् (किलत्) बाध (बाध) और शब्द प्राकृत

से ही अचिन्त रूप में गृहीत हुए हैं और मारिप (माय) अहिम्बसि (इच्छा), भूमि (इच्छा) निरुत्पन्न (निर्दोष), अन्ध (कृष्ण) प्रकृति प्राकृत के ही मूल शब्द मारिप पर संकृत में छिप गए हैं ।

प्राकृत-मायाओं का उत्कर्ष

कोई भी कल्प माया क्यों न हो, वह सर्वथा ही पारवर्तन-शील होती है । साहित्य और व्याकरण उसका नियम का बन्धन में बन्धन रह गति-हीन और अपरिवर्तनीय करते हैं । उसका फल यह होता है कि साहित्य की माया कल्प कल्प माया से निम्न हो जाती है और जन-साधारण में अप्रचलित सूत-माया में परिणत होती है । साहित्य की हरक्रे माया एक समय की कल्प माया से ही उत्पन्न होती है और वह जब सूत-माया में परिणत होती है तब कल्प माया से फिर एक नयी साहित्य की माया की उत्पत्ति होती है । इस तरह एक समय की कल्प माया से ही वैदिक और औकिक संस्कृत उत्पन्न हुई थी और वह साधारण के पक्ष में तुर्बोच होने पर अर्धमागधी, पाणि व्यापि प्राकृत मायाओं में साहित्य में स्थान पाया था । ये सब प्राकृत-मायार्य भी समय-पाकर जन-साधारण में तुर्बोच हो जाने पर संस्कृत की तरह सूत माया में परिवर्तन हो गई और निम्न-निम्न प्रवेश की अपभ्रंश मायार्य साहित्य मायाओं के रूप में व्यक्त हो जाने लगी । अपभ्रंश-मायार्य भी जब तुर्बोच होकर सूत-मायाओं में परिवर्तन हो गयीं तब हिन्दी, बंगला, गुजराती मछी प्रकृति आधुनिक भार्य कल्प मायार्य साहित्य की मायाओं के रूप में गृहीत हुई हैं । एक समस्त कल्प मायार्य उस-उस युग की साहित्य की सूत-मायाओं की तुलना में अवश्य ऐसे अतिथय कल्पों से विनिर्गत होती बाह्य भित्ति की बरीछत ही ये उस-उस समय की सूत-मायाओं को साहित्य के सिंहासन से उचुत कर उस सिंहासन को अपने अधिकार में कर पायी थी । अब यहाँ हमें यह ध्यान रखनी है कि ये उत्कर्ष कौन के ?

हरक्रे माया का सर्वप्रथम उदरय होता है अर्ध-प्रभरा । इसलिये जिस माया के द्वारा जितने स्पष्ट रूप से और जितने व्यस्य प्रयास से अर्ध-प्रभरा किना जाय वह उतनी ही उत्कृष्ट माया मानी जाती है । इन दो कारणों के बज होकर ही माया का निरन्तर परिवर्तन साधित होता है और निम्न-निम्न कल्प में निम्न-निम्न कल्प मायाओं से नया-नयी साहित्य मायाओं की उत्पत्ति होती है । वैदिक संस्कृत कल्प लुप्त होकर औकिक संस्कृत की उत्पत्ति एक ही कारणों से ही हुई थी । वैदिक शब्द-संग्रह अप्रचलित होने पर उसके अन्वयव्यक्त प्रकृति और प्रत्ययों को बाढ़ देकर जो सङ्ग ही समस्त म था सके बली प्रकृति और प्रत्ययों का संग्रह कर वैदिक माया से औकिक संस्कृत की उत्पत्ति हुई थी । संस्कृत माया के प्रकृति-प्रत्यय आत्म-रूप से अप्रचलित होकर जब तुल-बोध्य हो गते तब उस समय की कल्प मायाओं से ही स्पष्टार्थक, सुभाषाण-योग्य मधुर और श्रेष्ठ प्रकृति-प्रत्ययों का संग्रह कर संस्कृत के अन्वयव्यक्त तुर्बोच कलाचारण कठोर और कर्षा प्रकृति-प्रत्यय-संग्रह-समाप्तों का वजन कर अर्धमागधी पाठ और अग्राप्य प्राकृत-मायार्य साहित्य-मायाओं के रूप में व्यक्त हो जाने लगी । यदि इन सब नूतन साहित्य मायाओं में संस्कृत की अपभ्रंश व्यर्थ-प्रभरा की अधिक शक्ति, व्यस्य आयास से और मुक्त से लक्षणाण-योग्यता प्रभृति गुण न होते तो ये कर्ष भी संस्कृत जैसी सङ्ग भाग को साहित्य के सिंहासन से उचुत करने में समर्थ न होती । आत्म-रूप से ये सब प्राकृत-साहित्य-मायार्य भी जब व्याकरण-द्वारा नियमित होकर अप्रचलित और जन-साधारण में तुर्बोच हो गयीं तब उस समय प्रचलित प्रादेशिक अपभ्रंश मायाओं ने इनसे हटाकर साहित्य मायाओं का स्थान अपने अधिकार में किया । यहाँ पर यह प्रश्न हो सकता है कि साहित्य की प्राकृत मायाओं की अपेक्षा इन अपभ्रंश-मायाओं में वह कौन-सा गुण था जिससे ये अपने पक्ष की प्राकृत-साहित्य मायाओं को परास्त कर उनके स्थान को अपने अधिकार में कर सकी ? इसका उत्तर यह है कि कोई भी गुण जस सीमा में पहुँच जाने पर फिर वह गुण ही नदी रहने पावा वह होय में परिणत हो जाता है । संस्कृत की अपेक्षा प्राकृत-मायाओं में यह अर्थ था कि इनमें संस्कृत के कर्ष और कलाचारणीय अस्मयुक्त और संयुक्त व्यञ्जन व्योमों का स्थान में सब श्रेष्ठ और सुलोचनीय वर्ण व्यक्त हो गये थे । किन्तु इस गुण की सीमा ही महापट्टी प्राकृत में वह गुण सीमा का अतिक्रम कर गया बाह्य कि संस्कृत के अनेक व्यञ्जनों का पक्ष हो आप कर उनके स्थान में लक्ष-वर्णों की परम्परा-द्वारा समस्त शब्द गठित होने लगे । इससे इन शब्दों के व्याचार मुक्त-साध्य होने के बगैरे अधिकतर व्यस्य हुए, क्योंकि कीय बोध में व्यञ्जन-वर्णों से व्यञ्जित न होकर केवल लक्ष-परम्परा का व्याचार करण व्यक्त होता है । इस तरह प्राकृत-माया महापट्टी-प्राकृत में व्याकर जब इस चरम अवस्था में उपनीत हुई तबसे ही इसका पतन अनिवार्य हो गया । इसकी प्रतिक्रिया

स्वरूप अपभ्रंश-भाषाओं में नूतन व्यञ्जन वर्ण बैठ कर सुखोच्चारण-योग्यता करने की चेष्टा हुई। इसका फल यह हुआ कि प्रादेशिक अपभ्रंश भाषाएँ साहित्य की भाषाओं के रूप में उद्भूत हुईं। आधुनिक प्रादेशिक आर्य-भाषाएँ भी प्राकृत भाषाओं के उस रूप का पूर्ण संशोधन करने के लिए नूतन संस्कृत शब्दों की ग्रहण कर अपभ्रंशों के स्थान को अपने अधिकार में करके नवीन साहित्य-भाषाओं के रूप में परिणत हुई। आधुनिक आर्य-भाषाओं में पूर्व-वर्ती प्राकृतों और अपभ्रंशों की अपेक्षा उत्कर्ष यह है कि इन्होंने शब्दों के सम्बन्ध में प्राकृत और संस्कृत को मिलाकर समय के गुणों का एक सुन्दर सामञ्जस्य किया है। इनके उद्भव और उद्भव शब्दों में प्राकृत की कर्मछटा और मजबूती है और तत्सम शब्दों में संस्कृत की शोभास्थिति। आधुनिक आर्य-भाषाओं में संस्कृत और प्राकृत दोनों की अपना उत्कर्ष यह है कि ये संस्कृत और प्राकृतों के अनापेक्षक छिग वचन और विभक्तियों के भेदों का बर्तन कर, उनके बदले मिला मिश्र स्वतन्त्र शब्दों के द्वारा छिग, वचन और विभक्तियों के भेदों को प्रकटित कर और संस्कृत तथा प्राकृतों के विभक्ति-सङ्ग स्वभाव का परिष्कार कर विस्लेषण-शील-भाषा में परिणत हुई हैं। इस तरह इन भाषाओं ने अपभ्रंश आवास से बंध के अर्थ का अधिकतर स्वयं रूप में प्रकटित करने का मार्ग-प्रदर्शन किया है। एक गुणों के कारण ही आधुनिक आर्य-भाषाओं ने वैदिक, संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश इन सब साहित्य-भाषाओं के स्थान पर अपना अधिकार जमाया है।

संस्कृत की अपेक्षा प्राकृत-भाषाओं में जो उत्कर्ष—गुण ऊपर बताये हैं वे अनेक प्राचीन ग्रन्थकारों ने पहले ही प्रदर्शित किये हैं। उनके ग्रन्थों से प्राकृत के उत्कर्ष के संशय में कुछ बचन यहाँ पर उद्धृत किये जाते हैं —

‘अस्मिन् पाठ्य-कर्म पठितं सीढं न वे स पाठितः ।

नामस्य तत्-तत् कुर्यात् ते कश्चिदप्युच्यते ॥ (इति श्री पाद्मसम्भारो १ २) ।

अर्थात् जो छेग असुतोपम प्राकृत शब्द को न तो पढ़ना जानते हैं और न सुनना जानते हैं अथवा कम-वचन की आलोचना करते हैं उनके शरम क्यों नहीं आती ?

‘उत्तमस्य सावर्ण्यं पश्यन्त्यायारं शक्यमवच्छेदः ।

पदकम-सङ्गान्तरकरीषणं पश्यन्त्यपि पद्मानो ॥’ (वाग्विजय का गठबद्धो १५) ।

संस्कृत शब्दों का व्यवहार प्राकृत का ज्ञान से ही व्यक्त होता है, संस्कृत भाषा के उत्कृष्ट संस्कार में भी प्राकृत का प्रभाव व्यक्त होता है।

‘उत्तमस्य-वैष्णवं संनिवेष्ट-विहितयो बन्धनित्यो ।

द्विरन्तरिणो आनुपल-बन्धमिह उच्यते पदमिति ॥ (गठबद्धो ७२) ।

सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर आज तक प्रचुर परिमाण में नूतन नूतन अर्थों का उद्भवन और सुन्दर रचनावादी प्रबन्ध संपत्ति कही भी है तो वह केवल प्राकृत में ही।

‘हरित-विशेषो विमलानयो य मञ्जवानयो य मञ्जवः ।

इह बहिर्भूतो धीरो-मुक्षो य हियमस्य निष्कृतः ॥’ (गठबद्धो ७३) ।

प्राकृत-काव्य पढ़ने के समय हृदय के भीतर और बाहर एक ऐसा अमूल्य-पूर्ण रूप होता है कि जिससे दोनों आँखें एक ही साथ विकसित और सुश्रित होती हैं।

‘पस्तो उत्तमस्य-वैष्णवं पाठ्यं यथोक्तिं होइ सुउत्तमो ।

पुरिष-महिषाणुं वैतपमिहंतेरं तितियमिमां ॥’ (पञ्चतन्त्र की कर्पूरकरी ६५ १) ।

संस्कृत भाषा कर्करा और प्राकृत भाषा मुकुमार है। पुरुष और महिला में मित्रता अन्तर है, इन दो भाषाओं में भी घटना ही प्रमेद है।

१ अमूल्य प्राकृत काव्य पढ़िन्तु योनु न ये न जानन्ति । नामस्य तत्-तत् कुर्यात् ते कश्चिदप्युच्यते ? ॥

२ उद्भवेति सावर्ण्यं प्राकृत-काव्यमा संस्कृत-प्रमाणम् । सङ्कट-संस्कारोक्तं प्राकृत-प्रमाणं प्रमाणम् ॥

३ मञ्जवानयो धीमहि-विहितं बन्धनम् । द्विरन्तरिणो आनुपल-बन्धमिह उच्यते प्राकृतम् ॥

४ हरित-विशेषो विमलानयो मुकुलीकार-वाक्योः । इह बहिर्भूतो यः कश्चिदप्युच्यते विस्फुरति ॥

५ पदकम-सङ्गान्तरकरी प्राकृत-काव्यमा मरति मुकुमारः । पुरिष-महिषाणुं वैतपमिहंतेरं तितियमिमां ॥

विदुः कथा विष्णुः प्रकृतिमधुरा प्राकृतगिर ।

दुःखोपगमः सः सत्यरत्नं भूतवचनम् । (पञ्चोद्वार का वाक्यमास्य १ ११) ।

संस्कृत भाषा सुनने योग्य है, प्राकृत भाषा स्वभाव-मधुर है, अपभ्रंश भाषा भव्य है और पैशाची-भाषा की रचना रस-पूर्ण है ।

सत्यवचनस्त्वर्थं वेद न वाणिति मंद-बुद्धिः ।

सत्त्वाण्यपि दुष्ट-वीर्यं तैलेन पामपं रसम् ॥

दुष्टवचनैरपि-रहितं मुक्तचित्त-बलैर्हि विरचितं रसम् ।

पाप्य-कथं सोऽयं कस्य न हिनयं दुःखेन ? (महेश्वरसूरि का पञ्चमीमाहात्म्य) ।

सामान्य मनुष्य संस्कृत-ग्रन्थ को सध को समझ नहीं पाता है । इसका यह मग्य उस प्राकृत भाषा में रचा जावे है जो सब लोगों को सुख-बोध्य है ।

गृहार्थक दूरी-राशियों से रहित और सुखमय पदों में रचा हुआ सुन्दर प्राकृत ग्रन्थ किसके हृदय को सुखी करवा ?

परमत्र सत्यवचनं सत्यवचनं न निमित्तं वैद्यः ।

बल-हर्ष न पतितं तद्वचनद्वयं कुशल ॥

(वक्रवर्माण (१) से अपभ्रंश-वाक्य-वचनों की प्रस्ता ११ ७१ में उद्धृत) ।

संस्कृत ग्रन्थ को जोड़ो और जिसने संस्कृत काव्य में रचना की उसका भी नाम मत दो क्योंकि वह (संस्कृत) लज्जे हुए बालों के पर की तरह वह वह वट्ट आभाज करता है—अविच्छिन्न सम्राट् है ।

पाप्य-कथमपि रसो नो वाक्यं त्वं न वेद्यं यद्विदुर्हि ।

कथमस्य न वाणित्य-वीर्यवत् स्थिति न कथास्यो ॥

सविद्यं मधुरवचनं दुर्ग-मय-मन्त्रं स-विद्यारे ।

एतं पाप्य-कथं नो खलु कथं पतितं ? ॥ (नरपञ्चम का वक्रवर्माण, पृष्ठ ९)

प्राकृत-भाषा की कविता में और विदग्ध के कथनों में जो रस जाड़ा है उससे वासो और शास्त्र उस की तरह, रसि नहीं होती है—मन कभी ऊँचा नहीं है—अस्मत्प्रति निरन्तर बनी ही रहता है ।

जब सुन्दर मधुर, गृहकार-रस-पूर्ण जोर पुनवियों को म्रिय पैसा प्राकृत ग्रन्थ मौजूद है तब संस्कृत पढ़ने को कीन जाता है ?

१ संस्कृतभाषास्यार्थं वेद न वाणिति मन्द-बुद्धिः । सर्वेद्यपरि मुक्तवीर्यं तैलेन प्रकृतं रचितम् ॥

दुष्टवचनैरपि-रहितं मुक्तचित्त-बलैर्विदुर्हि रसम् । प्राकृतभाषां लोके कस्य न हृदयं मुक्तवति ? ॥

२. कथमस्य सत्यवचनं सत्यवचनं न निमित्तं वेद । बल-हर्षादपि कथितं तद्वचनद्वयं कुशल ॥

३. प्राकृतभाषा रसो नो वाक्यं त्वं न वेद्यं यद्विदुर्हि । परमत्र न वाणित्य-वीर्यवत् स्थिति न कथास्यो ॥

वदिते बहुधापरि मुक्तचित्त-बलैर्विदुर्हि । एतं प्राकृतभाषा नः प्यारते संस्कृतं पठितुम् ? ॥

मुद्रणा की मुद्रिका के लिए आवश्यकतानुसार नहीं नहीं रेकर्डवाले रख के 'घ' के स्थान में 'घ' और 'ब' की बगल 'घ' दिया गया है।

घाई ईश्वरी में बयलियाले 'ब' की वल 'घ' का प्रयोग की बल ही पला बाठा है। वैसे 'अव' (अव) के स्थान में 'घट' 'घाई' (घाई) की काइ वलीय धारि। ऐसे ठावों की भी एत नीच में बल्ला पुनरुत्थि न बरके ठ-बलिठ ठावों की हो गिरेन कय से स्थान दिया गया है।

१. संयुक्त ठावों की लकने बलिक स्थान में अलग न देवर दूध (पुर्ब बाक्यामि) रख के भीतर ही अतर मल्लाले रख बगारधि बय है कले ठावों में थिय कय हैं और एतके पुर्ब (अव) (बय) का बिह दिया गया है। ऐसे रख का संयुक्त बलिठल भी बाते ठावों में बिह के कर दिए गए हैं। बिठेन स्थानों में पाठकों की सुपमठा के लिए संयुक्त रख अलक बलिक स्थान में अलग भी बतसमि कय हैं और एतके धाई तथा रेकर्ड के लिए मुल रख में बाई के लिए कय हैं। ईश्वरी की मुद्रणा की गई है।

(क) इन संयुक्त ठावों में कहां देवो— से बलिठ रख को देखते को बहा गया है बाई का रख के एली मुल रख के भीतर देवना बाकिए न कि अलग रख के अलग।

२. ए ठाव (क) या या (क) अर या ए, एव (ए) अय एम (एम) बाधि मुल नीर सर्व-बाधारण प्रत्ययवाले ठावों में प्रत्ययों को जोड़कर केवल मुल रख ही बाई लिए कय हैं। बल्लु कहां ऐसे प्रत्ययों में कय धारि की बिठेनठा है बाई प्रत्यय-बलिठ रख की बिह कय हैं।

बातलों के लय कय बाई बावों में और कल्लो के कय कले ठावों में बातु के भीतर दिए कय हैं।

(क) बात लका कर्म-करीर कर्मा का बिठेन की बातु के भीतर कर्म— ए ही दिया गया है।

(ख) मुल कल्ल के कय तथा बाव प्रत्ययवाले कल्ल के बिठिठ कय बल्ला अलग अलग प्रत्ये बलिक स्थान में दिए कय हैं।

३. बिम संस्कारों से रख-संघट्ट किया गया है ज्यों रही हुई संभाल की बा प्रेत की धूर्तों को गुहार कर कुछ रख ही बाई दिए कय हैं। बातकों के बलाई बाधारण धूर्तों की बाकिए बिठेन मुलवाले पाठ रेकर्ड के अलेख के अलतर पुर्ब में एतों के लो अल्लुठ की बिने कय है और मुलवाले बाय की मुल्ल नीम में '१' (संयुक्ति) के बाव बतसा की गई है। वैसे देवो बाकिए बल्लु धारि रख।

(क) बाई बिम मिम बावों में या एक ही ईव के मिम बिम स्थानों में या संस्कारों में एक ही रख के अलेख संभार कय पले कय हैं और बिमके कुछ कय का बिठिय बला कठिन बाव पला है बाई पर ऐसे बावले लय रख इस नीच में पलाबान दिए कय हैं और मुलगा के लिए ऐसे बावले रख के अल बाव में देवो— बिम कर अतर कय की मुलगा बला है वैसे देवो 'पुल्ल-बाधि-कल्लय पोल्ल-बाधि-कल्लय', 'पेसल, पसलेस, मयाधि सयाधि' धारि रख।

४. एक ही ईव के एक का बिम बिम संस्कारों के अलका बिम बिम बावों के बाक-नीचो के बाई कुछ रख इस बाय में बलाबान दिए कय हैं। वैसे—परिक्लुसिय (अल्लुल्लु २१—बन २११) और परिक्लुसिय (अल २१ टी—बन २१२) बिबिबुल्ल (भी बा, का पुनकलाय १ २ १ १२) और बिबिबुल्ल (बा घ, का पुनकलाय १ २ १ १२) परिक्लुसिय (बा घ का अल्लुल्लु १, १—बन २१) और परिक्लुसिय (बलिबान-अल्लु का अल्लुल्लु १ २) सामिबाटु (अल्लुल्लु-बन १ ११) और सामिबाटु अल्लुल्लु-बाटार, बाट ७) बाधि

५. संयुक्त की वल्लु बाध में जो कय से कय रख के धारि के 'ब' तथा 'ब' के बिम में कल्ल कल्ल-बे है। एक की रख कही बाधारि पला बाठा है जो कही बाधारि। वैसे अल्लुल्लु में 'बलि' हैं हो बिबिबुल्ल में 'बलि' बाता है। एतके ऐसे ठावों को दोहरी-स्थावों में न केवल को 'ब' या 'ब' बाधि बाव पला है कही एक रख में बल्ल रख बिम पला है और एतक प्रकार के ठावों के रेकर्ड की बाई ही बिने कले हैं। हां बाई दोहरी बाधारि के बाधिबल का एत कय से अलेख पला बाता है बाई दोहरी बाधारि में बल्ल रख बिम पला है, वैसे 'बल्लुल्लु' और 'बल्लुल्लु' धारि।

६. बिबिबुल्ल-बलिठ बाधि रख बाध रख के ही संयुक्त बाधे हैं, संयुक्त-बाधिबल से बाई।

(क) बाई बाधिबल में बिबि बाधि कय की नीच है बाई कय बाधि के पुर्ब में ही बिम बिम बाधि का पुनक रख है दिया बाता है। बाई एत बिम रख बाई बिम है बाई एतके पुर्ब के बाय का बावों के अलग ही बिम बाधि बाधिबल बाधि।

(क) वहाँ पर संस्कार-विशेष के अन्तर्गत की बात धारणकरा प्रतीत हुई है वहाँ पर रेकर्ड की संवि-सूची में दिये हुए संस्कार के १ २ प्रावि संक रेकर्ड के पूर्व में दिये हैं। जैसे पेसस और पेससेस दोनों के रेकर्ड 'माता' के पूर्व में २ का अंग धारणकरा-समिति के संस्कार का और १ का संक और रानी मारि के संस्कार का बोधक है।

१. वहाँ वहाँ प्राकृत के किसी एक के कम की धर्म की धर्मना संयुक्त राज्य प्रावि की धारणता या विशेषता के बिना प्राकृत के ही ऐसे राज्यधर की तुलना बलवान् अभ्युक्त प्राप्त पड़ा है वहाँ पर रेकर्ड के बाव-बेबी— वे जस राज्य को देखने की सूचना की गई है।
२. वहाँ कहीं 'बेबी' के बाद काने दाहनों में दिये हुए प्राकृत राज्य के धारणता धारे दाहनों में विमानि-बोधक या संस्कृत-प्रतिपाद्य दिया गया है वहाँ कहीं लिख धारिबाने या संस्कृत प्रतिपाद्यबाने ही प्राकृत राज्य से मतलब है, न कि कसके धारणधर प्राकृत राज्य से। जैसे वर राज्य के 'बेबी या ध' के न से पुस्तिक न को लीकर हुआ ही धर्मन-पुत्र न राज्य, और आधार के 'बेबी ऊसार = जगार' के 'ऊसार' से लीधत ही ऊसार राज्य देखना बाकिय पड़े हुसरे और नीचे ऊसार राज्य को नहीं।

जब तियनों से परिचित बिना तियनों का अनुसरण इस क्षेत्र में किया गया है वे प्राकृतिक सूत्र पठति के संस्कृत धारि कीरों के देखनेबानों से परिचित और सुगम होने के कारण सुलझे की बचता नहीं रहते।

पाइअ-सह-महराणवो ।

(प्राकृत-शब्द-महाराव)

श्रीमान फतेसासजी श्रीचन्द्रजी गोसेध
जयपुर बारों श्री मोर से भेंट ॥

पासिअ-शेस-समूह, मासिअगेरतबाय-सलिसअर्थ ।

पासिअ-सोआलोअ, वीमि जिण महावीर ॥ १ ॥

निर्वाचिम-साउ-पर्य, अइसइअ सपल-आणि-परिणमिर ।

बाय अवाय-रहिअ पणमामि जिमिइ इवार्य ॥ २ ॥

पाइअ-मासासइअ अपलोइअ सत्य सत्यमइविउल ।

सह-मइण्णव-णाम, रपमि खेस स-यण्ण-अम ॥ ३ ॥

अ

पु [अ] १ पाइअ बलु-माता का प्रथम
मगर (हे १ १ प्रमा) । २ विज्जु हुण
(नि १ १) ।

१ ऐलो च प (पा १४ जी २, पउम १११
१४ हुया) ।

१ [दि] ऐलो च 'बरी घ' (पाइ ७६) ।

न [अ] निच-निचिण घनों में से प्रक-
रण के धनुषार, तिरी एक को बलसलेबासा
घम्य—१ निपेय प्रतिपेय 'अहंछण' (पु
७ २४) 'समन्विह मपोआरी (विने
१२१२) । २ विरोप अस्ताम घम्य
(गीया १ १) । ३ घममयता धनुषिणल
बयान (गउम २२ ३) । ४ घमता, मोह-
पन घमण (गउम) 'घमन' (मय ४) ।
५ घमन धरिचमालना 'घमण' (गउम) ।
६ मय निमना 'घमणुस' (लीवि) । ७
मादय घम्यना घमणुसंग (मय ११) ।
८ घमणलता गुणन 'घमण' (पाइ २६) ।
९ लण्ड घमण 'घमण' (ल ११) ।

अ पु [क] १ मुयं गुर (नि ७ ११) । २
घमि, घाम । ३ बइर, मोर (नि ६ ४१) । ४

न, पनी बय (नि १ १) । ५ रिमर, टोंच
(नि १ ४१) । ६ मलक विर (नि १ १८) ।

अ वि [अ] जपम जात (पा १७१) ।

अमद वि [दि] स्नेह-अल्लि मुषा (नि १
११) ।

अअर ऐलो अअर (नि ११३) ।

अअर ऐलो आयर (नि ११३) ।

अइ घ [अवि] १ २ सनायता धीर घामंण
घम का मुक घम्य (नि २ २ ३ सनय
५) ।

अइ घ [अति] यह घम्य नाम धीर घम्य के
घम में सनाय है और नीचे के घमों में से किसी
एक को मूचित करना है—१ धतिरय घमि
रेश घमण्ड घमल्लि 'घमचिउत' (पा
१४ रपा ना २१४) । २ अत्यं महत्त्व
घमण (कण) । ३ घम घमल्लि घमवाय
(ल ७) । ४ घमिअण अल्लम 'घर
अमो' (ल १ ४ ४२) । ५ अर अंजा
घमण 'मराणमा' (मीन गीया १ १) ।
६ रिपा घमणि (ल १ १) ।

अइ घ [अति] घमण्य-मुक घम्य 'मर
बइर' (गुप १ २ ३ ३) ।

अइ घ [आ + इ] घामयन करना या
मिरना 'घरिदि मारपा' (ल १७१) ।

अइ श्री [अवि] घमण्डु मल्ल का घमि
हाता बेव (गुम १) ।

अइ घ [अवि+इ] १ अत्यं घन करना । २
मयन करण । ३ प्रवेश करना । बइ अर्द्ध
(नि १ २६ कण) । उह अइ घ (गुम
१ ७ २८) ।

अइ घ [अवि] घमिणल प्रात (गुम
१ १ १२) ।

अइ घ [अति + अइ] १ घमिणक
कना स्वाताम करना । २ अत्यं घन करना ।
३ घम डूर जाना (नि ११ ८ ८६) ।

अइ घ [अत्यं] १ अत्यं घन करना । २ अत्यं
घि घमिणल (नि ११ ८) । ३ डूर घमा
हुया (नि ११ ८६) ।

अइ ऐलो अइ घ (नि ११ ८) ।

अइ अइ ऐलो अइ घ (नि ११) ।

अइ घ न [अत्यं] १ अत्यं घन (नि ११
१) । २ घमणल गोचर (नि ८ ८) ।

अइ ऐलो अइ घ = घमि + न ।

‘को बन्धुवैतकलमात्रकर्म नं वहि जया काले।
तन्मेमुत्पन्नमै, मर्यादस्थानं विमोक्षणम्’
(इ. १)।

अष्टाध्याय नि [अतिपाठिक] विद्या करनेवाला
(गुप्त २ १०)।

अष्टाध्याय पुं [अतिपाठक] मन्त्रादि धर्माल
के समकालिक ऐतरेय शोध के एक टीकाकार
देव (चित्त)।

अष्टाध्याय एक [अति + ध्या] प्रतिपन्न
जन्मा लुप्त कन्धा। मर्यादा (गुप्त १ १
४ १)।

अष्टाध्याय म [अतिप्रग] पूर्वप्रमाण बड़ी
सूत्र (गुप्त ७ ७८)।

अष्टाध्याय नि [अतिप्रमाण] १ गुप्त न होता
हवा मोहन करनेवाला। २ न तीन बार से
प्रति काल (वि. १४७)।

अष्टाध्याय पुं [अतिप्रसङ्ग] १ अतिप्रसङ्ग
(पञ्चा १)। २ एक-शब्द में प्रसिद्ध प्रति-
स्थापनात्मक शोध (स १६६ उतर ४८)।

अष्टाध्याय नि [अतिप्रसङ्ग] प्रतिपन्न
वाचकता (मर्या १)।

अष्टाध्याय न [अतिप्रमाण] बड़ी सूत्र (पा
१८)।

अष्टाध्याय नि [अतिप्रसङ्ग] १ बलिष्ठ प्रति-शाली
(वीर)। २ न प्रतिपन्न बल विरोध सामर्थ्य।
१ बड़ा श्रेष्ठ (स ११४)। ४ पुं एक
पत्रा जो मर्यादा रूपमन्त्र के पुराण अनुस
म में पिठा या पिठामरु का (पाश्)। ३
मरुत बन्धनी का एक लीन (डा ८)। १
मरुत शोध में धामामी बीबीमी में हामवाता
पत्रका बाधुरी (सम ३)। ७ एकल का एक
वीरता (पत्रम १६ २३)।

अष्टाध्याय की [अतिप्रसङ्ग] मन्त्रादि महावीर
के प्रमत्त नामक प्याहल गानक की भाजा
(पाश्)।

अष्टाध्याय पुं [अतिप्रसङ्ग] एक बल मुनि, का
पत्रम बलुरी के पूर्व-अन्त में मुक्त से (पत्रम
२ १७६)।

अष्टाध्याय की [अतिप्रसङ्ग] १ पत्रम प्रसङ्ग।
२ बलुरी बलीन (वि ४२)। ३ इत्येको
के पर का बहु भाष जहाँ सामुप्य का प्रवेश

करने की प्रवृत्ति न हो, ‘प्राप्तुमि न पञ्चक्या
गोपरागमनो मुणी’ (स १ १ २४)।

अष्टाध्याय की [अतिप्रसङ्ग] श्रीचक्राली
मटी (वीर)।

अष्टाध्याय नि [अतिप्रसङ्ग] बहुत परिमाण
अष्टाध्याय से अधिक (उर डा १)।

अष्टाध्याय पुं [अतिप्रसङ्ग] १ स्वनाम
अष्टाध्याय का एक प्रसङ्ग (उली बल में
अष्टाध्याय मुक्ति पत्रोवाता) बल मुनि जो
प्राप्तुमि का राजा विजय का पुत्र

अष्टाध्याय या श्रीर विजये बहुत छापी ही
उम में स्वनाम महावीर के पास
श्रीवा की श्री (मरु)। २ बल
का एक छोटा भाई (पाश्)। ३
बल-विजय (पत्रम ४२ ८)। ४
मापनी लता (पाश् स ३३)।
३ न प्रमाणप्रसङ्ग नामक धर्म-अन्त
का एक प्रमाण (मरु)। (स १
२६ १७८ वि २४६)।

अष्टाध्याय नि [अतिप्रसङ्ग] प्रतिपन्न
‘बन्धो पत्र-
मि गुप्ते सुभर बह वा न वृष्टिरे (स
२ २४)। २ करनेवाला ‘ठाणाय’
(वीर)।

अष्टाध्याय नि [अतिप्रसङ्ग] प्राप्त (पाश् ११४)।

अष्टाध्याय नि [अतिप्रसङ्ग] १ प्रिय श्रीविद्या। २
व्याप्त-व्याप्त व्या करने योग्य (स ६, ११)।

अष्टाध्याय येको अष्टाध्याय।
अष्टाध्याय न [अतिप्रसङ्ग] बहुत काम अधिक
मोहन करना (स २)।

अष्टाध्याय नि [अतिप्रसङ्ग] गया हुआ (स
३ ३)।

अष्टाध्याय एक [अति + चर] १ उत्तमपन
करता। २ चर का दूगिन करना। बड़
अष्टाध्याय (गुप्ता ३४४)।

अष्टाध्याय एक [अति + या] बला गुजरता
(उर २)।

अष्टाध्याय की [अतिप्रसङ्ग] बड़ी छापी (उर
२१७)।

अष्टाध्याय की [अतिप्रसङ्ग] की पली (स १
११)।

अष्टाध्याय न [अतिप्रसङ्ग] १ पत्रम गुजरता।

२ पत्रा बौरु का मरु प्राप्ति में गुप्त-बाम
श प्रवेश करना (डा ४)।

अष्टाध्याय नि [अतिप्रसङ्ग] गया हुआ गुजर
हुआ (उर २)।

अष्टाध्याय पुं [अतिप्रसङ्ग] उत्तमपन प्रतिपन्न
(वि)। २ गृहीत व्रत या नियम में दूपाण
मगता (पा १)।

अष्टाध्याय [अतिप्रसङ्ग] बली शीघ्र (स्वना १७)।
अष्टाध्याय [अतिप्रसङ्ग] भोगन चौक (पाश्)।

अष्टाध्याय पुं [अतिप्रसङ्ग] धामुक्त योगका राज-निपुण
मुनिमा (स १ १६)।

अष्टाध्याय नि [अतिप्रसङ्ग] उत्तम अष्टाध्याय-प्रव
(गुप्ता १)।

अष्टाध्याय नि [अतिप्रसङ्ग] प्रतिपन्न (सि १६
३६१)।

अष्टाध्याय की (स) नई बड़ दुलहित (स १
४८)।

अष्टाध्याय पुं [अतिप्रसङ्ग] अधिक विविध प्यातिप
की विनयी से थो दिन अधिक होता है बड़
(डा १)।

अष्टाध्याय नि [अतिप्रसङ्ग] १ गाया सल। २
विरोध छापी। बल-संस्थिता, बल-व्या की
[कर्मप्रसङ्ग] कर्मप्रसङ्ग देव वचन के
पाठक बन में स्थित एक शिवा विचार
विनयेता का पन्नापिनेक विद्या बाजा है
(डा २ ३)।

अष्टाध्याय [अतिप्रसङ्ग] शीघ्र, जल्दी (स
१ ११)।

अष्टाध्याय की [अतिप्रसङ्ग] योगिक बल-व्या और
शोधन-व्या की भाजा (मम
क-पणी)। ३ पत्रम २ ४२)।

अष्टाध्याय की [अतिप्रसङ्ग] १ प्रमाण। २ योगमय के
पित्र-प्राणी-व्या करनेवाली श्री (स १ १)।

अष्टाध्याय पुं [अतिप्रसङ्ग] एक का हावो (पाश्)।
अष्टाध्याय पुं [अतिप्रसङ्ग] एक का हावो (वि)।
अष्टाध्याय की [अतिप्रसङ्ग] विजयी बलता
(स १ १४ १)।

अष्टाध्याय [अतिप्रसङ्ग] बल या गुण बल प्रति
मम बल-व्या नामक (पाश्)।

अष्टाध्याय पुं [अतिप्रसङ्ग] कर्मप्रसङ्ग बल-व्या
(स १ २६)।

अक्षर पुं [रे] छहमठा मय (वि १६)।
 अक्षरों की [लक्ष्मणी] ? महाविदेह क्षेत्र
 के राज्य नामक विजय की राजधानी (अ २)।
 येर की पहिल भिरा में बहरी हुई सीटीवा
 म हाथी की बहिल भिरा में बरौतान एक
 बलाकार पर्वत (अ ३२)।
 अक्षिभ न [रे] यालिन (वि १११)।
 अक्षिभ नि [अक्षिभ] भिन्न भिन्न बला
 (बीम)।
 अक्षिभ पुं [रे] न लंन लंन (आमा
 ११)।
 अक्षुद्रा पुं [अक्षुद्रा] नागलोक बूटी
 ठाक (बी १)।
 अक्षुर पुं [अक्षुर] प्रदेह कुनै (बी ६)।
 अक्षुरिभ नि [अक्षुरिभ] अक्षुर-मुल, जिसमें
 अक्षुर उत्पन्न हुए हो बह (आमा)।
 अक्षुस पुं [अक्षुस] ? पांथी लोई का
 एक हथियार, जिससे हाथी कतमे बने हैं,
 'अक्षुसेउ' कहा छासो बम्बे उपविहारयो'
 (अ २२)। २ प्रह-भिरा (अ २३)। ३
 सीठा का एक पुत्र भुस (पम् १० ११)।
 ४ भिन्नबला कलेबला, कनू में रखेबला
 (कनू)। ५ एक रैन-विमल (एम् १)। ६ पुन.
 पुन-बला का एक दोर (एम् २)।
 अक्षुस पुन [अक्षुस] ? एक रैन-विमल
 (रैन १४)। २ पुं अक्षुसारा बूटी
 (एम् १०)।
 अक्षुसइय न [रे] अक्षुसित अक्षुस के प्रकार
 वाली चीज (वि १ ३५ वि ६ ११)।
 अक्षुसय पुं [अक्षुसय] केनो अक्षुस । २
 अक्षुसी का एक प्रकार जिससे बह के
 पूजा के बसो बह के पत्थरों को कटता है
 (पीन)।
 अक्षुसा की [अक्षुसा] चीखें तीरकर की
 धनलगाव बला की साधन-वेदी (एम् २)।
 अक्षुसिभ नि [अक्षुसिभ] अक्षुस की ठाक
 पुन इमा (वि १४ २२)।
 अक्षुसी की [अक्षुसी] केनो अक्षुसा
 (बी १)।
 अक्षुर केनो अक्षुर 'हा पुन किणमिता
 निरुदे बिदेह' (एम् ११ टी)।

अक्षिभ न [रे] बोरा भावि को मारने का
 बाहुक छोड़ा जाये (न ४)।
 अक्षिभ पुं [रे] बसोक-मुल (बी ७)।
 अक्षोठ पुं [अक्षोठ] दूध-मिलेय (वि २२)।
 अंग न पुं [अंग] ? इस नाम का एक देश,
 जिसको मानव बहार कहते हैं (पुर २
 १०)। २ रामका एक मुल (पम् ३६, ३७)।
 ३ न. बापाएन मुल भावि बाहु बैत भास-
 रन (मिया २१)। ४ बेरान बेर के रितावि
 बः बम (पाथ)। ५ बाएण हेन (एम् १)।
 ६ बापा चीज (मि)। ७ पुन. शरीर
 (पाथ ५४)। ८ शरीर के मस्तक भावि प्रभव
 (कम् १ ३४)। ९ य भिरा का बम
 मया सम्बोधन (एम्)। १ बलमलंकार
 में प्रयुक्त किया जाता धम्म (अ ४)। ३ पुं
 [अंग] यह नाम का एक पक्ष्य जिससे
 माला पल्लवाव के पल सीधा भी भी
 (मिर)। इसि पुं [वि] नया नयरी का
 एक ध्वज (पाथ)। [अंगिया] की
 [अंगिया] बम-धनो का परिष्ठ (पथि)।
 'अंगिया' [अंगिया] जिसका बम
 काटा प्या हो बह (एम् २ ११)।
 आय नि [आंग] बहा लड़का (अ
 १४५)। ६ केनो य= ह (अ ४)।
 पविट्ट न [अंगि] ? बाहु बैत धन-बन्धो
 में से कोई भी एक (कम् १ ९)। २ धन-
 बन्धो का बल (अ २१)। बाहिर न
 [आंग] ? धन-बन्धो के परिष्ठ बैत धान
 (पाथ)। २ धन-बन्धो से मिल बैत धानो का
 बात (अ २)। मंग न [अंग] ? धन-मन्त्र
 (एम्)। २ हर एक धन (बह)। मरि
 न [अंगि] कया नयरी का एक रैन-मुह
 (म ११)। मर मरय पुं [मर]
 मरु [अंग] ? शरीर की की कलेबला मोहर।
 २ नि शरीर को मलेबला की कलेबला
 (पुन १ ५ म म ११ १)। ३ पुं
 [अंग] ? वाली नामक विचारण का
 पुन (पम् १ १ ३६ ३७)। २ न.
 बाहु बह बैट्टा (पथ १४)। ३ य
 [अंग] ? शरीर में उत्पन्न। २ पुं पुन
 लड़का (अ १४ टी)। बा ओ [अंग]
 कया पुनी (पाथ)। रकस रकसा नि

[रक, रकस] शरीर को प्या कलेबला
 (पुन ३२० रक)। राग, राय पुं [राग]
 शरीर में कयावि का मिलेय (पीन वा
 १५६)। 'राय पुं [राग] ? पलेत का
 प्या (अ ७२१)। रांग रेत का प्या कर्त
 (आमा १ १६ बैटी १ ४)। रिसि केनो
 इसि। रू नि [रू] केनो य= ब
 (पुन ३१२ पम् ३६ ३२)। रू की
 [रू] पुनी लड़की (पुन ११)। 'विजा
 की [विजा] ? शरीर के छुरा का मुन-
 मुन फल बललेबला विजा (अ ५)। २ क
 नाम का एक बैत पं (अ ८)। बिहार पुं
 [विचार] केनो पुनो कर्त (अ ११)।
 संमय नि [संमय] संमल, बहा (अ
 १४८)। इराय पुं [इराय] शरीर के
 धनबन्धो के मिलेय हाथ-पाव (पि ११)।
 'वाय न [वाय] पुनोविध पुन-विध
 (मिटी)।
 अंग पुं [अंग] धनलगाव धनलगाव के एक पुन
 का नाम (पी १४)। २ न. बागातर बाहु
 रिनो का धनलगाव (बंदो ३५)। ३ केनो
 न (मरि १२९)। ४ नि [अंग] य
 बन्धो का बलाकार (विचार ४०१)।
 अंग नि [आंग] ? शरीर का विकार (अ
 ४)। २ शरीर-बन्धो शरीरिक (पुन २
 २)। ३ न. शरीर के छुरा भावि विचारों के
 मुनमुन फल को कयाबेबला ठाक विमल-
 ठाक (अ ४६)।
 अंग नि [अंग] मुनर, म्मोहर (मि)।
 अंगइका की [अंगइका] एक नयरी लैर
 मिलेय (अ ३३२)।
 अंगिप्रभाष पुं [अंगिप्रभाष] धन-बन्ध
 धनलगाव 'धनमीमलेय परिष्ठएल्लविक-
 विणयमे' (पुन २१)।
 अंगन न [अंगन] धान, बीक (पुर ६
 ७१)।
 अंगना की [अंगना] की, चीछ (पुर ६
 १)।
 अंगिदिया केनो अंगइया (पी)।
 अंगवर्ण न [रे] रोड, बीमारी (वि ६
 ४०)।

अंगपञ्चिका न [वे] शरीर को मोक्षना (रे १ ४२)।

अंगार पुं [अङ्गार] १ बलवा हुआ कोयला (हे १ ४७)। २ जैन साधुओं के लिए जिता का एक शेष (भाषा)। अंगार पुं [अङ्गार] एक धर्म्य शैव-भाष्य (सं २४४)। वई की [पना] सुनुमार मगर के राजा सुनुमार की एक कन्या का नाम (बम्म ८ वी)।

अंगारग पुं [अङ्गारक] १-२ ऊपर रखे अंगारग (सा २६१)। ३ मत्स्य-ग्रह (पण्ड १ १)। ४ पहला मङ्गल (ठा २)। ५ राक्षस-वेद का एक राजा (पञ्च ४ २१२)।

अंगारिय नि [अङ्गारिय] कोयले की तरह बला हुआ, निखरुं (माठ भाषा)।

अंगारक रेवो अंगार, 'निखरुं-भाष्य' (निख १७२)।

अंगारका रेवो अंगारग (पञ्च)।

अंगारिय न [वे] ईश का डुकड़ा (रे १ २८)।

अंगारिय रेवो अंगारिय (भाषा)।

अंगि पुं [अङ्गि] १ प्राची कीप (गल ८)। २ नि शरीरपत्ता। ३ शैव-पत्नी का बाला (कम्प)।

अंगिरस न [अङ्गिरस] एक शेष जो गोतम शेष की दावा है (अ ७)।

अंगिरस नि [अङ्गिरस] १ अङ्गिरस-नाम में जन्म (ठा ७)। २ पुं एक तालन (पञ्च ४ ८९)।

अंगीकृष्य } नि [अङ्गीकृत] स्वीकृत (अ १ अंगीकृत } गुण ३२९)।

अंगीकृत } संक [अङ्गी + कृ] स्वीकार अंगीकृत } करना। अंगीकृत (महा भा)। संवेदनी (स १ ९) संक अंगीकृत (विने २१४२)।

अंगुष्ठ पुं [अङ्गुष्ठ] १ वृत्त-विशेष। २ म. छोटा वृक्ष का फल (रे १ ८२)।

अङ्गुष्ठ पुं [अङ्गुष्ठ] अङ्गुष्ठ (अ १) पालन पुं [अङ्गु] १ एक बिचा। २ 'अन्ध-भाष्य' मूत्र का एक सुप्त धर्म्यपन (अ १)।

अङ्गुली की [वे] शिरका पराङ्गुल, धुंढ (रे १ ६ २८४)।

अङ्गुलस न [वे] अङ्गुली अङ्गुलीय (रे १ ११)।

अङ्गुलस नि [अङ्गुलस] संतान बला (अ २९४)।

अङ्गुलस संक [पूर्य] वृत्ति करना वृत्त करना। अङ्गुलस (हे ४ ६८)।

अङ्गुलिय नि [पूरित] पूरुं किया हुआ (हुमा)।

अङ्गुरि, ये की [अङ्गुलि की] संकी (सा २७७)।

अङ्गुल न [अङ्गुल] य के बाल मध्यभाग के बालर का एक भाग माल-विशेष (अ १ ७)। पाहलिय नि [पूर्य-विशेष] दो से लेकर लग अङ्गुल तक का परिमाण बाला (जीव १)।

अङ्गुलि की [अङ्गुलि] संकी (हुमा)।

कीम पुं [कोश] अङ्गुलि-भाग शस्त्राला (अ ७)। एकोठण न [एकोठण] संकी कोना कड़ा करना (सं)।

अङ्गुलस न [अङ्गुलीयक] अङ्गुली अङ्गुलियक } (रे १, २ कम्प नि २१२)। अङ्गुलस्यग

अङ्गुलि की [वे] मियं वृक्ष-विशेष (रे १ १२)।

अङ्गुली की [अङ्गुली] रेवो अङ्गुलि (कम्प)।

अङ्गुलीय } पुं न [अङ्गुलीयक] अङ्गुली अङ्गुलीयग } (गुर १ ६४) 'पावलि' अङ्गुलीय } एक लामिय। समलियो अङ्गुलीय } अंगुलीयको हीए' (पञ्च ३४ अङ्गुलीयक } १ गुर १ ११२ १ २१२ अङ्गुलीय } पञ्च १६, १९)।

अङ्गुलेय रेवो अङ्गुलेय (गुल २ २६)।

अङ्गुलीय } न [अङ्गुलीय] १ शरीर के अङ्गुलीय } धर्म्य (पण्ड २९)। २ न [अङ्गुलीय] शरीर के शरीर के शरीर के धर्म्य 'गुरुसम' सुनुमीयों का सुनुमीयों का (अ १)।

आम न [आम] शरीर के धर्म्य की के निर्माण में कारक-मूत्र धर्म-विशेष (कम्प १ १४ ४८)।

अङ्गुलि की [वे] शिर को छोड़कर बाकी शरीर का लाल (अ ४ २१)।

अङ्गुलीय [अङ्गुलीय] नम-मूत्रक धर्म्य (मति १६, प्रदी २ ४)।

अङ्गुलीय संक [कृप] १ शीघ्रता। २ शीघ्रता प्राप्त करना। १ रेखा करना। ४ छला।

अङ्गुलीय (हे ४ १८७)। संक अङ्गुलीय (भाषा)।

अङ्गुलीय संक [अङ्गुलीय] पुनरा पुनरा करना। अङ्गुलीय (मति)।

अङ्गुलीय संक [अङ्गुलीय] जाना। अङ्गुलीय (पेना १६ २१) 'अङ्गुलीय' पुनरा पुनरा पुनरा 'अङ्गुलीय' पुनरा पुनरा (गुर ४ ४)।

अङ्गुलीय पुं [अङ्गुलीय] कपड़े का शेष भाग (हुमा)।

अङ्गुलीय पुं [अङ्गुलीय] गमन गति (अ ११)।

अङ्गुलीय पुं [अङ्गुलीय] धामन धाना (सा ११)।

अङ्गुलीय नि [अङ्गुलीय] १ मुक्त लीट (गुर ४ १७)। २ पुनित (गुण २१८)। ३ मयल अङ्गुलीय (गुण १८)। ४ न. एक प्रकार का वृक्ष (ठा ४ ४ जीव १)। ५ एक बार का पमन (सा ११)। अङ्गुलीय पुं [अङ्गुलीय] १ धनानामन धाना-धाना (अ ११)। २ अङ्गुलीय होना (ठा १)।

अङ्गुलीय नि [अङ्गुलीय] एक तरह का लाल (अ ४ २१)।

अङ्गुलीय की [अङ्गुलीय] धर्म्य (अ २)। अङ्गुलीय संक [कृप] १ शीघ्रता 'अङ्गुलीय' रेवो अङ्गुलीय (विने ७६४)। २ एक लाला होना। ३ अङ्गुलीय (विने ७६९)। प्रदी. अङ्गुलीय (गुण १)।

अङ्गुलीय न [कपड़े] शीघ्रता (पण्ड २, ३)।

अङ्गुलीय नि [वे] काष्ठ, शीघ्रता हुआ (रे १ १४)।

अङ्गुलीय संक [अङ्गुलीय] शीघ्रता। ४ अङ्गुलीय (म २४४)।

अङ्गुलीय पुं [अङ्गुलीय] १ कृष्ण गुणन-विशेष (गुल २)। २ शैव-विशेष (मति १९७)।

अङ्गुलीय पुं [अङ्गुलीय] १ शैव-विशेष (अ ३)। २ एक शीघ्रता रेव (ठा ४)। ३ शैव-विशेष का एक शिखर, जो शिखरों का बादा है (अ ३ ८)। ४ शैव-विशेष (भाषा)। ५ न. एक भाषि का रत्न (लावा १ १)। ६ शैव-विशेष-विशेष (अ १३)। ७ शैव-विशेष (गुण १)। ८ शैव-विशेष

प्रथमा कन्या है वैसा एक पवित्र इव्य (बी
 ५) । १ पाँचको प्राजा (मृष १ १) । १
 तैव भाविसे शरीर की मासित करना (रघु) ।
 ११ सेव (घ ५२) । १२ रणप्रया वृत्ति
 के बार-बार का करना भ्रंत-नित्येय (ठा १) ।
 "किसिया की" ["कशिका"] कस्तुरि-नित्येय
 (फण १७ रघु) । योग पुं ["योग"]
 कस्त-नित्येय (कव्य) । दीव पुं ["दीप"]
 दीप-नित्येय (इक) । पुष्प पुं ["पुष्पक"]
 एक नादि का रण (अ १) । २ पत-नित्येय
 का एक लिखार (ठा १) । प्या की
 ["प्रमा"] बीबी नरक-वृत्ति (इक) । रिदु
 पुं ["रिदु"] इन्-नित्येय (मय ३ ८) ।
 सलगा की ["शालका"] १ बैन-मुक्ति
 प्रविष्टा । २ भ्रमन भगल की सलाई (मृष १
 १) । १। सदा वि ["सदावि"] भाव से भ्रमन-
 नित्येय नानवर धरूप होये की दृष्टिकला
 (गिरी) । सुन्दरी की ["सुन्दरी"] एक छद्म
 की हनुमान की माता (पद्म १५ १२) ।

अथवा इसी प्रकार [दे] कृत-विशेष श्याम
प्रातः का देह (दे १ ३७)।

अंजण्यई ष्वे [रे] गङ्गी-विशेष (पण्ण१) ।
अंजण्यईस न [रे] देवो अंजण्यइसिभा
(रे १ ३७) ।

अथवा

धर्मशास्त्र की [धर्मशास्त्र] ? हनुमान की माता
 (पन्ना १ १) । २ स्वनाम-स्मात् धर्मो
 नान-धर्मो (डा २ ४) । ३ एक पुष्पवती
 (ब ४) । ४ वन्य पु [वन्य] हनुमान
 (पन्ना ४० २) । ५ सुन्दरी की [सुन्दरी]
 हनुमान की माता (पन्ना १ ३) ।

अथवा भाषा [मञ्जुभा] की ही तरह
होती (इह) ।

अजिष्ठा एषी [६] रचो अजिष्ठासिष्ठा
(६१ ३०) ।

अन्वयमी स्त्री [भङ्गनी] कन्वत का धारार
वाच (गुप्त १ ४१)

अथर्व, श्री कुंजी [अथर्व] । हाव वा
 सपु' (है १ १२) । एक वा दोनो सपुषित
 हावो नो लमट पर गहना, पैसा वा शीर्ष
 वा मर्यादाई रूपेई शिखरलठिरेई प्रसी
 मर्यादा' (निष्) । १ वर-सपु, लमसा

क्त विनय प्रणाम (प्राप्त ११ स्वप्न ११)।
 छह पृ [पुन] हान का संयुक्त (महा)।
 करण प [करण] विनय-विनय नमत
 (११)। पण्डित पृ [प्रमह] १ नमत, हान
 बोधना (मग १४ १)। २ नमो-विनय
 (पण)।

अथ सवि (६) श्रुत, सप्त (६) १ १४ ।

अजय नि [अजय] योजा ह्या संज्ञा-पुल
किया ह्या (सं १४) ।

संज्ञा वि [अनु] । एतत् संज्ञा वि 'संज्ञा' नाम
 बह्वचनं विज्ञाप्य तद् गुणैः (सूय १
 १ १ ४) । २ संज्ञा में एतत्,
 संज्ञा 'संज्ञा' नामक संज्ञा (संज्ञा) ।
 ३ एतत्, एतत् (सूय १ १) ।

अमुक्या एषी [अमुक्या] मक्यात फलसुतात
नी प्रथम सिध्या (सम ११२) ।

अंशु स्त्री [अंशु] १ एक धार्मिक की कथा (विष्णु १ १)। २ 'विष्णुसूक्त' का एक धर्मग्रन्थ (विष्णु १ १)। ३ एक इन्द्राणी (छा ५)। ४ 'ज्ञातार्थकथा' सूत्र का एक धर्मग्रन्थ (छाया २)।

षष्ठि पुं [अस्थि] ह्रीं ह्रस्व (पद्)
 'अस्थिमज्जस्स पदस्स पदोक्ताए अस्थी न
 भवतीअस्ति' (आक १) ।

लख
 बरबस
 बरबस

१ [अबल क] १ बंका (कल्प
 बरि) । २ बल-कैत (महानि ४) ।
 ३ 'अबल-कैत' धुन का वृत्तीय
 बल-कैत (छाया १ १) । बल
 बि [हृद] को प्रत्ये से बलाया
 गया हो। 'बलाया माहुरा एने पाह
 प्रत्येकडे बने' (दुस १ ४) ।
 बंय धु [कल्प] गणित के किस्म
 पर लखा जाता प्रत्येकार सेना
 (बलक) । बाणिमय धु [बाणि-
 मय] प्रत्येको का ब्यापारी (बिया
 १ ४) ।

लङ्का } मि [अपहृष्ट] १ धरती से पैदा
 लङ्का } होनेवाले पशु पक्षी साव
 मच्छी बैपछ (ठा १, १) ।
 २ रेखम का बाघ । ३ छैनी बरत
 (जा २६) । ४ खड्ग का बरत
 (गुप्त २, २) ।

अध्याय ५ [६, अष्टादश] मङ्गली मन्त्र (६
१ १३)।

अंशान्तर्गते [अन्तर्यामि] अणुस्यैव पितृहोत्र-
वात्ता (पठम १ २ १७)।

कर्त पुं [कर्त] १ स्वस्य स्वराज्यं (दे १, १८) । २ प्राप्ता भावः (दे १८) । १ सीमा हृष (वि १) । ४ निष्कृत, नवनीत (विपा १ १) । ५ क्षय, विनाश (विसे १४२४ बी ४८) । ६ निर्णय निश्चय (आ १) । ७ प्रयेय, स्वातन्त्र्यसंग्रामकालम् (अव १, २) । ८ राजा वीर इवः 'देहिं देहिं प्रसिद्धममार्जुनं' (प्राभा) । ९ राजा बीमार (विसे १४२४) । १ वि हजिरी को प्रसिद्ध नवनेपाली बीज मनुस्मृत, मीरत वस्तु (एण्ड २, ४) । ११ मनीष, गुस्सा (दे १ १८) । १२ शीघ्र मुख मुख (कप) । कर वि [कर] उही जन्म में मुक्ति पानेवाला (सू १ १४) । करण वि [करण] नाला (एण्ड १ १) । कर्षण वि [कर्षण] १ मुख नाला । २ प्रयास काल (दे ४, १२) ।

किरिया स्त्री [किरिया] मुक्ति संसार वा
स्वतन्त्रता (छा ४१)। मुक्ति न [मुक्ति]
मुक्ति मुक्ति (कर्म)। गति वि [गति] ओ
नम्य में मुक्ति पावेनात्ता (छा ४१)।
गतिस्वा स्त्री [गतिस्वा] नैत प्रपञ्चनी में
प्रपञ्चनी प्रपञ्च (प्रयु १)। गति वि [गति]
[गति] विना में गति पञ्चनी की ही गति
प्रपञ्चनी (प्रयु १)।

अथ वि [अन्त्य] दन्तिम दन्त का (प्राक्
१५)। कलरिया स्त्री [अन्तरि] ?
कलरी मित्र का एक धेनु (प्राक् १)। २
कलान्तरि (कल्प)।

अतः न [अमत्र] धीत (मुपा १५२, वा
५५५) ।

कृतं य [कृत] मय में वीच में (है)।
 (१४)। कर न [पुर] को अंतर
 (गर्)। करण करण [करण] कर
 रूप 'कण्ठधारकसंज्ञकण्ठ' (का १
 टी गण)। गाय वि [गव] मयनर्षी
 वीचमला (है १ म)। या ली [पा]
 है रिगणत। २ गण (घृष्ट)। 'आय न
 [वान] घृष्टव होला रिगणित रोय

अंधार सक [अन्धकार] अन्धकार-युक्त करता। कर्म 'मेहन्तन मुरे संभारिभर न कि मुक्त' (पुत्र १८०)।

अंधारिय नि [अन्धकारिय] अंधकार बाधा (पुत्र १४ मुर ३ २१)।

अंधार सक [अन्ध] अंधा करता। अंधा बेह (निर ८४)।

अंधिय नि [अन्धिय] अन्ध बना हुआ (मम्मत् १२१)।

अंधिया स्त्री [अन्धिया] अन्ध-निरोग (दे २, १)।

अंधिया स्त्री [अन्धिया] अनुविध्य अन्ध की एक जाति (उत्त ३६ १४०)।

अंधिय नि [अन्ध] अन्ध अन्धान्ध (पह २ २)।

अंधिय बेहो अंधिय नि (निर ४०२)।

अंधीकिर (श्री) नि [अन्धीकिर] अंध किया हुआ (स्वय ४६)।

अंधु पुं [अन्धु] अंध हुआ (प्रासादे १ १८)।

अंधिय नि [अन्ध] अंध (सि १, १०)।

अंध पुं [अन्ध] एक जाति के परमात्मिक देव का नरक के जोरों की बुल देते हैं (सम २८)।

अंध पुं [आंध] १ धाम का पद। २ न धाम धाम-धन (दे १ ८४)। ३ हुआ स्त्री [दे] धाम की धाडी डुली (निधु १३)।

आयाग न [दे] १ धाम का दंडा (निधु १३)। २ धाम की धाम (सावा २०२)।

आयन न [दे] धाम का हुआ (निधु १३)।

आयन न [दे] धाम का धौग हुआ (प्रासा २०२)। 'देमियास्त्री [पिरिका] धाम का धामा गका (निधु १३)।

आयन न [दे] धाम का हुआ (निधु १३)। सायन न [दे] धाम की धाम (निधु १३)। सायन न [दे] धाम की धाम (निधु १३)।

अंध न [अन्ध] १ तब हुआ (अं ३)। २ गढ़ा रन। ३ गढ़ी बीज (विन)। ४ नि निधु बनन होकराया (इह १)।

अंध नि [अन्ध] १ गढ़ी गढ़ी। २ गढ़ी के गढ़ी गढ़ी (अं ३)।

अंध नि [अन्ध] धाम रतगर्भात्मा (नि १ १४)।

अंधा देवो अंध = धाम (अन्ध) 'द्विया स्त्री [द्विया] धाम की छत्रा (धाम)।

अंध पुं [अन्ध] १ देव-विद्ये (पत्रम ६८, ६२)। २ निवका निवका धाम धौर माता मेरय हो बाह (मुप १ ६)।

अंध पुं [अन्ध] १ एक परिवाहन का महाविदेह क्षेत्र में अन्ध लेकर मोन धामा (धीर)। २ मन्वा महावीर का एक धामक धौर धामा की बीबी में २२ की वीर्यकर होना (ठा ६)।

अंध नि [दे] कठिन (दे १ १९)।

अंधाश स्त्री [अन्धाश] बाई माता (मुप २९८)।

अंधाश स्त्री [दे] कठिन धौर बाई बलि (दे १ ३०)।

अंधाश स्त्री [अन्धाश] बाई माता (मुप २९८)।

अंधाश स्त्री [अन्धाश] बाई माता (मुप २९८)।

अंधाश स्त्री [अन्धाश] बाई माता (मुप २९८)।

अंधाश स्त्री [अन्धाश] बाई माता (मुप २९८)।

अंधाश स्त्री [अन्धाश] बाई माता (मुप २९८)।

अंधाश स्त्री [अन्धाश] बाई माता (मुप २९८)।

अंधाश स्त्री [अन्धाश] बाई माता (मुप २९८)।

अंधाश स्त्री [अन्धाश] बाई माता (मुप २९८)।

अंधाश स्त्री [अन्धाश] बाई माता (मुप २९८)।

अंधाश स्त्री [अन्धाश] बाई माता (मुप २९८)।

अंधाश स्त्री [अन्धाश] बाई माता (मुप २९८)।

अंधाश स्त्री [अन्धाश] बाई माता (मुप २९८)।

अंधाश स्त्री [अन्धाश] बाई माता (मुप २९८)।

अंधाश स्त्री [अन्धाश] बाई माता (मुप २९८)।

अंधाश स्त्री [अन्धाश] बाई माता (मुप २९८)।

अंधाश सक [विरस + क] अंधाश देना शिरकार करना 'धमो हुकरिय अंधाशिया मरिषा म' (पहा)।

अंधाश सक [अंधाश] १ धामा का अंधाश (पह १)। २ धामा का धम (अन्ध ६)।

अंधाशिय नि [विरस] १ विरस (महा)। २ अंधाश (प ११२)।

अंधाश स्त्री [अंधाश] १ धामा के धामा की शान्तवैरी (धी १)। २ धामा के धामा की माता (पत्रम २ १८४)। समय पुं [समय] गिरार पत्र पर का एक धामा स्था (धी ४)।

अंधाश सक [अंधाश] धाम का धम (दे १ १२)।

अंधाश पुं [अन्ध] १ हुआ रन (मम ४१)। २ नि हुआ बली धम हुआ बली (धोप १४)। ३ धामा के धामा (मम ४१)।

अंधाश स्त्री [अन्ध] धाम का धम (दे १ १२)।

अंधाश पुं [अन्ध] १ हुआ रन (मम ४१)। २ नि हुआ बली धम हुआ बली (धोप १४)। ३ धामा के धामा (मम ४१)।

अंधाश स्त्री [अन्ध] धाम का धम (दे १ १२)।

अंधाश पुं [अन्ध] धाम का धम (दे १ १२)।

अंधाश स्त्री [अन्ध] धाम का धम (दे १ १२)।

अंधाश पुं [अन्ध] धाम का धम (दे १ १२)।

अंधाश स्त्री [अन्ध] धाम का धम (दे १ १२)।

अंधाश पुं [अन्ध] धाम का धम (दे १ १२)।

अंधाश स्त्री [अन्ध] धाम का धम (दे १ १२)।

अंधाश पुं [अन्ध] धाम का धम (दे १ १२)।

अंधाश स्त्री [अन्ध] धाम का धम (दे १ १२)।

अंधाश पुं [अन्ध] धाम का धम (दे १ १२)।

अंधाश स्त्री [अन्ध] धाम का धम (दे १ १२)।

अंधाश पुं [अन्ध] धाम का धम (दे १ १२)।

अंधाश स्त्री [अन्ध] धाम का धम (दे १ १२)।

अक्षरिय वि [अक्षर्य] १ धातवी निरुपम ।
२ धूमन भ्यावार से रहित (अ ७) । ३
परलोच-विषयक भिया को नहीं मालनेवाला
नास्तिक (लॉरि) । ४ वि [ह्रस्व] धातु
को निश्चय मालनेवाला, साक्ष्य (मृ १
१) ।

अक्षरिया स्त्री [अक्षर्या] १ भिया का
धाम (म २६ २) । २ पुत्र विद्या कला
भ्यावार (अ ३ ३) । ३ नास्तिकता (अ ८) ।
४ वि [दाहि] परलोच-विषयक भिया
को नहीं मालनेवाला नास्तिक (अ ४ ४) ।
अक्षरिय रेणो अक्षरिय, 'ये केह सोयमि
मनोरियासा धनेछ पुढा बुधमपरिवरि' (मृ ३
१ १) ।

अक्षर्या स्त्री [अक्षरिका] रेणो अक्षर्य ।
अक्षुआमय वि [अक्षुआमय] विषको किसी
लक्ष में मय न हो बह, निर्मय (भाषा) ।
अक्षुठ वि [अक्षुठ] धने काम में निरुल
(पठ) ।
अक्षुय वि [अक्षुय] विषम निर (नि १) ।
स्त्री अक्षुय्या (क्या) ।

अक्षेप्य वि [अक्षेप्य] रम्य गुणर (पण्ड
१ ४) ।
अक्षेप्य पु [रे] मरण मुगड (प ४) ।
अक्षेय रेणो अक्षेय = धनीय ।
अक्षेयासय वि [अक्षेयासय] विरुपण
मुग, 'विचिरलखण्णोक्षियमकोमायंउत्तम
मयीविमयणामे' (दीप) ।

अक्ष पु [अक्ष] १ मूर्त गुरु (सुर १
२२३) । २ बाक का वेद (भा १ १८) । ३
मुग्ध, दीन 'केस धनुमसुरिषो विविधो
रम्यद्वन्द्वयो' (स्य १४) । राण का
एक मूर्त (पञ्च ३६ २) । 'मृक्ष न [मृक्ष]
बाक की ईद (कण १) । 'तेम पु [तेमस]
विद्यावर वंश का एक धमा (पञ्च ३, ४९) ।
बौद्धा स्त्री [बौद्धि] बौद्ध-विरोध
(कण १) ।

अक्ष पु [वि] इत संज्ञा-हारक (रे १ ६) ।
'अक्ष रेणो मरु (गा १३ मे १ ३) ।
अक्षम वि [अक्षम] नहीं भिया गया । पुत्र
वि [पुत्र] को पक्षे कयी न भिया गया हो
(प ३ २ १) ।

अक्षइ रेणो अक्षइ (पाठ ३३) ।

अक्षत वि [आक्षत] १ मसना के हाथ
रवाना हुमा (छाया १ ८) । २ नेय हुमा
मृत (भाषा) । ३ परम्य समित्त (मृ १
१ ४) । ४ एक जाति का निर्जीव वायु (अ
३, ३) । ५ म, धातुमल अक्षतन (म १
३) । तुक्म वि [तुक्म] तुक्म स बहा
हुमा (मृ १ १ ४) ।

अक्षत वि [रे] बहा हुमा मृद (रे १ ६) ।
अक्षत वि [अक्षत] मरित, मरितमयि,
मरिमित (मृ १ १ ४ ६) ।
अक्षत सक [आ + मृद] रोता चित्ताना
(भाषा) । बह अक्षत (मुग १०४) ।

अक्ष (पय) रेणो अक्षम = आ + मृद ।
अक्षइ, छह अक्षदिकण (सण) ।
अक्ष पु [आक्ष] रोत विषय चित्तान-
कर रोता (सुर २ ११४) ।

अक्ष वि [रे] गण करनेवाला, रख (रे
१ १४) ।
अक्षदिकण वि [आक्षदिक] स्थानवाला
(मुग) ।
अक्षदिय न [आक्षदिय] विषय रोत (रे
४ ६४ पञ्च ११ ३) ।

अक्षम सक [आ + मृद] १ धातुमल करना
रवाना । २ परम्य करना । बह अक्षमय
(वि ४४१) । छह अक्षमिया (पण्ड १ १) ।
अक्षम पु [आक्षम] १ बहना नकारी करना ।
२ परम्य (भाषा) ।

अक्षमण न [आक्षमण] १—२ मर रेणो
(सि १४ १९) । ३ परम्य (वि ४ ४६) ।
४ वि धातुमल करनेवाला (सि १ १) ।
अक्षमिअ रेणो अक्षत = माला (कण १०२
मुग १२७) ।

अक्षसाक्ष स्त्री [रे] १ कनाकार, बहारगदी ।
२ मयत-स्त्री (रे १ २८) ।
अक्ष स्त्री [रे] बहिन (रे १ ६) ।
अक्ष स्त्री [अक्ष] कुटुम्बी हूटी (मुग १ १) ।
अक्षारी स्त्री [अक्षारी] मयत-अक्षीय एक
रेणो (दी ६) ।
अक्षि वि [अक्ष] खरीले के धनोय (अ
१ १) ।

अक्षि वि [अक्षि] १ मयत-मयित (मो
३) । २ बहार्हित (मग ३ २) ।

अक्षि वि [अक्ष] धनमिहित (मग ३ २) ।
अक्ष वि [अक्षम] भियापहित (वि १
२२ ६) ।

अक्षुठ वि [रे] मयमयित मयित (रे १
११) ।

अक्षुठ सक [गम] बला । धनुमय (हे
४ १६२) ।

अक्षुठय वि [अक्षुठ] निष्कण मयापहित
(स १ २) ।

अक्षुठ पु [अक्ष] धीकण के बाधा का
मय (रति ४६) ।

अक्षुठ वि [अक्ष] कृष्णार्थ बहानु (पञ्च
२३६) ।

अक्षुठ रेणो अक्षि ।
अक्षुठय वि [अक्षि] मयला, एकाकी
(मग) ।

अक्षुठ पु [रे] गण बकर (रे १ १२) ।
अक्षुठण न [आक्षुठ] इच्छा करना संभव
करना (वि ४) ।

अक्षोस न [अक्षोस] विषय धाम के मय न
दीक में मयती धार या पर्वतीय नदी आदि
का उपबन्ध हो बह
'मोत बसमचरं न इवमिषिय सरोवमदीय ।
बावत्थमि परोसं धावतीवो साव लसे'
(इ ३) ।

अक्षोस सक [आ + मृद] धारीय करना ।
बह अक्षोसित (सुर १२ ४) ।
अक्षोस पु [आक्षोस] कठ बहन रात
भयला (स ४) ।

अक्षोसा वि [आक्षोस] धारीय करनेवाला
(स २) ।

अक्षोमया स्त्री [आक्षोमया] मयितय निजे-
वला (छाया १ ९) ।

अक्षोसि वि [आक्षोसि] कठ बहनों से
विषयी मयती की नहीं हो बह (सुर ९
२३४) ।

अक्षो वि [अक्षो] १ मय-मयी (अ २) ।
२ मयार्थ (स २) ।

अक्ष पु [अक्ष] १ धीव धातु (अ १) ।
२ रावण का एक पुत्र (सि १४ १९) । ३

विकल्पात वेको अकला = वा + कला ।

विकल्पात वि [आविष्ट] मय राखे से प्रेषित (सिंह १६६) ।

विकल्पात वि [आश्रित] १ व्याकुल । २

विषय पर टीका की गई हो बह । ३ घाहट, बीका हुमा (मुद्र ११४) । ४ सामर्थ्य से विना हुमा (सि ४ १३) ।

विकल्पात न [अपेय] मसीहत रोष के बाहर का प्रवृत्ति (सिद्ध १) ।

विकल्पात मक [आ + विप] १ पालन करना टीका करना सोपायन करना । २

रोंचना । ३ रीतना । ४ व्याकुल करना । ५

छेकना । ६ स्वीकार करना 'मकिलवह पुरि

मगार' (उत्तर ४६) । ७ कृत्स्नविधि

(सिंह ११) । 'कौन न कुपमिह काय

अकिलपि' (सि ११ वि १००) । कर्म,

'मकिलवह म मे बाली' (सि २१) प्राप्ति ।

अकिल्पात मक [आ + विप] प्राप्ति करना ।

मकिलवह (सिंह ८११) ।

अकिल्पात न [आपेय] व्याकुलता यह

राह' (पराह ११) ।

अकलीग वि [अलीग] १ हस्त-रूप वाक्य

विषय प्रकृत (कल्प) । २ परिपूर्ण, संपूर्ण

(हुमा) । महाप्राप्ति वि [महाप्राप्ति]

शिवका निम्नोक्त प्रसीए महाप्राप्ति की प्राप्ति

हुई हा बह (पराह २१) महाप्राप्ति स्त्री

[महाप्राप्ति] बहु प्रकृत वाचिक शक्ति

विषय बोझ की विनाश हुकर शक्ति लोगों

को वाक्य-वृत्ति विनाश पर ही कटक कर्म न

हाय (पराह २०) । 'महाप्राप्ति वि [महाप्राप्ति]

विषय बोझ जगह में भी बहुत लोगों का

मनाप्रेत हो उनके पैरी प्रकृत वाचिक शक्ति

से प्रकृत (पराह २) ।

अकल्प वि [अकल्प] स्त्री गुह्य-रूप

'मकप्राप्तिवाचिका' (पराह १) ।

अकल्प वि [अकल्प] संपूर्ण, प्रकृत

गुह्यविषय 'मकप्राप्ति' प्रकृतवाचिक विषय

विषयवाचिका' (पराह ११२) ।

अकल्प वि [अकल्प] जो दृष्टा हुमा न हो

अविषय (पराह १) ।

अकल्प वि [अकल्प] १ मंदीर, मनुष्य

(कल्प १) । २ ब्यापक कल्प (पराह १) । ३

उत्तर (पराह ७) । ४ मूल्य बुझना

(पराह २) ।

अकल्प म [अलीग] सुखा का प्रमाण

(उत्तर ११२) ।

अकल्प स्त्री [अकल्प] मनी-विषय

(पराह २) ।

अकल्पममाय वि [अकल्पमान] जो सोम

को प्राप्त न होता हो (उत्तर ५६२) ।

अकल्प वि [अकल्प] अकल्पविषय (सिंह ४६) ।

अकल्प वि [अकल्प] अकल्पविषय

मनुष्य (मण) ।

अकल्प वि [अकल्प] प्रकृत परिपूर्ण

'मकप्राप्ति' संवाचिका प्रकृतमनुष्य

(उत्तर ७२८ टी) ।

अकल्प वेको अकला = वा + कला ।

अकल्प पु [अ + लेप] सीमा प्रती (मुद्रा

१२१) ।

अकल्प पु [अलेप] १ प्रारंभ कोच कर

लाना (पराह ११) । २ सामर्थ्य धर्म को

संगति के लिए प्रकृत धर्म को बचाना (उत्तर

१२) । ३ प्रारंभ पूर्ववत् (मा २१

विमे १४११) । ४ संगति 'राजे' कर्मके

प्रकृतधर्मों से प्रकृत (उत्तर ४८) ।

अकल्प पु [आक्षेप] १ नीचकर लाने

वाला प्रकृत । २ समर्थक यह धर्मसंगति

के लिए प्रकृत धर्म को बचानेवाला प्रकृत

(उत्तर २६६) । ३ वाचिकप्रकार (उत्तर १८८) ।

अकल्प स्त्री [आक्षेप] सीमाधर्म के

धर्म को प्रकृत करनेवाली कला (धीप) ।

अकल्प वि [आक्षेप] प्रकृत करने

वाला नीचकर लानेवाला (पराह ११) ।

अकल्प म [अक्षेप] म्याम से उत्पन्न को

वाचिका बाहर करना। प्रकृत (पराह १८८) ।

अकल्प मक [आ + स्फोट] बोझ या

एक बार प्रकृत । प्रकृतविषय । बहु

अकल्प (पराह ४) ।

अकल्प पु [अक्षेप] १ प्रकृत वा वेह । २

न प्रकृत वृत्ति का कर्म (पराह १०३ मण) ।

३ प्रकृत को ही जाने प्रकृत प्रकृत की प्रकृत

(पराह १०३) ।

अकल्प पु [आक्षेप] प्रतिबन्ध की प्रिया

विषय (पराह २) ।

अकल्प वि [अक्षेप] सीमा हुमा बाहर

निष्का हुमा (उत्तर १८८) ।

अकल्प पु [अक्षेप] १ साम का

अकल्प वि [अक्षेप] प्रमाण प्रमाण

(पराह १६) । २ प्रमाण के प्रमाण

प्रमाण प्रमाण का एक प्रमाण

नाम के पास सीमा लेकर प्रमाण पर प्रमाण

नाम का प्रमाण (पराह १०३) । ३ न. 'प्रमाण' प्रमाण

मुद्रा का एक प्रमाण (पराह १०३) । ४ वि

प्रमाण प्रमाण प्रमाण प्रमाण (पराह १०३) ।

अकल्प वि [अक्षेप] प्रमाण प्रमाण का प्रमाण

प्रमाण प्रमाण प्रमाण प्रमाण (पराह १०३) ।

अकल्प वि [अक्षेप] प्रमाण प्रमाण का प्रमाण

प्रमाण प्रमाण प्रमाण प्रमाण (पराह १०३) ।

अकल्प वि [अक्षेप] प्रमाण प्रमाण का प्रमाण

प्रमाण प्रमाण प्रमाण प्रमाण (पराह १०३) ।

अकल्प वि [अक्षेप] प्रमाण प्रमाण का प्रमाण

प्रमाण प्रमाण प्रमाण प्रमाण (पराह १०३) ।

अकल्प वि [अक्षेप] प्रमाण प्रमाण का प्रमाण

प्रमाण प्रमाण प्रमाण प्रमाण (पराह १०३) ।

अकल्प वि [अक्षेप] प्रमाण प्रमाण का प्रमाण

प्रमाण प्रमाण प्रमाण प्रमाण (पराह १०३) ।

अकल्प वि [अक्षेप] प्रमाण प्रमाण का प्रमाण

प्रमाण प्रमाण प्रमाण प्रमाण (पराह १०३) ।

अकल्प वि [अक्षेप] प्रमाण प्रमाण का प्रमाण

प्रमाण प्रमाण प्रमाण प्रमाण (पराह १०३) ।

अकल्प वि [अक्षेप] प्रमाण प्रमाण का प्रमाण

प्रमाण प्रमाण प्रमाण प्रमाण (पराह १०३) ।

अकल्प वि [अक्षेप] प्रमाण प्रमाण का प्रमाण

प्रमाण प्रमाण प्रमाण प्रमाण (पराह १०३) ।

अकल्प वि [अक्षेप] प्रमाण प्रमाण का प्रमाण

प्रमाण प्रमाण प्रमाण प्रमाण (पराह १०३) ।

अकल्प वि [अक्षेप] प्रमाण प्रमाण का प्रमाण

प्रमाण प्रमाण प्रमाण प्रमाण (पराह १०३) ।

अकल्प वि [अक्षेप] प्रमाण प्रमाण का प्रमाण

प्रमाण प्रमाण प्रमाण प्रमाण (पराह १०३) ।

अक्षिज्यत रेवो अक्षला = मा + क्या ।
अक्षिज्यत वि [आक्षिप्त] सब सख से प्रेरित
(सिदि १२९) ।

अक्षिज्यत वि [आक्षिप्त] १ व्याकुल । २
त्रिष पर टीका की गई हो वह । ३ बाहुट,
बींका हुमा (पुर १ ११५) । ४ सामर्थ्य से
लिया हुमा (स ४ ११) ।

अक्षिज्यत न [अक्षेत्] मयाहित लेन के बाहर
का प्रस्थ (सिदि १) ।

अक्षिज्यत सक [आ + क्षिप्] १ धासेव
करना टीका करना बोधार्थ करना । २
रोचना । ३ नैबाला । ४ व्याकुल करना । ५
छेकना । ६ स्वीकार करना, 'अक्षिज्यत पूरि
मार्ग' (उबर ५६) । हेइ अक्षिज्यति
(निर १ १) । 'ठमी न कुलमिह कामय
अक्षिज्यति' (स १ १) वि २०७) । कर्म,
'अक्षिज्यत म मे बाणी' (स २१ मामा) ।

अक्षिज्यत सक [आ + क्षिप्] धासेव करना ।
अक्षिज्यति (सिदि १३१) ।
अक्षिज्यत न [आक्षेपय] व्याकुलता बह-
राह (पराह १ १) ।

अक्षीज वि [अक्षीज] १ हास-शृण्य धर-
रहित धनुः (कप) । २ परिपूर्ण, संपूर्ण
(कुमा) । महाजसिय वि [महाजसिक]
जिनको निम्नोक्त स्त्रीए महाजसो शक्ति प्राप्त
हुई हो वह (पराह २ १) । महाजसी स्त्री
[महाजसा] बहु धनुष आत्मिक शक्ति
विषये मोहा की निशान हुनरे छेक 'मोनों
को बाध-पुति विज्ञाने पर भी उतक कम न
हो अतक निशान लीजता तब्य जे न
भाव (पराह २ ३) । महाजसि वि [महाजस्य]
विषये मोही बयज्य में भी बहुत लोका का
मयाहित हो सके ऐसी धनुष आत्मिक शक्ति
से युक्त (कप २) ।

अक्षुभ वि [अक्षुभ] धनीय दुःखि-शृण्य
'अक्षुभकारिण' (पति) ।

अक्षुभवि वि [अक्षुभवि] धनुर्धर धराह
धुनिरित 'अक्षुभवि धनुर्धरि विपरीतोति
सकलदुःखकाली' (गुवा १ १६) ।

अक्षुभय वि [अक्षुभय] को हुन हुन न हो
अविश्रित (ह १) ।

अक्षुभ वि [अक्षुभ] १ धनीय धनुष
(कप २) । २ धमा, कप (पराह २) । ३
उदार (पराह ७) । ४ सुख दुःखिनामा
(कर्म २) ।

अक्षुभ न [अक्षीज] सुखता का घनाप
(अ १ १२) ।

अक्षुभुरी स्त्री [अक्षुभुरी] लपरी-विशेष
(गुवा २) ।

अक्षुभमसाय वि [अक्षुभमसाय] को क्षीय
की प्राप्त न होना हो (पराह १२) ।

अक्षुभिय रेवो अक्षुभिय (सिदि ५६) ।

अक्षुभिय वि [अक्षुभिय] लोभरहित
धनुष (सख) ।

अक्षुभय वि [अक्षुभय] धनुष, परिपूर्ण
'आयवलाहण' संवासेल सम्मन्वय
(उ ७२८ टी) ।

अक्षुभय रेवो अक्षुभय = मा + क्या ।

अक्षुभय पु [अ + क्षेप] खिना जमी (गुवा
१२९) ।

अक्षुभय पु [आक्षेप] १ धासेव बीच कर
लाना (पराह १ १) । २ सामर्थ्य धर्म को
संरति के लिए धनुष धर्म को बलता (स
१ २) । ३ धासेव पूर्ण (अ २ १
वि १ ११५) । ४ उपाति 'बहवेष्ट फलकमेव
अक्षुभयो धर्म पयो' (उबर ५८) ।

अक्षुभय पु [आक्षेप] १ बीचकर लाने-
नामा धासेव । २ समर्थक पर, धर्मसंरति
के लिए धनुष धर्म को बलतानामा शब्द
(अ १ १६) । ३ धर्मियकारक (उबर १८८) ।

अक्षुभयि स्त्री [आक्षेपया] बीतायो के
मन को धासेव करनेवाली क्वा (पीय) ।
अक्षुभयि वि [आक्षेपिय] धासेव करने-
वाला, बीचकर माननामा (पराह १ १) ।
अक्षुभय सक [क्षु] म्यान से उतकार को
बीचना बाहर करना । अक्षुभय (ह १ ८७) ।

अक्षुभय सक [आ + स्फोट] बींका या
एक बार मगना । अक्षुभय । बहु
अक्षुभय (क १) ।

अक्षुभय पु [अक्षुभय] १ धासेव का पर । २
न. धासेव का पर (पराह १७ मय) ।
३ धासेव की बींका मुनरे धासेव की बींका
(क १ टी) ।

अक्षुभय पु [आक्षेप] प्रतिबन्ध की क्रिया-
विशेष (पराह १) ।

अक्षुभयि वि [क्षु] बींका हुमा बाहर
निष्का हुमा (अक्षुभय) (कुमा) ।

अक्षुभय } पु [अक्षुभय] १ बींका का
अक्षुभय } धासेव बहायन का धासेव
अक्षुभय } (गुवा १ ६) । २ धासेव के धासेव

अक्षुभयि का एक पुन को धासेव नेमि
नाम के पास बींका लेकर धनुष पर मोक्ष
पया का धासेव (पराह १ ७) । ३ न. 'अक्षुभय' का
पुन का एक धासेव (अ २ ३) । ४ वि
लोभरहित धासेव स्वर (पराह २ १, कुमा) ।
अक्षुभयि वि [अक्षुभयि] को धासेव
न क्रिया का छेक (गुवा ११५) ।

अक्षुभयि स्त्री [अक्षुभयि] एक बड़े
सेना विषये २१८७ हाजी २१८७
एव १९११ मोक्षे बींका १ ६९२ धासेव
होते हैं (पराह २५, ७ ११) ।

अक्षुभय वि [अक्षुभय] परिपूर्ण, बहायरहित
(पीय) ।

अक्षुभय पु [आक्षुभय] धर (पराह ५६
५४) ।

अक्षुभयि वि [अक्षुभयि] नही हुन हुमा
परिपूर्ण (पराह १८) ।

अक्षुभय वि [क्षु] धासेव निम्नतः धासेव
लाई । धासेव ठासेव पुन बहायन स्वर
बहि' (गुवा ७४) ।

अक्षुभय वि [अक्षुभय] को धासेव लायक न हो
(गुवा १ १५) ।

अक्षुभय न [अक्षुभय] धासेव-धर्म के बिच्छ,
धनुष 'धन्य विज्ञानियो,
अक्षुभय करेह बींका' (पराह ८ टी) ।

अक्षुभय रेवो अक्षुभय (गुवा) ।

अक्षुभय पु [क्षु] धासेव पर एक धासेव का
धासेव (सिदि ११७) ।

अक्षुभय रेवो अक्षुभय = धासेव
(कुमा) ।

अक्षुभय वि [आक्षुभय] धासेव के धासेव
धासेव 'अक्षुभय धासेव धासेव' (गुवा) ।

स्वामी का एक शिष्य (द्वय)। दाम पुं
[दान] छात्रों बन्धुदेव के पिता का नाम
(वज्र २ १२२)। 'देव पुं [देव] देव-
विरोध (द्वय)। मूढ पुं [मूढ] १ म-
बल महान्तर का विनीत यण्तर (वज्र)। २
नवमान महावीर का पूर्वीय धरातल के ब्रह्मण-
ज्य का नाम (पाठ)। मायव पुं [मायव]
धर्मिकार हैवी का उत्तर-विषय का इन्द्र (आ
२, १)। मायवी स्त्री [मायवी] एक धराणी
(विन)। बेस पुं [बेस] १ दम नाम का
एक प्रसिद्ध शक्ति (उत्ति)। २ व. एक नीच
(वज्र)। 'बेस पुं [बेसम] १ बन्धुवैरी
निधि (म)। विषय का बाह्यन मुद्रन (वज्र
१)। बेसायम पुं [बेसायम] १
धर्मिक शक्ति का पीठ (मूर्ति म २२२)।
२ धर्मिक-पीठ में उत्पन्न (वज्र)। ३ पीठा-
नर का एक विचार (वज्र १२)। ४ विन
का बाह्यन मुद्रन (वज्र २१)। सकार पुं
[संस्कार] विभिन्नक ज्ञाना, बल देना
(वज्र)। सारमा स्त्री [समसा] ल-
कात् बन्धुपुत्र की पीठा उत्पन्न की पालनी का
नाम (वज्र)। सम्य पुं [सम्य] एक
प्रसिद्ध साम्नी ब्रह्मण (पाठ)। 'सिंह पुं
[सिंह] १ मानों बन्धुदेव का पिता (वज्र
१२२)। २ धर्मिकार देवा का शिष्य
पिता का इन्द्र (आ २ १)। 'सिंह पुं
[सिंह] एक वैद मुनि (आ २ १)। सिद्धा
चार्य पुं [सिद्धाचार्य] धर्मिक-विषय में
विशेषज्ञता बल करने की शक्ति बल का
(वज्र १)। सीह पुं [सिह] मानों बन्धु
देव के पिता का नाम (आ २)। सज पुं
[सज] विनर शब्द के लोचने पीठ का नाम
लोचन (विन म १२१)। दास न
[दास] १ धर्मिकार, हीन (विन १२४)।
२ पुं ब्रह्मण (वज्र १२२)। दासवाह
वि [दासवाह] हीन के लोचन की
प्रति बलनेवाला (वज्र १ ७)। दासिय
वि [दासिक] हीन बलनेवाला (वज्र ७)।

अभिगम पुं [दे] इन्द्रवीर एक बलि का पुत्र
बीट (दे १ २१)। २ वि मज (दे १ २१)।
अभिगमाय पुं [दे] इन्द्रवीर पुत्र बीट-विरोध
(वज्र)।

अभिगम वि [आनेम] १ धर्मिक-सम्बन्धी।
२ पुं लोकमित्र देवी की एक बलि (शाय
१)। ३ व. नीच-विरोध की पीठ नीच
की शक्ति है (आ ७)।

अभिगम न [आनेम] १ धर्मिक-सम्बन्धी
विरोध (वज्र १४)।

अभिगम वि [अभिगम] सेने के धर्मिक (वज्र
१२ २४)।

अभिगम वि [अभिगम] १ प्रथम पक्षा (वज्र)
२ धर्म प्रथम कृष्ण (वज्र १)।

अभिगम पुं [आनेम] दम नाम का एक
राज्य (वज्र २१७)।

अभिगम स्त्री अभिगम = धर्मिक (वज्र २)।
अभिगमि स्त्री अभिगम (वज्र २)।

अभिगम पुं [अभिगम] एक ब्रह्मण (आ २
१)।

अभिगम वि [अभिगम] धर्मिक (विन ४ २)।
अभिगम स्त्री अभिगम (वज्र २४)।

अभिगम न [दे] वर का एक भाग (वज्र
११ १४)।

अभिगम वि [दे] अतिरिक्त (वज्र)।

अभिगम वि [अभिगम] धर्मिक (विन)। वज्र
वि [वज्र] धर्मिक, धर्मिक का (वज्र)।
सर वि [सर] धर्मिक धर्मिक, धर्मिक
(आ २)।

अभिगम स्त्री [आनेम] धर्मिक-सम्बन्धी
धर्मिक (वज्र १२)।

अभिगमि न [अभिगमि] धर्मिक-सम्बन्धी
धर्मिक (वज्र १२)।

अभिगमि स्त्री अभिगमि (वज्र)।

अभिगमि वि [अभिगमि] धर्मिक-सम्बन्धी
धर्मिक (वज्र १२)।

अभिगमि वि [अभिगमि] धर्मिक-सम्बन्धी
धर्मिक (वज्र १२)।

धीन की वज्र धर्मिक की वज्र है (आ ७)।
४ धर्मिक-सम्बन्धी धर्मिक-सम्बन्धी (वज्र)।
अभिगम न [अभिगम] धर्मिक देवा की
वज्र और धर्मिक (वज्र ७१)।

अभिगम वि [अभिगम] धर्मिक देवा की
वज्र है (आ ७)।

अभिगम वि [अभिगम] धर्मिक देवा की
वज्र है (आ ७)।

अभिगम वि [अभिगम] धर्मिक देवा की
वज्र है (आ ७)।

अभिगम वि [अभिगम] धर्मिक देवा की
वज्र है (आ ७)।

अभिगम वि [अभिगम] धर्मिक देवा की
वज्र है (आ ७)।

अभिगम वि [अभिगम] धर्मिक देवा की
वज्र है (आ ७)।

अभिगम वि [अभिगम] धर्मिक देवा की
वज्र है (आ ७)।

अभिगम वि [अभिगम] धर्मिक देवा की
वज्र है (आ ७)।

अभिगम वि [अभिगम] धर्मिक देवा की
वज्र है (आ ७)।

अभिगम वि [अभिगम] धर्मिक देवा की
वज्र है (आ ७)।

अभिगम वि [अभिगम] धर्मिक देवा की
वज्र है (आ ७)।

अभिगम वि [अभिगम] धर्मिक देवा की
वज्र है (आ ७)।

अभिगम वि [अभिगम] धर्मिक देवा की
वज्र है (आ ७)।

अभिगम वि [अभिगम] धर्मिक देवा की
वज्र है (आ ७)।

अभिगम वि [अभिगम] धर्मिक देवा की
वज्र है (आ ७)।

अभिगम वि [अभिगम] धर्मिक देवा की
वज्र है (आ ७)।

अभिगम वि [अभिगम] धर्मिक देवा की
वज्र है (आ ७)।

अभ्यासुर नि [आभ्रात] बृक्षमेता। श्री
रा (ग ७८६)।

अभ्यास एक [पूर] वृत्ति करता पूरा
करता। अभ्यास (ह ४ १९६)।

अभ्यास [पूर] [वि] हृन्-विशेष अभ्यासा
अभ्यास [वि] [वि] सटीक (ह १ ७
पल्ल १)।

अभ्यास नि [वि] वृत्त संतुष्ट (ह १ १८)।

अभ्यास नि [आभ्रात] सूपा हुमा (पाप)।

अभ्यासमात्र केतो सारम = अर्थ।

अभ्यासमात्र केतो अभ्यास।

अभ्यास नि [राजित] विराजित शोभित

(कुमा)।

अभ्यास नि [अभित] १ बहुमुख कीमती

'अभित' नाम बहुमोस्त (मिच २)। २ पूजित

(ह १ १०० से २ २)।

अभ्यास न [अभौक] पुत्र का जल (पति

१ १८)।

अभ न [अभ] १ पल भुक्त (कुमा)। २ वि

शोचनीय शोक का हेतु 'अभ' बहुलभाष

(प्रदी ८)।

अभो देवो अहो (मट)।

अभक्तु न [अभक्तु] १ दाह के विनाय

बाकी इन्द्रिया और मन (कम्म १ १)। २

दाह को छोड़ बाकी इन्द्रिया और मन से होने

वाला सामान्य बात (ह १ १६)। ३ वि अंधा

मनुष्य (कम्म ४)। ४ संसृज न [होम]

दाह को छोड़ बाकी इन्द्रिया और मन से होने

वाला सामान्य बात (सम १ २)। ५ संसृजाचार्य

न [वर्णानाचार्य] अभ्युद्योग को रोचने

वाला कर्म (हा ६)। ६ अल पु [एकी]

अंधकार, अंधार (आया १ १४)।

अभक्तुस नि [अभक्तुस] को दाह के देवा

न का संके (पल्ल १ १)।

अभक्तुसस नि [अभक्तुस] जिसको देवो

का मन न चढ़ाया हो (ह १ १)।

अभर नि [अभर] पुष्पिणी विर पवार

स्वात्म (रव)

(१ २)। ५ एक राजा, जिसने रामकर्म के

छोटे गहरे के साथ बैन दीक्षा की थी (पुन

७४, ४)। ६ पुर न [पुर] ब्रह्म-दीप के पास

का एक नगर (कम्म)। ७ प न [पन]

हस्तप्रेक्षिका को ७४ लाख से गुणने पर भी

संका लम्ब हा वह, अर्धतम संका (ह ६)।

माय पु [भ्रात] भ्राता महावीर का

नवमो पुत्र (कम्म)।

अचल पु [अचल] सठवीं छंद पुर (विचार

४०२)।

अचल न [वि] १ वर। २ वर का निष्ठा

भाव। ३ वि कहा हुमा। ४ निद्रा, निद्रा।

५ मोक्ष सूत्रा (ह १ ३३)।

अचला स्त्री [अचला] वृत्तिकी। २ एक

इच्छाणी (आया २)।

अचित नि [अचित] निमित्त विचारित।

अचित नि [अचित] धर्मिर्बनीय जिसकी

विचार भी न हो सके वह धर्म (अनुप १)।

अचित्तिय नि [अचित्तिय] अर

अचित्तिय नि [अचित्तिय] अर

अचित्तिय नि [अचित्तिय] अर

अचित्तिय नि [अचित्तिय] अर

अचित्तिय नि [अचित्तिय] अर

अचित्तिय नि [अचित्तिय] अर

अचित्तिय नि [अचित्तिय] अर

अचित्तिय नि [अचित्तिय] अर

अचित्तिय नि [अचित्तिय] अर

अचित्तिय नि [अचित्तिय] अर

अचित्तिय नि [अचित्तिय] अर

अचित्तिय नि [अचित्तिय] अर

अचित्तिय नि [अचित्तिय] अर

अचित्तिय नि [अचित्तिय] अर

अचित्तिय नि [अचित्तिय] अर

अचित्तिय नि [अचित्तिय] अर

अचित्तिय नि [अचित्तिय] अर

अचित्तिय नि [अचित्तिय] अर

अचित्तिय नि [अचित्तिय] अर

वक्त्र के अभावे अक्षर पीछे, अक्षर या

कुचित बन् होने से छेदे अक्षर भाव से सहन

करना (सम ४ भन ८ ८)।

अक्षेजग नि [अक्षेजग] १ बन्-वृत्ति

अक्षेजग नि [अक्षेजग] १ बन्-वृत्ति

अक्षेजग नि [अक्षेजग] १ बन्-वृत्ति

अक्षेजग नि [अक्षेजग] १ बन्-वृत्ति

अक्षेजग नि [अक्षेजग] १ बन्-वृत्ति

अक्षेजग नि [अक्षेजग] १ बन्-वृत्ति

अक्षेजग नि [अक्षेजग] १ बन्-वृत्ति

अक्षेजग नि [अक्षेजग] १ बन्-वृत्ति

अक्षेजग नि [अक्षेजग] १ बन्-वृत्ति

अक्षेजग नि [अक्षेजग] १ बन्-वृत्ति

अक्षेजग नि [अक्षेजग] १ बन्-वृत्ति

अक्षेजग नि [अक्षेजग] १ बन्-वृत्ति

अक्षेजग नि [अक्षेजग] १ बन्-वृत्ति

अक्षेजग नि [अक्षेजग] १ बन्-वृत्ति

अक्षेजग नि [अक्षेजग] १ बन्-वृत्ति

अक्षेजग नि [अक्षेजग] १ बन्-वृत्ति

अक्षेजग नि [अक्षेजग] १ बन्-वृत्ति

अक्षेजग नि [अक्षेजग] १ बन्-वृत्ति

अक्षेजग नि [अक्षेजग] १ बन्-वृत्ति

अक्षेजग नि [अक्षेजग] १ बन्-वृत्ति

अक्षेजग नि [अक्षेजग] १ बन्-वृत्ति

अक्षेजग नि [अक्षेजग] १ बन्-वृत्ति

अक्षेजग नि [अक्षेजग] १ बन्-वृत्ति

अक्षेजग नि [अक्षेजग] १ बन्-वृत्ति

अक्षेजग नि [अक्षेजग] १ बन्-वृत्ति

अक्षेजग नि [अक्षेजग] १ बन्-वृत्ति

अक्षेजग नि [अक्षेजग] १ बन्-वृत्ति

अक्षेजग नि [अक्षेजग] १ बन्-वृत्ति

अक्षेजग नि [अक्षेजग] १ बन्-वृत्ति

अक्षेजग नि [अक्षेजग] १ बन्-वृत्ति

अक्षेजग नि [अक्षेजग] १ बन्-वृत्ति

अक्षेजग नि [अक्षेजग] १ बन्-वृत्ति

अक्षेजग नि [अक्षेजग] १ बन्-वृत्ति

अक्षेजग नि [अक्षेजग] १ बन्-वृत्ति

स्त्री का एक स्थान (कण्) । दास्य पुं
[दास्य] सप्तमं बभूवेष के पिता का नाम
(पठ २ १८२) । देव्य पुं [देव्य] देव-
विष्टेय (दीर्घ) । मूढ्य पुं [मूढ्य] १ का-
बन्ध महावीर का कठिनी यशुरार (कण्) । २
महामुख महावीर का पूर्वार्ध मन्त्राख्यं बभूवेष-
कण्य का नाम (पाठ) । माय्य पुं [माय्य] १
धर्मिणुमार केनो का उत्पत्ति का इन्द्र (ठा
२, १) । मास्त्री स्त्री [मास्त्री] एक इन्द्राणी
(दीर्घ) । बेस्य पुं [बेस्य] १ इस नाम का
एक प्रसिद्ध व्यक्ति (लुटि) । २ न एक नौक
(कण्) । बेस्य पुं [बेस्य] १ चतुर्विंशती
तिथि (त्रे) । रिक्य का बाह्यार्ध प्रहृतं (बर्ध
१) । बेसाव्य पुं [बेसाव्य] १
प्रतिवेष्टा व्यक्ति का पौत्र (लुटि ग २२३) ।
२ प्रतिवेष्टा-नौक में उत्पन्न (कण्) । ३ मोठा
नक का एक विवरण (अप १३) । ४ पित
का बाह्यार्ध प्रहृतं (अप १३) । सकार्य पुं
[सकार्य] विनि-युक्त कला का इन्द्र होता
(पाठ्य) । सप्पमा स्त्री [सप्पमा] क-
बन्ध बभूवेष्य की स्त्री सप्तमी की पत्नी का
नाम (अप) । सप्पम पुं [सप्पम] एक
प्रसिद्ध लक्ष्मी बभूवेष्य (पाठ) । सिह्य पुं
[सिह्य] १ सप्तमं बभूवेष्य का पिता (अप
१३२) । २ धर्मिणुमार केनो का धर्मि-
पिता का इन्द्र (ठा २, १) । सिंह्य पुं
[सिंह्य] एक कैद कुल (अप ४८५) । सिह्या
चार्य व [सिंह्याचार्य] धर्मि-पिता में
निर्वाहकता गमन करने की व्यक्ति बन्धा ठाण
(अप १८) । सीह्य पुं [सीह्य] नाम बभू
वेष के पिता का नाम (ठा २) । सेज्य पुं
[सेज्य] एकलक्ष्य लेख के सीमेन और बाह्यार्ध
लीनर (विच २३ १३) । होष्य न
[होष्य] १ अभ्यास, होष्य (विने १९४) ।
२ पुं कण्ठ (अप १३, २) । होष्यवाह्य
वि [होष्यवाह्य] होष्य से हो लक्ष्य की
प्रति प्रतिपत्ति (अप १०) । होष्यवि
वि [होष्यवि] होष्य का प्रतिपत्ति (अप १०) ।

अभिज्ञ पुं [अभिज्ञ] १ वपरीत नामक एक
पात्र (पाठ) । २ कण्ठ रोष, शिष्टेन को
बुद्ध काय वह नुरत ही इन्द्र ही जाता है
(विना ११ विने २ ४८) ।

अभिज्ञ पुं [दे] इन्द्रोप एक वाटिका बुद्ध
कीट (दे १ १९) । २ वि मन्त्र (दे १ १९) ।
अभिज्ञाय पुं [दे] इन्द्रोप दुष्ट कीट-विष्टेय
(पठ) ।

अभिज्ञ वि [आग्नेय] १ धर्मि-सम्बन्धी ।
२ पुं नौक-विष्टेय दोनों की एक वाटिका (आपा
१ ८) । ३ न, नौक-विष्टेय को पोषण नौक
की लम्बाई है (ठा ७) ।

अभिज्ञाय न [आग्नेय] १ देव-विमान
विष्टेय (अप १४) ।

अभिज्ञाय वि [अभिज्ञ] सेने के प्रयोग (अप
११ ३४) ।

अभिज्ञ वि [अभिज्ञ] १ प्रथम पक्ष (कण्) ।
२ यह प्रथम पक्ष (अप १) ।

अभिज्ञाय पुं [आग्नेय] १ इस नाम का एक
पात्र (अप १३४) ।

अभिज्ञ केनो अभिज्ञ = धर्मि (अप २) ।
अभिज्ञाय केनो अभिज्ञ (अप २) ।

अभिज्ञ पुं [अभिज्ञ] एक महावह (ठा २
१) ।

अभिज्ञ वि [अभिज्ञ] प्रथम (विने ४ २) ।
अभिज्ञ केनो अभिज्ञ (अप २४) ।

अभिज्ञाय न [दे] नर का एक माप (अप
१९ १४) ।

अभिज्ञाय वि [दे] प्रसिद्ध विज्ञित (पठ) ।
अभिज्ञाय वि [अभिज्ञ] भाष्य, वहने (विने) । 'यज
वि [अभिज्ञ] यज्ञे क, यज्ञे का (पाठ्य) ।

सर वि [सर] अमुष्य, भुविष्य, नाक
(पा २८) ।

अभिज्ञ स्त्री [आग्नेय] धर्मि-नौक धर्मि-
पुर्ब पिता (अप १) ।

अभिज्ञाय न [अभिज्ञाय] इष्टय पुर्ब, नार
हर्ब बैवाग्य का इष्टय महावह नाम (अप २९) ।

अभिज्ञाय केनो अभिज्ञ (पाठ्य) ।
अभिज्ञाय केनो अभिज्ञ (लुटि) ।

अभिज्ञ वि [अभिज्ञ] धर्मि (नौक) सम्बन्धी
(अप २१३) ।

अभिज्ञाय वि [अभिज्ञ] १ धर्मि-सम्बन्धी
धर्मि का (अप ११ १२९; विने १२९) ।
२ न, नौक-विष्टेय (अप ४, ४१) । ३ एक

नौक की वल नौक की लम्बाई है (अप ७) ।
४ धर्मि-नौक धर्मि-पुर्ब पिता (अप) ।
अभिज्ञाय न [अभिज्ञाय] समुद्री केनो की
बुद्धि और हासि (अप ७९) ।

अभिज्ञाय वि [राज] विपत्ति का शोभा क-
कना । अभिज्ञ (दे ४ १) ।

अभिज्ञाय वि [आभा] नृपता । अभिज्ञ
रूप (अप २ ४२) ।

अभिज्ञाय वि [अभिज्ञ] योग्य होता नामक
होता 'कन' लक्ष्यार्ध (अप १ ८) ।

अभिज्ञाय वि [अभिज्ञ] १ अभिज्ञी नौक से
केनो । २ अभिज्ञ कला सम्मान कला

'अभिज्ञ' गुणी धर्मि-नृपता विनि ।
अभिज्ञ नृपता ।

अभिज्ञाय वि [अभिज्ञ] धर्मि-नृपता विनि
(अप १ १) । अभिज्ञ अभ्यासमात्र (अप
१ १) ।

अभिज्ञ पुं [अभिज्ञ] १ एक देव विमान (अप
१ २) । २ पुत्र (अप १) ।

अभिज्ञ पुं [अभिज्ञ] १ मन्त्री की एक वाटिका (अप
१) । २ पुत्र-सामर्थी (आपा १ १९) । ३
पुत्र में कलावि केनो (अप) । ४ धर्म्य, मोल
नौक (अप २) । अभिज्ञ न [पात्र] पुत्र
का पात्र (अप २) ।

अभिज्ञ वि [अभिज्ञ] १ पुत्र में किया जाण
कलावि इन्द्र (अप) । २ कीमती बभूवेष्य
(अप) ।

अभिज्ञाय वि [अभिज्ञ] पुर्ब कला, पुत्र कला ।
अभिज्ञ (दे ४ १२) ।

अभिज्ञाय वि [अभिज्ञ] १ अप इन्द्र, अर्जुन । २
पुत्र पिता गया (अप १ ९ कुमा) ।

अभिज्ञाय वि [अभिज्ञ] पुर्ब कला, अर्जुन,
सम्मानित वि ११ १२ गज) ।

अभिज्ञाय वि [आभा] नृपता । अभिज्ञ
अभिज्ञ अभ्यासमात्र (अप १ १९, अभा
१) । अभिज्ञ अभ्यासमात्र (अप २) ।

अभिज्ञाय वि [आभा] नृपता, अभिज्ञ
अभिज्ञ अभ्यासमात्र (अप १ १९, अभा
१) । अभिज्ञ अभ्यासमात्र (अप २) ।

अभिज्ञाय वि [आभा] नृपता, अभिज्ञ
अभिज्ञ अभ्यासमात्र (अप १ १९, अभा
१) । अभिज्ञ अभ्यासमात्र (अप २) ।

अभिज्ञाय वि [आभा] नृपता, अभिज्ञ
अभिज्ञ अभ्यासमात्र (अप १ १९, अभा
१) । अभिज्ञ अभ्यासमात्र (अप २) ।

अभिज्ञाय वि [आभा] नृपता, अभिज्ञ
अभिज्ञ अभ्यासमात्र (अप १ १९, अभा
१) । अभिज्ञ अभ्यासमात्र (अप २) ।

अभिज्ञाय वि [आभा] नृपता, अभिज्ञ
अभिज्ञ अभ्यासमात्र (अप १ १९, अभा
१) । अभिज्ञ अभ्यासमात्र (अप २) ।

अभिज्ञाय वि [आभा] नृपता, अभिज्ञ
अभिज्ञ अभ्यासमात्र (अप १ १९, अभा
१) । अभिज्ञ अभ्यासमात्र (अप २) ।

अग्धाहरि जि [आग्धा] मूचकनाम । श्री
रो (गा ३६६) ।

अग्धाह सक [पूर] पूर्ण करता पूर
कता । अग्धाह (ह ४ १९६) ।

अग्धाह } पु [ह] इन्द्र-चिरोप अगमार्ण
अग्धाहग } विष्णु नटवीर (ह १८
परण १) ।

अग्धाय जि [ह] वृत्त संगृह (ह १ १८) ।

अग्धाय जि [आग्धा] मूचा हुमा (गाय) ।
अग्धायमाय केओ अग्ध = अग्धे ।

अग्धायमाय केओ अग्धा ।

अग्धाय जि [अग्ध] विराजित शोभित
(हुमा) ।

अग्धाय जि [अग्ध] १ बहुमुख कीमती
'अग्ध' ताम बहुमुख (मिह २) । २ अग्धित
(ह ११ ७ से २२) ।

अग्धोद्य न [अग्धोद्य] पूरा का जल (पमि
११५) ।

अग्ध न [अग्ध] १ पात कुम्भ (हुमा) । २ जि
अग्धनीय, शोक वा हेतु: 'अग्ध' बहुलगा' (श्री ८) ।

अग्धो केओ अग्धो (गाट) ।

अग्धकुसु पून [अग्धकुसु] १ अग्ध के विद्याय
बाजी इन्द्रिय घोर मन (कम्प १ १) । २
अग्ध को जोड़ बाजी इन्द्रिय घोर मन से होने
वाता सामान्य ज्ञान (ह १६) । ३ जि अग्धा
नन्दन (कम्प ४) । ४ अग्ध न [अग्धेन]
अग्ध को जोड़ बाजी इन्द्रिय घोर मन से होने-
वाता सामान्य ज्ञान (सम ११) । ५ अग्धावरण
न [अग्धावरण] अग्धचुरीन को रोकने-
वाता कर्म (अ ६) । ६ अग्ध पु [अग्धा]
पक्षकार, अग्धेय (गाया १ १४) ।

अग्धकुसु जि [अग्धाकुसु] को अग्ध से केला
न का छे (पण्ड १ १) ।

अग्धकुसु जि [अग्धाकुसु] जिसको केले
का मन न चाहता हो (ह १६) ।

अग्ध जि [अग्ध] पूर्णवापि स्थिर पदार्थ,
स्थान (ह १६) ।

अग्ध जि [अग्ध] १ निबद्ध स्थिर
(गाया) । २ पु बहुवच के राजा अग्धचक्रिय
के एक पुत्र का नाम (म १) । एक कलत्र
का नाम (प २ ६) । ४ अग्ध, अग्ध (अ ३)

१२) । ५ एक राजा, जिसने रामचन्द्र के
छोटे भाई के साथ ब्रह्म वीरा भी भी (प २८
३६, ४) । ६ पु [अग्ध] अग्ध-वीर के पास
अ एक नगर (कम्प) । ७ पु [अग्ध]
हस्तगृहीतको को ब्रह्म तास से छुड़ने पर को
संज्ञा लम्प हा वह, अग्धित संज्ञा (ह ६) ।

माय पु [अग्ध] भगवान् महावीर का
नवमी कृत (कम्प) ।

अग्ध पु [अग्ध] छठवां छ पुत्र (विचार
४७२) ।

अग्ध न [ह] १ अग्ध । २ अग्ध का निष्सा
भाग । ३ जि कहा हुमा । ४ अग्ध, निर्धय ।
५ शीघ्र मूला (ह १ ३५) ।

अग्धला ली [अग्धला] अग्धली । २ एक
इन्द्राणी (गाया २) ।

अग्धित जि [अग्धित] निधित पितापति ।
अग्धित जि [अग्धित] अग्धितनीय जिसकी
पिता भी न हो उसे वह अग्धित (कम्प १) ।

अग्धितजि जि [अग्धित-सनीय] ऊपर
अग्धितजि जि [अग्धित] देखा (पमि २ १ महा) ।

अग्धितय जि [अग्धितय] आरम्भिक
अग्धितय जि [अग्धितय] अग्धितय जि [अग्धितय]

अग्धितय जि [अग्धितय] अग्धितय जि [अग्धितय]

अग्धितय जि [अग्धितय] अग्धितय जि [अग्धितय]

अग्धितय जि [अग्धितय] अग्धितय जि [अग्धितय]

अग्धितय जि [अग्धितय] अग्धितय जि [अग्धितय]

अग्धितय जि [अग्धितय] अग्धितय जि [अग्धितय]

अग्धितय जि [अग्धितय] अग्धितय जि [अग्धितय]

अग्धितय जि [अग्धितय] अग्धितय जि [अग्धितय]

अग्धितय जि [अग्धितय] अग्धितय जि [अग्धितय]

अग्धितय जि [अग्धितय] अग्धितय जि [अग्धितय]

अग्धितय जि [अग्धितय] अग्धितय जि [अग्धितय]

अग्धितय जि [अग्धितय] अग्धितय जि [अग्धितय]

अग्धितय जि [अग्धितय] अग्धितय जि [अग्धितय]

अग्धितय जि [अग्धितय] अग्धितय जि [अग्धितय]

अग्ध के अग्ध से अग्ध कीर्ण अग्ध या
अग्धित अग्ध होने से अग्ध अग्ध या अग्ध
कता (सम ४ भा ३ ४) ।

अग्धेला जि [अग्धेला] १ अग्ध-अग्धित
अग्धेला जि [अग्धेला] २ अग्ध-अग्धित अग्धेला जि [अग्धेला]

अग्धेला जि [अग्धेला] ३ अग्ध-अग्धित अग्धेला जि [अग्धेला]

अग्धेला जि [अग्धेला] ४ अग्ध-अग्धित अग्धेला जि [अग्धेला]

अग्धेला जि [अग्धेला] ५ अग्ध-अग्धित अग्धेला जि [अग्धेला]

अग्धेला जि [अग्धेला] ६ अग्ध-अग्धित अग्धेला जि [अग्धेला]

अग्धेला जि [अग्धेला] ७ अग्ध-अग्धित अग्धेला जि [अग्धेला]

अग्धेला जि [अग्धेला] ८ अग्ध-अग्धित अग्धेला जि [अग्धेला]

अग्धेला जि [अग्धेला] ९ अग्ध-अग्धित अग्धेला जि [अग्धेला]

अग्धेला जि [अग्धेला] १० अग्ध-अग्धित अग्धेला जि [अग्धेला]

अग्धेला जि [अग्धेला] ११ अग्ध-अग्धित अग्धेला जि [अग्धेला]

अग्धेला जि [अग्धेला] १२ अग्ध-अग्धित अग्धेला जि [अग्धेला]

अग्धेला जि [अग्धेला] १३ अग्ध-अग्धित अग्धेला जि [अग्धेला]

अग्धेला जि [अग्धेला] १४ अग्ध-अग्धित अग्धेला जि [अग्धेला]

अग्धेला जि [अग्धेला] १५ अग्ध-अग्धित अग्धेला जि [अग्धेला]

अग्धेला जि [अग्धेला] १६ अग्ध-अग्धित अग्धेला जि [अग्धेला]

अग्धेला जि [अग्धेला] १७ अग्ध-अग्धित अग्धेला जि [अग्धेला]

अग्धेला जि [अग्धेला] १८ अग्ध-अग्धित अग्धेला जि [अग्धेला]

अग्धेला जि [अग्धेला] १९ अग्ध-अग्धित अग्धेला जि [अग्धेला]

अग्धेला जि [अग्धेला] २० अग्ध-अग्धित अग्धेला जि [अग्धेला]

अग्धेला जि [अग्धेला] २१ अग्ध-अग्धित अग्धेला जि [अग्धेला]

अच्छ पुं [अच्छ] रीछ, मान् (पण्ड १)।

अच्छ वि [आच्छ] मन्त्रे देह में उत्पन्न (पण्ड ११)।

अच्छ पुं, [अच्छ] मेघ पर्वत (मुञ्च १)।
२ न. तीन बार धीरा हुआ स्वच्छ पानी (पणि)।

अच्छ न [चि] १ मन्त्र विरोध। २ शीघ्र, शक्ती (हि १ ४६)।

अच्छ वि [सञ्चि] बाँध नग (कुमा)।

अच्छ पुं [कच्छ] १ अधिक पतोराला प्रवेश। २ मर्यादा का समूह। ३ गुण बल (वि ६ ४७)।

अच्छ पुं [वृक्ष] वृक्ष पेड़ (वि ६ ४७)।

अच्छ पुं [अच्छ] १ बहोका का वृक्ष।
२ न. स्वच्छ बल (वि ६ ४७)।

अच्छार न [आच्छा] विसय चमत्कार (कुमा)।

अच्छर वि [अच्छर] को स्थायी न हो पृथगीकृत अक्षरों के एक समूहों से बाँधित कुर्च (रघ २)।

अच्छर केको अत्यन्त (नव)।

अच्छर न [आसन] १ बैठा (छाया १)।
२ पास की बसेर घुमाय (मोप ७८)।
पर न [गृह] विद्याम स्थान (जीव १)।

अच्छर न [रे] १ देवा सुपुत्रा (इह १)।
२ देवता समोक्त (नव १)। ३ महीना, वषा (रघ ८)।

अच्छरिउर न [अच्छरिउर] मच्छरि-
कुपरी को नीपटी बाज से छुने पर को
संज्ञा लग्न हो वह (अ २ १)।

अच्छरिउर न [अच्छरिउर] संज्ञा-
विरोध नगिन को नीपटी बाज से छुने
पर को संज्ञा लग्न हो वह (अ २, १)।

अच्छरि वि [अच्छरि] मृग प्रकट (इह १)।

अच्छरि पुं [अच्छरि] रीछ, मान् (वि १ ४७ पण्ड १)।

अच्छरि पुं [चि] मा देव-विरोध (वि १ ४७)।

अच्छरि केको अच्छर (पण्ड)।

अच्छरि पुं [आच्छर] रम्भा पर विद्याने
का चमत्कार (छाया १ १)।

अच्छरि मा [अच्छरि] १ इन्द्र की
अच्छरि पटलनी (अ ६)। २ 'माता-
चर्मका' का एक चमत्कार (छाया २)।

३ देवी (पत्र २ ४१)। ४ कपटी की
(पण्ड १ ४)।

अच्छरि धी [दे अछर] कुटकी कुटकी
का माता (पृथ २ २ ४४)।

अच्छरि वि [रे] १ कुटकी। २ कुटकी
बनाने में बिना समय लगता है वह, परबत
समय (पण्ड १ १)।

अच्छरि न [आच्छर] विसय चम-
अच्छरि लार (हि १ ४८ प्रवी २२)।
अच्छरि

अच्छर न [अच्छर] निर्मोला मतपरम
(हि १ १)।

अच्छरि वि [अच्छरि] सैन-स्टीन में
विश्वो स्नातक कहे हैं वह नीलमयुक्त
लोदी (मय २४, ६)।

अच्छरि वि [अच्छरि] एक प्रकार
का मातृक विषय (अ ८)।

अच्छरि पुं [अच्छरि] रीछ मान्
(पणि)।

अच्छरि की [अच्छरि] बगल देह की राज-
बानी (पत्र २७२)।

अच्छरि की [कच्छ] पर्व महीना (वि ६ ४७)।

अच्छरि वि [आच्छरि] बहनेवाला,
माच्छरि (अ १११)।

अच्छरि न [आच्छरि] १ बहना (वि ७ ४१)। २ बह, कपड़ा (पत्रा)।

अच्छरि की [आच्छरि] बहना माच्छरि-
स्त करना (नव १)।

अच्छरि वि [अच्छरि] दीक्षार बार
बार (पत्रा)।

अच्छरि वि [अच्छरि] दीक्षार लेन (हि १ ११ ११)।

अच्छरि न [मच्छर] दीक्षार का मतलब (इह २)।

अच्छरि न [निमीच्छर] १ दीक्षार की महीना
नीचता। २ दीक्षार मिलने में जो समय बचे

वह, अच्छरि नीमिच्छर में खालि हुई दीक्षार
पण्ड १)। एण्ड एण्डरि अछरि अछरि
माच्छरि (जीव १)। पत्र न [पत्र] दीक्षार

का पत्र पत्रा (मय १४ ८)। 'देव' पुं
[देव] एक चतुर्विध वस्तु, मुख जीव

विरोध (उत १६)। रीछ पुं [रीछ] एक
चतुर्विध वस्तु, मुख जीव-विरोध (उत १६)।

स्व वि [मय] १ पत्र बलता
प्राणी। २ चतुर्विध वस्तु (उत १६)। मय
पुं [मय] दीक्षार का मय मय (मिह १)।

अच्छरि एक [आ + अछर] १ बोझा लेने
करना २ एक बार लेने करना। ३ बनावट
से चीन लेना। वह अच्छरि (मा १)।

अच्छरि पुं [अच्छरि] गोशाला के एक
विचार (मिह १) का नाम (मय ११)।

अच्छरि न [आच्छरि] १ एक बार
लेना (मिह १)। २ चीन। ३ बोझा
लेना, बोझा करना (मय ११)।

अच्छरि वि [रे] मय, नहीं कुमा हुआ
(नव १)।

अच्छरि पुं [अच्छरि] १ वीरि। २ पुं
लेना गोशाला (वि १ ४१)।

अच्छरि वि [आच्छरि] १ बहनेवाली को
हथेली से चीन लिया (मिह)। २ पुं
लेना छात्र के लिए शिक्षा का एक रूप
(माता)।

अच्छरि वि [अच्छरि] को बोझा न बा
धने (अ १ २)।

अच्छरि की [अच्छरि] १ माता का
पत्रा लिखा। २ वि माच्छरि (मिह)।
पत्र पुं [पत्र] निरयत-बाज, वस्तु को
निरय माच्छरि (पत्र)।

अच्छरि वि [अच्छरि] १ निरयत-
लिखि गाई (न २)। २ निरयत (मय २ १)।

अच्छरि वि [अच्छरि] १ बनावट
अच्छरि से चीन हुआ। २ चीन हुआ
गोशाला (पत्रा)।

अच्छरि वि [अच्छरि] १ नहीं गोशाला
अच्छरि हुआ पत्रा नहीं किया हुआ (अ १)। २ पत्रा लिखि बनावट-लिखि (नव)।

अधीर } बेहो अहस = धनीस (व १
अधीरय } छाया १ १३) ।

अधीरण बेहो अहस = धनीस (वि २७
प १११) ।

अधीय पुं [अधीय] अनेउन निर्जीव जड़
पदार्थ (म २) । अय पुं [अधीय] बर्मा
स्तिकम धरि धनीय पदार्थ (म ७ १) ।
अधुय पुं [अधीय] बुला-विरोध सतन्त्र, सहीता
(रि १ १७) ।

अधुय न [अधुय] कृष्ट इन्द्रा, 'धोमिया सहासा
रुम्ह' वं धनुषाणि ह्यारु' (महा) ।

अधुयसतनत्र पुं [अधुयसतनत्र] सहीता (रि
१ ४) ।

अधुयअध्वज्या की [अधी] इसी का पेड़ (रि
१ ४८) ।

अधुय वि [अधुय] धनोय धनुषि
(वि ७) । अरि वि [अरि] धनोय का
करनेवाला (मु ६ ४) ।

अधुयीय वि [अधुयि] मुक्ति-पूय धन्याय
(मु १२ ४४) ।

अधुय बेहो अध्व वेध धनुषाणि ह्यारु सत
कीरीयो पादकमण्डल' (मु १ १) ।

अनेज वि [अनेज] को भीता न का उके
'यो मउवप्यएवाहेय अनेया सौम्यया
(महा) ।

अधोग पुं [अधोग] मन बचन बीर कया
के सव व्यापारी का विधर्म धमाक होला है
बहु मर्जीवत योग शैली-करण (वीप) ।

अधोग वि [अधोग] धनोय नायक नहीं
बहु (मो ११) ।

अधोगि पुं [अधोगि] १ कर्षणत पाग को
प्राप्त बोयी । २ मुक्त धामा (ठा २, १ कम
४ ४० २) ।

अध्वक [अधी] पैदा करना उगारन
करना कमाना । अध्व (रि ४ १ ८) । संक
अध्विय (वि ८) ।

अध्व वि [अधी] १ पैदा । २ स्वामी मानिक
(रि १ ३) ।

अध्व वि [अधी] १ निर्जीव । २ धार्मिक में
ब्रह्म (एवि ४१) । ३ शिष्ट-मोचित धर्मार्थ
अधीर करेई यम' (उत ११ १२) । लडक
पुं [अधुय] एक धन धान्य (मु ४४ ४) ।

अध्व वि [अधी] १ उत्तम बेटा (ठा ४ २) ।

२ मुनि धाम (क्य) । ३ सत्यार्थ करने-
वाला (व १) । ४ पूय मान्य (वि १)

१) । २ पुं. मातामह (नि १) । ३ पितामह
(एवि ८) । ४ एक ध्वि का नाम
(एवि) । ८ म. गोत्र-विरोध (संवि) । २ धन
धाम धाम्नी बीर जनकी शाकाओं के पूर्व में
बहु सम्भ्रम समता है, जैसे अध्वजह
अध्वज्या अध्वपोमिद्धा (क्य) । उत
पुं [अधी] १ पति मर्मा (पाठ) । २ मानिक
का पुत्र (महा) । पास पुं [अधी] माना
पार्थक्य का एक गणवर (ठा ८) । मंगु पुं
[अधी] एक प्रसीत बैनाचार्य (सा २२) ।

मिसस वि [अधी] पूय माय (मि
१३) । समुद्र पुं [अधी] एक प्रविद्ध
बैनाचार्य (सा २२) ।

अध्व य [अधी] धान (मु २ १६७) ।

य वि [अधी] धनुषाण धानकम का
(रंता) । या की [अधी] धान कस (क्य) ।

पमिद्ध य [अधी] धान के ले कर
(उत) ।

अध्व पुं [अधी] १ जितेज देव । २ बुद्ध देव (रि
१ ३) ।

अध्व न [अधी] की हूत (पाठ) ।

अध्व बेहो रि = अध्व ।

अधीय न [अधी] धान (गा ४८) ।

अधीय वि [अधीय] पागानी । अधी पुं
[अधी] मन्थि काब (पाठ) ।

अधीयि य [अधीय] धानकम (उत ६
३४४) ।

अधीयवि वि [अधीयवि] धानकम का
(मृ १४८) ।

अधीय बेहो अध्वय = धर्म 'धनवत्पतेज
रिम्' (मु १३) ।

अधीय बेहो अध्वय = धर्म (रि १ १) ।

अधीयक [अधी] उगारन करना । संक
अधीयता (मु १ ३ २ २३) ।

अधीय } [अधी] उगारन पैदा करना
अधीयय } (पा १२) उत १८) 'रुम बेरि-
मेर करेनुयाय उतअगले' (उत ७ ७) ।

अधीय पुं [अधीय] १ धर्म (रि
२६१) । २ देव-विरोध (म ७) । ३ उत्तर

पागुनी लक्षण का धर्मिष्ठायक देव (ठा २
३) । ४ म. उत्तर-पागुनी लक्षण (ठा २
३) ।

अधीय पुं [अधीय] १ मातमह, माँ का
बाप (पत्र ५ २) । २ पितामह पिता का
पिता (सा १ ३३) । 'मं पुण्य धर्म-मन्त्र-
कण्यमिधमपममममो हारो परमममो कर्म-
तमं तु गुरिधामिनी' (मु १ २२) ।

अधीय वि [अधीय] १ उगारन करनेवाला
पैदा करनेवाला (मु १ २४) । २ पुं बुद्ध
विरोध (एवि १) ।

अधीय पुं [अधी] १ धर्म नामक पुत्र । २
उटेक नामक पुत्र (रि १ २४) । ३ पुत्र
नाम (नि ११) ।

अधीय पुं [अधीय] धर्मों की एक जाति
(एवि १) ।

अधीय न [अधीय] सरलता निष्कण्टका
(म २४) ।

अधीय (म) बेहो अध्व = धर्म । लंघ पुं
[अधीय] धर्म-वेध (मं) ।

अधीयया की [अधीय] धनुषा सरलता
(पमि) ।

अधीय वि [अधीय] सख निष्कण्ट
(पाठ) ।

अधीयि य [अधीय] सरलता (मु १ ३
२ २३) ।

अधी की [अधी] १ धाम्नी (एवि २) ।
२ बीर पार्थी (रि १ ३) । ३ धार्मिक
(मं) । ४ मन्त्रा मन्त्रिणा की प्रथम
पिण्या (म १३२) । ५ माता पूय्या की
(वि १ ६ १४३ १४३) । ६ एक कला
(मं) ।

अधी की [अधी] अनेक, हनुम (रि २
८३) ।

अधीय वि [अधीय] धनुषधर्म 'धनवत्पि-
नरसवि एव उहारी ति बुधयं ना' (वर्म
२७) ।

अधीयक [अधी + अध्वय] धान करना,
हनुम कराना । ४ अध्वयध्व (मु २
२१) ।

अधीय वि [अधीय] धार्मिक पैदा किया
हुआ (पा १४) ।

निष्ठान् (अ ४ ३) । आय वि [आचार्य]

अणह न [अनमत्] भूमि प्रविषी (सि १ ३)।

अणहण्यगम वि [हे] मन्त्र विद्यमान (सि १ ५८)।

अनहण्यय वि [हे] ठिष्ठत मरिचत (पठ)।

अणह्री श्री [अनुना] इय सनय (मात्र ८)।

अणहारय दु [हे] ब्रह्म कृता विवका मय-मीना हो बहु बनीन (सि १ १८)।

अणह्रिअज वि [अह्रय] ह्रय-रहित निष्ठर, निर्मल (प्राय या ५१)।

अणह्रिगम वि [अनभिगत] १ नहीं जाना हुआ। २ पुं बहु छात्र, जिसको शास्त्रों का ज्ञान न हो, शयोतार्थ (पथ १)।

अणह्रिण्य वैको अमभिण्य (प्राय)।

अणह्रियास वि [अनम्पास] अमहिण्यु स्रष्ट नहीं करेयत्ना (पथ)।

अमहिष्ठि न [अमहिष्ठि] पुनरप्य वेदा की अमहिष्ठि प्राचीन पत्रवासी को धारकन 'पाठन' नाम से प्रसिद्ध है (पी २१ हुआ)।

बाह्य न [पाठक] वैको अमहिष्ठि (पु १ ५)।

मुणि १ ८८८)।

अमहीय वि [अनवीन] ररकन मनायत (पथ १११)।

अमहस्त्रिय वि [हे] विवका फल प्राप्त न हुआ हो बहु (मन्त्र १५३)।

अणाइ वि [अनादि] धारि-रहित नियम (मम १२३)। ऐह्यण निहृण वि [निधन] धारण-रहित शरत्त (जय मम १३ धाव ५)। मीत वीत वि [मन्] धनारि काल से प्रवृत्त (पठम ११८ १२३ मवि)।

अनाइय वि [अनादेय] १ अनुपदेय प्रहण करने के अनौप्य। २ नाम-कर्म का एक श्रेय, जिसके उत्पत्ति से जीव का बचन मुक्त होने पर भी धार नहीं समझ जाता है (कम्म १ २७)।

अनाइय वि [अनादिक] धारि-रहित नियम (मम १२३)।

अगाइय वि [अहादिक] स्वजन-रहित भरेता (मम १ १)।

अगाइय वि [अजादीत] वापी पाण्डित (मम १ १)।

अगाइय वि [अजादीत] वापी पाण्डित (मम १ १)।

अगाइय वि [अजादीत] वापी पाण्डित (मम १ १)।

अगाइय पु [अजादात] संसार, दुनिया (मम १ १)।

अगाइय वि [अनादित] विवका धारन न किया गया हो बहु (जय ८११ टी)।

अगाइय वि [अनादित] १ धारणित निर्मल (पथ २ १)।

अगाइय एको अगाइय (अ १ ११ टी पि ७)।

अगाइय पु [अनामु] १ जिन-यव (मम अगाइय १ १)। २ मुक्तता सिद्ध (अ १)।

अगाइय वि [अनामु] मन्त्राहुत बीर (मम १ २ २; छाया १ ८)।

अगाइय वि [अनामु] अनौप्य-रूप के ब्रह्म प्रजापति (पीन)।

अगाइय वैको अगाइय (मम १११)।

अगाइय पु [अनागत] १ मरिच्य काल 'मरणमयपसंज्ञा पञ्चुपयमसंज्ञा'।

२ पञ्चा परिच्छिन्नो बोधे धारमि बोधको' (पुष १ ५)। २ वि मरिच्य में होनेवाला (पुष १ २)। या की 'दिवा' मरिच्य काल (पथ ५२)।

अगाइय वि [अनर्गलित] नहीं रोका हुआ (उत्ता)।

अगाइय वि [अनर्गलित] १ नहीं जाना हुआ मरिच्य (छाया १ १)। २ मरिच्य 'मरणमयपसंज्ञा पञ्चुपयमसंज्ञा' (उत्ता)।

अगाइय वि [अनर्गलित] १ धारण-रहित, धारण-रूप (अ १)। २ धारण-रहित (कम्म ५ १२)। ३ न वर्तन सामान्य ज्ञान (मम ५३)।

अगाइय वि [अनर्गलित] १ धारण-रहित, धारण-रूप (अ १)। २ धारण-रहित (कम्म ५ १२)। ३ न वर्तन सामान्य ज्ञान (मम ५३)।

अगाइय वि [अनर्गलित] १ धारण-रहित, धारण-रूप (अ १)। २ धारण-रहित (कम्म ५ १२)। ३ न वर्तन सामान्य ज्ञान (मम ५३)।

अगाइय वि [अनर्गलित] १ धारण-रहित, धारण-रूप (अ १)। २ धारण-रहित (कम्म ५ १२)। ३ न वर्तन सामान्य ज्ञान (मम ५३)।

अगाइय वि [अनर्गलित] १ धारण-रहित, धारण-रूप (अ १)। २ धारण-रहित (कम्म ५ १२)। ३ न वर्तन सामान्य ज्ञान (मम ५३)।

अगाइय वि [अनर्गलित] १ धारण-रहित, धारण-रूप (अ १)। २ धारण-रहित (कम्म ५ १२)। ३ न वर्तन सामान्य ज्ञान (मम ५३)।

अगाइय वि [अनर्गलित] १ धारण-रहित, धारण-रूप (अ १)। २ धारण-रहित (कम्म ५ १२)। ३ न वर्तन सामान्य ज्ञान (मम ५३)।

अगाइय वि [अनर्गलित] १ धारण-रहित, धारण-रूप (अ १)। २ धारण-रहित (कम्म ५ १२)। ३ न वर्तन सामान्य ज्ञान (मम ५३)।

१ श्री बन्धुकी के प्रतिष्ठापक वैश्व की राज-काली (बीन ३)।

अगाइय वि [अनानुगामिक] १ पीछे नहीं जानेवाला (अ ३, १)। २ न धारण-ज्ञान का एक श्रेय (एवि)।

अगाइय वैको अगाइय (म ५ ८१)।

अगाइय १ वैको अगाइय (कम्म ५ ११)। अगाइय १ ठा १ १)।

अगाइय वैको अगाइय (कम्म १ १)। अगाइय न [अनामिमह] मिम्याय न एक मर (पथ २ २)।

अगाइय पु [अनामोग] १ अनुपयोग के ब्रह्म प्रजापति (प्राय ५)। २ न मिम्याय विशेष (कम्म ५ ११)।

अगाइय वि [अनामिक] १ नाम-रहित। २ पुं प्रलय योग (हंयु)। ३ श्री कनिष्ठोपनी के ऊपर की संघुपी।

अगाइय वि [अहात] नहीं जाना हुआ धारि चित (पठम २३ १७)।

अगाइय पु [अनाक] मरिच्योक्त मनुष्य-लोक (सि १ १)।

अगाइय पु [अनात्मन] धारण-रहित धारण से परे (मम १)।

अगाइय वि [अनायक] नायक-रहित (पठम २, ७)।

अगाइय वि [अहायक] धारण, निर्हीन (निष्ठ ११)।

अगाइय वि [अहायक] धारण, निर्हीन (निष्ठ ११)।

अगाइय वि [अहायक] धारण, निर्हीन (निष्ठ ११)।

अगाइय वि [अहायक] धारण, निर्हीन (निष्ठ ११)।

अगाइय वि [अहायक] धारण, निर्हीन (निष्ठ ११)।

अगाइय वि [अहायक] धारण, निर्हीन (निष्ठ ११)।

अगाइय वि [अहायक] धारण, निर्हीन (निष्ठ ११)।

अगाइय वि [अहायक] धारण, निर्हीन (निष्ठ ११)।

अगाइय वि [अहायक] धारण, निर्हीन (निष्ठ ११)।

अगाइय वि [अहायक] धारण, निर्हीन (निष्ठ ११)।

अगाइय वि [अहायक] धारण, निर्हीन (निष्ठ ११)।

अणुइय्य नि [अनुइयीय] बाहर गयी निरका
हुया (वीथ) ।

अणुइय्य रैको अणुचिपम ।

अणुइय्य रैको अणुइय्य ।

अणुइय्य नि [अनुइय्य] घरविहून् पणुइय्य
(वा २२९) ।

अणुइय्य सक् [अनुइय्य] पणुइय्य करना ।

यदि पणुइय्यसं (वि १२८) ।

अणुओम दु [अनुओम] १ व्यास टीका
दुन का बिस्तार से धर्म-प्रतिपादन (वीथ २) ।

२ इच्छा प्राप्त (वीथ ४४) ।

अणुओमइय नि [अनुओमइय] प्रवर्तित प्रवृत्त
नरका हुया (एति) ।

अणुओम रैको अणुओम (वि ६) ।

अणुओम दु [अनुओम] सम्पन्न (पु १७) ।

अणुओमि दु [अनुओमि] मूषो का व्या-
ख्याता मान्य, 'अणुओमो लोमो' वन संस-
रणको रई होइ (वचन ४) ।

अणुओमि नि [अनुओमि] दीक्षित मुनि-
लिय्य (एति) ।

अणुओमप न [अनुओमप] संवत्तन वीजता
(वि ११ ५) ।

अणुइय्य सक् [अनु + कम्प] १ व्या करना ।

२ धर्म करना । ३ हित करना । वक् अणु-
इय्यन (वाट) । क अणुइय्यविज्ज अणु-
इय्यमीअ (वि २४) समुत् (२५) ।

अणुइय्य नि [अनुइय्य] अनुगम के योग्य
(वि १ २१) ।

अणुइय्य नि [अनुइय्य क] १ व्याप्त,
अणुइय्य नि [अनु] २ मक्, वाच्यमान (जय

१२) 'विश्वामित्रोपपाद वेदेन हविष्यवेदिना'
(वच) । ३ विह्वल, 'आत्मजोपपाद एतमेने
नो वण्णोपपाद' (वा ४ ४) ।

अणुइय्य न [अनुइय्यम] १ व्या हुआ (वच

३) । २ मक्, वेत्ता 'आत्मजोपपाद' (वच)

अणुइय्यो धी [अनुइय्यो] ऊपर रैको (वाचा

१ १) 'आत्मजोपपाद' मण्णो क्कमिणी
महायोगी (वच-टी) । हाग न [हान]

गन्ता नि धरिनी की अम धारि देय 'अनु-
गच्छ' गच्छाण न वदिना वदिमि' (वच १) ।

अणुइय्य नि [अनुइय्यम्] १ व्याप्त, व्याप्त
(मात ७) । २ मक् कलेदाता (मूय

१ २ २) ।

अणुइय्य नि [अनुइय्य] वित पर पणु-
इय्य की वई हो वइ (वाट) ।

अणुइय्य सक् [अनु + कम्प] १ बीचना ।

२ अनुसरण करना । वक् अणुइय्यमाय

अणुइय्यमाय (विपा १ १ एति) ।

अणुइय्यो धी [अनुइय्य] अनुवर्तन अनु-
सरण (वच २) ।

अणुइय्यव नि [अनुइय्य] अनुसर अनुसर
(व २१) ।

अणुइय्य दु [अनुइय्य] १ वडेपुकी के मार्ग

ना अनुसरण । २ नि महापुगी का अनुसरण

करनेवाला 'अणुइय्यवह्मणो' पुण्यपरिणय

वणुकिरि दुल्ल, अनुगच्छाण पुण्यो धी अनु-
कर्त्त त विपासाहि (वचन ४) ।

अणुइय्य दु [अनुइय्य] परिणयी अम (महा) ।

सो य [रास्] अम से परिणयी से
(वी २८) ।

अणुइय्य सक् [अनु + क] अनुकरण करना

नक्क करना । अनुइय्य (व ४१६) ।

अणुइय्य न [अनुइय्य] नक्क (वच १) ।

अणुइय्य सक् [अनु + कम्प] अनुसर करना

वीथे बीचना ।

अणुइय्य न [अनुइय्य] अनुसर (मूय १

११) ।

अणुइय्य दु [अनुइय्य] अनुकरण नक्क

(अणु) ।

अणुइय्य नि [अनुइय्य] अनुकरण करी-

बारा किअणुगच्छाण महावेद्य (महा) ।

अणुइय्यो धी [अनुइय्य] अनुकरण नक्क

पुण्यपरिणय नक्कपणुइय्य व वीथिविहासेणु
म कर्णविहारे (वच) ।

अणुइय्य नि [अनुइय्य] व्याप्त वच हुया

(पम् २१ ७) ।

अणुइय्य न [अनुइय्य] वरुण, प्रवर्तन,

व्याप्त (वच ११ ७१) ।

अणुइय्य रैको अणुइय्य (वचन) ।

अणुइय्य नि [अनुइय्य] १ वीथे बीना

हुया । २ वीथे बीना हुया (विपु ८) ।

अणुइय्य सक् [अनु + क] अनुकरण करना ।

अणुइय्य (वि १२६) ।

अणुइय्य रैको अणुइय्य (वि २ २१०) ।

अणुइय्य न [अनुइय्य] अनुसर करना,

प्रवर्तन करना त वइ । तम्पये विह्वली

वचिअणुइय्यव व' (मूय २१४) ।

अणुइय्य नि [अनुइय्य] अनुसर-नक्क

'अणुइय्योपपणुइय्यो मण्णो' (वचन ५) ।

अणुइय्य नि [अनुइय्य] भाषण अनु

हित (वाचा) ।

अणुइय्य नि [अनुइय्य] भाषण, विहित

अणुइय्य 'अम विही अणुइय्यो मण्णो' वच-
नमा (वाचा) ।

अणुइय्य सक् [अनु + कम्प] अम से नक्क ।

अमि अणुइय्यमि (वीथ १) ।

अणुइय्य सक् [अनु + कम्प] अमिअमउ

करना । वक् अणुइय्यमउ (मूय १ २, १

७) ।

अणुइय्य रैको अणुइय्य (महा वच १६) ।

अणुइय्यम न [अनुइय्य] वचन नि

(मूय १ २, २ २१) ।

अणुइय्य नि [अनुइय्य] बोधा वणुइय्य

(वच ६२) ।

अणुइय्य दु [अनुइय्य] व्या कक्का

(वा ४ ४) ।

अणुइय्य दु [अनुइय्य] १ उत्तर का

प्रमाण । २ नि २ कर्कश (वच

१) ।

अणुइय्य नि [अनुइय्य] वीथ न विथ

हुया, 'विथ' वणुइय्योपपणुइय्यो मण्णो वचन

वणुइय्य' (वा २२९) ।

अणुग नि [अनुग] अनुसर, नीकर (वि ४

१६) ।

अणुग नि [अनुग] अनुसरण-नक्क (वचन

१ ११) ।

अणुगइय्य रैको अणुगम = अनु + ग ।

अणुगया धी [अनुगया] गच्छा रवा (न

१ २८) ।

अणुगपिय नि [अनुगपिय] विथ पर

करणा की वई हो वइ (न ४०२) ।

अणुगच्छ रैको अणुगम = अनु + ग । गच्छ-

नक्क वा अणुगच्छन अणुगच्छमान

(ननु) सुम १४)। कश्चि. अनुगच्छन्ति
(आवा १२)। छं. अनुगच्छिन्ता (कम्)।

अनुगच्छन् देवो अनुगामन् (पुन ४८)।
अनुगच्छिन्ति वि [अनुगामिन्] अनुवरण
करेवत्ता (मण)।

अनुगच्छ सक् [अनु + गच्छ्] प्रतिबन्धि
करता प्रतिबन्ध करता। कश्चि. अनुगच्छे
माय (आवा १२८)।

अनुगाम सक् [अनु + गम्] १ अनुवरण
करता पीछे-पीछे जाता। २ जानना सम
झना। ३ व्याख्या करना सूत्र के धर्मों का
संगीकरण करना। कर्त्त. अनुगम्यम्ह (विदे
२१३)। कश्चि. अनुगम्यन्ति, अनुगम्यमाण
(उर ६ टी मुग ७८२ ८)। छं. अनुगम्य
(सुम ११४)। क. अनुगम्यन् (सुर ७
१७१ परण १)।

अनुगम्य तु [अनुगम] १ अनुवरण अनुवर्तन
(रि २६१)। २ जानना, छीक-छीक समझना
निश्चय करना (अ १)। ३ सूत्र की व्याख्या
सूत्र के धर्मों का संगीकरण (ब १)। ४
मन्त्र एक की सहा में दूसरे की विधानता
(विम २६)। ५ व्याख्या टीका (विदे १३
२७)। अनुगम्यन् देण छं. छये व अनुगम्य-
णमेव बाणुयो। 'अनुगम्यन्' का वा अ
मुत्तत्वागम्यन्' (विदे २१३)।

अनुगमय न [अनुगमन्] ऊपर देखो।

अनुगमिन् वि [अनुगम] अनुवर्तन (सुर
४१)।

अनुगमिन् वि [अनुगम] अनुवरण करने
वाला (रि ६ १२७)।

अनुगमिन् वि [अनुगम] १ अनुवर्तन जिसका
अनुवरण किया गया हो वह (पक्ष १ ४)।
२ जात जाता हुआ (विदे)। ३ अनुवर्तन को
पूर्व से बदलकर बना धामा हो (पक्ष १
१)। ४ प्रतिबन्ध (विदे २१६)।

अनुगमर देवो अनुगच्छन्। अनुगच्छन् (स ३१४)।
कश्चि. अनुगच्छिन्ति (स २८)।

अनुगमण देवो अनुगच्छन् (सुर १७६)।

अनुगमये सक् [अनु + गये] जानना
टीका समझना। अनुगमये (कश्चि.)।

कश्चि. अनुगमयेसाम् (सम ८ १)। क.
अनुगमयेसियन् (कश्चि.)।

अनुगम देवो अनुगच्छन् = अनु + गच्छ (ननु)।
अनुगच्छिन्ति देवो अनुगच्छिन्ति (रि ८/२६)।
अनुगम्य तु [अनुगम] १ छोटा मंत्र (अत
१)। २ गुरु, गुरु के पास का गच्छ (अ
२)। ३ विवर्तित मंत्र से दूसरा मंत्र
'गाम्यन्' नाम 'दुष्कर्मालो' (विदा १ १ नील
प्राचा)।

अनुगमिन् } वि [अनुगमिन्, मिक्]
अनुगमिन् } १ अनुवरण करनेवाला पीछे-
पीछे जानेवाला (धीन)। २ निरर्थक हेतु, गुरु
कारण (अ १ १)। ३ धर्मविज्ञान का एक
मेव (कम् १ ८)। ४ अनुवर्तन, सेवक (सुम
१ २, १)।

अनुगमिन् वि [अनुगमिन्] अनुवरण
करेवत्ता नकाल की (महा बर् १३ स
११)।

अनुगमिन् की [अनुगमिन्] अनुवरण नकल
(सा १)।

अनुगमिन् देवो अनुगच्छन् = अनु + गच्छ। कश्चि.
अनुगमिन्माय, अनुगमिन्माय (निर १
१; आवा १ १६)।

अनुगमिन् वि [अनुगम] समन्त व्यासक्त,
सोक्त (सुम १ ७)।

अनुगमिन् की [अनुगमिन्] व्यासक्त (स
१२)।

अनुगमिन् सक् [अनु + ग] अनुवर्तन करना।
छं. अनुगमिन्ता (आवा १ ७)।

अनुगमिन् वि [अनुगमिन्] जिस पर मेह
रबानों की गई हो वह (स १४ १११)।

अनुगमिन् वि [अनुगमिन्] १ पीछे कहा हुआ
अनुवर्तन। २ पूर्व व्यवहार के मंत्र के अनुवर्तन
किया हुआ प्रत्येक व्याख्यान प्राति (अत ११)।
३ विना का मत किया गया हो वह, कीलन
कथित। ४ न. माया द्यौ, उज्ज्वले 'मत्त-
निाम्यन्' (पक्ष १३, १४८)।

अनुगमिन् वि [अनुगमिन्] १ अनुवर्तन उचित
सोय (माट)। २ गुरु घर से अनुवर्तन
जान धर्मवास्यो, विहारी

सरेसे देखे रहने दो।

विद्यादेव विद्यादेव सुसार
वर्तियो अनुगच्छिन्ति (पक्ष)।

अनुगच्छन् वि [अनुगच्छ] अनुवर्तन के अनु-
सार जिस विषय का व्यवहार होता हो वह
(रि १)।

अनुगच्छन् वि [अनुगच्छ] अनुवर्तन (स १७८)।
अनुगच्छन् वि [अनुगच्छ] अनुवर्तन के योग्य
कृता-मात्र (प्राय)।

अनुगच्छन् देवो अनुगच्छन् = अनु + गच्छ।
अनुगच्छन् (रि ११२)।

अनुगच्छन् सक् [अनु + गच्छ] कृता करता
मेहरबानी करता। क. अनुगच्छन्, अनु
गच्छन् (टी) (माट)।

अनुगच्छन् तु [अनुगच्छ] १ कृता मेहरबानी
(कम्)। २ उकार (धीन)। ३ वि जिस
पर अनुवर्तन किया जाय वह (ब १)।

अनुगच्छन् तु [अनुगच्छ] तीन साधुओं को
छाने के लिए शास्त्र-निष्ठ स्वान
'लो मोयरे लो अनुवर्तितवर्त लो बद्ध
दुष्कर्म व अन्य मायो।

मयल्ल मोलेहिन्नु अन्य कुल्ल स उज्ज्वलो
सैवमयल्लो तु' (रि १)।

अनुगच्छिन्ति } वि [अनुगच्छिन्ति] जिस पर
अनुगच्छिन्ति } कृता की गई हो वह, व्यापार
अनुगच्छिन्ति } (महा सुवा १६२, स ६७)।

अनुगच्छिन्ति न [अनुगच्छिन्ति] १ महा प्रस-
वित का एक मेह (अ १ ४)। २ वि. महा-
प्रसवित का वाज (अ १ ४)।

अनुगच्छिन्ति वि [अनुगच्छिन्ति] १ अनुवर्तित
नामक महा-प्रायश्चित का वाज (अ २, १)।
२ न. प्रवर्तित-विशेष जिसमें अनुवर्तित
प्रायश्चित का वर्तन है (पक्ष २ १)।

अनुगच्छिन्ति वि [अनुगच्छिन्ति] १ अनुवर्तित-
विशेष। २ न. निरीध सूत्र का वह भाग, जिसमें अनु
वर्तित प्रायश्चित का विचार है। 'ऊर्ध्वमय-
गुणाय भाष्येण विविहो निरीध तु'
(माट १)।

अनुगच्छिन्ति न [अनुगच्छिन्ति] अनुवर्तित
(ब १)।

अनुगच्छिन्ति न [अनुगच्छिन्ति] कर्मों का नाश
(प्राचा)।

म्) (अ १ २ १); 'अपिण्ड = अर्ध' (अ १ ४ ७ टी)।

अनुपिण्ड } अ [अनुपिण्ड] + पिण्ड
मुद्रित } धीरानां दूर प्रविश्य यो हो।
(पिण्डो धीरानां अपिण्ड यो हो (अ १ ४)।

अनुपिण्ड वि [अनुपिण्ड] उपर को प्रमाण
विष्णुने अनुपिण्ड से धीरानां अनुपिण्ड व उन
धर्म (अ १ १ टी)।

अनुपिण्ड न [अनुपिण्ड] अतिरिक्त हेमरा
(अ १ १११)।

अनुपिण्ड न [अनुपिण्ड] प्रमाण प्रादुर्भाव (अ १)।
अनुपिण्डा } की [अनुपिण्ड] विरिक्त
अनुपिण्डा } विरक्त बाण धारि विरिक्ता (पिने
२० टी पि १८, ४१३, ४४५)।

अनुपिण्ड वि [अनुपिण्ड] विरक्त बरेय न
विष्णु यथा हा वह (अ २ २)।

अनुपिण्ड वि [अनुपिण्ड] अर्ध नहीं पीका
(अ १)।

अनुपिण्ड वि [अनुपिण्ड] वल न विरक्त
(अ ११८ टी)।

अनुपिण्ड पु [अनुपिण्ड] एक पुत्र वल,
पुत्र (अ १)।

अनुपिण्ड वि [अनुपिण्ड] अथवा उपर
न विष्णु यथा हो व १२ बहुर वही विष्णु
हवा, न विष्णु भावनेन अथवा व १२
अनुपिण्ड (अ १)।

अनुपिण्ड वि [अनुपिण्ड] अतिरिक्त नहीं
पीका हवा (अ १)।

अनुपिण्ड पु [अनुपिण्ड] अथवा अर्ध (पिने)।

अनुपिण्ड पु [अनुपिण्ड] अनुपिण्ड - अथवा
अर्ध अथवा अर्ध अनुपिण्ड अथवा (अ १
१ २ १)। अतिरिक्त [अतिरिक्त] विरक्त
अथवा व अनुपिण्ड अथवा (अ १
२ २)।

अनुपिण्ड वि [अनुपिण्ड] अर्ध के अनुपिण्ड
अथवा अर्ध अनुपिण्ड अथवा (अ १
१)।

अनुपिण्ड न [अनुपिण्ड] अर्ध पीका,
अथवा अनुपिण्ड (अ १ २ १)।

अनुपिण्ड न [अनुपिण्ड] अर्ध पीका
(अ १ २ १)।

अनुपिण्ड वि [अनुपिण्ड] पीके पीका-
वला (अ १ २ टी)।

अनुपिण्ड वि [अनुपिण्ड] अतिरिक्त पीका-
वला (अ १)।

अनुपिण्ड वि [अनुपिण्ड] अनुपिण्ड विरक्त
अनुपिण्ड पीका हो वह 'अनुपिण्ड' पीका
अनुपिण्ड व १२ (अ १ २ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १ १ टी)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड। वह अनुपिण्ड
(अ १ १)। १ अनुपिण्ड व १२ (अ १ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड = अनुपिण्ड +
अनुपिण्ड (अ १ २ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १ २ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १ २ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १ २ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १ २ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १ २ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १ २ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १ २ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १ २ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १ २ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १ २ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १ २ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १ २ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १ २ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १ २ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १ २ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १ २ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १ २ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १ २ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १ २ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १ २ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १ २ १)।

अनुपात्तिम् वि [अनुपात्ति] रचित प्रति
पात्ति (छ ८)।

अनुपास देवो अनुपस्त। बहु अनुपासमाय
(इत्थ २)।

अनुपिष्ट न [अनुपिष्ट] मनुष्य अनुपिष्ट
दिशार् (सम्)।

अनुपिष्टा देवो अनुपेष्टा (इत्थ १२)।

अनुपुङ्ग न [अनुपुङ्ग] मूल एक मान-पर्यन्त
अनुपुङ्गमानवर्तमानि मानमा सत्त्वं अस्मा हुति
(ब्रुम ११)।

अनुपुञ्ज वि [अनुपुञ्ज] अन्वार, अनुपुञ्जिक
(अ ४ ४)। द्विदि अन्व (वाप)। सो
[अ ४] अनुपुञ्ज वे (भाषा)।

अनुपुञ्ज न [अनुपुञ्ज] अन्व परिपाटी अनु
अन्व (चप)।

अनुपुञ्जी श्री [अनुपुञ्जी] अन्वरदेवो (वाप)।

अनुप्रेक्षा श्री [अनुप्रेक्षा] मानना चित्तन
विचार (वज्र १४ ७७)।

अनुपेक्ष न [अनुपेक्ष] अन्वर देवो (अ
१४ टी)।

अनुपेक्षा श्री [अनुपेक्षा] अन्वर देवो (वि
१२१)।

अनुपेक्षि वि [अनुपेक्षि] चित्तन-कर्त्ता
(सूच १ १ ७)।

अनुप्यइस वि [अनुप्यइस] एक इतरे से
मिठा हुआ, मिश्रित (कम्)।

अनुप्यपी सक [अनुप्यपी] १ प्रणय
करना। २ प्रसन्न करना। बहु अनुप्यपीत
(अ ४ २८)।

अनुप्यपीय [अनुप्यपीय] सत्त्वोदी दत्त्व परि
ग्रह नाला (अ २)।

अनुप्यपीय वि [अनुप्यपीय] अन्वर देवो
(अ २)।

अनुप्यपञ्च वि [अनुप्यपञ्च] अविधमान (नीह
४)।

अनुप्यपत देवो अनुपपत (कम्)।

अनुप्यदा सक [अनुप्यदा] दान देना फिर
फिर देना। अनुप्यदे (कम्)। ३ अनुप्य
दायक (कम्)। ४ अनुप्यदाई (कम्)।

अनुप्यदाज न [अनुप्यदाज] दान फिर-फिर
दान देना (वाप ६)।

अनुप्यसु पुं [अनुप्यसु] स्वामी के स्वामत्त्व
प्रतिनिधि (निपु २)।

अनुप्यसा देवो अनुप्यसा। अनुप्यसा (कम्)।
देह अनुप्यसाई (कम्)।

अनुप्यसाज देवो अनुप्यसाज (भाषा)।
अनुप्यसाज सक [अनुप्यसाज] अनुप्यसाज
करना। देह-अनुप्यसाज (विसे २२ ७)।

अनुप्यसाज वि [अनुप्यसाज] अनुप्यसाज
अनुप्यसाज (कम्)। अनुप्यसाज (कम्)।

अनुप्यसाज पुं [अनुप्यसाज] कन्व (मूय २
७ ११)।

अनुप्यसाज सक [अनुप्यसाज] नवाना।
बहु अनुप्यसाजमाय (अ १)।

अनुप्यसाज न [अनुप्यसाज] नवाना पुनं बार
हूँ कि दान-मान का एक अनुप्यसाज (अ २)।

अनुप्यसाज देवो अनुप्यसाज (कम्)।
अनुप्यसाजि श्री [अनुप्यसाजि] अनुप्यसाज
अनुप्यसाज (विसे २११)।

अनुप्यसाज देवो अनुप्यसाज। अनुप्यसाज
(कम्)। अनुप्यसाज (कम्)।

अनुप्यसाज देवो अनुप्यसाज। अनुप्यसाज
(कम्)। अनुप्यसाज (कम्)।

अनुप्यसाज देवो अनुप्यसाज। अनुप्यसाज
(कम्)। अनुप्यसाज (कम्)।

अनुप्यसाज देवो अनुप्यसाज। अनुप्यसाज
(कम्)। अनुप्यसाज (कम्)।

अनुप्यसाज देवो अनुप्यसाज। अनुप्यसाज
(कम्)। अनुप्यसाज (कम्)।

अनुप्यसाज देवो अनुप्यसाज। अनुप्यसाज
(कम्)। अनुप्यसाज (कम्)।

अनुप्यसाज देवो अनुप्यसाज। अनुप्यसाज
(कम्)। अनुप्यसाज (कम्)।

अनुप्यसाज देवो अनुप्यसाज। अनुप्यसाज
(कम्)। अनुप्यसाज (कम्)।

अनुप्यसाज देवो अनुप्यसाज। अनुप्यसाज
(कम्)। अनुप्यसाज (कम्)।

अनुप्यसाज देवो अनुप्यसाज। अनुप्यसाज
(कम्)। अनुप्यसाज (कम्)।

अनुप्यसाज देवो अनुप्यसाज। अनुप्यसाज
(कम्)। अनुप्यसाज (कम्)।

अनुप्यसाज देवो अनुप्यसाज। अनुप्यसाज
(कम्)। अनुप्यसाज (कम्)।

अनुप्येसिय वि [अनुप्येसिय] पीछे से सेवा
हुमा (गाठ)।

अनुप्येस सक [अनुप्येस] चित्तन करना
विचारना अनुप्येसि (वि १२१)। ३ अनु-
प्येसियक (वृत् १)।

अनुप्येसा श्री [अनुप्येसा] चित्तन मानना
विचार, स्वाभाव विरोध (उत्त २२)।

अनुप्येसा पुं [अनुप्येसा] अनुप्येसा प्रमाण
'ननुप्येसा अनुप्येसा ननु' अन्वयपरिप
(वत्त १)।

अनुप्येसा वि [अनुप्येसा] नाना हुआ
साक किया हुआ (अ १४२)।

अनुप्येस सक [अनुप्येस] १ अनुप्येस
करना। २ अनुप्येस नाना करना। अनुप्येसि
(उत्तर ७१)। बहु अनुप्येसि (विणी १८३)।

अनुप्येसा देवो अनुप्येसा। अनुप्येसा
(कम्)। अनुप्येसा (कम्)।

अनुप्येसा देवो अनुप्येसा। अनुप्येसा
(कम्)। अनुप्येसा (कम्)।

अनुप्येसा देवो अनुप्येसा। अनुप्येसा
(कम्)। अनुप्येसा (कम्)।

अनुप्येसा देवो अनुप्येसा। अनुप्येसा
(कम्)। अनुप्येसा (कम्)।

अनुप्येसा देवो अनुप्येसा। अनुप्येसा
(कम्)। अनुप्येसा (कम्)।

अनुप्येसा देवो अनुप्येसा। अनुप्येसा
(कम्)। अनुप्येसा (कम्)।

अनुप्येसा देवो अनुप्येसा। अनुप्येसा
(कम्)। अनुप्येसा (कम्)।

अनुप्येसा देवो अनुप्येसा। अनुप्येसा
(कम्)। अनुप्येसा (कम्)।

अनुप्येसा देवो अनुप्येसा। अनुप्येसा
(कम्)। अनुप्येसा (कम्)।

अनुप्येसा देवो अनुप्येसा। अनुप्येसा
(कम्)। अनुप्येसा (कम्)।

अनुप्येसा देवो अनुप्येसा। अनुप्येसा
(कम्)। अनुप्येसा (कम्)।

अनुप्येसा देवो अनुप्येसा। अनुप्येसा
(कम्)। अनुप्येसा (कम्)।

अनुप्येसा देवो अनुप्येसा। अनुप्येसा
(कम्)। अनुप्येसा (कम्)।

अनुप्येसा देवो अनुप्येसा। अनुप्येसा
(कम्)। अनुप्येसा (कम्)।

अनुवचनम् } वि [अनुवच] १ वचन कृत्वा
अनुवच } वचन (वि १११) । १ घटत
यत्किञ्चित् 'अनुवचनम्' पठेत्परं वैष्णवं
उदीरति' (पद्य ११) । २ व्यास (छाया
११) । ४ प्रतिपद्य (छाया १२) । ३
धर्म्य बहव 'अनुवचनम्' पठेत्परं वैष्णवं
(पद्य ११) । १ कृत्य (उत्तर २२) ।

अनुवच वि [अनुवच] १ अनुवच (वच १
२०) । २ वीथे वचन कृत्वा (सिद्धि १०४) ।

अनुवच देवो अनुवच ।

अनुवच वि [अनुवच] अनुवच अनुवच
(उत्तर २) ।

अनुवच वि [अनुवच] अनुवच अनुवच
(नट १) ।

अनुवच देवो अनुवच = अनुवच (नट) ।

अनुवच सक [अनु + मु] १ अनुवच करता,
बाल्य समया । २ वचन को बोलना ।
अनुवचि (वि १०३) । बहू अनुवचि
(वि १०३) । बहू अनुवचि अनुवचि
(नट १०३) । ११. अनुवचि
(उत्तर १०) ।

अनुवच पुं [अनुवच] १ बाल बाल विषय
(वच १) । २ वचन का बोल (विशे) ।

अनुवच न [अनुवचन] अवर देवो (वच
४० वि २१) ।

अनुवचि वि [अनुवचि] अनुवच करनेवाला
(वि १११) ।

अनुवच वि [अनुवच] अनुवच अनुवच
(वच १०३) ।

अनुवच पुं [अनुवच] १ वचन वाग्व्य
(वच १११) । २ लोके, बाल्य (पद्य २) ।

१ वचन का विषय—वच (वच १११) । २
वचन का वच वचन का वच उत्तर करने को
होति 'अनुवच वच वचन' (वच १२ टी
नर ११) । वच पुं [अनुवच] वचन-वचन
में वच उत्तर करने को होति वा वचन (वच
४२) ।

अनुवच पुं [अनुवच] १ वचन को
अनुवच (अनु १११ टी ११ वचन वाग्व्य
वच १) । २ वचन का वच वचन को
वच वचन वचन वचन (वच) । ३ वचन
वचन वचन (वच १११) ।

अनुवच वि [अनुवच] वचन वचन
(वचन) ।

अनुवच सक [अनु + मा] १ अनुवच
करना वचन वचन को वचन वचन
वचन में मा वचन वचन में वचन । २ वचन
करना 'अनुवच वचन' (वच १११ वच
१) । बहू अनुवच वचन अनुवच वचन
(वच १११ वि २११२) ।

अनुवच न [अनुवच] अनुवच, वचन
वचन वा वचन (नट) ।

अनुवच वचन वचन [अनुवच] अवर देवो
(वच १११ वि २१२ टी) ।

अनुवच वि [अनुवच] अनुवच वचन
वचन वचन वचन (वि १११०) ।

अनुवच वचन वचन अनुवच वचन

अनुवच सक [अनु + मु] १ वचन करता ।
वच अनुवच वचन (वि १११) ।

अनुवच वचन [अनुवच] अनुवच (वि ११११) ।

अनुवच वि [अनुवच] वचन विषय (वच) ।
वचन वि [वच] वचन वचन वचन वचन
वचन वचन वचन (वच १११) ।

अनुवच सक [अनु + मु] वचन करता
वचन वचन (वच) ।

अनुवच वचन [अनुवच] अनुवच वचन
(वच १११) ।

अनुवच वचन वचन अनुवच वचन
(वि १११) ।

अनुवच वचन वचन अनुवच वचन
(वच १११) ।

अनुवच वचन वचन अनुवच वचन
(वच १११) ।

अनुवच वचन वचन अनुवच वचन
(वच १११) ।

अनुवच वचन वचन अनुवच वचन
(वच १११) ।

अनुवच वचन वचन अनुवच वचन
(वच १११) ।

अनुवच वचन वचन अनुवच वचन
(वच १११) ।

अनुवच वचन वचन अनुवच वचन
(वच १११) ।

अनुवच वचन वचन अनुवच वचन
(वच १११) ।

अनुवच वचन वचन अनुवच वचन
(वच १११) ।

अनुवच वचन वचन अनुवच वचन
(वच १११) ।

अनुवच वचन वचन अनुवच वचन
(वच १११) ।

अनुवच वचन वचन अनुवच वचन
(वच १११) ।

अनुवच वचन वचन अनुवच वचन
(वच १११) ।

अनुवच वचन वचन अनुवच वचन
(वच १११) ।

अनुवच वचन वचन अनुवच वचन
(वच १११) ।

अनुवच वचन वचन अनुवच वचन
(वच १११) ।

अनुवच वचन वचन अनुवच वचन
(वच १११) ।

अनुवच वचन वचन अनुवच वचन
(वच १११) ।

अनुवच वचन वचन अनुवच वचन
(वच १११) ।

अनुवच वचन वचन अनुवच वचन
(वच १११) ।

अनुवच वचन वचन अनुवच वचन
(वच १११) ।

अनुवच वचन वचन अनुवच वचन
(वच १११) ।

अनुवच वचन वचन अनुवच वचन
(वच १११) ।

अनुवच वचन वचन अनुवच वचन
(वच १११) ।

अनुवच वचन वचन अनुवच वचन
(वच १११) ।

अनुवच वचन वचन अनुवच वचन
(वच १११) ।

अनुवच वचन वचन अनुवच वचन
(वच १११) ।

अनुवच वचन वचन अनुवच वचन
(वच १११) ।

अनुवच वचन वचन अनुवच वचन
(वच १११) ।

अनुमात्र पर [अनु + मंत्र] : अनुमात्र
वाक्य, पूर्व वाक्य के वाक्यपर न परतः

अणोसिय वि [अनुपित] १ जिसने बात न किया हो। २ अन्वयविज्ञान 'अणोसिय' न करे छुआ' (बर्न १: सुप्र १: १४)।

अणोसियर वि [अनोपयतर] वार करने के लिए अन्वय 'प्रतिष्ठा हु एवं पेशेवर' एणो-हं वर एण, मो य बीहं वरिच' (घावा)।

अणोसियर वि [अनपयतृक] निरंहुता स्व-कृती (छाया १: १९)।

अणोसिय वि [अनकहीम] हीनता-रहित (वि १२)।

अण्ण सक [मुन] ध्यान करता जाना। एण्डर (बह)।

अण्ण स [अन्व] हुचर पर (मालू १: ११)।

अण्णिय वि [तिथिक, पृथिक] अन्व-काल का अनुपायी (सम १)। ग्राहण न [महा] १ नाम के समय होनेवाला एक प्रकार का सूत्र विचार। १ पुं गालेनाला, पार्थक्य कथिया (मिह १: १०)। अण्णिय वि [धार्मिक] जिस बर्न बाला (धोव १: १)।

अण्ण न [अण] १ नाम वाला धार्मिक बाल (सुप्र १: ४: २)। २ अन्व पताई (उत्तर २)। ३ अन्व ध्यान (सुप्र १: २)। अण्ण 'गिहिय वि [अन्वयक] बाली अन्व को खोलेनाला (सौम मन् १९: १)। निहि पूनी [विधि] वाक-कथा (सौम)।

अण्ण न [अणस] पाली बल (उत्तर ३)।

अण्ण वि [हे] १ धारोपित। २ अहिष्ठ (वह)।

अण्ण रेको अण्ण = वरुं (बा ३: २४ बन्धु)।

अण्ण पुं [हे] १ अन्व तरण। २ वृत्त बन। ३ वेर (हे १: ३३)।

अण्णिय वि [हे] १ वृत्त (हे १: १६)। २ वृत्त विपरी में वृत्त, अर्ध-वृत्त (बह)।

अण्णजो य [अन्वयस] हुने के हुने परक (उत्तर १)। रेको अण्णजो।

अण्णय्य वि [अन्वयस] बरतर, धारण में (बह)।

अण्णय्य वि [अन्वयस] धीर धीर, अन्व-धन्य।

अण्णय्य वि [अन्वयस] धीर धीर, अन्व-धन्य।

अण्णय्य वि [अन्वयस] धीर धीर, अन्व-धन्य।

अण्णय्य वि [अन्वयस] धीर धीर, अन्व-धन्य।

अण्णय्य वि [अन्वयस] धीर धीर, अन्व-धन्य।

अण्णय्य वि [अन्वयस] धीर धीर, अन्व-धन्य।

अण्णय्य वि [अन्वयस] धीर धीर, अन्व-धन्य।

अण्णय्य वि [अन्वयस] धीर धीर, अन्व-धन्य।

अण्णय्य वि [अन्वयस] धीर धीर, अन्व-धन्य।

अण्णय्य वि [अन्वयस] धीर धीर, अन्व-धन्य।

अण्णय्य वि [अन्वयस] धीर धीर, अन्व-धन्य।

अण्णय्य वि [अन्वयस] धीर धीर, अन्व-धन्य।

अण्णय्य वि [अन्वयस] धीर धीर, अन्व-धन्य।

अण्णय्य वि [अन्वयस] धीर धीर, अन्व-धन्य।

अण्णय्य वि [अन्वयस] धीर धीर, अन्व-धन्य।

अण्णय्य वि [अन्वयस] धीर धीर, अन्व-धन्य।

अण्णय्य वि [अन्वयस] धीर धीर, अन्व-धन्य।

अण्णय्य वि [अन्वयस] धीर धीर, अन्व-धन्य।

अण्णय्य वि [अन्वयस] धीर धीर, अन्व-धन्य।

अण्णय्य वि [अन्वयस] धीर धीर, अन्व-धन्य।

अण्णय्य वि [अन्वयस] धीर धीर, अन्व-धन्य।

अण्णय्य वि [अन्वयस] धीर धीर, अन्व-धन्य।

अण्णय्य वि [अन्वयस] धीर धीर, अन्व-धन्य।

अण्णय्य वि [अन्वयस] धीर धीर, अन्व-धन्य।

अण्णय्य वि [अन्वयस] धीर धीर, अन्व-धन्य।

अण्णय्य वि [अन्वयस] धीर धीर, अन्व-धन्य।

अण्णय्य वि [अन्वयस] धीर धीर, अन्व-धन्य।

अण्णय्य वि [अन्वयस] धीर धीर, अन्व-धन्य।

अण्णय्य वि [अन्वयस] धीर धीर, अन्व-धन्य।

अण्णय्य वि [अन्वयस] धीर धीर, अन्व-धन्य।

अण्णय्य वि [अन्वयस] धीर धीर, अन्व-धन्य।

अण्णय्य वि [अन्वयस] धीर धीर, अन्व-धन्य।

अण्णय्य वि [अन्वयस] धीर धीर, अन्व-धन्य।

अण्णय्य वि [अन्वयस] धीर धीर, अन्व-धन्य।

अण्णय्य वि [अन्वयस] धीर धीर, अन्व-धन्य।

अण्णय्य वि [अन्वयस] धीर धीर, अन्व-धन्य।

अण्णय्य वि [अन्वयस] धीर धीर, अन्व-धन्य।

अण्णय्य वि [अन्वयस] धीर धीर, अन्व-धन्य।

अण्णय्य वि [अन्वयस] धीर धीर, अन्व-धन्य।

अण्णय्य वि [अन्वयस] धीर धीर, अन्व-धन्य।

अण्णय्य वि [अन्वयस] धीर धीर, अन्व-धन्य।

अण्णय्य वि [अन्वयस] धीर धीर, अन्व-धन्य।

अण्णय्य वि [अन्वयस] धीर धीर, अन्व-धन्य।

अण्णय्य वि [अन्वयस] धीर धीर, अन्व-धन्य।

अण्णय्य वि [अन्वयस] धीर धीर, अन्व-धन्य।

अण्णय्य वि [अन्वयस] धीर धीर, अन्व-धन्य।

अण्णय्य वि [अन्वयस] धीर धीर, अन्व-धन्य।

अण्णय्य वि [अन्वयस] धीर धीर, अन्व-धन्य।

अण्णय्य वि [अन्वयस] धीर धीर, अन्व-धन्य।

अण्जा की [रे] १ बेर की की। २ पति की बहिन नर। ३ कुल पिता की बहिन (रे १ २१)।

अण्जु } वि [अङ्ग] धमा, निर्वाण मुचं
अण्जुअ } (प १ गा २८४)।

अण्जुण वि [अण्योग्य] परम्पर, धावस में (वठर)।

अण्जुण वि [अम्यून] परिपूर्ण (ठा ३ २२४)।

अण्ग मक [अनु + इ] अनुसरण करना।
अण्णेर (विसे २३२३)। अण्णेरि (वि ४३१)।
अण्ण अण्णज्जमाग (अण्णम्माल) (विपा १ १)।

अण्णेन मक [अनु + इण्] १ खोजन
हुंका लहरीकत करना। २ बाहना
बाधना। ३ प्रार्थना करना। अण्णेमइ (वि १६३)। वइ अण्णेसंठ, अण्णेसअर्थव,
अण्णेसमाय (महा काठ)।

अण्णसण न [अन्धपण] खोज ठमारा,
लहरीकत (उप १ टी)।

अण्णेसमा की [अण्णेषणा] १ खोज वइ
जीला (आप)। २ प्रार्थना (आपा)। ३ मुख्य
से ही जाती जिहा का वइल (ग १ ४)।

अण्णेसय रि [अण्णेषक] पनेपक (पव ७१)।

अण्णेसि रि [अण्णेषि] खोज करनेवाला
(आपा)।

अण्णसिय रि [अण्णेषित] विनो लहरी
कान की गई हो वइ 'अण्णेषिया सयप्रो
मुने न बह्णि विट्ठ' (महा)।

अण्णेण देतो अण्णुण 'अण्णेषणसयण-
बइं एण्णसयो अण्णसयसंयु' (वेपा १
म्वन २२)।

अण्णेससि रि [रे] अतिरक्त उन्मिपि
(रे १ १३)।

अण्ण म [मुज्] १ बाधा खोजन करना।
२ कानन करना। ३ वइल करना। अण्ण
(रे ४ ११, वइ)। अण्णार (अण्ण)
अण्ण (हुमा)।

अण्ण न [अहन्] निगल, पित 'पूकारणए
कालकमर्षि' (उता)।

अण्णहा } पु [आमव] कम-बन्ध के कारण
अण्णय } द्विपति (पण्ड १ ११, चीप)।

अण्णा की [वृण्णा] लूना व्यास (पा २१)।

अण्णअअ रि [रे] आनन मुना हुमा (रे १ २१)।

अवन्धिय रि [अवर्धिय] १ अतिरक्त मल-
स्त्रिक 'अवर्धियमम एरिअं बसयमई पता'
(महा)। २ जीव-टीक लही लूना हुमा अर
रिसिअ (बन २)। ३ अति मलस्त्रिक
पेन 'विहुरिमी यमहर्षी' (महा)।

अवइ रि [अवट] छोटा किनारा 'अवइम
बातो सो बेव मगो' (वइ १)।

अवण्णाय रि [अवण्णाय] वृण्णा-पहित
निस्पइ (पण्ड २४)।

अवत्त न [अवत्त] मसय मठ बैरमाकी
(उप ३ ८)।

अवत्त रि [अवत्त] नहीं इत हुमा निर्भीक
(हुमा)।

अवत्त रि [अवत्त] अमय, मूडा (आपा)।
अवर रेको अवर (पव १ कम ३; मवि)।
अवत्त पुन [अवत्त] १ लज्जर्षा का अमय
(उप २३)। २ वि लज्ज-पहित (वइ ४)।

अवत्त पु [अवत्त] ध-प्रसंसा निष्ठा (हुमा)।
अवत्तो रेको अवत्ता (पण्ड १)।

अवत्त रि [अवत्त] अवत्त, ध-नास्तविक
मूडा (मुप १ १२; आपा)।

अवत्त रि [अवत्त] लम मादिक लही
'आपो विप कावम उण्णह्वित परमाग
कितीयो।

तापो विप अट्ट-एलेकेलेल वससंठ
दिययाई' (पवइ)।

अवार रि [अवार] ठारने को मस्य (आपा)
१ १ १४)।

अवारि रि [अवारि] ऊपर रेको (मुप
१ ३ २)।

अविट्ट मक [अवि + अट्ट] १ लूब हुमा
हुट काया। २ मक कन्ध के कुल होना।
अविट्टइ (मुप १ १३, ३)।

अविट्ट मक [अवि + अट्ट] १ कर्मजन
करना। २ व्यास होना। 'निट्टइ (मुप १
१३, ४ टी)।

अविट्ट रि [अविट्ट] १ अतिरक्त। २

अनुगत व्याप्त 'अवी गुहाए वमलेखिइ
अविजप्रयो वमइ सुतपाणो' (मुप १ २,
१ १२)।

अवित्तिय न [अवित्तिय] १ लीय (अनुमिप संय)
का अमाव सोर की अनुमिपि। २ वइ नात
विममें लीय की अविपि न हुई हो या उरक
अमाव पड़ा हो (पण्ड १)। सिद्ध रि
['सिद्ध] अवीय काय में जो मुक्त हुमा हो
वइ अविपिअया य मग्गेयो' (गव ३६)।

अविहि यको अविहि।

अवित्तिय रि [अविहि] १ अति-निर्विकर।
२ अवि अविपि अविपि 'अवीयाई बीयो
अवित्तियो' (पवम ८ ११३)।

अनुत्त रि [अनुत्त] अनुगत अमावारण
(पण्ड १ १)।

अनुत्तिय रि [अनुत्तिय] आवापारण अवि
लीय (अवि)।

अव रेको अण्ण = आलम (मुप १, १७४
सम ३७ एरि)। अमपुं ['अम] स्वरूप
की प्रवि वलपि (कम्म २ २३)।

अव रि [आव] वीरित कुन्ति हैपन
(मुप १ १४६; हुमा)।

अव रि [आव] १ गृहीत किया हुमा (आपा
१ १)। २ स्वीकृत, मंजूर किया हुमा (ठा
२ १)। ३ पु आगे पुनि (वइ १)।

अव रि [आव] १ आवापि-मुल-संयम कुली।
२ एण-इ प वविठ बीउपय। ३ अमवित
बाता हुम

'आलमासोए अलपि रेले अवी उ टी अवे।
अण्णोपनहीयो का ये व ट्टा विनोहिइ'
(वव १)। ४ मोग अवि (मुप १ १)।
५ एणल द्विपक (मम १४ ६)। ६ आत
मिमा हुमा (वव १) 'अतपयण्णसेले'
(वठ १२)।

अव रि [आव] कुच का नाथ करनेवाला
मुच का अवापार (वव १४ ६)।

अव प [अव] यही एव स्थान में (नाट)
अव रि [अव] १ अविपि १ अविपि (अवि
११; रि २६१)।

अवत्त देतो अवत्त = मसय (आह २१)।

अवत्त रि [आलम] १ अविपि वई

अप्यधिक्य कि [अप्यधिक्य] नदी श्रद्धि
बाला यत्न वैभवावा (मुद्रा ४१) ।
अप्यधिक्य न [अप्यधिक्य] १ नैव, लघुत्व, धान
(भा २७) । २ प्रमाण रूप से प्रमाणिका (विश्वे
१८४१) ।
अप्यधिक्य सेवो अप्य = धान्यम् (भाषा जत
१ महा ६ ४ ४२२) ।
अप्यधिक्य कि [आत्मीय] स्वकीय विनका मो
स्वयणा पाप्या सुखो कस्मिन् ह्येति मुद्राणं
(सुदि १ ३) ।
अप्यधिक्य कि [आत्मीय] स्वकीय निमी
(पञ्च ३ ११; मुद्रा २७३ ६ २ १३१) ।
अप्यधिक्य घ [स्वयम्] स्वयं, धान निम
मुद्र (पञ्च १) ।
अप्यधिक्य कि [आत्मीय] स्वकीय
अप्यधिक्य कि [स्वीय] (ठा १ धान्यम्) ।
अप्यधिक्य म [स्वयम्] धान मुद्र, निम
निमस्ति प्रमाणो वेव कमलसर्प (६ २
२ ६) ।
अप्यधिक्य सेवो अप्य = धा + ऋम् । अप्यधिक्य
(महा ७१) ।
अप्यधिक्य सेवो अप्यजायुम् = धान्यज
अप्यज (महा १५) ।
अप्यधिक्य कि [अप्यधिक्य] अप्यधिक्य
अप्यधिक्य (स ३३) ।
अप्यधिक्य पुन [अप्यधिक्य] १ प्रयोग नासात्क
मुद्राणं 'अप्यधिक्य' ह्यप्यधिक्य पर्यधिक्य नैव
विश्वेति (सुद्र ३ ४२, भा १२७) । २ कि
भाषा-रहित धान्य-रूप (सुद्र १३ ४३) ।
अप्यधिक्य कि [अप्यधिक्य] १ पत्ता से रहित (सुद्र
(सुद्र ३ ४२) । २ पत्ता से रहित (सुद्र)
(सुद्र १ १४) ।
अप्यधिक्य कि [अप्यधिक्य] प्रत्यय धन्यम् (सुद्र
१३ ४२; मोक्ष ९) । अप्यधिक्य कि [अप्यधिक्य]
बल्यु का विना सत्य स्थि ही (सुद्र ६) धान
उत्पन्न करनेवाला 'अप्यधिक्य' लघुत्व
(निम) ।
अप्यधिक्य की [अप्यधिक्य] नहीं पाता (सुद्र ४
२१३) ।
अप्यधिक्य पुन [अप्यधिक्य] अप्यधिक्य (स
१९७ मुद्रा ११२) ।

अप्यधिक्य न [अप्यधिक्य] १ प्रतीति प्रेन का
यत्न (ठा ४ १) । २ मोक्ष मुद्रा (सुद्र
१ १ २) । ३ नासिक पीड़ा (भाषा) ।
४ धनकार (निम १) ।
अप्यधिक्य कि [अप्यधिक्य] पात्र-रहित,
भाषा-रहित (सुद्र १९ १) ।
अप्यधिक्य न [अप्यधिक्य] अप्यधिक्य
धन्यम् (सुद्र ११२) ।
अप्यधिक्य कि [अप्यधिक्य] १ प्रार्थना करने के
प्रयोग । २ नहीं बाल्य धान्य (मुद्रा १११) ।
अप्यधिक्य न [अप्यधिक्य] १ प्रार्थना । २
प्रतिष्ठा धन्यम् (सुद्र ११२) ।
अप्यधिक्य कि [अप्यधिक्य] १ प्रार्थना ।
२ धनप्रतिष्ठा प्रार्थना (सुद्र ११२) । पत्यय
परिचय कि [प्रार्थना, 'प्रार्थना'] मरणार्थी
मोक्ष को चाहनेवाला 'अप्य' से एव प्रार्थना-
पत्यय 'अप्य' से एव प्रार्थना (सुद्र ३ २ याया
१ ६ कि ७) ।
अप्यधिक्य कि [अप्यधिक्य] प्रार्थना के अनुपपन्न,
विषयप्रार्थना (मुद्रा १ ६) ।
अप्यधिक्य कि [अप्यधिक्य] विषय प्रार्थना हो
बह, प्रीतिकर (मोक्ष ७४४) ।
अप्यधिक्य प्रार्थना न [अप्यधिक्य] प्रार्थना नहीं
करता (सुद्र १२) ।
अप्यधिक्य कि [अप्यधिक्य] प्रार्थना करने के प्रयोग
(विश्वे २९०) ।
अप्यधिक्य न [अप्यधिक्य] १ बनी सवेर । २
कि प्रकाश-रहित काल-रहित 'अप्य' मुद्र
अप्यधिक्य बन्धे (सुद्र ११ ११) ।
अप्यधिक्य कि [अप्यधिक्य] १ धनमर्ष (महा) । २
पुं मासिक से निम नौकर बन्धे (मर्ष १) ।
अप्यधिक्य कि [अप्यधिक्य] पात्र नहीं
किया (मुद्रा ७५) ।
अप्यधिक्य कि [अप्यधिक्य] प्रार्थना-रहित धान
भाषा, उपयोगवाला (सुद्र २, ३ ६ २ २३१
मर्ष १२३) । संज्ञय मुद्रा [संज्ञय] १
प्रार्थना-रहित मुद्रा । २ न. धान्य-रहित
(महा १ १) ।
अप्यधिक्य सेवो अप्यधिक्य (सुद्र ३ ४२, २, ३)
'अप्य' विना विषयप्रार्थना, अप्यधिक्य
उत्पन्नमर्ष ।

पद्यति नारी वह विधि बन्धे धन्यम्
वेवि क्यमप्यमर्ष (सुद्र २) ।
अप्यधिक्य पु [अप्यधिक्य] प्रार्थना का प्रमाण
(निम १) ।
अप्यधिक्य कि [अप्यधिक्य] १ विषय प्रार्थना
हो सके, धन्यम् (पञ्च ७३, २३) । २ विषय
ज्ञान न हो सके (मर्ष १) । ३ प्रमाण से
विषय प्रार्थना न किया जा सके बह (पञ्च
१ ४) ।
अप्यधिक्य सेवो अप्य (ज्वा १ ४ १) ।
अप्यधिक्य कि [अप्यधिक्य] नहीं मोक्ष
मुद्रा अप्यधिक्य (मुद्रा १११) ।
अप्यधिक्य कि [अप्यधिक्य] धन्य,
विषयप्रार्थना (भा १) ।
अप्यधिक्य कि [अप्यधिक्य] महान्, बड़ा (सु
१ १) ।
अप्यधिक्य कि [अप्यधिक्य] धन्य-
रहित (सुद्र १ ४ ४) ।
अप्यधिक्य प्रार्थना न [अप्यधिक्य] धन्य
नहीं करता (मुद्रा १११) ।
अप्यधिक्य कि [अप्यधिक्य] प्रार्थना-रहित (पञ्चा
१ ४) ।
अप्यधिक्य की [अप्यधिक्य] प्रार्थना कर नमान
(मर्ष १) ।
अप्यधिक्य कि [अप्यधिक्य] प्रार्थना-रहित
(पञ्चा २) ।
अप्यधिक्य कि [अप्यधिक्य] प्रार्थना-रहित
के प्रयोग (सुद्र) ।
अप्यधिक्य कि [अप्यधिक्य] १ सन्धे के प्रयोग
न । २ सन्धे करने के प्रयोग (महा ७) ।
अप्यधिक्य कि [अप्यधिक्य] सन्धे (महा)
अप्यधिक्य कि [अप्यधिक्य] धन्य, धन्यम्,
धन्य (ठा ३ १ महा ४ ४) ।
अप्यधिक्य कि [अप्यधिक्य] धन्य सन्धे
बाला 'अप्यधिक्य' विषयप्रार्थना प्रीति धन्यप्रतिष्ठा
पुत्रिका (मुद्रा ४ ४) ।
अप्यधिक्य कि [अप्यधिक्य] निर्जन विजन
(स्वाम) (ठा १७) ।
अप्यधिक्य न [अप्यधिक्य] धन्य नहीं
होता (मुद्रा नहीं धन्य सन्धे मुद्रा (स
३ ३) ।
अप्यधिक्य कि [अप्यधिक्य] १ अप्यधिक्य । २
अप्यधिक्य (मुद्रा १२३) ।

अपौरुषेय } वि [अपौरुषेय] पुण्य से
अपौरुषेय } अकार परित्याग काला, प्रजाप
(शुभा १ २, १४)।

अपौरुषेय वि [अपौरुषेय] पुण्य से नहीं
काम्य पुण्य किय (श १)।

अपेक्षक [अप्य + कृ] निश्चय करना,
निश्चय रूप से जानना। अपेक्ष (विशे
२११)।

अपेक्ष पुं [अपेक्ष] १ निश्चय-काल (विशे
१२९)। २ प्रथमाया मितया (शेष १)।

अप्य देखो अप्य = धाता 'अप्योक्तप्रतिपत्ति
पदमल्ल एवमप्यस्युक्त अपमदु वगुणोत्पत्ति
देव' (शुभा १ १)।

आप्य वि [अप्य] १ बोझा स्तोक (गुण
२८ स्वय १७)। २ अयाव (शेष १
मय १४ १)।

आप्य पुं [आप्य] १ धाता की वृत्त
(शुभा १, १)। २ निज स्व अप्यो
अप्यो नम्यकर्म वरित्वा (शुभा १ २)।

३ देख, शरीर (जट १)। ४ स्वभाव
स्वयम् (आपा)। पाइ वि [पातिम्]।
पाय-हृद्य करनेवाला (जट ११७ टी)।

छर वि [छरम्] स्वरी नम्यकर्म (जट
११ टी)। छ वि [छ] १ धातव
(ह २ १)। २ स्वाधीन (निह १)।

ओइ पुं [ओइसि] आत्मस्व
विशेषरूपेण वृत्तिमो अप्योइति विहितो
(विम)। ओइ वि [ह] धातव-काली
(पर)। इस वि [वरा] लक्षण स्वा-
धीन (पाप पञ्च १७ २२)। बह पुं

[बह] धातव-हृद्य, पापात् (गुर २
१२९ २, ११७)। बाइ वि [बायिन्]
धाता के अतिरिक्त दूसरे पदार्थ को नहीं
जाननेवाला (शेष)।

आप्य पुं [बि] निजा वाय (ह १ १)।
आप्य लृट् [अप्य] धातु करना, फेंक
करना। अप्ये (ह १ ११)। अप्याय
(ताड)। बह अप्यम (गुण २८)।

४ अप्येयम् (गुण ११४, ११६)।
अप्यग्राम देवी अप्यग्राम (वह)।

अप्यग्राम बह [किप्] धातु करना।
अप्यग्राम (वह)।

अप्यग्राम बह [किप्] धातु करना।
अप्यग्राम (वह)।

अप्यग्राम बह [किप्] धातु करना।
अप्यग्राम (वह)।

अप्यग्राम पुन [अप्रतिष्ठान] १ मोक्ष
मुक्ति (आपा)। २ छाती तरक-कुम्भ का
बीजना धातव (मय २ अ २, १)।

अप्यग्राम वि [अप्रतिष्ठित] १ अप्रति-
ष्ठित। २ अप्रतीति शरीर-वृत्ति (आपा
२, १९ १२)। देखो अप्यग्राम।

अप्यग्राम वि [अप्यग्राम] नहीं पकी
हुई फल-फल (स २)।

अप्यग्राम वि [अप्रयोजक] अप्रयोजक,
अनिर्वाहक (ह) (मय १ २२१)।

अप्यग्राम वि [आत्ममरि] अपेक्षे-
स्वाधी (जट २७)।

अप्यग्राम वि [अप्रयम्] निश्चय विवर
(श १)।

अप्यग्राम वि [आरतीय] स्वकीय निजी
(शुभा)।

अप्यग्राम वि [अपक] नहीं पका हुआ कच्चा
(गुण ४११)।

अप्यग्राम देखो अप्य (आपा ४१)।
अप्यग्राम पुं [अप्रयम्] प्रकार का धातव
कर्मकार (निह १)।

अप्यग्राम वि [बि] वरित्वा, कीच कुट
(ह १ २६)।

अप्यग्राम वि [आत्ममरि] धाता का
बाधकार (शुभा १८)।

अप्यग्राम वि [अप्रयम्] धातु दुर्बल (पाप
१)।

अप्यग्राम वि [बि] धातव-वरा स्वाधीन (ह
१ २४)।

अप्यग्राम वि [अप्रतिष्ठार] अकार-वृत्ति
काम्य-वृत्ति (आ ४१)।

अप्यग्राम वि [अप्रतिष्ठार] अतिप्रय
रूप अतिप्रय-वृत्ति (आ)।

अप्यग्राम वि [अप्रतिष्ठार] अतिप्रय
रूप अतिप्रय-वृत्ति (आ)।

अप्यग्राम वि [अप्रतिष्ठार] अतिप्रय
रूप अतिप्रय-वृत्ति (आ)।

अप्यग्राम वि [अप्रतिष्ठार] अतिप्रय
रूप अतिप्रय-वृत्ति (आ)।

अप्यग्राम वि [अप्रतिष्ठार] अतिप्रय
रूप अतिप्रय-वृत्ति (आ)।

अप्यग्राम वि [अप्रतिष्ठार] अतिप्रय
रूप अतिप्रय-वृत्ति (आ)।

अप्यग्राम वि [अप्रतिष्ठार] अतिप्रय
रूप अतिप्रय-वृत्ति (आ)।

अप्यग्राम वि [अप्रतिष्ठार] अतिप्रय
रूप अतिप्रय-वृत्ति (आ)।

अप्यग्राम वि [अप्रतिष्ठार] अतिप्रय
रूप अतिप्रय-वृत्ति (आ)।

अप्यग्राम वि [अप्रतिष्ठार] अतिप्रय
रूप अतिप्रय-वृत्ति (आ)।

अप्यग्राम वि [अप्रतिष्ठार] अतिप्रय
रूप अतिप्रय-वृत्ति (आ)।

अप्यग्राम वि [अप्रतिष्ठार] अतिप्रय
रूप अतिप्रय-वृत्ति (आ)।

अप्यग्राम वि [अप्रतिष्ठार] अतिप्रय
रूप अतिप्रय-वृत्ति (आ)।

अप्यग्राम वि [अप्रतिष्ठार] अतिप्रय
रूप अतिप्रय-वृत्ति (आ)।

अप्यग्राम वि [अप्रतिष्ठार] अतिप्रय
रूप अतिप्रय-वृत्ति (आ)।

अप्यग्राम वि [अप्रतिष्ठार] अतिप्रय
रूप अतिप्रय-वृत्ति (आ)।

अप्यग्राम वि [अप्रतिष्ठार] अतिप्रय
रूप अतिप्रय-वृत्ति (आ)।

अप्यग्राम वि [अप्रतिष्ठार] अतिप्रय
रूप अतिप्रय-वृत्ति (आ)।

अप्यग्राम वि [अप्रतिष्ठार] अतिप्रय
रूप अतिप्रय-वृत्ति (आ)।

अप्यग्राम वि [अप्रतिष्ठार] अतिप्रय
रूप अतिप्रय-वृत्ति (आ)।

अभ्युक्तिव्यय वि [अभ्युक्तिव] सिद्ध (स १४) ।

अभ्युगम पुं [अभ्युगम] उपय उभयति (सुप्र १४) ।

अभ्युगाय वि [अभ्युगय] १ उगत । २ उपग (आसा १ १) । ३ ऊँचा किया हुआ उबला हुआ (वीर) । ४ चारों तरफ फैला हुआ (वीर १८) ।

अभ्युगाय वि [अभ्युगय] ऊँचा उगत (मम १२ ३) ।

अभ्युगय पुं [अभ्युगय] अनुगय (मात ११) ।

अभ्युजय वि [अभ्युजय] १ उगत उपग (आसा १ १) । २ चमार (आसा १ १ गुता २२२) । ३ पुं एकत्री विहार (बम्म १२ टी) । ४ विजयविजय युति (वीर ४) ।

अभ्युद्ध वन [अभ्युद्ध + स्था] १ घाट के लिए बड़ा होना । २ प्रयाग करना । ३ टीका देना । अभ्युद्धे (महा) । बह अभ्युद्धमाण (स ४१९) । संक्ष अभ्युद्धिता (मम) । हेक्ष अभ्युद्धिचय (डा २ १) । ३ अभ्युद्धेयव (अ ८) ।

अभ्युद्धम न [अभ्युद्धान] घाट के लिए बड़ा होना (सि १ ११) ।

अभ्युद्धा केो अभ्युद्ध । अभ्युद्धान केो अभ्युद्ध (स ३१ गुता ३०१) ।

अभ्युद्धित वि [अभ्युद्धित] १ सम्पन्न करने के लिए जो बड़ा हुआ हो (आसा १ ५) । २ उगत टीका अभ्युद्धित मेरे (आसा १ १ पत्रि) ।

अभ्युद्धेयु [अभ्युद्भाय] अभ्युद्धान करने वाला (डा ३ २) ।

अभ्युद्गय वि [अभ्युद्गत] १ उगत ऊँचा (पण्ड १ ४) ।

अभ्युद्गयव बह [अभ्युद्गयव] १ ऊँचा करना हुआ । २ उगेवित करना हुआ (वीर) बहति वीरवतिमभ्युद्गयवीर (सा २१४) ।

अभ्युद्ध भक्त [स्वा] स्नान करना । अभ्युद्ध (सि १ १४) । बह अभ्युद्धत (हुता) ।

अभ्युद्ध वन [अ + वी] १ प्रवर्धित होना । २ उगेवित होना । अभ्युद्ध (सि ४ १२२) । अभ्युद्धय (हुता) । प्रवो अभ्युद्धति (सि ४, २१) ।

अभ्युद्धिचय वि [प्रदीप] १ प्रकाशित । २ उगेवित (सि १२, १८) ।

अभ्युद्ध वि [अभ्युद्ध] उगत 'पुष्पमभ्युद्ध' लक्षितोपायो (महा) ।

अभ्युद्ध १ केो अभ्युद्ध । बह अभ्युद्धत अभ्युद्धा (सि १२ १८) । वी अभ्युद्धिचा (कम) ।

अभ्युद्धय पुं [अभ्युद्धय] १ उगत उपय (ममी २२) 'अभ्युद्धयमभ्युद्धय' लक्षितोपायो (महा) ।

अभ्युद्धय वक्त [अभ्युद्ध + वृ] उद्धार करना । अभ्युद्धयति (ममि) ।

अभ्युद्धयन न [अभ्युद्धयन] १ उद्धार (स ४४१) । २ वि उद्धार-कारक (सि ४ ३१२) ।

अभ्युद्धय केो अभ्युद्गय (आसा १ १) । अभ्युद्गय वि [अभ्युद्गय] अभ्युद्गय विरोध उगत (ममि) ।

अभ्युद्ध न [अभ्युद्ध] १ घाट के लिए बड़ा होना (सि ४ ३१२) । २ वि घाट-कारक (पिक गुता १२) । ३ पुं शास्त्रिय शास्त्र प्रसिद्ध रत्न में से एक ।

विश्वरूपो अभ्युद्धो अभ्युद्धो य वी रत्नो होइ । हरिसिंहात्मनी नक्षत्राण्यो अभ्युद्धो नाम' (समु) ।

अभ्युद्गयवक्त [अभ्युद्ध + वक्त] १ लोकार करना । २ पाठ करना । प्रवो संक्ष अभ्युद्गयवक्तवि (सि १११) ।

अभ्युद्गयवक्तवि वि [अभ्युद्गयवक्त] लोकार करना हुआ 'ठाई ठेपि कुनारें वि ठे मर्न नारता अभ्युद्गयवक्तवि वि विमनयो विरोध' (साक ४ १) ।

अभ्युद्गय पुं [अभ्युद्गय] १ लोकार, मन्त्रीकार (बम १२४, स १७) । २ ठे मर्न शास्त्र-प्रसिद्ध विद्वान्-विरोध (बह १ सुप्र १ २२) ।

अभ्युद्गयमजा वी [अभ्युद्गयमजा] लोकार, मन्त्रीकार (बम ८ १) ।

अभ्युद्गय वि [अभ्युद्गय] १ लोकार (सुप्र १ २४) । २ समीप में गया हुआ (आसा) । अभ्युद्गयवक्त वि [अभ्युद्गयवक्त] अभ्युद्गयवक्त मन्त्रीकार (सा १ १११ २०६) ।

अभ्युद्गयवि वी [अभ्युद्गयवि] अभ्युद्गय विरोध (ममि १ ४) ।

अभ्युद्गय वक्त [अभ्युद्गय + वक्त] लोकार करना । अभ्युद्गयवि (आसा १ १६ टी पत्र २ ३) ।

अभ्युद्गय केो अभ्युद्गय (पत्र) ।

अभ्युद्गयवि वि [अभ्युद्गयवि] सिद्ध वीचा हुआ (सुप्र १ १११) ।

अभ्युद्गय वि [अभ्युद्गय] लोकार के प्रयोग (सिद्ध ११) ।

अभ्युद्गय (पत्र) केो अभ्युद्गय (ममि) ।

अभ्युद्गयवि वि [अभ्युद्गयवि] लोकार के लोकार । वी [१] लोकार से लोकार लोकारवि वी वेदा (स ४ ३) ।

अभ्युद्गय केो अभ्युद्गय (पत्र) ।

अभ्युद्गय वि [अभ्युद्गय] लोकार (पत्रि) । २ इस नाम का एक कोर (ममि १ १) ।

अभ्युद्गय वि [अभ्युद्गय] १ भक्ति मन्त्री करनेवाला (हुता) । २ न. मोक्ष का प्रदाय (बम ७) ।

हुता पुं [१] उद्धार (मातृ पत्रि गुता ११७) । द्विप वि [१] उद्धार (ममि १ १) ।

विमनो उद्धार किया हो बह (वीर २) ।

अभ्युद्गय न [अभ्युद्गय] १ मन का प्रदाय (वीर) । २ लोकार मन्त्री का प्रदाय (पत्रि १ १) । ३ वि अभ्युद्गय विमनो (पत्रि) ।

४ पुं उद्धार लोकार का एक विमनो वीर की मन्त्री विमनो मन्त्री मन्त्री के पाठ कीला वी वी (ममि १ १) । हुता पुं [हुता] केो अभ्युद्गय वीर (पत्रि) ।

व्यपि वि [व्यपि] व्यपि-लक्षण की वीर-वक्त (पत्रि) । वाण न [वाण] वीर-लक्षण (पत्रि २ ४) । 'व्यपि पुं [व्यपि] करिष विमनो वीर-वक्त वीर अभ्युद्गय का नाम (पत्रि १ ११४ पु १७ टी ४) । वीर ७१) । व्यपि न [व्यपि] वीर-लक्षण का वक्त (पत्रि १ १) । वक्त न [वक्त] विमनो

४ नाम, निबन्ध (पृष्ठ १४६) । ३ सम्प-
न्न का एक मेर (ठा २, १) । १ प्रवेश
(सि ८ १३) ।

अभिगमय न [अभिगमन्] उत्तर देखो
(स्वप्न १६, छाया १२) ।

अभिगमि वि [अभिगमन्] १ धार
करते जाता । २ उपदेष्टा । ३ निबन्ध-कारक ।

४ प्रवेश करने जाता ३ स्वीकार करने
वाला प्राप्त करने वाला (पण्य १४) ।

अभिगमय वि [अभिगम] १ प्राप्त । २
सहृद । ३ स्मृति । ४ स्मृति (इह १) ।

३ हात निश्चित (छाया १) ।

अभिगमिष्य न [अभिगमिष्य] निष्पाप
क्रिये (कम्म ४ ३१) ।

अभिगमिष्म सक [अभि + गृप्] यदि
कोन करना वास्तव होता । नन्-
निर्गन्ध (सुप्त १ २) ।

अभिगिण्ठ १ सक [अभि + गृह्] ग्रहण
अभिगिण्ठ १ करण, स्वीकारण । अभि-
गिण्ठ (कम्म) । संज्ञ- अभिमिण्डिया

अभिगिम्भ (सि ५८२ ठा २ १) ।

अभिगिह्वा पुं [अभिगृह्] १ मृष्टिजा नियम ।
(बीज १) । २ बैन साधुओं का भाषार
विशेष (इह १) । ३ प्रपाक्याय (विषय

विशेष) का एक मेर (मात्र १) । ४ नवान-
सिद्ध हठ (ठा २, १) । ३ एक प्रकार का
शारीरिक नियम (बन १) ।

अभिगृहणी की [अभिगृहणी] भाषा का
एक मेर, वास्तव-मुद्रा बचन (सीमा २१) ।

अभिगमिष्य वि [अभिगमिष्य] अभिगम
जाता (ठा २, १) पृष्ठ १) ।

अभिगमिष्य वि [अभिगृहोत्] १ क्रिये
विषय में अभिगृह किया क्या हो वह
(बन पृष्ठ १) । २ न. मनवाएँ निबन्ध
(पण्य ११) ।

अभिगम्य सक [अभि + गृह्] वेप से
जाता । कवच अभिगमिष्यमाण (पय) ।

अभिगमय पुं [अभिगमय] प्रहार, मार-नीट,
द्विजा (पण्य १ १; इह ४) ।

अभिगम्य पुं [अभिगम्य] १ मनुष्य के
रक्षा वास्तव्यविष्ट का एक पुत्र जिसमें बैन

देखा भी बी (संठ १) । २ इस नाम का
एक मुक्कुर पुरय (पठ्य १ १३) । ३
मुकुट-विशेष । (सम २१) ।

अभिगमय देखो अभिगम (स्वप्न २१) ।

अभिगमस न [अभिगमस] इस नाम का
एक बैन साधुओं का मुक्कुर (एक भाषा में
संघटि) (कम्म) ।

अभिगम्य की [अभिगम्य] कुलीनता
वास्तव्य (उत्तर ११) ।

अभिगमय सक [अभि + गृह्] जानना ।
नन् अभिगमयमाण (पाषा) ।

अभिगमय पुं [अभिगमय] पता नन् ग्याहूनी
लिपि (मुक्कुर १ १४) ।

अभिगमय वि [अभिगमय] १ प्रत्यक्ष 'अभि-
वास्तव्य' (उत्तर १४) । २ कुलीन (पठ्य) ।

अभिगम्य सक [अभि + गृह्] १ मन्-
वर्णादि से करा करता । २ कोई कार्य में
लगाता । ३ प्राप्तिल करना । ४ स्मरण

करना याद दिखाना । संज्ञ- अभिगमिष्य,
अभिगमिष्यार्थ, अभिगमिष्या (पृष्ठ २

३, पृष्ठ १ ३ २ भाषा मात्र १ ३) ।

अभिगमय वि [अभिगमय] १ बन्धनियम में
जिसे हुयल न मपाया हो वह (छाया १

१४) । २ वाक्काय, परिच्छ (संघि) ।
३ हुयल से बिना हुया (वेणी १२) ।

अभिगम्य की [अभिगम्य] कोन कोनपता
वास्तव्य (सम ७१ पण्य १ ३) ।

अभिगमिष्य वि [अभिगमिष्य] प्रसक्तपिठ
वास्तव्य (पण्य २८) ।

अभिगमिष्य वि [अभिगमिष्य] प्रसक्तपिठ (बजा
११४) ।

अभिगमय वि [अभिगमय] बर्णित स्था-
पित प्रशंसित (मात्र २) ।

अभिगमय देखो अभिगमय (सुप्त १ २,
१) ।

अभिगमय } देखो अभिगमि
अभिगमय }

अभिगमय सक [अभि + गृह्] १ प्रशंसा
करना, स्तुति करना । २ वास्तव्य बना ।

३ प्रीति करना । ४ कुलीनता । ५ वास्तव्य
हस्त्य करना । ६ बहुरूप करना, धारण करना ।

अभिगमय (स ११३) । नन्- अभिगमय
(बीज छाया १ १ पठ्य २, १३) ।
कवच- अभिगमिष्यमाण (ठा २, छाया
१ १) ।

अभिगमिष्य वि [अभिगमिष्य] जिसका
अभिगमन किया गया हो वह (पृष्ठ ११) ।

अभिगमय न [अभिगमय] १ अभिगमय ।
२ पुं बर्तमान धरसविशेष के बहुरूप

विशेष (सम ४३) । ३ मोक्षोत्तर वाच्यमाणस
(सुप्त १) ।

अभिगमय पुं [अभिगमय] शारीरिक बैठने के
द्वारा हुयल का भाव प्रकाशित करना वास्तव्य

किया (अ ४ ४) ।

अभिगमय वि [अभिगमय] हुयल, गया (बीज
३) ।

अभिगमिष्य न वि [अभिगमिष्य] जिसका
दीर्घ, प्रशंसित (स २०८) ।

अभिगमिष्य सक [अभिगमिष्य] रोकना,
धरकाना । संज्ञ- अभिगमिष्य (सि ३३१ ५२१) ।

अभिगमिष्यारिष्य की [अभिगमिष्यारिष्य]
मित्रा के लिए स्मृति-विशेष (बन ४) ।

अभिगमिष्य की [अभिगमिष्य] भय-
भयन हुई प्रभा (बन १) ।

अभिगमिष्य सक [अभिगमिष्य] जानना
इतिहास यादि द्वारा निश्चित करने से

ज्ञान करना । अभिगमिष्य (विशेष ८१) ।

अभिगमिष्य पुं [अभिगमिष्य] ज्ञान-विशेष
महि-ज्ञान (कम्म ८९) ।

अभिगमिष्य सक [अभिगमिष्य] पीछे
सीटना वास्तव्य (पाषा) ।

अभिगमिष्य वि [अभिगमिष्य] १ स्तुति
कर से निश्चित । २ प्राप्ति (उत्तर १४) ।

अभिगमिष्य पुं [अभिगमिष्य] प्राप्ति, हठ
(छाया १ १२) ।

अभिगमिष्य वि [अभिगमिष्य] १ कथा
पढ़ी (पठ्य १२०) ।

अभिगमिष्य पुं [अभिगमिष्य] बचन मातंग
(पाषा) ।

अभिगमिष्य वि [अभिगमिष्य] १ अभिगमिष्य
मित्र परिधि वाला इकट्ठा (बन १, १) ।

अभिधसुग नि [अभिधसुग] धनितापी
(उ ११० टी) ।

अभिधेयय न [अभिधेय] वहाँ बने रह
कर दूर की चीज देखी जाय वह स्थान
(पृष्ठ २४) ।

अभिधेयय न [अभिधेय] ऊपर देखो
(पृष्ठ २४) ।

अभिध्वय छक [अभि + ध्व] नमस्कार
करना, प्रणाम करना । वह अभिध्वय
(कर्म २१ १) छ 'मे हाथों से अभि
ध्वन्यथा' (लोक १४) अभिध्वयिज
(विश्व २१४१) ।

अभिध्वय जी [अभिध्वय] प्रणाम नम-
स्कार (विश्व ११११) ।

अभिध्वय नि [अभिध्वय] प्रणाम करने
वाला (लोक) ।

अभिध्वय छक [अभि + ध्व] बहना
बहा होना उभर होना । अभिध्वयों 'ध्रुव'
धनिध्वयना (कर्म) । वह अभिध्वयें माण
(बं ७) ।

अभिध्वय देखो अभिध्वय (रुक्) ।

अभिध्वय देखो अभिध्वय (मुक् १
१२ टी) ।

अभिध्वय नि [अभिध्वय] १ बहना
हुआ । २ ध्वज मान । ३ ध्वज वायव्यता
बर्ग (लोक ११११) ।

अभिध्वय छक [अभि + ध्वय] बहना ।
अभिध्वय (मुक् १) । वह अभिध्वयें नाम
(मुक् १) । छ अभिध्वयें (मुक् १) ।

अभिध्वय नि [अभिध्वय] ध्वजयुत
(कर्म) ।

अभिध्वय जी [अभिध्वय] प्राध्वय
(उ २ ४) ।

अभिध्वय छक [अभि + ध्व] समस्त
बना । वह अभिध्वयें (लोक १) ।

अभिध्वय नि [अभिध्वय] प्रणव नम
स्कार (मुक् ११) ।

अभिध्वय दु [अभिध्वय] १ ध्वजों का
पवन । २ प्रविष्ट (ब्रह्म या कर्म) पवन
(धारा) ।

अभिध्वय छक [अभि + ध्वय] प्रणाम
अभिध्वय करण नमस्कार करना । अभि-

ध्वय (गहा) । धनिध्वयें (विश्व १ १४) ।
वह अभिध्वयमाय (धारा) । छ अभि
ध्वयिज (मुक् ११) ।

अभिध्वय देखो अभिध्वय (धारा) ।
अभिध्वय न [अभिध्वय] प्रणाम नम-
स्कार (धारा वरु) ।

अभिध्वय न [अभिध्वय] दुपद,
मुकार (लोक २) ।

अभिध्वय दु [अभिध्वय] प्रध्वय,
लघव-ध्वय (विश्व ११११) ।

अभिध्वय दु [अभिध्वय] ध्वजों का ध्वज
(धारा ११११ वि २०४) ।

अभिध्वय जी [अभिध्वय] ध्वज, ध्वज (पृ
४) ।

अभिध्वय देखो अभिध्वय । छ अभि-
ध्वय (मुक् १) ।

अभिध्वय जी [अभिध्वय] १ ध्वज,
बहना । २ उभरना पवन का ध्वज
(बं ७) ।

अभिध्वय देखो अभिध्वय । छ अभि-
ध्वय (मुक् १) ।

अभिध्वय जी [अभिध्वय] ध्वजों की ध्वज
(मुक् १, २, ११) ।

अभिध्वय न [अभिध्वय] देखो अभि-
ध्वय (मुक् १ १) ।

अभिध्वय न [अभिध्वय] देखो अभि-
ध्वय (मुक् १ १) ।

अभिध्वय देखो अभिध्वय (विश्व
११११) ।

अभिध्वय न [अभिध्वय] ध्वज, ध्वज
(ध्वज ४१) ।

अभिध्वय जी [अभिध्वय] ध्वज ध्वज
(मुक् १ १ १४) ।

अभिध्वय नि [अभिध्वय] ध्वज ध्वज
बना । २ ध्वज, ध्वज 'उभर' ध्वज
ध्वजों का ध्वज 'ध्वज' (ध्वज ध्वज
१ १) ।

अभिध्वय दु [अभिध्वय] ध्वज ध्वज
(ध्वज १ ४) ।

अभिध्वय नि [अभिध्वय] ध्वज
(ध्वज) ।

अभिध्वय छक [अभिध्वय] ध्वज
करना, ध्वज करना । वह अभिध्वयमाय
(लोक १) ।

अभिध्वय छक [अभिध्वय] ध्वज
करना, ध्वज करना । वह अभिध्वयमाय
(लोक १) ।

अभिध्वय न [अभिध्वय] ध्वज-
ध्वज ध्वज (ध्वज) ।

अभिध्वय दु [अभिध्वय] ध्वज ध्वज
(उ २११ टी) ।

अभिध्वय नि [अभिध्वय] ध्वज ध्वज
(ध्वज) ।

अभिध्वय नि [अभिध्वय] ध्वज ध्वज
(ध्वज) ।

अभिध्वय नि [अभिध्वय] ध्वज ध्वज
(ध्वज) ।

अभिध्वय नि [अभिध्वय] ध्वज ध्वज
(ध्वज) ।

अभिध्वय नि [अभिध्वय] ध्वज ध्वज
(ध्वज) ।

अभिध्वय नि [अभिध्वय] ध्वज ध्वज
(ध्वज) ।

अभिध्वय नि [अभिध्वय] ध्वज ध्वज
(ध्वज) ।

अभिध्वय नि [अभिध्वय] ध्वज ध्वज
(ध्वज) ।

अभिध्वय नि [अभिध्वय] ध्वज ध्वज
(ध्वज) ।

अभिध्वय नि [अभिध्वय] ध्वज ध्वज
(ध्वज) ।

अभिध्वय नि [अभिध्वय] ध्वज ध्वज
(ध्वज) ।

अभिध्वय नि [अभिध्वय] ध्वज ध्वज
(ध्वज) ।

अभिध्वय नि [अभिध्वय] ध्वज ध्वज
(ध्वज) ।

अभिध्वय नि [अभिध्वय] ध्वज ध्वज
(ध्वज) ।

अभिध्वय नि [अभिध्वय] ध्वज ध्वज
(ध्वज) ।

अभिध्वय नि [अभिध्वय] ध्वज ध्वज
(ध्वज) ।

अभिध्वय नि [अभिध्वय] ध्वज ध्वज
(ध्वज) ।

अभिध्वय नि [अभिध्वय] ध्वज ध्वज
(ध्वज) ।

अमरं तु [अमर] १ रेव रेवण (पाम) । २
मुक्त माता (भोर) । ३ नवरात्रि अमरमेव
का एक पुत्र (पत्र) । ४ अमरवीर्य नामक
शरीर शिरोर के पुनर्जन्य का नाम (टी
२१) । ५ मि मरुतपितृ 'पाणिनि अमरमेव
बीजा अमरमेव' अमर' (पणि) । कोट्यु भी
[कट्यु] एक मातृ का नाम (अ १५५
टी) । कोट्यु तु [कट्यु] एक राजकुमार
(रुच) । गिरि तु [गिरि] मेव पर्वत (पठन
१३ १७) । गह न [गह] स्वर्ग (अ
७२६ टी) । अमर्यु न [अमर्यु] १ हरि
चक्रान्त कृत । २ एक प्रकार का सुपुष्पित कण्ट
(पाम) । ठर तु [ठर] कर्मवृत्त (गुण
५४) । ठर तु [ठर] एक श्रेष्ठ-गुण का
नाम (वाम) । नाह तु [नाह] एक (पञ्च
१ १ ७२) । पुर न [पुर] स्वर्ग (पञ्च
२ १४) । मुरी भी [मुरी] स्वर्गपुरी अम
राष्ट्री (अ ५ १ २) । पम तु [पम] १
बाल-श्रीम का एक राजा (पञ्च १ १६) ।
वह तु [वह] एक (पञ्च १ १ ७) ।
पुर १ १) । वह भी [वह] रेवी
(महा) । सारि तु [सारि] अमर' एक
(कि १५१६ टी) । सेन तु [सेन] १
एक राजा का नाम (रुच) । २ एक राज
कुमार का नाम (राणा १) । अमर नि
[अमर] स्वर्ग 'अमरमरपत्राण' (अ
७२६ टी गुण १३) । अरु भी [अरु]
१ रेव-नवरी स्वर्ग-पुरी (पाम) । २ मरु
वीर्य की एक लवरी राजा शीरोर की
राजधानी (अ १ १ टी) ।

अमरगता भी [अमरगता] रेवी (भा
२७) ।

अमरिन् तु [अमरेन्] रेवी का राजा इन्द्र
(रुच) ।

अमरिन् तु [अमरिन्] १ पर्वतपुत्रा (इ २
१ ३) । २ कटाक्ष (उप १४) । ३ अमर
पुत्रा (पठ १ १ पाम) ।

अमरिन् न [अमरिन्] १—३ अमर
मेव । ४ मि पर्वतपुत्र; रेवी (पठ १ ४) ।
५ अमरिन् अमरशील (अ ११३) ।

अमरिन् न [अमरिन्] अमरी अमरी
(अ ११३) ।

अमरिन् न [अमरिन्] १ मरुती मरु-
द्विपु (पाम व ११२) ।

अमरी भी [अमरी] रेवी (कुमा) ।

अमरीन् तु [अमरीन्] एक (विष ११) ।

अमरु नि [अमरु] १ निर्जन स्थान (अ
गुण १४) । २ तु मगरु अमरमेव के एक
पुत्र का नाम (पत्र) ।

अमरु भी [अमरु] एक को एक अमर
महिषी का नाम अमरु-महिषी (अ ८) ।

अमरुत्ता रेवी अमरुत्ता (रुच ११
२) ।

अमरुत्ता नि [अमरुत्ता] निष्कण्ट, अमर
अमरुत्ता (पाम अ १ ३ ५७) ।

अमरुत्ता रेवी अमरुत्ता (अम) ।

अमरुत्ता नि [अमरुत्ता] १ मरुती मरु
(अम) । २ अमरुत्ता 'अमरुत्ता' अमरुत्ता-
अमरुत्ता (अम १ टी) ।

अमरुत्ता नि [अमरुत्ता] गता लयाया हृषा,
'अमरुत्ता' अमरुत्ता (अम १२) ।

अमरुत्ता नि [अमरुत्ता] निष्कण्ट, अमर (अम) ।

अमरुत्ता रेवी अमरुत्ता (अम) ।

अमरुत्ता नि [अमरुत्ता] निष्कण्ट-मरुत्ता अमरुत्ता
अमरुत्ता (अम १२) । अमरुत्ता तु [अमरुत्ता]
अमरुत्ता की लयाया (गुण १ २) । अमरुत्ता तु
[अमरुत्ता] अमरुत्ता-मरुत्ता का अमरुत्ता 'अमरुत्ता'
अमरुत्ता (अम १ २) ।

अमरुत्ता नि [अमरुत्ता] अमरुत्ता-मरुत्ता का अमरुत्ता 'अमरुत्ता'
अमरुत्ता (अम १ २) ।

अमरुत्ता नि [अमरुत्ता] अमरुत्ता-मरुत्ता का अमरुत्ता 'अमरुत्ता'
अमरुत्ता (अम १ २) ।

अमरुत्ता नि [अमरुत्ता] अमरुत्ता-मरुत्ता का अमरुत्ता 'अमरुत्ता'
अमरुत्ता (अम १ २) ।

अमरुत्ता नि [अमरुत्ता] अमरुत्ता-मरुत्ता का अमरुत्ता 'अमरुत्ता'
अमरुत्ता (अम १ २) ।

अमरुत्ता नि [अमरुत्ता] अमरुत्ता-मरुत्ता का अमरुत्ता 'अमरुत्ता'
अमरुत्ता (अम १ २) ।

अमरुत्ता नि [अमरुत्ता] अमरुत्ता-मरुत्ता का अमरुत्ता 'अमरुत्ता'
अमरुत्ता (अम १ २) ।

अमरुत्ता नि [अमरुत्ता] अमरुत्ता-मरुत्ता का अमरुत्ता 'अमरुत्ता'
अमरुत्ता (अम १ २) ।

अमरुत्ता नि [अमरुत्ता] अमरुत्ता-मरुत्ता का अमरुत्ता 'अमरुत्ता'
अमरुत्ता (अम १ २) ।

अमरुत्ता नि [अमरुत्ता] अमरुत्ता-मरुत्ता का अमरुत्ता 'अमरुत्ता'
अमरुत्ता (अम १ २) ।

अमरुत्ता नि [अमरुत्ता] अमरुत्ता-मरुत्ता का अमरुत्ता 'अमरुत्ता'
अमरुत्ता (अम १ २) ।

अमरुत्ता नि [अमरुत्ता] अमरुत्ता-मरुत्ता का अमरुत्ता 'अमरुत्ता'
अमरुत्ता (अम १ २) ।

अमरुत्ता नि [अमरुत्ता] अमरुत्ता-मरुत्ता का अमरुत्ता 'अमरुत्ता'
अमरुत्ता (अम १ २) ।

अमरुत्ता नि [अमरुत्ता] अमरुत्ता-मरुत्ता का अमरुत्ता 'अमरुत्ता'
अमरुत्ता (अम १ २) ।

अमरुत्ता नि [अमरुत्ता] अमरुत्ता-मरुत्ता का अमरुत्ता 'अमरुत्ता'
अमरुत्ता (अम १ २) ।

अमरुत्ता नि [अमरुत्ता] अमरुत्ता-मरुत्ता का अमरुत्ता 'अमरुत्ता'
अमरुत्ता (अम १ २) ।

अमरुत्ता नि [अमरुत्ता] अमरुत्ता-मरुत्ता का अमरुत्ता 'अमरुत्ता'
अमरुत्ता (अम १ २) ।

अमरुत्ता नि [अमरुत्ता] अमरुत्ता-मरुत्ता का अमरुत्ता 'अमरुत्ता'
अमरुत्ता (अम १ २) ।

अमरुत्ता नि [अमरुत्ता] अमरुत्ता-मरुत्ता का अमरुत्ता 'अमरुत्ता'
अमरुत्ता (अम १ २) ।

अमरुत्ता नि [अमरुत्ता] अमरुत्ता-मरुत्ता का अमरुत्ता 'अमरुत्ता'
अमरुत्ता (अम १ २) ।

अमरुत्ता नि [अमरुत्ता] अमरुत्ता-मरुत्ता का अमरुत्ता 'अमरुत्ता'
अमरुत्ता (अम १ २) ।

अमरुत्ता नि [अमरुत्ता] अमरुत्ता-मरुत्ता का अमरुत्ता 'अमरुत्ता'
अमरुत्ता (अम १ २) ।

अमरुत्ता नि [अमरुत्ता] अमरुत्ता-मरुत्ता का अमरुत्ता 'अमरुत्ता'
अमरुत्ता (अम १ २) ।

अमरुत्ता नि [अमरुत्ता] अमरुत्ता-मरुत्ता का अमरुत्ता 'अमरुत्ता'
अमरुत्ता (अम १ २) ।

अथ न [अयस] सोहा सोह (घोष १२)।
आगर पुं [आहर] १ सोहे की जान
(विष्णु ५)। २ सोह का कारण (आ ८)।
कंड कटन पुं [काम] सोह-मुलक
(धामन)। 'कडिस्त न [इ] कडिस्त'
नट्ट (घोष)। कुंही की [कुण्डी] सोहे
का अन्तर्निवेश (विष्णु १५)। कट्टय पुं
[काटक] सोहे का दूर सोहे का मोला
घोट्ट घण्टोठ्ठया ध्व बट्ट (उवा)। गालस्य
पुं [गालक] सोहे का मोला (आ ११)।
हकी की [हकी] सोहे की बकरी या कर
पुन जिमन बाल करी धारि सिताया बहा
है (हे २ ७)। पाय न [पाय] सोहे का
आसन। सद्यगा की [सद्यगा] सोह की
छात्राई (आ २११ ई)।
अब नक [अय] १ बमन बगल जला।
२ प्रात बगल। ३ बागला। बट्ट अबमाय
(मन ११)।
अरह लक [हृ] १ लीक। २ मोला
बाल बगल। ३ रेता बगल। अरहद (हे
४ १८७)।
अर्यक्षिह रि [कर्पिन्] कर्पण्यस वीच्ये-
बाला (दुमा)।
अर्यह पुं [अराण्ड] १ धनुजिन सम
(महा)। २ अरमाण्ड हट्ट (पत्र १ १६४)
हे ४४ पत्र)। ३ रिनि दलमरिह
घट्ट (आ)।
अर्यन बट्ट [आयन्] बाग हुवा प्रवेश
बगला हुमा (घामन)।
अर्यन रि [अर्यन्] घनारणीय (बप
२ ४२)।
अर्यपरि रि [अर्यपरि] नदी कोलनेरागा
लोही (वि १११ १११)।
अर्यपुस पुं [अर्यपुस] बीछाक का एक
स्थल (आ २)।
अर्यन पुं [आरग] रत्ता बोज। सुह पुं
[सुह] १ रन बाज का एक डी। २ डिन-
रिरेन का सिगाही (रत्)।
अर्यमधि रि [इर्यमधि] कागुल बाबै की
बनबनव बरोलाला (घामा)।
अर्यरह पुं [अर्यरह] न बगल (दुम
१)।

अयक } पुं [इ] बाल बगल (हे १ १)।
अयाग }
अयगर पुं [अयगर] घनर, मोड छप
(पत्र १ १ पत्र १३ १४)।
अयह पुं [इ] अयह बूज हुमा (हे १ १५)।
अयण न [अतन] सव होना निरुधर
होना (विने १४५५)।
अयन न [अयन] १ समन। २ प्राति साम
(विने १)। ३ बाल भिन्नि (विने ८१)।
४ बूह बहिद, 'अरियाय' (घ ४१४)। ५
वि प्रात प्रात बरोलाला (विने ८१)।
६ पुन बर्य का घामा घाय, अर्यमै पूर्व
कोरुन है उत्तर में का उत्तर से बहिण में
बाग है (आ २ ४)।
'एके घमले विष्णु की रघुलोमी
होति वीहो।
विष्णुलोमी घमले ह्वे ह्वे बट्ट (विने
(आ ४४५)।
अयन न [अयन] १ भलर। २ पुनक
भोजन (घ ११) उत्तर ७)।
अयणु रि [अय] घनन, पुन (दुर १
११६)।
अयणु रि [अयणु] लुन मोड महुन
(रत्)।
अयर्पिज रि [इ] पुन, काविह (हे १
४४)।
अयर रि [अय] बूजस्कारिह 'अयपर
अय' (पत्र ४४)।
अयर नून [अयर] १ घाय, लुन (हे
२)। २ समन का मान-विरोध कावेयन
(मन ११ १४; बग ४१)। ३ रि लने के
घराय (बूह १)। ४ घनमय घराय (विष्णु
१)। ५ नाल बीमार (बूह १)।
अयपरम रि [अयपरम] १ बर चीर
मगल ग गिल (बर २)। २ न बुनि मोड
(पत्र ८ ११७)।
अयस रेनी अयस = घन (घाम बग-
ल १ १ २ पत्र १ पत्र १ ४ पत्र
नन मन १६)।
अयस रेनी अयस (पत्र १२ १५६)।
अयस रेनी अयस (पत्र ११ २१
११५) का १७)।

अयसि रि [अयसि] घननी घरो-
रिह कीति रूप (पत्र ४)।
अयसि } की [अयस] बाक-विरोध घननी
अयसी } वीरी (मन ४ ७ लामा १ १)।
अया की [अया] १ बकरी। २ माय,
बहिघा। ३ पक्षि नुन (हे १ १२)
पत्र)। किरागिज पुं [कुरामीय] मान-
विरोध कै बकरी के पने पर घनारी कुरी
पक्षी है सय माकि घनारा निरी नय
का होना (घामा)। पाळ पुं [पाळ]
घानीर, बकरी बरोलाला (घ २१)। 'बम
पु [पत्र] बकरी का बाग (अन १६१)।
अयागर रेनी अय आगर (अ ८)।
अयाण न [अयान] बाल का घनर (वत
११)।
अयाण रि [अय अयान] घनन घननी
पुन (घोष ७४ पत्र २२ ८१) का १७५
हे ७ ७१)।
अयागम रि [अयागम] उत्तर रेनी (बाप
मन)।
अयाजत रेनी अयाजत (घोष ११)।
अयाभमाय रेनी अयाभमाय (नन १६)।
अयायिप रेनी अयायिप (उप ७२५ टी)।
अयायुप रेनी अयायुप (दुर १ १६५ मुवा
२४३)।
अयार पुं [अयार] 'य' घनर (विने ४७५)।
अयाळ पुं [अयाळ] अयागम समन घनुजिन
बन (पत्र २२ १)।
अयासि पुं [इ] बुनि, विषाण्डन विरव (हे
१ ११)।
अवाधिय रि [अवाधिय] घामयिन
घनारणीय 'पत्र ४४ पत्र १ ह्वनवै
घमलिमा विरव (रत्)।
अवि रेनी अय = घयि (हे २, २१७)।
अयुजबव की [इ] बहिद-नुनति नरीय,
कुपिह (बू)।
अयोयप रेनी अयोयप (मन १६)।
अय्याधन (टी) पुं [आयार्धन] घाय
रिनुयल (दुमा)।
अयुज (वा) रेनी अयज (हे ४ १६२)।
अर पुं [अर] १ बुनी बहिदे के लीक
बट्ट। २ ब्यायुन विरोध चीर लामा

बनवनी रमा भूमिगे घर महर्षि वास
बणणी घर उन्हा (भाष २) सम ५३ उत
२८) । ३ समय का एक परिमाण कालक
का बाह्यो हिसा । (सी २१) ।

अर पुं [अर] १ किरण । या ३४३ से १
१०) । २ हस्त हाथ (से १ २८) । ३
शुभक बुद्धी (से १ २८) ।

अरह की [अरह] अरं महा (भाषा २
११ १) ।

अरह की [अरह] १ बेपनी । (भाषा भाषा
उत्तर) । २ अरं न [अरं] अरह का हनुमंत
कर्मिरेय (अ १) । परिसह, परिसह पुं
[परिसह परासह] अरह को धरन
करना (पं ८) । मोहगिअ न [साह
नीय] अरह का धराक कर्मिरेय (अरं
१) । ३ अर की [रह] मुक्त-मुक्त (हा १) ।

अरं न के अरं (से १ २१) ।

अरं न पुं [अरं] अरं न न (हा
४ ४) ।

अरं न के अरं (से १ ४४) ।

अरं न की [अरं] अरं न के अरं
(भाष) ।

अरं न के अरं (पं ४ ४ ४ ४) ।

अरं न के अरं (पं ४ ४ ४ ४) ।

अरं न के अरं (पं ४ ४ ४ ४) ।

अरं न के अरं (पं ४ ४ ४ ४) ।

अरं न के अरं (पं ४ ४ ४ ४) ।

अरं न के अरं (पं ४ ४ ४ ४) ।

अरं न के अरं (पं ४ ४ ४ ४) ।

अरं न के अरं (पं ४ ४ ४ ४) ।

अरं न के अरं (पं ४ ४ ४ ४) ।

अरं न के अरं (पं ४ ४ ४ ४) ।

विरोध (सम ११) । साण पुं [अरं]
बंसी कुला (कुला) ।

अरं न के अरं (पं ४ ४ ४ ४) ।

अरं न के अरं (पं ४ ४ ४ ४) ।

अरं न के अरं (पं ४ ४ ४ ४) ।

अरं न के अरं (पं ४ ४ ४ ४) ।

अरं न के अरं (पं ४ ४ ४ ४) ।

अरं न के अरं (पं ४ ४ ४ ४) ।

अरं न के अरं (पं ४ ४ ४ ४) ।

अरं न के अरं (पं ४ ४ ४ ४) ।

अरं न के अरं (पं ४ ४ ४ ४) ।

अरं न के अरं (पं ४ ४ ४ ४) ।

अरं न के अरं (पं ४ ४ ४ ४) ।

अरं न के अरं (पं ४ ४ ४ ४) ।

अरं न के अरं (पं ४ ४ ४ ४) ।

अरं न के अरं (पं ४ ४ ४ ४) ।

अरं न के अरं (पं ४ ४ ४ ४) ।

अरं न के अरं (पं ४ ४ ४ ४) ।

अरं न के अरं (पं ४ ४ ४ ४) ।

अरं न के अरं (पं ४ ४ ४ ४) ।

अरं न के अरं (पं ४ ४ ४ ४) ।

अरं न के अरं (पं ४ ४ ४ ४) ।

अरं न [अरं] अरं न के अरं (पं ४ ४ ४ ४) ।

अरं न [अरं] अरं न के अरं (पं ४ ४ ४ ४) ।

अरं न [अरं] अरं न के अरं (पं ४ ४ ४ ४) ।

अरं न [अरं] अरं न के अरं (पं ४ ४ ४ ४) ।

अरं न [अरं] अरं न के अरं (पं ४ ४ ४ ४) ।

अरं न [अरं] अरं न के अरं (पं ४ ४ ४ ४) ।

अरं न [अरं] अरं न के अरं (पं ४ ४ ४ ४) ।

अरं न [अरं] अरं न के अरं (पं ४ ४ ४ ४) ।

अरं न [अरं] अरं न के अरं (पं ४ ४ ४ ४) ।

अरं न [अरं] अरं न के अरं (पं ४ ४ ४ ४) ।

अरं न [अरं] अरं न के अरं (पं ४ ४ ४ ४) ।

अरं न [अरं] अरं न के अरं (पं ४ ४ ४ ४) ।

अरं न [अरं] अरं न के अरं (पं ४ ४ ४ ४) ।

अरं न [अरं] अरं न के अरं (पं ४ ४ ४ ४) ।

अरं न [अरं] अरं न के अरं (पं ४ ४ ४ ४) ।

अरं न [अरं] अरं न के अरं (पं ४ ४ ४ ४) ।

अरं न [अरं] अरं न के अरं (पं ४ ४ ४ ४) ।

अरं न [अरं] अरं न के अरं (पं ४ ४ ४ ४) ।

अरं न [अरं] अरं न के अरं (पं ४ ४ ४ ४) ।

अरं न [अरं] अरं न के अरं (पं ४ ४ ४ ४) ।

अरं न [अरं] अरं न के अरं (पं ४ ४ ४ ४) ।

रुद्र-काम कोष लोम मोह, मर माधव्य (सूय ११४)। वमज नि [वमज] १ पिपु सिता रुद्र। २ पुं इतराजुं रंश के एक राजा का नाम (पद्म ५ ७)। ३ एक शक्ति मुनि को भी वाम वमजलाय के पुत्रकाम के पुत्र थे (पद्म २ ७)। वमयी की [वमयी] विद्या विरोध (पद्म ७ १४२)। 'विद्वंसी की [विद्वंसी] पिपु का नाश करनेवाली एक विद्या (पद्म ७ १४)। सुतास पुं [सुतास] राजास्य में उत्पन्न लक्ष्मी का एक राजा (पद्म ५ २१३)। इति नि [इति] १ पिपु-विनाशक। २ पुं विनये (पद्म ५)।

वरिष्ठिनि पुं [वे] व्याज, रोर (१२ २४)।

वरिष्ठय पुं [वरिष्ठय] १ भवभाव अत्यन्त का एक पुत्र। २ म, मर-विरोध (पद्म ५ १८, इति मुर ५ ११)।

वरिष्ठ पुं [वरिष्ठ] १ वृद्ध-विरोध (पद्म १)। २ पद्मार्थे शीघ्रकर का एक मन्त्रकर (पद्म १२२)। ३ पुं एक वैश्वनाथ (वैश्व १३३)। ४ म, शोक-विरोध को मातृव्य शोक की राधा है (अ ७)। ५ राज की एक बाटि (अ ४ ४ गुण ६)। ६ राज-विरोध (अ ४ ४ गुण १० अ ४ ४)। ७ वरिष्ठ-पुत्रक जगत् (पद्म)। 'निमि' निमि पुं [निमि] वर्तमान काम के बाधक विरोध (पद्म १७ अ ४, नय पठि)।

वरिष्ठा की [वरिष्ठा] कृष्ण नामक विषय की राजवाली (अ २ ४)।

वरिष्ठ न [वरिष्ठ] पद्मवार, कृष्ण, नाम की वीक्षे का बाध विरोध नाम वरिष्ठ-वाले कुमारी वाली है (नमि १३२)।

वरिष्ठो म [वरिष्ठो] पद्मवार कृष्ण (१२ २१७)।

वरिष्ठ केो वरस (छाया १ ११)।

वरिष्ठि १ नि [वरिष्ठि] वरिष्ठ-विरोध (पद्म १०)।

वरिष्ठ नि [वरिष्ठ] १ योग कायक (गुण २१३ अ ४)। २ पुं विनये (पद्म)।

वरिष्ठ एक [वरिष्ठ] १ योग होता। २ गुण के योग होता। ३ गुण करना। वरिष्ठ (अ)। वरिष्ठि (अ)।

वरिष्ठ केो वरस-वर्ष (१२ ११३)। वरिष्ठ [वरिष्ठ] १ वरिष्ठ-विरोध का नाम (कय)।

वरिष्ठि केो वरस-वर्ष (१२ ११३)।

वरिष्ठ केो वरस-वर्ष (१२ ११३)। वरिष्ठ [वरिष्ठ] १ वरिष्ठ-विरोध (अ ४ ४)। वरिष्ठ [वरिष्ठ] १ वरिष्ठ-विरोध (अ ४ ४)। वरिष्ठ [वरिष्ठ] १ वरिष्ठ-विरोध (अ ४ ४)।

वरिष्ठ केो वरस-वर्ष (१२ ११३)।

वरिष्ठ नि [वरिष्ठ] १ वरिष्ठ-विरोध (अ ४ ४)।

वरिष्ठ केो वरस-वर्ष (१२ ११३)।

वरिष्ठ नि [वरिष्ठ] १ वरिष्ठ-विरोध (अ ४ ४)।

वरिष्ठ पुं [वरिष्ठ] १ वरिष्ठ-विरोध (अ ४ ४)।

वरिष्ठ नि [वरिष्ठ] १ वरिष्ठ-विरोध (अ ४ ४)।

वरिष्ठ केो वरस-वर्ष (१२ ११३)।

वरिष्ठ नि [वरिष्ठ] १ वरिष्ठ-विरोध (अ ४ ४)।

वरिष्ठ केो वरस-वर्ष (१२ ११३)।

वरिष्ठ नि [वरिष्ठ] १ वरिष्ठ-विरोध (अ ४ ४)।

वरिष्ठ केो वरस-वर्ष (१२ ११३)।

वरिष्ठ नि [वरिष्ठ] १ वरिष्ठ-विरोध (अ ४ ४)।

वरिष्ठ केो वरस-वर्ष (१२ ११३)।

वरिष्ठ नि [वरिष्ठ] १ वरिष्ठ-विरोध (अ ४ ४)।

वरिष्ठ [वरिष्ठ] १ वरिष्ठ-विरोध। २ वरिष्ठ-विरोध (गुण १६)। वरिष्ठ [वरिष्ठ] १ वरिष्ठ-विरोध। २ वरिष्ठ-विरोध (गुण १६)। सिद्ध न [वरिष्ठ] एक वैश्वनाथ (अ)। म न [वरिष्ठ] वैश्वनाथ-विरोध (अ)।

वरिष्ठ न [वरिष्ठ] कय पद्म (१२ ८)।

वरिष्ठ पुं [वरिष्ठ] १ एक वैश्वनाथ (वैश्व १३३)। पद्म पुं [वरिष्ठ] १ वरिष्ठ-विरोध (गुण २)।

वरिष्ठि पुं [वरिष्ठि] १ वरिष्ठ-विरोध (अ ४ ४)।

वरिष्ठ केो वरस-वर्ष (१२ ११३)।

वरिष्ठ नि [वरिष्ठ] १ वरिष्ठ-विरोध (अ ४ ४)।

वरिष्ठ केो वरस-वर्ष (१२ ११३)।

वरिष्ठ नि [वरिष्ठ] १ वरिष्ठ-विरोध (अ ४ ४)।

वरिष्ठ केो वरस-वर्ष (१२ ११३)।

वरिष्ठ नि [वरिष्ठ] १ वरिष्ठ-विरोध (अ ४ ४)।

वरिष्ठ केो वरस-वर्ष (१२ ११३)।

वरिष्ठ नि [वरिष्ठ] १ वरिष्ठ-विरोध (अ ४ ४)।

वरिष्ठ केो वरस-वर्ष (१२ ११३)।

वरिष्ठ नि [वरिष्ठ] १ वरिष्ठ-विरोध (अ ४ ४)।

वरिष्ठ केो वरस-वर्ष (१२ ११३)।

वरिष्ठ नि [वरिष्ठ] १ वरिष्ठ-विरोध (अ ४ ४)।

अरुचि वि [अरुचिन्] ऊपर देखो (छ १
१ भाषा पश्य १)।
अरुचि [अरु] १-२ संभाषण और रचि-
कर्मह का मुक्त प्रत्यय (ह २२ १ पश्य)।
अरुचि [अरु] इन धर्मों का मुक्त प्रत्यय—
१ भाषा २ विलस्य आरुचय ३ परिहास
रुहा (सिंह १८ ५७)।
अरोच्य एक [अरु + अस्] उन्माद वाता,
विकसित होता। अरोच्य (ह ४ २ २;
हुमा)।
अरोच्य पु [अराचक] रोम-विरोध घस की
प्रतिष्ठा (मा २२)।
अरोचि वि [अराचिन्] घसिच वाता रचि
रहित 'अरोच्य' अर्थ कहिए 'जितानो' (मोय
७)।
अरोमा वि [अरोमा] रोमरहित (मा १८
१)। या भी [रा] आरोम्य मोघपता
(स ७२८)।
अरागि वि [अरोगिन्] मोघरोम रोमरहित।
या भी [रा] आरोम्य, हृष्टपती (महा)।
अरोमा } उन्माद आरोम्य = आरोम्य (भाषा २,
अरोच्य } १२ २)।
अरोस वि [अरोच्य] १ हुमा रहित। २-३
पुं एक म्येच्छ्य रोग और उन्माद रहित
म्येच्छ्य नाति (पश्य १ १)।
अरुचि न [अरु] १ विच्छेदक पुच्छ का घस
प्रत्यय
'घसमय विच्छेद' गुरुध
अरुचि गह्वय मंसल।
विटि विरं विमुचय
सम्भ सन्वस मय-नयण्य'
(भाषा १९)।
२ पलायनी का एक विश्रुत (छाया २)।
३ वि घसक (भाषा)। पृष्ठ न [पृष्ठ]
विच्छेद की दृष्टि से आकारवाला एक राज
(विवा १ १)।
अरु देखो लक्ष (मा ७२, से १ ७८)।
अरुचि [अरुच्य] १ पर्याप्त पूर्ण 'घसना
लक्ष' बालीय' (गुर ११ २१)। २ प्रतिपेय
विकारण बह (स २ ७)।
अरुचि [अरुच्य] घसक, गुहा (गुप्ति
२ २)।

अरुचक एक [अरुच + क] मुचित करना
विचारित करना। अरुचक (वि ३ १)।
अरुच अरुचरत्न (मा १४१)। सङ्ग अरु
चरिमा (वि ३८१)। प्रयो, कर्म अरुचक-
नीय (स १४)।
अरुचकरण न [अरुचकरण] १ आभूषण अरु
कार (रस्य ७४ मधि)। २ वि रोमा
कार 'अरुचमसोमस अरुचकणि मुषोमणि'
(वि १४)।
अरुचरिय वि [अरुचर] गुरुध विमुचित
'न मरामनकरिय मम्ममहुर्य ममहुरिय'
(गुहा ८४ गुर ४ ११८)।
अरुचर पु [अरुचर] १ आरुच-विरोध
साहित्यशास्त्र (सिंह १२; विच्छा २)। २
पुं एक देवविमान (विच्छ ११२)।
अरुचर पु [अरुचर] १ मुच्य गह्व
(मोय) रच। २ भूया, रोमा (छ ४ ४)।
सहा भी [समा] भूया-गह्व, गह्वार-र
(हक)।
अरुचरिय पु [अरुचरिय] नाति गह्व
हृमाय (छाया १ ११)। कम न
[कर्म] हृमाय और कर्म (छाया १
११)। महा भी [समा] हृमाय बनाने
का स्थान (छाया १ ११)।
अरुचिय वि [अरुचिय] १ विमुचित गुरु-
ध (कर्म) महा। २ न संवीत का एक
पुच्छ (मोय १)।
अरुचिय देखो अरुचक। अरुचिय (रस्य
२२)।
अरुचि वि [अरुच्य] १ उत्पन्न करने
के घसोय (गुर १ ४१)। २ उत्पन्न
करने के घसोय (ज ११७ छे)।
अरुचिय वि [अरुच्य] ऊपर देखो
अरुच्योय (महा) गुहा १ १ वि १११
नाट)।
अरुचि पु [वि] हुमा, गुहा (वि १ ११)।
अरुच्योय भी [अरुच्योय] १ एक विच्छेद
देवी का नाम। (छ ८)। २ गुप्त-विरोध।
(पाय)।
अरुचि भी [अरुच्य] घसति (मोय २१;
मा)।
अरुच्य की [अरुच्य] नयन-विरोध पहे

प्रतिभासुर की राजधानी (पश्य २
२ १)। देखो अरुच्य।
अरुच्य पु [अरुच्य] १ इस नाम का एक
राजा जिसने मागध महावीर के पास शिरा
सेकर मुक्ति पाई की (सिंह १८)। २ ग.
संघपादता' गुप्त के एक प्रत्यय का नाम।
(सिंह १८)।
अरुच्य वि [अरुच्य] रस्य में न घा मके
रेमा (गुर १ १११ महा)।
अरुच्यमाय वि [अरुच्यमाय] को पहे
वाता न जा घसता हो गुप्त (स ११३ छे)।
अरुच्यवि वि [अरुच्यवि] १ घसत
वाचिचि। (सिंह ११ ४४)। २ न पहेवा
हुमा। (गुर ४ १४)।
अरुच्य देखो अरुच्य = अरुच्य (महा)।
अरुच्य देखो अरुच्य (सिंह १)।
अरुच्य न [वि] कर्मक देता रोम का घस
मारुन (वि १ ११)।
अरुच्यपुर न [अरुच्यपुर] नयन-विरोध
(हुमा)।
अरुच्य वि [अरुच्य] निर्मल, देवलय (पश्य
१ १)।
अरुच्य वि [अरुच्य] ऊपर देखो (मा
१ ४४; १११ महा)।
अरुच्यरुच्य न [वि] वाप का परिवर्तन
(दे १ ४८)।
अरुच्य पु [अरुच्य] घसत जिवा हा-
पिर दो सात करने के लिए जो रच सकारी
है वह (अनु २)।
अरुच्य पु [अरुच्य] १ ऊपर देखो।
(गुहा ४ १)। २ वि घसत न रेमा हुमा
(पश्य)।
अरुच्य देखो अरुच्य (सिंह ४ ४१)।
अरुच्यरुच्य वि [वि] घसती गुप्त (वि १
४१)।
अरुच्य वि [अरुच्य] १ सम। २
निषेध विकार। (छ ४ २)।
अरुच्य पु [वि] गुप्त नैन (वि २ २१)।
अरुच्यरुच्य पु [वि] उन्नत नैन (वि १
२२)।
अरुच्य न [वि] विरुध प्रमाण (वि १ ११
मधि)।

शुभ—नाम जोध सोम सोम मर आखरें
(गुप्त ११४)। दमप वि [दमन] १ पिपु
विनाशक। २ पुं दमपु ३४ के एक राजा का
नाम (पद्य २ ७)। ३ एक ब्रह्म पुत्रि की मम
बन्धु धर्मिणाय के पुत्रनाम के एक से (पद्य
२ ७)। दमपी की [दमनी] विद्या विरोध
(पद्य ७ १४२)। [विद्वन्नी की [विद्वं
सिनी] पिपु का नाश करनेवाली एक विद्या
(पद्य ७ १४)। सुवास पुं [सुवास]
राक्षसरा में उत्पन्न लड्डा का एक राजा
(पद्य २, २१३)। इत वि [इत] १
पिपु-विनाशक। २ पुं विनोद (पायक)।

अतिशक्ति पुंकी [वि] व्याज, डेर (१ २४)।
अतिशय पुं [अतिशय] १ ममनाय कथनेके
वा एक पुन। २ न. मर-विरोध (पद्य २
१ १३)। अतिशय २, १ १)।

अतिशु पुं [अतिशु] १ कुश-विरोध (पद्य १)।
२ मरुतके तीर्थकर का एक ग्राहक (पद्य
१२२)। ३ पुंन. एक वैश्विमान (ब्रह्म
१११)। ४ न. मर-विरोध को मरुत-पुत्र को
की राजा है (ठा ७)। ५ राज की एक ब्राह्मि
(उत्त १४ ४ गुप्ता ३)। ६ पद्य-विरोध
पद्य (पद्य १७ उत्त १४ ४)। ७ पद्य-
मुक्त कथना (पायक)। [मिमि नमि पुं
[मिमि] वर्तमान बाल के बाल-विरोध
(पद्य १७ पद्य ३ नय पद्य)।

अतिशु की [अतिशु] नयक नामक विषय
की राजपत्नी (अ २ १)।

अतिशु न [अतिशु] पद्यार, कहर, नाव की
पीछे का भाव, जिससे पद्य अतिशे-बाये हुआ
जाता है (नयके ११३)।

अतिशु य [अतिशु] पाशुरक धर्म्य
(१ २, २१७)।

अतिशु सेओ अरस (छाया १ ११)।

अतिशु १ वि [अतिशु] बहावीर
अतिशु २ पद्यार (पद्य, विना १ ७)।

अतिशु वि [अतिशु] १ योग, नायक (गुप्ता
२४२, पद्य)। २ पुं विनोद (दीप)।

अतिशु एक [अतिशु] १ योग होता। २ पुन
के योग होता। ३ पुन करता। अतिशु
(अतिशु) अतिशु (अतिशु)।

अतिशु सेओ अरस—अतिशु (१ २ १११)
पद्य)। दत्त [विपुन पुं [विपुन] ब्रह्म
मुक्ति-विरोध का नाम (नय)।

अतिशु सेओ अरस (छाया २८)।

अतिशु सेओ अरस = अरस (१ २ १११)
पद्य छाया १ १)। अरस न [अरस]
१ विन-मरि (उत्त १४)। सामग न
[सासन] १ ब्रह्म मर-मर। २ विन-
मात्रा। (पद्य २ २)।

अरु सेओ अरु (वि २, १२ २, ८५)।

अरु वि [अरु] योग-विरोध (उत्त ४१)।

अरु सेओ अरु (उत्त ४१)।

अरु न [अरु] इत वाय 'अरु'
इत मुक्त (इत १)।

अरुतु वि [अरुतु] १ मर-विरोध। २
मर-विरोध 'अरु' तद-पुत्राचारणेहि विधि
मर्यादा' (ममल १८८)।

अरुतु पुं [अरुतु] १ मरु मरु (वि ३
१)। २ मरु का मरुती। ३ संसार
सम्पत्ती की लाली (वि ८ ७)। ४ मरु-
विरोध। ५ मरु-विरोध 'मरु' होय मरुती,
मरुती सेओ मरुती (दीप)। ६ एक
मरु-विरोध का नाम (ठा २, १ पद्य
७)। ७ मरु-विरोध-मरु का मरुती
से (ठा २ १ पद्य १३)। ८ मरु-विरोध
(उत्ति)। ९ मरु रंज लाली। (बह)।
१ न. विन-विरोध (मम १४)। ११
वि रंज नाम (पद्य)। १२ न
[अरु] वैश्विमान-विरोध (उत्त)।
[अरु] न [अरु] वैश्विमान-विरोध
(उत्त)। १३ की [गुप्ता] महापुत्र
के की एक लकी (दी २)। गज न
[गज] वैश्विमान-विरोध (उत्त)। अरु
न [अरु] एक वैश्विमान का नाम
(उत्त)। 'पद्य' 'पद्य' न [मम] इत
नाम का एक वैश्विमान (उत्त)। मरु
पुं [मरु] एक वैश्विमान का नाम (गुप्ता १३)।
मरु न [मरु] एक वैश्विमान (उत्त)।

महापुत्र पुं [महापुत्र] वैश्विमान (गुप्ता
१३)। महापुत्र पुं [महापुत्र] १ मरु-
विरोध। २ मरु-विरोध (इत)। अतिशय
न [अतिशय] एक वैश्विमान (उत्त)।

मर पुं [मर] १ मर-विरोध। २ मरु-
विरोध (गुप्ता १३)। मरुमास पुं
[मरुमास] १ मरु-विरोध। २ मरु-
विरोध (गुप्ता १३)। सिद्ध न [सिद्ध]
एक वैश्विमान (उत्त)। मर न [मर]
वैश्विमान-विरोध (उत्त)।

मरु न [मरु] मरु पद्य (वि १ ८)।

मरु पुं [मरु] १ एक वैश्विमान।
(रेत १११)। पद्य पुं [मरु] १
मरु-विरोध नामक नामक का एक मरु-
पर्वत। २ मरु पर्वत का निवास देव।
(ठा ४ २ पद्य २२३)। मर पुं [मर]
इत पुत्र-विरोध (गुप्ता २)।

मरुमास पुंकी [मरुमास] लाली रंज,
'पद्य' मरुमास (गुप्ता २८)।

मरुमास वि [मरुमास] रंज, लाल (बह)।

मरुमास पद्यविमान न [मरुमास पद्यविमान]
इत नाम का एक वैश्विमान (पद्य १४)।

मरुमास पुं [मरुमास] मरु-विरोध (गुप्ता
१३)।

मरुमास पुं [मरुमास] मरु-विरोध
(मम)।

मरुमास पद्य पुं [मरुमास पद्य] मरु-विरोध
का नाम (उत्ति)।

मरुमास वि [मरुमास] इत नाम (गुप्ता १
१ १)।

मरुमास वि [मरुमास] विरोध, मरु-विरोध
(मम १४)। मरु २१)।

मरु सेओ अरस = अरस (१ २ १११ पद्य
पद्य)।

अरु वि [अरु] १ मरु-विरोध। २ पुं कुश
पद्य (पद्य २०१ मर १ १)। ३ विन-
से (पद्य २, १२)।

अरु सेओ अरस = अरस (१ २ १११ पद्य
पद्य)।

अरु वि [अरु] योग (उत्त ४४)।

अरु सेओ अरस = अरस (१ २ १११ पद्य
पद्य)।

अरु वि [अरु] योग (उत्त ४४)।

अरु सेओ अरस = अरस (१ २ १११ पद्य
पद्य)।

अरु वि [अरु] योग (उत्त ४४)।

अरु सेओ अरस = अरस (१ २ १११ पद्य
पद्य)।

अरु वि [अरु] योग (उत्त ४४)।

अरु सेओ अरस = अरस (१ २ १११ पद्य
पद्य)।

अरु वि [अरु] योग (उत्त ४४)।

अरु सेओ अरस = अरस (१ २ १११ पद्य
पद्य)।

अथवा पुन [दि अथक] जत में होने वाली
बलसक्ति-विरोध (पृष्ठ १, १८)।

अथवाही की [अपराधि] १ अथवा यदि २
योग्यीय स्वान (पृष्ठ १५२)।

अथवाही न [अथवाही] १ सुवर्ण २ पानी
का फेन (पृष्ठ १ १)।

अथवाहीय देवो अथवाय = अथवाय।

अथवाहीय एक [अथ + गम्] बालता।

अथवाहीय (महा)। अथवाहीय (स ११२)।

अथवाहीय एक [अथ + गम्] बुर होना,
निम्न जाना। अथवाहीय (महा)।

अथवाय } एक [अथ + गम्] अथवाय } अथवाय
अथवाय } करता निस्कारता। बहु अथ

गणत (सा २७)। अथ अथवायिण्य

(सा १ १)।

अथवायणा की [अथवायणा] अथवा अथवाय

(स १ २७)।

अथवायिण्य } कि [अथवायिण्य] अथवायिण्य
अथवायिण्य } ठिक्कठ (स १०१)।

अथवायु कि [वि] विस्तीर्ण, विराल (स १

१)।

अथवाय देवो अथवाय। अथवाय (स १)।

अथ अथवायिणि (स १)।

अथवायिण्य देवो अथवायिण्य (पृष्ठ ४२१)

अथवायिण्य (स १)।

अथवाय पु [अथवाय] १ अथवाय (पृष्ठ १

२)। २ विनाश (स १११ विदे ११२)।

अथवाय एक [अथ + गम्] १ जानना। २

विश्रुत करना। अथवायिण्य (सा ११)

अथवायिण्य (स १२६)।

अथवाय पु [अथवाय] १ जान। २ विश्रुत

निम्न (विदे १८)।

अथवाय न [अथवाय] अथवाय देवो (स

१० विदे १८६ ४ २)।

अथवायिण्य } कि [अथवाय] १ अथवायिण्य
अथवायिण्य } (पृष्ठ २१८)। २ विनाश अथ

वायि (स २१ अ १४)।

अथवाय कि [अथवाय] दुष्टता हुआ विनाश

(सा १ १ अ १ १६)।

अथवाय एक [अथ + क] अथवाय करता

अथवाय करता। अथवाय (स १११)।

अथवाय देवो अथवायिण्य विदे (११८)।

अथवाय कि [वि] अथवाय (पृष्ठ १)।

अथवाय कि [अथवाय] अथवाय (अ २ ४)।

अथवाय न [अथवाय] निम्न अथवाय

(स २०१)।

अथवाय देवो अथवाय (अ १ अ १ १०२)।

अथवाय कि [अथवाय] अथवाय करता

अथवाय (विदे २८२२)।

अथवाय पु [अथवाय] अथवाय, अथवाय-कर

(स २ ४१)।

अथवाय कि [अथवाय] अथवाय-कर

(स ११)।

अथवाय कि [अथवाय] अथवाय देवो (स

११)।

अथवाय पु [अथवाय] १ अथवाय (महा)।

२ अथवाय, अथवाय (अथवाय)। ३ अथवाय अथ

वायि (अ ४ १)।

अथवाय एक [अथ + गम्] अथवाय

करता। अथवाय (स १)।

अथवाय पु [अथवाय] १ अथवाय। २

अथवाय (स २०)।

अथवाय न [अथवाय] अथवाय अथवाय-
अथवाय अथवाय अथवाय (पृष्ठ १११)।

अथवाय देवो अथवाय (अ ४ ४ विदे

२ ८८)।

अथवाय न [वि] अथवाय अथवाय (अ

५ ११)।

अथवाय देवो अथवाय। अथवाय (अ ५

१८१)।

अथवाय देवो अथवाय। अथवाय (अ ५

१८१)।

अथवाय पु [अथवाय] अथवाय (अ ५

१८१)।

अथवाय एक [अथ + गम्] अथवाय

अथवाय करता। अथवाय (अ ५ २ २

४)। अथवाय (स ११)।

अथवाय कि [अथवाय] १ अथवाय (स २

१११)। २ अथवाय (अ ५ ८)।

अथवाय न [वि] अथवाय अथवाय (स १ २)।

अथवाय न [अथवाय] अथवाय (अ ५

२२)। अथवाय (अ ५ २४)।

अथवाय कि [अथवाय] अथवाय (स १११)

(स १११)।

अथवाय कि [अथवाय] १ अथवाय। २ पु

अथवाय अथवाय अथवाय (अ ५ ४४)।

अथवाय देवो अथवाय (अ ५ १)।

अथवाय न [अथवाय] देवो अथवाय (विदे

१८)।

अथवाय देवो अथवाय - अथवाय (स १)।

अथवाय कि [अथवाय] अथवाय अथवाय

अथवाय (अ ५ ११)। अथवाय (अ ५ २२)।

अथवाय पु [अथवाय] अथवाय (अ ५ १

११)। अथवाय (अ ५ ११)। अथवाय (अ ५ १

११)।

अथवाय एक [अथ + वि] अथवाय अथवाय

अथवाय (अ ५ ११)। अथवाय (अ ५ ११)।

अथवाय देवो अथवाय (अ ५ ११)। अथवाय (अ ५ ११)।

अथवाय देवो अथवाय (अ ५ ११)। अथवाय (अ ५ ११)।

अथवाय देवो अथवाय (अ ५ ११)। अथवाय (अ ५ ११)।

अथवाय देवो अथवाय (अ ५ ११)। अथवाय (अ ५ ११)।

अथवाय देवो अथवाय (अ ५ ११)। अथवाय (अ ५ ११)।

अथवाय देवो अथवाय (अ ५ ११)। अथवाय (अ ५ ११)।

अथवाय देवो अथवाय (अ ५ ११)। अथवाय (अ ५ ११)।

अथवाय देवो अथवाय (अ ५ ११)। अथवाय (अ ५ ११)।

अथवाय देवो अथवाय (अ ५ ११)। अथवाय (अ ५ ११)।

अथवाय देवो अथवाय (अ ५ ११)। अथवाय (अ ५ ११)।

अथवाय देवो अथवाय (अ ५ ११)। अथवाय (अ ५ ११)।

अथवाय देवो अथवाय (अ ५ ११)। अथवाय (अ ५ ११)।

अथवाय देवो अथवाय (अ ५ ११)। अथवाय (अ ५ ११)।

अथवाय देवो अथवाय (अ ५ ११)। अथवाय (अ ५ ११)।

अथवाय देवो अथवाय (अ ५ ११)। अथवाय (अ ५ ११)।

अथवाय देवो अथवाय (अ ५ ११)। अथवाय (अ ५ ११)।

अथवाय देवो अथवाय (अ ५ ११)। अथवाय (अ ५ ११)।

अथवाय देवो अथवाय (अ ५ ११)। अथवाय (अ ५ ११)।

अथवाय देवो अथवाय (अ ५ ११)। अथवाय (अ ५ ११)।

अथवाय देवो अथवाय (अ ५ ११)। अथवाय (अ ५ ११)।

अथवाय देवो अथवाय (अ ५ ११)। अथवाय (अ ५ ११)।

अबर न [अपर] १ विद्या कल या वेत (महा) । २ विद्या कल या वेत में रहा हुआ पत्राव (सम १४) महा । ३ पश्चिम दिशा में स्थित 'अबरधारे' (स १४१) । कंठ की [कंठ] १ गलभी-बंध क पयलेन की एक राजवाली । २ इस नाम के 'अबरबर्न' कला' गुरु का एक प्रमुख (छात्रा १ ११) ।
अब दुं [हि] १ रिल का अन्तिम प्रहर (अ ४ २) । २ रिल का उत्तरी मान (पाइ १) का २१६) प्रासु १४) ।
वाहिज पुं [वाहिज] १ मैत्राव कोश । २ कि मैत्राव कोश में स्थित (पंथा २) ।
वाहिजा औ [वाहिजा] पश्चिम घोर बसिल रिता के बीच की रिता, मैत्राव कोश (नम ७) ।
फाणु औ [पायिज] एही घसी वा सिक्का मान (नम ८) ।
घस पुं [राज] केओ अबरत्तन अवरत्तन (घावा) ।
विदेइ पुं [विदेइ] ग्वाविदेइ नामक बर्ग का पश्चिम भाग (हा २ १ पठि) ।
विदेइकुट न [विदेइकुट] पर्वत-विशेष वा शिखर-विशेष (ब ४) ।
वेओ अपर ।

अबर घ [अबर] अवर केओ (महा) छाया १ ११) ब ७) पंथा २) ।

अबरसुह रि [अपरसुह] १ संमुख । २ उत्तर (सि १६६) ।

अबरसुह केओ अपरसुह (एह १ १) ।

अबरज पुं [रे] १ कल किल । २ बापाजी रिल । ३ प्रमत्त मुख (रे १ ११) ।

अबरज्य दन [अब + राज] १ अराज्य करना दुनाइ करना । २ नष्ट होना । दन दमद (महा घर) । बहू अबरज्यंन (घर) ।

अबरत्त पुं [अपरत्तन अवरत्तन] तबि का पिछ्वा भाग (सम, लता १ १) ।

अबरत्त रि [अपरत्त] १ गिरन जाल (घन पु ३) । २ नापन लपुन (कुमा २१७) ।

अबरत्तम पुं [रे] पत्राव, अनुगत (रे अपरलेन) १ ४२, नाव) ।

अबरत्तमरना केओ अबर-वाहिजा (घन १ १) ।

अबरत्त न [अपरत्त] १ अराज्य दुनाइ (गुर १ १११) । २ कि विनये अराज्य रिता हो

बहू, अवरत्तमी 'सबसे वाएए मर्म अवेत्तरीध अबरत्त' (मिया १ ४ स २७) । ३ विना-स्थित, नष्ट किया हुआ (छाया १ १) ।

अबरत्तिया रि [अपरत्तिय] १ अवरत्तमी बोयी । २ पुं मुता-स्त्रोण । ३ अरति-बंश (विज १४) ।

अबरत्तिया } पुं औ [अपरत्तिय] १ सर्व-
अवरत्तिय } बंश । २ पुं औ औता औता (मोख १११ रिज) ।

अवरत्त औ [अपर] विदेइबर्न की एक लवरी (अ २ १) ।

अवरत्त औ [अपर] पश्चिम दिशा (घन १ १) ।
अवरत्तिया केओ अपराइया (पठन २१ १ स ४) हा २ १) ।

अवरत्तस केओ अवरत्तस (वह १ १ ४ ४११) ।

अवरत्तिय केओ अपराइय (इक) ।

अपरत्तिया केओ अपराइया (इक) ।

अपरत्त पुं [अपरत्त] १ अवरत्त दुनाइ (मान १) । २ मणित, दुपार, 'अवरत्त' दुपेणु न निमित्तले परो होई (रामु १२२) ।

अपरत्त पुं [रे] कटी कमर (रे १ २७) ।

अपरत्तिय न [अपरत्तिय] १ अवरत्त दुनाइ; 'अपरत्त' बाओ मल्लर्न कसति अवरत्तियं बाई (पठन २४ २५ स १२) । २ अ-कार मणित मणित

विदि बहिजा बंशि पछाई, पुपु बालरं मोरंति ।

तीवि महपुम उमगाई अवरत्तिय न करति (रे ४ ४२) ।

अवरत्तिय रि [अपरत्तिय] अवरत्तमी (माक १) ।

अपरत्तिय रि [अपरत्तिय] १ अवरत्त दुनाइ । २ पश्चिम दिशा की तरफ दुंइ किया हुआ (माव ४) ।

अवरि } य [उपरि] अवर (रे १ ११ प्राय) ।
अपरि } य [उपरि] अवर (रे १ ११ प्राय) ।

अवरि रि [रे] अवरत्तिय अवरत्त (रे १ २) ।

अवरिगिज रि [अपरिगिज] दुल, लपुन (सि ११) ।

अवरि रि [रे] धीनीप धवापाण (रे १ ११, बहू) ।

अवरि रि [उपरि] उत्तरीय नम, लतर (रे २, १११ कुमा पठन प्राय) ।

अवरि रि [अपरिय] पत्राव, पश्चिम दिशा अवरत्तमी 'तो हो तुमने अवरत्तियं बलुसई पन्थे-पनाई' (छाया १ १) ।

अवरिद्वयपुसण रि [रे] १ मदीति अवरत्त । २ अवरत्त, दुता । ३ बल (रे १ १) ।

अवरद्वय रि [रे] वासिज्जन करण । अवरद्वय (रे १ ११) गुर १, १२२ पठि) । कर्म, अवर-विचार (रे १ ११) । अवर, अवरविज्ज (रे १ ११ स ४२१) ।

अवरद्वय म [रे] वासिज्जन (मवि पाप अवरद्विय) (रे १ ११) ।

अवरद्वय पुं [अपरद्वय] १ वास्य कोश । २ रि वास्य कोश में स्थित (सम) ।

अपरद्वय औ [अपरद्वय] वास्य रिता, पश्चिम घोर अवर के बीच की रिता (नम ७) ।

अवरद्व रि [अवरद्व] विज हुआ (सि २६७१) ।

अवरद्वर केओ अवरद्वर (कुमा रंज) ।
अवरद्व घक [अब + द्व] नीचे अतरा ।

अवरद्वि (मै १४) ।

अवरद्व केओ अवरद्व (माक ८१) ।
अवरद्वर) रि [अवरद्व] अवरत्त में (रे ४ अवरद्वर) ४ १; पठन मुना २१ गुर १ ७१ पठ) ।

अवरद्व पुं [अवरद्व] १ अवरद्व, अवरत्त-बाजा (मुना ११) । २ अवरद्व में अवरत्तमी औ (मिया १ ४) । ३ अवरत्त की सीज से बेला (मिज ८) । ४ अवरत्त (सि ११११) ।

५ अवरत्त 'नई अवरत्त' अवरद्वोति' (सि १७२१) ।
अवरद्व पुं [अवरद्व] अवरत्त की औ (सि १८७) ।

अवरद्व पुं [अवरद्व] अवरत्त (गुण पठि) (पठन) ।

अवरद्व पुं [रे] बदि, कमर (रे १ २८) ।

अवरद्व घक [अब + अवर] १ अवरत्त लता, अवरत्त लेना । २ अवरत्त । अवरद्व (नम) । अवरद्व (महा) । बहू अवरद्व-माज (लाम २८) । कनहू अवरद्विज्ज (सि १६७) । अवर, अवरविज्ज अवरद्व-विज (माव १, घावा १ १ १) । इक-

[illegible]

अवस्तं य [अवश्यम्] बह्व, निरवय (पि ११२)।
 अवस्तपिणी शब्दो अवस्तपिणी (संशोध ४८)।
 अवस्तस्य शब्दो अवस्तस्य (विष्णु)।
 अवस्तस्य वि [अवस्तस्य] भाष्य, अवस्तस्य (पटु १)।
 अवहृत् स [रथ] निर्माण करता बनाता।
 अवहृत् (हे ४ २४)।
 अवहृत् स [उमय] दोनों गुण (हे २ १३८)।
 अवहृत् वि [अवहृत्] न बह्वा गुण ओ बापुगर्हो है बह्व भोवपिणी-वहो इमाव बापो लभो न सिक्खिहो (बर्मावि १४१)।
 अवहृत् श्री [अवहृत्] विनाश (पिठे २ १५)।
 अवहृत् वि [हे] धर्मिमाती पवित्र (४ १ २३)।
 अवहृत् शब्दो अवहृत् = अय + हृत्।
 अवहृत् वि [अवहृत्] ने निपा गया कीना गुण (मुग २११) पण्ड १ ३)।
 अवहृत् वि [अवहृत्] ऊपर दबो (प्राक्)।
 अवहृत् न [हे] मुनय (४ १ ३२)।
 अवहृत् पृ [हे] ज्ञान दीक्षित ज्ञान (४ १ २५)।
 अवहृत् पृ [अवहृत्] माले के निर मा निदान बह्वर करने के लिए अंश किया गुण हाव अवहृत् वेण ह्यो बुमरो (महा)।
 अवहृत् स [अवहृत्] ? हाव को अंश करता। २ व्याग करता, छोड़ देता।
 अवहृत् (महा)। वंश अवहृत्स्यज्ज अवहृत्स्यज्ज (पि २०६ महा)।
 अवहृत्स्य श्री [हे] लाव मारवा पत-प्रार (४ १ २२)।
 अवहृत्स्य वि [अवहृत्स्य] परित्यक्त, दूर किया गुण (महा ब्रज २२४ गा ३२१; मुग १२३; पणि)।
 अवहृत् वि [अवहृत्] मट, मात-मात (वे १४ २८)।
 अवहृत् वि [अपावत्] परित्यक्त (घोष ७४)।

अवहृत् मत् [गम्] जाना। अवहृत् (हे ४ १६२)।
 अवहृत् मत् [नत्] भाग जाना पतामन करता। अवहृत् (हे ४ १७८) मुमा)।
 अवहृत् स [अय + हृत्] १ छीन सेना घप हण्ड करता। २ भाषाकार करता भाष दमा। अवहृत् (महा) अवहृत् (वया)।
 अवहृत् अवहृत्स्य, अवहृत्स्य (गुर १ १४२ मय २५, ४ छाया १ १८)।
 वंश अवहृत्स्य, अवहृत् (महा भाषा मत्)।
 अवहृत् स [अय + हृत्] परित्याग करता।
 वंश अवहृत् (मुग १ ४ १ १७)।
 अवहृत् वि [अवहृत्] अवहृत् छीन सेने-बाता (गा १२६)।
 अवहृत् मत् [अवहृत्] छीन सेना (मुमा गुण २३)।
 अवहृत्स्य वि [गत्] गया इमा (मुमा)।
 अवहृत्स्य वि [अवहृत्] छीन निपा गुण (गुर १ ४४१; मुमा १)।
 अवहृत् स [अय + हृत्] गुण्ड करता विष्णुकार करता अवहृत् करता। अवहृत् (छाया १ १८)।
 अवहृत्स्य वि [अय, अवहृत्स्य] विष्णु अवहृत् (छाया १ ८ गुर १२ ९७)।
 अवहृत् स [हे] पाषाण करता। अवहृत्स्य (हे १ ४० टी)।
 अवहृत्स्य वि [हे] अकृष्ट, विज पर पाणीरा किया गया हो वह (दे १ ४७)।
 अवहृत् मत् [अवहृत्] १ व्याग लयोज (गुर १ ७१; मुमा)। २ ब्रज जाना (बने ८२)।
 अवहृत् पृ [हे] विष्णु विजोय (वे १ ३५)।
 अवहृत् मत् [अवहृत्] छोड़ कर त्याग कर (महा १)।
 अवहृत् स [अय + धारम्] निष्णव करता निष्णव करता। बर्मा अवहृत्स्य (म १६६)। हृत् अवहृत्स्य (महा १६)।
 अवहृत् (महा) शब्दो अवहृत् = अय + हृत्।
 अवहृत् (महा) वंश अवहृत्स्य (महा)।
 अवहृत् पृ [अवहृत्] १ अवहृत् (वहृत् १ ३; मुग २०३)। २ दूर करता परित्याग

(छाया १ ६)। ३ कोटि (मुग ४४५)। ४ बह्वर करता निष्णव (निष्ण ७)। ५ भाषा-कार (मय २३ ४)। ६ मत् विनाश (गुर ७ १२३)।
 अवहृत् पृ [अवहृत्] निष्णव किया। व [हे] निष्णव निष्णव (हा १)।
 अवहृत् पृ [अवहृत्] मूत्र पति विष्णु प्रविष्ट पतिविष्ट (मुग १ १ टी)।
 अवहृत् मत् [अवहृत्] निष्णव किया (वे ११ १३ स १६६)।
 अवहृत्स्य वि [अवहृत्] छीनबला धा हण्ड करतेनामा (गुर ११ १२)।
 अवहृत्स्य वि [अवहृत्] अवहृत् छीनने-बला (मुग १ १)।
 अवहृत्स्य वि [अवहृत्] निष्णव (म २०६ पत्र २३ ६ मुग ३३१)।
 अवहृत् स [मत्] गया करता गुण करता। अवहृत् (वहृत् हे ४ १२१)।
 अवहृत् मत् (मुमा)।
 अवहृत्स्य वि [अवहृत्] गमन के लिए प्रविष्ट (मिर् ४४५)।
 अवहृत् पृ [अवहृत्] प्रकाश ठेक (महा प्रम)।
 अवहृत्स्य श्री [अवहृत्स्य] नावारगु 'मोल्मे मोल्मेमग्गहम्मि अवहृत्स्यो मुदा' (गा ९६४)।
 अवहृत्स्य वि [अवहृत्स्य] प्रकाशित (मुग १४२)।
 अवहृत्स्य श्री आदि (मुग ८५; २०८ विस् ८२; ७३७)।
 अवहृत्स्य वि [हे] रविध धर्मिमाती पवित्र (मत्)।
 अवहृत्स्य वि [हे] मेजुन संभाग (मुग १ १)।
 अवहृत्स्य वि [अवहृत्] छीन निपा गुण (पत्र २ ९६ गुर ११ १२; मुग ४४६)।
 अवहृत्स्य वि [अवहृत्] पवित्र (वहृत्)।
 अवहृत्स्य वि [अवहृत्] निष्णव (पिठे १२३१)।
 अवहृत् मत् [अवहृत्] घर्माण (वहृत् १)।
 अवहृत्स्य वि [अवहृत्] घर्माण ब्यावभावा (वाय मत् छाया १ २; पत्र १ ९५)

अधिकस्त्रम म [अमंस्त्र] मममोम, निपि-
द्यण (मम) ।

अभिषेकस्य न [अपेक्ष्य] मन्त्रेणा, परमाह
(विसे १७१६) ।

अविषयता चेन्नो अवेकता (कुमा) ।

अभिहित्तय वि [अपेक्षित] १ अपेक्षित ।
२ न. अपेक्षा परबहु, 'आभिहित्तयं समाप्त'
(भा १४) ।

अधिकृत्य च वि [अवेक्षित] यत्नोपेक्षित (मुपा
७२) ।

अभिगङ्गय वि [अभिहितिक] पत्र पाणि
विकार बतक बन्धुषी का त्यागी (मुद्र २
२)।

अथवाहिय वि [अविच्छिन्न] यनालोचि
(वच १) ।

अविगायस्वी अविद्यप्य (मुर ४ १०२) ।
अविगायस्य वि [अविद्यस्वप्] १ विद्यप्य
रहित । २ म् कस्मान्-रहित प्रत्यय आत्
(बर्मेस ७४) ।

अविगल वि [अभिच्छ] पञ्चए, पूर्ण (२५३) ।

अनिगिच्छन्ति [अविचिच्छित्त्य] विचरन्
हमात्र न ही मके ऐमा अमाध्य व्याधि
'तापवर्गं यत्नमार्गं न हि ब्रह्मक्षीया

बोधायणमयेमणं, तद् धर्मिण्यो
मुखादौ (भा १२)

अविगीतं पु [अविगीत] यथोक्तं, शास्त्रं
रहस्यं वा धर्मस्य साधु (अथ १) ।
अविगीतं हि [अविगीत] १ यथोक्तं-रहस्यं
२ पुनरुक्तं कथं-रहस्यं (मुद्रा २१५)
३ यथोक्तं सीमा (अथ) । अथोक्तं [अविगीत]
यथोक्तं अथ (अथ १५ ३) ।

अभिष्ट वि [अभीष्ट] बोधार्थित व्याप्ति
रहित (पृष्ठ १) ।

अभिज्ञापय वि [अविज्ञायक] घनज्ञान मू
(नम १ ३ १) ।

अविज्ञ वि [अधीज] बोधराशि मे रधि
(पत्र ११ ३३)।

अभिप्रेत पृ [अभिप्रेत] विषय का अभाव (३३) ।

अभिप्रेतयन्तः } पृ० [६] भा. उपपत्ति (३१)
अभिप्रेतयन्तः } १८) ।

अभिणयवद् स्त्री [दे] घतती कुतटा (पि १
१८) ।

अधिगिह बि [अधिनेत्र] निष्ठा-विन्देयर्हत्
(सा ६६) ।

अविष्णोः स्त्री [अविष्ठा] अनुपयोग, श्वास का
प्रमाण (सूत्र १ १ १)।

अबित्तह वि [अबित्तय] सत्त्व सत्त्वा (महा
सुव) ।

अविना } य [अविद्, दा] विपाद-मूचक
अभिवा } धम्मय (वि २२, स्वप्न ३८) ।

अविधि पुत्री [अविधि] ? विष्णु विधि ।
३ विधि का प्रमाण (कह ३ प्रमाण ?) ।

अधिष्ठाण वि [अधिष्ठान] १ ध्यात । २

अधियङ्गु वि [अधिरङ्ग] अन्निष्णु (मुपा
५-३) :

अभियन्त न [अप्रीतिक] १ प्रीति का समापन
(अ १) : २ नि अप्रीतिकारक (पण्डित
१ १)।

अपियन्त हि [अवपक्त] असुट, पस्यट
‘अपियन्तं हिंसायां समापयन्त’ (अथर्व १.५) ।

अधियप्य पि [अभिष्मप्य] १ मेरुर्हृत
 'अभिष्मप्य' इत्यस्य अत्र पुरिषो पुरिषो ति निष्-
 मधिक्यो' (मम्म ३३) । २ द्विजि नि-संशय-
 संशयसहित 'अभिष्मप्य' इत्यस्य पुरिष-
 यो नृपिण्य अधियप्य' (सम्म ३३) ।

अभियाउरी श्री [दे अभियन्तयित्री] कल्या
श्री (स्पष्ट १ २) ।

अपिमाप्स्य देशो अभिजाप्य (पाश) ।

[illegible]

अभिरुचय रि [अभिरुचि] विपति से रहित
पापविमुक्ति से वञ्चित, पार कर्म में प्रवृत्त
(सदा कर्म)।

अधिरत्त नि[अधिरत्त] वेराग्यपहित (एताया
१ १४) ।

अविरय वि [अविरय] १ विरामयुक्त
अविनिन्द्य (मा १२४) । २ पात्र निवृत्ति से
युक्त (ठा २१) । ३ बन्धुं दुःखसागक
नामा जीव (कम्म ४९१) । ४ निर्धि सदा
हमेव (पाय) । सम्मविद्धि श्री [सम्य
गृष्टि] बन्धुं दुःखसागक (कम्म २२) ।
अविरज वि [अविरज] निविज मन (खाया
११) ।

अधिरादि नि [अधिरादिम्] निरुद्धित
(कुमा) ।

अशिराम वि [अशिराम] १ विष्णुमहिम्न ।
२ विवि निष्कट, हृदय (पाप) ।

अधिराय वि [अधिरायन] यन्त्र (कुमा) ।
अधिराह्य वि [अधिराहित] यन्त्रिण

અત્રિરિય નિ [અજીય] મીયંરહિત (મગ) ।

अविश्लब्धियं वि [अविश्लब्धित] विलम्ब
विश्लब्धियं वि [विश्लब्धित] विलम्ब

अविलस्य णी [अपिलस्य] मेपी मेडो (पाप) ।

अविषयं पु [अविषयं] र विवेकं का प्रसाद।
 २ वि विवेकं रहित। यत् वि [बन्]।
 अविषयी (परम ११३ ११)।
 अविसंघि वि [अविसंघि] पूर्वापर विरोध
 अविषयं (परम ११३ ११)।

अभिस्साह वि [अभिस्साहियम्] विष्णवा
रहित प्रमाण मूढ सत्य (कुमा मुर ६
१७३)।
अभिस्सम वि [अभिस्सम] सहा, तुल्य (कुमा)।
अभिस्साह वि [अभिस्साहियम्] विष्णवा
(सहा २ १)।

अबिससस वि [अबिरोप] तुस्य, सयान (ठा
३ ३३ ३३ ३३ ३३)

४)।

(सूत्र ११) । २ शिष्ट. निष्पद्य, घटा (न
५३५ टी) ।

असणा की [अशानी] एक इराणी (अ ४ १)।

असणा की [अशानी] बिहारी मीन 'मयबा-
रामणी कसमए मोहरण वइ बयण बंम ब'
(मुन २ ४२)।

असणग बि [असण] संज्ञाएहि अनेकन
(सहृष २)।

असणग बि [असंक्षिप्त] १ संक्षिप्त
मनोब्रान से रहित (बीच) (अ २ २)। २
सम्पन्नति निमित्त केतर (अ १ १)। मुन
[मुन] कैतर शाक (रुकि)।

असण बि [असण] अमर (मुर १ २४४
१ १७४)।

असण बि [असण] असाक (आवा)।
असण न [असर] असाक असाक (रुकि)।
असण की [असण] असाक का असाक।
अस बि [अस] असाक असाक (अस
१२, १२)।

असाय बि [असाय] असाक असाक (मुर
१ १२७)।

असाय न [असाय] १ असाक। २ असाक
निर्वाण असाक (आवा)।

असाय पुं [असाय] १ असाक असाक
(अस १)। २ बि असाक (अस १)।

असाय बि [असाय] असाक असाक (मुर
१ १२४)।

असाय बि [असाय] असाक असाक (मुर
१ १२४)।

असाय बि [असाय] असाक असाक (मुर
१ १२४)।

असाय बि [असाय] असाक असाक (मुर
१ १२४)।

असाय बि [असाय] असाक असाक (मुर
१ १२४)।

असाय बि [असाय] असाक असाक (मुर
१ १२४)।

असाय बि [असाय] असाक असाक (मुर
१ १२४)।

असाय बि [असाय] असाक असाक (मुर
१ १२४)।

असाय बि [असाय] असाक असाक (मुर
१ १२४)।

असमयाइ न [असमयायि] नैमाक दीर
केरिण मर प्रसिद्ध कारण-विशेष (विम
२ २२)।

असमजस बि [असमजस] १ असाक
गिरमाजी (सावा मुर २ १११ मुना
१२१ अ १)। २ बि बि असाक
अस स (आवा)।

असमिक्खिय बि [असमीक्षिय] असा-
क असाक असाक (अस १ २)। असा-
क बि [असाक] असाक असाक (असाक की
[असाक] असाक असाक (अ ७ ८ ८)।

असाय बि [असाय] असाक असाक (असाक
आवा (अ ४ ४)।

असाय बि [असाय] असाक असाक (असाक
आवा (अ ४ ४)।

असाय पुं [असाय] असाक असाक (असाक
आवा (अ ४ ४)।

असाय बि [असाय] असाक असाक (असाक
आवा (अ ४ ४)।

असाय बि [असाय] असाक असाक (असाक
आवा (अ ४ ४)।

असाय बि [असाय] असाक असाक (असाक
आवा (अ ४ ४)।

असाय बि [असाय] असाक असाक (असाक
आवा (अ ४ ४)।

असाय बि [असाय] असाक असाक (असाक
आवा (अ ४ ४)।

असाय बि [असाय] असाक असाक (असाक
आवा (अ ४ ४)।

असाय बि [असाय] असाक असाक (असाक
आवा (अ ४ ४)।

असाय बि [असाय] असाक असाक (असाक
आवा (अ ४ ४)।

असाय बि [असाय] असाक असाक (असाक
आवा (अ ४ ४)।

असाय बि [असाय] असाक असाक (असाक
आवा (अ ४ ४)।

असाय बि [असाय] असाक असाक (असाक
आवा (अ ४ ४)।

असाय बि [असाय] असाक असाक (असाक
आवा (अ ४ ४)।

असाय बि [असाय] असाक असाक (असाक
आवा (अ ४ ४)।

असाय न [असाय] असाक असाक (असाक
आवा (अ ४ ४)।

असाय न [असाय] असाक असाक (असाक
आवा (अ ४ ४)।

असाय न [असाय] असाक असाक (असाक
आवा (अ ४ ४)।

असाय न [असाय] असाक असाक (असाक
आवा (अ ४ ४)।

असाय न [असाय] असाक असाक (असाक
आवा (अ ४ ४)।

असाय न [असाय] असाक असाक (असाक
आवा (अ ४ ४)।

असाय न [असाय] असाक असाक (असाक
आवा (अ ४ ४)।

असाय न [असाय] असाक असाक (असाक
आवा (अ ४ ४)।

असाय न [असाय] असाक असाक (असाक
आवा (अ ४ ४)।

असाय न [असाय] असाक असाक (असाक
आवा (अ ४ ४)।

असाय न [असाय] असाक असाक (असाक
आवा (अ ४ ४)।

असाय न [असाय] असाक असाक (असाक
आवा (अ ४ ४)।

असाय न [असाय] असाक असाक (असाक
आवा (अ ४ ४)।

असाय न [असाय] असाक असाक (असाक
आवा (अ ४ ४)।

असाय न [असाय] असाक असाक (असाक
आवा (अ ४ ४)।

असाय न [असाय] असाक असाक (असाक
आवा (अ ४ ४)।

असाय न [असाय] असाक असाक (असाक
आवा (अ ४ ४)।

असाय न [असाय] असाक असाक (असाक
आवा (अ ४ ४)।

असाय न [असाय] असाक असाक (असाक
आवा (अ ४ ४)।

असाय न [असाय] असाक असाक (असाक
आवा (अ ४ ४)।

असाय न [असाय] असाक असाक (असाक
आवा (अ ४ ४)।

असाय न [असाय] असाक असाक (असाक
आवा (अ ४ ४)।

[पत्त] (से १ २२)। हर कि [धर] लपकार-बारण दोड़ा (म १ १८)। हारा लो भाव (उप)।

असिइ (घन) केओ असीइ (ऊण)।

असिअ न [अशान] भोजन खाता 'धाम-निर्ग' पतिवृत्तिजनार्ण पूछए, गुरु प्रसिद्धा इना धनहाए इना' (धारा १ १)।

असितस न [असिअ] घाया लने हुए हाव या बर्तन का कपड़े से छटा हुआ भोजन (पवि)।

असिइ कि [असिइ] १ अतिव्यग्र। २ ठरं शास्त्र प्रसिद्ध पुष्ट हेतु (विने २ २४)।

असिय कि [अशाय] कुष्ठ, काष्ठि (पाया मुग २ १२)।

असिय कि [असिय] १ इच्छ स्वेच्छा (पाय)। २ अयुव (विने)। ३ अयुव, य मणित (मुग १ २ १)। ४ यिया एरे अयु-मण्डित, यमिया एरे अयुमण्डित' (धारा)। कल पुं [असि] अयु-मणित (उप)।

असिय न [असि] बाज दोटी (१ १ १४)।

असिमय केओ अस = घरा।

असिअसा की [असोपा] नखन-विरोध (मम ११)।

असिअगे पुं [असिअ] धारीति परस (मम १२)।

असिय न [असिय] १ विताय। २ अयुव। ३ वेचोपि हट बाज (धोन ७)। ४ धारी रोष (बब ४)।

असिय पुं [असिय] १ वेच वेचता (धारा)।

असिअ केओ असिय (बन ७; प्राय)।

असिय की [असिय] मिश्रित की (प्राय ३)।

असिइ कि [असिअ] मिश्रापिठ (बब ७)।

असिइ की [असिअ] धरता-विरोध धरती (मम)। म कि [असि] धरती की (पय ७४)।

असीइ कि [असीइ] धरती की वरं व पर बला (उप १७)।

असीम कि [असीम] निम्नो 'असीम' अतिव्यग्र (प ७२ ८ टी)।

असीम कि [असीम] १ दुःख बनना जारी (पय १ २)। २ न धमराकार, धरुणवर्ष। मंन कि [असीम] १ धरुणवर्ष (धोन ७७३)। २ धरुणवर्ष (मुग १ ७)।

असु पुं न [असु] १ प्राण (उ ३ २३)। २ न चित्त। ३ धार (प्राय ३ १)।

असु केओ असु (धारा)।

असुइ कि [असुयि] १ धारिध धरुणवर्ष मणित (धोन बब १)। २ न धरुणवर्ष (ठा १; प्राय १ ११)।

असुइ कि [असुइ] १ धारिध धरुणवर्ष मणित (धोन बब १)। २ न धरुणवर्ष (ठा १; प्राय १ ११)।

असुइ कि [असुइ] १ धारिध धरुणवर्ष मणित (धोन बब १)। २ न धरुणवर्ष (ठा १; प्राय १ ११)।

असुइ कि [असुइ] १ धारिध धरुणवर्ष मणित (धोन बब १)। २ न धरुणवर्ष (ठा १; प्राय १ ११)।

असुइ कि [असुइ] १ धारिध धरुणवर्ष मणित (धोन बब १)। २ न धरुणवर्ष (ठा १; प्राय १ ११)।

असुइ कि [असुइ] १ धारिध धरुणवर्ष मणित (धोन बब १)। २ न धरुणवर्ष (ठा १; प्राय १ ११)।

असुइ कि [असुइ] १ धारिध धरुणवर्ष मणित (धोन बब १)। २ न धरुणवर्ष (ठा १; प्राय १ ११)।

असुइ कि [असुइ] १ धारिध धरुणवर्ष मणित (धोन बब १)। २ न धरुणवर्ष (ठा १; प्राय १ ११)।

असुइ कि [असुइ] १ धारिध धरुणवर्ष मणित (धोन बब १)। २ न धरुणवर्ष (ठा १; प्राय १ ११)।

असुइ कि [असुइ] १ धारिध धरुणवर्ष मणित (धोन बब १)। २ न धरुणवर्ष (ठा १; प्राय १ ११)।

असुइ कि [असुइ] १ धारिध धरुणवर्ष मणित (धोन बब १)। २ न धरुणवर्ष (ठा १; प्राय १ ११)।

असुइ कि [असुइ] १ धारिध धरुणवर्ष मणित (धोन बब १)। २ न धरुणवर्ष (ठा १; प्राय १ ११)।

असुइ कि [असुइ] १ धारिध धरुणवर्ष मणित (धोन बब १)। २ न धरुणवर्ष (ठा १; प्राय १ ११)।

असुइ कि [असुइ] १ धारिध धरुणवर्ष मणित (धोन बब १)। २ न धरुणवर्ष (ठा १; प्राय १ ११)।

असुइ कि [असुइ] १ धारिध धरुणवर्ष मणित (धोन बब १)। २ न धरुणवर्ष (ठा १; प्राय १ ११)।

असुइ कि [असुइ] १ धारिध धरुणवर्ष मणित (धोन बब १)। २ न धरुणवर्ष (ठा १; प्राय १ ११)।

असुइ कि [असुइ] १ धारिध धरुणवर्ष मणित (धोन बब १)। २ न धरुणवर्ष (ठा १; प्राय १ ११)।

असुइ कि [असुइ] १ धारिध धरुणवर्ष मणित (धोन बब १)। २ न धरुणवर्ष (ठा १; प्राय १ ११)।

असुइ न [असुम] १ धरुणवर्ष मणित (धोन १ ११)। २ धारिध धरुणवर्ष (धोन १; धारा)।

असुइ न [असुम] १ धरुणवर्ष मणित (धोन १; धारा)। २ धारिध धरुणवर्ष (धोन १; धारा)।

असुइ न [असुम] १ धरुणवर्ष मणित (धोन १; धारा)। २ धारिध धरुणवर्ष (धोन १; धारा)।

असुइ न [असुम] १ धरुणवर्ष मणित (धोन १; धारा)। २ धारिध धरुणवर्ष (धोन १; धारा)।

असुइ न [असुम] १ धरुणवर्ष मणित (धोन १; धारा)। २ धारिध धरुणवर्ष (धोन १; धारा)।

असुइ न [असुम] १ धरुणवर्ष मणित (धोन १; धारा)। २ धारिध धरुणवर्ष (धोन १; धारा)।

असुइ न [असुम] १ धरुणवर्ष मणित (धोन १; धारा)। २ धारिध धरुणवर्ष (धोन १; धारा)।

असुइ न [असुम] १ धरुणवर्ष मणित (धोन १; धारा)। २ धारिध धरुणवर्ष (धोन १; धारा)।

असुइ न [असुम] १ धरुणवर्ष मणित (धोन १; धारा)। २ धारिध धरुणवर्ष (धोन १; धारा)।

असुइ न [असुम] १ धरुणवर्ष मणित (धोन १; धारा)। २ धारिध धरुणवर्ष (धोन १; धारा)।

असुइ न [असुम] १ धरुणवर्ष मणित (धोन १; धारा)। २ धारिध धरुणवर्ष (धोन १; धारा)।

असुइ न [असुम] १ धरुणवर्ष मणित (धोन १; धारा)। २ धारिध धरुणवर्ष (धोन १; धारा)।

असुइ न [असुम] १ धरुणवर्ष मणित (धोन १; धारा)। २ धारिध धरुणवर्ष (धोन १; धारा)।

असुइ न [असुम] १ धरुणवर्ष मणित (धोन १; धारा)। २ धारिध धरुणवर्ष (धोन १; धारा)।

असुइ न [असुम] १ धरुणवर्ष मणित (धोन १; धारा)। २ धारिध धरुणवर्ष (धोन १; धारा)।

असुइ न [असुम] १ धरुणवर्ष मणित (धोन १; धारा)। २ धारिध धरुणवर्ष (धोन १; धारा)।

असुइ न [असुम] १ धरुणवर्ष मणित (धोन १; धारा)। २ धारिध धरुणवर्ष (धोन १; धारा)।

असुइ न [असुम] १ धरुणवर्ष मणित (धोन १; धारा)। २ धारिध धरुणवर्ष (धोन १; धारा)।

असुइ न [असुम] १ धरुणवर्ष मणित (धोन १; धारा)। २ धारिध धरुणवर्ष (धोन १; धारा)।

असुइ न [असुम] १ धरुणवर्ष मणित (धोन १; धारा)। २ धारिध धरुणवर्ष (धोन १; धारा)।

असुइ न [असुम] १ धरुणवर्ष मणित (धोन १; धारा)। २ धारिध धरुणवर्ष (धोन १; धारा)।

असोमा श्री [असोम] १ इस नाम की एक क्षत्रणी (छ ४ १) । २ मन्त्राय श्री सीतय नाम की क्षत्रणी (यव २०) । ३ एक मयरी का नाम (पत्रम २ १८६) ।

असोमण नि [असोमन] यन्त्र, कर्तव्य (पत्रम २६, १६) ।

असोय रेवो असोय (मय महा रंसा) । असोय पु [असोयुक्त] धार्मिक मान (सम २२) ।

असोय नि [असोच] १ शीघ्रचित्त (महा) । २ न शीघ्र का प्रभाव प्रकटित । यात्र नि [बादिम्] धरोच ना ही माननेवाला (सोप ११८) ।

असोययया श्री [असोययना] शोक का प्रभाव (पत्रि) ।

असोया रेवो असोमा (छ २ ३ संति १) ।

असोक्षि नि [अपक] नचा (उवा) ।

असोहि श्री [असोहि] १ धूम्रि । २ विप-
चना (सोप ७८८) । ठाण न [म्यान]
१ पाप-कर्म । २ धूम्रि स्वात । ३ दुर्जन का
संमर्ग । ४ धन्यजन (सोप ७९१) ।

अस्स न [अस्स] मुक्त मुह (छ १८९) ।

अस्स नि [अस्स] १ अभ्यर्षित निर्जन । २ २ निर्जन यात्रु ग्रिनि (धारा) ।

अस्स पु [अस्स] १ बोझ (उव ७९८ टी) ।

२ धर्मिणी नक्षत्र का अधिष्ठत्यक्ष रेव (छ २ १) । ३ अधि-विरोध (मं ७) । कण्य
पु [कण्य] १ एक धर्मार्थि । २ इस धर्म-
ार्थ का विरासो (संति) । कण्यो श्री
[कण्य] कल्पवि-विरोध (पल्ल १) ।

कण्य न [कण्य] १ बड़ा बोझ रखने में
बाधा हो नह स्थान धर्मरत्न (धारा २,
१ १८) । गण्य पु [गण्य] यन्त्रे प्रवि-
बन्धुष का नाम (सम १ १) । तर पु श्री

[तर] कर्षण (पल्ल १) । मुह पु [मुह]
१-२ इस नाम का एक धर्मार्थि और उसके
निजन्ती (संति, पल्ल १) । 'मह पु [मेघ]
यन्त्र-विरोध विषम करन माय नला है
(धनु) । सोय पु [सोय] १ एक प्रविष्ट
राजा मन्त्राय पादरंजन का पिता (यव
११) । २ एक महापुत्र का नाम (यव २ १) ।

यर पु [यर] विधापर मंठ के एक
राजा का नाम (पत्रम २ ४२) ।

अस्स न [अस्स] १ धनु धर्म । २ धर्मि,
बुन (प्राह २९) ।

अस्सस नि [अस्सस्य] संस्था-रहित (उव
१७) ।

अस्ससिअ नि [रे] धायक (यव) ।

अस्ससयणि नि [अस्ससनिम] संज्ञित
रहित किसी प्रकार का धार्मिक कर्म स
रहित (मय) ।

अस्ससय रेवो अस्ससम (उव) ।

अस्ससय नि [अस्ससय] १ पुत्र की प्राप्ति-
कृपा करनेवाला धर्मरत्न (धारा ११) ।

अस्ससय रेवो अस्ससय (उव) ।

अस्ससय पु [अस्ससय] मय-पालक (गुना
१४२) ।

अस्सस रेवो असस 'गुरिणो हजय यण
मस्तर्ष' (उव १४६ टी) ।

अस्ससिअ रेवो अससिअ (पिय ११९) ।

अस्ससय पु [अस्ससय] बुद्ध-विरोध पीवज
(गाह) ।

अस्ससय नि [अस्ससय] रोपी बीमार (गुर
१ १२१; गान १२) ।

अस्ससि रेवो अससिअ (गुर १४ १९ कम्म
४ २१) ।

अस्सस पु [अस्सस] १ स्वात बाह्य । २

अस्सस का स्वात (मनि १९; एव २२) ।

अस्ससिअ नि [अस्ससिअ] मय-रहित मय
म्याही (मग) ।

अस्ससय रेवो अससय (धम्म १४२) ।

अस्ससय [आ + दस्यु] धातुवा
रत्ना । ईक्ष-साससिनुं (ही) (मनि १२) ।

अस्साइय नि [आस्साइय] निजका धातुवा
रत्ना यवा हो नह (१) ।

अस्सायमात्र रेवो अस्साय = धातुवाय ।

अस्साय उक [आ + दस्यु] धातुवा
रत्ना । अस्साय रेवो अस्साय (मग १२) ।

अस्साय उक [आ + दस्यु] धातुवा
रत्ना ।

अस्साय रेवो अस्साय (गुन १ १९) ।

अस्साय नि [आसाय] धातुवा
रत्ना (मन १२) ।

अस्साय रेवो अस्साय = धा + दस्यु ।

अस्साय रेवो अस्साय = धा + दस्यु । नह

अस्सायमात्र (मग १२ १) । अस्सा-
ययिअ (एमा १ १२) ।

अस्साय रेवो अस्साय (कम्म २७ मग) ।

अस्सायण पु [आदयायन] १ मय अस्सि
संज्ञा (मं ७) । २ धर्मिणी नक्षत्र का योत्र
(१८) ।

अस्सायि नि [आस्सायि] मन्त्रा ह्यमा टय
रत्ना ह्यमा, धर्मरत्न 'महा धम्मार्थिणि मानं
पारसो बुद्धि' (मय १ १२) ।

अस्साय उक [आ + दस्यु] धातुवा
रत्ना रितावा रेवा । अस्सायमहि (ही) (पि
४६) । अस्सायि (उव २ ४; नि ४९१) ।

अस्साय पु [आदयायन] एक महापुत्र
(गुन २) ।

अस्सि श्री [अस्सि] १ कोण नर धारि का
रत्ना (अ ६) । २ असवार धारि का मय
भाग—बार (उव ५६६) ।

अस्स पु [अस्स] धर्मिणी नक्षत्र का मयि
धातुवा (छ २ २) ।

अस्सि श्री [अस्सि] इत काम का एक
नक्षत्र (सम ८) ।

अस्सि नि [अस्सि] धातुवा-धातु विराज-
मेयमस्सिपो (यपु ठा ७ संवा १८) ।

अस्स पु [अस्स] धर्म, धर्म (संति १०) ।

अस्सु श्री न [अस्सु] धर्म (मनि १०
एव ८२) ।

अस्सु नि [अस्सु] धर्मिणी पुत्री या योत्र
मात्र की गई हो नह (उव २६७ टी) ।

अस्सु (ही) रेवो अस्सु = धर्म (मनि
१२९) ।

अस्सु नि [अस्सु] धर्म नहीं किया ह्यमा
(मन) ।

अस्सेसा रेवो अस्सेसा (सम १७ संति
१४ ८) ।

अस्साइ श्री [आस्सायुजा] धातुवा
पुत्रिमा (मं १) ।

अस्साइ श्री [आस्सायुजी] धातुवा
मात्र की मयायन (गुन १ १ टी) रेवो आसोया ।

अस्तोर्द्धा श्री [अस्तोर्द्धा] धर्मिणी-यन्त्र
प्रतिष्ठ मयम धर्म की राक्षसी धर्मार्थ
(छ ७) ।

[पच] (ये १ २२) । हर नि [चर] लपार-भारक योडा (ये ६ १०) । हारा रेको बाप (अम) ।

असिह (अम) रेको असीह (अम) ।

असिह न [अरान] मोमन बाजा 'मग-निह' परिद्विकमणी येण, पुरा असिहा हपा मनहाप हरा' (माता २ १ ३ १) ।

असित्य न [असिहय] घाय हये हुए हाथ या बटन का बपे घे ज्ञा हुपा मोमन (पकि) ।

असिह नि [असिह] १ मलिनम । २ ठई शाक प्रसिह पुठ हुनु (विसे २०२४) ।

असिह नि [असिह] दुध, बाण्डि (पाप गुना २१२) ।

असिय नि [असिह] १ कण्ड खेपरहत (पाप) । २ मयुन (विसे) । ३ मयुन म यमिप (गुप १ २, १) : 'सिहा एके मयु-मन्धीति' अस्या एगे मयुगमन्धीति' (माता) ।

कल पुं [असि] कल-नियेय (अम) ।

अमिय न [दे] बाप बंटी (ये १ १४) ।

असिपयक रेको अस = घरा ।

असिनेसा की [असिनेसा] गजक-नियेय (अम ११) ।

असिनेसा पुं [असिनेसा] घनीति मयु (अम १२) ।

असिप नि [असिप] १ विनास । २ मयुन । ३ देवतावि इत उछन (घोष ४) । ४ मारी टोण (बप ४) ।

असिपि पुं [असिपि] देव देवता (ग्राम) ।

असिपय रेको असिप (बन ७) प्रप्य ।

असमुह की [असिपि] सिमुपिह की (शार २) ।

असिह नि [असिह] सिहापिह (बप ४) ।

असिह की [असिह] हक-नियेय घरी (अम) । म नि [अम] घरीका बं (अम ७४) ।

असीम नि [असीम] असीम 'असीम' असीम (अम ७४) ।

असीम नि [असीम] असीम 'असीम' असीम (अम ७४) ।

असीम नि [असीम] १ दुहीत असीम बाटी (अम १ २) । २ न-असीम, असीम, असीम । मी नि [असीम] १ असीम, असीम (घोष ७७७) । २ असीम (अम १) ।

असीम पुं न [असीम] १ प्राण (अ १०१) । २ न निप । ३ असीम (अम ४१) ।

असीम रेको असीम (अम) ।

असीम नि [असीम] १ असीम असीम, असीम (अम १) । २ न असीम असीम (अम १) । ३ असीम (अम १) ।

असीम नि [असीम] असीम, असीम (अम १) ।

असीम नि [असीम] असीम, असीम (अम १) ।

असीम पुं [असीम] रेको असीम = असीम (अ १ ७७) ।

असीम नि [असीम] असीम, असीम (अम १) ।

असीम नि [असीम] असीम, असीम (अम १) ।

असीम नि [असीम] असीम, असीम (अम १) ।

असीम नि [असीम] असीम, असीम (अम १) ।

असीम नि [असीम] असीम, असीम (अम १) ।

असीम नि [असीम] असीम, असीम (अम १) ।

असीम नि [असीम] असीम, असीम (अम १) ।

असीम नि [असीम] असीम, असीम (अम १) ।

असीम नि [असीम] असीम, असीम (अम १) ।

असीम न [असीम] १ असीम असीम (अम ४ १११) । २ असीम (अम ४ १) । ३ असीम असीम (अम १) । ४ असीम असीम (अम १) । ५ असीम असीम (अम १) । ६ असीम असीम (अम १) । ७ असीम असीम (अम १) । ८ असीम असीम (अम १) । ९ असीम असीम (अम १) । १० असीम असीम (अम १) ।

असीम न [असीम] असीम (अम ४ १) ।

असीम असीम [असीम] असीम असीम (अम ४ १) ।

असीम की [असीम] असीम का असीम (अम ४ १) ।

असीम की [असीम] असीम का असीम (अम ४ १) ।

असीम की [असीम] असीम का असीम (अम ४ १) ।

असीम की [असीम] असीम का असीम (अम ४ १) ।

असीम की [असीम] असीम का असीम (अम ४ १) ।

असीम की [असीम] असीम का असीम (अम ४ १) ।

असीम की [असीम] असीम का असीम (अम ४ १) ।

असीम की [असीम] असीम का असीम (अम ४ १) ।

असीम की [असीम] असीम का असीम (अम ४ १) ।

असीम की [असीम] असीम का असीम (अम ४ १) ।

असीम की [असीम] असीम का असीम (अम ४ १) ।

असोमा की [असोम] १ इस नाम की एक
कृताणी (अ ४ १) । २ मयवा की रीतल
माष की शाखनबी (पत्र २७) । ३ एक
मगरी का नाम (पत्र २ १=३) ।

असोमण कि [असोमन] मनुष्य, कृता
(पत्र ३३ १६) ।

असोय रेको असोम (मग मगा रंमा) ।
असोय दु [असोयुक्] धातिन माध (सम
२२) ।

असोय कि [असोय] १ शीघ्ररहित (महा) ।
२ न शीघ्र का प्रभाव मनुष्यता । वाइ कि
[वादिन्] धरीय की ही माननेवाला
(शोध ११०) ।

असोयगया की [असोयनगा] शोक का
प्रभाव (परिच) ।

असोवा रेको असोमा (अ २ ३ वृत्ति
६) ।

असोस्त्रिय कि [अपक] कषा (उवा) ।

असोहि की [असोहि] १ व्युत्पि २ विर-
वाय (शोध ७०८) । ठाण न [स्वान]
१ वाय-कर्म २ व्युत्पि स्वात ३ दुर्जन का
संघर्ष । ४ वयस्यजन (शोध ७११) ।

अस्स न [अस्स] शुभ दुई (ग १०६) ।

अस्स कि [अस्स] १ अस्सपहित निर्जन । २
२ निर्देष वायु धुनि (धावा) ।

अस्स दु [अस्स] १ शोध (अ ७९० टी) ।
२ अस्मिन्ती मयत्र का अस्मिन्वायक रेव (अ
२ १) । ३ अस्मिन्-विशेष (अ ७) । कण्ठ
पुं [कर्म] १ एक अस्मिन् । २ इस अस्मि-
न् का निवासी (एहि) । कण्ठो की
[कर्म] कर्मवि-विशेष (एहण १) ।

कण्ठ न [कण्ठ] बहो बीडा एवने में
बगला हो यह स्वात मयत्रम (धावा २,
१ १६) । गीय पुं [मीय] पहले प्रति
वायुय का नाम (सम १९१) । वर पुंकी
[वर] बचक (एहण १) । मुख पुं [मुख]
१ २ इस नाम का एक अस्मिन् की वर वरके
निवासी (एहि, एहण १) । अह पुं [मेव]
मय-विशेष निधने मयत्र माध बगला है
(अपु) । सेण पुं [सेम] १ एक प्रसिद्ध
पत्रा मयवा परमंताप का पिता (पत्र
१६) । २ एक महाह्व का नाम (मय २) ।

यर पुं [यर] निवासर बंठ के एक
पत्रा का नाम (पत्र २, ४२) ।

अस्स न [अस्स] १ मनुष्य । २ अस्मिन्,
बुन (पत्र २६) ।

अस्संस्स कि [अस्संस्स] संस्था-रहित (उप
१७) ।

अस्संगिअ कि [रे] धातक (पत्र ५) ।

अस्संययि कि [अस्संययि] धंनन
रहित किसी प्रकार के शारीरिक कर्म से
रहित (मग) ।

अस्संयम रेको अस्संयम (उप) ।

अस्संयय कि [अस्संयय] १ दुःख की प्रभाव-
गुण वसनेवाला मयत्रम (वा ११) ।

अस्संयय रेको अस्संयय (उप) ।

अस्संयम पुं [अस्संयम] मय-नालक (मुगा
१४२) ।

अस्सव रेको असव 'गुणियो हवत वयल-
मस्सव' (उप १४२ टी) ।

अस्सपिण रेको अस्सपिण (विसे ११९) ।

अस्सय पुं [अस्सय] इस-विशेष पीपल
(गाट) ।

अस्सय कि [अस्सय] रोटी बीमार (गु
१ १३१; मात १३) ।

अस्सहि रेको अस्सपिण (गु १४ १९ कम्म
४ २ १) ।

अस्सम पुं [अस्सम] १ स्वात बगल । २
अस्मिन् का स्वात (अस्मि १६; स्वय २४) ।

अस्समिअ कि [अस्समिअ] मय-रहित मय
प्यासी (मग) ।

अस्सवार रेको अस्सवार (उपमत् १४२) ।

अस्सव चक [अ + दवस्] प्रभाव
मेना । हेइ-अस्ससिनुं (श्री) (पति १२) ।

अस्साइय कि [अस्साइय] निजक प्रभाव
किया गया हो वह (रे) ।

अस्सापमात्र रेको अस्साय = प्रभाव ।

अस्साव चक [अ + सावस्] प्रभाव करता ।

अस्सावेलि अस्सावेलामो (मग १४) ।

अस्साव चक [अ + सावस्] प्रभाव
करता ।

अस्सायण रेको अस्सायण (गु १ १६) ।

अस्साविय कि [अस्साविय] प्रभाव किया
हुया (मय १३) ।

अस्साय रेको अस्साय = प्रभाव ।

अस्साय रेको अस्साय = प्रभाव ।

अस्सायमाय (मय १ १) । अस्सा

यणिअ (एणा १ १२) ।

अस्साय रेको असाय (कम्म २ ७ मग) ।

अस्सायण पुं [आदवायन] १ मय अस्मिन् का
संवात (अ ७) । २ अस्मिन् मयत्र का योग
(इक) ।

अस्सायि कि [अस्सायि] मयवा हुआ वय
कटा हुआ अस्मिन् 'महा प्रवासादिनि माय
वापसी बुद्ध' (मुग १ २) ।

अस्सास चक [अ + आसस्] प्रभाव
देना, प्रभाव देना । प्रभावप्रति (श्री) (पि
४३) । प्रवासादि (उप २ ४) पि ४९१) ।

अस्सायण पुं [आदवायन] एक महापह
(गु २) ।

अस्सि की [अस्सि] १ कोण पर धाति का
कोना (अ ६) । २ वसवार धाति का मय
भाग—बार (उप ४ २६) ।

अस्सि पुं [अस्सि] धातिनी मयत्र का धाति
प्रभाव (अ २ २) ।

अस्सिणी की [अस्सिणी] इस नाम का एक
मयत्र (सम ५) ।

अस्सिअ कि [अस्सिअ] प्रभाव-प्रभाव 'विण
मेगमस्सिपो' (अपु अ ७ धंवा १८) ।

अस्सु पुं [अस्सु] धाति, 'मस्सु' (एहि १७) ।
अस्सु की [अस्सु] न [अस्सु] मयत्र (पति १९
स्वय २०) ।

अस्सु कि [अस्सु] धातिनी मयत्र या कोण
मात्र की धाति हो वह (अ २६० टी) ।

अस्सु (श्री) रेको अस्सुय = मयत्र (पति
१९१) ।

अस्सुय कि [अस्सुय] धाति नहीं किया हुआ
(मय) ।

अस्सेसा रेको अस्सेसा (उप १७ विसे
१४ ८) ।

अस्सेई की [अस्सपुसी] धातिन माध की
वृत्ति (अ १) ।

अस्सेई की [अस्सपुसी] धातिन माध की
प्रभाव (गु १ ९ टी) रेको आसोया ।

अस्सेई की [अस्सपुसी] धातिन माध की
प्रभाव (गु १ ९ टी) रेको आसोया ।

अस्सेई की [अस्सपुसी] धातिन माध की
प्रभाव (गु १ ९ टी) रेको आसोया ।

अस्सेई की [अस्सपुसी] धातिन माध की
प्रभाव (गु १ ९ टी) रेको आसोया ।

धम्म—१ धम्मकण १२ छेद ३ धम्मसं ।
४ बुद्ध १ धम्मिक्य प्रवर्य (हे २, २१७
भा १४ कण्ठ मा २४६) ।

अहा म [यथा] जैसे मासिक धनुवार (हे
१ २४४) । अहं वि [अहं] १
स्वच्छदी स्त्री (ता ३११ टी) । २ न मरनी
के धनुवार (बब १) । आप वि [आह]
१ मम प्रावरण-यह (हे १ २४२) । २ न
जन्म के धनुवार । ३ जैन साधुओं में बीजा
काल के परिमाण के धनुवार किया जाता
ब्रह्म—ममसार (बर्न २) । पुण्डरी की
[पुण्डरी] यथात्म धनुवार (छाया १ १
पञ्च १ ८) । लक्ष न [लक्ष] लक्ष के
धनुवार (मग २ १) । लक्ष न [लक्ष्य]
सत्य-मत्या (सम १६) । पहिरण वि
[पहिरण] १ लक्ष योग्य (पौन) । २
विधि यथायोग्य (विना १ १) । पयस वि
[पयस] १ पुनर् की लक्ष ही प्रवृत्त पारि
भित्त (छाया १) । २ न धातु का
परिणाम-विशेष (स ४७) । पयसि करण
न [प्रवृत्तिकरण] धातु का परिणाम-
विशेष (कम्म) । बायर वि [बायर]
निम्नार, धार-यह (छाया १ १) । मय
वि [मय] कारिकर नक्षत्रिक (हा १ १) ।
रागिय रायणिय न [यणिक] यथा
ज्येष्ठ बड़े के नम स (छाया १ १ धातु) ।
रिय न [रिय] गमता के धनुवार
(धातु) । रिह न [रिह] यथोचित (हा २
१) । २ वि लक्ष योग्य (बर्न १) । राय
न [राय] १ रीति के धनुवार । २ स्वभाव
के मासिक (मग २, २) । संह पुं [संह]
बात का एक परिमाण पानी से बीजा हुआ
हाल जिनसे समय में मूख बाध जता समय
(कण्ठ) । वगास न [वगास] मरणा
के धनुवार (मग २ १) । बध वि [वध]
पुनःस्थापन (मग ३ ७) । संयह वि
[संयह] समय के योग्य (धातु) । संवि
भाग पुं [संविभाग] भाग को बात देना
(उग) । सय न [सय] कालविकता
गता (धातु) । सवि न [सवि] लक्ष
के धनुवार (पंथ ८) । सुत न [सुत]
घातन के धनुवार (मग ७७) । सुह न

[सुख] इच्छामार (छाया १ १ मग) ।
सुहम वि [सुहम] धारमूढ (मग ३ १) ।
रेको अहं ।
अहाहं वि [यथाहं] यथाज्ञात (काथ)
इच्छामार (मग) (धातु २ ७ १ २) ।
अहाहं वि पुं [यथाहं] 'यथात्म' धनु
हाल करने वाला मुनि (सब ७) ।
अहाहं वि [हे] निष्कर्म नियत (निह
२) ।
अहास वि [अहास] हास्य-यह (मग
१ १) ।
अहाह म [अहाह] रेको अहह (हे २
२१७) ।
अहि रेको अहि (गज धाम पंच ४) ।
अहि म [अहि] इन धर्मों का लक्ष प्रत्यय—
१ पाकिष्य विरोधता 'अहिंयं पहिमास'
२ पहिमास, सता 'अहिंयं' । ३ एवर्न
'अहिंयं' । ४ कर्मा कर, अहिंयं ।
अहि पुं [अहि] १ सप्त सौ (पण्य १; प्राय
१२ १६ १ १) । २ रोप नाग (विष) ।
अहं की [अहं] नवरी-विशेष (छाया
१ १६ टी ७) । मय पुं [मय] सप्त
का धुरी (छाया १ २) । बह पुं [पति]
रोप नाग (मण्ड १) । विहिय पुं
[विहिय] सप्त के मूत्र से उत्पन्न होने वाली
शुक्ति पारि (धुमा) ।
अहियस न [हे] लोच दुसा (हे १ ११
पञ्च) ।
अहिमास न [अहिमास] बुधोनता धातु
वाणी (भा १८) ।
अहिमास की [अहिमास] बुधोनता
(पर) ।
अहिमार पुं [हि] लोच-न्याता कीर्तन-निर्देश
(हे १ २२) ।
अहिमस वि [हि] व्यात धवित (गज) ।
अहिमस वि [अहिमस] १ विहिय, परिहय ।
२ उद्यत ज्योती (पाय) । ३ शत्रु से विरा
हमा (रेणी १२ १) ।
अहिमस म [अम + पूर्य] पूरा करना
व्यात करना । बर्न पहिरमसि (बब ३) ।
अहिमस म [ह] यथागत न

करना । पहिरमसि (हे ४ २ ८ पञ्च
धुमा) ।
अहिमस पुं [अमियोग] १ संयम (गज) ।
२ योनापेण (स २२६) । रेको अहिमास
(महि) ।
अहि पुं [अहिम] १ सप्त का राजा
रोप नाग (मण्ड १) । २ रोप सप्त (धुमा) ।
मुर म [पुर] धामुकि-नगर । सुरमाह पुं
[पुरमाह] विष्णु धनुवार (मण्ड २६) ।
अहिमस वि [अहिमस] हिंसा न करने
वाला (धौष ७४७) ।
अहिमस न [अहिमस] पहिमा (बर्न १) ।
अहिसय रेको अहिमस (मण्ड २ १) ।
अहिमा की [अहिमा] दूसरे को किसी प्रकार
से बुद्ध न देना (निह २ धर्म ३ धृष १
११) ।
अहिसिय वि [अहिसिय] धमारीत धनी
विह (मग १ १ ४) ।
अहिसय रेको अहिमस बह अहिमस्यं
(पंच ४) ।
अहिमसि वि [अहिमसि] पहिमापी
हण्डु (सण) ।
अहिसिय रेको अहिमसि (मग १ १२
२२) ।
अहिसय वि [अहिमसि] विहता धमारीत
धमता हो यह, प्रत्युत (विह ११८) ।
अहिसय रेको अहिसय (निह ४) ।
अहिसयी रेको अहिसयी (ठा ८) ।
अहिसार रेको अहिसार (पञ्च १४ १७) ।
अहिसार रेको अहिसारि (रंता) ।
अहिसिय म [अहिमसिय] पहिमास कर,
धरेय कर (पाय १) ।
अहिसिय न [हे] जालस, जगता (हे १
१२) ।
अहिसिय वि [अहिमसि] १ विहिय ।
२ निहिय । ३ स्वाति । ४ पयसक । ५
सिप (भा) ।
अहिसिय म [अहि + मिय] १
विहिय करना । २ कर्तना । ३ निहिय ।
४ स्वाति करना । ५ धौष देना । अहिसिय
बद (उग) । अहिसियम (न ३२६) । बह
अहिसियम (पञ्च १२, ४४) ।

सम्य—१ धामनय ॥ २ लेद ॥ ३ धामय ॥
४ दुप ॥ ५ धामिय प्रपय (ह २ २१७
या १४८ क्यू ॥ गा ११९) ॥

अहा य [यमा] कैस माफिक धनुवार (ह १ २४२)। स्यन् नि [स्यन्] १ स्वच्छन्दी स्वरी (अ १११ टी)। २ न. गन्दी क धनुवार (ब १)। आय नि [आय] १ म प्रारण-वह (ह १ १४२)। २ न जन्म के धनुवार। ३ बैन छासुओं में बीडा काल के परिमाण के धनुवार दिया जाता बन्धन—नमस्कार (कर्म २)। गुपुकी की [तुपुकी] यथाक्रम धनुवार (छाया १ १) प्रम १ =)। तय न [तय] तरल के धनुवार (सम २, १)। तय न [तय] मय-मय (सम ११)। वहिरुय नि [प्रतिरुय] १ उचित योग्य (वीर)। २ निवि वसायोग (हिवा १ १)। पयव नि [प्रयव] १ पूर्व से व्यष्ट हो प्रयव पारि बहित (छाया १ ४)। २ न माया का परिणाम-विशेष (म ४७)। वसितिरुय न [प्रयुसितिरुय] धर्या का परिणाम विशेष (नम ५)। बायर नि [बादर] नित्यार, सार-वह (छाया १ १)। मूय नि [मूय] कारिक बासविध (अ १ १)। राक्षिय रायजिय न [राक्षि] यथा श्रेष्ठ बने के नम य (छाया १ १ याबा)। रिय न [सजु] गलना के धनुवार (याबा)। रिह न [ह] मयाचित (अ २ १)। २ नि उचित योग्य (कर्म १)। रीय न [रीय] १ रीति के धनुवार। २ स्वकार के माफिक (मय २, २)। स्यं पुं [स्यन्] बान का एक परिमाण वामी से सीका हूय मय शिरो से समय से मूख बाय उठना समय (बन)। बगास न [बगरा] धनवाश के धनुवार (मय २, १)। बय नि [कय] गुन-स्यनीय (मय १ ७)। संयह नि [संयह] समय के योग्य (याबा)। संकि-भाग पुं [संकिभाग] मयु हो बल देना (बन)। मय न [मय] माधविरना मयार (याबा)। साय न [साय] शक्ति के धनुवार (मय ४)। सुय न [सुय] पागम के धनुवार (मय ७३)। सुद न

[सुख] इच्छामुसार (छाया १ १ मय)। सुहम नि [सुहम] साम्य (मय २ १)। वेवो अह ॥ अहाल्य नि [यमाळ्य] यमलुभाव (कर्म) इच्छामुसार (समय) (याबा २ ७ १ २)। अहालीनि पुं [यमाळ्य] 'यमल' यम हात करते बाता मुनि (मय ७)। अहासंबह नि [ह] निरुप्य निरुप (निह २)। अहासंख नि [अहास्य] हाम्य-वह (गुना १ १)। अहाह य [अहाह] वेवो अहह (ह २ २१७)। अहि वेवो अमि (गल पाय पंच ४)। अहि य [अमि] इन धर्मो का धूषक धम्य— १ धामिय विशेषता 'अहिंय अहिमय'। २ धामिकार, सत्ता: 'अहिमय'। ३ धर्म्य अहिमय'। ४ उर्धवा, ऊपर, अहिमय'। अहि पुं [अहि] १ सयं सय (मय १)। प्राय ११ ११ १ १)। २ शेष नाम (मय)। अहाधी [अहाधी] मयरी-विशेष (छाया १ ११ टी ७)। मय पुं [मय] सय का धूषा (छाया १ १)। य पुं [य] शेष नाम (मय १)। यिजिज पुं [यिजिज] सय के मूख से उभय होत बायी धूमिक जाति (गुना)। अहिअळ न [ह] शेष गुमा (ह १ ११ य)। अहिआय न [अमिआय] धुनीगता यान-वामी (या १३)। अहिआइ श्री [अमिआयि] धुनीगता (य)। अहिआर पुं [ह] लोच-याता वीरन-निर्वाह (ह १ २१)। अहिउच नि [ह] व्यात धामि (मय)। अहिउच नि [अमयुच] १ निगुन, पविष्ठ। २ उचय उचोदी (मय)। ३ उचु ये निर हूय (मय १२१)। अहिऊर म [अमय + पूरय] पूर्ण करना व्यात करना। नमं पविष्ठ-अमि (मय)। अहिरुच म [ह] उगत द्य

करता। अहिरुच (ह ४ २ ८ य)। गुमा)। अहिओय पुं [अमिओय] १ संकय (मय)। २ सोपाटोय (म २२९)। शेषो अमिओय (मय)। अहिइ पुं [अहिइ] १ सयं वा यथा शेष नाम (मय १)। २ येष सयं (गुना)। गुर न [गुर] धामिक-नगर। गुरणाह पुं [गुरनाय] निरुप्य मयुच (मय २९)। अहिमग नि [अहिमग] हिम म करते बाता (मय ७४७)। अहिमग न [अहिमग] अहिम (मय १)। अहिमय यवो अहिमग (मय २ १)। अहिमगी [अहिमगी] दूसरे को किसी प्रकार से धूष न देना (निह २)। नमं १ मय १ ११)। अहिमिय नि [अहिमिय] धमाचित धमी-हित (मय १ १४)। अहिमय वेवो अमिअय नह अहिमयन (पंच ४)। अहिकिर नि [अमिअयि] धमिअगी इच्छु (सय)। अहिकिर यवो अहिकिर (मय १ १२ २२)। अहिकिर नि [अमिअयि] जिसका धमिकार बमता हो वह, प्रयुच (मय ११८)। अहिकिर यवो अहिकिर (निह ४)। अहिकिरमी यवो अहिकिरमी (ठा ८)। अहिकार वेवो अहिकार (मय १४ १७)। अहिकारि वेवो अहिकारि (रमा)। अहिकिर य [अमिअयि] धमिकार कर, धरिय कर (मय १)। अहिकिरन न [ह] उगत नह उठना (ह १ १२)। अहिकिरन नि [अमिअयि] १ धमिकार। २ निरुप्य। ३ स्थानि। ४ परिणय। ५ निर (मय)। अहिकिरन म [अमि + मिय] १ धमिकार करना। २ केंद्रता। ३ निरता। ४ धमिकार करना। ५ यो देना। अहिकिरन न (उ)। अहिकिरन (म २२९)। अहिकिरन (मय ११, १४)।

अहिक्कल्ल पुं [अभिसेप] १ तिप्पर।
२ स्तन। ३ प्रेरण (मत्)।

अहिसिक्क वेदो अहिसिक्क वट अहिसिक्क
(स २७)।

अहिा वेदो अहिा = पक्षि (विदे १२४१
टी)।

अहिखीर एक [हि] १ पक्षुज। २ पातल
करा। पक्षिखीर (घन)।

अहिगण वि [अभिगण] पक्षि कन बासा
(गण)।

अहिगम एक [अपि + गम्] १ बाला।
२ निर्णय करा। ३ प्राप्त करा। इ
अहिगम (धम्म १९७)।

अहिगम एक [अभि + गम्] १ सामने
बासा २ पार कर। इ अहिगम
(मत्)।

अहिगम पुं [अभिगम] १ बाल (विदे
२ ८)।

‘भीषाहीणअहिक्को विज्झतस्स पयोवधमनने’
(धम्म २)। २ उल्लस प्राप्ति (वे ७ १४)।

३ पुण पयिद का जसेह (विदे २४७१)।
४ लेट, र्छि (धम्म २१)। ५ म. पुण पयि
के जसेह से होनेवाली छत्रम-प्राप्ति—सम्प-
न्न (पुण १४८)। म्म की [महि] १

सम्पन्न का एक मेर। २ सम्पन्न बासा
(पन १४२)।

अहिगम वेदो अहिगम (घन) से ११
गण)।

अहिगमन न [अभिगमन] १ ज्ञान। १
क्रिय। ३ प्राप्ति करलस्य (विदे)।

अहिगमय वि [अभिगमय] पक्षुजबला
बलानेवासा (विदे १ १)।

अहिगमय वि [अभिगम] १ ज्ञान। २
निष्ठ (पु १ १ १)।

अहिगम वेदो अहिगम = पयि + गम्।
अहिगम वेदो अहिगम = पयि + गम्।

अहिगम वि [अभिगम] १ सम्पुन (पणु
१२)। २ म प्रत्यान प्रवेग (पण)।

अहिगम वि [अभिगम] १ पानस्य प्राप्त
(स १)। २ ज्ञान (वे १४ १४)। ३

नू दीर्घ बुद्धि कापक्षि कणु (पन १)।
अहिगम पुं [हि] पक्षर (घन १)।

अहिगण पुं [अभिगण] १ पुन सवाई
(पण २ १)। २ धर्मपान पान-धर्म से

पक्षिपति (ज ८७२)। ३ पान-मिल बस
बलु (ज २, १)। ४ पान बलक क्रिया

(सासा १ २)। ५ बाजार (विदे ८४)।
६ मेर, उधार (पु १)। ७ कलह, विचार

(पु १)। ८ हिा का उपकरण ‘मोहवेण
य एवे हतजलममुक्कमपुण्ड्रमहिक्का’ (विदे

२१)। ९ कर, कर वि [कर] कलहकारक
(पुण १ २ २)। पाषाण। क्रिया की

[क्रिया] पान-जनक कृति दुर्णीत में से
बानेवाली क्रिया (पण १ २)। तिर्यक्त

पुं [सिद्धासा] भागुपक्षि विदि करनेवाला
सिद्धास (पुण १ १२)।

अहिगणपी की [अभिगणपी] मोहार का
एक फलपत्र (सा ११ १)। सोहि की

[‘लोठि] विपन पक्षिगणपी रखी जाती
३ इ कल (सा ११ १)।

अहिगणिया की [अभिगणिया] वेदो
अहिगणिया की [अभिगणिया] वेदो

अहिगणिया की [अभिगणिया] वेदो
अहिगणिया की [अभिगणिया] वेदो

अहिगणिया की [अभिगणिया] वेदो
अहिगणिया की [अभिगणिया] वेदो

अहिगणिया की [अभिगणिया] वेदो
अहिगणिया की [अभिगणिया] वेदो

अहिगणिया की [अभिगणिया] वेदो
अहिगणिया की [अभिगणिया] वेदो

अहिगणिया की [अभिगणिया] वेदो
अहिगणिया की [अभिगणिया] वेदो

अहिगणिया की [अभिगणिया] वेदो
अहिगणिया की [अभिगणिया] वेदो

अहिगणिया की [अभिगणिया] वेदो
अहिगणिया की [अभिगणिया] वेदो

अहिगणिया की [अभिगणिया] वेदो
अहिगणिया की [अभिगणिया] वेदो

अहिगणिया की [अभिगणिया] वेदो
अहिगणिया की [अभिगणिया] वेदो

अहिगणिया की [अभिगणिया] वेदो
अहिगणिया की [अभिगणिया] वेदो

अहिगणिया की [अभिगणिया] वेदो
अहिगणिया की [अभिगणिया] वेदो

अहिजाण एक [अभि + जा] पक्षिजाण।
महि पक्षिजाणिसि (टी) (वि ११४)।

अहिजाय वि [अभिजाय] मुनीन (सा १
११)।

अहिजुंज वेदो अहिजुंज। संज्ञ. अहिजुंज
(मत्)।

अहिजुंज वेदो अहिजुंज (मत् ४)।
अहिजुंज एक [अभि + ज] पक्षि जाण

करा। पक्षिज (मत् २)। पक्ष. अहिजुंज
अहिजुंजा (ज ११२ टी ज्ञा)। संज्ञ.

अहिजुंजा अहिजा (ज १ पुण १ १२)
हेतु अहिजुंज (स ४)।

अहिज वि [अभिज] कणु की मोटी-पट
बना हुआ (बाण) (वे ७ २२)।

अहिज } वि [अभिज] बालकार, निपुण
अहिज } (वि २१९ प्राक् २४)।

अहिज वि [अभिज] पक्षि जाण (विदे
७ टी)।

अहिजाण (टी) वेदो अहिजाण (प्राक् ८७)।
अहिजाय वि [अभिजाय] पक्षि जाण

हुआ (ज १ ११)।
अहिजाय वि [अभिजा] पक्षि जाण (पु

८ १२१ ज ११ टी)।
अहिजिय वि [अभिजिय] पक्षि जाण (पु

८ १२१ ज ११ टी)।
अहिजिय वि [अभिजिय] पक्षि जाण (पु

८ १२१ ज ११ टी)।
अहिजिय वि [अभिजिय] पक्षि जाण (पु

८ १२१ ज ११ टी)।
अहिजिय वि [अभिजिय] पक्षि जाण (पु

८ १२१ ज ११ टी)।
अहिजिय वि [अभिजिय] पक्षि जाण (पु

८ १२१ ज ११ टी)।
अहिजिय वि [अभिजिय] पक्षि जाण (पु

८ १२१ ज ११ टी)।
अहिजिय वि [अभिजिय] पक्षि जाण (पु

८ १२१ ज ११ टी)।
अहिजिय वि [अभिजिय] पक्षि जाण (पु

८ १२१ ज ११ टी)।
अहिजिय वि [अभिजिय] पक्षि जाण (पु

८ १२१ ज ११ टी)।
अहिजिय वि [अभिजिय] पक्षि जाण (पु

अविट्टान न [अधिष्ठान] १ बैठना (निष्ठ २) । २ धाम्पण (सुपर २ ३) । ३ मासिक बतना (बाबा) । ४ स्थान धामय (स ४२९) ।

अविट्टायग नि [अधिष्ठायक] धम्मज अधि पति (कुप २११) ।

अविट्टायम न [अधिष्ठायन] जयर एवमा (निष्ठ २) ।

अविट्टिय नि [अधित्व] १ धम्माधित (छाया १ १४) । २ धरोम किया हुआ (छाया १ १४) । ३ धाम्पण धामिण (छा २, २) ।

अविट्टान न [अधिष्ठान] धमान-अयेरा (पक् ११२) ।

अविट्टय नि [दे] अमिदुल] धमिण 'अविट्टय' धीधमं पट्ठे न' (पक्) ।

अविट्ठं देवो अमिदं न । नह अविट्ठं माज (पठम ११ १२) कवड अविट्ठं-विज्जमाण अविट्ठंवीभमाण (माठ नि २९९) ।

अविट्ठंय देवो अमिदंय (पठम २ १, २) ।

अविट्ठंय नि [अमिनविट्ठ] धाम्प मानने बासा (स १७७) ।

अविट्ठंय देवो अमिदंय (पठम २ २२९ स १४) ।

अविजय देवो अमिजय (कपु; सण) ।

अविजय पुं [अमिजय] १ सेनुवन्ध काय का अर्था एवा प्रपत्तेय (सि ११) । ३ वि जूलन नवा (छाया १ १ सुवा ११) ।

अविजयेमाण देवो अविजी ।

अविजयेमाण देवो अविजु ।

अविजाय देवो अविज्याय (मि) ।

अविजिवोह पुं [अमिनिबोध] ज्ञान-विरोध मन्त्रिज्ञान (पक् २२) ।

अविजिपसक [अमिनि + पस] बसना एवमा । नह अविजिपसमाण (पुत्रा २११) ।

अविजिनिविह नि [अमिनिविह] धाम्प-हस्त (स २७९) ।

अविजियेन पुं [अमिनिवेश] धाव, हट (स ६२३ धमि ६२) ।

अविजियेसि नि [अमिनिवेशिण] धावही (सि ४ ५) ।

अविजी की [अवि] गणि (नका ११४) ।

अविजी देवो अमिणा नह अविजनेमाण (सुर १ १२) ।

अविजील नि [अमिनोह] हण हण रंग बाला (पठम) ।

अविजु सक् [अमि + जु] स्तुति करना प्रसंगता । नह अविजनेमाण (सुर १ ७७) ।

अविज्ज नि [अमिज] मेरुपट्टि मज्झिमूल (गा २९५, २८) ।

अविज्ज्याय न [अमिज्जान] चिह्न, मिशानी (धमि ११) ।

अविज्जु नि [अमिह] निष्ठुल बाठा (सि १ २९) ।

अविज्जस नि [अमिजस] तापित सेतान्ति (सण २) ।

अविज्जा देवो अविज्ज = धमि + इ ।

अविज्जाय नि [अमिज्जाय] देवे बासा बाठा (सुवा १४) ।

अविज्जेवया की [अमिज्जेवना] मणिप्रासा देव (सुवा १; कपु) ।

अविज्जस सक् [अमि + जु] हैयन करना । पविर्णीत (स ११३) । नमि पविर्निस्सर (स ११३) ।

अविज्जुय नि [अमिज्जुय] हैयन किया हुआ (स ११४) ।

अविज्जाय सक् [अमि + जाय] बीड़ना, सामने बीड़ कर जाता । नह अविज्जायंत (सि ११ २६) ।

अविज्जाय पुं देवो अविज्जाय (बा ११) सुवा अविज्जाय (२४) ।

अविजिबेस देवो अविजिबेस (स १२४) ।

अविज्जुय सक् [मह] प्रहण करना । पविर्नुयस (सि ४ २ २) पक् । अवि पक्नुअवि (कुप) ।

अविज्जुय सक् [आ + गम] बाला । पवि-पक्नुय (सि ४ १११) ।

अविज्जुय सक् [आगत] धायाव (कुमा) ।

अविज्जुय सक् न [दे] प्पुत्तम, प्पुत्तय (सि १ ४२) ।

अविज्ज सक् [अमि + पस] सामने जाता । पविर्णीत (पक् १ ९) ।

अविज्जाय सक् [अमि + हट] १ धमिक

रेसना । २ समान रूप से बैसना । अधिपास (सुप १ २, १ १२) ।

अधिपाय देवो अमिपाय (महा कपु) ।

अधिपाय देवो अमिपाय (छा १ ११ टी स १४) ।

अधिमय देवो अधिमय (पठम) ।

अधिमंशु पुं [अधिमंशु] धनुष के एक पुत्र का नाम (कुमा) ।

अधिमंशय नि [अधिमंशय] मन्त्रित करना मन्त्र से संस्कारना (मि) ।

अधिमंशय नि [अधिमंशय] मन्त्र से संस्कार (महा) ।

अधिमंशु अधिमंशु देवो अधिमंशु (कुमा पक्) ।

अधिमंशु अधिमंशु नि [अधिमंशु] संमत् हट (स २) ।

अधिमंशु पुं [अधिमंशु] धनुष रजि (पक्) ।

अधिमंशु पुं [अधिमंशु] धनुष के मोप से धनुष को मारने का साहस करने वाला (सुर १ ६८) । २ गजाधिपति (मिरे १७९४) ।

अधिमंशु पुं [अधिमंशु] धनुष धनुष (प्राप् १७ सण) ।

अधिमंशु नि [अधिमंशु] धमिनी गति (स ४११) ।

अधिमंशु पुं [अधिमंशु] धनुष-विरोध 'एवं अधिमंशु धनुष' (सुप १) ।

अधिमंशु पुं [अधिमंशु] धनुष धनुष (प्राप् १७ सण) ।

अधिमंशु नि [अधिमंशु] धनुष धनुष (सि ४ ४४ पठम २ १२७ सण) ।

अधिमंशु नि [अधिमंशु] धनुष धनुष (सि ४ ४४ पठम २ १२७ सण) ।

अधिमंशु नि [अधिमंशु] धनुष धनुष (सि ४ ४४ पठम २ १२७ सण) ।

अधिमंशु नि [अधिमंशु] धनुष धनुष (सि ४ ४४ पठम २ १२७ सण) ।

अधिमंशु नि [अधिमंशु] धनुष धनुष (सि ४ ४४ पठम २ १२७ सण) ।

अधिमंशु नि [अधिमंशु] धनुष धनुष (सि ४ ४४ पठम २ १२७ सण) ।

अधिया की [अधिया] भवत्वा धीर्धनवाच
की प्रथम क्तिय्य (उप १२२) ।
अधियाइ देवो अधियाइ (पठ) ।
अधियाय देवो अधियाय (पठ) ।
अधियाय पुं [अधियाय] लुप् के वच के निरु
विषा वाता मन्त्रादिप्रयोग (मठ) ।
अधियाय देवो अधियाय (उ २४१ पाठ
पुत्र २६१) छट्ठि ७ टी मन्त्रि वे ७ १२) ।
अधियायि देवो अधियायि (११ १) ।
अधियास छठ्ठि [अधि + आस्, अधि +
सङ्] लृङ्ग करण कर्त्तों की शान्ति से
भैरवा । अधियायन अधियाय अधियाये
(उप मठ) । कर्म, अधियायिनीति (कर्म) ।
बहु अधिवासमाय (पाठा) । छङ्-अधि
वासिना अधियासिन् (मू १ १ ४
पाठा) छङ्-अधियासिन् (पाठा) । छ-
अधियासियम् (उप २४१) ।
अधियासि नि [अध्यास अधिसह] लृङ्ग
(उप १) ।
अधियासत्र न [अध्यासन अधिसहन]
लृङ्ग करण (उप २४१ उ १२२) ।
अधियासय न [अधिसहान] धिक् प्रोक्त
प्रयोग (उ १) ।
अधियासिध नि [अध्यासिन अधियोग]
लृङ्ग क्रिया हुआ (पाठा) ।
अधि पुं [आसीर] प्रह्लाद, गोवत्सा (मा
२११) ।
अधिरम देवो अधिरम । बहु-अधिरमंत
(लुप् १२४) ।
अधिरम यक् [अधि + रस्] बीड़ा करण
संज्ञक करण । अधिरमि (टी) (मठ) । छङ्
अधिरमिन् (मो) (मठ) ।
अधिरम्य नि [अधिरम्य] लृङ्ग, मयोहर
(अधि) ।
अधिरम नि [अधिरम] लृङ्ग, मयोहर
(पठ) ।
अधिरमिन् नि [अधिरमिन्] धात्व के
वाला (पठ) ।
अधियाय पुं [अधियाय] १ पठा (उ १) ।
२ स्वामी की (उप) ।
अधियाय नि [अधियाय] लृङ्ग, प्रकृत
(लृङ्ग ७) ।

अधिरिअ देवो अधिरिअ (मि १११) ।
अधिरिअ नि [अधीर] निरंतर बेचारा (उ २
१ ४) ।
अधिरिअ नि [अधि] निरंतर धीरा (उ १
२७) ।
अधिरिमाय नि [अधि + आस्, अधिरिमाय]
१ मयोहर, मन की प्रतिपत्ति । २ धनवा
कारण 'अधिरिमाय धनवा धनवा धनवा
मयो परिपत्ति ये बहिरो ये बहिरो' (पाठा १ १, २) ।
अधिरम्य नि [अधिरम्य] १ लृङ्ग, मयोहर
(मि २११) । २ धनवा योग (वि १८) ।
अधिरम यक् [अधि] लृङ्ग करण लृङ्ग करण ।
अधिरम (उ १ १११) ।
अधिरिअ नि [अधि] लृङ्ग (पठ) ।
अधिरिअ न [अधिरिअ] ऊपर बढ़ना
मयोहर (मा ४) ।
अधिरिअ नि [अधिरिअ] ऊपर बढ़ने
वाला (मि १७) ।
अधिरिअिनी की [अधिरिअिनी] निराली
सीरी (उ २, २१) ।
अधिरि नि [अधिरि] लृङ्ग यक् (मठ
रंभा) ।
अधिरिअ, यक् [अधि] लृङ्ग यक् अधि
अधिरिअ } नाय करण । अधिरिअ, अधि
अधिरिअ } लृङ्ग (उ ४ ११२) 'अधिरि-
अधि' लृङ्गि धुपति म यज्ञाकार विनामिरीहिम-
पाद (मि १ २०) ।
अधिरिअ नि [अधिरिअ] धनवा के
वाला योग (मठ) ।
अधिरम यक् [अधि + लृप्] संभाषण
करण करण । बहु अधिरिअमाल (उ
८४) ।
अधिरम यक् [अधि + लृप्] धनवा
करण, बढ़ना । अधिरम (मठ) । बहु
अधिरमंत (मठ) ।
अधिरमिय नि [अधिरमिय] नाभिक (मू
४ २४) ।
अधिरमिय नि [अधिरमिय] धनवा
लृङ्ग (उ १ १) ।
अधिरम न [अधिरम] लृङ्ग वा लृङ्ग
मिष्ट (पठा १ ७) ।

अधिरम्य पुं [अधिरम्य] लृङ्ग, धात्व (उ
२ १) ।
अधिरम्य पुं [अधिरम्य] लृङ्ग नाभिक
वा (मठ) ।
अधिरमि नि [अधिरमिय] लृङ्ग
(मठ) ।
अधिरमि न [अधि] १ पठम । २ अर्थ हुआ
(उ १ ४७) ।
अधिरमि यक् [अधि + लृप्] १ लृङ्ग
करण । २ लृङ्ग । अधिरमि (पठा १ ८) ।
अधिरमिय न [अधिरमिय] ऊपर लृङ्ग
(पठ २ ४) ।
अधिरमि नि [अधिरमि] लृङ्ग लृङ्ग
(मठ) ।
अधिरमि की [अधिरमि] लृङ्ग लृङ्ग
(मठ १ ४) ।
अधिरमि नि [अधि] लृङ्ग लृङ्ग (उ १ १) ।
अधिरमि की [अधिरमि] लृङ्ग लृङ्ग की
(पठ १ ४) ।
अधिरमि [अधि] १ लृङ्ग लृङ्ग (उ १
४२४ टी) । २ लृङ्ग लृङ्ग (मठ) ।
३ पठा लृङ्ग 'अधिरमि लृङ्ग लृङ्ग'
(मठ ४) ।
अधिरमि नि [अधिरमि] लृङ्ग लृङ्ग (पठा
१ १ मठ मू १ ११) ।
अधिरमि देवो अधिरमि (पठ) ।
अधिरमि नि [अधिरमि] लृङ्ग लृङ्ग (उ
१ ४२) ।
अधिरमि देवो अधिरमि (पठ) ।
अधिरम यक् [अधि + लृप्] लृङ्ग लृङ्ग ।
बहु 'अधि लृङ्ग मयोहर लृङ्ग लृङ्ग'
(लृङ्ग ११) ।
अधिरम यक् [अधि + लृप्] लृङ्ग लृङ्ग । बहु
अधिरमंत (पठ) ।
अधिरमि देवो अधिरमि अधिरमि
(मठ) ।
अधिरमि की [अधिरमि] लृङ्ग लृङ्ग
अधिरमि } पठा लृङ्ग वा अधिरमि लृङ्ग
(मू १ १२, न ७—पठ ४२४) ।
अधिरमि नि [अधिरमि] लृङ्ग लृङ्ग
(उ १ ४७) ।

अहिबण्णं वि [दे] पीसा दीर नाम रंग
बाला (दे १ ३१) ।

अनिषण्णं } ऐको अहिर्मज्जु (पद् ३५) ।
अहिबण्णं }

अहिबली की [अहिबली] नाग-बली (सिंह
५०) ।

अहिबल सक् [अभि + बल] निबल
करना रहना । बह अहिबलसं (स १ ८) ।

अहिबाद्य वि [अभिवाद्य] अभिनिष्ठ
(स ३१४) ।

अहिबाण्य रेको अभिबाण्य (अभि)

अहिबाळ वि [अभिबाळ] वाक्य रखक
(अभि) ।

अहिबास पुं [अभिबास] बासना संस्कार
(दे ७ ८०) ।

अहिबासन न [अभिबासन] संस्कारासन
(संवा ८) ।

अहिबासि वि [अभिबासि] निवासी
(वेद्य १८०) ।

अहिबासिअ वि [अभिबासिअ] धनमा
हुवा कम्पार किया हुवा (स १ १०) ।

अहिबिण्णा की [दे] इत-घातना की उन
पत्नी (दे १ २४) ।

अहिस्सं की [अभिपण्ण] प्रम संवे
(पद्म २२ २२) ।

अहिस्सं की [अभिपण्ण] प्रम हर (पुम
१ १२ १०) ।

अहिस्संमज्ज न [अभिस्संमज्ज] नियन्त्रण
(गठ १) ।

अहिस्संमारज न [अभिस्संमारज] अभिप्राय
(संवा ३ ११) ।

अहिस्संभि पुं की [अभिस्संभि] अध्याय
माध्य (पण्ड १ २ स ४११) ।

अहिस्संभि पुं [दे] बारबार (दे १ १२) ।

अहिस्संमज्ज पुं न [अभिप्यंज] संमुख
मज्ज (पद् २) ।

अहिसर सक् [अभि + स] १ प्रवेश करना ।
२ बन्धने बन्ध—प्रिय के पास जाना । प्रयो,
कर्म अभिवादीप्रिय (दी) (माते) । हित अभि
सारिदु (दी) (माते) ।

अहिसरण न [अभिसरण] प्रिय क समीप
मज्ज (स ३१३) ।

अहिसरिअ वि [अभिसर] १ प्रिय के समीप
पत्त । २ प्रकट (वाक्य) ।

अहिस्सण न [अभिस्सण] सक्क करना
(अ १) ।

अहिस्साअ रेको अक्कम = मा + कम् । अहि
घास्य (माक ७३) ।

अहिस्साम वि [अभिस्साम] कत्ता कृप्य
कण्डे बाला (पठ ३) ।

अहिस्साय वि [दे] पूर्ण पूष (दे १ २) ।

अहिस्सारण न [अभिस्सारण] १ आत्मन
(दे १ १२) । २ पति के लिए संकेत स्थान
पर जाना (गठ ३) ।

अहिस्सारिअ वि [अभिस्सारिअ] घातित (दे
१ ११) ।

अहिस्सारिआ की [अभिस्सारिअ] नायक
को मिलने के लिए संकेत स्थान पर जानेवाली
की (कुमा) ।

अहिस्सिअ न [दे] १ प्रकट वह की घातका
से छेद करना—पेना (दे १ ३) । २ वि
प्रकट वह से मज्जित (पद्) ।

अहिस्सिअ रेको अभिस्सिअ । अहिस्सिअ
(महा) । संक्क अहिस्सिअ (स ११६) ।

अहिस्सिअ न [अभिस्सिअ] धर्मिक (सम
१२२) ।

अहिस्सिअ रेको अभिस्सिअ (महा) मुर न
१११) ।

अहिस्सेअ रेको अभिस्सेअ (पुमा १०-माते) ।

अहिस्सेइ वि [अहिस्सेइ] उद्यन किया हुवा
(अ १०० टी) ।

अहिस्सेअ पुं [अभिप्यंज] घातक (नाम्) ।

अहिस्स वि [अभिस्स] १ घातक-मत्त
(दे २, ७०) । २ मारित व्यापारित (दे १४
१२) ।

अहिस्सर सक् [अभि + स] १ नेना । २
छजना । ३ पन टोफना । चिपटना । ४
प्रतिपक्ष होना लयना

अहिस्सरण सक् [अभि + स] १ नेना । २
छजना । ३ पन टोफना । चिपटना । ४
प्रतिपक्ष होना लयना

अहिस्सरण सक् [अभि + स] १ नेना । २
छजना । ३ पन टोफना । चिपटना । ४
प्रतिपक्ष होना लयना

अहिस्सरण सक् [अभि + स] १ नेना । २
छजना । ३ पन टोफना । चिपटना । ४
प्रतिपक्ष होना लयना

अहिस्सरण सक् [अभि + स] १ नेना । २
छजना । ३ पन टोफना । चिपटना । ४
प्रतिपक्ष होना लयना

अहिस्सरण सक् [अभि + स] १ नेना । २
छजना । ३ पन टोफना । चिपटना । ४
प्रतिपक्ष होना लयना

अहिस्सरण सक् [अभि + स] १ नेना । २
छजना । ३ पन टोफना । चिपटना । ४
प्रतिपक्ष होना लयना

अहिस्सरण सक् [अभि + स] १ नेना । २
छजना । ३ पन टोफना । चिपटना । ४
प्रतिपक्ष होना लयना

अहिस्सरण सक् [अभि + स] १ नेना । २
छजना । ३ पन टोफना । चिपटना । ४
प्रतिपक्ष होना लयना

अहिस्सरण सक् [अभि + स] १ नेना । २
छजना । ३ पन टोफना । चिपटना । ४
प्रतिपक्ष होना लयना

अहिस्सरण सक् [अभि + स] १ नेना । २
छजना । ३ पन टोफना । चिपटना । ४
प्रतिपक्ष होना लयना

अहिस्सरण सक् [अभि + स] १ नेना । २
छजना । ३ पन टोफना । चिपटना । ४
प्रतिपक्ष होना लयना

अहिस्सरण सक् [अभि + स] १ नेना । २
छजना । ३ पन टोफना । चिपटना । ४
प्रतिपक्ष होना लयना

अहिस्सरण सक् [अभि + स] १ नेना । २
छजना । ३ पन टोफना । चिपटना । ४
प्रतिपक्ष होना लयना

अहिस्सरण सक् [अभि + स] १ नेना । २
छजना । ३ पन टोफना । चिपटना । ४
प्रतिपक्ष होना लयना

अहिस्सरण सक् [अभि + स] १ नेना । २
छजना । ३ पन टोफना । चिपटना । ४
प्रतिपक्ष होना लयना

अहिस्सरण सक् [अभि + स] १ नेना । २
छजना । ३ पन टोफना । चिपटना । ४
प्रतिपक्ष होना लयना

अहिस्सरण सक् [अभि + स] १ नेना । २
छजना । ३ पन टोफना । चिपटना । ४
प्रतिपक्ष होना लयना

अहिस्सरण सक् [अभि + स] १ नेना । २
छजना । ३ पन टोफना । चिपटना । ४
प्रतिपक्ष होना लयना

अहिस्सरण सक् [अभि + स] १ नेना । २
छजना । ३ पन टोफना । चिपटना । ४
प्रतिपक्ष होना लयना

अहिस्सरण सक् [अभि + स] १ नेना । २
छजना । ३ पन टोफना । चिपटना । ४
प्रतिपक्ष होना लयना

अहिस्सरण सक् [अभि + स] १ नेना । २
छजना । ३ पन टोफना । चिपटना । ४
प्रतिपक्ष होना लयना

अहिस्सरण सक् [अभि + स] १ नेना । २
छजना । ३ पन टोफना । चिपटना । ४
प्रतिपक्ष होना लयना

अहिस्सरण सक् [अभि + स] १ नेना । २
छजना । ३ पन टोफना । चिपटना । ४
प्रतिपक्ष होना लयना

अहिस्सरण सक् [अभि + स] १ नेना । २
छजना । ३ पन टोफना । चिपटना । ४
प्रतिपक्ष होना लयना

अहिस्सरण सक् [अभि + स] १ नेना । २
छजना । ३ पन टोफना । चिपटना । ४
प्रतिपक्ष होना लयना

अहिस्सरण सक् [अभि + स] १ नेना । २
छजना । ३ पन टोफना । चिपटना । ४
प्रतिपक्ष होना लयना

अहिस्सरण सक् [अभि + स] १ नेना । २
छजना । ३ पन टोफना । चिपटना । ४
प्रतिपक्ष होना लयना

अहिस्सरण सक् [अभि + स] १ नेना । २
छजना । ३ पन टोफना । चिपटना । ४
प्रतिपक्ष होना लयना

आ घ [आ] मोक्ष दत्त (पृ ११ ११) ।
 आ घ [आस्] इत घर्षो का घृषक धर्म्य-
 १ खर (भा १२६) । २ कुत्त । ३ कुत्ता
 घोष (कृष्ण) ।
 आ घ [या] बाता । 'धर्मो ए धामि सेत'
 (पा ८२१) ।
 आघ वि [वे] १ धर्म्य बहूत । २ शीर्ष
 सन्धा । ३ विषम करिज । ४ न. मोक्ष
 मोक्षा । ५ सुपन सुपन (रे १ ७३) ।
 आघ वि [आघात] घाया हुआ 'पल्लवि
 घाघरेसा' (से १२ २८) कुमा ।
 आघम वि [आघात] घाया हुआ (से १ ४
 १२ १८) या १ (१) ।
 आघय वि [आयत] सन्धा विस्तीर्ण (से
 ११ ११) ।
 'मणायसुविर्धनं मोक्षं विपद्ममयमोक्षो ।
 मोक्षो वाक्प्राप्तिं तल्लयमयं जम्बविक्रमं'
 (पा ११४) ।
 आघेक्षक [कृ] १ लोचना । २ मोक्ष
 वात्त करण । ३ रेखा करण । घातक (पठ) ।
 आघेयव्य द्यो आगम = घा + व्य ।
 आघेयुम द्यो आगम्युय (स्वय २ धमि
 १२१) ।
 आर्जयिज द्यो आर्जयिष (से १ ११) ।
 आर्जव वि [आर्ताव] शीघ्र माल (से १, ११;
 मूर १ ११) ।
 'आर्जव पुं [आर्जव] इह पथि-विशेष (से
 १ ११) ।
 आर्जवस सक [आ + अर्ज] कृता
 कोणा लोभन करण । घाघर्षादि (मर) ।
 कर्म. घाघर्षादीर्ष (शी) (माट) । मुक्ष घाघ-
 र्षादि (शी) (मर) ।
 आर्जव द्यो आगम्य । घाघर्षादि (पठ) ।
 घंक्ष. आर्जविक्रम आर्जविक्रम (माट)
 वि १८१ १८४) ।
 आर्जव सक [वे] परस्पर हीकर चमना ।
 घाघर्षादि (रे १ ११) ।
 आर्जव सक [क्या + पू] व्यापृत होना काम
 में लक्ष्मी । घाघर्षादि (पठ) पठ । घाघर्षादि
 (रे ४ ८१) ।
 आर्जविक्रम वि [वे] परस्परमिष्ट हृदये की
 प्रेरणा से चमना हुआ (रे १ ९८) ।

आर्जविक्रम वि [क्यापृत] कार्य में चमना हुआ
 (कुमा) ।
 आर्जविक्रम द्यो आगम्य (पा ११२) ।
 आर्जविक्रम द्यो आगम्य (मिग) ।
 आर्जव द्यो आगम्य (माट १२ संति १) ।
 आर्जव द्यो आगम्य (मयु ७ धमि १८४
 या ४७९ स्वय ४८) मुखा पठ ।
 आर्जविक्रम द्यो आगम्य (मि १ २ मुखा
 १८४) ।
 आर्जव सक [आ + ह] घाघर्षादि करण लक्ष्मी
 करण । घाघर्षादि (पठ) ।
 आर्जव न [वे] १ लक्ष्मी लक्ष्मी । २ लक्ष्मी
 (रे १ ७४) ।
 आर्जव पुं [वे] १ शीघ्र, शीघ्रता (रे १ ७४,
 पाय) । २ वि लक्ष्मी लक्ष्मी (रे १ ७४) ।
 द्यो आगम्य ।
 आर्जविक्रम की [वे] लक्ष्मी लक्ष्मी से विभिन्न
 आर्जविक्रम } प्रेरण (रे १ ११) ।
 आर्जव सक [वे] लक्ष्मी । घाघर्षादि
 (पठ) ।
 आर्जविक्रम द्यो आगम्य (धमि ८१) ।
 आर्जव द्यो आर्जव (पठ) ।
 आर्जविक्रम [वे] द्यो आर्जविक्रम (पठ) ।
 आर्जव सक [आ + ह] प्रहृष्ट करण सेना ।
 घाघर्षादि (मय १ ७ २१) । घाघर्षादि (मय) ।
 कर्म. घाघर्षादि (कर्म) । घाघर्षादि
 घाघर्षादि, आर्जव (घाघर्षा मय १ १२
 वि १७७) । प्रयो घाघर्षादि (मय २, १) ।
 ह आर्जविक्रम (कर्म) ।
 आर्जव पुं [आर्ज] १ प्रथम पहना (मूर २
 ११२) । २ बनेछ, प्रहृष्टि (मी १) । ३
 लक्ष्मी पास । ४ प्रकार, मेघ । ५ मयव
 मय । ६ प्रथम मुक्त 'हृदयसंति विस्तीर्ण' ।
 विस्तीर्णाली विधा मुक्त (कुमा मय १
 १२) । ७ लक्ष्मी (स्वय ११) । घाघर्षादि (मय १ ७) ।
 गार वि [कर] १
 घाघर्षादि (मय १) । २ पुं मयव
 मयविक्रम (स्वय २८ ११) । गुण पुं [गुण]
 घाघर्षादि (पाय ४) । गुण पुं [गुण]
 मयविक्रम (मयविक्रम) । विस्तीर्ण पुं
 [लक्ष्मी] मयविक्रम (मयविक्रम) ।
 देव पुं [देव] मयविक्रम (मय १

११२) । मय पुं [म] प्रथम घाघर्षादि
 (पाय १) । मय न [मय] मुक्त करण
 (पाय) 'मयविक्रम पुं [मय] संसार से
 मुक्त, मोक्ष । २ शीघ्र ही मुक्त होना लक्ष्मी
 घाघर्षादि 'हृदयसंति से विभिन्न घाघर्षादि
 हि वे चमना' (मय १ ७) । घाघर्षादि पुं
 मयविक्रम (मयविक्रम) (हा १) । घाघर्षादि पुं
 'घाघर्षादि' मुक्त घाघर्षादि (से ७ २) ।
 आर्जव वि [आर्ज] घाघर्षादि (मय १ ८
 ११) ।
 आर्जव की [आर्ज] घाघर्षादि (मय १) ।
 आर्जविक्रम द्यो आर्जविक्रम (मय १२ १) ।
 आर्जव वि [वे] लक्ष्मी की लक्ष्मी के लिए प्रहृष्ट
 किया जाने वाला घाघर्षादि (मय १ २) ।
 आर्जविक्रम की [वे] १ लक्ष्मी विस्तीर्ण
 आर्जविक्रम } कर्म-विस्तीर्ण लक्ष्मी (पठ
 आर्जविक्रम } २७१ टी—मय १८२, हृद
 १) । २ लक्ष्मी लक्ष्मी (हृद १) ।
 आर्जव वि [वे] लक्ष्मी-विस्तीर्ण (पठन १ ८७
 ११ १) ।
 आर्जव द्यो आर्जव । घाघर्षादि (मय) ।
 आर्जव द्यो लक्ष्मी = घा + लक्ष्मी । घाघर्षादि
 (माट ७१) ।
 आर्जविक्रम पुं [आर्जविक्रम] घाघर्षादि (मय
 ४११) ।
 आर्जविक्रम वि [आर्जविक्रम] घाघर्षादि-लक्ष्मी
 (मयवि ८ टी) ।
 आर्जव द्यो आर्जव । घाघर्षादि (हृद ४ ८७) ।
 आर्जविक्रम सक [आ + अर्ज] कृता घा-
 घर्षादि सेना लक्ष्मी घाघर्षादि (मय) । घाघर्षादि
 घाघर्षादि (मय १ २) । घाघर्षादि
 विस्तीर्ण (मय) ।
 आर्जविक्रम वि [आर्जविक्रम] घाघर्षादि-लक्ष्मी
 कर्म (मय २ ४) ।
 आर्जविक्रम न [आर्जविक्रम] कर्म, लक्ष्मी
 (हृद १) ।
 आर्जविक्रम वि [आर्जविक्रम] सक घाघर्षादि
 (हृद १२) ।
 आर्जविक्रम की [आर्जविक्रम] १ लक्ष्मी
 कर्म (मय १ १) । २ एक प्रकार की
 लक्ष्मी विधा विस्तीर्ण लक्ष्मी-मुक्त-लक्ष्मी
 लक्ष्मी पठन लक्ष्मी (हा १) ।
 आर्जविक्रम वि [आर्जविक्रम] लक्ष्मी लक्ष्मी (मय) ।

आ प्र [आ] मोने घन (पृ ३३, १६) ।
आ प्र [आस्] इन मनी का मुक्क घणय-
१ खेर (पृ ३२९) । २ दुःख । ३ गुस्ता
मोन (कृष्ण) ।

आ सठ [या] याना । 'अमो लु यामि सेर'
(पृ २२१) ।

आम नि [ने] १ धर्यत बहुत । २ दीर्घ
लम्बा । ३ विषम कठिन । ४ न सोझ
मोहा । ५ मुक्क मूलत (रि १ ७१) ।

आम नि [आम] याना हुमा 'पयसि
पायसीस' (रि १२ ३८३ कुमा) ।

आमन नि [आमन] याना हुमा (रि १ ४
१२ १० मा १ १) ।

आअम नि [आयम] यन्मा भित्तौले (रि
११ ११) ।
'मरममुहीबं मीतिरं पिहयद्रायमयोरो ।
मोरो पाठयमासे तण्णायगमो जयपिण्ड'
(पृ ३३४) ।

आअम चक [कप्] १ बीजना । २ मोउता
बाध करना । ३ रूखा करना । पार्थिव (पृ ३) ।
आअमव्य वेको आगम = घा + म ।
आअमव्य वेको आअमव्य (स्वप्न २ धर्मि
१२१) ।

आअमिअ वेको आअमिअ (रि १ ३१) ।
आअम नि [आताव] योका मल (रि २, ११
मूर १ ११) ।

'आअम [उ] क्रयन्' ईय पति-विरोध (रि
२, ११) ।

आअमल चक [आ + चक्] कृता
कृता जारेता करना । घमस्काधि (पृ ३) ।
कर्म, घामस्काधि (रौ) (गट्ट) । मुक्क घाम-
विह्वर (रौ) (गट्ट) ।

आअमल वेको आअमल । घामस्काधि (पृ ३) ।
चक आअमल आअमलकृण (गट्ट
रि ३८१, ३८२) ।

आअमल चक [ने] परवत होकर बनना ।
घामपू (रि १ १२) ।

आअमल चक [आ + पू] व्यापृत होना काम
में लगना । घामपू (सठ पृ ३) । घामपू
(रि ४ ८१) ।

आअमिअ नि [ने] परवतकर्मि हुने की
प्रेक्षा हो बना हुमा (रि १ ९८) ।

आअमिअ नि [आपूत] कर्म में लगा हुमा
(कुमा) ।

आअमणन वेको आअमणन (ग १३३) ।
आअमिअ वेको आअमिअ (पिण्ड) ।

आअम वेको आअम (गट्ट १२ संति ६) ।
आअम वेको आअम (मपू ७ धर्मि १८४
ग ४७१ स्वप्न ४८ मूर ८९) ।

आअमन वेको आअमन (रि १ २ मूर
१८७) ।

आअम चक [आ + ट] घात करना, मार
करना । घामपू (पृ ३) ।

आअम न [ने] १ लुब्धक उग्रता । २ दूर्ध्व
(रि १ ७४) ।

आअम दु [ने] १ रोम, बीमारी (रि १ ७३
पाप) । २ नि बन्धन बन्धन (रि १ ७३) ।
वेको आअमन ।

आअमिअ } की [ने] यन्मा लतामें से निगिअ
आअमिअ } प्रेषा (रि १ ११) ।

आअमन चक [वेप्] कोषता । घामपू
(पृ ३) ।

आअमिअ वेको आअमिअ (धर्मि ८१) ।

आअमन वेको आअमन (पृ ३) ।

आअमलचक [ने] वेको आअमलचक (पृ ३) ।
आअ चक [आ + चक्] कृत करना सेना ।

घामपू (गुप १ ७ २३) । घामपू (नर) ।
कर्म, घामपू (कर्म) । चक आअमल
आअमल, आअमल (घमा मूर १ १२
पि ३७७) । प्रयो. घामपू (गुप २ १) ।
च. आअमल (कर्म) ।

आअ दु [आमि] १ प्रथम पहला (मूर २
१३२) । २ वर्यह, प्रयुति (मी ३) । ३
धर्मो पाठ । ४ प्रकार, मेर । ५ मरमन
मेट । ६ प्रथम मुक्क 'अममलसि विमोह'
विह्वरताएली विमा मुग्ग' (कुमा मूर १
१२) । ७ जगति (स्वप्न २३) । ८ संसार,
मुक्क (गुप १ ७) । गर नि [कर] १
पति प्रवर्तक (धर्म ११) । २ दु मरमन
अमनेर (स्वप्न २८ ३८) । गुप दु [गुम]
खुशी गुल (मा ४) । गुम दु [गाम]
फलान् अमनेर (घामन) । विह्वर दु
[वीह्वर] यन्मा अमनेर (धर्मि) ।
'ह्वर दु [ह्वर] मरमन अमनेर (मूर १

१३२) । म दु [म] प्रथम पाप पहला
(घाम ३) । मूख न [मूख] मुक्क कारण
(पाषा) माफल दु [मोक] संसार से
कुत्तरा मोल । २ रौध ही मुक्क होने वाली
घामा 'ह्वोघो न ए वेरति घामोका
हि व जला' (गुप १ ७) । राय दु [राम]
भामान् अमनेर (अ १) । बराह दु
[बराह] कृष्ण नायक (रि ७ २) ।
आइ नि [आमिअ] कलेकाला (वेरा १८
१३) ।

आइ की [आमि] संघाम लहारी (वेरा) ।
आइमिअ वेको आअमिअ (धर्म १२, १) ।
आइ म [ने] नाय की रोमा के विप प्रयुक्त
विमा जले बना घामन (मप ३ २) ।

आइमग } की [ने] १ वेरा-विरोध
आइमगिया } कर्ण-विरोधिका वेनी (पृ
आइमगिया } २७३ टी-यन् १८२, १८३
१) । २ वेमिनी बांझी (इह १) ।

आइम न [ने] नाय-विरोध (स्वप्न ३ ८७
२६ ९) ।

आइम वेको आअम । आइम (नर) ।

आइम वेको आअम = घा + म । आइम
(गट्ट ७३) ।

आइमवार दु [आमिअवार] रिवार (गुप
४१२) ।

आइमिअ नि [आमिअ] घामिअ-संघामि
(गुपि ८ टी) ।

आइम वेको आअम । आइम (रि ४ १८७) ।
आइमल चक [आ + चक्] कृता, ल-
केट केना मोलना घामपू (नर) । मर
आइमलम (गुमा १ १२) । इह आइ
किअप (नर) ।

आइमल नि [आमिअ] कृतेवता
नर (पृ ४ ४) ।

आइमल न [आमिअ] कर्म, कर्तेव
(इह ३) ।

आइमिअ नि [आमिअ] चक कर्मि
(धर्म १२) ।

आइमिअ का [आमिअ] १ बाता
कहाती (लोमा १ १) । २ एक प्रकार की
मेती विमा विह्वर बाइमिनी मुट-कल घामि
की परवत बनें कही है (हा ६) ।
आइम नि [आमिअ] उमिअ नि (पाप) ।

अहुस वि [अहुस] परिचित (हुसा) ।
अहुस्य वरु [अमपय] न होवा हुसा
(हुसा) ।
अहुस्य देवो अहीण = अहीन (हुसा) ।
अहुस वि [अमन] को न हुवा हो पुकर
वि [पुक्] को पुहने कमी न हुवा हो (हुसा) ।
अहु घ [अपस] बीज (घावा) । कम
न [कमन] पागानन मिठा का एक बीज
(विह) । अहु पु [अय] अहोर का बीजता
हिमा (मूय १ ४ १) । पार वि [अर]
विन घावि न एते बाने वं बण्ड कणु
(घावा) । तावा पु [तारक] पिशाच
विरोध (पणु १) । हिमा छी [हिम]
बीज बी रिता (घावा) । अहु पु [अहक]
पागान-लोक (हा २ २) । बाय पु [बाय]
बीज बनेतावा बाय (पणु १) । २ घात
बाय वरन (घावा) । विहड वि [विह]
विहविहविह अयन गुहा अयन रति
घात घाविने घरेविह अहिवान् घरे
(घावा) । मत्तमा छी [मत्तमी] हाउनी
वा घन्तिन बरानुमि (मय ४१ एमा १
१९ १६) । देवी अहा = घान् ।
अहु देवी अह = घन (मा १ ५) ।
अहु पु [अहु] १ छय हेनु का विरोधी
लगायन (हा १) । २ वि बारणुविह
विह (मूय १ १) । बाय पु [बाय]
घानपाय, शिवन नह—हेनु बी घावर

केवल राजा ही प्रमाण माना जाता हो ऐसा
बार (मय १४) ।
अहुस्य वि [अहुस] हेनुविह निवारण
(वम २३ ४) ।
अहेकम्म पुन [अय कम्म] १ घरीविह में
मे जाने काना कमे । २ मिठा का घावाकमे
बीज (विह २९) ।
अहुसगिज वि [अधेरबीज] अहसरविह
कोय 'अहेनविह' काना 'आए' (घावा) ।
अहसर पु [अहसर] नून गूज (महा) ।
अहा देवी अह = घन (मय १९ हा २ २
१ १ मय एमा १ १ पम १ २, व १
मा १) ।
कम न [करग] कनह, काहा (विह
१) । गह की [गत] १ नरक का निर्वाण
बीज । २ घानविह (पम ४९) । गामि
वि [गामि] कुर्वि में कनेकाना (मय
१२१ मा ११) । नरन न [नरन] कनह
मया (विह १) । सुह वि [सुह]
घनोपुन घनन पुन लविह (मुर २, १२ का
१ १२२ गुहा १४२) । अहुस वि
[अहिक] पागान लोक मे अहय घने
काता (मय १४२) । हि वि [अवधि]
१ बीजे बनी का घानिहात काना (घाव) ।
२ पुष्टि बीजे बनी का घानिहात घन
विहात का एक बीज (हा १ २) ।
अहा घ [अहवि] विह में अही न रावी

य विहाविहाविहो (पम ११; १२ का पणु
२, १) ।
अहो घ [अहो] हन घनी का घन घनप—
१ विहय घावविह । २ बीज, बीज । ३ मय
मय संवीपन । ४ विहक । ५ प्रविह । ६
मयुवा देव (हि २, २१७ घावा पणु) ।
बाय न [बाय] घावविह-बारक बल (उत
२) कण । पुविहिमा, पुविहिमा छी
[पुविहिमा] घन घनियन (घ १२१
२८८) । विहार पु [विहार] संम का
घावविहक घनियन (घावा) ।
अहो घ [अहो] बीजता-मूयक घनप (पणु
११) ।
अहो पुन [अहो] विह, विहविह (विह) ।
अहिस निस निसि न [निहा] राय बीर
विह विह-राय 'विह' छेरविहविह अहोविह
पमपाणु (मूय १ २, १ मा १) । अही
अहीविहविह ३ (विह ८७१) । एत पु
[एत] १ विह बीर राय परिमय का
घात अह (हा २, ४) । निहिल अहोरा
पुन न घानिहात कविह (पम ४१ ११) ।
२ बार अह का मयन (बी २) । एहय
छी [एहिक] घावविहक घनियन विह
(व १) ८ मा ४ घन २१) । एहविह
न [एहिक] विहविह (मय बीर) ।
अहोएन न [अहो] एतविह कन, बार (हि १
२३, मा ७१) ।

य निविहाअमहसहजवे अवापाअमहसहजलो
एत पणु बीज बीज मयतो ।



श्री

आ १ [आ] १ कान बनेतावा का बिह
नर नरु (हावा) । हन घनी का घन
कन—१ घ घानिहात बीज का
हु (हा १ वि ४३२) । २ अहिविह
अहिविह अहिविहविह (हुसा
१ १ १) । ४ घानिहात काना

वागिहातवा (मुर कण) (व २३) घानि
(वि १११ विह १२१२) । ५ मयन
घानिहात घानिहात विहविहविह
वागिहातविहविह (मय विह ८३२) ।
६ घानिहात विहविह 'वागिहात' (मय
१२) । ७ मयन का (व २) । मयन

घानिहात (हा २) । ८ १ विहविह के बीज
में घानिहात बीर विहविह 'वागिहात'
'वागिहात' (व २, हुसा) । ९ १ घानिहात बी
बीज के विह बीज कन अहो होवा है
(एमा १ ७) । ११ घानिहात में घानिहात
का घानिहात (म १ १ ७५) ।

(बीष १) । बरोमासमाहावर पुं [बराव
मासमाहावर] समिनबपनास नामक समुद्र
का समिनता देव (बीष १) । बरोमासवर
[बरावमासवर] देवो पल्लवलेक धर्म
(बीष १) ।

आईनीह बी [आदिनीति] सामकर पक्षी
राकनोति (मुवा ४१२) ।

आइय देवो आइ = आदि (बी ७- कल) ।

आइय वि [आदीति] १ विरोध बात । २
संसार-प्राप्त संसार में ब्रह्मदेवा (माषा) ।

आईह पुन [आपीह] पान का घूँसा
(पन) ।

आईह घक [आ + दीप्] बनरुता । बह-
आइबनाम (महावि) ।

आईसर पुं [आसासर] मनसाम श्रमकोय
(सिरे २२१) ।

आइ बी [रे] १ पानी बस (रे १ ११) ।

२ इत नाम का एक लकड़-बैठ (अ २ १) ।

अय अय पुं [अय] बल का बीष
(अ १८५ परल १) । अय बलहय
[अयिक] बल का बीष (परल १
स १४ ११) । बीष पुं [बीष] बल
का बीष (सुप १ ११) । बलुह वि
[बलुह] १ बल-प्रद । २ लयदा सुवि
का सुवी काल (सम ८८) ।

आइ य [य] पक्षी, या 'घाउ पकोहे' में
मजदतवेण कोह मनसुगो घाउ पक्षी
के घाउलोति' (स १४९) ।

आइ न [आमुप] १ पाप, बीष-
आइअ [कल (हुमा परल ११) । २ बगर,
य (मा १२१) । ३ पाप के कारणमुप कर्त-
पुरात (अ ८) । आइ पुं [अस] मरण
मुप (माषा) । कलह पुं [सुप] मरण
मौत (विवा १ १) । कलम न [कलम]
असु-ललन मोहन (माषा) । 'बिजा बी
[विद्या] बल-पनाक, विविधराक
(माष) । कलह पुं [बह] बलक, विविध-
राक (विवा १ ७) ।

आईय घक [आ + कुल्य] संकुचित
करता, संकेत । घह-आईबि (बन)
(बह) ।

आईयन न [आकुलन] संकोच पावसंसेप
(कव) ।

आईयणी बी [आकुलना] ऊपर देवो
(पर्म १) ।

आईयि वि [आकुलि] १ संकुचित । २
छटा कर बारण किया हुआ (सि १ १७) ।

आईयि वि [आकुलि] १ संकुचनरता ।
२ निबल (पउठ) ।

आईट देवो आइट = पवसंप् । आइटवेति
(छमा १ १) ।

आईट घक [आ + कुल्य] संकोचता
प्रया संकु आइटाबिल (व २) ।

आईटय न [आकुलन] घाबर्न (पंचा
१७ ११) ।

आईटय न [आकुलन] संकोच पाव-संसेप
(हि १ १७७) ।

आईबालिय वि [रे] घाम्बित हुआ
हुवा पानी पावि बरलध से ब्यास (वाप) ।

आइह देवो आइ = घाट्ट (मुवा ११३)
आइग [म १ १) ।

आइय घक [आ + मय] घात्र लेय
पनुमा सेता । बह आइयठें, आइयठमाय
(सि १२ २१ ४७) । घह आइयठिकय,
आइयठिक (महा मुवा ११) ।

आइयघन न [आयघन] घात्रा पनुमा
(मा ४७ १) ।

आइयघना बी [आयघना] प्रल (पंचा
१२, ११) ।

आइयघा बी [आयघा] घात्रा (सुप
१२४) ।

आइयघय वि [आयघ] तिमसी घात्रा बी
गई बी बह (सि १२, १४) ।

आइय देवो आइय = घाट्टेय (हि १
१२१) ।

आइय पुं [आय] १ संकुच करता । २
सुम भिया (मण ११) ।

आइय वि [आय] मनुष्य करने योग्य
(माष) ।

आइय वि [आय] बीघने योग्य लय
करने योग्य (सि ७ १२११) ।

आइय वि [आय] घाट्ट बरनेवाता
(मुवा १११) ।

आइय वि [आय] लयनीवाता
वाकनाम (म २ ५) ।

आइयि वि [आयि] संकुच किया
हुवा (मण ११) ।

आइयि बी [आयि] भिया ब्यापार
(पाषम) । कर्म न [करय] सुम ब्यापार
विरोध (परल ११) ।

आइयि करय न [आयि करय] सुम
ब्यापार-विरोध (परल ११) ।

आइय घक [आ + घट्ट] १ करता । २
मना । ३ बरता करता । ४ घक
संकुच होता छपर होता । ५ निवृत्त होता ।
६ बमता करता । घाट्ट, घाट्टेय (म ७
१ निवृ १) । बह-आइयठें (सम २२) ।
घह-आइयठिक (पन) । घह-आइयठिक
(कप) । प्रयो घाट्टेय (छमा १ १
४) ।

आइय घक [आ + घट्ट] घेरन करना
विद्या करता । घाट्टेय (माषा) ।

आइय वि [आय] १ निवृत्त कोषे विव
हुवा (अ ११८) 'बनकर घाट्टेय वह
विष त लयि वहे' (बह १) । २ प्रमि
मुवाता हुआ (अ २) । ३ लैक-लैक
बलित (माषा) । ४ इत विविध (पन) ।

आइय पुं [आइय] घेरन किया (सुप १
१) ।

आइय वि [आय] घाट्ट-मुक (विह
आइयि १११५ प ११२) ।

आइय न [आइय] हिवा (सुप १ १) ।
आइय न [आय] १ घाट्टन सेना
भिक (ब १ १) । २ घाट्टन होता, छपर
होता (सुप १ १) । ३ घाट्टना हक
(माषा) । ४ घाट्टना प्रमण । ५ विविध
(सुप १ १) । ६ करता किया इति
(पन) ।

आइयघा बी [आय] घाट्टना घाट्टना
(सिरे) ।

आइयघा बी [आय] ऊपर देवो (निवृ
२) ।

आइयघन न [आय] घाट्टन करना
छपर करता (माषा २) ।

आइय सक् [अ + इ] लुक्। आइय, आइय (पर)। ईह आइयि (पुमा)।

आइय म [इ] वचायि, बोझार (पल्ल १७-पल्ल ४ ३)।

आइय दु [आइय] १ मूर्त सुख रवि (छम ३६)। २ लोकार्थक वेन-विरोध (छमा १ न)। ३ न वेनिनाल-विरोध। ४ नु उमिवासी के (पर)। ५ वि वाय प्रम (छम २)। ६ मूर्त-वर्णनी 'आइये छ मसो' (छम ३६)। गइ दु [गति] एवय बरा के एक राधा का नाम (पञ्चम ३ २९१)। अस दु [बरास्] मण्ड बन्धनी का एक पुन कियं बन्धन बरा नी राधात्म्य सुवर्ण की उत्पत्ति हुई की (पञ्चम ३ ३)। सुर २ १३४)। पम न [प्रम] हय नाम का एक मगर (पञ्चम ३ २)। पीठ न [पीठ] मन्थान, अथर्ववेद का एक स्मृतिविद-पाव-पीठ (भाष्य)। रबस् दु [रबस्] इस नाम का लकड़ा का एक रज्जु (पञ्चम ३ १६६)। रय दु [रबस्] बानर रा का एक निवारण लका (पञ्चम २३४)।

आइय केओ आपल (न १४)।

आ'लमाय क [आ'लमाय] मय निमा बला भीमा बला (महा)।

आइय माण केओ बाका - य + इ।

आइय वि [आइय] १ छक् कयिष्ठ (सुर ४ १ १)। २ विमलित (छमा ३)।

आइय वि [आइय] प्रविष्टि प्रविष्टि (कस)।

आइय केओ [आइय] बारा (छ ७)।

आइयि केओ [आइयि] प्रमा की लखि प्रमायि वल्लर (म १ ३)।

आइयिहय वि [आइयिहय] प्रमायि लखि-वर्णन (म १ ३)।

आइयिहय वि [आइय] बीका हुमा (हमीर १७)।

आइय केओ आइय = (३) (पुं २)।

आइय केओ आइय (दीप म ७ ३ १ १३४)।

आइय वि [आइय] नोका प्रविष्टि-न वि (छमा १ १)।

आइय वि [आइय] प्रवीर, प्रवीर 'पुनम मिठि का परल परल' (बीका १)।

आइय वि [आइय] प्रहय करो बला (छ ७)।

आइय केओ आइय = य + इ।

आइय न [आइय] प्रविष्टि-प्रकार (मा २१)।

आइय की [आइय] प्रवार (मा २१)।

आइय वि [आइय] १ प्रार (सि १ १)। २ प्रार, प्रार (सि ३ ३३)। ३ प्रार हुमा प्रविष्टि (मा ३ न)।

आइय वि [आइय] प्रार (छमा १ १)।

आइय वि [आइय] १ प्रार मय हुमा (सुर १ ४६, ३ ७१)। २ नु बक बायक वरुमा (छ १)।

आइय वि [आइय] १ प्रार मय हुमा (सुर १ ४६, ३ ७१)। २ नु बक बायक वरुमा (छ १)।

आइय वि [आइय] १ प्रार मय हुमा (सुर १ ४६, ३ ७१)। २ नु बक बायक वरुमा (छ १)।

आइय वि [आइय] १ प्रार मय हुमा (सुर १ ४६, ३ ७१)। २ नु बक बायक वरुमा (छ १)।

आइय वि [आइय] १ प्रार मय हुमा (सुर १ ४६, ३ ७१)। २ नु बक बायक वरुमा (छ १)।

आइय वि [आइय] १ प्रार मय हुमा (सुर १ ४६, ३ ७१)। २ नु बक बायक वरुमा (छ १)।

आइय वि [आइय] १ प्रार मय हुमा (सुर १ ४६, ३ ७१)। २ नु बक बायक वरुमा (छ १)।

आइय वि [आइय] १ प्रार मय हुमा (सुर १ ४६, ३ ७१)। २ नु बक बायक वरुमा (छ १)।

आइय वि [आइय] १ प्रार मय हुमा (सुर १ ४६, ३ ७१)। २ नु बक बायक वरुमा (छ १)।

आइय वि [आइय] १ प्रार मय हुमा (सुर १ ४६, ३ ७१)। २ नु बक बायक वरुमा (छ १)।

आइय वि [आइय] १ प्रार मय हुमा (सुर १ ४६, ३ ७१)। २ नु बक बायक वरुमा (छ १)।

आइय वि [आइय] १ प्रार मय हुमा (सुर १ ४६, ३ ७१)। २ नु बक बायक वरुमा (छ १)।

आइय वि [आइय] १ प्रार मय हुमा (सुर १ ४६, ३ ७१)। २ नु बक बायक वरुमा (छ १)।

आइय वि [आइय] १ प्रार मय हुमा (सुर १ ४६, ३ ७१)। २ नु बक बायक वरुमा (छ १)।

आइय वि [आइय] १ प्रार मय हुमा (सुर १ ४६, ३ ७१)। २ नु बक बायक वरुमा (छ १)।

आइय वि [आइय] १ प्रार मय हुमा (सुर १ ४६, ३ ७१)। २ नु बक बायक वरुमा (छ १)।

आइय वि [आइय] १ प्रार मय हुमा (सुर १ ४६, ३ ७१)। २ नु बक बायक वरुमा (छ १)।

आइय वि [आइय] प्रार मय हुमा (सुर १ ४६, ३ ७१)। २ नु बक बायक वरुमा (छ १)।

आइय वि [आइय] प्रार मय हुमा (सुर १ ४६, ३ ७१)। २ नु बक बायक वरुमा (छ १)।

आइय वि [आइय] प्रार मय हुमा (सुर १ ४६, ३ ७१)। २ नु बक बायक वरुमा (छ १)।

आइय वि [आइय] प्रार मय हुमा (सुर १ ४६, ३ ७१)। २ नु बक बायक वरुमा (छ १)।

आइय वि [आइय] प्रार मय हुमा (सुर १ ४६, ३ ७१)। २ नु बक बायक वरुमा (छ १)।

आइय वि [आइय] प्रार मय हुमा (सुर १ ४६, ३ ७१)। २ नु बक बायक वरुमा (छ १)।

आइय वि [आइय] प्रार मय हुमा (सुर १ ४६, ३ ७१)। २ नु बक बायक वरुमा (छ १)।

आइय वि [आइय] प्रार मय हुमा (सुर १ ४६, ३ ७१)। २ नु बक बायक वरुमा (छ १)।

आइय वि [आइय] प्रार मय हुमा (सुर १ ४६, ३ ७१)। २ नु बक बायक वरुमा (छ १)।

आइय वि [आइय] प्रार मय हुमा (सुर १ ४६, ३ ७१)। २ नु बक बायक वरुमा (छ १)।

आइय वि [आइय] प्रार मय हुमा (सुर १ ४६, ३ ७१)। २ नु बक बायक वरुमा (छ १)।

आइय वि [आइय] प्रार मय हुमा (सुर १ ४६, ३ ७१)। २ नु बक बायक वरुमा (छ १)।

आइय वि [आइय] प्रार मय हुमा (सुर १ ४६, ३ ७१)। २ नु बक बायक वरुमा (छ १)।

आइय वि [आइय] प्रार मय हुमा (सुर १ ४६, ३ ७१)। २ नु बक बायक वरुमा (छ १)।

आइय वि [आइय] प्रार मय हुमा (सुर १ ४६, ३ ७१)। २ नु बक बायक वरुमा (छ १)।

आइय वि [आइय] प्रार मय हुमा (सुर १ ४६, ३ ७१)। २ नु बक बायक वरुमा (छ १)।

आइय वि [आइय] प्रार मय हुमा (सुर १ ४६, ३ ७१)। २ नु बक बायक वरुमा (छ १)।

आइय वि [आइय] प्रार मय हुमा (सुर १ ४६, ३ ७१)। २ नु बक बायक वरुमा (छ १)।

आइय वि [आइय] प्रार मय हुमा (सुर १ ४६, ३ ७१)। २ नु बक बायक वरुमा (छ १)।

आइय वि [आइय] प्रार मय हुमा (सुर १ ४६, ३ ७१)। २ नु बक बायक वरुमा (छ १)।

आइय वि [आइय] प्रार मय हुमा (सुर १ ४६, ३ ७१)। २ नु बक बायक वरुमा (छ १)।

आइय वि [आइय] प्रार मय हुमा (सुर १ ४६, ३ ७१)। २ नु बक बायक वरुमा (छ १)।

आइय वि [आइय] प्रार मय हुमा (सुर १ ४६, ३ ७१)। २ नु बक बायक वरुमा (छ १)।

आपस धु [आधेरा] १ शब्दा। २ प्रकाश, रीति (संवि १८४)। ३ वि नीचे शब्दो (सिंह २३)।

आपस रेवो आनस (सम १४ २)।

आपस } धु [आधेरा] १ उपदेश शिवा।
आपसग } २ शब्दा बहुवचन (महा)। ३ विवक्षा सम्पत्ति (सम १७)। ४ धादिनि बहुमान (सम २ १ २६)। ५ प्रकाश, मेरु नीचे रीति। ६ कालाष्टरेण कि सप्रेत धारण" (सम १ ४ नीच २ विवे ४ ३)। ७ निर्देश (सिंह)। ८ प्रमाण। ९ न बहुवचनं वा मीर एव इत्य आपसो" (सिंह २१)। ८ इच्छा धमि-
नाया रेवो आपसि। ९ इच्छा उवाचण
"आवाक्यमायी धारणो ह्य धारणाय" (आपसि २९७)। १ सूत्र धम्य शब्द (विवे ४ २)। ११ उवाचण, धारणो "आपसो उवाचो" (विवे १४ व ८)। १२ रिट्-सम्पत्ति "बहुवचनार्थे धु

न बाहिर्येण्डि कुल्यशरणेण्डि।

आपसो यो उ मने

प्रहासि कर्तव्यविषयो" (वच २ ८)।

आपसग न [आधेरान] ऊपर रेवो (महा)।
आपसग न [आधेरान आनेशन] रीति
नैरुह का कारणा विन्यासा (आपा २ २२१ धीय)।

आपसि वि [आधेरिम्] १ धारण कर्त-
नामा। २ रमितायो इच्छुक (आपा)।

आपसिय वि [आधेरि] विच्छो धावा की
गई हो वह (संवि)।

आपसिय वि [आधेरिक] १ धारण संश्लो।
२ विवक्ष्य धादि के विमल में बने हुए वे
आध-न्याय विच्छो धम्यो धं बट के न
संस्कृत विद्या यथा हो (सिंह २२२)।

आआ ध [वि] धमना या "ईय विनयति
कि ताव मुनिपुत्रो धाधो ईश्वरं धाधो
नृपतिधमनो धाधो सत्यं वेदति" (म ४४४)।

आओग धु [आओग] १ धाव, गम्य (धीय)।
२ धम्यपि धु के लिए करना देना (सम)।
३ परिकर, धरणाव (धीय)।

आओग धु [आओग] धर्मोदाय धर्मोदायन
न धारण (सम २, ७ २)।

आओग धु [आओग] परिकर, धरणाव
(धीय)।

आओग धु [आओग] धाव वावा (महा
वच)।

आओग वि [आओग] संस्कृत-योग्य बोधने
गम्य (विवे २३)।

आओग धु [आ + ओट्] प्रेरण
करणा बुद्धिना। धाधोशब्दो (विवा १ ६)।
आओग न [आओग] मन्त्रवृत्त करणा (वि
२, ६)।

आओग वि [२] धाविठ धाव धुवा (वि
२ ६)।

आओग धु [आ + धु] नवना। धाधो
नेहि (संवि १११)।

आओग धु [आ + कृत्] ओराय
धारणा करना, धाव देना। धाधोसह (तिर १
१) धाधोनेन धाधोनेन (वच)। कवक
आओगेधमनाग (संवि २२)।

आओग धु [वि] प्रधाव-समय धम्य-कान
(धोच ११ य)।

आओग धु [आओग] निमलना
विच्छाकर (तिर १ १)।

आओग धु [आओग] धुध महाई (सं
१४ व धी गुर २ २२)।

आओ वि [अन्य] धम्य ना (धोच १८ १२)।
आओ धु [आ + कृत्] नवना
इच्छा। धाधोवि (संवि)।

आओ धु [आओग] नवना, इच्छा
प्रमिताया (विवे २३१)।

आओ धु [आओग] धमितायो
इच्छुक (आपा)।

आओ धु [आ + कृत्] देना धमिताया
धारणा (वि ८८)।

आओ धु [आओग] १ धाधन रोचन।
२ वि, विमल धाधन किया हो वह (वि ७
२७)।

आओ धु [आ + कृत्] १ धाधन करणा।
२ धाधन होना। ३ धाधन करणा। धुध
आओधन आओधन (धुध)।

आओ धु [आओग] १ धाधन करणा। २
धारणन (वच)। ३ धाधन, धाधन
(धुध)।

आओग न [आओग] ऊपर रेवो (वच
वच)।

आओग वि [आओग] धाधन धमिता
कमिता (संवि २२८ टी)।

आओग वि [आओग] धाधन प्रमिता
किया धुध (सिंह २३६)।

आओग धु [आओग] धाधन। "विच्छि
धी" "विच्छि" धाधन-मान (सम १२)।

आओग न [आओग] धाधन (सिंह)।

आओग वि [वि] धाधन निमिता धुध
"धुध" व धम्य दीए निमिताया

वा धरितु धम्यमि।

धम्यमम्योवधमिताधारणकरीधुध
धमिता (धम्य १११)।

आओग न [आओग] धाधन (महा)।

आओग वि [आओग] धुध धुध
धुध (आपा)।

आओ धु [आओग] धाधन (संवि २)।

आओग वि [आओग] धाधन धाधन होन
नामा धाधन धी धाधन होनना "धम्यमि
मिताधमना धी धम्यमम्यमि" धमिता (विवे
१४२१)।

आओ धु [आओग] १ धाधन। २ धाधन
(धुध)।

आओ धु [आओग] धाधन धाधन धाधन
२ ३ १ १५) इच्छा धाधन धाधन (आपा
२ ३ १ १५)।

आओ धु [आओग] धाधन (धुध)।

आओ धु [आओग] धाधन (सम)।

आओ धु [वि] धाधन धाधन (धुध)।

आओ धु [आओग] धाधन धाधन (धु
१ २ २)।

आओग न [आओग] धाधन धाधन
निमिताधमना "धाधन धाधन धाधन धाधन
धम्यमि" (धुध २३)।

आओग धु [आओग] धाधन धाधन
रेवो (सम २२)।

आओग धु [आओग] धाधन धाधन (धुध
आओग) १ व)।

आओ धु [आओग] धाधन धाधन (धम्य
वि १२)।

आक्षिपि षो आक्षिपि (हुमा) ।

आक्षिप्य सक्र [आ + कृष्ण्य] संकोच करता ।
आक्षिप्य, संक्र आक्षिपि (धा) (मिथि) ।
आक्षिप्य न [आक्षिप्य] संकोच पदार्थ
(सम्प्र ११३) विधे २४२२) ।

आक्षिप्य वि [आक्षिप्य] संक्रियत ईदं
फलं आक्षिप्योपयोगीभो पदार्था विपण्य
(सुप्र ४ २१५) ।

आक्षिप्य न [आक्षिप्य] १ शोभते । २ वि निज
पर शोभते किंवा गया हो वह (वि ११२) ।

आक्षिप्य न आक्षिप्य (कम्) ।

आक्षिप्य न [आक्षिप्य] १ ईक्षित इच्छते (धन
७२ टी) । २ ध्यायमान (विधे २२५) ।

आक्षिप्य वि [आक्षिप्य] धर्मेष्टुं
(धाया) ।

आक्षिप्य न [आक्षिप्य] दृष्ट कर बुद्धिमान
(पण्य १ १) ।

आक्षिप्य षो आक्षिप्य = शोभते (वि ४
२१) ।

आक्षिप्य सक्र [आक्षिप्य] विकसित
होगा । वह आक्षिप्य (पण्य १ ४) ।

आक्षिप्य (हा) षो आक्षिप्य । आक्षिप्य (वि
४) ।

आक्षिप्य (धा) सक्र [आ + कृष्ण्य] दीये
बीजना । ईक्ष-आक्षिपि (मिथि) ।

आक्षिप्य सक्र [आक्षिप्य] द्रव्य (मुद्रा
४७) । मुद्रा न [मुद्रा] द्रव्यमुद्रा
(उप २८९ टी) । मूद्रा न [मूद्रा] कृष्ण
वस्तु महावीर के मुख्य शिष्य शैलम्बरसमी
(पण्य ११ १२) ।

आगच्छ षो आगच्छि ध्यायमान (धाया विधे
२१५९) ।

आगच्छ षो आगच्छि (महा) ।

आगच्छ्य षो आगच्छ्य = धा + गच्छ ।

आगच्छ्यार न [आगच्छ्यार] वर्तमाना
आगच्छ्यार } मुद्रापरिष्कार्य (मोक्ष धाया) ।

आगच्छ्य वि [आगच्छ्य] ध्यायमाना (मुद्रा) ।

आगच्छ्य षो आगच्छ्य = धा + गच्छ ।

आगच्छ्य वि [आगच्छ्य] ध्यायमाना ।

आगच्छ्य } २ मिति (ध ४७१ धाया २४१
मुद्रा ११९ धीय २१९) । ३ इति धाया-
(१) ।

आगच्छ्य षो आगच्छ्य = धा + गच्छ ।

आगच्छ्य सक्र [आ + कृष्ण्य] वर्तमाना

होता । वह आगच्छ्य (ध १११ ४४३) ।

आगच्छ्य षो आगच्छ्य (पण्य १४ ४३) ।

आगच्छ्य सक्र [आ + गच्छ] धाया ध्याय-

मान करता । आगच्छ्य (महा) । अति

आगच्छ्य (वि १२३) । वह आगच्छ्य

आगच्छ्यमान (धाया २४१) । हेतु आग-

च्छ्य (वि २७८) ।

आगच्छ्य षो आगच्छ्य (मुद्रा २ २४८) ।

आगच्छ्य षो [वि] मुद्रा-मुद्रा (वि ११३) ।

आगच्छ्य सक्र [आ + गच्छ] १ धाया ध्यायमान

करता । २ ध्यायमान । अति ध्यायमान (वि

१२३ १९) । वह आगच्छ्यमान (धाया) ।

ईदं आगच्छ्य आगच्छ्य आगच्छ्य (वि

१२३ १८२ धीय) । वह आगच्छ्य (मुद्रा

११) । हेतु आगच्छ्य (महा) ।

आगच्छ्य मुद्रा [आगच्छ्य] १ ध्यायमान (वि १४५)

२ ध्यायमान ध्यायमान 'ध्यायमान' ध्यायमान

न (मुद्रा २ ११) ।

आगच्छ्य मुद्रा [आगच्छ्य] १ ध्यायमान (वि १४

५१) । २ ध्यायमान (धीय) । ध्यायमान

वि [आगच्छ्य] ध्यायमान न ध्यायमान (महा)

अति [वि] ध्यायमान ध्यायमान (महा)

धीय षो [धीय] ध्यायमान विधि (महा

२) । ध्यायमान वि [वि] ध्यायमान ध्यायमान

(महा) । ध्यायमान वि [वि] ध्यायमान ध्यायमान

विधि (महा) । ध्यायमान वि [वि] ध्यायमान ध्यायमान

विधि (महा) । ध्यायमान वि [वि] ध्यायमान ध्यायमान

विधि (महा) । ध्यायमान वि [वि] ध्यायमान ध्यायमान

विधि (महा) । ध्यायमान वि [वि] ध्यायमान ध्यायमान

विधि (महा) । ध्यायमान वि [वि] ध्यायमान ध्यायमान

विधि (महा) । ध्यायमान वि [वि] ध्यायमान ध्यायमान

विधि (महा) । ध्यायमान वि [वि] ध्यायमान ध्यायमान

विधि (महा) । ध्यायमान वि [वि] ध्यायमान ध्यायमान

विधि (महा) । ध्यायमान वि [वि] ध्यायमान ध्यायमान

विधि (महा) । ध्यायमान वि [वि] ध्यायमान ध्यायमान

विधि (महा) । ध्यायमान वि [वि] ध्यायमान ध्यायमान

विधि (महा) । ध्यायमान वि [वि] ध्यायमान ध्यायमान

आगच्छ्य वि [आगच्छ्य] ध्यायमाना ध्यायमान

करनेवाला (महा) ।

आगच्छ्य वि [आगच्छ्य] १ ध्यायमान

होनेवाला (पण्य ११५ १३) । २ ध्यायमान

(सम्प्र ११३) ।

आगच्छ्य षो [आगच्छ्य] ध्यायमान

न 'ध्यायमान' ध्यायमान (महा) (वि

१) ।

आगच्छ्य } षो आगच्छ्य (ध्यायमान ११)

आगच्छ्य } धीय) ।

आगच्छ्य षो आगच्छ्य = धा + गच्छ ।

आगच्छ्य वि [आगच्छ्य] १ ध्यायमान (महा १)

२ ध्यायमान (ध्यायमान १ ७) ।

आगच्छ्य षो आगच्छ्य = ध्यायमान (ध्यायमान ११)

धीय) ।

आगच्छ्य वि [आगच्छ्य] ध्यायमान ध्यायमान

ध्यायमान ध्यायमान (महा १२) ।

आगच्छ्य मुद्रा [आगच्छ्य] १ ध्यायमान

(विधे २७८) । ध्यायमान (ध्यायमान १२३) । २ ध्यायमान (विधे

२७८) । ३ ध्यायमान (विधे २७८) । ४ ध्यायमान (विधे

२७८) । ५ ध्यायमान (विधे २७८) । ६ ध्यायमान (विधे

२७८) । ७ ध्यायमान (विधे २७८) । ८ ध्यायमान (विधे

२७८) । ९ ध्यायमान (विधे २७८) । १० ध्यायमान (विधे

२७८) । ११ ध्यायमान (विधे २७८) । १२ ध्यायमान (विधे

२७८) । १३ ध्यायमान (विधे २७८) । १४ ध्यायमान (विधे

२७८) । १५ ध्यायमान (विधे २७८) । १६ ध्यायमान (विधे

२७८) । १७ ध्यायमान (विधे २७८) । १८ ध्यायमान (विधे

२७८) । १९ ध्यायमान (विधे २७८) । २० ध्यायमान (विधे

२७८) । २१ ध्यायमान (विधे २७८) । २२ ध्यायमान (विधे

२७८) । २३ ध्यायमान (विधे २७८) । २४ ध्यायमान (विधे

२७८) । २५ ध्यायमान (विधे २७८) । २६ ध्यायमान (विधे

२७८) । २७ ध्यायमान (विधे २७८) । २८ ध्यायमान (विधे

२७८) । २९ ध्यायमान (विधे २७८) । ३० ध्यायमान (विधे

२७८) । ३१ ध्यायमान (विधे २७८) । ३२ ध्यायमान (विधे

२७८) । ३३ ध्यायमान (विधे २७८) । ३४ ध्यायमान (विधे

२७८) । ३५ ध्यायमान (विधे २७८) । ३६ ध्यायमान (विधे

२७८) । ३७ ध्यायमान (विधे २७८) । ३८ ध्यायमान (विधे

२७८) । ३९ ध्यायमान (विधे २७८) । ४० ध्यायमान (विधे

आगाह वि [आगाह] १ अस्स कुसम्म
‘ककुभोहं व भायावोपेणो रोणसमन्थं’ (उप
७२८ टी)। ‘नो कम्मं निगंवाउ वा निगं-
वाउ वा मत्तमत्तस मोए दाहइत्थं, मत्तस
मायहि रोणवर्द्धं’ (वत्थ)। २ धनवा,
वाह कारस (वचना)। ३ धम्मन्त यत्त (निष्)।
ओग पुं [‘ओग’] ओक-विशेष पत्ति-ओप
(ओक १४४)। पण्य न [‘प्रज्ञ’] शास्त्र
मायमः ‘मायमप्यल्लुपु य माविपय्या’ (वत्थ)।
सुप न [‘मुत्’] मायम-विशेष (निष्)।

आगामि वि [आगामि] धानेवाता (मुपा
९)।

आगारसक [आ + क्ताय्] बुधना भाङ्गान
कत्ता। उच्च आगारेऊण (माक)।

आगार न [आगा] १ वट, गृह (शाया १
१ महा)। २ वि गृहस्य गृही (अ)। २य
वि [‘रव’] गृही (वि ३ ३)।

आगार पुं [आम्मर] १ धनवार (उप ७२८
टी प)। २ रचित केट्ट-विशेष (सुर ११
१२२)। ३ कण्ठि रूप (मुपा ११३)।

आगारिय वि [आगारिक] गृहस्य-संबन्धी
(विशे)।

आगारिय वि [आकारित] १ धत्तु। २
ऊहायि परिप्यत्त (माक)।

आगास पुं [आगास] १ समल प्रेत से
छत्ता। २ सम भाव से छत्ता (माका)। ३
सोपण-विशेष (पञ्च)।

आगास पुं [आकार] धत्तु, धत्तल
(वत्थ)। गमा श्री [गमा] विद्या-विशेष
विशेष बल से आकार में सम कट छत्ता है
(पञ्च ७ १४४)। गामि वि [‘गामिन्’]
धातु में सम करने वाला पति-प्रभुति
(माका)। ओइणी श्री [‘योगिनी’] पति
विशेष ‘मावत्तवीइणीयं निमुमो सरोहि वान-
पाधम्मि’ (मुपा ८८२)। ‘रियच्चय पुं
[‘रियच्चय’] धातु-प्रभुता का सङ्गृह,
धत्तल धातु-प्रभुता (पञ्च १)। विगगस
[‘वि’] धत्तल धातु का धातु (धातु)।
कस्सि, कस्सिय पुं [‘कस्सि’] निर्मल
सन्नि-रूप (उप मी)। कस्सिया श्री
[‘कस्सि’] एक मोक्ष इष्ट (पञ्च १०)।

आगाह वि [विपादिन्] विद्या धातु
के बल से आकार में सम करनेवाला (मी)।

आगासिय वि [आकारित] धातु को
प्राप्त (मी)।

आगासिय वि [आकर्षित] लोका इष्टा
(मी)।

आगासिया श्री [आकारिणी] धातु में
सम करने की सक्ति-शक्ति (मुपनि ११३)।

आगाह सक [अ + गाह] धनसङ्ग
कत्ता, स्थाप कत्ता। आगाहइत्ता (वत्थ ५,
१ ११)।

आगिह श्री [आकृति] धातु, रूप धृति
(सुर २ २५३ विपा १ १)।

आगिहि श्री [आकृति] धातुस्य (मुपा
२३२)।

आगी रेवो आगिह ‘विण्णवनिष्कमायी
विण्णु सत्तासं न नं तासु’ (विशे २७ ७)।

आगु पुं [आकु] धत्ताय इच्छा (माक)।

आर्प रेवो आपाप। ‘मूत्रकृतां’ धृत्त के प्रथम
भुतलक्ष्य का वत्ता धम्मन्त (मुप १ १)।

आर्पस सक [आ + पृप्] कर्त्तु कत्ता
(निष्)।

आर्पस सक [आ + पृप्] विद्या बोझ
विद्या। आर्पसि (माका २, २, १ ४)।

आर्पस वि [आर्प] बल के धातु विद्या
को विद्या का सक वह (वि ३ २)।

आर्पसण न [आपर्षण] एक बार का कर्त्तु
(निष्)।

आपण न [‘वि’] वच-स्थान (आया १ १—
पञ्च ११७)।

आपय सक [आ + प्या] १ कत्ता ऊहे
२ २ प्रहण कत्ता। आपयेह (अ)।

कत्त आपविज्ज (मम)। मुका धातु (मुपा
वि ८८)। वट-आपयेमाज (वि ४४)। हेह
आपविज्ज (वि ८८)।

आपयना श्री [आपयान] कत्त वत्ति
(आया १ २)।

आपयइत्तु वि [आपययक] कत्त वत्ता
ऊहेह (अ ४ ४)।

आपयि वि [आपयत] वत्त, कत्ता हुपा
(वि ४४)।

आपयि वि [‘वि’] गृहीत स्वीकृत (यल्लु
२)।

आपयेसण वि [आपयययि] ऊहेह
वत्त (माका)।

आपस सक [आ + पस्] बोझ विद्या।
आपसलेह (निष्)।

आपा सक [आ + प्या] कत्ता। (माका)।

आपा सक [आ + प्या] वत्ता। वह आया
यत्त (वत्थ ३३० टी)।

आपाय वि [आपयत] कत्त सक (माका)।

आपाय वि [आपयत] १ उच्च कत्त
(मुप १ ११ २)। २ न. उच्च, कत्त (मुप
१ १ २ १)।

आपाय पुं [आपात] १ एक वत्त-स्थान
(विशे २६)। २ विद्या (उच्च ३ २ मुक
५, ३२)।

आपाय पुं [आपात] १ वत्त। २ वत्त, प्रहार
(मुपा आया १ २)।

आपाय वत्तो आपा = धा + भा।

आपाय रेवो आपय। आपयेह (वि ८८
२ २)।

आपुट्ट वि [आपुट्ट] धातु जाहिर किया
हुआ (पति)।

आपुग्ग सक [आ + पूण] बोझना,
हिलना नितान वत्तना।

आपुग्गिय वि [आपुग्गित] बोझ हुपा
कत्त वत्त ‘आपुग्गिययणुपु’ (पञ्च
१ ३२ वत्थ २६)।

आपोस सक [आ + पोपय] पोपण
कत्ता विद्या विद्या। आपोयेह (वत्थ १)।

आपोसण न [आपयपण] विद्या पोपण
(महा)।

आपयस सक [आ + पय] कत्ता।
वत्त आपयस (वि २५, ८ ता)।

आपयिस्स (श्री) वि [आपयत] वत्त,
कत्त (पति २)।

आरिय वि [आरित] १ धृति विद्या।
२ न. धातु (मातृ १११)।

आयम सक [आ + यामय] धातु
वाता वीना। वत्त आयम (वत्थ ११)।

आयार रेवो आयार = धातु (मुपा)।

आयार रेवो आयरिय = धातु (पति)।

आण सो सोय = यान (बाह ८) ।
 आणद्ध बेको आअंङ्ग, भाउद्धर (पह १) ।
 आणत बेको आणा ।
 आणतरिय न [आनत्तर्य] १ मन्त्रिष्वेव
 मन्त्रानां का सम्राज (ठा ४ ३) । २ मनुष्य
 परिपाठि 'मण्णतरिमेति वा मण्णपरिवाधिसि
 वा मण्णत्तर्येति वा एण्ठा' (भाह १) ।
 आणत्त मक [आ + नत्त] भाग्य वागा
 पुठ होना ।
 आणत्त मक [आ + नत्त] पुठ करना ।
 भाउद्धरि (शी) (भाह १) । ३ आणत्तिअम्व
 (रमण १) ।
 आणत्त पु [आनत्त] १ घरोपन का सोम
 हर्ष सुद्ध (मुक १ १३) । २ एक देव
 विमान (शेक १३३) ।
 आणत्त पु [आनत्त] १ हर्ष कुरि (कुमा) ।
 २ नगवान् स्थितवाक के मुख्य-मित्र (सम
 १३२) । ३ पोटनुर नगर का एक राजा,
 जो मन्त्रान् मन्त्रितवाक का मन्त्राम् वा
 (पञ्च ३ २२) । ४ भावी अष्टम बहनेन
 (सम १३४) । ५ भाग्यदार-वादीय बेको के
 स्वामी बण्णेन के एक रज-मित्र का धर्मिणि
 हर्ष (अ ४, १) । ६ सुद्धरि-विशेष (सम ४१) ।
 ७ मन्त्रान् आपनेन का एक पुन (पञ्च) ।
 ८ मन्त्रान् महावीर के एक साधु मित्र का
 नाम (कम्प) । ९ मन्त्रान् महावीर के हस्त
 मुख्य वनाअर्थी (वाक्क-मित्र) में पहुँचा
 (पञ्च) । १० बैर-विशेष (जी पीन) । ११
 राजा मेषीक के एक पौत्र का नाम (निर
 २ ४) । १२ 'जानवरत्त' सूत्र का एक
 धर्म्यन (जग) । १३ 'मण्णत्तरीणादि
 हर्ष' सूत्र का धातवर्ध धर्म्यन (भा) ।
 १४ 'निरत्थावती' सूत्र का एक धर्म्यन
 (निर २ १) । १५ ब. बैर-विशेष (पञ्च
 ३ ३३) । पुन न [पुन] नगर-विशेष
 (हह) । रमिअय पु [रमिअ] स्वताम्याव
 एक बैन वाधु (सम) ।
 आणत्तन न [आनत्तन] १ कुटी हर्ष (मुपा
 ४४) । २ वि मुठ करनेवाला धातव
 धमक (प १३३ रमण १ छठ) ।
 आणत्तवत्त पु [वि] पत्नी बार की रज
 आणत्तवत्त स्वता का रज बर (भा ४२७
 ६ ७२ पद) ।

आणत्त की [आनत्त] १ बैर-विशेष
 मैर की पक्षिम विद्या में विद्यत बहक पर्वत
 पर रहनेवाली एक विष्णुनायी (ठा ८) ।
 २ नर नाम की एक पुष्पशिणी (राज) ।
 आणत्ति वि [आनत्ति] १ हर्षमान्य
 (बीर) । २ रामचन्द्र के भाई भरत के साथ
 बीषा सेनेवाला एक राजा (पञ्च ८२ ३) ।
 आणत्तिर वि [आनत्तिर] धातवो मुठ
 रहनेवाला (मन्त्रि) ।
 आगकत्त मक [परि + अङ्ग] पठिआ
 करता । हह आणत्तरेव (पोष १६) ।
 आणत्त बेको आअंङ्ग । भाउद्धर (पह १) ।
 आणत्त वि [आनत्त] छर्बेना नट (उठ १८
 १ सुक १८ ५) ।
 आणग न [आनग] पुन मुँह (मुपा) ।
 आणय न [आनयन] भागा (महा) ।
 आणय वि [आनय] धर्मिष्ठ, विमत्ते हुहुन
 विवा मया हो वह (छाया १ ८ मुर ४
 १) ।
 आणत्ति की [आहति] भागा हुहुन (पनि
 ८१) । अर वि [अर] भागाकारक नीकर
 (सि ११ १३) । 'किंकर वि [किंकर]
 नीकर (पयह) । अर वि [अर] भागा
 बाहक छेदे-बाहक (पनि ८१) ।
 आणत्तिया की [आहति] अर बेको
 (छाया वि पञ्च) ।
 आणत्त न [आनत्त] धनर्वता (उठ
 १३) ।
 आणय (मयो) बेको आगन = पा + अण् ।
 भाउद्धरि (वि ४) ।
 आणयय बेको आणायाग (न ३) ।
 आणय वि [अणय] भागा करने योग्य
 (मुप १ ४ २ १३) ।
 आणय मक [आ + अण्] रमण सेना ।
 भाउद्धरि (सम) ।
 आणयनी बेको आणयग, भाउ १४ वि
 मक २४८) ।
 आणय पुन [आनय] १ बैरलोच-विशेष
 (मम १३) । २ पु उठ बैरलोच-भागी बैर
 (उठ) ।
 आणय पुन [आनय] एक बैरविमान (शेक
 १३५) ।

आणयन न [आनयन] भागा धलना (भा
 १४ ४ १७६) ।
 आणय मक [आ + अण्] भागा बना
 करवाना । भाउद्धर, भाउद्धरि (पञ्च ३३
 १ १८) । बह. आणयवेमाम (वि
 १३१) । ३ आणयवम (महा) ।
 आणय बेको आणाव = पा + अण् ।
 आणयन न [आणयन] भागा भाउद्धर फर
 भाउद्धर (वता प्राप्ता) ।
 आणयन न [आनायन] नैयवाणा (मुपा
 ४७८) ।
 आणयवि वि [आणयवि] भागा फर
 मन्त्रेवाणा (रम २३) ।
 आणयविना की [आहति] आनाय
 निष्ठ बेको दोनो आणयना (अ २ १) ।
 आणयनी की [आहति] १ विमान-विशेष
 हुहुन करता । २ हुहुन करने से होनेवाला
 कर्मव्य (न १३) ।
 आणयनी की [आनायना] १ विमान-विशेष
 नैयवाणा । २ नैयवाणे से होनेवाला कर्म-व्य
 (न १) ।
 आणा की [आहति] भाउद्धर हुहुन (पोष
 १) । २ उद्धर 'एपा भाउद्धरि निवर्धिया'
 (भाह १) । ३ निर्वर 'अरवासी पिहोवी भाउद्धरि
 विष्णो य होति एण्ठा' (बह) । ४ धामन
 सिद्धाण (विशे ४३४ छठि) । ५ सूत्र की
 व्याख्या (पीन) । अरत्त पु [अरत्त] भागा
 करवानेवाला मानिक (विवा १ १) । आणा
 पु [आणा] १ भागा का सम्बन्ध (पञ्च) ।
 २ शास्त्र के अनुसार इति 'पाने विद्यादुर्जन
 धाउद्धरानी य मंत्रवर्णो' (पञ्च) । सुद्ध की
 [अर] मन्त्रवर्ण-विशेष (उठ) । ३ वि
 धामनों पर अर रहनेवाला (न ३) । ब वि
 [अर] भागा माननेवाला (भा) । वर
 न [अर] भागावत, हुहुनवाला (सि १
 १८) । अरत्त पु [अरत्त] व्यापार
 विशेष (पञ्च) । विजय न [विजय
 विजय] कर्मव्य-विशेष विजय वाता—
 धामन के दुर्गा का चित्रन किया जाता है
 (पीन) ।
 आणा पु [वि] उठुनि पछी (रे १ ६४) ।

आविष्णु नि [आवाप] ग्रहण करलेबला
(ठा ७)।

आविष सक [आ + वा] ग्रहण करना।
प्राविष (उवा)। प्रयो. प्राविषासिंठि (सुम
२, १)।

आविष्णु } देवो आइछ (पि १११)।
आविष्णु }

आवी की [आवी] इस नाम को एक महावी
(ठा ५ १)।

आवीण नि [आवीन] १ सर्वथ वीन, बहुत
गरीब (सुम १ ५)। २ न हुनिठ मित्र।
मोह नि [मोहिण] हुनिठ मित्र को लेने-
वाला गरीबनोरिनि करेठि पाव (सुम १
१)।

आवीणिय नि [आवीनिक] प्रत्यक्ष वीन
संबन्धी 'पारीणिय बुद्धिय पुरखा' (सुम
१ ५)।

आवु (सी) देवो आवु (नि १)।

आवृत्त देवो आपवृत्त (पण्ड १ ५)।

आवेस देवो ओपस = प्रावेठ (कुमा नव
२, ८)।

आवेस पुं [आवरा] व्यवस्था, व्यवहार (सुम
१ न १)। देवो आपस = प्रावेठ (सुम
२ १ ५५)।

आवरिस सक [आ + वरिय] पठन
करना हिरस्वाण। प्रावरिसि (प्रावम)।
आवा देवो आवा (पिठ)।

आवार देवो आहार = पोषण (पण्ड २, ५)।
आपोरण पुं [आचारण] हस्तिक महापठ
होबोण (वर्गमि १११)।

आनव देवो आयन (पण्ड)।

आनामिय देवो आणमिय (पण्ड १ ५)।

आपन देवो आपन (वर्गमि १८०)।

आपण्य देवो आपण्य (वर्गमि १११)।

आपति की [आपति] प्राप्ति (संबोध १५;
पव १५१)।

आपाइय नि [आपादित] १ किसी मारति
की गई हो वह। २ लपटित जलित (पिठे
१७५१)।

आपाणन न [आपाणन] संपादन (भावक
नर देवा १ ११)।

आपीड पुं [आपीड] मिष्टानुपण (पा २८)।

आपीण देवो आपीण (वठव)।

आपुच्छ सक [आ + प्रच्छ] माझ देवा
सम्मति लेता। आपुच्छ (महा)। वह
आपुच्छस (पि ११७)। छ. आपुच्छपाय
(खमा १ १)। छ. आपुच्छिता आपु
च्छिसाण आपुच्छिकण आपुच्छिइ,
आपुच्छिय (पि १८२ १८३; कण ठा
५ १)।

आपुच्छन न [आप्रच्छन] माझ क्षुणति
(खमा १ १)।

आपुठ नि [आपुठ] जिसकी माझा म सम्मति
नहीं गई हो वह (सुर १ ११)।

आपुण नि [आपुण] पूर्ण भरपूर (वे १
१)।

आपूर पुं [आपूर] पूरलेबला 'मक्काणप
पूर सवि' (कण)।

आपूर देवो आऊर। कर्म, प्रापुणिक
(महा)। वह आपूरमाण, आपूरमाण
(महा राय)।

आपेड }

आपेड } देवो आपीड (पि १२२, महा)।

आपेड }

आप्यन न [पि] पिठ, प्राय (पण्ड)।

आप्यस पुं [आप्यस] प्रत्य स्पर्श (हे १ ५५)।

आपूर पुं [पि] पूठ कुमा (वे १ ११)।

आपूर सक [आपूरक] प्रत्यक्षलन
करना प्रापूर करना। छ. आफासिता

आपूरजिऊन (पि १८२; १८५)।

आपूरक देवो आपूरक (पा १५१)।

आपूरन नि [पि] प्राकृत (पण्ड ११२)।

आपेडिभ न [आपेडिठ] हाथ पञ्चाङ्गना
(पण्ड १ १)।

आप्य सक [आ + प्य] प्रत्यक्ष वीण।
वह आप्यवठ (हे १ ७)। वह आप्य-
चिऊन (पि १८५)।

आप्य पुं [आप्य] संकष संयोग (मठव)।

आप्य नि [आप्य] वीणा कुमा (स ११)।

आवाहा की [आवाहा] १ जल वावा
(खमा १ ५)। २ गहर (सम १५)। ३
मार्मिक वीणा (महा)।

आर्मर पुं [आर्मर] १ गह-विशेष (स
२ १)। २ न विमान-विशेष (सम न)।

परमकर न [प्रमकर] विमान-विशेष (सम
न)।

आमकलाय देवो आमकलाय (उवा)।

आमह नि [आमापिठ] १ कविठ सक
(कुमा १११)। २ सम्मति (सुर २, २५८)।
आमरण न [आमरण] प्रत्यक्ष, प्रामुख्य
(पि १ १)।

आमठ नि [आमठ] होने योग्य संभाव्य
(वठ कुमा १ ७)।

आमा की [आमा] प्रमा कानि ठेक (कुमा
धीव)।

आमागि नि [आमागि] भोका भोकी
'प्रमाणे जन्मपण्य' प्रमादी वीक' (पण्ड
खमा १ १८)।

आमार पुं [आमार] नोक, भार (सुमा
२ १५)।

आमास सक [आ + माप] कला ठेका
पण्ड करना। प्रामसह (हे १ ५५)।

आमास पुं [आमास] १ को प्रात्यक्षिक में
वह न होकर सक संमत लगता हो। २
विपरीत 'कण्डासहे' (कुमा)।

आमासिय पुं [आमासिक] १ इस नाम का
एक स्नेहक वीर। २ उद्यम रखनेवाली स्नेह
कविठ (पण्ड १ १)। ३ एक प्रत्यक्षिक।
४ उद्यम रखनेवाला, 'कवि' रहि मठे। प्राम
विषमगुणार्थ प्रामविषयके नाम वीरे' (वीर
१ ठा ५२)।

आमासिय देवो आमह (पिठ)।

आमिभोग्य देवो आमिभोगिय (महा)।

आमिभोग पुं [आमिभोग्य] १ किन्नर
स्वामीय वीर-विशेष (ठा ५ ५)। २ नौकर,
किन्नर (राय)। ३ किन्नरता नौकरी (वठ
१ २)।

आमिभोगा की [आमिभोग्या] आमिभोगिक
मात्रा (वठ १५ २५१)।

आमिभोगि नि [आमिभोगि] किन्नर
स्वामीय वीर (वठ १)।

आमिभोगिय नि [आमिभोगिक] १ मन्त्र
वादि से प्रदीक्षित चतुर्मात्रा (पण्ड
२)। २ नौकर स्वामीय वीर-विशेष (गान्धा
१ न)। ३ नौकरपण्ड वृद्ध को वठ में
करने का मन्त्राभिर्जन (पण्ड महा)।

आमिओगिह नि [आमिओगिह] बरीकण्य
धरि से संकृत (पात्र) ।

आमिआगिह केओ आमिआगिह (कण २) ।

आमिमिहिय नि [आमिमिहिय] १ धर्मिह-
संबन्धी (वर्षा ४) । २ न. निष्पत्त्य-
विशेष (५५ ४ २) ।

आमिमिहिय नि [आमिमिहिय] १ प्रतिष्ठा
से संबन्ध रखनेवाला । २ प्रतिष्ठा का निर्वाह
करनेवाला (पात्र) । ३ न. निष्पत्त्य-विशेष
(भा ६) ७

आमिमिहिय पु [आमिमिहिय] मास्य
मास (कण) ।

आमिहिय } नि [वि] प्रकृत 'धर्मिह' पर
आमिहिय } मण्ड' (पञ्च ४ ४२ १ ११२
वर्षा ४२) ।

आमिमिहिय केओ आमिमिहिय (वर्मसं
२१) ।

आमिमिहिय न [आमिमिहिय] धर्मिह
और मत से होनेवाला प्रत्यक्ष-विशेष
(सग ११) ।

आमिप्याह नि [आमिप्याह] धर्मिह-
वाला (धनु १५) ।

आमिसह नि [आमिसह] १ धर्मिक के
होय (तिर १ १) । २ धर्म, प्रवाह, 'धर्मि-
ह' के लिये प्रविष्ट (धर्म) ।

आमिर } पु [आमिर] एक दूध बाति
आमिरिय } मगर, बोक्ता (धनु ४ = धनु
१२) ।

आमुह नि [आमुह] कण (तिर १ १) ।

आमिहिय नि [वि] केओ आमिहिय (ज ५ ४२) ।

आमोहिय नि [आमोहिय] केओ हुमा (ज ५) ।

आमोहिय पु [आमोहिय] १ किओक देवता
(का १५) । २ प्रवैत लाल (धनु १, २२१) ।

१ जकण्य लाल (धनु ११) । ४ धर्मि-
ह (धनु १) । ५ धर्मोव लाल (धनु) ।

१ मिहिय (लाला १ १) । ७ लाल बाक्ता
(मा २३, १; ठा ४) । केओ आमोहिय =
प्रवोव ।

आमोहिय न [आमोहिय] धर्मोव (धर्मिह) ।

आमा न नि [आमोहिय] पिरिह, 'जह
नवको निर्याये बायो बहनिहमायो' (लुग

२७५) । गी की [नी] मलिक निरुह
ऊपर कणनेवाली विद्या-विशेष (११) ।

आमाय स [आ + माय] १ देवता ।

२ बाक्ता । ३ बाह्य करना । आमोहिय (ज ५
लाल) । बह. आमोहिय (कण) । संह
आमोहिया आमोहिय आमोहिय (धनु
१; महा १५५) ।

आमोहिय पु [आमोहिय] १ सर्व की कण (ध
११) । २ केओ आमोहिय (पात्र महा धनु
१ १२) ।

आम ध [आम] धर्मोव प्रवाह कण्य—
हूँ (पा ११५; धनु २ २४५; धनु १५५) ।

आम ध [मय] धर्म (धनु ५१) ।

आम पु [आम] १ रोप वीका (ध १ ४५) ।

२ नि धर्म्य कथा (भा २) । ३ धर्म्य,
धर्म्य (पात्र) । धनु पु [धनु] धर्मोव
से ऊपर हुका (पा ११) ।

आमिह नि [आमिय] धर्मोव (वर्म १) ।

आमिह नि [आम] १ धर्मोव-सूचक कण्य—हूँ
(धनु २ ११) । २ धर्मोव धर्मोव (वर्मसं
१५५) ।

आमिह न [वि] धर्मोव धर्मोव का एक
धर्म धर्मोव (ज ५ २१५; धनु १५५) ।

आमिह न [वि] धर्मोव धर्मोव (ध १ १५) ।

आमिह स [आ + मय] १ धर्मोव
करना, धर्मोव करना । २ धर्मोव करना ।

बह. आमिहिय (पात्र) । धनु. आमिहिय
(कण) । आमिहिय (धनु १ ४) ।

आमिहिय न [आमिहिय] धर्मोव, धर्मोव
(धनु) । धर्मोव न [धर्मोव] धर्मोव-विशेष
(धनु १५५) ।

आमिहिय की ओ [आमिहिय] १ धर्मोव की
माया धर्मोव की माया (धनु १) । २ धर्मोव
धर्मोव-विशेष (ठा ५) ।

आमिहिय नि [आमिहिय] धर्मोव (विद्या
१ १) ।

आमिह केओ धम (लाला १ १) ।

आमिहिय ध [आमिहिय] धर्मोव-विशेष
विद्या (धनु १ १५, १५, १५) ।

आमिह स [आ + मय] १ धर्मोव
करना । २ धर्मोव करना ।

बह. आमिहिय (पात्र) । धनु. आमिहिय
(कण) । आमिहिय (धनु १ ४) ।

आमिहिय न [आमिहिय] धर्मोव, धर्मोव
(धनु) । धर्मोव न [धर्मोव] धर्मोव-विशेष
(धनु १५५) ।

आमिहिय की ओ [आमिहिय] १ धर्मोव की
माया धर्मोव की माया (धनु १) । २ धर्मोव
धर्मोव-विशेष (ठा ५) ।

आमिहिय नि [आमिहिय] धर्मोव (विद्या
१ १) ।

आमिह केओ धम (लाला १ १) ।

आमिहिय ध [आमिहिय] धर्मोव-विशेष
विद्या (धनु १ १५, १५, १५) ।

आमिह स [आ + मय] १ धर्मोव
करना । २ धर्मोव करना ।

बह. आमिहिय (पात्र) । धनु. आमिहिय
(कण) । आमिहिय (धनु १ ४) ।

आमिहिय न [आमिहिय] धर्मोव, धर्मोव
(धनु) । धर्मोव न [धर्मोव] धर्मोव-विशेष
(धनु १५५) ।

आमिहिय की ओ [आमिहिय] १ धर्मोव की
माया धर्मोव की माया (धनु १) । २ धर्मोव
धर्मोव-विशेष (ठा ५) ।

आमिहिय नि [आमिहिय] धर्मोव (विद्या
१ १) ।

आमिह केओ धम (लाला १ १) ।

आमिहिय ध [आमिहिय] धर्मोव-विशेष
विद्या (धनु १ १५, १५, १५) ।

आमिह स [आ + मय] १ धर्मोव
करना । २ धर्मोव करना ।

बह. आमिहिय (पात्र) । धनु. आमिहिय
(कण) । आमिहिय (धनु १ ४) ।

आमिह पु [आमिह] धर्मोव धर्मोव (धनु) ।

आमिह पु [आमिह] धर्मोव धर्मोव (धनु १११,
लाला १) । धर्मोव की [धर्मोव] विद्या
विशेष (धनु २, २) ।

आमिह नि [आमिह] धर्मोव धर्मोव (धनु
१११) ।

आमिह पु [आमिह] धर्मोव धर्मोव (धनु
१११) ।

आमिह पु [आमिह] धर्मोव धर्मोव (धनु
१११) ।

आमिह पु [आमिह] धर्मोव धर्मोव (धनु
१११) ।

आमिह पु [आमिह] धर्मोव धर्मोव (धनु
१११) ।

आमिह पु [आमिह] धर्मोव धर्मोव (धनु
१११) ।

आमिह पु [आमिह] धर्मोव धर्मोव (धनु
१११) ।

आमिह पु [आमिह] धर्मोव धर्मोव (धनु
१११) ।

आमिह पु [आमिह] धर्मोव धर्मोव (धनु
१११) ।

आमिह पु [आमिह] धर्मोव धर्मोव (धनु
१११) ।

आमिह पु [आमिह] धर्मोव धर्मोव (धनु
१११) ।

आमिह पु [आमिह] धर्मोव धर्मोव (धनु
१११) ।

आमिह पु [आमिह] धर्मोव धर्मोव (धनु
१११) ।

आमिह पु [आमिह] धर्मोव धर्मोव (धनु
१११) ।

आमिह पु [आमिह] धर्मोव धर्मोव (धनु
१११) ।

आमिह पु [आमिह] धर्मोव धर्मोव (धनु
१११) ।

आमिह पु [आमिह] धर्मोव धर्मोव (धनु
१११) ।

आमिह पु [आमिह] धर्मोव धर्मोव (धनु
१११) ।

आमिह पु [आमिह] धर्मोव धर्मोव (धनु
१११) ।

आमिह पु [आमिह] धर्मोव धर्मोव (धनु
१११) ।

आमिह पु [आमिह] धर्मोव धर्मोव (धनु
१११) ।

आमिह पु [आमिह] धर्मोव धर्मोव (धनु
१११) ।

आमिह पु [आमिह] धर्मोव धर्मोव (धनु
१११) ।

आमिह पु [आमिह] धर्मोव धर्मोव (धनु
१११) ।

आमिह पु [आमिह] धर्मोव धर्मोव (धनु
१११) ।

आमिह पु [आमिह] धर्मोव धर्मोव (धनु
१११) ।

आमिह पु [आमिह] धर्मोव धर्मोव (धनु
१११) ।

आमिह पु [आमिह] धर्मोव धर्मोव (धनु
१११) ।

आमिह पु [आमिह] धर्मोव धर्मोव (धनु
१११) ।

आमिह पु [आमिह] धर्मोव धर्मोव (धनु
१११) ।

आमिह पु [आमिह] धर्मोव धर्मोव (धनु
१११) ।

आमिह पु [आमिह] धर्मोव धर्मोव (धनु
१११) ।

आमिह पु [आमिह] धर्मोव धर्मोव (धनु
१११) ।

आमिह पु [आमिह] धर्मोव धर्मोव (धनु
१११) ।

आयस वि [आतप] १ उद्योत प्रकाश (सा ५६) । २ ताप नाम (उत्त) । ३ म भुङ्क्ते-रिण्ये (सम ११) । नाम, नाम न [नामस्य] नामधेय का एक मर (मम १७) । आयसत्त न [आतपत्त] अथ धावा (छाया १ १) ।

आयसत्त पु [आयापत्त] मारु विदुस्वाम (इक्) ।

आयासा श्री [आतपा] १ मूर्ध्व की एक धप मङ्गिरी—गटपयी । २ इस नाम का 'मात्रा कार्यकर्ता' मूल का एक अध्ययन (छाया २ १) ।

आयस वि [आयस] सोह का सोह निर्मित (पठ १ नि १) ।

आयसी श्री [आयसी] सोह का सोह (पठ १ १) ।

आया सेतो आय = धामन ।

आया सक [आ + या] धावा धावमान बना । धार्यति (मुत्ता १७) । धामाईति धावायु (बन्ध) । नह आयस ।

आया मर [आ + म] धावण करता स्वीकार करता । आयसत्त (उत्त १) । ह आया यिज्ज (ठा १) । छह आयाव, आयाव आयाव (बन्ध बन्ध महा) ।

आयाइ श्री [आजाति] १ उन्नीत बन्ध (ठा १) । २ धारि प्रसार । ३ धावर, धावण (धावा) । दृष्टा न [रिपान] १ धावर, बन्ध । २ 'धावापत्त' मूल का एक अध्ययन का नाम (ठा १) ।

आयाइ श्री [आयाति] १ धामन । २ धार्यति धर्म से बाहर निकलना (ठा २ १) । ३ धार्यति धर्म्य नाम (उत्त) ।

आयाव सेतो आया = मा + वा ।

आयाव पुन [आदान] १ वहाण स्वीकार (धावा) । २ इन्द्रिय (सम १४, ४) । ३ विपत्ता धरु दिया बन्ध बह धाम बन्ध (ठा ४ मूय १७) । ४ धारण हेतु धर्म से उठ धावण केहि नीर—पारय (मूय १ १) । ५ विपत्ता दुःखमयी दुःखमयी मयाहृदिक (उत्त १४ ४५) । ६ धारि प्रथम (मम) ।

आयाव न [आदान] १ संयम धारि (मूय १ १२, २२) । २ धारि धारि, उदात्त (मूय

१ १४ १७ ठुं २) । पय न [पय] धन का प्रथम शब्द (मूय १४) ।

आयाव न [आयान] १ धामन । २ धार का एक धामण-रिण्ये (पठ १) ।

आयाम सक [आ + यमस्य] सम्भा करता । कण्ड-आयामिज्जति (वि १ ५) । छह आयामत्ता आयामत्तागे (मम १ १८१) ।

आयाम सक [आ + यम] शीघ्र करता मुद्रि करता । धायाव (पठ १ १ ६) ।

आयाम सक [हा] दत्ता दान करता । धाया मेर (सम ११) । छह आयामेत्ता (मा ११) । आयाव पु [आयाम] लम्बाई, ईर्ष्य (सम २ गट १) ।

आयान पु [हे] बस जोर (हे १ ६१) ।

आयाम न [आयामत्त] धार-रिण्ये धार्यति 'मात्राविष्टो उ उद्यो ह्यमस्य परिमितं तु धामन' (धामानि २७२ २७३) ।

आयाम } न [आयाम] धारमाण धारण आयामग } धारि का नाम (मोक्ष ११२; उत्त १२) ।

आयामगया श्री [आयामनता] सम्भाई (मम) ।

आयामि वि [आयामिन्] लम्बा (पठ १) । धायावुदी श्री [आयामुत्ता] इस नाम की एक मण्डि (म ४३१) ।

आयाव देना आया = मा + वा ।

आयाव वि [आयान] धावा हुमा (पठ १४ ११ ६१६ मुत्ता १६) ।

आयाव सक [आ + वारय] धुनाता धावण बना । धायावदि (ही) (गाठ) । छह आया रिज आयावज्ज (गाठ ३७७) ।

आयाव पु [आयाव] १ धारि धन (छाया १ १) । २ इन्द्रिय दण्ड (मम) ।

आयाव पु [आसार] 'ध' धार (मूय ३२) ।

आयाव पु [आधार] १ धारण धुत्तान (ठा २३ धावा) । २ धार-बन्धन धार-धार (पठ ११ ५) । ३ धार धार धारधर्मों में बहता धम धावावधुत्त (ठा ६) । ४ धुत्तुप धिन्ध (मा १ १) । धारययी श्री [आययी] बहा का एक मेर (म ४) ।

अहंय संन्य न [आणहंय] धारि का धारण—नाम (छाया १ १ १६) ।

आयारिमय न [आचारिमय] विपद् के समय दिया जाता एक प्रकार का दान (छ ७७) ।

आया रेय वि [आधारित] १ धावुत धुत्ताय धुत्ता (पठ ११ २३) । २ म धावान-बन्ध धावत-बन्ध (छे ११ ५ धर्मि २ १) ।

आयाव सक [आ + वापय] मूय के धन में धार को जोड़ा जाता । २ शीघ्र धावा धारि को सहन करता । नह आयारिन्ध पठ १ ११) आयारिन्ध (बन्ध) आयारिन्ध (पठ २१ २१) आयारिमाय (मम मम) । छह आयारिन्ध (मम) । छह आयारिन्ध (धावा) ।

आयाव पु [आताप] धुत्तुधुत्तार धावीय देव रिण्ये (सम ११ १) ।

आयाव पु [आनाप] धावत-नापधर्म (पठ १ १७) ।

आयाव वि [आतापक] शीघ्र धारि को सहन करतेबाला (मूय २ २) ।

आयावय न [आनापन] एक धार का जोड़ा धावत धारि को सहन करता (छाया १ ११) । मूमि श्री [मूमि] शीघ्र धारि सहन करते का स्थान (मम ६ १) ।

आयावणया श्री [आतापना] ऊपर रखी धावावणया } (छ १ १) ।

आयावय वि [आतापक] शीघ्र धारि को सहन करतेबाला (पठ २ २) ।

आयावय } पु [हे] धारि का धारि आयावय } धावाव (हे १ ७ पठ) ।

आयावि वि [आतापिन्] धारि आतापय (छ ४) ।

आयाम न [आ + यामस्य] धारण देना धारि करता । धावावदि (म ४६) । छह आयामिज्ज (मा ४२) ।

आयाम पु [आयाम] १ धर्म्य, धारि धार (पठ १) । २ धारि, धारि (मम १ २) । ३ धारि [धारि] धारि-रिण्ये (मम १ २) ।

आयाम सेतो आयस (पठ १) ।

आयाम देना आयाम (मम ११ १ ६ १ ८५) । लम्बा न [धारि] धारि रिण्ये (धर्मि) ।

आपासःपिञ्ज वि [आपासःपिञ्ज] एकलोक
देवता (पवि ११) ।

आपासःपिञ्ज न [आपासःपिञ्ज] नरकाला,
नर के अपर की कुली पठ (पुत्र ४१२) ।

आपासःपिञ्ज न [वि] प्रसाद का पृष्ठ भाग (वि
१७२) ।

आपासःपिञ्ज न [वि] पतिवृद्ध नीच (वि १
७२) ।

आपासःपिञ्ज वि [आपासःपिञ्ज] परिपालन बिज
(गा ११) ।

आपासःपिञ्ज वि [अपम] १ घालनिकाशक ।
२ न बाणाकार रोप (पिञ्ज १२) ।

आपासःपिञ्ज न [आपासःपिञ्ज] रक्षित पार्थ से
प्रमथ करना (आ) । पपासःपिञ्ज वि
[प्रक्षिप] रक्षित पार्थ से प्रमथ कर
रक्षित पार्थ में लिये होनेवाला (विपा १
१) । पपासःपिञ्ज की [प्रक्षिप] रक्षित
पार्थ से परिप्रमथ प्रक्षिप (ठा १) ।

आपासःपिञ्ज न [आपासःपिञ्ज] पतिवृद्ध नीच (वि १
७२) ।

आपासःपिञ्ज न [आपासःपिञ्ज] पतिवृद्ध नीच (वि १
७२) ।

आपासःपिञ्ज न [आपासःपिञ्ज] पतिवृद्ध नीच (वि १
७२) ।

आपासःपिञ्ज न [आपासःपिञ्ज] पतिवृद्ध नीच (वि १
७२) ।

आपासःपिञ्ज न [आपासःपिञ्ज] पतिवृद्ध नीच (वि १
७२) ।

आपासःपिञ्ज न [आपासःपिञ्ज] पतिवृद्ध नीच (वि १
७२) ।

आपासःपिञ्ज न [आपासःपिञ्ज] पतिवृद्ध नीच (वि १
७२) ।

आपासःपिञ्ज न [आपासःपिञ्ज] पतिवृद्ध नीच (वि १
७२) ।

आपासःपिञ्ज न [आपासःपिञ्ज] पतिवृद्ध नीच (वि १
७२) ।

आपासःपिञ्ज न [आपासःपिञ्ज] पतिवृद्ध नीच (वि १
७२) ।

आपासःपिञ्ज न [आपासःपिञ्ज] पतिवृद्ध नीच (वि १
७२) ।

नह आरंभ (वा २२ पै ८ ८२) । संह
आरंभःपिञ्ज आरंभ (वा २२) ।

आरंभ पु [आरंभ] १ मुक्तप्राप्त प्रारम्भ
(वि १ १) । २ बीच-हिंसा वध (वा ७) ।
३ बीच प्रारंभ (पुत्र १ १) । ४ पाप-कर्म
(पापा) । य वि [व] पाप-कर्म से छलन
(पापा) । विजय पु [विजय] आरंभ का
प्रमाण । विजय वि [विजय] आरंभ
से विजय (पापा) ।

आरंभ पु [आरंभ] १ अरर केओ
आरंभ (वि २, १) । २ वि मुक्त करने-
वाला (वि १२८ का १) । ३ हिंसक
पाप-कर्म करनेवाला (पापा) ।

आरंभ वि [आरंभ] १ मुक्त करनेवाला
(कह) । २ पाप-कर्म करनेवाला (क
१११) ।

आरंभ पु [वि] सत्ताकार, यानी (वि १
७२) ।

आरंभ वि [आरंभ] प्रारम्भ मुक्त किया
हुआ (पवि) ।

आरंभ वि [आरंभ] आरंभ = वा + रद् ।
आरंभिका की [आरंभिका] १ हिंसा से
सम्बन्ध रखनेवाली किया । २ हिंसक किया
से होनेवाला कर्म-बन्ध (आ २ १ नव १७) ।

आरंभ वि [आरंभ] कोटवाल का घोड़ा
कोटवाली आरंभवा (मुत्र १ १) ।

आरंभ वि [आरंभ] १ रण्य करनेवाला
(वि १ १५) । २ मुक्त कोटवाल नगर का
राज (पापा) ।

आरंभ वि [आरंभ] १ रण्य करने-
वाला वाता (क्या मुत्रा १११) । २ मु-
रखियों का एक बंध । ३ वि कह बंध में
जन्म (ठा १) ।

आरंभ वि [आरंभ] रण्य वाता (आ
१ १ पै २१) ।

आरंभ वि [आरंभ] १ रण्य करने-
वाला वाता (क्या मुत्रा १११) । २ मु-
रखियों का एक बंध । ३ वि कह बंध में
जन्म (ठा १) ।

आरंभ वि [आरंभ] रण्य वाता (आ
१ १ पै २१) ।

आरंभ वि [आरंभ] १ रण्य करने-
वाला वाता (क्या मुत्रा १११) । २ मु-
रखियों का एक बंध । ३ वि कह बंध में
जन्म (ठा १) ।

आरंभ वि [आरंभ] रण्य वाता (आ
१ १ पै २१) ।

आरंभ वि [आरंभ] १ रण्य करने-
वाला वाता (क्या मुत्रा १११) । २ मु-
रखियों का एक बंध । ३ वि कह बंध में
जन्म (ठा १) ।

आरंभ वि [आरंभ] रण्य वाता (आ
१ १ पै २१) ।

आरंभ वि [आ + रद्] १ विजया पुत्र
माता । २ रण्य । नह आरंभ (वा १२८
पै) । संह आरंभ (वा २२) ।

आरंभ वि [वि] १ विजय कर्म । २
विजय (वि १ ७२) ।

आरंभ पु [आरंभ] १ विजय-विजय (प्र-
मथ १११, इह) । २ उस केओ का विजय
देव : 'उ' केव आरंभ-विजय प्रोहीनाएउ पधरि'
(वि १२१ वि १११) ।

आरंभ पु [आरंभ] एक देवविजय (वि १११
१११) ।

आरंभ न [वि] १ अरर, होठ । २ अरर (वि
१ ७२) ।

आरंभ न [आरंभ] कर्म वाता (वि १ १७) ।

आरंभ न [वि] कर्म पध (वि १ ७७) ।

आरंभ वि [आरंभ] कर्म वाता (वि १ १७) ।

आरंभ वि [आरंभ] कर्म वाता (वि १ १७) ।

आरंभ वि [आरंभ] कर्म वाता (वि १ १७) ।

आरंभ वि [आरंभ] कर्म वाता (वि १ १७) ।

आरंभ वि [आरंभ] कर्म वाता (वि १ १७) ।

आरंभ वि [आरंभ] कर्म वाता (वि १ १७) ।

आरंभ वि [आरंभ] कर्म वाता (वि १ १७) ।

आरंभ वि [आरंभ] कर्म वाता (वि १ १७) ।

आरंभ वि [आरंभ] कर्म वाता (वि १ १७) ।

आरंभ वि [आरंभ] कर्म वाता (वि १ १७) ।

आरंभ वि [आरंभ] कर्म वाता (वि १ १७) ।

आरंभ वि [आरंभ] कर्म वाता (वि १ १७) ।

आरंभ वि [आरंभ] कर्म वाता (वि १ १७) ।

आरंभ वि [आरंभ] कर्म वाता (वि १ १७) ।

आरम्भ न [आरम्भ] १ मूल का एक सेव
(अ ४ ४) । २ इस नाम का एक धूर्त
'अन्वेष' य आरम्भो सेमिलो
पंचसंज्ञो हार्य (मरि) ।

आरम्भ न [आरम्भ] एक सख की मात्र
विधि (यव २४) । मसोक्ष न [मसोक्ष]
मात्रविधि-विरोध (यव २४) ।

आरम्भो की [आरम्भ] प्रतिवेदन-विरोध
(धोष ११२ मा) ।

आरम्भिय न [आरम्भ] मात्रविधि-विरोध
(यव) ।

आरय वि [आरय] १ उरय । २ धपय
(युग १२) ।

आरय वि [आरय] उरय सर्वेषां निवृत्त
(युग १ ४ १ १ १ १ १) ।

आरय धु [आरय] उरय, धावाय वलि
(सण) ।

आरय धु [आरय] इस नाम का एक प्रसिद्ध
स्नेह-वेद्य (पण्ड १ १) ।

आरय } वि [आरय] धरय वेद्य में उत्पन्न
आरयण } धरय वेद्य का निवासी । स्त्री की
(छाया १ १) ।

आरयिन् वि [आरयिन्] कर्म-सम्बन्धी
(मरक) ।

आरम सक [आ + रत्] विज्ञाना हून
मात्रा । बहु आरमत् (उत्त १२) । हूँ
आरमत् (काव) ।

आरसिय न [आरसिय] १ विज्ञातः हून ।
२ विज्ञाना हुआ (विवा १ २) ।

आरसिय धु [आरस्ये] कर्ण (श्वानो) ।

आरु देवो आरय । आरुह (पण्ड १) । संह
आरुहिय (मरि १) ।

आरुहत् } वि [आरुह] आरुह का भिन
आरुहिय } देव सम्बन्धी 'आरुहिये' (सप्त
१ ४ ४ पत्र २—माया १७) ।

आरु की [आरु] सोखे की सलाई, पंख में
बासी बासी सोह की बीसी (पण्ड १ १
त १८) ।

आरुध [आरुध] १ धर्मिक पहले (हे
१ १४) । २ पूर्व-भाग (मिसे १०४) ।

आरुधिय वि [हे] १ पृथक् स्वीकृत । २
प्रातः (हे १ ७) ।

आरुधि की [आरुधि] 'बोलाए, पिछाह'
(युव २, १२) ।

आरुधी की [हे] देवो आरुधिय (हे १
७) ।

आरुध धु [आरुध] बगीचा उन्नत (श्रीप-
छाया १ १) ।

आरुध धुन [आरुध] बगीचा उन्नत 'आरु-
माणी' (भावा २ १ २) ।

आरुमिय धु [आरुमिय] माणी (कुमा) ।
आरुध धु [आरुध] उन्नत भावाय (स १७७
पत्र) ।

आरुह सक [आ + राधय] १ सेवा
करना, मर्क करना । २ ठीक-ठीक पालन
करना । आरुह, आरुह (महा मय) ।

बहु आरुहत् (यस ७) । संह आरु-
हिया आरुहिया, आरुहियण (कण्य
मा मरि) । हेह आरुहिय (महा) ।

आरुह वि [आरुध] धावयन-योग्य (माय
११) ।

आरुहय वि [आरुधय] १ धावयन करने-
बन्ता । २ मोक्ष का साधक (मय १, १) ।

आरुहय न [आरुधय] १ धेयता (माय
११) । २ धन्यता (पत्र) ।

आरुहया की [आरुधया] १ सेवा मर्क ।
२ परिपालन (छाया १ १२; पत्रा ७) ।

१ मोक्ष-मार्ग के धनुष नर्तन (पत्रि) ।
४ निष्का धावयन किया नाम बहु (धाव
१) ।

आरुहया की [आरुधया] धावयन नाम
यिक धर्म पद-कर्म (धनु ११) ।

आरुहणी की [आरुधणी] माया का एक
प्रकार (सप्त ७) ।

आरुहिय वि [आरुधिय] १ वैभित परि-
पालित (मय ७) । १ धनुष्य योग्य (स
१२३) ।

आरुहिय वि [हे] वाय गत धनुष हुआ
(पण्ड १) ।

आरिय न [आरुध] धावयन (यव १ १) ।
आरिय देवो अरु=माय । (मय पण्ड
मुग १२८ पत्र १४ १ । मुर ८ ६१) ।

आरिय वि [आरुध] वैभित 'धर्मो धाव-
यिो सेवितो वा एवमुति' (पाण्ड) ।

आरिय वि [आरुधिय] आरुह कुत्सय
हुमा 'आरियो धावयिमा वा एवमुति'
(भावा) ।

आरिया स्त्री अरु=माय (प्रातः) ।
आरिय वि [हे] धावा रूपम पहले जो
उन्नत हुआ ही (हे १ ११) ।

आरिय वि [आरु] अवि-सम्बन्धी (कुमा) ।
आरुधिय देवो आरुध (यव १ १ टी) ।

आरुग देवो धावयण=धावयण 'धावय-
योहितामं यमाह्वयकृतं दिव' (पत्रि) ।

आरुह वि [आरुध] कुव ४७ (पत्र ५१
१४१) ।

आरुण्य (यव) सक [आ + रिपु] १
धनिकृत करना । आरुण्य (प्रातः ११२) ।

आरुम देवो आरुह=मा + रू । बहु
आरुममाण (सप्त) ।

आरुवणा देवो आरुवणा (विष २६२८) ।
आरुम सक [आ + रु] १ मर्क करना रोय
करना । संह आरुम (युग १ २) ।

आरुसिय वि [आरुध] कुव धुपित (छाया
१ २) ।

आरुह सक [आ + रुह] ऊपर चढ़ना
ऊपर बैठना । आरुह (पण्ड १) ।

आरुह (मय) । बहु आरुह, आरुहमाण
(मि १ १६ या १६) । संह आरुहियण,
आरुहिय (महा पत्र) । हेह आरुहिय
(महा) ।

आरुह वि [आरुह] उत्पन्न उत्पन्न बाव
'मायाह्मि माय

बधमि नमयिह्यं हा भाणमि ।
हापरिभास्यं पशो हरेमि

वा होमि सा होमि' (गा ७ २) ।
आरुहय न [आरुहय] ऊपर बैठना (छाया
१ २ या ११ मुग २ १; विवा १, ७
पत्र) ।

आरुहय न [आरुहय] धावयन ऊपर
चढ़ना (यव १२२, यव १ ६) ।

आरुहिय वि [आरुधिय] १ स्वापित । २
ऊपर बैठना हुआ (स ८ ११) ।

आरुहिय } वि [आरुध] १ ऊपर चढ़ा हुआ
आरुह } (महा) । २ इत विहित 'दोए
धुप्यो पण्डया धावयिमा कुवक मय कर्म'
(पत्र ८ ६१) ।

आक्षप्य वि [आक्षप्य] कहे के योग्य निर्बन्धनीय 'सदस्यकुम्भित्वासम्पत्तिं सयोगे' (नृसू ८)।

आक्षय सक्र [आ + क्षम्] प्राप्त करना। धामनिष्ठा (अथ ११)।

आक्षमण न [आक्षमन] बिनाशन (धर्म ८८२)।

आक्षमिया की [आक्षमिका] नगरी-विशेष (वरा ११२)।

आक्षय पुन [आक्षय] गृह, घर, स्थान (महा १११४)।

आक्षय पुन [आक्षय] बीजवर्धन-प्रसिद्ध विज्ञान-विशेष (बर् ११२२, ११२३ ११२४)।

आक्षयण न [क्षि] बास-यू रम्या-यू (दे ११८ २८)।

आक्षय सक्र [आ + क्षप्] १ कहे, बात-चीत करना। २ चौड़ा या एक बार कहना।

बह् आक्षयत (मा ११८, धर्म १८) आक्षयमाण (अ ४)। आक्षयिऊण (महा) आक्षयिष (गुट)।

आक्षयण न [आक्षयन] संभाषण बातचीत बातचीत (पाथ १११ अ १२८ टी भा ११; दे १ २२, स ११)।

आक्षयस न [आक्षयस] कियाटी चौकिया (पाथ)।

आक्षम वि [आक्षम] घालनी मुसल (धर्म १२२)। ल न [क्षि] घालन मुसली (पा २३)।

आक्षसिष वि [आक्षसिष] घालनी मख (अन १२, २)।

आक्षमुय रेको आक्षसिय 'पाथि धामवीला धालमुवा मुनिषा' (धम्म ११)।

आक्षस पुन [आक्षय] मुसली 'धालसो रणणमो' (बहा १११)।

आक्षस न [आक्षय] घालन मुसली (हुमा-मुस २२१)।

आक्षसि वि [आक्षसिष] घालनी मुसल (धम्म २, १)।

आक्षय रेको आक्षय (मा ४२८, १११; दे ११)।

आक्षय रेको आणाछ (पाथ दे १, १७ महु)।

आक्षयिष वि [आक्षयिष] नियमित मज दूकै दे बाँधा हुआ 'दक्षमुयरेवावाणियकमना-कण्ठिो निनो समलोहो' (मुस ४)।

आक्षय पुन [आक्षय] १ संभाषण बातचीत (पा १)। २ धाम भाषण (ठा १)। ३ प्रथम भाषण (अ ४)। ४ एक बार की उक्ति (अ १, ४)।

आक्षयक रेको आक्षय (मुज ८)।

आक्षयण पु [आक्षयण] पिय पैपथाक, परिच्छेद रूप का धर्म-विशेष (अ २२)।

आक्षयण न [आक्षयण] बधने का रज्जु धारि साधन, बन्धन-विशेष। संघ पु [यय] बन्धन-विशेष (मा १)।

आक्षयण न [आक्षयण] घालन संभाषण (बहा १२४)।

आक्षयण, की [आक्षयण] भाषण-विशेष (बहा ८)।

आक्षय पु [क्षि] दूधिक विष्णु (दे १ ११)।

आक्षय रेको अक्षहि (प ४)।

आक्षि पु [अक्षि] प्रवर, मण्डप नीच (पक्षि)। आक्षि रेको आक्षि (पाथ पाथ)।

आक्षि सक्र [आ + क्षिप्] धासिजन करना मँज्या गये सपना। आक्षिग (महा)। संक्षि-आक्षिगऊण (महा)। हेक्षि-आक्षिगिउ (महा)।

आक्षि पु [आक्षि] बाध-विशेष (पाथ)।

आक्षि वि [आक्षि] १ धासिजन करने योग्य। २ पु बाध-विशेष (जीव १)।

आक्षिग न [आक्षिजन] धासिजन मँज (बन्ध)। बट्टि की [क्षि] गम या कपोल का चरवान-उत्थित शरीर-प्रमाण बनवान (अन ११ ११)।

आक्षिगिया की [आक्षिगिनि] रेको आक्षिगनशुटि (जीव १)।

आक्षिगिया की [आक्षिगिनी] ननु धारि के नीचे रखने का उक्ति (पथ ८४)।

आक्षिगि वि [आक्षिगि] पाठक, विद्वान धालन किया गया हो बह (अन)।

आक्षि पु [आक्षि] बाहर के रज्ज्या के नीचे बा एक हिस्सा (पक्षि १२२, धर्म २८)।

आक्षि सक्र [आ + क्षि] पोचना लेना करना। आक्षिप (अन)। हेक्षि-आक्षि-

पिच्छ (अन)। बह् आक्षिपत। प्रयो आक्षिपत (निष् १)।

आक्षिपण न [आक्षिपण] १ सेप करना बिसे पन (अन ४२)। २ बिचस लेन होया है बह् बीज (निष् १२)।

आक्षिग रेको आक्षिग (पथ ४, १४१)।

आक्षिग न [आक्षिग] बहान बजाने का बन्ध-विशेष (पाथ २ १ १२)।

आक्षिग वि [आक्षिग] सरणित सरण हुआ निपा हुआ (निष् २३४)।

आक्षिग वि [आक्षिग] १ बाटें बोरसे जमा हुआ 'नह धासिसे मेह कोह पसुस नर तु बौद्धा' (अन ११ एय्या १११४)। २ न धाय लगनी धाय स जलना 'कोटिमधरे बसेधे धासितमि वि न ब्रम्हा' (अन ४)।

आक्षि वि [आक्षिग] धासित (अन ११, १ सुर १ २२२)।

आक्षि वि [आक्षिग] बहा हुआ धासवारिण (दे १ ११)।

आक्षिग पु [क्षि] धासिसिद्धक बाध-विशेष (ठा २, १ मण १७)।

आक्षिसिद्ध पु [क्षि] धासिसिद्धक ऊपर रेको (अ १)।

आक्षि सक्र [क्षि] सरण करना फूला। धासिह (ह ४ १८२)। बह्-आक्षिह (अन)।

आक्षि सक्र [आ + क्षि] १ बिप्राध करना स्थान करना। २ बिज करना बिजला बा बिज बनना। बह् आक्षिहमाय (पुर १२४)।

आक्षिह वि [आक्षिह] बिधित (पुर १ ८७)।

आक्ष सक्र [आ + क्षि] १ बीज होया धासक होना। २ धालन करना। ३ निगास करना। बह् आक्षियमाय (अन)।

आक्ष की [आक्ष] १ पक्षि, पक्षी। २ सको बपत्या (ह १ ४१)। ३ बससि विशेष (पाथ १ १)।

आक्षि वि [आक्षि] १ धासक धासना ननु बह् धासिधमनीकोनोपनिभास (पक्षि)। २ न धास-विशेष (अन १)।

आखीज नून [आखीज] योडा का युद्ध समन का प्राप्ति-विशेष (वच १)।

आखीज वि [आखीज] १ नील, घासक, लहर (पञ्च १२, ६)। २ घासकित घासकित (पञ्च)।

आखीज वि [आखीज] बलानेवाला भाव घुलानेवाला (छाया १ २)।

आखीजमान केहो आखी = दा + भी।
आखीज न [वि] समीप का मय पाच का कर (६ १ ११)।

आखीज केहो आखीज = पण १ १)।
आखीज न [आखीज] घाग नमाना (६ १ ७१ विना १ १)।

आखीज वि [आखीज] घाग स बलाना हुआ (वि २४६)।

आखीज न [आखीज] नन्व-विशेष मानू (भा २ १)।

आखीज की [आखीज] बड़ी-विशेष (वच १)।
आखीज लक [हह] बलाना दाह लेना।
मानू बह (६ ४ २) बह)।

आखीज लक [सूर] स्वर्ण करता हुआ।
मानू बह (६ ४ २)।

आखीज न [स्वर्ण] स्वर्ण कृप (पञ्च)।
आखीज वि [पण्ड] पण्ड, कुमा हुआ (६ १ २१) पण्ड)।

आखीज वि [हय] जाता हुआ (पुर ६ २ १)।

आखीज लक [हय] कुमा। मानू बह (भा ४४)।

आखीज लक [आ + हय] इच्छा करता।
मानू बह (भा ४४)।

आखीज वि [आखीज] घासक, लहर करने-
वाला चीज लेनेवाला (भा ४४)।

आखीज केहो आखी (पण्ड १)।
आखीज की [वि] बगी छोटा वस्त्र (का ११)।

आखीज वि [वि] निर्वर्ण वर्ण निव्योचन,
'ना रविनी मयसे घाह वि' मानुमारविण-
पण्ड (गुण १४३)।
मानुमार वि [आखीज] निर्वर्ण 'रवि
मानुमारविण' नरिण्डेन लण्ड घासकविण-

रणवि न बर्ण (पञ्च २३) से २ ४२) गा
१४१) गण्ड)।

आखीज केहो आखीज = दा + भी।
आखीज लक [हह] बलाना दाह लेना।

आखीज लक [हह] बलाना दाह लेना।
मानू बह (६ ४ २) बह)।

आखीज लक [हह] बलाना दाह लेना।
मानू बह (६ ४ २) बह)।

आखीज लक [हह] बलाना दाह लेना।
मानू बह (६ ४ २) बह)।

आखीज लक [हह] बलाना दाह लेना।
मानू बह (६ ४ २) बह)।

आखीज लक [हह] बलाना दाह लेना।
मानू बह (६ ४ २) बह)।

आखीज लक [हह] बलाना दाह लेना।
मानू बह (६ ४ २) बह)।

आखीज लक [हह] बलाना दाह लेना।
मानू बह (६ ४ २) बह)।

आखीज लक [हह] बलाना दाह लेना।
मानू बह (६ ४ २) बह)।

आखीज लक [हह] बलाना दाह लेना।
मानू बह (६ ४ २) बह)।

आखीज लक [हह] बलाना दाह लेना।
मानू बह (६ ४ २) बह)।

आखीज लक [हह] बलाना दाह लेना।
मानू बह (६ ४ २) बह)।

आखीज लक [हह] बलाना दाह लेना।
मानू बह (६ ४ २) बह)।

आखीज लक [हह] बलाना दाह लेना।
मानू बह (६ ४ २) बह)।

आखीज न [आखीज] नीचे केहो (पण्ड
२, १ पण्ड २४)।

आखीज की [आखीज] १ रेखा
बलाना। २ प्रापित के लिए पले रेतों
को बुझ को बहा देना। ३ विचार करण
(का १७ २) या ४२ छ १ ६)।

आखीज वि [आखीज] इष्ट, निर्वर्ण
(वि १ २४)।

आखीज वि [आखीज] प्रवर्णित बुझ को
बलाना हुआ (पण्ड)।

आखीज केहो आखीज = दा + भी।
आखीज लक [हह] बलाना दाह लेना।
मानू बह (६ ४ २) बह)।

आखीज लक [हह] बलाना दाह लेना।
मानू बह (६ ४ २) बह)।

आखीज लक [हह] बलाना दाह लेना।
मानू बह (६ ४ २) बह)।

आखीज लक [हह] बलाना दाह लेना।
मानू बह (६ ४ २) बह)।

आखीज लक [हह] बलाना दाह लेना।
मानू बह (६ ४ २) बह)।

आखीज लक [हह] बलाना दाह लेना।
मानू बह (६ ४ २) बह)।

आखीज लक [हह] बलाना दाह लेना।
मानू बह (६ ४ २) बह)।

आखीज लक [हह] बलाना दाह लेना।
मानू बह (६ ४ २) बह)।

आखीज लक [हह] बलाना दाह लेना।
मानू बह (६ ४ २) बह)।

आखीज लक [हह] बलाना दाह लेना।
मानू बह (६ ४ २) बह)।

आखीज लक [हह] बलाना दाह लेना।
मानू बह (६ ४ २) बह)।

याचोर्ध्व जीवन्मयत्वं (आप) । बद्धा श्री
[क्या] जीवन्मयत्वं 'ब्रह्मा आपवत्' इत्युक्तं
पुन्युक्तं न पुनर्भि (उ १८१) । अथि
[किम्] आपवोर्ध्व जीवन्मयत्वं
एतन्नाम (उ १८२) ।

आप पुं [आप] १ प्रसिद्धि नाम (एह २
१) । २ अप वा वसुध । वसुध न [वसुध]
देवो आन-वसुध (नम) ।

आप मत् [आ + या] घाता आपनन करता;
'ब्रह्मणोऽपि तस्मिन् निमित्ते आपव निहानुर्ध्व एव'
(मुग १४०) । घात (न) । आपति (मंन
११२२) ।

आपभास क [अप + गृह्] आपतिन
करता । आपभास (आप ७४) ।

आपव श्री [आपव] आपति विपत्, संकट
(सम ३०० मुग ३२१ गुर ४ २१५, प्राप्
२ १५२) ।

आपव पुं [वि] आपतिना कृता विपत् लक्ष्मी
(दे १ १२२) ।

आपवु नि [आपवु] आपति लक्ष्मी
(ग २२२) ।

आपवु नि [आपवु] ऊपर देवी (वि
७४) ।

आपव देवो आपव 'आपवो के आपवो लोचनि
समया य आपव' (आप १ ४ २ १
१ ५, २, ४ नि ३३०) ।

आपवग न [आपवान] आप वर वरुण की
नता (अवि) ।

आपवैज वि [अपवैज] आपव-आपव
(नम) ।

आपव देवो आपव (दे १ १५६) ।

आपव क [अ + पद] प्राप्त होता नाप
होता । आपव (नम) । आपव-आपव
(नम) ।

आपव वर [आ + वर] १ संयुक्त
करता । २ प्रपन्न करता 'आपव-व' एव
एव आपव-व (न ११) ।

आपव क [आ + पद] प्राप्त करता ।
आपव (न १२ १ १) । आपव (मुप
१ १ २१२ २) आपव (न १२) ।

आपव } नि [आपव] क आपव-आपव
आपव (न १२) ।

आपव न [आपव] १ संयुक्त करता ।
२ प्रपन्न करता (आप) । ३ उपयोज्य,
बला । ४ उपयोज्य-विशेष । ५ व्यापार-विशेष
(वि १ २२) ।

आपव वि [आपव] १ प्रपन्न करता
हवा । २ अपिमुक्त विना हवा (महा गुर १
११ मुग २१२) । करण न [करण]
व्यापार-विशेष (आप) ।

आपव देव आपव-आपव = आपव-विशेष
(हवा) ।

आपव-आपव न [आपव-आपव] उपयोज्य
विशेष या व्यापार-विशेष वा करता उचित
एतन्नाम में वर-आपव एव व्यापार (वीर
वि १ २) ।

आपव क [आ + पद] १ वर की लक्ष्मी
पूना, धरिता । २ विनीत होता । ३ वर-
लक्ष्मी करता मुता । ४ वीरता, दुस्ती
करता । आपव (दे ४ ४११ मुप १ ५,
२) । आपव-आपव (वि १ ५) ।

आपव देवो आपव (आप १४० मुप १ ५)
१ १) ।

आपव देवो आपव (आप १४० मुप १ ५)
१ १) ।

आपव देवो आपव (आप १४० मुप १ ५)
१ १) ।

आपव क [आ + पद] १ घात, आपनन
करता । २ घात करता । आपव-आपव (आप
१ ५) ।

आपव न [आपव] १ धरिता (वि १
४२) । २ घात करता (वि १८४) ।

आपव-आपव श्री [आपव-आपव] १ हट-आपव
आपव । २ उपयोज्य-विशेष एव लक्ष्मी वा मुता
(आप १) ।

आपव-आपव नि [आपव-आपव] १ निरा हवा
(महा) । २ वर में आपव हवा (वि १ ४ १) ।

आपव-आपव नि [वि] १ संयुक्त संयुक्त (दे १
७८ आप) । २ वर, वरुण (दे १ ७८) ।

आपव पुं [आपव] १ हवा दूधन (आप
१ १ ४०) । २ वर-आपव (आप) ।

आपव पुं [आपव] १ वर-आपव (आप
१ ५) ।

आपव पुं [आपव] १ वर-आपव (आप
१ ५) ।

आपव पुं [आपव] १ वर-आपव (आप
१ ५) ।

आपव नि [आपव] १ आपव-आपव । २
प्राप्त (ग ४१०) । सत्ता श्री [सत्ता]
गतिर्गो वर-आपव (वि १ २४) ।

आपव नि [आपव] आपव (मुप १ १
१ १२) ।

आपव क [आ + पद] घाता 'आपव-
आपव' एव लक्ष्मी वा वर-आपव (वि १ ४ १)
१ १) ।

आपव क [आ + पद] १ वर-आपव
करता । २ वर-आपव । ३ वर-आपव (मुप १ १)
१ १) ।

आपव क [आ + पद] १ वर-आपव
करता । २ वर-आपव । ३ वर-आपव (मुप १ १)
१ १) ।

आपव पुं [आपव] १ वर-आपव (वि १ ४ १)
१ १) ।

आपव पुं [आपव] १ वर-आपव (वि १ ४ १)
१ १) ।

आपव पुं [आपव] १ वर-आपव (वि १ ४ १)
१ १) ।

आपव पुं [आपव] १ वर-आपव (वि १ ४ १)
१ १) ।

आपव पुं [आपव] १ वर-आपव (वि १ ४ १)
१ १) ।

आपव पुं [आपव] १ वर-आपव (वि १ ४ १)
१ १) ।

आपव पुं [आपव] १ वर-आपव (वि १ ४ १)
१ १) ।

आपव पुं [आपव] १ वर-आपव (वि १ ४ १)
१ १) ।

आपव पुं [आपव] १ वर-आपव (वि १ ४ १)
१ १) ।

आपव पुं [आपव] १ वर-आपव (वि १ ४ १)
१ १) ।

आपव पुं [आपव] १ वर-आपव (वि १ ४ १)
१ १) ।

आपव पुं [आपव] १ वर-आपव (वि १ ४ १)
१ १) ।

आपव पुं [आपव] १ वर-आपव (वि १ ४ १)
१ १) ।

आपव पुं [आपव] १ वर-आपव (वि १ ४ १)
१ १) ।

आपव पुं [आपव] १ वर-आपव (वि १ ४ १)
१ १) ।

आपव पुं [आपव] १ वर-आपव (वि १ ४ १)
१ १) ।

वाचक्य बीजमन्यन्त (भाष) । कहा की
[क्या] बीजमन्यन्त 'बेणु वाचक्य
प्रकृत्यवाचनं प्रथमं' (उ १८१) । कहिय
वि [कथित] वाचक्यक्य बीजमन्यन्त
प्रकृत्यवाचन (उ १ उ १२) ।

आय पु [आय] १ प्राप्ति नाम (पण्ड २
१) । २ जल का समूह । बहुल न [बहुल]
केतो आउ-बहुल (कव) ।

आय सक [आ + या] भासा घासमान करना;
'बहुलमिच्छति निर्वर्ण वाचक्य निहनुम्' (उ १८१)
(मु १८१) । वाचक्य (भाष) । वाचक्य (उ १
१८१) ।

आयआस सक [उप + गृह्] घासमान
करना । वाचक्य (भाष ३४) ।

आयक्य की [आयक्य] घासमान विपण, सक
(उ १८१) । वाचक्य १२१ मूर ४ २११, प्रामु
२, १२६) ।

आयक्य पु [वि] वाचक्य, कृत विपण मन्त्रीय
(१ १२१) ।

आयक्य वि [आयक्य] बीजा लये कीका
(उ १२१) ।

आयक्युर वि [आयक्युर] लये केतो (वि १
३४) ।

आयक्य केतो आयक्य 'आयक्य के वाचक्य लोपति
समया य माह्वय' (भाषा १ ४ २ १
१ २, २, १४ वि १२०) ।

आयक्य न [आयक्य] घष पर बहने की
कता (मरि) ।

आयक्य वि [अपरीय] घष पर बहने की
(कव) ।

आयक्य केतो आयक्य (१ १ १२६) ।

आयक्य सक [अ + पृ] प्राप्ति होना साधु
होना । वाचक्य (वम) । १ आयक्ययम्य
(पण्ड २ २) ।

आयक्य सक [आ + कर्] १ संजुग
करना । २ प्रसन्न करना 'आयक्यि गुणा
पुनः सन्निवि कर्तुं समकथित' (म ११) ।

आयक्य सक [आ + पृ] प्राप्ति करना
वाचक्य (उ १२, १ १) । वाचक्य (मु १
१ २, १२ २) वाचक्य (मु १२) ।

आयक्य } वि [आयक्य क] प्रोक्तवाचक्य
आयक्य (वि ४१८) ।

आयक्य न [आयक्य] १ संजुग करना ।
२ प्रसन्न करना (भाष) । ३ जलोप,
क्या । ४ जलोप-विशेष । ५ व्यापार-विशेष
(वि ४ ११) ।

आयक्य वि [आयक्य] १ प्रसन्न किया
हुआ । २ प्रसन्न किया हुआ (महा मूर १
११ गुण २१२) । करण न [करण]
व्यापार-विशेष (भाष) ।

आयक्य केतो आयक्य = घासमान
(हुआ) ।

आयक्यकरण न [आयक्यकरण] उदात्त
विशेष या व्यापार-विशेष का करना लीर
लक्षणिका में नमूने-रूप हय व्यापार (वीप
वि १ २) ।

आयक्य सक [आ + पृ] १ सक की लक्ष्य
मुना, फिरना । २ विलीन होना । ३ सक-
योग्य करना मुना । ४ विलीन हु-की
करना । वाचक्य (वि ४ ४१६ मूर १ २,
२) । ५ आयक्यमाय (वि २, ८) ।
आयक्य केतो आयक्य (भाषा मु १ ४४ मूर
१ १) ।

आयक्य की [आयक्य] वाचक्य (भाष
११) ।

आयक्य की [वि] १ नमोडा कुलवि । २
परक्य की (वि १ ३४) ।

आयक्य केतो आयक्य = वाचक्य (उप १) ।

आयक्य सक [आ + पृ] १ प्राप्ति घासमान
करना । २ घा लक्ष्य । ३ आयक्य (प्रामु
१ १) ।

आयक्य न [आयक्य] १ विना (वि १
४२) । २ घा लक्ष्य (वि १८४) ।

आयक्यवीहि की [आयक्यवीहि] १ हट-मार्ग
वाचक्य । २ व्यापार-विशेष एक लक्ष्य का मुहूर्त
(उप १) ।

आयक्य वि [आयक्य] १ विप हुआ
(महा) । २ पाप में माया हुआ (वि १४ १) ।

आयक्य वि [वि] १ लक्षण संघट (वि १
४ भाष) । २ लक्षण, मन्त्र (वि १ ४८) ।

आयक्य पु [आयक्य] १ हाट हुनन (उपमा
१ १ महा) । २ वाचक्य (प्रामा) ।

आयक्य पु [आयक्य] वीराग, व्यापार
(उप) ।

आयक्य वि [आयक्य] १ वाचक्य-मुह । २
प्राप्ति (भा ४६७) । सत्ता की [सत्ता]
मन्त्रीय मन्त्री की (प्रमि १२४) ।

आयक्य वि [आयक्य] भाषित (मु १ १
१ १६) ।

आयक्य सक [आ + पृ] प्राप्ति, 'आयक्य
मायक्य पुनो मने लेख सन्नुपलक्षित' (वम
१६६) ।

आयक्य सक [आ + पृ] १ परिग्रह
करना । २ लक्ष्य । ३ लक्ष्य-प्रामा । ४
सक पठित पाठ को वाच करना । प्रामा ।
वाचक्य (मूर २१) । ५ अक्षरमाय,
आयक्यमाय (वि १ २०१ मु १) ।

आयक्य पु [आयक्य] १ नमोदा परिग्रह
(उप १६) । २ मुहूर्त-विशेष (उप ११) ।
३ महाविषय क्षेत्र एक विषय (मन्त्र) का
नाम (उ २, १) । ४ एक लक्ष्यमाय पुन-
विशेष (पण्ड १ १) । ५ एक लक्ष्यमाय का
नाम (उ ४ १) । ६ परिग्रह-विशेष (उ ६) ।
७ मन्त्र का एक लक्षण (उप) । ८ वाच
विशेष (भाषम) । ९ वाचक्य-विशेष
कामिक व्यापार-विशेष 'हुननवाचक्य विधि
वम' (उप ११) । १० हट [हट] वर्तन
विशेष का विचार विशेष (उप) । ११ अक्षर
[विमान] बलिष्ठ की लक्ष्य लक्ष्य-प्रामा
नाम (मम ११ ११) ।

आयक्य पुन [आयक्य] १ एक लक्ष्य का लक्ष्य
(वि १६१) । २ लक्ष्यमाय २१ विना
का लक्ष्य (संघोप १८) ।

आयक्य न [आयक्य] घष घासा (भाष) ।
आयक्य न [आयक्य] लक्ष्य-प्रामा (वि
२, १) । 'पठित्या की [पठित्या] वीहिना
विशेष (उप) ।

आयक्य पु [आयक्य] केतो आयक्य । १
वि लक्ष्य-प्रामा करनेवाला (वि २ १) ।

आयक्य की [आयक्य] महाविषय-विशेष के
एक विषय (मन्त्र) का नाम (उप) ।

आयक्य की [आयक्य] १ वाचक्य, 'लक्ष्य
मन्त्रीयवाचक्य' (वि १६१४) । २ वाचक्य
कृत । ३ लक्ष्य (वि १६) ।

आयक्य की [आयक्य] प्रमि (वम
१०१) ।

आवेष्टय न [आवेष्टन] अर रेलो (बद
पि ३ ४)।

आवेष्टिय पि [आवेष्टित] १ बापें घोर से
नेटिल (मा १६ १ उप पु १२७)। २ एक
बार नेटिल (मा १)।

आवेष्टय न [आवेष्टन] निवेष्टन मनो-आप
का प्रकाश-कण (गणक से ७ ८७)।

आवेष्टय पि [वे] १ निवेष्ट घासक। २
प्रवृत्त, बढ़ा हुआ (पू)।

आवेष्टय एक [आ + वेष्टय] प्रवृत्ति
रहता। उद्ग. आवेष्टियण (स ६४)।

आवेष्टय पु [आवेष्ट] १ बर्धितिवेष्ट। २ ओर।
३ मुठपू। ४ प्रवेष्ट (मा)।

आवेष्टय न [आवेष्टन] रूपवृद्ध 'आवेष्टय'
समपवायु परिष्कृतवायु एवमा बालों
(पापा)।

आवेष्टय ओवेष्टय = मल (मा २६)।

आवेष्टय [आवेष्ट] केला। बह. 'अवेष्ट'
आवेष्टमाया न पणमुवाय विष्ट' (स ४)।
११ आवेष्टिय आवेष्टय, आवेष्टयु (पि
२७ कम स ६, ५४)।

आवेष्टय पु [आवेष्ट] १ अथ मोका (णमा १
१७)। २ वेष्ट-निवेष्ट यन्त्रिणी नम्र का बर्धित-
हावक वेष्ट (न)। ३ यन्त्रिणी कयन (न २)।

४ मन चित (पण २)। कणा कम पु
[कणे] १ एक प्रवृत्ति। २ प्रवृत्ति निवर्ती
(ठा ४ २)। गीब पु [गीब] एक प्रवृत्ति

यमा पहला प्रवृत्तिमुद्र (पम ६, १३१)।
वर पु [वर] वर (मा १)। त्वास
पु [त्वास] श्रद्धापूर्वक वा प्रवृत्त पुत्र

(दुमा)। खम पु [खम] विष्टावर वर
का एक पत्रा (नम ६, ४१)। अमर पु
[अम] केपी प्रवृत्ति वर (नम ६, ४२)।

वर पि [वर] यदी को बाण्ड करेबला
(वीन)। 'पुर न [पुर] वर-निवेष्ट (वृ)।
पुरा पुरी की [पुरी] वर-निवेष्ट (वृ
४ २, ३)। मरियया की [मरियया]

मरुपिय वीन-निवेष्ट (मो ११७)।
महप महप पु [महप] वर का वरन

करेबला (णमा १ १७)। 'मिष्ट पु
[मिष्ट] एक वेष्टाकर वर-निवेष्ट को वर-निवेष्ट
के निवेष्ट वर-निवेष्ट का निवेष्ट का वर-निवेष्ट

वदन्तिरेक वर वरमा वा (ठा ७)। मुह
पु [मुह] १ एक वर-निवेष्ट। २ वरमा

निवर्ती (ठा ४ २)। मेह पु [मेह] वर-
निवेष्ट (नम ११ ४२)। ख पु [ख] वर-
निवर्ती (णमा १ १)। वार पु [वार]

वृद्ध-वर, वृद्ध वरमा (णमा २१४)। बाह
निवा की [वाहनिम] वर-निवेष्ट की वर-निवेष्ट

वर पर वर-निवेष्ट वर-निवेष्ट (मि १ २)।
सेम पु [सेम] १ मर-निवेष्ट वर-निवेष्ट के

मिष्टा (म)। २ वर-निवेष्ट वर-निवेष्ट का मिष्टा
(म १३२)। रोह पु [रोह] वृद्ध-वर, वृद्ध-वरमा

(सि १२ २६)।
आवेष्ट पु [आवेष्ट] मोन 'आवेष्टय' पाय

उवाय' (म २ २)।
आवेष्ट पु [आवेष्ट] वेष्ट वर-निवेष्ट (मि २
२७ २३)।

आवेष्ट न [आवेष्ट] मुह मुह (णमा १ ४)।
आवेष्ट पि [आवेष्ट] वर-निवेष्ट वर-निवेष्ट 'वर-
निवेष्ट' वर-निवेष्ट का वेष्ट वर-निवेष्ट (म १
२७)।

आवेष्टय एक [आ + वेष्टय] १ वेष्ट
करा वर-निवेष्ट करमा। २ वर-निवेष्ट वर-निवेष्ट

वर-निवेष्ट (स ३)। वर-निवेष्ट वर-निवेष्ट
करमा (मा २ १)।

आवेष्टय की [आवेष्टय] वर-निवेष्ट वर-निवेष्ट
वर-निवेष्ट (म १ २१ २१ २१ २१)।

आवेष्टय पि [आवेष्टय] वर-निवेष्ट वर-निवेष्ट
करमा (मा १ ४)।

आवेष्टय पि [आवेष्टय] वर-निवेष्ट वर-निवेष्ट
करमा (मा १ ४)।

आवेष्टय पि [आवेष्टय] वर-निवेष्ट वर-निवेष्ट
करमा (मा १ ४)।

आवेष्टय पु [वे] वर-निवेष्ट वर-निवेष्ट (मि १
११)।

आवेष्टय पु [आवेष्टय] १ वर-निवेष्ट वर-निवेष्ट
करमा (मा १ ४)। २ वर-निवेष्ट वर-निवेष्ट

करमा (मा १ ४)। ३ वर-निवेष्ट वर-निवेष्ट
करमा (मा १ ४)। ४ वर-निवेष्ट वर-निवेष्ट

करमा (मा १ ४)। ५ वर-निवेष्ट वर-निवेष्ट
करमा (मा १ ४)।

आवेष्टय पु [वे] १ वर-निवेष्ट वर-निवेष्ट (मि १
११)। २ वर-निवेष्ट वर-निवेष्ट (मि १ ११)।

३ वर-निवेष्ट वर-निवेष्ट (मि १ ११)।
आवेष्टय की [वे] १ वर-निवेष्ट वर-निवेष्ट (मि १
११)। २ वर-निवेष्ट वर-निवेष्ट (मि १ ११)।

आवेष्टय पि [वे] १ वर-निवेष्ट वर-निवेष्ट (मि १
११)। २ वर-निवेष्ट वर-निवेष्ट (मि १ ११)।

आवेष्टय पि [वे] १ वर-निवेष्ट वर-निवेष्ट (मि १
११)। २ वर-निवेष्ट वर-निवेष्ट (मि १ ११)।

आवेष्टय पि [वे] १ वर-निवेष्ट वर-निवेष्ट (मि १
११)। २ वर-निवेष्ट वर-निवेष्ट (मि १ ११)।

आवेष्टय पु [वे] १ वर-निवेष्ट वर-निवेष्ट (मि १
११)। २ वर-निवेष्ट वर-निवेष्ट (मि १ ११)।

आवेष्टय पि [वे] १ वर-निवेष्ट वर-निवेष्ट (मि १
११)। २ वर-निवेष्ट वर-निवेष्ट (मि १ ११)।

आवेष्टय पि [वे] १ वर-निवेष्ट वर-निवेष्ट (मि १
११)। २ वर-निवेष्ट वर-निवेष्ट (मि १ ११)।

आवेष्टय पि [वे] १ वर-निवेष्ट वर-निवेष्ट (मि १
११)। २ वर-निवेष्ट वर-निवेष्ट (मि १ ११)।

आवेष्टय पि [वे] १ वर-निवेष्ट वर-निवेष्ट (मि १
११)। २ वर-निवेष्ट वर-निवेष्ट (मि १ ११)।

आवेष्टय पि [वे] १ वर-निवेष्ट वर-निवेष्ट (मि १
११)। २ वर-निवेष्ट वर-निवेष्ट (मि १ ११)।

आवेष्टय पि [वे] १ वर-निवेष्ट वर-निवेष्ट (मि १
११)। २ वर-निवेष्ट वर-निवेष्ट (मि १ ११)।

आवेष्टय पि [वे] १ वर-निवेष्ट वर-निवेष्ट (मि १
११)। २ वर-निवेष्ट वर-निवेष्ट (मि १ ११)।

आवेष्टय पि [वे] १ वर-निवेष्ट वर-निवेष्ट (मि १
११)। २ वर-निवेष्ट वर-निवेष्ट (मि १ ११)।

आवेष्टय पि [वे] १ वर-निवेष्ट वर-निवेष्ट (मि १
११)। २ वर-निवेष्ट वर-निवेष्ट (मि १ ११)।

आवेष्टय पि [वे] १ वर-निवेष्ट वर-निवेष्ट (मि १
११)। २ वर-निवेष्ट वर-निवेष्ट (मि १ ११)।

आवेष्टय पि [वे] १ वर-निवेष्ट वर-निवेष्ट (मि १
११)। २ वर-निवेष्ट वर-निवेष्ट (मि १ ११)।

आसञ्ज न [आसाञ्ज] प्राप्त करके (विशे १) ।

आसञ्ज वृ [आसञ्ज] विष्णु की देवकी रत्नाम्नी का स्वनाम-क्यात एक सैन प्रभुकार (विशे १४१) ।

आसञ्ज न [आसन] १ बिस्वर सैन बाता है वह भीमि धारि (मात्र ४) । २ स्थान, बग्न (जत १ १) । ३ शम्पा (भाषा) । ४ देवता चलेछन (छ ६) ।

आसञ्जि वि [आसञ्जि] प्राप्त पर बैठाया हुआ (स २१२) ।

आसञ्ज न [आसञ्ज] १ शमीय पात्र । २ वि शमीयण (मन्त्र) । देवो आसञ्ज ।

आसञ्ज वि [आसञ्ज] नील उत्तर (पद्म प्रामु ४४) ।

आसञ्ज वि [आसञ्ज] १ शीरे तथा हुआ (पय १२) । २ तु ननुषक का एक घेर, शीर्षपात्र होने पर भी शी का भावित्य कर उनके कथादि शीर्षों में मुकुटार होनेवाला ननुषक (पय १ १) ।

आसञ्जि शी [आसञ्जि] धर्मव्यक्त लक्ष्मीनदा (कुमा) ।

आसत्थ्य वृ [आसत्थ्य] पीपल का पेड़ (पद्म २१ ४६) ।

आसत्थ्य वि [आसत्थ्य] १ प्राधसन-प्राप्त स्वम् । २ विभाज्य (छाया ११ सम १२२ पञ्च ७ ११ है ७ २८) ।

आसञ्ज देवो आसञ्ज (द्रुमा, मन्त्र) । वसि वि [वसिञ्ज] नन्दकर्म में खनेवाला (मुपा १२१) ।

आसाम वृ [आसाम] ताप्य धारि का निपाठ स्थान शीर्षस्थान (पण्ड १ १ दीप) । २ ब्रह्म-चर्य धार्यस्थ, ब्राह्मण्य धीर मेय (वैष्णव) है बार प्रकार की ब्रह्मता (पंथा १) ।

आसामपय न [आसामपय] तालको के प्राथम से वामविश स्थान (लघ १ १७) ।

आसामि वि [आसामि] प्राथम में खने-वाला धर्मि मुनि वसैण (पञ्च १) ।

आसय यक [आस] देवता । प्रासभति (वीच १) ।

आसय सक [आ + शी] १ प्राथय करण

प्रासवम्बन करना । २ ग्रहण करना । प्रासय (हय) । नक. आसयैत (विशे १२२) ।

आसय वृ [आसय] जानेवाला (भाषा) । आसय वृ [आसय] भाग्यार, प्रासवम्बन (ज ७१२ मुर ११ १६) ।

आसय वृ [आसय] १ मन जित हुए (मुर ११, १२, पाय) । २ धर्मप्राय (मुर १ १५) ।

आसय न [वि] निकट, समीप (वि १ ११) । आसरिज वि [वि] संतुष्ट-भ्यागत सामने प्राया हुआ (वि १ १६) ।

आसय यक [आ + स्तु] बीरे-बीरे करना टपकना । नक. आसायमाज (भाषा) ।

आसय सक [आ + स्तु] भासा प्रासयवि श्रेण कर्म परिरुमिण्ययो स विरुलोमी भावा खो' (हय २६) ।

आसय वृ [आसय] नुम विज, देवो 'सया सय' (सा १ १) ।

आसय वृ [आसय] मय सक (ज ७२८ टी) ।

आसय वृ [आसय] १ कर्मों का प्रवेष्ट-प्राप्त, विशेष कर्मवन्त होता है वह हिंसा धारि (ठा २, १) । २ वि शीता, प्रक-वचन को सुनने वाला (जत १) । सति वि [सति] हिंसरि में प्राप्त (भाषा) ।

आसय न [वि] नास-गृह, शम्पा-नर (वि १ ११) ।

आसयाधिया शी [असयाधिका] मय-नीम (धर्मि ४) ।

आसय सक [आ + सादय] स्पर्त करना घूना । प्रासायना । नक. आसायमाज (भाषा २ १ २ १) ।

आसय यक [आ + दस्] प्रासायन लेय विधाय लेय । प्रासय, प्रासय (वि ८८ ४६६) ।

आसय न [आसय] बिनाय, हिंसा (पण्ड १ १) ।

आसया शी [आसया] पञ्चिवाया 'जेवि तु पञ्चिवाया संतुष्ट' भाषा हार' (विशे २११६) । आमसिय वि [आसय] प्रासायन-प्राप्त (म १०८) ।

आसा शी [आसा] १ प्रास लम्बी (दीप) है १ २१ मुर १ १७७) । २ विरा (ज

१४८ टी) । ३ उत्तर वचन पर बहनेवाली एक विष्णुमारी देवी-विशेष (अ ८) ।

आसाय सक [आ + साद] स्वाय लेना बहना जाना । प्रासायि (सम) । नक. आसायज्वल, आसायैत, आसायमाण (पाठ से १ ४१ छाया १ १) ।

आसाय सक [आ + सादय] प्राप्त करना । नक. आसायैत (वि १ ४२) ।

आसाय सक [आ + सादय] प्रवृत्त करना प्रथमान करना । प्रासायना (महानि १) । नक. आसायैत, आसायमाण (भा १) अ ४) ।

आसाय वृ [आसाय] १ स्वाय, रत (पा १२१ से १ १८ ज ७१८ टी) । २ वृत्ति (वि १ २६) ।

आसाय वृ [आसाय] स्वाय का चित्तवृत्त प्रयास (सु ४२) ।

आसाय देवो आसय न प्रायय (सु ४२) ।

आसाय वृ [आसाय] प्राप्ति (वि १ १८) ।

आसाय वि [आसायित] १ प्रवृत्त विरक्त (पुन ४२४) । २ न प्रवृत्त विर स्वार (विशे १२) ।

आसाय वि [आसायित] बसा हुआ भीमि जाया हुआ (वि १ ४१) ।

आसाय वि [आसायित] प्राप्त लभ्य (हिंसा १ मन्त्र) ।

आसाय वृ [आसाय] १ प्रायय मय (मय ११) । २ एक निम्न जो धर्मव्यक्त मय का जलायक (अ ७) । मूड वृ [मूड] एक प्रसिद्ध सैन वृत्ति (कुम्मा २१) ।

आसाय शी [आसाय] मय-विशेष (ठा २) ।

आसाय शी [आसाय] प्रायय मय की वृत्ति (मुर) ।

आसाय शी [आसाय] १ प्रायय मय की वृत्ति । २ प्रायय मय की धर्मावृत्ति (मुर १ १) ।

आसाय वृ [आसाय] प्रासायन करनेवाला (ठा ७) ।

आसाय वृ [आसाय] सत्य में मयवेध धीर बलवेध के पूर्वमयय कर्मवृत्त का नाम (मय १२१) ।

(बर्मेसि ५)। चंद्र. आहारिण, आहारिकज
(बर्मेसि ६५ सम्मत २१७)।

आहार पुं [आहार] पुं नगर (पामा सुपा
२८५ पाप ४१)।

आहारण १ न [आहारण] १ कुबाला।
आहारण २ न लताला (पा १२५ सुपा
१ पल्ल ११ १; ५ १४४)।

आहारिण रत्तो आहार = पाण्डु (टी ४)।

आहार्य नि [आहार्य] रत्तो लोभेनापि
(पेमा ११ १; ५ १४)।

आहारणीय की [आहारणी] निपाद-विरोध
(सुप २ २)।

आहारक [आ + क्य] कहुना। कर्म
प्राहिक्क (पि १४२) प्राहिक्क (कम्प)।

आहारक [आ + क्य] स्वापन करना।
कर्म प्राहिक्क (सुप २ १)। इह आहार्य
(सुप १ १)। चंद्र. आहार्य (उप १)।

आहार की [आहार] कर्मि ठेक (कम्प)।

आहार की [आहार] १ प्राच्य पाचार (सिंह)।
२ पाण्डु के निमित्त आहार के लिए भग्न
प्रतिष्ठान (सिंह)। कइ नि [कइ] प्राच्य-
कर्म-दीन थे कुछ (व १५५)। कम्म न
[कम्म] १ पाण्डु के लिए आहार पकता।

२ पाण्डु के निमित्त पकता हुआ भोजन जो
भैत पाण्डु के लिए निमित्त है (पण्ड २ १
उ ४ ४)। कम्मिय नि [कम्मिय] रत्तो
पूर्वक धर्म (कम्प)।

आहारण न [आहारण] १ स्वापन। २ स्वापन,
प्राच्य: 'सम्पुण्डराहार' (मात्र ४५५ २१)।

आहारण १ न [आहारण क] १ पण्डि
आहारण २ न [आहारण क] १ पण्डि
आहारण ३ न [आहारण क] १ पण्डि

आहारण ४ न [आहारण क] १ पण्डि
आहारण ५ न [आहारण क] १ पण्डि
आहारण ६ न [आहारण क] १ पण्डि

आहारण ७ न [आहारण क] १ पण्डि
आहारण ८ न [आहारण क] १ पण्डि
आहारण ९ न [आहारण क] १ पण्डि

आहारण १० न [आहारण क] १ पण्डि
आहारण ११ न [आहारण क] १ पण्डि
आहारण १२ न [आहारण क] १ पण्डि

आहारण १३ न [आहारण क] १ पण्डि
आहारण १४ न [आहारण क] १ पण्डि
आहारण १५ न [आहारण क] १ पण्डि

आहारण १६ न [आहारण क] १ पण्डि
आहारण १७ न [आहारण क] १ पण्डि
आहारण १८ न [आहारण क] १ पण्डि

आहारण १९ न [आहारण क] १ पण्डि
आहारण २० न [आहारण क] १ पण्डि
आहारण २१ न [आहारण क] १ पण्डि

आहारण २२ न [आहारण क] १ पण्डि
आहारण २३ न [आहारण क] १ पण्डि
आहारण २४ न [आहारण क] १ पण्डि

आहारण २५ न [आहारण क] १ पण्डि
आहारण २६ न [आहारण क] १ पण्डि
आहारण २७ न [आहारण क] १ पण्डि

आहारण २८ न [आहारण क] १ पण्डि
आहारण २९ न [आहारण क] १ पण्डि
आहारण ३० न [आहारण क] १ पण्डि

पण्डित की [पण्डित] कुछ आहार की
बस दीर रत्त के रूप में बरतने की लक्षि (पण्ड
१ ४)। पोसह पुं [पोषण] बस विरोध
जिसमें आहार का सर्वका वा प्राचिक स्वाप
किया जाता है (मात्र १)। मण्णा की
[संज्ञा] आहार करने की इच्छा (उप ४)।

आहार पुं [आहार] १ प्राच्य प्राचिकरण
(सुपा १२५ संभा १ १)। २ प्राकार (पण्ड
२ २)। ३ मन्थाण्य पाव रत्ता (पुण्ड
१११)।

आहारण न [आहार] १ शरीर विरोध
जिसकी बीज-पूर्वी केवलता की के पाव जाने
के लिए बताया है (उप २ २)। २ नि श्रेयस
करनेवाला (उप २ २)। ३ प्राहारक-शरीर
प्रासा (विशे १७२)। ४ प्राहारक-शरीर
करने का विरोध सामर्थ्य हो वह (कम्प)।

मुगल न [मुगल] प्राहारक शरीर और
उपक धर्मोपादान (कम्म २ १ २४)। नाम
न [नामस] प्राहारक शरीर का हेतु मूल
कर्म (कम्म १ ११)। ३ न [निक] रत्ता
मुगल (कम्म १ १ ५ १७)।

आहारण नि [आहारण] १ प्राच्य करने-
वाला। २ प्राच्य-मूल (सिंह १ १)।

आहारण नि [आहारण] प्राच्यक (सिंह
१ १)।

आहारण रत्तो आहारण (उप १ १ १७)।

आहारण २५ न [आहारण क] १ पण्डि
आहारण २६ न [आहारण क] १ पण्डि
आहारण २७ न [आहारण क] १ पण्डि

आहारण २८ न [आहारण क] १ पण्डि
आहारण २९ न [आहारण क] १ पण्डि
आहारण ३० न [आहारण क] १ पण्डि

आहारण ३१ न [आहारण क] १ पण्डि
आहारण ३२ न [आहारण क] १ पण्डि
आहारण ३३ न [आहारण क] १ पण्डि

आहारण ३४ न [आहारण क] १ पण्डि
आहारण ३५ न [आहारण क] १ पण्डि
आहारण ३६ न [आहारण क] १ पण्डि

आहारण ३७ न [आहारण क] १ पण्डि
आहारण ३८ न [आहारण क] १ पण्डि
आहारण ३९ न [आहारण क] १ पण्डि

आहारण ४० न [आहारण क] १ पण्डि
आहारण ४१ न [आहारण क] १ पण्डि
आहारण ४२ न [आहारण क] १ पण्डि

आहारण ४३ न [आहारण क] १ पण्डि
आहारण ४४ न [आहारण क] १ पण्डि
आहारण ४५ न [आहारण क] १ पण्डि

आहारण ४६ न [आहारण क] १ पण्डि
आहारण ४७ न [आहारण क] १ पण्डि
आहारण ४८ न [आहारण क] १ पण्डि

आहारण ४९ न [आहारण क] १ पण्डि
आहारण ५० न [आहारण क] १ पण्डि
आहारण ५१ न [आहारण क] १ पण्डि

आहारण ५२ न [आहारण क] १ पण्डि
आहारण ५३ न [आहारण क] १ पण्डि
आहारण ५४ न [आहारण क] १ पण्डि

आहारण ५५ न [आहारण क] १ पण्डि
आहारण ५६ न [आहारण क] १ पण्डि
आहारण ५७ न [आहारण क] १ पण्डि

आहारण ५८ न [आहारण क] १ पण्डि
आहारण ५९ न [आहारण क] १ पण्डि
आहारण ६० न [आहारण क] १ पण्डि

आहारण ६१ न [आहारण क] १ पण्डि
आहारण ६२ न [आहारण क] १ पण्डि
आहारण ६३ न [आहारण क] १ पण्डि

आहारण ६४ न [आहारण क] १ पण्डि
आहारण ६५ न [आहारण क] १ पण्डि
आहारण ६६ न [आहारण क] १ पण्डि

आहारण ६७ न [आहारण क] १ पण्डि
आहारण ६८ न [आहारण क] १ पण्डि
आहारण ६९ न [आहारण क] १ पण्डि

आहारण की [आहारण] श्रेयस (सिंह
१११)।

आहारिण नि [आहारिण] शीघ्र हुआ
(सिंह ७२२)।

आहारिण नि [आहारिण] शीघ्रपणा
(उप)।

आहारस रत्तो आहारस = मा + भाप। चंद्र-
आहारसि (पण्ड) (पणि)।

आहार म [आहार] प्राच्य-दीनक प्राच्य
(सिंह २ २१७)।

आहि पुं की [आहि] नन की पीड़ा (कम्म
१२ टी)।

आहिमात्र की [आहिमात्रि] कुलीला
बालापी (सिंह १ ११)।

आहिमात्र की [आहिमात्रि] कुलीला (क
२८३)।

आहिहक [आ + हिण्ड] १ कर्म
करना जाता। २ परिपक्व करना। ३ कर्म
परिपक्व करना। चंद्र. आहिहक आहि
हेमात्र (उप २१४ टी लामा १ १)। चंद्र
आहिहिव (महा स १११)।

आहिहग २ नि [आहिहग] चतुर्मात्र,
आहिहग ३ परिपक्व करनेवाला (दीप
१११, ११८ शीर)।

आहिहक नि [आहिहक] प्राचिकता (विशे
२ ८७)।

आहिहक रत्तो आहिहक (महा)।

आहिहक रत्तो आहिहक (मा २४)।

आहिहक पुं [आहिहक] नाटक
स्वरूपी शरीर (मुद्रा १११)।

आहित नि [हि] १ कर्मिण पण्ड। २ कुलित
पुत्र (सिंह १ ७१; जीव १ टी)। ३ पाण्डु
मन्थना हुआ (सिंह १ ७१; से ११ ८३)
पाण्डु 'प्राहिण' लक्षण 'मन्थन' मन्थन 'प्रा-
हिण' 'म' (जीव १ टी)।

आहित नि [हि] १ चंद्र चक्रा हुआ। १
कर्मिण बना हुआ (पण्ड)।

आहित म [आहित] मुक्तिपण्ड कर्म
(उप १ ११ टी)।

आहित नि [आहित] १ स्थापित निमित्त (अ
४)। २ समुद्र द्विपण्ड (सुप)। ३ विपण्ड

आहित नि [आहित] १ स्थापित निमित्त (अ
४)। २ समुद्र द्विपण्ड (सुप)। ३ विपण्ड

आहित नि [आहित] १ स्थापित निमित्त (अ
४)। २ समुद्र द्विपण्ड (सुप)। ३ विपण्ड

आहित नि [आहित] १ स्थापित निमित्त (अ
४)। २ समुद्र द्विपण्ड (सुप)। ३ विपण्ड

आहित नि [आहित] १ स्थापित निमित्त (अ
४)। २ समुद्र द्विपण्ड (सुप)। ३ विपण्ड

निमित्त (पाम्) । गिग पुं [गिगि] धर्मि-
होमीय काष्ठस्य (पत्रम् ३३, ३) ।
आह्वय नि [आह्वित] १ व्याप्त 'अभिरेखा
विधौ एव अनीयताविशेष' (द्वय ४१) । २
जलित सत्पात्रिण । ३ प्रविष्ट प्रसिद्धि-प्राप्त
(सुप्र १ २ २ २३) । ४ सर्वथा हितकारी
(सुप्र १ २ २-२७) ।
आह्वय नि [आसपात] कहा हृषा प्रति
पात्रिण उक्त (पण्य ३३ मुद्र १३) ।
आह्वियार पुं [अभिहार] अभिहार, सत्पा
हक (पत्रम् ३४ क) ।
आह्विपत्र रेवो आह्विपत्र (काम) ।
आह्विसारिज नि [अभिसारित] नायक-कुट्टि
स नृहीत पति-कुट्टि से स्वीकृत (सि १३ १७) ।
आहीर पुं [आहीर] १ देश-विशेष (कम्प) ।
२ शूद्र जाति विशेष्य अहीर (सुप्र १ १) ।
३ इस नाम का एक राजा (पत्रम् ३८ १८) ।
ही री—अहीरिण (गुण ३९) ।
आहु सक [आ + हृ] बुलाता । क आहु
-विज्य (वीर) ।
आहु [आ + हृ] बल करता व्याप करता ।
क आहुविज्य (साया १ १) ।
आहु म [आहु] धक्का या (गट) ।
आहु पुं [हृ] इक उल्टु (सि १ १३) ।
आहु रेवो आह = बल ।
आहुइ नि [आहोइ] बाधा द्यापि (यासा
१ १) ।

आहुइ बी [आहुति] १ हवन होम (पत्रम्) ।
२ होम का पर्याय बलि (स १७) ।
आहुइर } पुं [हृ] बलक बला (सि १
आहुइर } १९) ।
आहुइ म [हृ] १ शीकार, मुख समय का
शब्द । २ पण्डित विष्णु देवता (सि १ ७४) ।
आहुइ भक [हृ] गिरा। आहुइ (सि १
१३) ।
आहुइज नि [हृ] निपतित गिरा हुमा (सि
१ १३) ।
आहुण मक [आ + हृ] कृपाया विज्ञान ।
कक आहुणिज्यमान (साया १ ३) ।
आहुणिज नि [आमुनिज] १ धावक का
नवीन । २ पुं अह-विशेष (अ २ ३) ।
आहुच न [हृ अमिमुख] समुक्त सामने
'भूमपति पहाविधो उपाहुच' (महाट्ट प्रवि) ।
आहुअ नि [आहुच] बुलाया हुमा (पाम्) ।
आहुअ पुं [आहुक] विपक्ष-विशेष (इक) ।
आहुअ नि [आमुल] उत्पन्न बात 'आहुप्रो
सि कम्पो' (बहु) ।
आहुइ रेवो आहा = धा + धा ।
आहुइ पुन [आलेट क] शिकार,
आहुइरा गुप्ता (गुना १३७ स ३७)
आहुइय रे) ।
आहुइय नि [आलेटिक] गुप्ता-सम्बन्धी
'आहुइयमकलेण' (सम्मत २२३) ।
आहुइ न [हृ] विवाह के बाद भर के घर

बन्ध के प्रवेश होने पर जो विमाने का उल्लङ्घ
किया जाता है वह (पाचा २ १ ४) ।
आहुइ नि [आमेय] १ व्याप्य । २ पात्रिण
(विशे ३२४) ।
आहुइ रेवो आहीर (विशे १४४) ।
आहुइय न [आधिपत्य] नेतृत्व मुखियापन
(सम ८६) ।
आहुइय न [आसेपत्र] १ आसेप । २ शीम
उत्पन्न करना (पण्य १ २) ।
आहुइ रेवो आमोग (सि १ ४३ १ ३
या सन) पड्ड) ।
आहुइ रेवो आमोय = धा + मोचय् ।
संक्ष आहुइज्य (स ३३) ।
आहुइज नि [आमोगित] ब्राह्म, दृष्ट (स
४८३) ।
आहुइज नि [आमोगिक] उपयोग ही
विचका प्रयोग ही वह, उपयोग-प्रधान
(कम्प) ।
आहुइ सक [आहुय] ठाढ़न करना पटना
आहुइइ (सि ४ २७) ।
आहुइरन [आधोरन] इस्तिरक महावत
(पाम् स ३१३) ।
आहुइि नि [आमोयधिक] धरनि
आहुइयि } आनी का एक मेघ, विपत लेन
जो मरविज्ञान से देखेजाता (मय सम
१९) ।

इय पाश्चात्त्यसहस्रज्याये आवापस्यहस्रकमलो
विधौ सर्वो समतो ।



इ

इ पुं [इ] १ प्राकृत कार्यमाला का प्रदीप स्वर
बल्ले (पाम्) । २-३ वाक्यलक्षणपर्यंत धीर वाक्य-
पूर्ति में प्रयुक्त किया जाता समय (कम्प ३
२ ११७ पृ) ।
इ रेवो इइ (जग) ।

१७

इ सक [इ] १ जाना समन करना । २
जानना । एह, एति (हुमा) । बह, एत
(हुमा) । संक्ष इबा (पाचा) । हेड, इचप,
एचप (कम्प कस) ।
इमइय रेवो इयइ (प्राक्ष ३७) ।

इइ म [इति] इन मर्को का मुचक पण्य—
१ समाप्ति (पाचा) । २ धरति इइ (विशे),
३ मान परिमाण (पत्र ४४) । ४ निबन्ध (सि
२ ३३) । ५ हेतु, कारण (डा ३) । ६ एत
इत एत इत प्रकार (पत्र २२) ६६ पृ।

इको य [इत्स्] १ इत्ये, इत्स् काण्ड (पि १७४) । २ इत्स् वरट (पुष्पा १६४) । ३ इत्स् (नोक) में (विने २६८२) ।
 इओज य [इत्स्] प्रसंगपर-युक्त धर्म्य (भा २८) ।
 इतिशिया की [इ इतिनिम्] लिप्ता यहाँ (पुष्पा १२) ।
 इतिपी की [इ इतिनी] अर देखो (पुष्पा २) ।
 ईगार } केओ ईगार (पि १२; की ९) ।
 ईगार } प्रायः । कम न [ईगार] ।
 बोयता धारि लम्पन करने का पीर बेचने का व्यापार (पवि) । सगबिया की [शक-टिक्] धीरे-धीरे, धीरे-धीरे का बोल (पवि) ।
 ईगारबद्ध पुन [अज्ञात्वाह] धारा, मिट्टी के पात्र नकले का लाल (भाषा २, १ २) ।
 ईगाळ पि [आज्ञात्वा] अज्ञात-संज्ञानी (बस २) ।
 ईगास्मा केओ अंगारा (अ २, ३) ।
 ईगास्म केओ ईगास्मा (पुष्पा २) ।
 ईगासी की [ई] ईग का टुकड़ा नीचे (पि १ ७६; पाप) ।
 ईगासी की [आज्ञात्वा] ईको ईगाळ अस्म (भा २२) ।
 ईगिभ न [ईगिभ] द्वारा संकेत धर्मियाय के प्रमुख बैठ (पाप) । ज ज्य एणु पि [ई] इतारे से समझनेवाला (ज्ञान हे २ ३; पि २०९) । मरय न [मरय] मरणा विरोध (पंथा) ।
 ईगिभजाणु ज केओ ईगिभज (माह १) ।
 ईगिभा की [इतिनी] मरण-विरोध मरण विमानिरोध (पम ३३) ।
 ईगुभ न [इगुभ] इगुपी वृक्ष का लत (पुष्पा पत्र ४१) ।
 ईगुई } की [इगुई] इग-विरोध इगुई ईगुई } कम तैलमय होने हैं, इसका प्रयोग मात्र मरण-विरोध की है, क्योंकि इनके तैल के प्रयोग बहुत हीम सम्बन्धी होने हैं (भाषा पवि ७३) ।
 ईपिम पि [ई] प्य, पूँचा हुआ (पि १ ६) ।
 ईवर केओ ईवर (पि ११) ।
 ईव केओ एव भा + द ।

ईव पु [ईव] १ केवधारी का राजा केवधन (ठा २) । २ केव प्रधान नामका 'सुरि' (पठक) 'देवि' (कम्प) । ३ केवधर, ईवर (ठा ४) । ४ बीन भातमा 'ईवी बीवी सगी बलविनीपपरेमरततयो' (विने २६६३) । ५ ईवई-शारी (पापम) । ६ विधायी का प्रसिद्ध राजा (पत्र १२ ७७) । ७ इवपी-काच का एक अधिष्ठापक देव (ठा ३, १) । ८ इवपी-काच का अधिष्ठापक देव (ठा २, १) । ९ इवीसमें दीर्घर के एक लम्बाय काष्ठ मण्डप (पम १२२) । १ सत्नी विनि (कम्प) । ११ मेघ वर्षा 'कि मरइ लम्बाय इविमई मरु मने ईवी' (सति १ ३) । १२ न केविमानि-विरोध (पम ३७) । इ पु [इवि] १ इस नाम का राजा ईव का एक राजा एक सत्नी (पत्र ४, २६२) । २ इवप के एक पुत्र का नाम (पि १२ १८) । ओव ईवी गोव (पि १६) । काइव पु [कावि] नीमिन्न बीन-विरोध (पण्ड १) । कीव पु [कीव] बलात्का का एक अवयव (बीन) । कुम पु [कुम] १ बड़ा कलस (पाप) । २ ज्वाल-विरोध (शायी १ ६) । केव पु [केव] इव-अव इव-विट (पत्र १ ४ २ ४) । कीव केओ कीव (पीन १ ७) । गाइव केओ काइव (पत्र १६) । गाइ पु [गाइ] इवमेघ, किनी के शरीर में इव का अधिष्ठात को पावकल का बाण्ड होता है 'ईवकश इवा ईवपाइ इवा' (पम ३ ७) । गोय गोपा गावय पु [गोप] बर्ग अस्त्र म होनेवाला रथ वाही का छत्र बन्धु-विरोध विनको पुत्रवती में 'गोइव पाव' करते हैं (पत्र १२ पुर २, ७७) की १७ पि १६) । गाइ पु [गाइ] प्रह विरोध (बीन ३) । गग पु [गिगि] १ विराज्वा मयन का अनित्यक देव (पुष्पा) । २ मरुह-विरोध (ठा १ १) । गोव पु [गोव] प्रविष्टावर देव विरोध (ठा १ १) । जसा की [जसा] नाकिन्न नगर के अध्यापन की एक पत्नी (बस ११) । जाळ न [जाळ] माता-कर्म धन कष्ट (प ४४४) । जाळि जाविज पि [जाविज, क] जावरी, कासीवर (ठा ४ पुष्पा १ १) ।

जुइय पु [जुवि] स्वनाम-कृत इवपु नंद का एक राजा (पत्र ४, ९) । कवव पु [कव] बड़ी बच्चा (पि २६६) । कम्पा की [कम्पा] एक हाथ पल्लव को बिनाई हुई धानी विष्य यन्त्रुति के प्रभाव में राजा मरत से इस यन्त्रुति के प्रभाव भाववि की भी हुई स्वापना और छुके कलस में किया गया अस्त्र (भा २ ३) । लाळ पु [लीळ] नीमन नीममरी एव-विरोध (पत्र पि १६) । लव पु [लव] इव विरोध विनके नीचे मन्त्राय संमन्त्रण को केवल ज्ञान पुष्पा का (पत्र २ २८) । ल न [ल] १ स्वर्ग का भाविताव इव का मन्त्राचार बने । २ राजल । ३ प्राचय (पुष्पा २३३) । इव पु [वव] इस नाम का एक प्रसिद्ध राजा (ठ २१९) । २ एक कैव पुनि (पि २ ७) । विव पु [विव] स्वनाम-कृत एक कैव धर्म्य (कम्प) । वणु न [वणु] १ राज-कर्म, सुई की छिपड़ यैको पर पकन से भाव्यता में जो कर्म का धारक होत पकना है वह । २ विधावर नंद के एक राजा का नाम (पत्र ४ ११) । नीस केओ जीळ (पत्र १ १२२) । पाविषया की [पविषय] यवति (पुत्रवती धारिण) माध के कृष्णपत्र की पत्नी विनि (ठा ४) । पुर न [पुर] १ एक का नव, अवयवती (ज ४ १२१) । २ मर-विरोध, राजा इववत की राजवती (ज २१६) । पुरग न [पुरग] कैवोव वेधपाटिक पण के नीचे पुत्र का नाम (कम्प) । पम पु [पम] पत्रव नंद के एक राजा का नाम जो कल का राजा (पत्र ३ २६१) । मूह पु [मूहि] मन्त्राय मन्त्रीर वा प्रम—पुरव मन्त्र मन्त्रमन्त्री (पम १३ १२२) । मह पु [मह] १ एक की धारणा के लिए किया जाता एक अवयव । २ धारिण प्रविषया (ठा ४ २) । मारकी की [मारकी] राजा धारिण की पत्नी (पत्र ७ १) । मूझाविनि पु [मूझाविनि] पत्र की वतनी विनि मन्त्री (पत्र १ १) । मेह पु [मेह] इवय नंद में प्रम एक राजा (पत्र ३ २६१) । व पु [व] १ केओ इव (ठा ४) । २ मर-विरोध । ३

इष्टाल न [इष्टाल] इष्ट का दुष्प्रस (रस ५, १ १५)।

इष्टु न [इष्ट] १ ममिन्पित ममिन्प्रेत नाभिष्ठ (विवा १ १) गुना ३७)। २ प्रविष्ट सङ्कट (मौल)। ३ पागमोक, तिष्ठान्त से मरिष्ट (रस ८८२)।

इष्टु न [इष्ट] १ स्वाम्युपगत स्व-विज्ञान (धर्म ३११)। २ न उपनिषदोप निधि इति-न (सम्योप ५८)। ३ मायिष्ठा (म ७११)।

इष्टि की [इष्टि] १ इच्छा ममिताया, बाह (गुना २५१)। २ मयि-विशेष (ममि २२७)।

इष्टि की [इष्टि] औषध औषध (गा १८)।

इष्टा की [इष्टा] शरीर के बाह्य भाग में निष्ठ नाड़ी (कुमा)।

इष्टु न [इ] पासी (घोष ४७१)।

इष्टुय न [इ] योही इष्टो का इष्टा पात्र इष्टुय (घोष १५)।

इष्टुरिया की [इ] मिष्टान्त-विशेष एक प्रकार की मिठाई (गुना ५८१)।

इष्टु न [इष्ट] अष्टि-सम्पत्त (मम)।

इष्टि की [इष्टि] १ ईश्वर ईश्वर्य सम्पत्ति (गुन १ १०)। २ ममि यष्टि, सामर्थ्य (उत्त १)। ३ पत्नी (ठा ४ ४)। गारय न [गौरय] सम्पत्ति या पत्नी मायि प्राप्त होने पर ममिमान मीर प्राप्त न होनेपर उच्छा नास्त्य (रस २ ठा ४ ४)। पत्त कि [प्राप्त] अष्टिप्राप्ति (पण्य ११; गुना ११)। म, मय कि [मय] अष्टिप्राप्ति (निष् १ ठा १)।

इष्टिर्हासय कि [इ] मायक-विशेष मायन की एक मायि (पा १ ११ टी)।

इष्टु न [इ] यत्तु यत्तु (रि १ ७१)।

इष्टुय देवो रिष्टा (रि ४ ११)।

इष्टुय देवो रिष्टा (रि ४ ७१)।

इष्टु न [इष्ट] निष्ठ मिष्टान (रि १ १२; गृह)।

इष्टा की [इष्ट्या] इष्ट्या प्यास इष्ट्या (गा ११)।

इष्टि य [इष्टि] इष्ट समय इष्ट नक्त (रि १ ७१ पात्र)।

इष्टरेवसय पुं [इष्टरेवसय] उत्तमात्र प्रविष्ट एक वीप परस्पर एक दूसरे की स्नेहा (धर्म १११८)।

इष्टि देवो इष्ट (रि १८)। दास पुं [दास] पुन्यइष्टान्त अष्टिप्राप्त की धन्याओं का निष्-रस पुन्यइष्ट (गृह)। २ पुन्यइष्टा (मम)।

इष्टुय देवो इष्टुय।

इष्टर कि [इष्टर] १ मय दोषा (धनु)। २ दास-नामिक बोधे समय के लिए बो दिया जाता हो बहु (ठा १)। ३ बोधे समय तक रखेनामा (पा ११)। परिगमा की [परिमहा] बोधे समय के लिए रखी हुई मेरवा रखेनामा (धा १)।

परिमहा की [परिमहा] देवो परिगमा की [परिमहा] देवो परिगमा (धा १)।

इष्टरिय कि [इष्टरिय] इष्ट देवो (निष् २ माया उपा यथा १)।

इष्टरिय देवो इष्टर (गुन २ २)।

इष्टरी की [इष्टरी] बोधे काय के लिए रखी हुई मेरवा मायि (यथा १)।

इष्टरे (मम) य [इष्ट] यथा पर (कुमा)।

इष्टाई य [इष्टान्मा] इष्ट समय इष्ट नक्त इष्टा (पात्र)।

इष्टि देवो इष्ट (कुमा)।

इष्टिय कि [इष्टिय] पत्तायन् इष्टा (रि २ १११ गुना प्राय १११ पद)।

इष्टरिय कि [इष्टरिय] मयकनामिक बोधे समय के लिए किया जाता हो (उ ४८, विस् १२१२)।

इष्टि य देवो इष्टिय (रि २ १११)।

इष्टो देवो इष्टा (पा १७)।

इष्टाई देवो इष्टाई (पा १४)।

इष्टाई [इ] बहु म मेरवा इष्टाई (पात्र)।

इष्ट य [इष्ट] यर इष्ट (गृह) कुमा प्राय १४१)।

इष्ट य [इष्ट] इम तय इष्ट प्रकार (पण्य ११)। अ कि [इष्ट] मय माया नाता मयिष्ठ (मी १)।

इष्ट य [इष्ट] इम तय इष्ट प्रकार (पण्य ११)। अ कि [इष्ट] मय माया नाता मयिष्ठ (मी १)।

इष्ट य [इष्ट] इम तय इष्ट प्रकार (पण्य ११)। अ कि [इष्ट] मय माया नाता मयिष्ठ (मी १)।

इष्ट य कि [इष्टय] इम तय इष्टा कुमा (रस १ ४ ७)।

इष्टय पुं [इष्टय] बहु मय (मम)।

इष्टय पुं [इष्टय] मी-विषय (रि ११२)।

इष्टय देवो इष्टय (पा १२)।

इष्टिय की [इष्टि] महिमा नाटी इष्टिय का पुत्रिया का (माया २ ११ १)।

इष्टिय की [इष्टि] यनामा मीश महिमा इष्टी (गुन २ १ ११)। कथ की [कथ] की के गुण की के सीनेन योग्य नमा (म २)। कथा की [कथा] मी-विषयक नाटोमा (ठा ४)। नापुसग पुन [नपु] सक एक प्रकार का मयुषक (निष् १)।

याम न [याम] मय-विशेष जिसके जय से कील की प्राप्ति होती है (गुना १ ८)। परिमहा पुं [परिमहा] बहुमय (मम ८)। विपयमहा कि [विपयमहा] १ की का मयिष्ठ करनेवाला। २ पुं पुन मायु (उत्त ८)। विष्ट, येय पुं [विष्ट] १ की के पुन्य संघ की इष्टा। २ मय-विशेष जिसके जय से की के पुन्य क साथ मय करने की इष्टा होती है (मम, पण्य २३)।

इष्टेय कि [इष्टेय] जितों का समूह की-जन। अमि कि न महती दीपामो मायिष्ठेय (उत्त ७२८ टी)।

इष्टाणि यो इष्टाणि (माया)।

इष्टाणि (टी) देवो इष्टाणि (पात्र ८७)।

इष्टाणी देवो इष्टाणि (संवि ११)।

इष्टिय (टी) न [इष्टिय] इष्टिमा (मोह १२८)।

इष्टु न [इ] माय रखन का एक तय का पात्र (गुना १११)।

इष्टुय पुं [इ] मीर मयुष (रि १ ७१)। इष्टियमय न [इ] मयिष्ठ (गृह)।

इष्टि देवो इष्टि (गृह)।

इष्ट (टी) यना इष्ट (रि ४ २१८)।

इष्टम पुं [इष्टम] मी माय (पात्र)।

इष्टम पुं [इ] मयिष्ठ मायागी (रि ७१)। इम पुं [इम] इमो इष्टी (म १ कुमा)।

इमपास पुं [इमपास] महान्त (मम ११०)।

इम क [इम] यर (रि १ ७२)।

इमरिस नि [एवाहरा] ऐसा इच्छा है (वच) ।
 इय रेवो इम (परा) ।
 इय केवो इह (पक्ष) है ? ११ प्रीय) ।
 इय न [हे] प्रेक्ष्य पेट (पानय) ।
 इय नि [इय] १ गत यथा हुआ (मृग १) । २ प्रायः 'उपयन्ती' वस्तीसी बहमि नंदुय किछुबेरी (घान ७१) निवे) । ३ जात जाना हुआ (याथा) ।
 इयनिष्ठ म [इदानीम्] हाथ में इस समय, पशुता (अ १) ।
 इयर नि [इतर] १ धन्य इच्छा (जी ४१ प्राय १) । २ हीन वक्त्र (याथा १ १२) ।
 इयरहा म [अध्या] अन्धता ली हो धन्य प्रकार से (रम्म १ १) ।
 इयरपर नि [इतरपर] धन्योन्म परस्पर (यम) ।
 इयायि [म] [अनीयम्] जल में इस इयायि [मय] (म नि १४४) ।
 इर लो किछ (हे १ १८१) हाथ) ।
 इरमिहिर मु [हे] कर्म ऊँ (हे १ ८१) ।
 इरय मु [हे] लो (हे १) ।
 इरायि (ली) की [इरायि] लो-विरोध (मृ) ।
 इरि रेवो गिरि 'निमग्निरिहिरि' (पत्र १ २७) ।
 इरिग न [अय] करना जल (बाह १६) ।
 इरिय न [वे] नगर मुगल (हे १ ७६ मर) ।
 इरिय एक [इर] जला पति करना । इरि यमि (पत्र १ २१ मृग १८ २१) ।
 इरिया की [वे] दुष्ट दुष्टिया (हे १) ।
 इरिया की [इया] गमन गति करना (याथा) । बह पुं [पय] १ मार्ग में जाना (प्रीय १४) । २ जाने का मार्ग चलता (मृ ११ १) । ३ वेचन शरीर के हाने-बानी श्रिया (मृ २ २) बहिय न [पयि] १ जल शरीर की वेग से हननमा न-वेचन बर्धन-शरीर (मृ १ १ मृ) । २ बहिया लो [पयि] १ नग-वर्धन वेचन बर्धन किया, श्रिया-विरोध

(पयि ठा २) । समिह ली [समिनि] विरोध से चमत्ता बुरे जीव को किसी प्रकार की हानि न हो ऐसा उपरोक्त-पुनर्क चमत्ता (अ ८) । समिय नि [समिनि] विरोध-पुनर्क चमत्ता (मृ २ १) ।
 इह पुं [इह] १ बापछी का वस्तुचमत्ता चमत्ता-म्याय एक गृहस्थि—गृहस्थ (याथा २) । २ न. इवाकेरी के विहायन का नाम (याथा २) । सिरी ली [आ] इस नामक गृहस्थ ली ली (याथा २) ।
 इह्यम केवो निर्यत (वे १ ४०) ।
 इम ली [इम] १ प्रीय ली भूमि (मि २ ११) । २ बल्लेय की एक धन्य-मिह्री (याथा २) । ३ इस नामक गृहस्थ ली भूमि (याथा २) । ४ रक्त वर्षत पर प्लेयल्लो एक लिपुमारी (मृ १) । ५ राजा जल की माता (पत्र २१ ३३) । ६ इलायन नगर में स्थित एक कैलाश (याथा) । बह न [इह] इलाकेरी के निवास-मुल एक विहार (अ ४) । पुच पुं [पुच] इलाकेरी के प्रकार से जगम एक मेष्ठि-मुल विष्णु नक्षत्री पर मोहित होकर लो का फल लोका धीर मत्त में नाच करते-करते ही गृह भगता से केवलज्ञान प्राप्त कर मुक्ति पाई (याथा) । बह पुं [पति] एलायन भोज का धारि पुचय (रात्रि) । बहसिय न [विचसक] इसलैली का प्राकार (याथा २) ।
 इहाइयुल केवो इय-पुता 'जलो इहाइयुलो पिता-पुलो म बाहुगुली' (बहि) ।
 इसिया ली [इसिया] बह भोज-विरोध भीनी धीर नाचन म जलम होनेवाला नीट विरोध (ली १७) ।
 इसी ली [इसी] एक-विरोध एक पति की लपकार ली लय का हविहार (मृ १ १) ।
 इय पुं [हे] १ प्रीयार, नगछी । २ लविन ली । ३ नि लिय, ली । ४ लोयन ली । ५ लोयन इय ली लोयन (हे १ ११) ।
 इहयुलिय पुं [हे] व्याप ली (मृ) ।
 इहिय पुं [हे] १ शास्त्र म्याय । २ निह । ३ ल्या (हे १ ८१) ।
 इहिय नि [४] धानिक, जनेतलुम्यानिपत्र

मृगसाधेविममिप्रापयकल्लय' (विह २१) ।
 इसिया ली [इसिया] बह भोज-विरोध धन में जलम होनेवाला नीट-विरोध (ली १७) ।
 इसलैय न [हे] १ धान-विरोध । २ ल्या । ३ ल्यायन गृह-हार (हे १ ८१) ।
 इय म [इय] इन धनो का धोवक अन्ध— १ जयमा । २ साहय गुलता । ३ जयेसा (हे २ १८२ लय) ।
 इसम नि [हे] विर्यली (पृ) ।
 इसया केवो एसगा (रमा) ।
 इसामी ली [इसामी] ईमान कोण पूर्व धीर लयर के भीन ली विहा (मृ) ।
 इसि पुं [अयि] १ मुनि छात्र, लो म्याथा (पत्र १२, मृ १०) । २ अयिनि-निहाय का बलिष्ठ विहा का इय इय-विरोध (अ २ १) । गुल पुं [गुल] १ लनाय-म्याय एक लैय मुनि (कय) । २ न लैय मुनि का एक कुच (कय) । गुलिय न [गुलोय] लैय मुनि का एक कुल (कय) । हास पुं [हास] १ इस नाम का एक ठेठ, जिसे पैग लैय ली ली । २ 'अमुल्लोयल्लय' लुन का एक धन्यम (मृ २) । बह 'दिह्य पुं [बह] एक लैय मुनि (कय) । पाखि पुं [पाखि] ऐरल्ल जेन के पांखों लीकर का नाम (मृ १११) । पाखि ली [पाखि] लैय मुनि की एक ल्या (कय) । मरपुच पुं [मरपुच] एक लैय धानक (मृ ११ १२) । मासिय न [मासि] १ वंशधरों के वस्त्रिष्ठ लैय पाखी के बगल हुए जलधन्यम मरि शास्त्र (याथा) । २ 'मल्लम्यायल्ल' लुन का लुनीय मय्यन (अ १) । बाह बाह्य बाहिय पुं [बाहिय] म्याय ली एक बाहिय (प्रीय पत्र १ ४) । बास पुं [पास] १ अयिनि-म्याय ली का लयर विह का इय (अ २, १) । २ पाखों बाहुय का लुनलैय नाम (मृ १११) । 'बाहिय पुं [पाखि] अयिनि-म्याय ली के एक इय का नाम (वि) ।
 इसिय पुं [इसिय] मगल देत विरोध (याथा १ १) ।

उत्तरा रेको उत्तरिया (अ ८ पुष्प १२३) ।
 उत्तरया } रेको उत्तरिया (वि १११२)
 उत्तरया } टी कम्पा १२८ वि २११२) ।
 उत्तरिया रेको उत्तरिया (पुष्प १११) ।

उत्तरि [उत्तर] १ उत्तर, दो मास का नाम
 कियेन बरस यादि छ प्रवार का कम्प
 (सीता पद्य ७) 'उत्तर' 'उत्तर' (कम्प) ।
 २ श्री-मुपुष रको उत्तर, सी-वर्ग (छ ३)
) । बड पु [बड] रीत मीर जगुकास
 बर-बार क बरिगिछ छल मास का समय
 (सीता २, २३, १४८) । मास पु
 [मास] १ धावण मास (ब १ टी १) । २
 तीव्र विवला मास (मम) । य वि [अ]
 म्पु में जाल समर पर जाल होलाका
 (पद्य २ ३ छाया १ १४) 'जम्पुपुषर'
 पद्यपुषरजम्पुपुषरपुषरपुषरपुषर । म्पु
 रजम्पुपुषर रमि बरिगिचिबमट्टा (छाया
 १ २२३) ।

'ममि पुकी [संवि] म्पु का सीत-जाल
 म्पु का मल समय (छाया) । संवत्सर
 पु [संवत्सर] बर-विद्येन (छ ३) । रेको
 उत्तर = उत्तर ।

उत्तर रेको उत्तर = उत्तर (पुष्पा ६ १
 २० पद्य) ।

उत्तरिया न [उत्तरिया] पाव-बर, एक
 पाव तक एक जाल में छावु का विवला-
 गुला (माता २, २ ७) ।

उत्तरिया पु [उत्तरिया] उत्तर, गुला
 उत्तरिया (पुष्पा पद्य १ १ १०१)

उत्तर पु [उत्तर] मिला कियेन (पद्य १४२) ।

उत्तरागिचि वि [उत्तरागिचि] छाव, उत्तर (पद्य) ।

उत्तर [उत्तर] रल योनी का मूलक समय—
 छा विवला २ विवलय १ ३ सेत ४
 विवला १ ३ मूलक (आर ७६) ।

उत्तर मक [मि + उत्तर] मीर मीका । उत्तर
 (६ १ १२) ।

उत्तरिया लो [उत्तरिया] बर-बार (६ १ १२) ।

उत्तर पु [उत्तर] मिला (पुष्पा १ १
 १४) ।

उत्तर पु [उत्तर] मिला, मावुगरी (छ १ ७७-
 सीता २२४) ।

उत्तर पु [उत्तर] बर-बार का काम करना
 बला ठीकी छापी जो कराया जाया है,
 छोट बनाया है वह (६ १ २८ पद्य) ।
 उत्तर तक [उत्तर] सीतना छोटकाप ।
 उत्तरा (पद्य) । म्पु—उत्तरिया (पुष्पा
 १११) ।

उत्तर मक [उत्तर] प्रयोग बला जोड़ना
 'उत्तर' उत्तरि लह छिरी (मम व टी) ।
 उत्तरागिचि न [उत्तरागिचि] पाव-कियेन जो
 बरिगिचि-जो न एक छाया है (छ ७) ।

उत्तरि वि [उत्तरि] मिला, छोटका हुमा
 (पुष्पा १११) ।

उत्तर [उत्तर] १ मीर, म्पु (६ १
 उत्तरा) २ पुष्पा १२ उत्तर १४० टी छ
 उत्तर १ २ या १६) । २ पुष्पा 'आपारी'
 मंजुपुषर म्पुपुषर विवलागिचि (पद्य २४६
 म) । ३ बर-बार समय वर में विवला बर से
 लग पाव उत्तरा म्पुपुषर सीतना बर-बार (सीता
 ११ मा) । ४ उत्तरा का एक जाल मीर वि-
 विवलागिचि (विवा १ २) ।

उत्तरा न [उत्तरा] उत्तरि, म्पुपुषर म्पुपुषर (ब
 उत्तरा) ४ १ २, १ ३) ।

उत्तर न [उत्तर] १ मास माल उत्तरागिचि ।
 २ निकर, म्पुपुषर (६ १ १२३) ।

उत्तरिया सी [उत्तरिया] म्पुपुषर-कियेन (पद्य) ।

उत्तरि लो [उत्तरि] म्पुपुषर, म्पुपुषर म्पुपुषर, 'उत्तर'
 रल योनी का मूलक समय (पद्य १४२) ।

उत्तर पु [उत्तर] म्पुपुषर म्पुपुषर (पद्य १४२) ।

उत्तर पु [उत्तर] म्पुपुषर म्पुपुषर (पद्य १४२) ।

उत्तर पु [उत्तर] म्पुपुषर म्पुपुषर (पद्य १४२) ।

उत्तर पु [उत्तर] म्पुपुषर म्पुपुषर (पद्य १४२) ।

उत्तर पु [उत्तर] म्पुपुषर म्पुपुषर (पद्य १४२) ।

उत्तर पु [उत्तर] म्पुपुषर म्पुपुषर (पद्य १४२) ।

उत्तर पु [उत्तर] म्पुपुषर म्पुपुषर (पद्य १४२) ।

उत्तर पु [उत्तर] म्पुपुषर म्पुपुषर (पद्य १४२) ।

उत्तर पु [उत्तर] म्पुपुषर म्पुपुषर (पद्य १४२) ।

उत्तर पु [उत्तर] म्पुपुषर म्पुपुषर (पद्य १४२) ।

उत्तर पु [उत्तर] म्पुपुषर म्पुपुषर (पद्य १४२) ।

उत्तर (विवा १ ७) । २ एक सावुहा का
 पुष्पा (विवा १ ७) । पंवार, पंवार न
 [पंवार] बर-बार पुष्पा, पंवार मीर
 बर-बार पुष्पा पंवार बर-बार के फल (पुष्पा
 १४ मम १ ११) । पुष्पा न [पुष्पा]
 पुष्पा का पुष्पा (मम १, ११) ।

उत्तर वि [उत्तर] म्पुपुषर म्पुपुषर (६ १ १२) ।

उत्तरागिचि न [उत्तरागिचि] मीर म्पुपुषर म्पुपुषर
 म्पुपुषर (६ १ ११६) ।

उत्तर पु [उत्तर] पुष्पा रल या एक मीर (विवा
 ११४) ।

उत्तरा लो [उत्तरा] म्पुपुषर (६ १ ११४) ।

उत्तरा लो [उत्तरा] पंवार पुष्पा म्पुपुषर (६ १ ११४,
 पुष्पा २०४) ।

उत्तरिया लो [उत्तरिया] म्पुपुषर-कियेन (पद्य १४२) ।

उत्तर मक [उत्तर] पुष्पा करता, पुष्पा करता
 (पद्य) ।

उत्तर रेको उत्तर (विवा) ।

उत्तरिया [उत्तरिया] रेको उत्तरिया (विवा
 १ १) ।

उत्तर [उत्तर] १ उत्तर उत्तरागिचि (पुष्पा
 १ ११) । एक विवापर छाया का नाम
 (पद्य १ २) ।

उत्तर वि [उत्तर] म्पुपुषर (मि) ।

उत्तर न [उत्तर] पाव-जाल पाव पर विर कर
 म्पुपुषर बला (६ १ ११३) ।

उत्तरागिचि [उत्तरागिचि] म्पुपुषर रल या हुमा (पद्य) ।

उत्तरागिचि न [उत्तरागिचि] १ म्पुपुषर म्पुपुषर बला,
 उत्तरागिचि २) । २
 उत्तरागिचि बला (पुष्पा २, २) । ३ म्पुपुषर
 विवापर (विवा १) । ४ म्पुपुषर, विवापर
 (बला २) । ५ म्पुपुषर मीर उत्तरागिचि पुष्पा
 न, म्पुपुषर विवापर पुष्पा के बर में मीरी
 रल के विवा विवापर बला (सीता) । सीता पु
 [सीता] उत्तरागिचि म्पुपुषर म्पुपुषर (मम) ।

उत्तरागिचि न [उत्तरागिचि] रेको उत्तरागिचि (पद्य) ।

उत्तरागिचि मक [उत्तरागिचि] म्पुपुषर
 करता, उत्तरागिचि हुमा । उत्तरागिचि (६ ७३) ।

उत्तरागिचि न [उत्तरागिचि] १ उत्तरागिचि (६ ११) । २ उत्तरागिचि
 (टी) (मम १४०) ।

उत्तरागिचि लो [उत्तरागिचि] म्पुपुषर म्पुपुषर
 (६ १ ११३) ।

संक्षिप्तः } वि [संक्षिप्तः] उत्पन्न (पा
संक्षिप्तः } १४२ मूर १ ४६ पत्र ११
संक्षिप्तः } ११८ मूर २) ।
संक्षिप्तः वि [संक्षिप्तः] मूल कृता ह्य
विशेषः प्रथमः (वि १०१) ।
संक्षिप्तः एक [संक्षिप्तः] मुद्रित करना
विशेषः मुद्रितमात्राणां संक्षिप्तं प्रयोगः
(गठन) ।
संक्षिप्तः वि [संक्षिप्तः] मुद्रित रोमाञ्चित
(बदल) ।
संक्षिप्तः की [दे] वृत्त रिक्तः (दे १
२२) ।
संक्षिप्तः वि [दे] १ प्राप्तिः । २ लक्षण
(पर) ।
संक्षिप्तः वि [संक्षिप्तः] ऊँचा गया हुआ
(स्थिति) ।
संक्षिप्तः की [दे] केको संक्षिप्तः (दे १
संक्षिप्तः) ८७) ।
संक्षिप्तः वि [दे] विपत्तयः कृता ह्य
विशेषः (पर) ।
संक्षिप्तः वि [संक्षिप्तः] संक्षिप्तः (पर) ।
संक्षिप्तः की [दे] वृत्तः (दे १ ८७) ।
संक्षिप्तः एक [संक्षिप्तः] कथित
रिक्तः ।
संक्षिप्तः पुं [संक्षिप्तः] कम वसन (ए
४ ७१२) ।
संक्षिप्तः वि [संक्षिप्तः] १ वसन किया
हुआ (पर) । २ न कम स्थित
‘योगसूत्रविपत्तयः’ अर्थः अर्थः अर्थः
बदलः । अर्थः अर्थः अर्थः, विपत्ति
प्रमाणः अर्थः (सा १११) ।
संक्षिप्तः वि [दे] वसनः अर्थः किया
हुआ (अर्थ) ।
संक्षिप्तः न [दे] अर्थः अर्थः अर्थः
के हाते से वर की कृता वर का
वर्तमान विधेयः (वि १) ।
संक्षिप्तः वि [दे] अर्थः अर्थः अर्थः
कृता ह्य (पर) ।
संक्षिप्तः वि [संक्षिप्तः] लुप्त, लुप्त (वि ४)

संक्षिप्तः की [संक्षिप्तः] संक्षिप्तः
(वि १) ।
संक्षिप्तः की [अर्थः अर्थः] नैन
विशेषः को वर का वर-विधेयः
(मो १ ७७) ।
संक्षिप्तः वि [दे] वसनः वसन (पर) ।
संक्षिप्तः की [अर्थः अर्थः] वर-विधेयः
(वि १) ।
संक्षिप्तः की [संक्षिप्तः] अर्थः ‘मूल
संक्षिप्तः’ (मूर ११—
पर २७८) । देको संक्षिप्तः ।
संक्षिप्तः वि [संक्षिप्तः] १ वर-विधेयः
(वि १, मूर) । २ वर-विधेयः (मूर
मूर १ १ २) । ३ वर-विधेयः (मूर
१ ७२) ।
संक्षिप्तः देको संक्षिप्तः (मूर १ ४६) ।
संक्षिप्तः वि [दे] वर-विधेयः, विधेयः (मूर) ।
संक्षिप्तः देको संक्षिप्तः (मूर) ।
संक्षिप्तः एक [संक्षिप्तः] लुप्त करना
मूलः । लुप्तः (मूर २, २८ टी) ।
संक्षिप्तः पुं [अर्थः अर्थः] १ वर की एक-
विधेयः—को वर से वर विधेयः को वर से
२ वर को वर को वर-विधेयः को वर से
३ वर की वर को वर-विधेयः को वर से
(पर १ १ टी) ।
संक्षिप्तः वि [संक्षिप्तः] १ लुप्तः
कृता ह्य । २ एक स्थान से लुप्त कर
अर्थः स्थापित (वि १२१) ।
संक्षिप्तः वि [संक्षिप्तः] मुद्रित के लिए उत्पन्न
(दे १, १६) ।
संक्षिप्तः एक [संक्षिप्तः] कृता ह्य ।
मूलः संक्षिप्तः (मूर १११) ।
संक्षिप्तः वि [संक्षिप्तः] कृता ह्य, विधेयः
(वि १ २) ।
संक्षिप्तः न [संक्षिप्तः] कृता ह्य वर-विधेयः
(मूर १ ४६) ।
संक्षिप्तः देको संक्षिप्तः = लुप्तः (मूर
२२, २४) ।
संक्षिप्तः न [संक्षिप्तः] लुप्तः (पर १
१) ।
संक्षिप्तः पुं [संक्षिप्तः] वर-विधेयः वर-विधेयः
(वसन) ।

संक्षिप्तः पुं [दे] उत्तम वर की एक विधेयः
(मूर २१६) ।
संक्षिप्तः एक [संक्षिप्तः] १ ऊँचा बना ।
२ लुप्तः वर से वर । मूलः संक्षिप्तः
(मूर) । संक्षिप्तः संक्षिप्तः (वि १
१११) ।
संक्षिप्तः पुं [संक्षिप्तः] उत्तम वर विधेयः
वसन (वि २०१) ।
संक्षिप्तः न [संक्षिप्तः] ऊँचा वसन । २
बाहर बना (मूर १७२) ।
संक्षिप्तः वि [संक्षिप्तः] १ मूर-विधेयः । २
विधेयः ‘मूर-विधेयः’ का वर, वर-विधेयः
वर्तमानः । एवम् वर-विधेयः वर-विधेयः
वर-विधेयः वर-विधेयः (मूर १ २ १ १) ।
संक्षिप्तः एक [संक्षिप्तः] वर-विधेयः । वर-विधेयः
संक्षिप्तः वर-विधेयः (मूर) ।
संक्षिप्तः पुं [संक्षिप्तः] १ वर-विधेयः ‘संक्षिप्तः
वर्तमानः’ (मूर ११८) । २ वर-विधेयः
वर-विधेयः वर-विधेयः (मूर १ १) ।
संक्षिप्तः देको संक्षिप्तः = लुप्तः, ‘वर्तमानः
वर्तमानः’ वर-विधेयः वर-विधेयः
(वि १२२) ।
संक्षिप्तः पुं [दे] १ वर-विधेयः । २ वर-विधेयः
मूलः वर-विधेयः वर-विधेयः (मूर
२७ मूर १२२) ।
संक्षिप्तः वि [दे] १ वर-विधेयः वर-विधेयः । २
वर्तमानः । ३ वर-विधेयः (पर) ।
संक्षिप्तः वि [संक्षिप्तः] वर-विधेयः
मूलः वर-विधेयः वर-विधेयः
(मूर) ।
संक्षिप्तः (टी) वि [संक्षिप्तः] ऊँचा बना
हुआ (मूर १२) ।
संक्षिप्तः की [संक्षिप्तः] वर-विधेयः के
वर से वर-विधेयः वर-विधेयः वर-विधेयः
वर-विधेयः वर-विधेयः (मूर २, ४) ।
संक्षिप्तः एक [संक्षिप्तः] १ वर-विधेयः ।
२ वर-विधेयः वर-विधेयः । वर-विधेयः
(दे १४ २) ।
संक्षिप्तः देको संक्षिप्तः = लुप्तः (मूर
वि १०१२) ।

उगगास पुं [उगार] विनिर्भन बहुर निव
नना (बन १) ।
उगगाइ सक [उद् + ग्राह्] पहण कल्या
'अप्यलुपन्नाई वनबह, वनबन्ता अस्सण'
उगगाइइ (उगा)। संह 'उगगाइत्ता मेरोप
समलं मगं महावीरे लउपे बबलन्नाई'
(उगा) ।
उगगाइ घन [अब + गाह्] वनबाह
कला 'उगगाइति लण्णविहापो चित्तिवद्-
संदिपामी' (म १७) ।
उगगाइ सक [उद् + ग्राह्य] १ उगारा
कला । २ उगे मे कला । उगगाइइ
(ग्राह ७२) ।
उगगाइ पुं कैयो उगगाइ (निग) ।
उगगाइय न [उद्गाहण] उगगा वी हुई
बीज बी बंन (गुहा २०) ।
उगगाइनिभा ओ [उद्गाहनिभा] ऊपर
कैयो 'उगगाइनिभापणं पामासि नयो उगा
मोवि । उगगाइनिभाइ' (गुहा ११२) ।
उगगाइनी ओ [उद्गाहनी] ऊपर कैयो
(ह ६) ।
उगगाइ ओ [उद्गाभा] हल-निवेप (निग) ।
उगगाइय नि [ह् उद्गाहित] १ गृहीत
निभा हुय । २ उपागत रंभा हुय । ३
प्रातिग (है १ १०) । ४ उगगाइउ उगे
त कला हुय (गान २ ११) ।
उगगाइय नि [अगगाइय] लनी हुई वणु ।
(बहुर २ २) ।
उगगाय [ह् उद्गाय] १ जन बजित
उगगाय (अप) । २ कण्ठ उगील
(गुहा १ १) । ३ उगा हुय ऊपर
निभा हुय
'अग्गमपयववले प्रारोच
मरवदि विगइयो ।
विने घरी बद्दा मज्ज कण्डा
ए पणिउ' (गु १९ १४०)
'निवस ! निव'णीइ
वज्जवन्तागार ३ गुण वायो ।
अग्गमपयववन्तागार
अग्गमपयव (गुहा १) ।
अग्गमपयव (गुहा १) ।
अग्गमपयव (गुहा १११) ।
अग्गमपयव (गुहा १११) ।
अग्गमपयव (गुहा १११) ।

उगगार म [उद्गारण] १ बाटि कन
नव । २ उगी, कन
'अग्गसिणोपि पयमाअंनया
है परल न करंति ।
मुहुमुहुमिउल्लं सङ्ग
उगीय ननीय' (उग) ।
उगगार सक [उद् + ग] १ कला, कला ।
२ उकार कला । ३ उगी कला कन
कला । ४ कला । ५ 'अग्गमपयववले
वयल' (गुहा १ ५) । संह. उगगारिणा
(म) उगगारिणा (निग १) ।
उगगारिण कैयो उगगारिणा (गान) ।
उगीय नि [उद्गीय] १ उग वर से नाया
हुमा (है १ १११) । २ म संगीत गीत ना
(है १ १२) ।
उगीयमाय कैयो उगगा ।
उगीर कैयो उगीर । नह. 'अग्ग उगीर' (है
उगीर' (है १ १२) ।
उगीरिण कैयो उगीरिण 'अग्गीरिणो मने-
वदि, अग्गीरिणो मने' (गुहा १४८) ।
उगीय नि [उद्गाय] उगीयल उगीय
(गुहा) । १ उगी नि [उद्गाय] उगीयल
निभा हुमा (का १ ११ टी) ।
उगगुल्लिहाओ [ह्] उगग-उग ना उगगना
मोरोह (है १ ११) ।
उगगाय सक [उद् + गेय] १ कला ।
२ अट कला । ३ उगीय कला । नह.
'अग्गी वा उगीय वा मुनिवे एवं महु
उगीयुत्तं वा मज्ज मुनिउत्तं वा
पामाणं पामाणं उगगायमाय अग्गेवे'
(उग १९ ९) ।
उगगायनी न्नी [उद्गीयनी] १ उगी
मोरोह
'एगम गेगगा मग्गा
व अग्गीयणा व बोउगा ।
एव व उगगाय नामा
एवमुमा हानि' (निग ७१) ।
१ कैयो उगगाय उगगाय उगीयल उगगाय
व उगीयल उगीयल (निग २) ।
उगगाय नि [उद्गायनि] निगमिण भाना
'अग्गीरिणो मने अग्गीरिणो मने' (म
१९ ९) ।

उगय कैयो उगय । उगय (बह) ।
उगयि [ह्] ओ [ह्] उगयल उगी-उगी (है
उगयि) १ ।
उगय सक [उद् + पाट] कला
(गान) ।
उगय सक [उद् + पाट] कला ।
उगय (विग १ ४) । उगय (बन
वि ७६) ।
उगयि नि [उद्पाटि] कला हुमा (बन
वि ७७) ।
उगयि नि [उद्पाटि] कला हुमा । १
उगय लु निभा हुमा (वि १ ११०) ।
उगय नि [उद्गुह] उगीयलो निभा
पामा ओउ कर उगीयल निभा हो नह.
उगी ।
'अग्गीय नायवले पण्णिपण्ण व वनामरो ।
उगय उगीयल उगीयल निभा उगीयल उगीयल'
(गाना १ १ टी) ।
उगय कैयो उगय । उगय (है १ ११
टी उग) ।
उगयसिण [अग्गयिण] कला (उग ७७) ।
उगगाय पुं [ह्] १ उगी उगील (है १
१११; म ७० ४११; मग्गा है १ १२) ।
२ उगी विगमिण उगील (है १ १११) ।
उगगाय पुं [उद्गाय] १ उगी उगील
'अग्गीरिणो मने' (गान) । २ उगील उगील
कला । ३ उगील उगील उगील (है १) ।
४ उगील उगील (विग १ १४०) । ५
उगील (म २ २) । ६ म उगील-उगील ।
७ उगील उगील वा उगील उगील उगील
उगील उगील वा उगील 'अग्गमपयववले
पामाणं पामाणं उगील उगील' (गान १) ।
उगगाय सक [उद् + पाट] उगील
कला । उगील (उग २६ ९) ।
उगगाय नि [उद्गायि] १ उगील उगील ।
२ म उगील उगील (है १) ।
उगगाय नि [उगीय] १ उगील उगील (है
१) । २ म उगील उगील (है २) ।
उगगाय नि [उगीय] उगील उगील
कला (बन ६) ।
उगगाय नि [उद्गायि] उगील उगील
(गान) ।

उच्चिय रेको उच्चिय 'उत्स धुषोच्चियपप
सलेण उच्चियमणुपप' (अ ११६ टी)।

उच्चियसय न [रे] कमुपिठ यम मेसा वासी
(पाप)।

उच्चियुचि वि [रे] इय गतिष्ठ धम्मिणी रे
१ १६६)।

उच्चियुचि वि [रे] धनवन्निष्ठ (पठ)।

उच्चियुचि धक [उत् + युच्] धनवन्निष्ठ
कला हला। नह उच्चियुचि (पठ ७१६)।

उच्चियुचि धक [उत् + युच्] नहना धाक होना
ऊपर बैठना। उच्चियुचि (हे ४ २१६)।

उच्चियुचिध वि [रे] चटिठ धाक ऊपर
बसा हुआ (हे १ १)।

उच्चियुचि [रे] उच्चिय, पूठा (पठ)।
उच्चियुचि अय न [रे] उच्चिय स सीध सीध
जाता (हे १ १२१)।

उच्चियुचि वि [रे] १ उच्चिय, विपत्ति। २ धवि
रह पाठ। ३ धीठ उच हुआ (हे १
१२७)।

उच्चियुचि धु [उच्चियुचि] निगम का सीधे का
कला हुआ मृगपिठ कलाठ (अ ४४६)।

उच्चियुचि वि [रे] मृगपिठ कलाठि (यद)।

उच्चियुचि धु [उच्चियुचि] १ निगम का सीधे
मृगपिठ हुआ मृगपिठ कलाठि (अ ४४६)।

२ धीठ धीठ—धर ऊपर धीठ धर
धर कर—कला किया हुआ (पठ १ १)।

उच्चि उच्चिय। उच्चिय (हे ४ २४१)।
हृ उच्चिय (पा १२६)।

उच्चिय वि [उच्चियुचि] विपत्ति मृगपिठ
(पाप)।

उच्चियमर न [रे] १ ऊपर मुचि। २ धन-
वन्निष्ठि कला (हे १ ११६)।

उच्चियवि वि [रे] प्रष्ट, ध्यक (हे १ १७)।

उच्चिय धु [रे] सीध 'मृगपिठकलाठि कलाठि
ध्यक ध्यक' (कण्य प्राग)।

उच्चिय धु [उच्चिय] कलाठि का एक धर
इत प्रानाव (उत् १ ११)।

उच्चिय धु [रे] १ धीठ, धन। २ धीठ धीठ
के धीठ-धर की धीठि (हे १ ११६)।

उच्चिय धु [उच्चिय] धीठ धन (हे १ १७)।
उच्चिय धु [रे] १ धीठ धन धन (हे १ ११६)।

उच्चिय धु [उच्चिय] धन धन (हे १ ११६)।

उच्चिय धु [उच्चिय] धन धन (हे १ ११६)।

उच्चिय धु [उच्चिय] धन धन (हे १ ११६)।

उच्चिय धु [उच्चिय] धन धन (हे १ ११६)।

उच्चिय धु [उच्चिय] धन धन (हे १ ११६)।

उच्चिय धु [उच्चिय] धन धन (हे १ ११६)।

उच्चिय धु [उच्चिय] धन धन (हे १ ११६)।

उच्चिय धु [उच्चिय] धन धन (हे १ ११६)।

उच्चिय धु [उच्चिय] धन धन (हे १ ११६)।

उच्चिय धु [उच्चिय] धन धन (हे १ ११६)।

उच्चिय धु [उच्चिय] धन धन (हे १ ११६)।

उच्चिय धु [उच्चिय] धन धन (हे १ ११६)।

उच्चिय धु [उच्चिय] धन धन (हे १ ११६)।

उच्चिय धु [उच्चिय] धन धन (हे १ ११६)।

उच्चिय धु [उच्चिय] धन धन (हे १ ११६)।

उच्चिय धु [उच्चिय] धन धन (हे १ ११६)।

उच्चिय धु [उच्चिय] धन धन (हे १ ११६)।

उच्चिय धु [उच्चिय] धन धन (हे १ ११६)।

उच्चिय धु [उच्चिय] धन धन (हे १ ११६)।

उच्चिय धु [उच्चिय] धन धन (हे १ ११६)।

उच्चिय धु [उच्चिय] धन धन (हे १ ११६)।

उच्चिय धु [उच्चिय] धन धन (हे १ ११६)।

उच्चिय धु [उच्चिय] धन धन (हे १ ११६)।

उच्चिय धु [उच्चिय] धन धन (हे १ ११६)।

उच्चिय धु [उच्चिय] धन धन (हे १ ११६)।

उच्चिय धु [उच्चिय] धन धन (हे १ ११६)।

उच्चिय धु [उच्चिय] धन धन (हे १ ११६)।

उच्चिय धु [उच्चिय] धन धन (हे १ ११६)।

उच्चिय धु [उच्चिय] धन धन (हे १ ११६)।

उच्चिय धु [उच्चिय] धन धन (हे १ ११६)।

उच्चिय धु [उच्चिय] धन धन (हे १ ११६)।

उच्चिय धु [उच्चिय] धन धन (हे १ ११६)।

उच्चिय धु [उच्चिय] धन धन (हे १ ११६)।

उच्चिय धु [उच्चिय] धन धन (हे १ ११६)।

उच्चिय धु [उच्चिय] धन धन (हे १ ११६)।

उच्चिय धु [उच्चिय] धन धन (हे १ ११६)।

उच्चिय धु [उच्चिय] धन धन (हे १ ११६)।

उच्चिय धु [उच्चिय] धन धन (हे १ ११६)।

उच्चिय धु [उच्चिय] धन धन (हे १ ११६)।

उच्चिय धु [उच्चिय] धन धन (हे १ ११६)।

‘जमई विवा न राधो य, हुलासि महुसिपि’ ।
‘केश मे लखी बहो बाप सराधो मर’
(मि १) ।

उडाहिम वि [हे] अलित फेम हुपा (पह) ।

उडाहिम वि [हे] अलित बीना हुपा (बह) ।

उडाहिम पुं [हे] लोह, जल, मास बाल-निधेय (दे १ २८) ।

उडा पुं [उडा] एक के-विमान (केन १११) ।

उडा पुं [उडा] एक के-विमान (केन १११) ।
उडा पुं [उडा] एक के-विमान (केन १११) ।
उडा पुं [उडा] एक के-विमान (केन १११) ।
उडा पुं [उडा] एक के-विमान (केन १११) ।
उडा पुं [उडा] एक के-विमान (केन १११) ।
उडा पुं [उडा] एक के-विमान (केन १११) ।
उडा पुं [उडा] एक के-विमान (केन १११) ।
उडा पुं [उडा] एक के-विमान (केन १११) ।
उडा पुं [उडा] एक के-विमान (केन १११) ।
उडा पुं [उडा] एक के-विमान (केन १११) ।

उडा न [उडा] १ लख (पाप) । २ विमान
किये (उम १२) । ३ प व पुं [प] १
काज बरमा (बीन मुर ११ २४६) । २
काज बीना (दे १ १२२) । ३ एक की
संज्ञा (मुर ११, २४६) । ४ पुं [पति]
बल (उम १ पण १ ४) । ५ वर पुं
[वर] दुप (पाप) ।

उडा सेवो उडा (अ २ ४) बोध १२१५) ।
उडा बरिजिया की [उडाम्बरीया] बैन दुमियो
की एक लक्षा (कय) ।

उडाहिम न [हे] १ विवाहिता की का कोन ।
२ वि लोचन, बल (दे १ ११७) ।

उडाहम } पुं [उडाहम] उडाहम उडाहम
उडाहम } (मि १११ प्रा ७) ।

उडा पुं [उडा] १ उडा-विमान उडाहम कीक,
पौरा मायो से अविद्य देव किये धारक
बसीका बहो है (उ २२६) । २ उडा देव का
निवासी अविद्य, ‘उडाहम-उडाहम-गम पुं
उडाहम— (पह १ १) ।

उडा वि [हे] मुधा पापि की अलितलता
बल (दे १ २) ।

उडा पुं [हे] १ बैन उडा । २ वि बीन,
लम्बा (दे १ १२१) ।

उडाहम सेवो उडाहम (अ १ ११७) ।

उडाहम पुं [हे] उडाहम उडाहम उडाहम (दे
१ ११७) ।

उडाहम पुं [हे] बीन, माह (दे १ १११) ।

उडाहम पुं [हे] उडाहम उडाहम उडाहम (दे १
१११) ।

उडाहम न [उडाहम] उडाहम, उडाहम ‘भीरोति
महम किम, इत उडाहम उडाहम’ (मुर न
१२) ।

उडाहम पुं [हे] १ प्रतिपत्ति, प्रतिपत्ति । २
मुद्र पति-विरोध । ३ विष्ठा पुटी । ४
मनोव्यक्तिता । ५ वि गति, प्रतिपत्ति
(दे १ १२८) ।

उडाहम वि [उडाहम] उडाहम, प्रवत (मुप
१२८) ।

उडाहम वि [उडाहम] १ यम भीति । २
पादमलता टीप्यारवा (पाप) ।

उडाहमरिजि वि [उडाहमरिजि] मय-मय किम
हुपा (कय) ।

उडाहम वक [उडाहम वक] उडाहम ।
उडाहम (कय) । उडाहम उडाहम (दे ४
१२२) ।

उडाहम वि [उडाहम] उडाहम (मि ४०१) ।

उडाहम न [उडाहम] १ उडाहम मलय-
वाक्यावलेख बलमल्लो किमि (मुपा) ।

२ प्राक्कस ‘हिनउडाहम’ (पाप १ १४) ।

उडाहम वि [उडाहम] उडाहम हुपा (पा
११ मि) ।

उडाहम वि [उडाहम] उडाहम (बहा
२४) ।

उडाहम पुं [हे] उडाहम पिका (दे १ ११६) ।

उडाहम पुं [उडाहम] १ मयहम बल, बहा
को (उ २ न) । २ मालिक किम उडा-
हम (मि २२१) ।

उडाहम वि [उडाहम] उडाहम देव का निवासी
(पाप) ।

उडाहम वि [हे] उडाहम उडाहम (पाप) ।

उडाहम सेवो उडाहम = उडाहम + बी ।
उडाहम उडाहम न [हे] मुपि पर उडाहम हुप हुप
का ‘उडाहम उडाहम’ केने हुप उडाहम
का ‘उडाहम उडाहम’ केने हुप उडाहम
का ‘उडाहम उडाहम’ केने हुप उडाहम

‘उडाहम मयोहीय मुपिउपाहमविन बीन ।
पाडाहमविनविनविन उडाहमविनविनविनविन’
(दे १ १२१) ।

उडाहम वि [उडाहम] उडाहम उडाहम उडाहम-
विनविनविनविन (मयो १२६) ।

उडाहम वि [हे] उडाहम उडाहम (पाप) ।

उडाहम वक [उडाहम वक] उडाहम । उडाहम, उडाहम
(मि ४०४) । उडाहम उडाहम उडाहम (दे १
१४ उ १ ११ टी) । उडाहम उडाहम,
उडाहम (मि २२१ मयि) ।

उडाहम की [उडाहम] निवि-विरोध उडाहम देव
की निवि (मि ४०४ टी) ।

उडाहम वि [उडाहम] उडाहम हुपा (लाभा १
१ पाप मुपा ४२४) ।

उडाहम पुं [हे] उडाहम, उडाहम उडाहम
उडाहम वापिउपाहम (मयि) ।

उडाहम पुं [हे] उडाहम उडाहम उडाहम (दे ४
४१४ ४१४) ।

उडाहमविन पुं [उडाहमविन] मयल
मयलीर के एक पत्र का नाम (कय) । सेवो
उडाहम ।

उडाहम सेवो उडाहम (दे १ ११७) ।

उडाहम सेवो उडाहम (पाप) ।

उडाहम न [उडाहम] १ उडाहम उडाहम (मय) । २
मयल उडाहम ‘उडाहमविनविन उडाहम’ (दे १ १) ।

३ वि उडाहम उडाहम ‘उडाहम मी उडाहम’
पिकाविन (मय १ १) मयल । ४ उडाहम
उडाहम ‘उडाहम उडाहम’ मयलविन उडाहम
उडाहम (पाप १) । ५ उडाहम का उडाहम
(उडाहम) । ‘उडाहम पुं [उडाहम] उडाहम’
का एक उडाहम की पापि के उडाहम मय में
ही उडाहम है (मय १ १ १) । मय पुं
[मय] मयल का उडाहम मय (मय) ।

मय पुं [मय] मयल का उडाहम मय (मय) ।

मय पुं [मय] मयल का उडाहम मय (मय) ।

मय पुं [मय] मयल का उडाहम मय (मय) ।

मय पुं [मय] मयल का उडाहम मय (मय) ।

मय पुं [मय] मयल का उडाहम मय (मय) ।

मय पुं [मय] मयल का उडाहम मय (मय) ।

मय पुं [मय] मयल का उडाहम मय (मय) ।

मय पुं [मय] मयल का उडाहम मय (मय) ।

[वसि] इति पात्री मारी क्य मरक
(छाया १ १८)। 'सिखा की' [शिखा]
केला (छा १)। सीम दु [सीमन]
बनै-विरोध (छा)।

उदगा वि [उदग] १ सुवर, मनोहर 'उतो
बहु' तीए क्यं दु बोखलुमुदग' (गुर १
१२२)। २ उव जकट प्रहार (छा ४ २
छाया १ १; छत १)। ३ प्रमान मुकट
'अग्निकारितउतो महीरी' (उत १३)।

उदग दु [उदग] एक मरक-स्वान (बोख
२०)।

उदस वि [उदास] अर, पहाउ (सोब
१)।

उद वि [उदा] स्वर-विरोध को उद
स्वर से बोला जाय बहु स्वर (विदे ८३२)।

उदगा की [उदगा] दुप, उरस पिआला
(छा १ ११ टी)।

उदय केओ उदग (छाया १ सम १३३
का ७२२ टी) प्राप् ७२ वसु १)।

उदय दु [उदय] बाप (दुप २ १, २४)।

उदय दु [उदय] १ धनुष्य ऊगति 'बो
एवहिंहुनि कयन धावउ, ती कि बकल-
कुमारस ऊवइ ह्मर १' (महा)। २ ऊगति
(विदे)। ३ पिपाक कर्म-निराहाम
'बह्मापउमयनकमउपउ

पउउविरोधउरिह'।

ऊगयल्लो उदयो वसुहोउमो

एकसि बयस' (उम)।

४ प्राचुर्य उदय 'बाह्मनीय बह्महा उव
किपाय कामा दुप' (महा)।

'ऊगयनिमि ऊगयलेउ

बउ उउउमि विउउमो।

पिहीगु धानदुगि

मुकल्लिय मुकल्लिय उउउमि १'
(महा १२)।

५ वरजोय के बारी छाउने विरोध (उप
१३१)। ६ वरजोय में होनेवाले
छीमे विरोध का पूर्व-जरी नाम
(उम १२४)। ७ स्वभाव-अपुन
एक राजकुमार (उम ११ १६)। यउ
दु [१५स] बरत-विरोध बहो सुव उरिह
होना है (दुप)।

उदयत केओ उदि।

उदयन दु [उदयन] १ राजा सिद्धराज का
प्रसिद्ध नौवी (दुप १४१)।

उदयन दु [उदयन] १ एक राजकुमार,
कोशानी नवरी के राजा उदमीक का पुन
(मिपा १ १)। २ एक विद्याय के राजा
(कम)। ३ न ऊगति ऊव। ४ मि ऊगति
होनेवाला प्रबन्धमान (छा ४ १)।

उदर न [उदर] १ फेट, कउर (दुप १ ८)।

२ फ की बीमारी 'नवनउरउपायउपयो
सोवउरि' (महा ११)।

उदरमरि वि [उदरमरि] स्वामी अनेनके
(मि १७६)।

उदरि वि [उदरि] फ की बीमारीवाला
(उप १ ३)।

उदरिय वि [उदरि] अर केओ (मिपा १
७)।

उदवाह वि [उदवाह] १ पानी बहन करने-
वाला, बह-बाहक। २ दु छोटा प्रमह
(महा १ ४)।

उदवी [वि] [उदवि] ? एक

उदवि दु [उदवि] १ सुख बापर (दुप)।

२ नवनवि केओ की एक जाति उदविकुमार
(उप १ ४)। कुमार दु [कुमार] केओ
की एक जाति (उप १)। केओ बहहि।

उदवाह दु [उदवाह] १ एक के राजा
आराका कोठिक का पुन विपकी एक कु
वे केला साधु ककर बरिहल से साप का
पीर को बलिप में तीसप विपने होना
(छा १ टी)। २ दु राजा दुठिक का फट-
हली (पन १६, १)।

उदवाह केओ उदवाय (दुप २१)।

उदवाह केओ उदवात (उप १७४ टी)।

उदवाय दु [उदवाय] सिमुनेत का एक
राजा विपने मयल म्हावीर के पास बीजा
की बी (छा ४ पन १ ६)।

उदर केओ उदय (उप १ ८)।

उदासि वि [उदासि] ऊगति उदासीन।

न न [न] बीमारी (उप ४२६)।

उदासीन वि [उदासीन] १ मयल उदय
(उप १ २)। २ उदासीनता (छा
१)।

उदाह वि [उदाह] कवि इतिवि
(पन)।

उदाहर एक [उदा + ह] १ कदम। २
उदाहर के। उदाहरि (मि १४१)। 'कयं
मुवं निव उदाहरि' (उत ४१)। कुदा,
उदाह (भाषा छत ४४ १) उदाह (दुप
१ १२ ४)। उदाह उदाहरत (दुप १
१२ ४)।

उदाहरन न [उदाहरन] १ कन प्रति-
मान। २ उदाह (दुप १ १२ विदे)।

उदाहिय वि [उदाहिय] १ कवि प्रति
पति। २ उदाहिय (भाषा छाया १ ८)।

उदाहिय वि [वि] उदाहिय केका गया (उप १)

उदाह केओ उदाहर।

उदाह न [उदाह] कन का (उदा)।

उदाह केओ उदाहर।

उदाह केओ उदाह = उदाह (स्वय ७)।

उदि मक [उद + ह] १ कन होना। २
कन होना (विदे १२६६ बीन १)। उदि
उदयत (का उम ८२, २६ दुप १६८)।
कन-उदिउत (विदे २३)।

उदिकिअ वि [उदिकिअ] मयनीय (वि
१ ४४६)।

उदिय वि [उदिय] उतर-पिठा में उदय
(बाय)।

उदिय १ वि [उदीय] १ उदि उदय-
उदि (छा ३) 'केओ वि उदी विपकी
उदिय' (उत २१)। २ उदीय (कर्म)
(उप १६६ म)। ३ उदाह 'बहा उदियको
मनु उदीय नाही' (उत १ या २७)। ४
ऊगति प्रमह 'मनुउदीयमयरी मी' केा
नि किरल मोहा उदयतमोह नीउयमोहा ?
(महा २, ४)।

उदिय वि [उदिय] १ उदि उदयत (महा
१६)। २ उदय (छा ४)। ३ उद, कवि
(विदे १२७१)।

उदीय वि [उदीय] १ उतर पिठा से
उदय उदीयवा उतर पिठा में उदय
(भाषा मि १६२)। पाहीया की [पाहीया]
होना-मोह (महा २, १)।
उदीया की [उदीय] उतर पिठा (छा
१ १)।

[बस्ति] इति पानी भरणे वा मरुक् (छाया १ ८)। 'सिद्धा को' [सिद्धा] देना (अ १)। सीम पुं [सीमण] नर्मद-स्त्रिय (रुक्)।

शब्दार्थ नि [उद्यम] १ सुन्दर, मनोहर 'ततो बटु तीर स्नानं चोत्सवसुरम' (पुर १ १२२)। २ पर कण्ठ, प्रवर (अ ४ २) छाया १ १ घट १)। ३ प्रमाण सुन्दर 'जगत्कारितको मोक्षी' (उत् ११)।

उद्यम्य पुं [उद्यम्य] एक मरुत्-स्वामि (वेदक १७)।

उद्यत नि [उद्यत] उद्यत, धृष्ट (संयोग १)।

उद्यत नि [उद्यत] स्वर-स्त्रिय को उद्यत स्वर से बोला जाय बहु स्वर (विश्व ३२)।

उद्यत यो [उद्यत] युवा उत्तम निम्न (अ १ ११ टी)।

उद्यत यो उद्यत (छाया १)। सम १११ अ ७१८ टी प्रामु ७२ वल्ल १)।

उद्यत पुं [उद्यत] नाम (सुम २ १ २४)।

उद्यत पुं [उद्यत] १ धर्मुर उत्पत्ति 'को एविहीनं नर्म' धाम्प, कोकि बन्धन-धुमाय्य उत्पत्ति इत्यत्र (१) (आ)। २ उत्पत्ति (विश्व)। ३ विषाक कर्म-परिणाम

'नर्मरुत्पत्तिमात्रायाश्च'।

उद्यत-स्त्रिय-पुं [उद्यत]।

उद्यत-स्त्रिय-पुं [उद्यत]।

उद्यत-स्त्रिय-पुं [उद्यत]।

उद्यत-स्त्रिय-पुं [उद्यत]।

उद्यत-स्त्रिय-पुं [उद्यत]।

उद्यत-स्त्रिय-पुं [उद्यत]।

उद्यत-स्त्रिय-पुं [उद्यत]।

उद्यत-स्त्रिय-पुं [उद्यत]।

उद्यत-स्त्रिय-पुं [उद्यत]।

उद्यत-स्त्रिय-पुं [उद्यत]।

उद्यत-स्त्रिय-पुं [उद्यत]।

उद्यत-स्त्रिय-पुं [उद्यत]।

उद्यत-स्त्रिय-पुं [उद्यत]।

उद्यत-स्त्रिय-पुं [उद्यत]।

उद्यत-स्त्रिय-पुं [उद्यत]।

उद्यत-स्त्रिय-पुं [उद्यत]।

उद्यत-स्त्रिय-पुं [उद्यत]।

उद्यत-स्त्रिय-पुं [उद्यत]।

उद्यत-स्त्रिय-पुं [उद्यत]।

उद्यत-स्त्रिय-पुं [उद्यत]।

उद्यत-स्त्रिय-पुं [उद्यत]।

उद्यत-स्त्रिय-पुं [उद्यत]।

उद्यत-स्त्रिय-पुं [उद्यत]।

उद्यत-स्त्रिय-पुं [उद्यत]।

उद्यत-स्त्रिय-पुं [उद्यत]।

उद्यत-स्त्रिय-पुं [उद्यत]।

उद्यत-स्त्रिय-पुं [उद्यत]।

उद्यत-स्त्रिय-पुं [उद्यत]।

उद्यत-स्त्रिय-पुं [उद्यत]।

उद्यत-स्त्रिय-पुं [उद्यत]।

उद्यत-स्त्रिय-पुं [उद्यत]।

उद्यत-स्त्रिय-पुं [उद्यत]।

उद्यत-स्त्रिय-पुं [उद्यत]।

उद्यत-स्त्रिय-पुं [उद्यत]।

उद्यत-स्त्रिय-पुं [उद्यत]।

उद्यत-स्त्रिय-पुं [उद्यत]।

उद्यत-स्त्रिय-पुं [उद्यत]।

उद्यत-स्त्रिय-पुं [उद्यत]।

उद्यत-स्त्रिय-पुं [उद्यत]।

उद्यत-स्त्रिय-पुं [उद्यत]।

उद्यत-स्त्रिय-पुं [उद्यत]।

उद्यत-स्त्रिय-पुं [उद्यत]।

उद्यत-स्त्रिय-पुं [उद्यत]।

उद्यत-स्त्रिय-पुं [उद्यत]।

उद्यत-स्त्रिय-पुं [उद्यत]।

उद्यत-स्त्रिय-पुं [उद्यत]।

उद्यत-स्त्रिय-पुं [उद्यत]।

उद्यत-स्त्रिय-पुं [उद्यत]।

उद्यत-स्त्रिय-पुं [उद्यत]।

उद्यत-स्त्रिय-पुं [उद्यत]।

उद्यत-स्त्रिय-पुं [उद्यत]।

उद्यत-स्त्रिय-पुं [उद्यत]।

उदीर मा [उद् + इरस्] । प्रणय कर्ता ।
२ बहूता प्रविवान बरता । ३ बी कर्म
उदय-शान न हा उदीरो प्रपन-विरोध न
कर्मभुग बरता । उदीर, उदीरि (मय
वति ७७) । मूरा उदीरिन् उदीरिन्
(मय) । मीन उदीरिम्बि (मय) । बह
उदीरन (का) : 'कुममन्-पुदीरतो' (उ
६ ४) । कण्ड उदीरिन्माणा (पण
११) । ई उदीरसाण (मय) ।

उदीरा लो उदीरय (वै ३ १) ।

उदीरय न [उदीरय] । प्रपन प्रविवान ।
२ वेण्डा । ३ वान-शान न होन पर भी
प्रपन-विरोध ये रिया बाडा कर्म-पन बा
पुनुर (कम ० ११) ।

उदीरयणा १ भी [उदीरणा] ऊपर देना
उदीरणा १ (कम २ ११ १) २ वान-
शान-विरोध बरता उदीरणा एमा' (कम
१४ ११६) ।

उदीरय वि [उदीरय] । प्रपन प्रविवान ।
२ वेण्डा, प्रपन-एमा-विरोध-विरोध-
(पण १ ४) । ३ उदीरणा कर्तेयाया काय
प्राप्त न होने पर भी प्रपन विरोध ये कर्म
पन बा पुनुर बरतेयाया । (कम १ २२) ।
उदीरि देतो उदीरिय (पण ७४) ।

उदीरिय वि [उदीरिय] । प्रपन प्रविवान
पदीर्या पानिपणो उदीरियो बेरिये मा
मरति' (पण जी १) । २ वति प्रति
पतिन पान पम उदीरि' (मा) ।
३ मीन इन 'मपुडाया पमा उदीरिय'
(मा) । ४ मय-पान न होने पर भी
प्रपन-विरोध भी वर विरोध पन बा
पुनुर रिया काय बह (कम) (पण २१
मा) ।

उदीरि देतो उदीरिय (पण ७४) ।
उदीर देता उदीर (कम) ।
उदीरय न [उद् + इरस्] ऊपर बहना ।
उदीरय (वि ११०) ।

उदीरय देता उदीरय (वि ११) ।
उदीरय देता उदीरय (वि ११) ।
उदीरय देता उदीरय (वि ११) ।

उदीरय देता उदीरय (वि ११) ।
उदीरय देता उदीरय (वि ११) ।
उदीरय देता उदीरय (वि ११) ।

उदीरय देता उदीरय (वि ११) ।
उदीरय देता उदीरय (वि ११) ।
उदीरय देता उदीरय (वि ११) ।

उदीरय देता उदीरय (वि ११) ।
उदीरय देता उदीरय (वि ११) ।
उदीरय देता उदीरय (वि ११) ।

उदीरय देता उदीरय (वि ११) ।
उदीरय देता उदीरय (वि ११) ।
उदीरय देता उदीरय (वि ११) ।

उदीरय देता उदीरय (वि ११) ।
उदीरय देता उदीरय (वि ११) ।
उदीरय देता उदीरय (वि ११) ।

उदीरय देता उदीरय (वि ११) ।
उदीरय देता उदीरय (वि ११) ।
उदीरय देता उदीरय (वि ११) ।

उदीरय देता उदीरय (वि ११) ।
उदीरय देता उदीरय (वि ११) ।
उदीरय देता उदीरय (वि ११) ।

उदीरय देता उदीरय (वि ११) ।
उदीरय देता उदीरय (वि ११) ।
उदीरय देता उदीरय (वि ११) ।

उदीरय देता उदीरय (वि ११) ।
उदीरय देता उदीरय (वि ११) ।
उदीरय देता उदीरय (वि ११) ।

उदीरय देता उदीरय (वि ११) ।
उदीरय देता उदीरय (वि ११) ।
उदीरय देता उदीरय (वि ११) ।

उदीरय देता उदीरय (वि ११) ।
उदीरय देता उदीरय (वि ११) ।
उदीरय देता उदीरय (वि ११) ।

उदीरय देता उदीरय (वि ११) ।
उदीरय देता उदीरय (वि ११) ।
उदीरय देता उदीरय (वि ११) ।

उदीरय देता उदीरय (वि ११) ।
उदीरय देता उदीरय (वि ११) ।
उदीरय देता उदीरय (वि ११) ।

उदीरय देता उदीरय (वि ११) ।
उदीरय देता उदीरय (वि ११) ।
उदीरय देता उदीरय (वि ११) ।

उदीरय देता उदीरय (वि ११) ।
उदीरय देता उदीरय (वि ११) ।
उदीरय देता उदीरय (वि ११) ।

उदीरय देता उदीरय (वि ११) ।
उदीरय देता उदीरय (वि ११) ।
उदीरय देता उदीरय (वि ११) ।

उदीरय देता उदीरय (वि ११) ।
उदीरय देता उदीरय (वि ११) ।
उदीरय देता उदीरय (वि ११) ।

उदायनो उदाय ।

उदायन न [उदायन] कीक देखी (भा १) ।

उदायना ली [उदायना] १ प्रथम प्रवृत्ति ।

२ दूर-अनन दूर दाय में जाता (बर्न १) । ३

बाय की खेप दिदि (बर्न १) ।

उदि खो मुदि (पद्) ।

उदि की [दि] पादी का एक समयर पुनरुत्थी

'उद' (गुण १) यी हा ३ २ दी-नय

१११) ।

उदिम देयो उदिमि = उदिमि (भा ४

प्रीत) एवा बर १ प्रीत) पद् २८) ।

उदिमि नि [उदिमि] प्रीत अवा दिया

हुवा (बर्न ४) ।

उदुपुपुपुपुपु नि [दि] उदुपुपुपुपुपु (कण)

उदुपुपुपुपुपु देयो उदुपु (कण) ।

उदुपुपुपुपुपु [पु] पुपु करता पुपु करता ।

उदुपुपु (हे ४ १२६) ।

उदुपुपुपुपुपु [उदु + प्पा] १ पाषाणकला ।

२ मोर से बननी को बजाना । उदुपुपुपु उदु

पाप (पद्) माता) ।

उदुपुपुपुपुपु नि [उदुपुपुपुपु] उदा क्रिया

हुवा निरतिरि (मे १ ८) ।

उदुपुपुपुपु नि [दि] १ वरिष्ठ 'पाषाण उदु

पाप' (हुवा) 'पाषाणमुपुपाप' पाषाणमुपु

न मापु पाषाण' (गति) । २ ऊनत

'मपुपुपुपुपुपुपुपुपुपुपु' (मे १ ११) ।

उदुपुपु नि [उदुपु] १ वनन उदा हुवा

(मे १ १४) । २ प्रयुज की हुवा 'पुपुपु

पाप' (गति) । ३ प्राणिन 'पापुपुपु

पुपुपुपुपुपु' (गति) । ४ वनत प्रयज

(मप ११३) । ५ वनत प्रयज (कण) ।

उदुपुपु नि [उदुपु] १ अवा उदु उदु

उदु' (पाप) । २ वनत प्रयज (गुण १ १६

१२ ११) ।

उदुपुपुपु } एवा उदुपु

उदुपुपुपुपुपु } एवा उदुपु

उदुपुपुपुपु नि [उदुपुपु] १ रोपाय

पु

पु (उद) । २ नि रोपाय उदुपुपु (हे

१ ११२, १, १) 'उदुपुपुपुपुपुपुपु

पुपुपुपुपुपुपुपुपुपुपुपुपुपुपुपुपुपुपु

'उदुपुपुपुपुपुपुपुपुपुपुपुपुपुपुपुपु

'उदुपुपुपुपुपुपुपु' (पद्) ।

उदुपुपु उदु [उदु + पु] १ अवा

उदुपुपुपुपु १ २ वनत वनत वनत वनत

उदुपुपुपुपु उदुपुपुपुपुपुपुपुपुपुपुपु

(पद्म २, ४, ४) ।

उदुपुपुपुपुपु देयो उदुपुपु (कण) ।

उदुपुपुपु (दी) देयो उदुपुपु (पाप १२) ।

उदुपुपुपु उदु [उदु + पुपु] १ व्याप्त

करता । २ वृत्ति वनत । उदुपुपुपु (हे

४ २६) ।

उदुपुपुपुपु न [उदुपुपुपु] वृत्ति को पद्म

वर वनत ।

'वामनसाधनमुपुपुपुपुपुपुपुपुपुपुपु

ए समयर उदुपुपुपुपुपुपुपुपुपुपुपु

(पा ४ ४) ।

उदुपुपुपुपु नि [उदुपुपुपु] १ वृत्ति से

मनेय हुवा । २ व्याप्त 'निमित्तपुपुपुपुपुपु

(हुवा) ।

उदुपुपुपुपुपुपुपु [उदुपुपुपुपु] हुवा देवा

पुपुपुपुपुपुपुपुपुपुपुपुपुपुपुपुपुपु

उदुपुपुपुपुपुपुपुपुपुपुपुपुपुपुपुपु

(गुण १४ १४४) ।

उदुपुपुपुपु नि [उदुपुपुपु] निमित्त को

क्रिया वनत को वृत्ति (पद् ११४) ।

उदुपुपुपुपु [उदुपु] उदुपुपुपुपु अवा होना

(गुण ११४) 'अ व व व व व व व व व

व व व व व व व व व व व व व व व

व व व व व व व व व व व व व व व

(गुण १४) ।

उदु न [ऊन] ऊन वृत्ति वा वृत्ति के वृत्ति ।

मप नि [मप] ऊन का बना हुवा

'मपपुपुपुपुपुपुपुपुपुपुपुपुपुपुपुपु

उदुपुपुपुपुपुपुपुपुपुपुपुपुपुपुपुपु

(गुण ४११) ।

उदु (पाप) नि [उदुपुपु] निमित्तपुपु

निमित्त (वृत्ति) ।

उदुपु देवा उदुपु (वाम गुण २४४) प्राप्

२ वृत्ति १४) ।

उदुपुपुपुपुपु देयो उदुपुपु ।

उदुपुपु नि [उदुपु] अवा निवा हुवा (पद्म

१ १ २४) ।

उदुपुपुपु उदु [उदु + पद्म] पद्मपुपुपुपु

वृत्ति 'वृत्तिपुपुपुपुपुपुपुपुपुपुपुपु

(कण) ।

उदुपुपु देयो उदुपुपु (गुण ४४१) वन ४१

कण) ।

उदुपु देयो उदुपुपु । मप नि [मप] ऊन

का बना हुवा (गुण १४१) ।

उदुपुपुपु न [उदुपुपु] हृत्त-वृत्तिपुपुपु

(म १४१) ।

उदुपुपुपु [उदुपुपु] १ अवा । २ पद्मपु

वृत्ति (पद्म ४१) ।

उदुपुपुपु नि [उदुपुपु] अवा निवा हुवा

(पाप) महा व ४४४) ।

उदुपुपुपु नि [दि] देयो उदुपुपुपुपु, 'वाम

निमित्तपुपुपुपु' (पाप) ।

उदुपुपुपु [उदुपु] उ वृत्ति (पाप) ।

उदुपुपु देयो उदुपुपुपु = वृत्तिपु (वृत्ति

२) ।

उदुपुपुपु उदु [उदु + मप] उदुपुपुपु उदु

मप करता । मप उदुपुपुपुपुपुपु (गुण

२ १ १) ।

उदुपुपुपुपुपु न [उदुपुपुपु] वृत्तिपुपु

कर कर उदुपुपुपुपु, उदुपुपुपुपुपुपु

उदुपुपुपुपुपु (वृत्ति ११ टी १११) ।

उदुपु देयो उदुपुपु । वृत्ति वृत्तिपुपुपु

(कण) ।

उदुपुपु (वाम) पु [उदुपुपु] वृत्तिपु

(कण) ।

उदुपुपुपु न [उदुपुपु] वृत्ति वृत्तिपु

(वृत्ति ११) ।

उदुपुपुपुपु नि [उदुपुपु] वृत्ति वृत्तिपु

(वृत्ति ११) ।

उदुपुपुपुपु नि [उदुपुपु] वृत्ति वृत्तिपु

(वृत्ति ११) ।

उदुपुपुपुपु नि [उदुपुपु] वृत्ति वृत्तिपु

(वृत्ति ११) ।

उदुपुपुपुपु नि [उदुपुपु] वृत्ति वृत्तिपु

(वृत्ति ११) ।

उदुपुपुपुपु नि [उदुपुपु] वृत्ति वृत्तिपु

(वृत्ति ११) ।

उदुपुपुपुपु नि [उदुपुपु] वृत्ति वृत्तिपु

(वृत्ति ११) ।

उदुपुपुपुपु नि [उदुपुपु] वृत्ति वृत्तिपु

(वृत्ति ११) ।

उदुपुपुपुपु नि [उदुपुपु] वृत्ति वृत्तिपु

(वृत्ति ११) ।

उद्योगपिपय नि [उपहसिपय] निरुचित (म
७२१)

उपसर्ग देखी उपसर्गम = उप + सत् । बहु
उपसर्गम (पि ४२७) । संज्ञ. उपसर्गम
(पि ११६) ।
उपसर्गमा } औ [रे] बध्न कर्त्तु
उपसर्गमगा } (रे १२२) ।
उपसर्गक एक [उप + कर्त्तु] क्रीडा करना
विनास करना । कर्त्तु उपसर्गक (महा) ।
प्रयो बहु उपसर्गसिद्धिमात्र (आम्ना ११) ।
उपसर्गक न [रे] मुञ्च मुञ्च (रे १
११७) ।
उपसर्गक न [उपसर्गक] क्रीडा-क्रीडा
(आम्ना ११) ।
उपसर्गक देखी उपसर्गम = उप + सत् । संज्ञ.
उपसर्गक (स १२) उपसर्गक (स
१११) ।
उपसर्गक एक [उप + कर्त्तु] १ बहु करना ।
२ धारण करना । हे. उपसर्गक (बन १) ।
उपसर्गक देखी उपसर्गक । उपसर्गक (माभा २
११२) ।
उपसर्गक एक [उप + सिय] सीपना
पोतना । मणि उपसर्गक (पि १४६) ।
उपसर्गक एक [उप + सिपु] डुबान करना
‘बहालौ को स सीपणौ बौहए उपसर्गक’
(कर्म ११६) ।
उपसर्गक वि [उपसर्गक] सीपना हुमा पोतना
हुमा (आम्ना ११) ।
उपसर्गक देखी उपसर्गक ।
उपसर्गक वि [रे] उपसर्गक नञा-मुञ्च (रे १
१७) ।
उपसर्गक पुं [उपसर्गक] १ सेपना । २ कर्म-
बन्ध (धीन) । ३ संलेप (माभा) । ४
धारण (सुप ११२) ।
उपसर्गक न [उपसर्गक] ऊपर देखी (मन
११२, निरु १ धीन) ।
उपसर्गक वि [उपसर्गक] सीपना हुमा,
पोतना हुमा (कर्म) ।
उपसर्गक एक [उप + उपसर्गक] नालक
हैना, मोम रिखाना । संज्ञ. उपसर्गक (महा)
(महा) ।
उपसर्गक वि [उपसर्गक] निरुको लालक
दी दी हो बहु (बन ७२८ दी) ।
उपसर्गक एक [उप + की] १ खाना स्थिति

करना । २ धारण करना । उपसर्गक (पि
१११ ४७४) ‘उपो उपसर्गक नालाक’
उपसर्गक (माभा २, १११ २) ।
उपसर्गक वि [उपसर्गक] १ स्थित । २
प्रचलन-स्थित ‘उपसर्गक मेरुपुष्प’ बिरण
सीत (माभा २) ।
उपसर्गक पुं [उपसर्गक] बार (बर्ग १२८) ।
उपसर्गक एक [उप + पद] १ चलन होना ।
२ संघट्ट होना मुक्त होना । उपसर्गक मणि
उपसर्गक (महा) । ३ उपसर्गक
मात्र (आ ४) । संज्ञ. उपसर्गक (सुप २११) ।
उपसर्गक न [उपसर्गक] व्यान ‘मनसंयोगो
बन्धनार्थम् नञा उपसर्गक’ (सुपा
४७१) ।
उपसर्गकमात्र देखी उपसर्गक = उप + मात्र ।
उपसर्गक वि [उपसर्गक] उपसर्गक नञा
—प्रधान सेवक वि धारि (बन २, १११) ।
उपसर्गक वि [उपसर्गक] प्रधान धारि कर्म
प्रधान धारि को देखो योग्य (सुप २, २११) ।
उपसर्गक एक [उप + कर्त्तु] कर्त्तु होना,
मरना एक मति से कर्त्तु मति में नञा ।
उपसर्गक (महा) । ३ उपसर्गकमात्र (महा) ।
उपसर्गक न [उपसर्गक] बौध्वा (आम्ना ११
४७४) ।
उपसर्गक वि [उपसर्गक] १ चलन, ‘उपसर्गक’
मुक्तुस्मि सेवक’ (उप २) । २ उपसर्गक
गुरु (पंथा १ उपसर्गक) । ३ प्रेरिका
‘उपसर्गक’ पत्रकम्पना’ (उप ११) । ४ उपसर्गक
ज्याति कर्म (महा १४१) ।
उपसर्गक औ [उपसर्गक] १ ज्याति बन्ध
(आ १) । २ मुक्ति व्यास (पत्र २ ११७)
उपसर्गक (४६) । ३ विषय । ४ उपसर्गक विरुद्ध ति
बा उपसर्गक ति बा उपसर्गक ति बा उपसर्गक
(माभा १) ।
उपसर्गक वि [उपसर्गक] चलन होना, नञा,
‘उपसर्गक’ सेवक उपसर्गक नञा (धीन
आ ४) ।
उपसर्गक देखी उपसर्गक (महा २ २११
११७ ११२) ।
उपसर्गक न [उपसर्गक] देखी उपसर्गक =
उपसर्गक, ‘उपसर्गक’ उपसर्गक (पंथा) ।

उपसर्गक न [उपसर्गक] उपसर्गक (सुपा
१११) ।
उपसर्गक वि [उपसर्गक, उपसर्गक] १
उपसर्गक होना, नञा ‘मणि मे धारण उप
सर्गक, मणि मे धारण उपसर्गक (माभा)
२ उपसर्गक बा उपसर्गक से उपसर्गक होना
(पत्र १४) ।
उपसर्गक एक [उप + उपसर्गक] उपसर्गक
करना सिद्ध करना । उपसर्गक (उप १
४२८ ४३८ १११) ।
उपसर्गक पुं [उप + उपसर्गक] बाध बजाना ।
कर्म उपसर्गकमात्र उपसर्गकमात्र (कर्म
पत्र) ।
उपसर्गक पुं [उपसर्गक] १ देव या नारक नीच
की ज्याति—बन्ध (कर्म) । २ देवा धारण
‘धारण’ धारणार्थम् ‘निरुद्ध’ (महा १११)
३ विनय । ४ धारण : ‘उपसर्गक’ एतद्देवो
धारण निरुद्धो य इति एतद्देव’ (बन ४) ।
५ प्राप्ति (पत्र १११) । ६ उपसर्गक,
उपसर्गक (निरु ४) । ७ उपसर्गक पुं [उपसर्गक]
उपसर्गक विरुद्ध पत्रकम्पना के धारण कर्म
उपसर्गक-विहार की उपसर्गक (पंथा) । य
वि [उपसर्गक] देव या नारक मति में उपसर्गक
नीच (माभा) ।
उपसर्गक पुं [उपसर्गक] उपसर्गक धारण,
विनय सेवक वि धारण (उपसर्गक) ।
उपसर्गक वि [उपसर्गक] निरुद्ध उपसर्गक
विहार हो बहु (पत्र १११, १११: सुपा ४७८) ।
उपसर्गक वि [उपसर्गक] उपसर्गक विना
हुमा (पत्र) ।
उपसर्गक देखी उपसर्गक ‘उपसर्गक’ मुक्तुस्मि न
(२ न) विरुद्ध (बर्ग ११) ।
उपसर्गक वि [उपसर्गक] देवा हुमा निरुद्ध
(माभा) ।
उपसर्गक वि [उपसर्गक] उपसर्गक विरुद्ध
निरुद्ध (धीन १) ।
उपसर्गक एक [उप + विरुद्ध] देवा । उप
विहार (महा) । संज्ञ. उपसर्गक (पत्र
१११) ।
उपसर्गक न [उपसर्गक] देवा (मुक्तु ७) ।
उपसर्गक न [उपसर्गक] १ उपसर्गक नञा

उपसाम धृ [उपसाम] उपसामि (किरि २३२)।

उपसाम देखो उपसम (बिने ११ १)।

उपसामय कि [उपसामय] १ होनादि को उपसाम करनेवाला (पिरे ५२६ पा ४)।
२ उपसामये संबन्ध रखनेवाला 'उपसामय मैत्रियस्त होइ उपसामय गु सम्मत्' (पिरे २७१२)।

उपसामय न [उपसामय] उपसामि करण (ग ४११)।

उपसामयया धी [उपसामय] उपसम (छ ८)।

उपसामय देखो उपसामय (छ २६ बिने २१ २)।

उपसामय कि [उपसामय] १ उपसम संबन्धी। २ धृ माय-विदेय 'मायावमय-हृया मय्यो उपसामयो माय' (बिने १४ ६५)। ३ न सम्मत्-विदेय (बिने ३२६)।

उपसामय कि [उपसामय] शान्त किया हुआ (ब १)।

उपसामय न [उप + कम्] कहना। उप साह (छ ७)।

उपसामय कि [उपसामय] निनादक (मण)।
उपसामय कि [उपसामय] शिरार किया हुआ (पाठन १४ ८ छ ७)।

उपसामय कि [उपसामय] निष्क, दिग्ग हाया (ग १)।

उपसामय न [उपसामय] बर्णन करना प्रशंसा करना। इ इतिहासमय (छ १) (दुहा १६८)।

उपसामय न [उपसामय] सोचा हुआ (वि १३, ११)।

उपसामय कि [उपसामय] निर्मल (सू १ १)।

उपसामय कि [उपसामय] संयुजित (मण)।
उपसामय कि [उपसामय] रचित (ब १ १ ४)।
उपसामय न [उपसामय] नेता परित्यज (ग १)।

उपसामय कि [उपसामय] नेता करनेवाला मन्त्र (पद)।

उपसामय न [उप + धृ] शोभना रिश-यना। नह उपसामयना उपसामयना (मण पाया १ १)।

उपसामय कि [उपसामय] मुष्टीभित निरुजित (धौप)।

उपसामय धी [उपसामय] शोभा बिभूषा (सुर १ १ ४)।

उपसामय कि [उपसामय] निर्मल किया हुआ शुद्ध किया हुआ (पाया १ १)।

उपसामय देखो उपसामय (गुण ५ 'मजि' धर्म ६६)।

उपसामय देखो उपसामय (ग ४)।

उपसामय धृ [उपसामय] नन साधुओं के निराश करने का स्थान (मम १८८ मी १७ पा ४ ४८ ४)।

उपसामय धी [उपसामय] हेप (ब १)।

उपसामय कि [उपसामय] १ हेयो (ब १)।
२ मन्त्रोद्घात। ३ समीप में स्थित। ४ न. हेप (ग ४)।

उपसामय धी [उपसामय] प्रल-धम को जानन के लिए व्योमिनी को कहा जाता प्रथम भाग्य (हास्य ११)।

उपसामय धृ [उपसामय] दोनों फूल (दुहा ६ २ १६८)।

उपसामय धृ [उपसामय] 'दो' धर्म को बदलानेवाला प्रथम (ग ४)।

उपसामय न [उपसामय] दुष्क करना मारना करना। उपसामय (ग ४)।

उपसामय कि [उपसामय] १ उपसामयित उपस्था पित (ग ४)। २ उपसामयित में कथित भावना (ठा १ १)।

उपसामय न [उपसामय] १ विनाश करना। २ भावना परीक्षा। उपसामय (ग ४)।
उपसामय (ग ४)। नह उपसामय (ग ४)।

उपसामय न [उपसामय] १ भावना। २ विनाश (ग ४)।

उपसामय न [उपसामय] १ रचना बनाना। २ उत्तेजित करना। उपसामय (हे ४ १२)।

उपसामय कि [उपसामय] १ बनाया हुआ। २ उत्तेजित (दुहा)।

उपसामय देखो उपसामय।

उपसामय कि [उपसामय] १ निर्माजित (गण ११३)। २ इति (हे ४ १)।

उपसामय न [उप + कम्] १ दुहा करना।

२ उत्तेजित करना। ३ धर्मोद्घात करना। उपसामय (हे ४ २१६)। मुरा उपसामय (छ ६)।

उपसामय न [उप + कम्] उपसामय करना हीनी करना। इ उपसामय (ग १)।

उपसामय कि [उपसामय] १ निष्का उपसामय किया गया हा नह (वि ११३)। २ न उपसामय (संयु)।

उपसामय धी [उपसामय] भावा कपट (धर्म २)।

उपसामय न [उपसामय] १ तद्विधा उनीला (हे १ १४)। मुर १२ २३। गुण ४)। २ उपसामय (सू १ १ २, २१)। ३ उपसामय 'उपसामय कथित उपसामयना कथित' (ग ४ ७२८ ४)।

उपसामय धृ [उपसामय] १ भेंट उपसामय (श्रुति ७४)। २ विनाश, कथित 'उपसामयना श्रुति' (ग ४ ७२८ ४)।

उपसामय धी [उपसामय] भावा कपट (धर्म २)।

उपसामय कि [उपसामय] उपसामयित निधित (सू २ ७)।

उपसामय धी [उपसामय] १ उपसामय धी (ग ४ ७२८ ४)। २ उपसामय (ग ४ ७२८ ४)।

उपसामय कि [उपसामय] उपसामयना (ग ४ ७२८ ४)।

उपसामय धृ [उपसामय] हीनी कपट (ग ४ ७२८ ४)।

उपसामय कि [उपसामय] हीनी के धर्मः 'मुसामयो कि हु वा'।

उपसामय कि [उपसामय] हीनी के धर्मः 'मुसामयो कि हु वा'।

उपसामय कि [उपसामय] हीनी के धर्मः 'मुसामयो कि हु वा'।

उपसामय कि [उपसामय] हीनी के धर्मः 'मुसामयो कि हु वा'।

उपसामय कि [उपसामय] हीनी के धर्मः 'मुसामयो कि हु वा'।

उपसामय कि [उपसामय] हीनी के धर्मः 'मुसामयो कि हु वा'।

उपसामय कि [उपसामय] हीनी के धर्मः 'मुसामयो कि हु वा'।

उपसामय कि [उपसामय] हीनी के धर्मः 'मुसामयो कि हु वा'।

किंवा हुमा (मुपा १५२) । १ हूर किया हुमा (गा १ १) ।

उच्चाह हु [हे] बर्ग लत (१ १ ८७) ।

उच्चाह हु [उच्चाह] बिनाह (मि २१) ।

उच्चाह मक [उच् + माचय] पिरोय प्रहार से पीड़ित कला । कन्हा उच्चाहि छमाज (भाषा छाया १ २) ।

उच्चाहिलि वि [हे] उचित कला हुमा (हे १ १६) ।

उच्चाहुल म [हे] १ ऊपुठठा ऊपुछल (मभि १ १ ११६) । २ वि देव्य धारीसिहर (१ १ ११६) ।

उच्चाहुलियि वि [हे] ऊपुछ लणिल्ल (मभि) ।

उच्चिआइय वि [उच्चिउ] उत्तीवित (वि १ १ २६) ।

उच्चिअ न [हे] प्रतपित प्रताप (पठ) ।

उच्चियग वि [उच्चिग] १ किल । २ धीत बरवाया हुमा (हे २ ७६) ।

उच्चिगिरा वि [उच्चिगरीछ] उच्चेन करने बाता (बाका १८) ।

उच्चियअ रेको उच्चिय । उच्चिअइ (प्राह १८) उच्चिअइ (१ ८६) । पंड उच्चिअइए (धर्मि ११६) ।

उच्चिय वि [हे] १ कवित पीठ । २ कपाल क्सेयमुक (पठ) ।

उच्चियमि वि [हे] १ धनिक प्रयास बाता । २ मर्वात-पठित लिहंज (हे १ ११४ बत पठ २१७-११८ पठ) ।

उच्चियय रेको उच्चिया (वि २१६) ।

उच्चिय वि [उच्चिउ] १ ऊँचा गया हुमा उच्चिउ (पण्ड १ ४) । २ कभीर बहुरा (सम ४० छाया १ १) । ३ विड भित्तय हाहि कपीयले उच्चिउं (छंदा ८७) ।

उच्चिय वि [उच्चिउ] विरली ऊँचाई का माग किया गया हो बह (सम ११८) ।

उच्चिय रेको उच्चिया (हे २, ७६ मुर ४ २४) ।

उच्चिय मक [उच् + विज्] छेग करना उत्तमीन होना किल होना 'की उच्चियज मरवर । मरुजस्त धरस्त मरुज' (ग १२६) । बह. उच्चियमाज (ब ११६) ।

उच्चियणिज वि [उच्चिउनीय] उच्चेनप्र (पठन १६ ११२ मुपा ११७) ।

उच्चियेयग न [उच्चिरेचन] बातो करना 'पर्व ब मरिउच्चिरेण कुम्भलस' (कास) ।

उच्चियल मक [उच् + वेल्] १ कपता कपता । २ मक बेल्न कला । बह उच्चिउ लुंउ, उच्चियहमाग (मुपा ८८ उप १७७) ।

उच्चियल मक [म + स्] केलता वमला ।

उच्चियल (मभि) ।

उच्चियल मक [उच् + वेल्] १ उच्चिउता इवर-उच्चर कपता 'उच्चियलह सयणीए रेको घासलककलुम्' (धर्मि १११) ।

उच्चियल वि [उच्चिउ] कपत कपत (मुपा १४) ।

उच्चिहिर वि [उच्चिहिर] कपतबाता हिलनेबाता (मुपा ८८) ।

उच्चिय मक [उच् + विज्] उच्चेन करना किल होना । उच्चियल (पठ) ।

उच्चिय म [रेको उच्चिय । उच्चियल, उच्चे उच्चिउ] मर (माक १८) ।

उच्चिय वि [हे] १ ऊँच क्षेत्र-मुक (पठ) ।

२ उत्तम वेप बाता (पाप) ।

उच्चिय मक [उच् + म्यच्] १ ऊँचा टेंकना । २ ऊँचा बाता उच्चिया 'वे बहालामय केर पुरिये उच्चि उच्चिह' (वि १२६) ।

बह 'मउसावि उच्चिह'वाइ धाणेमाई धास-सयाई पासिह' (छाता १ १० टी-पठ २११) । बह उच्चियहमाग (मा ११) ।

पंड उच्चिहिया (वि १२६) ।

उच्चिह हु [उच्चिह] कपता-कपत एक पासीयिक मठ का जगधक (सम ८, २) ।

उच्चि हु [उच्चि] उच्चि (मि २ १) । स हु [उच्चि] पया (हुमा) ।

उच्चि रेको उच्चिउ (हुमा हे १ १२) । उच्चिउ वि [हे] उच्चल खोप हुमा (हे १ १) ।

उच्चिउ वि [उच्चिउ] उच्चिउ 'उल धुम्ल उच्चिउल मयलस' (वि १२६) ।

उच्चिउ मक [उच्च + उच्चि] पीडा पहुँचाया मार-पीडा करना । बह उच्चिउ माय (पठ) ।

उच्चिउय वि [उच्चिउय] मरुत-पठित करनेबाता छिय को प्रायश्चित सेने में शरम को हूर करत का उपरेश बेनेबाता (पठ) (मग २४ ७ ४ ४६) ।

उच्चिउममाग रेको उच्चिउ ।

उच्चिउय वि [हे] १ उच्चिउ । २ उच्चिउ । उच्चिउय १ मय (हे १ १२१) । ४ उच्चिउ मय (हे १ १२१ मुर १ २ २) ।

उच्चिउ वि [उच्चिउ] १ मारण किया हुमा पदता हुमा (हुमा) । २ ऊँचा किया हुमा, ऊपर मारण किया हुमा (वि १, ४४ २, ११) । ३ परिणीत कृत-निबह (मुपा ४६६) ।

उच्चिउममाग वि [उच्चिउमनीय] छेग-मरक (मा) ।

उच्चिउ हु [उच्चिउ] १ शोक दिवसी (ठा १ १) । २ मयमुमता (मा १, ६) ।

उच्चिउ मक [उच् + वेल्] १ कपता । २ प्रफ करना कपत-मुक कला । उच्चिउ (पठ) उच्चिउम (भाषा २ १ २, २) ।

उच्चिउम न [उच्चिउम] १ कपत । २ कपत-पठित किया हुमा (पठ) ।

उच्चिउय वि [उच्चिउय] १ कपत रखित किया हुमा । २ परेशित (वि ४ ४६) ।

उच्चिउम न [हे] धर्मिनिष्ठ पिछला निरुतर पैरन (हे १ १ १) ।

उच्चिउ रेको उच्चिउ (हुमा महा) ।

उच्चिउय वि [उच्चिउय] उच्चेन-कारक (रवण ४) ।

उच्चिउय हु [उच्चिउय] एक मक-स्थान (हेरत २४) ।

उच्चिउयग वि [उच्चिउयग] उच्चेन-जनक उच्चिउयय (मा) पठ १ १) ।

उच्चिउयग हु [उच्चिउयग] एक मक-स्थान (हेरत २४) ।

उच्चिउ मक [म + स्] केलता । उच्चिउ (पठ) ।

उच्चिउ वि [उच्चिउ] उच्चिउ (वि २ १) ।

उच्चिउ वि [उच्चिउ] किला हुमा, मय (मा १४२) ।

उच्चिउ रेको उच्चिउ । उच्चिउ (हे ४ २२१) । बर्ग उच्चिउम (हुमा) ।

उच्चिउ मक [उच् + वेल्] १ कपत कला । २ कपत कला । ऊँचा उच्चिउ ऊँचा

किमा हुमा (गुप्ता १४२) । १ दूर किमा हुमा (गुप्ता १५) ।

उम्माह दु [दि] बर्न ताप (दे १ ८७) ।

उम्माह दु [उद्वाह] बिवाह (दे २२) ।

उम्माह एक [उद् + बाधय] विरोध प्रसार से पीडित करना । कबह उम्माहि जमाज (भाषा छाया १२) ।

उम्माहिज नि [दि] उद्धित, उम्मा हुमा (दे १ १५) ।

उम्माहुज न [दि] १ उज्जुक्ता उज्जुज (अभि दे १ ११५) । २ नि उज्जु भरीतिकर (दे १ ११५) ।

उम्माहुजिय नि [दि] उज्जु उज्जुजित (अभि) ।

उज्जुधाह्य नि [उज्जुहित] उज्जुहित (दे १ २५) ।

उज्जुज न [दि] प्रगति प्रगति (पञ्च) ।

उज्जुग नि [उज्जुग] १ जिल । २ पीठ बध्नामा हुमा (ह २ ७२) ।

उज्जुगिर नि [उज्जुगरीज] उज्जुग कने बाबा (भाषा १८) ।

उज्जुज देवो उज्जुज । उज्जुज (भाषा १८) ।

उज्जुज (दे ८२) । उज्जु उज्जुजित (अभि ११२) ।

उज्जुज नि [दि] १ बकिट पीठ । २ कपाल कपटमुक्त (पञ्च) ।

उज्जुजिम नि [दि] १ प्रथिक प्रगति बाबा । २ मर्याद-पठित निर्गम्य (दे १ ११४ बज पञ्च १२७-१२८ पञ्च) ।

उज्जुज्य देवो उज्जुग नि (२१५) ।

उज्जुज नि [उज्जु] १ उम्मा कया हुमा उज्जुज (पञ्च १४) । २ गम्भीर गुरु (सम ४४ छाया १२) । ३ बिह 'भीषय-काहि' अर्थिजस उज्जुजो' (छाया ८७) ।

उज्जुज नि [उज्जु] निजो उम्मा का माप किमा मया हो बह (पञ्च १२८) ।

उज्जुज देवो उज्जुग नि (ह २ ७२ गुर ४ २४८) ।

उज्जुज एक [उद् + बिज] ज्ञेय करना, उदसीय होना जिल होना 'को उज्जुज्य नगर । मर्याद बाधय दधने' (न १२१) । बह. उज्जुजमाज (व ११५) ।

उज्जुजिय नि [उज्जुजनीय] उज्जुज-प्रग (पञ्च ११ १२ गुप्ता १२७) ।

उज्जुजिय न [उज्जुजिय] बासी करना 'एवं न अज्जुजियवणो बुद्धेयस' (अम) ।

उज्जुजिय एक [उद् + वज] १ बसना कपना । २ एक बैठन करना । बह उज्जुज स्मृत, उज्जुजमाज (गुप्ता ८८ उप ५ ७७) ।

उज्जुजिय एक [प्र + उ] कपना पसरना । उज्जुजिय (अभि) ।

उज्जुजिय एक [उद् + मज] १ उज्जुजना इधर-उधर बसना 'उज्जुजिय समणीय देवो भासलबधुज' (अभि ११२) ।

उज्जुजिय नि [उद् + वज] बस बस (गुप्ता १४) ।

उज्जुजिय नि [उज्जुजिय] बसनेवाला उज्जुजिय (गुप्ता ८८) ।

उज्जुजिय एक [उद् + बिज] उज्जुज करना जिल होना । उज्जुजिय (पञ्च) ।

उज्जुजिय १ देवो उज्जुज । उज्जुजिय, उज्जु उज्जुज १ बह (पञ्च १८) ।

उज्जुजिय नि [दि] १ उज्जु ज्ञेय-मुक्त (पञ्च) । २ ज्ञेय रूप बाता (पञ्च) ।

उज्जुजिय एक [उद् + वज] १ उम्मा उम्मा । २ उम्मा बाता उम्मा 'से बहाया मय केह पुरिसे उज्जु उज्जुज' (दे १२५) ।

बह 'मयसावि उज्जुजिय' धरोपार्ध भास-सावि पारि' (छाया १ १७ टी—पञ्च २११) । बह उज्जुजियमाज (सम १४) ।

उज्जुजिय नि [उज्जु] (दे १२५) ।

उज्जुजिय दु [उज्जु] उज्जुज-क्यात एक धानीरिक मत का उपासक (सम ८, १) ।

उज्जुजिय दु [उज्जु] उज्जुज (दे २ १) । न दु [उज्जु] उज्जु (गुप्ता) ।

उज्जुजिय देवो उज्जुज (गुप्ता, दे १ १२) ।

उज्जुजिय नि [दि] उज्जुज उज्जुज 'उज्जुज उज्जुज' (दे १ १२) ।

उज्जुजिय नि [उज्जु] उज्जुज 'उज्जुज उज्जुज' (दे १२५) ।

उज्जुजिय एक [उज्जु + वज] उज्जुज उज्जुज 'उज्जुज उज्जुज' (दे १२५) ।

उज्जुजिय नि [उज्जुजिय] उज्जुज-पठित करनेवाला उज्जुज को प्रामाणिक सेने में राख को दूर करन का उपदेश देनेवाला (पञ्च) (सम २५, ७ प ४२) ।

उज्जुजियमाज देवो उज्जुज ।

उज्जुजिय १ [दि] १ उज्जुज । २ उज्जुज । उज्जुज १ १ उज्जुज (दे १ १२१) । ४ उज्जुज, उज्जुज (दे १ १२१ गुर १ २ ५) ।

उज्जुजिय नि [उज्जुजिय] १ बाह्य किमा हुमा पहना हुमा (गुप्ता) । २ उम्मा विद्या हुमा, उपर बाह्य किमा हुमा (दे ५, १४ ६, ११) । ३ परिणीत उज्जुज-विद्या (गुप्ता ४२५) ।

उज्जुजियमाज नि [उज्जुजनीय] उज्जुज-कारक (गुप्ता) ।

उज्जुजिय दु [उज्जुजिय] १ शोक विमोघ (अ १ १) । २ म्यामुक्त (सम १ १) ।

उज्जुजिय एक [उद् + वज] १ बसना । २ धुक् करना बध्ना-मुक्त करना । उज्जुजिय (पञ्च) उज्जुजिय (भाषा २, १, २ २) ।

उज्जुजिय न [उद् + वज] १ बसना । २ नि बसना-पठित किमा हुमा (पञ्च) ।

उज्जुजिय नि [उज्जुजिय] १ बसना-पठित किमा हुमा । २ परीक्षित (दे ४ ४२) ।

उज्जुजिय न [दि] धिक्किम विज्ञाना, निरुत्तर पौर (दे १ १ १) ।

उज्जुजिय देवो उज्जुज (गुप्ता गुरा) ।

उज्जुजिय नि [उज्जुजिय] उज्जुज-कारक (पञ्च ४) ।

उज्जुजियमाज नि [उज्जुजिय] उज्जुज-कारक उज्जुजियमाज (भाषा पञ्च १ १) ।

उज्जुजियमाज पुन [उज्जुजिय] एक नगर-स्थान (देव २०) ।

उज्जुजिय एक [प्र + उ] कपना । उज्जुजिय (पञ्च) ।

उज्जुजिय नि [उज्जुजिय] उज्जुजिय (दे १ १) ।

उज्जुजिय नि [उज्जुजिय] कपना हुमा, प्रगति (भाषा १४२) ।

उज्जुजिय देवो उज्जुज । उज्जुजिय (दे ४ २२१) । बह उज्जुजियमाज (गुप्ता) ।

उज्जुजिय एक [उद् + वज] १ उज्जुज बाता । २ व्याप करना । उम्मा उज्जुज उम्मा

ऊर वि [ऊर] ऊरुएक-ऊरक (छाया १ १)।
 नम्रमूय वि [उबधुन] नूना हृया कृता हृया (उप १६४: यउउ स २ ३)।
 वस्मुर न [वस्मूर] सन्मया, शोम 'बन्मो नियनबरे वस्मुर वट्टए वणु' (गुर ७ ६१ डा ३ २२)।
 वस्सेअ वु [उत्सेअ] १ सिचन। २ उमति। ३ वर (वाए ४२)।
 वस्मइम वि [वस्सेविम] धाअ के मिथित पत्ती धाअ-मोवा मन (क्या टा १, १)।

उत्सेअ वु [उत्सेअ] १ ऊँबाई (मिया १ १)।
 २ उबधुन, टौष (मीन १)। ३ उमति वस्मुर-वन 'पट्टोला वस्सेहा' (व १६६)।
 उत्सेअइस न [उत्सेआइस] एक प्रकार का परिणाल (मिठे १४ टी)।
 उइ स [उम] शौली, गुम कुम्भ (पट्ट)।
 उइह धक [उप + पट्ट] गट होया।
 उइह (सम्मत ११२)।
 उइह ट्ट डेयो वववट्ट = उर + वु।
 उइय स [उमय] शौली गुम (कुमा भवि)।

उइर न [उपगुह] छोटा वर, बाधन-विरोध (पट्ट १ १)।
 उइस वक [उप + इस्] उपहास करना।
 उइस (पट्ट १४)।
 उइर वु [उइर] गलन विरोध (उम)।
 उहिअल वु [वे] वनुपिअ वनु-विरोध (गुल ११ १४६)।
 उहिअमिआ बी [वे] ऊमर डेयो (उप ११ १४६)।
 उहु (धप) डेयो लहो = लहो (लए)।
 उहुर वि [वे] धराअ गुल धनोमुन (वडा)।

॥ इम विरियाइजसहस्रहृण्यके वधाउउउउउउउउउ
 शोम वचनो उरनो समतो मे।

ऊ

ऊ वु [ऊ] प्राइव वणमाया का पठ खर बली (हि १ १ प्राया)।
 ऊ प [ऊ] अन्मनिचिन धनो का धूक धम्मय—१ बूई लिखा, 'ऊ एल्लम'।
 २ शोम प्रमुन बाप के लिटीउ धनो की धाटीया से जो वरउला 'ऊ कि मए मीएध'। ३ विमय धाउधन 'ऊ वइ बुणिया धरय'। ४ धूकता 'ऊ वेण ए विण्णम' (हे २ १६६ पट्ट)।
 ऊअट्ट वि [अपट्ट] इजि से गट (वाप)।
 ऊआ बी [ऊ] इया वु (हे १ ११६)।
 ऊआस वु [उपवाम] मोनमधार (हे १ १०१)।
 उगिय वि [ऊ] वरइव (वर)।
 उआमअ डेयो ववाम्माय (हे १ १०१ प्राया)।
 उइ डेयो वुइ (मि १२ ७ वा ३८१)।
 उउ वि [उउ] वन विमा हृय धाएय विमा हृया 'ऊअन वनुगुगालिनेनु नुन रिनेनु' (वडा)।
 उउ वि [उउ] वरिणीन विवटीन (वरिठ ११६)।

ऊआ बी [ऊआ] विवाहिता बी (वाप)।
 ऊहिअय वि [वे] १ माव वान्ममिठ।
 २ म धाण्णल प्रावरण (वाप)।
 ऊय वि [ऊन] धूर, धीन (वडम ११ ११९)।
 बीमइम वि [विवाहितम] ऊमि-सरो (वडम १६, ८)।
 ऊय न [ऊय] अण करना (गाह)।
 ऊयविअ वि [वे] धान्मिअ हविठ (हे १ १४१ पट्ट)।
 ऊमिया बी [पुमिया] इमिया' उमो टीए वेव ऊमिय मीऊए मीइम वट्टया विपयी वान्मज' (वडा)।
 ऊमिय वि [ऊमिय] वम विमा हृया (म १)।
 ऊमिय वु [ऊमिक] वेवम-विरोध (वल्मया पट्ट ११)।
 ऊयायविआ बी [ऊनोइरिया] वन पादार वग्या वान्मिअ (वड २२, ७ न २)।
 ऊनायीम [बी न [ऊनोवल्मविआन] ऊयाय' वनम्या १६ (गुम २ १ वन २९ डीउ ११४)।

ऊमियन न [वे] मीउलक धुमन (वर्न २)।
 ऊमिमिय वि [वे] मोमिअ विठने लल के बाव उरीर पोंछा हो वह (स ७३)।
 ऊमिचिअ न [वे] शौली पारनों में धापाव करना (हे १ १४२)।
 ऊर वु [वे] १ धाम वीज। २ लंन उगुह (हे १ १४१)।
 ऊर डेयो लू (मि ८ १६)।
 ऊर डेयो पूर (मि ८ १९)।
 ऊरया वु [ऊरया] वेन वेड (यवा मिठे)।
 ऊरपी बी [वे] वेन वेड (हे १ १४)।
 ऊरपीअ वि [पीरियिक] मेरी वधनेसाल (वागु १४४)।
 ऊरय वि [पूरक] वृति वान्मया (वरि)।
 ऊरस वि [औरस] धुन-विरोध लव-धुन (म १)।
 ऊरिसिकमि वि [वे] वड टीवा हृया (वर)।
 ऊरी य [ऊरी] १ वीरवार। २ रिउउर।
 वय वि [वम] वीरवार वीरव (म ३२८ टी)।
 उर वु [ऊर] वडा वीज (गया १ १)।

[नवत] ११ नो (पदम ११ ३) ।
 अस्मिन् वि [नवरा] ग्याह्वी (विना १
 १ जग मुर ११ २३) । एह वि न
 [नवरा] ग्याह्व, वर वीर एक (पद) ।
 सीह की [नवति] संख्यानिष्ठ, एकासी
 (सम ८०) । सीहविह वि [नवतिपिय]
 एकासी वर का (एण १ १०) । सीय वि
 [नवति] एकासी नो ८२ नो (पदम ८१
 ११) । ओरसय वि [नवरासतम] एक
 वी एक नो १ १ नो (पदम १ १ ७१) ।
 ओयर पु [नवर] सरोवर मार, मगा मार
 (पदम १ १ ७१ १८) । ओय की
 [नवर] सगी बहिन (पदम ८ १ १) ।
 एक वि [एकक] घरेता (हिका ३१) ।
 एक वि [वे] स्नेह-नर, प्रेम-तपनर (वे १
 १४४) ।
 एक (मा) वि [एककिम्] एकावी
 घरेता (मरि) ।
 एकन न [वे] कनन, मुगलिन कष्ट भियेय
 (वे १ १४४) ।
 एकनत पु [एकान्त] १ सन्या। २ तरव
 प्रेम। ३ जल, बरस। ४ प्रसाधारणता
 विशेष (वे ४ २१) । ५ निर्जन निराला (मा
 १ २) । देवो एगित ।
 एककक वि [एकेक] हर एक प्रमेक
 (गाठ) ।
 एकककक [वे] देवो एकककक (वे १
 ३३) ।
 एककसिस्त न [एकसिकय] उरो-विरोय
 (पद २०१) ।
 एककग देवो एग-ग = एकक (दुम ७३) ।
 एककगपिष्ठ पु [वे] देव, पति का छोटा
 भा (वे १ १४४) ।
 एककग पु [वे] कक कमा कहेतागा (वे
 १ १४४) ।
 एकमुह वि [वे] १ बर्न-सिध विवर्ता। २
 बरिच निर्जन। ३ मिय हट (वे १ १४८) ।
 एककक वि [एकेक] प्रमेक हर एक
 (वे १ १ वर दुगा) ।
 एकक वि [वे] प्रस कलकन (पद) ।
 एककपुडिंगा न [वे] विप-नीलपु-टि, मय
 विपुलावी बरिय (वे १ १४०) ।

एकसरिअ व [व] १ सीम तुल्य। २
 संघटि, धाकक (हे २ २११ वर) ।
 एकसरिमा व [वे] शोध, जवारी (प्राक
 ८१) ।
 एकसाहि वि [वे] एक स्थान में रहने-
 वाला (वे १ १४१) ।
 एकसिअ की की [वे] शास्त्रो-मुपों स वृत्त
 कलावी (वे १ १४१) ।
 एकसंस देवो एग सेस (मनु १४०) ।
 एकह देवो एग (प्राह ३१) ।
 एकदर देवो एकदर (कम्म १ १३) ।
 एकदर पु [अपर-अर] लोहार (हे १ १११
 कुमा) ।
 एकी की [एका] एक (की) (मिह १) ।
 एककृण देवो अउण (मि ४४३) ।
 एककम वि [वे] परलप, धर्मोप्य (वे १
 १४४) । 'गुह्य एककम घरेकम' (पदम
 १८ १३) ।
 एकके } देवो एग (प्राह ३३) ।
 एककेस }
 एग स [एक] १ एक प्रथम-सम्या (मनु) ।
 २ एकावी घरेता (दा ४ १) । ३ धर्मोप्य
 (दुमा) । ४ प्रहय वि-महाय (विना १
 २) । ५ मय, दुमय 'एगमेव बरिठि मोसा'
 (पण १ २) । ६ समान सहाय दुम्य
 (उवा) । ७ देवो एग 'मयेवमयण'
 मयेवमयण एग पतिप्रीम ईई कलता' (सम
 २: ४०: ४) । ८ य वि [क] घरेता
 एकावी (मा) । ओ व [वस] एक
 तरक (कम) । कलरिय वि [कलरि] एक
 घराताला (नाम) (मनु) । लकी
 की [लक] एक लकवाला (कुत वीर)
 (वीर १) । लुर वि [लुर] एक लुराला
 (वी वीर पु) (पण १) । ९ य वि
 [क] एकावी घरेता (मा १४) । ग
 वि [ग] लकी तरक (गुर १ १) ।
 बकसु वि [बकसु] एक बकवाला
 एका वला (पण २ २) । बकाल वि
 [बकालि] एकवालीमो (कम्म ४१
 ७३) । बर वि [बर] एकावी विहले-
 वाला (यावा) । बरिया की [बरी] एक
 एकावी विहला (यावा) । बारि वि

[बारि] बरि-विहारी (मम १ १३) ।
 बह पु [बह] विधार बर का एक
 एग (पदम ५ ४२) । बहस वि
 [बहस] १ पूर्ण प्रदुषणमा घकएक
 'एकपण सगाग' मुनिज्जु बहस' (पण २
 ४) । २ मरिठोय (काय १८३) । जह
 वि [जटि] महाह विरोय (दा २ ३) ।
 आय वि [आत] घरेता निस्तराय
 'कगविमसु व एगए' (पण २ २) ।
 ठ वि [थ] इच्छा एकवि (मग १४
 १ उप १ ४१) । ठ वि [थ] एक
 घरेता पर्याय-क (घो १ मा) । ठ
 व [ठ] एक स्थान में मिलिया मनेवि
 एगट (पदम ४० ४४) । ठिय वि
 [ठिय] एक ही घरेताला समामार्क
 पर्याय-क (ठा १) । 'ठिय वि [ठिय] एक
 विरके यम में एक ही बीज होता है ऐसा
 मय बरिय का वर (पण २) । यासा की
 [नासा] एक विपुलावी देवो-विरोय
 (याव १) । य व [य] एक ही स्थान
 में 'एगते ठियो (स ४०) । १ य देवो
 ठ (मम १ ३: निह १) । नाम देवो
 यासा (ठा ८) । पय व [पये] एक
 ही वाव मुगल (मि १०१) । पकय वि
 [पक] १ मसहय (पद) । २ एकविह
 घरेक (म १ १२) । पसास कीन
 [पसासा] एकाव, पसास वीर एक ।
 पसासम वि [पसासासम] एकावनी
 ३१ नो (पदम ३१ २८) । पाहम वि
 [पाहिक] एक वरि अँवा एकावाला
 (पाताला में) (क) । पासग वि
 [पायिक] एक ही पार में की मुनि स
 समक एकावाला (पाताला में) (पण
 २, २) । पासिय वि [पायिक] देवा
 पुणेक घरे (क) । मय न [मय] क-
 विरोय एकस (पंवा १२) । मय वि
 [मय] १ एगमुग मिला हुमा (ठा १) ।
 २ समान (दा १) । मय वि [मय] एक
 एकाविह उरणी (गुर २, २११) ।
 'मग वि [मय] प्रमेक हर एक (मम
 १०) । य वि [क] एकावी, घरेता
 (स २) । य वि [ग] घरेता बनेता
 (उत १) । यर वि [ठर] रा में घे की

श्री एक (पृ०) । या घ [वा] एक समर
में (प्रत्यय न २४) । राइम वि [रायिक]
एक-रायिक-समरणी एक राय में होनेवाला
(सम २१ सुर ६ १) । राय न [राय]
एक राय (ठा ३, २) । ठ वि [एक]
एकली घनेता (अ ७; सुर ४ ३४) ।
"विह वि [विह] एक प्रकार का (न १) ।
"विहारि वि [विहारि] एकल-विहारि
समेता विचरनेवाला (इह १) । बीसइम
वि [बिरावितम] एकलीवर्ती (पञ्च २१
८१) । बीसा श्री [बिराठि] एलीव
(पि ४४२) । सट्टि वि [पट्ट] एकछत्ता
११ ना (पञ्च ११ ७३) । सट्टि श्री
[पट्टि] एकछत्ता (सम ७३) । सत्तर वि
[सत्तर] एकछत्ता ७१ ना (पञ्च १
७) । सामइय वि [सामयिक] एक
समय में होनेवाला (भा २४ १) । सरिया
श्री [सरिया] एकवर्ती हार-विशेष (न
१) । साखिय वि [साखिक] एक नक
वाला एकवर्तीमनुष्यपर्यंत कर (नय
छाया १) । सिरिं घ [वा] एक
समय में (पृ०) । सेछ पु [शेख]
पर्यंत-विशेष (अ २, १) । सेछकूड पुं
[शेखकूट] एकवर्ती पर्यंत का पिछा-विशेष
(न ४) । मेम पु [शेय] व्याकरण-
प्रसिद्ध सवास-विशेष (पञ्च १) । हा घ
[वा] एक प्रकार का (अ १) । हुत घ
[सहज] एक बार (प्राना) । विध
वि [विध] घनेता (फुल मोह २ य) ।
इस वि न [इस] खाद्य ।
इसुसरसघ वि [इसुसरसघ] एक
ही व्याख्या १११ ना (पञ्च १११
२४) । मोम पु [भाग] एक-वक्ता
(पि १) । मोस वि [मोस] १ श्लु-
कणा वा एक दोष बल की प्रत्यय में प्रस
वर होती दोषकी ही हाव से बनीत कर
छत्ता (घोष २१७) । भय वि [भय]
एक संबन्ध (नय) । इस केो इस
(पि ४१३) । इसी श्री [इसी] विधि-
विशेष एकावर्ती (नय पञ्च ७१ ३४) ।
इज्ज श्री [इज्ज] एकवर्ती
(पि ११६) । इति, श्री श्री [इति]

श्री) विधि प्रकार की शक्तियों से प्रसिद्ध हार
(नय) । इसप्रकारविधि न [इति] विधि-
मिति मातृ-विशेष (नय) । "वाइ पु
[वाइ] एक ही वाता वायु पदार्थ
को माननेवाला स्थान, वाता-स्थान (ठा
८) । वीस श्री [विशति] संख्या
विशेष एकवर्ती (पञ्च २ ७२) । इस
न [इति] इसमें जल-विशेष एकवर्ती
(न २) । इ पुं [इ] एक दिन
(माषा २ १ १) । इह वि [इह] एक ही
प्रकार से नष्ट हो जानेवाला (मय ७
२) । इह वि [इह] १ एक दिन
का स्थान । २ पुं जल-विशेष एकवर्ती
पर (मय १ ७) । इहिय वि [इहिय] एक
से ज्ञाता (पृ०) । येो पञ्च एक बीर पञ्च ।

प्रांत येो प्रांत (अ ३ सुर १ १ दोष
३३; पृ० ३: १) । विट्टि श्री [विट्टि]
१ कैटर वर्तन । २ वि कैटर वर्तन को
माननेवाला (सुम २, १) । ३ श्री विट्टि
समस्त विरक्त सत्य-व्यथा (सुम १ १३) ।
वुसमा श्री [वुसमा] घर्षणशील-काल
वा छत्ता बीर कर्षणशील-काल का पञ्च
भारा काल विशेष (सुम १ १) । पंडिय
पु [पण्डित] धातु संघट (मय) । बाळ
पु [बाळ] १ कैटर वर्तन को माननेवाला ।
२ संस्पर्श-बीर (मय) । बाइ वि [बाइ]
कैटर वर्तन का घर्षणशील (पञ्च) । बाय
पु [बाय] कैटर वर्तन (सुम १३८) ।
सुसमा श्री [सुसमा] काल-विशेष
घर्षणशील काल वा प्रथम बीर कर्षणशील
काल का छत्ता प्रांत (पृ०) ।

परायि वि [परायिक] १ अक्षरार्थ-दो
(मय) । २ द्वितीय 'परायि' कर्मावधि
घोष (अ ३१२) । ३ कैटर वर्तन (सम
१३) ।

परायि न [परायिक] विम्वार का एक
मेर - वस्तु की सर्वथा वणिक भावि एक ही
रुटि से वेगव (संवीच ३२) ।

परायि केो पमा-सट्टि (वेगव १३६; सुम
१२) ।
परायि श्री [पे] नीला बहान (छाया १
१६) ।

परायि न [परायिक] एक प्रकार का छ
(पञ्च २०१) ।

परायि वि [परायिक] एक द्वितीयवाला,
नैवत एतद्वितीयवाला (वीच) (ठा ७) ।

परायि वि [परायिक] विना हुआ एकवर्ती-
प्रांत (सुमा ८१) ।

परायि केो अठम । अठम वि [अठम]
रिहा छत्तालीसवा (पञ्च ११ ११४) ।

अठम श्री [अठम] छत्तालीस
(सम ११) । अठम श्रीम वि [अठम]
रिहाछत्ता छत्तालीसवा (सम १) । जइ
श्री [नवति] नवासी (पि ४४४) । वीच
श्री [विशति] एकवर्ती २३ । वीसइम
वि [विशति] छत्तालीसवा २६ ना (पञ्च
११ ४६) । नइ येो जइ (सम २४) ।

नउय वि [नवति] नवासी (पञ्च ६
३४) । पञ्च पञ्चास श्री [पञ्चास]
छत्तास (सम ७; मय) । पञ्चास वि
[पञ्चास] छत्तासवा (पञ्च ४६, ४) ।
पञ्चासइम वि [पञ्चास] छत्तास-
वा (सम २६) । बीस श्री [विशति]
छत्तास (सम ११ पि ४४४ छाया १
१६) । बीस श्री [विशति] छत्तास (सम
७१) । बीसइम बीसइम बीसम वि
[विशति] छत्तालीसवा (छाया १ १
पञ्च १६, ४६ पि ४४६) । सट्टि वि
[पट्ट] छत्तालीसवा २६ ना (पञ्च ३६ ८१) ।
सत्तर वि [सत्तर] छत्तालीसवा (पञ्च
१६, १) । इसी इसी श्री [इसी]
छत्तालीस (सम ८७ पि ४४४ ४४६) । इसी
वि [इसी] छत्तालीसवा ७२ ना (पञ्च
६, ३४) । येो अठम ।

परायि पु [परायिक] १ इह नाम का एक
छत्तालीस । २ वि छत्तालीस (अ ४ २) ।
परा (स) येो परा (पि) ।

पञ्च पु [पञ्च] वायु, पञ्च (माषा) ।
एकवर्ती श्री [एकवर्ती] कर्म करनेवाला (सुम
११६) ।

एक केो एय = एह । नइ, एकमात्र
(पञ्च ३८) ।

एकवर्ती केो एय = एह । नइ, एकमात्र
(पञ्च ३८) ।
एज्ज न [आयन] आयन (न १) ।

पञ्चमाण रेवो प = धा + ऋ ।

पञ्च मङ्ग [एङ्] ध्याना व्याप करण ।
एङ्ग (मङ्ग) । कण्ठ्यः पञ्चिजमान (एत्या
१ १६) । संज्ञ पञ्चिजा (मा) । इ
एङ्गेयक्य (एत्या १ ६) ।

पञ्च मङ्ग [एङ्ग्य] इत्याङ्ग कुर करण ।
एङ्ग, एङ्ग एङ्गेजा (पय १८) ।

पञ्चक पुं [पञ्चक] मेघ मङ्ग (उप २ १४) ।
पञ्चया श्री [पञ्च] मङ्गी (वज १) ।

पण पुं [पण] इत्यण मृग हरिण (कण्ठ्य) ।
णाहि श्री [नामि] कण्ठ्य (कण्ठ्य) ।

पणक पुं [पणाङ्ग] नाम कण्ठ्य (कण्ठ्य) ।
पणिज्ज नि [पणाय] हरिण-संज्ञा श्री हरिण
का (मांस कर्णक) (पञ्च) ।

पणिज्जय पुं [पणेयक] स्वनाम-क्यात एक
पना जितने मत्तान् मत्तानी के पाम कीना
भी की (उप ८) ।

पजिस पुं [पजिस] कुत्र-विशेष (उप १ ११
टी) ।

पजी श्री [पजी] हरिणी (वाम परङ्ग १ ४) ।
यार पुं [यार] हरिणी की कण्ठ्यनामा,
जना मोग्य कण्ठ्यनामा (पण्ड १ १) ।

पणुनामिज पुं [पु] मेघ मङ्ग (१ १ १००) ।
पणेज्ज रेवो पणिज्ज (विवा १ ८) ।

पण्ड पुं [पण्डानीम्] पञ्चुना संज्ञति
पण्ड (महा ६ २ १४४) ।

पताप रेवो पञ्चिज = पञ्चान्व, 'पञ्चान्व' नर
लोचन (जीवज १ ८०) ।

पतज नि [पतज पञ्चान्व] 'पञ्चान्व' (पति
१६ स्वज ४) ।

पतज रेवो इ = इ ।
पतहि (पत) य [पतज] पञ्चान्व (कुमा) ।

पतहि रेवो इच्छा (हे २ १ १०० कुमा) ।
पञ्चिज } नि [पञ्चय पञ्चान्व] इत्या
पञ्चिज } (हे २ १२०) । मत्त मत्त
नि [मात्र] इत्या (हे १ ८१) ।

पञ्चिज (ही) रेवो पञ्चिज = एतावत् (महा
२३) ।

पञ्चुज (मप) ऊपर रेवो (हे ४ ४ कुमा) ।
पञ्चुय य [पु] पञ्चुना इत्यमय (पञ्च ८) ।

पञ्चो रेवो इच्छा (महा) ।

पञ्चो रेवो इच्छा (महा) ।

पञ्चो रेवो इच्छा (महा) ।

पञ्चो रेवो इच्छा (महा) ।

पञ्चो रेवो इच्छा (महा) ।

पञ्चोय य [पु] यहाँ से लेकर (हे १ १००) ।
पञ्चय य [पञ्च] यहाँ यहाँ पर (उप १ १००)
पञ्च १ १) ।

पञ्चो रेवो इच्छा (उप १ ११ टी) ।
पञ्चु (मप) रेवो पञ्च (कुमा) ।

पञ्चपञ्च न [पञ्चपञ्च] तालय मापाने (उप
८१२ टी) ।

पञ्चिज्जिज (ही) नि [पञ्चिज्जिज] इति
ज्ञात-संज्ञा (प्राय) ।

पञ्च रेवो पञ्चिज (हे २ १२० कुमा)
कण्ठ ७७) ।

पम (पम) य [पम] इत्यण एता (पम
पम) ।

पमइ (पम) य [पममय] इती तव्हा ऐता
ही (पम कणा १) ।

पमाइ } नि [पममाइ] इत्यादि नमैय
पमाइय } (मुर ८ २६ उप) ।

पमान नि [पु] प्रवेश करण कुमा (१ १
४४) ।

पमिणिमा श्री [पु] नह श्री जितने शरीर
को, किसी को क विनाज के मनुष्य, पुत्र के
जाने से माय कर उस जाने को ऊँच दिया
बाता है (१ १२३) ।

पमय } य [पमय] इती तव्हा, इती
पमय } प्रकार 'ता मण' नि कण्ठ्यनामा
पमय ए नमोपे 'ताइ' (कण्ठ २६ ह १
२०१) ।

पमय (पम) य [पम] इत्यण, इत्य
प्रकार (हे ४ ४१८) ।

पमइ (मप) य [पममय] इती तव्हा, इत्य
प्रकार (हे ४ ४२२) ।

पमहि (मप) य [पमानीम्] इत्यण
पमहि (हे ४ ४२२) ।

पम य [पम] १ कान्ता हितना । २
कान्ता । पञ्च (कण्ठ्य) । नह पञ्च (उप ७) ।
मयो, कण्ठ्य पञ्चमाण (पञ्च) ।

पम पुं [पम] इति कण्ठ्य (मप २२ ४) ।
पञ्च रेवो पञ्चन (पम १५ २०) ।

पमय न [पमय] नम पित्तन, 'निरेय्यो
पमय' (पम ४) ।

पमया श्री [पमया] १ कण्ठ्य । २ इति
कण्ठ्य (पम २, २ मप १० १) ।

पमया श्री [पमया] १ कण्ठ्य । २ इति
कण्ठ्य (पम २, २ मप १० १) ।

पमया श्री [पमया] १ कण्ठ्य । २ इति
कण्ठ्य (पम २, २ मप १० १) ।

पमया श्री [पमया] १ कण्ठ्य । २ इति
कण्ठ्य (पम २, २ मप १० १) ।

पमया श्री [पमया] १ कण्ठ्य । २ इति
कण्ठ्य (पम २, २ मप १० १) ।

पमया श्री [पमया] १ कण्ठ्य । २ इति
कण्ठ्य (पम २, २ मप १० १) ।

पमया श्री [पमया] १ कण्ठ्य । २ इति
कण्ठ्य (पम २, २ मप १० १) ।

पमया श्री [पमया] १ कण्ठ्य । २ इति
कण्ठ्य (पम २, २ मप १० १) ।

पमया श्री [पमया] १ कण्ठ्य । २ इति
कण्ठ्य (पम २, २ मप १० १) ।

पमया श्री [पमया] १ कण्ठ्य । २ इति
कण्ठ्य (पम २, २ मप १० १) ।

पमया श्री [पमया] १ कण्ठ्य । २ इति
कण्ठ्य (पम २, २ मप १० १) ।

पमया श्री [पमया] १ कण्ठ्य । २ इति
कण्ठ्य (पम २, २ मप १० १) ।

पमया श्री [पमया] १ कण्ठ्य । २ इति
कण्ठ्य (पम २, २ मप १० १) ।

पमया श्री [पमया] १ कण्ठ्य । २ इति
कण्ठ्य (पम २, २ मप १० १) ।

पमया श्री [पमया] १ कण्ठ्य । २ इति
कण्ठ्य (पम २, २ मप १० १) ।

पमया श्री [पमया] १ कण्ठ्य । २ इति
कण्ठ्य (पम २, २ मप १० १) ।

पमया श्री [पमया] १ कण्ठ्य । २ इति
कण्ठ्य (पम २, २ मप १० १) ।

पमया श्री [पमया] १ कण्ठ्य । २ इति
कण्ठ्य (पम २, २ मप १० १) ।

पमया श्री [पमया] १ कण्ठ्य । २ इति
कण्ठ्य (पम २, २ मप १० १) ।

पमया श्री [पमया] १ कण्ठ्य । २ इति
कण्ठ्य (पम २, २ मप १० १) ।

पमया श्री [पमया] १ कण्ठ्य । २ इति
कण्ठ्य (पम २, २ मप १० १) ।

पमया श्री [पमया] १ कण्ठ्य । २ इति
कण्ठ्य (पम २, २ मप १० १) ।

पमया श्री [पमया] १ कण्ठ्य । २ इति
कण्ठ्य (पम २, २ मप १० १) ।

पमया श्री [पमया] १ कण्ठ्य । २ इति
कण्ठ्य (पम २, २ मप १० १) ।

पमया श्री [पमया] १ कण्ठ्य । २ इति
कण्ठ्य (पम २, २ मप १० १) ।

पमया श्री [पमया] १ कण्ठ्य । २ इति
कण्ठ्य (पम २, २ मप १० १) ।

पमया श्री [पमया] १ कण्ठ्य । २ इति
कण्ठ्य (पम २, २ मप १० १) ।

पमया श्री [पमया] १ कण्ठ्य । २ इति
कण्ठ्य (पम २, २ मप १० १) ।

पमया श्री [पमया] १ कण्ठ्य । २ इति
कण्ठ्य (पम २, २ मप १० १) ।

पमया श्री [पमया] १ कण्ठ्य । २ इति
कण्ठ्य (पम २, २ मप १० १) ।

एक बि [हे] कुन लियु (हे १ १४४)।
 एक } पुं [एक, एक] १ मूर्ध्नी की एक
 पञ्च } कति (विधा १ ४)। २ वेग मेक
 (मृग २ २)। मूत्र मूत्रा बि [मूत्र]
 १ मूत्र वेक की वरु कम्पल मोलनेवासा
 'मसपलमृगममृगप्रतिवकणवेगवे रोसा'
 (पा १२ ख १; पात्र ४ लिख ११)।

एकपञ्च न [एकपञ्च] एकाग्र-क्याल नगर
 कियो (ज २११ टी)।

एकप केओ एक (उवा १ वि २४)।

एकविड बि [हे] १ कताम धनी। २ पुं

कुन, बैन (हे १ १४ पङ्)।

एक की [एक] १ इनाम की वेद (सि ७

१२)। २ इनाम की-कन (गुर ११ ११)।

रस पुं [रस] न्नामकी का रस (पण्ड

२ १)।

एकालुप पुन [एकालुप] धानू की एक

कति कन-कियो (पुन १)।

एकपञ्च न [एकपञ्च] साएण्य मोन का

एक साका-मोच (अ ७)।

एकपञ्च बि [एकपञ्च] एकाग्र-मोन का

(एकि ४६)।

एकपञ्च की [एकपञ्च] पन की हीउरी

राठ (बैर १ १४)।

एकिकल बि [इकल] ऐमा (अ ७ २२)।

एकिय पुं [एकिय] धाम्य-कियो (पण्ड १)।

एकिया की [एकिया एकिय] १ एक बाज

की मृष्टी। २ मैनिया (हे १ १२)।

एकिस केओ एरिस (मृग १ १ १)।

एक पुं [एक] इय-कियो (अ १ ११ टी)।

एक पुं [एक] बैलूरी डार के मीके

एकपु १ की मरदी (जीन १ पात्रा २)।

एक बि [ए] अरु शिरन (हे १ १७४)।

एक य [एक] इन धनी का मुक-धम्म—१

एकचारु लियव (अ १ १ प्रानु ११)। २

सादर नुप्यण। ३ नाद-मिनेम। ४ लिख।

५ बरिय। ६ पन्न चौड़ा (हे २ ११७)।

एक केओ एर्य (हे १ २६ पउम १२, २४)।

एक बि [इयन् एतायन्] इना।

मुता य [इयन्] इनोबार (क्या)।

एकइय बि [इयत् एतायत्] इना (क्या)
 किये ४४४)।

एक य [एयम्] इन वरु, इस रीति से

इय प्रकार (मृग १ १ हे १ २६)। मूत्र

पुं [मूत्र] १ मृग-कति के मृगार उच किया

से कतिपु मर की ही उच नम धमिय

मातेबासा पन (अ ७)। २ बि इय वरु

ना एय-प्रकार (अ ७७३)। वेप 'विह

बि [विध] इस प्रकार ना (हे ४ १२१

नाम)।

एकहास पुं [एकहास] इन्हास (पउ

न २)।

एकह (पय) बि [इयम्] इना (हे ४

४ ४ मुग, मधि)।

एकमाइ केओ एमाइ (पण्ड १ १)।

एकमय } केओ एमेय (हे १ २७१ उवा)।

एकामय } एकाय } केओ एमेय (हे १ २७१ उवा)।

एक केओ एय (पण्ड १ २७१ उवा)।

एक केओ एय = एय (मि ११ उवा ४)।

एकहि (य) य [इनामीम्] इस समय

मुना (पङ्)।

एकहार पुं [इहार] नकरी (कुमा)।

एक सक् [इप्] १ इच्छ करना। २

कोनना। ३ प्रकटित करना। एकर (सि ७

४२)।

एक सक् [आ + इप्] करना, 'उगहा

त्रिण्यमदिना' (उत १ ७; गुह १ ७)।

एक सक् [आ + इप्] १ कोनना मुन

मिना की मोच करना। २ निर्दोष मिना का

बहुल करना। एकि (पात्रा २ १ २)।

बहु. एसमाय (पात्रा २, ३, १)। ईह

एकिंसा एकिंसा (ज १ पात्रा)। हेह

एकिंसाय (पात्रा २, ७ १)।

एक बि [एयम्] १ मापी पवार, होनेबली

बानु (पात्र ३)। २ पुं धियन बार (ममि

१) 'अपयं सारं बर कइ कीउर, किइ न

एकमि' (मि ४२२)।

एक केओ कुंसा 'अय की उ इतर बलो

पतिबेदी अउकलमि' (ना ४)।

एक बि [एयम्] अनेपक नैवक (पात्रा)।
 एमअन न [एयम्] अनेपक नैवक (पात्रा)।
 एमअन न [एयम्] अनेपक नैवक (पात्रा)।

एमअन न [एयम्] अनेपक नैवक (पात्रा)।

एमअन न [एयम्] अनेपक नैवक (पात्रा)।

एमअन न [एयम्] अनेपक नैवक (पात्रा)।

एमअन न [एयम्] अनेपक नैवक (पात्रा)।

एमअन न [एयम्] अनेपक नैवक (पात्रा)।

एमअन न [एयम्] अनेपक नैवक (पात्रा)।

एमअन न [एयम्] अनेपक नैवक (पात्रा)।

एमअन न [एयम्] अनेपक नैवक (पात्रा)।

एमअन न [एयम्] अनेपक नैवक (पात्रा)।

एमअन न [एयम्] अनेपक नैवक (पात्रा)।

एमअन न [एयम्] अनेपक नैवक (पात्रा)।

एमअन न [एयम्] अनेपक नैवक (पात्रा)।

एमअन न [एयम्] अनेपक नैवक (पात्रा)।

एमअन न [एयम्] अनेपक नैवक (पात्रा)।

एमअन न [एयम्] अनेपक नैवक (पात्रा)।

एमअन न [एयम्] अनेपक नैवक (पात्रा)।

एमअन न [एयम्] अनेपक नैवक (पात्रा)।

एमअन न [एयम्] अनेपक नैवक (पात्रा)।

एमअन न [एयम्] अनेपक नैवक (पात्रा)।

एमअन न [एयम्] अनेपक नैवक (पात्रा)।

एमअन न [एयम्] अनेपक नैवक (पात्रा)।

एमअन न [एयम्] अनेपक नैवक (पात्रा)।

एमअन न [एयम्] अनेपक नैवक (पात्रा)।

एमअन न [एयम्] अनेपक नैवक (पात्रा)।

एमअन न [एयम्] अनेपक नैवक (पात्रा)।

एमअन न [एयम्] अनेपक नैवक (पात्रा)।

एमअन न [एयम्] अनेपक नैवक (पात्रा)।

एमअन न [एयम्] अनेपक नैवक (पात्रा)।

एमअन न [एयम्] अनेपक नैवक (पात्रा)।

एमअन न [एयम्] अनेपक नैवक (पात्रा)।

एमअन न [एयम्] अनेपक नैवक (पात्रा)।

एमअन न [एयम्] अनेपक नैवक (पात्रा)।

एमअन न [एयम्] अनेपक नैवक (पात्रा)।

एमअन न [एयम्] अनेपक नैवक (पात्रा)।

एमअन न [एयम्] अनेपक नैवक (पात्रा)।

एमअन न [एयम्] अनेपक नैवक (पात्रा)।

एमअन न [एयम्] अनेपक नैवक (पात्रा)।

एमअन न [एयम्] अनेपक नैवक (पात्रा)।

एमअन न [एयम्] अनेपक नैवक (पात्रा)।

एमअन न [एयम्] अनेपक नैवक (पात्रा)।

ऐ

दे म [अवि] इन मर्षी का सुचक सम्म्य—
१ संमयना। २ मासकण संवीजन। ३

प्रत। ४ धनुष्य, प्रीति। ५ अनुमत्त 'दे
बीहिमि ऐ सम्मतिर' (हे १ १६६)।

॥ इय सिरियाइअसइमहण्यो येमापारसईसंमणो
मट्टमो ठरैयो समतो ॥

ओ

ओ दु [ओ] स्वर कर्ण-विरोध (हे १ १
प्राप्ता)।

ओ ऐमो अथ = धन (हे १ १०२, प्राप्ता
कुमा; प४)।

आ ऐमो अथ (हे १ १०२ प्राप्ता कुमा
प४)।

ओ ऐमो ठव (हे १ १०२, कुमा)।

ओ ऐमो ठव = धन (हे १ १०१; कुमा)।

आ म [ओ] इन मर्षी का सुचक सम्म्य—
१ मिलन। २ प्रकीर्ण विसम (प्राप्ता ७८)।

ओ म [ओ] इन मर्षी का सुचक सम्म्य—
१ सुचक 'मी मविणमठितिले'। २ पत्ता

चाप मनुवाच 'धो न मय द्यामा इतिमाय'
(हे २, २ ३ प४ कुमा प्राप्ता)। ३

संयोग, मासकण (माट—वैद ३३)।
४ पावर्तित में मनुवाच किया जाता सम्म्य
(पत्ता १ विदे २ २४)।

ओम म [वे] कर्ता क्या कहाती (हे १
१४६)।

ओमअ वि [अपगत] मल्ल 'मोममायन—
(वि १६३)।

ओमअ म [वे] मजित मर्षा (हे १ १३४)।

ओमअ चक [आ + चि] १ कलाकार से
धीन होता। २ माटा करता। ओमअ (हे ४
१२३ प४)।

ओमअया ओ [आपछहना] १ माटा। २
कलाकारी कीना (कुमा)।

ओमअक लक [हट] देवता। ओमअक
(हे ४ १८१; प४)।

ओमअक चक [चि + आप] व्यास करना।
ओमअक (हे ४ १४१)।

ओमअगल वि [व्यास] विलुप्त पैसा
हुमा (कुमा)।

ओमअगल वि [वे] १ ममिगुल परिगुल।
२ न पैरा कपड़े को एकत्रित करना (हे १
१०२)।

ओमअमि म [वि [वे] मट मुमा हुमा
ओमअमि } (हे १ १६२, प४)।

ओमअण वि [अयनत] नमा हुमा, नीचे की
तरफ मुका हुमा (हे १ ११८)।

ओमअ वि [अपवृत्त] घौंसा किया हुमा,
छटा किया हुमा मोमते कुमुदे बलतक-

कलियावि कि ठार ? (गा १३४)।

ओमअम वि [अपवृत्तित्त] १ मयमर्तन-
योग। २ व्याले योग ओमने लामका
'मुमुममि न पवत्ताय मयमोमत्तममि'
(हे ३ ४८)।

ओमअम वि [वे] ममिगुल पयगुल
(प४)।

ओमअ लक [अन + द] १ नैन-मइण
करता। २ नीचे उतरना। ओमअ (हे ४
५२)। नइ ओमअत (मो १११ गुर
१४ २१)। हेइ ओमअत (मक)। क

ओमअरिषम्य (गुर १ १११)।

ओमअण न [अपकरण] सावन, सामी (या
१८१)।

ओमअण न [अपकरण] उतरना, नीचे घाना
(प४)।

ओमअण मु [अपकरण] कमरा कोठरी (मुमा
४१२)।

ओमअरि वि [अवतीर्ण] उतर हुमा (प४)।

ओमअरि वि [ओदरिक] डेट-मप के, उतर
मले माच की बिना करलेवता (मो १
११८ मा)।

ओमअरिया ओ [अपपरिण] कोठरी ओय
कमरा (मुमा ४१२)।

ओमअ ऐमो ओमह = धन + धन। ओमअह
(माक ७)।

ओमअ चक [अय + चक] चसन।
मोमअति (वि ११७ ४८८)। नइ आअ
हैत (वि ११७ ४८८)।

ओमअ मु [वे] १ मयमार, मयम मयमएण
महित मयमएण (प४; स ३२१)। २ कम्प

मोपमा (प४ ३ १६२)। ३ लीमो का
बाड़ा। ४ वि पर्यंत प्रसिद्ध। ५ नम्रमान

मटकटा हुमा (हे १ १६२)। ६ नितरी
घोड़े निमीमित होती हैं। नइ 'मुचइमठो-

पञ्जा मयमया शिपममहिरेहि पर्वना' (सि
१ ४१)।

ओमअरि वि [वे] विलम्ब प्रतापित (प४)।

ओमअ लक [सावम] सावना मट में
करना, बीजना 'मयमहि छं मी देमायु

विष्णु । विष्णु महादेव । पञ्चविंशतिस्त
लिङ्गसु । सप्तविंशत्यपि विष्णुस्य सप्तविंशति-
लिङ्गस्य । यः पञ्चविंशतिः (अं ३) । सङ्ग
आभवात् (अं ३) ।

ओअवयव न [साधन] विनय कर करणा
स्वायत्त कला (अं १—पञ्च २५५) ।

ओआश्रय धुं [हे] ? आमाश्रीय गोबन्ध
स्वामी । २ आश्रय आश्रय । ३ श्रुती गरीय
को पञ्चने का कर्त्त । ४ वि सपञ्चत श्रीमा
हुता (हे १ १११) ।

ओआश्रय धुं [हे] धस्त-समय (हे १ ११२) ।
ओआश्रय धुं [अप + आश्रय] आश्रय,
'नृ' धुम्ब्र हलेय ओआश्रयि' (ने ५१) ।

ओआश्रय धुं [अपञ्चर] धानि, हानि कानि
(हुता) ।

ओआश्रय धुं [अवधारण] ? अवधारण (ठा १)
नरक । २ अवधारण, वेदाधार-आधार (पर) ।
३ उपपत्ति यन्म 'धर्मतमलोकारो यन्म
वैश्वदेवोपासीत' (स १११) । ४ प्रवेश
(निरे ४ ४) ।

ओआश्रय धुं [अवधारण] (पर) ।

ओआश्रय धुं [अवधारण] उपाध्याय अवधारण
करता (हे ४ ४) ।

ओआश्रय धुं [अवधारण] उपाध्याय हुता
(हे ११ ११ ज ११० टी) ।

ओआश्रय धुं [हे] शोभा प्रकाश (हे १ १११) ।
ओआश्रय धुं [हे] ? कश्चिन्म नर सोप । २
विदि, मेरी (हे १ ११४) ।

ओआश्रय धुं [हे] बाल्यात दुबहा का धुम्ब्र
तान (हे १ १११) ।

ओआश्रय धुं [अवधारण] (हे १ १०२ हुता
२) 'अवधारण' मुनर । ओआश्रय नर
पञ्चरत्न' (कश्च १ ३) ।

ओआश्रय धुं [अवधारण] (हे १ १०३) प्राण ।
ओआश्रय धुं [अवधारण] विनय
पञ्चरत्न विनय गमा हो नृह (हे १ ४
१) ।

ओआश्रय धुं [आ + मुच] ? ओद देना
आकाश देन देना । २ उपाध्याय नर देना
'ही अविच्छेद नृह ओआश्रय नृह' धुम्ब्र धुम्ब्र
(पञ्च १४ ११) लोचन नृह विनय विनय-
नृह ओआश्रय धुं (आक ३) ।

ओआश्रय धुं [अवधारण] उपाध्याय हुता (पञ्च
गा ११) ।

ओआश्रय धुं [हे] परिभाषा, नर (हे १
ओआश्रय धुं १११) ।

ओआश्रय धुं [हे] आश्रय (हे १ ११०) ।
ओआश्रय धुं [अवधारण] धी के धुम्ब्र पर
का नर धुम्ब्र (मनि ११०) ।

ओआश्रय धुं [हे] धुम्ब्र धुम्ब्र धुम्ब्र हुता
(पर) ।

ओआश्रय धुं [अवधारण] नरकता हुता नरकता
धुम्ब्र आकाश (पञ्च) 'नरकतमलोकारो-
धुम्ब्र' (पञ्च २५१) । ओआश्रय धुं
आ धुम्ब्र [आश्रय] प्रकाश धुम्ब्र नरकता (पर) ।

ओआश्रय धुं [ओआश्रय] 'धुम्ब्र' धुम्ब्र (उप २५
११) ।

ओआश्रय धुं [अवधारण] धुम्ब्र धुम्ब्र करता ।
धुम्ब्र (आक ३४) ।

ओआश्रय धुं [हे] धुम्ब्र (हे ४ १२ टी) ।
ओआश्रय धुं [हे] केत-धुम्ब्र, केत-धुम्ब्र
नरकता (हे १ ११) ।

ओआश्रय धुं [हे] धुम्ब्र (पर) ।

ओआश्रय धुं [आश्रय] नरकता धुम्ब्र
करता । ओआश्रय (हे ४ २२) ।

ओआश्रय धुं [आश्रय] ? हुता । २
नरकता । धुम्ब्र (हे ४ ४१) ।

ओआश्रय धुं [आश्रय] नरकता हुता (हुता) ।
ओआश्रय धुं [आश्रय] ? हुता हुता हुता ।
२ नरकता (हुता) ।

ओआश्रय धुं [अवधारण] धुम्ब्र (धुम्ब्र २, २, ३
१ टी) ।

ओआश्रय धुं [अवधारण] धुम्ब्र (धुम्ब्र १२) ।
ओआश्रय धुं [अवधारण] ? ओआश्रय हुता । २
नरकता धुम्ब्र ओआश्रय (उप ११) ।

ओआश्रय धुं [अवधारण] धुम्ब्र (धुम्ब्र १ ३) ।
ओआश्रय धुं [अवधारण] धुम्ब्र (मन ३) ।

ओआश्रय धुं [अवधारण] धुम्ब्र (मन ३) ।
ओआश्रय धुं [अवधारण] धुम्ब्र (मन ३) ।
ओआश्रय धुं [अवधारण] धुम्ब्र (मन ३) ।

ओआश्रय धुं [अवधारण] धुम्ब्र (मन ३) ।
ओआश्रय धुं [अवधारण] धुम्ब्र (मन ३) ।
ओआश्रय धुं [अवधारण] धुम्ब्र (मन ३) ।

ओआश्रय धुं [अवधारण] धुम्ब्र (मन ३) ।

ओआश्रय धुं [हे] धुम्ब्र (हे १ १११) ।
ओआश्रय धुं [हे] ? नरकता धुम्ब्र (हे १ १११) ।
२ नरकता धुम्ब्र (हे १ १११) ।

ओआश्रय धुं [अवधारण] धुम्ब्र (मन ३) ।
नरकता 'अवधारण धुम्ब्र धुम्ब्र, उव धुम्ब्र धुम्ब्र
परिच्छेदधुम्ब्र' । धुम्ब्र । धुम्ब्र धुम्ब्र धुम्ब्र धुम्ब्र
धुम्ब्र धुम्ब्र (धुम्ब्र ११ ११) ।

ओआश्रय धुं [अवधारण] धुम्ब्र (मन ३) ।
धुम्ब्र । धुम्ब्र ओआश्रय धुम्ब्र (हे १ २१) ।
ओआश्रय धुं [हे] धुम्ब्र (हे १ ११२) ।
ओआश्रय धुं [हे] ओआश्रय धुम्ब्र (धुम्ब्र १ २१
पञ्च १३ २१) ।

ओआश्रय धुं [अवधारण] धुम्ब्र (मन ३) ।
ओआश्रय धुं [हे] धुम्ब्र (हे १ १०५) ।
ओआश्रय धुं [हे] धुम्ब्र (हे १ १०५) ।
ओआश्रय धुं [हे] धुम्ब्र (हे १ १०५) ।

ओआश्रय धुं [हे] धुम्ब्र (हे १ १०५) ।
ओआश्रय धुं [हे] धुम्ब्र (हे १ १०५) ।
ओआश्रय धुं [हे] धुम्ब्र (हे १ १०५) ।
ओआश्रय धुं [हे] धुम्ब्र (हे १ १०५) ।

ओआश्रय धुं [अवधारण] धुम्ब्र (मन ३) ।
ओआश्रय धुं [हे] धुम्ब्र (हे १ १०५) ।
ओआश्रय धुं [हे] धुम्ब्र (हे १ १०५) ।
ओआश्रय धुं [हे] धुम्ब्र (हे १ १०५) ।

ओआश्रय धुं [अवधारण] धुम्ब्र (मन ३) ।
ओआश्रय धुं [हे] धुम्ब्र (हे १ १०५) ।
ओआश्रय धुं [हे] धुम्ब्र (हे १ १०५) ।
ओआश्रय धुं [हे] धुम्ब्र (हे १ १०५) ।

ओआश्रय धुं [अवधारण] धुम्ब्र (मन ३) ।
ओआश्रय धुं [हे] धुम्ब्र (हे १ १०५) ।
ओआश्रय धुं [हे] धुम्ब्र (हे १ १०५) ।
ओआश्रय धुं [हे] धुम्ब्र (हे १ १०५) ।

ओआश्रय धुं [अवधारण] धुम्ब्र (मन ३) ।
ओआश्रय धुं [हे] धुम्ब्र (हे १ १०५) ।
ओआश्रय धुं [हे] धुम्ब्र (हे १ १०५) ।
ओआश्रय धुं [हे] धुम्ब्र (हे १ १०५) ।

ओआश्रय धुं [अवधारण] धुम्ब्र (मन ३) ।
ओआश्रय धुं [हे] धुम्ब्र (हे १ १०५) ।
ओआश्रय धुं [हे] धुम्ब्र (हे १ १०५) ।
ओआश्रय धुं [हे] धुम्ब्र (हे १ १०५) ।

ओआश्रय धुं [अवधारण] धुम्ब्र (मन ३) ।
ओआश्रय धुं [हे] धुम्ब्र (हे १ १०५) ।
ओआश्रय धुं [हे] धुम्ब्र (हे १ १०५) ।
ओआश्रय धुं [हे] धुम्ब्र (हे १ १०५) ।

ओआश्रय धुं [अवधारण] धुम्ब्र (मन ३) ।
ओआश्रय धुं [हे] धुम्ब्र (हे १ १०५) ।
ओआश्रय धुं [हे] धुम्ब्र (हे १ १०५) ।
ओआश्रय धुं [हे] धुम्ब्र (हे १ १०५) ।

ओगाह सक् [अय + गाह्] परमाह्न
करता। ओगाह (पह)। बह ओगा-
ह्न (बाध २)। बह ओगाह्नुत्ता,
ओगाह्नुत्ता (सम १, मम १ ४)।

ओगाह्य न [अवगाहन] वस्यह्न (मय)।
ओगाह्या श्री [अपगाहना] १ धारक पुत्र
धारकश्रेष्ठ (स १)। २ शरीर (मम १
८)। ३ शरीर परिमाण (स ४ १)। ४
वसन्नाह वसतिवति (विय)। वाम न
[नामन्] बर्धनविशेष (मम १ ८)।
वाम पुं [नाम] वसवाहनामक परिणाम
(मय १ ८)।

ओगाहिम वि [अवगाहिम] वस्यह्न
(स ४ १)।

आगिम्ह १ सक् [अय + गह्] १ धायय
आगिम्ह १ सेना। २ पुत्रा-पुनरुद्धार
करता। ३ मानता। ४ उरुद्वेष्ट करता।
१ सत्य कर रहता। आगिम्ह (मम
४)। बह आगिम्हय आगिम्हय
ओगिम्हयत्ता, ओगिम्हयत्ता (बाधा
छाया १ १; कस जरा)। ६ आयच्छत्र
(कस नि २०)।

आगिम्हय न [अयमह्य] मानय जात
विशेष धारक (सुवि)।

ओगिम्हयया श्री [अयमह्यया] १ उपर
देना (सुवि)। २ मनो-विषयीकरण मन स
पातना (स ८)।

ओगिम्ह देतो आगिम्ह। बह आगि-
मिन्ता (निर १ १)।

आगुहिम वि [अयगुहिम] निव (ह १)।
ओगुहि श्री [अयगुहि] धारक स्वर्ग
पुत्रा (मम २६ १२)।

ओगुहिय वि [अयगुहित] धारक
(छाया १ १)।

ओगाह पुं [जागर] काय विशेष शीघ्र
विशेष (सि)।

आग्दाह देतो इग्दाह (मम ०२, उर १
म १२ ४६८)।

ओगाह सक् [मति + इग्] पाण करता।
ओगाह (आह ७१)।

आगाह्य देतो आगिम्हय। पुत्रा पुन
[पुत्र] १ न गच्छते के पालन का ल
इच्छा १ वर वसति, लोका (कस)।

ओमाहिय वि [अयगुहि] १ वस्यह्न-वात
के जाना हुआ वस्यह्न का विषय। २ पुत्रा
के पुत्रीत। ३ बह देता हुआ (जरा)। ४
देने के लिए उद्योग हुआ (वीर)।

ओमाहिय वि [अयमाहिक] पुत्रा म
गुण वस्यह्नका (वीर)।

ओमाहण न [उद्गाहण] उद्धार (बाध ७)।

आगाह पुं [दे] धाय प्रवाह (दे १
१२१)।

ओगाह सक् [रोमगाय] पुत्रा
वर्षाई हुई वस्तु का पुन बहना। धायगाह
(ह ४ ४१)।

ओगाहिर वि [रोमगायि] पुत्रा
वर्षाई हुई वस्तु का पुन बहना
(ह ४)।

ओगाह देतो उग्गाह = उह + गह्।
ओगाह (आह ७२)।

ओगिम्ह वि [दे] वसिन्त पयपुन (दे १
१२८)।

ओमीअ पु [दे] निम बह (दे १ १४६)।
आय देता उग्गाह। वस्यह्न (आह ७१)।

ओगमिय वि [अयगमिय] प्रसारित
मातृ-पुत्र विद्या हुआ (स ४)।

ओय पुं [ओय] १ मनुष्य संघात (छाया १
४)। २ वस्यह्न 'एन साधे तस्मिन् विपुल
वस्यह्न' (मम १ १)। ३ वस्यह्न
धरिष्मन्ता (पह १ ४)। ४ मानय
वापराह। सण्णा श्री [संसा] मानय
मल (पह ७)। ५ मम पुं [इद] मानय
विद्या (मम २२ १)। देतो
आह = वीर।

आयहिर (श्री) वि [अयगहित] वस्यह्न
(पह २७)।

आयमर पुं [दे] १ पर का वर प्रवाह।
२ वस्यह्न वस्यह्न पुत्रा (दे १ १०
५२ ४६)।

आयमिय देतो आयमिय।
आयमिय न [आयमन] १ वस्यह्न के
पुत्रा जन्तु मयत। २ वस्यह्न के वीर जाते
का माधाराह छाया (बाधा १ २)।

आयच्छ देतो आगिम्ह।
आयच्छ पुं [दे] अयच्छ काय लते वी

वरी वीर्य—विद्ये का वाध-विशेष (पह
१२१)।

ओयिदा (श्री) श्री [ओयिदा] वस्यह्न
वीरिय (स ४)।

ओयुम सक् [अय + युम्] पुत्रा
करता। सक् आयुविज्ज (मम)।

ओयुम न [दे] पुत्रा का एक मात (दे १
१२१)।

आयुम देतो आयुम (विता १ २ मम
ओयुम) (१ ४)। २ पुन मे हवा हुआ
विषय—टीका (वस्यह्न वीरियविषय)
(न — वर २४१)।

ओय देतो अयय (मम)।
आयिदा श्री [अययवि] वीर वर
(पह ७)। वस्यह्न वस्यह्न (मा ७६७)।

ओयमर न [दे] वर मम। २ वस्यह्न के
वाम (दे १ १२१)।

ओयुम १ वि [अययुम] १ वस्यह्न।
ओयुम २ वि [अययुम] १ वस्यह्न।
४ वस्यह्न म १२४)।

ओयुमिन्ति वि [दे] १ वस्यह्न। २ वस्यह्न
वीरिय (पह)।

आयुम वि [अययुम] वस्यह्न
वस्यह्न वस्यह्न वस्यह्न वस्यह्न वस्यह्न
वस्यह्न (मम १२२)। देतो आयुम।
आयुम न [दे] वस्यह्न वस्यह्न (४
१ १२२)।

ओयुम देतो आयुम (म १२२ वीर)।
२ वस्यह्न वस्यह्न (बाधा)।

आयुम (श्री) वर [अय + वर] १ विद्या,
विद्या। २ वस्यह्न वस्यह्न देता।
वस्यह्न वस्यह्न (मा — वर २४१)।

आयुमिय वि [अययुमिन्ति] वस्यह्न
वस्यह्न वस्यह्न वस्यह्न वस्यह्न वस्यह्न
वस्यह्न (मम १२२)। देतो आयुम।
आयुम न [दे] वस्यह्न वस्यह्न (४
१ १२२)।

ओयुम देतो आयुम (म १२२ वीर)।
२ वस्यह्न वस्यह्न (बाधा)।

आयुम (श्री) वर [अय + वर] १ विद्या,
विद्या। २ वस्यह्न वस्यह्न देता।
वस्यह्न वस्यह्न (मा — वर २४१)।

आयुमिय वि [अययुमिन्ति] वस्यह्न
वस्यह्न वस्यह्न वस्यह्न वस्यह्न वस्यह्न
वस्यह्न (मम १२२)। देतो आयुम।
आयुम न [दे] वस्यह्न वस्यह्न (४
१ १२२)।

ओयुम देतो आयुम (म १२२ वीर)।
२ वस्यह्न वस्यह्न (बाधा)।

आयुम (श्री) वर [अय + वर] १ विद्या,
विद्या। २ वस्यह्न वस्यह्न देता।
वस्यह्न वस्यह्न (मा — वर २४१)।

आयुमिय वि [अययुमिन्ति] वस्यह्न
वस्यह्न वस्यह्न वस्यह्न वस्यह्न वस्यह्न
वस्यह्न (मम १२२)। देतो आयुम।
आयुम न [दे] वस्यह्न वस्यह्न (४
१ १२२)।

ओयुम देतो आयुम (म १२२ वीर)।
२ वस्यह्न वस्यह्न (बाधा)।

आयुम (श्री) वर [अय + वर] १ विद्या,
विद्या। २ वस्यह्न वस्यह्न देता।
वस्यह्न वस्यह्न (मा — वर २४१)।

आयुमिय वि [अययुमिन्ति] वस्यह्न
वस्यह्न वस्यह्न वस्यह्न वस्यह्न वस्यह्न
वस्यह्न (मम १२२)। देतो आयुम।
आयुम न [दे] वस्यह्न वस्यह्न (४
१ १२२)।

ओमस्व वि [हे] कठ धरोमुच (पाप) ।
आमस्विय [हे] ऐतो ओमस्विय (घोष
१६) ।

ओमस्त न [निमास्य] निमास्य बेरोन्धित
इत्य (पठ) ।

ओमास्त वि [हे] यदीमुत् नष्टि जमा हुपा
(पठ) ।

ओमाण पु [अपमान] अपमान तिरस्कार
(उत् २६) ।

ओमाण न [अपमान] ? किसे दोन बैरह
ना माप किया जाता है वह, इतल इतल
बैरह माप (ठा २४) । २ जिसका माप
किया जाता है वह अनापि (झु) ।

ओमाज्य न [अयमानन अप] अपमान
तिरस्कार (स १६७) ।

ओमाय वि [अवमित] परिमित मत्ता हुमा
(गुज ६) ।

ओमास्य रेखा ओमस्त=निमास्य (हे १ १८
हुमा बग्जा ८) ।

ओमास्य पठ [उप+मास्] ? होमना,
होन्ति होना । २ उक्त रेखा बरना पुजना ।
तह ओमासिधिय (यदि) । कण्ठ 'घाह्यदि
यतिगणवतितनन्तूहीसनुमुनसमदि' ओमा-
सिज्जलकमा शिवता निभायिपो हाद'
(स ६८६ टी) ।

ओमासिज्य रेणो आमस्त=निमास्य (प्राज्ञ
१४) ।

ओमासिज्य वि [उपमासिज्य] ? होन्ति ।
२ मुक्ति यजिन (जति) ।

ओमासिज्या छे [अपमासिज्या] निमास्य वा
हुमा' हु' वाया (वा १६४) ।

ओमास्य पु [अपमस्य] गत्य (हे ६, १०) ।

ओमिग नम [अप+मा] मारना जान
बरना । नम, ओमिगिगज्ज (घाणु) ।

ओमिगण न [हे] प्रान्तक विपाद ही एक
टीठि बर के निचे मान्नी की दोर से निजा
हुमा ग्योद्वार (बंजा २२) ।

ओमास्य वि [अपमस्य] परिमित नतिमित
(गुज ६) ।

ओमोत् पठ [अप+मीस] मुक्ति होना
बग होना नह ओमोसंन (न १ १) ।

ओमीस वि [अपमस्य] ? मिमित । २
समीपत्व । ३ न. सामीप्य, समीपता
'मुक्तिवि' अन्वयमाहो

रेकन्धिपो काननरियमोमीने ।
न उभेह कानमान

पञ्चमपुण्ड्र नियरण ।
(घोष ७७२) ।

ओमुक्त वि [अवमुक्त] पटितक (समाप्त
११६) ।

ओमुग्गा रेणो उम्मुग्गा (वि १ ४ २१४) ।
ओमुपिद्धम वि [अवमुपिद्धम] माह-मूर्च्छ
की प्रत्य (पठम ७ ११८) ।

ओमुद्गा वि [अवमुद्गा] अरोमुक्त 'घोनु
ज्जा बरिपयसे पति' (हुमा १ ३) ।

ओमुय सक [अव+मुप] पठना ।
ओमुय (कय) । बह ओमुयल (कय) ।
छेह ओमुयत्ता (कय) ।

ओमोय पु [ओमोक्त] घामरण घामुयल
(क ११ ११) ।

ओमाधर वि [अवमोद्धर] भूष की धरना
भूष भोजन अनेवाता (क १) ।

ओमाधरिय न [अवमोद्धरिक्त] ? न्यून
भोजनर तन्त्रिण्य (पाषा) । २ दुर्मिय
घजान (घोष) ।

ओमाधरिया छी [अवमाधरिता 'रिग'
न्यून भोजन रूप ठप (अ ६) ।

अम्माय पु [उमाह] अम्पठता (समी २१) ।

आय न [आजस्] ? विपन सक्ता कैने
एर ठीन पोष घादि (विज १२६) । २
घाजरिठेन घादी उर्गात के समय पीर
प्रत्य या घाजर मेजा है वह (मुयति १७१) ।

आय वि [आजस्] नृद नर (न २) ।

आय वि [आज] ? एर घनहाय (मुष १
४ २) । २ पण्यक उज्ज्व जहालीन
(हद १) । ३ पु विपन यति (का २१ १) ।

आय न [ओजस्] ? बर (पाषा) । २
प्रकाश ठेज (बं २) । ३ उपाति-व्याप्त
न घाजन हुपता ना घनूह (कण्ठ संय
१ २) । ४ घादीय अन्त-वर्ष (का १ ३) ।

आयसि वि [ओजस्यिज्ज] ? बरान् ।
२ ठेजनी (न १२२ योने) ।

ओवट्टय न [अपवट्टय] पीछे हटना, वापिस
लौटना (उप ७६) ।

ओवट्टय सक [अप+वट्टय] ? बरता ।
कण्ठ आधिहितयत (पठम ७ २१) ।

ओवट्टियया ? छी [हे] ओवट्टी ओवने
ओवट्टी } का बस बाहर, हुपुटा (हुष
२, १) ।

ओवज रेणो ओवज (पठम ११ १६) ।

ओवस वि [अवट्टय] घनयत अरोमुक्त
(पठम) ।

ओवस सक [अप+पर्यय] अन्वयता
काही करने के लिए ममाता । बह
आवसिमाण (पाषा २ १ ७ ३) ।

ओवसत्त न [अपवर्तन] कितकाना हयता
(सि १६१) ।

ओवसिय वि [हे] परिमित (पठ १ ४
पीप) ।

ओवा छी [आजस्] शक्ति, सामर्थ्य (समा
१ १—न १७) ।

ओवा छी [ओजस्] ? प्रकाश (गुज ६) ।
२ मत्ता ना सुक-शोणित (तहु १) ।

ओवाइम रेणो उवयाइम (हुपा १२९) रे
४ १२) ।

आयाय वि [उपवाय] अनायत समीर पहुँचा
हुमा (शाया १ ६ तिर १ १) ।

ओयार सक [अव+तारय] नीचे उठा-
रना । बह ओयारिया (बं २, १ ११) ।
ओयार पु [अवतार] माट, तीर्थ (बं २
२१) ।

आयारा वि [अवतारक] ? उठायेना ।
२ प्रवृत्ति बनेवाता (सम १ ६) ।

आयारज रेणो उयारज (गुज १) ।

ओयायइया य [ओजयिक्ता] ? बल निजा
बर । २ बलकार निजा कर । ३ बिदा घादि
ना सामर्थ्य निजा कर (ओ होता ही बाय
बह) (अ ४) ।

ओर वि [हे] ? बाह, गुम्बर (हे १ १४६) ।
२ समीर (संय घन नू घाण्या गीट-
व ३७ ना ६) ।

ओरिपिज वि [हे] ? घाजाल । २ न ७ (हे
१ १७१) ।

अरिपिज वि [हे] पक्का किया हुमा पिका
हुमा (पाप) ।

ओषधृज न [अपवर्जन] हाड कमी (धातु) २१६।

ओषधृजा श्री [अपवर्जन] भाषाकार, भाग-हरण (राज)।

ओषधृजि न [हे] बाट, कुणामय (दे १ १६२)।

ओषधृजि नि [अपवर्जन] बरखा हुआ जिसने छुटि की हो वह (दे १ १४)।

ओषधृजुं पुं [हे अपवर्जन] १ छुटि, बारिष्ठ (दे १ २४)।

२ शेष-जस का विचन (दे १ १३२)।

ओषधृजिभ नि [ओषधृजिभ] जपरिष्ठ के योग मीठर (प्रो ११)।

ओषधृजक [अप + पत्] गिरना मीचे पड़ना। बह-ओषधृज (दे १ १३ २८)।

ओषधृजण न [अपवर्जन] १ अथ-पात। २ क्षम्य-पात (दे १ १२)।

ओषधृजि नि [अपवर्जन] धातु के कटिब। ओषधृजिया श्री [ओषधृजिभ] बाण्ड बलन का ही बाहर करना उप-विशेष (मग-३ १)।

ओषधृजि नि [अपवर्जन] हाड (मि २)।

ओषधृजा श्री [हे] ओषधृजी का एक भाग (दे १ १३१)।

ओषधृज न [अपवर्जन] कबीका धारण (कुमा)। ओषधृजियपुं [ओषधृजिभ ओषधृजिभिक] मिलाकर विशेष समीपव्य मिला की लेनेवाला साधु (अ ३ शीप)।

ओषधृजिया श्री [ओषधृजिभिक] धामपुर्वी विशेष धनुष्मन्-विशेष (मीप)।

ओषधृज एक [अप + वर्जन] १ जलटा बरत। २ छिपना कुमा। ३ छेकना। छह ओषधृज (स ३)। छ ओषधृजेय्य (दे १ ३)।

ओषधृज नि [अपवर्जन] छिपना हुआ (दे १ ११)।

ओषधृजि नि [अपवर्जन] १ कुमा हुआ। २ लिट (छाया १ १—पत्र १७)।

ओषधृजाजि नि [ओषधृजाजि] समा का नार्न करनेवाला मीठर। श्री या (स १ ११)।

ओषधृज श्री ओषधृज 'हृदिस्थान' पिय धनुष्माण ओषधृज 'महापाण्डु' (मीठर १७२)।

ओषधृजि नि [ओषधृजि] जमान-सम्बन्धी (धनु)।

ओषधृजि न [ओषधृजि] १ जमान (अ ८) ओषधृजि न [ओषधृजि] २ जमान प्रमाण (धनु १ १)।

ओषधृज सक [अप + पत्] १ मीचे उतरना। २ भा पड़ना। बह-ओषधृज ओषधृजमान क्य स १७। नि १३१। छाया १ १२)।

ओषधृजण न [हे अपवर्जन] ओषधृजक कुमा (छाया १ १—पत्र १३)।

ओषधृज न [अपवर्जन] धनवरण मीचे उतरना (स ३ २—पत्र १७७)।

ओषधृजाइय नि [ओषधृजाइय] मनीठी से प्राप्त किया हुआ मनीठी से मिला हुआ (अ १)।

ओषधृजिय नि [ओषधृजिय] जमान सम्बन्धी (पत्र १; पुण्ड ४ ६)।

ओषधृज पुं [व] निरु, समुह (दे १ १४७)।

ओषधृजाइय नि [ओषधृजाइय] १ जिसकी उत्पत्ति होनी हो वह (पत्र १)। १ पुं संघाटी प्राणी (धातु)। २ देव या नारक-मीठ (स ४)। ४ न देव या नारक मीठ का छरीर (पत्र १)। ५ देव धाम-जन्म विशेष धीप पतिष्ठ धनु (मीप)।

ओषधृजाइय नि [ओषधृजाइय] एक कथ से दूसरे कथ में जानेवाला (धनु १ १ ११)।

ओषधृजिय नि [ओषधृजिय] १ उपसर्ग से संबन्ध रखनेवाला, ज्ञान-समर्थ योगि। २ शब्द-विशेष प्र पत्र धाति सम्बन्ध रूप शब्द (धनु)।

ओषधृजिय पुं नि [ओषधृजिय] १ जमान। २ नि जमान से उत्पन्न। ३ जमान होने पर होनेवाला (पत्र २१७४)।

ओषधृजेर न [व] १ जमान धुपिष्ठ कथ-विशेष। २ नि छि-योग (दे १ १७१)।

ओषधृजिय श्री जमान 'हृदिस्थान' ओषधृजिय लण्यं ठेकाएकधु' (पत्र ८२)।

ओषधृज एक [अप + वर्जन] १ बह जमा बह जमान। २ बहना। बह-ओषधृजमान (कथ)।

ओषधृजिय नि [ओषधृजिय] जमान संबन्धी (पत्र ७३)।

ओषधृजिय नि [ओषधृजिय] भाषा से गुप्त विचनेवाला (छाया १ २)।

ओषधृज पुं [दे] भाषातप जन्म-समूह की गली (पत्र १)।

ओषधृज श्री ओषधृजाइय (पत्र)।

ओषधृज श्री ओषधृजाइय (पत्र १११)।

ओषधृज नि [अपवर्जन] देना करनेवाला (अ १)।

ओषधृजण न [अपवर्जन] विचारण नाथ (अ २ ४)।

ओषधृजिय नि [अपवर्जन] विचारिष्ठ (मीप)।

ओषधृज सक [अप + पत्] मनीठी करना।

बह ओषधृज ओषधृजमान (धनु १ २ २ छाया १ ८—पत्र १४४)।

ओषधृज पुं [अपवर्जन] १ देना भक्ति (अ ३ १ मीप)। २ पत्र गहना (पत्र १ १)। ३ मीचे गिरना (पत्र १ ४)।

ओषधृज नि [ओषधृज] उपाय-जन्म उपाय सम्बन्धी (उत्त १ २८)।

ओषधृज सक [अप + धारण] धाम्नायन करना डकना। छह ओषधृज (धमि २११)।

ओषधृजि न [हे] भाषा करने का एक प्रकार का सम्भा कोड मोक्ष (राज)।

ओषधृजि नि [हे] डेर किया हुआ उमि-कृत (स ४८७ ४८)।

ओषधृजि नि [अपवर्जन] धाम्नायन बना हुआ (दे १ १)।

ओषधृज सक [अप + वर्जन] शोभायि धिजमान। ओषधृज (पत्र)।

ओषधृज सक [अप + वर्जन] धनराज पाता बगह मिला। ओषधृज (पत्र; कुमा ७ २१ प्राक १६)।

ओषधृज पुं [अपवर्जन] धनकाज लाली बगह (पत्र प्राक १ ४४)।

ओषधृज पुं [अपवर्जन] धनकाज ओषधृजमान (पत्र ४८ ४८)।

ओषधृज पुं [अपवर्जन] धाकारा कान (स २ २—पत्र ७७६)।

ओषाह सक् [अष + गाह] धनग्रहणा ।
पोषह (अर्थ) ।

ओषाहिवि [अषवाहित] १ नीचे विरप्या
हुवा (दे १, १६; ११ ७२) । २ कुवाकर
नीचे बना हुवा (दे ७ २२) ।

आवित्र वि [वि] १ पादोपिध यन्मपिध ।
२ युक्त, परिपक्व । ३ हृत् पीठा हुवा ।
४ न कुलादर । ५ रसिष्ठ येन (दे १
१६७) । ६ वि परिक्लित संस्कारित
(बर्ण) । ७ धर्मिष्ठ व्यास (आश्रम) । ८
उत्पन्नमिष्ठ त्रयस्त्रिंश (संख्या १ १६) । ९
विमृष्टि, मृगच्छि (आश) । १० उषिय ।

आविह वि [अविह] १ अष्टि घाहत
(दे ७ १२) । २ नीचे विरप्या हुवा (दे ११
२६) ।

आवीह्य सक् [अष + पीह्य] पीडा पहुँ
बाना, मारपीट करना । बहू आवीह्यमाण
(गाथा १ १८—बर्ण २३१) ।

आवीह्यय केतो उक्कीह्यय (पण्ड १ १) ।
ओयुष्ममाण केतो ओषह ।

आषाह्य ली [अषाह्य] १ उत्तरार्ध रेखा ।
२ परकीरण 'संस्कारिणीयण्यौष्यो य
वाषाह्योरेह' (योग १७१ भा) ।

आषाह्य केतो ओषाह्य (दे ७ ११) ।

आषाह्य सक् [अष + पूह] १ नीचे
ठिकाना लौटना । २ धनगत होना । संकु
आषाह्यज्य (योग भा ३ टी) ।

आषाह्य वि [अषाह्य] नीचे छिद्र हुवा ।
२ म्मा हुवा धनगत (दे ८ ८४) ।

आषाह्य केतो उक्कीह्यय (सिध १३) ।

आषाह्य केतो अषाह्य (दे १, १३३) ।

ओस पुं [वि] केतो आमा (चक्र) । बारण
पुं [बारण] दिय के धनग्रहण से बने-
माना बाधु (पण्य) ।

ओसह सक् [अष + षह] कब करना
पठाना । बहू ओसहिया (बर्ण २, ११) ।

ओसह्य सक् [अष + षह्य] १ नीचे
हटाना पातण्ड करना । २ कृष्णा पत्राव
नला । ३ उषण्य नला उषेतिव नलाय ।
ओषह्य (नि १ १११) । बहू ओसह्य
ओसह्यमान (दे २, ७१ व १४) । बहू

ओसह्यता, ओसह्यिय ओसह्यिज्य
(अ ८ बह ४ वृ २, ११) ।

ओसह्य वि [वि] अषह्यविह्य] आह्य, नीचे
हट्य हुवा (दे १ १४६, पाय) ।

आसह्यय न [अषह्ययज्य] १ सतरह्य (स
६१) । २ मित्र नाल से पहने करना (बर्ण
१) । ३ सतेयन (बृ २) ।

ओसह्यि वि [अषह्यिह्य] मित्र काल
से पहने किया हुवा (नि २६) ।

ओसह्य सक् [वि + षह्य] कृष्णा पत्रावना ।
ओसह्य (गा ८२१) ।

ओसह्य वि [वि] विकलित प्रदुर्लभित (पर)

आसह्यि वि [वि] आशीर्ष, व्यास (पर) ।

ओसह्य न [ओषय] बहा इतान नियम
(दे १ २२७) ।

ओसह्यि वि [ओषयि] विष विविक्त
(कुमा) ।

ओसह्य न [वि] उषे, सेव (दे १ ११३) ।

ओसह्य वि [अवसह्य] १ विष (गा १ १
दे ११ १) । २ स्थित पीठा (बर्ण १) ।
केतो आसह्य ।

ओसह्य वि [वि] इष्टि करिह्य (दे १
१११ पर) ।

आसह्यय घ [वि] ग्रह बहू कर (कण्य) ।

ओसह्य वि [अवसह्य] संकट, संकुच (साभा
१ ३ घ ४२६) ।

ओसह्य केतो आसह्य (अ २, १) ।

ओसह्य वि [वि] पणित निरप्या हुवा (पाय) ।

ओसह्य केतो आसह्य = अषह्य (वृ ४
१४) गाथा १ २ सं ६, पुण्ड ११) । ३
न. एकल 'पीठन के म्मह्यर ना' (उक) ।

ओसह्य वि [अवसह्य] विमग (बहू १
८) ।

आसह्य केतो ओसह्य (कम्य १ ११; विदे
२२७२) ।

ओसह्यि की ओ [अवसह्यि] बहू ओसह्य-
कीं काण्टावसह्यिध बन्धनितेन विनये
तर्क यथार्थ के दुर्गो नी समता हवि होनी
काही है (स ७२ अ १) ।

ओसह्य वि [अष + शमय] बरह्य
नला । बहू ओसह्येति (नि १२१) ।

ओसह्यि वि [अषह्यि] शान्तिनाल
(सम १७) ।

ओसर सक् [अष + वृ] १ नीचे घावा ।
२ धनगत, जन सेवा । ओसर (वृ १) ।

ओसर सक् [अष + वृ] धनगत करना
नीचे हुवा । २ सरणा विरचना दिन
नला । ओसर (महा काव) । बहू ओसरन
(दा १८ १११; से १ २६; ८ बर्ण १२,
१ दे १६) ।

ओसर सक् [अष + वृ] धना शीर्षकर
पायि महागुण्य अषाह्य (य ७२८ टी) ।

ओसर पुं [अवसर] १ धनगत, समय (पुं
१ २) । २ धनर (राव) ।

आसरण न [अवसरण] १ विनयेन क
उपरेत स्थान (य १११ पण्ड १) । २
शाश्वती ना एकविध होना (पुं १ १२) ।

ओसरण न [अवसरण] १ हुवा, बुर होना ।
२ वि बुर करनेवाला 'बहुप्रायस्कमप्रोत्तर' (हुवा १) ।

ओसरि वि [वि] १ आशीर्ष व्यास । २
आश के हटाने से संकेतित या स्थित (पर) ।
३ परीक्ष्य धनगत । ४ न. शीर्ष अश्राप
(दे १ १४१) ।

ओसरि वि [अवसह्य] धनगत पत्राव हुवा
(उप ७२८ टी) ।

ओसरि वि [अवसह्य] १ नीचे हट्य हुवा
(पत्र १६, २१ पाय ना १११) । २ न.
धनगत (दे २, ८) ।

आसरि वि [अवसह्य] संकुचमान करने
वाया हुवा (पाय) ।

ओसरि आ ओ [वि] धनगत बाहर क ह
गारे का प्रवेष्ट (दे १ १११) ।

ओसय पुं [वसह्य] कृष्ण धान्य-उप
(भाय) ।

आसह्य केतो ओसह्य (नि १२१) ।
आसह्य वि [अवसह्य] अना विना हुवा
(बर्ण ८ २११) ।

आसह्यि वि [वि] १ शीर्ष-उप । २ न.
धनगत, सेव (दे १ ११८) ।

ओसह्य न [ओषय] बहू, सेव (योग
पण्ड ११) ।

ओसहि ही ओ [ओपधि] १ बनस्पति (पण्ड १) । २ नयदी-विशेष (छात्र) । महि हूर पुं [महिपर] पर्वत-विशेष (बण्ड ४४) ।

ओसहिअ जि [आवसधिअ] बन्धार्थ-यत्नादि वत्त की कलेबाना (मा १४६) ।

ओसा ओ [ह] १ दीप्त निरा क्ल (जी २, यासा धिउ २२०६) । २ दिव्य बरत (दे १ १६४) ।

ओसाम पुं [ह] प्रहार की पीड़ा (दे १ १२२) ।

आसाअ पु [अवधाय] विन घोउ (म १३ २२ ४८, २३) ।

आसाअं जि [ह] १ नौआई नावा हुआ पावरी । २ बैठा । ३ बैशना-मुक्त (दे १ १०४) ।

ओसाअ जि [ह] १ महीछाल बगीच का माषिक । २ धातुछाल (पह) ।

ओसाग न [अपसान] १ क्ल (छा ४) । २ मनीषणा सापीय (मुप १ ४) ।

आसाग न [अपसान] दुःख के समीप स्थान दुःख का पाउ निवास (मुप १ १८ ४) ।

आसागिहाय जि [ह] विवि-पूर्वक धनुष्ठित (दे १ १६३) ।

ओसाय पुं [अधरवाय] धौउ निरत-अन (बाधन ३१) ।

आसायण न [अवसाज्ज] परिष्कान्त, नाश (विन) ।

ओसार मक [अप + सादप] हूर करता । मोसादेह (छ ४८) । कर्न ओसादिअणु (म ४११) । छक-ओसारिधि (अधि) ।

ओसार पुं [ह] मो-बाट, मो-बाड़ा (दे १ १४६) ।

आमार पुं [अपमार] वसण (म ११ १४४) ।

ओसार देहो ऊमार = उलार (अधि) ।

ओसार पुं [अपमार] कबज कबजर (म १२, १६) ।

ओसारिअ जि [अपसारित] हूर किया हुआ, धनीत (मा १६, बरम २३ ८) ।

ओसारिअ जि [अपसारित] धनचरित्र, लटकाना हुआ (धीन) ।

ओसाम (घन) देहो ओवास = वनकाल (पधि) ।

ओमिअ जि [ह] १ धरत बल-पहित (दे १ १२) । २ सपूत घनावाछ (पह) ।

आसिअ जि [उपित] १ बसा हुआ रक्षा हुआ (मुप १ ४४) । २ व्यस्तचित्त (मुप १ ४१२) ।

ओमिअत बह [अपसेवन्] पीड़ा पला हुआ (दे १ ११ ३३ ३१) ।

ओसिअ जि [ह] भाउ मूमा हुआ (दे १ १६२ पाष) ।

आसिअणि जि [अपसेवयिअ] वनसेक करनेकला (मुप २ २) ।

आसिअिअ न [न] १ पति-स्वाभाव । २ धरति-निगित (दे १ १०३) ।

ओमिअ जि [अपमिअ] मौनवा हुआ मिअ (यासा २ १ ११) ।

ओसिअ जि [ह] जपवित्त (दे १ १२८) ।

आसिय जि [अपमिअ] १ पर्यवेष्टित । २ उपराष्ट्र (मुप १ ११) । २ बीज पचामृत (विन) ।

ओसिरअ न [ह] मूलकन परिष्कान्त (पह) ।

ओसाअ जि [ह] धनो-मुक्त धनत (दे १ १२८) ।

आसीर देहो उमीर (पण्ड २, २) ।

आसीस मक [अप + पूम] १ पीछे हुना । २ धूमना करता । छह आसा-विऊन (दे १ १२२) ।

आसीस जि [अप + पूम] धनवृत्त (दे १ १२२) ।

आमुअ जि [हसुअ] चलछित्त (यात्र) ।

आमुअिअ जि [ह] जमेवित्त बलित (दे १ १११) ।

अमुअ मक [अप + पानय] १ पिप देहा । २ लज करता । कर्न औमुअमि (छ ४ ११) । बह औमुअमि (म ४ २४) । बह औमुअमि (म १३३) ।

आमुअ मक [विअ] छीछ बरना ठेज करता । औमुअ (दे ४ ४) ।

आमुअ जि [अवगुअ] मूमा हुआ (पद्य २३ ४६ २, १४) ।

आमुअ मक [अप + श्रु] मूनना । बह औमुअमि (म १३) ।

ओमुअ जि [ह] १ विनिवित्त (दे १ १२०) । २ विनवित्त (म १३ २२) ।

ओमुअमि देहो ओमु म ।

ओमुअ न [ओसुअ] कण्ठ्या सगएअ (धीन पि ३२० ९) ।

ओमायना, ओ [अवमयापना] विद्या ओमोअगिया/विप विसेक प्रमाअ के हुन

ओमोअमी को माइ पिआबीत किया जा सकना है (मुप २२ छासा १ १६ नय) ।

ओमम पु [अवप्यउक] धनसर्पण पीछे हुना (पह २) ।

ओममकअ देहो ओसकअ (मिअ २८२) ।

ओममा [ह] देहो आसा (नय) ।

ओरसाह पुं [अवसाह] नय विनय (छाउ) ।

आह देहो ओप (पण्ड १ ४ मा २१८) निह १६, घोष २ धम्म १ टी) । १ मून शास्त्र-सम्बन्धी बाध्य (विने १३०) ।

आह मक [अप + ह] मोक्ष उठना ।

ओह (दे ४ ८२) ।

आह पुं [आप] १ अर्धार्थ सामाग्य निवम (एधि २२) । २ सामाग्य साधारण (बन १) । ३ प्रवाह (छा ४० टी) । ४ सलिन प्रवाह । ५ धासक-आर (धासा २ १६ १) ।

१ अंधार (मुप १ ६ ६) । न्यूय न [अग] शास्त्र-विशेष (एधि २२) ।

आह पुं [ह] हास हँसी (दे १ १३३) ।

आहमिअिया ओ [ह] छुअ कण्ठ-विशेष कण्ठिअय ओप-विशेष (बीज १) ।

ओहतर जि [ओपतर] अंधार पार करने-बाना (मुनि) (यासा) ।

ओहस पुं [ह] १ बनल । २ विचार बनल मिआ पाठा है बह छिप, बन्दीय या होला (दे १ १६८) ।

आहट्ट मक [अप + पट्ट] १ कम हुना हास पाव । २ पीछे हुना । ३ सक हुना निवृत्त करता । ओहट्ट (दे ४ ४१६) । बह-आहट्ट (म ६ ६, गुा २३१) ।

आहट्ट पुं [ह] १ धरणात्त । २ मोक्ष कर्तव्य । ३ धनवत्त पीछे हुना हुआ (दे १ १६६ पधि) ।

ओहट्ट १ नि [अपघट्ट] निवारक हय्मे-
ओहट्ट १ नामा निवारक (विना १ २
शाया १ १६। १८)।

ओहट्टि नि [हे] हुने को ब्याकर हास से
पुगीत (हे १ ११६)।

ओहट्टु पु [हे] हास हीं (हे १ ११६)।

ओहट्ट नि [अपघट्ट] निवारक (पदम
१७ १)।

ओहट्ट नि [अपघट्ट] नीचे माया हुआ (सु
२, १ ६६)।

ओहट्टी की [हे] परता (हे १ १६)।

ओहट्ट नि [हे] घनन (हे १ ११६)।

ओहरियम नि [अपघट्टित] परित्यक्त, हुए
रिया हुआ (मै ११)।

ओहय नि [उपहय] उपवास-मात (शाया
१ १)।

ओहय नि [अपहय] विनाशित (घोष)।

ओहर न [अप + ह] अपहय करना।
नमं ओहरीधमि (मि ६८)।

ओहर सक [अप + ह] टैडा होना सक
होना। २ सक जलता करना। ३ टिपना।
कंठ-ओहरिय (घाया २ १ ७)।

ओहर न [उपगृह] संता गृह नीजरी (पण्ड
१ १)।

ओहरण न [अपहरण] छत्र से जाना,
अपहार (क १७६)।

ओहरण न [ह] १ विधायन किया। २
पर्यंत घर्ष की सम्पादन (हे १ १७७)।
३ घात हथियार (न १११ १७७)। ४
नि घायल (पद)।

ओहरिज नि [हे अपघट्ट] १ टैडा हुआ
(न १३ १)। २ नीचे गिराया हुआ (मै
१ १७)। ३ उठाया हुआ कटपछि (घोष
१)। ४ घातन 'ओहरिजपरत कर
नहे' (या ४)।

ओहरिम नि [ह] १ घायल हुआ हुआ।
२ पुं कपट चितने की टिपना, काटीया (हे
१ १६६)।

ओहम कैगो उज्जम (हे १ १७१; गुवा)।
ओहम सक [अ + ह] विपना। नदि
घोनिदी (गुवा ११६)।

ओहसि नि [अपघट्टित] निवारक हुआ
'ओहसोहसिवाक्यो' (गुर २ १८६
सल)।

ओहसी की [हे] घोष सवृह (गुवा ११७)।

ओहस सक [अप + ह] उग्रहय करना।
मोहस (म)। कण आहसित्यं (हे
११ १)। ३ आहसिगि (स =)।

ओहसिज नि [हे] १ कल कड़ा। २ नि
हुन कर्मिय (हे १ १७१)।

ओहसिज नि [उपहसित] निवारक अपहस
किना क्या हो कर (ग १ १ १७१
स ४४८)।

ओहाइम नि [हे] घनो-मुक (१ ११८)।

ओहाअ नि [अपमाधित] गरिब से अट
(रवृह १ १)।

ओहाइय न [अपघातन] प्रारम्भित-क्रिये
(रव १)।

ओहाइय न [अपघातन] बहना निबन
(रव १)।

ओहाइया की [हे अपघातनी] १ निवारक
(हे १ १११)। २ एक प्रकार की ओहसी
(बी १)।

ओहाइय नि [अपघातित] १ निहित कर
किना हुआ 'अपघातयकारोहयिधयो' (मै
१—पत्र ७१)। २ स्मृति (घा २)।

ओहाय न [उपघात] स्वन बनना (रव ४)।

ओहाय न [अपघात] उग्रोप कपाल
(घाया)।

ओहाय न [अपघातन] प्रवृत्तमल पीछे
हूना (मि १६)।

ओहाम सक [मुजय] ठीकना गुलना
नला। संजम (हे ४ २२)। नह
आहामन (गुवा)।

ओहामि नि [मुजित] ठीका हुआ (पाम
गुवा २६६)।

ओहामि नि [ह] १ कर्मिय (पद)।
२ निरुद्ध (स १११; घोष १)। ३ कर्म
रिया हुआ, स्मृति 'ओह नीसाधरणा
धलेल माहायिना सग' (पत्र ४६ ११)।

ओहार सक [अप + घात] निबय
नरन। संट आहारिज (घा १६४)।

ओहार पु [हे] १ कण्ठ। २ नदी बदेप
के बीच की मुक्त बगल, डीप। ३ संत
विमान (हे १ १६७)। ४ बतवत-यानु
विशेष (पण्ड १ १)।

ओहार पु [अपघात] निबय। ४ नि
[व] निबयनाता (ह ४६)।

ओहारय नि [अपघातित] निबय कले-
नाता (रव)।

ओहारय नि [अपघातित] हुने पर
मिप्यामिप्य बननेनाता (रव)।

ओहारय न [अपघात] निबय निबय
(ह २)।

ओहारपी की [अपघातपी] निबयनात
माया ओहारपी घनियकपटिल च अरं न
ममिज सवा स दुको' (रव न १)।

ओहारपी की [अपघातपी] अर रेको
(मस १४)।

ओहाय सक [आ + क] घातमल करना।

ओहार (हे ४ १६; वद)।

ओहार सक [अप + घात] पीछे हटना।
क ओहारय ओहाय (घोष ११६
वद =)।

ओहायम न [अपघातन] १ घातमल
पनाम (रव १)। २ शीघ्र से घातना शीघ्र
नी ओह देना (रव १)।

ओहाय न [अपघातन] घनमल घातमल
(मि ४६६)।

ओहायपी की [अपघातपी] लाय वदुग
(मय २६)।

ओहायपी की [अपघातपी] डिस्तरा,
घातमल (क ११६ टी स ४१)।

ओहायपी की [आकासि] आकास
(रव)।

ओहायि नि [अपघातित] १ डिस्तरा
(गुवा २२४)। २ स्मृति आकास (रव
न)।

ओहायि नि [अपघातित] वसवित घन
य (रवृह १ २)।

ओहाय पु [अपघात, उपघात] हीं
हास (मस मै ४६)।

ओहायम न [अपघात] भाषना मंद,
विष्टि किना (घा ४)।

कईअरक } तुं [वे] लिफ, सङ्ग (हे २
कईअरसङ्ग } ११)।

कईअर न [कईअर] कमत, बन्ध (हुना प्राय)।

कईअर म [कईअर] कन किस समय ? (पा
१३ हुना)।

कईअरक वि [हे] बोझा पस (हे १ २१)।

कईअर तुं [कईअर] मेठ कवि (बन्ध)।

कईअरक ओ [कईअरक] हुन-विरोध
देव-बन कीक, बन्ध (बा ११२)।

कईअर की [कईअर] राजा बरान की एक
रानी (पद्य ११, २१)।

कईअर तुं [कईअर] १ हुन-विरोध केन का
पद्य १२२-विरोध केन केना (बा १११)।

कईअर वि [कईअर] बहुत में से कीक या ? (हे
१ ४८ या ११६)।

कईअरक केनो कईअर (तुं ११)।

कईअर (अ) म [कईअर] कन किस समय ?
(गण)।

कईअर म [कईअर] किसी समय में
(हुन ४११)।

कईअर केनो कईअर = कईअर (लिङ्ग ४१६)।

कईअर तुं [कईअर] हुन विरोध 'कईअरक'
हिंदा हूँ हागोही बहिणामि' (आ ११)।

कईअर न [कईअर] कमत हुन (हे १ ११२)।

कईअर तुं [कईअर] हुन, 'कईअर' (संक्षिप्त ५)।

कईअरकी ओ [कईअरकी] कुनिकी कनिकी
(हुना)।

कईअरस तुं [कईअरस रा] १ स्वनाम-कमत
वर्त विरोध (नाम, पद्य २ २१ हुना)।

२ मेठ वर्त (लिङ्ग ११)। ३ वेद-विरोध
एक नल-नाम (जीव १)। मय तुं [राय]
महादेव रिज (हुना)। केनो कईअर।

कईअरस की [कईअरस रा] वेद-विरोध
की एक राजाकी (जीव १)।

कईअरक तुं [हे] स्वनाम-वापि केन
(हे १ २१)।

कईअर की [हे] बरान विरोध कीकन
कीकनिकी (छाया १ १ टी—पद्य ४१)।

कईअर (पा) वि [कईअर] केना (हुना)।

कईअर (पा) केनो कईअर (हुना १११)।

कईअर केनो कईअर (बन्ध २ १६)।

कईअर तुं [कईअर] मेठ कवि वतन कवि
(विज)।

कईअर तुं [कईअर] वतन कवि (रेमा)।

कईअर तुं [कईअर] पन (कम्प)।

कईअर (अ) म [हुन] कईअर (हे ४ ४११)।

कईअर वि [हे] १ प्रवाल हुन। २ तुं
विज विज (हे २ २१)।

कईअरकेय तुं [कईअरकेय] केन पर बीबी हुई
तलवार (हे १ ११२ बन्ध)।

कईअर म [द कईअर] केनो कईअर = कईअर
(वन्ध)।

कईअर } तुं [कईअर] १ हुन केन का
कईअर } राजा। २ तुं की हुन केन में
कना। ३ वि हुन केन का कईअर के वन्धन
रकनेवाला। ४ हुन केन में जगन (प्राय)
मटा है १ ११२)।

कईअर म [हे] १ कटीय गोईअर का हुई (हे
१, ७)।

कईअर न [कईअर] तात्त्विक मत का प्रवर्तक
प्रम कौलोतिवन्धन है। २ वि एडिज का
उत्पत्ति। ३ तात्त्विक मत की वाक्यवाता।
४ तात्त्विक मत का अनुयायी। ५ वेद-विरोध

विज विजवन्धन हुन
छायावन्धनपद्यवाक्य।

गमले विज वन्धन
हुन वि हुन कईअरकी ओ
(पद्य)।

कईअर केनो कईअर (वन्ध)।

कईअर तुं [कईअर] कईअर 'कईअर'
(संक्षिप्त १ ११)।

कईअर न [कईअर] कुनका बरान
होतिमारी (हे १ ११२ प्राय)।

कईअर न [हे] किय, क्या हुना (हे २ १)।

कईअर तुं [कईअर] १ वेन के कवि का
हुन। २ केन का वन्धन हुन-विज।
३ वर्त का वन्धन हुन (हे १ २२१)।
४ वि प्रवाल हुन

कईअर वि [कईअर] १ वेन के कवि का
हुन। २ केन का वन्धन हुन-विज।
३ वर्त का वन्धन हुन (हे १ २२१)।
४ वि प्रवाल हुन

कईअर तुं [कईअर] १ वेन के कवि का
हुन। २ केन का वन्धन हुन-विज।
३ वर्त का वन्धन हुन (हे १ २२१)।
४ वि प्रवाल हुन

कईअर वि [कईअर] १ वेन के कवि का
हुन। २ केन का वन्धन हुन-विज।
३ वर्त का वन्धन हुन (हे १ २२१)।
४ वि प्रवाल हुन

कईअर तुं [कईअर] १ वेन के कवि का
हुन। २ केन का वन्धन हुन-विज।
३ वर्त का वन्धन हुन (हे १ २२१)।
४ वि प्रवाल हुन

कईअर वि [कईअर] १ वेन के कवि का
हुन। २ केन का वन्धन हुन-विज।
३ वर्त का वन्धन हुन (हे १ २२१)।
४ वि प्रवाल हुन

४ इस नाम की एक राखी। ५ राजा।
६ विज की कईअर (हे १ २१)।

कईअर वि [कईअर] हुन, वेन (पद्य
११२)।

कईअर } म [कईअर] बन्ध विज विज
कईअर } 'पद्य की वन्धन कईअर के वन्धन'
कईअर } 'कईअर के वन्धन' (हुना ११)। हुना

'कईअर के वन्धन' कईअर का वन्धन
(पा ४७१)।

'कईअर का वन्धन'
कईअर का वन्धन विज।

कईअर कईअर विज।
कईअर कईअर विज।

कईअर कईअर विज।
कईअर कईअर विज।

कईअर कईअर विज।
कईअर कईअर विज।

कईअर कईअर विज।
कईअर कईअर विज।

कईअर कईअर विज।
कईअर कईअर विज।

कईअर कईअर विज।
कईअर कईअर विज।

कईअर कईअर विज।
कईअर कईअर विज।

कईअर कईअर विज।
कईअर कईअर विज।

कईअर कईअर विज।
कईअर कईअर विज।

कईअर कईअर विज।
कईअर कईअर विज।

कईअर कईअर विज।
कईअर कईअर विज।

कईअर कईअर विज।
कईअर कईअर विज।

कईअर कईअर विज।
कईअर कईअर विज।

कईअर कईअर विज।
कईअर कईअर विज।

कईअर कईअर विज।
कईअर कईअर विज।

कईअर कईअर विज।
कईअर कईअर विज।

बयो तक बैनी शीसा का पातन कर घण्ट में
छका व्याम कर दिया बा (शायी १ १६
ज्म)।

कंडरीय वि [कण्डरीक] १ बरोमन स-
मुन्दर । २ धरपान (सुधनि १४०: १५३)।
कंडरिज } की [कन्दरिका] कुल कन्दर
कंडरिया } (वि १३३ है २ ३५ कुमा)।
कंडबा की [कण्डबा] बाघ-विरोध (पम)।
कंडार सन् [सन् + क] पुत्रा, कील-साल
कर दीक करना । संक

‘गुण्डे बुने हू प्रभाङ्गयो बभमि
वे देहसिम्बरणेनोन्मल्लयाणसम्भा ।
एवै कथे पठन् कुमरीणमीमं
कंडारिकुण्ठ पमङ्ग पुत्रो दुर्मो’ (कण्ठ)।
कंडावेन्नी की [कण्डवन्नी] बनसिन्धु-विरोध
(पण्ड १)।

कंडिज वि [कण्डिज] साक-मुचय किया हुआ
(वि १ ११५)।

कंडियायज न [कण्डियायज] रेखाती
(विहार) का एक श्रेय (सा १५)।

कंडिज पुं [कण्डिज] १ कारिज्म-गोत्र
का प्रवर्तक अधि-विरोध । २ पुं की कारिज्म
गोत्र जलस । ३ न गोत्र-विरोध को मान्यक
गोत्र की एक शाला है (अ ४-पत्र १६)।
[यण पुं [यण] स्वनाम-स्वात अधि-
विरोध (कंड १)।

कंडू रेवो कंडू (उज)।

कंडू रेवो कंडू (सुध १ ३)।

कंडू रेवो [कण्डू] कुनबाता । कंडूरे
(है १ १२१ ज्म) कंडूरे (वि १४२)।
बहु कंडूरेत (बा ४१) कंडूरेमाय
(मासु २८)।

कंडूरे पुं [कण्डूरे] हलवाई, पिछाई रेवने-
बाता ‘पया विचदं क्यो कंडूरेस कल
कण्डूरेपरी’ (मायम)।

कंडूरे पुं [कण्डूरे] दैव (है १ १६,
कंडबा } उज)।

कंडूरेनुय वि [कण्डूरेनुय] बाघ की उज
बीसा (स ११८ गा १२२)।

कंडूरेया वि [कण्डूरेया] कुनबातेबाता (दीप)।

कंडूरेयन [कण्डूरेयन] १ कुनबी बाज
पामा रोक-विरोध । २ कुनबाता ‘पामागि

सस बहा कंडूरेयुं कुनमेन मुबस’ (ध
११३ अ २१५ टी गज)।

कंडूरेय रेवो कंडूरेया ‘अकंडूरेय’ (पण्ड
२, १—पत्र १)।

कंडूरे पुं [कण्डूरे] स्वनाम-स्वात एक उजा
जिससे रामचन्द्र के माई भरत के बाघ बैनी
शीसा की पी (पत्रम ८५, ५)।

कंडू की [कण्डू] १ कुनबाता कुनबाता
(शायी १ ५) । २ रोम-विरोध पामा बाज
(शायी १ १३)।

कंडूरे की [कण्डूरे] ऊपर रेवो (गा ११२;
सुर १ ११)।

कंडूरेज न [कण्डूरेज] कुनबाता (सुध १
१ ३ गा १८१)।

कंडूरे रेवो कंडूरे = कण्डूरे । कंडूरे (महा)।
बहु कंडूरेयमा (महा)।

कंडूरेया वि [कण्डूरेया] कुनबातेबाता (अ
१ १)।

कंडूरेया रेवो कंडूरेय (उज २१६, सुधा
१०२ २२७)।

कंडूरेय रेवो कंडूरेया (महा)।

कंडूरे पुं [रे] कंडूरे (वि २ २)।

कंडूरे वि [कण्डूरे] बाजबाता कण्डूरेयुं
(कुमा)।

कंडूरे सन् [कण्डूरे] १ कण्डूरे, केला । २
काठना बरखे से घुटा बनाता ‘घण्टा कंडूरे
कण्डूरे’ (सुध १ ८, १)। कंडूरे (विज्म
१२)।

कंडूरे वि [कण्डूरे] १ मण्डूरे, सुधरे (कुमा)।
२ पालित बाजिज (शायी १ १)। ३
पुं पति स्वामी (पत्रम)। ४ के विरोध (सुध
१६)। ५ न. कण्डूरे प्रमा (पाषा २१६)।

कंडूरे वि [कण्डूरे] न उजय हुआ (प्राय)।

कंडूरे की [कण्डूरे] १ की गारी (सुर १
१५ सुधा १७१)। २ उजय की एक पत्नी
का नाम (पत्रम ७५ ११)। ३ एक योग-
हति (उज)।

कंडूरे न [कण्डूरे] १ धरम बंज
(पत्रम)। २ कुंड, इपित । ३ विपत्तय । ४
पावस (कण्ठ)।

कंडूरे पुं [कण्डूरे] कण्डूरे-विरोध
मण्डूरे, कंडूरे (धम्मप १६१)।

कंडूरे की [कण्डूरे] १ वेन प्रकाश (सुर २,
१३६)। २ सोमा सौवर्ध (पाष)। ३ इस
नाम की उजय की एक पत्नी (पत्रम ७५
११)। ४ घडिजा (पण्ड २, १)। ५ इच्छा।

१ कण्डूरे एक कला (उज वि १ ७)।

पुं की [कण्डूरे] मण्डूरे-विरोध (टी)। म,
वि [कण्डूरे] कण्डूरेयुं (मायम गज)

सुधा ८ १८८)।

कंडूरे की [कण्डूरे] १ पञ्चिर्तन डेरकार ।
२ गमन पति (माट—विज्म ६)।

कंडूरे पुं [रे] काम कामने (वि २ १)।

कंडूरे } पुं [कण्डूरे] बाघ की एक बाजि
कंडूरे } (अ ४ १ ज्म २१) ‘बहा से
कंडूरे } कंडूरेया प्रामने कंडूरे दिया’
(उज ११)।

कंडूरे की [कण्डूरे] कंडूरे उजयी गुरने बह
से बहा हुआ बोका (है १ १८७)।

कंडूरे पुं [कण्डूरे] कुन-विरोध (उज २२
टी)।

कंडूरेया वि [कण्डूरेया, टी] कुन
कंडूरेया } विरोध (उज १ ११ टी)। बज
न [कण्डूरे] ज्मने के समीप का एक जल

बहा मण्डूरेयुं कुनार-नामक बैन मुनि से मन
उज बत किया बा (पाष)।

कंडूरे पुं [कण्डूरे] कुन-विरोध (उज)।

कण्डूरे की [कण्डूरे] कण्डूरेयुं कुन-विरोध
(उज १ २)।

कंडूरे सन् [कण्डूरे] कंडूरेया रोना । कंडूरे (वि
१११)। सुधा कण्डूरे (वि १११)। बहु
कंडूरे (गा १८४) कण्डूरेमाण (शायी
१ १)।

कंडूरे वि [रे] १ हड मण्डूरे । २ मण्डूरे
जलत । ३ न स्वरण बाज्जान, (वि २,
११)।

कंडूरे पुं [कण्डूरे, कण्डूरे] कण्डूरे रेवो की एक
बाजि (उज १ ३—पत्र २२)।

कंडूरे पुं [कण्डूरे] १ सुधरे मीर बिगा रेवो की
बहा; कण्डूरेयुं, सुधरे कण्डूरेयुं, विज्म १०८,
मोल गाज, साधुन कण्डूरे (की ६)। २
मुन बज (पत्रम)। ३ कण्डूरे विरोध (विज्म)।

कंडूरे पुं [कण्डूरे] कण्डूरेयुं, पबान (कुमा
है २ ५ वृ)।

कंस न [कंस] ? कानु विरोध कांसा । २
बाध-विरोध । २ परिमाण विरोध । ४ बस
वीने का पीन प्यासा (दि १ २६, ७) ।
'वास न [वाल] बाध-विरोध (बीर ३) ।
'पसी, पाई की [पासी] बाधा का बना
हुआ पात्र-विरोध (कण ठा २) । पाय न
[पात्र] बाधा का बना हुआ पात्र (बस ६) ।

कंसारी नु [के] कसार, एक प्रकार की मिट्टी,
'ता कच्छण कंसारी लालपुत्रसंयुक्त वेग
विशमोमर्ग गोले उल्लेखि एयाए' (स १८७) ।
कंसारी की [के] शीघ्रिय धुन कानु की एक
वालि (बी १८) ।

कंसाल नु [कंसाल] बाध-विरोध (दि २
२५; गुण २) ।

कंसाला की [कंसाला, कंसाला] बाध
का एक प्रकार का निर्मित तात (एलि) ।

कंसालिया की [कंसालिया] एक प्रकार
का बाध (गुण २५२) ।

कंसिम नु [कंसिम] ? बसप कंसारी
बाध-कार (दि १ ७) । २ बाध विरोध
(मुना २५२) ।

कंसिमा की [कंसिम] ? तल (एया १
१७) । २ बाध-विरोध (माया २) ।

कंसमि नु [के] कंसमि 'कंसम
विमर्श कंसमि' (मुम १ २ २,
१२) ।

कंसुप } बेरो कंसु = कंसु (वि १ ३)
कंसुम } ह २, १७५) ।

कंसुद बेरो कंसु = कंसु (ठा २, एया
१ १७ विना १ २) । ३ हिरिह का एक
राम (पत्र २२ २६) ।

कंसुद बेरो कंसु (बह) ।

कंस नु [कंस] ? उत्तम-अध्य, लोहर पर
का तेल दूर करने के लिए लगाया जाता अध्य
(मुम १ २ निपु १) । २ न पात्र (म
१२ ३) । ३ माय, कट (स ७६) ।
गारा न [गुन] माया कट (एण्ड १
२-पत्र २७) ।

कंस नु [कंस] ? कंस बाध उत्तम अध्य
(बस ६, १४) । २ प्रभुवि रोध बाध में
दिना बाधा धार-पात्र । ३ सोम बाधि से

उत्तम (पत्र २-गाथा ११३) । कुरुपा की
[कुरुपा] माया कट (पत्र २) ।

कंस नु [कंस] ? बसमरी का एक बेव-कृत
प्रासर (उत्त ११ ११) । २ पति-विरोध
कंस राधि (पसी १६) ।

कंस नु [कंस] ? बसमरी का एक बेव-कृत
(ठा २ ३) ।

कंस नु [कंस] ? बसमरी का एक बेव-कृत
(ठा २ ३) ।

कंस नु [कंस] ? बसमरी का एक बेव-कृत
(ठा २ ३) ।

कंस नु [कंस] ? बसमरी का एक बेव-कृत
(ठा २ ३) ।

कंस नु [कंस] ? बसमरी का एक बेव-कृत
(ठा २ ३) ।

कंस नु [कंस] ? बसमरी का एक बेव-कृत
(ठा २ ३) ।

कंस नु [कंस] ? बसमरी का एक बेव-कृत
(ठा २ ३) ।

कंस नु [कंस] ? बसमरी का एक बेव-कृत
(ठा २ ३) ।

कंस नु [कंस] ? बसमरी का एक बेव-कृत
(ठा २ ३) ।

कंस नु [कंस] ? बसमरी का एक बेव-कृत
(ठा २ ३) ।

कंस नु [कंस] ? बसमरी का एक बेव-कृत
(ठा २ ३) ।

कंस नु [कंस] ? बसमरी का एक बेव-कृत
(ठा २ ३) ।

कंस नु [कंस] ? बसमरी का एक बेव-कृत
(ठा २ ३) ।

कंस नु [कंस] ? बसमरी का एक बेव-कृत
(ठा २ ३) ।

कंस नु [कंस] ? बसमरी का एक बेव-कृत
(ठा २ ३) ।

कंस नु [कंस] ? बसमरी का एक बेव-कृत
(ठा २ ३) ।

कंस नु [कंस] ? बसमरी का एक बेव-कृत
(ठा २ ३) ।

कंस नु [कंस] ? बसमरी का एक बेव-कृत
(ठा २ ३) ।

कंस नु [कंस] ? बसमरी का एक बेव-कृत
(ठा २ ३) ।

कंस नु [कंस] ? बसमरी का एक बेव-कृत
(ठा २ ३) ।

कंस नु [कंस] ? बसमरी का एक बेव-कृत
(ठा २ ३) ।

कंस नु [कंस] ? बसमरी का एक बेव-कृत
(ठा २ ३) ।

कंस नु [कंस] ? बसमरी का एक बेव-कृत
(ठा २ ३) ।

कंस नु [कंस] ? बसमरी का एक बेव-कृत
(ठा २ ३) ।

कंस नु [कंस] ? बसमरी का एक बेव-कृत
(ठा २ ३) ।

कंस नु [कंस] ? बसमरी का एक बेव-कृत
(ठा २ ३) ।

कंस नु [कंस] ? बसमरी का एक बेव-कृत
(ठा २ ३) ।

कंस नु [कंस] ? बसमरी का एक बेव-कृत
(ठा २ ३) ।

कंस नु [कंस] ? बसमरी का एक बेव-कृत
(ठा २ ३) ।

कंस नु [कंस] ? बसमरी का एक बेव-कृत
(ठा २ ३) ।

कंस नु [कंस] ? बसमरी का एक बेव-कृत
(ठा २ ३) ।

कंसाला की [कंसाला] ? कंसाला
बसी, कंसाला का बाध, 'कंसाला मोक्षमि
लपेटा' (मुम ५६) ।

कंसाला नु [के] कंसाला गिरिपति मुनरावी
में 'कंसाला' (दि २ ३) ।

कंसाला नु [कंसाला] कंसाला में होनेवाला
पात्रविरोध का एक रत्ना (ली) ।

कंसाला न [कंसाला] मांस (मुम १ ११) ।

कंसाला न [कंसाला] रत्न की एक वालि
(बस ५५ १ ७२) ।

कंसाला नु [कंसाला] गिरि-विरोध की एक
वालि (मुम २ २) ।

कंसाला न [कंसाला] गिरि-विरोध करीत
कंसाला (पत्र) । बेरो कंसाला ।

कंसाला नु [कंसाला] कंसाला का बस
कंसाला का पात्र (पात्र १-पत्र १३) ।

कंसाला न [कंसाला] बेरो कंसाला ।

२ नु धनुषगिरि-मालेक एक मात-पात्र ।

३ उष्ण बाधास पर्वत (मग ३ १ १६) ।

कंसाला नु [कंसाला] ? बस-विरोध कील
कीली के बस का एक बेव (गव ३ ७६) ।

२ न. कंस-विरोध की धुपकी होता है (पत्र
२ २) । बेरो कंसाला ।

कंसाला की [कंसाला] बस-विरोध (मुम
२५२) ।

कंसाला बेरो कंसाला = कंस (उष्ण कंस गुर १
५८ पत्र ५५ १ वि ११५ ५२) ।

कंसाला वि [कंसाला] ? कंसाला-पात्र । २ नु
बसा का बैव (ठु ३६) ।

कंसाला बेरो कंसाला (मग ५१ ठा १ १;
गव ८ ५७) ।

कंसाला वि [के] नील, गूट (दि १ ११ कंस-
वाधा बाध) ।

कंसाला की [के] कंसाला (दि २ २)
(६) ।

कंसाला [के] बेरो कंसाला (पत्र) ।

कंसाला बेरो कंसाला = कंसाला (पात्र एया
१ ८ गुर ११ २२२) ।

कंसाला नु [के] ? कंसाला वि विविध
नदीय । २ विना दूध की मलाई (दि
२, २५) ।

कंसाला नु [के] ? विना, दूध का निकाल,
दूध की मलाई (दि २ २२) ।

कचुल पुं [कचुल] पुष्प-विशेष (पण १-य १२)।

कचुल पुं [कचुल] स्वनाम स्थात एक कार-भुजि (गण १ १६)।

कचुल देवी कचुल (ग्राम ७२)।

कचुली की [क] कचुली की लोदी (रमा-टि)।

कचि [कार्य] ? को जिया बाप कह। २ करते योग्य। ३ जो जिया का एक (हे २ २४)। ४ न. प्रयोग छरेय 'न म माहेर कचय' (ग्राम २७ नपु)। ५ हाणव हेतु (न २)। ६ काय काय

'धमह परिचिचिचय'।

छरित-कुचपण विपण।

परिणमद घनह विषय

कचारी की निश्चिपण

(दुर ४ १६)।

जाग बि [क] कार्य का जालेनामा (उप १४८)। मेण पुं [सिन] प्रतीक उत्पत्ति

नाम में उत्पन्न स्वनाम स्थात एक कुचकर

गुण (न १३)।

कचुला (की) की [कचुला] कच्चा कुमापि

(मा २७)।

कचुल पुं [क] कार्य (हे २, १७)।

कचुलाय वि [कचुलाय] का जिया बापा

हा कह 'कचय' क चयमापण' क चयमिपण

क चयम' (ग्राम १ ८)।

कचुल न [कचुल] ? काय न मयी। २

घमन मुला (हुमा)। 'पेमा की

[प्रमा] मुला-नामक जम्बू-द्वीप की उत्तर

दिशा में स्थित एक पुष्पिणी (बी ३)।

कचुल-अ वि [कचुलित] ? बाजवना।

२ स्वाय कण (नाम)।

कचुली की [कचुली] कचुली-द्वीप

की उत्तर एग बादा पाव विमर्ष बाजव

बहुत होज है कचुली (न १४)।

१-य १६)।

कचुल पुं [कचुल] पुष्प-विशेष (पण १-य १२)।

कचुल पुं [कचुल] स्वनाम स्थात एक कार-भुजि (गण १ १६)।

कचुल देवी कचुल (ग्राम ७२)।

कचुली की [क] कचुली की लोदी (रमा-टि)।

कचि [कार्य] ? को जिया बाप कह। २ करते योग्य। ३ जो जिया का एक (हे २ २४)। ४ न. प्रयोग छरेय 'न म माहेर कचय' (ग्राम २७ नपु)। ५ हाणव हेतु (न २)। ६ काय काय

'धमह परिचिचिचय'।

छरित-कुचपण विपण।

परिणमद घनह विषय

कचारी की निश्चिपण

(दुर ४ १६)।

जाग बि [क] कार्य का जालेनामा (उप १४८)। मेण पुं [सिन] प्रतीक उत्पत्ति

नाम में उत्पन्न स्वनाम स्थात एक कुचकर

गुण (न १३)।

कचुला (की) की [कचुला] कच्चा कुमापि

(मा २७)।

कचुल पुं [क] कार्य (हे २, १७)।

कचुलाय वि [कचुलाय] का जिया बापा

हा कह 'कचय' क चयमापण' क चयमिपण

क चयम' (ग्राम १ ८)।

कचुल न [कचुल] ? काय न मयी। २

घमन मुला (हुमा)। 'पेमा की

[प्रमा] मुला-नामक जम्बू-द्वीप की उत्तर

दिशा में स्थित एक पुष्पिणी (बी ३)।

कचुल-अ वि [कचुलित] ? बाजवना।

२ स्वाय कण (नाम)।

कचुली की [कचुली] कचुली-द्वीप

की उत्तर एग बादा पाव विमर्ष बाजव

बहुत होज है कचुली (न १४)।

१-य १६)।

कटोरा पुं [क] कटोरा प्याला पान-विशेष

उभो पार्श्वों पर कटोरा कटोरा मंडुपा

मिपाया य ठिकी-वि (वि १)।

कटु न [कट] ? दुःख पीड़ा कषा (हुमा)।

२ पत। ३ बि कट-नामक पीड़ा-कारक

(हे २ २४ २)। ४ न [कट] कट-

पण काठ की बनी हुई बाछी-गरी (गुर २

१८१)।

कटु न [कट] काठ लकड़ी (हुमा मुना

१२४)। २ पुं पण-गुद गुर का निरामी

लक स्वनाम-काल पेटी। (घाम)। कर्म-न

न [कमाम] लकड़ी का कारणाता (घापा

२ २)। कटन न [कटन] स्वनाम-नामक

पुस्तक के एक सेत का नाम (कप)। कार

पुं [कार] काठ-कर्म से कीरिया जालनामा

(पण)। कोरुष पुं [कोरुष] हुन की

शाला के नीचे मुला हुमा धन-धन (पण)

शाय पुं [शाय] की-विशेष हुन (अ

४)। दल न [दल] दूर की शान

(पण)। पाया की [पाया] काठ का

पना पना (पण ४)। पुच्छिपा की

[पुच्छिपा] कटुली (पण)। पेमा

की [पिया] ? शृंग गीरु का कषा। २

पण न लकी हुई लकड़ की दल (उपा)

महु न [महु] कट-नामक (हुमा)।

मून न [मून] दूर पण विमर्षा को

कटु समान हुमा है ऐसा बना शृंग

मय (रह १)। दार पुं [दार] की-वि

कटु-विशेष दूर की-विशेष (बी १)।

दाराय पुं [दाराय] कटुय, लकड़-दाराय

(सुपा २२६) । २ वि बोधवेत्ता, मार्क्यक (ज ५ २००) ।

कड्डुणया श्री [कर्मणा] मार्क्यक (ज ५ २००) ।

कड्डुणयि वि [कर्मिण] बोधवाया ह्य, भारि किल्लवाया ह्य (अधि) ।

कड्डुणम वि [वे] बहुरिक्ता ह्यमा पुनरादी में 'कावे' 'तो शरीरि' गुराज न् कडिमी कुट्टिअ बहि' (सिदि १ २) ।

कड्डुणय वि [कट्ट] १ पाकट, बोधा ह्य (पण्ड १ १) । २ पठि जन्माणि (स १ २) ।

कड्डोकर न [करांपठ्य] बोधाण (ज १ १) ।

कड्ड एक [कड्] १ बाध करना । २ ज्ञासना । ३ उपाता बध करना । कड्ड (हे ४ २२) । कड्ड कडमाण (सि २२१) । कड्ड 'वादा बंध एव विषय' दे रे कड्डविस्से' (सुपा १२) । कड्डिअमाय (वि २२१) ।

कड्डकड्डवि वि [कड्डकड्डावमान] कड-कड धाताज कडा (पण्ड २१ १) ।

कड्डन न [कडन] कडन करना 'एवकुले' बंधन बंधनसारा' सिद्धि' (सुप २२१) ।

कड्डिअ न [वे] कडी (सिदि १२४) ।

कड्डिअ वि [कडिअ] १ ज्ञाता ह्य । २ बध पठ विद्या ह्य । 'कडिमी कड्ड विषयो मरुदुमी एव बाण' (सा २० धोव १४०) सुपा ४२१) ।

कडिआ श्री [वे] कडी मोक्षन-विसेव (हे २ १०) ।

कडिआ वि [कडिअ] १ कडिअ कर्म, कडिअज १ कडिअ, पण्ड (पण्ड १ १ पाप) ।

२ न गुरु-विसेव (पापा २ १ १) । ३ पठि पठा (पण्ड २ १) ।

कडिअ वि [कडिअ] १ कडिअ पण्ड सिद्धि । २ पुं, इत नाम का एक उपा (पण्ड १२ २१) ।

कड्ड एक [कड्ड] कड्ड करना धाताज कडा । नगर (हे ४ २१२) । कड्ड-कडिअ (सुप १ २१ नया ११) ।

कड्ड एक [कड्] धाताज कडा । कड्ड (हे ४ २१२) ।

कड्ड पुं [कड्] १ कड्ड सेव; 'गुरुकणमि परिचि' न कड्ड (सा ३१) । २ विस्तीर्ण बना (सुमा) । ३ बलसति-विसेव (पण्ड १) । ४ पुं एक म्नेत्र सेव (पण्ड) ।

१ कड्ड-विसेव ब्रह्मिष्ठायक सेव-विसेव (ज २, १—पण्ड ३०) । २ एवकुल बोधन (ज २, १) । ३ कडिअ (पापा २, १) ।

४ विष्णु 'मिदुस्य' कण्ठ्य' (पाप) । ५ अ वि [कड्] कडिअ (पाप) । [कड्ड] पुं [कड्ड] बोधन की बो धी हई एक कड्ड बल; 'कण्डुअ बधाय' विष्णु दुवर सुवरी' (ज १२) । पुपडिया श्री [पुपडिअ] बोधन-विसेव कडिअ (पापा) की कडिअ हई एक कड्ड बल (पापा २१) ।

मन्त्र पुं [मन्त्र] कैटिक मन्त्र का प्रवर्तक एक अधि (पण्ड) । विदि श्री [विदि] विद्या शोध (सुपा २१४) ।

विद्यापु पुं [विद्यापु] सेवो कड्डा-विद्यापु (पण्ड २, १४) । संवायय पुं [संवायय] सेवो कड्डा-संवायय (पण्ड) । १ पुं [वि] कैटिक मन्त्र का प्रवर्तक अधि (सिदि २१४) । २ पण्ड वि [वि] विष्णु (पाप) ।

कड्ड पुं [कड्ड] कड्ड, धाताज (स ५ १ १) । कड्डकड्ड पुं [कड्डकड्ड] इत नाम का एक उपा (सिदि) ।

कड्डापुर न [कड्डपुर] नगर-विसेव को गुराज बल के भारी कड्ड की उपाधी श्री (सी) ।

कड्डापुर पुं [कड्डपुर] कडिअ, बलसति विसेव (पण्ड १—पण्ड १२) ।

कड्डापुर पुं [वे] शुक्ल वेत्ता सुपा, सुपा (हे ४ २१ नया पाप) ।

कड्डा श्री [वे] लता कडी (हे २ २२, पण्ड ४ २१२ पाप) ।

कड्डा न [कड्डा] धाताज का एक प्रकार का हविष्यार (विपा १ १) ।

कड्डा पुं [कड्डा] कड्ड-कड्ड धाताज (पाप) ।

कड्डा कड्डा कड्ड [वे] कड्ड-कड्ड धाताज करना । कड्डाकड्डा (पण्ड २१ २१) ।

कड्डा कड्डा कड्डा (पण्ड २१ २१) । कड्डा कड्डा पुं [कड्डाकड्ड] कड्ड-विसेव, ब्रह्मिष्ठायक सेव विसेव (ज २ १) ।

कड्डा कड्डा वि [कड्डाकड्डा] कड्ड-कड्ड धाताज (कड्ड) ।

कड्डा कड्डा न [वे] ज्ञात-विसेव (सिदि १ १) । कड्डा वि [कड्डा] सुवरी-ल पापा ह्य (कड्डा) (पापा २ १ १) । पड्ड वि [पड्ड] सेवो का पड्डा (पापा २, १, १ १) ।

कड्डा सेवो कड्ड (कड्ड) । कड्डा [वे] सेवो कड्डा—(वे) (पण्ड १ २) ।

कड्डा पुं [कड्डा] १ कड्ड विसेव ब्रह्मिष्ठायक सेव विसेव (ज २ १—पण्ड ३०) । २ सेव-विसेव कड्डा-विसेव को धाताज से विद्या (वे) (पण्ड ११, मा श्री १) । ३ विष्णु । ४ उपाधी कड्डा (पण्ड) । ५ इतर श्री का कड्डा सेव (सुप ११) । ६ विस्णु कड्ड सेव का वेद (कड्डा १) । ७ कड्डा पुं [कड्डा] सेवो कड्डा (सिदि १४—श्री १) । कड्ड वि [कड्डा] कड्डा-विसेव को कड्डा धाताज (पापा २, १, १) । २ पुं सेव-विसेव (सी) ।

कड्ड न [कड्ड] १ पण्ड-विसेव का एक विस्वर (सिदि ४) । २ पुं, स्वर्ण मय विस्वरवाता बध (सी १) । कड्ड पुं [कड्ड] इत नाम का एक उपा (पापा १ १४) ।

गिरि पुं [गिरि] १ सेव पण्ड । २ स्वर्ण-मय पण्ड (सी) । कड्ड पुं [कड्ड] इत नाम का एक उपा (पापा १ १४) ।

गिरि पुं [गिरि] १ सेव पण्ड । २ स्वर्ण-मय पण्ड (सी) । कड्ड पुं [कड्ड] इत नाम का एक उपा (पापा १ १४) ।

गिरि पुं [गिरि] १ सेव पण्ड । २ स्वर्ण-मय पण्ड (सी) । कड्ड पुं [कड्ड] इत नाम का एक उपा (पापा १ १४) ।

गिरि पुं [गिरि] १ सेव पण्ड । २ स्वर्ण-मय पण्ड (सी) । कड्ड पुं [कड्ड] इत नाम का एक उपा (पापा १ १४) ।

गिरि पुं [गिरि] १ सेव पण्ड । २ स्वर्ण-मय पण्ड (सी) । कड्ड पुं [कड्ड] इत नाम का एक उपा (पापा १ १४) ।

गिरि पुं [गिरि] १ सेव पण्ड । २ स्वर्ण-मय पण्ड (सी) । कड्ड पुं [कड्ड] इत नाम का एक उपा (पापा १ १४) ।

गिरि पुं [गिरि] १ सेव पण्ड । २ स्वर्ण-मय पण्ड (सी) । कड्ड पुं [कड्ड] इत नाम का एक उपा (पापा १ १४) ।

गिरि पुं [गिरि] १ सेव पण्ड । २ स्वर्ण-मय पण्ड (सी) । कड्ड पुं [कड्ड] इत नाम का एक उपा (पापा १ १४) ।

गिरि पुं [गिरि] १ सेव पण्ड । २ स्वर्ण-मय पण्ड (सी) । कड्ड पुं [कड्ड] इत नाम का एक उपा (पापा १ १४) ।

गिरि पुं [गिरि] १ सेव पण्ड । २ स्वर्ण-मय पण्ड (सी) । कड्ड पुं [कड्ड] इत नाम का एक उपा (पापा १ १४) ।

गिरि पुं [गिरि] १ सेव पण्ड । २ स्वर्ण-मय पण्ड (सी) । कड्ड पुं [कड्ड] इत नाम का एक उपा (पापा १ १४) ।

गिरि पुं [गिरि] १ सेव पण्ड । २ स्वर्ण-मय पण्ड (सी) । कड्ड पुं [कड्ड] इत नाम का एक उपा (पापा १ १४) ।

गिरि पुं [गिरि] १ सेव पण्ड । २ स्वर्ण-मय पण्ड (सी) । कड्ड पुं [कड्ड] इत नाम का एक उपा (पापा १ १४) ।

कर्मोद्दिष्टा स्त्री [दे] ग्रन्था, पुष्पिणी (दे २ २१)।

कर्मर बेहो कर्मिभार (दे १ १९) ; सि २३८)।

कर्मर } स्त्री [कर्मर] हस्तिकी हस्तिकी
कर्मिभार } (दे २, ११९) दुमा छाया १
१—पत्र १४)।

कर्मोपपन्न म [दे] पत्र किया हुआ मत्त ठेक
बरीख (दे २ १९)।

कर्म पुं [कर्म] पत्रि-विशेष कर्म-पत्रि
'होरो व कर्मणि वृष्ट उचो' (पत्रम १७
३१)।

कर्म पुं [कर्म] इस नामका एक परिचायक
कर्मि-विशेष (मोप धर्मि २९२)।

कर्म पुं [कर्म] १ कोटि मत्त धराण (मुक्त
१)। २ एक स्मृति-पत्रि (मुक्त १३२)।

कर्म पुं [कर्म] १ काल धराण बीज
'कर्मणः' (सि १३, प्राप् २)। २ पुं मत्त
देह का इस नाम का एक राजा बुधिर
का बड़ा भाई (छाया १ १९)। ३ काला
बलु के छोर का एक मत्त (धन मूत्र २१
२३)। 'उर उर म [कर्म] काल का
धामपुत्र (पत्र १३३)। गह स्त्री

[गति] मत्त-पत्रिणी एक बारी (मो १)।

कर्मसिद्धि पुं [कर्मसिद्धि] पुनःपुन
देह का बाधनी राजा की एक मत्त की
राजा (ही)। पुन पुं [कर्म] विज्ञान की

देखनी राजा की का ही-पुन-देखनी एक राजा
(मो)। बार पुं [बार] नाथिक निर्मायक

(छाया १)। वाटरण पुं [वाटरण]
१ इस नाम का एक मत्त (सि २)। २ उर मत्त
की व लिलानी (पत्र १)। पत्रण

बेहो वाटरण (ह)। पीठ म [पीठ]
काल का एक प्रकार का धामपुत्र (ध १)।

पूर बेहो उर (छाया १)। रत्ता स्त्री
[रत्ता] लो-विशेष (पत्र ४ ११)।

बाधिया स्त्री [बाधिया] बल के ऊपर
मत्त में वृद्धा काला एक प्रकार का धामपुत्र

(ही)। बेहिया म [बेहिया] कर्म
विशेष कर्मोपपन्न (पील)। सककुम्भी स्त्री

[सककुम्भी] १ काल का छिद्र। २ काल की
संभार (छाया १)। सोहण म

[सोहण] काल का मत्त निकलने का एक
कर्मण (सि ४)। बार पुं [बार] बेहो

बार (मत्त २४ स १२७)। बेहो कर्म।

कर्मभार बेहो कर्मिभार (प्रा १)।

कर्मउत्त पुं [कर्मउत्त] १ कर्म-विशेष
बीज का वृद्धा बीर मत्त का मत्त के बीज का

देह। २ म उर देह का प्रधान मत्त, जिसको
पात्रक 'नमीन' कहते हैं (पी कर्म)।

कर्मवास म [दे] काल का धामपुत्र—
गुणन बरीख (दे २ २१)।

कर्मगा बेहो कर्मगा (वा ४)।

कर्मगुहरी स्त्री [दे] गृह-बीज विराजनी (दे
२ १३)।

कर्मय (य) बेहो कर्म (दे ४ ४१२)
४१३)।

कर्मय (य) वि [कर्मय] १ कर्म-विशेष
कर्मय। २ वि उर देह का निवासी

(सि)।

कर्मोपपन्न पुं [कर्मोपपन्न] बेहो कर्मि
संभार (मुक्त १ १९)।

कर्मपुत्र पुं [कर्मपुत्र] ऊपर बेहो (मुक्त १
१९ टी)।

कर्मस वि [कर्मस] धर्मन बनन (उर
३)।

कर्मसरिय वि [दे] १ काली मत्त से देहा
हुया। २ म काली मत्त से देहा (दे २
२४)।

कर्म्या स्त्री [कर्म्या] १ गोविन्द-राज-मत्त
एक पत्रि। २ काल, लक्ष्मी दुमापी (कर्म
१ २२)। बाधय म [बाधय] मत्त

विशेष कर्मण (सि)। गव म [गव]
बीज देह का एक प्रधान मत्त 'बीजोपाक-

यस कर्मणोपपन्न' (ही)। कर्म म
[कर्म] कर्म के विषय में बोला जाता

मत्त (पत्र १ १)।

कर्ममास म [दे] काल का धामपुत्र—
गुणन बरीख (दे २ २१)।

कर्मार्थय म [दे] काल का धामपुत्र—
गुणन बरीख (दे २ २१)।

कर्म्या पुं [कर्म्या] १ कर्म-विशेष, जो
पात्रक 'कर्मय' नाम से प्रसिद्ध है। २

वि उर देह में उत्पन्न बड़ी का निवासी
(कर्म)।

कर्ममास पुं [दे] पर्यन्त मत्त-मास (दे २
१४)।

कर्मि पुं [कर्मि] एक मत्त-स्थान (सि २
२९)।

कर्मिआ स्त्री [कर्मिआ] १ पत्र-मत्त, मत्त
का बीज-मत्त (दे १ १४)। २ बीज

मत्त (कर्म ठा ८)। ३ काली बरीख के बीज
का मत्त-मत्त पुन-मत्त (ठा १)।

कर्मिआ पुं [कर्मिआ] १ पुन-विशेष
कर्म का मत्त (छाया १ २३, प्राप्)।

२ मीरान्त का एक मत्त (मय १४ १)।

३ म कर्म का पुन (छाया १ २)।

कर्मिआयन म [कर्मिआयन] मत्त-विशेष
का एक मत्त (ह)।

कर्म्याह स्त्री कर्म्याह।

कर्मोपपन्न म [कर्मोपपन्न] काल का धामपुत्र-
विशेष (कर्म)।

कर्मर बेहो कर्मिभार (दे १ १९)।

कर्मोपपन्न स्त्री [दे] कर्म की वृद्ध
गुणन गुणोपपन्न स्त्री (दे २ २२)।

कर्मोपपन्न स्त्री [दे] कर्म की वृद्ध
गुणन गुणोपपन्न स्त्री (दे २ २२)।

कर्मोपपन्न पुं [कर्मोपपन्न] कर्म की वृद्ध
गुणन गुणोपपन्न पुं (दे २ २२)।

कर्मोपपन्न पुं [कर्मोपपन्न] कर्म की वृद्ध
गुणन गुणोपपन्न पुं (दे २ २२)।

कर्मोपपन्न पुं [कर्मोपपन्न] कर्म की वृद्ध
गुणन गुणोपपन्न पुं (दे २ २२)।

कर्मोपपन्न पुं [कर्मोपपन्न] कर्म की वृद्ध
गुणन गुणोपपन्न पुं (दे २ २२)।

कर्मोपपन्न पुं [कर्मोपपन्न] कर्म की वृद्ध
गुणन गुणोपपन्न पुं (दे २ २२)।

कर्मोपपन्न पुं [कर्मोपपन्न] कर्म की वृद्ध
गुणन गुणोपपन्न पुं (दे २ २२)।

कर्मोपपन्न पुं [कर्मोपपन्न] कर्म की वृद्ध
गुणन गुणोपपन्न पुं (दे २ २२)।

कलेवाता एक ज्यसक (मुवा १२२) । ४ विजय की सुधीय यथाधी का एक प्रविज वैज्याचार्य, विजयार विजय मठ के प्रवर्तक शिवशिवि मुनि के पुत्र (विजे २२२१) । १ काला बहो (बाबा) । १ इत नाम का एक परिचानक तावत (पीत) । ४ विजयाम-करी काला रंजना (मुवा) । आराध दु [ओराध] बलसिन्धि-विरोध (पण १—पत्र १४) । कर्ण दु [कर्ण] बलसिन्धि-विरोध बलसिन्धि (पण १—पत्र १५) । कणिंग याद दु [कर्णिग] कापी कनेर का माध (जीव १) । कुमारा दु [कुमारा] राजा बंशिक का एक पुत्र (निर ४) । गोमा स्त्री [गामिन्] काबा श्रुपाका 'कल्योयोनी' कहा बिजा, कर्ता का विविचय (बन १) । नाम न [नामन्] कर्म-विरोध जिसके उजब से कोष का शरीर बना होता है (राज) । पञ्चनय वि [पाञ्चिक] १ कूर कर्म कलबासा (मुम २, २) । २ बहुत बाल एक सहाय में प्रत्युप कलबासा (जीव) (अ १) । बंसुमाय दु [बंसुमाय] इत विरोध स्वाम गुणरासा इतुरिया (जीव २) । मूस मास दु [मूस] कापी कपीत (घासम विजे १८२) । रा राइ स्त्री [राजि जी] १ कापी रेखा (घा १, २, ४) । २ एक इराणी ईशान्य की एक प्रस-महिषी (अ ८ जीव ४) । ३ 'रादा' पर्वतवा' गुन का एक घामन—गिरिधोर (छाया २) । रयि दु [रयि] इत नाम का एक श्रमि विजवा जय सहायकी नवी में हुवा का (दी) । 'सिस्' 'सिस्स वि [सिस्स] इत्य-वेयावाता (मम) । 'सिस्स' लस्सा स्त्री [निरया] पीत का कति निहट कः—गिरिणाम बरुप-कुनि (मम मम ११ डा ११) । बरिसय बरिसय न [वर्तमक] एक देव-विमल (एका छाया २) । बरि बरि स्त्री [बरि, दी] कपी सिरोध भावयनी कवा (पाण १) । मय्य दु [मय्य] १ कावा मय (जीव १) । २ पाट (मुज २) । रैतो कट्ट ।

कण्डू य [कण्डू] किसी में (मुप १ १ १) । रैता कण्डू ।

कण्डा स्त्री [कण्डा] १ एक इराणी स्त्री नेत्र की एक प्रस-महिषी (अ ८—पत्र ४२२) । २ एक घल्लन स्त्री (बं २२) । ३ शौरी परावर्तों की स्त्री (राज) । ४ राजा बंशिक की एक रानी (निर ४) । ५ इत रेखा की एक नदी (घासम) ।

कण्डू य [कण्डू] कविन्, कही भी (मुप १ १) । २ कः से ? (उत्तर २) ।

कण्डू बहो कण्डू (मुप २, २ २१) ।

कटवर दु [कट] कटगर, कूडा (बं २ ११) ।

कट रेवो कट = कटि (वि ४११ मम) ।

कटु रवो कट = कटु (कन) ।

कट सक [कट] काया धेरा, कटला ।

कटाहि (पण १ १) । बहू कर्तत (घोष ४८) ।

कट सक [कट] काया बरले से मूत बनाता । बहू कटत (निर १०४) ।

कट वि [कट] विमिष (संति ४) ।

कट न [वि] कटन, स्त्री (पर १) ।

कटन न [कर्तन] कटला (निर १ २) ।

कटन न [कर्तन] १ कटला काया (मम १२२ जय ५२) । २ वि कण्ठेवाता, कलेवाता (गुर १ ७२) ।

कटनया स्त्री [कटनया] सनन कनया (गुर १ ७२) ।

कटर दु [वि] कटगर, कूडा 'कटो य' बलिसुममकटगराणिदिहामिदिह' कनन किसी बिहटा (मुवा २ ७) ।

कटरिभि वि [कट कटिउ] कटय हया बादा हया गुन (मुवा २४१) ।

कटरी स्त्री [कटरी] कटरी बँधी (कन) ।

कटरीभिस्स दु [काटय वै] मुन-विरोध (मम १२१ प्रति १६) ।

कटकर वि [कटकर] १ बरले घाण्य (स १७२) । २ न. कर्म कर काय (मा १) ।

कटा स्त्री [वि] कटिफा-युन की कटिवा, कौरी (बं २ १) ।

कटि लघु [कट] पर्व कनरा (म ४११ परम छाया १ ८) ।

कटि वि [कट] कलबासा 'विस्सा ए' बतिपिया (बर्त १८२) ।

कटि कथ दु [कटिकेय] महारेव का एक पुन पयान (बं १ १) ।

कटिगा स्त्री [कटिघा] काटिक माध की पुणिमा (मम ८१ २ १८) ।

कटिभि वि [कटिभि] कविम बलायदी (मुवा ८१ २ २) ।

कटिय दु [कटिअ] १ काटिक माध (मम १५) । २ इत नाम का एक बंधो (निर १ १) । ३ मल लेव क एक भावी तीर्थकर के पुर्व मम का नाम (मम ११४) ।

कटिया स्त्री [कटिअ] नाग-विरोध (मम ११ १८) ।

कटिया स्त्री [कटिअ] कटली बँधी (मुवा २१ १) ।

कटिया स्त्री [कटिकी] १ काटिक माध की पुणिमा (मम १५) । २ काटिक मम की घमावासा (बं १ १) ।

कटियविध वि [वि] इमि विताऊ 'कटि' बियाहि उरविपहाणाहि' (मुपनि, १ ४) ।

कटु वि [कट] कलेवाता 'कटा मुवा य मुमगमार्थ' (मा १) ।

कटा य [कट] कही में किये ? (मम ४० मुवा) । कय वि [वि] कही से उजम ? (विज १ १५) ।

कटय सक [कट] स्थापा करना प्रयोजना । कटय (हं १ ८७) ।

कटय य [कट] कही से ? (पर १) ।

कटय य [कट] कही ? (पर मुवा मय १२१) । इ य [वि] कही किसी जय (मावा मय है २ १०४) ।

कटय वि [कटय] १ बरले घाण्य, कपीय । २ न काय का एक म (अ ४ ४—पत्र २८) । ३ बलसिन्धि-विरोध (राज) ।

कटयि रवो कट = कटय ।

कटयमागा स्त्री [कटयमागा] पायी में होले कापी बलसिन्धि-विरोध (पण १—पत्र १४) ।

कटयुरिया [अ [कटयुर] मुन-मर इगि पयुरा] की ममि में होलासी मुनि न कटु (मुवा १४१ म २१२, कण्ठ) ।

कय वि [वि] १ परम मुन । २ कोय दुर्जन (पर १) ।

कल्पना की [कल्पना] १ रचना निर्माण ।
 २ कल्पण लिखण (निब १) । ३ कल्पना
 विवक्ष्य (विशे १११२) ।
 कल्पनी की [कल्पनी] कल्पनी कैंची (पण्ड
 १ १ विना १ ४ स ३२१) ।
 कल्पर पुं [कल्प] कल्प, काल सिर की
 खोपड़ी (बृह ४; मां) । रेखो कुल्पर =
 कर्कर ।
 कल्परिभ नि [रे] शरित शीघ्र हुआ (रे २
 २ बजा ३४ मकि) ।
 कल्पास पुं [कापोस] १ कपाल २८ । २
 ठन (निब १) ।
 कल्पामयि पुं [कपासासि] शोभिय जोष
 विशेष पुत्र कल्प-विशेष (सीव १) ।
 कल्पासिध नि [कापामिक] १ काल
 वेचनवाला (पण्ड १४६) । २ न. काल
 शास्त्र-विशेष (पण्ड ३६, एति) ।
 कल्पासिध नि [कपासिक] कपास का बना
 हुआ धूँई बरख (पण्ड) ।
 कल्पासी की [कपासी] रई का पाव (राज) ।
 कल्पिमाकल्पिभ न [कल्पकल्प] एक दिन
 शास्त्र (एति २ २) ।
 कल्पिय नि [कल्पित] १ उचित निर्मित
 (वीन) । २ स्थापित समीप में रखा हुआ
 नि धन्य हुमावे वं धन्य मंत्र बहिर धन्य
 मर्त्य मंत्र (निर १ १) । ३ कल्पना निर्मित
 विकसित (रमनि १) । ४ व्यक्कित (वाचा
 मूय १ २) । ५ दिय बना हुआ (विना
 १ ४) ।
 कल्पिय नि [कल्पिक] १ समुन्नत धनिपि
 (उत्तर ११) । २ योग्य उचित (गण्ड १
 बज ४) । ३ पुं गौतम, प्राप्ति गण्ड 'कि वा
 धन्यगण' (बज १) ।
 कल्पिमा की [कल्पिय] १ धन्य-विशेष
 एक उपाङ्ग-कल्प (अ १ निर) ।
 कल्पूर पुं [कपूर] बसु, सुगन्ध द्रव्य-विशेष
 (गण्ड २ ३, गुर २ ६ मुना २६१) ।
 कल्पोक्ता पुं [कल्पोक्त] १ कल्प-गुण । २
 रेख-विशेष बाण्ड बा लोच लकी हज (गण्ड
 २१) ।
 कल्पावरण पुं [कल्पवरण] डार रेखा
 (मुना ८) ।

कल्पोवयपिमा की [कल्पोवयपिमा] रेख
 लोच-विशेष में स्थापित (मा) ।
 कल्पक न [कल्पक] इस नाम की एक
 कल्पित काव्य (ह २ ७७) ।
 कल्पक रेखो कलाह = कपाल (गण्ड) ।
 कल्पाह [रे] रेखो कलाह (पाव) ।
 कल्प पुं [कल्प] कल शरीर स्थित बाहु विशेष
 (राज) ।
 कल्पट पुं [रे] पुत्र पुत्र (रे २, ७) ।
 कर्षक (शी) केरो कर्मय (प्राड ८२) ।
 कल्पदी की [रे] छोटी लड़की (निर २५३) ।
 कल्पह [रे] पुं [कल्प] १ बलाव मय,
 कल्पहगा } कुम्भित खुर (मां पण्ड १
 २) । २ पुं बह-विशेष बहाविष्टावक रेख-विशेष
 (अ २ ३—पत्र ७८) । ३ वि कुम्भर का
 शिवाली (बज १) ।
 कल्पर रेखो कल्पूर (प्राड ४) ।
 कल्पाहमय पुं [रे] शीका पर कपीन लावे
 का काम करनेवाला मज्जुर डा ४ १—पत्र
 २ १) ।
 कल्पूर } नि [कल्पूर] १ कल्प चितक
 कल्पूर } कल चितला (गण्ड बज्ज
 १) । २ पुं बह-विशेष बहाविष्टावक रेख-
 विशेष (अ २ ३ राज) ।
 कल्पुरिज नि [कल्पुरित] धन्य बलुवाला
 चितकबल दिया हुआ 'देहद्विजकल्पुरिज
 जम्पिण' (मुना ३४) मणिमयकालुषी
 चितकलुषकल्पुरिज (मुना १
 पत्र ८२ ११) ।
 कल (पाव) रेखो कल (पह) ।
 कलस न [रे] काल कल्प (पण्ड २ बजा) ।
 कल स [कल्प] १ काल, धन्य उन्नता ।
 २ कल्पन करना । ३ धन्य कला
 पत्रणा । ४ होना 'मण्डोपनि विषयनिवर्णी
 न कल्पर लकी न कल्प' (निबे २४६)
 'न एव उदात्तं नम' (अ २ ६) । बह
 कर्मन (अ २ ६) । ५ कल्पयज्ञ (वीन) ।
 कल मर [कल्प] जाहना बा पला । कलह
 कलमाम (अ २ ८२) । ६ कलनीय
 (मुना १४ २१२) कल्प (मावा १ १४
 धी—पत्र १ ८) ।
 कर्म धा [कर्म] १ मंगल लोका मुक्त होना

पन्ना । २ धर्मिक पुत्र । कलह (निर २११
 पत्र ११) ।
 कल पुं [कल्प] १ पाव, पाव, लक्ष (गुर १
 ८) । २ परमपरा 'मियकुलकामपायो विष्णो
 विष्णोयो मय्य विलायो (गुर १ २८) ।
 ३ धनुष्म परितापो (गण्ड) । ४ मर्त्यता
 सीमा (अ ४) । ५ व्याप फैलाता धर्म
 धारिय कर्म ए भरिस्वर्ग (स्वप्न २१) ।
 ६ नियम (बृह १) ।
 कल पुं [कलम] धन्य मज्जुर, कलानि (ह
 २ १ ६ मुना) ।
 कर्महल पुं [कर्महल] संन्यासियों वा
 एक मिठी या नाक का पात्र (निर १ १
 पण्ड १ ४ उ १४८ टी) ।
 कर्मध पुं [कर्मध] बह मज्जुरीन शरीर
 (ह १ २१६ प्राड मुना) ।
 कलह पुं [रे] १ रेख की कलरी । २
 पिठ, स्वाली । ३ कलहेन । ४ मुल मुह
 (रे २ ३२) ।
 कलह पुं [कलह क] १ ताप-विशेष,
 कलहवा विमो भगवान् पार्वती ने बार में
 कलहवा । बीठा वा भीर ओ मज्जुर दिव्य हुआ
 वा (एति २२) । २ दुर्ग कलह (पाव) ।
 ३ बज बोस । ४ शम्भरी कुन (ह १
 १६६) । ५ न मैत मज (निब १) । ६
 मायिका वा एक पात्र (निब १; धीप १६
 मा) । ७ मायिकों को पहलन वा एक बज
 (वीन १७२ बृह १) ।
 कलम न [कलमय] १ पति बाल । २ प्रवृत्ति
 (पाव ४) ।
 कलमिया की [कलमिय] उपाय, पुता
 (बृह १) ।
 कलमिय नि [कलमयन्] कलमिया, कलम
 पन्ना हुआ (बृह १) ।
 कलमा की [कलम] कलम, पलान (बृह १) ।
 कलमा की [रे] निमेष छोटी (रे २ ८) ।
 कलमाय नि [कलमीय] मुक्क, मज्जुर
 (मुना १४ २१२) ।
 कलह पुं [रे] १ पिठ, स्वाली । २ पण्ड,
 दीन (रे २ ३४) । ३ मुल मूत्र (रे २,
 ५४ पत्र) । ४ हाथि मुग 'कल पण्डो
 कलपो कलप्यन्तीना संन्यासो पण्ड' (गुर

१२, २२ ३२ ४० धातु कम् (घृ) ।
५ बहव्य कम् (घृ) ।

कमल पुं [कमल] एक देव-विमान (विश्व
१५२) । यामात्र पु [मयन] विष्णु
भाषण (सुत १२२) ।

कमल न [कमल] १ कमल पत्र धर्मिक
(क्या) कुमा, प्रसू ७१) । २ कमलाक्ष
रत्नाक्षरी का चिह्न (सुत १२२) । ३ संख्या विरोध
'कमलाक्ष' को नीचरी भाषा से प्रयोग पर को
संख्या लक्ष हो गई (को २) । ४ क्षत्र
विरोध (विम) । ५ पुं कमलाक्ष रत्नाक्षरी के
पूर्व अक्षर का चिह्न (छाया २) । ६ यति-
विरोध (सुत २५२) । ७ अलक्ष-प्रतिष्ठ एक
क्षण कल्प धरतर विषयों के हो गई पण
(विम) । एकत्रात का वाचक नम
(प्रस) । कमल पुं [कम] 'य नाम का एक
व्य (सुत) । जय न [जय] विद्याधरों
का एक नगर (इक) । जामि पुं [जोमि]
बड़ा विद्या (नाम) । गुर न [गुर]
विद्याधरों का एक नगर (इक) । जयमा
स्त्री [जयमा] १ नम-नामक विद्याधर की
धर्म-महिषी (य ४ १) । २ 'जाता बर्माका'
नम का एक सम्पन्न (छाया २) । बन्धु
पुं [बन्धु] १ सुर्व रवि (पञ्च ७ १२) ।
२ इन नाम का एक राजा (पञ्च १२ २) ।
मास स्त्री [मास] पौलस्त्य नगर के
राजा बालक की एक छोटी मन्त्रिका धर्मि
लगाई थी माताम्ही—बाही (पञ्च ५ २२) ।
रय पुं [रयस] कमल का पत्र
(नाम) । बहिसय न [यत्सय] नम-
नामक राजाओं का प्रभाव (छाया २) ।
विरोधी स्त्री [वी] नम-नामक राजाओं
की पूर्व पत्नी की माता का नाम (छाया २) ।
सुहृदी स्त्री [सुहृदी] इन नाम की एक
पत्नी (इक ७२० टी) । सेना स्त्री [सेना]
एक राज-पुत्री (नाम) । मर, गार पुं
[मर] १ बन्धी का वधू । २ वधेपर,
तब वधू बलात्कृत (ग १ २५; बण) ।
पौष [मर] पुं [पौष] मर बन्धुओं
का वध-वध (ग १, वि २५) । तिम पुं
[तम] बड़ा विद्या (नाम) ३ ७ १२) ।

कमला न [कमला] संख्या विरोध नीचरी
भाषा महाश्व की संख्या (को २) ।
कमला स्त्री [कम] १ महिषी मृगी (नाम) ।
कमला स्त्री [कमला] १ लक्ष्मी (पञ्च ५
२५५) । २ राजा की एक पत्नी (पञ्च
७४ २) । ३ नम नामक विद्याधर की एक
धर्म-महिषी राजा की विरोध (अ ४ १) ।
४ 'जाता बर्माका' नम का एक सम्पन्न
(छाया २) । ५ क्षत्र-विरोध (विम) । बर
पुं [बर] बलात्कृत (ग १ २५) ।
कमला स्त्री [कमला] पत्नी नम
का माता (नाम) ।
कमलुष्मय पुं [कमलुष्मय] बड़ा (वि ७२) ।
कमल १ एक [कम] सोना से बना ।
कमल २ कमल (पञ्च) । कमल ३ (ह
४ १५५ कुमा) ।
कमलो य [कमल] कम से एक-एक करके
(गुर १ १११) ।
कमल वि [कम] उपस्थित नाम धातु कुमा
(ह २ १) ।
कमि य वि [कम] लक्षित (व २ २) ।
कमल १ पुं [कमल] लक्ष, ऊँ (पञ्च
कमल २ १२ टी) । २ टी) । ३ टी) ।
टी (व १ ११ टी) ।
कमल एक [कम] इन्द्रावत कला धीर-कर्म
कला । कमल (ह ४ ७२) पञ्च) । कम
कर्म (कुमा) ।
कमल एक [कम] नोजन कला । कमल
(पञ्च) । कमल (ह ४ ११) ।
कमल के कमल = कम
कमल पुं [कमल] १ धीन का प्रत्य
विद्या काता प्रत्यय धूम धूम (अ ४
५ कमल १ १) । २ काम विद्या कर्म
व्यापार (अ १; भाषा) । 'कमला एतद्वत्ता'
(वि ७२) । ३ जो लिख नाम बड़ा । ४
व्यापार-प्रतिष्ठ काम-विरोध (वि २ २२,
१५२) । ५ बड़ा स्वाम बड़ी पर बड़ा
वधू एक नाम जाता है (पञ्च २ २—पञ्च
१११) । ६ पुं-कर्म नाम 'कमला कुमा
के' (पञ्च १ १; भाषा (पञ्च) । ७
कार्य लक्ष्मी । ८ कार्य-लक्ष्मी नामकर्म,
कर्म-विरोध (कम २ २१) । कर वि
[कर] नीच, नीच (भाषा) । के गो माता ।

कमल न [कमल] कर्म-विरोध कर्म,
नीच-व्यापार-विरोध (पञ्च १ १) । बर
वि [बर] नीच (पञ्च १७ ७) ।
विमल वि [विमल] कर्म-व्यापार,
लक्ष्य नाम करके जाता (पञ्च १) । कमल
पुं [कमल] कर्म-व्यापार का विरोध (कम
२) । गर के कमल (पञ्च) । गार पुं
[गार] १ कारीगर, लक्ष्मी (छाया १
२) । के कमल । योग पुं [योग]
लक्ष्य नाम कर्म (कम) । ह्याय न
[स्थान] का जाता (भाषा) । 'ह्याय की
[स्थिति] १ कर्म-व्यापारों का प्रत्यक्ष-
व्यय (पञ्च १ १) । २ वि संघर्ष नीच
(पञ्च १४ १) । 'जिसेग पुं [जिसेग]
कर्म-व्यापारों की रचना-विरोध (पञ्च १ १) ।
धारय पुं [धारय] व्यापार-प्रतिष्ठ एक
समाप्त (पञ्च) । परिसाधना की [परि
साधना] कर्म-व्यापारों का नीच-व्यापारों से
व्यय (पञ्च १ १) । गुरि स पुं
[गुरि स] कर्म-व्यापार पुण्य—१ कारीगर,
लक्ष्मी (पञ्च १ ४ १) । २ व्यापार करके
नाम बालक बालक राजा का (अ १
१—पञ्च १११) । व्यापार न [व्यापार]
नीच व्यापार-विरोध बलात्कृत पूर्व (पञ्च २१) ।
वध पुं [वध] कर्म-व्यापारों का व्यापार में
लक्ष्य कर्मों से व्यापार का व्यापार (पञ्च
१) । मूमग वि [मूमग] कर्म-व्यापार में
लक्ष्य (पञ्च १) । मूमि की [मूमि]
कर्म-व्यापार मूमि पञ्च के बालक (को
२१) । मूमिग के मूमग (पञ्च २१) ।
मूमिग वि [मूमिग] कर्म-व्यापार में
लक्ष्य (अ १ १—पञ्च ११४) । मास
पुं [मास] व्यापार मास (को १) । मास
पुं [मास] मास विरोध पौष कुमा पञ्च
रवी (पञ्च) । य वि [य] १ कर्म से
व्यापार होनेवाला । २ कर्म-व्यापारों का बड़ा
ह्याय धीर-विरोध कर्म-व्यापार (अ २
१, ५, १) । या की [या] व्यापार से
व्यापार होनेवाली बुद्धि, मूमग (लक्षि) ।
'सेसा की [सेसा] कर्म-व्यापार होनेवाला
धीन का विरोध (पञ्च १४ १) । बमला
की [बमला] कर्म-व्यापार में विरोध होनेवाला

पुअत्त-यवुअ (पंच) । 'वाइ वि' [वाविन्] प्रायगो हो ही सब कुछ माननेवाला (एव) । विधाग पुं [विपाक] । कर्म पण्डित्य कर्म-कह । २ कर्म विपाक का प्रतिपादक प्राय (कम्म १ १) । संवच्छद पुं [सम्पत्तर] सौकरि कर्म (पुअ १ १) । सात्त की [शात्त] । अरजाला । २ कुम्भकार का बटवि बनाने का न्याय (इह २) । 'सिद्ध पुं' [सिद्ध] कपीपर, शिपी (घास) । शीवि [शीवि] । अरियर । २ कपीपर का कोई भी काम बध्नाकर निद्रावि प्राप्त करनेवाला छात्र (अ १ १) । दाय न [दान] बिसे घरी पाप हो दैता व्यापार (मग ८ २) । परिप पुं [रिप] कर्म से धर्म विपरी व्यापार करने-वाला (पण १) । 'वाइ रेवो' 'वाइ (घास) ।

कम्म वि [कर्मण] । कर्म-सम्बन्धी कर्म कार्य कर्म-निमित्त कर्म-मय । २ न कर्म पुअत्तो का ही बना हुआ एक प्रत्यक्ष सूक्ष्म शरीर जो सम्पत्तर में भी मात्ता के साथ ही रहता है (अ १ कम्म ४) । २ कर्म-विशेष नामधेय-शरीर का हैतु-युत कर्म (कम्म २ २१) । १ कर्मण-शरीर का व्यापार (कम्म १ १३ कम्म ४) ।

कम्मइय न [कम्मचित्, कर्मण] उत्तर रेवो (पण १ २ २८) ।

कर्मत्त पुं [वि कर्मिअ] । कर्म-बन्धन का बाण (घास, मृग २, २) । २ कर्म-स्थान करवाला (इ २ ११) ।

कर्मत्त वि [कर्मत्त] । हजमत करता हुआ । २ इत्थम मासिद (मुग १) । सात्त की [शात्त] बर्ष पर उत्तर—वात बनाने का कुछ धारि समझा जाता है वह स्थान (विह ८) ।

कम्मकर रेवो कम्म-कर (प्राह २९) ।

कम्मग पुं [कर्मक, कम्मक कामेण] रेवो कम्म = कामेण (अ २ ४ पण २१ (मग) । कम्मण न [कर्मण] । कर्म-मय शरीर (इ २२) । २ धीयण पत्त घास के हाथ मोहन बलीकण्य कन्नाय्य घासि कर्म (अ ११४ टी ३ १) । गारि वि [कारिण] २६

कामण करनेवाला (मुर १ २८) । ओय पुं [योग] कर्म-उपयोग (घास १ १४) । कम्मण न [मोहन] मोहन (मुग १) । कम्ममाण रेवो कम्म = कय ।

कम्मय रेवो कम्मय (मग पंच) ।

कम्मय सक [उप + सुउ] उपयोग करना । कम्मय (इ ४ १११ पण) ।

कम्मयण न [उपयोग] उपमाय काम में माना (मुग १) ।

कम्मस वि [कम्मस] । मणिग । २ न पाप (पाप ह २ ७६ प्राग) ।

कम्मा की [कर्म] क्मिा व्यापार (अ ४ २—पण २१) ।

कम्मर पुं [कम्मर] । सोहाय, सोहकार (विह ११११) । २ धाम-विशेष (भाह १) ।

कम्मर । वि [कर्मिअ, क] । नीकर, कम्मारा, बाकर (अ ११७ धीय ४ ६४ कम्माराय टी) । २ कपीपर, शिपी (जीव १) ।

कम्मरिया की [कर्मकारिका] की-नीकर, बावी (मुग १११) ।

कम्मि [वि [कर्मिण] कर्म करनेवाला कम्मिअ] धम्मादी

'एवकम्मिणएव उअ पापरएव के' ह्युअ पाह्णीयो । मोत्तम मोत्तधायइम्मि मयएसमी मुक्का । (य ११४) ।

२ पाप कर्म करनेवाला (मुग १ ७ ६) ।

कम्मिया की [कम्मिअ कम्मिका] । धम्माय से जन्म होनेवाली बुद्धि (घास १ १) ।

२ बाशीए कर्म विशेष धरणिट कर्म (मग) ।

कम्मइ न [कम्मइ] पाप (एव) ।

कम्मइ ध [कम्मइ] क्यों किय कारण से ? (धीय) ।

कम्मइ रेवो कम्मर (इ २, ४) । अ न [अ] केअ, मुकुअ (मुग १) ।

कम्मइ पुं [वि] मली माताहार (इ २ न) ।

कम्मही रेवो कम्मर (मुग २४२ वि १२ ; ११२) ।

कय पुं [कय] कय, वात (इ १ १०७ मुग १) ।

कय पुं [कय] कपीया (मुग १४४) ।

कय रेवो कड = कय (पापट मुग १४४ ११) ।

कयय उअ वि [कयय] पुअमत्ताली मायमली (अ १०७ मुग १ १) । क

रेवो ग (पण १ २) । कय वि [कय] कयार् सख-मनोरप (घास १ ८) ।

करण वि [करण] धम्मादी इत्थाम्मास (इह १ पण १ १) । किरवि [किरवि] इत्थार् नत्त मनोरप (मुग २०) । ग वि [क] । धानी उत्पत्ति में हुरी की अपेक्षा करनेवाला प्रपञ्च-जग्य (विसे १८१० स १३३) । पुं वास विसेय मुत्ता 'मयगवर्त का वत्तमत्त का कयमत्त का' (विह २) ।

१ न मुअर्त्त सोना (एव) । गप वि [ग] उपकार न मानकाला इत्थम (मुर २ ४४ मुग १८८) ।

झाजुअ वि [झाजक] इत्त उअर को माननेवाला (वि ११८) ।

ज्जु वि [ज] उपकार को माननेवाला, किय हुए उपकार की कदर करनेवाला (कम्म २९) । ज्जुया की [ज्जुया] इत्तकया एवमवन्ती विशेष मात्ता (अ ४ ८६) ।

त्य वि [र्य] इत्तइय अरियां सख-मनोरप (पण २१) । नासि वि [ना श्रिम] इत्तय (धीय १११) । क, म्मु रेवो ज्जु, 'जं कियिअसिद्धिया विसेयम-मरिदं कयणउअ' (मुग १ १ महा स ११ या २८) । पञ्चसि वि [माञ्जि] इत्थाम्मति मत्तकार के सिध जिसे हाथ देता किया हो वह (घास) । पडिक्क की [प्रतिकृति] । प्रमुअकार (पंचा १६) ।

२ किय-विशेष (म १) । पडिक्कया की [प्रतिकृति] । प्रमुअकार (घास १ २) । २ किय का एक मेद (अ ७) ।

वडिक्कम वि [वडिक्कम] बिसे रेववा की पुआ की है वह (मग २ ३, एव १ ११—पण २१० टी) । मंगअ की [मंगअ] एव माय की एक नवरी (पंचा) ।

माअ, माअय वि [माअ, क] । विअन मात्ता बनाई हो वह । २ पुं कुअ-विशेष क्तेर का गाव, 'अपेक्षविअयअइयमत्तवमात्त-घत्तइ' (अ १ ११ टी) । १ वडिक्क-नामक पुआ का अविश्रामक रेव (अ २ १) ।

कम्मजय वि [कम्मज] बिसे धाने शरीर बिह को मत्त किया हो वह (मग १ ११ एव १ १) । व वि [व] बिसे किया हो वह (विसे १३३३) । वयमास-

करअभीष्टमिच्छो बन्मिच्छो (या १४४) । २
पाणि-यस्य खासी (पत्र) । य पु [म]
नक्ष (नाम १७२) । रुह पुन [करह]
१ नक्ष (हे १ १४) । २ पु गुण-विशेष
(पत्र ७७ ८८) । आपन न [स्यपन]
कना-विशेष हृत्-आपन (कम्) । यपुन न
[बन्नुन] बन्त का एक बाप एक प्रकार
का मुक्त समस्त बन्धन करना (हृह १) ।
करअभी की [दे] स्तुत बन् मोटा कपड़ा
करअभी (हे २ १६) ।
करअभी की [करअ] बरना मोला रिता-
बुटि (मण्ड १४) ।
करअभी की [दे] गुण-बुन सूखा पेड़ (हे
२ १७) ।
करअ वु [दे] करह १ निम्न-नाम (हे २
११ मण्ड) । २ परोक्ष-बुन (हे २ ११) ।
करअ पुन [करह] १ हरी हाक 'करअ-
मयेसणे मवाणमि' (मुपा १७२) । २
पवित्र-गड, हाक-गड (अ ७२ ८ टी) ।
३ पल्लव, नाम बोझ खल की छोटी पेटी
'सौवकराविश्री' (कम्) । ४ हड्डियों
का डेर (गुर १ २) ।
करअ व [मण्ड] बोझ बोझ
हूना करना । करअ (हे ४ १ ६) ।
करअ वु [करअ] बुन विशेष करिषा (गण
१ ११ ११ या १२१) ।
करअ वु [दे] गुण-बन्धन गुली लपटा (हे
२ ८) ।
करअ व वि [मण्ड] बोझ हूना (मुपा) ।
करअ पुन [करअ] बंधनार हरी (उं
१२) ।
करअ वु [करअ क] १ करह
करअ } रिता बन्धन (गण १ १;
करअ } या १४ अ ४) ।
करअ वी की [करअ] छोटा रिता
(गामा १ ७ गुण ४२८) ।
करअ की [करअ] १ रिता पिला (या
१४) । २ गुंटी पात-रिन् (अ १११) ।
करअ व [दे] रीट के पात की हरी (गण
१ ४—पत्र ७८) ।
करअ दो करअ ह ।
करअ वु [करअ] दो दोर नाव का बन्ध

हुपा एक बाप ह्य्य ह्योरत (पात्र हे २
१४ गुण १११) ।
करअ व वि [करअ] ब्यास कथित (मुपा
१४ मण्ड) ।
करअ वु [करअ] १४ नाम का एक
पत्राकार पात-विशेष (मैप) ।
करअ वु [करअ] एक बँत महुपि
(महा, पत्र) ।
करअ व वि [करअ] करअ पादि से
करअ हुपा (गण ११४) ।
करअ व वि [दे] करअ करअ १ बन्धन
पात्र (उका) ।
करअ की की [दे] करअ विविध निम्नीय
बन्ध-विशेष का प्राचीन नाम में बन्ध गुण
को पहनावा नावा या (विपा १ २—पत्र
२४) ।
करअ वु [करअ] करअ करअ पात्र
(गण १ १) ।
करअ वु [करअ] करअ करअ नाम (गामा
१ १) । उं पुन [हण्ड] गुण-विशेष
(गण १—पत्र ४) ।
करअ वु [करअ] करअ करअ पहावि
हाक देव-विशेष (अ २, ३—पत्र ८८) ।
करअ दो करअ = वाक (उं १ १) ।
करअ वु [करअ] १ करअ मोला (या २;
मो १४१ की १) । २ पाटी की कसरी
बत पात्र (गुर १ या १६ गुण १११
१६४) । रीता करअ = करअ ।
करअ व रीता करअ (अ १११) ।
करअ व रीता करअ (सम्पत् १७१) ।
करअ व वु [दे] रिता, बुन की मलाई
(हे २ २२) ।
करअ वी की [दे] पापी ठाक (मुप २
११) ।
करअ वु [दे] पावित्र मर की कालेना
बाण (गण २ ७) ।
करअ वु [करअ] १ नाव बीमा (वर १
१४) । २ हारी का पाद-बन्धन (गुण ११६
नाम) । ३ बाप-विशेष (विपा ७०) । ४
गुण-बन्धन । ५ गुर-बन्धन । ६ गिरिपद,
सट । ७ पाटी की कसरी । ८ बाप-विशेष
(हे २, ११ टी) ।

करअ वु [दे] १ व्याप, गुर । २ वि करअ
चितक-वट (हे २ ११) ।
करअ की [दे] नाव—१ एक प्रकार का
करअ बुन । २ पवित्र विशेष वट । ३ मर,
मीठा । ४ बाप-विशेष (हे २ ११) ।
करअ वु [करअ] हारी हरी (गुर २
११ गुण ११६) ।
करअ की [दे] करअ १ बाप-विशेष 'भट्टम
करअ' (अ २) ।
करअ व व [दे] पाद-विशेष (विपा) ।
करअ न [करअ] १ रिता (गुर ४ २११
(गुमा) । २ बाप-पदापन बोझ (गुमा) ।
३ पावित्र नाम (गुमा) । ४ हति
क्रिया विपल (अ ४ मुर ४ २४२) ।
५ करअ-विशेष साधन-वट (अ १ १
वि ११६) । ६ खावि जल-वट (मोप
११६) । ७ व्याप-व्याप-वट (अ ४
११७) । ८ मरि-मरि (अ १ १—पत्र
१ ६) । ९ पवित्र-नाम-विशेष बन्धन-पादि
करअ (गुर २ ११२) । १ निमित्त प्रयो
जन (गण १) । ११ रीत कैवला (मैप) ।
१२ वि जो किया काम बह (मोप २ मा
१) । १३ करअ-नाम (गुमा) । हिय वु
[विपदि] रीत का व्याप (मैप) ।
साध की [साध] व्याप-वट (अ ४
हारि पत्र १ म २) ।
करअ वी की [करअ] १ पनुजत विवा ।
२ संयम-पनुजत (गामा १ १—पत्र १) ।
करअ वी की [करअ] व्याप-विशेष
(मैप १ १ टी) ।
करअ की [दे] रिता बन्धन (गण ११७) ।
करअ की [दे] १ रन पात्र (हे २ ७
गुण १ १ ४०४ नाम) । २ साध-व्याप
नाम (गण) । ३ पनुजत मर बना
(गण) । ४ रीतार, रीतार (अ ४
१८४) ।
करअ व रीता करअ = ह ।
करअ व वि [दे] रिता, गुर, 'मण्ड-मण्ड'
रीतार-विशेष बन्धन-मोप (मैप)
म रीतार (ग ११२) 'मण्ड-मण्ड'
मण्ड-मण्ड (ग ११२) ।
करअ व रीता करअ = ह ।

करपत्त न [करपत्र] करपत्र कल्प (विना १ १)।

करम पुं [करम] करं, कृ (पक्ष १ १ पक्ष)।

करसी की [करसी] १ लड़ी ली-सी, ऊँसी (सिंह)। २ बाण मले का बड़ा पात्र (पक्ष २ पक्ष)। बेहो करसी।

करम वि [रे] कीछ कुर्वत (दे २ १) पक्ष)।

करमह पुं [करमह] कलमाला कल-विरोध (पक्ष)।

करमह पुं [करमह] कल-विरोध करीत (पक्ष १—पक्ष १२)।

करमरी ली [रे] हट-हट ली बीवी (दे २, १४) पक्ष का २२० पात्र)।

करम बेहो करम (कन ७२ टी पक्ष १ कुमा ७)। ३ पल्ल-विरोध (पक्ष १ १)।

करबंदी की [रे] पालिका बेता का बाघ (दे २ १८)।

करपर पक्ष [करकर] 'कर-कर' भागन कला। नक्ष करपरत (पक्ष २४ १३)।

कररह पुं [कररह] कल-विरोध (विग)।

कररि } की [कररि, 'री'] १ पलाका।
कररि } २ होरा की एक कालि। ३ हावी का एक सामण (दे १ १२) कुमा)।

करर पुं [रे] करर कल-पात्रा पालिकरवा
कीर पापर पुष्पिणी (कुमा २१४ ११३)।

करबंदी की [करमली] मल-विरोध एक बाघ का पेड़ (दे, ८ १३)।

करपाकिजा की [करपाकिज] कल-पात्र-विरोध (मा ११)।

करबास पुं [करबास] बड़ा लकवार (पात्र कुमा १)।

करबिया की [रे] करकिम] पात्र पात्र-विरोध (कुमा ४५५)।

करवीर पुं [करवीर] कल-विरोध, करे का बाघ (पक्ष)।

करसी [रे] बेहो कडसी (दे २ १७४)।

करह पुं [करम] १ ऊँ, जड़ (पक्ष ११ ४००) कुमा ४२०)। २ कुर्वी कल-विरोध (पक्ष ११८)।

करह न [करह] कल-विरोध (विग)।

करहाह पुं [करहाह] कल-विरोध करहाह, रिक्ता कल, मेकल (पक्ष)।

करहाह पुं [करहाह] १ करर बेहो। २ कल-विरोध 'करहाह'विरोध, कलकरमल्लिने धर्मि (प २२१)।

करही बेहो करसी। ३ इस नाम का एक कल (विग)। रू वि [रोह] ऊँ सवार, जड़ी पर सवार करने वाला (महा)।

कराही की [रे] शास्त्री की ब्रह्म धर्म का पेड़ (दे २, १८)।

करावह पुं [करावह] स्वभाव काल एक रत्ना (टी १७)।

कराव वि [कराव] १ जलत डीवा (पक्ष ४)। २ कलवि विरुद्ध बल कला धीर बाहर लिखा हो वह (पक्ष)। ३ समान कर्मकर (कम्प)। ४ कलनेवाला। ५ विकसित (दे १ ४२)। ६ कलवि (दे १ १३)।

७ वि इस नाम का निरुद्ध-कल कला (बर्त १)।

कराव एक [कराव] १ पक्षका कल कला। २ विकसित कला। करारह (दे १ ४२)।

कराव वि [कराव] १ कलवि कला धीर कलवि बल कला (दे १ २ १)।

२ कलवि विरुद्ध कला कला कला (दे १ १ १३)। ३ कलवि कला कला (कम्प)।

करसी ली [रे] कररन बल मुद्र करने का कल (दे २ १२)।

कराव न [कराव] करवाला कलपात्र, लिपिपत्र (कुमा ११२, बम ५ टी)।

कराव वि [कराव] कला कला (दे १ ४२)।

करि पुं [करि] हावी हली (पात्र ११३)। करणद्वय न [करणद्वय] हावी की बल करी—कल, कला (पात्र)।

नाह पुं [नाह] १ पैरक एक का हावी। २ कल हली (कुमा १ ६)। बंधन न [बंधन] हावी कलने का पद (पात्र)।

मर पुं [मर] कल-हली (पात्र)।

करि पुं [करि] एक महाह (कुमा २)।

करिअ } बेहो कर ७४।

करिअ ली [रे] मरिप वरीमने का पात्र (दे २ १४)।

करिअवत } (पात्र) बेहो करवत (दे ४ करिअवत) ४५५ कुमा वि २२४)।

करिअ बेहो कर-ह।

करिअिया ली [करिअ] हल्लिनी हल्लिनी करिअिया } महा पक्ष ८ २३ कुमा १)।

करिअ पुं [करिअ] हावी हली २ कुमा कलापत्र। कुमा १। बंधन कुमापत्र (ज १ टी)।

करिअिया } बेहो कर-ह।

करिअिया ली [रे] बेहो करमरी (पा १४ १३)।

करिअ न [रे] १ बंधन, बंध का कल विरुद्धी मुनि में कल होनेवाला कल-विरोध विरुद्धी कल (दे २ १)। २ करिअ, करिअ-विरोध 'बाहुपुत्रिका' कल-विरोध विरुद्धी कल (दे २ १)। ३ कुमा, कल (पक्ष)। ४ पुं, कल कल कल (पक्ष)।

५ वि बंधन के समान 'हवा' के कल कल-विरोध कल-विरोध कल-विरोध (पक्ष)।

करिअ बेहो करह = कल। करिअ (दे ४ १५)। नक्ष करिअ (कुमा २ २१)।

बंध करिअिया (वि १५२)।

करिअ पुं [करिअ] १ कलवि बीबाव। २ विरुद्ध, कल-कल। ३ कल विरोध, पक्ष का बीबाव कला (को १)।

करिअ बेहो करिअ (दे १ १ १) पात्र)।

करिअ वि [करिअ] बेहो करेवाला, ली कल (ज १ पात्र)।

करिअ न [करिअ] १ बीबाव कलवि। २ पात्रा बेहो कला। ३ हवि, बेहो (पक्ष १ १)।

करिअ बेहो करसग (कुमा २ २१ कुमा २ ७७)।

करिअव न [करिअ] १ कलवि विरुद्धी कल-विरोध (वि २ १ पक्ष)।

करिअ (ली) वि [करिअ] १ कलवि। २ कला कला बेहो कला कला (कुमा ११३)।

करिसिय बि [कडिग] दुबल बिना हुमा
(गुम १ १)।

करिर धुं [करिर] हुय-रिगय करिर, करित
(उप ७२८ यो ३५ १५) प्रामु १२)।

करिस धुं [कराय] जमाने के सिरे मुलाया
हुमा मोबर, कंसा मोरठा (हि १ १)।

करुया देतो कलुण (लवण ११) गुमा २१५)
'उमर उमरमर' बरिगल कलुण ब
पामुबइ (गठ)।

करुया धी [करुमा] दया हुमे के कुल को
दूर करणे की इच्छा (गठ) गुमा)।

करुयाइय बि [करुयायित] जियपर करुया
की गई हो यह (गठ)।

करुणि बि [करुणित] करुणा करनलता
दयाउ (गठ)।

कर वन [करय] बरला । करे (आइ
१)।

करअय्य [देतो कर = ६]।

करकु धुं [दे] इकनाय गिरिदंड, घट (दे
२, २)।

करेणु धुं [करणु] १ हली हाथी । २ कनेर
का घाघ, 'एनो करेणु' (हि २ ११५) । ३
छी हस्तिनी हस्तिनी (दे २, ११५) छाया १

१ गुर = ११६) । वसा धी [वसा]
कमरत बरगली की एक धी (उप ११)।

मेणा धी [सेना] देतो पुर्बो क धरं
(उप ११)।

करेणुभा धी [करेणु] हस्तिनी हस्तिनी
(वाप महा)।

करेमाय
करेअय्य [देतो कर = ६]।

करेयादिय बि [करयायित] राज-कर के
वीरिय, महपुन के देवन (वीर)।

करोह धुं [दे] १ गरिबत मातिय । २
बाग लीया । ३ हुय, देत (दे २, २४)।

करोहग धुं [दे] पाय-विरोध करोय (विह
१)।

करोह धी [करोह] विर की हरो (गुम
२ २१)।

बरोहिय धुं [करोहिय] बारातिय विगु-
विरोध (छाया १ = बर १२)।

करोहिया } धी [करोहिय, टी] १ हुमा,
करोहो } बड़े मुँह का एक पात्र वास्व-

पात्र-विरोध (गणु दे ७ १२ वाप) । २
स्वगिता पानना (छाया १ १ टी—यत्र

४१) । ३ मिट्टी का एक छह का पात्र
(वीर) । ४ कपल मिता-पात्र (छाया १

८) । ५ परोष का एक जकरण (दे २
१५)।

करोही धी [दे] एक प्रकार की पीठी गुम
पलु विराय (दे २ १)।

करोही धी [दे] गुण्य राग (गुर १ २)।

कल सक [कल्य] १ सभा करना । २
प्रवास करना । ३ जाना । ४ पहिचानना ।

५ संभार करना । कलइ (दे ४ २२६;
यह) । कलसि (विदे २ २६) । कल

बलम (वि १११) । कल कलिय (विम
२ २६) । बर कलयंत (गुमा ४) । कल

पसिजत (गुमा २४) । कल पसिजत
कलिय (महा पति १८२) । क कलियज,

कलसि (गुमा १२२) (वि ११)।

कल बि [कल] १ मधु, मोहर (वाप) । २
धुं चम्पक मधुर राग (छाया १ ११) । ३

मोनाल बलम (वीर १६) । ४ कलम
बीक, मोरो (यत १३) । ५ पाय-विरोध

पोल बना मटर (छा २, ६) । कल लो
[कलो] मोबिला मोयन (दे २, १

कणु) । मंजुस बि [मंजुस] सभ्य
के मधुर (वाप) । यंत धुं [कण] मोयन

मोयन (गुमा) । यंटी कलो कलडी (गुर
४ ४५) । इम धुं [इम] एक कली,

यम-यंत (यत गठ)।

कल धुं [कल] १ बाग, मोर (प्रामु २४) ।
२ लामय, बिम (गुमा गठ)।

कल सक [कल] कलियत बरला ।
कलर (वीर) । क कलियज (गुमा ४४८

१८२)।

कल धुं [दे] १ बल यंत (दे २ ८) ।
२ बल की बलाई हुई बाइ (छाया १ १) ।

कल धुं न [कल] कलियत बरला
(यत ८)।

कल धुं बि [कल] कलियत कलियत
(वीर यत)।

कल धुं धी [कल] कलियत कलियत
कलियत (गुम २, २ ८१ ४३)।

कल धुं धी [कल] कलियत कलियत
कलियत (गुम २, २ ८१ ४३)।

कल धुं धी [कल] कलियत कलियत
कलियत (गुम २, २ ८१ ४३)।

कल धुं धी [कल] कलियत कलियत
कलियत (गुम २, २ ८१ ४३)।

कल धुं धी [कल] कलियत कलियत
कलियत (गुम २, २ ८१ ४३)।

कल धुं धी [कल] कलियत कलियत
कलियत (गुम २, २ ८१ ४३)।

कल धुं धी [कल] कलियत कलियत
कलियत (गुम २, २ ८१ ४३)।

कल धुं धी [कल] कलियत कलियत
कलियत (गुम २, २ ८१ ४३)।

कल धुं धी [कल] कलियत कलियत
कलियत (गुम २, २ ८१ ४३)।

कल धुं धी [कल] कलियत कलियत
कलियत (गुम २, २ ८१ ४३)।

कल धुं धी [कल] कलियत कलियत
कलियत (गुम २, २ ८१ ४३)।

कल धुं धी [कल] कलियत कलियत
कलियत (गुम २, २ ८१ ४३)।

कल धुं धी [कल] कलियत कलियत
कलियत (गुम २, २ ८१ ४३)।

कल धुं धी [कल] कलियत कलियत
कलियत (गुम २, २ ८१ ४३)।

कल धुं धी [कल] कलियत कलियत
कलियत (गुम २, २ ८१ ४३)।

कल धुं धी [कल] कलियत कलियत
कलियत (गुम २, २ ८१ ४३)।

कल धुं धी [कल] कलियत कलियत
कलियत (गुम २, २ ८१ ४३)।

कल धुं धी [कल] कलियत कलियत
कलियत (गुम २, २ ८१ ४३)।

कल धुं धी [कल] कलियत कलियत
कलियत (गुम २, २ ८१ ४३)।

कल धुं धी [कल] कलियत कलियत
कलियत (गुम २, २ ८१ ४३)।

कल धुं धी [कल] कलियत कलियत
कलियत (गुम २, २ ८१ ४३)।

उद श्री [काप्री] कीर की माया (पिया १ ३)।

उद श्री [कापोरी] सेरया विरोप भागना का एक प्रकार का परिणाम (मग, भाषा)।
"लिसा श्री [लेदया] धाम-परिणाम-विरोप (मग डा ३ १)। "लेसस वि [लेदय] बारीत सेरयाभागा (पण्ण १७ मग)।
"लेससा देको [सिमा] (मण्ण १७)।

काउ देको कर = ह।

काउवर पुं [काउदुन्वर] सीके देको (उम)।
काउबरी श्री [काउदुन्बरी] सीम-विरोप
निर्बन्धन-वर्णन-वर्णन-वर्णन- (उम १ ११
टी पण्ण १)।

काउधाम वि [काउधाम] बरते को बाहने
बागा (मोश २ ७)।

काउधुपय न [काउधुपय] उपाधन दुर
विपु उधुरे के उरीर का धाम-उधु बरना
(पण्ण १ १४)।

काउदर पुं [काउदर] सीप की एक बालि
(पण्ण १ १)।

काउमय वि [काउमय] बरते की बह
बागा (उम उध ७ ७)।

काउमस पुं [काउमस] १ बाधन बाधनी
सीध धुपय। २ बाधन, बरते धुपय (पण्ण
मुर ८ १३ गुना ११२)।

काउह पुं [के] बर बरना (दे २ ३)।

काउसमा पुं [काउसमा] १ उरीर पर
काउसमा के मयन-काउसमा (उम २३)।

२ काउस-मय का काउ। ३ काउ के
विपु उरीर की निरबजता (पण्ण)।

काउ देको पाउ (म १ मम ४ १३)।

काउमय देको [काउमय] १ बाधन
बाधनी के देको कर = ह।

काउमय देको काउमय (पण्ण १३)।

काउमय देको [काउमय] काउमय, बर
सति विरोप (पण्ण १)।

काउमय पुं [काउमय] संवारी काउमा
(पण्ण २ १)।

काउमय देको काउमय (मि)।

काउ पुं [काउ] १ सीमा, भाग (पण्ण १)।
२ काउ-विरोप काउ-विरोप देर विरोप (म
३ ३—पण्ण ७८)। उपाध की [काउ]

बनमय-विरोप बरते की उपाध (मण्ण १)।

देको काउ काय = काउ।

काउदुग पुं [काउदुग] एक बरन मय
(पण्ण)।

काउदिय पुं [काउदिय] एक बरन मय
(पण्ण)।

काउदिया की [काउदिय] देर मुनि
की एक उपाध (पण्ण)।

काउरी देको काउरी (पण्ण १ २, डा
३ १)।

काउरी देको काउरी (पिया १ २)।

काउरी देको काउरी (म १ —पण्ण ४७१)।

काउ देको काउ (दे १ १ २, मण्ण २)।

"ताउमसीकयय पुं [ताउमसीकयय
य] काउमसीकयय (उम १४२ टी)।

ताउमय ताउमय न [ताउमय] देर
कीर का मयनित धामय धीर काउ-मय

काउमयय मयना देको है ऐसा मयनित
संनय काउमयय मयना देको है (पण्ण
दे १ १३)। यम न [यम] के-विरोप

(दे २ २७)। पाउ पुं [पाउ] दुर
विरोप (उम)। पिरी की [पिरी]

पय-मय (पण्ण २ १ १)। देको
काय = काउ।

काउरी देको काउरी (मण्ण २)।

काउरी देको [के] १ पण्ण, 'मयनित-विरोप
पण्ण देको काउ-मय' (विदे २१२)।

२ मय का मय दुरका (मि)।

काउरी देको काउरी (म २७ डा ७)।

काउरी देको [काउरी] मय देको का एक
काउ (मण्ण १३३)।

काउ पुं [काउ] सीमाय उपाध प्रदे
(मण्ण)।

काउमय देको [काउमय] १ मय
काउमय के मयनित विरोप-विरोप (पण्ण
२३ डा ३ १५)। २ देरी-विरोप मयन

मयनित की काउ-देरी (पण्ण २७)।

काउरी देको [काउरी] १ मय काउरी
(मण्ण ३ ३ डा २० टी)। २ मय
कीर के मय का एक विरोप (मण्ण २४२)।

३ मय विरोप (मण्ण २७ डा २० टी)।
काउरी देको [काउरी] १ मय की माय (म २
विरोप-विरोप (मण्ण २४२)।

काउमय पुं [काउमय] देर नाम की एक
मयनित विरोप 'मयनित-विरोप' (पण्ण २४ ४१)।

काउमय म [काउमय] मयनित (पण्ण
२१ २४)।

काउ पुं [काउ] बागा (मण्ण ११)।

काउ वि [काउ] कागा एकाय (पण्ण १४३)।

काउ वि [के] १ मयनित बागा (पण्ण २
१ म)। २ काउमय मय। मय पुं [मय]

काउमय देको मय की मयनित (पण्ण १४३
१४४)।

काउमय देको [के] देरी मयनित मयनित
काउमय देको (मण्ण २ २० मय)

'काउमयमय मय मय विरोप मय मय'
(पण्ण)।

काउमय म [काउमय] १ मय मय (पण्ण)।

काउमय मय [के] मयनित मयनित, मय-मय
मयनित (म २ २१)।

काउमय की [के] मयनित (म २, २०)।

काउमय की [के] मयनित (म २)।

काउमय की [काउमय] मयनित की मय
(म ४)।

काउमय देको काउमय (पण्ण १ १)।

काउमय देको काउमय (मण्ण १००)।

काउमय देको [काउमय] बागा की मयनित
मयनित। मय (पण्ण २ २—मण्ण
२३०)।

काउमय देको काउमय (पण्ण १ १)।

काउमय देको काउमय (पण्ण १ १)।

काउमय देको काउमय (पण्ण १ १)।

काउमय देको काउमय (पण्ण १ १)।

काउमय देको काउमय (पण्ण १ १)।

काउमय देको काउमय (पण्ण १ १)।

काउमय देको काउमय (पण्ण १ १)।

काउमय देको काउमय (पण्ण १ १)।

समय पुं [समय] समय, बन्ध (मुक्त
०) । समा स्त्री [समा] समय विशेष
धारा का समय (यो २) । सार पुं
[सार] मूल की एक भाति भाषा मूल
'एहो बि बावनारो छ देह मनुं पयागिछ
मनो' (गा २३) । सोअरिय पुं [सोअरि
रिछ] स्वभाव ब्याप एक बधारी (साध) ।
साग [साग] परम न [साग] सुगन्धि
द्रव्य-विशेष का बूत क नाम में तापा जाओ
है (छाया १ १ बण भीन गाठ) । तस
स न [तस] सोदो की एक भाति (ह
१ २६६) कुमा प्राय मे ८ ४९) ।
[समयविषय] पुं [समयविषय] इस
नाम का एक दिन मुनि जो मगध पारसनाथ
की परम्परा में थे (मग) ।

फाल्गुन पुं [फाल्गुन] १ देव-विशय (विश्व) ।
२ परबत विशय (धामन) । देवो फाल्गुन ।
फाल्गुनर छ [दे] १ निर्मलता बरना
परायणा । २ निर्मलता बरना
निराग देवा 'हो देवो मयिमा मजा रि'
पुता बानकनिय एमो हो का सोदेण
मज्झ लवमिणु' म जोरदीए धन न होइ
हा जात दर्पिनि दि कम्म लवदीए पुत
विदुमाण रिउता तियम । बरमि' (पुता
१६६ ४) ।

फाल्गुनर पुं [फाल्गुनर] १ धन धन
धन-विशय । २ वि धन-विशय 'बावना
सुनिताय धम्मिय १ निरी' (मगधिय)
(गा ३८) ।

फाल्गुनरि रि [दे] १ उगतव निर्द-
मिद । २ निर्मलता 'छवि न रिउम
हुता घटागुमार संसे, नतो बानस
रिवा रि' (पुता १६८) 'हा रिउता
बावेणु बानकनिय' (पुता १६८) ।

फाल्गुनरि रि [फाल्गुनरि] देवि न
मरत जानवना, फाल्गुन 'हो मुग्ध
भावे क' एको बानकनिय' (कण) ।

फाल्गुन पुं [फाल्गुन] १ मज्झ वेतकाय
फाल्गुन (पुत १ ६ २४) । २ बधर,
धीन (पग) । देवो फाल्गुन (उता ३६ ६
६) ।

फाल्गुन रि [दे] बूत छ (दे २, ३) ।

फाल्गुन पुं [दे फाल्गुन] पनु (दे २
२८) ।

फाल्गुनिय पुं [फाल्गुनिय] एक बरना
पुन (हो ७) ।

फाल्गुनी स्त्री [फाल्गुनी] १ रथान-बहुबला । २
विष्कार बरनेवाली (हुवा) । ३ एक
रथाली बमोय की एक पत्नी (हा ५,
१) । ४ देवान-विशय (हो ७) ।

फाल्गुनिय पुं [फाल्गुनिय] वन-विशय,
विन क बुर्याय ठा फाल्गुनिय (मोच २) ।
फाल्गुनिय पुं [फाल्गुनिय] फाला मोन
का मकर (म १ ८) ।

फाल्गुनी पुं [फाल्गुनी] बिहार का एक परबत
(हो ११) ।

फाल्गुनी पुं [फाल्गुनी] एक प्रमिद
प्राचीन देव धार्या (बिहार १२६) ।

फाल्गुनी स्त्री [दे] १ छरीए, देह । २ बाना
मर । ३ मर बरिछ (दे २ ३८) । ४ मर
मरु बानर (पाम) ।

फाल्गुनी स्त्री [फाल्गुनी] १ देवी विशेष
(पुता १६२) । २ एक प्रकार का वृक्ष
पवन (हा ७२८ टी छाया १ ६) ।

फाल्गुनी पुं [फाल्गुनी] १ देव विशेष पता
बानकनिय' (पा १२) । २ वि बानकन
रथ में उलान (पग ६६, १३) ।

फाल्गुनी स्त्री [फाल्गुनी] बन्नी-विशय ठा वृक्ष
का नाम (पग १) ।

फाल्गुनी स्त्री [फाल्गुनी] रिवा विशेष (पुन
२ २ २७) ।

फाल्गुनी न [दे] वरिण्ड, रथान वनाय का
देव (ह २ ३६) ।

फाल्गुनी स्त्री [दे] उतरलो (दे २ २६) ।

फाल्गुनी पुं [फाल्गुनी] १ देव-विशय
(विश्व) । २ परबत-विशय (पग ११) । ३ न
कल विशेष (पाम ५८ ६) । ४ छरी-
रथान-विशय (हो ७) ।

फाल्गुनी स्त्री [फाल्गुनी] १ मनुका बटी
(कण) । २ एक रथाली रथ ५ बानक
पत्नी (पाम १ २ १३६) ।

फाल्गुनी पुं [दे] १ छरीए, देह । २ मर
बरिछ (दे २ ३६) ।

फाल्गुनी देवो फाल्गुनिय न बानक (पग) ।

फाल्गुनी स्त्री [फाल्गुनी] रथान-विशय बान
समय पहले डुबो हई बोज का भी त्रिपुने
मरु हा छके पहा (विश्व ५ ८) ।

फाल्गुनी न [फाल्गुनी] हवय का वृक्ष मोन
विश्व (मंजु) ।

फाल्गुनी पुं [फाल्गुनी] रथान-विशय बण्डा
बानिग (मुर १ ४४ का १२) ।

फाल्गुनी पुं [फाल्गुनी] रथान नाम का एक मर्ग
(पुता १८१) ।

फाल्गुनी रि [फाल्गुनी] १ बान में उलान
काम-मर्कवा । २ बन्नी-विशय बानकनिय
'हवावा एम बाना बानिया वे फाल्गुनी'
(उत ३ क १६) । ३ बह शाख विगरी
मरु मय में हा पड़ने हो शाखीय फाल्गुनी
है (हा २ १—पग ४६) । ४ वृक्ष पुं
[फाल्गुनी] वीर-विशय (छाया १ १०—पग
२२८) । पुन पुं [पुन] एक देव मुनि
जो मगध पारसनाथ की परम्परा में थे वे
(मग) । मणि रि [मणि] बानिनी
संज्ञावाला (विश्व ३ ६) । सुय न [सुय]
बह शाख जो मरु मय में हा पड़ने का
नक (मणि) । सुयोन पुं [सुयोन]
देवा वृक्ष के मर्ग (मग) ।

फाल्गुनी स्त्री [फाल्गुनी] १ विद्या-वेदी-विशय
(विश्व ३) । २ बमरु की एक पत्नी
(हा ५, १ छाया २, १) । ३ बमरुनि
विशेष बानकनिय (पुन ४) । ४ रथान-विशय
बानो छे माया वायड मरु, बानो माया-लर
ब बान' (हा ७) । ५ रथान वेदिक की
एक छनी (मि १ ६) । ६ बौदी देव
रथान-वेदी (विश्व ६) । ७ बानकी बानि
(पाम) । ८ इस नाम का एक देव (विश्व) ।
फाल्गुनी न [फाल्गुनी] देवा बरना । बरिछा
की [बरिछा] मर्ग मर कर बानिग
बना (मि १ ६) ।

फाल्गुनी देवा फाल्गुनीय (पुन १ १ ६)

फाल्गुनी पुं [दे] बान की एक समय बन्नी
(मग २१६) ।

फाल्गुनीय न [मनुय] बानका बानका
(मग) ।

आनुस्स न [आनुस्य] बहुपत्न (मा २) ।
आनुस्स न [हे] वाणिज्य, रयाम उमत्त का
ये (हे २ १६) ।

आसेय न [आसेय] १ काली की कायात्मा ।
२ दुष्टपुत्र इत्य विरूप कालकल्पन (स ७३) ।
३ इत्य का मास-अण्ड कमेका (सुप १
३, १; रंभा) ।

आसेय देवो आसेय (बीज १) ।

आसेयसि यं [आसेयसि] सगुह-विरोध
(पण्ड १ २) ।

आसेयसि दु [आसेयसि] इम नाम का
एक शार्त्तिक विहङ्ग (अप ७ १) ।

आसेय पुं [आसेय] सगुह-विरोध को
वातनी-बन्ध की को बाणे तरह बिर कर
स्थित है (सम १०) ।

आय पुं [हे] १ कीर, बड़ी की शोक
आवृत्ति । २ अन्तर्लपित उपपत्तुना एक वस्तु,
इसमें दोनो घोर सिरहूर बटकमे बाले हैं
(बीज १; पत्रम ७१ ३२) । ३ अश्विपु
[कोटिक] नागर से मर दोनोबाला
(पशु) । ४ को आय = (हे) ।

आयडि की [हे] कानर (दुप १२१)
आयडि १४४ कप ४ १ टी) ।

आयडिपु पुं [हे] वैशिक कानर से मर
दोनोबाला (पत्रम ७१ ३२) ।

आयपु पुं [आयपु] एक महापुत्र बहाति
हावक देव-विरोध (पत्रम) ।

आयडिपि वि [हे] पण्डित प्रपण्डित्यु (हे
२, २) ।

आयडिपि वि [आयडिपि] कल्प-अपेय का
माहार (कल ३३ १ २) ।

आयडिपि पुं [आयडिपि] नाग-माटी कोर
उपपत्तु का मनुष्य (सुपा १७४ १२७ हे
१ ११ प्रती ११३) ।

आयडिपि की [आयडिपि] कालीक-
आयडिपि की [आयडिपि] (मा ४ ५) ।

आयडिपि न [आयडिपि] देव-विमान-विरोध (सम
२७ नवम २ २१) ।

आयडिपि न [आयडिपि] १ कांक्ष-अर्थन (सम
१४२) । २ वि कांक्ष मत का अनुगामी
(अप १) ।

आयडिपि वि [आयडिपि] १ कानक्ष मुनि-
संनयी । २ न वसिष्ठ-मुनि के वृत्तान्तनामा
एक इन्द्रादौ "उत्तराध्यायन" सूत्र का पाठवी
अध्याय (सम १४) ।

आयडिपिपि देवो आयडिपिपि (बीज १) ।

आयी की [हे] नीलचरुसली हृष रंभ की
बीज (हे २ २६) ।

आयुरित देवो आयुरित (स १०३) ।

आयेय न [आयेय] भाग्यफल, भाग्यवता
(पण्ड २२) ।

आयेय वि [हे] कीरर बहुत करोबाला
(अपु ४६) ।

आस देवो अहङ्ग = इष्ट । नास (पण्ड १) ।

आस पक्ष [आस] १ बहुला रोम विरोध
व बरण मानाव करता । २ कसला व की
नो धाराव करता । ३ बोहार कला । ४
कीर काला । ५ अह-आसंत आसमाण (पण्ड
१ १—पत्र २४५ पाठा) । ६ अह-आसिपि
(बीज १) ।

आस पुं [आस स] १ रोम विरोध, कीटी
(आपा १ ११) । २ दुष्ट-विरोध का "आस-
कुमुद" मने सुनिष्कलं वाग्य-जीविनं निम्नं"
(अप ७२४ टी) । "आसकुमुद विहङ्ग" (पत्र
३) । ३ असा कुल की अश्वेय वीर शोक-य-
मान होता है, "ता उल्ल निमह दुर्लभ घखर
हृत्कालकलसंकाश" (सुपा ४२६ कुमा) । ४
अह विरोध अह-विरोध (ठा १ १) । ५
अह (ठा ७) । ६ अहार कल्प (आपा) ।

आस देवो अहस - नास (हे १ २३ अह) ।

आस-अस वि [आस-अस] प्रमाटी अंधार में
पायक (पाठा) ।

आस-अस देवो आस-अस "अह रोहिती नीनाह
अह नीपति कलवा" (पिण्ड १) ।

आस-अस न [आस-अस] बोधाणा आह्वार
(पत्र २३३) ।

आस-अस पुं [आस-अस] अह-विरोध-
अह-विरोध (पण्ड १—पत्र ११) ।

आस-अस पुं [आस-अस] अह-विरोध (हे
आस-अस १ १७; पत्र) ।

आस-अस पुं [आस-अस] अह-विरोध (हे
आस-अस १ १७; पत्र) ।

तह गुवाई कर्बो कलुह-अहो इमी बन्हा'
(सुपा १२१) ।

आस-अस पुं [आस-अस] १ इम नाम का एक
असि (आपा) । २ अह-विरोध की एक वधि ।
२ एक बात की मन्त्री । ४ अह-प्रवर्तित
का नामाता । ५ वि अह-विरोध (हे १
४१; पत्र) ।

आस-अस न [आस-अस] १ इम नाम का एक
मोन (अ ७ आया १ १; कप) । २ अह-
प्रवर्तित अह-प्रवर्तित का एक पुत्र उल्ल । ३ वि
आस-अस रोम में अह-प्रवर्तित अह-प्रवर्तित
(अ ७—पत्र १६) । ४ अह-प्रवर्तित (सुपा १ १)
५ अह-प्रवर्तित (अप १ १ आस-अस) ।
६ इम नाम का एक अह-प्रवर्तित (अप १ १) ।
७ न इम नाम का एक अह-प्रवर्तित (अप १ १)
अह-प्रवर्तित (अप १ १) ।

आस-अस-असि की [आस-अस-असि] अह-
प्रवर्तित (आपा २ १ ५ अह २ २
२१) ।

आस-अस-असि की [आस-अस-असि] अह-
प्रवर्तित (आपा २ १ ५ अह २ २
२१) ।

आस-अस-असि की [आस-अस-असि] अह-
प्रवर्तित (आपा २ १ ५ अह २ २
२१) ।

आस-अस-असि की [आस-अस-असि] अह-
प्रवर्तित (आपा २ १ ५ अह २ २
२१) ।

आस-अस-असि की [आस-अस-असि] अह-
प्रवर्तित (आपा २ १ ५ अह २ २
२१) ।

आस-अस-असि की [आस-अस-असि] अह-
प्रवर्तित (आपा २ १ ५ अह २ २
२१) ।

आस-अस-असि की [आस-अस-असि] अह-
प्रवर्तित (आपा २ १ ५ अह २ २
२१) ।

आस-अस-असि की [आस-अस-असि] अह-
प्रवर्तित (आपा २ १ ५ अह २ २
२१) ।

आस-अस-असि की [आस-अस-असि] अह-
प्रवर्तित (आपा २ १ ५ अह २ २
२१) ।

आस-अस-असि की [आस-अस-असि] अह-
प्रवर्तित (आपा २ १ ५ अह २ २
२१) ।

आस-अस-असि की [आस-अस-असि] अह-
प्रवर्तित (आपा २ १ ५ अह २ २
२१) ।

आस-अस-असि की [आस-अस-असि] अह-
प्रवर्तित (आपा २ १ ५ अह २ २
२१) ।

१ श्री काशी नदी बगल रह्य (कुमा) ।
पुर न [पुर] काशी नदी बगल रह्य
(पत्र १ ११७) । राय पुं [राय] काशी
देव का राजा (उत् १८) । व पुं [व]
काशी देव का राजा (पत्र १ ४ ११) ।
बहुवचन पुं [वर्णन] इस नाम का एक
राजा जिसने भगवान् महावीर के पास सेवा
की थी (हा ८—पत्र ४१) ।

कासिख न [रे] १ मूल बर नाटक
कहा । २ संकेत बर (हे २ ११२) ।
कासिख न [कासिख] दौक भुर (पत्र) ।
कासिख न [रे] कासिख-नामक देव (हे
२, २०) ।
कासिख नि [कासिख] काशी रोपना (विषा
१ ७—पत्र ७२) ।

कासी की [कासी] काशी बगल (गामा
१ ८) । राय पुं [राय] कासी का राजा
(विष) । स पुं [स] कासी का राजा
(विष) । सर पुं [सर] कासी का राजा
(विष) ।

काह एक [काय] कहा । काहति (मूय
१ ११ १) ।

बाहर सेवो बाहार (स ४ १ टी) ।

काह नि [रे] १ मूय, कोमल । २ लघु, बुरत
(हे २, १८) ।

काह नि [काह] काह, बरत, बरीर
(हे १ २१४ २२४) ।

काह पुं [काह] १ काय-विशेष (पुर १
१६ कीप एकि) । २ धर्मक धाराज (पत्र
२ २) ।

काहय की [काहय] काय-विशेष बह-
लना (विष ८७) ।

काहयिष की [काहयिष] बामुप-विशेष
(पत्र २०१) ।

काहरी की [रे] वरती भुरती (हे २, २१) ।

काहरी की [रे] १ बर करने का नायादि ।
२ ठा बिहार वृत्ति या वृत्ति बरैष वरती
बाती है (हे २, २१) ।

काहार पुं [काह] काह, एक बाति जो पानी
बले कीर सेवो बरैष कीर का नाम करती
है (हे २ २०) अकि ।

काहार पुं [रे] काह, बरैष (पुर १ १) ।
३१

काहय पुं [काहय] सिक्का-विशेष (हे
२ ७१; पत्र १ २ पत्र (पत्र) ।

काहिय नि [काहिय] काह-कार, बाति करने
बाला (हे १) ।

काहिक पुं [रे] योगल गलता, की स
(हे २ ३८) ।

काहिकिषा की [रे] ठा बिहार वृत्ति बाति
पकायी बाती है (गाम) ।

काहोख रेवो का हय (गम् १ १) ।

काहोख न [कारिपतिदान] प्रभुकार
की धारा से किया बाति दान (हा १) ।

काहो य [काह] काह किस समय ? (हे २,
१२, पत्र २४ पत्र) ।

काहय की [रे] गुमा सास रती (हे २
२१) ।

कि रेवो कि (हे १ २१ पत्र) ।

कि एक [क] कला बाला 'हुकि' कल
(विष ११) । कल किञ्च (पुर १
१ १४ २१) ।

किञ्च रेवो कय = इत (काह १२२, प्रामु ११
मम ४ मे १३ बका ४) ।

किञ्च रेवो किञ्च = इत (पत्र) ।

किञ्च नि [कियत्] कितना (सण) ।

किञ्च रेवो कयत् (पत्र ११) ।

किञ्चिका की [किञ्चिका] गता का जगत
माम (गाम) ।

किञ्च की [किञ्च] इति किया, विमान (पत्र
पत्र ल) । कर्म न [कर्मन] १ बल
प्रमाण (स २१) । २ कर्म-करण (स
१४ १) । ३ विमान (मय ४२) ।

कि स [किम्] कील क्या करें, निषा
प्रल मतलब बलता कीर साहय की
बलताबाला लय (हे १ २१ १ २८
७ गुमा विषा १ १ निष ११) 'कि
कुम्ति मलीषी बाट सन्नेदि निपति'
(प्रामु ४) । सय य [सुम] ठा कि,
किर क्या ? (पत्र) ।

किञ्चक्य रेवो किञ्चक्य (गामा २,
२, १) ।

किञ्चक पुं [किञ्चक] इत नाम का एक
पुल्ल (पत्र) ।

किञ्च पुं [किञ्च] नीकर बाकर, बास (पुरा
१ २२१) । सय पुं [सय] १ पर
मेवर परनाला । २ धनुष विष्णु (पत्र
२) ।

किञ्च की [किञ्च] दासी नीकरणी
(कपु) ।

किञ्चक्य रेवो केकाय (पत्र २१२) ।

किञ्चक्य रेवो की [किञ्चक्य] क्या
कला है यह जानता । मूय नि [मूय]
किञ्चक्य-विष्णु हवाका भीषा बह
मग्य जिसे यह म मूय पड़े कि क्या किया
बाय (महा) ।

किञ्चक पुं [किञ्चक] धर्मक लय-विशेष
(विष १४१) ।

किञ्च नि [रे] संकेत, पत्र (हे २ ११) ।

किञ्चक्य रेवो की [किञ्चक्य] हवाका
बह मग्य जिसे यह म मूय पड़े कि क्या
किया बाय (पा ७) ।

किञ्चिक्या की [किञ्चिक्या] मूय बरिषा,
करवो (पुरा १११) ।

किञ्चिकी की [किञ्चिकी] अर रेवो (पुरा
१२४ कुमा) ।

किञ्चिक रेवो किञ्चिक (विषार ४११) ।

किञ्चिक पुं [किञ्चिक] मूय नीट-विशेष,
नीजिव कीर की एक बाति (गाम) ।

किञ्च य [किञ्च] धनुष-मोटक धर्मक, कीर
की वृषत की (पुरा ४ ४१) ।

किञ्च न [किञ्चन] १ धर्म-हण नीट
(विष १४१) । २ य, मूय, किञ्च (मय
२) ।

किञ्च न [किञ्चन] इय बरु (उत् १२,
८ पत्र १२, ८) ।

किञ्चिय नि [किञ्चिय] मूय ग्यास
(पुरा ४१) ।

किञ्च य [किञ्चन] धर्म ईय, मूय
(की १; सन ४०) ।

किञ्चिक्य नि [किञ्चिक्य] मूय ग्यास
(पुरा ४१) ।

किञ्च य [किञ्चन] धर्म ईय, मूय
(की १; सन ४०) ।

किञ्चिक्य नि [किञ्चिक्य] धर्म ग्यास
(पुरा ४१) ।

किञ्च नि [किञ्चन] मूय नम पुर्ण-माम
(पत्र) ।

किञ्च पुं [किञ्चक] मूय-पुर्ण पत्र
(पुरा १ १) ।

वाल्मुस्स न [वाल्मुस्स] कपुवण (मा २) ।
वाल्मुस्स न [वे] वारिण्ण, रयान् ठयान् का
वे (हे २ १२) ।

वासाय न [वासय] १ कमी देवी का माया ।
२ मुन्यिण्ड इत्येति वाचस्पत्य (ह ७२) ।
३ हृष्य का मास-कण्ड कमेया (सुप १
५, १; रंसा) ।

वास्पन् देवी वास्पेय (बीज १) ।

वास्पेयि वु [वास्पेयि] समुद्र विरोध
(सुप १ ५) ।

वास्पायु वु [वास्पेयि] इम नाम का
एक कठोमिक विज्ञान (सप ० १) ।

वास्पेय वु [वास्पेय] समुद्र विरोध की
वाष्पनी-नलक डीप को बाधे लटक पिर कर
लियत है (सप १७) ।

वास } वु [वे] १ बाहर, बाह्यी शोक
वाहक } शोक लिये लघुपुमा एक वासु,
इसमें शोक धीरे धीरे निरहूर लटकते जाते हैं
(बीज १ पद्य ७१, १२) । कोहिय वु
[वाटिक] बाहर से कार शोकलब्ध
(सपु) । देवी वास्य = (वे) ।

वासीह } की [वे] बाहर (गुप १२१;
वासीह } १२५ वन ४ १ टी) ।

वासीहम वु [वे] वैचिक कोर से पार
होनेवाला (पद्य ७५, १२) ।

वासय वु [वासय] एक ग्राहक, बह्मि
हाक देव रिपे (पद्य) ।

वासिअ वि [वे] वापन, धमपिण्णु (हे
२ २५) ।

वास उअ वि [वासिक] कल-जलेय ल
वापन (सप ७५ १५१) ।

वापासिअ वु [वापासिक] वाक-वासी यवीर
मगधय का मनुष्य (गुप १७५; १७७ हे
१ ११; प्रती १११) ।

वापासिअ } की [वापासिक] वापासिक-
वापासिअ } वापासी की (मा ४ न) ।

वापासु न [वापासु] देव-विमाक-विरोध (सप
२० पद्य २ २१) ।

वापास न [वापास] १ वास-वर्तन (मन
१२२) । २ वि शोक न का धनुषादी
(बीज) ।

वापिस्सि वि [वापिस्सि] १ कपित मुनि-
संघी । २ न, कपित-मुनि के वृत्तांतवाला
एक प्लांश 'उत्तराध्याय' मूक का पाठनी
धम्मल (सप १५) ।

वापिसाया देवी वापिसायाय (बीज १) ।

वापी की [वे] नीलवादीसी हृष्य रंय की
बीज (हे २ २६) ।

वापुरिअ देवी वापुरिअ (स १७१) ।

वापेय न [वापेय] वापस, वापसता
(पणु १२) ।

वापेय वि [वे] नाहर बह्म करोनाला
(पणु ५६) ।

वास देवी कड्ड = डपु । कसड्ड (पड्ड) ।

वास घट [वास] १ रहना रोच-विरोध
से बरज घाघन करना । २ कसना, बाँधी
को घाघन करना । ३ बाँधार करना । ४
कोक जाला । बह्म कसत वासमाण (पणु
१ १—पद्य १५; मापा) । लड्ड वासिया
(बीज १) ।

वास वु [वास] १ रोच विरोध, बाँधी
(शामा १ ११) । २ लुण-विरोध वास 'काप-
कुम्भ' मने मुनियसं बन्ध-वीरिन मिय-
(उ ७५८ टी) । 'कापकुम्भ' विरुद्ध (पद्य
१८) । ३ उषका मूल को फटे धीरे रोमाय-
मान होता है 'वा लण मिय' बुनि सखर
हृष्यमलसंघर्ष' (गुप ५२५ गुमा) । ४
बह्म विरोध बह्म-विरोध (डा २ १) । ५
रख (डा ७) । ६ रंडार, पक (मापा) ।

वास देवी कंस = वास (हे १ २५ बह्म) ।

वासिअ वि [वासिअ] ममादी रंडार में
घाघक (मापा) ।

वासय देवी वासय 'जेठ रोहिं बीजाई
जेठ नीरड वाचन' (लिय १) ।

वासन न [वासन] बीजाणा वाह्यार
(बीज २११) ।

वासमह वु [वासमह] बलपति-विरोध
कुम्भ-विरोध (पणु १—पद्य ११) ।

वासय } वु [वास] इरीयन विधान (हे
वासय } १ २७; वापः
'नह्म का गुण' नामाई,
वासो बरिण्णवाई विधानि ।

वह्म गुमाई कर्मतो बह्मगुहो इयो बह्मा'
(गुप १११) ।

वासय वु [वासय] १ इम नाम का एक
अपि (शामा) । २ हरिउ की एक वापि ।
२ एक वाप की मल्ली । ४ वस प्रवर्तित
का नामा । ५ वि वाक कोनेवाला (हे १
५१; बह्म) ।

वासय न [वासय] १ इम नाम का एक
वीज (डा १; शामा १ १; कप) । २ वु
मयवाल् अयमने का एक वुन उरु । ३ वि-
कसयन मोर में लटक कसयन-गोपी (डा
५—पद्य ११) । जट क-कण मूक (१६) ।

४ वु नासिह हुआ (मा ६, १; धामन) ।

५ इम नाम का एक गुरुक (पद्य १५) ।

६ इम नाम का एक 'मंतवक्ता' मूक का
धम्मय (पद्य १५) ।

वासयनवासिया की [वासयनवासिक] वी-
परिष्क (मापा २ १ न १ व २, २,
२१) ।

वासविजया की [वासयपीया] कैम पुर्वी
की एक शब्दा (कप) ।

वासपी की [वासयपी] १ वृषिनी बरिटी
(गुमा) । २ बरयमन-गोपीया की (कप) ।

रह की [रहि] मयवाल् पुनसिआ की
प्रम रिप्या (सप ११५) ।

वास की [वास] वुनत की (हे १ १२७
पह्म) ।

वासिअया } की [वासपी] कपाक-रंय ने
वासिअ } रंय हूँ साड़ी लण गाड़ी (मन
का) ।

वासय वि [वासय] बपाय-रंय से रंय
हुमा कपि (पद्य) ।

वासार न [वासार] १ लण ब्रह्म बरोबर
(गुप ११६) । २ पद्यम-विरोध रंयार
(स १ ६) । ३ वु वुह, वाप (बह्म) ।
४ प्रवेष्ट स्वात (पद्य) । 'मूमि की
[मूमि] लिम-विरोध (पद्य) ।

वासार न [वे] बह्म-विरोध कीचपक (हे
१ २७) ।

वासि वु [वासि] १ वेठ-विरोध बारी
सिआ 'वाविउ वलपयो' (गुप ११; वड्ड
१) । २ बारी देव का राजा (गुमा) ।

छर्म मिल नावा है उस तरह मिमा हुआ (अ)।

किट्ट बि [किट्ट] क्लेश-युक्त (मग ३ २, बीष ३)।

किट्ट बि [कट्ट] बीषा हुआ हृत्-विदारित (पुर ११ २१; मग ३ २)। २ न देव विमान विरोध 'जे बवा विरिचण्णं विरिचाम नं वं मल्लं किट्ट (१ ट्ट) बावोएणं पर एणवडिअं विमानं देवताय उज्जवण्णं' (सम ३६)।

किट्टि स्त्री [कट्टि] १ कर्ण। २ बीषाव भावर्ण। ३ देवविमान-विरोध (मम ६)।

कूट न [कूट] देवविमान विरोध (सम ६)। घोस न [पाप] विमान विरोध (सम ६)। सुच न [सुच] विमान-विरोध (सम ६)। वस्य न [वस्य] विमान विरोध (सम ६)। प्यम न [प्रम] देवविमान विरोध (सम ६)। वण्ण न [वण] विमान-विरोध (सम ६)। सिंहा न [सिंह] विमान-विरोध (सम ६)। सिंहु न [सिंह] एक देव विमान (सम ६)।

किट्टियावच न [कट्टियावच] देवविमान-विरोध (सम ६)।

किट्ट दुत्तरवडिसा न [कट्टदुत्तरवडिसा] इस नाम एक देव-विमान देव-मग्न (सम ६)।

किट्टा बि [कीट्टा] बीषा करनेवाला (सूय १ ४ १ २ टी)।

किट्टि पुं [किट्टि] गुरु, सुगर (हे १ २३१ पद)।

किट्टिकिडिया स्त्री [किट्टिकिडिया] युधी हठी की माला (आमा १ १—पत्र ७४)।

किट्टिम पुं [किट्टिम] रोम विरोध एक प्रकार का छुर कोड़ (बहुम १३ मय ७ १)।

किडिया स्त्री [के] किड्डी बीषा डार (स ३०१)।

किट्ट मक [कीट्ट] सेतना बीषा करना। नह किट्टव (सि ३०७)।

किट्टकर बि [कीट्टाकर] बीषा-कारक (वीर)।

किट्टा स्त्री [कीट्टा] १ बीषा सेत (विना १ ७)। २ वस्त्रावला (डा १—पत्र ३१६)।

किट्टाविया स्त्री [कीट्टाविया] बीषा-भागी बालक को सेत-युव कपनवासी धारि (आमा १ १६—पत्र २११)।

किट्टि बि [के] १ संयोग के लिए जिसको एकांत स्थान में नामा बाध नह (मग ३)। २ स्वरिच, कूट (हे १)।

किट्टि न [किट्टि] संघर्षियों का एक पात्र, जो बाँव का बना हुआ होता है (मम ७ ६)।

किट्ट सक् [कीट्ट] करीबता। निराह (हे ४ २२)। कट्ट 'जे किट्टा निरावेमासे हल्ले बायमासे' (सूय २ १)। किट्टव (सूय ३६१)। कट्ट, किट्टा (सि ५८२)। प्रयो किट्टवेह (सि ३३१)।

किट्ट पुं [किट्ट] १ कर्ण-विच, कर्ण की निराणी (पत्र ३)। २ मांस-बीष। ३ सुला बाध (सूय ३ बवा ३६)।

किट्टइय बि [के] शोभित विभूषित (पत्र १२ ६)।

किट्टा न [कट्टा] बीषा करीव, क्व (अ ५ २३८)।

किट्टा सेवो किट्टा (माग ६ १ १६)

किट्टा बि [कट्टा] करीबनेवाला (सम्यो ११)।

किट्टिकिय मक [किट्टिकिय] किट्टा-किट्टा करना। कट्ट किट्टिकियित (वीर)।

किट्टिय बि [कीट्ट] बीषा हुआ करीव हुआ (सूय ४१४)।

किट्टिय पुं [किट्टि] १ मनुष्य की एक बाटि, जो नावा बनायी दीर बनायी है (मग ३)। २ छली बनने का नाम करने-वाली मनुष्य बाटि 'किट्टिया उ बरतामो बलित' (पंज)।

किट्टिय न [किट्टि] बाध-विरोध (पत्र)।

किट्टिया की [किट्टा] छोटा छोटा कुतली 'धमेवि सई मडिअल्लिय' सुण्यविणियकोसिला।

मल्लवमकमबीषावियगहा

कट्टि किट्टि (स १८)।

किट्टस मक [कट्टा] तीव्र करना, डैज करना। किट्टाह (विग)।

किट्टो म [किट्टि] क्यों किट्टिय? (हे २ ११ हे २ २१६) पाषा गा १७ महु)।

किट्टा बि [कीट्ट] १ छलीय, सुला हुआ 'उज्जवण्णं कट्टमपियण' (सूय ३७१)। २ धात, कँका हुआ (डा ६)।

किट्टा पुं [किट्ट] १ वस्त्रावला वस्त्र-विरोध जिससे बाध बनाता है (गठक भाषा)। २ न सुगु बीषा क्लेश-युक्त के बीष जिसका बाध बनाता है (उत्तर २)। सुग की 'सुग' निरुद्ध के पत्र से बनी हुई मविण (मग ३)।

किट्टा बि [के] रोममाण राजमाण (हे २ १)।

किट्टा म [किट्ट] प्रसारक धम्म (कवा)।

किट्टर सेवो किट्टर (अ १ पत्र ६६)।

किट्टा म [कट्टा] क्यों क्यों कट्ट, कैसे? 'किट्टा कट्टा किट्टा पत्ता (विपा २ १—पत्र ११)।

किट्टा म [किट्ट] इन धर्मों का मुख्य धम्म—१ प्रज्ञा। २ चित्त। ३ सादस। ४ स्थान, स्वस। ५ विकल्प (उत्तर स्थान ३४)।

किट्ट सेवो कट्ट (म १३, आमा १ १; उर १ ४, पण १७)।

किट्ट न [के] १ बाँध कपड़ा। २ सदेह कपड़ा (हे २ ३६)।

किट्टा पुं [के] बर्षाकाल में बड़ा धारि में होनेवाली एक तरह की कई (बीष ३६)।

किट्टा सेवो कट्टा (अ ४, ३—पत्र ३३, कम्म ४ ११)।

किट्टा पुं [किट्ट] सूजकर, सूजारी (हे ४ ८)।

किट्ट सेवो किट्ट (वीर ३)।

किट्ट सेवो किट्ट—वीर्य। अथ किट्टवत् (वीर)। कट्ट किट्टवत् (पत्र ११६)।

किट्टा न [कीट्ट] १ स्वाभा तृप्ति 'उव म विमुत्ताम वडि किट्ट' (अज ४ से ११ ११३)। २ बर्णन प्रसारण। ३ वजन, वजन (विदे ४४; वज्रक कुमा)।

किट्टा की [कीट्ट] कीट्ट, बर्णन प्रसारण (वैस ७४८)।

किञ्चकल पुं [कि] शिरीष-वृक्ष निष्पन्न का पत्र
(दे २ १११)।

किण्डं (श्री)। य [किमिषम्] किमेतन्
यद् वहा ? (पद : कुमा)।

किनु य [किनु] परन्तु लेकिन (पुर ४
१०)।

किशुरय रेवो किमुय (पत्र)।

किशिय न [किन्तु] १ ननु वा न मध्य-स्वयम्।
२ ज्योतिष में दृष्ट लग्न से पड़ना जोना
मलग्न की दूरत्वका स्थान 'किशिवरुणद्विज
पुराणि' (मुना ११६)।

किशुअ पुं [किशुक] कशुक मय (महि)।

किशर पुं [कि] छोटी यक्षी (दे २, ११२)।

किशर पुं [किशर] १ अम्लार रेवों की एक
जाति (पद १ ४)। २ सप्तम्य वर्षमान
की के शास्त्रके का नाम (संति ८)। ३
ब्रह्मण्य की एक-छेला का ध्वनिदि देव (अ
२, १)। ४ एक इन्द्र (अ २ १)। ५ एक-
पक्षी देव-नामक (कुमा)। कंठ पुं [कंठ]
निम्नर के कण्ठ विजना बड़ा एक भाग
(जीव १)।

किन्तरी श्री [किन्तरी] निम्नर के की श्री
(कुमा)।

किनु य [किनु] पूर्वपक्ष धायेन धातुधन का
गृहक धातुधन (पद १)।

किपय पि [कि] हण्य कंठस (दे २ १११)।

किपाय य [किपाय] १ बुद्ध-विरोध 'बुद्धि
विद्वि बद्धा विनया विनामयुद्धम' (अ
पुर ११२ बोध)। २ न. उद्यम यज
जो केवल न दीर हार में मुन्य, परन्तु लगे
के प्राण का भाव करना है 'विनामयुद्धम'
विनया' (पुर ११२ ११)।

किपि य [किमपि] कुछ भी (प्रागु १)।

किनुयि पुं [किनुय] १ अम्लार रेवों
की एक जाति (पद १ ४)। २ एक इन्द्र,
अम्लार-विनाम के अम्लार विनाम का इन्द्र (अ
२ १)। ३ विरोधन वीर्य की एक-छेला
का ध्वनिदि देव (अ २, १—अ २ १)।
४ यं [कंठ] कंठ की एक जाति जो
निम्नर के कण्ठ विजना बड़ा होता है
(जीव १)।

किञ्चिद वि [कि] स्वचित्ति पितृ ह्यया कुमा
ह्यया (२, १११)।

किञ्चम वि [किञ्चम] धातु, नि-धार
(पद २ ४)।

किञ्चयी श्री [किञ्चयी] बलमुक्ति बलरूप
(हस्मरी १११)।

किञ्चार पुं [किञ्चार] उत्पन्न-गृह उत्पन्न का
वीर्य धार भाव (दे २, १)।

किञ्चुय न [किञ्चुय] कयोपि-व्यतिष्ठ एक
स्वर करण (विने ११११)।

किञ्चुअ पुं [किञ्चुअ] १ पलाश का पेड़ टेम्बू
बाक (पुर १ ४२)। २ न. पलाश का पुत्र
(दे १ २४ १)।

किञ्चिद वि [कि] तर्प लप (दे २ ११२)।

किञ्चिदा श्री [किञ्चिदा] नगरो-विरोध
(दे १४ १११)।

किञ्चिदि पुं [किञ्चिदि] १ पूर्व-विरोध
(पदम १ ४२)। २ इस नाम का एक राजा
(पदम १ ११४ १ २)। पुर न
[पुर] नगर विरोध (पदम १ ४२)।

किच पि [किच] १ नरने वीर्य कर्तव्य
पदम (मुना ४१२१ कुमा)। २ कल्पनीय
पुनरीय 'न विदुषी न पुरोही मेघ किञ्चात्
विदुषी' (उत्त १)। ३ पु. गृहल (पुप १
४)। ४ न. शास्त्रीय धनुस्त्राज किया,
कृति (माता २ २, २ पुप १ ४)।

किचय पि [किचयमान] १ सिद्ध किया जाता
कदा जाता। २ वीर्य किया जाता नजाना
जाता (पत्र)।

किचय न [कि] प्रज्ञान, बोध 'विचययेय
अयमवयवविज्ञा किञ्चयं च पोटयत्' (धोच
११ —अ ४२)।

किचा ली [किचा] १ भाग्य नर्तन (अ
१ ११६)। २ किया नाम नर्तन। ३ वन
बनेछ की धुल का एक मेर। ४ बाहुल्य
दे। ५ लोच-विरोध महाभाषी का रोच
(दे १ ११६)।

किचा रेवो कर = वृ।

किचि ली [किचि] १ नव बनेछ का वन।
२ बने के का वन। ३ पूर्वपक्ष, योग्य। ४
हठिना कन्य (दे २ १२१ १) पद)।

पाठरूप पुं [पाठरूप] महादेव, विन (कुमा)
हृ १ [पाठ] महादेव विन (अ)।

किञ्चिद य [किञ्चिद] किनेन वन
तक, कब तक ? (अ १२८ १)।

किञ्च न [किञ्च] १ कुञ्च कट (अ २
१)। २ पि कट्ट-साय कट्ट-मुञ्च (दे १
१२८)। ३ किञ्च कुञ्च से मुनिरत्न से
(पुर ८ १४८)।

किञ्च पि [किञ्च] बरीरेन योग्य, धातु
विजयमेव वा' (संति ४)।

किञ्चत रेवो कि = वृ।

किञ्चम पि [किञ्च] किया वन निम्न
(विन)।

किञ्च लक [किञ्च] १ स्नाता कण्ठ,
कृति करना। २ बर्तन करना। ३ वन्य,
बोला। किञ्च, किञ्च (धातु) मल। वरु,
किञ्चाम (पि २८६)। किञ्च, किञ्च
किञ्चिदा (अ २४ कय)। इन्द्र, किञ्चिदा
(अ)।

किञ्च ली [किञ्च] १ बाहु का मन मेर
(अ ११२)। २ रंज-विरोध (अ १, १)।
३ लक, ली बनेछ का मेर। ली ही
(पदम ११)।

किञ्च रेवो किञ्चण (वृ १)।

किञ्चि ली [किञ्चि] १ धातु-विरोध,
विनाम-विरोध 'धनुस्त्राविरोधीय धनुस्त्राये-
लविमय' (किञ्च) (पद १११ धातु)।

किञ्चि पि [किञ्चि] १ बलि, बलि
(पुप १ १)। २ बलि-विरोध, बलि (पुप २
२ अ ४)।

किञ्चिदा ली [किञ्चिदा] बल-विरोध
(अ २ १) म ४ २)।

किञ्चि न [किञ्चि] १ ली वरनों नि
धातु का नि धातु कृते (प्रागु)। २ वृ
प्रागु का नृ मुना (प्रागु धातु)।

किञ्चि न [किञ्चि] १ अ धातु का बाध
बहा हुआ धातु। २ उत्तरे बना हुआ मुना।
३ अ अंत के बाध धातु की निनाम का
मुना (प्रागु १४)।

किञ्च रेवो किञ्च य विदु।

किञ्चिद य [किञ्चिद] धातु न निना
हृय, एवाकार, कैय मुनर धातु का विदु

किरिगिष्ठ नि [किरिगिष्ठम्] किरिगिष्ठम्
तेजसी (गुर २ २४२) ।

किराह पुं [किराह] १ धारां देव विरोध
क्रियाय (घ १ ४८) । २ भीम एक बंसी
जाति (गुर २ २७ १८ गुण ३३१ हे
१ १८१) ।

किराव (टी) देवो क्रियाय (ग्राह ८१) ।

किरि देवो किर = किम (किरि ८१२ ८१४) ।

किरि पुं [किरि] भाषु की धाराय 'कलह
किरिच कलह धिरिच कलह किरिचि
किरिचय' सरो' (पद्य २४ ४२) ।

किरि पुं [किरि] मुद्र, धूमर (बज्र ४) ।

किरिआय देवो कयाण 'कर्मवर्णविष्णु
किरिआय' (मुच २१) ।

किरिडिरिआ १ स्त्री [दे] १ कर्णोत्तरिका,
किरिकिरिआ १ एक राग से बुरे बात गई
हुई बात पर । २ कुतूहल कौमुद (दे २
११) ।

किरिकिरिया स्त्री [दे] १ बाध-विरोध बाध
धादि की बन्ना—सकड़ी से बना हुआ एक
प्रकार का बाना (पाबा २ ११ १) ।

किरिपय देवो किराय (ग्राह—मात १७) ।

किरिया स्त्री [क्रिया] १ क्रिया इति क्या
पाद प्रत्यय (धूम २ १; छ ३ १) । २
राश्वोक मनुग्रह, कर्मनुग्रह (धूम २ ४
पद्य १४) । ३ राश्व व्यापार (भा १७
१) । ४ द्वाय न [त्यान] कर्मबन्ध का
बाण (धूम २, २ पाब ४) । पर वि

[पर] मनुग्रह-मुद्र (वज्र ४) । बाह्वि
[बाह्वि] १ धारित क्रीडाविद्य प्रसिद्ध
मान्येयता (छ ४ ४) । २ केवल क्रिया से
ही मोक्ष होता है ऐसा मान्येयता (धम
१ १) । विज्ञास न [विज्ञास] एक
केन कन्यांश तेजसां पूर्व-बन्ध (धम २६) ।

किरीड पुं [किरीट] मुद्र, गिरि-मुद्रण
(बाप) ।

किरीडि पुं [किरीटि] धनुं मध्यम पाण्डव
(केली ११२) ।

किरीव नि [कीट] बीजा, घटोरा हुआ
(पाय) ।

किरीय पुं [किरीय] १ एक स्नेह्य देव । २
प्रथम बरान स्नेह्य धादि (एन) ।

किरीयय न [किरीय] पत-विरोध किरो-
विना बली का पत (सर ६ ३) ।

किरि देवो किर = किम (हे २ १८६ पद्य
कुमा) ।

किरीय नि [क्रिया] किल, भाव (वज्र ४) ।

किरीय न [किरीय] बाध का एक पात्र
विधमें पैया बनेय को खाना सिमाना जाता
है (उवा) ।

किरीय न [किरीय] कृष्ण-विरोध (धर्मवि
१११ ११६) ।

किरीयय पद [किरीयय] किम
किम धाराय करता हैसना किमकिम
न सहरित मयिचोकिरिगिष्ठि (वज्र) ।

किरीययय न [किरीययय] 'विम
किम' ध्वनि हर्ष-ध्वनि (धापय) ।

किरीयि स्त्री [दे] १ रम्या, पीरी (दे ११) ।

किरीयय पद [क्रिया] क्लम्य होता, क्षिप्त
होता । किममह (कपु) । किममवि (बजा
१२) । बह किममसं (पि ११६) ।

किरीयय न [कीर्याय] दम नाम का
एक क्लम्य-मुद्र (पि) ।

किरीयय पुं [किरीय] दूष का विकार-विरोध
मलाई (दे २ २२) ।

किरीयय पद [क्रिया] क्लम्य करना पित्त
करना ग्लानि उत्पन्न करना । किरीयय
(पि ११६) । बह किरीयय (भा ३ ६) ।
कह किरीययमना (भा ४६) ।

किरीयय पुं [क्रिया] क्लम्य, पतित्य ग्लानि
'कर्मविरोध के किरीय' (पि किरी २४ ४) ।

किरीययय स्त्री [क्रियया] क्लिप्त करता
उत्पन्न करता (भा ३ ३) ।

किरीययय स्त्री [क्रियया] क्लम्य क्लेश
(महावि ४) ।

किरीयय देवो किरीय (धनु १११) ।

किरीयय नि [क्रियय] क्षिप्त किया हुआ
होता किरीयय कीर्ति 'वज्रहृत्क्रिययि
धर्मो' (पद्य १ ३ २२; गुर १ ४४) ।

किरीयय न [दे] पीयी सकड़ी सकड़ी का
टुकड़ा दीर्घतरोत्तरय किरीयययि ध्वनि
किरी (भा १ ३ पाय १, ११) ।

किरीयय न [दे] क्लम्य देवो (भा ५) ।

किरीयय देवो किरीय (ग्राह—मुच ११; पि
११६) ।

किरीययय पद [रम] रमण करना झोड़ा
करना । किरीययय (हे ४ ११८) ।

किरीययय न [रम] रमण झोड़ा धर्मोय
(कुमा) ।

किरीययय पद [किरीययय] 'विम-विम'
धाराय करता । बह किरीययय (उप
१ ३१ टी) ।

किरीययय न [किरीययय] दम नाम का
एक विद्याभरण (हृ) ।

किरीयययय देवो किरीययय । बह
किरीयययययय (पद्य ३३ ८) ।

किरीययययय न [किरीययययय] 'विम-विम'
धाराय करता हर्ष-मोक्ष ध्वनि-विरोध (ध
३७ १८२) ।

किरीयय नि [किरीय] १ क्लेश-मुद्र (उप ३२) ।
२ क्लिप्त विपय । ३ क्लेश-जलक (पद्य हे
२ १ ६; उवा) ।

किरीयय देवो किरीयय (वज्र ८३) ।

किरीयय नि [क्लम्य] क्लिप्त पतित (प्राय'
पद्य हे १ ४४) ।

किरीयय स्त्री [क्लम्य] रमण क्लम्यता
(पि ३३) ।

किरीयय नि [क्रिय] धात्र पीसा (हे १
४४, २ १६) ।

किरीयय देवो किरीयय । किरीययय (पि
१७७) । बह-किरीयययय (दे १ ८ ११
३) ।

किरीयययय नि [दे] क्लिप्त क्लम्य (दे १
१२) ।

किरीयय देवो कीय (बज २; म ४३) ।

किरीयय पद [क्रिया] पक्ष पाता पक्ष
पाता, पुत्री होता । बह किरीययय (पद्य
२१ ३८) ।

किरीयय देवो किरीयय 'विष्णुपुत्रकक्षीयाय
किरीयययययय कुदम' (मुवा २४) ।

किरीययय नि [क्लेशित] धारायित क्लेश-
प्राय (ध १४६) ।

किरीययय देवो किरीयय = किरीयय । किरीययय
(महा ४४) । बह किरीयययय (ग्राह—
मात १४) ।

किरीयययय नि [क्रिय] क्लेश-प्राय क्लेश-
मुद्र (उप ४ १११) ।

फिरमिस्त नि [फिरमपम्] फिरमपाना
 तेवस्वी (मूर २, २४२) ।

किराड) पुं [किराड] १ घनार्ध केा विदेश
किराय) (पत्र १४८)। २ मील एन बप्पी
बाणि (गुर २ २७; १८; मुग ३६१ हे
१ १८३)।

किरात (श्री) देखो किराय (प्राप्त ८९) ।

घिरि दैनी घिर = गिर (गिरि ८१२ ८१४)।

किरि वु [किरि] मामु की घाबाज 'बत्पर
 निरिति बत्पर द्विति बत्पर त्रिति
 रिष्ठाणै सदा' (पत्र २४ ४३) ।

फिरि वृ [फिरि] मूकर, मूषर (गउड) ।
फिरिआण देखो क्याण 'जम्म'तरयहिमगुन
रिहिमाणों' (दृषक २१) ।

किरिधिया १ स्त्री [दि] १ कजोरकणिका
किरिधिरिया १ एक बात में दूसरे बात में
हर्द बात या २ कुतूहल कौतुक (दे २,
६१) ।

पिरिफेरिया स्त्री [दे] बाध-विरोध बाध
 प्राप्ति की गन्था—सगड़ी से बना हुआ एक
 गन्था का गन्था (गन्था ३.१.१)।

विरिज्ञान ऐनी विज्ञान (नाट—मास १७)

किरिया रती [क्रिया] १ क्रिया वृत्ति व्या
 पार, प्रयात (मूस २ १; ट ३ ३)। २
 व्यापक व्यापार, व्यापक (मूस २ ३)

राधाचि चतुर्गुण, चतुर्गुण (सूच २ ४
५५ १४१) । ३ सारथ व्यापार (भग १०
१) । ४ द्वाज न [स्थान] कर्मस्थान क
व्यापार (भग २ ३ व्याज ५) । ५ रा

[पर] अनुष्ठान-पूरण (पर) । बाह्य नि
 [बाहिम्] १ आशुष्य भीषादि बाह्यस्थित
 साहचर्यान् (श ४ ४) । २ बाह्य स्थित

ही मोघ होता है, ऐसा मान्नेराना (घ
१६)। पिमास न [विशाल] ए
पैत परमांश, तैराना पर-जल (अध ३६)।

किरीट पुं [किरीट] शूट, शिरो धूषण
(नाम) ।

क्रिटीन रि [क्रिटीन] बीमा हृष्य, वापेदा ह
(गम्य)।

द्वितीयं च [द्वितीय] १ एक स्तोत्रं च ।
उत्तमं चतुर्थं स्तोत्रं चतुर्थं (चतुर्थ) ।

क्रिस्टल न [क्रिस्टल] फल-विशेष क्रिस्टल-
विशेष बहो का फल (उत्तर १५)।

द्विर्लभं वि [ज्ञानं] विद्म, ध्यात (वद्) ।

किञ्चन न [किञ्चिज्] वास का एक पात्र
विशेष पैसा बनेछु को खाना लिप्तमा पाठा
है (उदा)।

किञ्चिज्ज न [किञ्चिज्ज] सुणु-विशय (धर्मवि
१११ १११) ।
किञ्चिच्छिन्न मरु [किञ्चिच्छिन्नाय] विज्ज

चित्त' ध्यानात् कल्पता ह्येताः 'विमलविद्या
 यः सहस्रं मणिरुत्पीडितगिरिवेण' (मण्डू) ।
 किञ्चिद्विद्याय न [किञ्चिद्विद्यायित] किञ्च

किस्मिन् मय [कम्] क्वाण्ण होना विम

होता : तिसम्मह (कण्ठ) : तिसम्मसि (बजा
६२) : बह तिसम्मंत (पि ११६) ।
तिसम्मह न [क्रीडाचक्र] "म नाम न

फिस्सट ५ [फिस्सट] दूध वा बिहार-फिरोज
महाराई (६ २ २२)।

किन्नाम सङ्ग [ब्रह्मसू] वान्त करण विप्र
 वरणा वान्ति उत्पन्न करणा । किन्नाम
 (वि ११५) । बट किन्नामैत (मम २, ९) ।

चिन्ताम पु [सम] खेद परिपम ग्तामि
'चमिपुत्री मे पितामो' (विह बिम २६ ४)

विष्णुमण्यया स्त्री [ज्ञानना] निम्न करणा
उत्पन्न करणा (भय ३ ३) ।
विष्णुमण्यया स्त्री [ज्ञानना] कदय कनेछ

(अष्टमि ४) ।
 द्विप्रमिज रणी विलिङ्ग (पाणु १११) ।
 द्विप्रमिज वि[प्रमिज] निप्र विपा हृष्य

ऐतन्निव्याहृषा नीदिः 'वृष्टास्त्रिभि
 र्धसो' (पञ्च १ १ २२ गुर १ ४८) ।
 क्रिन्विष न [६] षोऽथ सवर्गः सवर्गः वा

दुःखदा हननप्रमोदणाय विनिष्कर्मिणी धरि
 रिम् (मन १ २; भाष्य ६ २ ११) ।
 विनिष्कर्मिण्य न [६] ऊपर देणो (ग्र ५) ।
 विनिष्कर्मिण्य देणो विनिष्कर्मिण्य (ग्र ५) ।

१११) :

किलिचिष मरु [रम्] रमण करना प्रीति
करना । किलिचिषह (हि ४ १९८) ।

द्विद्विचित्रं न [रत] रमण श्रीका संमोच
(कुमा) ।
द्विद्विचित्रं पर [द्विद्विचित्रं] विम-विम

प्राधान्य करना । वह द्विलिङ्गित (ज
१ ११ टी) ।
द्विलिङ्गित न [द्विलिङ्गित] इस नाम का

एक विद्यामण्डप (इष्ट) ।
 किलिकिलिकिलि रगो किलिकिलि । बह
 किलिकिलिकिलिकिलि (पन्ना ३९ ८) ।

क्रिसिगिलियम [क्रिसिगिलियम] 'मिस-मिस'
प्राच्य कला रूप-योजना प्रति-विषय (स
३७ ३८५)।

क्रिष्टि नि [क्रिष्ट] । कनेश-पुरु (उत्त ३२) ।
२ कठिनि निपम । ३ कनेश-जनक (प्राय ६
३. १ १ उज) ।

त्रिभिन्नं त्रिभिन्नं (मन्त्र ८३) ।
त्रिभिन्नं त्रि [बलु] त्रिभिन्नं त्रिभिन्नं (मन्त्र
८३ ३३ ३३) ।

किलिचि स्त्री [कलुप्ति] रचना सम्पन्ना
(पि २२)।

विष्णुसहस्रनाम (विष्णुसहस्रनाम) पद्य योना (६१
१४२ २, १ १) ।
विष्णुसहस्रनाम योना विष्णुसहस्रनाम । विष्णुसहस्रनाम (वि
१४३) । १४३ विष्णुसहस्रनाम (वि

१३)। विविदिमिन्न वि [दि] वदित म्भु (१३
१३)।

क्रियेय देना कीज (र २५ मे ११)।
क्रियेय देना [क्रिये] के १२५

माना हुआ होता। यह किस्म का (न
२१ १५)।
किस्म का रणोक्ति का किस्म का

विनिर्मातृमि कुर्यात् (अ० १४)।
विनिर्मातृमि वि[कनगिन] कनगिन क-
शात (अ० १४)।

द्विजस्य सौ द्विजस्य = द्विजः । द्विजः
(नरा वा) । एत द्विजस्य (न-
यन ११)।

सिद्धिम्पत्र नि [सिद्धि] मन्त्र मन्त्र
५५ (ग ५ १११)

किंजीय रेवो किंजीय (कीय) ।
 किंजीय रेवो कीय (न १) ।
 किंजस मरु [किंज] स्नेह पात्रा हैपन
 होला । विनेमर (प्राक २०) ।
 किंजस पुं [किंज] १ लघु ककान (दीर्ग) ।
 २ बुध कीड़ा, काका (पञ्च २२ ७३) बुध
 २) १ बुध का कारण । ४ कीं गुण
 गुणमर्ग (इह १) । ४२ नि [किं] कनेठ-
 कनर (पञ्च २२ ७१) ।
 किंजसिय नि [किंजिय] दुखी जिया हुआ
 (गुर ४ १९० १९१) ।
 किंजा रेवो किंजा (दी ११) ।
 किंज पुं [किंज] १ इस नाम का एक व्यक्ति
 ह्याचार्य (हे १ १२७) 'आश्रमवसमर्ग'
 स्नेह निगुं सोलं जयरहं लज्जणी कीर्ण
 (१ सहायि निरं) पाण्डुबार्न (शाला १
 ११-१२ २) ।
 निर्बै (दा) रेवो कहुं (दुया) ।
 किंज नि [किंज] १ गरीब रंक दीन
 (गुप १ १ १ वस्तु १०) । २ लखि
 निर्ये (सह १ २) । ३ कंधुम कलावा
 (१ ३ ११) । ४ कनेठ कायर (गुप २ २) ।
 किंजा रेवो [किंजा] रेवा केरुलानी (हे १
 १२) । ४३ नि [किंज] ह्या-आम,
 वसानु (पञ्च १२ ४०) ।
 किंजाय भुन [किंजाय] बहुर लघुवार (गुप
 १२ : हे १ १२० नर) ।
 किंजानु नि [किंजानु] वसानु, रेवा कनेठाला
 (वाय १४ २ १० २) ।
 किंजिह न [किं] १ लज्जित बध बाठ बने
 का स्थान । २ नि लज्जित में जो हुआ हो
 बह (१ १ १) ।
 किंजिदी की [किं] १ जिहाज बाट्टे हार ।
 २ बर का निपाता कनेठ (१ १ १) ।
 किंजिन रेवो किंजिन (हे १ ४१ १२०) का
 १११ गुर १ ४४ शानु २१ : वस्तु १ १) ।
 किंजिहानि पुं [किंजिहानि] अग्नि
 (कमल १११) ।
 किंज कट [किंजा] हनिन कला पाविन
 कला । निगु (गुप १ २ १ १४) ।
 किंज नि [किंज] १ दुर्जन निर्वन (पञ्च
 १११) । २ काका (हे १ १२० ४४ २) ।

किंजिग नि [किंजिग] दुर्जन शरीराला (पा
 १२०) ।
 किंजिग पुं [किंजिग] १ पत्ता-विशेष तिम
 बाबत दीर बुध की रेवो हुर एक काय
 कीय । २ किंजिगी बाबत दीर बाबत का
 मिथित ध्येन-विशेष (हे १ १२०) ।
 किंजिग रेवो केसर 'महप्रक्षिपमणकिंजिग'
 (हे १ १२१) ।
 किंजिग की [किंजिग] किंजिगी बाबत-बाबत
 का मिथित ध्येन विशेष (हे १ १२० हे
 १ २) ।
 किंजिह रेवो किंजिह (हे १ २११ दुया) ।
 किंजिहस्य नि [किंजिहस्य] संकुचित नये
 संकुचलगा (गुर १ ११) ।
 किंजिहस्य पुं [किंजिहस्य] १ गुण संकुच
 (पा २) । २ कोमल पया (की १)
 'कन्योपि विमलमो बहुकाममागो धलंतमो
 कन्योपि' (पण १) । माझ की [माझ]
 एन-विशेष (अग्नि ११) ।
 किंजा रेवो क्यसा (हे १ १२०) ।
 किंजाय पुं [किंजाय] १ अग्नि बकि, पाय ।
 २ बुध-विशेष बिचक बुध । ३ दीन की
 कंसा (हे १ १२० पृ २) ।
 किंजि की [किंजि] लोदी बाबत (विसे १११२
 गुर १२ २ प्राय) ।
 किंजिस नि [किंजिस] दुर्जन-आम, इरला-
 दुध (पा ४ बजा ४) ।
 किंजिस नि [किंजिस] १ विनलिन रेवा
 जिया हुआ । २ जोता हुआ हटा ३ कीका
 हुआ (हे १ १२०) ।
 किंजीबल पुं [किंजीबल] कर्कट रिवाक-
 'आम परल कने मावति रिटीरला बुधि'
 (पा ११) ।
 किंजिग पुं [किंजिग] बाबत-बाबत के बाब की
 बाबत-बाबत बाबत 'कीटिबोपीय दुयापी
 निगयो' (गुप १४१) ।
 किंजिरी की [किंजिरी] गुनापी अविवाहिता
 गुनापी (पाका १ १) ।
 किंजि रेवो किंजिस व किंजि : लो किंजिस
 हुआ (गुप १ १ २) ।
 किंजि रेवो कहुं (पाका दुया भाव १ १)
 किंजि रेवो कहुं (पाका दुया भाव १ १)
 किंजि रेवो कहुं (पाका दुया भाव १ १)
 किंजि रेवो कहुं (पाका दुया भाव १ १)

कीय रेवो कीय (पृ : प्राय) ।
 कीइस नि [कीइस] कैसा किंज टण्डा
 (स १४) ।
 कीइस पुं [कीइस] १ कर्म-वस्तु-विशेष ।
 २ न हुरी हाइ । ३ नि नरिन बठोर
 (पञ्च) ।
 कीयम रेवो कीयम (दीर्घ १००) ।
 कीइ रेवो किंजु-कीइ : मनि कीइस (नि
 १२१) ।
 कीइ पुं [कीइ] १ कीड़ा गुड वस्तु (ग) ।
 २ कीट-विशेष वस्तु-विशेष वस्तु की एक
 पाति (उप २) ।
 कीइइस नि [कीइस] कीड़ापाला कीयक
 बुध (नर) ।
 कीइण न [कीइण] सेत कीड़ा (गुर १
 ११०) ।
 कीइव पुं [कीइव] रेवो कीइ = कीट (गाठ
 गुप १०) ।
 कीइव न [कीइव] कीइ के ठगु से जगज
 होनेवाला बल कन-विशेष (पणु) ।
 कीइ रेवो किंजा (गुर १ १११) पया) ।
 कीइबिया रेवो किंजाबिया (पञ्च) ।
 काइबा की [कीइबा] रिटीरला कीय
 (गुर १ १०१) ।
 कीडी की [कीडी] कट रेवो (का १०० दी
 हे २ १) ।
 कीय एक [की] कटीरला, मोल सेव ।
 नीलह, नीलह (पृ : १) । कीय, कीयिर्ब
 (नि १११ ११४) ।
 कीयास पुं [कीयास] मम बाब (पाय गुप
 १०१) । गिह [गिह] गुड मोल (का
 १११ दी) ।
 कीरिस (दी) रेवो कीरिस (पाय १) ।
 कीय नि [कीय] १ गरीब हुआ मोल निग
 हुआ (बन ११ : वस्तु २, १ गुप १४२) ।
 २ दीन गाधुको के निर निजा का लघु कीय
 (डा १ ४) । ३ न बय, कटीर (ल १
 गुप १ १) । कट गाठ नि [कट] १
 गुण कट निग हुआ (इह १) । २ बाउ
 के निर मोल में बीता हुआ, दीन गाधु के
 निर निजा-मो-गुड वस्तु (नि ११) ।

११) समय पुं [समय] १ सम्यक्-
प्रणीत काल (सम १) । २ नि कुटीरि
कुशल का प्रयोग और समुदायी (सम १) ।
समिप नि [समिप] निकसे और
थयल ह्यय बुध म्मा हा बर (पण २ ४) ।
मीय न [मीय] १ थयल स्वमाय
(पाषा) । २ समुपसर्प प्यमिपार (अ ४
४) । ३ नि यिमा प्राचरण पण्ड न हो
बर दुपकाय (मोप ०११) । ४ ययकायि
म्यमिपारि (अ २ १) । समुमिग पुं
[सम्यज] गयल हयल (पा १) । ह्य नि
[यन] वयल यमया रथि (पण २
१-५५ १) ।

कु श्री [कु] १ इषिरी मुमि कुमययि
माकण (सम १ ३)-य ११४ त १
२१) । निअ न [निअ] १ तीनों वक्त,
गर्भ कर्ष और पावार लोच । २ तीन वक्त
म विप वसर्ष (पौल) । निअ नि [निअ]
हीना वक्त म वल्ल वक्त (धाम १) ।
[सिआयम पुं] [सिआयम] तीनों वक्त
६ वक्त वर्ग मिग छे तेही दुआल (सम
पणा १ १-य २३) । कउय न [कउय]
कुपी-मगल (पा २०) ।

कुअरि शेो कुअरि (नि २२१) ।
कुअरय देो कुअरय (सम) ।
कुअरि शेो कुमारी य २६) ।
कुअर नि [कुअर] कउया हवा (य ६२) ।
कुआर नि [कु] स्तान गण (६ २ ४) ।
कुअर नि [कुअर] धारययि धरि
(स १) ।

कुअर नि [कुअर] क- क-गु-क (अ ३) ।
कुअरय पुं [कुअरय] एक नाम का एक
गर्भ । एक गण (नि ११३) ।

कुअर पुं [कुअर] एक नाम की एक
होम का एक नाम का पारि-
ल्लो का (१ कु) पारि (सम) शेो
कुअर ।

कुअर के [कु] कुपी-मगल कुआ (६
२ १२) ।

कुअर शेो कउय (नि २२३) ।

कुअर नि [कु] १ तीनों गण, एकवक्त ।

२ बहने हुए बपे का प्रांत मास कउयल
(६ २ १८) ।

कुअर न [कुअर] १ धार्य वक्त
की मास-अउयल । २ कौमुद, परि
हाम (६ १ १५ कुआ) ।

कुओ य [कुओ] कहां से ? (य १) । इ
य [किन] कहां से निओ से (म १८२) ।
[कि य [अवि] कहां से भी (याम) ।

कुआरि शेो [कुआरि] ममसि-विरोध
मुआरयल कौआर, पीआर (मा २
पी १) ।

कुअर न [कु] १ कौमल एक-मम (पण
१-य ४) । २ पुं. कुअर वक्त विरोध,
कौमलिय की ही एक वक्ति (अ १६) ।

कुअर पुं [कुअर] कौमलिय (धनु सार्य
१४) ।

कुअर शेो कुअर (मि २ १) ।

कुअर न [कुअर] केम, मुकपी इय-
विरोध (कुआ या १८) ।

कुआ पुं [कुआ] कौमलिय (मि) ।

कुअर क [कुअर] १ जाना बरवा । २
मम कौमलिय होना । ३ देहा बरवा
(कुआ गण) ।

कुअर पुं [कुअर] १ कौमलिय (पण १
१ या १ २ ४ उर १ १४) । २ इन
मास का एक वक्त (याम) । ३ इन मास
का एक वक्त देहा । ४ नि वक्त विरागी
लोक (य १०४) । रया शेो [रया]
कौमलिय की एक नाम की एक वकी
(य ४२ १२) । यरग न [यारक]
एक प्रकार का काल (मि १६) । नि
पुं [नि] कौमलिय, स्वय (याम) । शेो
कौम ।

कुअर न [कु] कुअर वकी और (६ २
११ याम) ।

कुअर नि [कुअर] १ कुअर वक्त । २
मास की वक्ती (य १) ।

कुआर शेो कौमलिय ।

कुअर नि [कुअर] १ कौमलिय (कुआ
२) । २ कुआ के कौमलिय के पारि-
(पी १ ३) । ३ कुअर वक्त (य १) ।

कुअर पुं [कुअर] एक नाम का एक वक्त
यलक (मम १११) ।

कुअर शेो कौमलिय । कहां से वक्त हवा
वक्त का एक प्रकार का काल (मौल) ।

कुअर शेो [कुअर] कुआरी लकी (मि
११६) ।

कुअर पुं [कुअर] इली इली (६ १ ११
याम) । पुअ न [पुअ] कौमलिय,
कौमलिय (य ४ १४) । शेओ शेो
[सना] कौमलिय वक्त की ही एक वक्ती
(य २६) । निअ न [निअ] कौमलिय
विरोध (य १ ४८) ।

कुअर नि [कुअर] १ कुअर नाम (पाषा) ।
२ कौमलिय कौमलिय (य ११) । मि १
११) पाषा) ।

कुअर नि [कुअर] १ कौमलिय का प्रयोग,
कौमलिय (याम) । २ नि कौमलिय
के पारि-मम कौमलिय (याम) ।
कुअर नि [कुअर] स्तान सूया ममि (६ २
४) ।

कुअर शेो [कुअर] १ कौमलिय (६ २ १४) ।
२ कौमलिय एक प्रकार का कौमलिय
"कुअरयल कौमलिय कौमलिय कौमलिय"
(कुआ २११) ।

कुअर नि [कुअर] १ कौमलिय (मा १६) ।
२ कुअर कौमलिय (याम) ।
कुअर शेो [कुअर] कौमलिय (याम ११४) ।

कुअर न [कुअर] १ कुअर कौमलिय (य १) ।
२ कौमलिय (याम) । ३ इन मास
का एक कौमलिय (पी १४) । ४ याम,
याम "कौमलिय कौमलिय कौमलिय कौमलिय"
(याम) । कौमलिय पुं [कुअर] एक वक्त
कौमलिय (याम) । याम पुं [याम]
मम देहा का एक वक्त (याम १
२१) । पारि नि [पारि] कौमलिय
(याम) । पुअ न [पुअ] कौमलिय (याम) ।
कुअ न [कुअ] कौमलिय का वक्ती कौमलिय
की वक्त का वक्त हवा होना है (६ २ ११
४ ४८) ।

कुअर पुं [कुअर] १ कौमलिय का कौमलिय
(य १ १) । २ कौमलिय (६ १ १) । ३
कौमलिय के कौमलिय कौमलिय (य १ १) ।

कुन्दी स्त्री [कुन्दी] बस की बाली,
एकपदार्थक निर्विषा बसकुन्दी—(बहा) सुर
१२ २ १ जय २५१)।

कुन्दी स्त्री कुन्दी (महा मा १ १)।
कुन्दी स्त्री कुन्दी (पायन सुप १ १२)।
कुन्दी स्त्री [कुन्दी] धोया पतला (धम
१)।

कुन्दी न [कु] लता-मृद, बहा से पायनारित
कर कुन्दी, भौरी (हे २ १३)।

कुन्दी पुं [कुन्दी] नृक विरोध कुन्दी
(शामा १ २, पण १० स ११४)। 'कुन्दी
बहा' (कुमा)।

कुन्दी पुं [कुन्दी] पान या घट माने का
एक भाग (शामा १ ३ वन ५ १)।

कुन्दी स्त्री कुन्दी (बहा)।

कुन्दी वि [कु] नृक नाम, मन्दा (पाय)।
कुन्दी स्त्री [कु] बाक का विवर (हे २
२४)।

कुन्दी न [कु] १ बाक का विवर। २ कुन्दी
भौरी। ३ वि कुन्दी विवर (हे २ १४)।
कुन्दी वि [कुन्दी] बक टेका (सुर १
२ १२ व १)।

कुन्दीविषय न [कु] कुन्दीविषय [हस्त]
पिठा (पण)।

कुन्दी न [कु] १ विवर विवर (पाय)। २
वि कुन्दी कुन्दी (पाय)।

कुन्दीविषय वि [कु] कुन्दीविषय कुन्दी विषय
बक (हे २ ४ १ मवि)।

कुन्दीविषय स्त्री कुन्दीविषय (पाय)।
कुन्दी स्त्री [कुन्दी] स्त्रीय मृद, भौरी कुन्दी
(मुवा १२ १ व १४)।

कुन्दी न [कुन्दी] भौरी कुन्दी (हे ४
११४ पण ११, २)।
कुन्दी न [कु] बाक का विवर (हे २ १४)।

कुन्दी पुं [कु] लता, लताओं से बका हुआ
पर (पर मा १०४ २१२ व)।

कुन्दी न [कुन्दी] पौरव, पौरव, स्वयम्-
बर्त (पण महा मा ११०)।
कुन्दी पुं [कुन्दीविषय] १ बहावि-विरोध
विषय (बहा) १—पण ४)। २ बहा-
विरोध 'बहाविरोध' वि विरोधी न कुन्दीविषय
१ वी)।

कुन्दी वि [कुन्दीविषय, क] १ कुन्दी-
कुन्दीविषय [कुन्दी, मृद]। २ कुन्दीविषय
विषय (बहा)। ३ कुन्दीविषय विषयविषय
एवं बहाविषयविषय (कण)।

कुन्दीविषय न [कु] कुन्दी विरोध कुन्दी
(बहा)।

कुन्दीविषय पुं [कु] बहा-विषय, पानी का
विषय (विषय)।

कुन्दीविषय पुं [कु] लता-मृद (पर)।

कुन्दीविषय न [कु] कुन्दी विरोध कुन्दी
(हे २ ४१)।

कुन्दीविषय (पा) की [कुन्दी] कुन्दीविषय
(कुमा)।

कुन्दी पुं [कुन्दी] १ विविध भौरी (वधम
१ २) हे २ व ३)।

'पण' बहाविषय पण विषयविषय
पण विषयविषय मविषय।
पणविषय विषयविषय कुन्दी विषय
विषयविषय (पा २)।

कुन्दी न [कु] पौरव भौरी कुन्दीविषय (हे २,
११४ पण २५, हे २ १०४)।

कुन्दीविषय [कु] पौरव भौरी विषयविषय (हे २
११४)।

कुन्दीविषय स्त्री [कु] कुन्दीविषय (मुवा
पण बहा विषय (हे २ ४२)।

कुन्दीविषय न [कु] बहा के ऊपर का विषयविषय
(बहा)।

कुन्दी पुं [कु] १ कुन्दी विषय बहा की बहा
विषय (हे २, १२, मुवा २ १)। २
पौरव विषय की कुन्दीविषय बहा
विषय (हे २ १२)।

कुन्दीविषय पुं [कुन्दी] कुन्दीविषय (हे १
११४ व २)।

कुन्दीविषय न [कु] पणविषय, विषयविषय (विषय
१४१२ वी)।

कुन्दीविषय वि [कु] कुन्दी, कुन्दी विषयविषय
विषयविषय कुन्दी कुन्दी विषयविषयविषय (सुर १
१४२)।

कुन्दीविषय वि [कु] विषयविषय बहा की बहा
विषय (हे २, १२)।

कुन्दीविषय [कु] बहा, बहा। कुन्दी,
कुन्दी, कुन्दी (बहा, बहा मुवा १२)।

बहा कुन्दीविषय कुन्दीविषय (पा ११४ व २
११४ व ११४)।

कुन्दीविषय पुं [कुन्दीविषय] बहाविषयविषय (पाय
१—पण १२)।

कुन्दीविषय न [कुन्दीविषय] १ कुन्दीविषय-विषय (पाय
बहा)। २ वि कुन्दीविषय (हे २ ११२)।

कुन्दीविषय पुं [कुन्दीविषय] १ बहा-विषय
(शामा १ ३ व २५१ वी)। २ बहा-
विषयविषयविषय का एक पुन (विषय ५११)।

नगर न [नगर] एक वहा, नगर
'नगर' कुन्दीविषयविषय (बहा)।

कुन्दीविषय की [कुन्दीविषय] बहा नाम की एक
नगर (मुवा १ १)।

कुन्दीविषय पुं [कुन्दीविषय] १ बहा-विषयविषय
कुन्दीविषय [बहा-विषय] मण्डल (वधम २, व ३)।

२ बहा-विषय विषयविषय एक बहा-विषय
बहा। ३ विषयविषय एक बहा-विषय बहा
बहा (पण २ १—पण १२ व १३)।

कुन्दीविषय की [कु] कुन्दीविषय, बाक का विषय
(हे २, २४)।

कुन्दीविषय पुं [कु] कुन्दीविषय १ बहा-विषय
मुवा (पण २ १)। २ बहा-विषय (व ४ व
वी)। ३ बहा-विषय-विषय (मुवा १, २,
१)। ४ बहा का विषय, बहा विषय (व
३ १)।

कुन्दीविषय विषय [कुन्दीविषय] बहा से कम
होने पर 'बहा-विषय' बहा-विषय। बहा-
विषयविषय (सुर २ १ १)।

कुन्दीविषय की [कु] बहा-विषय-विषय (वधम
१—पण १२)।

कुन्दीविषय की [कु] बहा-विषय (हे २ ११)।

कुन्दीविषय पुं [कुन्दीविषय] बाक-विषय (व ४१)।

कुन्दीविषय पुं [कुन्दीविषय] बाक-विषय (व ४१)।

कुन्दीविषय पुं [कुन्दीविषय] १ बहा-विषय
बहा-विषय का नाम (हे २, २२)। कुन्दीविषय।

कुन्दीविषय पुं [कु] कुन्दीविषय (राम)।

कुन्दीविषय [कु] कुन्दीविषय ठेका बहा-विषय (विषय
१ १—पण ११)।

कुन्दीविषय [कुन्दीविषय] विषयविषय (बहा
१ ३)।

कुन्दीविषय पुं [कु] एक वहा का नाम
बहा-विषयविषयविषय 'बहा-विषय' विषय
विषय (पा १० व ४१)।

कुरूप-कुरूप

कुरूप न [वि. कुरूप] माता कपट (सम ७१)।

कुर्या की [वि. कुरूप] शरीर-प्रकलन,
स्नात (सम १२)।

कुरुर रेको कुरुर (कुमा)।

कुरूप पु [वि.] कुरूप देहा देहा नाम (वि
२, १३ अभि)। २ वि. निर्वय। ३ विपुल
चतुर (वि २ ११)।कुरूप क [कु] धावान करता कौर का
बोलता। कुरूपवि (पवि)।कुरूपवि न [कु] नावस का रुम्ह, कौर
की धावान (पवि)।

कुरूप रेको कुरूप (पदम ११८ ८३ अभि)।

कुरूप रेको कुरूप (पुपा ७७)।

कुरूपि न [कुरूपि] १ मरिचिरोप रल
की एक बाति (मन्त्र)। २ एक मरिचोप
(पण्ड १ पण्ड १ ४-पत्र ७८)। ३कुरूपि-नामक रोप एक प्रकार का रोपा
रोप 'एली' कुरूपि-नामक रोप (दीप)।

[कुरूप पु] [कुरूप] मरिचिरोप (कम्प)।

कुरूपि की [कुरूपि] इस नाम की एक
मरिचिरोप (पञ्च २३, ३८)।

कुरूपि [वि] रेको कुरूपि (पाम)।

कुरूप पुन [कुरूप] १ कुरूप रंश बाति (माधु
१७)। २ कुरूप रंश (उप ३)। ३ परिहार,
कुरूप (उप १ ७७)। ४ समीचीन समुद्र

(पण्ड १ पण्ड १ ४०)। ५ कुरूप (उप ४ १)।

६ एक धावारी की संतति (कम्प)। ७ कुरूप,
गुरु (कम्प सुप १ ४ १)। ८ सावित्र्यधामिन् (पाम)। ९ कुरूपि-नामक मरिचि
मन्त्र-रंश (पुन १ ३८)। 'कुरूप' कुरूप(वि २ ११)। १० कुरूप पु [कुरूप] कुरूप
कुरूप (कुरूप)। ११ कुरूप पु [कुरूप]

कुरूप, कुरूप-रंश (कुरूप)। १२ कुरूप, कुरूप-रंश (कुरूप)

कुरूप, कुरूप-रंश (कुरूप)। १३ कुरूप, कुरूप-रंश (कुरूप)

कुरूप, कुरूप-रंश (कुरूप)। १४ कुरूप, कुरूप-रंश (कुरूप)

कुरूप, कुरूप-रंश (कुरूप)। १५ कुरूप, कुरूप-रंश (कुरूप)

कुरूप, कुरूप-रंश (कुरूप)। १६ कुरूप, कुरूप-रंश (कुरूप)

(ह २)। जाय वि [जाय] कुरूपि नाम-

रंश कुरूप का (पुपा २२३ पाम)। कुरूप

वि [कुरूप] कुरूपि (पत्र १४)। जाय न

[जाय] कुरूप का कुरूपि नाम (पाम)

(पाम)। कुरूप पु [कुरूप] कुरूप-रंश

कुरूप-रंश (कुरूप)। कुरूप पुन

[कुरूप] कुरूप में योष्ठ (मम ११ ११)।

स्व वि [स्व] कुरूपि नामरंश रंश का

(छाया १ २)। हय पु [स्व] कुरूपि

कुरूप में योष्ठ (कम्प)। रंश पु [स्व]

कुरूप प्रकलन कुरूप में योष्ठ (कम्प)। रंश

पु [स्व] कुरूप-रंश (काम)। रंश पु

की [स्व] कुरूप-रंश (पुपा २२७)।

'रेवी' की [रेवी] कुरूप-रंश (पुपा १ २)।

भम पु [भम] कुरूप-रंश (उप ११)

पञ्च पु [पञ्च] पञ्च-रंश (सम ११)

पुपा ४१)। पुन पु [पुन] कुरूप-रंश

गुरु (उप १)। बासि की [बासि]

कुरूप कुरूप (पुपा १ ४१)। हय ३ १)।

मुसण न [मुसण] १ रंश की रंश या

कुरूप (पञ्च ११ १२२)। मय पु [मय] कुरूप

का कुरूप (उप १)। मय-रंश (मय-रंश)

रंश की कुरूप की कुरूप (पुपा ७७ पाम)

य रेको स (पुपा २२८)। रंश पु

[रंश] कुरूप व्यापक रंश (उप २)। वर पु

[वर] कुरूप कुरूप का कुरूप (पुपा ११

उप ११)। रंश पु [वर] कुरूप

कुरूप का रंश (मम ११ ११)। रंश

पु [वर] कुरूप कुरूप का रंश (मम ११

उप ११)। कुरूप पु [वर] कुरूप

कुरूप कुरूप (कम्प)। कुरूप की

[कुरूप] कुरूप की कुरूप (पाम २)

वि १८७)। 'संपण्य वि [संपण्य] कुरूप,

कुरूपि कुरूप का (पाम)। संपण्य पु

[संपण्य] कुरूप (पुपा १ १)।

सेक पु [सेक] कुरूप-रंश (पुपा १

उप १११)। सेक की [सेक] कुरूप

रंश के कुरूप की कुरूप (पाम २)।

हर न [गुरु] विपुल, विपुल का कुरूप (पाम

१२१ पुपा ११८ ८३ २१)। जाय

वि [जाय] कुरूप कुरूप की कुरूप (पाम)

कुरूप कुरूप का कुरूप (उप १ १)।

य न [य] कुरूप का कुरूप, कुरूप (पाम)

। यार पु [यार] कुरूप-रंश (कुरूप १)।

'रिय' पु [रिय] कुरूप-रंश (कुरूप १)।

[रिय] कुरूप-रंश (कुरूप १)।

[रिय] कुरूप-रंश (कुरूप १)।

[रिय] कुरूप-रंश (कुरूप १)।

[रिय] कुरूप-रंश (कुरूप १)।

[रिय] कुरूप-रंश (कुरूप १)।

[रिय] कुरूप-रंश (कुरूप १)।

[रिय] कुरूप-रंश (कुरूप १)।

[रिय] कुरूप-रंश (कुरूप १)।

[रिय] कुरूप-रंश (कुरूप १)।

[रिय] कुरूप-रंश (कुरूप १)।

[रिय] कुरूप-रंश (कुरूप १)।

[रिय] कुरूप-रंश (कुरूप १)।

[रिय] कुरूप-रंश (कुरूप १)।

[रिय] कुरूप-रंश (कुरूप १)।

[रिय] कुरूप-रंश (कुरूप १)।

[रिय] कुरूप-रंश (कुरूप १)।

[रिय] कुरूप-रंश (कुरूप १)।

[रिय] कुरूप-रंश (कुरूप १)।

[रिय] कुरूप-रंश (कुरूप १)।

[रिय] कुरूप-रंश (कुरूप १)।

[रिय] कुरूप-रंश (कुरूप १)।

[रिय] कुरूप-रंश (कुरूप १)।

[रिय] कुरूप-रंश (कुरूप १)।

[रिय] कुरूप-रंश (कुरूप १)।

[रिय] कुरूप-रंश (कुरूप १)।

[रिय] कुरूप-रंश (कुरूप १)।

[रिय] कुरूप-रंश (कुरूप १)।

[रिय] कुरूप-रंश (कुरूप १)।

[रिय] कुरूप-रंश (कुरूप १)।

[रिय] कुरूप-रंश (कुरूप १)।

[रिय] कुरूप-रंश (कुरूप १)।

[रिय] कुरूप-रंश (कुरूप १)।

कुसीसप पुं [कुसीसप] धमिलपक्षा न
(कपु) ।

कुसुम पुं [कुसुम] १ कुसुम-विशेष कुसुम
रें (ख ८—पत्र ४ २) । २ न कुसुम का
पुष्प विपक्ष रंग बना है (न २) । ३
रंग-विशेष (मा १२) ।

कुसुमिभ्र वि [कुसुमिभ्र] कुसुम रंगवाला
(मा १२) ।

कुसुमिल पुं [कु] विपुन कुसुम कुसुम
(रे २ ४) ।

कुसुमी की [कुसुमी] कुसुम-विशेष कुसुम
का पेड़ (पाम) ।

कुसुम घक [कुसुमघ] कुसुम घाता । कुसु-
मोक्ष (संशोध ५७) ।

कुसुम न [कुसुम] १ पुष्प फूल (पाम प्रान्
३४) । २ ५ इस नाम का भयबाध पदप्रम
का श्लोकविशेषक पत्र (संशोध ७) ।

कुसुम [कुसुम] घल्लुवर की का पक्षिपाक रेव
(दीप) । बाप, बाप [बाप]

बापरेक मकल्लक (पुत्र ५६, २३
महा) । मकल्ल पुं [मकल्ल] वल्लव शत्रु
(कुना) । मयवर ग [मयवर] मयवर-विशेष

पादमिषुन बापरेक जो 'पदमा' नाम से
प्रसिद्ध है (बापरेक) । 'हंत पुं [हंत] एक

शिकंछुर रेव का नाम इस घल्लवपक्षी का
के मयरे विमरे की मुरिगिगल (पत्र १

३) । दाम न [दाम] कुली की माया
(उवा) । घणु न [घणु] बापरेक (दुया) ।

'पुरन [पुर] रेवाकार पावर (पत्र ५६) ।
बाण पुं [बाण] बापरेक (पुर ३ १९३)

पाप । रम पुं [रम] मयवर (पाप) ।
'रद पुं [रद] रेवो रं (पत्र २ २) ।

लया की [लया] घल्ल-विशेष (मरि १३) ।
संभय पुं [संभय] मयुपाय, वैजयय

(मयु) । मर पुं [मर] बापरेक (पुर ३
१९) । मर पुं [मर] इस नाम का

एक घल्ल (मर) । उह पुं [उह] नाम
बापरेक (पत्र १३५) । उह पुं [उह]

इस नाम की एक मयरी (पत्र २, २६) ।
'सय पुं [सय] विजयक कपण, पुन

पुन (पाप १ १) ।

कुसुमसंभय पुं [कुसुमसंभय] बैराह मान
का लोकोत्तर मान (मुर १ १६) ।

कुसुमाल वि [कुसुमाल] कुसुमाला (ख
१६७) ।

कुसुमा पुं [कु] कोर, स्तेन (रे २ १) ।
कुसुमादि वि [कु] शून्य-यत्नक आग-
विष्ट (रे २ ४२) ।

कुसुमिभ्र वि [कुसुमिभ्र] गुणित पुष्प
गुण, विना हुआ (पाप १ १) पत्र ३३

१४८) ।
कुसुमिस्त वि [कुसुमिस्त] ऊपर रेवो
(पुत्र २२३) ।

कुसुम [कु] रेवो मयुर (रे २ १७४ डि) ।
कुसुम पुं [कुसुम] कोर, मल रंभने के लिए

मिट्टी का बना एक प्रकार का बड़ा पात्र
(पाप) ।

कुसुमिभ्र पुं [कुसुमिभ्र] कुसुम लवण (संशोध
५२) ।

कुसुम [कु] सड़ बना दुर्गंधी होता ।
कुसुम (मरि ५ ३९५) ।

कुसु पुं [कुसु] बा वेद पात्र 'कुसु' महीश्वर
बन्धा (मरि १) ।

कुसु रेवो मरि (मा २ ७५) ।
कुसु पुं [कुसु] मयुर रेवों की एक

जाति (दीप) ।
कुसु न [कुसु] १ कुसुम, पेरा कोरुका

(कम ५, ८३) ।
कुसुमिभ्र की [कुसुमिभ्र] कोरुका का पात्र

(पाप) ।
कुसुम [कु] रेवो कुसुम (मरि १९३, पुत्र ८) ।

कुसुम पुं [कुसुम] मय-विशेष 'तापरीह
म पीह' म कुसुम म घल्ल व' (उवा १६

६६५) ।
कुसुम वि [कु] कुसुम कुसुम (रे २ १६) ।

कुसुम पुं [कुसुम] १ कुली का एक प्रकार, कुली
की एक जाति 'के वि सं कुसुम' १ कुसुम

मयरेविहा पणुपा' (पणु १—पत्र ३३) ।
२ मयरेविहा-विशेष । ३ मयरेविहा (पणु

१—पत्र ३) । बापा । ४ रेव-विशेष । ५
इसमें प्येनामी जाति (पणु १ १—पत्र

१४ ६८) ।

कुसुम वि [कुसुम] कुली, कोष मयलाला
(पणु १ ४—पत्र १) ।

कुसुमी की [कु] कुसुम, हाथ का मय-पात्र
(पुत्र ४१२) ।

कुसुम पुं [कुसुम] १ बाप-विशेष लीके
हुए मय के उदर-प्रवेश के समीप उत्पन्न

होता एक प्रकार का बापु 'मयमयिभय-
मयुपु' (पत्र २) । २ रेव-मादि कोनुक

'मयोपु' मयुपु' मयौ' (पत्र २, ३) ।
कुसुम म [कुसुम] १ पर्वत का मयलाला

(पाप १ १—पत्र ३३) । 'मयरे विमरि' (पा
१ ७) । २ पत्र विमरि (पणु १ ४-

पाप २) । ३ पुं म रेव-विशेष (पत्र २८
६७) ।

कुसुम पुं [कुसुम] कुसुम फल (पाप १
१ पत्र ६६ २४ स २१४) ।

कुसुमी की [कुसुमी] कुसुमी, कुसुम (उवा
१६१) ।

कुसुमपा की [कुसुमपा] १ बापरेक-यत्नक
मय-विषय, मय-मय । २ लोकोत्तर के मय

हाथि मय के लिए बिना हुआ कट-मय
(मरि) ।

कुसुम वि [कु] मयलाला (रे २
१३) ।

कुसुम वि [कुसुम] १ कुली कुसुमपात्रा
(पाप १ १२—पत्र १०१) । २ सड़ा

हुआ (उवा ३६७ टी) । ३ मयलाला (पाप
१ १) । ४ मय वि [पुत्रिक] मयलाला

हुआ (पणु २ २) ।
कुसुमी की [कु] १ कुसुम, हाथ का मय

पाप । २ रेव मयलाला (उ २ ६२) ।
कुसुम पुं [कुसुम] कोष मयरी (मरि) ।

कुसुम की [कुसुम] कोष मयरी की मयलाला
(मरि) ।

कुसुम रेवो कुसुम = कुसुम (उवा ३९
६६ का) ।

कुसुम पुं [कुसुम] मय-विशेष (उवा १६
६८) ।

कुसुम पुं [कु] मयलालाला कुसुम मयलाला
प्रकार का हरे का पात्र (रे २ १६) ।

कुसुम पुं [कुसुम] १ मयलाला
कुसुम मयलालाला मय मयलाला मय

कक्षाइय केओ कक्षाइय (छाया १ ३—पत्र २१) ।
 कक्षाई केओ केछई (पत्र १ १४ २ १५) ।
 केगाइय केओ केयाइय (पत्र) ।
 केय वि [केय] बेबने हो बीज (छ २) ।
 केय } पुं [केय] १ इस नाम का एक
 कदम } प्रतिशानुमेय राजा (पत्र २, ११६) । २ शेष-विशेष (हे १ २४) ।
 कुमा } लेट पुं [रेय] श्रीहृष्य नागवध
 (कुमा) ।
 केस केओ केसिय (हास्य ११२) ।
 कसिय } वि [कियन्] कितना ? (हे २, कसिय १ १२० कुमा पर मही) ।
 कसुस (पत्र) ठार केओ (कुमा पर हे ४ ४ ५) ।
 कस्य (पत्र) म [कुस] वहां रिय कस्य ? (हे ४ ४ ४) ।
 कहर केओ केसिय (हे १ १२० ग्रास) ।
 कस्य } (पत्र) केओ केई (पर हे ४ ४ १ केय ४ ४ ८) ।
 कस्य न [कस] १ पुर पर । २ चिह्न, चिहानी (पर ४) ।
 कस्य न [कस] १ एक वस्तु देही बीज । २ बिये का हाका (छ ४ २—पत्र २१) । ३ बरित बरित स्थान (पत्र ४) । ४ वस्तु की वृद्ध (उत् २) । ५ मल्ली बकले का वार (दुप १ १ १) । ६ स्वात, कपड़ (माषा) । ७ जहजहजह (दुप जुरी, पत्र २२ या १७६) ।
 कस्य केओ कस्य (गुमा १४२) ।
 कस्यवि [कस्यवि] गरीबने योग्य वस्तु (उत् १२, १२) ।
 कस्य } वि [वि संकल्पित] संकल्प वस्तु, कस्य } संकल्प बीज (स्वय २१, हे ४ १२१, १०१ ग्रास पत्र) ।
 कस्य न [कस्य] १ दुग्ध, फेरे वजन (ग्रास, गुमा ४२) । २ बैत वर (हे १ १२२) ।
 कस्यवि [कस्यवि] कैना रिय वस्तु का ? (हे १ १ २) शत्रु नाम) ।
 कस्यवि [कस्यवि] कैना रिय वस्तु का ? (कसा) ।

केटी की [कट्टी] कुत्र-विशेष कटीर का भाग निम्बरीकेरि— (उत् १ ११ टी) ।
 केस केओ कस्य = कस्य (हे १ ११७) ।
 केसाइय वि [समापित] धात्रुवध किया हुआ (गुमा) ।
 केसाय सक [समा + रस्य] समारम्भ करना, सात कर ठीक करना । केसाय (हे ४ २२) ।
 केसाय पुं [केसाय] पट्ट का कस्य पुत्र विशेष (गुमा २) ।
 केसाय पुं [केसाय] १ स्वनाम-व्यक्ति पर्यंत विशेष (हे १ ७१; वत् ३ गुमा) । २ इस नाम का एक भाग पत्र (क) । ३ इस नाम-पत्र का भाग-पर्यंत (छ ४ २) । ४ मिट्टी का एक टुकड़ा या पात्र (निर १ १) । केओ कस्यस्य ।
 केसि केओ कस्य (गुमा) ।
 केसि की [के] कस्य-विशेष (वत् ११ २८; गुमा १६ २६) ।
 केसि की [के] [केसि] १ बीजा केन केसि } मनाक (गुमा पात्रा कपू) । २ परिहाय हीरी, ठंडा (पात्रा घरे) । ३ काम-बीजा (कपू बीज) । आर वि [कस] बीजा कलेवाला किनोरी (कपू) । कस्य न [कस्य] बीजापात्र (कपू) । [केसि] गिह वि [केसि] १ किनोरी औषध-विशेष (गुमा ११४) । २ पुं, कपूर-वर्तन देव विशेष (गुमा १२) । ३ पुं, स्वात-विशेष (पत्र २१ १७) । मयन न [मयन] शोष-मृदु विनाय-वार (कपू) । विनाय न [विनाय] विनाय-मयन (कपू) । मयन न [मयन] नाम छप्पा (कपू) । सेसा की [सेसा] नाम छप्पा (कपू) । कसी केओ कस्य (हे १ १२) ।
 कसी की [के] कसी गुमा, स्वात-विशेष की (हे २ ४४) ।
 कसीगिह वि [कसीगिह] किनोरी नाम मयन (पत्र २२ १७) ।
 केय केओ के (मय वग १०—ग्रास २४२; निर २६६) ।
 कई (पत्र) केओ कई (गुमा) ।

कस्य वि [कियन्] कितना ? (स्व ११४ विर १४१ टी) ।
 कस्य पुं [केस] बीवर, मल्लीनाद, मनुष्य (ग्रास २२४ हे २, १) ।
 केस (मय) केओ केसिय (हे ४ ४ ५ गुमा) ।
 केस वि [केस] १ घनेवा घस्य (म २, १; बीज) । २ वस्तु पर्यंत (म २ ११) । ३ वृद्ध, नाम वस्तु के पर्यंत (स्व ४) । ४ वस्तु पर्यंत (निर १ २) । ५ घनत्व घनत्व-विशेष (वि ४ ४) । ६, भात-विशेष सर्वभूत नाम, वृद्ध घनी वस्तु सर्व वस्तुओं का भात सर्वज्ञा (वि २२७) ।
 कस्य वि [कस्य] पर्यंत वस्तु (म १ ४) । आन न [कस्य] सर्वभूत नाम वस्तु का भात (छ २ २) । गायि नावि वि [कस्य] १ केस-कस्य (ग्रास पर्यंत (कपू बीज) । २ पुं, इस नाम के एक वस्तु के वस्तु उत्पत्ति-कस के प्रथम तीर्थकर (पत्र १) । ३ पत्रा पत्रा नाम केओ व्याज (वि २२६; वत् २२ ८११) । वस्य न [वस्य] पर्यंत सामान्य बीज (कपू ४ १२) ।
 केसि म [केस्य] केस विर, मय (स्वय २२; २१ ग्रास) ।
 केसिय सक [समा + रस्य] धारण करना शुरू करना । केसाय (वत् २) ।
 केसिय वि [केसिय] केस शत्रुनाम, सर्व (मय) । पसिय वि [पसिय] १ सर्ववृद्ध । २ पुं शत्रुनाम तीर्थकर (म १ ११) ।
 केसिय वि [केसिय] १ केस-कस्य (म) । २ पर्यंत, वस्तु, 'सामान्य केसिय' पत्र' (वि २६६) ।
 कसिय वि [कसिय] १ केस-कस्य के वस्य पत्र (म १ ७) । २ केस-श्रीक (गुमा १ २४) । ३ केस-कस्य-वस्तु (छ ४ १) । ४ न, केस नाम वस्तु का भात (पत्र ४) ।
 कस्य न [कस्य] केस नाम केसिय वस्तु (ग्रास १७ टी निर ११)

प्रयत्नी की [केवली] ज्योतिष विद्या-विशेष
(सम्प १२१ १२६)।

केस दु [केस] केस बाल (उप ७१८ टी
मयी २६)। पुर म [पुर] भोजन पर
स्थित एक विद्या-नगर (१६)। ल्यत्र
दु [ल्यत्र] कैलों का समुत्पन्न (मय पण्ड
२ ४)। वाणिज्य म [वाणिज्य] केस
वाले बीजों का व्यापार (सा ५२)। हस्य
हस्यय दु [हस्य] के केराया सम-
पचित करा संघट बाल (कम्प पाप)।

केस देवी केरिस। की सी (समु १११)।

केस देवी केरिस (उप ७१८ टी) मम
२२)।

केस दु [कवीधर] उत्तम कवि सेठ कवि
(उप ७२८ टी)।

कसर पुन [कसर] एक ऐतिहासिक (रिवाज
१४२)।

कसर पुन [कसर] १ पुन-रेणु पण्य किन्नर
(सि १ ५, ६ १ ११)। २ सिंह बीण्ड
के कंधा का बाल केसर (सि १ ५ गुणा
२१२)। ३ पुन कसर कसर (उप ७२८
पाप)। ४ म इस नाम का एक पण्य
वाणिज्य नगर का एक उत्पन्न (उप १०)।
५ पण्य विशेष (उप)। ६ मुसल बीजा।
७ पण्य-विशेष (सि १ १४६)। ८ पुन
विशेष (उप ११२२)।

केसरा की [कसर] १ सिंह बीण्ड क सरण
पर के बालों की लय केसर म बीहाण
(सामु ११ पण्य भासा)।

कसरि दु [कसरि] १ सिंह बरवा
काटीर (उप ७२८ टी-व ८ ४ पण्ड
१ ४)। २ हड-विशेष मीतलन वर्ण पर
स्थित एक नगर (उप १ ४)। ३ दु-विशेष
पल्लव-लेन के बज्र प्रति बामुदेन (उप
१२४)। ४ दु [दु] हड-विशेष (उप
२ ४)।

केसरिका की [केसरिका] एक कले का
बने का दुर्गा (पय गिरे २४२२ टी)।

कसरिक वि [केसरिक] बमकाता
(गण)।

कसरि की [केसरि] देवी कमरिका तिर

कुम्भितलपुनमुनसविषयकेरिहणयण
(सामा १ १-५१ १ ५)।

कसरय दु [कसरय] १ धर्म-बकरी पाया
(सम)। २ बीहण्य बामुदेन मापयण
(गण)।

केसि वि [केसि] कसेय-मुक विगठ (विशे
३११४)।

केसि दु [कसरि] १ एक केन मुनि मयबल
पारमनाक के शिष्य (उप मम)। २ बामुदेन
विशेष धर्म क मय की बाराण कलकला
एक शिष्य जिसको बीहण्य ने माप का
(मुना २६२)।

केसि दु [कसरि] देवी केसरय (उप ७५
२)।

कसरि वि [कसरि] केराता बाल-मुक।
की आ (मुप १ ४ २)।

केसी की [केसी] साठवें बामुदेन की माता
(पयम २ १८४)।

"केसी की [केसी] केराता की "विहण्य-
केसी" (उप)।

केसुम देवी केसुम (सि १ २६ ५६)।

केड (पय) वि [कीहण्य] केड, किस लख
का ? (सी पण्ड; मुना)।

केडि (पय) म सिप, बाले (सि ४ ४२२)।

केडम म [केडम] कट, बम (सि १ १; ग
१२४)।

केड देवी केड (सि २, ४२ टी)।

केड देवी केड (बम)।

केड देवी केड (पय)।

केडसाय म [वि+कस] विहण्य
बिलगा। केसाय (सि ४ १२२)।

केसासिय वि [विहण्य] विहण्य प्रमुक
जिता मुना (मुना २ २)।

केरुख पु [केरुख] १ केवण निह (पण्ड
१ ४-उप २१ सण्य ११)। २ पण्य का
एक मेद (सिप)। ३ पण्य पु [केरुख]
बलसति विशेष ललकण्टक (पण्ड १-
पण १२३)।

केरुख की [केरुख] की-मोयन निरी
"केरुका वंश नई" (सामु पाप)।

केरुख की [के] बामता बाहु के धार (सि
२ ४६)।

केरुका की [के] मोडकी की बलि कटीयानि
(सि २ ४५ पाप)।

केरुका म [कीरुका] १ कुमुद मयुर्व बलु
केरुका म [केरुका] केरुका का बलिमाप (सुर २, २२६)।

२ धारमय विहण्य (बम १)। ३ ललक
(उप)। ४ ललकता ललकता (वर्ण १)।

५ इति-मोयनि से रक्षा के सिप किमा पाता
काव्य का तिमक रक्षा-मोयनि प्रयोग (उप)

मोय विप १ १ पण्ड १ २ बर्न १)।

६ सीमाय धारि के सिप किमा जाता ललक
विहण्य, बुर होन बनेय बर्न (बम १
पण्य १ १४)।

केरुख वि [केरुख] मोयन मय (बर्न वि
१११)।

केरुख देवी केरुख (सि १ ११७
केरुख १०१ २ ६६; मुना पाप)।

केरुख वि [केरुख] कुमुद की मोयनी
कुमुद-मय (मुना)।

केरुख देवी केरुख (मुना; वि ११)।

केरुख देवी केरुख (मुना; वि ११)।

केरुका पु [केरुका] केरुका-विशेष (उप ४१२)।

केरुका पु [केरुका] १ धर्मय केरुका-विशेष
(उप)। २ वि उर केरुका म खेराता (पण्ड
१ १ विसे १४१२)।

केरुका पु [केरुका] १ ल नाम का एक धर्मय
केरुका (पण्ड १ १)। २ पण्य-विशेष (उप)।

३ कीर-विशेष (टी ४२)। ४ ल नाम का
एक मयुर (मुना)। ५ वि कीर केरुका का
मिनी (पण्ड १ १)। "वि दु [वि] वि

मतिरेय, सण्य (मुना)। ६ वर पु [वर]
इत नाम का एक कीर (मलु-टी) बीररा

पुन [वारक] एक प्रकार का बहाम (इ
१)। देवी केरुका।

केरुका की [केरुका] वारी मुनी (उप
१०)।

केरुका वि [केरुका] मयुजित मयुजित
पण्ड १ ४)।

केरुका म [केरुका] १ ज्योतिष-सम्बन्धी मुना।

२ शुरुयति निमित्त-सम्बन्धी मुना। "उरुयते
मोयनय" (पय २२१ म)।

केरुका कुट (सि १ ११६ वि)।

केरुका कुट (सि १ ११६ वि)।

केरुका कुट (सि १ ११६ वि)।

कोट पुं [कोट गीह] कोटिरेण (रुक्) ।
कोटल कोट कुंडल (पत्र) । 'मिसाग पुं
[मिस्रक] एक स्फुरर देव का नाम (बृह
३) ।

कोटलगा पुं [कुण्डलक] पक्षि विरेण (वीर) ।
कोटिअया की [रे] १ स्तारव जन्म-विरेण
पक्षी स्तारिव । २ बीडा नीट (रे २२) ।
कोटिअ पुं [रे] शान-निचली लोको में फूट
नगरर एव है कोट का मानिक बन देहो-
बारा (रे २, ४५) ।

कोटिअपुर न [कोटिअनपुर] नगर विरेण
(राज २१) ।

कोटिया कोट कुटिया (पण्ड २ २) ।

कोटिअ कोट काटिअ (पत्र) ।

कोट कोट कुंड (रे १ ११६) ।

कोटमुल पुं [रे] उदुव उदुव, पटि-विरेण
(रे २ ४६) ।

कोट कोट कुट (पण्ड १ १ नुर २ २५) ।

कोटल कोट कुंडल = कुण्डल (श्राव ६
बोति ४) ।

कोटी कोट कुटी (छाया १ १९—पत्र
२११) ।

कोटी कोट कु भी (श्राव ६) ।

कोट पुं [कोट] १ कवचक पक्षी (रे ५
४३) । २ कुट मेरिया (रुक्) ।

कोटिअ पुं [रे] जन्म-विरेण, लोमड़ी
लोमरिया (पण्ड १ १) । की या (छाया
१ १—पत्र १११) ।

कोटल कोट कोटल (बीबी ४०) ।

कोटल न [कोटल] १ एक कुटुम्ब । २
लाल कवच (पण्ड १ स्तव ७२) ।

कोटलिय [रे] कोट कोटलिय (पण्ड
१ ४—पत्र ७७) ।

कोटलिय कोट कुटलिय (हा ५—पत्र १०१) ।

कोटल न [कोट + ट] कुटल पाटल
कला कोटल (रे १ ७९ पण्ड १) । को
कोटल (कुता) । कोट कोटलिय (कोट) ।

कोटल कोटल (कोट) ।

कोटल पुं [कोटल] एक नाम का एक
कोटल कोट (पण्ड १) ।

कोटलिय [रे] कोट कोटलिय (रे १
२) ।

कोटिय वि [कोटल] माटल कुताया टुपा
(मणि) ।

कोटलिय कोट कुटलिय (कोट पीर) ।

कोटलिय कोट कुटलिय न [कोटलियमान
(वि ११६) ।

कोटलिय न [रे] कोटलिय न [कोटलिय
वि २, ४५) ।

कोटलिय पुं [रे] कोटलिय न [कोटलिय
(वि १) ।

कोटलिय न [कोटलिय] १ कोटलिय (वि २ पुंकी,
कोटलिय न [कोटलिय] (हा ५—पत्र ११६) ।

कोटलिय न [कोटलिय] १ कुटलिय लम्बी ऊपर से
कमल रत्नोत्पत्ता । २ न लण्डकेट
'नक्षिमाकारकोटलिय' (१ कुट) लम्बी (छाया
१—पत्र १४४) ।

कोटलियमास पुं [रे] कुटलियमास का
कोटल, मास 'न मणी लम्बी' लम्बी
लम्बी लम्बीमास' (पत्र) ।

कोटलियमास कोट कुटलियमास (रे १ १११)
कुता पण्ड) ।

कोटलियमास कोट कुटलियमास (रे १ १११)
कुता पण्ड) ।

कोटलियमास कोट कुटलियमास (रे १ १११)
कुता पण्ड) ।

कोटलियमास कोट कुटलियमास (रे १ १११)
कुता पण्ड) ।

कोटलियमास कोट कुटलियमास (रे १ १११)
कुता पण्ड) ।

कोटलियमास कोट कुटलियमास (रे १ १११)
कुता पण्ड) ।

कोटलियमास कोट कुटलियमास (रे १ १११)
कुता पण्ड) ।

कोटलियमास कोट कुटलियमास (रे १ १११)
कुता पण्ड) ।

कोटलियमास कोट कुटलियमास (रे १ १११)
कुता पण्ड) ।

कोटलियमास कोट कुटलियमास (रे १ १११)
कुता पण्ड) ।

कोटलियमास कोट कुटलियमास (रे १ १११)
कुता पण्ड) ।

कोटलियमास कोट कुटलियमास (रे १ १११)
कुता पण्ड) ।

कोटलियमास कोट कुटलियमास (रे १ १११)
कुता पण्ड) ।

कोटलियमास कोट कुटलियमास (रे १ १११)
कुता पण्ड) ।

कोटलियमास कोट कुटलियमास (रे १ १११)
कुता पण्ड) ।

कोटलियमास कोट कुटलियमास (रे १ १११)
कुता पण्ड) ।

कोटलियमास कोट कुटलियमास (रे १ १११)
कुता पण्ड) ।

कोटलियमास कोट कुटलियमास (रे १ १११)
कुता पण्ड) ।

कोटलियमास कोट कुटलियमास (रे १ १११)
कुता पण्ड) ।

कोटलियमास कोट कुटलियमास (रे १ १११)
कुता पण्ड) ।

कोटलियमास कोट कुटलियमास (रे १ १११)
कुता पण्ड) ।

कोटलियमास कोट कुटलियमास (रे १ १११)
कुता पण्ड) ।

कोटलियमास कोट कुटलियमास (रे १ १११)
कुता पण्ड) ।

कोटलियमास कोट कुटलियमास (रे १ १११)
कुता पण्ड) ।

कोटलियमास कोट कुटलियमास (रे १ १११)
कुता पण्ड) ।

कोटलियमास कोट कुटलियमास (रे १ १११)
कुता पण्ड) ।

कोटलियमास कोट कुटलियमास (रे १ १११)
कुता पण्ड) ।

कोटलियमास कोट कुटलियमास (रे १ १११)
कुता पण्ड) ।

कोटलियमास कोट कुटलियमास (रे १ १११)
कुता पण्ड) ।

कोटलियमास कोट कुटलियमास (रे १ १११)
कुता पण्ड) ।

कोटलियमास कोट कुटलियमास (रे १ १११)
कुता पण्ड) ।

कोटलियमास कोट कुटलियमास (रे १ १११)
कुता पण्ड) ।

कोटलियमास कोट कुटलियमास (रे १ १११)
कुता पण्ड) ।

कोटलियमास कोट कुटलियमास (रे १ १११)
कुता पण्ड) ।

कोटलियमास कोट कुटलियमास (रे १ १११)
कुता पण्ड) ।

कोट्ट वुं [कोट] १ बाण्ड, बन्धवारि मय
का बाणासुर में स्वरण-योग्य धनस्यान
(छि १०६) । २ मुकुटी इत्यन्विटोय
(रा १४५) ।

कोट्ट [कोट्ट] १ कोट्ट (छा १ १) डा
कोट्ट (१ १) नाम । १ धामन्विटोय
कोट्ट [धामन्विटोय] (दीप २ ३
१) । ४ धामन्विटोय (रा ३, १ डा
४८६) । ५ धामन्विटोय (छा २ १) ।

माग न [माग] बाग मले का कर
(दीप १४५) । २ मरणावा, मंशार
(छा १ १) ।

कोट्टार वुं [कोट्टार] मल्लार, मंशार
(पद्म २ १) ।

कोट्टि नि [कोट्टि] कुट्ट रोणी (भाषा) ।
कोट्टिया धी [कोट्टिया] पाटा नील लु
मुग्न (छा) ।

कोट्ट वुं [कोट्ट] मुकन विनार (पद्) ।
कोट्ट रोणी कोट्ट (व २२६) ।

कोट्टिय रोणी कोट्टिय (क्य) ।

कोट्टिय न [कोट्टिय] नाम नाम (३ २, २) ।

कोट्टिय [कोट्टिय] रोणी कोट्टिय (पाष) ।

कोट्टार न [कोट्टार] मल्लार, कुग का लोच
काग विनार (दी १११) ।

कोट्टिय वुं [कोट्टिय] कतिन्विटोय (पद्) ।

कोट्टाधधि धी [कोट्टाधधि] संस्मन्विटोय
कोट्टाधधि कोट्टाधधि वुं कुले वर की संस्मा
मय हो कर (पद् १ ३) कया डा) ।

कोट्टान वुं [कोट्टान] १ कोट्टान्विटोय का
प्रसन्न गुग । २ न. कोट्टान्विटोय (क्य) ।

कोट्टि धी [कोट्टि] १ कुट्ट का पय काय
(पद् १११) । २ वेद, ब्राह्म (दि १६६) ।

कोट्टि धी [कोट्टि] १ रोणा विटोय कोट्ट
१ ० (छा १ ८ नु १ १०-
४ ६) । २ पय काय, मणी कोट्ट (व
१२ ३६ पय) । ३ कोट्ट विनार, काय
'अविनारो पातो मो' बाण्णोविनारो' (पद् १६ डा ६) । कोट्टि रोणी कोट्ट-
कोट्टि (मुग १६६) । वद नि [कोट्टि]
कोट्टि संस्मन्विटोय (क्य १) । मूय धी
[मूय] कोट्ट २६ कोट्ट (दी ११) । मिया
की [मिया] एक धन नौ (पद्म ४८

१६) । मोय [अस्] कोट्टो कोट्ट
कोट्ट (मुग ४२) । रोणी कोट्टि ।

कोट्टिय न [कोट्टिय] १ कोट्टि मिट्टी का पाष लु
छा ३ मणी (३ २४०) । १ कुट्टि निगुन
मुग्न कुपलकोर (पद्) ।

कोट्टिय वुं [कोट्टिय] १ एक धन मुनि
(क्य) । २ एक धन-मुनि-पण (क्य
डा ६) ।

कोट्टिय नि [कोट्टिय] संस्मन्विटोय (क्य
३८८) ।

कोट्टिय न [कोट्टिय] १ इस नाम का
कोट्टिय एक मल्ल (डा १४८ टी) । २
मल्लिय कोट्टि रोणी काय एक कोट्ट (क्य) ।

१ कुट्टि कोट्टिय कोट्ट का प्रसन्न कोट्ट । ४
वि कोट्टिय-कोट्टिय (छा ३—पद् १६०)
क्य) । ५ कुट्टि एक मुनि, कोट्टियमुनि का
छि ५ (वि २३६२) । ६ मल्लारो
मुनि का छि ५ एक धन मुनि (क्य) । ७
कोट्टिय-कोट्टिय के पाठ दीया मेनेराले कोट्ट
की लामों का कुट्ट (डा १४२ टी) ।

कोट्टिया धी [कोट्टिय] कोट्टिय-कोट्टिय
की (क्य) ।

कोट्टिय वुं [कोट्टिय] निगुन मुग्न कुपलकोर
(३ २, ४ पद्) ।

कोट्टिय रोणी कोट्टिय (पद्) ।

कोट्टिय वुं [कोट्टिय] इस नाम का एक
अवि बाण्ण मुनि (व १ ३) मल्ल) ।

कोट्टिय वुं [कोट्टिय] बाण्ण मल्लिय
मल्लिय-मल्लिय (मल्ल) ।

कोट्टिय मल्लिय न [कोट्टिय] मल्लिय-मल्लिय
विटोय वरने निगुन जराय वरने कुले निगु
की जराय की नी मल्लिय मल्लिय (व ४) ।

कोट्टि रोणी कोट्टि (व ३ ३) । नी
३०) । कोट्टिय न [कोट्टिय] विनार
विनार (वि ३ ३) । कोट्टिय न [कोट्टिय]
इस नाम का कोट्टि रोणी का एक मल्ल (दी
२६) । मानमा धी [मानमा] कायार
क्य की एक मल्लिय (छा ३—पद् १६६) ।

विनार न [कोट्टिय] मल्लिय रोणी कोट्टिय
काय रोणी (व ३ ३) । २ विनार
की [विनार] ३३ कुट्टिय-कोट्टिय की एक

काया (क्य) । सर वुं [कोट्टिय] कोट्ट
पति कोट्टिय (मुग ३) ।

कोट्टिय न [कोट्टिय] १ इस नाम का एक
कोट्टि कोट्टिय कोट्टि कोट्टि काय का है ।
२ वि इस कोट्टि में कोट्टिय (छा ३—पद्
१६) ।

कोट्टिय न [कोट्टिय] नाम नाम (३ २, २) ।

कोट्टिय रोणी कोट्टिय (डा १ १—पद्
१२२) ।

कोट्टिय वुं [कोट्टिय] १ कुट्टिय का
काया विनार का काया विनार का
मुनि (मल) । २ धाम-मल्लिय कोट्टि का
काया (पद् १ ३—पद् २४) । ३ वि
मुग्न में काय मल्लिय कोट्टिय कोट्टिय-
काया मल्लिय-मल्लिय (मल्ल कोट्टि ३) ।

कोट्टिय वुं [कोट्टिय] धामन्विटोय कोट्टि
की एक कोट्टि (पद्) ।

कोट्टि [कोट्टि] रोणी कोट्टि (३ २ ३६ व १४१
१४२ व १४२) छाया १ १६—पद्
२२४ उप वेद २ कोट्टि ।

कोट्टिय रोणी कोट्टिय (मुग) ।

कोट्टिय न [कोट्टिय] कोट्टि-कोट्टिय-कोट्टिय (मुग) ।

कोट्टिय नि [कोट्टिय] कोट्टिय कोट्टिय कोट्टिय
कोट्टिय जराय (उप ३६ टी) ।

कोट्टिय वुं [कोट्टिय] कोट्टिय-कोट्टिय कोट्टिय-
कोट्टिय नि १६ छाया १ १६ का २) ।

कोट्टिय नि [कोट्टिय] कोट्टिय-कोट्टिय कोट्टिय
कोट्टिय (पाष) ।

कोट्टिय नि [कोट्टिय] कोट्टिय-कोट्टिय कोट्टिय-
कोट्टिय (व २ २) । २ कुट्टि, लफ्फा पति
(३ २, ४२, निगु १) पाष) । ३ बीणा
कोट्टिय कोट्टिय की लफ्फा बीणा-मल्लिय-
(वीर ३) ।

कोट्टिय वुं [कोट्टिय] कोट्टिय कोट्टिय कोट्टिय
कोट्टिय (व २ २) । २ कुट्टि, लफ्फा पति
(३ २, ४२, निगु १) पाष) । ३ बीणा
कोट्टिय कोट्टिय की लफ्फा बीणा-मल्लिय-
(वीर ३) ।

कोट्टिय वुं [कोट्टिय] कोट्टिय कोट्टिय कोट्टिय
कोट्टिय (व २ २) । २ कुट्टि, लफ्फा पति
(३ २, ४२, निगु १) पाष) । ३ बीणा
कोट्टिय कोट्टिय की लफ्फा बीणा-मल्लिय-
(वीर ३) ।

कोट्टिय वुं [कोट्टिय] कोट्टिय कोट्टिय कोट्टिय
कोट्टिय (व २ २) । २ कुट्टि, लफ्फा पति
(३ २, ४२, निगु १) पाष) । ३ बीणा
कोट्टिय कोट्टिय की लफ्फा बीणा-मल्लिय-
(वीर ३) ।

कोट्टिय वुं [कोट्टिय] कोट्टिय कोट्टिय कोट्टिय
कोट्टिय (व २ २) । २ कुट्टि, लफ्फा पति
(३ २, ४२, निगु १) पाष) । ३ बीणा
कोट्टिय कोट्टिय की लफ्फा बीणा-मल्लिय-
(वीर ३) ।

कोट्टिय वुं [कोट्टिय] कोट्टिय कोट्टिय कोट्टिय
कोट्टिय (व २ २) । २ कुट्टि, लफ्फा पति
(३ २, ४२, निगु १) पाष) । ३ बीणा
कोट्टिय कोट्टिय की लफ्फा बीणा-मल्लिय-
(वीर ३) ।

कोट्टिय वुं [कोट्टिय] कोट्टिय कोट्टिय कोट्टिय
कोट्टिय (व २ २) । २ कुट्टि, लफ्फा पति
(३ २, ४२, निगु १) पाष) । ३ बीणा
कोट्टिय कोट्टिय की लफ्फा बीणा-मल्लिय-
(वीर ३) ।

कोट्टिय वुं [कोट्टिय] कोट्टिय कोट्टिय कोट्टिय
कोट्टिय (व २ २) । २ कुट्टि, लफ्फा पति
(३ २, ४२, निगु १) पाष) । ३ बीणा
कोट्टिय कोट्टिय की लफ्फा बीणा-मल्लिय-
(वीर ३) ।

कोट्टिय वुं [कोट्टिय] कोट्टिय कोट्टिय कोट्टिय
कोट्टिय (व २ २) । २ कुट्टि, लफ्फा पति
(३ २, ४२, निगु १) पाष) । ३ बीणा
कोट्टिय कोट्टिय की लफ्फा बीणा-मल्लिय-
(वीर ३) ।

कोषाक्षी की [बे] बेसी बोट (इ. १)।
कोषिज } पुं [कोषिज] राजा बेसिज का
कोषिजा } पुं, नृप-विरोध (संज्ञा) राजा १
१ महाराज)।

कोषु की [बे] सेवा लकीर सेवा (इ. २ २९)।
कोषोट्टिया की [बे] पुष्पा पुं 'कोषोटी'
(पुं) इ हारि पत्र ७६) बेसी,
कोषोट्टिया।

कोष्य पुं [बे] कोष्य गृह-कोष्य घर का
एक कम कोष्य (इ. २ ४२)।

कोष्य न [कीटव] मृग के रोम से मिल्य
मुल (राज)।

कोषुहल बेसी कुलहल (कम)।

कोषुहल की [बे] बाल बटोले का बाल
पात्र-विरोध (१ १४)।

कोषिज नि [कीटविक] कीटवी कुलही
(रा १४२)।

कोषिज पुं [कोषिज] १ मुमि-उपन करने-
वाला वागमय (वीम)। २ न. एक प्रकार
का मनु (अ. १)।

कोरव बेसी कोरव = कीरा।

कोरव न [बे] १ विज्ञान (इ. २ ११)। २
बीटर, बहुर (सुता २४७) निरु ११)।

कोरव पुं [बे] १ कुल कोर (इ. २,
४)। २ कोरवी मैला (अ. १६२)।
कोर की [कोर] नींद नींद विरोध
(इ. १)।

कोरुम } पुं [कोरुम] बालक के बाल-
कोरुम } लाल की मणि (टी १) प्रस
कोरुम } महा ना १११) पण्ड १ ४)।
कोरुम पुं [कोरुम] बाल, बाल, बालक
बाल (संज्ञा १६)।

कोरुमि } बेसी कु-रुमि (नं १) कम)।
कोरुमि }

कोरुसग बेसी कोरुसग (का १, ७)।

कोरव बेसी कोरव (मन)।

कोरविया की [बे] मालव, पुं कोर-
विरोध (पुं १ १२)।

कोरव बेसी कोरव (पण्ड १ १—पत्र
२१)।

कोरविया की [कोरविया] कोरा कुल,
कुलवी (विना १ १)।

कोरव पुं [कोर] इस नाम का एक राजा
जिसने बालरवि मण्ड के राजा पैत बीजा की
की (पत्र २२ ४)।

कोरव बेसी कुल = कुल। कोरव (मण्ड)।

कोरव पुं [बे] मालव कुल (इ. २ ४२)।

कोरव नि [कोरव] होय पत्नी-कुर
'मालव-वैपकुला' (पण्ड १ १)।

कोरव पुं [कोरव] १ हाथ का मध्य भाग
(वीम २११ मा कुमा १ १ १२४)। २
नवी का मिलाप छट, छोर (वीम १)।

कोरवी की [कोरवी] विद्या-विरोध (पत्र
७ १४२)।

कोरमा } पुं [कोरमा] पति-विरोध (संज्ञा)
कोरमा } वीप)।

कोरमा नि [कोरमा] मुं, मुं, मुं (वी १ :
पत्रा कपु)।

कोरमा नि [कोरमा] १ कुमार से संकल
रामेवाला कुमार-संकली (विना १ ७१)।

२ कुमार-संकली (पत्र)। ३ कुमार में
जलन (इ. १ १)। बी रिया टी
(मा ११)। मय न [कोरमा] बेलक

राज-विरोध जिसने बालरवि के लाल-
लालकी कर्तुन है (विना १ ७—पत्र ७३)।

कोरवी की [कोरवी] विद्या-विरोध (पत्र
७ १४२)।

कोरुमा की [कोरुमा] बीरुमा बालक
को एक बेसी को कर्तुन की पुष्पा के समय
बनाई जाती की (वि. २७९)।

कोरुम की [बे] पुष्पा की बी पुष्पा
(इ. २, ४४)।

कोरुम की [कीरुमी] १ छर, बालु की
पुष्पा (इ. २ ४)। २ बलिम बलिनी
(वीम ११ टी)। ३ इस नाम की एक
नारी (पत्र ११ २)। ४ काटिक की

पुष्पा (पत्र)। माह पुं [माह] बालमा
बाल (वम ११ टी)। माहस पुं [माह]
लाल कल विरोध (वि ११९)।

कोरुमा बेसी कोरुमा (पत्रा १ १—
पत्र १)।

कोरुमी बेसी कोरुमी = कीरुमी (पत्रा १
१ २)।

कोरव नि [कोरव] पुं के रोम से बना
हुमा (बक) (अनु १४)।

कोरव नि [कीरव] 'कोरव' देश में निर
(पत्रा २ १ १)। बेसी कोरव।

कोरव पुं [बे] कई से भरे हुए बने
कोरवय का बना हुआ प्रत्यय-विरोध,
रुई (गमा १ १७—पत्र २२१)।

कोरवी की [बे] कई से बने हुए बना
(इ. १)।

कोरमा पुं [कोरमा] पति-विरोध (पत्र १
१—पत्र ७)।

कोरमा } पुं [कोरमा] १ बाल-विरोध
कोरमा } (पत्र)। २ न. इस नाम का
पुष्पा (बीम) लाल का एक लाल
(इ. १)। ३ कोरमा कुल का पुं (पत्र
१ ४—ब. १)।

कोरमा (टी) बेसी कल (माह ४४)।

कोरमा पुं [कोरमा] कोरमा बाल पुं
कोरमा } पुं की बनी (पत्र)। 'कोरमा'
कोरमा पत्रा (अ. ४ १—पत्र १०३)।

कोरमा बेसी कल (वम १७९)।

कोरमा की [कोरमा] बेसी कोरमा
(अनु ११)।

कोरमा पुं [कोरमा] १ कुल-संज्ञा में लाल
(वम १२२) अ. १)। २ कोरमा-बीम।

३ पुं बालरवि बालरवि राजा बालरवि (वीम
१)।

कोरमा की [कीरमा] इस नाम की
पुष्पा राज की एक पुष्पा (अ. ७)।

कोरमा } बेसी कोरमा (पत्रा १ १—
कोरमा } पत्र ११ कमा पत्र ४२)।
कोरमा } बीम जमा)।

कोरमा पुं [बे] बीम कोरमा (इ. २ ४२)।

कोरमा पुं [कोरमा] १ पुष्पा, बाल (पत्र १
१—पत्र ७ अ. १११)। २ लाल बीम
'कोरमा'—(पत्र)।

कोरमा पुं [कोरमा] १ लाल-विरोध (पत्र १७-
११)। २ लाल कल बीम (अ. ११)। ३
लाल, बाल, लाल (अ. ११ टी)। ४ लाल
१ १) कुमा पत्र)। ५ लाल के लाल
का एक लाल (पत्र १ १—पत्र ७)। ६
लाल-विरोध (वम १)। ७ लाल की एक
नीम बाल (पत्र ४)। ८ बाल-बाल के
न पत्र)। ९ बाल-बाल के लाल (अ. ४-
१)। १० लाल १)। पत्र न [पत्र] लाल

विशेष जहाँ श्रीरामदेव मयात् का मंत्रि
है, यह मंत्र बलिष्ठा में है (वी ४४)। पाठ
पुं [पाठ] वैष विशेष बण्डेज का मोचन
(ठा १—पत्र १ ७)। मुणय मुणह
पुकी [मुनक] १ बग रुक, सूषर की
एक जाति जली नष्ट (पाठा २ १
४)। २ विकारी कुला (पण्ड ११)।
की [जिया (पण्ड ११)। [वास पुन
[वास] काष्ठ, लकड़ी (पत्र ११)।

कोल नि [कोल] १ यकि का जालक
ताम्रिक मत का अनुयायी। २ ताम्रिक मत
संस्थ रत्नेवलाता कोलो बन्नी कस छो
माह रम्यो (कण्ठ)। ३ न बरत-पुन-
संस्थी (सा १, १)। कुण्य न [कुण्]
वेर का बुरा, वेर का घट्ट (सा २, १)।
द्विज न [विज] वेर की दुष्टिया या
कुली (सा १ १)।

कोलंघ पुं [वि] पिठ, स्थली (वे २, ४७)
पाप)। २ गुह, घर (वे २ ४७)।

कोलंघ पुं [कोलंघ] गुपी छोटा का भाषा
हुआ मय माय (पु २)।

कोलंगिणी की [कोले, काठकी] कोल
जातीय की (पाठ ४)।

कोलपरिय नि [कोलपुष्टिक] कुलपुष्ट
संस्थी निगुह-संस्थी निगुह से संस्थ
रत्नेवलाता (वग)।

कोलप्रा की [वे] बन्ध रत्ने का एक छद्म
का मत (पाठा २, १, ७)।

कोलर हैको कोलर (गा १११ ४)।

कोलन न [कोलन] क्योतिग-प्राय में प्रविष्ट
एक कण्ड (नि १११४)।

कोलस नि [कोलस] १ दुष्कार-संस्थी।
२ न मिट्टी का पात्र (वग)।

कोलसिध पुं [कोलसिध] मिट्टी का पात्र
वेकनेवाला (हह २)।

कोलसह पुं [कोलसह] घास की एक जाति
(पण्ड १)।

कोलसह पुं [वे] नदी की यात्रा पत्ती
का छद्म (वे २, १)।

कोलसह पुं [कोलसह] गुपुन कोलन
पैता हला बड़ा दूर बनेवाला लोक-प्राय

का घसुट शब्द (वे २, १ हेम १ ४;
उप २)।

कोलसहिय नि [कोलसहिय] कोलाहल-
वाला सोलनकता (पत्र ११७ ११)।

कोलसि पुं [वे] एक प्रथम भण्ड्य जाति
(पुष्ट २ ११)।

कोलसि पुं [वे] कोमी उल्लाप, कुलाहल
कनका कुलवाला (वे २ १४) एहि, पत्र २।

उप २ २१)। २ बाल का भीड़, मक्का
(वे २, २१; पाप या २; पाप ४ हह १)।

कोलसि न [वे] लम्बु कुला (वे २, ४२)।

कोलसि न [कोलीम्य] कुलीमता बालप्राणी
(वर्ग १ ४६)।

कोलीक्य नि [कोलीक्य] स्तोत्र संयोजित
(पत्र)।

कोलीय न [कोलीय] १ किराँती लोह-माली
वन-माली (सा १७)। २ नि बंश-परवर्तक

कुलक से बालाव। ३ चतन कुल में जलन।
४ ताम्रिक मत का अनुयायी (माट—महावी
१११)।

कोलीर न [वे] ताल रंग का एक पदार्थ,
कुक्षिय कोलीररतकुक्षिय (वे २ ४६)।

कोलुण्य न [कोलुण्य] बग अनुपमा कण्ठा
(निगु ११)। पक्षिया 'वक्षिया की
[प्रविष्टा] अनुपमा की प्रविष्टा (निगु
११)।

कोलस पुं [वे] कीले कोल पीर ऊपर बाई
के मातर का भाग्य दाहि भले का कोल

(पाठा २ १ ७ १)।

कोलस पुं [कोलसक] रत्न कुला (समस्त
११ वर्ग १२)।

कोल पुन [कोल] कोला नदी हुई लकड़ी का
हुम्मा (निगु १)।

कोलर न [कोलर] नार-विशेष (निगु
४२७)।

कोलपाग न [कोलपाग] रजिण देव का एक
नमद, जहाँ की प्यनदेव का मन्त्रि है (वे
४२)।

कोलर पुं [वे] पिठ, स्थली पानी पक्षिया
(वे २ ४७)।

कोला ऐको कुला (गुमा)।

कोला ऐकी कुला (मि)।

कोला ऐकी कुला (मि)।

कोलापुर न [कोलापुर] पक्षिण देव का एक
नमद, महालक्ष्मी का स्थान (वी ४४)।

कोलसु पुं [कोलासुर] इस नाम का एक
देव (वी ३४)।

कोलसु नि [वे] ऐको कोलसु (वग १ हह
१)।

कोलसहल न [वे] पल-विशेष विन्नी-पल
(वे २ १२)।

कोलसु पुं [वे] १ शृगाल शिवार (वे २
११) पाप पत्र ७ १७) १ १ ४२)।

२ कोलू बाली कल से रज निगमने का
कल (वे २ ११, महा)।

कोलस [कोपय] १ कृषि कला।
२ कृषि कला। कोले (पुनित १२२)

कोलस [कोप] (पुन १४)।

कोल पुं [कोप] कोन पुसा (विपा १ २,
मागु १७२)।

कोल नि [कोपन] कोपी कोन-पुन (पाप-
गुमा १७४) पत्र १४७) सज्ज ४२)।

कोलम पुं [कोपक] पदार्थ देव-विशेष (पत्र
२७४)।

कोलसि नि [कोलसि] कोमासिय (पाप)।

कोल नि [कोपि] कोपी कोन-पुन (गुमा
२७१; सा २)।

कोल नि [कोपि] निगुण निगुण, पक्षि
(पाठा गुमा १३ १२२)।

कोलस नि [कोपि] १ कुल निगुण गुमा।
२ कृषि कोन-पुन किमा गुमा 'कोपी फिर
बाड़ी बायछति नकि कोपिय कण्ठ' (उप)।

कोलस की [वे] शृगाली शिवालि (वे
२ ४२)।

कोलसि पुं [कोलसि] कुल-विशेष (निगु
११)।

कोलसि की [कोपि] कोन-पुन की (पा
१२)।

कोलस (मा) नि [कुपुण] कोला नम
(मा १ २)।

कोल पुं [वे] १ कुपुण रज से रंग हुआ
रज कल। २ कुपुण जलपि सागर (वे २
१२)।

कोल पुं [कोल] कोन मार्ग की लम्बाई का
परिमाण को मीत (पत्र की १२)।

कोस पुं [कोश, प] १ बजला परहार (गामा १ १११; पठम २, २४) । २ लश्कार की व्याज (धृप १ ६) । ३ कुलसत् 'बनबकोसम्' (कुमा) । ४ मुकुट कमी (मरु) । ५ यौन वृत्ताहार 'यै ब्रह्मैरित्यन्तरमेतद्विषयवर्तते' (गुप्ता २७) गात्र । ६ विष्णु-मेरु, ठम लोहे का स्तंभ वीर्य शयन, 'एतद् यन्मै लोडविषयं पञ्चायमी' (म ३२४) । ७ अविवात-शास्त्र, शब्दाभेद-विशेष प्रत्यक्ष प्रत्यक्ष प्रत्यक्ष । ८ पुनः पानपान वपक (पाथ) । ९ न नगर विरोध 'कोसं नाम नगरं' (स १११) । पाण न [पान] सीमन्त शयन (सा ४४८) । हिंस पुं [पिप] बजाती मंशरी (गुप्ता ७१) । कोसं पुं [कोशास्त्र] पञ्च-मुक्त-विरोध (पथ्य १—पथ ११) । रक्षिया की [रक्षिण] बह्म-विरोध एक प्रकार की लश्कार (पथ) ।

कोसंबिया की [कोसम्बिया] कैनुनि-गण की एक शाखा (कथ) ।

कोसंबी की [कोशम्बी] बल देत की मुक्त-नगरी (अ १; विपा १६) ।

कोसग पुं [कोशक] कानुमी का एक बनें मय काफ़रल बपके की एक प्रकार की बीबी (बर्न १) ।

कोसहूडिमा की [हे] बरही पारंगी पीठी गिर-कली (हे १ १२) ।

कोसय न [हे] कोशक] लज्जा शयन शीघ्र पाल पाण (हे १ ४७ पाथ) ।

कोसल न [कीशल] कुलपता निपुणता कानुमी (कुमा) ।

कोसल न [हे] कीरी भाद्र, इराजन्त (हे २ ४८) ।

कोसल न [कोसल] १ कोट-विरोध कासमया (कुमा मरु) । २ एक दिन बरह, कुलपान मुनि (पथम २२ ४४) । ३ कोल देत का घडा । ४ वि कोल देत का कण्ठ (हा २ २) । ५ गुर न [पु] ययोप्या नगरी (पाठ १) ।

कोसल की [कोसल] १ नगरी विरोध

ययोप्या-नगरी (पथम २ २८) । २ ययोप्या-भाण कोमल देत (मय ७ ६) ।

कोसलित्र वि [कोशलित्र] १ कोमल देत में प्रत्यक्ष कोमल देत-कमलानी (यम २ ८) । २ ययोप्या में उत्पन्न ययोप्या-संनगनी (बं २) ।

कोसलिभ न [हे] कोशलिभ] प्राण्ड भेंट, लश्कार (हे २, १२) सहा मुता—प्रस्तावना २) ।

कोसलिमा की [हे] कोशलिमा] ऊपर रेखी (हे २ १२; गुप्ता—प्रस्तावना २) ।

कोसल न [कोशस्य] निपुणता कानुमी (कुमा गुप्ता १६; गुर १ ८) ।

कोसल न [हे] प्राण्ड, भेंट लश्कार 'शु गुरलकोकल नरबला मयिप्य कुमाएत' (महा) ।

कोसलमा की [कोशस्य] निपुणता कानुमी 'यै मरुन्तरीकोशलमा न कीशलिभ इमाशि' (गुप्ता १ १) ।

कोसल की [कोशस्य] शतरुपि यम की भाता (अ १ १७४) ।

कोसलिभ न [हे] कोशलिभ] भेंट, लश्कार (हे २ १२ महा गुप्ता ४११; ४२७; सहा) ।

कोसा की [कोश] इस नाम की एक प्रसिद्ध किराया, निमके यहाँ बहन महसि कील्लुल्ल मुनि में विविधर भास से कानुमी (कोमाया) किता या (विरे ११) ।

कोसिय वि [कोप] बोझा नयन (भाद्र—बेरी) ।

कोसिय न [कीशक] १ कुलपता का गोर विरोध (यधि ४१ डा १६) । २ बीन में लज्जा का पीन (बं १) । ३ वं उगुर पुन, कानु (नाम मार्ग २६) । ४ कोप विरोध अशरति-नामक इट्टि-विष वर्ण बिजरी मयल्लु भीयमासीर में प्रवीण विना या (सायन) । ५ कुल-विरोध । ६ दण्ड । ७ कानुन । ८ कानुमाय्य पत्रावली ६ कीटि कानुन । ९ दण्ड नाम का एक घडा । १० दण्ड नाम का एक घडा । ११ दण्ड नाम का एक घडा । १२ दण्ड की वपन-नामा शीघ्र कार्यदक । १३ ययिप्यार, मरुता । १४ विराज (हे १

११६) । १५ इस नाम का एक घडा (यधि) । १६ कुली, कीटिक बोध में कानुन, कीटिक-कोपीन (अ ७—पथ १६) । १७ की-कोसिई (मा १६) ।

कोसिया की [कोशिक] १ भाण्डवर्ग की एक ली (कथ) । २ इस नाम की एक शिवा-नर-पञ्च-कन्या (पथम ७ ४४) । ३ बनी का घडा 'कोसियामागुविबिहोपे विस्म-वदयो व' (स २२१) । रेखी कोसी ।

कोसियार पुं [कोशियार] १ कीट-विरोध, रेखन का कीड़ा (पथ १ १) । २ क. रेखनी बक (अ ४, १) ।

कोसी की [कोरी] १ शिमी कीनी की (यम) । २ लश्कार की व्याज (धृप २ १ १६) ।

कोसी की [कोपी] रेखी कोसिना (अ २, १—पथ १११) । २ कोलभर एक कानु 'कोशकीलोपविहोपे' (दीप) ।

कोसुम वि [कोसुम] कुल-वपनकी (१६) (सिरी १ ४७) ।

कोसुम वि [कोसुम] कुल-वपनकी कुल का बला गुप्ता 'कोसुमा बला' (पथ) ।

कोसुम रेखी कुसुम (संति ४) ।

कोसम न [कोशय] १ रेखनी बक, कोसिय रेखनी कड़ा (हे २ ११; यम १२१; पथ १ ४) । २ लश्कार का बला गुप्ता बक (बीन २) ।

कोह पुं [कोश] कुप्ता कोन (यप २ ४८ अ ४ १) । सुं वि [सुण्ड] कोप रीत (डा २ १) ।

कोह पुं [कोश] कानुन, लोहिका (यप १ १) । कोह पुं [हे] कोश] कोषकी बीना (सिरे २२४) ।

कोह वि [कोशक] कोप-मुक्त, कोप-रिपि कोशय मयल्लु माया लोहार् 'कोमाय-एत' (संति) ।

कोहक पुं [कोशक] विवि-विरोध (वीप) । कोहमाण न [कोशमाण] कोप-मुक्त विरोध (पाठ ११) ।

कोहक न [कोमाण] १ कुप्तावली-मन कोहिका (सि ७६) २। (२७) । २ न

देन-विमान-विरोध (टी २६) । ३ पुं व्यतर
मेणीय देन-वाति-विरोध (पत्र ११४) ।
कोईही की [कृष्णाणी] कोईही का गाव
(हे १ १२४ हे २ २ टी) ।
कोइण नि [क्रोचन] १ कोमी गुस्ताबोर
(सम १७ पत्रम १३ ७) । २ पुं इस नाम
का लकड़ा का एक मुद्र (पत्रम २१ १२) ।
कोइस रेकी कुइइस (हे १ १०१) ।
कोइसिज नि [कुइसिज] कुइइसी
कुइइस रेकी की आ (पा ७१८) ।
कोइसिआ की [कृष्णाणिअ] कोईहा का
गाव;
"अइ संवेति पत्रमई नियवई
मरहूहिं मोएणुं ।

वह मएणे कीइसिज, मरग
कसंति कुइसिज (पा ७१८) ।
कोइसी रेकी कोईही (हे २ ७३ हे २
२ टी) ।
कोइस रेकी कोइस (पत्र) ।
कोइसी की [दे] तापिअ लव, पचन-वाल-
नियेय (हे २ ४१) ।
कोइस रेकी कोईही (पत्र) ।
कोइ } नि [क्रोचिज] कोमी कीपी-लगाव का
कोइस } गुस्ताबोर (सम ४, १४ २३ २) ।
कोरव } रेकी कउरव (हे १ १ ५३) ।
कीअय }
कसिय रेकी किमिय = कपिअ (अ
७२४ टी) ।

कइर रेकी कइर = कइर । (पा २६) ।
"कैर रेकी "कैर (हे २ ११) ।
कसंड रेकी खंड (गउर) ।
"कसंड रेकी खंड (हे ३ २१) ।
कसम रेकी खम (ग्राम २७) ।
"कउलण रेकी खलण (मउर) ।
"किलसा रेकी खिसा (गुपा २१) ।
कसु रेकी सु (कपु सम १७३ पात्र १४) ।
कसुत रेकी सुत (पत्र) ।
कसेइ रेकी सेइ (गुपा २३२) ।
कसव रेकी खेव "आरखेव व अए" (अ
७२८ टी) ।
कसोदी रेकी सोदी (पत्र १ १) ।

॥ इस छिरियाइअसइमहण्यो के कपाउअइवतलो
रबमो वरयो समटी ॥

र

र पुं [र] १ कर्मज-बर्ण विरोध इसका
स्वात नएठ है (ग्राम, प्रात) । २ न. पाकप्र,
गमन "गली से रेखा" (हे १ १८७ गुमा
६ १ २२१) । ३ कर्मिय (विसे १४४६) ।
र पुं [र] १ वही अण (पात्र ६ २
२) । २ मनुष्य की एक जाति को बिचा
के बग से मारना में गमन कली है, बिचावर
कोक (पात्र २१) । रेकी खय = बग ।
"गइ भी [गति] १ पाकप्र-गति । २ कर्म-
विरोध जो कामप्र-गति का नएठ है (सम
२ १ पत्र ११) । गमिणी की [गमिनी]
विद्या-विरोध जिसके प्रभाव से आकाश में
गमन किया जा सकता है (पत्रम ७ १४२) ।
र पुं न [रुप] पाउल-मुमुय वरवकित
बलु (गुमा) ।
रम } एक [रम] वरवकित करण ।
रउर } बमई बउरउ (पात्र ७३) ।
रइ नि [रुचिज] १ सववावा, मउरवावा ।

२ सव रीजवावा, शय-रीयो (गुपा २६१
२७१) ।
रअम नि [रुचिज] मउरिअ जमुकित (वीय
पत्रि) ।
रअज नि [रुचिज] १ व्यात जटि । २
मउरिअ किमुकित (हे १ १११) वीय व
११४) ।
रअज नि [रुचिज] १ बाबा गुमा, गुल,
प्रल (पात्र व २३, ४ ५ ४१) । २
पाकप्र: "रइ म हौठि व नएठ । बउरी
बेहि मगुइरी बमइअई न गुणे" (व
११४) । ३ न. मोहन मउर "बउरउ व
वीय व न व एरी वापी हउर कप" (पत्र
६ २ ख ४ ४—पत्र २७१) ।
रअम नि [रुचिज] लम-प्रात कीअ "किनि
कायअयो" (गु २१ १११) ।
रअम पुं [र] रेवाक लमण (अ ४ ४—
पत्र २७१) ।

रअज पुं [रुचिज] १ सव विनाउ
रअज } कपुन "से कि रं बए ? बउए
मउरई कपुनवीरी बउएणुं" (पत्र) । २
नि खय से कपुन खय-संभली खय से
संभल खनिवाता । ३ कर्म-नाथ से कपुन:
"कपुनखमउरी लउरी" (विसे १४१४) कपुन
१ १३, १ ११, ४ २२ सम २१; वीय) ।
रअज न [रुचिज] बेटी का सगुइ, प्रनेक लेठ
(वि ११) ।
रअया की [रुचिज] बउय-विरोध रेका गुमा
वीहि—नाथ नाथ "रुचिजमउरवउय-
नियरी" (अभि) ।
रअर पुं [रुचिज] कउर-विरोध कइर का गाव
(पात्रा गुमा) ।
रअर नि [रुचिज] बउर-कउर-वीकी (हे १
१०; गुमा १५१) ।
रअव [र] रेकी रअज (अ ४ ४—पत्र
१७१ टी) ।

देव-विमान-विरोध (ही २६) । १ पुं व्यतर
श्रेणीय देव-वाति-विरोध (पञ्च ११४) ।
कोहली की [कुम्भाण्डी] कोहली का गाव
(हे १ १२४-६२ २ टी) ।
कोहण [कोपन] १ कोपी दुस्साहो
(सप्त १७ पञ्च १३ ७) । २ पुं इस नाम
का राण का एक गुप्त (पञ्च २६ १२) ।
कोहल देवो कुहल (हे १ १०१) ।
कोहलिम वि [कुहलिम] कुहली
कुहल प्रेमी । की आ (पा ७६०) ।
कोहलिआ की [कुम्भाण्डिक] कोहली का
गाव
‘जहूँ संविधि परबई निमयई
मरणाहि मोपूण’ ।

कह मणो कोहलिय, मन्त्र
कन्तपि कुट्टिहि (गा ७६०) ।
कोहली देवो कोहली (हे २ ७३) हे २
२ टी) ।
कोहल देवो कोहल (पञ्च) ।
कोहली की [कु] रापिका तथा पचन-पात्र
विरोध (हे २ ४६) ।
कोहली देवो कोहली (पञ्च) ।
कोहि } वि[मोचिन] कोपी कोपी-स्वभाव का
कोहलि } कुम्भाहो (कम्म ४, १४ २) ।
कोरय } देवो कटय (हे १ १ १४) ।
कीलय }
किसिय देवो किमिय = कपित (छ
७२० टी) ।

‘कनूर देवो कूर = कूर । (वा २६) ।
कोर देवो किर (हे २, ६६) ।
कसोह देवो कसह (गवड) ।
कसोम देवो कसम (हे ३ २६) ।
कनय देवो कनम (मातृ १७) ।
कनरुण देवा स्वप्न (गवड) ।
‘किसीसा देवो मिसा (गुण २१) ।
कनु देवो कु (कम्म पति १७: वा १४) ।
कनुत देवो कुत (गवड) ।
कसेह देवो सेह (गुण २२२) ।
कसेय देवो सेय ‘मास्सेय न य’ (उप
७२० टी) ।
कसोही देवो सोही (गण्ड १ ३) ।

॥ इय सित्पाण्डवसहस्रनाम कमापास्यसहस्रनामो
दशमा वरणी समप्नो ॥

ख

ख पुं [ख] १ ध्वज-वर्ण विरोध इधवा
स्वात नयुठ है (प्रसा, प्रा) । २ न. पाकता
मयत ‘मयति से मेह’ (हे १ १०७ कुमा
६ १ १२१) । ३ इतिव (विदे १४४३) ।
ख पुं [ख] १ पत्नी का (पात्र ६ २
२) । २ मनुष्य की एक जाति को विद्या
के बन्धे पात्रा में समन करती है, विद्यावर
लोक (पात्र २६) । देवो नय = ख ।
ख की [गति] १ सक्त-गति । २ कर्म-
विरोध को माकस-गति का कारण है (कम्म
२, १ नव ११) । गामिणी की [गामिनी]
विद्या-विरोध विरुद्ध प्रयास से माकस में
समन किया जा सकता है (पञ्च ७ १४२) ।
गुप्प न [गुप्प] माकस-कुपुन धर्मावधि
बल (कुमा) ।
खम } धक [खम्] धपित-कुल करण ।
खर } कपय, कटय (गवड ७६) ।
ख वि [खिय] १ कपवाका कटवाका ।

२ लय रोपवाका लय-रोपी (गुण २१३
२७६) ।
खम वि [खपित] मापित उन्मुलित (वीप
मयि) ।
खम वि [खपित] १ व्याम, कटित । २
मणित विमुणित (हे १ १६३ धीन-स
११४) ।
खम वि [खपित] १ काया हृया कुल,
प्रत्य (पात्र ४ २२ लय ४ ४२) । २
पात्रात ‘छवू होंति छ कथाया । कसोही
कंहि मणुको नकाकमाई न मुरोह’ (स
११४) । ३ न मीनन मणय ‘कटय न
पीय न न य एवो लक्ष्मी हृय मया’
(पञ्च १२) छ ४ ४—पञ्च २७६) ।
खम वि [खपित] लय-प्राप्त क्षीक ‘किमि
कमकसरोहो’ (गुर १६ १११) ।
खम पुं [वि] हेवाक स्वभाव (छ ४ ४—
पञ्च २७६) ।

खम पुं [खपित] १ धय, विनाय
खम } उन्मुलन ‘सि कि वं कसू ? कसू
मणुहं कम्मपवीणं क-एण’ (अणु) । २
वि धय से उन्मुल लय-संकी धय से
संनन उन्मुलना । ३ कर्म-नाश से कलन
‘नम्मकयलहावो कसोही’ (विदे १४६३ कम्म
१ १२ ३ १६, ४ २२ कम्म २३: कीय) ।
खम न [खम] खोरो का सपुन, धनेक खेत
(वि ११) ।
खया की [खयि] काय-विरोध उन्मुल हया
की—‘वात तावा कंहिपमायलसहया
मिपोर’ (अभि) ।
खर पुं [खरि] कुल-विरोध, कीर का माव
(पात्र ७ कुमा) ।
खर वि [खरि] कल-कुल-संनकी (हे १
१७ गुण १२१) ।
खय [वि] देवो खय (छ ४ ४—पञ्च
१७६ टी) ।

संज्ञाई वि [संज्ञाई] ठुका-ठुका
मिना कुमा (पुन १८२)।

संज्ञिच पुं [संज्ञिच] छात्र, विद्यार्थी
(वीप)।

संज्ञिच वि [संज्ञिच] जिन विज्ञिच (हे
१ २३ महा)।

संज्ञिच पुं [हे] १ मागव माद, विज्ञ-माद।
२ वि मनिबान् निभाए कले को मराकय
(हे २ ७८)।

संज्ञिचा की [संज्ञिच] बण्ड ठुका
(मनि १२)।

संज्ञिचा की [न] नाप-विरोध बीच मन की
नाप (सं २४)।

संज्ञी की [हे] १ मगहार, छोटा पुन डार
(छाया १ १८—पन २११)। २ फिसे का
छिद्र (छाया १ २—पन ७६)।

संज्ञु (पप) रेको खग। पुनछटी में 'सांहु'
बहते हैं (प्राक् १२१)।

संज्ञुम न [न] बानु-मन, हाथ का धामुल
विरोध का बहुरं (मुन्य १८१)।

संज्ञुय रेको संज्ञा (पन ४४१)।

संज्ञे पुं [हे] मिठा बाप (सिंह ४१२ मुन
२ ३ ४५)।

संज्ञे रेको ला।

संज्ञे वि [संज्ञे] ब्रह्म-वीच समान-युक्त (पन
१२ टीः कपू अर्थ)।

संज्ञेय वि [संज्ञेय] ब्रह्म-वीच समान-युक्त माद
करने मायक (विज १७० मनि)।

संज्ञि की [संज्ञि] जमा बीच का मयाव
(कम; महा प्रामु ४८)।

संज्ञि रेको ला।

संज्ञिया की [हे] माता बन्ती (सिंह
२०१)। ४१। ४११)।

संज्ञे पुं [संज्ञे] १ कविनेय, महादेव का
एक पुत्र (हे २, ४, प्राप्ता छाया १ १—पन
१६)। २ राम का स्वयं नाम का एक पुत्र
(पन १७ ११)। 'कुमार पुं [कुमार]
एक बिन मुनि (पन)। गार पुं [गार] १
रामचन्द्र वरुण स्वयंवर (हे २)। २
पर-विरोध (पन १ ४)। मर पुं [मर]
स्वयं का स्वयं (छाया १ १)। सिरी

की [सी] एक मोर-वेगाति की अर्था का
नाम (मिना १ १)।

संज्ञे पुं [संज्ञे] १-२ ऊपर रेको। ३
संज्ञे एक बिन मुनि (जम मग धीन मुना
४ ८)। ४ एक परजावक बिकने अभाव

महावीर के पास पीछे से बिन बीजा ली पी
(मुन्य ८४)।

संज्ञे न [संज्ञे] शास्त्र-विरोध (बनंत
६१३)।

संज्ञि पुं [संज्ञि] एक प्रयात विनापार्थ
बिकने मयुज में बीजापनों की मिनि-बन्ध क्रिया
(पन १)।

संज्ञे पुं [संज्ञे] मिथि सीध दोवार (प्राप्ता
२, १ ७ १)।

संज्ञे पुं [संज्ञे] १ पुन-अनन पुनको का
मिड (कम ४ १६)। २ छुड, निकर
(विसे ६)। ३ कथा की (कुमा)। ४

पेड़ का बड़ बहो से खाया निम्नरी है
(कुमा)। ५ अर विरोध (विज)। करणी की

[करणी] छावियों को पाहने का अवरण
मिड (वीप ६७७)। संज्ञे वि [संज्ञे]
स्वयं-मया (छाया १ १)। बीय पुं

[बीय] स्वयं ही बिकने बीच होता है
ऐसा करणी बहो का बाध (अ २, १)।

सांछि पुं [सांछि] अन्तर रेको की एक
पाति (पन)।

सांछि पुं [हे स्वयामि] स्वयं बन्ती की
भाव (हे २ ७ पाप)।

संज्ञे संज्ञे पुं [न] हथ, बुझा, बाहु (हे २,
७१)।

संज्ञे संज्ञी की [हे] स्वयं-पति, हाथ (पन)।
संज्ञे रेको संज्ञे (सिप)।

संज्ञे-पति की [हे स्वयं-पति] हथ बुझा
(हे २ ७१)।

संज्ञे पुं की [कमर] बीचा मया वरुण
(सण)। की रा (महा)।

संज्ञे-पति की [हे स्वयं-पति] स्वयं-पति,
हथ बुझा (पन)।

संज्ञे-पति रेको स्वयं-पति (महा)।
संज्ञे-पति रेको स्वयं-पति (प्राक् १)।

संज्ञे-पति पुं [हे स्वयं-पति] स्वयं-पति (पन
६८११)।

संज्ञे-पति रेको स्वयं-पति (पन ६६, २८ महा
विसे २४४२)।

संज्ञे-पति वि [हे स्वयं-पति] स्वयं-पति (पुना
१२६)।

संज्ञे-पति पुं [हे स्वयं-पति] स्वयं-पति (पुना
१२६)।

संज्ञे-पति वि [हे स्वयं-पति] स्वयं-पति (वीप)।
संज्ञे-पति रेको संज्ञे (स १६७)।

संज्ञे-पति की [हे स्वयं-पति] स्वयं-पति (वीप)।
संज्ञे-पति पुं [हे] बहो वरुण पापी की बाप
(हे २ ७२)।

संज्ञे-पति पुं [हे] बहो वरुण पापी की बाप
(हे २ ७२)।

संज्ञे-पति पुं [हे] बहो वरुण पापी की बाप
(हे २ ७२)।

संज्ञे-पति पुं [हे] बहो वरुण पापी की बाप
(हे २ ७२)।

संज्ञे-पति पुं [हे] बहो वरुण पापी की बाप
(हे २ ७२)।

संज्ञे-पति पुं [हे] बहो वरुण पापी की बाप
(हे २ ७२)।

संज्ञे-पति पुं [हे] बहो वरुण पापी की बाप
(हे २ ७२)।

संज्ञे-पति पुं [हे] बहो वरुण पापी की बाप
(हे २ ७२)।

संज्ञे-पति पुं [हे] बहो वरुण पापी की बाप
(हे २ ७२)।

संज्ञे-पति पुं [हे] बहो वरुण पापी की बाप
(हे २ ७२)।

संज्ञे-पति पुं [हे] बहो वरुण पापी की बाप
(हे २ ७२)।

संज्ञे-पति पुं [हे] बहो वरुण पापी की बाप
(हे २ ७२)।

संज्ञे-पति पुं [हे] बहो वरुण पापी की बाप
(हे २ ७२)।

संज्ञे-पति पुं [हे] बहो वरुण पापी की बाप
(हे २ ७२)।

संज्ञे-पति पुं [हे] बहो वरुण पापी की बाप
(हे २ ७२)।

लघुल (पाठा)। कश्चि- सप्तममाग (वि १४)।

सप्तम पुं [सप्तम] कात् विरोध बहुवचनोपा
सप्तम (उप १ १ २ २ पठन प्रामु ११४)। जाह वि [सोमिम] कश्चिमाग
पठनमाग (मुप १ १ १)। मंगुर वि
[मङ्गुर] धण-विनकर, लणिक (पठन ८
१ २, मा २२१ विदे ११४)। या औ
[ह] पति धण (उप ७१८ टी)।

सप्तमसप्तम } धक [सप्तमसप्तम] 'कण
सप्तमसप्तम } कण' काव्यम वरता। नण
कणवि (पठन ११ २१)। कण स्वम
कणमर (म १८४)।

सप्तम वि [सप्तम] कोरनेबला (आमा
१ १८)।

सप्तमन न [सप्तम] कोरना (पठन ८१ १
उप २२१)।

सप्तम सेवो सप्तम = लण (पाठा उपा)।
सप्तम वि [सप्तम] कोरनेबला (दे १ ८२)।
सप्तमवि वि [सप्तम] मुद्रमा हमा (मुद्रा
४४४ मभा)।

सप्तमि औ [सप्तमि] काव्य, पाकर (मुद्रा ११)।

सप्तमि } देवो सप्तमि = कणिक 'कहाइया
सप्तमि } कायमुद्रा कणिक' (मु १२२
पर्व २२८)।

सप्तमि न [सप्तमि] कोरने का पठन, लणो
(दे ४ ४)।

सप्तमि वि [सप्तमि] १ धण-विनकर,
हाण-मंगुर (विदे ११४)। २ वि कुलन
काव्य कायमं से पति 'मो मुद्रो वि
धने' धणमा इय कुपु 'मोहवि' (पठन
८ टी)। याह वि [सप्तमि] कर्ष पठन
को लण-विनकर माननेबला कोरनेव
मनुष्यी (पठन)।

सप्तमि वि [सप्तमि] मुद्रा हमा (मुद्रा
११४)।

सप्तमि देवो सप्तमि (पाठ)।

सप्तममा औ [सप्तम] न ना कुल मातृक
पीडा (दे २ १८)।

सप्तम न [सप्तम] नाव खोण हमा (दे २ ११)
हृ १४ १४)।

सप्तम वि [सप्तम] कोरनेवोय (दे २ ११)।

सप्तम सेवो सप्तम (दे २, ११४ पठ)।
सप्तम पुं [सप्तम] नीसक कोरने
मुद्रा (दे २, १८ मा १४ ४२२ पठ)।

सप्तम न [सप्तम] १ नाव कोरना हमा (दे २
११४ पाठ)। २ सप्तम ने लोका हमा (पठन
१४)। ३ सप्तम कोरने के लिए पीडा
में किया हमा धेरे (उप १ ११४)। छाया १
१८)। ४ काव्य, पाकर (उप ११४ टी)।

सप्तम पुं [सप्तम] सप्तम लयाकर कोरने
कणनेबला (आमा १ १८)। 'सप्तम न
[सप्तम] सप्तम लयागा (आमा १ १८)।
मेह पुं [सप्तम] कणिक क समान रसबला
धेरे (पठन ४ १)।

सप्तम पुं [सप्तम] सप्तम मनुष्य-वाति-विरोध
(मुद्रा ११४ उत १२)।

सप्तम वि [सप्तम] १ धर्म-संघर्षी सप्तम
का। २ न सप्तम सप्तमपण 'पहल
पहल करे कोरने हमा' (सप्तम ८ टी
भा)।

सप्तम पुं [सप्तम] १ सेव कोरनेबला। २
सप्तम लयाकर कोरने कणनेबला। ३ सप्तम-विरोध
पठन (मा १२ १)।

सप्तम पुं [सप्तम] एक मनुष्य-वाति (मुद्रा
११२)।

सप्तम पुं औ [सप्तम] नीस सेवो 'सप्तम
सेवो' (उप १ १२२)।

सप्तम पुं औ [सप्तम] मनुष्य औ एक वाति
वनी सप्तम (विदे हमा १ २ १८२,
प्रामु ८)। कुडमगम पुं [कुडमगम]
नवर-विरोध बहा सीमाहारी के का जय
हमा का (मय १ ११)। कुडपुर न
[कुडपुर] पूर्वी ही धर्म (पाठा २,
१४, ४)। 'विद्या औ [विद्या] मनु-
विद्या (मुप २ २)।

सप्तमि औ [सप्तमि] सप्तम वाति
सप्तमि औ [सप्तमि] नीस (विदे कण)।

सप्तम न [सप्तम] मनुष्य नाम (पंथा १० २१)।

सप्तम वि [सप्तम] १ कुड, सप्तम (दे २ १०)
मुद्रा ११)। २ उप २२१ उत पठन)।
३ सप्तम, सप्तम 'पदे मनुष्य-वाति उत
विद्या के मनुष्य-वाति (पाठ ११४ दे २
१० पठ २, ४४ ४)। ४ विद्या बहा

(सोप १ ४ उ १ ४)। ४ म. सोप,
वनी (पाठा २ १ १)। 'विद्या वि
[विद्या] मनुष्य-वाति-विरोध (सोप ८१)।
सप्तम [सप्तम] देवो सप्तम (पाठ)।

सप्तममाग सेवो सप्तम = सप्तम।

सप्तममा [सप्तम] देवो सप्तम (पाठ)।

सप्तमा औ [सप्तम] एक प्रकार का हमा
(हृ १)।

सप्तम पुं [सप्तम] १ मनुष्य-वाति-विरोध
'पदे मनुष्य-वाति-विरोध' पठन में कणपण
बने' (पंथा)। २ विद्या-वाति काव्य (मुद्रा
४२२)। ३ काव्य काव्य (हृ १ ८१)।
४ काव्य काव्य काव्य (पठन २ १११)।

सप्तम पुं [सप्तम] १ कण काव्य विद्या
सप्तम (दे २ ११ पाठ)।

सप्तम सप्तम [सप्तम] १ काव्य काव्य काव्य
काव्य। २ काव्य काव्य। काव्य (उत ८१
मभा)। कर्म सप्तम (सप्तम)। क
सप्तमि (मुद्रा ४ ४ उत ७२८ टी
मुद्रा ४ ११४)। प्रयो कणपण (सप्तम)।
सप्तम काव्य, सप्तमि (पठन)
काव्य)। क सप्तमि (सप्तम)।

सप्तम वि [सप्तम] १ उचित योग्य 'सप्तमो
माहारी न कमा मण्डा वि पठने' (पठ
१४ पाठ)। २ सप्तम सप्तम (दे १
१० उत ११, मुद्रा १)।

सप्तम पुं [सप्तम] सप्तम काव्य काव्य
(उप १ १२२ सोप १४)। सप्त ४४)।

सप्तम न [सप्तम] सप्तम काव्य काव्य, काव्य
पाठि का (विदे ११२)।

सप्तम न [सप्तम] सप्तम १ पठन (हृ
१ विदे १)। २ पुं काव्य काव्य काव्य
(उप १०—पठ ११४)।

सप्तम सेवो सप्तम (सोप ११४ उत ४८६)
मय ४)।

सप्तमा औ [सप्तमा] १ सप्तमि मुद्रा 'उप
पठनमा' (मुद्रा १४८)। २ सोप का
पठन वाति (दे २, १८)। हृ १४
[पठन] पठन काव्य (कर्म ११)।
सप्तम [सप्तम] मनुष्य, सप्तमि मुद्रा
(पठन)। हृ १४ [पठन] सप्तमि पठन।
२ काव्य मुद्रा (मुद्रा ११२)।

समाख्यया } की [समाख्य] समाख, माखी
समाख्यया } मीला (सम १० १ पद्य) ।

समाख्ययि नि [समिख] माख किया हुआ
(हे १ १२२ गुण ११४) ।

समिय नि [समिख] माख किया हुआ
(पुन १९) ।

सम्प बैको सख = सम्प । सम्पद (शब्द ६८) ।

सम्पकसम्प पुं [सि] संघाम लड़ाई । २
मन ना बुझ । १ परमात्मा ना निरुपस
(हे २ ७६) ।

सय बैको सख । समर (पद्य) ।

सय सख [सि] सय पाला, मट होना । समर
(पद्य) ।

सय बैको सख (पद्य) । १ पापभा ठक ठंभा
पहुँचा हुआ (हे २, ४२) । राय पुं [राय]
पक्षियों वा राजा पक्ष-पक्षी (पद्य) । बड़
पुं [पवि] पक्ष-पक्षी (हे १२ २) ।

सय न [सुत] २ बड़ बाब 'बाबकोई न
बाब' (अ ७२८ टी) । २ नि कथित
कथाया हुआ 'बुद्धयोग्य कीर्तनयो' (भा
१४ गुण १४६ मुर १२ २१) । तबार
स्त्री पुं [तबार] तिब्बताबासी छात्र या
राष्ट्री (बन १) ।

सय नि [प्याव] बोध हुआ (बनय ११
४२) ।

सय पुं [सय] १ सय, समर, विपदा (बन
११ ११) । २ रोप-विशेष राज-कला
(मृग्य १२) । बरि नि [बरिण] कप-
बारक (गुण ११२) । कास गछ पुं
[कास] प्रलय-काल (यौव ६ ४१७७) ।
गिग पुं [गिग] प्रलय-काल की घाग (हे
१२ २१) । नमि पुं [नमिण] केवल
जाती परिवर्तल ज्ञानवाला सर्वज्ञ (सिंहे
११८) । समय पुं [समय] प्रलय-काल
(मृग्य २) ।

सयईर नि [सयईर] माघ-मास (पद्य ७
१ ६१ १४ गुण २२) ।

सयनकर नि [सयानकर] माघ-मास
(पद्य १०) ।

सयपुं [सयप] १ माघमा में जन्मे-
वाला बच्ची (जी २) । २ विवाह, विवा
न के माघमा में जन्मेवाला मनुष्य (पुर

१ ८८ गुण २४) । राय पुं [राय]
विद्यावर्ती का राजा (गुण ११४) ।

सयर बैको सहर = बरि (पद्य १२ गुण
२६१) ।

सयरक नि [साहिरक] बरि-समन्ती । की
'स' (बुझ २ १) ।

सखाळ पुं [सि] संघ-पाला बाँध का मन
(बनि) ।

सर सख [सर] १ घटना, टपकना । २
मट होना । सरर (सिंहे ४१२) ।

सर नि [सर] १ लिपुत्र, कना पक्ष बटोर
(मुर २ १) । हे २ ७८ पद्य) । २ पुंकी
मरि, पक्षा (पद्य १ १) पद्य २६ ४४) ।
३ पुं कप-मिरीय (सिं) । ४ म. तिल का
तेल (योग ४ १) । कंट न [कण्ट] क्लृप्त
मैरु की शाखा (अ १ ४) । कंड न
[कण्ड] रत्नप्रसा दुमिरी का प्रथम कण्ट-
बंध-विशेष (योग १) । कम्प न [कम्प]
निर्घम घोरक भीमों की हानि होती हो ऐसा
कम लिपुत्र बंधा (गुण २ २) । कस्मिज
नि [कस्मिज] १ लिपुत्र कर्म करनेवाला ।
२ पुं केशवाल बाण्यप्राप्तिक (योग २१८) ।
'किरण पुं [किरण] सूर्य धुल (सिंहा
सख) । दुसज पुं [दुसज] इस नाम का
एक विद्यावर राजा की राख का बहलौरी
का (पद्य १ १७) । नहर पुं [नहर]
खाना बन्नु, हिक्र प्रसी गुण १११
७७४) । नससप पुं [निस्सप]
इस नाम का प्यरा ना एक पुष्ट
(पद्य २६, १) । मुह पुं [मुस]
१ प्याय के-विशेष । २ प्याय के-विशेष
का निवासी (पद्य १ ४) । मुही की
[मुही] १ बाण-मिरीय (पद्य २ २१
गुण २ योग) । २ मनुष्य वाली (बन
१) । वर नि [वर] १ विशेष बटोर
(गुण १ १) । २ पुं इस नाम का एक
बैत कप (पद्य) । समय न [संघ]
तिल ना तेल (योग ४ १) । सांभासी
[सांभासी] तिब्बि-विशेष (मम १२) ।
स्तर पुं [स्तर] पद्माप्राप्तिक बैमों की
एक बाँध (बन २६) ।

सर नि [सर] विनय, प्रसादी (सिंहे
४१७) ।

सरंट क [सरण्ट] १ बुकाण, विने-
रत्ना करना । २ घेप करना । सरंट (बुझ
४१) ।

सरंट नि [सरण्ट] १ बुकाण, विने-
स्कारक । २ जगति करनेवाला । ३ मनुष्य
पराय (अ ४ १ बुझ ४१) ।

सरण्ट न [सरण्ट] १ निर्दोष वक्ता-
वाण (बन १) । २ प्रेरणा (योग ४ ७) ।

सरण्टा की [सरण्टा] बर बैको (योग
७२) ।

सरण्टि नि [सरण्टि] निर्दोष (गुण
११८) ।

सरण्टा की [सि] बससि-विशेष (योग
४४) ।

सराळ पुं [सि] हानी की पीठ पर विद्यवा
वाला प्रत्यक्ष (बन ४४) ।

सराळ स [सि] लेला पोछा । बंड
सराळि (गुण ४११) ।

सराळ पुं [सराळ] एक बज्ज मनुष्य-वाति
'धू' बैरु बर बैरु किंति हृदि बसल-
'णिबस' (गुण ११२) ।

सराळि नि [सि] १ कप क्वा । २ कप,
मट (हे २ ७६) ।

सराळि नि [सि] बिलको सेव निवा कप
हो बड़, पछा हुआ (योग १७१ टी) ।

सराय न [सि] क्लृप्त मैरु की कण्टक-
वली (अ ४ १) ।

सराकस पुं [सराकस] एक गरक लाल
(सिंहे २०) ।

सराय पुं [सराय] सपना, महीन के बल
में से बीला (बाँध कीक) निकलनेवाला एक
पक्ष (सिंहे २६) ।

सराय पुं [सि] १ कर्मकर, नौकर (योग
४१) । २ पुं (मम ११ १) ।

सराय स [सराय] 'सर-सर' करार
करना । बड़ सराईत (बन) ।

सरायि पुं [सि] पीन पीठा पुन का पुन
(हे २ ७२) ।

सराय की [सराय] क्लृप्त-विशेष बैरु की वर
पुन के क्लृप्तवाला क्लृप्त-विशेष (योग १) ।

खरिज वि [दे] पुष्प, प्रथित (हे २ १७)।
खरिज की [दे] गौकण्ठी बाड़ी (घोष ४१८)।

खरिजुय पुं [दे] खरिजुय कन्ध-विरोध (आ २)।

खरुही की [खरोष्ट्री] एक प्राचीन लिपि को कहते थे बाद में सिन्धी वाली थी। गांधार लिपि। देखो, खरोष्ट्रिया (पण्ड १)।

खरुज वि [दे] १ कठिन कठोर। २ स्पष्ट, विषय वीर ऊँचा (हे २ ७८)।

खरोष्ट्रिया की [खरोष्ट्रिया] लिपि-विरोध (घम ११)।

खरुज म [खरुज] १ पड़ना पिना। २ मूला। ३ रचना। बहार (आम)। बह, खरुज, खरुजमान (सि २, २७ वा २४१ गुणा १४१)।

खरुज म [खरुज] १ पनघण्ट करना हुना। बसादि (उत्त १२, ७)।

खरुज म [खरुज] पात्र पुति में प्रयुक्त होता मध्यम (प्रभ ८२)।

खरुज वि [खरुज] १ बुद्धि, धर्म मनुष्य (गुर १ १६)। २ म, बाल छाक करने का स्थान (विपा १ ८५ वा १४)। ३ वि [पू] बलिदान या बलियान को छाक करनेवाला (कुमाय पद प्रमाण)।

खरुज म [खरुज] १ विप, बाली (हे २, ७१)। खरुज-कम एक [खरुज-कम] 'बल-कम' धारण करना। बलवत्तरे (वि १३८)।

खरुज-विज वि [दे] मत्त छमत्त (हे २ १७)।

खरुज म [खरुज] १ नीचे देखो (आका से ३२, वा ४६६ बन्ना २४)।

खरुज की [खरुज] १ गिर बाग, निराल (हे २ १४)। २ विपन्न, भ्रम (घोष ७८८)। ३ बलवत्तरे लकाव, 'हावा बुझी ए बलवत्तरे कह बलवत्तरे बलवत्तरे' (ज ११६ टी)।

खरुज-विज वि [दे] पुष्प कोम-आम (महि)।

खरुज } पुं [खरुज] गरी के प्रभु की लक्ष्मी धारण 'बलवत्तरे बलिहीन विवि-पिपुर्णवत्तरे बलवत्तरे' (गुर १ ११ २ ७१)।

खरुज म [दे] बलवत्तरे पुष्पान करना 'ठाए वि बलवत्तरे बलवत्तरे' (पठम ३७ ६६)।

खरुज वि [खरुज] १ रका हुमा। २ गिर हुमा, पठित (हे २ ७७ पाय)। ३ म, बलवत्तरे पुष्प। ४ मत्त (सि १ २)।

खरुज वि [खरुज] बल से म्याम बलि बलित (हे ४ १)।

खरुज पुन [खरुज] १ बगाम (पाय)। २ बलवत्तरे वा एक घोष (पठ १)।

खरुज की [खरुज] विप बलवत्तरे वा लैल पठित बलवत्तरे बली बली (गुणा ४१४)।

खरुजियार एक [खरुजियार] १ विरुद्धार करना बलवत्तरे। २ मत्त। ३ बलवत्तरे करना। बलवत्तरे बलवत्तरे (गुणा २ १७ वा ४१८)।

खरुजियार पुं [खरुजियार] विरुद्धार, निरुद्धार (पठम ३६ ११६)।

खरुजियार म [खरुजियार] विरुद्धार (पठम ३६, ८८)।

खरुजियार की [खरुजियार] बलवत्तरे मत्त (सि २८)।

खरुजियार वि [खरुजियार] १ विरुद्धार (पठम ३६, २)। २ बलित ठगा हुमा (सि २८)।

खरुज वि [खरुजियार] स्तब्ध करनेवाला (बना ३८५ छण)।

खरुज की [दे] खरुज विप-विपन्न, विप बलवत्तरे लैल पठित बलवत्तरे, बली (हे २ १६)। गुणा ४१६, ४१६)।

खरुजियार देखो खरुजियारिज (बल ४४)।

खरुजियार देखो खरुजियार = बली + कृ। बली करे (सि २७)। बली, बलीकरेकर, बली क्रिय (सि २८५ छण)।

खरुजियार म [खरुजियार] देखो खरुजियार (गुणा ७७ वा ३७४)। २ गरी का क्रियार 'बलीयारमत्तरे बलवत्तरे' (विपा १ १—पठ २१६)।

खरुज म [खरुज] विरोध-मुक्त मध्यम (बलि ४ १६)।

खरुज म [खरुज] इन मत्तों का मुक्त मध्यम—१ बलवत्तरे विरुद्धार (की ७)। २ पुनः, विर (आम)। ३ बलवत्तरे वीर बलवत्तरे की

खरुज के लिए भी बलवत्तरे प्रयोग होता है (आका निपु १)। लिपि न [खरुज] बली पर बली वीर मिले बलवत्तरे (बल ८)।

खरुज पुं [दे] १ गरी वल बलिहीन वल (सि ४ १—पठ २२८)। २ बलिहीन विप, मुक्ति (उत्त २७)।

खरुजियार पुं [दे] १ गरी वल बलिहीन। २ म, उत्तरायण मत्त का इस नाम का एक मध्यम (उत्त ७)।

खरुजियार देखो खरुजियार (पठ १२)।

खरुजियार म [खरुजियार] मुक्त पवि का मध्यम (विपा १ ९)।

खरुज म [दे] १ बलवत्तरे का विर। २ विरुद्धार (हे २ ७७)। ३ वि बली विरुद्धार, 'बलवत्तरे बलवत्तरे विरुद्धार विरुद्धारियार' (ज ७२८ टी हे २ १८)।

खरुज वि [दे] विरुद्धार मध्यम विरुद्धार मध्यम मत्त मत्त (बल ३४ वा १३८)।

खरुजियार वि [दे] १ लक्ष्मी, लक्ष्मी-मुक्त। २ प्रभु, लक्ष्मी (हे २ ७६ पठ)।

खरुज } पुं [दे] १ पठ पठा। २ पठ खरुज } पुं पठ पठा का बना हुमा पुष्पा वा रोना (गुणा १ २, २, १६ टी लिख २१ बह १)।

खरुज } पुं [दे] १ पठ पठा। २ पठ खरुज } पुं पठ पठा का बना हुमा पुष्पा वा रोना (गुणा १ २, २, १६ टी लिख २१ बह १)।

खरुजियार देखो खरुजियारिज (बल ४४)।

खरुजियार देखो खरुजियार = बली + कृ। बली करे (सि २७)। बली, बलीकरेकर, बली क्रिय (सि २८५ छण)।

खरुजियार म [खरुजियार] देखो खरुजियार (गुणा ७७ वा ३७४)। २ गरी का क्रियार 'बलीयारमत्तरे बलवत्तरे' (विपा १ १—पठ २१६)।

खरुज म [खरुज] विरोध-मुक्त मध्यम (बलि ४ १६)।

खरुज म [खरुज] इन मत्तों का मुक्त मध्यम—१ बलवत्तरे विरुद्धार (की ७)। २ पुनः, विर (आम)। ३ बलवत्तरे वीर बलवत्तरे की

खरुज के लिए भी बलवत्तरे प्रयोग होता है (आका निपु १)। लिपि न [खरुज] बली पर बली वीर मिले बलवत्तरे (बल ८)।

खरुज पुं [दे] १ गरी वल बलिहीन वल (सि ४ १—पठ २२८)। २ बलिहीन विप, मुक्ति (उत्त २७)।

खरुजियार पुं [दे] १ गरी वल बलिहीन। २ म, उत्तरायण मत्त का इस नाम का एक मध्यम (उत्त ७)।

खरुजियार देखो खरुजियार (पठ १२)।

खरुजियार म [खरुजियार] मुक्त पवि का मध्यम (विपा १ ९)।

खरुज म [दे] १ बलवत्तरे का विर। २ विरुद्धार (हे २ ७७)। ३ वि बली विरुद्धार, 'बलवत्तरे बलवत्तरे विरुद्धार विरुद्धारियार' (ज ७२८ टी हे २ १८)।

खरुज वि [दे] विरुद्धार मध्यम विरुद्धार मध्यम मत्त मत्त (बल ३४ वा १३८)।

खरुजियार वि [दे] १ लक्ष्मी, लक्ष्मी-मुक्त। २ प्रभु, लक्ष्मी (हे २ ७६ पठ)।

म पाण्डु म वड्ठ गहिओ मंओ मप्रमणारं
(भा ११२; पञ्चम १४ ११६)।

खाण न [क्यापन] कयल सल्लि (पञ्च)।

खाणि ओ [खानि] काम भाकर (दे २,
१९ कुमा गुवा १४८)।

खाणिअ वि [खानिय] कुलवाया हुआ (हि
१, १७)।

खाणी देओ खाणि (पाप)।

खाणु } पुं [खाणु] स्थाणु ठूठा हुइ घनल
खाणुय } (पण्ड २ १ दे ७ कय)।

खावि केओ खाइ—खावि (सिंह १)।

खाम सक [खामय] खामा माथी म'पना।

खामेइ (का)। कर्म खामिअइ, खामीअइ
(दे १ १११)। खंख खामया (का)।

खाम वि [खाम] १ इय दुबल 'खामय'
कुचोअं (ज १८९ टी पाप)। २ धीउ
पराउ (दे १, ४६)।

खामय न [खामय] खामा (भाकर ११६)।

खामया ओ [खामया] खामाया माथी
म'पना खाम-मापना (गुवा ११४ विनि
७६)।

खामिय वि [खामित] १ जिसेके पाइ समा
माथी गई हो बड़, खामया हुआ (विने २३८
दे १ ११२)। २ चहन किया हुआ। ३
विनिमित्त विनाश विना हुआ सिधिय
पहोराया गुवा न खामिया मे कर्मठल (पञ्चम
४१ १११; दे १ ११३)।

खाय पुं [खाय] पांथी नरक-मुनि का एक
नरक-स्थान (देवज ११)।

खायर देओ खाइर (बर्न ९)।

खाय पुं [खार] १ एक नरक-स्थान (देवज
१) २ कुचपरिवर्ण की एक जाति (गुप २
१ २४)। ३ बेर, दुसरी (गुप १ १)।
'खाइ पुं [खाइ] पाप वरल के अट्टी
(पाप २ १ २)। ४ न पुं [वन्ज]
पापुअ का एक बेर बादीकण (आ ८—
पञ्च ४२)।

खाय पुं [खार] १ खण्ड मरुत संचमन
(आ ८)। २ मय खार (उत्तर १ ११)।
३ हाट, धार, नाल-परेज (गुप १ ७)।
४ लण्ड मोन (हृ ४)। ५ बलनर-विरोध
(गण १)। ६ धरिवा सजी (गुप १ ४ ३)।

७ वि कट्ट या बरपण स्वावला कट्ट बीज
(पण्ड १७—पञ्च २१)। ८ बायी बीज
ममकीय स्वावला कट्ट (भा ७ ९ गुप १
७)। ९ वडली [त्रयुपी] कट्ट बपुवी बसल
सिन्हीर (पण्ड १७)। १० विह्व न [विह्व]
कारे से संकट तैल (पण्ड २ ४)। ११ मेह दुं
[मिप] धार रखाने पानी की बर्ण (मप ७
९)। १२ वलिय वि [पात्रिक] धार-पात्र में
विभाया हुआ। १३ धार-पात्र का भाषार गुल
(बीम)। १४ वलिय वि [वृत्तिक] धार में
छंका हुआ धार से सींचा हुआ (बीम हवा
९)। १५ वाकी ओ [वाको] धार से मरी हुई
बाली कूमा (पण्ड १ १)।

खारकिरी ओ [दे] गोधा गोड, वन्ज-विरोध

(दे २ १)।

खारवृण वि [खारवृण] खारवृण का

खारवृण-सम्बन्धी (पञ्चम ४२ १३)।

खारय न [वे] कुपुष कनी (दे २ ७९)।

खारायण पु [खारायण] १ अन्वि-विरोध।

२ मल्लम्पनीय से खजामुल एक चीज (आ
७)।

खारि ओ [खारी] एक प्रकार की नाप १४

देर की टील (भा ८२)।

खारिअरी ओ [खारिअरी] बाटी-गहिमल

बलु जिसमें घन सके टीला पात्र भर हुइ के-

बलो (भा ८२)।

खारिअ न [वे] वल-विरोध हुआ (सिदि

११६)।

खारिय वि [खारित] १ खारित मरुतया

हुया (मप ९)। २ पानी में बिगा हुआ

(मपि)।

खारी देओ खारि (भा ८२ ओ १)।

खारयायि पुं [खारयायि] १ स्नेह्य देह-

विरोध। २ वलमें खदेबली स्नेह्य जाति

(मप १२ २)।

खारोधा ओ [खारोधा] नदी-विरोध (पञ्च)।

खाइ सक [खाइय] बोना पचाया, पानी

से लाउ बना। ३ खालिग (ज १२९)।

खाइ ओम [दे] गला मोटी, गंदी मित्रले

नाम से (आ २, १) ओ खाइ (गुवा)

व्याज न [खाज] ब्रह्मण पचाया (गुवा

१२८)।

खाजिअ वि [खाजित] बील बोया हुआ

(बी ११)।

खायन न [क्यापन] प्रतिपादन (पञ्च १

७)।

खायणा ओ [क्यापना] प्रसिद्धि प्रथम

'मन्त्राओ खारणाविहारी का' (विने)।

खायियं वि [खायमान] जिसको खिलाया

जाता हो वह 'कायलिमसाई खाविप' (विपा १ २—पञ्च २४)।

खायिय वि [खादित] जिससे खिलाया

गया हो वह 'कायलिमसाई खाविप' (बीप)।

खायें वि [क्यापयन्] प्रख्याति करता

हुया प्रसिद्धि करा हुआ (ज ८११ टी)।

खाय थक [क्यस] खासना खासी खाता।

खाई (हंठु १९)।

खाय पु [क्यस] रोप-विरोध खासी की

बीमारी खासी (विपा १ १; गुवा ४ ४

छण)।

खासि वि [क्यासिम्] खासी का रोगवाला

(गुवा १७९)।

खासिअ न [क्यासित] खासी खासना (दे १

८८)।

खासिय पु [खासिक] १ स्नेह्य देह विरोध।

२ वलमें खदेबली स्नेह्य जाति (पण्ड १

१—पञ्च १४४ इक गुप १ ३, १)।

सि सक [सि] धीउ होना। कर्म, 'खिअइ

खरंघरी' (स १८४)। बीमिं धीउले

(कम्म ९ ९९ टी)।

सिइ ओ [सिलि] कुपिरी बट (पञ्च २

११६, म ४१६)। गोयर पुं [गोयर]

मनुष्य मानुष बाबो (पञ्च २१ ४३)।

पड्डु न [प्रतिष्ठ] नगर-विरोध (म ९)।

पडाड्डुय न [प्रतिष्ठित] १ इस नाम का

एक नगर (ज १२ टी स ७)। २ पाउगूइ

नाम का नगर, जो प्राक्वत विहार में 'पञ्च

पि' नाम से प्रसिद्ध है (टी १)। 'सार

पुं [सार] इन नाम का एक दुर्ग (पञ्च

म ३)।

पिन थक [मिह्य] निधि धाराज बना।

विने; वरु विनिप' (गुप २ ११)।

विग'ग्याया ओ [विह्विग्या] धुइ पहिवा

(पञ्च)।

४) । २ न बाह्यो गुण-स्वातक (सम २६) ।
 'राग' कि [राग] १ नीचराय राग-नृति ।
 २ पु विनयन लीकर देव (पक्ष १) ।
 श्रीयमाग कि [श्रीयमाग] विरचा धय
 होता जाता हो वह (या ६८८ टी) ।
 श्रीर न [श्रीर] केला हो दिन न उपवास
 (संशोध २८) । 'किरि' पु [किरि] हो
 र-किरो (दुप ७६) । 'किरि' की
 [किरि] बेनी-किरो (दुप ७६) । पर
 पु [बर] १ समुद्र-किरोय । २ कीर-किरोय
 (गुप १६) ।
 श्रीर न [श्रीर] १ दुप दुप (हे २ १०
 मनु १३) । २ १८८) । २ रागी बल (हे २
 १०) । ३ पु धीरवर समुद्र का वशिष्ठापक
 देव (जीर ३) । ४ समुद्र किरोय कीर समुद्र
 (पक्ष ६६ १८) । कर्षण पु [कर्षण]
 इस नाम का एक बालक-नारायण (पक्ष
 २१ २६) । कामाक्षी की [कामाक्षी]
 नमस्ति विषय कीरिचारी (पक्ष १) ।
 जल पु [जल] कीर-समुद्र समुद्र-किरोय
 (विष) । जसनिहि पु [जसनिहि] बही
 गुनीक धर्म (गुप २१२) । दुम दुम पु
 [दुम] दुमना के दिवसे दुम निकलता
 है ऐसे दुम की वारि (घोष १४६ निपु
 १) । धाई की [धाई] दुम निजलेरली
 बाई (छाया १ १) । पूर पु [पूर]
 जलना हुआ दुप (गुप १०) । ८८ न
 पु [प्रम] धीरवर होय का एक वशिष्ठाया
 वैर (जीर ३) । 'मिह' पु [मिह] दुप
 मयाज रवाटराली पानी की बर्षा (विष) ।
 वर की [वर्दी] समुद्र दुप देवताही (हर
 ३) । पर पु [बर] कीर-किरोय (जीर
 ३) । वारि न [वारि] धीर समुद्र का
 जल (पक्ष ६६ १८) । हर पु [हर]
 धार] धीर-मागर (हरमा २४) । मय
 पु [मय] मयि-किरोय विषय प्रकाश
 न बहन दुप की लण मयूर मायूर हो ।
 २ ऐसी मयिवाणी जीव (पक्ष २ १
 पीर) ।
 मीरदय वि [मीरदिन] संजान-मीर, जिनमें
 दुप बालक हुआ हो बर, लण लणी
 पतिवा बहिषा मयिवा मयूरा बाग-मयूरा

कीर (१ २) दया बलकना (छाया १ ७) ।
 मीरि वि [मीरि] १ दुपवाता । २ पु
 विषमें दुप निजवाता है ऐत दुप की वारि
 (ज १ ११ टी) ।
 मीरिजमाय वि [मीरिमाय] विरका
 होल किया बाया हो वह (छाया २,
 १ ४) ।
 मीरिणी की [मीरिणी] १ दुपवाणी (छाया
 २ १ ४) । २ दुप-किरोय (पक्ष १—
 पक्ष ३१) ।
 मीरी की [मीरी] पीर, पवाकन-किरोय
 (गुप ११६ पाय) ।
 मीराय पु [मीराय] समुद्र-किरोय धीर
 सागर (हे २, १८२ गा ११० पक्ष ल
 २१ टी घ १८६) ।
 मीरोया की [मीरोया] इस नाम की एक
 नदी (हक ठा २ ३) ।
 मीरोइ देवो रमाय (ठा ७) ।
 मीरोइ पु [मीरोइ] १ स-रपक] धीर सागर
 कीरवाय] (छाया १ ८ पीर) ।
 मीराया देवो मीरोया (ज १ ४—पक्ष
 १११) ।
 मीर } पु [मीर, क] बीमा मूट,
 मीरमा } मूटि (म १ ६ गुप १ ११ हे
 मीरक } १ १८१ गुप) । ममा पु
 [ममा] मय-किरोय बड़ा मूटि ब्याता
 रत मे मूटि के निगल बनावे हो मूटि
 १ ११) ।
 मयमय न [मीरन] बेल करणा बीड़ा
 करणा । धाई की [धाई] रैन-दुप
 करणानी बाई (छाया १ १—पक्ष ३७) ।
 मीरिया देवो मीरिया (जीर ३) ।
 मीरिया की [मीरिया] मीरि मूटि (पक्ष ३)
 मीर पु [मीर] मय-वात मय-वात मय
 (हे २ ११) ।
 मु म [ममु] इस मदी का मुचक
 मयय—१ निरबन मयवाण । २
 विरने निवार । ३ संजय मदी । ४ संज
 बला । ५ निजय मयय (हे २ १६८
 पक्ष गा १ ४२) । ६ १ मय ६ गुप) ।
 मु देवो मु । (लण २ ४ गुप १६ ;
 छाया १ ११) ।

मुह की [मुहि] १ लीक । २ लीक न
 निगल (छाया १ १६ मय १ १) ।
 मुहय वि [मु] १ निश्चित । २ निश्चाय
 शब्द 'मुया विषा' (दुप १४) ।
 मुमुय पु [मु] माक ना धिर (हे २ ७६
 पाय) ।
 मुमुजी की [मु] रमा, मुमुजा (हे २ ७६) ।
 मुगाह पु [मु] मय की एक उत्तम वारि
 (समस्त २१६) ।
 मूट पु [मु] मूट, मूटी । मोहय वि
 [माटक] १ मूट को मोहनेवाला बखे
 छुकर भाग जलनावा । २ पु इस नाम बर
 एक हाथी (ना—मुच्छ ८४) ।
 मुहय वि [मु] स्वमित स्वपम-वात (हे
 २ ७१) ।
 मुह (ली) वक [मुह] १ जला । २ पीतना
 मूटना । मुहिर (पक्ष २१) ।
 मुह मक [मुह] मुह मयना । मुह
 (पक्ष १६) ।
 मुया की [मु] मूटि को रोक्ने के लिए बनाया
 जाता एक लुमय उपकरण (हे २ ७३) ।
 मयय वि [मोमण] धीम जयजलता
 (पक्ष १ १—पक्ष २३) ।
 मुन मक [परि + मस] १ रोकना । २
 निगल करणा । मुन (पक्ष ७२) ।
 मुन } वि [मुन] १ दुपवा । २ नामन
 मुनय } (हे १ १८१ गा २१४) । ३ बल
 देका (घोष) । ४ एट पाई मे हीन (पक्ष
 ११) । ५ न. लंका-किरोय लणका
 नामन पाकर (ज ६ ४६, धीर) ।
 की मुन (छाया १ १) ।
 मुनिय वि [मुनिय] दुपवा (छाया) ।
 मुट वक [मुह] १ लीकना कलिय
 करणा दुपका करणा । २ मक-गुमा लीक
 होना । ३ टुमय मुनिय होना । मुट (नाट—
 माहिय २२६ हे ४ ११६) ; मुटि
 (ज) ।
 मुट वि [मु] मुटि, मलिय विष (हे २
 ७४ मयि) ।
 मुह ली मुह = मुह । मुह (हे ४ ११६) ।
 मुह (म = ४) । बह 'मयिवातयवा

सुब पु [सुव] बिबकी छाका धीर मुन छेदे
होते है एसा कुन (छाया १ १-पत्र १११)।
सुबय पु [वे] दुस-विरोध, कण्ठक-मुल
पँटीला बास (हे २ ७४)।

सुबय रेको सुम। सुमइ (पर)।
सुबय न [वे] पते का पुइना रोना (बन
२)।

सुइ रेको सुम। इ सुहियम्ब (मुवा १११)।
सुइ की [सु] मुब इइना (महा
प्राण २७१)। परिसइ, परीसइ पुं
[परियइ, परीयइ] मुब की बेवना की
शक्ति से चहुन करना (जत २ पंचा १)।
सुइबि न [सुमिब] १ छोन-प्रात (घ १
४६, मुवा २४१)। २ बीम संभाल (घोष
७)।

सुवा न [सुव] मुन्धान, हासि (गुर ४
१११) महा। २ वरपच हुनाइ (महा)।
३ सुनवा बनी (मुवा ७-४१)।

सुब सक [सुव] बिज करना, सेह
उपनामा। सेइ (विसे १७२ महा)।

सुव पु [सुव] १ सेह, खोग रोक (का
७२८ टी)। २ तकनीक, परिचय (घ १११)।
३ संयम परिधि (कत १४)। ४ बकमट
मासि (घावा)। पज झ वि [स]
निमुल दुठल नमुद, नानकार (जत ६ ८
धीर १४७)।

सुव रेको सुव (मुवा १ १ पाका)।

सुब पु [सुव] व्याय, मोहन (वि १२, ४७)

सुवम न [सुव] १ सेह, उडेन। २ वि
सेह उजबेनामा (हुमा)।

सुव रेको सुव (हुमा गुर १ ६)। बिब
पु [विपि] विचारपते का चवा (पत्रम २६,
१७)। बिबइ पु [विपि] विचारपते
का चवा (पत्रम २६ ४४)।

सुवरे पु [सुवरे] सेवते का चवा
(पत्रम ६, २२)।

सुवरी रेको सुवरी (हुमा)।

सुवरे वि [सु] १ निछइ मन्, घालनी।
२ बगिचिनु रैमिड (हे २, ७७)।

सुवरे वि [सु] १ विन बिना हुमा (त
११४)।

सुव रेको सुवरे (छा १, १)।

सुवरे की [सुवरे] सेह-मुबक बाणी
सेह (छाया १ १८)।

सुव सक [सु] सेदी करना नाच करना।

सुव (मुवा २७४)। 'यइ प्रपया य बुदिनि
हुसाई सेविनि पयलपने' (मुवा २१७)।

सुव सक [सु] हुनमा। सेइ (विद
११७ मुवा ७१)।

सुव न [सु] १ कुनो का प्राकारता नगर
(धीन पण्ड १ २)। २ नदी धीर पर्वतो
से केहि नगर (सुम २ २)। ३ पुं मुनमा
हिकार (महि)।

सुव न [सुव] फलक इत (पण्ड १
१)।

सुव न [सुव] सेदी करना (मुवा २१७)।

सुव न [सुव] बरेइना पीछे इदमा
(उप २२६)।

सुव न [सुव] सिबोना (मट—
पना ६२)।

सुव पु [सुव] १ विप नहर (हे २,
१)। २ वर-विरोध (हुमा)।

सुव वि [सुव] नायाक, नाच करतेनामा
(हे २ १ हुमा)।

सुव न [सुव] प्रीया पाव (पाव गुर २
१६२)।

सुव न [सुव] सेह करनेपाया
उमासीर (कप २ १८८)।

सुव न [सुव] हल से विचारि (हे १
११६)।

सुव पु [सुव] १ कलनामा, नगर।
२ कलारपाला (हे १ १)।

सुव सक [सु] बीका करना सेह करप।
सेइ (हे ४ १६८)। सेइ (हुमा)।

सुव न [सु] १ बीका सेह उमासा
सेइ पुं मजाक (हे २ १७४ महा मुवा
२७)। स २ ६)। २ बहाना, झम 'मन्'
सेइ विदेइ (मुवा २२२)।

सुव की [सु] बीका सेह उमासा
(धीन पत्रम ८ १७० पण्ड २)।

सुव की [सु] बारी लय 'मन्'। पण्डिना
सेइ (स ४४१)।

सुव पु [सु] १ पायाक (विसे २ ८८)।

२ इति मुनि सेह (इह १)। ३ बनीम,
मुनि। ४ सेह, नौब नगर बरीइ स्वाप
(कपा: वंश: विसे)। ५ मार्ग की (छा १)।

सुव पु [सुव] १ सेह का रिवाज (इह
१)। २ सेह-संभली कमुल। ३ घम-विरोध
बिसमें सेह-विपक घावार का प्रतिपाल
हो (पण्ड)। पण्डिनामा न [पण्डिनामा]
कल का नाच-विरोध (मण्ड)। रिप पु
[रि] धार्य मुनि में ज्ञान मनुय (पण्ड
१)। सेहो विदेह = सेह।

सुव पु [सुव] राहु (मुन २)।

सुव वि [सुव] सेहनामा सेह का स्वामी
(विसे १४२)।

सुव न [सुव] १ कुन कस्याल हित
(पत्रम १३, १७ या ४६६ मात २१
रमण ६)। २ प्रात बलु का परिपालन
(छाया १ २)। ३ वि कुलनामा-मुक हित
कर, उपर-विरोध (छाया १ १ बस ७)।

४ पु मासिबुन के राजा विचरु का एक
प्रमथ (माइ १)। पुरी की [पुरी] १
नवते-विरोध (पत्रम २ ७)। २ विदेह
बर्ष की एक नवरी (छा २, १)।

सुव पु [सुव] १ कुनकर दुस-विरोध
(पत्रम १ २२)। २ ऐराव सेह के नवर्ष
कुनकर-मुन (सम १११)। ३ घ-विरोध
प्रमथिनामा सेह-विरोध (छा २, १)। ४
स्वनाम-विरोध एक सेन मुनि (पत्रम २१
न)। ५ वि कल्याण-कारक हित-नामक
(छा २११ टी)।

सुव पु [सुव] १ कुनकर पुर-
विरोध (पत्रम १, २२) ऐराव सेह का पौनवा
मुनकर दुस-विरोध (सम १११)। ३ वि
सेह-नामक उपर-विरोध (छा)।

सुव पु [सुव] १ स्वनाम-विरोध एक घन्य
हृद बैमुनि (संघ)।

सुव पु [सुव] १ स्वनाम-विरोध एक घन्य
हृद बैमुनि (संघ)।

सुव पु [सुव] १ स्वनाम-विरोध एक घन्य
हृद बैमुनि (संघ)।

सुव की [सुव] १ विदेह बर्ष की एक नवरी
(छा २ १)। २ सेनपुत्री-नामक नवते-विरोध
(पत्रम २ १)।

१ १-पत्र ४३ टी. पत्रा-२) । २ सन का
बना हुआ बर (सन १२३ सन १३ १३)
पण्ड २ ४) । ३ रेखायी बर (उप १४०
स २) । ४ बि धवली-संकोच
सन-संकोच (अ १ सग १ १
११) । पसिय न [मरत] विद्या-विरोध
त्रिसते बर में बैरता का ध्यातान किया
जाता है (ठा १) ।

लोमिय न [लीमिक] १ कपास का बना
हुआ बर (अ १ ३) । २ सन का बना
हुआ बर (कप) ।

लोमिय बि [लीमिक] १ रेहन सम्बन्धी ।
२ धन-सम्बन्धी (पत्र १२७) ।
लोय रेको लोय (सन १२१ इक) ।
लोय } न [दे] पान-विरोध कचोलक, कटोप
लोयय } (उप १३३ एकि) ।
लोय पु [दे] १ छोटा पत्रा (दे २ न) ।
२ बर का एक रेश (दे २ न ३, ३
इह १) । ३ मय का नीचला कीट-कर्म
(मात्रा २ १ न इह १) ।
लोय पु [दे] पुत्र-पुत्र, बन्धु (पिठ १२७) ।
लोय न [दे] कौट, मन्त्र 'कोत्स कोत्तर'
(पिठ १३) ।

लोयसय बि [दे] कपुल सन्ने पीर बाहर
निकले हुए बरताता (दे २, ७७) ।
लोसिय बि [दे] कीर्ण-प्राप्त किया हुआ
(पिठ १२१) ।
लोह रेको लोम = लोम् । लोह (मि) ।
नह-लोह (मि १२ ३१) । नह लोहि
अंत (सि २ ३) ।
लोह रेको लोम = लोम (पण्ड १ ४ कुमा
गुप १६७) ।
लोहण रेको लोमण (बा १२ गुप २ २) ।
लोहिय रेको लोमिय (सण) ।

॥ इम किरियाइसहमहण्यवे लमापइसहमहण्यो
पयाइलो तरंगी धमत्तो ॥

ग

ग पु [गु] व्याजल-बर्ण विरोध इतका स्वात
कण्ड है (प्राप्त प्राप्ति) ।

ग बि [ग] १ बनेकला । २ गण्ड होने-
वाला बिधे-प्राप्त, बचन (बाधा) मनु) ।
गधर्बत बि [गधर्ब] मया हुआ (प्राप्त
३२) ।

गइ की [गहि] १ ज्ञान, धर्मवीर (विदे
२२ २) । २ प्रकाश, देव (सि १ ११) । ३
गान, बचन वेदाङ्ग-प्राप्ति (कुमा) ।
४ कल्याण-प्राप्ति सन्तान-प्राप्त (१ १)
इ) । ५ देव मनुष्य, विद्वज्जन गण्ड
वीर मुक्त कीर्ति की प्रशंसा देवाधिपति
(अ ५, १) । वस पु [गस] धर्म
वीर नाम के कीर्ति (क्रम १ १३ ४ १३) ।
'नाम न [नामव] देवाधिपति का काण्ड
पुत्र कर्म (सन ७७) । प्यवाय पु [प्रपात]
१ पति की निपटता (पण्ड १५) । २
उपवास-विरोध (सन ७, ७) ।

गइ पु [गलेइ] १ ऐरण हामी इक
हत्ती । २ वीट हामी (गण्ड कुमा) । 'पय

न [पव] विचार पर्वत का एक बर-दीर्घ
(ही १) ।

गइय रेको गय = गत (गुज २ २२) ।
गड } पु [गो] नेक गुप्त लोह (दे १
गडम } १२८) । पुच्छ पु न [पुच्छ]
१ दैत की पुच्छ । २ बर-विरोध (कुमा) ।

गडम पु [गवय] दो-मुस्य प्राकृतिकता बर्णनी
पुत्र-विरोध गीक पाय (कुमा) ।

गडभा की [गो] पैदा यी (दे १ १२८) ।

गड पु [गोड] १ स्वनाम कया देता
बंवाल का पूर्वी भाग (दे १ २ २) गुप
३७६) । २ गीड देत का निवासी (दे १
२ २) । ३ गीड देत का राजा (गण्ड
कुमा) । लह पु [बभ] नाक-विरोध का
कामया हुआ प्राकृत-गया का एक कर्म-यव
(बच) ।

गडन बि [गोण] धर्मवान धनुष्य (दे
१ १) ।

गडनी की [गीणी] शक्ति-विरोध शब्द की
एक कवि (दे १ १) ।

गडन रेको गारम (कुमा १ १११) ।

गडयिय बि [गौरिय] गौर-मुक्त किया
हुआ जिसका बाहर-सम्भाल किया बना
हो नह 'उज्जयिनी' उत्पत्त्यामाई मेहि बैर
विदेहि मवरिप्याई पण्डायणे' (गुप
१२१ ३६) ।

गडरी की [गीरी] १ पार्श्वी शिव-पत्नी
(गुप १ १) । २ वीर बर्णनी की । ३
की-विरोध (कुमा) । पुत्र पु [पुत्र]
पार्श्वी का पुत्र स्वयं कार्तिकेय (गुप
४ १) ।

गइ रेको गय = गत 'क्षिप बहागयार्
पिअन्नय पण' (रमा) ।

गंम पु [गण्ड] मुनि विरोध, विप्रिय गत का
प्रसक्त धार्या (ठा ७) विदे २४२२) ।

गुप पु [गुण] १ एक कैम मुनि जो पठ
बागुष के पुर्नबन्ध के प्रक मे (स १२१) ।

२ गवर्ष बागुष के पुर्नबन्ध का नाम (पत्रम
२ ७१) । ३ उर नाय का एक कैम मेरी
(बन १५ ३) । 'बसा की [बसा] एक

पार्श्ववा की की का नाम (विप १ ७) ।

गंग रेको गंग । 'प्यवाय पु [प्रपात]

गंध न [गण्ड] दोष नाप (सूय १ १)। माणिया की [मानिध] पाप-विरोध (उप १४)। बिहियाय दु [बिहियाय पाठ] क्योविह-गण्ड-प्रसिद्ध एक योग (संयोग १४)।

गंधिया की [गण्डिकि] नदी-विरोध (धाम्य)।

गंधिय दु [गण्डिक] १ गंधा, नागव-विरोध (पाप २७ २७)। २ लोकोपणा करने-बाला पुष्प टेर लालेबाला पुष्प (सोय १४४)।

गंधी की [दे] गंधी ऊज का टुकड़ा (उप १ १)।

गंधा केो गंधि = पवि (महा १८)।

गंधाय दु [गण्डक] गंधा, हनाम (वाता २, १ २ २)।

गंधि दु [गण्डि] कानु-विरोध (उप १)।

गंधि नि [गण्डि] १ बरहमाला का योग-बाला (महा)। २ बरह योगबाला (पह २ २)।

गंधिया की [गण्डिक] १ गंधी ऊज का टुकड़ा (महा)। २ लोकार का एक उपकरण (उप ४ ४)। ३ एक वर्ष के सन्धिकारवाली ब्रह्म-पदवि (सम १२१)।

गंधिल रेको गंधिल (रक)।

गंधिलबई केो गंधिलबई (रक)।

गंधी की [गण्डी] १ लोकार का एक उपकरण (उप ४ ४—पत्र २७१)। २ कर्म की कणिका (उप ११)। सिंदुरा न [सिन्दुर] कर्म-विरोध (दी १७)। 'पय दु [पय] हावी बनेछ बसुपय पालनर (उप ४ ४)। वोरसय दुन [पुस्तक] पुस्तक-विरोध (उप ४ २)।

गंधीरी की [दे] बरहरी ऊज का टुकड़ा (रि २ २२)।

गंधीन न [गण्डीन] १ धनुं ना कानु (विणी ११२)।

गंधीन न [दे] गण्डीन कानु कानुं (रि २ २४ महा पाप)।

गंधीन दु [गण्डीन] मनुन, ममय बाहम (विणी २८)।

गंधुका न [गण्डु] बीसीला, विद्याना (महा)।

गंधुका न [गण्डु] लण-विरोध (रि २ ७२)।

गंधुका दु [गण्डुका] कर्म-विरोध बी के में पैरा होना है (बी ११)।

गंधुकाय न [गण्डुकाय] नाव कातकिया (पत्र ८४)।

गंधुकाय दु [गण्डुकाय] कानु-विरोध (पत्र)।

गंधुका केो गंधुका (पह १ १—पत्र २३)।

गंधुका दु [गण्डुका] पानी का कुला (पा २७ गुवा ४४२) 'बहुमरहपहसुपाय' (उप २०१ टी)।

गंधुका दु [गण्डुका] पानी का कुला (सूयनि २४)।

गंध केो गा।

गंध केो गंध = पय।

गंधिय न [गण्डुका] दुख-विरोध (पह १—पत्र ११)।

गंधी की [गण्डी] गंधी शकट (धम १२ टी गुवा २७७)।

गंध केो गंध = पय।

गंधुकायमा की [गण्डुकायमा] मित्र-बन्ध-विरोध कै गुणियों की मित्रा का एक प्रकार (उप १)।

गंधुकाय नि [गण्डुकाय] जाने की दण्डा बाला (पा १४)।

गंधुकाय नि [गण्डुकाय] ऊपर केो (पत्र)।

गंधुका केो गंध = पय।

गंध केो गंध = पय। गंध (पि १११)।

कर्म संकीर्णति (पि १४४)।

गंध दु [गण्ड] १ गंध, गुण पुस्तक (रि ८२४ ११८१)। २ बर-बाला बीछ बाल मित्राव कोय, माग बावि धाम्यस्तर कवि परिच्छ (उप १)। ३ बर पैरा (उप १११)। ४ बर-बाला बीछी लोभ (पह २ ४)। ५ गंध दु [गण्ड] कैत छाउ (सूय १ ४)।

गंधि नि [गण्डिय] रचना-कर्ता (धमप १११)।

गंधि रेको गंधि (पह १ १—पत्र ४४)।

गंधिय केो गंधिय (पासा १ ११)।

गंधिस की [गण्डिस] रेको गंधिस (रक)।

गंधी की [दे] बीछा-विरोध जिये में बरह बर की बाठी है, गंध-गंधीनी (रि २ ८३)।

गंधुका केो गंधुका (पह)।

गंध दु [गण्ड] १ गंध नासिका से प्रहण करते योग पदावी की नाव महक (दीप)। २ गंध (उप १ १)। ३ गंध विरोध (पह १ १)। ४ धाम्यस्तर रेको की एक बावि (रक)। ५ न देव-विमान विरोध (मिर १ ४)। ६ वि गण्डुका पदवि (सूय १ १)। लडी की [गण्डी] कर्म-अर्थ का बर (कर्म) है १ न)। कसाइया की [कसायिया] गुणिय कपाय रंग की साड़ी (जवा भय ८, ११)। गुण दु [गुण] धाम्य गण्ड (सम)। 'हय न [हय] कर्म-अर्थ का बर (उप १ १—पत्र ११७)। ३ गंधि [हय] कर्मपूर्ण गुणपूर्ण (पत्र २)।

गाम न [गाम] कर्म का शिपुन कर्म विरोध (पत्र)। 'तेल न [तेल] गुणियत सेत (कम्य)। धम्य न [धम्य] गुणियत बसु, गुणावि धम्य (उप १)।

देवी की [देवी] केवि-विरोध लीम देवलोका की एक देवी (मिर १ ४)। दूणि की [दूणि] कर्म दुवि (पासा १ १—पत्र २२, दीप)। गाम रेको गाम (धम १७)। मय दु [मय] कस्तुरी मय कस्तुरिया हणि (गुवा २)। मंत नि [मन्] १ गुणियत गुण्य-मुक्त। २ पतिव्रत धम्यबाला विरोध कर्म से मुक्त (उप १, १—पत्र १११)। भाइया, गायय दु [भाइय] १ पर्वत-विरोध उठ नाप का एक पहाड़ (धम १ १)। पह २ २: उ २३—पत्र १६)। २ गुण पर्वत-विरोध ना एक पर्वत (उप १ १—पत्र ८)। ३ न कर्म-विरोध (रक)। बह की [बही] गुण्यक-धम्य कर्मोय का धाम्य-धम्य (दीप)। बहय न [बहय]

सुखित भेष-अय्य (विपा १ १) । बहि
की [बहि] फल-अय्य की बनाई हुई गोभी
(छाया १ १) पीत । बह पुं [बह]
पत्र, बासु (कुमाय ४ ४२) । बास पुं
[बास] १ सुखित बलु का पुट । २ बूँद
किये (गुना १) । समिद्ध वि [समिद्ध]
१ सुखित सुख पुं । २ न नगर-किये
(धाम १६) । साहि पुं [साहि] सुन-
मित बीहि, बाग (धाम १) । हृति पुं
[हृति] नमन हृती बिचरी कन से हुरे
हारी या जाते हैं (सम १ पकि) । हृति पुं
[हृति] कनुरिया हिल (कन्यु) । हाररा
पुं [हार] १ इस नाम का एक म्येक
पेट । २ कनहारक देश का निवासी (पण्ड
१ १—पत्र १४) ।

गंधय पुं [गन्धय] एक सर्व-वाति (ध
२, ४) ।

गंधयिसाय पुं [गंध] लिक पठारी (दे २,
४७) ।

गंधय लो गंध (महा) ।

गंधयमा की [गंध] मासिक मय (दे २ ४२) ।

गंधवाह पुं [गन्धवाह] पत्र (कु १०) ।

गंधवह पुं [गन्धवह] १ कन-गन्धक सर्व-गन्धक
(क १ सय) । १ एक प्रकार की के-वाति
ज्वर के दो की एक बाटि (पण्ड १ ४
पीत) । १ कन-किये मजाल कुमुदाय का
खरच-पिछामन बह (सि १) । ४ न,
मूर्ध-किये (सम ११) । २ सुख-गुण की,
याम (विपा १ २) । कंड न [कन्ड] राज
की एक बाटि (राम) । कर न [कर]
संकीर्ण-मूह संकीर्ण, संकीर्ण का धर्मय
स्वत (सं १) । पगर, मार न [गार]
मजक-नगर, संघा के समय में बाजत में
बीजता मिया-नगर, की पानी जपत का
पुष्प के (मय पु ११) । पुर न [पुर]
रेखी पगर (पत्र) । डिभि की [डिभि]
मिनि-किये (सम १४) । बहाह पुं
[बिहाह] कन-पिछ विपद, की-गुण
की कन्या के पनुारे विपा (बह) । बाय
की [बाय] मज-माला संकीर्ण-मूह, संकी
लात (ब १) ।

गंधय वि [गन्धय] १ गंध-संघनी गंध
से संघन रखेवाला (सं १ पत्र १११) ।
२ पुं जल-हीन विपा विपद-किये
'गंधय विपाह' समेक विपाहिन
(बाय) । ३ न कीट मज (पत्र) ।
गंधयि वि [गन्धयि] गंधेवाला (पी १) ।
गंधयिज वि [गन्धयिज] १ गंध-विपा
में कुल (गुना १११) ।
गंधा की [गन्धा] नगरी-किये (इक) ।
गंधान न [गन्धान] कन-किये (सि) ।
गंधा पुं [गन्धा] देश-किये कनार (स
११) । २ पर्व-किये (स ११) । ३ न,
नगर-किये (स ११) ।
गंधार पुं [गन्धार] स्वर-किये पकि
किये (स ७) ।
गंधारी की [गन्धारी] १ सरी-किये कन
बलुके की एक की (पि ११) । २
विपाके-किये (सं १) । ३ कन-
मिज की कन-किये (सं १) ।
गंधारी की [गन्धारी] विपा-किये (सु
२ २ २७) ।
गंधाह पुं [गन्धापाहि] लघु-मज-मिज
गंधाह पुं एक बल, वेवाक पर्व (इक ठा
२ १—पत्र ११, ठा ४ २—पत्र
२२१) ।
गंधि वि [गन्धि] न-गुण गंधवाला
(कन बह) ।
गंधिज वि [गंधिज] पुं गंध-बल गंधवाला (दे
२ १) ।
गंधिज पुं [गन्धिज] कन-अय्य वेकनेवाला
पठारी (दे २, ४७) ।
गंधिज वि [गन्धिज] गंध-गुण 'गुण-
कन-अय्य' (पीत) । साझ की [गन्धा]
हाक बह-गंध-वाली पीत की बूजा (ब
१) ।
गंधिज वि [गन्धिज] कन-गुण कनवाला
(स १०१; स ४४२, ४४२) ।
गंधिज पुं [गन्धिज] सर्व-किये विप-
किये (स १, १ इक) ।
गंधिजि की [गन्धिजि] १ के
किये विप-किये (स १ १ इक) ।
२ नगरी-किये (स ११) । कूड न [कूड]

१ कन-वाला पर्व का एक ठिखर (सं १) ।
२ वेवाक पर्व का ठिखर-किये (स १) ।
गंधिजि की [गंधिजि] कन बह (स १ १
टी) ।
गंधुयमा की [गन्धुयमा] धरिप, सुय
(दे २, ४१) ।
गंधे की [गंधे] १ धाम, छह । २ म-
मिज (दे २ १) ।
गंधोवा } न [गन्धोव] सुखित बला
गंधोव } सुकन बाटि पानी (पीत वि,
१ १) ।
गंधोकी की [गंधे] १ इण्डा, धिवाला । २
राजी रात (दे २ ११) ।
गंधि } रेखी गम = गम ।
गंधिजु }
गंधी न [गन्धी] १ नमिज । २
धनी-अय्य (सुमि ११) ।
गंधी वि [गन्धी] १ कन-अय्य, मजाल,
धनुष, पण्ड (पीत १, ४४ मय) ।
२ पुं गंध-मजाल मज प्रदे गंधी-
अय्य पकि हो (पि १४ ४ इह १) ।
३ पुं राज का एक गुण (कम ११, १) ।
४ मज-के राजा मज-किये का एक पुं
(सं १) । २ न मज के मज-के नगर
इस नाम का एक नगर (पुर ११, १) ।
पीय न [पीय] नगर-किये (पाना १
१७) । माझि की [माझि] मज-
किये-अय्य की एक नगरी (ठा २ १) ।
गंधीय की [गन्धीय] १ गंधी-अय्य की
(ब १) । २ पाना-अय्य का एक नगर
(सि) । ३ पुं गंध-किये मज-किये
किये (पण्ड १) ।
गंधीयि न [गन्धीयि] मज-अय्य
(दे २, १ ७) ।
गंधीयि पुं [गन्धीयि] कन रेखी
(सु) ।
गणय न [गणय] धाकत धमर (कम ४
१४०) । अणय न [अणय] वेवाक पर्व
पर का एक नगर (इक) । बहम बहम
न [बहम] वेवाक पर्व पर का एक नगर
(राज इक) ।
गणय पुं [गणय] कन-किये (सि) ।

गहमी की [गहमी] १ यही यही (पि २६१) । २ विधान-विरोध (कमल) ।

गहह पु [गहह] १ कथा तथा बर (सम २, १; २, ८०) पाप हे २ १७) । २ छत्र नाम का एक मन्त्रिपुत्र (पृष्ठ १) ।

गहह न [हे] कुछ बन्ध-विधायी कमल (हे २ ८०) ।

गहहय पु [गहहय] १ शूद्रवस्तु विरोध को भोगना बनेछ में उत्पन्न होता है (की १७) । २ बेहो गहह (नट) ।

गहही बेहो गहमी (नट—मुक्क ३० पिष्ठ १) ।

गहिय पि [दे] गहिय धर्म-पुष्ट (हे २ ८३) ।

गह पु [गुह] गहिय-विरोध, धीव गिह (पीप) ।

गह पि [गहय] १ यक्षणीय बाध-उत्पन्न 'दिव्यमन्त्रो' करीबी कमल न होइ गहरी पुनरुक्तो' 'कन्यो प्रोहि कन्यो' (ज) । २ न. गहना पिन्नी 'पुनस्त कुछर कन्यो' (गुग २३३) ।

गहम पु [गम] १ कुलित फे, उतर (अ २, १) । २ उल्लाप-उत्पन्न. कर्म-उत्पन्न (अ २ १) । १ मरुत घनत-उत्पन्न (कम) । ३ मध्य, घनत, भीतर का (छाया १ य) । 'गाय की [करी] कर्मागत करनेवाली विधान-विरोध (गुह २ २) । घर न [गुह] भीतर का बर, बर का भीतर भाग (छाया १ ८) । अ पि [ह] धर्म में उत्पन्न होनेवाला प्राणी मनुष्य वस्तु बनेछ (पत्र १ २ ६७) । त्व पि [हय] १ धर्म में उत्पन्नता । २ धर्म से उत्पन्न होनेवाला मनुष्य बनेछ (अ २, २) । मास पु [मास] कालिक से लेकर माघ तक का माह (नर ७) । य बेहो अ (बी २१) ।

'बहो की [बहा] बर्तनी की (गुग २७१) । 'बककति की [बकुलकति] १ कर्मोप में उत्पत्ति (अ २ १) । वनकतिम पि [बकुलकतिम] १ कर्मोप में विपरी उत्पत्ति होती है वह (पत्र २, २३) । हर बेहो वर (गुह १ २१ गुग १४२) ।

गहमर न [गहम] १ कीट, डहा । २ गहम, विषम स्थान (गह ८१ पि १३२) ।

गहमर बेहो गहम, 'कमरों' (आठ २४ संधि १६) ।

गहमाहल न [गमाहल]—संस्कार-विरोध (पत्र २५५) ।

गहमिय पु [दे] गर्मिय बहान का निम्न सेली का लीटर 'भुविभारकनचारयमिन' (१ ७३) संवत्सराध्यायिण्या' (छाया १ ८—पत्र १३३; राज) ।

गहमिय पु [दे] गर्मिय १ जिसको गर्म गहमिय २ पैरा हुआ हो वह गर्म-मुष्ट (हे १ १ ८ प्राय छाया १ ७) । २ मुक्त संधि 'विधिवत्परीतमिधियमिधय' (कुमा पत्र) ।

गहमिय बेहो गहमिय (छाया १ १०—पत्र २२५) ।

गम लक [गम] १ बाधा कति करना, बलना । २ बाधना, समझना । ३ प्रत्य करना । बुका मीची (गुग १) । कर्म मम्मह, गमियवर (हे ४ २४१) । ककह गममाणा (ध १४) । संह. गमुं गमिम रता गावृण, गमुण (कुमा पत्र) । प्राय-बीज कस, गमुज, गमिम, गमुज (ही) (हे ४ २७२; पि ४४१ पत्र—माकटी ४) गमेपि गमपिण्ड, गपि गपिण्ड (धर) (कुमा) । हेर गमुं (कस का १४) । ह. गहमर गमपिण्ड, गमगीर (छाया १ १; गा २४३ उब पा गह) ।

गम लक [गमय] १ नै जाय । २ गहलीय करना पसार करना पुनारना । बनेति (नक) 'हुह' । हुहा मा पिपेह गमेह' (कल ४) । कर्म, बनेगति (गह) । गह, गमंत (गुग २ २) । लक गमिअन (पि) हेर गमिअर (पि २०५) ।

गम पु [गम] १ गमन बति बल (नर २२ टी) । २ प्रवेष्ट (पत्र १ २६) । ३ गमन का मुख्य पद एक ठण्ड का पाठ विनका धारण कि हो (हे १ १ पिठे २४३ ग) । ४ व्याख्या टीका (पिठे २४३) । ५ बीज नाम, लक (गुग १३३) । ६ माप, छाया (अ ७) ।

गम पु [गम] १ प्रकार (नर १) । २ पि, बयन (महापि ४) ।

गमग पि [गमक] बीजक विनयक (पिठे २४३) ।

गमग न [गमन] गमन बति (गग प्राय १३२) । २ बलन बीज (संधि) । ३ व्या व्यान, टोय । ४ मुख्य बनेछ नर गमन (राज) ।

गमगया की [गमन] गमन, बति 'कोवर्त-गमया' 'गमगया' (आ ४ १) 'गमयकर' 'गमयेन गमया' (छाया १ १—पत्र २२) ।

गमगिय बेहो गम = नय ।

गमगिय की [गमनिय] १ संधि, व्याख्या विप-वर्तन (राज) । २ पुनारना, बलिमल 'कलममणि एव जगती' (उप ७२० टी) ।

गमगी की [गमना] १ विधान-विरोध विहने प्रभाव से भाग्य में पवन किना का सकल है (छाया १ १६—पत्र २१३) । २ बहान 'बनोवि बयो बल विहाई हो बहान पमहीमो कण्ठाहितो' (गुग ११) ।

गमगीम बेहो गम = नय ।

गमय बेहो गमग (पिठे २६७१) ।

गमार पि [दे] गमय १ यकिरण युर्व (संधि ४०) ।

गमार बेहो गम = गमय । गमार (पत्र) ।

गमिअ पि [गमिअ] अकरना (नर १) ।

गमिअ पि [हे] १ मरुत । २ हक । ३ स्वतित (पत्र) ।

गमिय पि [गमिअ] १ दुकाउ हुपा धविमल (पत्र) । २ हापित बोधित निवेदि (पिठे २४३) ।

गमिय न [गमिअ] गमिअ-विरोध धरत पाठना ठाक 'नय-वर्तन' गमिय धरि समन न कायवकेल' (पिठे २४३ ४२४) ।

गमिय पि [गम] बनेवाला (हे २, १४३) ।

गमिय पि [गमिअ] बेहो गम = नय ।

गमेर बेहो गमार (संधि ४०) ।

गमेर बेहो गमेर । गमेर (हे ४ १८३) ।

बनेति (कुमा) ।

गमय पि [गमय] १ कलने गमय । २ जो वाया का लके (बर १७ गुग ४२९) ।

१ हुपने गमय पाठ-गहलीय (गुग १२६,

१२, १४)। ४ बाले योग्य। ५ योक्ते योग्य—स्वकीय बर्षात् (सुर १२ २२)।
गम्भ न [गम्भ] पञ्चन 'अथगम्भम्' सुखिलेन बर्षा' (सुर ४ ११)।

गम्भमाप्य षष्ठौ गम्भ = गम्भ।

गम्भ नि [वि] १ बुद्धिष्ठ अभिलि कुमाया गया (वे २ २२ वर)। २ मुष्ट मय हुम्भ निर्भीह (वे २, २२)।

गम्भ नि [गम्भ] १ बन्दा हुम्भ (सुपा ११४)। २ पठितवस्तु दुष्टय हुम्भ (वे १ २१)। ३ विव्रत बान्ता हुम्भ (पठ)। ४ गृह, हृष्ट (का ७२८ टी)। ५ प्रत्यक्ष 'आवर्तयवति मुष्टय' (प्रानु ८१)। ६ ७)। १ लिप्त पद्मा हुम्भ 'मल्लगर्भ' (उत्त १)। ७ प्रसिद्ध, किञ्चन प्रसन्न विद्या हो (अ ४ १)। ८ प्रसन्न (सुप १ १ १)। ९ व्यापकित (वीर्य)। १० न बलि, गमन 'उत्तमो न' बन्धमसमुत्तमविवागन्-विषयको पञ्चर्ष (बन्धु, सुपा २४० याबा)। पात्र नि [प्राय] मृत् मय हुम्भ (या २७)। राय नि [राय] पञ्च-प्रसिद्ध, वीर्य-राय, विर्य (उत्त ७२ टी)। बहूना बर्षे की [पतिष्ठा] १ विषया रीति (वीर्य) पठम २२ ४२)। २ विरक्त्य पति विरक्त बन्दा बहू की श्रोत्रित मनुष्य (का ११२ पठम २४, २२)। बय नि [बयस्] मृत् हुम्भ (पठम)। लुगाग्र नि [लुगा-वि] संघ परम्परा का अनुगामी संघ पञ्चम (उत्तर २१)।

गम्भ पुं [गम्भ] १ हाथी हस्तो गुंजर (समु) वीर्य प्रानु १२४ सुपा ३३४)। २ एक पठितवस्तु वैन बुद्धि, वय गुण्यवस्तु बुद्धि (संघ १)। ३ हल नाम का एक छेद (का ७१५ टी)। ४ पञ्च का एक प्रसन्न (पठम २२, २)। हर न [गुर] नगर-विशेष दुष्ट वैन का प्रधान मन्त्र, हस्तिनापुर (उत्त १ १० बदा मल)। कण्ठ कम्भ पुं [कम्भे] १ हीन-विशेष। २ जन्म प्लेगना (वीर्य १ छ ४२)। कम्भ पुं [कम्भम्] हाथी का बन्धा (उत्तर)। गम्भ नि [गम्भ] हाथी के ऊपर पालक (वीर्य)। मायप पुं [मायप] नगर-विशेष (का)। र्व नि [र्य] हाथी के ऊपर स्थित (पठम ४ १)। गुर

बैथी हर (सुप १ २, १)। बंधप पुं [बन्धप] हाथी को पकड़नेवाली बाँधि (सुपा १४२)। मारिणी की [मारिणी] बल्लवि-विशेष दुष्प्रक विशेष (परा १—पञ्च १२)। मुख पुं [मुख] १ कण्ठ कपालवि शिख-युग्म (पठम)। २ कण्ठ-विशेष (सुप ११)। राय पुं [राय] प्रधान हाथी बर्षे हस्तो (सुपा १५२)। बहू पुं [पति] गम्भ, बर्षे हस्तो (छाया १ १५ सुपा २८२)। बर पुं [बर] प्रधान हाथी। बरारि पुं [बरारि] शिष्ट छात्र स बन्धन (पठम १७ ७२)। बहू की [बय] हस्ति हस्तिनी (पठम)। बीडी की [बीडी] मृत् बर्षा मृत्बन्धो का बार-बेध-विशेष (छ १)। समग पुं [समग] हाथी की रीति (वीर्य)। सुकुमाक्ष पुं [सुकुमाक्ष] एक प्रसिद्ध वैन बुद्धि, जहाँ पञ्च में बुद्धि-वस्तु वैन काङ्ग-विशेष (संघ पठि)। तिरि पुं [तिरि] शिष्ट, पञ्चालन (बयि)। रोह पुं [रोह] हस्तिना म्हावत (पठम)।

गम्भ पुं [गम्भ] रोय विमारी (वीर्य सुपा २४०)।

गम्भ पुं [गम्भा] वैशों की एक बाँधि विष्णुमार देव (वीर्य)।

गम्भ पुं [गम्भ] बर्षे हाथी (पठम)।

गम्भ पुं [गम्भ] पञ्च विशेष (पठम १७)।

गम्भ पुं [गम्भ] बर्षाव देव-विशेष (पठम २७४)।

गम्भगायप न [गम्भगायप] बरगर्भण्ट का एक टीर (आपानि ११२)।

गम्भ न [गम्भ] 'ह' क्कार (धिरि ११५)।

मपि पुं [मपि] धूर्त (सुप २१)।

गम्भ न [गम्भ] मग्न, घनाश्र, धामर (हि २ १५४ वर)। गम्भ पुं [गम्भ] एक पञ्चमुर (संघ)। पर नि [पर] साकल में बल्लेनामा की विद्यावर बर्षा (सुपा ११)। मंढस पुं [मंढस] एक राजा (संघ)।

गम्भगर्भ पुं [गम्भ] मेघ मेघ, वारन (हि २ १)।

गम्भविदु पुं [गम्भविदु] विद्यावर वैन के एक राजा का नाम (पठम २, ४२)

गयनिमीछिया की [गयनिमीछिया] जेता, उवाचीना (छ २१)।

गयमुह पुं [गयमुह] बर्षाव देव-विशेष (पठम २७४)।

गयसाङ्ग } नि [दे] विरक्त, वैराग्य (हि गयसाङ्ग) } बन्धन (पठम)।

गया की [गया] वीर्य का या पात्रय का मन्त्र-विशेष कोहे का गुणवर का लक्ष्मी (ज्य)।

हर पुं [पर] बन्धुदेव (पठम ११)।

गया की [गया] एक देव-विशेष (संघ १११)।

गया की [गया] स्वनाम-प्रसिद्ध नगर-विशेष (ज्य २२१)।

गर नि [गर] कलेवाता कर्ता (संघ)।

गर पुं [गर] १ विष-विशेष एक मन्त्र का बहुर (सिद्ध १)। २ ज्योतिष-शास्त्र-विशेष बर्षाव करलें में से एक (विशे ११४)। गम्भ षष्ठौ कारण (उत्तर २१)।

गम्भ न [गम्भ] १ विष, बहुर (पठम २४, २)। २ उत्तर। ३ वि मन्त्र, उत्तर।

'अन्तर्यामि' ध-मन्त्रकार (वीर्य)।

गम्भविषयक नि [गम्भविषयक] निष्पन्न उपपन्न (सिद्ध १)।

गम्भ वक्त [गम्भ] निष्ठा कण्ड कटा (का १५)। कम्भ गम्भविषय (सुप १ ५)। कंठ गम्भविषय (या २ १)।

कंठ गम्भविषय (संघ २ १)। क. गम्भविषय गम्भविषय, गम्भविषय (सुपा १५४ १७२ पठम २ १)।

गम्भ न [गम्भ] निष्ठा कण्ड (सि ११२)।

गम्भविषय की [गम्भविषय] निष्ठा कण्ड (का गम्भविषय) १७ १ वीर्य पठम २ १)।

गम्भ की [गम्भ] निष्ठा कण्ड (ज्य)।

गम्भविषय नि [गम्भविषय] निष्पन्न कण्ड (संघ ११ ४ ११)।

गम्भ नि [कण्ड] निष्ठा कण्ड, निष्पन्न (वे ७ ११)।

गम्भ नि [गम्भ] धर्मि कण्ड, बदा मल (सुपा १ १२४ प्रानु १२४)।

गम्भ पुं [गम्भ] बर्षा उत्तर वीर्य (हि १ १५ सुपा ११)।

गाढ वि [गाढ] १ गाढ विविध वस्त्र (पाप
पुर १४ ४८) । २ ममूत रुद्र (पुर ४
२१७) । ३ विविध वस्त्रों का संग्रह (कर्म) ।
गाय न [गायन] गेय वाक्य (इ ४ ९) ।
गाय वि [गायन] गवैया कीट-पक्षीय (इ
२ १ ८) ।
गार्जगजिष्ठ पुं [गार्जगजिष्ठ] वा ही गज
के पीछे एक साधु-पुत्र से दूसरे पक्ष में
बानेवाला साधु (इ १) ।
गापी की [रे] गवाली गोबर-मुषि (इ २
४२) ।
गाया केही गाहा (कर्म विन) ।
गाय वि [गाय] घटाव-पक्ष कम कृप
(इ ४, २४) ।
गाम पुं [गाम] १ समूह निकट 'अवलो
द्विक्रमो' (पुर २ ११८) । २ घाट-अपुत्र,
कन्तु-निम्न (विदे २०१६) । ३ गोबर बल्लि
वाग (कर्म छाया १ १८; जीव) । ४
अतिव-समुद्र (कर्म जीव) । कंडग कंडय
पुं [कण्डक] १ अतिव-समुद्र कम कंडय
(कर्म जीव) । २ दुर्बलों का कम घाला
वाली (पाषा) । पायग वि [पायग] गेय
का गज करनेवाला (पुत्र १ १) । 'जिष्ठमय
न [निष्ठमय] गेय का पापी बने का
घरवा लावा (कर्म) । घमस पुं [भमस]
१ विपदाग्रिष्ठ, विपदा की वास्तव्य (अ
१) । २ अतिवों का लक्षण । विपदा-
प्रवृत्ति (पाषा) । ४ मेकन (पुत्र १ २,
२) । ३ लक्ष्य कम बंदीरु अतिवों का
विपदा (पुत्र १ ४) । ४ गेय का बंदी गेय
का कर्तव्य (अ १) । ५ गुं [गुं] पाका
गोबर । ६ उत्तर पक्ष भारत का उत्तरपक्ष
(निद्र १२) । गारी की [गारी] गेय पर
मं की हुई गोपार-विदेय (जीव १) । रंग
पुं [रंग] घाम-व्यापक बीमारो (अ २) ।
बह पुं [पवि] गेय का मुखिया (पाषा) ।
तुमगाम न [तुमगाम] एक पाष से दूसरे
नाम (जीव) । 'पार पुं [पार] विपदा
(घाव) ।

गमसड्ड पुं [रे] गेय का मुखिया (इ २,
गमसड्ड १) ।
गामयिष्य न [गामयिष्य] १ गेय की बीया

(पाषा) । २ वि गेय की बीया में खुलेवाला
(वहा १) । ३ पुं, बैरेडर बालनिक-विदेय
(पुत्र २, २) ।
गामगोह पुं [रे] गेय का मुखिया (इ २
४६) ।
गमसड्ड पुं [गमसड्ड] गेय छोटा गेय (आ
११) ।
गामन न [रे] गमन] मुषि में गमन बु-कर्म
(अम ११ ११) ।
गामगह न [रे] गमन-वाग गम-मोह
(पुत्र १) ।
गामगि केही गामगी (इ २, ४६) पक्ष ।
गामयिष्य पुं [रे] गेय का मुखिया (इ
२ ४६) ।
गामगी पुं [रे] गेय का मुखिया (इ २ ४६
गाम) ।
गामगी वि [गामगी] १ गेय प्रवृत्ति गमक
(इ ७ ९ बहा १; गा ४४९) पक्ष । २
पुं, गुण-विदेय (इ २ ११२) ।
गामपिठोका पुं [रे] गेय से पेट भरने के
विदे गेय का प्राप्य केनेवाला कीकारी
(पाषा) ।
गामपेड पुं [रे] कम से गेय का मुखिया
कम केनेवाला गेय के लोपों में कृत् उत्पन्न
कर गेय का मासिक होनेवाला (इ २, ६) ।
गामहज न [रे] गम-व्यापक, गेय का प्रवेष्ट
(इ २, ६) । २ छोटा गेय (पाषा) ।
गमसग पुं [गमसग] गम-विदेय एक गम
का एक सज्जेय (पाषा) ।
गमसग वि [रे] गमगी] गमगी छोटी गेय
का खुलेवाला (बहा ४) ।
गमस वि [गमस] बनेवाला (पा १९७)
पाषा) । जी जी (कर्म) ।
गमसि वि [गमसि] १ केही गमसि (इ
२ १) । २ गम का मुखिया (निद्र २) ।
३ विपदाग्रिष्ठ (पाषा) ।
गमयिष्य की [गमयिष्य] गमन करने-
वाली की 'बहिष्य' पक्षगुणविदेय (गमि
२९) ।
गमसि वि [गमसि] १ गेय का मुखिया (इ
२ १) । २ गम का मुखिया (निद्र २) ।
३ विपदाग्रिष्ठ (पाषा) ।
गमयिष्य की [गमयिष्य] गमन करने-
वाली की 'बहिष्य' पक्षगुणविदेय (गमि
२९) ।
गमसि वि [गमसि] १ गेय का मुखिया (इ
२ १) । २ गम का मुखिया (निद्र २) ।
३ विपदाग्रिष्ठ (पाषा) ।
गमयिष्य की [गमयिष्य] गमन करने-
वाली की 'बहिष्य' पक्षगुणविदेय (गमि
२९) ।

गामुभ वि [गामुभ] बनेवाला (इ १७२) ।
गामेहमा की [गामेहमा] गेय की खुले-
वाली की गेय की (बहा १) ।
गामेयी की [रे] छोटी घना बहरी (इ २,
४२) ।
गामय केही गामेय (बर्हि ११७) ।
गामेयग वि [गामेयग] गेय का गिवाली,
गेय (इ १) ।
गामेयड [रे] केही गामेयड (इ १) ।
गामेयड केही गामिष्ठ (पुत्र २०४)
गामेयड } विना १ १ विदे १४११ ।
गामेय पुं [गामेय] गेय का गमिष्ठ (इ
२, १७) ।
गामय वि [गामय] गेय का गमक (विदि
७ १) ।
गामरी की [रे] गमरी पपट कमरी छोटा
बहा (इ २ ४६) ।
गार वि [गार] गमक कर्ता (गम) ।
गार पुं [रे] गामन] गमक, गमक कर्ता
(बहा ४) ।
गार न [गार] गमक, गमक (अ १) ।
त्य पुं [रे] गम] गमक गरी (निद्र १) ।
विपदा पुं [विपदा] गमक, गमक लोपारी
'गारविपदा' विपदाग्रिष्ठ गमक (पुत्र २०१)
(पुत्र २०१) अ १) ।
गारय वि [गारय] कर्ता करनेवाला (अ
१११) ।
गारय पुं [गारय] १ गमिष्ठ गारय ।
२ गमिष्ठ गमक 'गमो गारय बहउता'
(अ १ ४ का ११) अम न) । ३ गमक
गमक गमक (पुत्रा) । ४ गमक, गमक
(पक्ष गम) ।
गारवि वि [गारवि] १ गमिष्ठ गारवि ।
२ गमिष्ठ गमक 'गमो गारय बहउता'
(अ १ ४ का ११) अम न) । ३ गमक
गमक गमक (पुत्रा) । ४ गमक, गमक
(पक्ष गम) ।
गारवि वि [गारवि] १ गमिष्ठ गारवि ।
२ गमिष्ठ गमक 'गमो गारय बहउता'
(अ १ ४ का ११) अम न) । ३ गमक
गमक गमक (पुत्रा) । ४ गमक, गमक
(पक्ष गम) ।
गारवि वि [गारवि] १ गमिष्ठ गारवि ।
२ गमिष्ठ गमक 'गमो गारय बहउता'
(अ १ ४ का ११) अम न) । ३ गमक
गमक गमक (पुत्रा) । ४ गमक, गमक
(पक्ष गम) ।

गणितशिव्य शब्द [गार्हस्पत्य] बृहस्प-संस्कृती
संस्कृत-संस्कृती। श्री. या (पृष्ठ २३४)।

गारुड } वि [गारुड] १ गारुड संस्कृती।
गारुड } २ सप के विप को बढायेवाला,

सर्व-विप को बुर करनेवाला। १ पु. सर्व विप
को बुर करनेवाला मन्त्र (छा ६८८ टी। छ।

१४ २७)। ४ प. शास्त्र विरोध मन्त्र-शास्त्र-
विरोध सर्वविप-गारुड मन्त्र का जिसमें बालुन

हो वह शास्त्र (छा ६)। संत पु. [मन्त्र]
सर्व-विप का गारुड मन्त्र (मुष्ठा २१६)।

“मिथ वि [विभु] मासक मन्त्र का बालकार,
गारुड शास्त्र का बालकार (छा ६८६ टी)।

गारुड शब्द [गारुड] १ गारुड ध्वनता।
२ गारुड करता। ३ सर्वत्राण करना गणित-
मण करता। यत्नमय (विदे १४)। बह

गालेमाग (मय ६ ११)। कनक गारुड-
ज्जित (मुष्ठा १७१) प्रयो यत्नमय (शाय

१ ११)।

गारुड्य न [गारुड] ध्वनता बलता (परह
१ १)। पर पु १७६)।

गारुड्या शब्द [गारुड्या] १ गारुड्या ध्वनता।
२ गारुड्या। ३ गारुड्या (विप १ १)।

गारुड्याशिव्य शब्द [वि] शब्द गौता गौता
“पर्वतस्य समाम्या पर्वतगारुड्याशिव्य निज-
मय” (छ १२६)।

गारुडि शब्द [गारुडि] बलता गौता ध्वनता,
ध्वनता बलता (मुष्ठा १७)।

गारुडि वि [गारुडि] १ ध्वनता हुआ। २
ध्वनित। ३ विनयित। ४ विनय, गारुडि-
विनो निरुद्धो विनयितो राक्षसी (पृष्ठा)।

गारुडि शब्द [गारुडि] शब्द गारुडि (पृष्ठ १७)।

गारुडि (पर) शब्द गौता। गारुडि (विप)। बह.
गारुडि (वि २३४)।

गारुडि (मय) शब्द गारुडि (मय)।

गारुडि वि [वि] बह, बया हुआ बुरा हुआ
(पर)।

गारुडि } पु. [गारुडि] १ पर्वत, पर्वत
गारुडि } (पर्वत)। २ पर्वत विपि (वि १

११)।

गारुडि (मय) शब्द गारुडि (मय)।
गारुडि शब्द [गौ] शब्द गौता (वि १, १७४ विप

गारुडि पु. [मास] धास कनक (मुष्ठा ४८८)।
गारुडि पु. [मास] धोजन (पृष्ठ २३४)।

गारुडि शब्द गारुडि = पर्वत। कर्म गारुडि (प्रज्ञ)।

गारुडि शब्द [गारुडि] प्रहण करना। गारुडि
(धौत)।

गारुडि शब्द [गारुडि] १ गारुडि ब्रह्मा। २
पर्वता ध्वनता करना। ३ ध्वनता करना।

४ टोह लयाना। गारुडि (शौ) (मुष्ठा ७२)।
कनक गारुडिजित (बया ४)।

गारुडि पु. [गारुडि] ध्वनता-पर्वत गारुडि (छा ४
४)।

गारुडि पु. [गारुडि] १ गारुडि, मुष्ठा, मय, बल
बल-विरोध, मय (वि २, ८६)। गारुडि १ ४

शौ २)। २ गारुडि, बह (वि २६८ पृष्ठ
१६, १२)। ३ प्रहण बलता (वि १)।

४ गारुडि सर्व को पर्वत-बलता मनुष्य
गारुडि (बह १)। बह शौ [बह] नवी

विरोध (छा २ १—पृष्ठ ८)।

गारुडि वि [गारुडि] १ प्रहण करनेवाला,
ध्वनता (मुष्ठा ११)। २ ध्वनता-बलता

बलता-बलता (मुष्ठा १४१)। ३ ध्वनता-बलता
ध्वनता ध्वनता बुर (धौत)। ४ ध्वनता

ध्वनता। शौ गारुडि (धौत)।

गारुडि वि [गारुडि] गारुडि करनेवाला ‘गारुडि
ध्वनता-बलता’ (वि १८२)।

गारुडि न [गारुडि] १ प्रहण करना। २
प्रहण ध्वनता ‘गारुडि ध्वनता-बलता गारुडि

विप गारुडि गारुडि’ (पृष्ठ २३४)। ३ गारुडि
ध्वनता (पृष्ठ ४)। ४ ध्वनता-बलता, ध्वनता,

ध्वनता (पृष्ठ २, २)।

गारुडि न शब्द [गारुडि] ध्वनता शब्द (पृष्ठ
गारुडि १ ४ ११४ ध्वनता, ध्वनता)।

गारुडि शब्द गारुडि (वि १११ ४ ४८८)।

गारुडि शब्द [गारुडि] ध्वनता, ध्वनता-बलता
(पृष्ठ ११ ११)।

गारुडि शब्द [गारुडि] १ ध्वनता-बलता, ध्वनता
ध्वनता (छा २, ३) ध्वनता १७; १७)। २

[पवि] १ ध्वनता ध्वनता ध्वनता (छा ४
४ ध्वनता २२६)। २ ध्वनता ध्वनता (पृष्ठ

१)। ३ ध्वनता ध्वनता-बलता (पृष्ठ २७)।
शौ धौ (छाया १, १ ज्ञा)।

गारुडि पु. [गारुडि] ध्वनता-बलता ध्वनता
बलता ध्वनता (शौ १)।

गारुडि शब्द [गारुडि] १ ध्वनता ध्वनता।
२ ध्वनता-बलता। ३ ध्वनता-बलता, ध्वनता

ध्वनता ध्वनता ध्वनता (वि ४)।

गारुडि वि [गारुडि] ध्वनता ध्वनता ध्वनता
ध्वनता ध्वनता ध्वनता (पृष्ठ ११ १८१)।

गारुडि शब्द [गारुडि] १ ध्वनता ध्वनता
शब्द [गारुडि] ध्वनता ध्वनता (विप)।

गारुडि न [गारुडि] ध्वनता-बलता (पृष्ठ २७)।

गारुडि वि [गारुडि] १ ध्वनता ध्वनता
ध्वनता ध्वनता ध्वनता (पृष्ठ १ १)।

गारुडि वि [गारुडि] ध्वनता ध्वनता ध्वनता
ध्वनता ध्वनता ध्वनता (पृष्ठ १ ११)।

गारुडि शब्द [गारुडि] ध्वनता-बलता (विप)।

गारुडि ध्वनता [वि] ध्वनता, ध्वनता, ध्वनता
ध्वनता ध्वनता (वि २ ८६)।

गारुडि ध्वनता शब्द गारुडि = ध्वनता (मुष्ठा २६४)।

गारुडि [गारुडि] १ ध्वनता ध्वनता ध्वनता।
२ ध्वनता ध्वनता ध्वनता (वि १ ११)।

गारुडि [वि] ध्वनता ध्वनता (ध्वनता)।

गारुडि [वि] ध्वनता ध्वनता (ध्वनता)।

गारुडि (मय) शब्द गारुडि (वि ४ ४४२)।

गारुडि शब्द गारुडि (ध्वनता)।

गारुडि ध्वनता [गारुडि] ध्वनता ध्वनता
ध्वनता ध्वनता ध्वनता (पृष्ठ २, ३)।

गारुडि ध्वनता [गारुडि] ध्वनता ध्वनता
ध्वनता ध्वनता ध्वनता (पृष्ठ २, ३)।

गारुडि ध्वनता [गारुडि] ध्वनता ध्वनता
ध्वनता ध्वनता ध्वनता (पृष्ठ २, ३)।

गिञा देवो गण = मण्डप । गिरिंति (संति ६७) ।

गिण्ड देवो गण्ड = गण्ड । गिण्ड (कण्) । बहु गिण्डं गिण्डमान (गुण ११६) । लाभा १ (१) । संक गिण्डित्, गिण्डित् रूप गिण्डिता (पि १७४ २२३ २२२) । ईह गिण्डित् (कण्) । इ गिण्डित्पण गिण्डित्पण (झ्यु गुण १११) ।

गिण्ड देवो गण्ड = गण्ड (गिरि १७७ पितृ १४६ टंडु १) ।

गिण्डा भी [मण्ड] ज्ञातल भातल (उप ११ २७) ।

गिण्डाविज वि [मण्डित] पण्ड कपात हुमा (कनीति ११६) ।

गिण्ड पुं [गुण] पण्डि-विरोध क्षेत्र (पाम लाभा १ १६) ।

गिण्ड वि [गुण] धातल कण् मण्डल (पण्ड १ २ भाष १) ।

गिण्डपट्ट न [गुण पण्ड, गुणपण्ड] मण्ड विरोध धातलका के धर्मपण्ड से भीष ध्वनि को मण्डा खीर किता भा (पण १३) ।

गिण्डि लो [गुण] एक क्षेत्र-विमान (विश्व ११४) ।

गिण्डि लो [गुण] धातल लम्पटका धातल (गुण १ ६) ।

गिण्डा देवो गिण्डा (उप ११ २७) ।

गिण्ड पुं [ग्रीष्म] कण्ड-विरोध कण्डो का मण्डल (इ २ ७४ भाष) ।

गिण्डा लो देवो गिण्डा 'किन्हाण्ड' (गुण २, ३७) ।

गिर मण्ड [गु] १ भीमता, उन्मादल नरता । २ विमता विमता । गिर (बर् १) ।

गिरा लो [गिर] बली धात, बाण (इ १ १६) ।

गिरि पुं [गिरि] १ वहा पर्वत (बह १ २३) । अही लो [वर्त] पर्वतीय नदी (बह १) । कण्डाई कण्डो लो [कण्डो] कण्डो-विरोध कण्ड विरोध (पण्ड १—बह १३) या २) । कण्ड न [कण्ड] १ पर्वत का विहार । २ पुं पर्वत का वहा (बह १ ४) । कण्ड पुं [पण्ड]

कोण्ड देवो वहाकाल में किया जाता एक प्रकार का उत्सव (बह १) । जई लो [नदी] पर्वतीय नदी (पि १३४) । जास पुं [नार] प्रसिद्ध पर्वत-विरोध को कण्डिया-बाण में धातल लो 'विहार' के नाम से विख्यात है (भी १) । वारिणी लो [व-रिणी] विमान-विरोध (पण्ड ७ १११) । नई देवो जई (गुण १११) । पण्ड-पण्ड १ [पण्ड-पण्ड] पण्ड पर से गिरा (पिण्ड ११) । यण्ड न [कण्ड] पर्वत का मण्ड धात (बह १) । पण्डार पुं [पण्डार] पर्वत-विमान (संभा) । राव पुं [राज] मेघ पर्वत (इक) । वर पुं [वर] प्रधान पर्वत कण्ड पण्ड (गुण १७१) । वरि पुं [वरि] मेघ पर्वत (या २७) । सुमा लो [सुमा] पर्वतीय गीरी (पिण्ड) ।

गिरि पुं [दे] भीम-भीम (इ १ १४६) । गिरि पुं [गिरि] १ क्षेत्र पर्वत । २ क्षेत्र पर्वत । ३ विमान (कण्ड) ।

गिरिकसी लो गिरि-कण्डो (पण्ड ४) । गिरिकी लो [दे] पण्डो के दांत को धातल का उत्सव-विरोध 'वर्तगिरि' पर्वत (गुण २३७) ।

गिरिनगर न [गिरिमगर] गिरार पर्वत के भीष का नगर, को धातल 'हुताव' के नाम से प्रसिद्ध है (गुण १७१) ।

गिरिपुण्डि न [गिरिपुण्डि] नगर-विरोध (पिण्ड ४११) ।

गिरि पुं [गिरि] बहादेव शिव (पाम ६, १११) । बास पुं [बास] कैलाश पर्वत (पि ४ ७१) ।

गिरि पुं [गिरि] १ विमान पर्वत । २ मण्डल शिव (पिण्ड) ।

गिरि लो [गु] विमान विमानता मण्ड कण्ड । संक गिरिकण्ड (गण्ड) ।

गिरि न [गाम] विपण्ड बहण्ड (इ ४ ४४२) ।

गिरि लो [गाम] विपण्ड विमानता मण्ड कण्ड । संक गिरिकण्ड (गण्ड) ।

गिरि लो [गाम] विपण्ड बहण्ड (इ ४ ४४२) ।

गिरि लो [गाम] विपण्ड विमानता मण्ड कण्ड । संक गिरिकण्ड (गण्ड) ।

गिरि लो [गाम] विपण्ड विमानता मण्ड कण्ड । संक गिरिकण्ड (गण्ड) ।

गिरि लो [गाम] विपण्ड विमानता मण्ड कण्ड । संक गिरिकण्ड (गण्ड) ।

गिञा लो [मण्ड] १ भीमारी रोग । २ क्षेत्र, कण्ड (उप १) ।

गिञा देवो गिञा (पिण्ड १११) ।

गिञा वि [गञ्ज] १ भीमारी, रोगी (गुण १ ११) । २ मण्डल, मण्डल कण्ड (उप १ ४) । ३ कण्डो, कण्ड-विरोध (उप १ ११) इ २ ११) ।

गिञा लो [गञ्ज] गञ्ज क्षेत्र, कण्ड (उप १ १) ।

गिञा वि [गञ्ज] गञ्ज क्षेत्र, कण्ड (उप १ १) ।

गिञा वि [गञ्ज] गञ्ज क्षेत्र, कण्ड (उप १ १) ।

गिञा वि [गञ्ज] गञ्ज क्षेत्र, कण्ड (उप १ १) ।

गिञा वि [गञ्ज] गञ्ज क्षेत्र, कण्ड (उप १ १) ।

गिञा वि [गञ्ज] गञ्ज क्षेत्र, कण्ड (उप १ १) ।

गिञा वि [गञ्ज] गञ्ज क्षेत्र, कण्ड (उप १ १) ।

गिञा वि [गञ्ज] गञ्ज क्षेत्र, कण्ड (उप १ १) ।

गिञा वि [गञ्ज] गञ्ज क्षेत्र, कण्ड (उप १ १) ।

गिञा वि [गञ्ज] गञ्ज क्षेत्र, कण्ड (उप १ १) ।

गिञा वि [गञ्ज] गञ्ज क्षेत्र, कण्ड (उप १ १) ।

गिञा वि [गञ्ज] गञ्ज क्षेत्र, कण्ड (उप १ १) ।

गिञा वि [गञ्ज] गञ्ज क्षेत्र, कण्ड (उप १ १) ।

गिञा वि [गञ्ज] गञ्ज क्षेत्र, कण्ड (उप १ १) ।

गिञा वि [गञ्ज] गञ्ज क्षेत्र, कण्ड (उप १ १) ।

गिञा वि [गञ्ज] गञ्ज क्षेत्र, कण्ड (उप १ १) ।

गिञा वि [गञ्ज] गञ्ज क्षेत्र, कण्ड (उप १ १) ।

गिञा वि [गञ्ज] गञ्ज क्षेत्र, कण्ड (उप १ १) ।

शुद्धाङ्ग वि [वि] १ शुद्ध मूर्ति (वि २, १ ३)।
 शोध ११६; पाप (वृ)। २ क्षुण्णित मूर्ति
 नहीं किया हुआ (वृ)। ३ क्षुण्णित मूर्ति
 किया हुआ (वि २, १ ३)। ४ स्तम्भित।
 ५ संक्षिप्त। शून से उद्भवित। ६ विचलित
 विमुक्त (वि २ १ ३ वृत्त)।

शुद्धाङ्ग केको शुद्ध। शुद्धाङ्ग (वि ४ २ ७)।
 शुद्धाङ्ग वि [मोहित] मोह-शून्य शुद्ध
 किया हुआ (कुमा ७ ४७)।

शुद्धाङ्गमि य कल्याण होकर (वीप)।
 शुद्धाङ्ग वि [सुख] १ मोक्ष प्राप्त मूढ़
 (कुमा ७ ४७)। २ क्षुण्णित मर से बुद्धता
 हुआ (वृ १)।

शुद्धाङ्ग पु [गीर्णिक] गीर्णिक नगर
 रक्षक (वीप १२३; ७१६)।

शुद्धाङ्ग वि [वि] मूढ़ से ज्ञाना हुआ कणू
 मित (वि २ २२)।

शुद्धा की [वि] दण्डा, धर्मिताया (वि २
 २)।

शुद्धा की [शुद्धी] उत्तरी बुद्ध, कल्पन
 वृ (वृ ३६, ११८)। शुद्ध ३६ (११८)।

शुद्ध शक [शुद्ध] शुद्धा शक। शुद्ध
 (टी) (वृत्त ३३)।

शुद्ध केको शुद्ध (वि २ १२४)।

शुद्ध केको शुद्ध जो शुद्ध धार्मिक नम
 धार्मिक पोषकशक्ति (वृत्त १ ११४)।

शुद्ध पु [शुद्ध] १ शिष्ट विद्या-भासा
 शुद्ध (वृत्त ११८)। शुद्ध १, मनु। २

धर्मोपदेशक धर्मार्थ (वि २ ११)। ३
 माता पिता की एक पुत्र लोभ (वृ १)।

४ शुद्धाङ्ग शुद्धाङ्ग (वृत्त १७ १)।
 युवा)। ५ स्वर विरोध से भाषाभासा या

ई नम्र स्वर, विरोध से ध्वनि उत्पन्न या
 ई नम्र स्वर। ई नम्र से स्वर-वर्ण (वि १)

१ वि बह, भाव (वृत्त ३ ३)। ७
 धार्मिक भोग (वृ १ १)। नम्र १)। ८

जड़, कल्प (वृत्त ४ ७२ ७३)। कर्म
 वि [कर्म] कर्म का बोधनात्मक, धार्मिक
 (वृत्त २१३)। शुद्ध न [शुद्ध] १ धर्मो-

पार्थक्य का धार्मिक (वृत्त ११)। २ शुद्ध-
 धार्मिक (वृ १७७)। गुरु की [गुरु]

वि-विरोध, धार्मिक से उद्धा-नीचा नम
 (वृ ८)। व्यापक न [व्यापक] साधारण,
 व्यापक धार्मिक (वृ ४)। सविस्तर
 पु [सहाय्याधिक] पुत्र के भाई (वृ ४)।
 गुरुई केको गुरुई (वृत्त १ १)।

गुरुमी की [गुरुमी] १ शुद्धाङ्ग की (गुरु
 ११ २११)। २ धर्मोपदेशक धार्मिक (वृ
 ७२२ टी)।

गुरुई न [गुरुई] शुद्धाङ्ग (वि १ २४)।

गुरु केको गुरु = पुत्र (वृ १, १ २)।
 १ नम्र १२४ वृत्त)।

गुरु न [वि] शुद्धाङ्ग (वि २ २१)।

गुरुगुरु शक [गुरु + शिप] उद्धा
 केको। शुद्धाङ्ग (वि ४ १४४)। शुद्ध
 शुद्धाङ्गिक (कुमा)।

गुरुगुरु केको शुद्धाङ्ग = उद्धा + नम्र।
 शुद्धाङ्ग (वि ४ ११६)।

गुरुगुरु शक [गुरुगुरु] 'गुरुगुरु' पावन
 कला, धार्मिक का हार् से विद्याभासा नम्रता।
 गुरु-गुरुगुरु शुद्धाङ्ग (वृ १ ११ टी)
 कला वृत्त न ७७१: १ २ २)।

गुरुगुरुगुरु न [गुरुगुरुगुरु] धार्मिक की
 शुद्धाङ्गिक १ नम्रता (वृ ३, युवा ११७)।

गुरुगुरु शक [धार्मिक] शुद्धाङ्ग करता। शुद्ध
 नम्र (वि ४ ७३)। गुरु-गुरुगुरु (कुमा)।

गुरुगुरुगुरु की [गुरुगुरुगुरु] एक
 वृत्त की मिश्र, गुरुगुरुगुरु। २ शुद्धाङ्ग
 (वृ २३८, शुद्ध २ टी)।

गुरुगुरुगुरु की [गुरुगुरुगुरु] धार्मिक-विरोध
 (वृ ४)।

गुरुगुरु वि [वि] धार्मिक विरोधित (वि २,
 १ ३)। वृत्त १)। २ पुत्र नम्र, कणूक 'गुरुगुरु'
 धार्मिक (वृत्त)।

गुरुगुरु की [वि] १ शुद्धाङ्ग। २ नम्र,
 कणूक। ३ स्वर-विरोध (वि २ १ १)।

गुरुगुरु की [गुरुगुरु] १ नम्र की धार्मिक
 (वृत्त)। २ नम्र का धार्मिक (वृ १ १)। ३
 धार्मिक विरोध धार्मिक विरोध (वृत्त)।
 (वृत्त)। ४ नम्र का धार्मिक (वृ १)।

गुरुगुरु वि [वि] धार्मिक शुद्धाङ्ग का
 शुद्धाङ्ग (वृत्त)।

गुरुगुरु पु [गुरुगुरु] शुद्धाङ्ग, शुद्धाङ्ग (वि २,
 २२)।

गुरुगुरु केको गुरुगुरु = उद्धा + नम्र। शुद्ध
 शुद्धाङ्ग (वि ४ १४४)।

गुरुगुरु शक [गुरु + नम्र] उद्धा
 कला वृत्त करता। शुद्धाङ्ग (वि ४ ११६)।

गुरुगुरुगुरु वि [गुरुगुरु] उद्धा नम्र शुद्धाङ्ग,
 उद्धाङ्ग (वि २ २१ कुमा)।

गुरुगुरुगुरु वि [वि] धार्मिक से वृत्तित (वि
 २ २१)।

गुरुगुरु केको गुरुगुरु। शुद्धाङ्ग (वृत्त)।
 नम्र गुरुगुरुगुरु (वि २२८)।

गुरुगुरुगुरु केको गुरुगुरुगुरु (वृत्त)
 गुरुगुरुगुरु (वृत्त १ ३ ११६)।

गुरुगुरु वि [वि] धार्मिक शुद्धाङ्ग शुद्धाङ्ग,
 (वि २ २२)।

गुरुगुरु पु [गुरुगुरु] शुद्धाङ्ग (वृत्त)।
 शुद्धाङ्ग वि [गुरुगुरु] धार्मिक-विरोध
 धार्मिक (वृत्त १ १—नम्र ३)।

गुरु केको गुरु = पुत्र। शुद्धाङ्ग (वृ ११)।
 'गुरुगुरु केको गुरुगुरु' धार्मिक-विरोध
 (वृत्त)।

गुरुगुरुगुरु [वि] केको गुरुगुरुगुरु (वृ १७)
 गुरुगुरु वि [गुरु] धार्मिक शुद्धाङ्ग (वृ ३,
 ४—नम्र ११६)।

गुरुगुरु वि [गुरुगुरु] १ धार्मिक, धार्मिक
 धार्मिक (गुरु १ २३ वृत्त १)। वृत्त १

३)। २ नम्र, धार्मिक नम्र (वृ १ ११ टी)।
 'गुरुगुरु कर कर्म'

गुरुगुरुगुरु धार्मिक-विरोध।
 गुरुगुरुगुरु विरोध

गुरुगुरुगुरु धार्मिक-विरोध।
 गुरुगुरुगुरु विरोध

गुरुगुरुगुरु धार्मिक-विरोध।
 गुरुगुरुगुरु विरोध

गुरुगुरुगुरु धार्मिक-विरोध।
 गुरुगुरुगुरु विरोध

गुरुगुरुगुरु धार्मिक-विरोध।
 गुरुगुरुगुरु विरोध

गुरुगुरुगुरु धार्मिक-विरोध।
 गुरुगुरुगुरु विरोध

गुरुगुरुगुरु धार्मिक-विरोध।
 गुरुगुरुगुरु विरोध

गोडी की [गोडी] डूब की बनी हुई मरिच,
डूब का चक्र (हृ २)।

गोडू बि [गोडू] १ डूब का बना हुआ। २
मरुद, मोठा (मय १८ १)।

गोडू [बू] रेको गोड (मुण्ड १२)।

गोप पु [बू] १ छापी (बि २ १ ४)। २
बेल वृक्ष, बनीबर् (बि २ १ ४ बुमा
है २ १७४ सुपा २४७ बीन बर १ १;
भावा २ १ १; ल १ ४ बिपा १ १)।

इम बि [बू] गाय बासा दीपों का
मासिक (मुपा २४७)। ४ पुकी [पठि]
दीपों का मासिक, बी बासा (मुपा २४७)।

गोण (शी) पुन [गो] बैक 'गोणो गोण'
(पह ८८)।

गोप पि [गोप] १ डूब लिपल डूब-मुक
कपास (बिपा १ २) बीन)। २ धरपात
कमुच्य (बीन)।

गोपलभा की [गवाहता] पैपा, गाम (मुपा
४५१)।

गोपल १ पुन [बू] बिप का बीजार रखने
गोपलपय का बीजा (ज १ १ स ४४७)।

गोपल पु [गोपल] धर की एक बाति
छय-रहित धर की एक बाति (पह १
१; ज ४ ४ १)।

गोपा की [बू] काक, पैपा यऊ (पह)।

गोपिक पु [बू] गो-सुह, बीनों का सुह (बि
२ १० पाप)।

गोपिप बि [बू] बीनों का व्यापार (ब १ १)।

गोपी की [बू] पाप पैपा (बीन २ १ भा)।

गोपू रेको गोप = दीप (कम्य छापा १
१—पह १७)।

गोपिहापी की [बू] गोपिहापनी कोल्ला
पी की बछरी (हंडु १२)।

गोप पु [गोप] १ पर्वत पहाड़ (पा १ ४)।
२ न नाम धर्मिनाल पाख्या (सि १३,
१)। ३ कर्म-क्रिये बिसे प्रभाव से
प्राणी उन्नय या नीच बाति का कल्लापा
है (ठा २, ४)। ४ पुन. गोप मंड, बुक
बाति 'घट धूमपेता पसपता' (झ ७)।

५ 'कल्लिप न' ['स्वकिप'] माय-विपरीत
एक के बने हुए के नाम का उच्चारण
(सि ११ १७)। ६ बिचपा की [बिचपा]

बुल-बेरी (पा १४)। ७ 'सुसिया की
['स्वकिप'] बनी-क्रिये (पण्ड १)।

गोप पुन [गोप] १ पूर्व बुक के नाम से
प्रसिद्ध पत्रपत्र—संघति (सि ४१ बुक
१ १६)। २ बि बापी का चक्र (मुप
१ ११ २)।

गोपि बि [गोपि] समान गोपबाता,
डूबको स्वजन (मुपा १ २)।

गोपि रेको गोपि (स २४२)।

गोपिप बि [गोपि] समान गोपबाता
स्वजन भाई-बहन (पा ७)।

गोपुम रेको गोपुम (हृ)।

गोपुमा रेको गोपुमा (हृ)।

गोपुम पु [गोपुम] १ बाखरू बिज-
गोपुम २ बि का प्रयम-क्रिय (स १३२
सि २ ८)। २ बैलवार नामपाय का एक
दासत-पर्वत (स ११)। ३ न. मालुगोट
पर्वत का एक बिहार (बीन)। ४ कोसुम-
रुल (स १३८)।

गोपुमा की [गोपुमा] १ बायो-क्रिये
पर्वत पर्वत पर की एक बाटी (झ १ १)।
२ शोरे की एक प्रयम-क्रिय की चबपापी
(झ ४ ३)।

गोपा की [बू] गोपा नदी-क्रिये गोपापी
(पह)। १ १३१)।

गोपा पु [गोपा] १ म्नेन्ड रेको। १ गोप
रेको ना बिपरीत ममुच्य (पह)।

गोपा की [गोपा] गोह, हाव से कल्लेपली
एक साप की बाति (पह १ १ छापा
१ ८)।

गोप रेको गोप (छापा १ ११—पह
२ १)।

गोपु रेको गोपु (ज १ १ धर्म १८२)।

गोपु रेको गोपु [गोपु] बीनों को
बाले की बाह (छापा २ १ २)।

गोफया की [बू] गोफन पत्तर केने का
फल-क्रिये (पह)।

गोमहा की [बू] रेको गुल्ला (बि २ ११)।

गोमाम पु [गोमाम] गुल्ला बिहार, गोमह
गोमाह (पाट—मुण्ड १२)। १ १११।

छापा १ ४ स २११ पाप)।

गोमाणसिया की [गोमानसिप] शय्या
बर स्वाल-क्रिये (बीन १)।

गोमाणसी की [गोमानसी] ऊपर रेको
(बीन १)।

गोमि १ बि [गोमि] बिपके पाठ ब्लेक
गोमिप १ पी हो बहु, (मणु ११२)।

गोमिप रेको गोमिम (पह)।

गोमिप [बू] रेको गोमा (मणु २१२)।

गोमिप (मा) [गोमिप] संमानित (पह
१ १)।

गोमा की [बू] कल्लुपा बीमिय बणु
क्रिये (बी ११)।

गोमुह पु [गोमुह] १ पक-क्रिये मयपल
अपमरेक का शासन-स्थ (सि ७)। २ एक
मयपल कीप क्रिये। ३ गोमुह-बीन का
निमसी ममुच्य (ठा ४ २)। ४ न. उपमेवत
(बि २ १८)।

गोमुह की [गोमुह] बाध-क्रिये (मणु
पह)।

गोमुह की [गोमुह] बाध-क्रिये (पह ४१
मणु १२८)।

गोमुह पु [गोमुह] एक की एक बाति
गोमुह १ छापल (मुमा ७ ल २)।

गोमेह पु [गोमेह] १ पक-क्रिये मयपल
मोमप का शासन-स्थ (सि ८)। २ पक-
क्रिये बिसेपी की का बर बिपा बाता है
(पह ११ ४१)।

गोमिम पु [गोमिम] कोउलल नगर
छक (पह १ २)।

गोमि रेको गोमी (पह)।

गोप रेको गोप (स ११ कम्य १)।

गोपा बि [गोपा] धरने बुक की उच्च
मालेबाता बंधिपानी (पापा)।

गोप न [बू] उकुवर—दुहर बरीह का फल
(पाप १)।

गोप न [गोप] मीन, बाफ-संयम (मुप १
१४ २)। १ ४ ५ [बाफ] मीन-मुक
बचन (मुप १ २, २७)।

गोपम पु [गोपम] अति-क्रिये (ठा ७)।

२ बीन रेको (बीन)। ३ न. गोप-क्रिये
(कम्य ठा ७)।

कनक गोमिर्छत (मुद्रा ११७) सुर ११
११२) प्रासु ११) ।
गोप } पुं [गोप] वीरों का पक्षक ग्वाला
गोपप्र } गोपाल (आ ७) रे २ १८८
कम्प) । "जिरि पुं [गिरि] पर्वत-विशेष
"श्रीशक्तिपिण्डप्रतिष्ठापनविशेषात्मकपारम
रथ" (मुद्रि १) ॥ १८७) ।
गोपहृद्य रेवो गोपहृद्य (वि २११) ।
गोपण न [गोपण] १ प्रणय । २ विनाय
(आ २८) उप ११७ टी) ।
गोपहृद्य पुं [गोपहृद्य] १ पर्वत-विशेष (वि
२११) । २ प्रम विरोध (पञ्च २ ११२) ।
गोपय वि [गोपय] क्षिप्रगता, क्षीप्रगता
(संक्षेप १४) ।
गोबर पुन [ग] गोबर, गोमय गो-विष्टा (वि
२, १६) उप ११७ टी) ।
गोबर पुं [गोबर] १ गोबर देहा का एक पाँच
सौतन-स्वामी की बगमनुमि (आल) । २
बहिष्-विशेष (उप ११७ टी) ।
गोबर न [गोबर] १ गोबर गोबुध गोवीरों
का समूह "रिच गोबरा" (मुद्रा ४११) ।
२ गोप-विशेष (पुन १) ।
गोपकायन रेवो गोपकायन (पुन १) ।
गोपकिय पुं [गोपकिय] ग्वाला गरीर
(मुद्रा ४११) ।
गोपक पुं [गोपक] गोप-विशेष (पुन १
१६ टी) ।
गोपकायन वि [गोपकायन] १ गोपक गोप
में ऊपय २ न. गोप विशेष (इक) ।
गोपा पुं [गोपा] वीरों का पालन करने-
वाला, ग्वाला (प्राय) ।
गोपाय चक [गोपाय] १ क्षिप्रगता । २
उपय करना । क. गोपायं (उप ११७) ।
गोपाय पुं [गोपाय] वी पालनेवाला, ग्वाला
गरीर (वि २ २८) । गुजरी की [गुजरी]
गोप उपरान्ती गोप-विशेष बुनपठ के
गरीरों का सौत (कुमा) ।
गोपायन पुं [गोपायन] ऊपर रेवो (पठन
२, १६) ।

गोपायि पुं [गोपायि] ग्वाला गोप
गरीर (मुद्रा ४१२, ४१३) ।
गोपायि की [गोपायिनी] गोप-की गरीर-
रि ग्वालि (मुद्रा ४१२) ।
गोपायि पुं [गोपायि] गोप गरीर,
ग्वाला (मुद्रा ४१३) ।
गोपायि की [गोपायि] गोप-की गोपी
गरीरि (आपा १ १६) ।
गोपायि की [गोपायि] बली-विशेष (पण्य
१) ।
गोपायि वि [ग] प्रमत्ताक, गरीर गोपनेवाला
(वि २, १७) ।
गोपायि वि [गोपायि] १ क्षिप्रगता मुद्रा । २
रिगत (सुर १) उप ११२) ।
गोपायि की [गोपायि] गोपायि गरीरि
(मुद्रा का ११४) ।
गोपायि पुं [गोपायि] १ स्वगाय-क्याप एक
गोप-विशेष प्रमत्ताक । २ एक गौतमि
(पंचय स्थिति) ।
गोपायि पुं [गोपायि] १ विष्णु कृष्ण । २
एक गौतमि (ठा १) । "विष्णुपुत्रि की
"मिर्छि" इस नाम का एक गौतमि
प्रमत्ताक (मुद्रा ११) ।
गोपायि न [ग] कच्छक गोली (वि २ १४) ।
गोपी की [ग] बाबा, कया कुमायि सकरी
(वि २, १६) ।
गोपी की [गोपा] गोपायि, गरीरि (मुद्रा
४१३) ।
गोबर [ग] रेवो गोबर (उप १११) ११७
टी) ।
गोस पुन [ग] प्रमत्ताक, प्रमत्ताक (वि
२ १६) उपय कच्छक बर ६ पंचय २
पाम पद : उप ४) ।
गोसियि पुं [गोसियि] गोपायि गरीर
(उप) ।
गोसियि पुं [गोसियि] प्रमत्ताक प्रमत्ताक
(वि २, १६) पाम) ।

गोसियि वि [ग] मुर्छ, वेवकृष्ट (वि २ १७
पद) ।
गोसाय पुं, न [गोसाय] १ वेव-विशेष
गोसायन (पञ्च १८ १२) । २ पुं प्रमत्ताक
गोसाय का एक प्रिय विरले गीते प्रमत्ता
प्राचीनिक मत ग्वाला का (आ १२) ।
गोसायि की [ग] १ कया बापोंका
(पुन्य १२) । २ मुर्छ-नमनी (गाठ—पुन्य
७) ।
गोसियि वि [ग] प्रमत्ताक प्रमत्ताक-संयन्त्री
(उप) ।
गोसियि न [गोसियि] प्रमत्ताक-विशेष बुनपठ
कच्छक-विशेष (पण्य १ ४-१३) कया सुर ४
१४) उपय) ।
गोस पुं [ग] १ गोपायि मुद्रिया (वि २ ८६) ।
२ मत्, मुम गोसा (वि २, ८६) महा) ।
३ मत्, उपयि (उप १२१) । ४ क्षिप्रगता
मुद्रि (उप १ ११२) । ५ पुन्य बावनी
मुन्य (पुन्य १७) ।
गोस पुं [ग] गोपायि विष्णु कृष्ण (मुद्रा
१ १६) । २ वि गोपायि प्रमत्ताक गोपायि
गोपायि (मुद्रा २ १६) ।
गोसा रेवो गोसा (वि २ ७१) उप ८३) ।
गोपायि की [गोपायि] १ गोपायि, बल
बलु-विशेष (सुर १ १८६) । २ उपय की
एक बलि (बीज १) । ३ गोपायि-विशेष
(पण्य) ।
गोबर [ग] गोपायि गोपायि गोपायि (वि २ १६) ।
गोबर पुं [गोबर] प्रमत्ताक-विशेष गौतमि (कय)
गोबर } पुं [गोबर] बलु-विशेष गोपायि
गोबरय } की उपय का गोपायि (पञ्च ४८,
१२३ ११) ।
गोस रेवो गोस = पद (गोस) ।
गोपायि रेवो गोपायि = पण्य (पण्य १६) ।
गोपायि रेवो गोपायि = पण्य (मुद्रा) ।

पडापडी की [दे] मोड़ी, सभा मरहमी (पर)।

पडापड सक [पन्स] १ बगाना। २ बनगाना। ३ संयुक्त करना मिताया। बगान (हे ४ १४)। संह पडापिठा (पावस)।

पडि कि [पडिम्] पडापा (पसु १४४)। पडि की [पटी] रेको पडिभा = कटिका (प्रासु १२)। संतय, मस्तय न [मायक] छोटे बड़े के धाकार का पात्र-विशेष (पञ्च क्म)। जंत न [वाम्प] रेंट, रेंट पापी निकलने का कस्त (पास)।

पडिअ कि [पडिअ] १ हुन निमित्त (पास)। २ संवत्त संवत्त पिट, मिता हुमा (पास स १२४) घोषा महा)।

पडिअपडा की [दे] मोड़ी मरहमी (रे २ १२)।

पडिआ की [पडिआ] १ द्यौय पडा बगनी (बा ४६ भा २०)। २ बड़ी मुहूर्त (धुपा १ ५)। ३ समय बतानेवाला कल कटी-मल पडी (पास)। छय न [ज्य] मस्यगुह, बह्या बजाने का स्वात (गुर ७ १०)।

पडिआ रे की [दे] मोड़ी, मरहमी (पड पडी) रे २ १२)।

पडिआ रेको पडिआ (धुप १ ४ २ १४)। पडी की [पटी] रेको पडिआ (स २ १२८ प्राक)।

पडुक्तय पु [पटोरक्य] सोप बा पुन (हे ४ २६६)।

पडुटमस कि [पटोरमस] १ कट मे ठपस। २ पुं श्रुति-विशेष धर्मस्य भुति (मार्)।

पडन [दे] बुहा, टीमा लुप (पाम)।

पण पु [पन] १ मेन बारक (गुर ११ ४२ प्रासु ७२)। २ हपीका (रे १ ११)। ३ मशिर-विशेष तीन धर्मों का पूरणा करना कैदे हो का बन पड होटा है (डा १०—पञ्च ४६९ किरे १२४)। ४ नाप का शम्क-विशेष कायागत बनेर (अ २ १)। ५ कि इड ठोस (पीप)। ६ धनिय निविड निविड साज (कुना पीप)। ७ पाइ प्रवाह, 'नामा पीर बणा ठैरि' (बा

१२० टी)। ८ मशिरय धनिक मरकट (राप)। ९ कठिन ठण्ठान-पिण्ड स्वान (की ७ डा ३ ४)। १० न. देशविमान-विशेष (सम १०)। ११ पिराड (धुम १ १)। १२ बाघ-विशेष (गुम १२)।

उडहि रेको पणोडहि (मम)। 'णिचिय कि [निचिल] धन्यन्त निविड (मय ७ ८ पीप)। तव न [तपस्] तपस्वर्ग-विशेष (उच ३)। संस पु [सन्] १ इस नाम का एक धर्मपीप। २ इस नाम निशो मनुष्य (डा ४ २)। मास न [मास] रेताम परत पर शिव विद्यावर नगर-विशेष (रक)। मुईग पु [मुईग] मेन की तख बम्बीर धावाबला बाघ-विशेष (पीप)। रह पु [रय] एक कैल भुति (पञ्च २ १६)। बाठ पु [बाय] स्वान बायु की गरक-पुमि के नीचे है (उच १६)। बाय पु [बाठ] रेको वाठ (सम की ७)। बाहण पु [बाहण] विद्यावर के राडा का नाम (पञ्च १ ७०)। 'बिरमुआ की [विमुआ] रेकी-विशेष एक विष्णुमारी रेकी का नाम (रक)। समय पु [समय] बर्षा-मल बर्षा श्रुत (कुना पास)।

पणंगुस पुं न [पनाकुस] परिमाल-विशेष सूनी से कुना हुमा प्रचणुल (पसु १२८)।

पणसंसम पु [पनसंसम] बयोशित-प्रसिद्ध योग विशेष सिमं कज या सुई बह धमका कज के बीच में होकर बाडा है बह योग (गुम १२—पञ्च २११)।

पणपनाइय न [पनपनायित] रय की बनबाहा या पडबहाइ धम्यक लम्ब-विशेष (पण्ड १ १)।

पणपाहि पु [दे] रक स्वर्गति (रे २ १ ७)।

पणसा पु [पनसार] कपूर (पास प्रवि)। 'संजरी की [संजरी] एक की का नाम (पसु)।

पणा की [पना] बराल की एक पण-महिरी इजमरी-विशेष (खामा २ १—पञ्च २२१)।

पणा की [पुजा] बजा पुक्या बरी (प्रास)।

पणिय न [पनित] पनता कर्न (गुम २ १)।

पणोडहि पु [पनोडहि] पत्थर की ठण्ड कठिन बन-समुह (धम १०)। 'वसय न [वसय] नमपाभर कठिन बन-समुह (पण्ड २)।

पण्ण पु [दे] १ सर, बलस् छाडी। २ कि ररक रंगा हुमा (रे २, १ ४)। ३ बाय मार डालने योग्य (गुम ४ २—७ पञ्च ४१)।

पण सक [क्षिप्] १ ऊँकना डालना। २ डेरणा। बतह (हे ४ १४३)। संकु- 'रंकाभो पांचऊण बरनीस' (उचम ८ २ स १४१)।

पण सक [मह] प्रहल करना। यदि बरितस (प्रयी ११)।

पण सक [गवेपय] बोबना बुँडना धनु संधान करना। बतह (हे ४ १८६)। संकु पणिय (कुना)।

पण सक [यत्] मल करना, धोपन करना। बतह (गुम २६)।

पण चि [पात्य] १ मार डालने योग्य। २ बो मार का सके (पि २८१ धुप २ ७ १ ८)।

पणय न [पणय] ऊँकना (कुना)।

पणा की [पणा] कज विशेष (पिय)।

पणापीय न [पणानिय] धन्य-विशेष (पिण)।

पणिय [दे] शीम कली (माड ८१)।

पणिय कि [क्षिप्] डेरण (स २ ७)।

पणु नि [पासुक] मारनेवाला बाठक बलाव (उच १८ ७)।

पणय कि [मस्त] पड़ीत पनका हुमा (पिड ११६)।

धय कि [मस्त] १ मलित निपसा हुमा कजवि (पञ्च ७ १ ११ पण्ड १ १)।

२ धाकार धमिमुव (धुपा १२२) महा)।

धम्म पु [धर्म] नाम परनी संताप हुन (हे १ ८७ भा ४१४)। २ पसीमा स्वेक (हे ४ १२७)।

धम्मा की [धर्मा] बहरी गरक-पुमि (डा ७)।

धम्मारी की [रे] पुण-विशेष (रे २, १ ६)।

धम्मोडी की [दे] १ मण्डक काम। २ मरक मन्थार, भुज धनु-विशेष। ३ धामणी धामक-पुस (रे २ १२२)।

पय न [पुन] की कृ (हि १ १२१ गुर ११ ११)। आसय पुं [पय] विपदा बचन की की उल्लेख मयुर से ऐना लखिमाय। पुरय (पयम)। उहृ न [किट] की का मेन (बय २)। षट्ठिया की [किट] की का मेन (बय ४)। गाल न [गाल] का वीर पूर की वनी हुई एक प्रकार की मिठाई, मिठाई-विशेष (गुरा १११)। पट्ट पुं [पट्ट] की का मेन (इह १)। पुन पुं [पुन] केर, मिठाई विशेष (उप १४२ छे)। पूर पुं [पूर] केर या मोर, मिठाई-विशेष (गुरा ११)। पुममित पुं [पुममित] एक बैन कुमि पार्ययित मुरि का एक स्थल (भाह १)। मंड पुं [मण्ड] ऊपर का की घुमार (वीर १)। मिसिषा की [मिसिष] की का वीर पुन कनु-मिसेन (का ११)। मीह पुं [मिष] की के पुन वानी बरगने बानी बर्ष (अ १)। यर पुं [वर] की विशेष (बह)। सागर पुं [सागर] मयुर-विशेष (वीर)।

पयम पुं [प] भाइ मंड, पयमा (का १२ ४ २०२ वचन ४)।

पयपुम पुं [पुनपुम] एक वैन महिष (इलक २२)।

पर पुन [पर] बर, मारा, गृह (हि २ १४४ टा १ ग्राय ०४)। कुडा की [कुडा] १ बर के बाहर की बोटरी। २ की के वीर की कुडिया (वीर १ १)। ३ की का वीर (मृ)। गोइया कान्तिमा की [गान्तिमा] नृदेवा, विरामी (मि, गुरा १४)। गोखी की [गोखी] नृ देवा, विरामी (व १ १२)। गान्तिमा की [गान्तिमा] विरामी कनु-मिसेन (१ २, ११)। जामाडय पुं [जामाडय] बर-वर्षा, मयुर पर य ही हमेशा प्यने-गला कापाला (गाला १ ११)। ख पुं [ख] ली वंशरी बरवाटी (मयुर १११)। नाय न [नामय] यानी नाम, बलविक नाम (वय)। बाडय न [पाटक] बनी हुई वनीय बला बर (वाय)। बार न [बार] बर का बरवाटी (काय ११२)। मर्या

पुं [शकुनि] पातु बलविक (बय २)। मयुवायिष पुं [समुवायिष] बाजीविक मय का मयुवायी बाहु (वीर)। सामि [स्वामि] बरका मालिक (हि २ १४४)। मायिणी की [स्वामिनी] मुद्रिणी की (वि १२)। मूर [मूर] वनीय गुर, मयुर, बर में ही बहावुटी विधानेवाला (१)।

परंगय न [गृहाङ्गय] बर का पंगय वीक (वा ४४)।

परकूकी की [गृहकू] की-वरीर (उप ४)।

परा देवी पर (वीर १)।

परमेट पुं [रे] बरक वीरया ली (१ २, १ ७)।

परपरा पुं [रे] पला का पायुवण-विशेष (अ १)।

परट्ट पुं [परट्ट] कडा बनी पल वीधने का पापाय मय (वा ४ ४७)।

परट्ट पुं [रे] परट्ट परट्ट वनी का बला (मि १)।

परट्टी की [परट्टी] छाने लो (१ १ १)।

परणी केरी परिणी। 'त बरवटि बरिष' (७२२ टा ग्राय २२)।

परयय पुं [रे] बाट्ट बरय ली (१ १ ७)।

परास पुं [रे गृहवास] नृकामय गृहवास (इह १)।

परास्य देवी परसय (लउ)।

परसि वि [गृहय] परवला गृहय (का १४)।

परिणी की [गृहया] परवली की मार्ग ली (का ७२२ टा १ १ १ गुर २ १ गुना)।

परस पुं [गृहय] ग्री वंशरी बरवाटी (का ७११)।

परिहा की [गृहिय] परवली की ली (गुना)।

परिही की [रे गृहिनी] गृहिणी ली (१ २ १ १)।

परिम पुं [परि] बरिष लय (वाय १ ११)।

परिसण न [परिष] बरिष लय (बल)।

परोइता की [रे] नृदेवा विरामी, मि १४४ (वि ११४)।

परोह न [रे] गृह-वीर-विशेष (१ २ १ १)।

परोइया } की [रे] गृह-वीर-विरामी;
परोही } पुन-ली में 'बरोही' (मय १ १ २ २ १ ४)।

पठपठ पुं [पठपठ] 'लल' बर' बायाय वीर-विशेष (वि १ १)।

पठ सक [पिपु] वेंका 'गाला, बायाय। पठय, बला (मि ४ ११४ ४२२)।

पठ वि [रे] वरुल, प्रेमी (१ २ १ २)।

पठय } पुं [रे] वीर-वीर की एक
पठयी } बली (गुन ११ ११)। उप ११ ११)।

पठिम वि [पठिम] वेंका गुना बला गुना (मि)।

पठिम वि [रे] बलि विमिष मिष गुना, पठमू लैखि बलिमी विरवामयुवामी (गुरा २४१)।

पस एक [पुपु] १ विरामी लखिमा। २ मार्ग करय सय करमा। बस (महा व)। उहृ 'मसिऊय वरिपुन' बायी पयवामिमी मय पयव' (गुर ७ १२१)।

पस वीर [रे] १ वीर हुई वीर-वला ली मुमि (पय २, १ २)। २ मुमि मुमि वीर वीर। ३ वीर मुमि (बय १ १२)।

पसय देवी बसय (गुरा १४१ १ १११)।

पसविष वि [रे] वीर, वीर (बय)।

पसणी की [परिष] वीर-वीर देवी वीर (१ १२०)।

पसा की [रे] १ वीर वीर। २ मुमि-वीर, वीर (उप)।

पसिप वि [पुपु] पिता गुना, लखिमा (बय १)।

पसिप वि [मसिप] वीर-वीर वीर वीर-वला (वीर १११ भा)।

पसी की [रे] १ मुमि-वीर वीर। २ वीर वीर वीर (उप)।

पसी की [रे] वीर वीर वीर, वीर (वाय १, १ २, १)।

धसुमर वि [धसुमर] खले की धातुबाना
बाधुक (भाङ्ग २८) ।

धाइ वि [धाविथ] बाठक मत्तक द्विमक
(गा ४४७ विसे १२१७ मय) । धम्म न
[धम्म] धम्म-विशेष गलावरण करीम
बण्ण मोहणीय बीर धम्मपय मे बार कर्म
(धम्म) । धाउक न [धनुक] धुनेक बार
कर्म (भाङ्ग) ।

धाइम वि [धाविठ] १ मारित विमारित
(णाय १ ८ उठ) । २ बगला हुपा की
शक्ति-धुम हुपा हो सावर्धरहित करणार
बारहार बाया मय केमणा मंहा' (मुर ४
२१६) ।

धाइमा की [धाविठ] १ बिल्ला करलेबानी
की मालेबानी की (ब २) । २ धाउ
हुपा । ३ धाव करना (मुर १६ १३) ।

धाइममाण } देवी धाय = इय ।
धाइयय

धाइयय देवी धाय = धायय ।

धाइर वि [धाविम] मूलवैपला (गा ८८६) ।

धाउमम वि [धनुमम] मारले की इच्छा
बाना (छाया १ १८) ।

धाउम देवी धाय = इय ।

धाउ सक [धाउ] भट होला कुठ होला ।
बाइर (पद्) ।

धाउ दु [धाउ] १ बिगना मोहार (इह
छाया १ २) । २ मलक के लीके का मय
(छाया १ ८—पत्र १११) ।

धाइय वि [धाउक] बयस निम (छाया
१ २३६ १) ।

धाइमय दु [धाउ] बलीक की एक खलि (१)
‘अ गुरु मीमगुलारगुनिबडा दुई मर कडा ।
धारदमययडा इव धरबण दे बगलीवि’
(उप ७२८ दी) ।

धाग दु [धाउ] १ धानी मोहक निम-नीक-
मय (मि) । २ धाव करी धारि में एक
बार धानने का पवित्रण (मुस १४) ।

धाग दु [धाग] धाव नाविका ‘दे धागा’
(मुण्ड १२, पत्र १४८ दी ३ २ ७१) ।

धारि दु [धारि] धारिका में होने-
बाना धर्म-विशेष धीम (धाय १८४ धा) ।

धारिणिय न [धारिणिय] नाविक, धाव
(उठ २६) ।

धाय सक [धाय] मारला मार डालना, बिनाश
करना । बहू-धायक (उठ) । बहू-धायित
रिठमहं (पत्र १ १७) । धायद
(पत्र २४ २६ विसे १७११) । कबहू-‘सि
कले बिनाशगुं कोलेछावइया धरहि कोर
सयई सजि गिई धाइममाण पमई’ (छाया
१ १८) । बहू धाइयय (पत्र १६ १४) ।

धाय सक [धावय] मरवाना हुचरे डाय
मार डालना बिनाश करना । बहू-
धावमाण (मुष २ १) । क-धाइयय (पत्र १६,
१४८) ।

धाय दु [धाव] गमन, मति (मुम १ १) ।

धाय दु [धाव] १ धाव, भोट बार (पत्र २६
२३) । २ नक (मुष १ ३ १) । ३
लगा बिनाश, हिसा (मुष १ १ २) । ४
संसार (मुष ७)

धायाग वि [धाउक] मार डालनेबाना, बिना-
शक (स २६४ मुग २ ७) ।

धायाग न [धनन] १ इच्छा मार हिसा
(मुग १४४ ३ २६) । २ वि हिसक मार
डालनेबाना (स १ ८) ।

धायन दु [धा] मलक परेया (रे २ १ ८
हे २ १०४ यड) ।

धायाग की [धनन] मारण हिसा बह
(पत्र १ १) ।

धायय देवी धायग (विसे १७११ स २६७) ।

धायय दु [धाउक] मरक-लान विशेष
(देवेर २६ १) ।

धायाग की [धाउना] १ मरवाना हुचरे
डाय करना । २ लुण्ठन मरवाना ‘बहुगम-
मवावाणहि धारि’ (विना १ १) ।

धार सक [धावय] १ धिप का फैला
धिन की धावर न बेचन होना । २ सक धिप
से बेचन करना । ३ धिप से मारना । कर्म
‘धारिबो को लयी विसे’ (स १८६) । ईह-
धारिबो (स १८६) ।

धार दु [धा] धारा, विना, दुर्ग (रे २,
१ ८) ।

धारि दु [धा] धाव, धार, एक प्रकार की
बीड़ा (रे २ १ ८) ।

धारण न [धारण] धिप की धावर से होने-
बानी बेचनी (मुग १२४) ।

धारिय वि [धारि] को धिप की धावर से
बेचने हुमा हो ‘उठयी धोयो । सम्भय
लहुषपाया विधधारिमोणुलोवि’ (उप
४४२) ‘विधा’ (१ मा) रिप्य बहू ना
यल्लभल्लकर्मणिउसीयो’ (उपर १७) ।
विधधारिमो वि धावुरीयो वि मोहण विध
ल्लिपो वि’ (मुग १२४ ४४७) ।

धारिया की [धा] मिठाव-विशेष धुमरातो में
बिने ‘धारो’ कटते हैं (मवि) ।

धार की [धा] १ लुण्ठना पश्चिम-विशेष (रे
२ १ ७ पध) । २ द्यविशेष (मि) ।

धास सक [धाव] १ पिचना । २ पीडा
करना । कर्म धास (मुष १ १३ १३) ।

धाम दु [धास] एक पशुओं को लाने का
लुण (रे २ ४३, धीर) ।

धास दु [धास] १ कबल कीर (धीर उठ
२) । २ धाव, मोहन (भागा धीर ११) ।

धास दु [धाव] बर्षण रणक ‘नो मे उगमि-
वी इह करल्लभयणेण करणपावेण’ (मुग
१४) ।

धासमणा की [धासिगगा] धावार् विषयक
गुह्य धमुरि का पक्षीमन (दीध ११८) ।

धि देवी धा । धवि विन्नाइ (विसे १ २३) ।

कर्म विनलि (शाय ४) । सङ्क धिपल
(मुग ४४६) । ईह धिप (मुग २ ६) ।

ध पिपल्ल (मुग १४ ७७) ।

धिन न [धाव] की धीव धाय (गा २२) ।

धिम वि [धा] धारिबो विगल्लय धनवीरिन
(रे २ १ ८) ।

धि’ } दु [धीम] १ धरपी की श्रुत, धीम
धिसु नाम ‘धिविधिल्लान’ (धाय ११
धा उठ २ ८ वि १ १ १) । २ धरपी
धविगत (मुष १ ४ २) ।

धिट्ठि वि [धि] धुम्य हुका (रे २, १ ८) ।

धिट्ठि वि [धुव] धिगा हुमा, रनगा हुमा (मुग
२७ १ मा १२६ धा) ।

धिया की [धा] १ उड्डा धरवि । २
हवा धनुमगा (रे १ १२८) ।

धिणिङ्ग वि [धुवाय] धुवागता नद
उठ करलेबाना (मि १७१) ।

पिस (पय) वि [पिस] पंका हुमा गला हुमा (महं)।
 पिसुमज वि [महीसुमनस्] बहउ करने की इच्छावाला (हुमा २ ६)।
 पिसण } बेहो दि।
 पिस्य }
 पिस सक [मस्] प्रथा निपतना मलाय कला। पिसर (हे ४ २ ४)।
 पिसरा की [वे] मन्त्री पदवने का बाल-विशेष (पिया १ न—पय २३)।
 पिसिअ वि [मस्] कबलित निगला हुमा गलित (हुमा ७ ४४)।
 पुं पुं [वे] ऊपर, इन डेर समुह (हे २ १ ६)।
 पुं पुं [वे] इत एक बार पीने योग्य वाली पानि (हे ४ ४२४)।
 पुय } (पय) पुं [पुयिअ] कर्म-विशेष।
 पुयिअ } कबर की बिठा (हे ४ २२१ हुमा)।
 पुपुअय न [वे] बेर, वनसीक परियम (हे २ ११)।
 पुपुअर पुं [वे] मरुहक नेक मेरुह (हे २, १ ६)।
 पुपुअसुम वि [वे] मिश्रक हीकर कय हुमा (वर)।
 पुपुअसुसय न [वे] समरक बचन समरक-पुअ मन्त्री (हे २ १ ६)।
 पुपुअपुअय पक [पुपुअय] 'पु' धारण करता हुमा का जन्म का बीजना।
 वक-पुपुअपुअय (परम १ २, १६)।
 पुपुअय पक [पुपुअ] ऊपर बेहो। वक पुपुअय (छाया १ न—पय १११)।
 पुपुअ पुं [पुअ] जिने हार पाय की किले का लकर (सिअ १४)।
 पुपुअयिअ न [वे] प्याइ की बड़ी रिता (हे २ ११)।
 पुपु वि [पुअ] बोधित कीं की धारण से बाहिर किया हुमा (परम ३, ११५ अदि)।
 पुपुअ पक [गर्ज] बरना, पबीरन करम। पुपुअ (हे ४ १६१)।
 पुअ पुं [पुअ] कल-पकक कीर, पुअ (आ ४, १) सिअ ११४)।

पुअहुजिआ } की [वे] कसोपकलिका
 पुआहुजी } कालकसी (हे २ ११ ; महा)।
 पुयिअ वि [पुयिअ] कुणों से विठ हुमा हुमा (वह १)।
 पुय्य बेहो पुय्य। वक पुय्यत (गद)।
 पुयिअम वि [पुयिअ] १ हुमा हुमा। २ भाव मरका हुमा (हे ५, ४६)।
 पुयिअ वि [वे] ज्येष्ठ धर्मोपि कोना हुमा (हे २ १ ६)।
 पुअ } बेहो पुय्य। हुमा (सिअ)। वक पुअ } पुअत (पय १ ३)।
 पुअमुयिअ वि [पुअमुयिअ] १ जिसने 'हुम' हुम धारण किया हो वह। २ न. 'हुम-हुम' अति 'महुरम-महुरम-मुमिअरन-हुम' (हुमा १)।
 पुअय पक [पुअ] हुमा का बजकार छिटा। हुमा (हे ४ ११७ वर)। वक-पुअयत पुअयम (हेका ३३) छाया १ ६)। वक पुमिअय (महा)।
 पुअय न [पुअय] बजकार प्रमदा (हुमा)।
 पुअयविअ वि [पुयिअ] हुमाया हुमा (वका १२२)।
 पुमिअय वि [पुयिअ] हुमा हुमा वक की वर छिटा हुमा (हुमा १४)।
 पुमिअर वि [पुयिअ] हुमेलता छिरेलता, बजकार हुमेलता (ज पु १२) पय १ ; वर)।
 पुय्य पुं [वे] एक वर का लकर, जो पाय बंदी की विपदा करने के लिए वर पर किया जाता है। लकर या बन्धी (पिय)।
 पुअर बेहो पुअर। वक पुअरत (का ११)।
 पुअय पक [वे] हुकता हुकता बरना। 'हुकति बरना' (महा)।
 पुअर पुं [पुअर] हुअर पाय की धारण (छिटा ६)।
 पुअर पक [पुअय] हुअरपक, 'हुअर' धारण करना, व्यास बंदी का बीजना। हुअरपक (सि १३)। वक पुअरपय (हुमा १ ३)।

पुअरि पुं [वे] मरुहक, मेरुह नेक, वेन (हे २, १ ६)।
 पुअर पुं [वे] बेहो पुअर। हुअर (महा)।
 पुअर } वक पुअरम (महा)।
 पुअ बेहो पुअ। हुअर (हे ४ ११७)।
 पुअि की [वे] हाथी की धारण कर-रम (विअ)।
 पुअय पक [पुअय] 'हुम-हुम' धारण करना। वक पुअयअम (सि १२५)।
 पुअि वि [पुयिअ] बजकार हुमा हुमा (हुमा)।
 पुअ की [वे] कीट-विशेष। द्वितीय जन्म की एक बधि (पय १)।
 पुअय बेहो पुअय (हुमा)।
 पुअय पक [म] मन्त्री विरोधना। हुअर (हे ४ १२१)।
 पुअयिअ वि [मयिअ] मयिअ विरोधित (हुमा)।
 पुअि न [पुअ] हुअर पुयिअ इअ-विशेष मेरुह (हे १ १२५)।
 पुअि वि [पुअय] हुअरपक, हुअर-पुअ (हुमा)।
 पुअिअ वि [वे] ज्येष्ठ धर्मोपि (हे २ १ ६)।
 पुअि न [वे] वर पुअ (वर)।
 पुअिअर न [वे] धरलता निहा के वर-धर में लगाने के लिये लगाया जाता जन्मपति का निहा, जलन (हे २ ११)।
 पुअ बेहो पुअय। वक-पुअयत पुअयिअ (सि १२५) १२४)।
 पुअय न [मयन] विरोधना (सि १ २)।
 पुअ पुं [पुअ] कल, लक, पकि विरोध (छाया १ न परम १ १ ६)। की पुअ (पिया १ ३)। रि पुं [रि] कल, कीय बामय (वक)।
 पुआ पुं [पुआ] रलाम-क्यात धर्मोपि-विशेष धर्म-विरोध (महा १)।
 पुअ की [वे] १ वर, वी। २ लकर, लकर का लकर विरोध 'वकय का पुअ की कल' (पुअ २, २, ४२)।
 वे बेहो गद = वह। वेर (वर)। अति

बेन्ड (विने ११२७) । कर्न बेन्ड (हे ४ २२६) । कण्ड- पोप्य, पोप्यमा (गा २२१ म्मा स ११२) । छंड घेऊण, घक्कण घक्कम्, बेसुआण, घेसुआण घेसुण घेसुण (माठ—मालती ७१ वि २८४ हे ४ २१ वि ७७ प्रार) । हेक्, घेसु, घेसुण (हे ४ २१ पम्मा ११८ २२) । ह बेसक (हे ४ २१ प्रार) ।

बेउर पुन [हे] बेउर, कउपूर, मिठास-विरोप 'छा मण्ड निपेदेहि' ह बपेउरमोयण समान-कुण्ड (मुपा ११) ।

बेक्कण देवा प ।
घलमग वि [महीतुमनस्] ब्रह्मण्णले की बन्धनवत्ता (पम्मा १११ १६) ।

घण्ण }
भर्प्य } बेको बे ।
घण्णमाग }

घवर [हे] बेको घउर (हे २ १ न) ।
घोह } एक [पा] पीता, पाव करता ।
घोहय } घोह (हे ४ १) । बङ्क. घोह
यंत (स २१) । हेह घोहिन (मुपा) ।

घोह बेको घुम्मा । घोह (हे २, १) ।
घोह } पुंकी [पोट क] बीड़ा प्रध
घोहय } हय (हे २, १११ पम्मा २२)
घोहय } ज्वा, ज्वा २ न) । २ पुं काबो-
ल्लां का एक रोप (पम्मा २) । रक्कला पुं

[रक्कल] घण्णल घासि (ज १६० टी) ।
ग्रीष [मीन] घण्णो-नामक प्रसिध्दमुद्देम
वृक्षविरोप (घावम) । मुह न [मुक]
बैनेउर शाक-विरोप (घण्ण) ।

घोसिय पु [हे] निन बसस (हृ २) ।
घोडी की [घोटी] १ घोड़ी । २ हउ-विरोप
'वीनकिवीनिकुवकउरउरउरविरोप' (स २२६) ।

घाज न [घोय] नौके की नाक (उस) ।
घोयस पु [घोयस] एक प्रकार का घाँस
(पम्मा १६, १७) ।

घोया की [घोण] १ नाक नासिका (घाम) ।
२ नौके की नाक । ३ घुपर का मुक-प्रदेष्ट
(स २४ मउर) ।

घोर मक [घुर] पिता में 'हुल-हुल' धावान
करता । घोरिय (गा ८) । बङ्क घोरिय
(स ४२४ ज १ ११ टी) ।

घोर वि [घे] १ मारिय विनासित । २ पुं
कीष पक्षि-विरोप (हे २, ११२) ।

घोर वि [घोर] मयंक, मयलक विकट (घुप
१ १ १ मुपा १४१; घुर २ २४१; प्रामु
११६) । २ निर्दम निष्ठुर (घाम) ।

घोरि पु [हे] ठक्क-पयु की एक बाँधि (हे
२ १११) ।

घोख देको घुम्मा । घोख (हे ४ ११७) ।

बङ्क घाल्ल (कम्पा गा १०१ मुपा) ।

घोख एक [घोखम्] १ घिसना, रगड़ना । २
निमाणा (विने २ ४४ स ४ २२) ।

घोस न [घे] कान्हे से बाला हुपा बही (पम्मा
१११) ।

घोसज न [घोसज] बरेंण रण (विने
२ ४४) ।

घोसगा की [घोसगा] गल्लर बीछ का पानी
की रण से मोलाकार होना (स ४७) ।

घोसबड } न [घे] एक प्रकार का बाप
घोसबडय } इय बहीबड़ा (पमा ११; भा
२; मुपा ४२१) ।

पाळबिज वि [घाखि] मिथित क्रिया हुमा
मिनामा हुमा (स ४ २२) ।

पोसिअ न [घे] १ शिलावत । २ हउ-कूट
बलाकार (हे २, ११२) ।

पोसिअ वि [पुयिअ] बुझमा हुमा (पम्मा) ।
पोसिअ वि [पुयिअ] घण्णल तीन 'धक्क-
रिक्को' जवियु धरैण भेसियो' (मुह २
११) ।

पोसिअ वि [घोसिअ] घाय को तरह मोला
हुमा (घुप २ १ ११) ।

पोसिअ वि [घासिअ] रणगा हुमा यंत्रित
(वीन) ।

पोसिर वि [घुयिअ] नूलेवत्ता चक्ककर
किलेवासा (गा ११८ स २७७ मउर) ।

पोस एक [घोयस] १ घोपणा करना ठंडी
धावान से बाहिर करना । २ मोलना ठंडी
धावान से घम्यसण करना बोर-बोर से बीस
कर पड़ना वा छटना । पोसइ (हे १ २६
प्रामा) । प्रमो पोसायेइ (पम्मा) ।

पोस पु [घोय] १ ठंडी धावान (स १ ७-
कुमा गा २४) । २ धामीर-पक्षी पक्षीको का
मझा घडोर टोली (हे १ २६) । ३ मोल
पीछी का बाड़ा (ज २ ४-पम्मा १६; पाम) । ४
स्तवितकुमार बेवों को घिसल बिता का हउ
(ठा २ १) । ५ घास घासि स्वर विरोप
(बव १) । ६ म्मुगाइ (मा ६ १) । ७ न
बेच-विमल विरोप (घम १२ १७) । सेण
पुं [सेन] साठवें बापुदेव का पूर्वजन्म का
बर्मे-भुक् एक बीन मुनि (पम्मा २ १७१) ।

पोस न [घोय] लगातार ग्याइ बिनों का
जपना (सीवो २८) ।

पोसज न [घोयज] १ ठंडी धावान (विह
१) । २ घोसला बिघोप पिठवाकर बाहिर
करना (घाम) ।

पासगा की [घोयगा] ऊपर बेको (छामा
१ ११ मा २२४) ।

पासय न [घे] बरेंण का बप बरेंण रखने
का चक्कण-विरोप (यंत) ।

पोसाइ की [घोपायकी] लठ-विरोप
(पल्ल १७—पम्मा २१) ।

पोसाबिआ बेको पोसाई (पम्मा १११) ।

पोसाई } की [घे] राए म्मुन में होले
पोसाई } बाली बवम-विरोप (हे २, १११
पम्मा १—पम्मा ११) ।

पोसावग न [घोयग] मोसला बौली वा बुयो
पिठवा कर बाहिर करना (ज २११ टी) ।

पोसिअ वि [घोयिअ] बाहिर बिना हुमा
(बव) ।

च

च घ [च] घक्का घा 'चसो विस्मये' (घ १ ४४)।

च पु [च] चकु-चामी चकन-चतु-चिरेन (मात्र प्राप्ता)।

च घ [च] इन घर्षों में प्रयुक्त किया जाता घस्य—१ घोर, तथा (दुमा हे २ २१७)। २ गुन फिर (कम्म ४ २१; ११; प्रमु १)। ३ घबराहू निरुद्ध (घ ११)। ४ नेत्र चिरेण (निहु १)। ५ अतिष्ठ घाभिम्य (घाभा निहु ४)। ६ अमुमि लम्पति (निहु १)। ७ पाक-मूर्ति पाक-मूर्ण (निहु १)।

चमा की [त्वक्] चमरी त्वा (बह)। चइम वि [हकिट] मो सनई हुमा हो टाछ (घ १ ११)।

चइम रेको चविज (पठन १ १ १२६)।

चइम वि [यत्त] मुक्त, परिष्कृत (दुमा ४ ४६)।

चइम वि [स्याकित] कुत्रामा हुपा, मुक्त करवा हुमा (वीन १११)।

चइम रेको चय = चय्।

चइम रेको चु।

चइम रेको चइम (च १)।

चइम } रेको चय = चय्।

चइम रेको चु।

चइम रेको चइम (हे २ ११ दुमा)

चइम पु [चित्र] माभ-चिरेण चैव माघ (हे १ १२२)।

चइम रेको चु।

चइम वि [चकिट] चीत संकिट (पवि २११)।

चइम रेको चु।

चइम वि [चतुर्] चार, संस्कार-चिरेण ४ (पठन ४ ११)। माहीस चीन [चत्वारिण] चौपासी ४४ (वि ७२, ११६)। चइम न [चाहा] चारों पिया (दुमा) चइम की [चाही] चौपासी, चौक

चौकटा द्वार के चारों ओर का चतुर् द्वार का चीना (निहु १)। 'चोय वि [चोय] चार चौकाला चतुर्ण (शामा १ ११)। ग

न रेको चउक = चतुर्ण (६ १)। गइ की [गति] मरक तिर्वन् मज्जुम चौर रेव की

वीनि (कम्म ४ १६)। गइम वि [गति] चारों वृत्ति में प्रसर करवाला (मा १)। गामज न [गामन] चारों

किताएँ (कम्म)। गुज गुज वि [गुण] चौकटा (हे १ १७१ पय)। चचा की

[चत्वारिण] संस्कार-चिरेण चौपासीस (च)। चउप पु [चउप] चौपासी चार

पैर के चतु, पुण (अ ७१ टी मुवा ४ १)। 'चइ पु [चइ] चिवाचर बंग के एक राजा

का नाम (पठन २ ४२)। इ रेको त्व (हे २ ११)। हागचकिम वि [स्थान-पठित] चार प्रकार का (अ)। जउइ की

[नचति] संस्कार-चिरेण चौकाले १४ (वि ४४६)। जउम वि [नचत] चौक-नचत, १४ नों (पठन १४ १ १)। जउइ

रेको जउइ (अ २७) या ४४)। जउ (अ)। रेको पम (चि)। तिम 'वीस न [चिंरा] चौक १४ (पठन वीप)।

वीसइम रेको वीसइम (पठन १४ ११)। वीसा की रेको वीस (आक)। चाकीस वि [चत्वारिण] चौपासीस ४४ नों

(पठन ४४ १)। वीसइम वि [चिंरा] चौकाला १४ नों (अ)। १ न, चौक चिंरा का चत्वारण उपवास (शामा १ १—

पठ ७२)। तव वि [य] १ नीला (हे १ ७१)। २ पुंन, उपवास (अ)। 'त्वचइम पुन [चतुर्] एक एक चत्वार

(अ)। त्वमच न [चमच] एक लिंग का चत्वारण (अ)। त्वमचिय वि [चमचि] चिरेण एक चत्वारण किया हो

नइ (पठ २ १)। 'विमंगल न [धीम-जुल] चतु-चर के समान का चतुर् विन

चिरेण चत्वारण चत्वार चपने चत्वार काटा है नीयप (मा ४४६ म)। 'त्पी की [पी

१ पीपी। २ चंद्रहास-चिपीक, चतुर् विचिच (अ ४)। ३ चिचि-चिरेण (अ १)। 'चैत रेको 'चैत (अ)। दस वि च [दरा] चत्वार-चिरेण चौक (अ २ की ४४)।

'दसपुमि पु [दरापुमि] चौक दस चत्वारों का चत्वारण पुमि (वीन २)। दसम वि रेको दसम (शामा १ १४)। दसवा

म [दसवा] चौक प्रसर वे (अ १)। दसी की [दरी] चिचि चिरेण चतुर्ण (अ ७१)। दैत पु [दय] ऐपच

एक का हावी (अ)। 'दस रेको दस (अ)। 'दसपुमि रेको दसपुमि (अ ४ ४)। दमम वि [दम] चौकाला, १४ नों (पठन १४ ११८)। २ पुंन का

चार चत्वारों का चत्वारण (अ)। 'दसी रेको दसी (अ)। 'दसुत्तरसय वि [दसुत्तरसय] एक ही चौकाला १४ नों (पठन १४ ११)। 'दइ रेको

दम (वि ११६ ४४१)। दसी रेको दसी (अ)। 'दसि वि [वि] चत्वारों की चत्वार, चारों चत्वारों में (अ ४ म ४ २)। 'दा म [दा] चार प्रकार के (अ)। 'माय न [मानि] मति

मुक्त चत्वारि चौर मत-पर्यंत जान (अ म)। नाचि वि [मानि] मति चत्वार चार चत्वारण (मुवा ४१ १२)। पठन रेको पठ। पमइम वि [पमा] चौक

चौपासी ४४ नों। २ न, चत्वार चत्वारि चिंरा का चत्वारण (शामा २—पठ २११)। पस पमास की [पमास] चौक, १४ (पठन १ १७ अ ७२, अ)।

पमासइम वि [पमासचम] चौपासी ४४ नों (पठन ४४ ४४)। पम रेको 'पय (शामा १ ४ नों ११)। पाच न [पाच] चतुर्ण चत्वार का प्रचल-चिरेण (अ)। पइम पइम की [पचि] चौक-चिरेण (अ)। २ चतु-चिरेण ही एक चत्वारि (वीन २)। पइइ की [पइ] रेको पइम (दुमा ११)। पम रेको पम (अ ७२)। 'पय पु की [पय] १

बीताया प्रणी पणु (जी ११)। २ न
प्योतिर-प्रविष्ट एक स्थिर कण्ड (विदे
१११)। प्यह पु [पय] बीहटा
बीहटा बीहटा (मयी १)। प्यह
वि [पुट] बार पुहता बीहटा, बीहटा
(विगा ११)। प्यह वि [पाल] बेरो
प्यह (छाया ११—यन ११)। प्यह
वि [वाह] बार हापवाला। २ पु
बनुमुन बीहटा (बार)। प्यह [मुज]
बेरो वाह (ताम मुन ११)। मंग
पुन [मंग] बार प्रकार, बार निमाय (छ
४ १)। मंगी बी [मंगी] बार प्रकार,
बार निमाय (मय)। माडया बी
[भागिम] बीहटा वन वा एक नार
(कण्ड)। माहिया बी [महाकम] कनो
के काय बूटि हरे मिट्टी (निह १०)। मंड
छाग न [मण्डलक] लम मरुन निराह
मणम (मुगा ११)। मासिअ बेरो पाउ
म्यासिअ (पा ४०)। मुह 'म्यह पु
[मुह] १ बड़ा बिबादा (पुन ११
०२ २० ४०)। २ वि बार मुहतामा
बार हापवाला (मोय छण)। मग पुन
[मग] बार बल्लो ना छुगुय (निह
१२)। मण बल्लो न [पञ्चाराग]
बीहटा, पवाह बीर बार, १४ (वि २१५,
२०३ सम ७२)। 'मार वि [मार] बार
बलावेनामा (पुह) (मुगा)। 'मिह वि
[मिह] बार प्रकार का (ह १२ न ३)।
मीम बीन [मिथिति] बीबीन, बीह बीर
बार २४ (सम ४१ ह १ वि १४)।
मीसइ (पर)। बी [मिथिति] बीह बीर
बार बीहटा (वि ४४१)। मीमम वि
[मिथिति] १ बीबीन (पुन २४
४)। २ म प्याह किंनो का लयालार उर
बाह (मय)। मगमा केरो मग (वाचा
२ २)। म्यारुन [मार] बार बार,
बार बल्ल (ह १ १०१; मुगा)। 'मिह
केरो 'मिह (छ ४ २)। मीसइ बेरो
बीस (सम ४१)। मीसइम केरो बीस
इम (छाया ११)। सट्टि बी [पति]
बीहटा, छट बीर बार (सम ७१; कय)।
सट्टिम वि [पाउरुतरसय] बीहटा (पुन

१४ ४०)। 'सट्टि बेरो सट्टि (कय)।
'समाह न [शाह] बार शातामोधि मुक पर
(सम ११)। हट्ट, हट्टय पुन [हट्ट, क]
बीहटा बारार (महा) या २०; मुगा ४२३
हट्टर वि [मतत] बीहटरा ७४ बां
(पुन ७४ ४१)। हट्टर बी [मतत]
बीहटरा, हट्टर बीर बार (वि २४४
२६४)। हा य [पा] बार प्रकार
(छ १ १; जी १२)। बेरो को।

पाउम न [पुतु] बीहटी बार बल्लो का
सकूर (मय ४ मुर १४ ७०; मुगा १४)
'बल्लकट्टेण' (पा २३)।

पाउक [दे पतुपक] बीह बीहटा, बहा
बार पला निमता हो बह स्थान बीहटा (ह
१२ वड छाया ११ मीम कय)। पल्ल
हट्ट १ बीर १ मुर १ ११; मग)। २
माल माल (पु १ ७२)।

पाउरु पु [दे] नातिम स्थिर का एक पुन
(ह ३ ४)।

पाउरु वि [पुतुपक] बार हापवाला
बनुमुन (उत न)।

पाउरुमा बी [दे पतुपक] माल
छोटा बीक (मुर १ ७२)।

पाउरुमा बी [दे] माल-विरोध (मय
० ८)।

पाउरु पु [बाह] माल-विरोध (सम ११)।
पाउरु केरो पाउरु-स (संगे ११)।

पाउरु वि [पुतुपक] बीहटा (माह ४)।
बी हा (माह ४)।

पाउरुम वि [पुतुपक] बार मा पाव
(मुग २ २, २१)।

पाउरुमिह न [पुतुपक] बार
पला मा परिता मिथिया (व १ ४)।

पाउरुम व [पुतुपक] एक लिल का ल-
माम (सबी १०)।

पाउरुम वि [पुतुपक] बीहटा 'मह-
नार बल्लकट्टेण' (वि ११४)।

पाउरुम बीन [बीहटा] माल-विरोध
(वि)। बी का (वि)।

पाउरुम पु [पुतुपक] बी विन का लयालार
बेरो (सबी १०)।

पाउरु वि [पुतुपक] १ मिथु बह होमिआ

(पाव बेरी १२)। २ मिथि मिथुका हो
होमिआ वे 'बेरो माल बल्ल' (छ ७)।

पाउरु वि [पुतुपक] १ बार माल-
बार निमाय (माल-विरोध) (वि)।

२ न बार माल बार प्रकार (उत ३)।

पाउरुम न [पुतुपक] एक लिल का मुगा
(मोह ८१)।

पाउरुम वि [पुतुपक] बार निमाय (माल-
विरोध) (वि)। बी जी (मुगा ४२२)।

पाउरुम वि [पुतुपक] १ बार माल-
बार माल-विरोध। २ पु माल (मोय)।

बी हा [ता] माल, माल (छ ४ १)।

पाउरुम न [पुतुपक] माल, माल (माल-
विरोध) (वि)।

पाउरुम वि [पुतुपक] बनुमुन बार
माल (माल-विरोध) (वि)।

पाउरुम बी [पुतुपक] माल-विरोध (वि)।
पाउरुम पु [दे] बीर बल्ल, माल का
माल-विरोध (माल-विरोध) (वि)।

पाउरुम केरो पाउरुम (वि २०१०)।

पाउरुम पु [दे] सातवाहन रमा माल
माल (ह ३ ०)।

पाउरुम वि [पुतुपक] १ बार मुहतामा।
२ पु बड़ा बिबादा (पुन ११)।

पाउरुम १ बी [पुतुपक] माल-विरोध,
पाउरुम २ बी [पुतुपक] माल-विरोध (वि)।

पाउरुम ३ बी [पुतुपक] माल-विरोध (वि)।

पाउरुम ४ बी [पुतुपक] माल-विरोध (वि)।

पाउरुम ५ बी [पुतुपक] माल-विरोध (वि)।

पाउरुम ६ बी [पुतुपक] माल-विरोध (वि)।

पाउरुम ७ बी [पुतुपक] माल-विरोध (वि)।

पाउरुम ८ बी [पुतुपक] माल-विरोध (वि)।

पाउरुम ९ बी [पुतुपक] माल-विरोध (वि)।

पाउरुम १० बी [पुतुपक] माल-विरोध (वि)।

२) सौभाग्य विद्या का वर्णन (८३
३) १२ वि बाल सौभाग्य वर्णन (८३)

बच सक [बच] बचन धारि ना विपिन
कण्ड। बचने (बचने ११)।

बच दु [बच] हेमाचार्य के पिता का नाम
(ग्रन्थ २)।

बच दु [बच] समस्तमन बचन वीर्य
का शरीर में उपस्थित (दे ६, ७७)।

बचर न [बचर] बीछा बीछटा बीछटा
बीछ (छाया ११; पण्ड ११; सुर ११२
(दे २ १२ कुमा)।

बचरि न दु [दे बचरीक] प्रमद, भीय
(पठ)।

बचरिया की [बचरीक] १ दुय-विशेष
(रमा)। २ रेको बचरी (न १ ७)।

बचरी की [बचरी] १ शीत-विशेष एक
प्रकार का पान 'निरुद्धिबचरीपण्डुरादिम
आलुमुमो' (सुर १ १४); 'पारमिबचरी
सीमा' (सुपा २२)। २ गलेवासी दोरी
पानेवासी का दुक 'भरत मयलमहमे
निरुद्धि निषिक्तसुम्भु मयलबचरी' 'कुं
गीयबचरी बम्हाए बचरीए समास
परिचय' (स ४२)। ३ अण्ड-विशेष
(सिप)। ४ हाथ की लाली की धारा
(आष १)।

बचसा की [दे] बाघ-विशेष 'अटुय बच-
साय, अटुय बचसायपाय' (राम)।

बचा की [दे] १ शरीर पर सुनिष्ठ पदार्थ
का लक्षणा विशेष (दे ३ १६, पाद ४
१ छाया १ १ उप)। २ लज-प्रहार,
हाथ की लाली (दे ३ १६; पठ)।

बचार सक [सपा + अम्] अलक्ष्य मे
लगाइता रेना। बचारा (पठ)।

बचिक वि [दे] १ परिष्ठ विरुपिण
'अनुभवबचिकला विघाट' (दे ३ ४);
'अनुभवबचिकलाविघाट' (पद्म १ ६);
'अनुभवबचिकलाविघाट' (बच १६)। २
पुन विपिन बचनवि सुपिन बलु का
शरीर पर लक्षणा (दे २, ७७); 'बचिको'
(पठ); 'अनुभवबचिकलाविघाट' (पद्म
२० २६ की) 'बचिकानुभवबचिकलाविघाट'
'बचिकला' (आ ७१६ की); 'अनुभवबचिकला'
'बचिकला' (पुष्प ११)।

बचिय वि [बचिय] विपिन (वेद ४४२)।
बचसुप सक [अप्य] धरण करण
मेना। बचसुप (दे ४ १६)।

बच्य सक [सच] दितना मटना।
बच्य (दे ४ १६४)।

बचिद्वि सक [वट] दिना हुपा (कुमा)।
बच सक [द्वि] देना प्रसोक्त
करना। बचर (दे १ ४ पठ)।

बचा की [बचा] १ धारण बचन। २
बचन मनन। ३ परिभाषा संकेत (विदे
२ ४४)।

बचिय वि [वट] प्रसोक्त रेना हुपा
(महा)।

बहुम रेको बहुम (गा ११२)।

बहु सक [वे] बचना प्रसंग करना 'न
य प्रसंगिणं विनं कोर बहु' (महा)।

बहु पुन [वे] १ मूक कुमुता 'भीरति
अविपिना बहुविपिना न भीरति' (सुक
७)। २ पु बहु विधायी। माळ की
['आळा] बटगला बटसा, छोटे भासकों
की बटगला (बहु १)।

बहु वि [बहु] बानेबाबा (कम्प)।

बहु पु [वे] १ बाक-हृष्ट कल की
बहुपु { कला प्रीतने का पाच-विशेष
बहुपु (दे ३ १ गा ११२ प)।

बहु सक [आ + ह्] बहुता ऊपर
देना बाक होना। बहु (दे ४ २ १)।
बहु बचि बहुविपि (मुगा ११४ कुमा)।

बहु पु [वे] पिना बोटी (दे ३ १)।

बहु पुन [वे] १ बटसर, बटका (दे
४ ४ १ बचि)। २ लज-विशेष (पद्म
३ १६)।

बहुसरि वि [बटसरि] 'बट' लज
कलेवाला (पवन धारि) (पठ)।

बहु रेको बहु (पण्ड १)।

बहुार पु [वे] १ सूर्य, मय बला (पद्म
१ १२, छाया १ १—पठ ४६)। २
पाश्चात्य, धारि 'भूमा बहुारसले'
पाश्चात्य (बचि १)।

बहुार पु [बहुबहु] 'बहु-बहु' धारा
(विपा १ १)।

बहुबहु सक [बहुबहु] 'बहु-
बहु' धारा करण। बहुबहुवि (विपा
१ १)।

बहु पु [बट] धमि-विशेष विपि की
विपि की धारा (सुर २ ११)।

बहु न [आरोहण] बहुता, ऊपर देना
(पा १४ प्राप् १ १ उप ७२८ टी बोष
१ सट्टि १४२ बजा २४)।

बहु सक [दे] बटपाना बटपाना
कलेवाला। बहु बहुबहु (मुगा ७२)।

बहु पु की [बट] धमि-विशेष धारि
पानी (दे २ १ ७)। की. धारि (दे ४ १६)।
बहुन रेको रेको बनेना (पण्ड १ १—
पठ २६)।

बहुवाण न [आरोहण] बहुता (वा १२२)।

बहुवि वि [आरोहण] बहुता हुपा
ऊपर स्वपिण. 'पण्डितमज्जिहरे बहुवि
कण्यममममम' (मुण्डि १ १ १ सुर ११
१६ महा)।

बहुवि वि [दे] प्रेषित रेना हुपा
'आविपिण लेण बहुविपि पाण्डु लपा
धी' (मुगा १६२)।

बहुवि वि [आम] बहु हुपा धार
(मुगा ११७ १२३ १२६ दे ४ ४४२)।
बहुवि पु [वे] धारि, धारि (दे
३ २)।

बहु पु [बट] १ विप बचन विप बाक।
२ लकी का एक धारण। ३ जल, पेट। ४
पुन विप संभाषण कुलाम (दे १ १७
प्राप्)। धारि वि [धर] कुलाम करण-
बला कुलाम (पण्ड १ १)। धारि
वि [धर] कुलाम (गा ६ १)।

बहुवि वि [बटवि] कुलाम (वि
४४४)।

बहुवि की [दे] १ जलबहु। २
धारि-धारि (मोह ७)।

बहुवि रेको बहुवि (वि ४४६)।

बहु वि [बट] १ बचन बचन (दे २
४२, पठ ४२, १६)। २ कपला दितना
हुपा (दे ३ २२)।

बहुवि वि [दे बहुवि] बह-बहु विपा
हुपा, विपुबहुविपि (पुष्प ७१)।

बहुधा की [हे] एक-द्विगक धोने की
विशेषता में बहुधा हुआ एक निमित्त
(हे १ ५)।

बहुधाविषय न [हे] ऊपर केही (हे
१ ५)।

बहुधाविषय की [ह] धातु धातु में बना
हुआ वाच्य का प्रयोग वाच्य की धातु (हंमि)।
बहु एक [सुख] मरने करता मरना।
बहु (हे ५ १२५)। प्रयोग बहुधा
(हुआ १११)।

बहु एक [पिप] पीना। बहु (हे ५
१२५)।

बहु एक [सुख] मोहन करना जाना।
बहु (हे ५ ११)।

बहु न [हे] ठैल-वाल बिचमें दीपक जिया
माला है पुनःपुनः में 'बाहु' (हुआ ११५)
हू १)।

बहुधा न [मोहन] मोहन करना। २
जाने की कद, भाव-धामधी (हुआ)।

बहुधाकी की [बहुधाकी] एक नाम की एक
कदरी बाड़ी कीकस्वर धुनि ने बिचन की
प्याहली धातु में 'गुरुधुनि-बिचन' नामक
प्राकृत-वचन का वा (पुर ११ २२४)।

बहुधा न [सुख] मरना हुआ निरुद्ध
मरने बिना गया हो नह (हुआ)।

बहुधा न [पिप] पीना हुआ (हुआ)।

बहु केही बहु = धा + बहु। एक बहुधा
(सम्मत १२४)।

बहुधा केही बहुधा (धोना २८)।

बाज } दु [बाजक] क्या घाल निरुद्ध
बाजक } (हे १ ५; हुआ १२५-१२ २२)।

बाजहुवा की [बाजकि] मरुत, घाल-निरुद्ध
(आ २, १)।

बाजवा केही बाजवा (हुआ १११)। पुर १
१५)। घाल दु [घाल] घाल-निरुद्ध
की दु धातु का एक घाल (एक)। पुर न
[पुर] नगर-निरुद्ध, घाल-निरुद्ध का घाली
नाम (एक)।

बाजवाभास केही बाजवाभास (बनी १)।

बाजोहिवा की [हे] हुआ। दु 'करोही'
केही बाजोहिवा (अनु ४ इमर न
७५)।

बाज पुन [हे] एक बहुधा घाल करने का
काम तकनी (हे १ १; बनी २)।

बाज नि [हवा] छोड़ा हुआ परिष्कृत (एक
२ १) हुआ १ १५)। २ घाल की धातु
(प्रत्यया ८ १)।

बाजवा केही बाजवा (हे १२४ ५८)।

बाजवा केही बाजवा (अनु)।

बाजवा की [बाजवा] १ धातु पर घुमनी बहुत
का निरुद्ध। २ निवार, बनी (प्रक ३५)।

बाजवा नि [बाजवा] बालीघना (एक
५ १७)।

बाजवाकी न [बाजवा] १ बालीघ
५ 'बालीघ' विद्यावाच्यसहस्र पयस्यो
(कम १६; कय)। २ नि बालीघ वर्ण की
उपबाली 'बाजवाकी' निरुद्ध (धुनि)।

बाजवाकी की [बाजवा] बालीघ
५ 'धीला बाजवा' (कय २)।

बाजवाकी की [हे] बाजवा' इस शब्द
(हे २)।

बाजवा की [हे] बाजवा' कदवात कदव
तवाका (कय)।

बाज एक [जा + कय] बाजकय करता
मरना। एक बाजवा (मनि)।

बाज एक [बाज] १ घालन करता।
२ कदवा। १ कदवा करता। ५ बाज
का निरुद्ध। बाज (प्रक ७२
अनि १२)।

बाजवा न [हे] कदव-कय-निरुद्ध (एक १
१-न २३)।

बाजवा न [हे] निरुद्ध, निरुद्ध (हु २)।

बाजवा नि [हे] १ घाल, कदव (हुआ ५
७२)। २ बाजवाकी बहु कदव नील-
माला (कय)।

बाजवा नि [बाजवा] बाजवा कदवा
हुक (अनि)।

बाजवा की [बाजवा] बनी घुमनी
बाजवा की [बाजवा] बनी घुमनी की धातु
(आवा १ १-न २३, हे ५१)।

बाजवा न [हे] कदव-निरुद्ध एक कदव
कदव-निरुद्ध का धातु-निरुद्ध (२ नि कदव,
कदव, निरुद्धाकी (हे १ २; हे १ ३५
हुआ ५ २३)।

बाजवा दु [बाजवा] निरुद्ध बाजवा
'बाजवा' कदवा (कय २ १)। २ नि कदव
कदव (हु २)। ३ नि कदव निरुद्ध-कदव
(हु)।

बाजवा } एक [बाजवा + क] निरुद्ध
बाजवा } करता बाजवा-निरुद्ध करता।
बाजवा, बाजवा (विने ५१ ५८) कदव-
बाजवा (विने २१)।

बाजवा दु [बाजवा] बाजवा निरुद्ध
(पुर १ ८ कदवा २५)।

बाजवा नि [बाजवा] निरुद्ध, बाजवा-
निरुद्ध (हुआ १२२)।

बाजवा } एक [मुक] मोहन करना बाजवा।
बाजवा } बाजवा (कय) बाजवा (हे ५
११)।

बाजवा एक [हे] १ मरने करता, मरना।
२ प्रहार करता। ३ कदव करता घालन। ४
निरुद्ध करता। ५ बाजवा करता। ६
बाजवा करता कदवा (कय)। कदव बाजवा-
निरुद्ध (घोष १२५ या हू १)।

बाजवा न [मोहन] मोहन, बाजवा (हुआ)।

बाजवा न [हे] १ मरने कदव करता (घोष
१२५ या हू २२)। २ बाजवा (ह
२५)। ३ कदव, घालन। ४ प्रहार
(घोष १२५)। ५ निरुद्ध, कदव (घोष
७२)। ६ नि निरुद्ध कदवा की बाजवा
(घोष २३७)।

बाजवा की [हे] ऊपर केही (हू १)।

बाजवा नि [हे] निरुद्ध निरुद्ध (कय
२)।

बाजवा दु [बाजवा] बहु-निरुद्ध निरुद्ध बाजवा का
बाजवा या बाजवा कदवा है 'बाजवा' कदवा-
निरुद्ध (कय २५ १ २)। २ पुर १ १)।
२ दु बाजवा निरुद्ध का घालन निरुद्ध (कय
१२२)। ३ बाजवा निरुद्ध के घालन-निरुद्ध का
कदव (अ २, १)। बाजवा दु [बाजवा] न
एक का घालन-निरुद्ध (कय १३ ५)। बाजवा
की [बाजवा] बाजवा की बाजवा की कदव
घुमनी-निरुद्ध (आवा २)। पुर न [पुर]
निरुद्ध का घालन-निरुद्ध (कय)।

बाजवा पुन [बाजवा] बाजवा, बाजवा, बाजवा-
निरुद्ध (हे १ १७)। 'बाजवा' बाजवा की

[चालिगी] चामर बीकने या होलनेवाली
की (गुना ११६ मुर १ ११७)।

चमरी की [चमरी] चमर-सुग्री की माता, सुग्री
यम (स ७ ४८ स ४४१ बीग महा)।

चमस पुंन [चमस] चमचा कमायी रानी
(बीग महा)।

चमरकर पुं [चमरकर] १ चमरकर विस्मय
पेन्नाम्यपुंकिमपचित्तचमरकराव' (मुर
११ ६७)। २ बिजली का प्रभसर 'ताव य
विन्मुचमुचकरावउंदर' बंभचउचउंदर' (मुर
२ ११)।

चमू की [चमू] १ सेना शीघ्र सरकर
(मायम)। २ सेना-विरोध, विरोध ७२६
हापी ७२६ रप २१७७ बीके पीर ११४२
पैल हों ऐसा सरकर (पठम १६ ६)।

चम्म न [चम्म] चाल लम् चमड़ा
चाल (हे १ १२ लम् ७ ३ मुर १०१)।
'किट्टि वि [किट्टि] चम्मे से सीमा हुमा
(म ११ ६)। खेस खेसय पुं [खेरा],
क] १ चम्मे का कमा हुमा कैसा २ एक
तख्त वा चम्मे का हुमा (पीप ७२७, माया
२, २ १ न ५)। कुरसिया की
[कुरसिया] चम्मे की रानी हुई कैसी (मुर
२ २)। लंबिय वि [लंबिय] १
चम्मे का परिणामवाला। २ स च जाकरण
चम्मे का ही रचनेवाला (छाया १ १२)।
ग वि [क] चम्मे का कमा हुमा चम्मम
(मुर २ २)। पवित्र पुं [पवित्र]
चम्मे की पाववाला पत्नी (छ ४ ४—पठ
२ १)। पट्ट पुं [पट्ट] चम्मे का पट्ट
चम' (विना १ ६)। पाय न [पात्र]
चम्मे का पात्र (माया २ ६, १)। यर
पुं [कर] मोची चमार (म २ १; हे २
१७)। रयज न [रयज] चम्मे की का
एल-विरोध निचले गुच्छ में बांधे हुए शक्ति
बैरुछ बड़ी तिल पत्र कर जाने योग्य हो
जाते हैं (पठ २१२)। रुक्म पुं [रुक्म]
हुल-विरोध (म ८ १)।

चम्मट्टि की [चम्मट्टि] चम्म-यम, चम्म-
रकर चमड़ा लपे हुई कमी (कम्प)।

चम्मट्टिअ धक [चम्मट्टिअ] चम्म-यम
की लछ माचण करना। बह चम्मट्टिअंत
(कम्प)।

चम्मट्टिअ पुं [चम्मट्टिअ] पति-विरोध
(पण्ड १ १)।

चम्मर पुं [चम्मर] चमार, मोची (चिंते
२६८८)।

चम्मरय पुं [चम्मरय] ऊपर सेतो
(माय)।

चम्मिय वि [चम्मिय] चम्म से बीजा हुमा
चम्म-वेष्टि (पीप)।

चम्मेट्ट पुं [चम्मेट्ट] प्रहण-विरोध चम्मेट्टे से
वेष्टि पायणवाला पाण्ड्य (पण्ड १ १)।

चम्मेट्टा पुं [चम्मेट्टा] रुक्म-विरोध (पय
२१)। की गा (मणु १७२)।

चय सक [चय] छोकटा व्याम करना।
चय (माया हे ४ ८६)। चम्म चयक
(क)। बह चयत (गुना १८८)। छं-
चय चयई चिबा, चयक्य चयटा
चयवाक्य, चयगु (कुमा उत १८७ महा
कथा उत १)। छ चययव (गुना ११६;
४ १ १२१)।

चय सक [चय] छकटा चयम होमा।
चय (हे ४ ८६)। बह चयत (गुण १
१ १ से ६, १)।

चय धक [चय] मरना एक जय से हुये
चम्म में जाता। चय (मणि) चयति
(मा)। बह चयमाय (कम्प)।

चय पुं [चय] १ छरी, हे (विना १ १;
क)। २ छरु छरि हेर (चिंते २२१६;
गुना १७१ कुमा)। ३ छट्टाहीमा (मणु)।
४ बुद्धि (माया)।

चय पुं [चय] ईटी की रचना-विरोध (चिंते
२)।

चय पुं [चय] चय चम्म-चर-चयन (छ
८ कम्प)।

चयय न [चयय] १ छट्टा करना (पठ २)।
२ प्रहल जगाल (छ २ ४)।

चयन न [चयन] व्याप परिणाम (छट्टि
१६)।

चयन न [चयन] १ मणु चम्म-चर-चयन
(छ १—पठ १६)। २ पठन निर बाता।
कम्प पुं [कम्प] १ पठन-प्रकार, चारि
बनेछ से गिने का प्रकार। २ स्थिति
छात्रुपी का विहार (गच्छ १ १५मा)।

चयन न [चयन] च्युति अथ चय (छट्टि
४१)।

चर सक [चर] १ पठन करना चलना,
बाना। २ मणु करना। ३ सेवना। ४
चामना। चर (क ५ महा)। मुका चरि
(पठ)। चरि चरि (वि १७१)। बह चरत
चरमाय (उत २) मय विना १ १)।
छं चरिअ चरिअ (गट—गुच्छ १
मायम)। हे चरिअ, चरय (पीप १६;
क)। छ चरियव (मा ६ १६)। प्रमो
चारियव (पण्ड १७—पठ ४६७)।

चर पुं [चर] १ पठन, बलि। २ बलि
(बंभ मायम १ हुल बासुव (पादा मणि)।

चर पुं [चर] बंभ मायी (मुर २४)।

चर वि [चर] चलनेवाला (माया)।

चरटी की [चरटी] चिं विना में मयमा
मिनेन बनेछ कानी गुण विचले हों बह
(ब १)।

चरग पुं [चरग] १ ईको चर=चर। २
संयासि की का मुच्छ विरोध मुचबंभ हुने
बाने विरिअकी की एक वाति (मठ चम्प
२)। ३ मिच्छुकी की एक वाति (पण्ड
२)। ४ बंभ-मठ-चरि जनु (उत)।

चरचर की [चरचर] 'चर-चर' व्यापार
(छ २४७)।

चरछ पुं [चरछ] छुरे की एक वाति (चम्म
१२ टी गुना २१२; १११)।

चरण पुं [चरण] १ संयम चारिअ 'संयम
लगाएवणा पठेयं मठुमममम' (छंको
२२)। २ चारण (मणु १२४)।

चरण न [चरण] १ संयम चारिअ हठ
मिम (छ १ १; छोक २) चिंते १)। २
चरमा मुच्छुकी का एवाचि-मणु (मुर २,
१)। ३ पय का बीजा हिस्सा (मिग)। ४
चयन विहार (छं, मुर १ १ २)। ५
देवन चार (बीग २)। ६ पाव, पल

आउम्मासी की [आउम्मासी] देखो पाउ
म्मासिन् (बर्न २. ४४)।

आउरंग देखो आउरंग (पन्थ २. ७२)।

आरंगि देखो आरंगि (मरा. छाया १
—पन्थ ३२)।

आउरंगिज नि [आउरंगिज] १ आर धर्मो
से सम्बन्ध रखनेवाला। २ म. 'उत्तराध्यायन'
ग्रन्थ का एक अध्याय (उत्तर ४)।

आउरत देखो आउरत (अम १. ४२ १ १;
६ १ ४४)।

आउरत दु [आउरत] १ आरमर्ती राजा
उम्राट (पन्थ १. ४) २ म. सन्त-पदार्थ
कीट (उ. ७)।

आउरत न [आउरत] अउर-लेन आउरतन
(बैर १४ १४१)।

आउरत न [आउरत] अउर, पहिल (बैर १
१४२)।

आउरत नि [आउरत] आरआर परिणत।
गोलीर न [गोलीर] आर आर परिणत
रिया हुमा गो-दुन केसे अतिथय भीषों का
हुम हुसरी गोपी की निवादा आय फिर
अनक अय गोपी को इक टण्ड आर आर
परिणत रिया हुमा गो-दुन (बीर १)।

आउरत नि [रे] आयन का 'टोह' आउरत
निर्दु (अम २. २ २२)।

आउरत दु [रे] आयन अउरत (रे १;
आया २ १ १ १); अउर २११।
आउर १४४ गुमा १११ अउर १ १४)।

आउरत न [रे] पुण्य का अउरत—अउरत
पुण्य (निधु १)।

आउरत देखो आउरत (अम २. २२)।

आउरत न [रे] आयन अउरत (रे १;
आया २ १ १ १); अउर २११।
आउर १४४ गुमा १११ अउर १ १४)।
आउरत न [रे] पुण्य का अउरत—अउरत
पुण्य (निधु १)।

आउरत देखो आउरत (अम २. २२)।

आउरत न [रे] आयन अउरत (रे १;
आया २ १ १ १); अउर २११।
आउर १४४ गुमा १११ अउर १ १४)।

आउरत देखो आउरत (अम २. २२)।

आउरत न [रे] आयन अउरत (रे १;
आया २ १ १ १); अउर २११।

आउरत देखो आउरत (अम २. २२)।

आउरत न [रे] आयन अउरत (रे १;
आया २ १ १ १); अउर २११।

आउरत देखो आउरत (अम २. २२)।

आउरत न [रे] आयन अउरत (रे १;
आया २ १ १ १); अउर २११।

आउरत देखो आउरत (अम २. २२)।

आउरत न [रे] आयन अउरत (रे १;
आया २ १ १ १); अउर २११।

आउरत देखो आउरत (अम २. २२)।

आउरत न [रे] आयन अउरत (रे १;
आया २ १ १ १); अउर २११।

आउरत देखो आउरत (अम २. २२)।

आउरत न [रे] आयन अउरत (रे १;
आया २ १ १ १); अउर २११।

आउरत देखो आउरत (अम २. २२)।

आउरत न [रे] आयन अउरत (रे १;
आया २ १ १ १); अउर २११।

आउरत देखो आउरत (अम २. २२)।

आउरत न [रे] आयन अउरत (रे १;
आया २ १ १ १); अउर २११।

आउरत देखो आउरत (अम २. २२)।

आउरत न [रे] आयन अउरत (रे १;
आया २ १ १ १); अउर २११।

आउरत देखो आउरत (अम २. २२)।

आउरत न [रे] आयन अउरत (रे १;
आया २ १ १ १); अउर २११।

आउरत देखो आउरत (अम २. २२)।

आउरत न [रे] आयन अउरत (रे १;
आया २ १ १ १); अउर २११।

आउरत देखो आउरत (अम २. २२)।

आउरत न [रे] आयन अउरत (रे १;
आया २ १ १ १); अउर २११।

आउरत देखो आउरत (अम २. २२)।

आउरत न [रे] आयन अउरत (रे १;
आया २ १ १ १); अउर २११।

आउरत देखो आउरत (अम २. २२)।

आउरत न [रे] आयन अउरत (रे १;
आया २ १ १ १); अउर २११।

आउरत देखो आउरत (अम २. २२)।

आउरत न [रे] आयन अउरत (रे १;
आया २ १ १ १); अउर २११।

आउरत देखो आउरत (अम २. २२)।

आउरत न [रे] आयन अउरत (रे १;
आया २ १ १ १); अउर २११।

आउरत देखो आउरत (अम २. २२)।

आउरत न [रे] आयन अउरत (रे १;
आया २ १ १ १); अउर २११।

आय देखो आय (गुमा २१ से १४ १३;
पिप)।

आय दु [आय] १ अयन, अयन (आय
आयन १)। २ अय (अय १ १३)।

आयग दु [आयग] अयन-अयन अयन
आयन १ अय (अय १ १३)।

आयस [आयस] अयन अयन।
अयस (अयस १ १३)।

आय दु [आय] १ अय अयन 'आयस' (अय
अय १ १३)। २ अय (अय १ १३)।

आयस [आयस] अयन अयन।
अयस (अयस १ १३)। २ अय (अय १ १३)।

आयस [आयस] अयन अयन।
अयस (अयस १ १३)। २ अय (अय १ १३)।

आयस [आयस] अयन अयन।
अयस (अयस १ १३)। २ अय (अय १ १३)।

आयस [आयस] अयन अयन।
अयस (अयस १ १३)। २ अय (अय १ १३)।

आयस [आयस] अयन अयन।
अयस (अयस १ १३)। २ अय (अय १ १३)।

आयस [आयस] अयन अयन।
अयस (अयस १ १३)। २ अय (अय १ १३)।

आयस [आयस] अयन अयन।
अयस (अयस १ १३)। २ अय (अय १ १३)।

आयस [आयस] अयन अयन।
अयस (अयस १ १३)। २ अय (अय १ १३)।

आयस [आयस] अयन अयन।
अयस (अयस १ १३)। २ अय (अय १ १३)।

आयस [आयस] अयन अयन।
अयस (अयस १ १३)। २ अय (अय १ १३)।

आयस [आयस] अयन अयन।
अयस (अयस १ १३)। २ अय (अय १ १३)।

आयस [आयस] अयन अयन।
अयस (अयस १ १३)। २ अय (अय १ १३)।

आयस [आयस] अयन अयन।
अयस (अयस १ १३)। २ अय (अय १ १३)।

आयस [आयस] अयन अयन।
अयस (अयस १ १३)। २ अय (अय १ १३)।

आयस [आयस] अयन अयन।
अयस (अयस १ १३)। २ अय (अय १ १३)।

आयस [आयस] अयन अयन।
अयस (अयस १ १३)। २ अय (अय १ १३)।

पारिभाषा की [पारिभाषा] पणित-विशेष (मोय २१ टी)।

पारमह पुं [पारमह] गुरु पुण्य लक्ष्मण क्षेमिक (पण्ड १ २ १ ३ वृह १)।

पारमह पुं [पारमह] छुष्ट (विह १०६)।

पारय रेवो पारय (मुपा २ ७ न १२)।

पारवाय पुं [वि] शीम श्रुत का पवन (१ १, २)।

पारवह रेवो पारमह (हम्म १२ टी मणि)।

पारवहा की [पारमही] शीमक्षुति क्षेमिक वृति (मुपा ४४१ ४४२ हे ४ १६९)।

पारुमार न [पारुमार] वैरवाता जेतवाता (मुपा १३ १७)।

पारि की [पारि] पाठ पठकों के जाने की चीज वास प्राणि (मोय २१८)।

पारि वि [पारि] १ प्रवृत्ति करतेवाला। (विसे २४३ टी उष घाषा)। २ करने वाला धर्मय शीम (चीन कम्पु)।

पारिष वि [पारिष] १ विषय की जितानी यमा हो वृह (से २, २७)। २ विज्ञापित जहाया हुमा (पण्ड १७—पण्ड ४६७)।

पारिअ पुं [पारिअ] १ चर पुण्य नामुठ (पण्ड १ २ पवन २९ ६३)। 'मोमिषि मोरिउरति व होइ जयो पण्डारमणित' (विसे २१०१)। २ वंशयत ना मुनिवास पुण्य मुमुवाय का मनुष्य (स ४ २)।

पारिउ रेवो पारिउ = पारि (मोय ९ मा उष १७७ टी)।

पारिउि रेवो पारिउि (मुक १२४)।

पारियव्य रेवो चर = चर।

पारिया की [चया] १ घावरण इतर-उतर गमन, पीरिका। २ वेष्टा (उष १६ न ८२; न ८४ ८३)।

पारी की [पारी] रेवो पारि = पारि (स ४ ७ मोय २१८ टी)।

पारु वि [पारु] १ मुचर शीम प्रवर (उषा मोय)। २ दुं दीपरे विनरेव ना प्रवम क्षिप्य (हम १३२)। ३ म प्रवृष्ट विशेष उग्र-विशेष (मोय १ उष)।

पारुअय पुं [पारुअय] १ शैव-विशेष। २ वि उष शैव का निवासी (मोय संत)।

पारुअय पुं [पारुअय] १ शैव-विशेष। २ वि उष शैव का निवासी (मोय संत)।

पारुअय पुं [पारुअय] १ शैव-विशेष। २ वि उष शैव का निवासी (मोय संत)।

पारुअय पुं [पारुअय] १ शैव-विशेष। २ वि उष शैव का निवासी (मोय संत)।

पारुअय पुं [पारुअय] उतर रेवो (मोय)।

पारुअय पुं [पारुअय] उतर रेवो (मोय)।

पारुअय पुं [पारुअय] उतर रेवो (मोय)।

पारुअय पुं [पारुअय] उतर रेवो (मोय)।

पारुअय पुं [पारुअय] उतर रेवो (मोय)।

पारुअय पुं [पारुअय] उतर रेवो (मोय)।

पारुअय पुं [पारुअय] उतर रेवो (मोय)।

पारुअय पुं [पारुअय] उतर रेवो (मोय)।

पारुअय पुं [पारुअय] उतर रेवो (मोय)।

पारुअय पुं [पारुअय] उतर रेवो (मोय)।

पारुअय पुं [पारुअय] उतर रेवो (मोय)।

पारुअय पुं [पारुअय] उतर रेवो (मोय)।

पारुअय पुं [पारुअय] उतर रेवो (मोय)।

पारुअय पुं [पारुअय] उतर रेवो (मोय)।

पारुअय पुं [पारुअय] उतर रेवो (मोय)।

पारुअय पुं [पारुअय] उतर रेवो (मोय)।

पारुअय पुं [पारुअय] उतर रेवो (मोय)।

पारुअय पुं [पारुअय] उतर रेवो (मोय)।

पारुअय पुं [पारुअय] उतर रेवो (मोय)।

पारुअय पुं [पारुअय] उतर रेवो (मोय)।

पायस म [पायस] उतर रेवो (स ३२६)।

पायासी की [पायासी] ग्राम विशेष इस नाम का एक गाँव (ग्रामन)।

पायि वि [पायि] जमाया हुमा (बर्मि ४६ १४६)।

पायि वि [पायि] जमाया हुमा (पण्ड २ १)।

पायेवी की [पायेवी] विद्या-विशेष जिवने बुरे से उभावा मारने पर बीमार प्रायमी का रोव जमा बाढा है (बर्म १)।

पायेयन रेवो पाय = चर।

पायोण्य न [पायोण्य] विद्या-विशेष एक वेद-विद्या (उम १६)।

पास पुं [पास] पक्षि-विशेष स्वर्ण-पातक परीक्षा लहनेवा (पण्ड १ १ पण्ड १० छाया १ १ मोय ८४ मा उर १ १४)।

पाम पुं [वि] पाठ इत्य-विशेष भूमि रेखा जेदी (१६ १ १)।

पाह सक [पाहस] १ बाह्या, बाह्यता। २ क्षेपण कला। ३ याचना। पाहस, पाहसि (मणि विष)।

पाहिणी की [पाहिणी] हेमाचार्य की माता का नाम (मुपा २)।

पाहिय वि [पाहिय] १ कामिष्ठ धर्म मणित। २ क्षेपित। ३ मणित (मणि)।

पाहुमा म पुं [पाहुमान] १ एक प्रसिद्ध धर्म-वंश बीहान वंश। २ पुं की बीहान वंश में उत्पन्न (मुपा २३६)।

पि रेवो पिज। कर्म चिन्मर, चिन्मर, चिन्मरि (हे ४ २३१ मन)।

पिज म [पिज] विज्ञान की बतलवाता प्रत्यक्ष 'मलुम' से विज्ञान कायिणी (हे २ १८४ मुमा स १९ ४६ ४ १)।

पिज म [पिज] १—२ जमा दीर जेदेवा का लूक धर्मय (मण्ड)।

पिज वि [पिज] १ इन्द्रिया विद्या हुमा (मण)। २ व्याप (मुपा २४१)। ३ मुष्ट मांसक (उम ८ ४ टी)।

पिज न [पिज] ईद प्राणि ना हैर (मुपा १२४)।

पिज रेवो पिज = पिज प्राण २९)।

पिज रेवो पिज = पिज प्राण २९)।

चित्र नि [चि] १ छोक चौड़ा घर । २ न छोक चौक (पद) ।

चित्रक नि [चित्रकण] चित्रना रिलक (पद १ १५ गुण ११) । २ चित्रक बना ब पार्च चित्रकल वर कर्क (सुर १५ २ १) । ३ कुर्वत कुच से छूने योग्य (पद १ १) ।

चित्रक की [चि] १ चौड़ी कीर । २ हथकी मेघ-वृष्टि, सुख छिटा (रे ३ २१) ।

चित्रार पुं [चित्रार] चित्राष्ट, चित्राष्ट (पद) ।

चित्रिग रेको चित्रण (कुमा) ।

चित्रकअत्र नि [चि] चित्रिग सहन करने-बामा (पद) ।

चित्रकअत्र पुं [चि] करेय पंच कीच (रे ३ ११; हे ३ १५२; पद १ १) ।

चित्रकअत्र न [चित्रकअत्र] काठियावाड़ का एक नगर (टी २) ।

चित्रिग [चि] रेको चित्रकअ (गा १० चित्रकअ १२४ ५५१; १५८ ५०१) ।

चित्रिगियाय मठ [चित्रिगियाय] बक-कट करवा बमकमा। बह-चित्रिगियायंत (सुर २ ८९) ।

चित्रिगअत्र रेको चित्रकअत्र (वि १ १) ।

चित्रिगअत्र न [चित्रिगअत्र] चित्रिगइ हलान (अ १११ टी) ।

चित्रिगअत्र रेको चित्रकअत्र (स २० छाया १—पद १११) ।

चित्रिगअ की [चित्रिगअ] बरा प्रतीकार, हलान (स १०) । सीहिया की [सीहिया] चित्रिगअ-मरक चित्रकअत्र (स १०) ।

चित्र नि [चि] १ चिट्ठी मरिचकबाला रेकी हुई नाकबाला (रे ३ १) । २ म. रमल सयोग रति (रे ३ १) ।

चित्र नि [स्याम्य] छोड़ने योग्य, परिहृययोग्य 'बकअमर' नि चित्रा (गुण ५१८) ।

चित्र नि [चि] चिट्ठी मरिचकबाला (रे ३ १) ।

चित्रा रेको भय = लज्ज ।

चित्र पुं [चित्रि] बीकान, चित्राष्ट, मरिचक बाला 'चित्रा' (चित्रा १ २—पद २१) ।

चित्रि पुं [चि] हुतारन धनि (रे ३ १) । चित्रि म [चि] मयलत धनियम (भाषा १ ५ २ २) ।

चित्रि म [स्वा] बैठना स्थिति करना ।

चित्रि (हे १ १९) । भूक. चित्रिग (भाषा) ।

बक चित्रिग चित्रिगमाय (कुमा मग) ।

चक्र चित्रिग, चित्रिगण, चित्रिग, चित्रिगता, चित्रिगताण (कम १५ १९

रान सि) । हेक चित्रिगता (कम) । क

चित्रिगिग, चित्रिगिग (स २९५ टी मग) ।

चित्र रेको चेष्ट । बक चित्रिगमाय (पद २) ।

चित्रिगु नि [स्याम] बेलेबासा छलेबासा (मय ११११; बरा ३) ।

चित्रिग न [स्याम] लड़ा खाना (पद २) ।

चित्रिग न [चित्र] चेष्टा प्रयत्न (हि २२) ।

चित्रिग की [स्याम] स्थिति बैठना प्रवृत्तान (ह ३) ।

चित्रा रेको चेष्टा (सुर ५ २५२ प्राप् १२४) ।

चित्रिग नि [चित्रि] १ चित्रने प्रेष्ट की हो बह (कम १ १ छाया १ १) । २ न

चेष्टा, प्रयत्न (पद २ ५) ।

चित्रिग नि [चित्र] १ प्रवृत्त खाना हुआ । २ न प्रवृत्तान स्थिति (पद २) ।

चित्रिग पुं [चित्रि] पक्षि चित्रिग (पद १ १) ।

चित्र एक [चि] १ इकट्ठा करना । २ पूरा बड़ेछ ठोकर इकट्ठा करना । चित्र (हे ५ २३८) । भूक. चित्रिग (मय) ।

चित्रिग (हे ५ २५३) । कर्म. चित्रिगब (हे ५ २५२) । चक्र चित्रिगण चित्रिगण (पद) ।

चित्र रेको भय (पा १८) ।

चित्र रेको चित्र (पद २६) ।

चित्रिग नि [चित्र] इकट्ठा किना हुआ (गुण १२३; कुमा) ।

चित्रिग की [चि] गुमा कुचकी नास रती गुचरती में 'चित्रिग' (रे ३ १२) ।

चित्रिग नि [चित्रि] १ प्राचयिग छुटित (पद ११) । २ संयुक्त प्राचय (पद ११) ।

३ चित्रिग इत (पद ११) ।

चित्रिग न [चित्रि] चित्रिगो लालन (हि २, ५ बड) ।

चित्र सक [चित्रय] चित्र बनामा लखीर बीजना । चित्रे (महा) । बक चित्रिग (स ५ ५४१) ।

चित्र न [चित्र] १ मन समुत्करण हृदय (अ ५ १ प्राप् ११ ११३) । २ ज्ञान चेतना (भाषा) । ३ बुद्धि, मति (मन ५) ।

४ धर्मियाय प्रयत्न (भाषा) । ५ अयोग्य बाल (पद) । छु नि [चि] चित्र का

बालक (स ५ १०९) । 'निपाइ नि

निपाइ' प्रमियाय के धनुसार बखने

बला (भाषा) । 'मंत नि [चि] लखीर

बला (स ११, भाषा) ।

चित्र रेको चित्र = चित्र (रंग ब २ कम) ।

चित्र न [चित्र] १ चित्र चालेस लखीर (सुर १ ८९ स्वज १११) । २ धारण

चित्र (स ११) । ३ काष्ठ-चित्रे (सु ५ १) । ४ नि चित्रचित्र चित्रिग (गा ११२)

प्राप् ५२) । ५ धनिक प्रकार का चित्रिग

नामचित्र (अ १) । ६ धनुष धारण-कलक (चित्रा १ १; कम) । ७ कम

चित्रकच (छाया १ ८) । ८ पुं एक

लोचन (छा १ १—पद ११०) । ९

पर्वत-चित्रे (पद १ १—पद १५) । १

चित्रक बीटा स्वयं चित्रे (छाया १

१—पद ११) । ११ लख-चित्रे चित्रा

लख 'चित्रे चित्रे य चित्रा बस बुद्धिचित्रा

नाएल' (स १०) । 'चित्र पुं [चित्र]

मरक छेक के एक धनी चित्रे (स ११५) ।

कमपा की [चित्रक] चित्रे-चित्रे एक

चित्रचित्रा की (अ ५ १) । कम न

[कर्म] चालेस चित्र लखीर (पा

११२) । कर रेको मर (पद) । क

वि [कर्म] नामा प्रकार की कमरे-कर्म-

बाला (पद १) । 'कुक पुं [कुक] १

छोटापी के लख चित्रे पर चित्र एक

बालक-चित्रे (स ५ १) । २ पर्वत-चित्रे की

धारक मेघा में 'चित्रे' नाम से प्रसिद्ध

है (रमल १५) । ४ चित्र-चित्रे (अ २,

१) । कमपा की [चित्रा] धर्म-चित्रे

नाना प्रभुपुत्राणां दीर्घं कालं एकं रहनेनासा
(मगं सुप १ ३, १); 'एसाईं पसाईं'
कुसुमि बालं निरंतरं एकं चिरदिदीर्घं (सुप
१ ३, २); 'यख पुं [चिर] बहु काल
दीर्घं काल (प्राचा)।

चिरमक [चिरम] १ विनाश करना। २
घालस करना। चिरमदि (दी) (वि ४६)।
चिरं घ [चिरम्] दीर्घं काल एक भेदक
समय एक (स्मृत २६; भी ४६)। ठण
वि [ठण] पुण्णा बहुत काल का (महा)।

चिरायि वि [चिरचित] चिरकाल से उप-
जित—इकट्ठा किया हुआ या बड़ा हुआ (पंच
३, १६५)।

चिरडी की [दे] बर्ल—माला पत्रपत्रकी
'चिरदिनि पयालुंका मोपा लोएहि मोरकम-
दिया' (दे १ ११)।

चिरदिहिहि [दे] रेको चिरिदिहिहि (पाम)।
चिरमाळ सक [प्रति + पाळ्य] परिपालन
का। चिरमाळ (प्राक् ७३)।

चिरया की [दे] कुटी-कोपे (दे १ ११)।
चिरम्म घ [चिरम्] बहुत काल तक (उत्तर
१७६) हुआ।

चिराउ रेको चिर = चिरम्। चिरयह (स
१२६) चिरयसि (मे १२); मदि चिरयसं
(का २)। बहु चिराउमाण (मा-
माली २७)।

चिराइय वि [चिरादिक्] पुण्णा प्राचीन
(छाया १ १ दीप)।

चिरा य वि [चिरादील] पुण्णा प्राचीन
(चिरा ११)।

चिराउ घ [चिराउ] चिर काल से लम्बे
समय से (सुप १३७)।

चिराउय (मग) वि [चिरान्न] पुण्णतन
पुण्णा, प्राचीन (मदि)।

चिराइय वि [चिरान्न] ऊपर रेको (हृ १)।

चिराउ मक [चिरम्] १ विनाश करना।

२ घालन करना। ३ सक. किलन करना
एक लकना चिराइह (मदि)। चिराइह
(काल) 'मा ले चिराइह' (पत्र ३ १२६)।

चिरायि वि [चिरायि] १ किले विनाश
किया हो रहा। २ विनाशक होता गया।
३ न विनाश देते 'अलिगे बंधाय वि
मज चिरायिं सवि' (वन १ २, ११)।

चिरिचिरा की [दे] बलभारा, बृष्टि (दे १
११३)।

चिरिका की [दे] १ पानी भरने का बर्तन
मानक मक। २ घसर बृष्टि। ३ प्रवा-
काल सुख (दे ३ २१)।

चिरिचिरा [दे] रेको चिरिचिरा (दे ३
१३)।

चिरिरी रेको चिररी (पा १११ म)।

चिरिदिहिहि न [दे] बलि बही (दे ३ ४)।

चिरिदिही की [दे] डुका डुगपी काल
रती (दे ३ १२)।

चिराइय पुं [चिराउ] १ भयान् देश-विशेष।
२ किराउ देश में रहनेवाली स्नेह-जाति
निम्न पुनिह (दे १ १७३, २२४ परह ११;
दीप कुमा)। ३ बल सार्वभौम (भ्याराटी)
का एक भास—जीकर (छाया १ १८)।

चिराइया की [चिरादिक्] किराउ देश की
रहनेवाली की किरादिन (छाया १ १)।

चिराइ की [चिराटी] ऊपर रेको (हृ)।
पुत्र पुं [पुत्र] एक बाली-पुत्र और कैत
महर्षि (पत्रि छाया १ १८)।

चिराइ रेको चिराइय (प्राक् १२)।

चिरिचिरिआ की [दे] बाप बृष्टि (पत्र)।

चिरिचिरिपि वि [दे] बीना या सीमा हुआ
प्राजित सीमा (छु १८)।

चिरिचिरि [वि [दे] पार्श्व दीला (पह
चिरिचिरि) १ ३—यत्र २४ दे ३
चिरिचिरि १२)।

चिरिगि [दे] रेको चिरिगि 'अध्यायसंनमि
य चिरिगे सहाय्यमयो' (दीप १२३)।

चिरिमिगी की [दे] बलिका, पण्डा
चिरिमिगिया } माच्छावन-मठ (दीप मा।
चिरिमिगिया } सुप २, २ ४८५ कस
चिरिमिगी } दीप ७७५ ५)।

चिरिगी न [दे] धनुषि दीना मत-पुत्र
'अर्वावि चिरिगे मधिसायी अण्णंयंयं मोनु'
(का १ ११ टी)।

चिरु पुं [दे] १ बाल बच्चा महरा (दे ३
१)। २ बेला शिप्य (पाम)।

चिरु पुं [चिर] १ बृन्-विशेष (पत्र)। २
ब पुन विशेष।

'पुनं कुली विना कंचणकुमुदेनु जिलुवांरसई'
छ पुण चिरुलेनु, नरेण पुणा चिरुयम्मा।' (पत्र ६६ १६)।

चिरु न [दे] सुनं सुप छाव (प्राक् २७)।

चिरु न [दे] बेदीयमान बयकदा 'मंभ
खोएण्णमाएहि केहि केहिनि धर्म्मकलित-
पत्तेहेनामएहि चिरुएहि' (पत्रि २८; भी २)।

चिरु न [दे] रेको चिरिपि (पह १ ४—
पत्र ७१ टी)।

चिरु न [दे] रेको चिरु (दे) (प्राचा २,
३ ३)।

चिरुमा की [चिरुमा] एक छती की राजा
भेदिक की पत्नी (पत्रि)।

चिरु न [दे] धरकु, सख पांड (पह
१ १ टी—यत्र २४)।

चिरु पुं [चिरुव] १ भयान् देश-विशेष।
२ कस देश का निवासी (हृ)।

चिरु पुं की [दे] १ धावर पणु-विशेष
बीदा (पह १ १—यत्र ७ छाया १ १—
पत्र १४)। भी 'चिरु' (पह ११)। न
कोटीना बलमय छोटा लकना पादि
(छाया १ १—यत्र ६३)। ३ बेदीयमान,
बयकदा (छाया १ ११—यत्र २११)।

चिरु की [दे] नील पति-विशेष शकुनिका
(दे १ ६ म म पाप)।

चिरिपि वि [दे] १ नील पावक (छाया १
१)। २ बेदीयमान (छाया १ १; भी १
(कप)।

चिरिपि पुं [दे] मत्तक, मच्छर, छुत्र बन्नु
विशेष (दे ३ ११)।

चिरु न [दे] मुक्त एक प्रकार की मोटी
लकड़ी विशेष बाबल घास घास बूटें बने
हैं (दे ३ ११)।

चिरु पुं [दे] बल-मान्, पट्टि की लकड़ी,
पुत्रपती में 'भीले' (पुत्रा २८)।

चिरिपु [वि [चिरिपु] चिरु शिखर या
चिरिपु } बीदा हुआ (प्राक्) 'चिरिपुमा'
(वि २४८ पत्र २७ १११ पत्र)।

चिरिडा टी [चिरिडा] कस इय-विशेष
(दे ३, ७१)।

चिरि रेको चिरि (पुत्र ११ १८१)।

प्रतीट बेववा की प्रतिमा 'कल्लाए मंगल बेहय' पञ्चमुखात्मो (बीन मग) । १. दह-
प्रतिमा, जिन-बेव की मुष्टि (अ १ १ उमा
पण्ड २, १ भाष २ पवि) 'बिहण्ण'
उत्पाएण मंथीवरर वीके समोसण्ण करे,
तहि बेहमाई बंदह' (अ २ १), 'जिण
विसे मंगलबेहवति सयपमुण्णो बिदि' (अ
७ १) । १ उदात्त, बनीया 'मिहिमाए बरए
बन्धो सोमपण्ण मणोरम' (उत्त १ १) । ७
समा-बुद्ध समा-बुद्ध के पास का बुद्ध । ८ बहुरा-
नात्ता बुद्ध । ९ बेवों का चिह्न-मुद्र बुद्ध । १
बहु बुद्ध बहो विमल को केवल ज्ञान उत्तर
होवा है (अ ८ ८ १ ११६) । ११ बुद्ध
देव 'बाएण हीरमाएणि बेहमिम मणोरम'
(उत्त १ १) । १२ यक्ष स्वात । १३
मनुष्यों का विमान-स्वान (अ ८ २
१ ७) । स्वम वुं 'स्वमम' लुप बुद्ध,
(अ ८ ११) यक्ष मुद्र १८) । 'पर न
[गृह] जिन-मण्डि प्रम्य-विश्व (अ २
१२ १४ २१) । उता की 'यात्रा'
जिन-प्रतिमा-सम्बन्धी महोत्सव विशेष (अ
१) । बूम वुं 'लुप' जिन-मण्डि क
सवीप का लुप (अ ४ २) १) । वृत्त
न [ब्रह्म] बैव-ब्रह्म जिन-मण्डि-संकीर्ण
स्वावर का ब्रह्म मिल्क (अ ८ १) पदना
अ ७ ७ ४) । परिव्राटी की 'परि
पाटी' ब्रह्म सं जिन मण्डि की यात्रा (अ
२) । माह वुं 'माह' बैव-सम्बन्धी कण्ठ
(भाषा २ १ २) । उत्तर वुं 'बुद्ध'
१ बहुराजना बुद्ध जिनके वीके नीच
बना हो ऐसा बुद्ध । २ जिन-बेव का जिनक
वीके कलस बाल उत्तर होवा है बहु बुद्ध ।
३ बहुराजों का चिह्न मुद्र बुद्ध । ४ बैव-समा
के पास का बुद्ध (अ ११ ११६ अ ८) ।
बन्धु न [बन्धु] जिन-प्रतिमा की
मन बचन कीर काया में सुनि (अ १
१) । बंण्णा की [बन्धु] बही
पुत्रोक्त अर्थ (अ १) । बाम वुं
[वास] जिन-मण्डि में बसियों का निवास
(अ १) । हर देवो घर (बीन १) पदम
१३, १२) बुद्ध १३) ४ १३) उत्तर १३) ।
चइम वि [चित्त] इत बिदि 'उत्त २

अपारीष्टि अराण' बइमाई मरति' (भाषा २
१ २ २) 'बेहय कल्लेगट्ट' (इह २ बस) ।
बेव देवो चिप (अ १) ।
बेवा देवो च = वर ।
चट्ट मर [चट्ट] प्रवल करना आचरण
करना । बहु चट्टमाण (आत) ।
चेट्ट देवो विट्ट = स्वा (१ १ १०४) ।
चेट्टण न [म्यान] स्थिति प्रवृत्तान (अ ४)
चेट्टण देवो चिट्टण = चेट्टन (अ १ १)
चेट्टा की [चिट्ट] प्रवल आचरण (अ १
१ १२ २ १ १) ।
चेट्टिय देवो चिट्टिय = चेष्टि (बीन मग) ।
चेह वुं [दे] बाल बुद्ध, मिष्टु (१ ३ १
उत्ता १ २ इह १) ।
चेह } वुं [चिट्ट क] १ वाच नीच
बेहमा } (बीन कय) । २ गुण-विशेष
बेहय } वैशाखिका नवी का एक स्वनाम
प्रसिद्ध राजा (भाषा १; अ ७ १, महा) ।
१ मेता बेववा, देव की एक बन्धव नाति
(मुद्रा २१७) ।
चेहिका की [चेहिका] बानी नीचरणी
(अ ८, १३ कय) ।
चैवी की [चैटी] ऊपर देवो (आवम) ।
चेवी की [दे] बुद्धा की नात्ता लकी (आव) ।
चय न [चय] बैव-विशेष (अ १) ।
चेत्त वुं [चत्त] १ मास-विशेष, बैत मास
(अ २ ६, १ १२२) । २ बैत बुद्धियों
का एक पण्ड (इह १) ।
चेटी की [चत्री] १ बैत मास की पुष्टिमा ।
२ बैत मास की प्रमापस (अ १ १) ।
चदि देवो चइ (अ १) ।
चदीस वुं [चिदीस] बैव बैव का राजा
(अ १) ।
चयमा वि [चयत] बाल, बैवना (अ
१३७) ।
चयम वुं [चयन] १ भाषा वीच प्राणी
(अ ४ ४) । २ वि बैवनात्ता बालबाध
'बुधि कयल न विमल' (विसे १८२) ।
चयमा की [चयन] बाल बैव बैवम बुद्ध
काल (भाषा १ १२४ २ २४१) ।
चयण } न [चयन] ऊपर देवो (विसे
बेहय } ४७३) मुद्रा १; गुर १४ न) ।
चेयस देवा चय = चयन;

'वैशाखेण चाबिटे कटुपाणिमयेव ।
वे धंवरमं बेव, म्हामोहं पटुम्वर'
(अ १ १) ।
बेवा देवो बैवणा 'पतेयमनावाधो न रेणु-
तमं न सुपुण्य बेव' (विसे १६१२) ।
बेव } न [बेव] बह, कय (भाषा
बेहय } आत) । कण्ठ न [कथे]
बयन-विशेष एक वृत्त का पद (अ १४६)
गोळ न [गोळ] बह का गैव, कण्ठ
(अ १ ४ २) । हर न [हृह] वरु,
प-मण्डल रावटी (अ ३३७) ।
चेसय न [दे] सुभा-भाष 'चिट्टीपण्ड मुद्रा'
मुद्रा वि चित्तबेव निद्रिय' (भाषा २१) ।
चेसिय देवो चेह: 'यवणकालकेयिचकमुद्रा'
भरनिय' (अ २ १२, २३ भाषा) ।
चेसुप न [दे] सुभा मुद्रा (१ १ ११) ।
चेह } [व] देवो चिट्ट (१) (अ २ १७
बेहय } १३ ११ ४ ४६६) बनि १
अ २१८) ।
चेहय } [व] देवो चिट्टा (अ १
बेहय } ४-अ १८, अ ११) ।
चय म [चय बैव] १ बहुराज्य मुद्रक
अव्यय निबन्धनरक्त एव 'बो बुद्धाए परस
बुई पल्लव सं बैव को मण्डि-मुद्रा' (आव २६;
महा) 'बहुराज्य बैवसो मं' (विन
१३११) । २ पाश्चात्यक अव्यय (अ ८
८) ।
चय म [चय] मादर-वीरक अव्यय, 'वेहय
गुह्यहयसं सयमवि चय वेण' (अ २ ३
४-अ ११ १) ।
चो देवो चइ (१ १ १०१) बुद्धा अ १;
बीन मग, उत्ता १ १ १४ वि १ १;
गुर १४ ४) । आत की [चयारि
शान] बालीम वीरवार, अ (अ २ १ ४)
बट्टि की [पट्टि] नीच १४ (अ १) ।
बचरि की [समवि] सचर वीरवार, ७४
(अ ८ ४) ।
चोम सक [चाइय] १ प्रेरणा करना ।
२ नमज्ज । बोए (अ ८ १३) । कय
चाइय चाइयमाप (गुर २ १; उत्ता
१ १६) । चं चोइय (महा) ।
चोमम वि [चाइय] प्रेरक, प्रवृत्त-वर्ता, वृ
पटी (अ १) ।

ब म [एव] यथावाच्य-सूचक मय्य (हे २ १८४ कुमा, व ४) ।

विभ्र सेवो विभ्र = एव (हे २ १८४ कुमा) ।

सेव } सेवो सेव = एव (पि १२१ बी १२) ।
विभ्र }

॥ अम छिरिपाइअसहस्रमहज्योविमि यथावाच्यसूचकमयो
बउरसमी ठरेयो समसी ।

त्र

ख पुं [ख] १ छात्र-स्थानीय व्याख्यान बहल
विरोध (प्राप्त प्राप्ता) । २ धातुव्यजन, वक्रता ।
'ख ति य बोधाणु आच्छेदो हौह' (भावन) ।

ख नि व [पु] संख्या-विरोध स 'ख
अभिप्रायी विण्णसत्त्वमि' (भा १ बी १२
पग १ ८) । उत्तरसय वि [उत्तर
रावत्तम] एक ही बीर छठ्ठा (पत्रम १ १
४२) । हम्म न [कर्म] का प्रकार के
कर्म जो ब्रह्मणों के कर्तव्य हैं, यथा—
यजन, याजन धर्म्यजन धर्म्याजन राजा बीर
प्रतिग्रह (मिबू ११) । काय न [श्रय]
का प्रकार के बीर बुद्धिही, धर्मिन, पाली
बाहु बलसति बीर तप बीर (भा ७
पंचा १२) । गुण गुण वि [गुण]
कुमा (ठा १ पि २०) । बरण पुं
[बरण] प्रमद, भीष (कुमा) । लीन
निक्रय पुं [लीननिक्रय] सेवो काय
(पाया) । पउइ, पउइइ [पायति]
संख्या-विरोध छठ्ठा २१ (सम १८ पवि
१) । बीस बीन [त्रिंशत्] संख्या
विरोध बलीय ११ (कम्म) । लीसइम
वि [त्रिंशत्तम] धनोपरा (पत्रम ११
४१) पण ११) । इस वि व [पोइराण]
पोइर पोइर । 'इसइरा व [पोइराण]
पोइइ प्रकार का (व ४) । रिसि न
[वइ] का कियार—इस पविम
बउर, वरिण ऊर्ध्व बीर धनीविश (पग) ।
आ म [भा] का प्रकार का (कम्म १
१) । नवइ नुवइ अउइ बीको
'पउइइ (कम्म १ ४ १२ सम ७) ।

अउय वि [अउय] आनवेरा २१ बी
(पत्रम २१ १) । पण्ण पण बीन
[पण्णाराण] जयन ११ (पग; सम
७१) । पण वि [पण्णाराण] जयनबी
(पत्रम २१ ४८) । कमाय पुं [माग]
छठ्ठा द्विस्ता (पि २७) । कमासा बी
[मापा] प्राह्य, संस्त मापबी बीरलेनी
पेठापिका बीर धपन्न व ये का भापाए
(रेम) । मासिय, म्मासिय वि [पाप-
मासिक] का मास में होनेवाला का मास
सम्बन्धी (सम २१ बीम) । बरिस वि
[बारिक] का वर्ष की वसन्तला (सम
२१) । बीस सेवो बीस (सिम) ।
ठिइ वि [विच] का प्रकार का (कम
नव १) । बीस बीन [बिराति]
छनीय, बीर बीर व (सम ४२) । ऊर्ध्व-
सइस वि [विश्रितिय] १ कलीसरा
२१ बी (पत्रम २१, १ १) । २ कपादार
बाणु धिनी का उपवास (पाया १ १) ।
'सट्ठि बी [पटि] संख्या-विरोध छठ
बीर व (कम्म २ १८) । स्ससरि बी
[ससति] विहृष्टर (कम्म २, १७) ।
हा सेवो हा (कम्म १ १, ८) ।
अइ सेवो अवि = अवि (भा १२) ।
अइम वि [रपगित] पाइल पाष्णावित
तिरीहित (हे २ १७ पइ) ।
अउ वि [दे] विराम ननु, हीटियर
अउ (पि १ १ २१) या ७२; वजा
पाय कुमा) ।
अउ वि [दे] छु, छु, पयता (१ १, २१) ।

अउम पुं [अउम] १ कपट, खट्टा पाया
(सम १ पइ) । २ अउ अउला (हे २
११२ पइ) । ३ अउरण पाष्णावत (सम
१ ठा २ १) ।
अउम न [अउम] आनावल्लीय धावि
बार बाटी कर्म (विम १४१) ।
अउमय वि [अउमय] १ अउमय संघर्ष
आने से बहिष्कृत । २ राय-सहिष्णु, सपन्न (ठा
४ १ १ ७) ।
अउअउ सेवो अउअउ (पग वि २१ ८) ।
अउई बी [व] अविष्कण्ण, कुल-विरोध
केमिष कपडा (रे १ २४) ।
अउ पुं [दे] बीय जन का छोटा जन
आप । २ वि शीघ्र, जल्दी करनेवाला (दे
१ ११) ।
अउ सक [सिच] सीपना । अउय (पुपा
२१८) ।
अउय न [सेवन] विचन विचन (पुपा
१११ कुमा) ।
अउा बी [दे] सेवो अउ (पग) ।
अउमि वि [सिच] सीपना कुमा (पुपा ११८) ।
अउ सेवो अउ = पुन । अउइ (पग १२
पवि) ।
अउिम वि [दे] अउ कुल (पइ) ।
अउिम वि [मुच] पविष्क, छोड़ा कुमा
(पग पवि) ।
अउ सक [अउ] १ कपडा बाधकता । २
कुमा बीना संपति सेव । १ निमज्जल
सेव । कपड

सहस्र-पिशा-पात्र (नं ३) ।

विशेष पक्षी विशेष लम्बे धीर कम चौड़े हो
ऐसी मूलक (अ ४ २, प ८) ।

द्विविज वि [रघु] १ घुमा हुआ (रे १
२०) २ न. सरीर घुमा (रे २ ८) ।

द्विविज न [रे] ईक का दुका (रे १ २०) ।
द्विविज न [रे] दो दो द्विविज (आ १ २
५) ।

द्विविज वि [रे] द्विविज बनावटी (रे १
२०) ।

द्विविज न [रे] १ निम्नार्धक मुख-विद्वेषण,
मध्यम-प्रकारक मुख विचार विशेष । २ विद्व
विद्व मुख (रे १ २८) ।

विद्व एक [रघु] सरीर बरना घुमा ।
विद्व (रे ४ १८२) ।

विद्व न [विद्व] मयूर की टिका (आपा
१ १—प ३० टी) ।

विद्व न [रे] बरी ना बरना घुमा मिश्रण
विद्व, पुनरुपेय में विद्व 'विद्व' बहते हैं
(रे १ २८) ।

विद्वि वि [विद्विज] १ मयूर, मोर ।
२ वि मयूरविषय के कारण बरना घुमा
(आपा १ १—प ३० टी) ।

विद्वि की [रे] टिका मोटी (रे ४ ५) ।

विद्वि की [रघु] सहा ममिताप (गुमा
हे १ १२५ प ४) ।

विद्विज विमल न [रे] बरि बरी (रे १
१) ।

विद्विज वि [रघु] घुमा हुआ (गुमा) ।

धीम कील [धु] विपत्ता धीक (हे १
१२ २ १०) धीम १५१; बरि) की,
आ (आ २०) ।

धीममय वि [धु] धीम करता (माषा
२, २, १) ।

धीम वि [धीम] धीम प्राप्त इय, दुर्बल (हे
२, १; ग ४५) ।

धीमय वि [धु] धीम करता (ही ८) ।

धीम न [धीम] धीम पानी । २ धुम धुम
(हे २ १०) या १५०) । विद्वि की
[विद्वि] बरना-विद्विज धुमि-धुमिज
(प ११ १—प ३२) ।

धीम न [धीम] धीम से बरना घुमा एक
पक्ष ना धुम, धीम की एक बरि (प १५
१ १) ।

धीमो धीम [रे] दो दो द्विविज (आ १ १) ।

धुम एक [धु] १ धीमता । २ धीमता ।
धुम धुम (अ) । धुम, धुमिज (धुम
१) ।

धुम दो धीम (धुम) ।

धुम दो धुम । धुम (आ ४ ४) ।

धुम की [रे] बरना बरि (रे १ १ १) ।
धुम की [रे] बरि बरि बरि (रे १ १४) ।

धुमिज न [रे] एण्यक, लघुकटा
लघुकटा (रे १ ११) ।

धुम वि [आ + धुम] धीम करता ।
धुम (हे ४ ११; प ४) ।

धुम एक [रे] बरि, धुम (रे १ १) ।

धुमिज न [धुमिज] धुमिज, धुमिज,
मि (धुम २) ।

धुमिज वि [धुमिज] धुमिज, धुमिज (हे
१ २ ४) ।

धुमिज न [धुमिज] धुमिज, धुमिज (हे
१ २ ४) ।

धुमिज न [धुमिज] धुमिज, धुमिज (हे
१ २ ४) ।

धुमिज न [धुमिज] धुमिज, धुमिज (हे
१ २ ४) ।

धुमिज न [धुमिज] धुमिज, धुमिज (हे
१ २ ४) ।

धुमिज न [धुमिज] धुमिज, धुमिज (हे
१ २ ४) ।

धुमिज न [धुमिज] धुमिज, धुमिज (हे
१ २ ४) ।

धुमिज न [धुमिज] धुमिज, धुमिज (हे
१ २ ४) ।

धुमिज न [धुमिज] धुमिज, धुमिज (हे
१ २ ४) ।

धुमिज न [धुमिज] धुमिज, धुमिज (हे
१ २ ४) ।

धुमिज वि [धुमिज] १ धुमिज धुमिज किया
हुमा । २ धुमिज धुमिज । ३ धुमिज (हे
२ १० धुमिज) ।

धुमिज वि [धुमिज] धुमिज, धुमिज (हे २,
११८; धुमिज) ।

धुमिज की [रे] धुमिज धुमिज (धुमिज ४८) ।

धुमिज की [रे] धुमिज धुमिज (धुमिज ४८) ।

धुमिज की [रे] धुमिज धुमिज (धुमिज ४८) ।

धुमिज की [रे] धुमिज धुमिज (धुमिज ४८) ।

धुमिज की [रे] धुमिज धुमिज (धुमिज ४८) ।

धुमिज की [रे] धुमिज धुमिज (धुमिज ४८) ।

धुमिज की [रे] धुमिज धुमिज (धुमिज ४८) ।

धुमिज की [रे] धुमिज धुमिज (धुमिज ४८) ।

धुमिज की [रे] धुमिज धुमिज (धुमिज ४८) ।

धुमिज की [रे] धुमिज धुमिज (धुमिज ४८) ।

धुमिज की [रे] धुमिज धुमिज (धुमिज ४८) ।

धुमिज की [रे] धुमिज धुमिज (धुमिज ४८) ।

धुमिज की [रे] धुमिज धुमिज (धुमिज ४८) ।

धुमिज की [रे] धुमिज धुमिज (धुमिज ४८) ।

धुमिज की [रे] धुमिज धुमिज (धुमिज ४८) ।

धुमिज की [रे] धुमिज धुमिज (धुमिज ४८) ।

धुमिज की [रे] धुमिज धुमिज (धुमिज ४८) ।

छुरी की [छुरी] छुरी बाहु (रे २ ४-
मात्र १२)।

छुड़ खो छुड़ (मुना १२२)।

छुड़-छुड़ खो छुड़-छुड़। छुड़-
छुड़े (सुमति २१ टी)।

छुड़ सक [छुड़] सराई करना सुना।

कमी छुड़, छुड़िगद (हे ४ २४२)।

कद छुड़ (उप १२२ ७२२ टी)।

छुड़ सक [छुड़] फेंकना जानना। छुड़
(ज्या हे ४ २४२)। छुड़ छेड़ना छोड़ने
(स २४, विरे १ १)।

छुरा की [छुरा] १ धनुष धनुष (हे १
२१४, बुया)। २ बड़ी, मकान पीछे का
रोड इन्फ-विरोध बुया (हे १ ७८ बुया)।

अर पु [अर] चक जलना (पठ)।

छुरा की [छुरा] बुया बुक बुया (हे
१ १७ २२ ४२)।

छुराहम नि [छुराहम] बुया छुराहम
(पाय)।

छुराहम नि [छुराहम] अर देखो (ना
२ १)।

छुराहम नि [छुराहम] अर देखो (उप ३
११ ११ टी)।

छुराहम नि [छुराहम] अर देखो (उप ३
७२२ टी मात्र १)।

छुराहम नि [छुराहम] निव, पीठा बुया (हे १
१)।

छुराहम नि [छुराहम] निव पीठा (हे २, २२;
१२७ बुया)।

छुराहम नि [छुराहम] पार्थ के परिवर्तन (बह)।

छुराहम नि [छुराहम] १ छिन्न करना।
२ लोकात्ता केवट्ट। कमी, केवट्ट
(नि २४१)। छुरा, केवट्ट (ना)।

छुराहम नि [छुराहम] १ छल जलन परवत (हे १
१ पाय १७ ४ कमी १ १२)।

२ केवट्ट, पति का छोटा बारी (हे १ १०)।

३ एक पैर एक मात्र (वि १ ७)। ४
निर्मितन की (कमी ४ २२)।

छुराहम नि [छुराहम] निवुल कुर, इमियार
(पाय मात्र १७२; पीठा खाना १ १)।

विरिय पु [छुराहम] निवराह्य अनापनी
(मन ७ १)।

छुराहम नि [छुराहम] १ निवुल निवत (वहा
१ १२, १८)। २ म कलीवित दित (वर्न
४ २४१)।

छुराहम पु [छुराहम] १ नाथ निवाता 'विज्या' (वेदी
कमी मर) (पुर ४ १२४)। २ बरप
विमान (वि १ ७)। ३ केवट्ट कर्तना

'पीठा' (ना १२१) से ७ ४०)। ४

छा: केवट्ट प्राक-वन्त के वे हैं—निवलेवन्त

महाविनीवन्त वरा-पुनरवन्त वृहत्कम्प

व्यवहारवन्त पञ्चकम्पवन्त (विरे २२२४)।

५ छिन्न विमान कम्प किमा बुया धंर (वि
७ ४०)। ६ कमी बुया (वहा ११)।

७ प्रावित-विरोध (ठा ४ १)। ८ बुद्धि

परीक्षा का एक धर्म कमी-बुद्धि बाले का

एक मध्य निर्वोद बाला व्यापक 'लो

केवट्ट पुनीत' (वन्त २)। निव न

[छुराहम] प्रावित विरोध (ठा १)।

छुराहम नि [छुराहम] केवट्ट अनेवत्ता

छुराहम नि [छुराहम] काटनेवाला (मट, विरे १२१)।

छुराहम नि [छुराहम] १ बरप कर्तन छिन्न

कर (उप ११; मात्र १४)। २ कमी

बुया जल (पाया)। ३ छल इमियार

(सुप २ ४)। ४ निवासक वन्त (इह

१)। ५ बुद्धि पञ्चवन्त (इह १)। ६ वन्त

वीर-विरोध (सुप २ ४)।

छुराहम नि [छुराहम] १ छुराहम निवराह्य

धर्म निवन्त बारी छोटा (मन २१ वहा

११)।

छुराहम नि [छुराहम] १ छुराहम निवराह्य

अर देखो (सक)।

छुराहम नि [छुराहम] १ छुराहम निवराह्य

छुराहम नि [छुराहम] १ छुराहम निवराह्य

छुराहम नि [छुराहम] १ छुराहम निवराह्य

छुराहम नि [छुराहम] १ छुराहम निवराह्य

छुराहम नि [छुराहम] १ छुराहम निवराह्य

छुराहम नि [छुराहम] १ छुराहम निवराह्य

छुराहम नि [छुराहम] १ छुराहम निवराह्य

छुराहम नि [छुराहम] १ छुराहम निवराह्य

छुराहम नि [छुराहम] १ छुराहम निवराह्य

छुराहम नि [छुराहम] १ छुराहम निवराह्य

छुराहम नि [छुराहम] १ छुराहम निवराह्य

छुराहम नि [छुराहम] १ छुराहम निवराह्य

छुराहम नि [छुराहम] १ छुराहम निवराह्य

छुराहम नि [छुराहम] १ छुराहम निवराह्य

छुराहम नि [छुराहम] १ छुराहम निवराह्य

छुराहम नि [छुराहम] १ छुराहम निवराह्य

छुराहम नि [छुराहम] १ छुराहम निवराह्य

छुराहम नि [छुराहम] १ छुराहम निवराह्य

छुराहम नि [छुराहम] १ छुराहम निवराह्य

छुराहम नि [छुराहम] १ छुराहम निवराह्य

छुराहम नि [छुराहम] १ छुराहम निवराह्य

छुराहम नि [छुराहम] १ छुराहम निवराह्य

राटीर-बनना (सम ४४ १४६ सम, कम १ १६) : २ कर्म-विरोध जिसके उदय से पूर्वार्ध संवत्तन की प्राप्ति होती है वह कर्म (कम्म १ १६)।

छेबाडी [वे] देखो छिबाडी (पत्र ८ लिपु १२; कीब ३)।

छइ पुं [वे] क्षेत्रं प्रेष्य क्षेत्रं 'तो वय परिणामोऽयममुमयातिसम्माएणित्थिअसो' (सि ४ १७)।

छइत्तरि (पत्र) देखो छाहत्तरि (विम)।

छोअ पुं [वे] क्षिप्रका (सुम २ १ १६)।

छोअ पुं [वे] वास लीकर (वे ११)।

छोअया की [वे] क्षिप्रका ईक लीक की यास (सम ७१= टी) : 'छन्दुकी परिपय कोअं पछामि' (महा)।

छोअरी की [वे] छोकरा लकरी (दुम २१)।

छोटि की [वे] अक्षिपटा बूझई (सि ४८७)।

छोइ सक [छोअय] छोझा कन्नन से युक्त कन्ना। छोइ, छोइर (अभि महा)। संह छोडियि (सुमा २४६)।

छोडय वि [वे] छोटा लड़ (पत्रा ११४)।

छोडाविय वि [छोटिव] छुन्नाया हुआ कन्नन-मुक्त कपया हुआ (स १२)।

छोडि की [वे] छोटी लकी बुइ (विम)।

छोडियि वि [छोटिव] १ छोडा हुआ कन्नन युक्त किया हुआ 'बत्तापो छोडियो मंडो (सुमा २ ४ स ४११)। २ बहिय बाइठ (पण्ड १ ४—पत्र ७७)।

छोडिय देखो छोडिय (वीम)।

छोडुण वि [वे] छोकर (दुम ३१)।

छोडुण } देखो छुइ।

छोडुण }

छोप वि [सुरय] लार्थ-योग्य फूने नायक (माता २ ११ ३)।

छोअम पुं [वे] विगुन, लस दुर्जन (३ १ १३)। देखो छोम।

छोअम वि [छोअय] चीन योग्य, सोमलीय 'होति सत्तपरिजयिया य क्षामा (?) म्मा' क्षिप्रकासमयसत्तपरिजयिया' (पण्ड १ ३—पत्र ३३)।

छोअमर वि [वे] अग्रिम अग्रि (वे १ ११)।

छोअमाइती की [वे] १ मसूरया फूने के म्मोया। २ हेमा अग्रोपिकर की (वे १ १६)।

छोम [वे] देखो छोअम (वे १ ११ टि)। १ निस्त्रहाय चीन (पण्ड १ ३—पत्र ३३)।

१ न धम्मक्यान कर्मक-भाटोपयु सोपोपेय (इह १ बर ३)। ४ न. कन्नन-विरोध से कमासमए-अय कन्नन (सुमा १)। ५ भावाव 'कोरेण कनकपटो रंठअओमे ये रेइ सो वस्मि' (महा)।

छोम देखो छुअम (छाया १ ६—पत्र १२७)।

छोअर पुं [वे] छोरा बड़का, छोकरा (पत्र ४ २१२)।

छोअिय देखो छोअिय = छोटिव (विम)।

छोअ सक [वस] क्षीमना क्षान बजाया।

छोअर (पत्र)। कर्म कीक्षिग्रन्थु (वे ४ १६२)।

छोअण न [वस] क्षीमना मिलुपोकरण क्षिप्रका छाया (छाया १ ७)।

छोअिय वि [वस] क्षिप्रका छाया हुआ गुप रहित किया हुआ (पत्र १७२)।

छोअ पुं [वे] १ समूह गुप्त बत्ता। २ विरोध (वे ३ १६)। ३ आचल 'दाय य सो मायंयो छोअं वा रेइ कटिअमि' (महा)।

छोअ पुं [वे] १ क्षेत्र लकना 'निअरिद्धि अग्रिममवाएहि' (सुमा २२८)।

छोअर [वे] देखो छोअर (सुमा २२८)।

छोअिय वि [छोअिव] सोम-माय बड़काया हुआ, व्याकुल किया गया (पत्र १७७ टी)।

॥ इम छिरिपाइअसइमहण्यमि छुपापसइसंभमणो
पंवरसमो छरंगो समयी ॥

ज

ज पुं [ज] जात्र-स्वामीय कन्नन बर्ण-विरोध (प्रमा प्राप)।

ज स [यन्] जो को कीई (छ १ १) की = हुआ, या १ १)।

ज वि [ज] अराम 'अवायउठनेयी होइ निसेण येओ य्दणो' (सा ७१६) 'आर' 'अ' (मावा)।

जअअर पुं [जअअर] जीव, अमृत्यय (शाड १)।

जअअरक [वर्] लय करना छोटा करना। अअर (वे ४ १७; पत्र)। अअर अअर (वे ४ १७)। अयो अयअरि (सुमा)।

जअअर वि [वे] अय आच्यारित बना हुआ (पत्र)।

जइ पुं [यति] १ लड़ विरोधिय संख्यायी (वीम सुमा ४४४)। २ अय-आय में अतिष्ठ विषय-स्थान, बजिना या विषय-स्थान (कम्म १ टी)।

जइ वि [यति] विजिता (पत्र १)।

जइ स [यति] जिस समक, जिस बट (पत्र)।

जइ स [यति] यति, जो अवर (कम १२३)

विवा १ १)। विष [अपि] को धी (मृग)।

बहु म [पत्र] बड़ा जिस स्थान में (बन)।

बहु मि [अविम] बीजलेखा विचयी (कुमा)।

बहुमन्त्र वि [जितन्त्र] बीजले योग्य (प्रति १२)।

बहुमन्त्र [पत्र] जिस समय, जिस कष्ट (उप १ १२)।

बहुमन्त्रा की [पट्टिका] १ स्वतन्त्रता। २ स्वतन्त्राचार (पत्र)।

बहुम वि [जिन] १ विन-वेन का भक्त विन-वर्ती। २ विन मगवान् का विन-वेन से संकल्प रखनेवाला (विदे १ १ बन्ध ६ टी। सुर २४)। बी पी (पंचा १)।

बहुम वि [अविन] जीतनेवाला 'महापराज-बद्धदेव' (ज्वा छाया १ १—पत्र ११)।

बहुम वि [अविन] देगलता वेन-मुक्त, स्व-मुक्त, 'जगद्विजयजयजयजयजयजयजय' (गीत)।

बहुम वि [अत्र] १ बीजलेखा विचयी (अ १)। २ पुं द्विप-विरोध (रत्ना)।

बहुमन्त्रा केो अय = वि।

बहुम वि [अविन] बहाव, विचयी (छाया १ ८—पत्र १११)।

बहुम वि [यत्] भाग करनेवाला, 'पुष्पे बहदा बहमर्त' (उप २२, १)।

बहुमन्त्र केो अय = पत्र।

बहुमन्त्रा य [यदि वा] घटना या (बन १)।

बहुमन्त्र (य) नि [यादरा] केवा निव लक्ष का (बन)।

बहु न [अतु] लक्ष, लक्ष लक्ष (अ ४ ४ पत्र २४)।

बहु पुं [यत्] १ स्वयम-स्वात एक पना। २ मुद्रादि प्रतिब रीत (अ)। अत्र पुं [नन्धन] १ बहुवचन बहुवचन में लयत्। २ धीपय (अ)।

बहु पुं [यत्] १ स्वयम-स्वात एक पना। २ मुद्रादि प्रतिब रीत (अ)।

बहुमन्त्र पुं [यत्] स्वयम-स्वात एक पना (अ ४ ४ पत्र २४)।

बहुमन्त्रा की [यत्] अत्र की एक जैतव प्रसिद्ध की बसुता (अ १ २ १ ४ १००)।

बहुमन्त्रा केो जैतव (बन १२२ प्राक् ११)।

बहुमन्त्रा य [यत्] १ स्वयम-स्वात एक पना (अ २०)। २ जिससे बड़ा है (प्राक् २२, १४)।

बहुमन्त्रा य [यत्] १ स्वयम-स्वात एक पना (अ २०)। २ जिससे बड़ा है (प्राक् २२, १४)।

बहुमन्त्रा य [यत्] १ स्वयम-स्वात एक पना (अ २०)। २ जिससे बड़ा है (प्राक् २२, १४)।

बहुमन्त्रा य [यत्] १ स्वयम-स्वात एक पना (अ २०)। २ जिससे बड़ा है (प्राक् २२, १४)।

बहुमन्त्रा य [यत्] १ स्वयम-स्वात एक पना (अ २०)। २ जिससे बड़ा है (प्राक् २२, १४)।

बहुमन्त्रा य [यत्] १ स्वयम-स्वात एक पना (अ २०)। २ जिससे बड़ा है (प्राक् २२, १४)।

बहुमन्त्रा य [यत्] १ स्वयम-स्वात एक पना (अ २०)। २ जिससे बड़ा है (प्राक् २२, १४)।

बहुमन्त्रा य [यत्] १ स्वयम-स्वात एक पना (अ २०)। २ जिससे बड़ा है (प्राक् २२, १४)।

बहुमन्त्रा य [यत्] १ स्वयम-स्वात एक पना (अ २०)। २ जिससे बड़ा है (प्राक् २२, १४)।

बहुमन्त्रा य [यत्] १ स्वयम-स्वात एक पना (अ २०)। २ जिससे बड़ा है (प्राक् २२, १४)।

बहुमन्त्रा य [यत्] १ स्वयम-स्वात एक पना (अ २०)। २ जिससे बड़ा है (प्राक् २२, १४)।

बहुमन्त्रा य [यत्] १ स्वयम-स्वात एक पना (अ २०)। २ जिससे बड़ा है (प्राक् २२, १४)।

बहुमन्त्रा य [यत्] १ स्वयम-स्वात एक पना (अ २०)। २ जिससे बड़ा है (प्राक् २२, १४)।

बहुमन्त्रा य [यत्] १ स्वयम-स्वात एक पना (अ २०)। २ जिससे बड़ा है (प्राक् २२, १४)।

बहुमन्त्रा य [यत्] १ स्वयम-स्वात एक पना (अ २०)। २ जिससे बड़ा है (प्राक् २२, १४)।

बहुमन्त्रा य [यत्] १ स्वयम-स्वात एक पना (अ २०)। २ जिससे बड़ा है (प्राक् २२, १४)।

बहुमन्त्रा य [यत्] १ स्वयम-स्वात एक पना (अ २०)। २ जिससे बड़ा है (प्राक् २२, १४)।

[संताप] बीच एक पलोवाला बहाव (पत्रा २ १ २)।

ज्याप्येक पुं [दे] कवर, पीक (१ १ ४१)।

ज्याप्येक पुं [दे] कवर, पीक (१ १ ४१)।

ज्याप्येक पुं [दे] कवर, पीक (१ १ ४१)।

ज्याप्येक पुं [दे] कवर, पीक (१ १ ४१)।

ज्याप्येक पुं [दे] कवर, पीक (१ १ ४१)।

ज्याप्येक पुं [दे] कवर, पीक (१ १ ४१)।

ज्याप्येक पुं [दे] कवर, पीक (१ १ ४१)।

ज्याप्येक पुं [दे] कवर, पीक (१ १ ४१)।

ज्याप्येक पुं [दे] कवर, पीक (१ १ ४१)।

ज्याप्येक पुं [दे] कवर, पीक (१ १ ४१)।

ज्याप्येक पुं [दे] कवर, पीक (१ १ ४१)।

ज्याप्येक पुं [दे] कवर, पीक (१ १ ४१)।

ज्याप्येक पुं [दे] कवर, पीक (१ १ ४१)।

ज्याप्येक पुं [दे] कवर, पीक (१ १ ४१)।

ज्याप्येक पुं [दे] कवर, पीक (१ १ ४१)।

ज्याप्येक पुं [दे] कवर, पीक (१ १ ४१)।

ज्याप्येक पुं [दे] कवर, पीक (१ १ ४१)।

ज्याप्येक पुं [दे] कवर, पीक (१ १ ४१)।

ज्याप्येक पुं [दे] कवर, पीक (१ १ ४१)।

जंण न [अण्ण] छिन्ति कण्ठ कहुना
(या १२ गठक)।

जंण न [हे] १ मसीति प्रयत्नः । २ मुञ्च
मुञ्च (हे ३ ११) मसि)।

जंण न [अण्ण] नौतनेवत्ता मापक
(पण्ड १ ३)।

जंणाय न [अण्णाय] १ बाहुन-विशेष गुणा
लन, स्थिरिका विशेष (आ ४ १)। धीन गुणा
१६३ अण ६२६) । २ मृत्त-पाल शत-पाल
(गुणा २१६)।

जंणिकस्य न [हे] जिसको देखे उठी की
बाहुनेवाला (हे ३ ४४ पाय)

जंणिय न [अणिय] नथित उक्त (प्रागु
१३ १)।

जंणिय रेको जंण।

जंणिर न [अणिय] १ बन्नाक बाणा
(हे २ ६७) । २ नौतनेवाला, मापक (हि
२ १४५; या १७; गा १२२ गुणा ४ २)।

जंणिकस्यमगिर } न [हे] जिसको देखे
जंणिकस्यमगिर } उठी की बाणा करने-
वाला (पण्ड १ ४४)।

जंणिक न [अण्णिक] कीकृष्ण की एक
पत्नी (धंठ १४ पाण्ड १)।

जंणयनं न [अण्णयनं] एक विद्यावर
रत्ना (कुट २२६)।

जंणाय न [हे] १ अंबाज संभल नमन
सिगर या सेशार (हे ३ ४२ पाय)।

जंणाय न [अण्णाय] १ कर्म करे को रंक
(पाय आ ३ १) । २ बाण्ड, पर्म-क्रेल कर्म
(गुण १ ७)।

जंणिय (म) न [अण्णिय] गीह या गीह
अन-विशेष (गठ)।

जंणु न [अण्णु] १ अण्णु, विद्याए 'अण्णु-
हृत्वायनं' (पण्ड १ ३, २७) । २ एक
प्रतिष्ठ धन पुत्रि सुवर्ण-स्वामी के शिष्य
प्रथिय बन्नी (अण्णु-बाण्डा १ १) । ३
न. अण्णु गुण का कण बाण्डुन (या ३६)।

जंणु न [अण्णु] अण्णु गुण का कण बाण्डुन
'जिनि नू मसीयो' (धंवीय ४४)।

जंणु देगी जंणु (का गुणा ३३; पण्ड २६,
२३) मे १३ ४६)।

जंणु न [हे] १ वेतव गुण वेत । २ पथिय
विशाल (हे ३ २२)।

जंणु न [अण्णु] १ सिमार, पीर
जंणु } (प्रागु १०१ उप ७९ न टी पठम
१ ४ १४) । २ न अण्णु गुण का कण
बाण्डुन (गुणा २२६)।

जंणु न [हे] १ बाण्डुन गुण वेत । २ न
मधमावन गुणाय (हे ३ ४६)।

जंणु न [हे] अण्णु बाण्ड, बन्नायी
(पाय)।

जंणु न [हे] अण्णु बाण्ड (धंठ पठि)।

जंणु की [अण्णु] १ गुण विशेष बाण्डुन
का वेद (गुणा १ १; धीन) । २ अण्णु गुण
के मापक का एक उत्तम शोधत पञ्चा
गुणिका जिसके कारण यह हीन बन्दी
कहा जाता है (अ १) । ३ गुण गुणविश
धन पुत्रि सुवर्ण-स्वामी का मुख्य शिष्य (अ
१) । ४ धीन न [अण्णु] अण्णु गुण विशेष
धन हीन पीर गुणों के धीन का हीन जिसमें
यह मापक धारि लेन वर्तमान है (अ १
६६) । ५ धीन न [अण्णु] अण्णु गुण
धनहीन अण्णु गुणों के उत्तम (आ ४ २१)।

जंणु न [अण्णु] १ धीन प्रथमि धीन
प्रायम-अण्णु विशेष जिसमें बन्दी का कर्तुन
है (अ १) । २ धीन 'पिठ न [पिठ]
गुणिका-अण्णु का धनियुत प्रथम (अ ४
६६) । ३ धीन 'पुर न [पुर] नगर-विशेष (अ)
मात्रि न [मात्रि] राण का एक गुण
(पण्ड २६, २२ मे १३ ४६) । ४ धीन 'पण्ड' विद्या
वर-नगर-विशेष (अ) । ५ धीन 'पण्ड'
ग्राम-विशेष (पाय) । ६ धीन 'पण्ड'
गुणविश धीन पुत्रि-विशेष (पाय)।

जंणु न [अण्णु] सिमार, पीर (धोय
४४ मा)।

जंणु न [अण्णु] १ गुण, धीन
(गम १३; पण्ड २ २२६) । २ गुण स्वान
प्रतिष्ठ एक रत्ना (पण्ड ४५ ६५)।

जंणु न [अण्णु] उक्त मायन-विशेष
(अ)।

जंणु न [हे] गुण गुण बाण्ड वीर का
धियन (हे ३ ४)।

जंणु न [हे] जंणु न = अण्णु ।

जंणु न [अण्णु] १ नौतनेवाला ।

२ गुण अण्णु-वेत की एक बाण्ड (अण्णु
गुणा ४)।

जंणु न [अण्णु] न [हे] स्वच्छ-अण्णु की
जंणु न [अण्णु] } मसीयो में धारि नू कोने
जंणु न [अण्णु] } रत्ना (पण्ड ३ ४४)।

जंणु की [अण्णु] उत्तम-अण्णु विद्या
विशेष (गुण २ २ पठम ७ १४४)।

जंणु न [अण्णु] जंणु (गुणा १ १ धंठ मय
१४ ५)।

जंणु न [हे] नू गुण मय (हे ३ ४१)।

जंणु की [अण्णु] नौतने, अण्णु (विद्या
१)।

जंणु की [अण्णु] एत वेत का नाम
(सिदि २ ३)।

जंणु १ धन [अण्णु] नौतने।
जंणु १ नौतने, जंणु (हे ४ १२७-
२४; प्रागु पण्ड)। नू जंणु नौतने जंणु (गुणा
३ ४४ से ७ १२; अण्णु)।

जंणु न [अण्णु] नौतने, अण्णु
(विदि)।

जंणु न [अण्णु] १ नौतने, अण्णु । २
गुण अण्णु-वेत नौतनेवाला महावीर को
नौतनेवाला उत्तम गुणा का यह गुण अण्णु-
वाच पण्ड के वान की अण्णु-वाचिका नौतने के
विदि पर का (अण्णु)।

जंणु न [अण्णु] १ अण्णु वेत की एक
बाण्ड (पण्ड १ ४ धीन) । २ अण्णु नूतने,
अण्णु-विशेष (अण्णु) । ३ एक विद्यावर-रत्ना
का अण्णु का नौतनेवाला का (अण्णु ५
१ २) । ४ धीन-विशेष । ५ अण्णु-विशेष
(अण्णु १६) । ६ धन गुणा 'पण्ड' धन-विशेष-
हण्डा अण्णु-विशेष (अण्णु १६३
मा)। ७ अण्णु न [अण्णु] १ अण्णु, धन,
अण्णु नूतने धीन अण्णु का अण्णु-विशेष
(अण्णु) । २ धीन-विशेष । ३ अण्णु-विशेष
(अण्णु २) । ४ अण्णु न [अण्णु] अण्णु-विशेष,
अण्णु-विशेष (अण्णु ३ ३ २) । ५ धन
गुण [अण्णु] अण्णु का धनियुत नूतने
(अण्णु) । ६ अण्णु न [अण्णु] वेत की नौतने
विशेष (अण्णु २६) । ७ धन [अण्णु] नौतने
अण्णु-विशेष की अण्णु एक धीन अण्णु

असह्य पुन [परायण] एक बदनबमल
(बिन्दु १४१) ।
असाधी [परा] कस्मिन्नि की माता (परा)

5)

आइ-विशेष (विषय १ २)। आजाव पुं
[आजव] जाति की समानता बतला कर
विषय प्राप्त करनेवाला साधु (छा ५, १)।
‘विर पुं [रविरे] छत्र वर्ण की उन्नत का
प्रति (छा १ २)। ‘नाम न [नामम्]
कर्म-विशेष (मम १७)। व्यसंगा की
[प्रसंगा] जाति के पुर्णों में काठित मरिच
(वीर १)। फल न [फल] १ कर्म-विशेष।
२ फल-विशेष। बायरत एक कर्म मरणा
(मुर ११ ३१ छण)। मरिचि [मरु]
वज्र जाति का (माता २ ४ २)। मय
पुं [मय] जाति का सममान (छा १)।
पक्षिया की [पक्षिका] १ मुगनिच
फलवाला पुष्प-विशेष। २ फल-विशेष। एक
कर्म मरणा (छण)। सर पुं [सर] १
पुर्ब जय की स्तुति। २ वि पुर्ब जय
का स्मरण करनेवाला पुर्ब-जय का ज्ञान
वाला ‘वासरय’ कर्म इमार्द मर्याद
संप्रत्योयस्’ (मुर ४ २ म)। मरण न
[मरण] पुर्ब जय की स्तुति (बत १६)।
‘सर रेवो सर (कर्म विने १७१) उन
२२ छे)।
आइ स्त्री [आति] १ ग्याम-ग्याम-प्रक्रिय
द्वयप्राप्ता—मयय द्रव्य (कर्म १६
न ७११)। २ माता का र्थ (नि ४१ म)।
आइ रेवो जाया (प)।
आइ की [रे] १ मरिच मुय बाक (रे
१ ४४)। २ मरिच-विशेष (विषय १ २)।
आइ वि [याविम्] यज-वर्ग (स्वति १
१४५)।
आइ वि [याविम्] जलमया (छा ४ ३)।
आइ वि [याविम्] जाति मीमा ह्या
(विने २४ ४ या १२४)।
आइय रेवो जाय = जाठ (पत्रका १७७)।
आइयि १ वि [याइयि] १ ह्या
आइयि १ मुगनिच-व्येय (कर्म १२)।
२ ह्यापुनारी (कर्म १ २)।
आइयि वि [याइयि] स्वेय-निमित्त
(विने २४)।
आइयन रेवो जाय = जाठ।
आइयन
आइयन १ रेवो जाय = जाठ।

आणी स्त्री [याकिनी] एक बैन कापी,
विमर्षी मुनिदि बैन धम्मर की हरिच
मुरि धनी कर्म-माता समन्ते वे (उप
१ १६)।
आइययय न [यायय] गमन गति (मुस
२ १७)।
आइय वि [अलीय] जाति-सम्बन्धी
(मात्र ४)।
आइ न [आयु] वीरसेया यवा मरि की
बाजी लपसी काय-विशेष (नि ६२४)।
आउ म [आयु] बराचित कमी (उप ११)।
आउ म [आयु] किसी तथ्य (उप २४७)।
‘कण्य पुं [कमे] पुर्बमात्रय नमन का मोन
(स्व)।
आउ की [याह] १ देव-पत्नी देवपत्नी।
२ वि जानेवाला (संवि ४)।
आउया की [याह] देव-पत्नी पति के
छोटे भाई की धी देवपत्नी (छाया १ १६)।
आउर पुं [द] कतिपयन कैय का फल
(रे १ ४४)।
आउर पुं [आउर] बली-विशेष (पण
१—पत्र १२)।
आउरय पुं [यायुधान] यजय (उप १ ११
टी। पत्र)।
आग पुं [याग] १ यज धम्मर होम हवन
(पत्र १४ ४७-छ १७१)। २ देव-पुत्र
(छाया १ १)।
आगर धक [आग] जागना निद्रा-व्याप
करना। बायर (प)। ३ जागरमाय
(विने २७१६)। हेर-जागरितय, जाग-
रतय (कर्म कर्म)।
आगर वि [आगर] १ जानेरला जागना
(मात्र १७५ या २५)। २ पुं जागरण
निद्रा-व्याप (मुद्रा १८७ म १२ २ मुर
११ २७)।
आगरय पुं वि [आगरि] जानेरला
(या २१)।
आगरि वि [आगुर] जाग ह्या निद्रा-
रहित प्रवृत्त (छाया १ ११ या २४)।
आगरि वि [आगरि] निद्रा-रहित (आ
१ २)।

आगरिया की [आगरिया जागया]
जागरण निद्रा-व्याप (छाया १ १ मी)।
आगरय वि [आगरि] जागना जाग
ह्या, जाने के स्वभाववाला (पत्रि ११६)।
आजावर वि [यायावर] गमनयोग निद्रा
(समन्त १७४)।
आजा की [रे] पुंय लता-प्रजा (रे १ ४४)।
आज एक [हा] जागना जाग प्राप्त करण
समन्ता। जाह (हे ४ ७)। ३ जागति
जागना (कर्म विषय १ १)। छ-
जागिण, जागिण, जागिण (वि
२७६ महा मय)। हेर जागि (वि
२७६)। ४ जागियय (मय पत्र १२)।
जाग पुं [यान] १ रपादि बाहन सवार
(मीन पण २ ४४ ४ ४)। २ यज
पाम नीरा बाहन जाह वीरपुनुराए
बहुत वायु (पुत्र १७)। ३ यजय गति
(पत्र)। पत्र वचन न [पात्र] पत्रा
वोका (मवि २ मुर ११ ११)। माडा की
[याडा] १ लेखा प्रत्यय। २ बाहन
बनाते का वाहना (वीर धावा २ २ २)।
जाग न [ज्ञान] ज्ञान, बीष समम (मम
मुना)।
जाग वि [जान] जागना ह्या ‘जाह
काय छाहरी’ (पुत्र १ ४, १)। पापु
पल्ले छाहरी (मात्र)।
आपद की [जानधी] लीला यज-पत्नी
(पत्र १ १ १८ से १६ १)।
जाग वि [जायक] जागना, जागी
जानना (मुद्रा १ १ १; महा मुर
१ १२)।
जागरी रेवो जाग (पत्र ११७ १८)।
जागय न [रे] बय, पुत्रकी में ‘जाग’
‘ओ छरपाए सुविधीय पाठपण्णादी’
(उप २६७ टी)।
जागय न [ज्ञान] जागना जागरी
समम, बीष (हे ४ ७ उप २१ मुना
४११; मुर १ ७१ रम १४ महा)।
जागया १ जी, ऊपर रेवो (उप २१६;
जागया १ विने २१४ या मुर १४)।
जागय रेवो जाग (या महा)।

आजय वि [आयक] आजयेवाला, समयमे
 जाना (वीर) ।
 आजयवा बी [आन] जान समय, जानकारी
 'एपि पयलं आउजाए सबउयाए' (पम्) ।
 आजयवि [आनपद] १ बैठ में उत्पन्न
 दो-संस्की (सक सावा १ १—पम् १) ।
 आजय सक [आयय] जान करवा
 जगत् । आजायइ पणुआइ (हुमाट म्हा) ।
 हैह आजयविउ आजयविउ (वि १२१) ।
 इ आजावयय्य (उप ६ २२) ।
 आजयाय न [आपन] आन, जीवन (पम्
 ११ ८ गुपा ९ १) ।
 आजयवणा } बी [आपनी] विद्या-विरोध
 आजयवणी } (उप ४२, म्हा) ।
 आजयवि वि [आपित] जानवा विचारित
 मानुष करवा, भिरेरिउ (गुपा १२९
 पम्) ।
 आमि वि [आमि] जाना जानकार (हुमा) ।
 आमिज वि [आत] जाना हुमा विपि
 (गुप ४ २४ ७ २१) ।
 आयु न [आतु] १ बैठ, हुमा । २ ऊन
 वीर जवा का रूप धन (हंनु रि १ १,
 छाया १ २) ।
 आयु } वि [आयक] जानवाका जवा
 आयुज } जानकार (उप १ ४ छाया १
 ११) ।
 जाय घ [जान] जलेला-मुचक समय
 जाना (पमि १२) ।
 जाम मरु [जुम्] मार्गन करवा, छत्र
 जाला । जायइ (नाट—प्रम टि) ।
 जाम पु [जाम] १ प्रहृ, तीन बायस का
 समय (पम् ४ गुप १ २४२) । २ कम
 रगिवा मरि पत्र बन । ३ कम विरोध
 धातु बलाज बलाज मे नाट धार नाट मे
 मरिउ बर्ग को धम (पावा) । ४ वि बय
 संवरी, कमराज का (गुपा ४ २) । ५
 रि [यम्] १ प्रहारा (हं १ १२६) ।
 २ पु प्रहारा पहेछार, मरिफ (गुपा
 २) । ३ हमा बी [दिमा] रीति
 रिता (गुपा ४ २) । ४ बी [बनी]
 रवि छत्र (महा) ।

जाम केओ आय = पावइ (पाप ११) ।
 जामाइ देओ जामाउ (वि ४२४) ।
 जामाहण न [याममहण] प्रहृकर
 पहेछारी (गुप २, ११) ।
 जामाउ } पु [आमाय, क] जामाउ
 जामाउय } जामा, बकरी का पति (पम्
 ८६ ४ हं १ १११ ना ९८१) ।
 जामि बी [आमि, यामि] बहिन, बहिनी
 (उप) ।
 जामिज केओ जामिज (बर्गि ११२) ।
 जामिज पु [यामिज] प्रहृकर पहेछार,
 पहेर पहेछार (उप ८११) ।
 जामिनी बी [यामिनी] पति, पठ (उप
 ७२८ टि) ।
 जामिज केओ जामिज (गुपा १४६ २६१) ।
 जामेज पु [यामय] जगत्, मरिमेय,
 बहिन का पुन (बर्गि २२) ।
 जाय सक [पाय] प्रार्थना करना मोक्य ।
 बइ जायइ (बह १ १) । कइ जाइ
 अंत (पम् १ १८) ।
 जाय सक [मातय] पीड़ना करवा
 करना । जाइ (उप) । कइ जाइअंत
 (पम् १ १) ।
 जाय केओ जाग (छाया १ १) ।
 जाय वि [जात] १ जगत्, जो पैदा हुमा
 हो (उप १) । २ न छत्र, संपाठ (हं
 ४) । ३ मेर प्रहार (उप १ नि ११) ।
 ४ रि प्रहृ (वीर) । ५ पु बइका पुन
 (पम् ६, ११ गुपा २७६) । ६ न बला
 संताक मरि छैप बइ बहिर जाय पुन-
 कोछण (गुपा २६) । ७ कम जगति
 (छाया १ १) । ८ कम न [कर्म]
 १ प्रवृत्ति-कर्म (छाया १ १) । २ बंकार
 विरोध (पम्) । ३ तप पु [तपस्] बलि,
 बलि (कम्) । ४ नहुमा बी [निहुमा]
 मुन-बला बी (रि १ १) । ५ रि मू
 रि [मूक] कम वे बूक (रि १ १) ।
 ६ न [नय] १ मुन कोष (वीर) ।
 २ कम बरी (उप १२) । ३ मुन
 निविन (पम् १२) । ४ यप पु [यप]
 यम बहि (उप १२) ।

जाय वि [यात] पठ, पमा हुमा (हुप १
 १ १) । २ प्रहृ (गुप १ १) । ३ न
 पम् पति (पावा) ।
 जाय पु [आय] वीरार्थ विहृ, वीर पुन
 (पम्—पावा २४) ।
 जायवि [यायक] १ मरिमेवाता । २
 पु, विहृ (या २१ गुपा ४१) ।
 जायवि [यायक] मरु करवाला (उप
 २४, १) ।
 जायय न [यायन] यायन, प्रार्थना (या
 १४ प्रति ११) ।
 जायय न [यायन] करव, पीड़न (पम्
 १ २) ।
 जाययाय } बी [याचना] याचना प्रार्थक
 जाययाय } मोक्य (उप ६ १ २) पम् ४,
 स २६१) ।
 जायया बी [यायना] करव पीड़ा
 (पम् १ १) ।
 जायपी बी [यायनी] प्रार्थना बी मरु
 (उप ४ १) ।
 जायय पु बी [याय] मुन में उत्पन्न
 मुनरीय (छाया १ ११ पम् २ २६) ।
 जाया बी [यात] निवेद, दुवाय, वृत्ति ।
 माय वि [माय] विहृ से विहृ हो
 सके उतना 'मायस विहृ वीर जाय मरि'
 न बीन न (वि ४४१) ।
 जाया बी [याया] बी वीर (उप १
 गुपा १८६) ।
 जाया केओ जाया (बह २, ४ गुप १ ७) ।
 जाया बी [जाता] बनेछ छरि हर्गो बी
 बइ करिप (छाया १ २) ।
 जायाइ पु [जाययि] पम्—नर पावक
 मरु करवाला (उप २४ १) ।
 जाय पु [जाय] १ जायि, या (हं १ १००)
 २ मरि का मरु विरोध (वीर १) ।
 जायिबइ वि [यायक] मरु केओ (गुमा) ।
 जायि वि [यायरा] कैसा विहृ छत्र वा
 हि १ ४२२) ।
 जायय न [जायय] बीन-विरोध, बी
 मरिउ बीन बी एक छाया (हं ७) ।
 जाय सक [यायय] जगत् रूप करवा
 'बी नयिपवउवाकासीन पावेवि विरोध'
 (बह) । ३ जाययि (बह) ।

५)। पण्डु पुं [प्रमु] जिन-वैव धर्म्म देव (अ १२ टी)। पाणिह्वेन [प्रातिहार्य] जिन-वैव को धर्म्मना-मुचक देव-कृत प्रयोग कृष्ण धारि घट बन्ध विप्रुधियां बधेहि—१ मरणा कृष्ण २ मुच-कृत पुन-वृष्टि ३ विष्य ध्वनि ४ चामर ५ विप्रुधिय ६ सामागृह ७ पुण्डुनिनाद, नक्षत्र (अ १)। पाणिपु पुं [पाजिन] बन्ना गगरी का निवासी एक योद्धि-मुच (आपा १ ६)। त्वय न [विम्ब] जिन-मूर्ति जिन-वैव की प्रतिमा (पनि वंश ७)। मङ्ग पुं [मङ्ग] स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैन धार्म्मार्थ का मुप्रसिद्ध जैन चम्पकार धीहरिपुत्र धुरि के पुत्र वे (मार्थ २८)। मङ्ग पुं [मङ्ग] स्वनाम-प्रसिद्ध जैन धार्म्मार्थ धीर चम्पकार (मात्र ४)। मयण न [मयण] धर्म्म मन्त्रि (पंचव ४)। मय न [मान] जैन धर्म्म (पंचा ४)। माया की [माद] जिन-वैव की बत्नी (अ ११)। मुद्रा की [मुद्रा] जिन-वैव जिस तख्ख से भयोऽर्घ्य में रह्यो है उस तख्ख शरीर का विन्यास, धारम-विशेष (पंचा १)। यंदु देवो यंदु (गुर १ १ गुण ७५)। रक्खियपुं [रुद्धा] स्वनाम-क्यात एक धार्म्मार्थ-मुच (आपा १ ६)। वड पुं [पति] जिन-वैव धर्म्म-देव (गुण ७५)। यड की [वाच] जिम-देव की बाणी (इ १)। वयण न [वयण] जिन-वैव की बाणी (अ १)। वयय न [वयन] जिन-वैव का मुच (धीर)। वर पुं [वर] धर्म्म देव (पंचम १ ४ धरि १)। वरिपु पुं [वरपु] धर्म्म देव (अ ७७६)। वखड पुं [वखड] स्वनाम-क्यात एक जैन धार्म्मार्थ धीर प्रसिद्ध लोच-भर (सह्य १७)। वमड पुं [वपम] धर्म्म देव (राज)। सयडा की [मकिव] जिन देव की धरिय (अ १ २)। सामय न [शासन] जैन धर्म्म (उठ १३ गुण १ ४ ४)। हंस पुं [हंस] एक जैन धार्म्मार्थ (इ ७७)। हंस देवो वर (पंचम ११ ४ गुण १६१ महा)। हरिम पुं [हर्ष] एक जैन मुनि (पण ६४)। त्वयन न [त्वयन] जिन-देव का मन्त्रि (पंचव ४)।

जिण्ड देवो जिमिज 'सपे जिएल मुर्खिब बंधा' (पनि की ४८)। जिण्डरिय पुं [जिनरुद्रिय] जैन मुनि का एक मेर (पंचा १८ १)। जिण्डग न [जयन] वय धीर (अण)। जिणपड पुं [जिनप्रम] एक जैन धार्म्मार्थ (टी २)। जिणिण्ड पुं [जिनगु] जिन मयभाय, धर्म्म देव (प्राय २२)। गिह न [गृह] जिन मन्त्रि (गुर १ ७२)। चंद पुं [चन्द्र] जिन-वैव (पंचम ६१ १६)। जिणय वि [जित] पण्डुप बयोऽष्ट (गुण १२२ पण २७)। जिमिसर देवो जिणिसर (अमत्त ७९/७७)। जिमिस्सर देवो जिणिसर (पंचा १६)। जिणुचम पुं [जिनाचम] जिन-वैव (मजि ४)। जिण्ड देवो जिणिण्ड (वेद्य ६)। जिणिस पुं [जिनय] जिन मयभाय, धर्म्म देव (गुण २९)। जिणिसर पुं [जिनधर] १ जिन देव धर्म्म देव (पंचम २, २१)। २ विष्णु की ग्वाहणी शठाकी क स्वनाम-क्यात एक प्रसिद्ध जैन धार्म्मार्थ धीर चम्पकार (गुर १६ २१६)। धार्म्म ७९, पु ११)। जिणय वि [जिण] १ गुणय, बर्बर (इ १ २ चार ४६ प्राय ७६)। २ पचा हुआ पियरेले भोज्यफल (इ १ १ २)। ३ इड इडा (इ १)। सङ्गि पुं [सिण्ड] १ गुणय छेड। २ योडि पर से खुल (मात्र ४)। जिणय (पर) देवो जिण्ड = जित (जित)। जिणयासा वि [जिआसा] बालने को इच्छा (पंचा १)। जिणिजय (पर) देवो जिणिज (जित)। जिणयासमा की [जि] इडा, इड (पाठ (इ १ ४६)। जिण्ड वि [जिण्ड] १ जिण्ड, धीरनेशना विजयी (माता)। २ पुं धनुड, मय्यन धीर (गउड)। ३ विष्णु योऽष्ट। ४ मुर्ख धरि। ५ इण्ड इण-नायड (इ २, ७३)।

जित देवो जिण्ड = जित (महा गुण १६४ १४१)। जिणिज १ वि [यापय] जितना (इ २ जिणिज १ १२५) पड)। जिण्ड (पर) ऊपर देवो (कुमा)। जिण (पर) य [यया] धीर जिस तख्ख से (इ ४ ४ १)। जिण देवो जिणय (गुण १)। जिआसिय वि [जिआसिय] बालने क लिए इट बालने क लिए बाहा हुआ (मात्र ७२)। जिमुआर पुं [जिआर] गुणने धीर छेड मन्त्रि धार्म्म की मुभारता (गुण ३ ६)। जिम्ब पुं [जिह] एक नरक-स्थान (वेद्य १ २६)। जिम्मा की [जिहया] धीम रसना (पण्ड २, १ अ ६५ टी)। जिमिर्मनिय न [जिहरेमिय] रजनेन्द्रिय धीम (अ ४ २)। जिमिमया की [जिहियम] १ धीम। २ धीम क धारारबत्नी धीम (अ ४)। जिम एक [जिम, मुज] भोजन करना वाला। जिमर (इ ४ ११ पड)। जिम (पर) देवो जिम (पर धरि)। जिमय न [जिमन भोजन] धीमन भोजन (पा १६)। जिय ३६)। जिमय न [जिमन] जियला, धीम (धर्मि ७)। जिमय वि [जिमिय, मुकट] १ जितने भोजन जिम हुआ हो वह (पंचम १ १२७ पुन १३५ महा)। २ जो बाणा गया हो वह धीर (इ १, ४१)। जिमन देवो जिन = जित। जिमर (इ ४ २१)। जिमड पुं [जिडा] १ देव-विशेष जितके बरानने से प्रायः एक वर्ष तक जमीन में विक्रमान रह्यो है (अ ४ ४—पंच २०)। २ वि. कुणि कपटी मन्त्राधी (अ ७१)। ३ मन्त्र, धनप (अ २)। ४ न. माणा काट (अ २)। जिमड न [जिम्ह] दुर्दिग्य पण्डा माया काट (अ ७१)।

जिच केओ जीव भावाइ इहं मरिणी बसन्ता
बन्ध विवदता तुमए (बर्चि २)।

जिच १ (मए) केओ सिच (हुमा पइ हे
जिह १ ५ ११७)।

जिह केओ जीह (पइ)।

जीअ केओ जीअ = जीअ। जीअ (पा १२४
हे १ १ १)। नक जीअत (सि १ १२
पा ११)।

जीअ केओ जीअ = जीअ (पठ)। १ पानी
बत (सि २, ७)।

जीअ केओ जीअत (हे १ २७१ प्राप्ता सुर
२, २१)।

जीअ न [जीअ] १ प्राप्ता, पित्त प्रवा रवि
(जीअ पय, सुपा ४१)। २ प्रमाथित हे
सम्बन्ध रखनेवाला एक ठण्ड का रिवाज
सैन सुभों में ठण्ड ठण्ड से क्लिन्न ठण्ड के
प्रतिनिधियों का परम्परागत आचार (ठा ३,
१)। ३ आचार-विरोध का प्रतिनात्मक धर्म
(ठा ३ २ बच १)। ४ मर्यादा, स्थिति
स्वत्वा (संकि)। कप्य पुं [कप्य] १
परम्परा से प्राप्त आचार। २ परम्परागत
आचार का प्रतिनात्मक धर्म (पंचा १ जीअ)।
कपिय वि [कपिय] जीअ कपयवाला
(अ १)। घर वि [घर] १ आचार
विरोध का बाधकार। २ स्वामन-स्वात एक
वैवाचार्य (संकि)। वक्कार पुं [वक्कार] १
परम्परा के अनुसार व्यवहार (बर्चि २,
पंचा ११)।

जीअण केओ जीअण (कप-वैत २२)।

जीअण वि [जीअण] जीअणवाला
पठ जीअणवाला (पठ १ १)।

जीआ की [ज्या] १ कुप की डोर (हुमा)।
२ दुर्बली भूमि। ३ माता बगनी (हे २,
११४ पइ)।

जीअ न [जि अजिन] जीअ मरन की पीठ
पर लिखना प्रथा चर्ममयवाहन (पच ४४)।

जीमूअ पुं [जीमूअ] १ पैर बर्च (पाप्ता
पठ)। २ पैर-विरोध विरोध कर देने से
बगनी बच बर्च एक विकारी स्त्री (हे
अ ४ ४)।

जीअ केओ अर = जु।

जीरण न [जीअ] १ अरन पाक। २ वि
पुणता, पचा हुमा 'मनीरु' (सि २७)।

जीरण न [जीअ] जीअ मसाला-विरोध
(सुर १ २२)।

जीअ एक [जीअ] पचाला। जीअइ
(हुमा २११)।

जीअ एक [जीअ] १ बीजा प्रसाद
करना। २ एक. प्राप्य करना। जीअइ
(हुमा)। नक जीअत जीअमाण (विपा
१ ३, लप ७२८ टी)। ईह जीअत (अपा)।
एक. जीअत (नट)। इ. जीअत
बीअणिय (सुर १ ७)। अरौ बीअत
(सि ३२२)।

जीअ पुं [जीअ] १ धर्ममा वेतन प्रमाणी
(अ १ १; बी १; सुपा २११) 'जीअइ'
(सि ११७)। २ बीअन, प्रमा-भाण्ड
'मोरोपि बीअण्ड पठणार्थ मोविअति
पठणार्थ' (सि ३३ ८, बम १)। ३ पुं.
इहसति पुअ-इह (हुमा १ ८)। ४ नक
पठण (अ २ १)। ५ केओ जीअ =
जीअ। कय पुं [कय] बीअण्डति
बीअण्डत (सुर १ ११)। माह न
[माह] विने की पकड़ना (छाया १ २)।
णिअय पुं [निअय] बीअण्डति (अ
१)। 'निअय पुं [निअय] जीअ
पठण, बीअण्डति (बम १ ४ ४ पठ)। इय
वि [इय] बीअण्डति (सुर १)।
इया की [इया] प्राणि-यय, बुजी बीअ
का बुज से पकड़ (महावि २)। 'इय पुं
[इय] स्वामन-स्वात अतिथि सैन आचार्य
मीर अचकार (हुमा १)। पयस पुं
[प्रवेशजीअ] सविम प्रवेश में ही बीअ की
विपत्ति की सामनेवाला एक बैठावात धर्म-
निक (पच)। पयसिय पुं [प्रवेशिक]
इहो पूर्णक धर्म (अ ७)। अंग 'अंग
पुं [अंग] १ बीअ-अति, प्राणि-बीअ
बीअण्डत (अपा)। 'विअय न [विअय]
बीअ के स्वयं का विअय (पच)। 'विअति
की [विअति] बीअ का अर (अ ११)।
'मुअइय न [इअिक] अनुअ, संमति,
अनुमति (संकि)।

जीअ न [जीअ] छाट रिन का बछ्छार
अवात (संरोच २८)। 'विअिह पुं
[विअिह] बही धर्म (संरोच २८)।

जीअजीअ पुं [जीअजीअ] १ बीअ-नक धर्म-
पठण (अ २, १)। २ बछोर-क्यों
ककवा (पच)।

जीअत केओ जीअ = जीअ। मुक पुं [मुअ]
बीअण्डत, बीअन-अय में ही संसार-अय से
मुक महात्मा (अनु ४७)।

जीअ पुं [जीअ] १ पठि-विरोध (अ
२ ८)। २ अय-विरोध (सिच)।

जीअजीअ पुं [जीअजीअ] बछोर कक-
वा (पठ १ १—अ ८)।

जीअण न [जीअण] १ बीजा विन्नी (सि
३२२; पच ८ २३)। २ बीअन,
माजीअिका (अ २४० ११)। ३ वि.
विअमेवाला (पच)। 'विअि की [विअि]
माजीअिका (अ २४४ टी)।

जीअमजीअ पुं [जीअजीअ] वेतन कीर न
पराय (पाव)।

जीअणुआ केओ जीअत-मुअ (अ ११)।
जीअणुआ की [हे] सुभों के धारण के
आचन-मूल आचन-मयी (हे १ ४४)।

जीआ की [जीआ] १ कुप की डोर (अ
१ ४)। २ बीअन बीआ (सि ३२१)।
३ सेन का विअन-विरोध (अ १ ४)।

न पाअ पुं [जीआतु] विअमेवाला बीअन,
बीअण्डत (हुमा)।

जीआविच वि [जीअि] विआवा हुम (अ
७ १ टी)।

जीअ वि [जीअि] बीअेवाला (अ ८४)।

जीअि वि [जीअि] १ बीअि हो।
२ न बीअि बीअन, विन्नी (हे १ २७)।
प्रम। 'महा पुं [नाय] अय-अति
(हुमा ११२)। रिअिअ की [रिअिअ]
नयसति-विरोध (पठ १—अ ११)।

जीअिआ की [जीअिअ] १ प्राणि-अय,
विअि-आचन हुमि (अ ४ ४; अ २१८
छाया १ १)।

जीअिओससिय वि [जीअिओससिय]
बीअन में अयन के मुअ, बीअण्डत क
बगन (अ २, ११; पच)।

विद्यो दीव्यवासाय बुद्धिबलम् (विद्ये १११ टी दीव्य)।

सुगुण्य देवो सुगुण्य । सुगुण्य (हे ४ ४)।

सुगुण्यया } की [सुगुण्य] इत्या
सुगुण्यया } विरक्तार (स ११७ प्रार)।

सुगुण्ययि वि [सुगुण्यित] इति निर्दिष्ट (सुमा)।

सुग न [सुग] १ बाल, बड़ी बनेछ बाल (बाबा)। २ तिरिवा पुन-नाम (सुग २, २; बं २)। ३ मोक्ष देव में प्रसिद्ध हो जान का लम्बा-बीजा पाल-विरोध तिरिवा-विरोध (छाया १ १; प्रीत)। ४ वि पाल-बाह्य फल धारि। ५ पाल-बाह्य (छा ४ १)। ६ पिरिया रिया की [चिचो] बालन की पति (छा ४ १-पत्र १११)।

सुग वि [सोग्य] सायक उचित (विद्ये १११; टी ११ प्रार ११; सुमा)।

सुग न [सुग] बुद्ध इव इव (सुमा प्रार प्रात)।

सुग देवो सुग। सुग (हे ४ १ १ १)। सुग देवो सुग।

सुगम य [सुग] बहाई करना, बहना। सुगम (हे ४ २१७ पत्र)। बह-सुगम सुगमाय (सुग १ २२१; २ ११)। सुग, सुगिता (छा १ २)। प्रयो सुगमवे (महा)। न सुगमपे (महा)। सुगमाययम् (छा ४ २२१)।

सुगम न [सुग] नगाई, संघाम समर (छाया १ १; सुमा, कृष्ण १ १४)। सुगम न [सुगम] मन्त्र, बुद्धों की वृत्त नगाई में एक नगा (दीव्य)।

सुगम न [सोपम] बुद्ध नगाई (सुमा २२७)।

सुगमि वि [सुग] १ बहा हुआ, विष्णु संघाम विद्या हो बह (हे १२, १७)। २ न बुद्ध, नगाई, संघाम (स १११)।

सुग वि [सुग] सेवित (सामा)।

सुग न [सु] बूट धरुण 'भा सुग बुद्ध' 'मति' (मति १११)।

सुगि वि [सु] धाव में बूट हुआ बूट के लिए एक बूट से छोड़ा हुआ 'सुगि' र्म सुगम बुद्धिया वह सा-यावि साई (छा ७२८ टी)।

सुगि वि [सु] विरक्त निपुण रत्न (हे १ ४७)।

सुगि वि [जीर्ण] बूता गुराग (हे १ १ २) मा २१७)।

सुगुगुग न [सीर्णुगु] नगर-विरोध जो धावक भी 'बूताग' नाम से प्रसिद्ध है (टी २)।

सुग देवो ओगु = बौद्ध (सुग ११)।

सुग की [बोलेसा] बाली बहिका बह का प्रकाश (सुमा १२१ सख)।

सुग स [सुग्य] बोधना। सुग सुगिता (टी ११)।

सुग वि [सुग] १ संकट उचित, योग्य (छाया १ ११ पत्र २)। २ सुगु, नगा हुआ विना हुआ संकट (सुग १ १ १)।

सुग १४)। ३ संकट किसी कार्य में बड़ा हुय (पत्र १४)। ४ संकट समर्पित (सुग १ १ १)। ५ संकट। संकट न [संकट्ये] संकट-स्थिति (सुमा ४ ७७)।

सुगार्तय पुन [सुगार्तय] कहना-विरोध (सुमा २१४)।

सुगार्तय देवो सुगार्तय (सुमा २१४)।

सुगि की [सुगि] १ योग योगन, बौद्ध संघीय (दीव्य छाया १ १)। २ व्यापकपति (स ११७ प्रार ११)। ३ साधन सुग (सुमा १ १ १)। ४ पत्र वि [सुग] सुगि ना बालार (दीव्य)। सार वि [सुग] सुगि-प्रधान सुग, व्यापक-प्रमाण-सुग (स ७२८ टी)। सुगम्य इ [सुगम] बहावटी सेना (स १ ११)।

सुग पु [सुग] ऐरवत बर्ष के वृष्टि विन-वृष्टि (स १११)।

सुगि वि [सुगि] बारी बनेछ में को बोधा बाल 'सुगि-सुगम' (सुमा ७७)।

सुग देवो सुगम = बुद्ध (सुमा)।

सुग देवो सुग (सुग १ २४२)।

सुग देवो सुग (सुमा १२७)।

सुग देवो सुग (हे ४ १ १)। सुगि (सुमा)।

सुग न [सुग] १ बुद्ध, योग, रत्न (हे १ १२१ सुमा)। २ सुग रत्न (सुग ४ ७; छा ४ १-पत्र २१७)। पत्रि वि [प्रादेशिक] सम संघ प्रदेवों के निव (स २४, ४)।

सुग न [सुग] परस्पर लोभ दोष (सिदि १११)।

सुग स [सुगम] द्वितीय बुद्ध का नाम धर्मनाम 'सुगम-सुगम' (हे १ २०१)।

सुगि वि [सु] बह, निविष्ट रत्न 'सुग-सुगम' (हे १ २०)।

सुग पु [सुग] बाल रत्न (सुमा)। राय पु [सुग] बारी का बाल (सुग-किराटी) राजकुमार, भारी राजा (सुग १ १७, पत्रि ८२)।

सुग की [सुगि] रत्नी बाल की (हे १ ४ दीव्य पत्र प्रार ११; सुमा)।

सुग न पु [सुग] रत्न देव (सुग ४ ४ २)।

सुग न [सुगम] १ सुगम (स २११ टी; सुग ११ १२७)। २ राजा के मने पर बह एक सुगम का रत्नविन न हुआ हो एकक का रत्न (सुग २ १)। ३ राजा के मने पर दीव्य सुगम के राजविन हो बाल पर दीव्य सुगम की निपुण न हुई हो एकक का रत्न (सुग १)।

सुग देवो सुग (स ४७७ पत्र ११, २१)।

सुगि देवो सुगि (स ४७७ पत्र ११, २१)।

सुगि देवो सुग (स ४७७ पत्र ११, २१)।

सुगि देवो सुग (स ४७७ पत्र ११, २१)।

सुगि देवो सुग (स ४७७ पत्र ११, २१)।

सुगि देवो सुग (स ४७७ पत्र ११, २१)।

सुगि देवो सुग (स ४७७ पत्र ११, २१)।

सुगि देवो सुग (स ४७७ पत्र ११, २१)।

सुगि देवो सुग (स ४७७ पत्र ११, २१)।

सुगि देवो सुग (स ४७७ पत्र ११, २१)।

सुगि देवो सुग (स ४७७ पत्र ११, २१)।

सुहृदिह { बेहो जहृदिह (विप) लव
सुहृदिह { ४५८ टी. छाया १ १—
सुहृदिह { पत्र २ ८ २२१) ।

सुहृ सक [हृ] १ रेता पर्यण करना । २
हवन करना होम करना । वृहणमि (छा
०—पत्र ३८१ नि १) ।

सूत्र न [सूत्र] बुधा सूत्र (गाम) । कर
वि [कर] बुधारे सुप का बिपायो (मुना
१२२) । कर वि [कर] बही सुत्रोक्त
पर्व (छाया १ २८) । करि वि [कारिन्]
गुपारी (महा) । केडि बी [केडि] सूत्र-
बीडा (मण ४८) । लखन न [लखन]
बुधा सेवने का स्थान (पत्र) । केडि
बेहो केडि (मण ४०) ।

सूत्र पु [सूत्र] १ बुधा बु. गाड़ी का प्रत्यय-
विशेष जो बेहो के करने पर जाता जाता है,
बुध (छा ४ १११) । २ लक्ष्य-विशेष
‘बुधनहल मुक्त सहाय न अस्त्रवेह’ (कप)
१ पत्र-लक्ष्य (बै १) । ४ एक महापाठा-
कृत (पत्र २४२) ।

सूत्रय पु [सूत्र] वाचक पदो (बै १ ४०) ।

सूत्रा पु [सूत्र] बेहो सूत्र = रूप (मम
४१) ।

सूत्रा पु [सूत्र] सम्प्रा की प्रया वीर बज
की प्रया का निषल (छा १) ।

सूत्रा बी [सूत्र] १ बी चीक, कनय लुह
बी-विशेष (छा ११) । २ परिपाण-विशेष,
पाठ बिता का एक भाग (छा १ १४) ।
सूत्रायर वि [सूत्रायर] पूराओं को
स्थान सेवना (मम ११) ।

सूत्रार वि [सूत्रार] बुधारे सुप का
सेनाही (रंभा मवि मुना ४) ।

सूत्रारि { वि [सूत्रारि] बुधा सेवने-
सूत्रारि { भाग, बुध का सेनाही (छा ४१
मुना ४ ४८८ छ ११) ।

सूत्र सेना सुत्र = बुध । सुमित्रयन्त्र (वि
१ २४) ।

सूत्र पु [सूत्र] सुगत सेठ-कनार (बै ४
१५५ मवि) ।

सूत्र न [सूत्र] लक्ष्यार घ. रिलों का प्रयास
(शेष १८) ।

सूत्रय { पु [सूत्र] सुत्रपत्र की प्रिलोया
सूत्रय { भावि लोन निर्म में होयो बज की
कना वीर संप्रा के प्रकाश का निषण (पत्र
१२) पत्र २१८) ।

सूत्र सक [सूत्र] निष करना । सूत्रि (मुम
२ २ २१) ।

सूत्र सक [सूत्र] कोष करना प्रस्ता करना ।
सूत्र (हृ ४ ११२ पत्र) ।

सूत्र सक [सूत्र] सेठ करना प्रलोम करना
सूत्र (हृ ४ ११२ पत्र) । सूत्र (मुना)
मवि सुहृदिह (हृ २ १११) । सक-
सूत्र (हृ २ १११) ।

सूत्र सक [सूत्र] १ सुता सुबता । २
सक बन करना बिना करना (पत्र) ।

सूत्रन [सूत्र] १ सुबता सुता । २
निष्ठा पर्यण (पत्र) ।

सूत्रन [सूत्र] १ सुबता सुता । २
निष्ठा पर्यण (पत्र) ।

सूत्रन [सूत्र] १ सुबता सुता । २
निष्ठा पर्यण (पत्र) ।

सूत्रन [सूत्र] १ सुबता सुता । २
निष्ठा पर्यण (पत्र) ।

सूत्रन [सूत्र] १ सुबता सुता । २
निष्ठा पर्यण (पत्र) ।

सूत्रन [सूत्र] १ सुबता सुता । २
निष्ठा पर्यण (पत्र) ।

सूत्रन [सूत्र] १ सुबता सुता । २
निष्ठा पर्यण (पत्र) ।

सूत्रन [सूत्र] १ सुबता सुता । २
निष्ठा पर्यण (पत्र) ।

सूत्रन [सूत्र] १ सुबता सुता । २
निष्ठा पर्यण (पत्र) ।

सूत्रन [सूत्र] १ सुबता सुता । २
निष्ठा पर्यण (पत्र) ।

सूत्रन [सूत्र] १ सुबता सुता । २
निष्ठा पर्यण (पत्र) ।

सूत्रन [सूत्र] १ सुबता सुता । २
निष्ठा पर्यण (पत्र) ।

सूत्रन [सूत्र] १ सुबता सुता । २
निष्ठा पर्यण (पत्र) ।

सूत्रन [सूत्र] १ सुबता सुता । २
निष्ठा पर्यण (पत्र) ।

सूत्रन [सूत्र] १ सुबता सुता । २
निष्ठा पर्यण (पत्र) ।

सूत्रोक्त ही बर्ष (पा १४८) । हियह
पु [विपवि] सुत्र-नायक (मम ११) ।

सूत्र न [सूत्र] सुम सुमन बोडा (पात्रा २,
११ २) । काम न [काम] समतार बार
रिलों का उरबास (शेष ४८) ।

सूत्रि वि [सूत्रि] सुम में उरबा (पात्रा
२ २) ।

सूत्रियताम न [सूत्रियताम] बिबाह-मरण
नामो जयह (पात्रा २ ११ २) ।

सूत्रिया बी [सूत्रिया] लता-विशेष बूही
का पद (मण १) पत्र २१ ४१) ।

सूत्री बी [सूत्री] लता-विशेष मावरी लता
(मुना) ।

ले म १ पाठ-वृत्ति में प्रयुक्त किया जाता
सम्प्य (हृ २ २१०) । २ धनधारण-सम्प्य
सम्प्य (जय) ।

जेठ वि [जेठ] बीसेवे योग्य (टीम ४) ।

जेठ वि [जेठ] बीसेवे योग्य (टीम ४) ।

जेठ वि [जेठ] बीसेवे योग्य (टीम ४) ।

जेठ वि [जेठ] बीसेवे योग्य (टीम ४) ।

जेठ वि [जेठ] बीसेवे योग्य (टीम ४) ।

जेठ वि [जेठ] बीसेवे योग्य (टीम ४) ।

जेठ वि [जेठ] बीसेवे योग्य (टीम ४) ।

जेठ वि [जेठ] बीसेवे योग्य (टीम ४) ।

जेठ वि [जेठ] बीसेवे योग्य (टीम ४) ।

जेठ वि [जेठ] बीसेवे योग्य (टीम ४) ।

जेठ वि [जेठ] बीसेवे योग्य (टीम ४) ।

जेठ वि [जेठ] बीसेवे योग्य (टीम ४) ।

जेठ वि [जेठ] बीसेवे योग्य (टीम ४) ।

जेठ वि [जेठ] बीसेवे योग्य (टीम ४) ।

जेठ देखो उद्धृत (वि ११) ।

जेष्ठिअ [जि [मावन्] विज्जा (हे २

जेष्ठिअ) ११७; वा ७१; वज्र) ।

जेष्ठिक (ही) ऊपर देखो (पाठ २५) ।

जेष्ठुअ } (पा) ऊपर देखो (हे ४ ४१३) ।

जेष्ठुअ

जेह्म देखो जेष्ठिम (हे २ ११; प्राप्र) ।

जेम अक [जिम् मुञ्] भोजन करना ।

जेमर (हे ४ ११ पाठ) । वह जेमरत (पत्र १ १ वज्र) ।

जेम (पत्र) य [यया] केने जिय तह् ठे (गुण १८३ पत्रि) ।

जेमम } न [जेमन] पीमन भोजन (घोष

जेममम) ८ मील) ।

जेमणय न [जे] बहिउ धंन, पुनरुत्ती में 'जमयु' (हे १ ४८) ।

जेमणी जी [जेमनी] पीमन (संघोष १७) ।

जेमावज न [जेमन] पीमन करना विमान (धन ११ ११) ।

जेमापिय वि [जेमिठ] भोजित स्थित पीमन करना दया हो वह (उप १११ टी) ।

जेमिय वि [जेमिठ] पीमा हुया मिले भोजन किया हो वह (सापा १ १—पत्र ४१ टी) ।

जेमय्य देखो जेमिठ = वि ।

जेव (ही) देखो जेव = एव (रंता कण्ठ) ।

जेवै (पत्र) देखो जेवै (हे ४ ११७) ।

जेवड (पत्र) देखो जेष्ठिम (हे ४ ४ ४) ।

जेवज (ही) देखो एव = एव (वि नाट) ।

जेह (पत्र) वि [पाहट्] बंधा (हे ४ ४ २ पत्र) ।

जेहिअ पुं [जेहिअ] स्वतन्त्र पत्र एक पैत पुनि (कण्ठ) ।

जो } अक [टार] देवता । जोर (कण्ठ) ।

जोम

जोम } एवाहु बर्बरक नीवर पुन गुह गुहै केण (गुर १ १२५) । जोमि (घ १५१) ।

जोम } नीम नीमर (वज्र १२) । वह जोमरत (वज्र ११ टी; महा गुर १ २४७) ।

वज्र जोमरत (गुण २७) ।

जोमरत [जोमर] प्रकाशित होना, वज्र

कथा । जोर (गुमा) । गुण जोरहु

(पत्र) । वह जोमरत (गुमा महा) ।

जोम अक [यावत्] प्रकटित करना ।

जोमर (गुण १ १ ११) । 'यसवि य

गिहं पुण बलपिप्पिना जोमर दुहिया' (गुण १११) । जोमरता (विने ११२) ।

जोअ अक [योजय्] १ समाप्त करना

कठम करना । २ करना । जोमर (गुण

१ १२—पत्र १८, १८१; गुण १२—पत्र २११) ।

जोअ अक [योजय्] बीकय बुझ करना ।

जोमर (महा) । वह जोहयय्य जोमरअय्य

जोमपिय जोमपियअ (उप १५१) व ५१; पीत लिह १) ।

जोअ पुं [जे] १ पत्र वज्रमा (हे १ ४८) ।

२ गुण गुण (छात्रा १ १ टी—पत्र ४१) ।

जोअ देखो जोग (पत्रि २४, घ १११; गुमा) । वज्रय न ['वज्रक'] वृष्टि-विशेष

पावक कृष्ण, हावमा (घ २३२) ।

जोअंगण [जे] देखो जोइंगण (मंत्रि) ।

जोअर वि [यावत्] १ प्रकटनेवाला २ न व्याकरणा-प्रसिद्ध लिपित वदेय पत्र (विने १ १) ।

जोअर पुं [जे] जघोत कीट-विशेष बुकट (वज्र) ।

जोअर न [जे] लोचन नेत्र वज्र, पत्रि (हे ४ २) ।

जोअर न [योजन] १ परिमाण-विशेष बार कोय (वज्र १८) । २ संकल्प संयोग बीकय (वज्र १ १) ।

जोअर न [यीमन] पुत्रावस्था, वधछात्रा

वधाली (उप १४२ टी गा ११७) ।

जोअरता टी [योजना] बीकया संयोग करना (उप १२१) ।

जोअ जी [यो] १ स्वर्ग । २ धाकन (पत्र) ।

जोअरअण्ण वि [योजयिण्] जोअरनेवाला संयुक्त करनेवाला (छा ४ १) ।

जोअ वि [यागिण्] १ बुद्ध, संयोगवाला । २ चित्त-निर्देश करनेवाला, समर्थि नयने

वाला । ३ पुं मुनि बटि, छात्र (गुण २११)

२१७) । ४ रामवज्र का स्वामन-कण्ठ एक मुन्य (पत्र ६० १) ।

जोअ पुं [योविस्] १ प्रकट, देव (वज्र छा ४ १) । २ धर्मि वज्रि 'यसि वज्र

वहा पठिहं जोअरअण्ण' (गुण १ ११) ।

प्रतीय धारि प्रकटय वज्रु 'वहा वि पठेय वादयणवि' (गुण १ १२) । ४ धर्मि वा

काय करनेवाला कर्मवृत्त (वज्र १७) । ३ वज्र नयन धारि प्रकटय पठार (वज्र १) ।

५ ज्ञान । ७ ज्ञान-मुक्त । ८ प्रसिद्धि-मुक्त ।

९ सत्कर्माकारक (छा ४ १) । १ स्वर्ग ।

११ वज्र वदेय का विमान (उप) । १२

वयोविश-वाक (निर १ १) । अंग पु

['वज्र'] धर्मि का काम करनेवाला वज्र-

वृद्ध-विशेष (छा १) । रस न ['रस']

रस की एक भाति (छात्रा १ १) । देखो

जोअर = योविस् ।

जोअर पु [जे] कीट-विशेष लघोत, बुझ, पानीबला (हे १ २) ।

जोअर वि [टट] देवा हुय निरीक्षित (उप १ १७३) महा यति ।

जोअर वि [योजित] बीकय हुय (४ २४४) ।

जोअर देखो जागिय (उप) ।

जोइंगण पु [जे] कीट-विशेष, वज्र-लोत (हे १ २) ।

जोइअ पुन [योविट्ठक] प्रतीय धारि प्रका-

यक पठार 'वि वृत्तय वसुधाविषये वादयण-

तर् वदेयीयवि' (रंता) ।

जोइअ पुं [जे] योविट्ठक १ प्रतीय बीकय (हे १ ४२ पत्र ४-वज्र ७) । २ प्रतीय

धारि का प्रकटय (घोष १११) ।

जोइजी जी [योमिनी] १ योमिनी वज्र-सिनी । २ एक प्रकार की बीम में बीज है (वज्रि ११) ।

जोइर वि [जे] स्वमित (हे १ ४२) ।

जोअर न [जे] वज्र (हे १ ४२) ।

जोअर देखो जोअ = योविस् (वज्र १; वज्र विने १८७; जो १ टी छा १) । वज्र पुं ['वज्र'] १ वज्र । २ वज्र (गुण २ १) ।

स्वयं पुं ['वज्रय'] वज्र धारि वज्र (उप १५) ।

ओइस पुं [ओतिप] १ देवी की एक जाति
सूर्य, चन्द्र वइ प्राणि (कय्य बीम २७)।
२ न सूर्य प्राणि का विमान (सि १२ ओ
१)। ३ शास्त्र-विशेष ओतिप-शास्त्र (उप
२)। ४ सूर्य प्राणि का चक्र। ५ सूर्य प्राणि
का मार्ग व्याख्या 'जे गहा वाइसमि चार
चरति' (परण १)।

ओइस पुं [ओतिप] १ सूर्य चक्र प्राणि
देवी की एक जाति (कय्य पंचा २)। २
वि ओतिप शास्त्र का ज्ञानकार ओतिपी
(मुग १२९)।

ओइसिप वि [ओतिपिक] १ ओतिपि
शास्त्र का ज्ञाता, वैद्य ओतिपी (उ २२
गुर ४ १ मुग २ ३)। २ सूर्य चक्र
प्राणि ओतिपिक देव (बीम बी २४ परण
२)। राय पुं [राय] १ सूर्य रथि। २
चक्रमा (परण २)।

ओइसिप पुं [ओतिपिन्] १ सूर्य रथि।
२ चक्र चक्रमा (हा १)।

ओइसिप पु [ओतिपिन्] शुक्ल पत (को
४)।

ओइसिपा की [ओसिपा] चक्र की प्रथम
चक्रमा ओसिपी (हा ४४)। एकल पुं [पक्ष]
शुक्ल पत (बीम १५)। मा की [मा]
चक्र की एक चक्रमा-विपी (मा १ ३)।

ओइसिपा की [ओतिपी] ओतिपि
(परण १०—पत ४२६)।

ओइ की [वि] विपुल, विजयी (रि १ ४८
पक्ष)।

ओइस देवी ओइ-रस (कय्य बीम ३)।

ओइस पुं [ओगीस] ओगीस ओगि-राय
(उ १)।

ओइसर पुं [ओगीसर] ऊपर देवी (मुग
८३) परण १)।

ओइरकय न [ओगरक] ओकर-विशेष (मुग
१ ११ टी)।

ओइरकय न [ओगरक] ओकर-विशेष
(मुग १ ११)।

ओइर देवी ओइर (पा ११२ घ)।

ओकर वि [क] मसिन व्यापिन (रि १
४७)।

ओग देवी ओग=शुभ सपायमाओग
समाकुट' (उप ४)।

ओग पुं [योग] तज्ज-समुद्र का कम से चक्र
धीर सूर्य के साथ संबन्ध (मुग १ १)।

ओग पुं [योग] १ व्यापार, मन बचन धीर
धीर की चेष्टा (हा ४ १ घम १)। २
४७)। २ चित्तविशेष मन-अभिधान
समाधि (उप १ २१ उत १)। ३ बय
कले क निर या पापन प्राधि बमाने के
लिए केंद्र आठा कुर-विशेष 'ओगो मइयोह
करो सीवे छिओ इमाउ मुचम' (गुर ८
२ १)। ४ सम्यक् संबोध नेत्र (हा १)।
५ स्थित बलु का नाम (छाया १ ५)।
६ चक्र का घनवर्धन-सम्यक् (पाठ २४)।
७ बल कीर्ति पराक्रम (कय्य ५)। ८ क्लेम
न [क] स्थित बलु का नाम धीर
ज्यका संबोध (छाया १ ५)। ९ त्य नि
[रथ] योग-निष्ठ, स्थान-धीन (उप १ १
२१)। १० पुं [रथ] चक्र के घनवर्धन
का सर्व स्थापित के अनुष्ठान चक्र का घन
(पाठ २४)। 'दिष्टि की [हटि] चित्त-
विशेष से उत्पन्न होनेवाला ज्ञान-विशेष
(उप)। धर नि [धर] समाधि में
गुप्त योगी (कय्य ११९ १०)। परि
व्याख्या की [परिग्रामिन्] समाधि
प्रधान धित्त-विशेष (छाया १ ८)। पिङ्ग
पुं [पिङ्ग] बलीकरण प्राधि के प्रयोग से
प्राप्त की हुई मिला (पंचा ११ निरु १३)।

मुद्रा की [मुद्रा] हाथ का विस्तार-विशेष
(पंचा १)। ब नि [बन्] १ शुभ
प्रतिभाता (मुग १ २ १)। २ योगी
समाधि करनेवाला (उत ११)। बाहि वि
[बाहिन्] १ शास्त्र ज्ञान की व्यापन
के लिए शास्त्रोक्त वाक्यों को बोलना।
२ समाधि में रहनेवाला (हा १ १—पत
१२)। पिङ्ग पुं [पिङ्ग] शास्त्री की
व्यापन के लिए शब्द-निष्ठ स्तुति
करवाये-विशेष 'हय पुनो ओगविही' 'एमा
ओगविही' (संग)। सत्य न [शास्त्र] चित्त-
विशेष का अभिवाचन शास्त्र (उप १ १)।

ओग देवी ओगमा इय को न एक ओगी

ओग देवी ओगमा इय को न एक ओगी

ओग देवी ओगमा इय को न एक ओगी

ओग देवी ओगमा इय को न एक ओगी

ओग देवी ओगमा इय को न एक ओगी

ओग देवी ओगमा इय को न एक ओगी

ओग देवी ओगमा इय को न एक ओगी

ओग देवी ओगमा इय को न एक ओगी

ओग देवी ओगमा इय को न एक ओगी

ओग देवी ओगमा इय को न एक ओगी

ओग देवी ओगमा इय को न एक ओगी

ओग देवी ओगमा इय को न एक ओगी

ओग देवी ओगमा इय को न एक ओगी

ओगा पूल होइ धरकुटो' (मम्म १२ गुर २,
२ ५, महा मुग २ ८)।

ओगि देवी ओगि=योगि (मुमा)।

ओगि पुं [ओगीम्] महान् योगी योगेश्वर
(रथ २६)।

ओगिना देवी ओगिनी (गुर १ १८६)।

ओगिपि नि [ओगिक] ओ पर्व के सम्यक्
से बना हुआ राज्य कैले—उप-करोति यमि-
पेणपति (परण २ २—पत ११४)। २
सम-श्रमोप से बना हुआ (उप ५ १४)।

ओगसर देवी ओगसर (उ २ १)।

ओगसरा की [ओगसरी] देव विशेष (रथ)।

ओगसी की [ओगसी] विद्या-विशेष (उप
७ १४२)।

ओग नि [ओग्य] योग्य, उचित सायक
(हा १ १ मुग २०)। २ प्रभु समर्थ
शक्तिमान् (निरु २)।

ओगा की [वि] चन्द्र कुशामर (रि १ ४८)।

ओगा की [ओग्या] १ शास्त्र का धन्याय
(मम ११ ११ अ ३)। २ कर्म-कारण में
धन्य योगि (उप)।

ओस देवी ओस=शेखर। यदि ओस
रसमि (मुग ११)। ४. ओस (उप
२७)।

ओइ एक [ओइप्] ओइना संयुक्त
करना। बड़ ओइल (गुर ४ १६)।

ओइ ओइकन (महा)।

ओइ पुं [वि] १ नयन (रि १ ४६ नि ६)।
२ ऐक-विशेष (रथ)।

ओइ (मम) की [वि] ओगी मुक्ता 'परि
ओइ न कुट' (मुग ४२६)।

ओइवि पुं [वि] व्यापक बहिनिया विहीमार
(रि १ ४६)।

ओइवि नि [ओइवि] ओइना हुआ संयुक्त
किया हुआ (मुग १४६ १५२)।

ओय पुं [यान घनन] ज्येष्ठ देव-विशेष
(छाया १ १)।

ओयि की [यानि] १ ज्योति-स्थान (मम
८ २३ प्रायु १११)। २ गण्य हनु
प्राय (हा १ ३ पंच ४)। ३ जीव का
उत्पत्ति-स्थान (हा ७)। ४ कीर्ति-वर्धन
(रथ)। ५ वाहन न [विधान] यन्त्र

ओयि की [यानि] १ ज्योति-स्थान (मम
८ २३ प्रायु १११)। २ गण्य हनु
प्राय (हा १ ३ पंच ४)। ३ जीव का
उत्पत्ति-स्थान (हा ७)। ४ कीर्ति-वर्धन
(रथ)। ५ वाहन न [विधान] यन्त्र

ओयि की [यानि] १ ज्योति-स्थान (मम
८ २३ प्रायु १११)। २ गण्य हनु
प्राय (हा १ ३ पंच ४)। ३ जीव का
उत्पत्ति-स्थान (हा ७)। ४ कीर्ति-वर्धन
(रथ)। ५ वाहन न [विधान] यन्त्र

ओयि की [यानि] १ ज्योति-स्थान (मम
८ २३ प्रायु १११)। २ गण्य हनु
प्राय (हा १ ३ पंच ४)। ३ जीव का
उत्पत्ति-स्थान (हा ७)। ४ कीर्ति-वर्धन
(रथ)। ५ वाहन न [विधान] यन्त्र

रात्रि (विने १७७२)। सूत्र न [शुल]
योनि क एक रोग (सुप्र १ १५)।

ओषिध वि [योनिः पचनिक] पचार्थ
रोग-विरोध छ उत्पन्न। श्री या (रु
वीर लावा १ १—पच १७)।

ओषधिसिद्धि श्री [दे] अन्त-विरोध बुधार्थ
ओषधी (दे १ ५)।

ओषध वि [योसिन] १ मुक्त, धत 'कलो
वा ओषधो वा केसुमावेष्ट नंदस्य' (मुक्त
१२)। २ पुं मुक्त पच (को ५)।

माष्ठा स्त्री [योसस्ता] यन्त्र-प्रकाश (पद
कप १२७)।

माष्ठा वि [योसस्तापत्] योसस्ता
बला पचिन्नायुक्त (दे २ १२२)।

ओष देवो जुष = मुक्त (मुप १ १)।

ओष } न [योषत्र क] ओष रस्ती या
ओषय } नवदे वा तस्ता भिषसे केव वा
पोष, बाड़ी या हृष में ओषा जाण है
(पण्ड २ ३, मा १२२)।

ओष देवो ओष = हृष। ओषह (महू मंत्र)।

ओष पु [दे] १ किन्तु। २ वि स्त्रीक
ओषा (दे १ २२)।

ओषज न [दे] १ यन्त्र कल 'मातृग्रीव'।

(योष २ मा)। २ भाव क मर्तन धर्म-
मत्तन (योष २ पा)।

माषारि स्त्री [दे] अन्त-विरोध बुधार्थ (दे
१ ५)।

ओषिध वि [हृष] विभोक्ति (व १०७)।

ओषध न [योषन] १ तास्य बलाती
(माप कप्य)। २ मध्य माष (वि २ १)।

ओषधनीर } न [दे] यन्त्र-परिणाम कृत्तव्य
ओषधयेश } बुधार्थ 'ओषधनीर' उप-
लब्धो वि विभिर्द्विधायां पुरिषात् (दे
१ २१)।

ओषधिया स्त्री [योषनिक] योषन,
बलाती (पच)।

ओषधोषय न [दे] बुधार्थ, बुधार्थ कप
(दे १ २१)।

ओष देवो जुष = मुप। वह ओसंत
(राव)। प्रयो वंश ओसियाज (बभ ७)।

ओष पु [मोप] पचमान कल (मुप १
२ १ २ टि)।

ओसिम वि [मुप] धेवित्र (मुप १ २ १)।

ओसिआ स्त्री [योपिन्] स्त्री मक्लि
गारी (पद कर् १)।

ओसिदी देवो ओषा (पचि ११)।

ओष धर्म मुप, कला। ओषह (मंत्र)।

ओष पु [योष] योषा योषा (योषा-मुप)।

हृष न [रबान] मुक्तों क मुक्त-कलीय
रापीर विन्यास, यन्त्र-रचना-विरोध (अ १
निष् २)।

ओष्या देवो ओषा (दे ७१)।

ओषा स्त्री [योषा] बुध-परिणाम की एक
वाति (मुप २ १ २२)।

ओषा धर्म [दे] बुधार्थ ओषा कल,
प्रमाण करता। कर्म ओषादिन्यास (माप
२३ १३)।

ओषा पु [दे] ओषा, प्रमाण (पच १०)।

ओषि वि [योषिम] लक्ष्मणात्, मुक्त
(पच ७१)।

ओषि वि [योषिम] लक्ष्मणात् लक्ष्मण
(योष)।

ओषिया स्त्री [योषिका] बन्तु-विरोध हृष
से बन्तुबलाती एक प्रकार की धर्म-वाति
(योष २)।

ओषा } (शी) य [दे] यन्त्राण—निष्प
ओष } का मुक्त अन्वय (माप २५)।

ओष } (शी) देवो एष = एष (पि ११
ओष्य } ५)।

महद देवो महद। महद (हि ५ ११ डि)।

महदुपवित्र वि [दे] निवासित निवास-
शाल (बद)।

॥ इय विरिपाश्चसहस्रकल्पमिन् अभाष्यसहस्रकलो
ओषाहो उरंभो धमो ॥

अ

मह पु [म] १ तात्-स्वातीव अन्वयव वलें
विरोध (माप) प्राग)। २ ध्यान (विने
११२)।

महार्थ पु [महार्थ] हृषु बहैय की धारण
(मुप १ २५ बहि बल)।

महार्थिज न [दे] धर्मबल हृष बहैय वा
धारण वा धारण (दे १ २५)।

मह न [दे] स्वीकार करना। महद
(पच) (विने १५)।

मह न [सं + तप] बलवत् होता, धारण
करता। महद (हि ५ १५)।

मह धर्म [वि + धप] विनाश करना,
बलात् करना। महद (हि ५ १५)।
वह मर्तन (मुप)

'महार्थाधी महिनीमुपी महद नरे' (एन मुप)।
महोपि कल महोपि मुपेव महोपि महोपि
(मा १५)।

मह न [उपा + कम्] धारण होता
बलात् होता। महद (हि ५ १२१)।

मह धर्म [निर् + धर्म] वि धाम लेना।
महार्थ (हि ५ २ १)।

मंत्र वि [दे] मृत्, संयुक्त, युक्त (दे ३ २३) ।
मन्त्रमन्त्र [उपाख्यम्] ज्ञानमन्त्र, उपाख्य
(कुमा) ।

मन्त्रपुं [दे] युक्त एक सूत्रा पद (दे
३ २४) ।

मन्त्रारिथ [दे] देवो मन्त्रारिथ (दे ३ २६) ।
मन्त्रावय वि [संतापक] संताप करनेवाला
(कुमा) ।

मन्त्रि वि [निश्चित] निश्चित मैत्रेवाला
(कुमा ७ ४४) ।

मन्त्रपुं [मन्त्र] मन्त्र, मन्त्रा (यम ३) ।
कर वि [कर] करद्वारा पूज करनेवाला
(यम १७) । प्राप्त वि [प्राप्त] क्लेश-प्राप्त
(यम १ १३) ।

मन्त्रमन्त्रा { मन्त्र [मन्त्राणाम्] 'मन्त्र-मन्त्र'
मन्त्रमन्त्रा { शब्द करता । मन्त्रमन्त्र (वा
३७१ म) । मन्त्रमन्त्र (विम) ।

मन्त्रमन्त्रा की [मन्त्रमन्त्रा] 'मन्त्र मन्त्र' शब्द
(पठ) ।

मन्त्रा की [मन्त्रा] वाच-विशेष मन्त्र, मन्त्र
(यम १ १०) ।

मन्त्रा की [मन्त्रा] १ प्रत्यय वाच-विशेष
(वा १७) । २ कर्म, कर्म, मन्त्रा
(यम ३७१ म) । ३ माता कर्म । ४ जीव
कुमा (यम १ १३) । ५ दुष्टा जीव
(यम २ २) । ६ व्याकुलता कर्म
(वाचा) ।

मन्त्रि वि [मन्त्रि] कुशलित युवा
(णामा १ १) ।

मन्त्र सक [मन्त्र] पूजा करता । मन्त्र
(दे ४ ११३) ।

मन्त्र सक [मन्त्र] दुष्टारण करता । मन्त्र
"मन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रि मन्त्रि मन्त्रि"
(युवा ३२६) ।

मन्त्र न [मन्त्र] पर्वत, परिमण
(कुमा) ।

मन्त्रिका की [दे] मन्त्रका दुष्टि मन्त्र
(दे ३ २३) ।

मन्त्रि वि [दे] मन्त्र पर प्रहार किया गया
हो वह, मन्त्र (दे ३ २३) ।

मन्त्री की [दे] मन्त्रि मन्त्रा मन्त्रमन्त्रा
(दे ३ २३) ।

मन्त्रलो की [दे] मन्त्रा कुल (दे ३ २४) ।
मन्त्रपुं [दे] मन्त्र-विशेष जीव का पद (दे
३ २३) ।

मन्त्रकी की [दे] मन्त्री कुल । २ मन्त्री
मन्त्र (दे ३ २३) ।

मन्त्रि वि [दे] मन्त्र पलायित मन्त्रा कुमा
(यम) ।

मन्त्र सक [मन्त्र] मन्त्रा करता । मन्त्र
(दे ४ ११३) ।

मन्त्र सक [आ + मन्त्राणाम्] मन्त्रि
मन्त्राणाम् करता करता । मन्त्र (विम) ।

मन्त्र मन्त्रिण मन्त्रि (कुमा मन्त्र) ।

मन्त्र सक [आ + मन्त्राणाम्] मन्त्राणाम् कर
वाला । मन्त्र (महा ७) ।

मन्त्रा वि [मन्त्र] मन्त्र-मन्त्रा (यम ४) ।

मन्त्रा न [मन्त्र] परिमण पर्वत (कुमा) ।

मन्त्रा की [दे] मन्त्र मन्त्र की मन्त्री मन्त्र
के मन्त्र (दे ३ २४) ।

मन्त्रा की [मन्त्रा] मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा पाठ
(युवा १२८) ।

मन्त्रि वि [दे] १ मन्त्रि मन्त्रा । २
मन्त्रि मन्त्र (दे ३ ११) ।

मन्त्रि वि [मन्त्राणाम्] मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा
मन्त्रा मन्त्रा (विम) । 'मन्त्रि मन्त्रि मन्त्रि'
(महा) मन्त्रि मन्त्रि मन्त्रि मन्त्रि मन्त्रि
मन्त्रि मन्त्रि मन्त्रि मन्त्रि मन्त्रि (महा
४) ।

मन्त्रि न [दे] मन्त्रि मन्त्रि मन्त्रि (दे ३
२, मन्त्र) ।

मन्त्र केवो मन्त्र = वि + मन्त्र । मन्त्र
(यम २३) ।

मन्त्रपुं [दे] मन्त्रा मन्त्र (युवा ३२६
३२७) ।

मन्त्रा की [दे] मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा
के मन्त्र मन्त्र मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा
के मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा
(विम १ १) ।

मन्त्रा पुं [मन्त्र] १ वाच-विशेष, मन्त्र ।
२ मन्त्र मन्त्र । ३ मन्त्र-मन्त्र । ४ मन्त्र-विशेष
(वि २२४) ।

मन्त्रमन्त्रि वि [मन्त्रमन्त्रि] वाच-विशेष के
शब्द के मन्त्र (यम १) ।

मन्त्रा की [दे] मन्त्रा के मन्त्रा की मन्त्रा
के मन्त्र मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा
मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा
(दे ३ २४) ।

मन्त्र सक [मन्त्र] १ मन्त्रा, मन्त्र मन्त्रा
का मन्त्रा मन्त्रा । २ मन्त्रा मन्त्रा । ३ मन्त्रा,
मन्त्र मन्त्रा, मन्त्रा । मन्त्रा (दे ४ ११) ।
मन्त्र मन्त्रा (कुमा) । मन्त्रा 'मन्त्रा मन्त्रा
मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा' (महा १) । मन्त्रा मन्त्रा
मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा
मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा
(यम ७२८) ।

मन्त्रि मन्त्रा [मन्त्रि] मन्त्रा, मन्त्रा मन्त्रा
(यम ७२८ टी मन्त्रा) ।

मन्त्रा मन्त्रा [दे] मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा
(यम ११) ।

मन्त्रा मन्त्रा [आ + मन्त्रा] मन्त्रा मन्त्रा
मन्त्रा मन्त्रा । मन्त्रा मन्त्रा (मन्त्र) । मन्त्रा
मन्त्रा मन्त्रा (मन्त्र) ।

मन्त्रा मन्त्रा [दे] मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा
(दे ४ १८८) ।

मन्त्रा मन्त्रा वि [मन्त्रा] मन्त्रा मन्त्रा
(मन्त्र) ।

मन्त्रा मन्त्रा [मन्त्रि] मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा
(महा ११३) ।

मन्त्रा मन्त्रा [दे] १ मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा
(वा २३) । २ मन्त्रा मन्त्रा (यम) ।
३ मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा
मन्त्रा मन्त्रा (यम २३, २३) ।

मन्त्रा मन्त्रा केवो मन्त्रा मन्त्रा (यम २ ४) ।

मन्त्रा मन्त्रा केवो मन्त्रा मन्त्रा (दे ३ २२४) ।

मन्त्रा की [दे] मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा
मन्त्रा मन्त्रा (दे ३ २३) ।

मन्त्रा सक [मन्त्रा] मन्त्रा मन्त्रा । मन्त्रा
(यम) ।

मन्त्रा मन्त्रा सक [मन्त्रा मन्त्रा] 'मन्त्र-मन्त्र'
मन्त्रा मन्त्रा । मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा (यम) ।

मन्त्रा मन्त्रा वि [मन्त्रा मन्त्रा] 'मन्त्र मन्त्र'
मन्त्रा मन्त्रा (विम) ।

मन्त्रा मन्त्रा केवो मन्त्रा मन्त्रा । मन्त्रा मन्त्रा
(यम ११) ।

मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा पुं [मन्त्रा मन्त्रा] 'मन्त्र-मन्त्र'
मन्त्रा मन्त्रा (महा) ।

मद्यम वि [ध्याम] मद्यमल (पण्ड १ २—
पत्र ४) ।

मद्यमन न [दे] नवावा धाम लपाना प्रतीय
नक (बन २) ।

मामर वि [दे] हृद, हृदा (दे ३ ३७) ।

मामरु न [दे] १ धीव का एक प्रकार का
रोय पुनरुद्धी में 'मामरो' । २ वि मयमर
योगमता (अ ७६८ टी) का (१२) ।

मामरु वि [ध्यामरु] स्याम कला (बर्मर
८ ७) ।

मामरुवि वि [ध्यामरुवि] कासा किया
हुवा (कुप २८) ।

मामरुवि वि [दे] हार्य प्रत्यलित (दे ३
३६; बर ७ ध्यामन) । २ स्यामरुवि कासा
किया हुवा । ३ कर्मरुवि 'बहुवचनस्यार्थवि
वीए का स्यामिषो वेव' (सार १६) ।

मय वि [मात] मलीहृत हार्य बना
हुवा (एरि) ।

मयव रेवो मय ।

मयवता की [दे] वीए वृद्ध मनु-विरोध
(दे ३ ३७) ।

मयवण न [ध्यापन] रेवो मयम (पत्र) ।
मयवणान न [ध्यापण] बाह, बलाना धरिग
रुक्ता (भाषन) ।

मयवण रेवो मयवण (संशोध २४) ।

मिन्नम न [दे] वृत्ता करना (अ १४१ टी) ।
मिन्निय न [दे] बन्धीय मोनवापाह, मोक
निन्ना (दे ३ ३२) ।

मिन्निर [दे] वृत्त कीट-विरोध भोत्रिय
मिन्निर [दे] वीव की एक वाति मीरुए वा
मिन्नी (वीव १) ।

मिन्निय वि [दे] वृत्तिय मूका (हृ ६) ।
मिन्मिनी की [दे] एक प्रकार का पेड़
मिन्मिनी । सल-विरोध (अ ११ टी
घावा २ १ ८ हृ १) ।

मिन्निय वि [दे] धीयमान की काय को
मिन्नियमाय । प्राग होवा हो हृण होवा हुवा
(दे ३, २८ ७२८ टी; कुवा) ।

मिन्निय मर [मि] दीए होना । मिन्निय
(मा १३) ।

मिन्नियरी की [दे] बली-विरोध (भावा २
१ ३ १) ।

मिन्निय रेवो मीग (दे १ ३३; कुवा) ।

मिन्निय } न [दे] शरीर के प्रवर्णों की
मिन्निय } बड़वा (भावा) ।

मिया रेवो मय । मियाह, मियाव (जवा
भा-क्य वि ४७२) । बह- मियायमाय
(छाया १ १—पत्र २८ ६) ।

मिन्निर न [दे] बीरु हून पुपता इनाय (दे
३ ३७) ।

मिन्निय वि [दे] मीला कुपा पकी हुई
बह बलु जो ऊपर से गिरी हो (गुपा १७८) ।

मिन्निय मर [ला] मीलना लान करना ।
मिन्निय (कुवा) ।

मिन्नियरी की [मिन्नियरी] कीट-विरोध भोत्रिय
वीव की एक वाति मिन्नी (पत्र पण्ड १) ।

मिन्नियरी की [दे] १ वीही-नामक वृक्ष ।
२ मराठ मन्त्र (दे ३ ३२) ।

मिन्नियरी की [दे] मन्त्री पक्कन की एक
लक्ष की बाल (विपा १ ८—पत्र ८२) ।

मिन्नी की [दे] लहरी तरंग (पत्र ३) ।

मिन्नी की [मिन्नी] १ बलवति-विरोध
(पण्ड १ ३१ १ टी) । २ वीट विरोध
मीरुए (मा ४२४) ।

मीग वि [काण] हुनन इय (दे २ ३
पत्र) ।

मीग न [दे] १ धंग, शरीर । २ वीट,
वीका (दे ३ ३२) ।

मीका की [दे] लका राम (दे ३ ३७) ।

मोन पु [दे] वृद्ध-नामक बाघ (दे ३ ३८) ।

मून्मिय वि [दे] १ वृद्धिय मूका (पण्ड
१ ३—पत्र ४६) । २ वृद्ध हुवा, वृत्ता
हुवा (मा १६ ४) ।

मुमुमुसय न [दे] मन का बुझ (दे ३
३८) ।

मुन्टन न [दे] १ प्रवाह (दे ३ २८) । २
पनु-विरोध वी मनुय के शरीर की पन्नीके
बीटा है वीर विघना रोम कपड़े के लिये
बहुवृत्त है (अ २२१) ।

मुन्टन की [दे] मीपकी, दण-वृद्धि, दण-
निमित्त मर (दे ४ ४१६ ४१८) ।

मुन्टन न [दे] प्रातम् (छाया १ १) ।

मुन्म रेवो मुन्म = वृष्ट । मुन्मर (वि
२१४) । बह मुन्मर (दे ४ ४७२) ।

मुन्म वि [दे] वृद्ध वलीक प्रवृत्त (दे ३
२८) ।

मुन्म सक [मुन्म] वृत्ता करना निवृत्त
करना । मुन्मर (दे ४ ४ गुपा ११८) ।

मुन्मि पु [ध्वनि] कम्प प्राधान (दे १ २२
पत्र कुवा) ।

मुन्मिय वि [मुन्मिय] निमित्त वृद्धिय
(कुवा) ।

मुन्नी की [दे] देह, विन्मर (दे ३ २८) ।

मुन्मुमुसय न [दे] मन का बुझ (दे ३
३८) ।

मुन्मुस पु [दे] मरुत्तमा प्रमर (मालागु
६) ।

मुन्म मर [अन्वेष] मूलता बीमता
मन्मता । बह- मुन्मर (गुपा ११७) ।

मुन्मय वीग [दे] कन्-विरोध । वी ग
(विग) ।

मुन्मरी की [दे] वृत्त लता काष्ठ (दे ६
२८) ।

मुन्म रेवो मुन्म । वृद्ध-मून्मिया (वि २ २) ।

मुन्मण रेवो मून्मण (पत्र) ।

मुन्मिय रेवो मून्मिय (हृ २) ।

मुन्मिर न [मुन्मिर] १ कम्प, विन्मर, पोत
बली बयह (छाया १ ८ गुपा ६२) ।
२ वि पोता वृत्ता (अ २ ३ छाया १
२ पण्ड १ २) ।

मूक रेवो मूक । मूकिय (संशोध १८) ।

मूर सक [रु] वात करना चित्तन करना ।
मूर (दे ४ ७४) । बह मूरर (कुवा) ।

मूर सक [मुन्म] निन्ना करना वृत्ता
करना ।

'किरमनोहृमम' विट्ठल तस बहवृत्तिय
हो वि देवता मूर निमेष्य निमेष्य
(पण्ड ४) ।

मूर मर [मि] मूला वीव होना मूला ।
बह मूरर मूरमाण (अ ४ ४ २७) ।

मूर वि [दे] वृत्तिय बह देका (दे ३ २६) ।

मूरिय वि [मूर] चित्तन वात किया हुवा
(ध्वि) ।

मूर सक [मु] १ वृत्ता करना । २ वीग
करना । ३ वीव करना घावा । बह

मूसमाण (पाषा) । उह मूससा
मूससाय मूससा (पीपा नि २०३
पैत २७) ।

मूसगा भी [जोपमा] सेवा पापना (उपा
पैत पीपा बापा १ १) ।

मूसरिज नि [रे] १ घायल, घायल । २
स्वच्छ निर्मल (रे ३ १२) ।

मूसिय नि [जुप] १ क्षेपित धारणित
(छाया १ १) धौप । १ क्षेपित निज,
परिपक्व (उपा ठा २ २) ।

मूसुम पुं [रे] नमुक, मँर (रे ३ २१) ।
मय देवी मय ।

मेर पुं [रे] भुज्या परदा (रे ३ २६) ।

मेरिग पुं [रे] रेश-विरोध (दुप ४७२) ।

मेरी भी [रे] धर्म-महिती पैत की एक
वादि (रे ३ २६) ।

मोहसिमा भी [रे] एह के समान एक
प्रकार की बीड़ा (रे ३ १) ।

मोह सक [शाटम्] वेद धारि से पन
बनेह को पिरला । मोह (नि ३२१) ।

मोह न [रे] १ वेद धारि से पन धारि का
गिरला । २ भीरु बुद्ध (छाया १ ११—
पन १७१) ।

मोहण न [शाटम्] पावन गिरला (पयह १
१—पन २१) ।

मोहण पुं [रे] १ बना घन-विरोध । २
मुझे बने का राहक (रे ३ २६) ।

मोहिय पुं [रे] व्याप विहारी बहिनिया
(रे ३ १) ।

मोहिया भी [रे] मोहिय मोहो
मोहिया भी [रे] पैती कीपती (रे ३ २१ सुम
१ ४) ।

मोस देवी मूस । मोस (छाया) । बह

मोसमाय मोसमाय (गुपा २१: पाषा) ।
उह 'मोसमाय' सम्य मोससा निमन
हुं (गुप १ २२१) ।

मोस सक [गर्भपय] बोना प्रवेष्ट
करा । मोसहि (हह १) ।

मोस सक [मोपय] बलता प्रवेष्ट करत ।
ह मोसोयम् (बन १) ।

मोस पुं [मोप] पणि-विरोध निहने बलने
से समान ध्याकार हो बह पणि (बन १) ।

मोस पुं [रे] भाङ्गा बुरकरा (बा २, २) ।

मोसम न [रे] क्लेश का रेश 'मोसम'
हि वा मागलं हि वा मोसलं हि वा एम्ह
(बन २) ।

मोसमा पैपो मूसगा (सप ११६ धन) ।

मोससा भी [जोपमा] मय सम्य भी
पापना, संवेदना (पापक १७७) ।

मोसिज सेवा मूसिय (छाया है ४ २२७)

॥ इम विरिपाइसहस्रपञ्चममि मसापइसहस्रपञ्चमो
छायाभी छरीपी सपती ॥

ट

ट पुं [ट] कुट्टि-रक्षणीय व्याजम कलं विरोध
(शमा माग) ।

टपा भी [रे] धारा-मध्य, दुबाले की
धारा का कुट्टी में टीरा (दुप १ १) ।

टह पुं [मह] निज-विरोध निहा बरवा
चिन (पना १ १२) ।

टह पुं [टह] १ लगर धारि का घट भाग
(लगा १ १—पन १) । २ एक प्रकार
का निहा (पा १२ गुप २११) ।

१ एक पिना में टह चरन (छाया १ १—
पन ११) ४ लगर बापने का बह टापी
छेनी (मे २, १२ पन पु ११२) । २

बलिष्ठ विरोध का भाग को जोष (निम) ।
१ बलिष्ठ-विरोध (जीव) ।

टह पुं [रे] १ लगर, लगर । २ भाग,
गुप हुआ बलमय । ३ बहटा भाग । ४

मिति भीत । २ टह, टिपाय (रे ४ ४) ।
१ लविन गुपस (रे ४ ४ से २, १२) ।

७ वि टिल धेरा टुप काग टुपा (रे
४ ४) ।

टहण पुं [टहण] मेलन की एक धारि
(निम ४४४) ।

टहणपुस पुं [रे] बल विरोध एक धारि
की लगराटी (पा १) ।

टहा भी [रे] १ पैपा जय (पाप) । २
रसम-म्यान एक तीर्थ (दी ४१) ।

टहार पुं [महार] मनु का टह (धर) ।
टहार पुं [रे] पीन, टह (पयह) ।

टहिय नि [रे] ग्राय पैता हुआ (रे ८ १) ।
टहिय नि [टहिय] टापी में काग हुआ
(रे ४ २) ।

टहिया भी [टहिया] लगर बलने का घट,
टली (बलप २२७) ।

टहिय नि [रे] धारणा, टह धारि (रे
४ २) ।

टहा पुं [टह] रेश-विरोध (ह १ ११२) ।
टहा नि [टहा] १ टह-मेली । २ पुं भा

की एक धारि (दुप १२) ।
टहार पुं [रे] बीर, धन से धन का भाग
(गुप १२, २७ बन १) ।

टहाय भी [रे] लगे, बुद्धि-विरोध में टापी
का भाग (बन १ टी) ।

टहारा भी [रे] लगी-गुप का गुप (रे
४ २) ।

टगर पुं [मगर] १ लगर-विरोध लगर का
गुप । २ गुप-विरोध लगर-विरोध (रे १
१ २ गुप) ।

टबक पुं [दे] मन्त्री यादिक घाघात की
घाघात (पुं १ १)।
टबक्या थी [दे] जगिना परा (दे ४ १)।
टवर नि [दे] निरुपल करुणावा भयकर
नातना (दे ४ २ गुना २२)।
टवर पुं [दे] कृष्ण-वय वाय-अमूह (दे ४ १)।
टवर रेगा टगर (हुमा)।
टखल घन [टखलाय] 'टल-टल' भावात्र
करना। वर टखलल (मामू ११३)।
टखलिय नि [टखलिन] 'टल-टल' भावात्र
करना (जा ४८८ टी)।
टखलन घक [दे] १ टखलाना टखाना।
२ घगलाना, टखल हाना। टखलनिय (पर्वनि
१८)। वर टखलन (सरि १ ८)।
टखिम नि [दे] टला हुमा हटा हुमा (किरि
१८३)।
टमर न [दे] बिभोटन मोहना (दे ४ १)।
टमर पुं [टमर] टगर, एक प्रकार का गुला
(दे १ २ २ गुमा)।
टमराट न [दे] टगर, घनतम (दे ४ १)।
टहरिय नि [दे] डंका क्रिया हुमा, 'टहरिय
नना बायी सिंगर बीर बई सोर' (पर्वनि
१८० गुमन १२)।
टार पुं [दे] घनम घन हरी घोडा (दे
४ २) 'घनविस्तारोधि न गुपद, घणप
टाका टारत' (भा २०)। २ टट, टोण
घोडा (जा १३२)।
टाम न [दे] बोमन वन हुमा जंगल होने
के पाने की घाघात बाता कर (पन ७)।
टि [दे] स्थो टेटा (मरि)। माय
टि [दे] जो [माय] पुनलाना गुमा
लेने का मरु (गुमा ४२२)।
टिब [दे] पुन [दे] गुन-विरोध सेह का देर
(दे ४ १ जा ११ टी-नम)।

टिबक्या थी [दे] ऊपर बैसी (नि २२८)।
टिब न [दे] १ टीका, तिनक। २ निर का
सुबक मस्तक पर रखना भावा हुमा (दे
४ १)।
टिबि (टी) नि [दे] तिनक निमूवित
(कण्)।
टिगर नि [दे] स्वदि, गुड गुहा (दे
४ १)।
टिटिम पुं [टिटिम] १ पणि-विरोध मि
होने टिटि। २ वत-वन्तु विरोध (गुर १
१८२)। थी भी (मिया १ १)।
टिटियाय मक [दे] मोलने की प्रेरणा करना
'टिटि' घावात्र करने को मिनलाना।
टिटियात्र (छाया १ १)। कक टिटिया
येजमाण (छाया १ १-नम २४)।
टिप्पयद न [टिप्पनक] किरण छापी
टीका (गुना ३२४)।
टिप्पा थी [दे] तिनक टीका (दे ४ १)।
टिरिटिल कक [अम] घुमना छिना
बलना। टिरिटिल (दे ४ १११)। वर
टिरिटिल (हुमा)।
टिल्लिय नि [दे] निमूवित (पर्वनि २१)।
टिबिबक वन [मण्डय] मण्डित करना
निमूवित करना। टिबिबक (दे ४ ११२
गुमा)। वर टिबिबक (गुना २८)।
टिबिबिकिनि नि [मण्डन] निमूवित
घनट (पाय)।
टुं नि [दे] टिन-टल तिनका हाथ कटा
हुमा हो मह (दे ४ १; मानू १२२ १४३)।
टुडुय घन [टुडुयाय] 'टल-टल' भावात्र
करना। वर टुडुया (मा २८२ काज
११२)।

टुवय पुं [दे] घाघात-विरोध गुनघरी में
'टुवो' (गुर १२ १०)।
टुट घन [टुट] टुटा का वाता। टुट
(मिया)। वर टुट (दे १ १३)।
टुप्परा न [दे] वन वाय का एक छोटा पान
(हुमा ११)।
टुवर पुं [टुवर] १ तिनको बाड़ी-मूद न
जयी हो ऐसा बनघली। २ तिनको बाड़ी-मूद
बटपा बी हो ऐसा प्रदिरार (हे १ २ १
गुमा)।
टेट पुं [दे] १ मन्ध-विरोध मणि-विरोध।
वि भोयल (कण्)।
टेटा थी [दे] घुमलाना गुमा लेने का
मरु (दे ४ १)।
टेटा थी [दे] १ मणि-मोतर। २ छापी का
गुनक वल (कण्)।
टेंपय न [दे] कन-विरोध (घावा २ १
८ १)।
टहर न [दे] स्पन प्रदेय (दे ४ १)।
टोबन } न [दे] बाक माने का बलन
टाका-मण्ड } (दे ४ ४)।
टापिआ थी [दे] टोनी विर कर रखने का
मिना हुमा एक प्रकार का बर (गुना २११)।
टोप पुं [दे] बेडि-विरोध (न ४२१)।
टाप्पर पुं [दे] शिराण-विरोध टोनी
(मिया)।
टोस पुं [दे] १ टाम, वन्तु-विरोध। २
शिराण (दे ४ ४ मानू ११२)। गड् थी
[गडि] गुन-वन्त का एक बीन (पन १)।
माइ थी [टुडि] प्रकाश घाघाराना
(गड)।
टाम पुं [दे] १ टिरो मी (न ३)। २
वृष (गुन २८)।
टालेय पुं [दे] मनुष्य गुन-विरोध मरुमा
का देर (दे ४ ४)।

ठ

ठ पुं [ठ] मूर्ध-स्वातीय व्यञ्जन मूर्ध-विशेष (प्रायः प्रायः) ।
 ठञ्ज वि [हे] १ कथित अन्तर लोका
 हुया । २ पु मन्त्रका (हे ४ २) ।
 ठञ्ज वि [स्वर्णित] १ मन्त्रकित हुका
 हुया । २ मन्त्र किया हुया हुका हुया
 (स १ ३) ।
 ठञ्ज केओ ठञ्जि (विन) ।
 ठञ्जि केओ धञ्जि (ज्) ।
 ठम केओ धम = स्तम्भ । कर्म ठमिजम्भ
 (हे २ ६) ।
 ठम केओ धम = स्तम्भ (हे २ ६ पञ्च) ।
 ठम्भ } पुं [ठम्भ] १ अङ्गुर, क्षत्रिय
 ठम्भुर } ठम्भुर (स २ ४८ मुया ४ १३)
 धट्टि (६८) । २ धाम बधैय का स्वामी
 नायक मुष्मिष (धाम) ।
 ठम्भर पुं [ठम्भर] 'ठ' म्भर, 'तमि' बन्ति
 क्षत्रियवर्णितः गह्वरि गुणमुलेष्टी । सिद्धिना
 पित्रा निरपेक्षी ठम्भरपति च (कर्मणि
 २) ।
 ठग पुं [ठग] बन्ध करना इच्छा ।
 ठग पुं [ठग] ठग (धट्टि २१ टी गुञ्च २
 १७) ।
 ठग पुं [ठग] ठग कूर्त बन्धन (हे २
 २ मुया) ।
 ठगिय वि [ठ] बधित ठग हुया विन-
 तापित (मुया १२४) ।
 ठगिय केओ ठग्य = स्वरित (का ३ ३८८) ।
 ठगुर पुं [हे] वाद्य, निजलघाति बन्धु के कर्तन
 बन्धन बोधिका बन्धनगता ठगुर (बर्ग २) ।
 ठगुर वि [स्तम्भ] इत्यात्मका दुर्मिच्छा
 बन्ध (हे २, १६, बज्जना १२) ।
 ठग्य वि [स्वाप्य] स्वापनीय स्वापन करने
 योग्य (योग ६) ।
 ठग्य चक [स्वग] बन्ध करना योग्यता ।
 ठग्यि (स १२२) ।
 ठग्य [स्वान्त] १ इच्छा घटकाय । २ वि
 योग्यता । की की (का ६ ११) ।
 ठग्य न [स्वगन्] बन्ध करना 'धञ्जि' कर्म
 'न' (पञ्चा २, २३) ।

ठगिज वि [हे] १ गौरवित । २ ठग्य
 स्थित (हे ४ १) ।
 ठगिज वि [हे] क्षामी शून्य, रिक्त किया
 गया (मुया २१७) ।
 ठगिज वि [हे] निर्धन बन्धन-व्यति बधित (हे
 ४ १) ।
 ठग्य चक [स्वाप्य] स्वापन करना । ठग्य,
 ठग्य (विन; कर्म म्भ) । ठग (स्व) । बन्ध
 ठग्य (स्व २१) । चक-ठगिज ठगिज
 ठगिज ठगिज ठगिज (वि ३७१, ३८९
 ३८२ प्राय २० पि ३८२) ।
 ठग्य न [स्वापन] स्वापन संस्वापन (पुर
 २ १७७) ।
 ठग्या की [स्वापन] १ प्रतिक्रिया विन,
 मूर्ति आकार (अ २, ४ १; म्भ) । २
 स्वापन स्वाध (अ ४ १) । ३ चापिच
 बन्धु मुक्त बन्धु के प्रमाण या प्रमाणित
 में विन किरी शीत में लक्षका संविन किया
 बान बन्धु बन्धु (धिटि २१२७) । ४ बन्ध
 बाहुयो की किता का एक दोष, बाहुयो की
 किता में के के लिए 'छो' हुई बन्धु (अ १
 ४—पञ्च १२२) । ५ धनुषा धर्मवि (धर्मि) ।
 ६ धनुषा धर्म विनो का धर्म धर्म-विशेष
 (निह १) । धनुष पुन [धनुष] किता के
 सिद्ध धर्मविन धनुष (निह ४) । धम्य पुं
 [नय] स्वापन को ही प्रमाण माननेवाला
 मन्त्र (पञ्च) । 'धुरि' पुं [धुरि] धनुष की
 मूर्ति या विन (ठा १ १ लुप १ ४ १) ।
 धम्यि पुं [धम्ये] विन धनुष में धम्यार्य
 का संविन किता बान बन्धु (बर्ग २) ।
 धम्य न [सत्य] स्वापन-विषयक धम्य
 विन धम्यार्य की मूर्ति को विन कहुना धम्य
 स्वापन-धम्य है (ठा १; पञ्च ११) ।
 धम्या की [स्वापन] धम्या (अभि १७१) ।
 धम्या की [स्वापन] स्वाध स्वाध रूप से
 रखा हुया धम्य (भा १४) । मोस पुं
 [मोस] धम्य की मोस धम्य वा धम्याय
 'मोस' विनोको धम्यकीमोस धम्यकीमोस
 (भा १४) ।

ठगिज वि [स्वापिक] रखा हुया, संस्वापन
 (पञ्च १ पि १२४ अ ३, १) ।
 ठगिज की [हे] प्रथिमा मूर्ति प्रतिक्रिया
 (हे ४ २) ।
 ठगिज केओ धमिय वि (११६) ।
 ठग्य चक [स्वा] बन्धना स्थिर होना धम्य,
 गति का स्थान करना । ठग्य, ठग्य (हे ४
 १६ पञ्च) । बन्ध ठग्यमान (का ११
 टी) । चक ठग्यका ठग्य (पि १ ६)
 पञ्चा (१८) । हेक ठग्यका ठग्य (कर्म,
 पाञ्च ३) । क ठग्यका ठग्यका ठग्य-
 पाञ्च (शाना १ १४ मुया १ २; पुर ६,
 ११) ।
 ठग्यि [स्वापिन्] धम्यका स्थिर होने-
 वाता (धम्य कर्म) ।
 ठग्यका केओ ठग्य ।
 ठग्यका केओ ठग्य ।
 ठग्य पुं [हे] मान धर्म धम्यमान (हे ४
 ३) ।
 ठग्य पुन [स्वान्त] १ स्थिति धम्यमान धम्य
 की स्थिति (मुया १ २, १६ १) । २ स्तम्भ-
 प्राप्ति (धम्य १) । ३ निवाह, धम्य (मुया
 १ ११; निह १) । ४ कारक निमित्त ठग्य
 (मुया १ २ अ २, ४) । ५ धर्म
 धम्य धम्य (पञ्च) । ६ धम्य, धम्य (अ
 १ धम्य ४) । ७ धम्य, धम्य (अ १) ।
 ८ धम्य धम्य धम्य (अ १ १ धम्य ४) ।
 ९ धम्य, धम्य, धम्य धम्य धम्य धम्य (अ
 ४ १) । १ धम्य धम्य धम्य धम्य धम्य
 धम्य (अ १) । ११ 'ठग्य' धम्य का धम्य,
 धम्य (अ १ २ १४-२) । १२ धम्य धम्य
 (धम्य) । धम्य वि [धम्य] १ धम्य धम्य
 से धम्य (शाना १ ६) । २ धम्य धम्य धम्य
 (धम्य) । धम्य वि [धम्य] धम्य धम्य
 धम्य धम्य (धम्य) । धम्य न [धम्य]
 धम्य धम्य (धम्य ४) ।
 ठग्य न [स्वापन] १ धम्यका (धम्यका) धम्य वा
 धम्य धम्य (धम्य ११६) । २ धम्य धम्य
 का धम्यका धम्यका (धम्यका ३) ।

ठाग्या न [स्वानक] शरीर की भिन्न-विशेष (पंथा १८ १३)।

ठाधि बि [स्वानिन्] स्वानवासा स्वान-
भुक्त (गुण १ २३ उप)।

ठाणिज्ज देवो ठा।

ठाणिज्ज बि [दे] १ वीरुविह सम्मानित (दे
४ ५)। २ ग. वीरज (पह)।

ठाणुक्कडिय १ बि [स्वानोरकुक] १ ऊक-
ठाणुक्कडिय १ हुक मासवासा (पण्ड २,
१: मन्)। २ ग. मासम-विशेष (इक)।

ठाणु देवो खणु। ठाह न [खण्ड] १
स्वाणु का घनवत्। २ बि स्वाणु की तरह
ऊँचा घोर स्वर रहा हुआ, स्तम्भित शरीर
वाला (आमा १ १—पत्र १११)।

ठाम } (पय)। देवो ठाण (पिंगा उच्छ)।
ठाय }

ठाय पु [स्याय] स्थान प्राप्त (गुण २,
१७)।

ठाय सक [स्याय] स्थापन करना, रहना।
ठावह, ठावह (पि १३१ कण्य महा)। वरु-
ठावह, ठावित (वज २; गुण ८८)। वंङ
ठावइत्ता ठावैत्ता (कण्य महा) ६. ठाययम्
(गुण १४२)।

ठावय न [स्थापन] स्थापन, बाण्य (पंथा
११)।

ठावयया १ देवो ठावया (मन १८६ टी; ठा
ठावया १ १: वृह ३)।

ठावय [स्थापक] स्थापन करनेवाला (आमा
१ १८ गुण २३४)।

ठावर बि [स्वावर] खलेवासा स्वाशी (मण्ड
११)।

ठाविअ बि [स्वावि] स्थापित रहा हुआ
(ठा १: भा १२० महा)।

ठाविस्तु बि [स्यापयित] ऊपर देवो (ठा
१ १)।

ठिमअ न [दे] ऊमं ऊँचा (दे ४ १)।

ठिह की [स्मिति] १ व्यवस्था कर्म मर्यादा
नियम 'वर्षाद्वि एषा' (ठा ४ १: उप ७२८
टी)। २ स्थान व्यवस्था (मन २)। ३
व्यवस्था कर्म (बी ४८)। ४ धाम्य कर्म
का-मर्यादा (मन १४ १: मन् ३१: पण्य
४: मन्)। कण्य पु [अय] धाम्य का
धम मण्य (विदा २ १)। पहिया देवो
वहिया (कण्य)। लंभ पु [वाम]
कर्म-कर्म की काव-मर्यादा (कण्य ४ ८२)।
वहिया बी [पसिता] पुन-न-सम्भवी
पानम-विशेष (आमा १ १)।

ठिह न [दे] पुन्य-विह (दे ४ ३)।

ठिहविआ बी [दे] ठिहवी वहा का हुक्का
(मा १४)।

ठिय बि [स्थित] १ व्यवस्थित (ठा २ ४)।
२ व्यवस्थित नियमित (गुण १ १)। ३
बड़ा (मन १: ११)। ४ निकल बँटा हुआ
(गिह १ प्राप्त हुआ)।

ठिर देवो धिर (मण्ड १: भा १११ प)।

ठिबिअ न [दे] १ ऊमं ऊँचा। २ निकट
समीप। ३ शिखा शिखरी (दे ४ १)।

ठिन्न सक [वि+पुन] मोक्षता। वंङ
ठिन्निकण्य (गुण ११)।

ठोण बि [स्थान] १ वहा हुआ (वृत्त धारि)
(हुमा)। २ स्थान-कारक वाचन करने-
वाला। ३ न जमाव। ४ धालस्य। ५ प्रति-
स्थिति (दे १ ७४ २ ११)।

ठुंठ पुंन [दे] ठुंठा ठुंठ स्वाणु (मं १)।

ठुह सक [ह्रा] व्याप करना। ठुहह (प्राह
११)।

ठर पुंणी [स्वावि] वृद्ध, बूढ़ा (मा ८८१
पि १११)।

पठरकुवाणी यामो महनाओ
भोमणुं परी डेटो।

पुणउणुवा वाहीणा मसई
मा होह कि मरठ ?

(पा ११७)। बी री (पा १२४ प)।

ठोह पु [दे] १ भोडिणी वैवज। २ पुणेविह
(गुण १२२)।

॥ इम सिरिपाइअसइमहण्यवन्नि ठयापअइअंअणु
पणुणवीअओ ठरंओ समी ॥

उ

उ कुं [उ] मुह-स्वाणीय व्यञ्जन कल-विशेष
(मासा प्राय)।

उओपर न [उओपर] दे' वा उओ-विशेष
वर्गीकरण (गिह १)।

उंक पु [दे] १ उंक, उकिर (विह्व) मारि का
कटी (पण्ड १ १)। २ वंङ-स्वात, जहाँ पर

कुरिअ मारि वहा हो। 'उह उणसपेरकं'
पिहं पिहंमिनु उंअमसिपि' (गुण १ १)।

उदिय देवो उदय = उट (दे ८२)।

उंया बी [दे] उंय, माटी पत्रि (गुण २३८-
१८८ १४१)।

उंह देवो उंह (दे १ १२० प्राय)।

उह न [दे] वज के सीप हुए दुकने (दे
४ ७)।

उंहाग बी [उंहाग] बलिया देव का एक
प्रतिष्ठ धारण्य—अंगत (गुण)।

उंहय पु [दे] उंया मरुता (दे ४ ८)।

उंहारण्य न [उंहारण्य] बधिय का एक

ज्येष्ठ-जाति योम (पृष्ठ १ १) इका यम
१) । १ ऐसी बुद्ध (पाप) ।

बौद्धिक्य } पुं [दे] १ ज्येष्ठ वेद विरोध । २
बौद्धिक्य } एक धर्मात् जाति (पृष्ठ १ १
इका) । १ योम चारुमम (म २८९) ।

बौद्धिकी श्री [दे] बुद्धी श्री (पृष्ठ १२९) ।

बौद्ध पुं [दे] बौद्ध विर (पृष्ठ १ १) ।

बौद्धिकी श्री [दे] बौद्धिकी (पृष्ठ १२९) ।

बौद्धिकी श्री [दे] बौद्धिकी (पृष्ठ १२९) ।

बौद्ध पुं [दे] एक यजुज-जाति बौद्धिक्य
विद्वेत् लक्षणविभिन्नो गिर्यजुजो बहि बौद्धो
तो लक्षणरूपं यजुज (ज १२९ छी) ।

बौद्ध पुं [दे] बौद्ध, बुद्ध रत्नी (पा २११
बन्ना १९) ।

बौद्ध यजु [बौद्ध] १ योमका विरय

युक्त्या । २ संरक्षित होना संरक्ष करला ।
नक्ष्त्र केन्द्र (पृष्ठ १ १) ।

बौद्ध पुं [दे] १ योमका धर्म नमन युक्त-
यती में 'बौद्धो' (दे ४ ६) । २ यजुज-विरोध
(इ १) । १ यजुज-विरोध (पृष्ठ २) ।

बौद्ध पुं [दे] यजुज-विरोध योम की एक जाति
(ज १९ १४५) यजुज १९ १४५) ।

बौद्ध श्री [बौद्ध] विरोध बौद्ध या बौद्ध
(दे १ २१० पाप) ।

बौद्ध श्री [दे] बौद्धी विरयिता पापकी (दे
४ ११) ।

बौद्धिक्य वि [बौद्धिक्यमान] संरक्ष करले-
बाला बौद्धिक्य (पृष्ठ ७) ।

बौद्धिक्य वि [बौद्धिक्यमान] संरक्षित बौद्धिक्य
'यजुज बौद्धिक्य विरय' (पा १९९) ।

बौद्धिक्यमान देवो बौद्धिक्यमान (पृष्ठ १ १) ।

बौद्धिक्य वि [बौद्धिक्य] कर्मित विरय
हुया (पृष्ठ ११ १२४) ।

बौद्धिक्य पुं [दे] बौद्धिक्य, यजुज विरय (दे
४ १२) ।

बौद्धिक्य वि [बौद्धिक्यमान] योमका, कर्मित
बाला 'बौद्धिक्यमान' (बुद्धा) ।

बौद्धिक्य पुं [दे] योम में होनेवाला यजुज-
विरोध (पृष्ठ २, १) ।

बौद्ध [दे] देवो बौद्ध (दे १ २१ १) ।
श्री. वा (पृष्ठ २०) ।

बौद्धिक्य श्री [दे] बौद्धिक्य, यजुज-विरोध
कर्मित (पा १) ।

बौद्ध पुं [बौद्ध] १ बौद्धिक्य श्री वा
यजुजमान । यजुजका बाला (दे १ २१०
(बुद्धा) ।

॥ इय विरयिताय बौद्धिक्यमानि बौद्धिक्यमानो
बौद्धिक्यो हरणी समयो ॥

ह

ह पुं [ह] यजुजका यजुज-विरोध यजुज यजुज
१ यजुजका यजुजका यजुजका यजुजका यजुजका
है (पृष्ठ १११) ।

ह पुं [ह] यजुजका यजुजका यजुजका यजुजका यजुजका
है (पृष्ठ १११) ।

ह पुं [ह] यजुजका यजुजका यजुजका यजुजका यजुजका
है (पृष्ठ १११) ।

ह पुं [ह] यजुजका यजुजका यजुजका यजुजका यजुजका
है (पृष्ठ १११) ।

ह पुं [ह] यजुजका यजुजका यजुजका यजुजका यजुजका
है (पृष्ठ १११) ।

ह पुं [ह] यजुजका यजुजका यजुजका यजुजका यजुजका
है (पृष्ठ १११) ।

ह पुं [ह] यजुजका यजुजका यजुजका यजुजका यजुजका
है (पृष्ठ १११) ।

ह पुं [ह] यजुजका यजुजका यजुजका यजुजका यजुजका
है (पृष्ठ १११) ।

ह पुं [ह] यजुजका यजुजका यजुजका यजुजका यजुजका
है (पृष्ठ १११) ।

ह पुं [ह] यजुजका यजुजका यजुजका यजुजका यजुजका
है (पृष्ठ १११) ।

ह पुं [ह] यजुजका यजुजका यजुजका यजुजका यजुजका
है (पृष्ठ १११) ।

ह पुं [ह] यजुजका यजुजका यजुजका यजुजका यजुजका
है (पृष्ठ १११) ।

ह पुं [ह] यजुजका यजुजका यजुजका यजुजका यजुजका
है (पृष्ठ १११) ।

ह पुं [ह] यजुजका यजुजका यजुजका यजुजका यजुजका
है (पृष्ठ १११) ।

ह पुं [ह] यजुजका यजुजका यजुजका यजुजका यजुजका
है (पृष्ठ १११) ।

ह पुं [ह] यजुजका यजुजका यजुजका यजुजका यजुजका
है (पृष्ठ १११) ।

ह पुं [ह] यजुजका यजुजका यजुजका यजुजका यजुजका
है (पृष्ठ १११) ।

ह पुं [ह] यजुजका यजुजका यजुजका यजुजका यजुजका
है (पृष्ठ १११) ।

ह पुं [ह] यजुजका यजुजका यजुजका यजुजका यजुजका
है (पृष्ठ १११) ।

ह पुं [ह] यजुजका यजुजका यजुजका यजुजका यजुजका
है (पृष्ठ १११) ।

ह पुं [ह] यजुजका यजुजका यजुजका यजुजका यजुजका
है (पृष्ठ १११) ।

होइव कि [होकि] १ ओं किया हुआ २ उत्पन्न किया हुआ (महा मुद्रा १९५ पंक्ति)।
 होयर कि [हे] प्रमत्त होत हुएकइ
 हुमनेवला (हे ४ १२)।
 हायत्र रेहो होवण (बेजम २२; मुद्रा १२८)।

होयजिया की [होकिनिध] उपहार में
 (बर्सेज ७१)।
 होइ पु [हे] प्रिय, पति (संति ४७ हे
 ४ ११)।
 होइ पु [हे] १ होत पड़ २ बेर विरोध,
 जिसकी राजधानी बीजपुर है (विप)।

होवत्र } न [होकिन क] १ में करत,
 होवत्रय } धर्मलु करता (मुद्रा) १ उपहार,
 में (मुद्रा २८)।

होविय कि [होकि] उत्पन्नित अस्मिन्
 किया हुआ (स २ म)।

॥ इम गिरिपाइअसइमहण्यवमि हवापडइसंक्रमहो
 एण्मीउमो ठरनो समो ॥

रा तथा न

प पु [ण न] व्याजन महो-विरोध इतका
 उपचारण-स्थान मुर्दा है हमसे यह मुर्दा
 नहाता है (प्रल प्राभा)।

प प [म] निनेगर्भक धम्मय, नहीं मत्
 (मुद्रा वा २ प्राप् १११)। उण उणा
 उमाइ उनी प [पुन] न पु नहीं
 कि (हे १ १२, पद)। 'संतिपरममहाउ
 कि [शान्तिपरममहाउ] मीत कीर
 परलोक नहीं है ऐसा माननेवला (अ)।

प म [न] यह (हे १ ७ मुद्रा)।
 प ठ [इम] यह इम (हे १ ७७ पद
 १९; वा १११ १२९)।

प रि [त] जलवार, परिहृत विचारा
 (मुद्रा २ ८)।

पम रेगो जव-नर (वा १ मद्र—
 बेज ४२)। शीम पु [शोप] बंगाल का
 एक विधान नगर, वा व्याप-शास्त्र वा देश
 बिना बाता है जिसकी धारणा 'हरिण'
 करने है (वा—अठ १२६)।

पम्रअर रेगो पालवर (बंर)।
 पाइ की [मनि] १ नवन, लगना २ घर
 बन, कट (पद ४६)।

पइ प १ निबध मुचक धम्मय 'मरी' लर (हे
 २ ४ ४३)। २ निनेगर्भक धम्मय;
 'नर बापा केन रिध' (मुद्रा १ १२)।

पइ रेगो पइ (मउड हे २, २७; वा १६७
 मुर ११ १२)।

पइअ कि [नयिक] नम-मुक्त, धर्मप्राप्त-विरोध
 बाबा (सम ४)।

पइअ रेगो पी=पी।

पइमासय न [हे] पत्नी में होनेवाला फल
 विरोध (हे ४ २१)।

पाइपय न [नीरम्य] धाला का बाबा।
 पाइ पु [पाइ] धाला के धरिदर को
 ली माननेवला दर्शन, बीड तथा धारण
 कत (बर्सेज ११ २)।

पाई की [नहा] ली पर्वत धारि से निरसा
 बर होत को मनुष्य या बड़ी ली में बाहर
 निरे (हे १ २२२ पाद्य)। कण्ड पु
 [कण्ड] ली के डिमारे बरनी मही
 (प्राप् १)। गम पु [गाम] ली
 के डिमारे पर स्थित म-ब (प्राप्)। पाइ पु
 [पाइ] मनुष्य बाहर (बन ७२८ डी)।

पइ पु [पति] कट्टर लाल (पद १
 १)। संसार पु [संसार] ली जलना
 बदाय धारि से ली पार जला (पद)
 सोम पु [सोमस] ली का प्रवृत्त
 (पद १ ४)।

पाउ (पर) रेगो रूप (मुद्रा)।

पउअ न [पुन] 'मृदा' का बीजो

वाल से पुणो पर की संख्या लख हो पा
 (अ २ ४ इक)।

पउअम न [पुनता] 'मृदा' को बीजो
 से पुणो पर की संख्या लख हो पा (अ २,
 ४ इक)।

पउइ की [नवति] संख्या-विरोध लखे १
 (सम १४)।

पउइय कि [नयत] २ ली (पद २
 ११)।

पाउअ पु [सकुल] १ लोका, वैरा (पद
 १ १; बी २१)। २ पर्वत पारण (लख
 १ १९)।

पाउअ पु [नकुल] बाध-विरोध (पम ४६)।

पाइसी की [सकुल] एक बड़ी-बि (सी २)।

पाइसी की [सकुल] विद्या-विरोध ल-विद्या
 की प्रतिपत्ति किया (पद)।

पै प [हे] दन धर्मों का मुचक धम्मय—
 मल १ २ बाबा (पद ७२)।

पै प १ बापासंगार में प्रजुक्त किया जला
 धम्मय (हे ४ २७१; पद ४६)। २ प्रजु-
 क्त धम्मय ३ स्वीकार-धीन धम्मय
 (पद)।

पै (ली) रेगो जगु (हे ४ १ १)।

प (पर) रेगो इह (हे ४ ४४४ और मद्र
 बंर)।

पंजाब बि [बे] बड रोका हुआ (पह) ।
पंजर पु [बे] बंदर, बहान को बस-बसा में
बासी के लिए पासी में जो रस्सी बाँधी जाती
बासी है वह (अ ७२७ टी मुर १३ १६३
छ २२) ।
पंजर } न [समझ] इस विषये ओठ जोठा
पंजल } धीरे बोधा जाता है (पदम ७२ ७३
पण्ड १ ८ पाप) ।

पंजाब पुन [बे] बज्ज, बाँध बाँध 'बडाउलो
रहो गहलोलैयु पहर, बजाएली बिलम-
बज्जमें' (पदम ४४ ४५) ।

पंजाब पुन [बे] एक देव विमान (देव १३३) ।

पंजाबि पु [समझ] बलम हनी (हुता) ।
पंजाबि पु [समझ] इस क भाषाजानी
छात्र-विद्ये को बाण्ड करने वाला युवा
(बन्य चीप) ।

पंजाब न [समझ] पुष्प, पुँछ (अ ४ २
है १२३) ।

पंजाबि नि [समझ] १ सामी पुँछालता
२ पुँ बाल, बाल (हुता) ।

पंजाबि केतो जंगोधि (प २६२) ।

पंजाबि केतो पंजाब (पारा १ ३ नि १२७) ।

पंजाबि पु [समझ] १ एक
जंगोधि २ धीरे-धीरे ३ उषा निरासी
मनुष्य (नि १२७ डा ४ ३) ।

पंजाब न [बे] बड बरडा (अ ५ ३) ।

पंजाब [नन्द] १ पुन होना घातपिच
होना २ मनुष्य होना ३ लहर लहर (पह) ।
नन्द अतिप्रियमान (वीर) । इ पंदि
अथ अन्त्यम (बह) ।

पंजाब पु [न] १ स्वनाम-अर्थि घातपिच
नगर का एक राजा (हुता १६ लरि) ।
२ बल-वीर के भारी प्रथम बाणुरे (अम
१२४) । ३ बल-वीर में हल वाले नरमें
वीर्य का पूर्व बोध नाम (अम १२४) ।
४ स्वनाम-अर्थि एक वैन बुद्धि (अम २
२) । ५ स्वनाम-अर्थि एक घेडी (हुता
१६) । ६ देव विमान विद्ये (अम २६) ।
७ लोह का एक प्रकार का वन धामन (पारा
१ १—अ ४३ टी) । ८ नि मनुष्य होने

वाला (वीर) । अथ न [नन्द] देव
विमान-विद्ये (अम २६) । कूट न [कूट]
एक देव-विमान (अम २६) । अमय न
[अमय] एक देव-विमान (अम २६) ।
अमय न [अमय] देव विमान-विद्ये (अम
२६) । मई ली [मई] एक अमय
सामी (अम २५, पदम) । मेत पु [मेत]
मल्लयेव में होने वाला द्वितीय बाणुरे (अम
१२४) । जेत न [जेत] एक देव-विमान
(अम २६) । वई ली [वई] १ मयमें
बाणुरे की माता (पदम २ १८६) । २
रतिकर पक्ष पर स्थित एक देव-गण
(वीर) । वज्र न [वज्र] देव-विमान-
विद्ये (अम २६) । मिंग न [मिंग] एक
देव-विमान (अम २६) । सिद्ध न [सिद्ध]
देव-विमान-विद्ये (अम २६) । मीरी ली
[मी] स्वनाम-अर्थि एक वेतिन्या (टी
१७) । सेगिया ली [सेगिया] एक वैन
सामी (अम २५) ।

पंजाब पु [नन्द] वाय विद्ये की पुण्ड्र का वाक्य
गोपाल (बहा १२२) ।

पंजाब पु [नन्द] पय की पदमी (प्रतिष्ठा)
पदी धीरे एकलये विधि (मुज १ १३) ।

पंजाब पु [बे] १ ऊँच बीमने या पेटने का
वाक्य २ पुण्ड्र का वाक्य (बे ४ ४२) ।

पंजाब पु [नन्द] बाणुरे का पदम (पह
४ ४) ।

पंजाब पु [नन्द] १ पुन मद्रका (मा
१ २) । २ राम का एक स्वनाम-अर्थि मुन
(अम १७ ११) । ३ स्वनाम-अर्थि एक
बनुरे (अम १३) । ४ मयमें का भारी
काठ का बाणुरे (अम १२४) । ५ स्वनाम-
अर्थि एक वंही (अ २३) । ६ वेतिन्या
का एक पुन (मिर १२) । ७ मय वैन
पर स्थित एक प्रविष्ट वन (अ २ ३ ६८) ।
८ एक बोध (अ १ १) । ९ बुद्धि (मह
१ ४) । १० नर-विद्ये (अ ७२८ टी) ।
११ नि [नर] बुद्धि-वाक्य । कूट न
[कूट] मय वन का लहर (अम) । अह
पु [अह] एक वैन बुद्धि (अम) । पय न
[पय] १ स्वनाम-अर्थि एक वन को मय

पर्वत पर स्थित है (अम १२) । २ उपाय
विद्ये (मिर १ २) ।

पंजाब पु [बे] मय लोकर, वास (बे ४
१६) ।

पंजाब पुन [नन्द] एक देव-विमान (देव १४३) । २ म संदीप (लरि ४४) ।

पंजाब ली [नन्द] मद्रकी पुनी (पाप) ।

पंजाब ली [नन्द] पुनी मद्रकी (मिरि
१४ ५) ।

पंजाब पु [नन्द] की पुण्ड्र (पारा
२७) ।

पंजाब पु [नन्द] पदी की एक
वादि (पह १ १) ।

पंजाब पु [नन्द] १ एक देव
पंजाब २ विमान (देव १३३) । ३ पु
बनुप्रिय वीर की एक वादि (अ १६
१८) । ४ न लयाए एषीम दिनों का
उपनाम (संवीच २८) ।

पंजा ली [नन्द] १ मयान अमय की
एक पदी (अम १ १६) । २ राजा वेतिन्या
की एक पदी धीरे अमयमार की माता
(पारा १ १) । ३ अमय की वीरलता की
माता (अम १३३) । ४ मयान मद्रवीर के
अमयमार नामक मयलर की माता (पाप) ।

५ राजा की एक पदी (अम ४४ १) ।

६ पवित्र अमय-वैन पर पुनेरा की एक
विद्युमारी बेनी (अ ४) । ७ वीरलता की
एक अमयवादी की राजपदी (अ ४ २) ।

८ स्वनाम-अर्थि एक पुनलरी (अ ४ ३) ।

९ वेतिन्या राजम प्रविष्ट विधि विद्ये—
प्रविष्ट, पदी धीरे एकलये विधि (अ १ १) ।

पंजा ली [बे] गो वैन (बे ४ १८) ।

पंजाब पु [नन्द] १ एक प्रकार का
स्वनाम (हुता २२) । २ पुन वनु की
एक वादि (वीर १) । ३ देव-विमान
विद्ये (अम २६) ।

पंजाब पु [नन्द] १ मय प्रकार के बाणों
का एक ही नाम धारण (अम १ ३
लरि) । २ प्रवीर हई (अ ३ २) । ३
मयलता धारि बाँधी जान (लरि) । ४
वादि पय वैन की वादि । ५ मय (हुता १
मिर ३८) । ६ मय (मय) । ७ वैन

पानम दीप-विशेष (एरि) । ८ बालसा
पानिमाय बाह्य (सम ७१) । १ बाणार
पान की एक मूर्ति (अ ७) । १ पुं
स्वामि स्थाप एक राजकुमार (विषा १ १) ।
११ एक बैल मुनि जो पत्तने घासामी धन
में विहीन बहरे होना (पञ्च २ ११) ।
१२ कुप-विशेष (पञ्च २ ४२) । आबल
केडो यापन (इन्) । उड्ड पुं [उड्ड]
एक प्राचीन नदि का नाम (कपु) । अर,
गर वि [अर] मयन-नारक (बन्ध लाया
१ १) । गाम पुं [गाम] ग्राम-विशेष
(ज ११७ बाह्य १) । घाम पुं [घोय]
१ बाह्य प्रकार के बायो की धातु
(एरि) । २ न देशविशेष-विशेष (सम
१७) । गुणम न [गुण] श्रेष्ठ पर
कपने का एक प्रकार का धुई (पुम १
४ २) । गूर न [गूर] एक साब बरसा
बाला बाह्य छत्र का बाध (इह १) गुर
न [गुर] सावित्र्य वैत का एक नगर
(ज १ ११ टी) । फल पुं [फल] कुप
विशेष (लाया १ न ११) । मास न
[मास] उपर-विशेष (इह १) ।
मिष पुं [मिष] १ देवा गंध-मिष
(उर) । २ एक राजकुमार, विनने मगबाह्य
मन्त्रिमात्र के बाध रीत ली की (लाया १
८) । मुरग पुं [मुरग] एक प्रकार का
मुरग, बाध-विशेष (पम) । मुर न [मुर]
गंध-विशेष (उर) । यर रेगी अर (पञ्च
१ ८ ११७) । याच पुं [याच] १
रहित-विशेष (वीर ४ ४) ।
२ एक लोपान देव (अ ४ ४) । ३ सुड
जन्म-विशेष (पण्ड १) । ४ न देव
विशेष-विशेष (उर) । यष पुं [यष]
बालसा के लन-नारीन एक राजा (लाया
१ ११-पञ्च २ ८) । यष पुं [यष]
मनुष्य में हर् (ज २ २) । यष पुं
[यष] यष-विशेष (पण्ड १) । बहुरागा
रेगी बहुरागा (इह) । यड्ड पुं [यड्ड]
१ बहुरागा बहुरागा का गेडो प्राजा (पम) ।
२ बहुरागा (कपु) । ३ एक राजकुमार
(विषा १ १) । ४ न, नगर-विशेष (गुग
१) । यड्डा की [यड्डा] १ एक

विष्णुमायी रेगी (अ ८) । २ एक गुम्फरिणी
(अ ४ २) । सेज पुं [सेज] १ ऐरवत
बर्ष में फलप बहुराग विन-देव (सम १११) ।
२ एक बैल नदि (पमि १८) । ३ एक राज
कुमार (ठा १) । ४ स्वामि स्थाप एक
बैल मुनि (इह) । ५ देव-विशेष (राज) ।
सेया की [सेया] १ गुम्फरिणी-विशेष
(वीर १) । २ एक विष्णुमायी रेगी (वीर) ।
सणिया की [सेजिह] राजा बणिक् की
एक पत्नी (संठ) । स्सर पुं [स्सर] १
देवो पंथासर (उर) । २ बाह्य प्रकार के
बाधों का एक ही साथ धातु (वीर १) ।
पंदिम न [पं] सिद्ध की विष्वाह्य ब्याह (रे
४ ११) ।
पंदिम वि [पंदिम] १ समुद्र (वीर) २
बिन्मुनि-विशेष (बन्ध) ।
पंदिम पुं [पं] सिद्ध, मुनेत्र (रे ४ ११) ।
पंदिपास पुं [पंदिपास] बाध विशेष
(उर ४) ।
पंदिम न [पंदिम] बैल मुनि का एक
दुल (कपु) ।
पंदिमी की [पंदिमी] पुनी लकड़ी (पञ्च
४१, २) । पिड पुं [पिड] बहुरागा
महावीर का एक लपान-बाला मुहल पान-
सक (जग) ।
पंदिम की [पं] पड, गिया पाव (रे ४
१८, पाव) ।
पंदिम पुं [पंदिम] धारमंथ के पिड एक
बैलमुनि (एरि १) ।
पंदिमर पुं [पंदिमर] १ एक डीप । २
पंदिमर पुं [पंदिमर] एक मयूर (मुग ११) । ३ एक
देव विमान (विशेष १४४) ।
पंदिमरे पंदि (महा डीप १२१ मा पण्ड
१ १ वीर ४ १२२ एरि) ।
पंदि की [पं] बड, पाव, गिया (रे ४ १
पाव) ।
पंदिमर पुं [पंदिमर] स्वामि प्रविष्ट एक
डीप (लाया १ मया) । पंदि पुं [पंदि]
करीर-डीप (अ ४ ४) । बहुरा पुं
[पंदिम] लुन-विशेष (वीर १) ।
पंदिमर पुं [पंदिमर] देव-विशेष, नाक-
पुवार के मुनाम-नाक इह के रव-नीय
का बणिमि देव (अ १ १ इह) । बहि

सग न [पंदिमर] एक बैल-विमान (सम
२१) ।
पंदिमर की [पंदिमर] १ पवित्र बल
पर्वत पर रहनेवाली एक विष्णुमायी रेगी
(ठा ८ इह) । २ इष्टाशामक इष्टाशी की
एक राजवाली (वीर १) । ३ गुम्फरिणी
विशेष (अ ४ २) । ४ राजा मैरिह की
एक पत्नी (संठ ७) ।
पंदिम पुं [पंदिम, पंदिम] 'छ' ना 'न'
पंदिम (विशेष २०१७) ।
पंदि पुं [पंदि] १ बहुरागा-विशेष बह्य,
नाका (पण्ड १ १ मुग) । २ पण्ड ना
एक स्वामि कपल मुग्ग (पञ्च २१ २८) ।
पंदि पुं [पंदि] १ नाक नाटिका (रे ४ ४४
विषा १ १ वीर) । २ वि मुक बाध-
नाक-नाटिका से रहित मुक (रे ४ ४४) ।
सरा की [सरा] नाक का छिद्र (पाव) ।
पंदिमर पुं [पंदिमर] १ पण्ड । २ वीर ।
३ विद्वान् । ४ वि राज में कलने डिने-
वाला (रे १ १७७) ।
पंदिम पुं [पंदिम] नख नाग्य (रे २, ११,
पण्ड) । अ वि [पंदिम] नख से फलप (प
४७१) । आह पुं [आह] सिद्ध,
मुवार (मुग) ।
पंदिमर पुं [पंदिमर] इतिहा, बरिणी
मरिणी धुनि क्योडि-विशेष (बाध कपु
इह मुग १) । इमप पुं [इमप]
पण्ड बंध का एक राजा एक लंका (पञ्च
२, २११) । मास पुं [मास] ब्रह्मवि
रात्र में प्रविष्ट समय-नाम-विशेष (बह १) ।
मुद न [मुद] बह्य बहि (उर) ।
संघपण्ड पुं [संघपण्ड] ब्रह्मवि-पण्ड-
प्रविष्ट बर्ग-विशेष (अ १) ।
पंदिमर वि [पंदिमर] १ पवित्र-पण्ड के
परोक्ष बर्ग करनेवाला (बर्ग १) । २
पुन एक देव-विमान (विशेष १४१) ।
पंदिमर वि [मास] नख-नाग्यी बह्य
ना (अ ४) ।
पंदिमरगमि पुं [पंदिमरगमि] विना,
नागपण्ड (रे ४ २२) ।
पंदिमरगमि न [पंदिमरगमि] नख वीर नाग्य विना-
मने का राज विशेष (इह १) ।

पमिष्ठा स्त्री [नमिता] १ स्वनाम-क्यात एक स्त्री । २ 'जाताभर्म'क्यामूत्र' वा एक मध्यमन (णाय २) ।

णमिर वि [नम्र] नमन करीबादा (कुमा
मुपा २७; मृग) ।

अमुहं पृ [नमुषि] स्वनाम-वरात् एक मन्त्रो
(माहा) ।

गमुवय पृ [नमुवय] प्राचीनिक मठ का
एक उपासक (मम ७ १) ।

जमरु वं. [जमेरु] वृक्ष विष्टेय (मुर. ७. ११
स. १११).

पमो ध [नमस्] नमस्कार, नमः (भगवते) ।

जमोष्ठार पं. [नमस्कार] १ नमन प्रणाम
(ह १ ६२ २ ४) । २ नमन-शास्त्र में प्रसिद्ध
एक सूत्र—मन्त्र-विरोध (निवे २८ १) ।

सद्विय न [सद्वित] प्रमादयान-विरोध
वत-विरोध (पठि) ।

ਯਮੋਧਾਰ ਦੇਵੀ ਯਮੋਧਾਰ (ਬੰਡ) ।

पञ्चम पुंन [नर्मन्] १ हंसी उग्रास । २
 श्रीरा कैमि (ह १ १२) या १४ ३२,
 १४ पाप) ।

षष्मया श्री [नमः] १ स्वनाम प्रसिद्ध नरो
(गुप्ता ३५) । २ स्वनाम-क्याठ एक राज-
पत्नी (न ३) ।

णय देवो णद् = मद् विम्बरं मयई नई
(घम ३) ।

णय व. [नाग] १ पद्माक्ष पर्वत (आ. वृ. २४९
गुप्ता १४४) । २ वृत्त देव (ह. १ १०७) ।
देवी णय ।

जय म [नय] नदी (उप ३६३ टी)।

णय [मय] १ नमो ह्यो मुना ह्यो प्रणय
नम (प्रायः १) २ विजयी नमोकार विजो
मया हा हृद श्रीगणेशायविजयनयनमो
विजयी राया (मुना २९६) ३ न. वैजयान
विजये (नम २७) । मय पुं [मय]
श्रीगणेशाय नमो (प्रणय ७) ।

गायत्री [नय] १ ग्याय मीति (पिडे ११६४)
मुता १६४ म १) । २ मुक्ति (उप ७९) ।
१ प्रसाद मीति 'जगता कि देव' परता
मुता १६४ म १) (उप ४२४) । ४ मल

के घनेक बमों में किसी एक को चुनन कय से स्वीकार कर घाय्य बमों को ज्येष्ठा करीबनासत एकरा-माहक बोध (धम्म २१) बिते ११४ ठा ३ (३)। २ बिधि (बिते ३११२)।
 चंय पु [चन्य] हनना-रयात कय वैतनकराडर (चंय)। तय बि [चंय]।
 म्याय बाह्येबला (या १४)। य, यत बि [यत्] नीतिबला म्यायनरापण (धम २ मुना २४२)। विजय पु [विजय]।
 बिक्रय की सवरणीं शलाघी के एक वैत मुनि को मुनिपठ बिडास थी मणीबिजयको के मुक ने (उबर २ २२)।

णयचक्र न [नयचक्र] एक प्राचीन दिन
प्रमाण-ग्रन्थ (सम्मत ११) ।

पञ्चम न [मयन] १ ने जाना प्राप्त (अ.
११४)। २ जाना जान। ३ नियम (विते
११४)। ४ वि ने जानैकपना "मयणा"
गुणहमयणा (गुणा १७०)। ५ पुन घ घ
नेन लीचम (हि १ ३१ पाय)। जस न
[जस] घ घ घ (पाय)।

णयय पं [दे नयत] ऊन का बना हुआ
मास्तरण-विशेष (रास्या १ : १—पङ्क्त १३)।

जयर बेष्टो जगर (हि १ १७७ मुर १ २
श्रीप मय) ।

अपरगंगा की [नारायणना] बेरया परिष्ठा
(पा २७) ।

जयरी की [नगरी] शहर, पुरी (बंग पत्र
१९११)।

यर पुं [नर] १ मनुष्य मनुष्य पुण्य (हे १
 २२६ मृष्ट १ १ १) २ यरुन मय्यम
 पावक (दमा) । ठसभ पुं [द्वयभ]
 येठ मनुष्य धौधौठ नर्य बी तिर्न क मृष्य
 (मीन) । कनपपाय पुं [ध्वन्यपाय]
 ह्वरिरेय (हा २ ४) । कन सी [नाम्ना]
 मदी-नरेय (हा २ ३; मम २०) । कन-
 कृष्ट न [ध्वनाकृष्ट] इति पयठ
 बा एष्ट ठिअर (हा ३) । दसा ओ
 [दसा] १ मुनि-मुवठ भनान् बी
 शानमदेरी (घन) २ विपारेनी-नरेय
 (मीन १) । न्य पुं [द्वय] बजनीं घना
 (हा १) नागा पुं [नागक] घना
 मरति (जा १११ टी) । नाह पुं

[नाय] राजा मुपात (मुपा ४१ मुर १
 २१)। पडु पुं [पमु] राजा नरेज (ज
 ७२८ टी मुर २ ८४)। पीरुसि पु
 [पीरुपि] राज-भिरप (ज ७२८ टी)।
 ओष पु [ओरु] समुप लोफ (बी २२३
 मुपा ४११)। वड पुं [पति] नरेज राजा
 (मु १ ११)। वर पु [वर] १ राजा
 नरेज (मुर १ १११; १२ १४)। २ उत्तम
 मुपव (ज ७२८ टी)। वरिंद पुं [परेरु]
 राजा भूमि-नति (मुपा ४१ मुर २ १७१)।
 वरतर पुं [यरेम्पर] बरु राजा (वत
 १८)। वसम वसह पुं [वृषम] १
 रेको उत्तम (पण्ड १ ४ सम १२१)।
 २ राजा मुपति (पउम ३ १४)। ३ पुं
 हरिहर का एक स्नाना प्रसिद्ध राजा (पउम
 २२ २७)। बाळ पुं [पाय] राजा
 मुपात (मुपा २७१)। वाण पुं [वाहन]
 स्नाना-स्नान एक राजा (भाऊ १ सण)
 वेव पुं [वेर] गुणव वेव मुप को की के
 लरुं की मतिपुता (क्यम ४)। मिप
 [सिंह, भीह पुं [मिंह] १ उत्तम पुर
 मीव यदुप (मम १२१; पउम १ १९)।
 २ वर्ष भाग में पुरव का बीर वर्ष भाग में
 सिद्ध का दावादाता भीहण नादमण
 शापा १ १९)। सुंदर पुं [सुन्दर] एक
 नाम-स्नात एक राजा (वम)। सिंह पुं
 [सिप] राजा नरेज (गा ११४ मुपा
 २१)।

परमपूज्य श्री [नरपञ्चक] नरपञ्चक-विरोध
(दोस्त १) ।

परमेश्वर वृ [नमः] सग की एक पात्रि
(पृष्ठ १७)।

परमिह ५ [नरमिह] १ बन्नेर खलो
मोयम्म बन्नेरो नरमिहा छि पकिडो (कुत्र
१ ३) । २ एक छबकुमार (कुत्र १ ६) ।

पराय) १ [नरक] नारक बीरों का स्थान
 पराय) (दिना १ १ पृष्ठ १४ १६। या
 ३ प्राग् २१ अ)। बास, बाउय
 १ [बाउ क] परमाधिप देव का नरक
 क बीरों को सज्जना (पीडा देते हैं (पृष्ठ
 २६ ११: क २१३)।

जयच [पुन [नाराच] १ लोहमय बण्ड।
जयच २ संक्षल-विशेष शरीर की रचना
का एक प्रकार (हि १ १७)। १ छल-विशेष
(विभ)।

जययज पु [नारायण] बीष्मण्ड विष्णु
(विभ)।

जयिष्ट पु [नरेन्द्र] १ राजा नरेष्ठ (धम
१११) प्राप्ता १ ७ कथ)। २ यद्यधिक
सर्प के विष की ज्वारोबाला (त २११)।
जय न [जयन्त] जेन-विमल-विशेष (धम
२२) यह पु [पय] राज-भाषी महारथ
(पञ्च ७१ क)। बहस पु [हृपय] श्रेष्ठ
राजा (जल ६)।

जयिदुत्तवर्धिसा न [मरेन्द्राक्षरावर्तसक]
जेन-विमल-विशेष (धम २२)।

जयीम पु [नरेन्द्र] राजा नरपति 'यो घर
हृदयमिषो होई पुरिषो न संकीर्ण' (गुर १२,
५)।

जयीसर पु [नरेन्द्र] राजा नरपति (प्रवि
११)।

जयसम पु [नयेचम] श्रेष्ठ (धिरि
४२)।

जयसम पु [नरोचम] उत्तम वृत्त (पञ्च
४४ ७३)।

जयै केनो जयि (हि १११) विभ)।

जयेसर केनो जयीसर (ज ७२८ टी गुण
२११, २११)।

जय न [नह] दुष्ट-विशेष शीघ्र से गेला
रथकारद्वय (हि २ २ २ अ)।

जय न [नह] १ ऊपर केनो (पहल १ का
१ ११ टी प्राप्ता ११)। २ पु राजा राम
का एक मुक्त (मि १)। ३ कथमय
ना एक स्वयम्भूत-वृत्त पुन (पर्व १)।
जयनर कनर पु [नर] १ कुर्ननपुर
का एक स्वयम्भूत-वृत्त राजा (पञ्च १२
७२)। २ कथमय ना एक पुन (धाम)
'मिरि पु [मिरि] कथमय-वृत्त राजा का
एक स्वयम्भूत-वृत्त हन्ती (महा)।

जयन न [नह] पत्नी, बहव ना दुष्ट (बे ४
१६ पाय)।

जयन केनो जयन (हि २ १२१) पुना)।

जयन केनो वि [जयन-वृत्त] जयन की
वृत्तगोला (पुना)।

जयिष्ठ न [नह] पुन बर, मकान (बे ४
२ पय)।

जयिष्ठ न [मसिन] १ सगुणार वैष्ट विन का
जयनाथ (संशोध १४)। २ पुन, एक देव
विमान (विश्व ११२)।

जयिष्ठ न [नहिन] १ रक्त कमल (राय
११)। २ यद्यधिक बर्ष का एक
विजय प्रवेश-विशेष (ठा २ १)। ३
'प्रतिनाथ' की बीपरी मात से पुत्रों पर जो
संस्था लग्न हो वह (अ २ ४१ इक)। ४
देव-विमल विशेष (धम ११ ११)। ५
कनक पर्वत का एक निहार (वीर)। कूट
पु [कूट] भास्वर-पर्वत-विशेष (अ २
१)। गुम्फ न [गुम्फ] १ देव-विमल
विशेष (धम ११)। २ गुप्त-विशेष (अ ४)।
३ यन्त्र-विशेष (धम ४)। ४ राजा
के लिए का एक पुन (राय)। ५ इ की
[पत्नी] विष्ट बर्ष का एक विजय प्रवेश
विशेष (ठा २ १)।

जयिष्ठ न [नहिनाह] संस्था-विशेष पय
की बीपरी मात से पुत्रों पर जो संस्था
लग्न हो वह (अ २ ४१ इक)।
जयिष्ठ न [नहिनी] कमजोरी पवित्री
पवित्री (पाय, छाया १ १)। गुम्फ
केनो जयिष्ठ-गुम्फ (निर १ १ वि)।
जय न [यन] जयन-विशेष (शामा १)।
जयिष्ठ न [मसिनाह] समुद्र-विशेष
(वीर)।

जयिष्ठ न [नह] १ इति विवर, बाह का द्वि।
२ प्रयोग। ३ निमित्त कारण। ४ वि
कथित बीचबला (बे ४ ४६)

जय केनो जय। राजा (पय) हि ४ ११४,
२११)।

जय वि [नह] कथा नृप, नवीन (पहल
प्राप्ता ७१)। यहूया यहू की [यहू]
मकोका कुम्हिल (हि २ १ गुर १ २२)।

जय वि न [नह] संस्था-विशेष नह ६
(अ ६)। इ की [वि] संस्था-विशेष लगे
६ (छा)। यन [क] नह का समुद्र
(बे १)। जायमिष वि [योजनिक]

नह योजन का परिमाणवा (अ ६)।
जयिष्ठ, नजइ की [नह] संस्था-विशेष,
त्रिप्राय ६६ (धम ६६ १)। यय
वि [नह] ६६ ना (पञ्च ६६, ७३)।
नजइ केनो ययइ (कथ २, १)।
नहमिया की [नहमिया] श्वेत वायु का
वृत्त-विशेष (धम ४४)। म वि [म]
नहवा (छा)। मी की [मी] विष्ट-विशेष
पय का नहवा विष्ट (धम २६)। मापकल
पु [मीपक] ययवा विष्ट ययमी (बे १)।
जयकार केनो ययकार (छि १ कथ १
छा)।

जयकरमी की [ममरकरमिष्ट] यय-
करम-विशेष वृत्त-विशेष (संशोध १७)।

जयम (यय) वि [नह] ययवा पुन नह
(हि ४ ४२२)। की की (हि ४ ४२)।

जयगीम पुन [नवनीत] नहम ययन कला
(कथ ६११) प्राप्ता 'जयवृत्त-विशेष
छाया' (पञ्च ११८ २१)।

जयनीयवा की [नवनीयिष्ठ] ययनीय-
विशेष (पय १)।

जययय न [नहयय] ययनार-ययन (धिरि
२७६)।

जयययिवा की [नहययिष्ठ] ययन-ययन
ययन-विशेष, ययनी मेवाटी, वेवार (ययन)

जययिवा की [नहययिष्ठ] १ ययन पर्वत पर
ययनीवा एक विष्ट-विशेष (अ १)।
२ ययन-ययन-ययन का एक यय-ययनी
(अ ४ १)। ३ ययन की एक ययनी
(अ ४)।

जयय केनो जयन (यय १७ १)।

जयय केनो ययय (यय १ १७)।

जययार केनो यययार (यय ११ वि १ ६)।

जयय एक [कथ] नहवा। कर्न छारीय
(यय ७७)।

जयय ७ १ केन विष्ट कथ (हि १ १ ग)
जयय १ कथा यय कथा गुना)। की यय
का ११)। २ ययन, ययन (हि २ १४४
प्राप्ता)।

जयय ७ पु [ययय, क] १ ययन रथ,
जयययय) यय कर्न (गुर १ २२)। २
यय-विशेष (विभ)। ३ नीमपुन रथ का
यय (ययन का २४१: गुर १ १२ पाय)।

पथरति की [नभरात्रि] नभ त्रितो का
मन्त्रिण मय का एक पत्र (सुष्टि ७८)।

पथरि य [वे] शीघ्र, जल्दी (प्राङ् ५१)।

पथरि } देको पथर (हे २ १८८ से १
पथरिख } ११ प्रामा-मुर, २६; पथ मा
१७२)।

पथरिख न [वे] छाया जल्दी गुरुल (हे
४ २२ पथम)।

पथर देको पथर (पंथ)।

पथरया की [वे] नह तल जिनमें पति का
नाम पुखते पर जसे नहीं बलातीसारी की
पथरा की लता से तावित की जाती है (हे
४ २१)।

पथर देको पथ-नभ (हे २ १९४; कुमा-
ल ७२८ टी)।

पथमिख न [वे] जमावितक मनोवी (हे
४ २२ पाथ-नभा ५९)।

पथा की [नवा] १ मोड़ा बुद्धि। २
मुक्ति की (मुम १ ३ २)। ३ जिसकी
सीमा लिए तीन बर्य हुए हैं ऐसी माथी
(नव ४)। ४ य प्रतापक धम्मय, प्रपवा
नहीं? (पथय ९०)।

पथि य १ शीघ्र-पथक धम्मय 'एति हा
हले' (हे २ १७८; कुमा)। २ निपेक्षार्थक
धम्मय (नवज)।

पथिण देको पमिअ-नभ (हे ३ १२६
मथि)।

पथिअ वि [नभ्य] द्रुत नवा (पाथा २
२ १)।

पथीय वि [नयं म] द्रुत नवा (मोह ५१
नयं १११)।

पथुत्तरमय वि [नवाचरत्तवम] एक लो
नका (पथम १ २ २०)।

पथुत्तरय (पथ) देको पथ-नभ (कुमा)।

पथाडा की [नयदा] नभ-नभरात्रि की
बुद्धि (काय १८७)।

पथोदरण न [वे] बन्धित, दृष्ट (हे ४
२९)।

पथय पुं [वे] पाठक नां का बुद्ध्या (हे
४ १७)।

पथय वि [मक] द्रुत, नवा, जलोह
(पा २०)।

पथय देको पा-नभ (कुमा)।

पथ्याठक पुं [वे] १ शीघ्र, जल्दी।
२ निगो की पुन सुनेहार का लड़क (हे
४ २२)।

पस एक [नि+अस्] स्थापन करना।
नयेन (विने १४६)। कर्म मसए (विने
१७)। संज्ञ नसिऊण (स ९ ८)।

पस एक [नरा] ध्याना पसायन करना।
एवम (विने)।

पसण न [अयसल] ध्याय स्थापन (वीन १)।
पसा की [वे] नभ नाग 'धमुईसनिजमणे'
इह-पुन-उत्तम धम्ममसपणे' (मुपा ३२३)।

पसिअ वि [नष्ट] नभ-माल (मुपा)।

पास देको नस-नभ (कुमा)। एवम एवम,
(पथ कुमा)। नह नसंय, नसमाण
(भा १९ मुपा २१३)।

पासवि वि [नभर] विनय, भंडु, नास
पासवाला 'अणमसापरं क्वा' (मुपा
२४६)।

पासा की [नासा] नासिका ग्रन्थि (ना-
मुपा २२)।

पाह देको पाहय (सम ९ कुमा)।

पाह न [नभस्] १ धाकत, मन (प्राङ् हे
१ १२)। २ पुं धाकत पाह (हे १ १२)।

पार वि [नर] १ धाकत में निचलेवाला
(हे १४ ३८)। २ पुं विचार, धाकत-
विचार मनुष्य (मुर ९ ८८)। 'केउमंविप
न [केउमंविप] विचारों का एक
नगर (रक)। गमा की [गमा] धाकत-
वापिनी विचार (मुर १ ८८)। गामिनी
की [गामिनी] धाकत वापिनी विचार
(मुर १ २८)। पार देको पार (न
१२७ टी)। नह नयन न [नयन-
नह] नह नयन का शब्द (पाथा २ १ १)।

विषय न [विषय] १ नयन-विषय।
२ नुष्ट-विषय (नयन २४, १०)। बाहण
पुं [बाहण] नुष्ट-विषय (मुर ९ २९)।

सिर न [सिरम्] नह का घब घाव
(नय २ ४)। 'मिहा की [मिहा] नह
का घब घाव (नय)। सय पुं [सेन]
परा बनेन का एक पुन (पथ)। हरणी
की [हरणी] नह नयन का शब्द (हे १)।

पारसि वि [नभय] नभवाला (स १
१२)।

पाहमुह पुं [वे] नह उम्ह (हे ४ २)।

पाहय पुं [नसर] नह नाभन (मुपा ११
९ ९)।

पाहण पुं [वे] नबी नभवाला ननु, धावण
(नयना २२)।

पाहणी की [नभयणी] नहरी नह
उतारने का शब्द (पथम ३)।

पाहण पुं [नयसिम्] नभवाला धावण ननु
(नय २९ टी)।

पाहरी की [वे] धुरिका धुरी (हे ४ २)।

पाहय की [वे] विपुल, विजयी (स
४ २२)।

पाहय न [स्नायु] स्नायु या नभ नाग।
पहि पुं [नयिन] नह-नभान ननु, स्थापन
ननु (मणु)।

पाहि वि [नयिन] ऊपर देको (मणु १४२)।

पाहि य [नहि] निपेक्षार्थक धम्मय नहीं
(स्वय ४१ निय सण)।

पाहय न [नयल] ऊपर देको (नाह-मुपा
२११ छाया १ १)।

पा एक [आ] बागना समझा। मथि
एवम (विने १ १९)। एवमि (वि
२१४)। कर्म एवम एवम (हे ४
२२२)। नह-पाहय पाहयाम (हे
१ ११ नय १ टी)। संज्ञ-पाहय
पाठण पाठय पाथा पाथार्थ (महा
वि २५९ धीय-मुप १ २ ३ वि २७७)।

इ पाययन पाय (मथ की ३; मुर ४
७ ६२; हे २ १६१ नय ३१)।

पा य [न] निपेक्ष-पुनक धम्मय (नयज)।

पायज वि [नय] पायज (पाथा २९)।

पायज (पा) देको पायज (विने)।

पाह पुं [पावि] एवम नय में पठान
धम्मय-विषय। पुस पुं [पुस] मयन
की मयावीर (पाथा)। सुय पुं [सुन]
अवज्ञ की मयावीर (पाथा)।

पाह की [पावि] १ नाह मयन नावि
(नयन १ ११ धीय-पथा)। २ नागा
निगा धावि स्वयन नवा (छाया १ १)।
३ नाग बीन (पाथा ४ २ १)।

पाइ (घन) रेको इष (कुमा) ।

पाइ (घन) नीचे रेको (घषि) ।

पाइ रेको ज म न (हे २ १६ उवा) ।

पाइजी (घप) की [नागी] नागिज सचिही (घषि) ।

पाइज १ पुं [हे] बहाज हाउ बसमार पाइजपा १ कपिबाला सीवावर (पय १ १ १ पय ३१२) ।

पाइज बि [नादिज] १ पञ्च, कचित्त पुकाप कुपा (छाया १ १ ३०) । २ न बाजान रुज (छाया १ १) । ३ प्रसिद्ध, प्रसिध्ति (घप) ।

पाइज पुं [न्यागिज] १ स्वनाम-क्यात एक बैल मुनि (कप्य) । २ बैल मुनियों का एक बंट (पञ्च ११ ११०) । ३ एक श्रेणी (महावि ४) ।

पाइज की [नागिज] बैल मुनियों की पाइज १ एक खडा (कप्य) ।

पाइज रेको पाइज (बिचार ३१४) ।

पाइज बि [झातिसम्] स्वनाम-कुज, मनेवार (उवा ४) ।

पाइ बि [झात] बलकार, बालेबाला (४ १) ।

पाइज पुं [हे] १ छत्राय धर्मिष्ठा । २ धर्मिष्ठा । ३ मनोरथ नाम्ना (हे ४ ४०) ।

पाइज बि [हे] रोमान् बिसेके पत घडेक पैना हौं (हे ४ २१) ।

पाइ }
पाऊण } रेको पा म बा ।
पाऊण }

पाग पुं [नाक] स्वर्ग बैलको (घप ७१२) ।

पाग पुं [नाग] १ सर्प सौन (पञ्च १०) । २ बलवति रेको की एक बलवति बाति नाम-कुमार रेव (उमि) । ३ हली, हानी (घीन) । ४ कुल-विरोध (कप्य) । ५ स्वनाम-क्यात एक पुहल (घट ४) । ६ एक प्रसिद्ध बंट । ७ नाम-वरा मे जलान (राज) । ८ एक बैल धार्या (कप्य) । ९ स्वनाम-क्यात एक बीन । १० एक छत्र (पुञ्ज १६) । ११ बलवति-वर्तित विरोध (अ १, १) । १२ न. क्योतिन-प्रसिद्ध एक तिर करण (विसे ११२) । १३ मार पुं [कुमार]

बलवति रेको की एक बलवति बाति (घम ११) । "केसर पुं [केसर] पुन-प्रवाल बलवति विरोध (पञ्च) । गह पुं [मह] नाम रेवता के प्राचेत से कल्पन पार धादि (बीन १) । जण्ज, जल पुं [यज] नाम पुना नाम बैदा का जलन (छाया १ ५) । "बहुम पुं [बहुम] एक स्वनाम-क्यात बैल धार्या (उमि) । वृत्त पुं [वृत्त] लूटी (बीन १) । वृत्त पुं [वृत्त] १ एक स्वनाम-क्यात राज-पुत्र (डा ३ ४ गुवा १११) । २ एक वेदि-पुत्र (बाट) । पड़ पुं [पति] नाम कुमार रेको का राजा मनेज (घीन) । पुर न [पुर] मर-विरोध (पञ्च २ १) । बाज पुं [बाज] विषय पञ्च विरोध (बीन १) । मह पुं [मह] मग बीन का बलिष्ठात रेव (पुञ्ज १६) । "भूय न [भूय] बैल मुनियों का एक कुल (कप्य) । महाभट्ट पुं [महाभट्ट] नायकीय का एक बलिष्ठात रेव (पुञ्ज १६) । "महावर पुं [महावर] नाम सुवर ना बलिष्ठात रेव (पुञ्ज १६ १६) । "मिन्न पुं [मिन्न] स्वनाम-क्यात एक बैल मुनि की धार्या महाविदि के विषय से (कप्य) । राय पुं [राय] नागकुमार रेको का स्वाधी राज विरोध (पञ्च १ १४०) । रुजल पुं [रुज] कुल-विरोध (अ) । उवा की [उवा] बलवति-विरोध ताम्बूनी बटा (पण्ण १) । वर पुं [वर] १ बरिष्ठ सर्व । २ बलन हाथी (घीन) । ३ नाम सुवर का बलिष्ठात रेव (पुञ्ज १६) । बडी की [बडी] लता-विरोध (घट) । सिरी की [सी] बीनको के पुर्व बला का नाम (वर १४८ टी) । सुहम न [सुहम] एक कैवत हाथ (घणु) । सेण पुं [सेन] एक स्वनाम-क्यात पुहल (घाव) । इति पुं [इति] एक प्राचीन बैल धादि (उमि) ।

पागणिय न [पागण्य] नाकडा नकल (पुम १ ७) ।

पागपत्ता की [नागपत्ता] बीहद बिदेव की बीहद-विदि (बिचार १२६) ।

पागपरिचायनिया की [नागपरिचायनिका] एक बैल हाथ (उमि २ २) ।

पागार बि [नागर] १ मर-सम्पत्ती । २ मर का निवासी, नागरिक (पुर १, १६, महा) ।

पागारिज पुं [नागरिक] मर का खेतवा (रमा) ।

पागारिभा की [नागरिभा] मर में खेतवा की बी (महा) ।

पागरी की [नागरी] १ मर में खेतवा की बी । २ लिपि विरोध द्विती किति (विसे ४५४ टी) ।

पागिद पुं [नागेन्द्र] १ नाव रेको का हत । २ सेकान (गुवा ७०-११६) ।

पागिपी की [नागी] १ नाकि । २ एक बलिष्ठात-मुनी (पुञ्ज ४ ५) ।

पागिज रेको पाइज (घप) ।

पागी की [नागी] नागिन सचिही (घाव ४) ।

पागेर रेको पागिज (छाया १ ५) ।

पागेर पुं [नागेर] एक बट्ट (पुञ्ज १६) ।

पाइ रेको जट्ट = पाय (छाया १ १ टी-पय ४१) ।

पाइज बि [नागकीय] बल-सम्पत्ती, मर में पाय खेतवाला पल (छाया १ १ कप्य) ।

पाइज की [नाटकिनी] १ बट्टी-नामनेबली की (बु १) ।

पाइज न [नाटक] १ नाटक बलिष्ठात पाइज न नाटक-विषय (बु १ गुवा ११६ छाया ११) । २ रत-नाभा में केने में जनुज कप्य (हे ४ २०) ।

पाइज रेको पाइज (मज) ।

पाइ की [माडि] १ रज्जु बरवा । २ नाकी ल घिटा (कुमा) ।

बाडी की [नाडी] ऊपर रेको (हे १ २ २) ।

पाडीज पु [नाडीज] बलवति-विरोध (क १ ७) ।

पाय न [झान] झान, मोन शिख, कुमि (कप २ १ ४ ४१ गुवा ३१२ २) । वर बि [वर] बानी बालार विराज (गुवा २) । "पय न [पय]

पारंग पुं [पारङ्ग] १ कुञ्ज-विशेष संतरे का
कुल । २ म. कम-विशेष कमला नीच संतल
(पत्र ४१ हा मुना २१ ; ३११ पठक
मुना) ।

पारंग हैशो पारय = तारक (सि ११) ।

पारय पुं [पारय] १ प्रवी ३१ ।

पारसीध वि [पारसीय] तारक-सम्बन्धी
तारक वा (प्रवी ३१) ।

पारय पुं [पारय] १ दृति-विशेष तारक
अभि (सम १२४ अ १४८ टी) । २ तन्मय
दीप्य वा दृष्टिगत देव विशेष (ठा ७) ।

पारय वि [पारय] १ तारक में उत्पन्न तारक-
सम्बन्धी तारक वा 'जम्बू तारय दुर्गा' (मुना
१९२) । २ पुं तारक में उत्पन्न प्राणी तारक
वा गीत (सम) ।

पारमिह वि [पारमिह] तर्मिह-सम्बन्धी
(अ १४८ टी) ।

पाराय पुं [पाराय] टीसने की छोटी छपड़,
गट्टा; आठव निरुत्तर सोडूबत सोडूब न
तुम्ह कि छणिमी । पु तार सम तारय टीसने
नह न तारने छि १ (बगना १२ १३६) ।

पाराय हैशो पारय (हे १ ९७ अ सम
१४६ पवि १४) । मुना पु तारुही (पुन
माला ४९ ९) । पञ्च न [पञ्च] दृक्क-
विशेष (पञ्च ३ १ ६) ।

पारायन पुं [पारायन] १ पिण्ण पीहण्ड
(मुना ७ १२३) । २ प्रवी-वस्त्राणी राजा
(पञ्च २ १२२ ७३ २) ।

पारायन पुं [पारायन] एक अवि (पुन
१ ४ २) ।

पारायमी शी [पारायमी] हैशो विशेष नीटी
दुर्गा (गज) ।

पारि हैशो पारी (बप राज) । कंठा शी
[पारि] नदी-विशेष (सम १७ ठा २
१) ।

पारिण १ पु [पारिण] १ पारिण वा
पारिण्ड १ बप । २ म. पारिण वा पारिण
वा बप (पवि १२३; सि १२) । हैशो
पारिण

पारिण म [पारिण] पारिण वा बप नीय
नीय बपना नीय (बपु) ।

पारी शी [पारी] १ शी कीरा जम्बू
नीय (सि २३ ; बपु ६२ १६६) ।

२ मरी-विशेष (इक) । १ कौण्यपाय पु
[कौण्यपाय] बह-विशेष (ठा २ १) ।
हैशो पारि ।

पारुट पुं [पारुट] कृता, गताभारस्वत (पाम) ।

पारुट पुं [पारुट] १ बिल सौम प्राति का छोटी
वा स्थान बिबर । २ कृता, गताभारस्वत
(रे ४ २३) ।

पारु न [पारु] १ कमल-वस्त्र (सि १ २) ।
२ मरी वा भावरण (अ ६७४) ।

पारुटिह वि [पारुटिह] १ तालका-
सम्बन्धी । न पारुटि के समीप में प्रतिपादित
धर्मयन-विशेष 'पारुटिह' सूत्र का छांटनी
धर्मयन (पुन २ ७) ।

पारुटिह शी [पारुटिह] राजगृह तार वा एक
मुहुरा (बपु पुन २ ७) ।

पारुटिह न [पारुटिह] पारुटिह पारुटिह-विशेष
(रे ४ २४) ।

पारुटिह पुं [पारुटिह] कृत्तन कैठ बसात (रे ४
२४) ।

पारुटिह न [पारुटिह] दृक्क-विशेष (मोड ९) ।
पारुटिह शी [पारुटिह] नाडी नम विप (सि
पारि २ न मुना) ।

पारुटिह शी [पारुटिह] परिमाण-विशेष प्रमती
(मानक ३३) ।

पारुटिह वि [पारुटिह] पारुटिह विप (पुन २) ।

पारुटिह वि [पारुटिह] नह पारुटिह, पारुटिह (सि ४
४२२) ।

पारुटिह हैशो पारिण (सि २ १) । पञ्च
१ २) । शी पु [शी] शी-विशेष
(बप १ ११) ।

पारुटिह शी [पारुटिह] १ तन शी
पारुटिह १ बपन की शी (बप ३ १ १) ।

१ पारुटिह-विशेष बह पारुटिह (पुन १३७) ।
१ पारुटिह वा बपन शी पारुटिह पारुटिह
(सि १२) । ४ मरी 'नह उ विर नतिपाद'
नतिपाद विरुक्कपारुटिह (बपन ६७) ।

पारुटिह न [पारुटिह] पारुटिह-विशेष (सि २ टी—
बप १३६) ।

पारुटिह शी [पारुटिह] १ बपनी विशेष (सि
२ १) । १ बपि वा पारुटिह वा बपन वा
एक वस्त्र वा वस्त्र (पाम; सि ६२७) । १
पारुटिह शी न पारुटिह बपन तम्बी लटी
(बप ३३) । ४ पारुटिह-विशेष एक वस्त्र वा

पुना (पीप भग ९, ७) । शैलु शी
[शैलु] एक वस्त्र की पारुटिह (पीप) ।

पारुटिह हैशो पारिण (पामा १ ६) ।

पारुटिह शी [पारुटिह] पारिण वा बप
(पञ्च सि १२३) ।

पारुटिह शी [पारुटिह] १ बपन-विशेष, एक
वस्त्र (पण्ड १) । २ बपि, बपि (पीप ९) ।

पारुटिह शी [पारुटिह] १ पारुटिह-विशेष (सि ३
४) । २ टीन हाव पारुटिह शैलु शैलु नदी
सपुटी वा लम्बी (बपि) (पञ्च ३१) ।

पारुटिह शी [पारुटिह] नाडी नम विप (सि
१ १) ।

पारुटिह वि [पारुटिह] ताल-सम्बन्धी (पामा) ।

पारुटिह शी [पारुटिह] पारुटिह (पुन १ ६, १८) ।

पारुटिह (पुन) हैशो पुन (सि ४ ४४४ बपि) ।

पारुटिह न [पारुटिह] ताल, पारुटिह (पण्ड १
३—पञ्च ३३) ।

पारुटिह शी [पारुटिह] प्रमती, पारुटिह-
विशेष (पञ्च १ १ टी) ।

पारुटिह शी [पारुटिह] नीय, बपान तार (बप
पामा) । पारुटिह पुं [पारुटिह] बपन
न पारुटिह शैलु शैलु ताल (पामा १) ।

पारुटिह पुं [पारुटिह] बपन पुन विप
पारुटिह (पण्ड १३७) ।

पारुटिह पुं [पारुटिह] नदी, बपन (सि १
२३ ; मुना पञ्च) । पारुटिह शी [पारुटिह]
पारुटिह वा बपन (पामा १२) ।

पारुटिह पुं [पारुटिह] बपन बपनतान,
नीय वा तान शैलु शैलु, पारुटिह, बपन,
पारुटिह (पामा १ ६ मुन १३ १३) ।

पारुटिह हैशो पारुटिह (बप ३ मरी) ।

पारुटिह शी [पारुटिह] १ बपन (सि १ २३ १ ३३) ।
२ पारुटिह (पुन ७ १३६) ।

पारुटिह पुं [पारुटिह] बपन बपन । पारुटिह
(सि ४ १३) । पारुटिह (बप ३३) ।

पारुटिह पुं [पारुटिह] ताल बपन (बपु १३३
पामा) । पारुटिह वि [पारुटिह] ताल-पारुटिह (सि
१२, १६४) ।

पारुटिह न [पारुटिह] १ तालन (पामा १३
१ २) । २ बपिण वा पारुटिह शैलु शैलु
बपन पारुटिह (पामा ७६ टी बप २) ।

पासग जि [नाराक] नाग करेबला (गुर २ ५८)।

पासग न [नाशन] १ पलायन घनकमण भागना (बर्म २)। २ जि नाग करेबला (सि ३ २७ गज २२)। श्री गा (सि ३ २७)।

पासग न [म्यासन] १ नाग रज्जु, घन स्वान (मणु)।

पासग श्री [नासना] बिनाह (सि ३ २९)।

पासग सक [नासाय] नाग करता।
गामरइ (सि ४ ११)।

पासयिज जि [नाराह] नट किया हुआ, मयाया हुआ (तप ३३७ टी बुमा)।

पासा श्री [नास] नाक प्रवेष्टिज (बा २२ ब्राह्म बुग)।

पासि जि [नाशिम] बिनघर, नट होलेबला (विने १६८)।

पासिक रेको पासिका (सि १ १३)।

पासिक न [नासिकय] बणिण माए बा एक स्वनाम प्रविष्ट गप, जो बाबबन श्री 'पासिक' नाम से प्रविष्ट है, वहाँ सुपुर्णका की नाक नदी को चकवटी (अर ३ २११ १४१ टी)।

पासिगा श्री [नासिम] नाक प्रवेष्टिज (महा)।

पासिय जि [नाराह] नट किया हुआ (महा)।

पासियकय हैको पास = मय।

पासिर जि [नशिग] नट होलेबला बिनघर (बुमा)।

पासीरय जि [म्यासीरन] बरियूर या मयातन हर स रखा हुआ (पा १४)।

पासक रेको पासिक (अर १४१)।

पाइ वु [नाथ] स्वामी मार्गिक (बुमा प्रागु १२ १६)।

पाइ व [नाइट] एक राजा का नाम (टी १३)।

पाइम वु [साइव] स्नेह्य की एक पर्वत (सि १ २१६ बुमा)।

पाहि रेको पाहि (बुमा बणु)। गद वु [गद] क्या बणुव (बणु १६)।

पाहि (पा) व [नदि] नदी नदी (सि ४ ४१३) बुमा मरि)।

पाहियाम न [हे] बिजल के बीच की रस्ती (सि ४ २४)।

पाहिय जि [नासिक] १ परलोक पाहि को नहीं मानेबला। २ वु नासिक मठ का प्रवर्तक। बाइ, पाहि जि [यादिस] नासिक मठ का अनुयायी (गुर ६ २ स १६४)। बाय वु [वाइ] नासिक-वर्णन (गज २)।

पाहिविच्छद १ वु [हे] बजत की क जाहीय-विच्छद २ बीच का भाग (सि ४ २४)।

जि व [नि] इन सबों का मूकक प्रमय—१ निषय (वच १)। २ निवर्तन नियम (अ १)। ३ बाबिचन बडिगय (उल १ जिवा १ ६)। ४ बसोमान मोबे (सण)। ५ निवर्तन। ६ संथय। ७ बाहर। ८ वरपर बिजल। ९ वनवर्णन समारेड। १० वसी पठा निकटता। ११ सेप निष्ठा। १२ बयन। १३ निषे। १४ बान। १५ पछि कमुह। १६ बुद्धि, मोर (सि २ २१७ २१८)। १७ ममिमुवता संयुक्तता (मुष १ ६)। १८ मयलता, बणुता (पहू १ ४)।

जि व [निर] इन सबों का मूकक प्रमय—१ निषय (उल १)। २ बाबिचन बडिगय। (उल १)। ३ प्रतिषे निषे (तम ११७ गुवा १६८)। ४ बहिर्गर्भ। ५ निर्वयन, निष्कमण (डा ३ १ गुवा ११)।

जिअ सक [हडा] रेकना। सिधइ (पहू ६ ४ १८१)। बह जिअन (बुमा महा गुवा २१६)। सहा निपठ (मरि)।

जिअ जि [जिअ] आसीय-स्वकीय (पा १३ बुमा गुग ११)।

जिअ जि [मीन] से जाया गया (सि ३, ६ सण)।

जिअ जि [नीप] मोब वचय निट (बज १ ३)।

जिअ रेको जिअ (मुष २ ६ ४२)।

जिअ श्री [निटति] माया नाग, दण कोरा (पहू १ ९)।

जिअ श्री [नियति] १ बिजलन नदि-मया होरी जाय निवर्तन (मुष १ १

३)। २ वरपर-नासिका (अ ४ ४) वुष १ १ २)। वरुय वु ["पर्येत"] वरव-विरोध (बीन ३)। पाइ जि ["यादिस"] 'सब कुछ मरित मया के अनुयायी' हुआ कटा ६ प्रपन बयैय मरिचिकर' है' ऐसा मानेबला, मयागारी या देवबारी (राज)।

जिअटिअ जि [नियमिअ] १ नियमित। २ न प्रयासनाम-विरोध हूँ मे या योगी से मयुक्त तिम में मयुक्त तप बरत का किया हुआ नियम (वच ४)।

जिअटिय जि [नियमिअ] १ बेंबा हुआ, जकड़ा हुआ। २ न वरपर-कर्तव्य नियम विरोध (डा १)।

जिअटि जि [निमग्य] १ धन परित। २ वु, बैनमुनि संघट मति (सा ६ १ १ ३, ३)। ३ जिअ मगबान (मुष १ ६)।

जिअट वु [निम-य] मयबान कुछ (मुष ४ ४२)।

जिअटि रेको जिअमी। वुष वु ["वुय"] १ एक विद्यापर-मूक, जिअरा हुमर नाम मयविक बा (अ १)। २ एक बैनमुनि को मयबान मयाविक का मिय बा (मय ३ ८)।

जिअं ठय जि [निर्मथिक] १ निर्दय-संलग्नी। २ जिअ देव-संलग्नी। श्री या 'एमा पाणा एपिअ' (मुष १ ६)।

जिअंटी रेको जिअमी (डा ६)।

जिअन जि [नियत] स्थिर (मुष १ ८ १२)।

जिअन जि [नियन] बाहर निजलता (मम्मट १२६)।

जिअटिय जि [नियमिअ] संयमित जकड़ा हुआ बका हुआ (महा सण)।

जिअवग न [हे] बह बहड़ा (सि ४ २८)।

जिअं व वु [नियमय] १ परवत का एक भाग परवत का वर्मान-वर्णन (मोष ४)। २ टी को बरत का बायना भाग बरत की बेंबा का भाग पण्ड (बुमा मज)। ३ नून साग (सि ८ १)। ४ बटी-वर्णन, बरत (सि ४)।

जिअविना श्री [नियमिन] १ गुणर निवर्तनारी वु। २ टी बरिना (बणु बाय गुवा ३३८)।

गिमया श्री [नियत] जम्हू-न्या विरोध
विषये यह जम्हूनीय कहलाता है (६८)।
गिअर धुं [निकर] छवि, समूह, बत्ता इर
(गा २६६ पाप (यव)।

गिअरग न [न] हएह छिदा (घ ४२६)।
गिअरिअ वि [दे] छवि रूप ने स्थित (रे
४ ३८)।

गिमम न [व] ध्रुवर पैजनी या पावनेह
श्री का पावामरण-विरोध (रे ४ २८)।

गिमम धुं [गिमाह] बेदी छ बस (वि १ ८;
विम १ ९)। रेयो गिमाह।

गिममहइअ [रि [गिमाहित] सॉमर मे
गिअसविअ नियमित जकड़ा हुमा (गा
गिअसिअ ४२४ २; पाप मउठ वे
४ ४८)।

गिअस धुं [दे नियत] प्रहासितामर देह
विरोध (छ २ १)।

गिमम रि [गिअ] हरनीय मालीय (वहा)।
गिअस देयो गिअस। गियसह (गुता ९२)।
गिमसण देयो गिअससज (हेका २९; काय
२ १)।

गिअसिय वि [नियसित] परिहित पहना
हुमा (गुता २३३)।

गिमह बैयो गिअह (माट—मापटी १३८)।
गिआ श्री [गिअ] गणित-विद्या (विअ १ १)।
गिआ देयो गिमय = (रे)। वाइ रि
[वागिम्] नियमारी पराने को नियम
मान्यमान (छ ८)।

गिमाइय देयो गिआइय (गुप १ ६)।

गिमगा धुं [गिगाय] १ गियड योग। २
निश्चित पुता। ३ मोठ मुक्ति (वाचा:
गुप १ १ २)। ४ म. पापमरु हेकर
को निगा श्री जाय बह (बन १)।

गिमगा देयो गाय = गाय (वाचा)।

गिआन न [गिआन] १ गारन कारय
ब्यागर (गुप १ १ १)। २ टीप-नाएण
चोप की परंपरा (रि ४२६)।

गिआग न [गिआन] १ बराए हेतु
बारी धन विपारी महीनी रिमायो (ग
१६; काय पाप १ ११)। २ रिनी
वज्रमान की पर-शक्ति का धर्मियन

संकल्प-विरोध (पा ११ छ १)। ३
मूल कारण (वाचा)। कह रि [कृन्]
विषये अपने मूलमूल के पत्र का धर्मियन
विद्या हो बह (बन १२१)। कारि रि
[कारिन्] बहो पनार उक्त धर्म (छ ९)।

गिआण न [गिआन] न्या तागाव के पाप
पुनो के जन पीने के लिए बनाया हुमा बम
हुएह प्यावर होटी बरही 'पनमण वरहू'
पहवर्ग पनहू पहनिमण' (छ ७२८ टी)।
गिआगिआ श्री [दे] बराए दणों का
कमूनन (रे ४ ११)।

गिमाम देयो गिमम = नियमम्। संह
उबसगा गिमामिआ धामोव्यार परिरप'
(गुप १ १ १)।

गिमाम देयो गिमाम (गुप १ १ ८)।
गिमामगा [रि [गिगामक] गिमम-करी
गिमामय [गिगाम] (गुता ११६)। २
गिगामक गिगामक (विरो १४७ छ
१७)।

गिमामिय वि [गियमित] गिमम में रखा
हुमा नियमित (ग २६३)।

गिमगा धुं [गिगाय] प्रसन्न धर्म (गुप १;
१ २ २)।

गिआर छक [गियगित क] बानी नगर से
देवता। गिआर (हे ४ ९९)।

गिआरिअ वि [गियगितीकृन्] १ बली
नगर से देवा हुमा धापी नगर मे रखा
हुमा। २ म. धापी नगर से गिगीएण
(गुता)।

गिमाह धुं [गिगाय] १ दीप्य बाल दीप्य
झुनु। २ बण्य धर्म गली (मउठ)।

गिआम रि [गियग] गिय बा गिआए
रि विगन' (वाचा २ १ १ ६)।

गिआ [रि [दे गियर, गियग] गिय
गिआ [गियर] धामर धमिरर (एह २ ४—
प १४१; गुप १ १ ४ २ छ एरि
वाचा बन ११२)।

गिआ रि [गिग] गिग गरीर (माह २९)।

गिअ रि [गिग] परिकेण परेडित
(हे १ १११)।

गिअ रि [गियु] गुमण्य मुष्टि (पाप
१ ८)।

गिअविअ रि [गिगिगिग] संकुचित बहुधा
हुमा योहा मुहा हुमा (पा २९१ वे ६;
२९) पाप स ११२)।

गिअ छक [गि + गुन्] योहना संकुक्त
करना किसी कार्य में लगाना। कर्म एिउं
योगित (रि १४९)। बह. गिअगमाण
(गुप १ १)। संह गिअगिगण गिअगिय
(छ १ ४ महा)। ३ गिअगियकन्,
गिअगिय (छ ४ ४; गुता)।

गिअग धुं [गिगिग] १ गय, सता पादि
मे गिगि गयन (हुमा गा २१७)। २
बहुर (रे ९ १२३)।

गिअ धुं [गिगिग] गुमण्य का एक
गुन (वे १२ १२)।

गिअगिग रि [गिगिगिगिता] यम-स्थान
(वे १२ ११)।

गिअग रि [दे] गुणीक चीन छनेगाना
(रे ४ २७ पाप)।

गिअग धुं [दे] १ कायज काफ कीया।
२ रि मूर बार-छिकि मे होन (रे ४ २१)।
गिअग न [गियुग] पापन-विरोध (गुदि
१२८ टी)।

गिअग रि [गियुग] उपाय-रहित
पापकी (गुप २ २)।

गिअग छक [गियु + गि + गुन्] गायन
करना हुमा। गिअग (हे १ १ १)।
बह गिअगमान (गुता)।

गिअग रि [गियुग गिगिगिग] हुमा हुमा
नियम (गि १ १ १२ ७४)।

गिअग रि [गियुग] १ बर जगुड, गुपन
(पाप स्थान २३; गानु ११; जी ९)। २
गुपन को गुपन छुडि न जाना जा सके (श्री
२; घय)। ३ गिगि दजना मे जगुड मे,
गुपनता से (जी १)।

गिअग रि [गियुग] १ गियड गुपनता। २
विश्चित गुप मे गुप (घय)। ३ गुनिगिग
गिगिगीक (वचा ४)।

गिअगिय रि [गियुगिग] गिगुग दान जगुड
(छ ६)।

गिअग रि [गियुग] १ स्थानिक कार्य में
लगवता हुमा (वचा ८)। २ गियड (रि
१८८)।

प्रिक्लिष्टु वि [निष्कृष्ट] दधम लीष ह्रीः
कल्प्यः 'प्राप्तिप्रिक्लिष्टुवाप्ति धाहा' (भा
१४ २७) गुणा २७१ छट्ठि (१५८)।

प्रिक्लिष्टम सक [निर् + क्री] निष्कृष्य करण,
करीषता। प्रिक्लिष्टाति (पुष्प ११)।

प्रिक्लिष्टमि वि [निष्कृष्टमि] प्रथमि
धधवी स्थावधिक (भा १८१ टी)।

प्रिक्लिष्य वि [निष्कृष्य] विष्ठा-पठित, धधिय
(पञ्च १ २)।

प्रिक्लिष्य वि [निष्कृष्य] ह्वान-पठित निर्ध
(पाथ या ३; गुणा ४ ६)।

प्रिक्लिष्य वि [निष्कृष्य] दधम गति
(पञ्च २ १)।

प्रिक्लिष्टु वृ [निष्कृष्ट] दधम दधाम (पञ्च)।

प्रिक्लिष्टु क्री [दे] बीषा ह्रमा, विनिमित्त
(दे १ ४)।

प्रिक्लिष्टन न [निष्कृष्टन] दधम विधेय
(पञ्च १ ३—पञ्च २१)।

प्रिक्लिष्टर सक [निर् + क्लेर] १ दूर करना।
२ पाप करोह के पूर्व का बन्ध करना। ३
पाप धारि का लक्ष्य करना। प्रिक्लिष्टर
(इह १)।

प्रिक्लिष्टन न [निष्कृष्टन] १ पाप धारि के
पूर्व का बन्ध करना। २ पाप धारि का
लक्ष्य (इह १)।

प्रिक्लिष्टु वृ [दे] १ बीर। २ मुबर्त्त काश्मल
(दे २ ४७)।

प्रिक्लिष्ट पुन [निर् + क्ल] बीमार, मोहर, मुद्रा
मगधी रूपया (दे २ ४)।

प्रिक्लिष्ट केवो प्रिक्लिष्ट (गुण १ सम
१११) कस)।

प्रिक्लिष्ट वि [निर् + क्ल] स्वक-पठित धानी
पठित (भा ४१६ घ)।

प्रिक्लिष्टम न [निक्लिष्टन] गाडता (दुप्र
१११)।

प्रिक्लिष्ट वि [निष्कृष्ट] धक-पठित धधिय
पठित (गि १११)।

प्रिक्लिष्टम सक [निर् + क्ल] १ बहुर
निक्लिष्टा। २ बीषा लेग, बीषास लैषा।

प्रिक्लिष्टम (मय)। प्रिक्लिष्टि (कप्य)।
मुद्रा प्रिक्लिष्टियु (कप्य)। धधि प्रिक्लिष्ट

मिक्लिष्टि (कप्य)। बहुर प्रिक्लिष्टममात्र
(छाया १ ३, पञ्च २२, १७)। छह

प्रिक्लिष्टम (कप्य)। इह, प्रिक्लिष्टमिक्लिष्ट
(कप्य कस)।

प्रिक्लिष्टम पुन [निष्कृष्टम] १ निर्धन। २
बीषा-पठित (अ १ ३ घ १)।

प्रिक्लिष्टममात्र न [निष्कृष्टममात्र] ऊपर देवो (मुद्र
१३; छाया १ ११ पञ्च २३ ४)।

प्रिक्लिष्ट वि [निष्कृष्ट] गाडा ह्रमा (दुप्र
२२)।

प्रिक्लिष्ट वि [दे] निक्लिष्ट पठित मात्र
ह्रमा (दे ४ १२ पाथ)।

प्रिक्लिष्टवि वि [निष्कृष्टवि] गट क्रिया ह्रमा
विनाशित (पञ्च ११)।

प्रिक्लिष्टसंवि वि [दे] मुपित को दूर बिना
गया हो बगुन-सार (दे ४ ४१)।

प्रिक्लिष्टावि वि [दे] शब्द वारण-प्राप्त
(पाथ)।

प्रिक्लिष्टा वि [निष्कृष्ट] १ स्वतः स्थापित
(पाथ पञ्च १ १)। २ मुद्र, परिष्कृत
(छाया १ १ बज २)। ३ पाप-मात्र में
स्थित (पञ्च २ १)। ४ वि [भर]
पाप-मात्र में स्थित बल को निष्ठा के लिए
कोनकेनामा (पञ्च २ १ टी)।

प्रिक्लिष्टममात्र लीष देवो।

प्रिक्लिष्ट सक [नि + क्षिप्] १ स्थापन
करना स्वस्थान में रहना। २ परिष्कृत
करना। प्रिक्लिष्टर (मद्रा)। प्रिक्लिष्टव
(निष् ११)। बहुर, प्रिक्लिष्टममात्र
(भाषा)। छह, गिगाड-विष्ठा प्रिक्लिष्टवि
मिक्लिष्टवि (कस गि १११ गट—विष्
१ ३, बज १)। छ प्रिक्लिष्टविष्ठा
प्रिक्लिष्टविष्ठा (पञ्च १ १ विदे ११७)।

प्रिक्लिष्ट सक [नि + क्षिप्] नाम धारि
को दे बल का निक्लिष्ट करना। प्रिक्लिष्टे
(पञ्च १)। धधि प्रिक्लिष्टविष्ठा (पञ्च
१)।

प्रिक्लिष्ट पु [निष्कृष्ट] १ स्थापन। २
स्वात-स्थापन करोह, बज धारि बजा रक्क
(या १४)।

प्रिक्लिष्टम न [निष्कृष्टम] १ स्थापन। २
कल्पना (गुणा १२१ पठि)।

प्रिक्लिष्ट वि [दे] दधम विर (दे ४,
२७)।

प्रिक्लिष्ट पुन [निष्कृष्ट] १ बीर, बीषा,
विर (दुप्र २१)। २ प्रिक्लिष्ट-पठित (विदे
१२५-५६ प, १२)। ३ मुद्रा-पठित, बज
वि पाप का बीषा (पञ्च २२)।

प्रिक्लिष्ट पु [निष्कृष्ट] मुपि-पठित (विदे
१२३७)।

प्रिक्लिष्ट न [दे] प्रिक्लिष्ट नली बीरपठ,
धधवर 'पते विष्ठा-पठित नासर मुद्रा बज
निक्लिष्ट' (पञ्च २३, ११८)। 'बजा धधि
निक्लिष्ट' (पञ्च १ ८२)।

प्रिक्लिष्टवि वि [दे] धधक धधिवर (दे ४
४)।

प्रिक्लिष्ट पु [निष्कृष्ट] दधनता लेगट,
मुद्रा (गुणा २७१)।

प्रिक्लिष्टम केवो प्रिक्लिष्ट = नि + क्षिप्।

प्रिक्लिष्ट पु [निष्कृष्ट] १ स्वतः स्थापन
(पञ्च)। २ परिष्कृत मोशन (पाथ २, १
१ १)। ३ करोह, बज धधि बजा रक्क
(पञ्च १२ १)।

प्रिक्लिष्टम न [निष्कृष्टम] १ निष्कृष्ट स्था-
पन (पञ्च १)। २ स्वात-स्थापन निष्कृष्ट (विदे
११२)।

प्रिक्लिष्टममात्र } को [निष्कृष्टम] स्थापन,
प्रिक्लिष्टममात्र } विष्ठा (छाया कप्य)।

प्रिक्लिष्टम पु [निष्कृष्टम] निक्लिष्ट, करोह
(इह १)।

प्रिक्लिष्टवि वि [निष्कृष्ट] १ स्वतः स्था-
पित। २ मुद्र, परिष्कृत (पञ्च)।

प्रिक्लिष्टवि वि [निष्कृष्टवि] ऊपर देवो
(मद्रि)।

प्रिक्लिष्ट पु [निष्कृष्ट] १ बीर-पठित
प्रिक्लिष्ट } निष्कृष्ट (सम १ २, बज ४७)।

प्रिक्लिष्ट केवो प्रिक्लिष्ट (दुप्र २२३)।

प्रिक्लिष्ट न [निष्कृष्ट] छ-पठित ली बज
ली पठित (पञ्च)।

प्रिक्लिष्ट वि [निष्कृष्ट] ली धधन बज
(पञ्च गट—प्राचीर १७)।

प्रिक्लिष्ट केवो प्रिक्लिष्ट (विदे १११२)।

प्रिक्लिष्ट सक [निष्कृष्ट] प्रिक्लिष्ट करण,
बीषा। छह निष्कृष्टममात्र (दुप्र १७७)।

पिआय न [निर्याण] १ बाहर निकालना निर्जन (ठा २५ ३) । २ बावृत्ति-वृत्ति सम (धीन) । ३ योद्ध युक्ति (भाव ४) ।

पिआयिष वि [निर्याणिक] निर्याण-संबन्धी, निर्याण-संबन्धी (मय १३ १) निरु ८) ।

पिआमग १ पुं [निर्यामक] बड़वार, पिआमय १ बड़ाव का निकल (सिंहे २२२४) छाया १ १० धीन गुर १३ ४८) ।

पिआमग न [निर्वापन] बस्ता बुझना 'अच्छिन्नामग' (बन १) ।

पिआमव पुं [निर्यामक] १ बीमार की सेवा-सुपना करनेवाला मुनि (पद ७१) । २ वि शरण-पना-कारक (पद-भाषा १०) ।

पिआमिष वि [निर्यामिष] वार पूर्ववाया हुआ गणित (महा) ।

पिआय पुं [वि] जकार (वे ४ १४) ।

पिआय वि [निर्वात] निर्वात निष्क (सुत उप ६ २८६) ।

पिआयण न [निर्यातन] बेर-मुक्ति, बरसा (महा) ।

पिआयणा की [निर्यातना] स्वर केवो (ज ४११ टी) ।

पिआयब केवो पिआमय (धनि) ।

पिआयस पुं [निर्वात] कुँवो का या यौव, (सुम २ १) ।

पिआय वि [निर्वात] बीता हुआ पणमुत (मोच १८ न टी गुर ६, १८ धीन) ।

पिआय सक [निर + वि] बीतना पचन करना । निआय (बीन) संज्ञा निआयिक्य, (महा) ।

पिआयिष केवो पिआय (कुवा २६) ।

पिआयिष १ वि [निर्वात] नाश-नाश निआय १ बीन (मय ठा ४ १) ।

पिआयिष वि [निर्वात] बीन-वृत्ति केवण बरित (धीन) या २ महा) ।

पिआयुं [निर + युज] जकार करना (हिं २६ टी) ।

पिआयु वि [निर्याण] १ बीन, सुपुन (सिं १ २) बीन १ को) । २ बरित, बरित (धीन) । ३ बरित बरित (भाव)

पिआयि की [निर्याण] व्याख्या विवरण टीका (सिंहे २२२३) मोच २ सय १ ७) ।

पिआय केवो पिआय (स ४०) ।

पिआय वि [निर्याण] १ निआयि निआयि (छाया १ १—पद ४४) २ समनोच समुत्तर (मोच २४८) । ३ जड़त प्रभावतर से प्रवर्तित (सलि १) ।

पिआय वि [निर्याण] धीन 'निआय' रत निआय' (सय न २२२) ।

पिआय सक [निर + युज] १ परिणाम करना । २ रचना निर्मास करना । कर्न छिन्नायि (वि २२१) । ३ पिआयिष (बन २) । ४ पिआयिष (कय) ।

पिआय पुं [वि निर्याण] १ बीन बरित, गृहस्थ-पण पटन (वे ४ २८ स १ १) । २ बरित बोका 'बन बाव बिबर' मी छिन्नायि (मय २ टी न १) । ३ डार के पास का बरित-विषय (छाया १ १—पद १२ पण १ १) । ४ डार बरित (गुर २ ८१) ।

पिआय वि [निर्याण] प्रभावतर से जड़त करनेवाला (सलि १ १४) ।

पिआय न [निर्याण] केवो पिआय (ज १६, २२१ पद २) ।

पिआयया १ की [निर्याण] १ निआय-पिआय १ रत बाहर निकालना (बन १) । परिणाम (ठा ४ २) । ३ विवरण निर्मास (सिंहे २२१) ।

पिआयि केवो पिआय (सलि १ १३) ।

पिआयि वि [निर्याण] धीन (पद १४४) ।

पिआय पुं [वि] १ प्रकर, पति । २ पुष्पो का घनकर (वे ४ ३३) ।

पिआय पुं [निर्याण] १ जकारण पिआय १ बरित (पद ४४ ४४) नि २६) । २ जकार (नि २६) ।

पिआय पुं [वि निर्याण] परिणाम, पिआय १ छाया 'पार्याणिक' (मोच ११८ छाया १ १—पद ४४) ।

पिआय पुं [वि] रत, रती (वे ४ ३१) ।

पिआय सक [निर] स्नेह करना । छिन्नाय (महा १) ।

पिआय सक [वि] बीन होना । निआय (वे ४ २) पद १) । ३ पिआय (कुवा १ १३) ।

पिआय वि [वि] बीन, पुण (वे ४ २१) । पिआय पुं [निर्याण] रत पण के पिआय वाणी का प्रभाव (वे १ २८ २ २) ।

पिआय न [निर्याण] डार केवो (मय २४ २२) गुर १ १४ गुवा १११) ।

पिआय की [निर्याण] नती ठरिसे (कुवा) ।

पिआय सक [निर्याण] केवो निआय करना । पिआय, पिआय (वे ४ १) ।

पिआय सक [निर्याण] पिआयमान (मा ४ भाषा २ १ १) । संज्ञा पिआयमान, पिआय (महा भाषा) ।

पिआय सक [निर + व्ये] पिआय पिआय करना । संज्ञा पिआय (भाषा) ।

पिआय वि [निर्याण] केवो (भाषा) ।

पिआय पुं [निर्याण] केवो (भाषा) ।

पिआय पुं [निर्याण] धीन (ज १६) सय १३) ।

पिआय पुं [निर्याण] धीन (ज १६) सय १३) । २ न बरित, निआय (महा—स १) ।

पिआय वि [निर्याण] निआय (ज १४८ टी) ।

पिआय वि [वि] निर्वात, व्यापक (वे ४ ३०) ।

पिआय वि [निर्याण] धीन, निर्वात (गुर १ १८८ गुवा ४४८) ।

पिआय वि [वि] बीन, पुण (वे ४ २१) ।

पिआय सक [वि] केवो (महा) ।

पिआय सक [वि] केवो (महा) ।

पिआय सक [वि] केवो (महा) ।

पिआय सक [वि] केवो (महा) ।

पिआय सक [वि] केवो (महा) ।

पिआय सक [वि] केवो (महा) ।

पिआय सक [वि] केवो (महा) ।

गिण्ड्युल्यय नि [गिण्ड्युल्यय] चारि-रूप से
रहित (स १ १९)।
गिण्ड्युल्यय देवो गिण्ड्युल्यय (हे २, २११ छाया
१ २: सुर १, १७२)।
गिण्ड्युल्यय नि [हे] गिण्ड्युल्यय, निर्णय (प ४)।
गिण्ड्युल्यय सक [निर + पञ्च] नीपना का
बना सिद्ध होता। गिण्ड्युल्यय (स ११९)।
बद्ध गिण्ड्युल्ययमाय (पण्ड १ ४)।
गिण्ड्युल्यय नि [निरुपेक्षित] १ विरोधी।
२ विरुद्ध निगम धिक्कले पर न ही। ३
कमजोर-रहित (स १२० टी)।
गिण्ड्युल्यय नि [निरुपेक्ष] नीपना हुआ बना
हुमा सिद्ध (स १ १३ महा)।
गिण्ड्युल्यय नि [निरुपेक्ष] निगमाल सिद्धि
(स ४० प २० टी चार १ १)।
गिण्ड्युल्यय देवो गिण्ड्युल्यय (कव्य: छाया १
१९)।
गिण्ड्युल्यय नि [हे] निर्णय बना-हीन (स ३
१७)।
गिण्ड्युल्यय नि [निरुपेक्ष] कम-रहित निर्णय
(स १४ २९ या ११९)।
गिण्ड्युल्यय देवो गिण्ड्युल्यय (प्राय)।
गिण्ड्युल्ययकण देवो गिण्ड्युल्यय।
गिण्ड्युल्यय नि [निरुपेक्षित] नीपना हुआ हुमा
बनाया हुमा सिद्ध किना हुमा (पिंते ७ टी
स २११ टी महा)।
गिण्ड्युल्यय सक [निर + पादप] नीप-
ना बनाया, सिद्ध करना। सद्ध गिण्ड्युल्यय
ऊण (पंजा ७)।
गिण्ड्युल्यय नि [निरुपेक्ष] नीपनाबनाता
बननेवाला, सिद्ध करनेवाला (विंते ४०३
स ३: स १२०)।
गिण्ड्युल्यय न [निरुपेक्ष] नीपनाका
निर्णय कृति (प्राय ४)।
गिण्ड्युल्यय पुं [निरुपेक्ष] बन्ध-विरोध बद्ध
(हे २, २११ पण्ड १ स १ या १०)।
गिण्ड्युल्यय पुं [निरुपेक्ष] एक माप बट-विरोध
(पण्ड १२१)।
गिण्ड्युल्यय सक [नि + सिद्ध] बाहर
निकलना। बद्ध गिण्ड्युल्यय (स १७४)।
गिण्ड्युल्यय नि [निरुपेक्षित] निर्णय, बाहर
निकलना हुआ (पठन १, २२७ स १)।

गिण्ड्युल्यय पुं [निरुपेक्ष] प्रमा देव (कव्य)।
गिण्ड्युल्यय पुं [निरुपेक्ष] निर्णय बाहर निक-
लना (स ४ २२२)।
गिण्ड्युल्यय नि [निरुपेक्ष] बाहर निकलने-
वाला (सुम २, २ ४२)।
गिण्ड्युल्यय नि [निरुपेक्षित] १ निरुपेक्षित
निरुपेक्षित (सुम २, २)। २ समाना हुमा
नकाया हुमा (पुण्ड १२२)। ३ मज्जित, बीनता
हुमा (स १ ४)।
गिण्ड्युल्यय धी [निरुपेक्षित] बाधपूर्ण
बोधी 'एसा पदमा धीरनिरुपेक्षित' (सुम २,
११ प १ ७)।
गिण्ड्युल्यय पुं [हे] कम-निर्णय धावाय निक-
लना (स ४ २२)।
गिण्ड्युल्यय पुं [निरुपेक्ष] १ केवल पीतना।
२ संकट (हे २ २१)।
निर्णय सक [नि + बन्ध] १ नीपना। २
३ करना। निर्णय (प्राय)।
निर्णय सक [नि + बन्ध] ऊर्जाय करना।
निर्णय (पंजा ७ २२)।
निर्णय पुं [निरुपेक्ष] १ संकल संयोग
(विंते ११०)। २ बाध, हट (महा-
'गिण्ड्युल्यय' (स ११०)।
निर्णय न [निर्णय] करण प्रयोग
निमित्त (प्राय प्राय ११)।
निर्णय नि [निरुपेक्ष] १ बीना हुमा (प्राय)।
२ समुक्त संकल (स १, ४४)।
निर्णय नि [निरुपेक्ष] छात्र, पना माह
(पठन कुमा)।
निर्णय नि [निरुपेक्षित] निर्णय किया
हुमा (पठन)।
निर्णय [हे] देवो गिण्ड्युल्यय (पण्ड १ ३-
प ४२)।
निर्णय सक [नि + मरज] निमज्ज करना
हुमा। बद्ध गिण्ड्युल्यय निर्णयमान
(पण्ड ११ छाया)।
निर्णय नि [निमज्ज] हुमा हुमा निमज्ज (पा
३७१ सुर १ ११ ४ न)।
निर्णय न [निमज्ज] हुमा, निमज्ज
(पठन १ ४१)।
निर्णय देवो गिण्ड्युल्यय = नि + मत्व। बद्ध,
जियोक्षितमाण (प्राय)।

गिण्ड्युल्यय पुं [निरुपेक्ष] १ प्रकट बोध छतम
ज्ञान। २ धनिक प्रकार का बोध (विंते
२१००)।
गिण्ड्युल्यय न [निरुपेक्ष] प्रयोग समझना
(पठन १ २, १२)।
गिण्ड्युल्यय पुं [निरुपेक्ष] बाध (पा १७२-
महा सुर १ ८)।
गिण्ड्युल्यय न [निरुपेक्ष] निमज्ज, हेतु
कारण 'साधोपसंयोजन' बद्ध (वास)।
गिण्ड्युल्यय देवो गिण्ड्युल्यय = निर + पञ्च। गिण्ड्युल्यय
सद्ध (प्राय १४)।
गिण्ड्युल्यय नि [निरुपेक्ष] बद्ध-रहित दुर्बल
(प्राय)।
गिण्ड्युल्यय नि [निरुपेक्ष] मज्जित बाहर (स
१-प १२२)।
गिण्ड्युल्यय नि [निरुपेक्ष] बाहर बा बाहर
पना हुमा 'संयोजन' बाध (कवा)।
गिण्ड्युल्यय नि [हे] १ निर्णय मूल रहित। २
निर्णय मूल से 'गिण्ड्युल्यय' (पण्ड
१ १-प ४२)।
गिण्ड्युल्यय देवो गिण्ड्युल्यय निमज्ज (स ११
गउठ)।
गिण्ड्युल्यय देवो गिण्ड्युल्यय (स १ १)।
गिण्ड्युल्यय न [हे] पनाय के पठने पर बो
धेय हट जाता है बद्ध (पमा ११)।
गिण्ड्युल्यय नि [निरुपेक्ष] नि:संदिह, संकल-
रहित (स १४)।
गिण्ड्युल्यय न [हे] छयाय बयीका (स १
१४)।
गिण्ड्युल्यय नि [निरुपेक्ष] माय रहित नम-
स्वीय, समान (स ७२० टी मुपा १३२)।
गिण्ड्युल्यय सक [निर + मरज] १ निर-
करा करना अपमान करना धरहेलना
करना धारोक्ष-मूर्ख अपमान करना।
गिण्ड्युल्यय, गिण्ड्युल्यय (छाया १ १०
उवा)। सद्ध गिण्ड्युल्यय (गण-यातवी
१७२)।
गिण्ड्युल्यय न [निरुपेक्ष] गिण्ड्युल्यय,
अपमान पर अपमान स धरहेलना (पण्ड १
१: पठन)।
गिण्ड्युल्यय धी [निरुपेक्ष] ऊपर देवो

विष्मद्भूत वि [निमित्त] रचित इत (गा २ १ ५)।

विष्मद्भूत न [निर्मयन] १ विनाश २ वि विनाश 'एव य पयट्टु सिङ्गं सुखविष्मद्भूतं तित्थं' (मुवा ७१)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] नाभ रचित शुक्र (गाथा १ १ भाग)।

विष्मद्भूत श्री [रे] देवी विरोध कापुण्ड्र (रे ४ १३)।

विष्मद्भूत वि [रे निरमद्भू] वच्छ ब्रह्म (मुवा २४ १२)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] विष्मद्भूत = निर्मासिक (गा)।

विष्मद्भूत सक [नि + स्रज] विरोध करना। विष्मद्भूत (अभि)।

विष्मद्भूत न [निर्मास] विरोध (अभि)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] मास्य-रहित, ईर्ष्या-रूप (उप ४ ८४)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] विनाश (अभि)।

विष्मद्भूत न [निर्मास] १ मक्षिक का घनाश २ विनाश निर्जलता (अभि १८)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] मयत्त-रहित देहा (रे १ १११)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] अतिरिक्त (उ ७३)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] मय रचित (अभ १२)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] मय-रहित (अभि)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] विनाश १ विनाश २ वि विनाश-कारक (मुवा ७२) श्री या (पुर ११ १८५)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] मय रचित (अभि)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] मय-रहित (अभि)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] मय-रहित (अभि)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] मय-रहित (अभि)।

विष्मद्भूत न [निर्मास] देव का अतिरिक्त इत्य देवता पर बढ़ाई हुई वस्तु का बना हुआ (रे १ १८ पद)।

विष्मद्भूत सक [निर् + मा] ब्रह्मा रचना करना। विष्मद्भूत (रे ४ १८ पद)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] ब्रह्मा १२२)।

विष्मद्भूत सक [निर् + मापय] ब्रह्मा रचना (अ ४ ४ मुवा)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] ब्रह्मा रचना (अ ४ ४)।

विष्मद्भूत न [निर्मास] रचना इति (अ १४८ टी मुवा २१ १४, १ ४)।

विष्मद्भूत न [निर्मास] ब्रह्मा रचना (अभि)।

विष्मद्भूत वि [निमित्त] बनाया हुआ रचित (मुवा गा १ १ पुर ११ ११)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] ब्रह्मा रचना (मुवा)।

विष्मद्भूत सक [गम्] १ बाता मय रचना २ सक, रचना। विष्मद्भूत (रे ४ ११२)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] विष्मद्भूत (रे ४ १२)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] १ विनाश २ वि विनाश (अभि)।

विष्मद्भूत न [निर्मास] १ विनाश २ वि विनाश-कारक (मुवा ७२) श्री या (पुर ११ १८५)।

विष्मद्भूत वि [गम्] मय रचना (मुवा)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] विनाश (रे ४ १)।

विष्मद्भूत देवी विष्मद्भूत। विष्मद्भूत (प्रा १४)।

विष्मद्भूत देवी विष्मद्भूत (प्रा १४)।

विष्मद्भूत सक [निर् + मा] ब्रह्मा रचना, रचना विष्मद्भूत (रे ४ १८ पद)।

विष्मद्भूत न [निर्मास] १ रचना ब्रह्मा, इति २ ब्रह्म-विरोध शरीर के योगीश्वर के निर्मास में विनाश ब्रह्म-विरोध (अ ४ ४)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] मय-रहित (अ ४ ४)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] विनाश-कारक, ब्रह्मा रचना (रे ४ ४३)।

विष्मद्भूत वि [निमित्त] रचित बनाया हुआ (मुवा)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] घनमय विरहित (अभि)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] मय-रहित (मुवा ७४)। श्री सी (महा)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] १ रचित विरहित इति (अ ४ ४)। २ विरहित मय-रहित (अभि)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] विनाश (अभि)।

विष्मद्भूत न [निर्मास] विनाश (अभि)।

विष्मद्भूत देवी विष्मद्भूत (प्रा ११)।

विष्मद्भूत सक [निर् + मापय] ब्रह्मा रचना (अभि)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] विनाश (अभि)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] विनाश (अभि)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] विनाश (अभि)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] विनाश (अभि)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] विनाश (अभि)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] विनाश (अभि)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] विनाश (अभि)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] विनाश (अभि)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] विनाश (अभि)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] विनाश (अभि)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] विनाश (अभि)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] विनाश (अभि)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] विनाश (अभि)।

गिरासंभण नि [गिरासंभन] धात्वन्-उहित
(घोषा राणा १ १) ।

गिरासंभण नि [गिरासंभन] घासं-उहित
घास-उहित प्राकृत-उहित ह्वा-उहित धनु
मान-उहित (धावा २ १६, १२) ।

गिरास्य नि [गिरास्य] स्वा-उहित एक
स्मिति बद्धी कलेश्वरा (घोष) ।

गिरास्य नि [गिरास्य] प्रकाश-उहित
(भिर १ १) ।

गिरास्यसि नि [गिरास्यसि] धावा-
उहित निरुद्ध (धुम १ १) ।

गिरास्यवद नि [गिरास्यवद] घास-उहित
निरीह (धुमा १ १ १) वद १५०) ।

गिरावरण नि [गिरावरण] १ प्रतिकूल
उहित (घोष) । २ लन (धुर १५ १३०) ।

गिरावद नि [गिरावद] धावा-उहित
(धुम ५२१) ।

गिराविकल १ केवो गिरावदकला निरुद्ध
गिराविकल १ गिराविकला उचित संसार
कलार (मल ५१ पञ्च १ १ ११) ।

गिरास नि [गिरास] १ धावा-उहित हृदय
(पञ्च ५५ ११; १५ ५० उचित ११) ।

२ न, धावा का धावा (पञ्च १ १) ।

गिरास नि [गिरास] गुरु, कूर (पञ्च) ।

गिरासंभ नि [गिरासंभ] धावा-उहित
निरीह (धुमा १२१) ।

गिरासय नि [गिरासय] गिरावर (धुमा
१२२) ।

गिरासय नि [गिरासय] धावा-उहित, कर्त-
कर्म के कारणों से उचित (पञ्च २ १) ।

गिरासय केवो गिरासंभ (धावा २ ११ १) ।

गिरास नि [गिरास] गिरास निरुद्ध (१५
१०) ।

गिरास नि [गिरास] धावा-उहित धावा ह्या
(१५ ५०) ।

गिरास केवो गिरास (धुम १ १२) ।

गिरास नि [गिरास] न्य धावा ह्या (१५ १) ।

गिरासि [गिरास] केवो धावा (धुम) ।

गिरासय नि [गिरासय] धावा-उहित (मल
७ १) ।

गिरासल एक [गिरासल] धावा,
धावा-उहित धावा, धावा-उहित धावा

(धुम ५५) । गिरासल १ गिरा
कलाग (धुम ५५ २११ टी) । गिरा
गिरासल (धुम) ।

गिरासल न [गिरासल] धावा-उहित (ग
११) ।

गिरासल को [गिरासल] धावा-उहित
प्रतिष्ठा (धोष १) ।

गिरासल नि [गिरासल] धावा-उहित
हृद (धुम ५५ ५०) ।

गिरासल एक [गिरासल] १ धावा-उहित
धावा-उहित धावा । २ धावा-उहित धावा
(१५ २१) ।

गिरासल नि [गिरासल] धावा-उहित
(धुमा) ।

गिरास नि [गिरासल] धावा-उहित, धावा-उहित
(धा १ १ धावा-उहित १२) ।

गिरासल एक [गिरासल] धावा-उहित
धिरासल (१५ १२) ।

गिरासल एक [गिरासल] धावा-उहित
(१५ १२) ।

गिरासल नि [गिरासल] धावा-उहित
(१५ १२) ।

गिरासल नि [गिरासल] धावा-उहित
(१५ १२) ।

गिरासल नि [गिरासल] धावा-उहित
(१५ १२) ।

गिरासल नि [गिरासल] धावा-उहित
(१५ १२) ।

गिरासल नि [गिरासल] धावा-उहित
(१५ १२) ।

गिरासल नि [गिरासल] धावा-उहित
(१५ १२) ।

गिरासल नि [गिरासल] धावा-उहित
(१५ १२) ।

गिरासल नि [गिरासल] धावा-उहित
(१५ १२) ।

गिरासल नि [गिरासल] धावा-उहित
(१५ १२) ।

गिरासल नि [गिरासल] धावा-उहित
(१५ १२) ।

गिरासल नि [गिरासल] धावा-उहित
(१५ १२) ।

गिरासल नि [गिरासल] धावा-उहित
(१५ १२) ।

गिरासल (धुम १५२) । ३ गिरासल
गिरासल (धुमा ५५ ५० धावा १ १) ।

गिरासल न [गिरासल] धावा-उहित
(धुम १ २) धावा ।

गिरासल नि [गिरासल] धावा-उहित
धिरासल (धोष) ।

गिरासल को [गिरासल] धावा-उहित
(धोष) ।

गिरासल नि [गिरासल] धावा-उहित
(धोष) ।

गिरासल नि [गिरासल] धावा-उहित
(धोष) ।

गिरासल नि [गिरासल] धावा-उहित
(धोष) ।

गिरासल नि [गिरासल] धावा-उहित
(धोष) ।

गिरासल नि [गिरासल] धावा-उहित
(धोष) ।

गिरासल नि [गिरासल] धावा-उहित
(धोष) ।

गिरासल नि [गिरासल] धावा-उहित
(धोष) ।

गिरासल नि [गिरासल] धावा-उहित
(धोष) ।

गिरासल नि [गिरासल] धावा-उहित
(धोष) ।

गिरासल नि [गिरासल] धावा-उहित
(धोष) ।

गिरासल नि [गिरासल] धावा-उहित
(धोष) ।

गिरासल नि [गिरासल] धावा-उहित
(धोष) ।

गिरासल नि [गिरासल] धावा-उहित
(धोष) ।

गिरासल नि [गिरासल] धावा-उहित
(धोष) ।

गिरासल नि [गिरासल] धावा-उहित
(धोष) ।

गिरासल नि [गिरासल] धावा-उहित
(धोष) ।

गिरासल नि [गिरासल] धावा-उहित
(धोष) ।

पिबुद्धि की [निबुद्धि] १ बुद्धि का प्रभाव
(छ २ ३) । २ विन भी छोटाई (मन) ।

पिबुल सेतो गिअज (मनु २६) ।

पिबुल सेतो पिबुल = पिबुल (स २५०) ।

पिबुद्धि की [निबुद्धि] परिदेन (प्राज्ञ १२) ।

पिबुद्ध सेको विबुद्ध (गुप २, ७ १८) ।

पिबेअ मक [नि + बेअ] १ सम्मान-पूर्वक

ज्ञान करना प्रार्थी करना । २ धर्यल करना ।

१ मायम करना । कर्न पिबेअअ (पिबु १) ।

छं पिबेअअ (स २१६) । हेअ पिबेअअ

(वंचा १२) । छ पिबेअगीअ (स १२२) ।

पिबेअग पि [निबेअ] सम्मान-पूर्वक ज्ञान

करनेवाला प्रार्थी (गुग २९) ।

पिबेअम } न [निबेअ] १ सम्मान-पूर्वक

विबक्षणय } ज्ञान, विम (वंचा १) । पिबु

११) । २ भैष्य बैषा को धरित मन धारि

(पदम १२ ३) ।

पिबेअग की [निबेअ] ऊपर सेको

(लाता १२) । पिड पु [पिड] १

देता को धरित पद धारि, भैष्य (पिबु

११) ।

पिबेअय सेको गिअअग (गुग २२२) । स

२१६) ।

विबअय पि [निबेअ] सम्मान-पूर्वक ज्ञानित

(बरा अदि) ।

पिबेअअअ पि [मिबेअअ] मिबेअ

करनेवाला (धनि ११६) ।

पिबेअ सक [नि + बराय] स्वाभाव

बरा, बैठाता । पिबेअ पिबेअ (सरा

बरा) । छं पिबेअअअ विबनिअ

विबमिअम पिबेअअअ विबसिय

(उग १२ मग मग मग मग मग)

१ विबसियअ (गुग १६४) ।

गिअम पु [गिअम] १ स्वाभाव धावान

(छ २ उग २१ १) । २ गेअ (पिबु ४)

१ धारा-धारा देअ (हर १) ।

गिअम पु [गुअम] १ मदान धारा बकरा

धारा (गुग ५६१) ।

गिअम न [गिअम] १ रथन बैठा

(धावा) । २ एक ही बरावेवाले धनेक गुरु

(उग ४) ।

गिबेअम न [गिबेअम] गुरु, बर (उग

११ १८) ।

गिबेअसिय पि [गिबेअस] बैठना हुय

(महा) ।

गिअ न [गिअ] अदि, पदम-प्राप्त (रे ४

४८) पदम) ।

गिअ न [गिअ] अमर के ऊपर का ऊपर

(छं १२६) ।

गिअ न [रे] १ कदुब, पिब । २ म्याम

बहुता (रे ४ ४८) ।

गिअअर पि [रे] परिहाय-छित छय

(गुग १२७) ।

गिअअअ पि [गिअअअ] वरुअ-छित

(पि १२) ।

गिअअ सेको गिअअ = निर + बअय ।

छं गिअअअ (छ २ ४) ।

गिअअ (स) सेको गिअअ (रे ४ ४२२ डि) ।

गिअअ पि [गिअअ] बनलेवाला, कदा

(माय ४) ।

गिअअम सेको गिअअम (स ७ ११) ।

गिअअम पि [गिअअम] निबेअम

बराय हुय (माया २ ४ २) ।

गिअअ सक [गुअ] गुअ की धोकय ।

छिअअ (पद) ।

गिअअ सक [गु] १ गुअ होला बुअ

होय । २ राउ होय । गिअअ (रे ४

१२) ।

गिअअ सेको गिअअ = निर + ग (गुग

१२२) ।

गिअअ पि [गुअ] १ गुअ-गुअ को

बुअ हुय हो (रे १) । २ राउ-गुअ

को बुअ हुय हो (गुग ७ ४) ।

गिअअ पि [गिअअ] गिअ अ, निर्भल

(बाय) गुअगुअ य गुअगुअ य धर्म

दीप गिअअम (गुग १२२) ।

गिअअ पि [रे] बाय, दीप (रे ४ २) ।

गिअअ पि [गिअअ] गक-छित स

अजिअ बिअ मर बा (लाता १ १ दीप) ।

गिअअ सक [निर + बअय] १ स्वाभाव

बरा, अरुआ करना । २ देगम । क

गिअअम (रे १ ४४) का १ ११ टी

महा) ।

गिअअ सक [निर + बअय] स्वाभाव

बरा, अरुआ करना । गिअअम (बरा) ।

छं गिअअम, गिअअम (मग) ।

गिअअ सक [निर + बअय] सेअ

बराता बरुन बराता । कअ, गिअअ-

अमाग (मग) ।

गिअअ पि [गिअअ] गिअअ, छित

मिअ (महा दीप) ।

गिअअ पि [गिअअ] कने सेअ, सअ

(महा २) ।

गिअअम न [गिअअम] गिअम, रफा,

बराअ (उग ४ १८) । गिअअम,

गिअअम की [गिअअम] क

कने की बिअ (छ २, १ का १ १) ।

गिअअम पि [गिअअम] कने सेअ, कने

सेअ (महा १४ उग १) ।

गिअअम पि [गिअअम] कने सेअ, कने

सेअ (महा ११४२; स १२१; रे १

१) ।

गिअअम की [गिअअम] कने सेअ, कने

सेअ (महा १ २) । सेअ गिअअम ।

गिअअम पि [गिअअम] कने सेअ, कने

सेअ (स १११; गुग १२, २२१; छं १) ।

गिअअम पि [गिअअम] सेअम गिअ

हुय (मग) ।

गिअअम पि [रे] बरिअ (रे ४ १२) ।

गिअअ सक [निर + गु] सअ होय

छरअ होय । छ. गिअअम (स ४

१ १) ।

गिअअ पि [गिअअ] १ अरअ अरअ

(गुग १ ४ २) । २ अरअ अरअ (छ १) ।

१ पि गिअअ बरलेवाला गिअअम

अरअम (गिअअम) ।

गिअअ पि [गिअअ] अरअ-छित गिअ

अरअ (पदम २ ४८ उग २१४ टी) ।

गिअअम न [गिअअम] १ गिअअ, अरअ

अरअ (पदम) । २ अरअ, अरअ (छ १) ।

१ पि गिअअ बरलेवाला गिअअम

अरअम (गिअअम) ।

गिअअम पि [गिअअम] सेअ गिअअ = निर + गु

गिअअ सक [अय] गुअ बराय ।

लिङ्गार (हे ४ १)। भूष लिङ्गारही
(कुमा)। कर्म

बहु लिंग लिङ्गार

दुष्क कर्तुमुपलक्ष्य

बहुल परिवर्तन जन्म

दुष्क न संभव (स १ १)।

लिङ्गार सक्त [सिद्ध] देवत बना काटना।

लिङ्गार (हे ४ १२४)।

लिङ्गारण न [कथन] दुष्क-निर्देशन (पा

२२२)।

लिङ्गारिण वि [सिद्ध] काटा हुआ बाहिर

(कुमा)।

लिङ्गार सक्त [सुख] दुष्क को छोड़ना।

लिङ्गार (हे ४ २२)।

लिङ्गार सक्त [निर + पद] लिङ्गार

होना छिड़ होना बनना। लिङ्गार (हे ४

१२८)।

लिङ्गार देवो लिङ्गार = शर। लिङ्गार

(हे ४ १०१ डि)।

लिङ्गार देवो लिङ्गार = घृ। बहु लिङ्गार

लिङ्गारमाण (स १ ११ ० ४१)।

जलविच्छिन्न वि [हे] १ जल-हीन पानी से

बोया हुआ। २ प्रविष्ट। ३ विच्छिन्न

विच्छिन्न (हे ४ २१)।

लिङ्गार सक्त [निर + बापय] ठंडा करना

कुम्भना। लिङ्गार (स ४२२)। लिङ्गार

(काव)। बहु लिङ्गार (सुपा १२२)।

रु-लिङ्गारिय (सुपा २१)।

लिङ्गारण न [निर्वाण] १ कुम्भना खाद्य

करना। २ वि धारण करनेवाला, ताप को

कुम्भनेवाला (सुपा १ २१०)।

लिङ्गारिण वि [निर्वाण] कुम्भना हुआ

ठंडा किया हुआ (पा ११० सुपा २ ४०)।

लिङ्गार सक्त [निर + पद] १ लिङ्गार,

निर्वाण करना, पार पकना। २ धात्रीविका

बनाता। लिङ्गार (स १ २१ बनना ४)।

कर्म, लिङ्गार (स १४१)। बहु लिङ्गार

(पा १२२)। कुम्भ ११)। रु-लिङ्गारिय (सुपा

कुम्भ १२२)।

लिङ्गार सक्त [बहु + बहु] १ बारण

करना। २ स्मरण करना। लिङ्गार (वद)।

लिङ्गारण न [निर्वाण] निरुद्ध, सक्त

मात्र की एक संज्ञा (सुपा १०२ कुम्भ १०४)।

लिङ्गारण न [हे] विवाह, शादी (हे ४

२२)।

लिङ्गार सक्त [वि + सम्] विधान करना।

लिङ्गार (हे ४ १२२)। बहु लिङ्गार

(स ५ ८)।

लिङ्गारपात्र वि [निष्ठापात्र] ध्याना

रहित स्थलना-रहित (मीन)।

लिङ्गारपात्र वि [निष्ठापात्र] १ ध्याना-

रहित (पात्रा १ १ भगः कर्म)। २ न.

मात्रात वा ध्याना (सुपा २)।

लिङ्गारपात्रा की [निष्ठापात्र] एक विधा-

देवी (पद ७ १४२)।

लिङ्गारण न [निर्वाण] १ शुद्ध मोक्ष

निर्वाण (विने ११०२)। २ सुख केन

रहित सुख-निर्वाण लिङ्गारणो लिङ्गार

मुक्ति निर्वर्तन सुख (स ७२८ टी

पद ४१ ११)। ३ कुम्भना लिङ्गारण

(पात्र ४)। ४ वि कुम्भ हुआ 'बहु' बीनो

लिङ्गारणो (विने ११११)। कुम्भ २१)। ५

पुं रक्षण कर्म में होनेवाले एक दिन-बैठ का

नाम (स १२४)।

लिङ्गारण न [निर्वाण] रुद्ध (स २ २

१५)।

लिङ्गारण न [हे] दुष्क-कथन (हे ४ ११)।

लिङ्गारिण पुं [निष्ठापात्र] मातृवर्ष में

प्राप्ति लक्ष्मिणी-काल में संजात एक दिन-

बैठ (पद ७)।

लिङ्गारपी की [निर्वाण] मन्त्रापी की

शास्त्रनाम की शास्त्र-देवी (संति १ १)।

लिङ्गार वि [निर्वाण] बीना हुआ कर्तव्य

(स १४ १४)।

लिङ्गार वि [विमान] १ विमान विधान

किया हो बहु (कुमा)। २ सुविष्ट निरुद्ध

(स ११, २३)।

लिङ्गार वि [निर्वाण] बाहु-रहित (पात्रा

१ १ बीन)।

लिङ्गारिण वि [आविष्ट] इच्छा किया हुआ

(स १४ २४)।

लिङ्गार देवो लिङ्गार। लिङ्गारिण (स

१२२)। रु-लिङ्गारिण (सिद्ध १)।

लिङ्गार पुं [निर्वाण] बी शास्त्र यात्र का

परिमाण (सिद्ध १)। बहु की [कथा]

एक लक्ष की मोक्ष-कथा (ठा ४ २)।

लिङ्गारिण (सी) वि [निर्वाणपितृक]

ठंडा करनेवाला (सि १ १)।

लिङ्गारण न [निर्वाण] कुम्भना लिङ्गारण

(स ४)।

लिङ्गारण न [निर्वाण] कुम्भना, ठंडा

करना उपशान्ति (पद ४)।

लिङ्गारिण वि [निर्वाण] ध्याना कुम्भनेवाला

(सुपा १ ७ २)।

लिङ्गारिण वि [निर्वाण] ठंडा किया हुआ

(सुपा १ १)। स २ १)।

लिङ्गारण न [निर्वाण] देवा विद्याना

(स २१४ सुपा २४१)।

लिङ्गारण की [निर्वाण] ऊपर देवो

(पद २२ ४१)।

लिङ्गार पुं [निर्वाण] १ लिङ्गार पार-प्राप्ति।

२ धात्रीविका बीन-ध्याना 'लिङ्गार' वि

दातृ 'न' (सुपा ४८८)।

लिङ्गार वि [निर्वाण] निर्वर्ण करने-

वाला (राम)।

लिङ्गारण न [निर्वाण] १ निर्वर्ण,

लिङ्गार (सुपा १२४)। २ लिङ्गार करना

(पात्र)।

लिङ्गारिण वि [निर्वाण] ध्याना वि

विद्या हुआ कुम्भना हुआ (स ६ ४२)।

लिङ्गारिण वि [निर्वाण] ध्याना वि

रहित (स ६ ४२)।

लिङ्गारिण देवो लिङ्गारिण (स ११)।

लिङ्गारिण वि [निर्वाण] विचार रहित

(पा १ १)।

लिङ्गारिण वि [निर्वाण] १ सक्त बाह्य

विच्छिन्न-वस्तु पराधीन से रहित (मीन)। २

न. प्रत्यक्षान-वस्तु विच्छिन्न बाह्य विच्छि-

न्नो का त्याग किया जाता है (स ४

वैना ४)।

लिङ्गारिण वि [निर्वाण] वि [निर्वाण] एक

प्राप्ति में रक्षा-रहित (कथा कर्म २)।

लिङ्गारिण वि [निर्वाण] एक

प्राप्ति में रक्षा-रहित (कथा कर्म २)।

जिसाम वि [निश्चय] मात्स्य-उद्ध
निर्गत (हे २, ४०)।

जिसामण केओ जिसमण (धुपा ११)।

जिसामिभ वि [निश्चय] १ कुच-
घाकण्ड (हे ४ २० ना २६)। २ ऊं
सहित बहावा हुपा। ३ सिम्यावा हुपा,
संकोचि। 'अस्त्राभिधो कथानोभो' (स
१२८)।

जिसामिर वि [निश्चय] मुक्केभला
(धुपा)।

जिसाय वि [हे] प्रपुण्ड (हे ४ १२)।

जिसाय वि [निश्चय] राज बिना हुपा
सकल (धुपा)।

जिसाय पु [निश्चय] १ बार-बार एक-आपस
बाधि (हे ४ १३)। २ स्वर-विरोध (स ७)।

जिसाव वि [निश्चय] ठीक बार
बला (धुपा)।

जिसाव सक [निश्चय] निश्चय
कला। १ जिसासपेठ (पञ्च ११
७१)।

जिसास केओ जोसास (विन)।

जिसि केओ जिता (हे १ ८ ७२ पद
गुर १ २०)। पाकण्ड पु [पाकण्ड]
कल-विरोध (विन)। मत न [मक]
चवि-मोजन (दीध ७७७)। मुच न
[मुच] उचि-मोजन (धुपा ४२१)।

जिसिअ केओ जिसीअ छिपिअ (छप
कम)। छे छिपिअ (कम)।

जिसिअ वि [निश्चय] राज बिना हुपा,
ठीक (हे २, ४०, ४१, ४२)।

जिसिअ सक [नि + सिअ] प्रत्ये करण,
कला। छे छिपिअ (धुपा)।

जिसिअ केओ जिसाअ (कम बन १२
अ २, १)। १ कलाय धातुओं का स्थान
(पञ्च ४)।

जिसिअमण केओ जिसेह = नि + निव्।

जिसिअ वि [निश्चय] १ बाहर निकला
हुपा (अथ १)। २ बर बर (धुपा)।
३ अनुगत (इह १)। ४ कलाय हुपा।
विनि 'आपस-हृदय' ... प्रभो भिदो निहित
कलाय (अ १ १)।

जिसिअ वि [निश्चय] प्रतिपिअ, निवारित
(धुपा १२)।

जिसिय वि [कम] स्थापित (धुपा ७१)।

जिसियण न [निश्चय] कल-मण (पञ्च)।

जिसिर सक [नि + सिअ] १ बाहर निकल-
ना। २ बला व्यापकता। ३ कला।

जिसिर (अथ २) अथ 'पिण्डपण्डाण'
विशिष्टि जेन हई ठेपि हु पाविठि किन्नाह'
(गुर १२ २३४)। कम. जिधिरिअ,
जिधिरिअ (विदे १२०)। नक. जिसिरव
(वि २१२)। कमक. जिसिरिअमण (वि
२१२)। छे छिपिअ (वि २१२)।

प्रभो जिसिरिअ (वि २१२)।

जिसिरण न [निश्चय] १ जिसारण (अथ
२)। २ व्याप (धुपा १ ११)।

जिसिरणया केओ [निश्चय] १ व्याप
जिसिरण (धुपा (धुपा २ १ १)।

२ जिसारण किन्नाचन (धुपा)।

जिसीअ सक [नि + पद] बैला। जिसीअ
(अथ)। नक. जिसीअय जिसीअमण
(अथ ११ १ धुपा १ २)। सक
जिसीअ (कम)। हेह. जिसीअय
(कम)। छे जिसीअय (धुपा १ १
अथ)।

जिसीअय न [निश्चय] कल-मण केओ
(अथ २१४ यी १२८)।

जिसीअय न [निश्चय] कल-मण केओ
(अथ २१४ यी १२८)।

जिसीअय न [निश्चय] बैला (अथ ४
२१ यी)।

जिसीअ केओ जिसीअ = जिसीअ (हे १ २१४;
धुपा)।

जिसीअय केओ जिसीअय (विन)।

जिसीअ पु [जिसीअ] १ कम पवि (हे १
२१४; धुपा)। २ प्रकाश का प्रकाश (गिह
१)। ३ न केन व्याप-मण विरोध (छिपि)।

जिसीअ पु [जिसीअ] जग पुन केन मण
(धुपा)।

जिसीअ वि [निश्चय] निन के लिए
कला बना है एका नही बना हुपा कोच
नाकि पलाय (विह १११)।

जिसीअ केओ [निश्चय] १ कल-मण-
पञ्चमि रसक-मणि (धुपा १)। २
कला की कला (धुपा ११)।

जिसीअ केओ [निश्चय] १ कल-मण-
पञ्चमि रसक-मणि (धुपा १ २, २)।

२ कोच समय के लिए जग स्थान (अ
१४ १)। ३ धातुपञ्चमि न क एक
कल-मण (धुपा २ २)।

जिसीअ केओ [निश्चय] १ कल-मण-
पञ्चमि रसक-मणि (धुपा १ २, २)।

२ कल-मण का व्याप
(विह १)। ३ धातुपञ्चमि के लिए न
धुपा (अ १)। हेओ जिसीअ।

जिसीअ केओ [निश्चय] धुपा एव
(अ १ २०)। नाह पु [नाह] कल-
(धुपा)।

जिसुअ वि [निश्चय] पुच घाकण्ड
(हे ४ २० गुर १ १२४ २ २२४;
अथ)।

जिसुअ पु [जिसुअ] पण्ड का एक गुर
(अथ २१ २२)।

जिसुअ सक [नि + धुम] बार कल-
मण कला। कमक. जिसुअय जिसु-
अय (हे २, १२ १४ ११ १२ १२)।

जिसुअ पु [जिसुअ] १ कल-मण का एक
गुर का एक प्रविण्ड (पञ्च २, १२४;
अथ २२१)। २ कल-मण (विन)।

जिसुअय न [जिसुअय] १ कल-मण का एक
गुर का एक प्रविण्ड (धुपा १
२, १)।

जिसुअ केओ [जिसुअ] कल-मण का एक
गुर का एक प्रविण्ड (धुपा १२)।

जिसुअ वि [जिसुअ] कल-मण का एक
गुर का एक प्रविण्ड (धुपा १२)।

जिसुअ पु [जिसुअ] १ कल-मण का एक
गुर का एक प्रविण्ड (धुपा १२)।

जिसुअ सक [जिसुअ] कल-मण का एक
गुर का एक प्रविण्ड (धुपा १२)।

जिसुअ केओ [जिसुअ] कल-मण का एक
गुर का एक प्रविण्ड (धुपा १२)।

जिसुअ वि [जिसुअ] कल-मण का एक
गुर का एक प्रविण्ड (धुपा १२)।

जिसुअ केओ [जिसुअ] कल-मण का एक
गुर का एक प्रविण्ड (धुपा १२)।

जिसुअ वि [जिसुअ] कल-मण का एक
गुर का एक प्रविण्ड (धुपा १२)।

पीलुक् सक् [रम्] बाना बमन करला ।
पीलुक्कर (हे ४ ११२) ।
पीलुप्पल म [नीकेप्पल] नीक रंय क
कमल (हे १ ४४५ कुमा) ।
पीलुय दुं [रे] ध्वन की एक प्रथम बाटि
(ध्वन्य २११) ।
पीलोमास दुं [नील्यमास] १ पहाणि
ह्यक्क केन्निरेय (अ २ १) । २ कि नील
कम्य को नीसा माहुम वेला हो (छाया
१ १) ।
पीय दुं [नीय] कुल निरेय कन्म क वेड
(हे १ २१४ कम् छाया १ १) ।
पीयार दुं [नीयार] कुल-निरेय तिन्नी का
वेड (गवड) ।
पीयार दुं [नीयार] कीटि-निरेय (ध्रुप १
१ २ ११) ।
पीयी की [नीयी] सुल-यन वूनी । २ नाय
इवारयन (वक् १ कुमा) ।
पीसंक् केळो जिस्तंक् = निःसंक् (पा १४३
कुमा) ।
पीसंक् दुं [रे] ध्रुप, जेल (वक्) ।
पीसंकिज केळो जिस्तंकिज (विठ ११२)
धुर ३ ११३) ।
पीसंक् वि [निःसंक्] संख्या-रहित, घटंक्
(ध्रुप ११३) ।
पीसंवार केळो जिस्तंवार (पञ्च ३२, १) ।
पीसंय दुं [निःप्यन्] रस-रुति रस का
रुण (पवड) ।
पीसंरिज वि [निःप्यरिव] मय हुमा,
टाका हुमा (पाय) ।
पीसंरि वि [निःप्यरिव] करेयला एक-
कनेला (ध्रुप ११३) ।
पीसंपाय वि [रे] बहो बमन परिया
हुमा हो वड (रे ४ ४२) ।
पीसंठ वि [निःसंठ] १ विपुष्प (पवड १
१ पञ्च १३) । २ प्रसक्त (इह २) । ३ त्रिभि
धतिर, धम्यन् 'पीलुक्कमेयणी ए का
मर' (ज) ।
पीसंय दुं [निःसंय] धामान, राज ज्योति
(धुर ११, १५३ ध्रुप ११) ।
पीसंयिआ की [रे] निःयेण कीकी (रे
पीसंयी ४ ४१) ।

पीसंय वि [निःसंय] सल-हीन वन-रहित
(पञ्च २१ ७४, कुमा) ।
पासं वि [निःपासं] रन्म-रहित (रे ७
२८ ध्वि) ।
पीसर म्क [रम्] बीडा कला रमण कला ।
पीसर (हे ४ ११५) ६ पोसरणिज
(कुमा) ।
पासर म्क [निर + स] बाहर निकलना ।
पीसर (हे ४ ७६) । वड नीसरंय
(सोब ४२५ टी) ।
पीसरण न [निःसरण] फिलन रफन
(वक् ४) ।
पीसरण न [निःसरण] निर्णयन (से १,
१३) ।
पीसरिक् वि [निःसुठ] निर्देय निर्मात
(ध्रुप २४७) ।
पीसंक् वि [निःराक्] १ निरुक्त स्थिर ।
२ बन्धा-रहित बलाग स्वाट नीसलठिय
बंदायहि रंयिक्कन्मियारै (धुर १ ७२) ।
पीसंक् वि [निःराक्] रन्म-रहित (ध्वि) ।
यं सव सक् [नि + साव] निर्बाध करना
लय करना । बहो नीसरगाय (विठे
२७४६) ।
पीसंवा केळो पीसंवाय (पायन) ।
पीसंवा वि [निःसरण] रन्म-रहित विपल
रहित (पुष्प का वि २७१) ।
पीसंवाय वि [निःवाक्] निर्बाध करनेला
(विठे १७४६) ।
पीसंय म्क [निर + यस्] पीसंय सेना,
रहा की पीसा करना । पीसंय (वक्) ।
वड पीसंय पीसंयमाय (पा ११
ध्रुप ४१) पाया २, २, १) । वड पोस-
सिक् पीसंयिज्य (पाट म्हा) ।
पीसंय न [निःयस] निरवाय (कुमा) ।
पीसंयिज न [निःयसिठ] निरवाय (से
१ १३) ।
पीसंय वि [निःसंय] म्क, धरुण (हे १
११ कुमा) ।
पीसंय वि [निःराक्] राबान-रहित (पा
२१) ।
पीसा की [रे] पीसने का बल (सच ४,
१) ।

पीसा केळो जिस्सा (कम्) ।
पीसाइ वि [निःसाविन्] स्वाब-रहित (प्रवि
१) ।
पीसाय केळो जिस्साय = (रे) धर्मोक् (८) ।
पीसामय्य वि [निःसाम्य] १ बला-
पीसामय ३ पाय (गवड ध्रुप ११ १ २,
२१२) । २ ध्रुव (पाय) ।
पीसार सक् [निर + सार] बाहर
निकलना । पीसार (ध्वि) । कर्म नीसा
रिक्क (धुर १४) ।
पासार दुं [रे] मरुण (रे ४ ४१) ।
पीसार वि [निःसार] धार-रहित फल (से
१ ४८) ।
पीसारण न [निःसारण] निरवाय, बाहर
निकलना (धुर ११, २ १) ।
पीसारय वि [निःसार] बाहर निकलने
बाला (से १ ४८) ।
पीसारि वि [निःसारिठ] निष्कासित (धुर
१, १५५) ।
पीसाय केळो जिस्साय (हे १ ११ कुमा
प्रज) ।
पीसाय वि [निःपास, क] निरवाय
पीसाय ३ केला (विठे २७१, २७४६) ।
पीसाइ केळो जिस्साइ "नीसाइय य
पवड धूमि" (धुर ७ २१) ।
पीसिक् वि [निःपिक्] ध्रुपय विठ
(वक्) ।
पीसीमिक् वि [रे] निर्वाहित देव-बाहर
किया हुमा (रे ४ ४२) ।
पासेयस केळो जिस्सेयस (नीब १) ।
योसेणि की [निःसेणि] कीकी (धुर ११
११) ।
पीसेस केळो जिस्सेस (गवड ध्व) ।
पीडेट्ट म्क निरुक्त कर (पाया २ १ २) ।
पीडेट्ट म्क [नि + सल] बाहर निरुक्त कर
(पाया २, १ १ ४) ।
पीडक् वि [निःड] १ निर्पट निर्मात
(पाया २, १ १) । २ बाहर निकाला हुमा
(इह १ कम्) ।
पीडविया की [निःड विक्] धम्य रवाय में
ले बाया गाटा धम्य (इह २ ध्रु १८) ।

वीक्ष्यमय [निर + ह्यम्] निष्कृता ।
वीक्ष्यमय (हे ४ ११२) ।

वीक्ष्यमय वि [निर्ह्यमित] निर्वृत, निस्तृत
(हे ४ ४१) ।

वीक्षर मय [निर + वृ] बह्वर निष्कृ-
मना । वीक्षर (हे ४ ४१) । बह्वर वीक्षरत
(सुता ४२२) । वृक्ष-वीक्षरित (निष् १) ।
वृ. वीक्षरियमय (सुता ११२) ।

वीक्षर मय [व्या + ह्यम्] व्यापक कला,
विस्तारक । वीक्षर (हे ४ ११२) ।

वीक्षर मय [निर + ह्यम्] प्रतिष्पन्ति
कला । बह्व-वीक्षरत, वीक्षरितत (हे ४
११२, १११) ।

वीक्षर मय [निर + वारम्] बह्वर निष्कृ-
मना । वीक्षर (हे ४ ४१) । वृ
वीक्षरियमय (सुता ४२२) ।

वीक्षर मय [निर + ह्य] पञ्चाभा वाता
पुष्टोपात्तवर्धन कला । वीक्षर (हे ४ ११२) ।
वीक्षर न [निस्तारण निर्ह्यण] १ निर्ध-
मन निर्धम बह्वर निष्कृमना (विता १ ४
छाया १ १४) । २ परित्याग (निष् १) ।
३ वयमगत (सुत २ २) ।

वीक्षरित वीक्षो वाह्यर = निर + वृ ।
वीक्षरित वि [निस्तृत] निर्धम निर्धम (सुत
१ ११२, ४ ४१ वाच) ।

वीक्षरित वि [निर्ह्यमित] प्रतिष्पन्ति (हे
११ १२१) ।

वीक्षरित न [वि] लब्ध, व्यापक स्मिति (हे
४ ४२) ।

वीक्षरित न वीक्षो वाह्यर = निर + ह्य ।

वीक्षर वृ [वाह्यर] १ द्विगुण (वचन
४२, लक्षण १२ कुमा) । २ विषय या वृत्त
का वस्तु (वच ४) ।

वीक्षर न [निस्तारण] निष्कृमना (वृ २
४) ।

वीक्षरि वि [निर्ह्यमित] १ निष्कृमनेवता ।
२ किरनेवता । वीक्षरितोपात्त वीक्षर
(मायम वच ४) ।

वीक्षरि वि [निर्ह्यमित] वीक्ष कलेवता
वृत्तवता (वृ १ ; वि ४ १) ।

वीक्षरि वीक्षो विक्षरि (वृ २ ४ वीक्ष
छाया १ १) ।

वीक्षर वि [निर्ह्यमित] वीक्ष-वृत्ति (वच २२,
२८) ।

वीक्ष्य वि [वि] धर्मिकतर, वृक्ष वी वृत्ति
कर सम्भवेवता 'वचनवृत्तिवृत्ति' (वचन
४२४) । वीक्षो विक्षय ।

वृक्ष [वृ] वृत्त वृत्ति वृत्त वृत्त—१
वृत्त वृत्ति । २ वृत्तवृत्ति (वृ १४१) । ३
वृत्तवृत्ति (वृत्ति) । ४ वृत्त । ५ वृत्तवृत्ति । ६
वृत्तवृत्ति । ७ वृत्त, वृत्तवृत्ति । ८ वृत्तवृत्ति, वृत्तवृत्ति
(वृत्ति वृ २ २१४, २१८) ।

वृक्ष म [वृ] १ वृत्तवृत्त वृत्तवृत्ति (वृत्ति २,
१) । २ वृत्तवृत्ति (वृत्ति १४१) ।

वृक्ष वि [वृ] वृत्तवृत्ति (वृत्ति १४१) ।

वृक्षर वृ [वृ] वृत्तवृत्ति वृत्त वृत्ति वृत्तवृत्ति
(वृत्ति) ।

वृक्षर वि [वि] वृत्त वृत्ति वृत्त, वृत्तवृत्ति
'वृत्तवृत्ति वृत्त वृत्त वृत्तवृत्ति वृत्तवृत्ति
वृत्तवृत्ति' (वृत्ति २८५) ।

वृक्षर वि [वृ] वृत्तवृत्ति । १ वृत्त वृत्त
वृत्त (वृत्ति १ १४) ।

वृक्ष मय [नि + वृ] वृत्तवृत्ति कला ।
वृक्षर (हे ४ ११२) ।

वृक्ष मय [वृ] वृत्तवृत्ति वृत्तवृत्ति
कला । वृक्षर (हे ४ ११२) ।

वृक्ष मय [नि + वृ] वृत्तवृत्ति वृत्तवृत्ति
(वृत्ति) ।

वृक्ष मय [नि + वृ] वृत्तवृत्ति वृत्तवृत्ति
(वृत्ति) ।

वृक्ष मय [नि + वृ] वृत्तवृत्ति वृत्तवृत्ति
(वृत्ति) ।

वृक्ष मय [नि + वृ] वृत्तवृत्ति वृत्तवृत्ति
(वृत्ति) ।

वृक्ष मय [नि + वृ] वृत्तवृत्ति वृत्तवृत्ति
(वृत्ति) ।

वृक्ष मय [नि + वृ] वृत्तवृत्ति वृत्तवृत्ति
(वृत्ति) ।

वृक्ष मय [नि + वृ] वृत्तवृत्ति वृत्तवृत्ति
(वृत्ति) ।

वृक्ष मय [नि + वृ] वृत्तवृत्ति वृत्तवृत्ति
(वृत्ति) ।

वृक्ष मय [नि + वृ] वृत्तवृत्ति वृत्तवृत्ति
(वृत्ति) ।

वृक्ष मय [नि + वृ] वृत्तवृत्ति वृत्तवृत्ति
(वृत्ति) ।

वृक्ष मय [नि + वृ] वृत्तवृत्ति वृत्तवृत्ति
(वृत्ति) ।

वृक्ष मय [नि + वृ] वृत्तवृत्ति वृत्तवृत्ति
(वृत्ति) ।

वृक्ष मय [नि + वृ] वृत्तवृत्ति वृत्तवृत्ति
(वृत्ति) ।

वृक्ष मय [नि + वृ] वृत्तवृत्ति वृत्तवृत्ति
(वृत्ति) ।

वृक्ष मय [नि + वृ] वृत्तवृत्ति वृत्तवृत्ति
(वृत्ति) ।

वृक्ष मय [नि + वृ] वृत्तवृत्ति वृत्तवृत्ति
(वृत्ति) ।

वृक्ष मय [नि + वृ] वृत्तवृत्ति वृत्तवृत्ति
(वृत्ति) ।

वृक्ष मय [नि + वृ] वृत्तवृत्ति वृत्तवृत्ति
(वृत्ति) ।

वृक्ष मय [नि + वृ] वृत्तवृत्ति वृत्तवृत्ति
(वृत्ति) ।

वृक्ष मय [नि + वृ] वृत्तवृत्ति वृत्तवृत्ति
(वृत्ति) ।

वृक्ष मय [नि + वृ] वृत्तवृत्ति वृत्तवृत्ति
(वृत्ति) ।

वृक्ष मय [नि + वृ] वृत्तवृत्ति वृत्तवृत्ति
(वृत्ति) ।

वृक्ष मय [नि + वृ] वृत्तवृत्ति वृत्तवृत्ति
(वृत्ति) ।

वृक्ष मय [नि + वृ] वृत्तवृत्ति वृत्तवृत्ति
(वृत्ति) ।

वृक्ष मय [नि + वृ] वृत्तवृत्ति वृत्तवृत्ति
(वृत्ति) ।

वृक्ष मय [नि + वृ] वृत्तवृत्ति वृत्तवृत्ति
(वृत्ति) ।

वृक्ष मय [नि + वृ] वृत्तवृत्ति वृत्तवृत्ति
(वृत्ति) ।

वृक्ष मय [नि + वृ] वृत्तवृत्ति वृत्तवृत्ति
(वृत्ति) ।

वृक्ष मय [नि + वृ] वृत्तवृत्ति वृत्तवृत्ति
(वृत्ति) ।

वृक्ष मय [नि + वृ] वृत्तवृत्ति वृत्तवृत्ति
(वृत्ति) ।

वृक्ष मय [नि + वृ] वृत्तवृत्ति वृत्तवृत्ति
(वृत्ति) ।

(पि १११) । बह्म पञ्चायमाज (छाया १ ११) । बह्म पञ्चाइचा, पञ्चाजिचा (पि १११) ।

पञ्चा न [स्नान] गहाना गहान (कण्य प्राप्ति) । पीठ पुन [पीठ] स्नान करने का पट्टा (छाया १ १) ।

पञ्चागमक्षिया की [स्नानमक्षिया] स्नान-योग्य पुन-विशेष मानवो-पुन (पय १४) ।

पञ्चाजिआ की [स्नानिअ] स्नान-विद्या (पण्ड २ ४—पय १११) ।

पञ्चाणिव वि [स्नानिअ] जिसने स्नान किया हो वह (पय १२०) ।

पञ्चाय वि [स्नात] जिसने स्नान किया हो वह, गहाना हुआ (कण्य जीव) ।

पञ्चायमाज रेको पहा

पञ्चारु न [स्नायु] १ अस्वि-बन्धनी मिय नय, बमगी (बम १४६ पण्ड १ १; ठा १ १; प्राचा) । २ अट्टावर धेणी में की एक धेणी बुम्हाए, फोन प्राधि (बोदयकाय ४६४ पय सय ११) ।

पञ्चाय रेको पहा । एहावह एहावेद (अभि पि १११) । बह्म पञ्चायजय (पि १११) ।

बह्म पञ्चाविऊण (महा) ।

पञ्चायिअ वि [स्नापित] गहाना हुआ

जिसकी स्नान कथाया गया हो वह (महा अभि) ।

पञ्चाविअ पुं [नापित] हजाम नाई (हे १ २१ बुमा) । 'वेतुण एहाविअ धायएण मु बाधियो बुमरो' (जय १ टी) । पसेवय पुं [प्रसेवक] नाई की धरने धरकरण रखने की पैवी (उत्त २) ।

पहु य [हे] निरुधव-सूचक अण्यय (बीवत्त १०) ।

पहुसा की [स्तुपा] पुन-बहु पुन की धार्य, पठेहु (प्राचय पि १११) ।

पहुसा रेको पहुसा (सिदि २२१) ।

॥ एम विरिपाइअसहमहण्यो जमापडइहसंभनणो मएवेण
नमापडइहसंभनणो नाईसहो तरणी समतो ॥

त

त पुं [त] बह्म-स्वातीय अण्यय गरी-विशेष (प्राप्ति प्राप्ति) ।

त न [तन] बह (ठा १ १ हे १ ७) बण्य, बुमा) ।

त त [तन] पु । कय वि [तन] वेण किया हुआ (पय १००) ।

त रेकोतया = तन । दोसिदि [दोपिम] १ बर्त-रेको । २ बुटी (पि ४०२) ।

तअ रेको तय = तन (प्राय ११२) । तइ वि [तनि] बजना (बज १) ।

तइ (पय) म [तन] बह, कयने (बह) ।

तइ म [तन] अण समय (प्राय) ।

तइअ नि [तनीय] तीवरा (हे १ १ १ बुमा) ।

तइअ (पय) वि [स्वीय] बुम्हाए (अभि) ।

तइअ य [तन] अण समय

अणिपो रणा भेटी

परमापर तइय बन्धयेण ।

ताएण यह अणिपो

अणिटी ठाणमि धायया
(गुर १ १२१) ।

तइअडा (पय) य [तन] बह समय (अभि साण) ।

तइअ म [तन] उय समय (हे १ १२, ना ६२) ।

तइअ की [तनीया] दिवि-विशेष तीव (तय १६) ।

तइअ की [तनीया] तीवरी विमकि (बन्ध १०२) ।

तइअ रेको तइ (वा ६२६) ।

तइलोइ की [तिलोकी] तीव लोक—दरत मयरी तीव पाठान (गुरा १००) ।

तइत्येक } न [अन्य-कय] ऊपर रेको तइम्येय } (पय १ १ १; व २ २; म २०१; गुर १ २; बुमा २०२; १२; ४४) ।

तइस (पय) वि [ताहारा] बैसा अण तइअ (हे ४ ४ १ बह) ।

तइ की [तनी] तीव वा समुदाय (गुरा १००) ।

तइअ रेको तइअ = तनीय (वा ४११; म) ।

तइ } न [तन] बाण-विशेष तीव तइअ } राणा (सम ११२; बीव-कय ६०६ टी महा) ।

तइअ की [तनिका] काल का बाणुण विशेष (हे २, ११) ।

तइस न [तनुय] रेको तइसी (पय) ।

'मिजिया की [मिजिय] गुर मोट विशेष मीनिय बन्धु की एक काठि (बीव १) ।

तइअ न [तनुय] तीव बन्धी (हे ८ १२) ।

तइसी की [तनुयी] बर्तनी-गुन तीव वा गाण (वा २३४) ।

तय य [तनस] बजत अण पाण्डु पे । २ बार में (वत्त १ तिवा १ १) ।

तण्यारिम वि [त्वाहारा] पुन पैना, मुग्गाटी तइअ वा (म २२) ।

नजा रेको तय (ठा १ १ प्राय ७०) ।

तं य [तम्] इत यो को बलवानेवाला
व्यय—१ बाण्ड हु (भा ११) । २
बलव-उपपाठ 'तं विप्रवर्धितोत्तम' (हि २
१७१; पत्र) । 'तं मरुतमकुलने वि होर,
बन्धो उग्र न होर' (भा ४२) । 'अहो य
[पथा] जगद्व्यापकतक व्यय (पाथा
धनु) ।

तंया वैको तया = तया (पत्र) ।

तं न [तं] पुष्ट, पीठ (रे २, १) ।

तं न [तं] नयाम में लयी हुई तार । २ वि
मस्तक-पठित । ३ लर से मजिक (रे २,
१६) ।

तंनय (धन) वैको तनुय । तंनय (धनि) ।

तंनय यक [ताण्डय] नुय करता । तं
नय (पाथम) ।

तंनय न [ताण्डय] १ नुय लख नाम (पाथ
बीज ३; गुण ५६) । २ छठारी 'पाठिकिनु
अनर्थमस्तन्यनर्थेति कि मुक्त' (धम्म म टी) ।

तंनयि वि [ताण्डयि] नयाम हुमा,
नयित (नय) ।

तंनयि (धन) वैको तनुयि (धनि) ।

तंनुय पुं [तनुय] नाम (का १६१) ।
वैको तनुय ।

तं न [तम्] १ सेत पट्ट (पुर १९ ४७) ।
२ लक सिद्धात (तवर २) । ३ हरीत, मल
(ह २२२) । ४ लवेर-चिन्ता । ५ विप का
धीयन विरोध (पुत्र १ ७) । ६ नुय जन्मोत्त-
विरोध 'नृत्तं धीयानं तं मरुतमकुलने तन्म
न ययार्थ' (विरो) । ७ विद्या-विरोध (गुण
४६१) । ८ नु वि [तं] लन का बालार
(गुण ३०६) । याह पुं [वायि] विद्या-
विरोध से ही धानि को मित्रनेवाला (गुण
४६१) ।

तं न [तम्] विन न्यात (उग्र १ ४
विप १ १) ।

तंनवी की [तं] नयन की धीर बालन का
नयन मोकन-विरोध (रे २, ४) ।

तंनवा } पुं [ताम्यक] न्यायिक नुय
तंनय } की एक धानि (गुण १६, १४६
उत्त १६, १४६) ।

तंनिय पुं [ताम्यक] धीरा बलवानेवाला
(पयु) ।

तंनिसम न [तन्नीसम] तन्नी-रमर के नुय
या लवेर सिवा हुमा पीठ गेय काम्य का
एक सेव (वर्धन २ २१) ।

तंवी की [तन्वी] १ बीडा बाध विरोध
(कम्प पीठ नुर १९ ४७) । २ बीडा-
विरोध (पयु २ २) । ३ लोट नयके की
पसी (विप १ ६ नुर १ १३७) ।

तंवी की [तं] किन्ता 'कान्त तपयति'
(भा २) ।

तंयु पुं [तम्] नुय तापा भावा (पत्र १
१३) । अ ग पुं [क] लयनयु विरोध
(पत्र १४ १७ नुय २ ६) । अ य न
[क] लयी कफा (उत्त २, १२) । याह
पुं [वाय] कफा कुलनेवाला कुलाहा (भा
२१) । साम्य की [शाम्य] कफा कुलने
का नर, लोट-नर (म ११) ।

तंयुल्लोकी की [तं] तनुय का एक ज-
कफा (रे २ ७) ।

तंयुल्ल वैको तनुल्ल (पत्र १२ ११८) । २
मयन-विरोध (बीज १) । 'वैपाक्षिय न
[वैपाक्षिक] वेन मयन-विरोध (हकि) ।

तंयुल्लोका पुं [तनुल्लोकाय] नयलवि विरोध
(पत्र १) ।

तंयुल्ल वैको तनुल्लय (पुर १६, ११७) ।
तंय पुं [तन्म] लुपति का कुला (हि २,
४२, कुमा) ।

तंय न [ताह] १ नयन-विरोध, ताहा (विप १
१६ हि २ ४२) । २ पुं नयन विरोध ।
३ वि ययन नयनेवाला बन्ध (पयु १७;
धीय) । 'बुल्ल पुं [बुल्ल] कुल्ल, कुल्ल (पुत्र
६१) । बन्धी की [पयि] एक नयी का
नाम (नयु) । 'सिह पुं [सिह] कुल्ल,
कुल्ल (पयु) ।

तंयकपाह पुं [तं] ताह नयनेवाला इय-
विरोध (पयु १७) ।

तयकिमि पुं [तं] बीड-विरोध दमपेत (रे
२ १; नर) ।

तंयकुल्लय पुं [तं] बुल्ल-विरोध नुयक,
नयनेवाला (रे २ ६; नर) ।

तंयन न [तं] नयन-विरोध 'मल्लकुल्लयनेनु
नयनेनु' (दी १३) ।

तंयिज्जयाधिया की [तं] ताह नयने का
इय-विरोध (पयु १७) ।

तंयकपाही की [तं] शैलिक, नुय-नयन
नयन-विरोध (रे २, ४) ।

तंयरपी की [तं] यहु में कुल्ल की नयन (रे
२, ६) ।

तंया की [तं] पी नुय, नयन (रे २, १; भा
४१; पाथ नयन १४) ।

तंयाय पुं [तामाय] माथीय नाम-विरोध
(पत्र) ।

तंयिम पुं [तामल] मयलता नयन लयता
(पत्र) ।

तंयिम न [तामिक] परिभाषक का नयने
का एक ययकल्ल (धीय) ।

तंयिर वि [तं] पाथ नयनेवाला (हि २, ११
नयन पयि) ।

तंयिरा [तं] वैको तंयरी (रे २, २) ।

तंयुल्ल न [तं] भाध-विरोध 'कुल्लकुल्लयुल्ल'
(गुण २) ।

तंयमर पुं [तमरम] हली हली (ह १
११७) ।

तंयि की [तं] पुन-नयन नुय-विरोध
शैलिक (रे २, ४) ।

तंयोक न [ताम्युक] पाथ (हि १ १२४
कुमा) ।

तंयोक्षि पुं [ताम्युक्षिक] १ तमेवी पाथ
नयनेवाला (भा ११) । २ पाथ में होनेवाला
तमेवीपाथ पाथ ।

तंयोकी की [ताम्युकी] पाथ नयन (नर
धीय १) ।

तंय वैको थंस (नर) ।

तंय पुं [तंय] लीयन-विरोध (पत्र २, १७
१४; कम्प २, १४) ।

तंय वि [तंय] वि-कोष्ठ लीयन-विरोध
(हि १ २६ नयन ह १ भा १ मय
धावा) ।

तल्ल लक [तल्ल] तल्ल करना लुपान
करना, ययन करना । ललेमि (रे ११) ।
की लल्लियाय (धावा) ।

तल्ल न [तल्ल] मूला काध (धीय नय; पुत्र
२५१ भा १ ११६) ।

तक पुं [तक] १ निमरी बिचार, घण्टा-
बान (भा १२ अ ६) । २ स्वाय-व्यस (सुवा
२८७) ।

तकणा की [ते] हक्का, मसिमाय (बि ५, ४) ।
तकय नि [तक] ठक करलबाबा (पण्ड
१ १) ।

तकपुं [तक] नीर (हि २ ४ नीर) ।
तकछि की [ते] करकी-कूत केते का मछ
(भाषा २: १ = १) ।

तकलि की [ते] बनमाकार बुझ-विरोध
तकसी (पण्ड १) ।

तक की [तक] केतो त = तक (अ १
मुप १ ११ भाषा) ।

तकाल नि [तक] छी समय (हुमा) ।

तकनि नि [तक] लईछाक का जालकार
(पण्ड १ १) ।

तकियाने केतो तक = तक ।

तककु पुं [तक] सुत काने का मल तकुया
तकका बरबा (बि १ १) ।

तककुय पुं [ते] स्वजन-बदे 'उम्मायिका
सामंता परिश्रमिया नामयदा, परिश्रोषिणा
तककुयवणा नि' (अ २२) ।

तकल तक [तक] किमता, काठपर ।

तकवर (बि ५ १२५) । कर्म तकि-
कर (हुमा १७) । कक तकलमाण (पण्ड)

तकय पुं [तक] बसू पसी (पाय) ।

तकल पुं [तक] १ लकड़ी काटनेवाला,
बहई । २ बिजनकर्म, सिमरी-विरोध (बि ३
२७ पण्ड) । 'सिख की [सिख] माथीन
पेदिमनिक मयद, को पहले बाकुनि की
तकानी की बह नगर पनाम में है (पठम
४ भाषा हुमा १३) ।

तकलमा पुं [तक] १२ ऊपर केतो । ३
स्वताम-मथिख सय-दख (अ २२४) ।

तकलय न [तक] छी समय (अ ४ ४) । २ बिबि शीय, मुल्ल (पाय) ।

तकलय केतो तकलय (अ २ ६ हुमा
१३६) ।

तकलय केतो तकल = तकल (बि १ २१
पण्ड) ।

तार केतो टार (पण्ड २ २) ।

तारा की [तार] सन्निध-विरोध (अ
४६८)

तारा की [तार] एक गणी का नाम (हुमा
२ ४) ।

तारा न [ते] सुब-न-न काये का बंछण
(बि १ १ मठ) ।

तमायिष नि [तदुगन्धिक] सके समान
पंजाबा (भाषा १४) ।

तय नि [तय] तीसरा (अम = जमा) ।

तय न [तय] तार, परमार (भाषा भाय
११५) । पाय पुं [तय] १ तय-नार,
परमार-नारी । २ दृष्टि-नार, तैल दीक-पंथ
विरोध (ठा १) ।

तय न [तय] १ सय सवाई (हि २ २१
अ २८) । २ नि बाटविक सय (अ २
१) । तय पुं [तय] सय लुपिक (अम
१ ११) । भाय पुं [तय] केतो ऊपर
'भाय (अ १) ।

तय म [नि] तीन बार (मय, दुर २
२४) ।

तयि नि [तयि] छी में बिचका म
सगा हो बहु लकीन (विषा १ २) ।

तयि तक [तय] किमता, काठपर । तयल
(बि ५, १२५ पण्ड) । सड़ तयिय (सुप
१ ४ १) । कक, तयिखजंत (दुर १
२८) ।

तय पुं [तय] किता हुमा तयल
तयिख ३ 'ते निमरीछा लयय तयल' (सुप
१ १ २, १५ १ ४ १ २१ अ १८,
१९) ।

तयय कीन [तय] किमता, कर्म (पण्ड
१ १) की या (पाय १ ११) ।

तयिख नि [ते] कलय मयकर (बि ३,
१) ।

तयिखजंत केतो तयल ।

तयिख नि [ते] ऊपर (पण्ड) ।

तया केतो तया = तय (बि १ १११) ।

तय तक [तय] तयन करण मयन
करता । तय (अभि) । तय (पाय १
१) कक तयल तयल तयल,
तयमाण तयमाण (अभि दुर १२,
२११ पाय १ ४ तय नि १—

पण ११) । कक तयिखजंत (अ ५ १३४
अ १४६ टो) ।

तयल न [तय] कर्मन तयलकर (भीय
अम पठम २१ १३) ।

तयया की [तय] ऊपर केतो (पण्ड
२ १ सुपा १) ।

तययी की [तय] बुधरी भंगुली भंगुले के
पाठवाली भंगुली मयन (सुपा १; हुमा) ।

तयाय नि [तय] समान बायिमासा
तय-नारीय (पाय ४) ।

तययिख नि [तयि] तयि मयल
तयिख ३ (अ १२२; सुपा २११ मयि) ।

तयिख } केतो तय ।
तयिखजंत }
तयमाण }

तयल न [ते] भायल भायल
बायि मयि मयल मयल

तयल न [ते] भायल भायल
बायि मयि मयल मयल

तयल न [ते] भायल भायल
बायि मयि मयल मयल

तयल न [ते] भायल भायल
बायि मयि मयल मयल

तयल न [ते] भायल भायल
बायि मयि मयल मयल

तयल न [ते] भायल भायल
बायि मयि मयल मयल

तयल न [ते] भायल भायल
बायि मयि मयल मयल

तयल न [ते] भायल भायल
बायि मयि मयल मयल

तयल न [ते] भायल भायल
बायि मयि मयल मयल

तयल न [ते] भायल भायल
बायि मयि मयल मयल

तयल न [ते] भायल भायल
बायि मयि मयल मयल

तयल न [ते] भायल भायल
बायि मयि मयल मयल

तयल न [ते] भायल भायल
बायि मयि मयल मयल

तयल न [ते] भायल भायल
बायि मयि मयल मयल

तयल न [ते] भायल भायल
बायि मयि मयल मयल

तयल न [ते] भायल भायल
बायि मयि मयल मयल

तयल न [ते] भायल भायल
बायि मयि मयल मयल

तयल न [ते] भायल भायल
बायि मयि मयल मयल

तयल न [ते] भायल भायल
बायि मयि मयल मयल

तणुयी } देको तणुइ (हे २, ११३)
तणुयीभा } (कुमा)।

तणुयी [तणु] शरीर काया (गा ७८-
पाश्च ३५)। २ शिवाभावाभावात्मक प्रविष्टी
(डा ८)। अ वि [ज] १ शरीर से
उत्पन्न। २ पुं सङ्ग्राह, पुन (वा १८४)।
‘अतएव की [क]नय’ ईषयाभावाभावात्मक
प्रविष्टी विलपर मुक्त कीय रहते हैं, निवृ
त्तिमा (सम २२)। रह पुन [रह] वेरा
रोम बल (जय ११७ टी)।

तणुय देको तणुइअ (गङ्ग)।
तणय (सम) घ लिए बाते (हे ४ ४२३,
कुमा)।

तणसि पुं [के] दस-नासि (हे ३३ पङ्)।
तणाय पुं [तणक] बल बध्ना (पाश्च ४
११ गङ्ग)।

तणाय वि [के] धात्र भीता (हे २ २
पाश्च गङ्ग) से १ ११ ११ ११६)।

तण्हा की [तण्हा] १ व्यास विपारा
(पाश्च)। २ सङ्ग्राह, बन्धा इच्छा (डा २ १
भीय)। लु लुभ वि [तण्] दृष्ट्या-
बन्धा व्यासा ‘समस्तलक्षणम्’ (पञ्च म ८७-
८ ४७)।

तण्हाइअ वि [तण्हा] दृष्टानु, घटि व्यासा
(बर्तवि १४१)।

तण् केरो तय = तय (डा ४ ४)।

तण न [तण] सय स्वयं तय, परमाय
(डा ७२८ टी पुष्क १२)। ओ घ
[तण] बलुना (डा १८९)। ज्यु वि
[तण] तय वा बालवार (यंवा १)।

तण पुं [तण] १ तीव्रतर नरक-मुक्ति का एक
नरक-न्यास (हेमच १)। २ प्रत्य नरक-
मुक्ति का एक नरक-न्यास (हेमच ४)।

तण वि [तण] गलत किया हुआ (बम ११३,
विगा १ १) हे १ १ १)। जन्हा की
[तण] नदी-विशेष (डा २ १)।

तण घ [तण] बहा। मय, होत वि
[तण] पुन्य ऐसे घात (वि ११३,
मति २६)।

तण्मुसुत न [तण्मुसुत] एक प्रविष्ट देव
लोक-पत्न्य (पञ्च ७७)।

तण्मिअ न [के] रंगा हृषा कम्हा (पञ्च
२ ४६)।

तणि की [तणि] दृष्टि संशय (कुमा, क
२५)। ह वि [तण] दृष्टि-मुक्त,
रुच्य सगुण (यय)।

तणि की [के] १ माफेय, हृष्ट (हे २ २
सगु)। २ तणरहा (हे २)। ३ किन्वा
विचार (बा २ २१ २७३ म सुगा २३७
२८)। ४ बाध विचार (बा २ बन्धा २)।

५ कार्य प्रयोग (पण्ड १ २ बम १)।
तणिय वि [तण्य] जन्मा (पण्ड ११९)।

तणिल [वि [तण] उत्तर (पङ्)। हे २, १
तणिल [वा ११७ पण्ड ११)।

तणु (सम) देको तय = तय (हे ४ ४ ४
कुमा)।

तणुबिल न [के] मुक्त संशय (हे २ ६)।

तणुरिअ वि [के] रजित (पङ्)।

तणो देको तणो (कुमा की २६)। मुह
वि [मुह] विलका मुह उत तण हो बह
(पुन २ २३४)।

तणोहल न [के] तण्मिअ लल्ले सामने
(गङ्ग)।

तय घ [तय] बहा जय (हे २ १६१)।

मय वि [मय] पुन्य ऐसे घात (वि
२६१)। ४ वि [तय] बहा का खलेनाला
(जय ११७ टी)।

तय वि [तय] शीत तण हुआ (हे २ १६१
कुमा)।

तय देको तय = तय (बर्तवि १ ४ छवि
२१)।

तयवि पुं [तयवि] अय-विशेष ‘तयविपण
अधिधा सोहल मयक पुन’ (पण्ड ४)।

तण देको तय = तय (गा १६९)।

तणाय वि [तणाय] मुद्राण (बहा)।

तणो देको तय (हे २ १६)।

तण्भाअय न [के] दृष्ट, नाय (हे २, ८)।

तण्मिअ न [के] प्रविष्ट सगुण
तण्मिअसि इरयेन (हे २, ८) बन्धा
तण्मिअ (यय)।

तण्मिअ देको तण्मिअ = तण्मिअ।

तणिय पुं [तणिय] १ व्याकरण-प्रविष्ट
प्रत्यय-विशेष (पण्ड १ १ विवे १ १)।

२ तणिय प्रत्यय की प्राप्ति का कारण-भूत
सर्व (पण्ड)।

तण देको तण (डा १ १: ७)।

तणय देको तणय (पुन १४ १७४)।

तण्हा देको तण्हा (पुन १ २ १ कुमा)।

तण देको तय = तण्य (यंवा)।

तण्य सक [तण्य] १ तण करना। २ सक
गम्य होता। तण्य, तण्यि (विग-पण्ड
२१)।

तण्य सक [तण्य] तण करना। बह
तण्यमाण (पुन १९ १६)। हे २ ‘म हमे
कीको सको तण्येन काममेलेके’ (मय १)।

ह तण्येय्य (सुगा २३२)।

तण्य न [तण्य] तण्या विधीना (पाश्च)।

अ वि [तण] तण्या पर बनेनापा सोने
बाला (पण्ड १ २)।

तण्य पुन [तण्य] कीकी छोटी गोहा (पण्ड
१ १ विवे ७ ६)।

तण्य पुन [तण्य] नदी में बहने से बहकर धारा
हुवा बहल सगुह (छवि ८ टी)।

तण्यकिअ वि [तण्यकिअ] सक पय का
(या १२)।

तण्यय न [तण्यय] तण्यय मतव (यय)।

तण्यय न [तण्यय] १ सगु, सगुमा, सगु (पण्ड
२ २)। २ शीत, दृष्टि-करण प्रीक्षण (सुगा
११९)। ३ लिख बलु से शरीर की मानित
(छाया १ ११)।

तण्यय न [के] तण छाया का पात्र विशेष
तण्ययी (कुमा १)।

तण्यय न [के] तण छाया का पात्र विशेष
तण्ययी (कुमा १)।

तण्यय न [के] तण छाया का पात्र विशेष
तण्ययी (कुमा १)।

तण्यय न [के] तण छाया का पात्र विशेष
तण्ययी (कुमा १)।

तण्यय न [के] तण छाया का पात्र विशेष
तण्ययी (कुमा १)।

तण्यय न [के] तण छाया का पात्र विशेष
तण्ययी (कुमा १)।

तण्यय न [के] तण छाया का पात्र विशेष
तण्ययी (कुमा १)।

तण्यय न [के] तण छाया का पात्र विशेष
तण्ययी (कुमा १)।

१। भी २)। १ एक स्वात से दूसरे स्वात में जाने-माने की शक्तिवाला प्राणी (निम्न १२)।
 "काश्य पु [काश्य] जेयम प्राणी,
 कीदृश्यायि बीज (पृष्ठ १)। काय पु
 [काय] १ नर-समुह (ठा २ १)। २
 जेयम प्राणी (धाता)। जाय, नाम न
 [नामम्] कर्म-विशेष जिसके प्रभाव से
 बीज वसन्त में उत्पन्न होता है (कर्म १
 सम १७)। "रेणु पु [रेणु] परिमाण
 विशेष बसीस हवार साध ही प्रसक्त पर
 माण्डों का एक परिमाण (प्लु १२४)।
 बाह्या यो [पादिक्र] कीदृश जन्तु
 विशेष (बीज)।

तस्य न [जन्म] १ स्वभाव वसत हितन
 (राज)। २ वसाम्न (सुम १ ७)।

तसनाही बी [तसनाही] वस बीजों के रखने
 का प्रेरण को ऊपर-नीचे मिलाकर नीबड़
 उच्छ परिमित है (पत्र १४१)।

तसर केओ टसर (कम्प)।

तसिध बि [रे] मुक्त सुभा (रे ५ २)।

तसिध बि [पुष्टि] तुषागुट, सिपासिठ
 व्यास हुआ (रम्य ८४)।

तसिध बि [त्रा] भीत बप हुआ (बीज
 १ महा)।

तसियक केओ तस = कम्प।

तसेय बि [जन्म] एकेनिय बीज स्वावर
 प्राणी (सुभा १२८)।

तह य [तथा] १ लो लण्ड (कुमा प्रामु
 १२) स्वभा १)। २ भीर, तथा (हे १
 १७)। ३ वायु-मृत्ति में प्रयुक्त किया जाता
 सम्पत् (निम्न १)। कार पु [कार] 'तथा'
 कर्म उल्लापण (उत्त २९)। जाय बि
 [ज्ञान] प्रेरण क उत्तर को बालनेवाला (ठा
 ५)। २ न. लय ज्ञान (ठा १)। ति य
 [इति] स्वीकार-योग्य सम्पत्—रैसा ही
 (रैसा प्राप्त करता है) (प्राया १ १)।
 य य [य] १ एक वर्ष की हड़ता-मुचक
 समय। २ धनुस्त्र-सूचक सम्पत् (वैरा २)।
 "यि य [यि] तो भी (तह)। यिह बि
 [यिह] ज्ञ प्रकार का (सुभा ४२६)।
 यो तहा।

तह बि [तथ्य] लय सत्य, सच्चा (सुम
 १ १३)।

तह पु [तथ्य] बाजकारक बस, नीकर (ठा
 ५ २—जय २११)।

तह [तथ्य] १ स्वभाव स्वल्प
 तहीय (सुमान १२२)। २ सत्य वचन (सुम
 १ १४ २१)।

तह केओ तह = तथा (बीज)।

तहरी की [रे] पटुबाली सुय (रे ५ २)।
 तह्रिया बी [रे] गो-नाट, पीपों का बाड़ा
 गोशाला (रे ५ ८)।

तहा केओ तह = तथा (कुमा तह) प्राचा
 गुर १ २७)। गय पु [गय] १ युक्त
 आत्मा। २ सर्वज्ञ (धाता)। मूय बि
 [मूय] तह प्रकार का (जन्म २२ १५)।
 क्य बि [क्य] उस प्रकार का (मन
 १५)। बि बि [यित्] १ गिरुछ जन्म
 २ पु सर्वज्ञ (सुम १ ४ १)। हे य
 [हि] बहु स्त प्रकार (जय २५१ १)।

तहि केओ तह = तथा (गा ५७८ उत्त ६)।

ठहि [तत्र] वहाँ छमें (गा २ १
 तहि) प्रायः गा २१४ उत्त १ १)।

तहिय बि [तथ्य] सत्य, सच्चा बालतविक
 (सारा १ १२)।

तहिय य [तथ्य] वहाँ छमें (जिसे २७८)।
 तहिय य [तथ्य] लो लण्ड, लो लण्ड
 तहिय (कुमा ४४)।

ता य [तत्] समे उस कारण से (हे ४
 २०८, गा ४६ १७० जय)।

ता केओ ता = ताव (हे १ २७१ गा
 १४१ २ १)।

ता य [तत्] लय जस समय (रैसा कुमा;
 सय)।

ता य [तत्] तो तह (रैसा कुमा)।

ता बी [ता] बस्ती (सुम १६, ४८)।

ता य [तत्] बहु। राय पु [राय] १
 ज्यका कर्म। २ ज्यके कर्म के समान कर्म
 (पण्य १७)। फस पु [स्पर्श] १
 ज्यका स्पर्श। २ रैसा स्पर्श (पृष्ठ १७)।
 रस पु [रस] १ बहु स्पर्श। २ रैसा
 स्पर्श (पृष्ठ १७)। क्य न [क्य] १
 बहु स्पर्श। २ रैसा क्य (पृष्ठ १७—जय
 ५२२)।

ताय केओ ताय = ताप (गा ७७७ न १४
 हका ५)।

ताय पु [ताप] १ ताप पिता बय (सुम
 १ १२५; उत्त १४)। २ पुत्र बय (सुम
 १ ३, २)।

ताय छक [त्रे] रखण करना। क तायक
 (गा १२)।

तायप्प न [तायप्प] तह पूता बनेब,
 अनिकटा (प्राक् २४)।

ताइ बि [स्वायिम्] व्याग करनेवाला (गा
 २१)।

ताइ बि [स्वायिम्] रखण परिपालक (उत्त
 ८)।

ताइ बि [स्वायिम्] ताप-मुक्त (सुम १ १५)।

ताइ बि [स्वायिम्] एक रखण करनेवाला
 (उत्त २१ २२)।

ताइ बि [स्वायिम्] जकापी (सुम १ २
 १७)।

ताइ पु [स्वायिम्] मुनि चाहु (उत्त २
 ६)।

ताइ बि [त्राव] रमित (जय)।

ताई (यप) केओ ताप = ताव (कुमा)।

ताडा (पुई) केओ ताडा (हे १ १२१)।

ताड छक [ताड्य] १ ताड़न करना
 पीना। २ प्रेरण करना धातव करना।

३ प्रणाला करना। ताड (हे ४ २७)।
 यि ताडस्त (पि २४)। क ताडित
 (काल)। कम्प ताडितमात्र ताडीअत,
 ताडीअमाण (सुभा २९ पि २४)। यि
 १२१) हेक ताडित (कम्प)। क ताडित
 (उत्त १६)।

ताड पु [ताड] ताड़ का पेड़ (उ २११)।

ताडक पु [ताडक] कर्म का धातु-सं-
 विशेष मुद्रक (रे ६, ६३; कम्प कुमा)।

ताडन न [ताडन] १ ताड़न पीटना (जय
 २५१ यो गा ४४६)। २ प्रेरण धातव
 (पि १२ ५३)।

ताडयि बि [ताडित] पिठायाम गवा (सुभा
 १ ५५५)।

ताडित केओ ताड = ताव।

ताडित बि [ताडित] १ निद्रक ताड़न
 किया गया हो बहु, पीटा हुआ (पाम)। २

त्रिमया दुगावार किया हो वह 'रत्नाकीरी'
ता नरदुगावारणाम' वाङ्मया शेर' (पा १)।

वाङ्मय न [दि] दोन दोन (२५, १)।

वाङ्मयमाय देवो ताड = ताड्।

वाडी की [वाडी] दुन-विदेय (पत्र)।

वाडाअन } देवो ताड = ताड्
वाडीअमाय }

ताग न [श्राय] १ छण छण बर्ता (मुपा १०४)। २ छण (सम ११)।

ताग नु [तान] धीग-धमिद लव-विदेय
'ताग एलणवएलण' (सुपु)।

तागय न [तानय] इलता दुर्बलता (विपन १२)।

तागिय बि [तानिय] ताग हुमा (की १२)।

ताड देवी ताड = ताग (श्राड १२)।

ताडय न [ताडय] लरबकाय जलके लिए
(पाफ १२४ १२७)।

ताडयन न [ताडपाय] लवयका काउम हा
बरी लवका लविकयता (बर्म ४ ४
४ २ ४११)।

ताडिय देवो तारिस (मा ३१३ श्राप १४)।

ताम देवी ताम = तम। तामर (पा ३२१)।

ताम (बा) देवो ताम = ताड (१४ ४ १)
बिरी)।

तामर नि [दि] रम्य गुनर (१२ १ :
बाप)।

तामरन न [तामरन] बमल बप (१२,
१ बाप)।

तामरन न [दि] पापी में बयन हर्नराला
गुन (१२ १)।

तामरि नु [तामरि] लवका-लवक ताग
(सम १ १; बा ४)।

तामरिय की [तामरिय] एक श्रापीन
अपी बम देव की श्रापीन लवकायी (ता
१ सम १ १; बा ४)।

तामरियता की [तामरियता] लवकाय
बत की एक लवका (बम)।

तामरन न [तामरन] लवकाय (१२,
१ बाप)।

तामरन न [दि] ताग (१२, १)।

तामरन न [दि] ताग (१२, १)।

तामरि (१) देवो ताग = ताड (वड ;
तामरि) बि २११; हु ४ ४ १)।

तामय न [श्राय] लल (बर्मि १२)।

तायसीसग नु [श्रायसीसग] गुरु-लवणीय
देव-लवि (अ १ १; बय)।

तायसीसा की [श्रायसीसा] १ लवका-
विदेय लवणीय। २ लवणीय लवकाया लवणीय।

'तामलीसा लवकाया' (अ नि ४४७ बय)।

तायन देवो ताड = नि।

तार नु [तार] १ लवणीय लवका का एक लवका
(देव १ १)। २ लवणीय लवणीय। ३ लवणीय
लवणीय। ४ लवणीय लवणीय। ५ लवणीय
लवणीय (१२ १ १७७)।

तार नि [तार] १ लवणीय लवका (१२,
४२)। २ लवणीय लवणीय (पाप)। ३
लवणीय लवणीय (१२ ४)। ४ लवणीय लवणीय
लवणीय (पाप का ४२४)। ५ लवणीय लवणीय
(१२ ४)। ६ लवणीय लवणीय (१२ ४)।

तार की [तारी] एक लवका-लवका (पाप ४)
तारन नि [तारन] लवणीय-लवणीय (१२ ४२)

तारन नि [तारन] लवणीय-लवणीय (१२ ४२)

तारन नि [तारन] लवणीय-लवणीय (१२ ४२)

तारन नि [तारन] लवणीय-लवणीय (१२ ४२)

तारन नि [तारन] लवणीय-लवणीय (१२ ४२)

तारन नि [तारन] लवणीय-लवणीय (१२ ४२)

तारन नि [तारन] लवणीय-लवणीय (१२ ४२)

तारन नि [तारन] लवणीय-लवणीय (१२ ४२)

तारन नि [तारन] लवणीय-लवणीय (१२ ४२)

तारन नि [तारन] लवणीय-लवणीय (१२ ४२)

तारन नि [तारन] लवणीय-लवणीय (१२ ४२)

तारन नि [तारन] लवणीय-लवणीय (१२ ४२)

तारन नि [तारन] लवणीय-लवणीय (१२ ४२)

तारन नि [तारन] लवणीय-लवणीय (१२ ४२)

तारन नि [तारन] लवणीय-लवणीय (१२ ४२)

तामय [तामय] लवणीय-लवणीय (१२ ४२)

तामय [तामय] लवणीय-लवणीय (१२ ४२)

तामय [तामय] लवणीय-लवणीय (१२ ४२)

तामय [तामय] लवणीय-लवणीय (१२ ४२)

तामय [तामय] लवणीय-लवणीय (१२ ४२)

तामय [तामय] लवणीय-लवणीय (१२ ४२)

तामय [तामय] लवणीय-लवणीय (१२ ४२)

तामय [तामय] लवणीय-लवणीय (१२ ४२)

तामय [तामय] लवणीय-लवणीय (१२ ४२)

तामय [तामय] लवणीय-लवणीय (१२ ४२)

तामय [तामय] लवणीय-लवणीय (१२ ४२)

तामय [तामय] लवणीय-लवणीय (१२ ४२)

तामय [तामय] लवणीय-लवणीय (१२ ४२)

तामय [तामय] लवणीय-लवणीय (१२ ४२)

तामय [तामय] लवणीय-लवणीय (१२ ४२)

तामय [तामय] लवणीय-लवणीय (१२ ४२)

तामय [तामय] लवणीय-लवणीय (१२ ४२)

तामय [तामय] लवणीय-लवणीय (१२ ४२)

तामय [तामय] लवणीय-लवणीय (१२ ४२)

तामय [तामय] लवणीय-लवणीय (१२ ४२)

तामय [तामय] लवणीय-लवणीय (१२ ४२)

तामय [तामय] लवणीय-लवणीय (१२ ४२)

ताल की लय लम्बी जोधवाला (छाया १
८) । मलय पुं [मलय] १ मलय
(पारस) । २ गुप्त-विशेष (संज्ञ १) । ३
सुप्रसन्न पहाड़ (दी १) । पर्वत पुं
[पर्वत] गोपगुरु का एक आसन (भा
८ ३) । पिसास पुं [पिसास] शीत-
काय पक्ष (पण्ड १) । पुष्ट देखो चड
(पा १२) । यर पुं [यर] एक मनुष्य
जाति बाण (घोष ७११) । यिन् विन
बेट, योत न [युत्त] व्यजन, पंचा (नि
३१ मठ—देखो १ ४ ६ १ १० प्रश्न) ।
संयुक्त पुं [संयुक्त] ताल के पत्तों का संयुक्त,
ताल-जन संभव (सुप्र १ ३, १) । सम
वि [सम] ताल के समान स्वर, स्वर
विशेष (आ ७) ।
तात्पर्य पुं [तात्पर्य] १ कुशल काम का
आग्रह-विशेष । २ अन्त-विशेष (निग) ।
तात्पर्य पुं [तात्पर्य] अन्त-विशेष ।
के गी (निग) ।
तात्पर्य न [तात्पर्य] तात्ता द्वार बन्द करने
का मन्त्र (उर १३६ टी) ।
तात्पर्य देखो तावण (दीप) ।
तावणा धी [तावणा] चोटा धारि का
प्रहार (पण्ड २, १) धीर ।
तावणफरी धी [दे] बाड़ी लीकफली (८ ३,
१) ।
तावण देखो तावणा (मुद्रा ४१४—कुप्र २३२) ।
तावसम न [तावसम] कैय बाण का एक
श्रेय (समि २ २१) ।
तावहस पुं [दे] यानि शीर्ष (दे १ ७) ।
ताव्य म [ताव्य] सम समय 'ताव्य पार्ष्णि
द्वारा जाना वे लक्ष्मिदेहि विनार्ति' (दे १
१३, १३२) ।
ताव्य धी [दे] ताव्य धीरे, धान का ताव्य
(दे ३, १) ।
ताव्यपुत्र पुं [ताव्यपुत्र] ताव (ताव) बराने-
वाला (निग १३) ।
ताव्यपुत्र } पुं [ताव्यपुत्र] १ शीत-विशेष
ताव्यपुत्र } ताल देवताका शीतक (छाया
१ १) । २ मठ लक्ष्मिदेहि मनुष्य-जाति
(६६ १) ।

ताव्यपुत्र वि [ताव्यपुत्र] ताव्य वीर्य हुआ
(छाया १ ३) ।
ताव्यपुत्र सक [अमय] भुषणा छिपना ।
ताव्यपुत्र (दे ४ १) ।
ताव्यपुत्र न [ताव्यपुत्र] व्यजन पंचा (घ
१ ८) ।
ताव्यपुत्र वि [अमय] भुषणा छिपना
(मुद्रा) ।
ताव्यपुत्र देखो ताव्य = ताव्य ।
ताव्यपुत्र देखो ताव्य (उर २, ११) ।
ताव्य धी [ताव्य] १ अन्त-विशेष (भा ६)
२ अन्त-विशेष (निग) । 'पञ्च न [पञ्च]
ताव्यपुत्र के पञ्च का बना हुआ पञ्च
(भा ११) ।
ताव्य } न [ताव्य] क) ताव्य, ईरे के अन्त
ताव्य } का अन्त का ताव्यपुत्र (उर ४६
छाया १ ११) ।
ताव्यपुत्र धी [ताव्यपुत्र] विना-
विशेष, ताव्य धीरे धी विना (कण्ठ) ।
ताव्यपुत्र पुं [दे] १ केन धीरे । २ कति
हुय कैय का देव (दे ३, २१) । ३ पानी का
पार (दे ३, २१ गा १० पार) । ४ पुं,
पुत्र का नाम (निग ३२) ।
ताव्यपुत्र देखो ताव्य = ताव्य ।
ताव्य सक [ताव्यपुत्र] १ ताव्य मन्त्र करना ।
२ संताप करना, दुःख जानना । ताव्य
(गा ३२) । ३ अन्त-विशेष (पा ७) । ४
ताव्यपुत्र (मय १३) ।
ताव्य पुं [ताव्य] १ पत्नी ताव (मुद्रा ३३६,
कण्ठ) । २ संताप दुःख (पा ४) । ३ पूर्व
रति । जिता धी [विन्] मुक्त-जाति
विना (पान) ।
ताव्य घ [ताव्य] १ ताव्य का गुप्तक
मन्त्र । २ ताव्य (पञ्च १३, २) । ३
प्रत्युत धीरे (ताव्य) । ४ धरापण निभय ।
५ धरति हृत् । ६ धरापण । ७ प्रत्युत ।
८ ताव्य-मुद्रा । ९ ताव्य । १० ताव्य,
भूगर्भ । ११ ताव्य धीरे (दे १ ११) ।
ताव्यपुत्र वि [ताव्यपुत्र] लक्ष्मि, मुद्राप (पण्ड
३३) ।
ताव्यपुत्र वि [ताव्यपुत्र] अन्त (उर ४१४
मय) ।

ताव्य देखो ताव्य = ताव्य (मय) ।
ताव्य } (मय) देखो ताव्य = ताव्य
ताव्यहि } (मुद्रा) ।
ताव्यपुत्र पुं [ताव्यपुत्र] लक्ष्मि, मुद्रा का एक
मन्त्र (पण्ड ८) । २ वि ताव्यपुत्र
(नि २७) ।
ताव्यपुत्र न [ताव्यपुत्र] १ मन्त्र ब्रह्मा ताव्य
(निग १) । २ पुं द्रव्यापुत्र ब्रह्मा का एक
पञ्च (पञ्च ३ ३) ।
ताव्यपुत्र देखो ताव्य = ताव्य ।
ताव्यपुत्र } देखो ताव्यपुत्र (घोष
ताव्यपुत्र } नि ४२, ४३८) कण्ठ) ।
ताव्यपुत्र } नि ४३८) ।
ताव्यपुत्र देखो ताव्यपुत्र (वि ४३८) ।
ताव्यपुत्र पुं [ताव्यपुत्र] १ लक्ष्मि योगी
अन्त-विशेष (घोष) । २ एक लक्ष्मि
(कण्ठ) । 'गह्वर न [गह्वर] ताव्यपुत्र का मठ
(पान) ।
ताव्यपुत्र धी [ताव्यपुत्र] लक्ष्मि धीरे का एक
पञ्च (कण्ठ) ।
ताव्यपुत्र धी [ताव्यपुत्र] लक्ष्मि योगी
(गण्ड) ।
ताव्यपुत्र वि [ताव्यपुत्र] ताव्यपुत्र हुआ मन्त्र
क्रिया हुआ (पा ३३ जिता १ १ मुर ३
२२) ।
ताव्यपुत्र धी [ताव्यपुत्र] ताव्यपुत्र धीरे धीरे
पञ्च का पञ्च (दे ३ ३६) । २ कण्ठ
योग कण्ठ (पान) ।
ताव्यपुत्र पुं [ताव्यपुत्र] अन्त-विशेष ताव्य
का देव (मुद्रा ३३ १०; मुद्रा ३८) ।
ताव्य धी [ताव्य] लक्ष्मि-विशेष (पञ्च ३२,
१; ना २३६) ।
ताव्य पुं [ताव्य] १ मय रर (उर ३ ३३) ।
२ अन्त-विशेष (पण्ड १ १) ।
ताव्यपुत्र वि [ताव्यपुत्र] ताव्य अन्त-विशेष
(पण्ड १ १) ।
ताव्यपुत्र वि [ताव्यपुत्र] १ ताव्यपुत्र मन्त्र ।
२ ताव्यपुत्र (आ २; कण्ठ) ।
ताव्यपुत्र वि [ताव्यपुत्र] जिताव्य नाम का
पञ्च मन्त्र हो बर (कण्ठ) ।
ताव्य घ [ताव्य] १ मय रर (दे ३ ३३) ।
नि घ [निघ] लक्ष्मि काव्य (घोष ३३२) ।

१२ ३४ (१२१)। मूलपाणि पुं [शूल-
पाणि] १ मूलपाणि मूल। २ मूलपाणि
हस्त में रखनेवाला मुद्रा (पन्ना ३६, ३७)।
मुद्रिया की [शूलिका] छोटा मूल
(पन्ना १ ३ १)। हस्तर वि [समस्त]
अस्तरवा ७३ की (पन्ना ७३ ३६)। हा
म [पा] तीन प्रकार से (वि ४२१ मनु)।
हुअण, हुण, हुअण न [सुअण] १
तीन बाण, स्वर्ग मर्त्य और पाताल लोक
(हुमा मुर १ = प्राप्ता ४६ धनु १६)।
२ हु, उमा हुमापाल के पिता का नाम
(हुम १४४)। हुअणपाल पुं [सुअण-
पाल] उमा हुमापाल का पिता (हुम
१४४)। हुअणालंकारपुं [सुअणालंकार]
उपलब्ध के पदार्थों का नाम (पन्ना ४१
१२२)। हुअणविहार पुं [सुअणविहार]
पदार्थ (हुअण) में उमा हुमापाल का नाम
होना हुमा एक कैल मन्त्रि (हुम १४४)।
देवी से।

"ति देवी इअ = इति (हुमा) कम २ १२
२१)।

तिअ (परा) मक [तिम्, तिम्] १ बाह
होना। २ छक, बाह करना। तिअ (प्राह
१२)।

तिअ न [तिअ] १ तीन का लुब्धक (मा १
उप ७२० टी)। २ वह बाह बड़ा तीन
पल्ले मिलते हैं (मुर १ ११)। संज्ञा
पुं [संज्ञा] एक राजपि (पन्ना ३ ३१)।
देवी तिग।

तिअ वि [तिअ] तीन से उत्पन्न होनेवाला
(परा)।

तिअमर पुं [तिअमर] स्वाम-काल एक
कैलमुनि (परा)।

तिअम न [तिअम] तीन का अनुसूय (मिरे
२६४१)।

तिअबा की [तिअबा] स्वाम-काल एक
राजकी (वि ११ ८७)।

तिअमगी की [तिअमगी] छत्र-विशेष (विप)।
तिअम न [तिअम] तीन का अनुसूय (मिरे
१४२२)।

तिअलुक न [तिअलुक] तीन बाण—
तिअलुक [स्वर्ग मर्त्य और पाताल लोक
(मर्मा १; सङ्घ २)।

तिअस पुं [तिअस] देव देवता (हुमा मुर १
६)। गज पुं [गज] ऐश्वर्य या ऐश्वर्य
होती, दण्ड का हाथी (वि ६ ९१)। नाह पुं
[नाह] दण्ड (उप ६८९ टी गुफा ४४)।
पद पुं [पद] दण्ड देव-नामक (गुफा
४७ १०६)। रिमि पुं [रिमि] नाह
मुनि (हुम १७३)। सीग पुं [सीग]
स्वर्ग (उप १ १६)। थिलया की
[थिलया] देवी की देवता (गुफा २६७)।
सरि की [सरि] गंगा मयी (हुम)।
सेल पुं [सेल] मेघ पर्वत (गुफा ४८)।
लउय पुं [लउय] स्वर्ग (हुम १६ उप
४२० टी मुर १ १७२)। दिदि पुं
[दिदि] दण्ड (गुफा १४४)। दिदिपु पुं
[दिदिपु] दण्ड (गुफा ७९)।

तिअससुरि पुं [तिअससुरि] इअसति
(समस्त १२)।

तिअसि पुं [तिअसि] दण्ड देव-पति
(मर्मा १२४)।

तिअसिंद देवी तिअसि (विम २१)।
तिअसास पुं [तिअसास] दण्ड देव-नामक
(वि १ १)।

तिआना की [तिआना] राज, रात (मनु
४६)।

तिअरु छक [तिअरु] छह करना।
तिअरुए (पाषा)। वड तिअरुमाग
(पाषा)।

तिअरुमा की [तिअरुमा] यमा, सविष्णुवा
(पाषा)।

तिअरु वि [तिअरु] तीसरा वि ४४६,
विअरु [संज्ञा २]।

तिअरुतर न [तिअरुतर] बाघ-विशेष
(सवि ११)।

तिअरु दण्ड [तिअरु] १ तीसरा। २ बरि
व्याप करना। तिअरुमा (हुम १ १
१)।

तिअरु मक [तिअरु] १ दण्ड। २ कुछ
होना "कमकुवा तिअरु" (हुम १
१४, २)।

तिअरु वि [तिअरु, मुदित] १ दण्ड हुमा। २
पदार्थ (पाषा)।

तिअरु पुं [तिअरु] काला मोर-विशेष (पाषा)।
तिअरुग पुं [तिअरुग] बाघ विशेष (विमि
१ म पन्ना १२९)।

तिअरुय न [तिअरुय] १ माला देव में प्रसिद्ध बाघ
विशेष (पा १८)। २ सौँगा लंबय (पा पन्ना
६६)।

तिअर म [तिअर] एक विद्यावर-नगर (दण्ड)।
तिअर पुं [तिअर] मधुर-विशेष (मि २४)।
गाह पुं [गाह] गही (मि ८७)।

तिअरी की [तिअरी] मयी-विशेष बेरि देव
की राजपाथी (हुमा)।

तिअरु नि [तिअरु] मान बजत और काला की
वीक पर्वकालेवाला कुल का देव (उप २)।
तिअरु देवी तिअरु (वि म पन्ना ११ ६८)।
तिअरु की [तिअरु] कमल-रज (वि ३, १२)।
तिअरु देवी तिअरु (दण्ड)।

तिअरुमाग न [तिअरुमाग] मधुर
मोन-विशेष (दण्ड)।

तिअरुमा की [तिअरुमा] कमल-रज पक्ष का रज
पक्ष (वि ३, १२) मरुता है २ १७४ म ४)।

तिअ वि [तिअरु] सीमा हुमा (वि ११२;
है ४ ४११)।

तिअि वि [तिअि] वडक करनेवाला
विअि वि [विअि] वडक करनेवाला विअि नाम
म होने पर बेर से मत में जो धारें सी बोलने-
वाला (वि १ ४६—पन्ना १७१ म)।

तिअिपी की [तिअिपी] १ बिचा इसली
का वेड़ (विम ७१)।

तिअिपी की [तिअिपी] वडकाला (विम ३)।
तिअिपी की [तिअिपी] वडकाला (हुम
१ २)।

तिअि पुं [तिअि] १ वडकाला वडक
विअि का वेड़ (पाषा पन्ना २ १७ म
१२२ पन्ना १७)। २ न. कम-विशेष
(पन्ना १७)। ३ व्यापली काटी का एक
काल (मिरे २१ ७)।

तिअि पुं [तिअि] वडकाला वडक
विअि का वेड़ (उप १६ ११६, मुर
१६, ११६)।

१२ ३४ ५ ६६६)। सुखपाणि पुं [सुख-
पाणि] १ मङ्गलेश शिव। २ विरुल का
हाथ में रखनेवाला सुन्द (पञ्च ३६ ३५)।
सुखिया पुं [सुखिन्] शोच विरुल
(पञ्च १ १)। हस्तर वि [सप्तव]
विह्वलता ७३ वां (पञ्च ७३ ३५)। हा
थ [था] तीन प्रकार से (वि ४२ १ मणु)।
हुअण, हुण, हुणन [सुपन] १
तीन जन्म, स्वर्ग मर्य दीर पताल लोक
(हुमा मुर १ ८ प्राप् ४६ मणु १६)।
२ पुं राजा हुमापाल के पिता का नाम
(हुम १४४)। हुअणपाळ पुं [सुभन-
पाळ] राजा हुमापाल का पिता (हुम
१४४)। हुमापालेश्वर पुं [सुभनालेश्वर]
राज्य के पट्टासी का नाम (पञ्च ८१
१२२)। हुणपिहार पुं [सुभनविहार]
पाटण (हुअण) में राजा हुमापाल का बग
बग हुआ एक कैल मन्दिर (हुम १४४)।
देखो तं।

सि रेकी इअ ८ इति (हुमा कम्म २ १२;
२३)।

विअ (धर) सक [विम् विम्] १ बाह
होना। २ एक धार करना। विअर (प्रक
१२)।

विअ न [विअ] १ तीन का छन्दोपाय (पा १
का ७२ म टी)। २ बहु बाण बहा तीन
पक्षे मिलते हैं (सुर १ ६१)। संजअ
पुं [संजय] एक राजर्षि (पञ्च ५, ६१)।
केजो विग।

विअ वि [विअ] तीन से उत्पन्न होनेवाला
(पञ्च)।

विअर पुं [विअर] स्वनाम-क्यात एक
कैलपुत्रि (पञ्च)।

विअरा न [विअर] तीन का छन्दोपाय (विने
२६४५)।

विअडा की [विअटा] स्वनाम-क्यात एक
राजकी (वि ११ म ७)।

विअदी की [विअदी] धन-विशेष (विने)।

विअय न [विअय] तीन का छन्द (विने
१४११)।

विअलुक न [विनेलुक] तीन बाण—
विअलेय [स्वर्ग मर्य दीर पताल लोक
(बर्मा १; लहम ६)।

विअम पुं [विअरा] देव देवता (हुमा मुर १
६)। गज पुं [गज] ऐरावत या ऐरावत
हाथी इअ का हाथी (वि १ ११)। नाह पुं
[नाय] राज (उप ६८९ टी गुपा ४४)।
पहु पुं [प्रसु] राज देव-नायक (गुपा
४७; १७५)। रिसि पुं [आपि] गज
मुनि (हुम ३७१)। जोग पुं [लेक]
स्वर्ग (उप १ १६)। बिअया की
[बनिया] देवी की देवता (गुपा २६७)।
सरि की [सरि] गंगा नदी (हुम)।
सेठ पुं [रोक] भैरव पर्वत (गुपा ४४)।
लअ पुं [लअ] स्वर्ग (हुम १६ उप
७२८ टी मुर १ १७२)। दिअ पुं
[धिअ] राज (गुपा १४)। दिअर पुं
[धिअरि] राज (गुपा ७९)।

विअसमूरि पुं [विअसमूरि] ब्रह्मलिंग
(मम्म १२)।

विअसिद पुं [विअसिद] इअ देव-नति
(बग्गा १२४)।

विअसेद केजो विअसिद (बेअम ६१)।

विअसीस पुं [विअसीस] राज देव-नायक
(वि १ १)।

विअमा की [विअमा] राज, रात (मणु
४४)।

विअकल सक [विअकल] चहूँ करना।
विअकल (बाणा)। मअ विअकलमाण
(बाणा)।

विअकला की [विअकला] धमा, धर्मपुता
(बाणा)।

विअर [वि] [द्वीय] तीसरा वि ४६६;
विअय संति २)।

विअकलर न [विअकलर] बाण-विशेष
(मणि ११)।

विअट सक [विअट] १ तीक्ष्ण। २ परि
ध्याय करना। विअटिअ (गुपा १ १
१)।

विअट मर [मट] १ इना। २ मुक्त
होना; 'सम्पदुअ विअट' (गुपा १
१५, ३)।

विअट वि [मट, मुटि] १ इना हुमा। २
मरुत (बाणा)।

विअड पुं [वि] कमाय मोर-विशेष (पाम)।
विअडग पुं [विअडग] बाण विशेष (मणि
१ ८ पञ्च १२५)।

विअडय न [वि] १ मातङ्ग देव में प्रसिद्ध बाण
विशेष (पा १८)। २ मीन, लक्ष्म (पा पञ्च
६६)।

विअर न [विअर] एक विद्याधर-नागर (इअ)।

विअर पुं [विअर] धनुष-विशेष (वि ६४)।
गाह पुं [नाय] गङ्गा (वि ८७)।

विअरो की [विअरी] नगरी-विशेष केरि देव
की राजधानी (हुमा)।

विअर वि [वि] मग बचन दीर कमा की
वीणा पट्टावलेवाला दुअ का हेतु (उप २)।

विअर देवो विअर (वि म ४६ ११ ६८)।

विगिआ की [वि] कमस-रज (वि ३, १२)।

विगिच्छ देवो विगिच्छ (इअ)।

विगिच्छापाय न [विगिच्छापाय] पञ्च-
मोम-विशेष (इअ)।

विगिच्छ की [वि] कमस-रज पय का रज
पण (वि ३, १२; मरका ६ २ १७४ म ४)।

विठ वि [सीमित] सीमा हुमा (वि ११२;
६ ४ ४१६)।

विठि न [वि] बहु बहु करनेवाला
विठिणिय [बहुकर्मनेवाला] बाधित साम
न होने पर बेर से मत में जो धारें हो बीजने
वाला (मर १ टा १—पञ्च १७१ म)।

विठिनी की [विठिनी] १ बिचा इपसी
का पैर (मणि ७१)।

विठिनी की [वि] बहुकर्म (मर ३)।

विठुनी की [विठुनी] कृम-विशेष (हुम
१ २)।

विठुग पुं [विठुग] १ इअ-विशेष ठुं
विठुय का पैर (पाठ पञ्च २ १७; म
१२२; पण १७)। २ म. उअ-विशेष
(पण १७)। ३ बावली नगरी का एक
ध्यान (विने २१ ७)।

विठुग पुं [विठुग] भीमिय कण्ठ की
विठुय एक बाध (उप ३६ ११६, कुअ
१६, ११६)।

सुगिया की [सुगिया] गण-विशेष (सग)।
सुगियायण न [सुगियायण] एक बोध का
नाम (सग)।

सुगी की [सुगी] १ धर्म, पठ (दे २, १४)।
१ धर्म-विशेष 'पठितपुस्तक' (दे २, १४)।

सुगीय पुं [सुगीय] वर्ष-विशेष (सु १
२)।

सुई की [सुई] १ सुल सुई (स ४ २)।
२ धर्म-नाम (सु १)। की की कि
की कि की कि की कि की कि की कि की कि
(सु १ २२)।

सुईर न [सुईर] मधुर-विशेष-नाम (दे २,
१४)।

सुईय पु [सुईय] बोध का, सुल का (दे
२, १२)।

सुईयसुविधि नि [सुईयसुविधि] लघु-सुविधि (दे २,
१४)।

सुईय न [सुईय] मधुर, पठ (दे २, १४) ज
पठन की)।

सुईय नि [सुईय] मधुर, पठ (दे २, १४) ज
पठन की)।

सुईय न [सुईय] सुली यथा, सुली (सग
२२, १४ यथा १४-सु ११२)। २ यथा
की यथा 'न' नि सुलीय विरुद्ध' यथा
यथायथा 'नि' (यथा)। ३ 'यथायथा' यथा
सुल का एक धर्म-नाम (सग)। यथा न
[यथा] मधुर-विशेष एक यथा का नाम
(सग २२)। यथा नि [यथा] यथा-
विशेष को यथायथा (यथा १)। यथायथा
नि [यथायथा] यथा यथायथा यथा (यथा
२२ २ यथा १)।

सुईय न [सुईय] मधुर के यथा का यथा यथा
यथा (सग २२)। यथा की [यथा]
यथायथा (यथा २२)।

सुईय के यथा सुल (सग)।

सुईय की [सुईय] यथायथा यथा की एक
धर्म-नाम यथायथा (सग २)।

सुईय पुं [सुईय] यथा, सुली (सग २, १
४)।

सुईय की [सुईय] यथायथा यथा (दे ४
२१ यथा)।

सुविधि की [सुविधि] १ मधुर-यथा मधुर।
२ सुल का नाम (दे २, २१)।

सुवी की [सुवी] १ सुली, यथा सुली
सुली (दे २, १४)। २ यथा सुली का एक
यथा यथायथा (सु १ २२)।

सुवृत्त पुं [सुवृत्त] १ सुल-विशेष यथा
का यथा (दे ४ ४)। २ यथा यथा की एक
यथा (यथा १) सु २२४)। ३ यथायथा
यथायथा का यथायथायथायथा यथा (सग
४)। ४ यथायथा के यथायथा-यथा का यथायथा
यथायथा (सग ४)।

सुवृत्त पुं [सुवृत्त] एक यथा यथा का यथा
या यथा 'यथा' न यथा यथा सुवृत्तयथायथा
यथायथा' (सु ११ ४२) यथा। यथा
यथायथा।

सुवृत्त सुवी [सुवृत्त] यथा यथा यथा
यथा यथा यथा यथा यथा (सु २
१२)।

सुवृत्त नि [सुवृत्त] यथायथा सुल यथा
(दे २, १४)।

सुवृत्त नि [सुवृत्त] १ यथायथा, यथायथा यथायथा
यथा (यथा १ २, यथा २२)। २ यथा
यथा (यथा २, ११)। ३ यथा यथा, यथा
(यथा)। ४ यथायथा, यथायथा (यथा १४,
१)। ५ यथायथा (यथा ४ ४)।

सुवृत्तयथा नि [सुवृत्तयथा] यथायथा यथायथायथा
सुवृत्तयथा (दे २, १२)।

सुवृत्तयथा सुवी [सुवृत्तयथा] सुवृत्तयथा (यथा
१२१)।

सुवृत्त न [सुवृत्त] यथा यथा (सु १)।

सुवृत्त यथा [सुवृत्तयथा] १ यथायथा, यथायथा यथायथा
यथायथा यथा। २ यथायथा, यथायथा यथायथा।
सुवृत्त (यथा यथा १४ ११२)। यथायथा
यथायथा सुवृत्त न यथायथा यथायथा (यथा
१२१)। यथा सुवृत्त (यथा)।

सुवृत्त नि [सुवृत्त] यथायथा, यथायथा यथायथा
(यथा १४: सु १४ १२ १२)।

सुवृत्त न [सुवृत्त] यथायथा यथायथा (सु
१ १ ११ यथा १११)।

सुवृत्त नि [सुवृत्त सुवृत्त] यथायथा यथायथा
(सु १)।

सुवृत्त नि [सुवृत्त] यथायथा यथायथा यथायथा
सुवृत्त नि [सुवृत्त] यथायथा यथायथा यथायथा
(सु १ ४१ यथा)।

सुवृत्त की [सुवृत्त] १ यथायथा यथायथा
(स २ सु १ २२ सु २२ ११
१)। २ यथा यथायथा (सु १)।

सुवृत्त यथा [सुवृत्त] यथायथा यथायथा
(दे ४ १११)।

सुवृत्त की [सुवृत्त] १ यथायथा यथायथा
सुवृत्त (दे ४ १११)। १ यथायथा, यथायथा
१ १११)।

सुवृत्त नि [सुवृत्त] १ यथायथा यथायथा
सुवृत्त (दे ४ १११)। १ यथायथा, यथायथा
१ १११)।

सुवृत्त न [सुवृत्त] यथायथा यथायथा
सुवृत्त (दे ४ १११)। १ यथायथा, यथायथा
१ १११)।

सुवृत्त नि [सुवृत्त] यथायथा यथायथा
सुवृत्त (दे ४ १११)। १ यथायथा, यथायथा
१ १११)।

सुवृत्त नि [सुवृत्त] यथायथा यथायथा
सुवृत्त (दे ४ १११)। १ यथायथा, यथायथा
१ १११)।

सुवृत्त नि [सुवृत्त] यथायथा यथायथा
सुवृत्त (दे ४ १११)। १ यथायथा, यथायथा
१ १११)।

सुवृत्त नि [सुवृत्त] यथायथा यथायथा
सुवृत्त (दे ४ १११)। १ यथायथा, यथायथा
१ १११)।

सुवृत्त नि [सुवृत्त] यथायथा यथायथा
सुवृत्त (दे ४ १११)। १ यथायथा, यथायथा
१ १११)।

सुवृत्त नि [सुवृत्त] यथायथा यथायथा
सुवृत्त (दे ४ १११)। १ यथायथा, यथायथा
१ १११)।

सुवृत्त नि [सुवृत्त] यथायथा यथायथा
सुवृत्त (दे ४ १११)। १ यथायथा, यथायथा
१ १११)।

सुवृत्त नि [सुवृत्त] यथायथा यथायथा
सुवृत्त (दे ४ १११)। १ यथायथा, यथायथा
१ १११)।

सुवृत्त नि [सुवृत्त] यथायथा यथायथा
सुवृत्त (दे ४ १११)। १ यथायथा, यथायथा
१ १११)।

सुवृत्त नि [सुवृत्त] यथायथा यथायथा
सुवृत्त (दे ४ १११)। १ यथायथा, यथायथा
१ १११)।

सुवृत्त नि [सुवृत्त] यथायथा यथायथा
सुवृत्त (दे ४ १११)। १ यथायथा, यथायथा
१ १११)।

सुवृत्त नि [सुवृत्त] यथायथा यथायथा
सुवृत्त (दे ४ १११)। १ यथायथा, यथायथा
१ १११)।

सुवृत्त नि [सुवृत्त] यथायथा यथायथा
सुवृत्त (दे ४ १११)। १ यथायथा, यथायथा
१ १११)।

सुवृत्त नि [सुवृत्त] यथायथा यथायथा
सुवृत्त (दे ४ १११)। १ यथायथा, यथायथा
१ १११)।

सुवृत्त नि [सुवृत्त] यथायथा यथायथा
सुवृत्त (दे ४ १११)। १ यथायथा, यथायथा
१ १११)।

सूत्रण पुं [वृ] पुत्र्य धारणी (हे १ १०) ।
 ते° देहो ति=ति । आर्यसि चीन
 [चत्वारिंशत्] १ संख्या-विशेष बालीय
 धीर चीन की संख्या । २ देहालीय की
 संख्यावाला (घन ६८) । आर्यसिइम वि
 [चत्वारिंशत्] देहालीयवा ४१ नां (पञ्च ४१
 ४६) । आसी की [असीति] १ संख्या-
 विशेष बस्ती धीर चीन । २ ठिहासी की
 संख्यावाला (पि ४४६) । आसीइम वि
 [असीतिवम] ठिहासीवां (घन ८१ पञ्च
 ८१ १४) । इदिय पुं [इन्द्रिय] स्वर्ग
 चीन धीर नाक इन चीन इन्द्रियवाला प्रसी
 (अ २ ४ ची १०) । ओय पु
 [आस्य] विम्व चलि-विशेष (आ १)
 १) । गउइ की [नयति] विपन्नके कम्मे
 धीर चीन, ११ (घन १०) । जउय वि
 [मयव] विपन्नके ११ नां (कम्प पञ्च
 ११ ४) । गउइ देहो गउइ (मुपा
 ६२४) । वीस, चीस चीन [त्रयसिं
 शत्] ठेहीय वीस धीर चीन (अफ घन
 १८) । वी ना (हे १ १११ पि ४४०) ।
 चीसइम वि [त्रयसिंशत्] ठेहीयवां (पञ्च
 ११ १४८) । वट्टि की [पटि] विच्छेद,
 घट्ट धीर चीन, ११ (पि १११) । बण्ण, कन्
 धीन [पम्मासण्ण] नेपण, पणाय धीर
 चीन, ११ (हे १ १०४ बट्ट घन ७२) ।
 यचरि की [सप्तसि] विहसुर (पि १११) ।
 वीस धीन [त्रयोविंशति] वेस वीस धीर
 चीन ११ (घन ४२ हे १ १११) । वीस,
 वीसइम वि [त्रयोविंशत्] वेसवां (पञ्च
 २ ८२ २१ २१ आ ६) । संम्भ न
 [संसम्भ] प्रसन्न, मन्नाय धीर तावन्नात का
 धाम्य (पञ्च ११ ११) । सट्टि की
 [पटि] देहो वट्टि (अफ ७७) । सीइ
 की [असीति] ठिहासी बस्ती धीर चीन
 (अफ ८१ कम्प) । सीइम वि [असीति]
 ठिहासीवां (अफ) ।
 तंम हक [तंजम्] तेज करण पैनाय बार
 तेज बनना, तीव्र बनना । तेय (पद) ।
 तेज देहो तइय = दुधीय (रंछ) ।
 तंम पुं [तंजस्] १ कथित वीति प्रयाग,
 इका (बना मय; दुका, आ ८) । २ घन

धमिताय (दुमाय सुम १ १) । १ प्रताप ।
 ४ मज्जन्त्य, प्रयाग । २ बत पराक्रम
 (दुमा) । मंत वि [यिम्] तेजनावा
 प्रमान्मुक्त (पण्ड २ ४) । वीरिय पुं
 [वीर्य] मज्ज बलमयी के प्रवीर का वीर्य
 बिरको धामर मयन में केवलज्ञान हुआ ना
 (आ ८) ।
 तेअ न [सोय] बोटी (अन २ ७) ।
 तेअ देहो तेअय (अन) ।
 तेअ पुं [?] टेक लयम् ।
 तेअसि वि [तेअसियम्] तेजनावा तेज-मुक्त
 (मील पण ४ मय महा घन ११२
 पञ्च १ २ १४१) ।
 तेअग देहो तेअय (बीर) ।
 तेअग न [तेअन] १ तेज करण पैनाय ।
 २ उत्तेजन (हे ४ १ ४) । ३ वि उत्तेजित
 कलेजना (दुमा) ।
 तेअय न [तेअस] शरीर-छट्ठाटी सूम्भ
 शरीर विशेष (अ २ १ ५, १ घन) ।
 तेअसि पुं [तेअसिन्] १ मनुष्य वाति-विशेष
 (अ १ १६) । २ एक मन्त्री के पिता का
 नाम (सामा १ १४) । पुत्त पुं [पुत्र]
 राजा कमन्तर का एक मन्त्री (सामा १
 १४) । पुर न [पुर] नगर-विशेष (सामा
 १ १४) । सुय पुं [सुव] देहो पुत्त
 (अन) । देहो तेअसि ।
 तेअय यक [प्र + दीप्] १ दीपना
 बमकना । २ जलना । तेअय (हे ४ ११२
 बट्ट) ।
 तेअयस देहो तंजपास (हम्मीर २०) ।
 तेअयिय वि [मदीत] बसा हुआ (दुमा) ।
 २ बमका हुआ जहीन (वाप) ।
 तंजयिय वि [तेजिच] तेज दिया हुआ (हे
 ४ ११) ।
 तंअसि पुं [तंअसिन्] इकाहु बंध के
 एक राजा का नाम (पञ्च २, २) ।
 तंमा की [तेजा] पण की ठेपनी पाट
 (पुग्ग १ १४) ।
 तंमा की [तंजस्] त्रयोवटी ठिचि (की
 ४ ४ ७) ।

तेआ की [तेवा] पुप-विशेष इच्छ पुप
 'तेमाहुगे म बसखी रामो वीमातकलण-
 संकुपीवि' (टी २६) ।
 तेआ देहो तेअय (अन १४२ पि १४४) ।
 तेआसि पुं [वृ] वृक्ष-विशेष (पण्ड १,
 १—पञ्च १४४) ।
 तेअच्छ न [चैकिस्स] चिकिरसा-कर्म,
 प्रतीकार (अन १) ।
 तेअच्छा की [चिकिरसा] प्रतीकार, इलाज
 बना (मायाय सामा १ ११) ।
 तेअच्छिय देहो तेअच्छिय (पि १ १) ।
 तेअच्छी की [चिकिरसा, चैकिस्सी]
 प्रतीकार, इलाज (कम्प) ।
 तेअज्जग वि [तार्वीयीक] १ तीव्रता । २
 अवर-विशेष, बाड़ा केर धीर-धीर-विशेष
 पर धमेवता अवर, ठिबाय (अन १) ।
 तेअइ देहो तेअसि (सुर ७ २१० मुपा
 ११) ।
 तेउ पुं [तेउस्] १ धान, धानि (अन ६
 ११) । २ देवता-विशेष तेओ-मेरया (अन;
 कम्प ४ २) । ३ धानि-विशेष नामक इन्ध
 का एक लोकापाल (अ ४ १) । ४ ठाय,
 धमिताय (सुम १ १ १) । ५ प्रकार
 ज्योय (सुम २ १) । आय देहो कय
 (अन) । कंय पुं [कान्] लोकापाल देव-
 विशेष (अ ४ १) । काइय पुं [कयिक]
 धानि का बीज (अ १ १) । कय पुं
 [कय] धानि का बीज (पि १११) ।
 ककाइय देहो ककाइय (पण्ड १; बीर
 १) । पयस पुं [प्रस] धानि-विशेष नामक
 इन्ध का एक लोकापाल (अ ४ १) । प्जास
 पुं [प्जसो] ज्यय स्वर्ग (आवा) । लेस
 वि [लेसय] तेओ-मेरयावता (अन) ।
 'लेसा की [लेसया] वय विशेष के प्रयाग
 से होनेवाली धमि-विशेष से उत्पन्न होती
 तेज की ज्वाला (आ १ १; अन ११) ।
 'लेस देहो लेस (पण्ड १०) । 'लेसा
 देहो 'लेसा (आ १ १) । 'सिंह पुं
 [सिह] एक लोकापाल (आ ४ १) ।
 सोय न [सोय] अम धारि से दिया
 बाया कीच (अ २, २) ।

कुमारण का एक नगर, जो ब्राम्हण 'बंमण' नाम से प्रसिद्ध है (सी ११)। पुर म [पुर] नगर-विशेष बंमण (सिंह १)। बंमणया की [स्वममती] स्वम-कण्ड (ठा ४ ४)।

बंमणिया की [स्वममनिका] विद्या-विशेष (बर्नहि १२४)।

बंमणी की [स्वममती] स्वममन कलेवाली विद्या-विशेष (साया १ १९)।

बंमम देवी बंम = स्वम (बुमा)।

बंमिय वि [स्वमिय] १ स्वम किया हुआ ममाया हुआ (बुम १४१; कुमार कण सीप)। २ जो स्वम हुआ हो प्रपञ्च (स ४२४)।

बकक [बका] घुमा बैठना, स्थिर होना। बकक (हे ४ १९; विग)। यदि बककस्स (वि १ १)।

बकक [कम्] सीधे वाला। बकक (हे ४ ८७)।

बकक [कम्] बकना, घाला होना। बककति (सिप)।

बक वि [सिय] रखा हुआ (कुमाद बज्जा १ = बुजा २१७; पाप ७७; चट्टि ९)।

बक [हे] १ मज्जर, प्रसाध समय (हे ५, २४; व ९; बहा वि २ ११)। २ वि. बका हुआ धातु 'बक' सम्बन्धित किया हुई पुरुषों पर (पुर ७ १८२, ४ १९२)।

बकित वि [भाम्] बना हुआ (विग)।

बककक [स्वापय] स्नान करना रज्ज। बककक (भा १२ १)।

बका देवी बय = स्वाय्। यदि बयस्स (वि २२१)।

बागाय न [स्वगान] विद्या, बकना संवरण धारण ध्यानात्मक, वर्षा (हे २, ८१; ठा ४ ४)।

बागयाय क [बागयाय] बकना कील। बह बागयायित (सुह)।

बागिय वि [स्वगित] निक्षिप्त, ध्यानात्मक, ध्यानु (व १, १; पाव)।

बागिय देवा बहम। गगहिं दु [भाहिन्] शास्त्र-नाटक नीकर (गुग १११)।

बागया की [हे] बह, बाँध (हे २ २९)। बाय क [स्वाम] बय की बहुरी को मानना। बर्न बगिबय (व ८१)।

बाय पु [हे] बाह, वसा, पानी के छीरे की भूमि पहाड़ी का फल सीमा (हे २, २४)।

बाया की [हे] ऊपर देवी (पाप)।

बह पुन [हे] १ ठा सीक भूख समूह, भूय बलाय 'बुद्धपुन' (बुजा २८८) 'बिहम' महु बुद्धपुन' (बुद्धपुन ४)। २ ठा ठा ठा-महक, समय बाहमर (धमि)।

बहि की [हे] प्यु जलवर (हे २, २४)। यह पुन [हे] ठा भूय समूह (सिप)।

बाहक वि [स्वक] १ निरस। २ बसिमासी गहि (गुग ४१७ २८२)।

बाहिकम वि [स्वमिय] १ स्वम किया हुआ। २ स्वम निरस। ३ न पुन-बकन का एक दोष मक कर पुन को किया बाटा मणम (गुग २९)।

बाय क [स्वम्] १ परजना। २ बाक्य करना, चित्ताना। ३ बाक्य करना। ४ बोर से नीचास सेना। बह बर्णत (वा २९)।

बाय पु [स्वत] पन, भूय पयोप, जूनी (बाया) कुमाद कप १११)। कीपि वि [जीविन्] स्तन-पाल पर निम्नेवाला बाक (भा १४)।

बाह की [वर्षा] बड़े स्तनवाली (पय)।

बासावि वि [विसारिस्]। स्तन पर फैलेवाला (गह)। सुच न [वृत्त] पर-युध (हे)। हर पु [मर] स्तन का मार का बोध (हे १ १८६)।

बायभय पु [स्वतयय] स्तन-पाल कलेवाला बालक छोटा बच्चा 'निय' बड़े बर्त' पर्याय है वि 'विमर्षि' (पुर १ १७; मज्ज २११)।

बायन न [स्वतन] १ बर्तन परजना (बुप १ २२ १)। २ बाक्य, चित्ताट (बुप १ २, १)। ३ बायन ध्यानाय (पय)। ४ बायनवाला सीध (बुप १ २, १)।

बायय पु [स्वतक] हुपरी नरक-भूमि का एक नरक-स्नान (वेन ९)।

बायकोलुप पु [स्वकोलुप] हुपरी नरक-भूमि का एक नरक-स्नान (वेन ७)।

बायिज पु [स्वनिज] एक नरक-स्नान (वेन ९ २९)।

बायिय न [स्वनिव] १ यय का गर्जन (बका १२; हे २, २७)। २ बाक्य, चित्ताट (बम १११)। ३ पु मनपति देवी की एक बाति (सीन पण १ ४)। कुमार पु [कुमार] मनपति देवी की एक बाति (ठा १ १)।

बायिज क [चोरस्] बुजना बोरी करण। बायिजस्स (भा ७२)।

बायिज वि [स्वतयन्] स्तनवाला (कम्)। बायुज्ज पु [स्वतक] छोटा स्तन (पय)।

बायु देवी बायु (पा ४२२)।

बायिज न [हे] विमान (हे २, २९)।

बाह देवी बाहक (बम ११; वा १ ४; बज्जा २)।

बाह न [स्वम्] स्तन का बह। कीपि वि [कीपिन्] छोटा बच्चा (गुग ११९)।

बाय क [स्वापय] रज्जना, बपी करना। बाय (हि ८१)।

बायपण न [स्वापण] म्याध म्यहन (बुज ११७)।

बायिज वि [स्वापिय] रज्जना हुआ म्यत (सिप)।

बाय क [स्वम्] मर्हकार करना। कयस्स (बुप १ ११ १)।

बायमर पु [हे] यकोपा गावरी के सपीप का एक इन्धन का सीन (सी ११)।

बायिज वि [हे] विमूढ (हे २, २४)।

बाय क [स्वयम्] बायकन करण धातु करण, बकना। बयस्, बयु (वि १ ८, गा १ २)। यदि बयस्स (गा ११४)। हेह, बयु (पा ११४)।

बाय वि [स्वत] म्यात मयुर (हे १ १)।

बाय पु [स्वत] सुनि स्तन पुन-मर्तन (बमि ११; स ४४)।

बायन न [स्वतन] ऊपर देवी 'बुद्धपुन' बंमणमण्णायि एगट्टिपति एया' (बाय २)।

पाळी की [स्याली] पाळ-पाळ हकी बटलोही
(ठा १ १ मुना ४८०)। पाग बि [पाक]
हकी में पचावा हुमा (ठा १ १)।
पाय एक [स्वापय] १ स्थिर करना। २
रचना। पाय (उप २ ३२)।
पायवा की [स्वापय] हाकल-लिवासी एक
मुहस की (छाया १ ३)। पुच पु [पुत्र]
स्वाध्या का पुत्र, एक बैन मुनि (छाया १
३ प्रेत)।
पायन न [स्वापय] न्यास पायन (उ
२१३)।
पायय पु [स्वापय] समर्थ हेतु, स्वपय
हाकल हेतु (ठा ४ १—यन २३४)।
पायर बि [स्वायर] १ स्थिर रखेना। २
पु लोकेत्य प्राणी केन ससर्गस्यवाला—
प्रकृति पायी पायी बलसति पायि का कीच
(ठा १ २ जो २)। ३ एक विशेष-नाम
एक मीनर का नाम (उप २३० टी)। कय
पु [काय] एकेनिय कीच (ठा २ १)।
पाम, नाम न [नामान] कर्म-विरोध
स्वाध्यास-प्राप्ति का कारण-मुक्त कर्म (पंच
१ सम १०)।
पासग [वे] दुःख (पाय टिपण—य
२१ १)।
पासग पु [स्यासक] १ बर्णन पासरी
पासय पु खेडा (पाया १ २—यन २४)।
२ बर्णन के पासकर का पाय-विरोध (बीच
पुन छाया १ १ टी)। ३ घस का घासए-
विरोध (यन)।
पाह पु [वे] १ स्वाय, बयह। २ बि
मस्ताय पमीर बन-बाबा। ३ बिस्तीर।
४ टीर, तन्वा (वे ३, १)।
पाह पु [स्वाय] पाह उवा यहई
का घट्ट वीमा (पाय बि १३१२ छाया
१ ८, १४ से ४)।
पाहिज पु [वे] पायाय स्वर-विरोध (पुया
१४)।
पिअ बि [सिअ] एह हुमा (उ २०; बिने
१ ३३, मणि)।
पिअ केो डिइ (उ २, १० पउर)।
पिनिपी की [वे] कर्म-विरोध 'पिनिपिअ-
पउर' (उमय १४१)।

पिप एक [पु] पुन होना संतुष्ट होना।
पिअ (प्राय)। पयि बिपिहिउि (प्राय =
२२ टी)। संड बिपिअ (प्राय = २२
टी)।
पियगइ न [वे] १ मित-बाद, मीत में किया
हुमा बरवावा (उप २ १ १२)। २ फे
पुत्र में किया बाठा संवात बय पयि
के बहिउ भाग में लवाई जाय बोइ (पयस
१० बिने १४३१ टी)।
पियगइ पुन [वे] १ छिद्र। २ गिरने के बाद
दुस्त (लीक) किया हुमा यह मान (माथा
२ १ १२)।
पिअ केो यंड = स्वेयं (संवाय ४३)।
पिण्या बि [स्वान] कठिन जमा हुमा (हे
१ ७४ २ २३ से २, १)। केो भीग।
पिण्या बि [वे] १ स्वे-यडिउ बयबला।
२ दयिमानी पय-युक्त (वे ४ १)।
पिअ बि [वे] गविउ दयिमानी (पाय)।
पिअ केो पिप। पिअइ (वे ४ १३८)।
पिप एक [सि+गइ] गल पाया।
पियर (हे ४ १०३)।
पिअ पु [सिअ] कर्म-विरोध (पुअ १३
२२)।
पिअ एक [सिअ] पाय करता येवा
करता। हेइ बिमिउ (यन)।
पिमिअ बि [वे सिमिअ] स्थिर, निबल
(वे २ २०) से २ ४१ = २१ छाया १
१; पिपा १ १ पयइ ४ ४ २ ३ बीच
पुन १ पुप १ ३ ४)। २ मयद, बीमा
(पाय)।
पिमिअ पु [सिमिअ] एवा दयमकृपिअ
के एक पुन का नाम (यन १)।
पिमस एक [सिअ] १ बाइ करता।
यक पाइ होता। पिमस (प्राह १२)।
पिर बि [सिअ] १ निबल निबलम (पिपा
१ १; सम १११; छाया १ ७)। २
निमय संपन (उप ७ ३३)। नाम
'नाम न [नामअ] कर्म-विरोध निबके
जब से कय हकी पायि प्रथमों की स्थिती
होटी है (कर्म १ ४३; सम १०)।
पिअिया की [पिअिय] कर्म-विरोध
सर्व की एक पायि (बीच २)।

पिरणाम बि [वे] बल-विउ बल-मयतक
(वे २ २०)।
पिरणेतस बि [वे] मल्लि, लंबस (पह)।
पिरसीस बि [वे] १ निर्भीक निर। २
निर्भर। ३ जियने मिर पर कय बिया हो
बह (वे २ ३१)।
पिरिस पु की [स्वेयं] स्थिरता (यन)।
पिरीकन न [सिरीकरय] स्थिर करना इह
करना बमला (पा ३ १५५ १६)।
पिअ बि [वे] पुन (यनम विजुअन)।
पिअिअ की [वे] पाय-विरोध—१ दो मोड़े
की बनी। २ दो लहर पायि से नाम यन
(पुप २ २ ३२ छाया १ १ टी—यन
४३ मीन)।
पिअिअिय एक [पिअिअिय] 'पिअ बि'
प्रायन करता। बह बिअिअियत (पिपा
१ ७)।
पिअिया पु [सिअिय] बल-विपु (बिने
पिअिय) ७ ४ ७ ३, सम ४३१)। संक्रम
पु [संक्रम] कर्म-प्रार्थनों का प्रायस में
संक्रम-विरोध (पंचा २)।
पीअ पुअ की [वे] कर्म-विरोध (उप ३६,
२२)।
पिअ पु [सिअ] बलसति-विरोध (यन)।
पी की [की] बी, महिला माटी पीअ
(हे २ १३ कुमा प्रापु १३)।
पीअ केो पिअन (हे १ ७४ ३ १ २१
हुमा पाय)। 'पिअि की [पिअि] निअ
पिअ-विरोध (ठा २, बिने २३४ जट ३३
३)। डि की [डि] यनम पिअ-विरोध
(यन १३)। 'पिअ बि [पिअि] तयलाडि
पिअ बला (बिने २३३)।
पु अ पिअकार-युक्त दयय (पिअ ४१)।
पुअ बि [पुअ] निअपी सुवि की बई हो
बह, प्रसवि (वे = २०; बस २; मणि
१ ७)।
पुअ केो पुअ। पुअ (प्राह १०)।
पुअ की [पुअि] स्तन कुल-कीर्तन (कुमा-
बीच १ पुअ १ १ ३)।
पुअिया पु [पुअिया] अर्वा-बचन (बिअ
७४४)।

घोडेय देवो पाडेय (अ ७२८ टी) ।
 घोभा बेवो घुणा (हे १ १२३) ।
 घोच न [स्तोत्र] लुपि लव (हे २ ४४
 घुना २१६) ।
 घोत्तु देवो घुप ।
 गोम } दु [स्तोम क] 'न' न' धावि
 गोमस } निरलक धम्म का प्रयोग, 'ज्य

न'कार हति य धमपणा गोमया हुंति (इह
 १ विंते ६६६ टी) ।
 गोर बेवो घुप (हे १ २३४ २ ६६) पठम
 २ १९ से १ ४२) ।
 गोर वि [दे] ह्य से विस्तीर्ण धम न पोस
 (हे २, ३ बग्गा ३६) ।
 गोस पु [हे] बल का एक षेठ (हे २, ३) ।

गोव } वि [स्तोक] १ धम बोझ (हे
 गोवाग } २ १२३; उका का २७ घोव
 २३६ विंते १ ३) । २ पु समम का एक
 परिमाण (अ २ ३ मय) ।
 गोह न [हे] बय पणम्म (हे २, ३) ।
 गोहर पुंकी [वि] बलसवि-विगीर बुहर का
 वेह सेहुं (घुना २ ३) । की 'टी' (अ
 १ ३१ टी गो १ ; बर्ग ३) ।

॥ इम विरिपाइअसहमहज्जग्गम्मि कयापउसइउंफलणो
 बज्जोसहमो वरंभो समतो ॥

द

द पु [हे] वल स्वामीय ध्यज्जन-वर्ण विरोध
 (प्राप प्राप्ता) ।
 दम्मप्यर पुं [दे] धाम-स्वामी पाव का
 धविगति (हे २, ३६) ।
 दअरी की [वि] घुप, मरिप, वाक (हे २,
 ३४) ।
 दइ की [हति] मरक बर्न-निमित्त वल-पाव
 (धोय ३८) ।
 दइम वि [हे] पीठ (हे २, ३३) ।
 दइअ पुंकी [हतिअ] मरक बर्न-निमित्त
 वल-पाव बगड़े का बना हुआ बइ पैना
 जितमें पाणी भरकर बाँटे हैं 'बएण
 बलिण्णा वा' (विं ४२) । की आ (सकु
 १२२ विग्गा १४) ।
 दइम वि [हवि] १ मिय, प्रेम-पाव
 'बान्त्तो बरकापिणोदरयो' (पुर १ १७३) ।
 २ समीठ, बादिमठ, 'धम्मण मणोदर्य
 ईवणमवि बुल्लई मने' (पुर १ २१८) ।
 ३ पु वति स्वामी मर्ग (पाप घुमा) ।
 यम वि [वर्ग] १ धम्मज विं १ २ पु
 पति बर्ग (बक ७७ ६२) ।
 दइमा की [व्यति] की मिया, पलो
 (हुमा; महा गुर ४ १२६) ।

दइम पुं [दैन्य] धानम मयुर (हे १ १३१;
 कुमाप पाप) । शुच पुं [शुच] शुच
 शुवाचार्य (पाप) ।
 दइम न [मिन्ध] धीनता, पटीबपन पटीनी
 (हे १ १५१) ।
 दइम पुंन [वेव] देव भाग्य, मरुट, प्रारम्भ
 पुर्न-कृतकर्म (हे १ १२३ घुमा महा
 पठम २८ ६) । 'ध्वा कुविपो बरनी
 पुरिअ कि हणए सखेण' (पुर ८, १४) ।
 ज, प्य पुं [ह] ज्योतिषी, ज्योति-
 राक्ष का विज्ञान (हे २, ८१ वज) । बेवो
 वेव = देव ।
 दइमय न [वेव] देव वेवता (पय २ १
 हे १ १२१ घुमा) ।
 दइमि वि [वेविक] देव-संज्ञानी दिव्य
 लयम (स ३ ६) ।
 दइम बेवो दइम (हे १ १२३ २ ६६)
 कुमाप वल ६३ ४) ।
 दइति (ही) म [त्राग] शीघ्र, बल्ही
 (प्रा ६३) ।
 दइर } न [बुकोहर] रोप-विरोध,
 दइर } नमोद, पामि से पेठ का घूमना
 (पाय १ ११ विना १ १) ।

दओमास पुं [दकबमास] लवण-समुद्र
 में स्थित बेल्बेर-नागपत्र का एक भावाह-
 पर्वत (इक) ।
 दंटा बेवो दाटा (नाट—मासरी ३६) ।
 दंति वि [दंति] बड़े रीतगला जिसक
 बालु (नाट—बेड़ी २४) ।
 दइ लक [वण्डय] सवा करना निग्रह
 करना । कमर दइज्जव (प्रा १६) ।
 दइ पुं [दण्ड] १ नीक-हिंसा प्राण-नाश
 (सम १ छापा १ १ अ १) । २ धरापानी
 की धरपत्र के अनुसार शारीरिक या धार्मिक
 शरक सजा निग्रह, वसन (अ ३ ३ प्रा ५
 ६३ हे १ १२७) । ३ बाड़ी मटि (अ
 ३१ टी प्रा ७४) । ४ कुह-वतक,
 बडिआ-वतक (धापा) । ५ मत बलन पीर
 टीर का मनुम व्यापार (अ १ ६, ६
 ४६) । ६ धन विरोध (विं) । ७ एक बेल
 उपासक का नाम (संवा ११) । ८ पुन
 परिमाण-विरोध १६२ घुपन का एक नाप
 (इक) । ९ पाका (अ २ ३) । १० पुन,
 शीघ्र, लरकर, पीर (पण्ड ११४ अ २, ३) ।
 दइ पुं [दइ] बल-विरोध (विं) । कुमा
 न [सुच] मटि-मुह (धापा) । ग्याया पुं

["नायक"] १ ब्रह्म-वादा व्यवस्थापिचार
कर्ता । १ विचारिणि वेतालौ प्रतिनिधय
सैन्य वा नायक (पश्य १ ४ वीर्य कथा
छाया १ १) । जीह्वी की ["सीति"] सीति-
नियेव, धनुषाचल (छ १) । यह पुं ["पय"]
मार्ग-नियेव सीधा मार्ग (सुप्र १ ११) ।
पासि पुं ["पासिन्", पारिन्"] १ ब्रह्म
वादा । २ कोटवाच (छा २ ४) ।
पुंक्षुपय न ["प्रोक्षन्तक"] ब्रह्मकार भव्य
(बं ३) । भी वि ["सी"] ब्रह्म से इतने
बाला ब्रह्म-सीव (भाषा) । छलिय वि
["छल"] ब्रह्म बेनेवाला (बन १) । बह पुं
["पति"] वेताली वेतालपि (सुप्र ३ २१) ।
बासिग, बासिय पुं ["बाह्यपाशिक"]
नीटवाक (सुप्र १ ३३; स २६३, क १ ११
टी) । बीरिय पुं ["वीर्य"] राजा मरत के
मरत का एक राजा जिसकी धारत-मूह में
केमलजल उत्पन्न हुआ का (छा १) । यस
पुं ["यस"] एक प्रकार का नाम (कपु) ।
तव्य वि ["तव"] ब्रह्म की तव्य सम्या
(बन्य वीर्य) । तव्य वि ["तविक"]
पैर की ब्रह्म की तव्य सम्या पैरलेवाला
(वीर्य कस छा ३, १) । "रिक्लिता पुं
["रिक्लि"] ब्रह्मवाणी प्रतीहार (मिह्व १) ।
राण्य न ["राण्य"] दक्षिण ध्यात का एक
प्रतिष्ठ बंक्क (पञ्च ४१ १ ७६, १) ।
रासियि वि ["रासिक"] ब्रह्म नी तव्य
पैर पैसा कर बैठेवाला (कठ) । रेवो
द्वेग्य ईहव ।

ईह्व पुं ["वृह्व"] १ ब्रह्म-नामक वेतालपि (बन
१) । २ जगत् कलक "जिह्वोत्पन्नं जिह्वुद
निर्गं धनुषवन्तसि बह्व कप्य" (पञ्च १ ३६
सिंह १ का विचार २३७) ।

ईह्व } पुं ["वृह्वक"] १ बह्वं दुराकल मगर
ईह्व } वा एक राजा (पञ्च १ १६) ।
२ ब्रह्मकार नायक-प्रतिष्ठ शम्भाट-नियेव
(छा) । ३ नमस्ति धारि नीवील ब्रह्मक
वर्तनियेव (बं १) । ४ न. दक्षिण मार्ग
वा एक प्रतिष्ठ बंक्क (पञ्च ११; २३) ।
"निरि पुं ["निरि"] बंक्क नियेव (पञ्च ४२
१४) । रेवो ईह्व (बन ११) बह्व १ गृह्य
२, २ पञ्च ४ ११) ।

ईह्वय न ["वृह्वन"] ब्रह्म-करत रिक्ता (सुप्र
२ २ ४२; ४३) ।

ईह्वपासिना पुं ["वाह्यपाशिक"] कोटवाक
(सोह्व १२७) ।

ईह्वसहस्र नि ["वृह्वसहस्रिक"] ब्रह्म बेनेवाला
मन्यवही (बन १) ।

ईह्वानन न ["वृह्वन"] सवा करत मिह्व
करत (भा १४) ।

ईह्वविधि नि ["वृह्विध"] जिसको ब्रह्म विनावा
गया ही बह्व (वीर्य ३२७ टी) ।

वृह्वि नि ["वृह्विन्"] १ ब्रह्म-पुच्छ । २ वं
ब्रह्मवाणी प्रतीहार, बरवाक (सुप्र ४ ३) ।

वृह्वि केवो वृह्वी (सुप्र ४४) ।

वृह्वि वं ["वृह्विक"] १ साम्य राजा (पञ्च
२६३) । २ राज कलापुच्छ पुच्छ (पञ्च २१) ।

३ ब्रह्मवाटिक कोटवाक (बनसं ३३६) ।

वृह्वि नि ["वृह्विध"] जिसको सवा ही बह्व
हो बह्व कैरी (सुप्र ४२२) ।

वृह्वि नि ["वृह्विक"] १ ब्रह्मनामा । २ पुं
राजा मरत (बन ४) । ३ ब्रह्म-वादा, व्यवस्था
विचार-कर्ता (बन १) ।

वृह्विमा की [वि] सेक पर सवाई जाती राज
सुत्रा जगत्, मोहर (बह्व १) ।

वृह्विश्चि नि [वि] धन्यमयित, "वैविश्चियो
समस्तो तमव्यप्रेत नीलेव" (ज १४४ टी) ।

वृह्विमी की [वि वृह्विनी] राजी राज-मली
(सिंह २) ।

वृह्वि नि ["वृह्विन्"] १ ब्रह्म से निर्गुण ।
२ क. राजा करके बल्लु किया हुआ ब्रह्म
(छाया १ १—पञ्च ३७) ।

वी की [वि] १ दूर-जगत् । २ वीसा हुआ
बल्ल-कुम (बे ३ ३३) । ३ वीसा हुआ नीले
बल्ल (छाया १ १६—पञ्च १२६; पश्य १
३—पञ्च ३३) ।

वैत नि ["वैतन्"] बल कर्ता बला (सिंह
३६४) ।

वैत पुं ["वाय्"] वी कवाक वेता (वैवीर्य
३) ।

वैत नि ["वाय्"] वी कवाक वेता (वैवीर्य
३) ।

वैत पुं ["वि"] परत का एक पैर (बे ३, ३३) ।

वैत नि ["वाय्"] १ विजय वपन किया गया
ही बह्व, बत में किया हुआ "वैतिय विरोहा

वैतिय वीर्य" (सुप्र १६३) । २ विरोधिय
(छाया १ १४४ क १) ।

वैत पुं ["वैतन्"] वीर्य बल्ल (सुप्र ४ कपु) ।

वृह्वी की ["वृह्वी"] वीरा बल्ल (वैतु) । वृह्व
पुं ["वृह्वन्"] धोक्त धोक्त, होट (पाष) ।

वाहन न ["वाहन"] १ वीर्य धाक कण
बल्लन करत । २ वीर्य धाक करने का कण,
बल्लन (पश्य १ ४ निह्व ३) । पञ्चसाम्य
न ["महासम्य"] वही पूर्वोक्त धर्म (सुप्र १
४२) । वाय न ["वाय्"] वीर्य का बला हुआ
वाय (भावा २ ३१) । पुर न ["पुर"] नगर
नियेव (बन १) । पृथोव्य न ["महावन"]
केवो धावाय (बन १) । माह्व पुं ["माह्व"]
हुल-नियेव (बं २) । बह्व पुं ["वह्व"]
बल्लपुर नगर का एक राजा (बन १) ।

बह्विया की ["वह्विमिक"] जगल-नियेव
(व ७) । वाणिज्य न ["वाणिज्य"]
हाथी-वीर्य वीर्य का व्यापार (बन २) ।

रा पुं ["व्यर"] वीर्य का कम करेवाला
रिक्ती (पण १) ।

वैतकर पुं ["वैतकर"] वीर्य बल्लेवाला
रिक्ती (सुप्र १६३) ।

वैतकुंभी की ["वैतकुम्भी"] बल्ल, बंहु (वैतु
४१) ।

वैतवक्त्र पुं ["वाय्वाक्त्र"] बल्लकर्ता राजा
(सुप्र १ १ २२) ।

वैतवज्र न [वि वृह्वपवन] १ बल्ल-पुच्छ । २
बल्लन वीर्य धाक करने का कण (बे २, १२)
छा २—पञ्च ४९ ज्ञा पञ्च ४) ।

वैतवज्र पुं [वि वृह्वपवन] बल्लकर (बन
१ २) ।

वैतसोह्व न ["वैतसोह्वन"] बल्लन (पञ्च
१६ ३७) ।

वैतछ पुं [वि] राज-नियेव बाल कर्तने
का हस्तिवार (सुप्र ३३६) । की की
(कप्य १ ३६) ।

वैत पुं ["वैतन्"] १ हस्ती हाथी (पाष) ।
२ परत-नियेव (पञ्च १६, २) ।

वैतिय पुं [वि] लल्लन बल्लनीत बल्ल (बे
३, ३४) ।

वैतियि नि ["वाय्मियि"] विरोधिय
वैतिय-रिक्ती (वीर्य ४६ का) ।

कवड दग्गन दग्गमाणा (नाट-मासती
३ ; पि २२२) ।

वृह पुं [वृह] छर, वडा बन्नाय्य मीन
छरोवर (अप अना शाय्या १ ४-पत्र
२१; गुया ११७) । कुसिया की
[कुसिया] बन्नी विरोप (पण्य १) । वड
[वड] की [पती] लदी-विरोप (अ २
१-पत्र ८ ब ४) ।

वृह रेवो वड (हे १ २१२ ब १२ पि
२१२; पत्र ७८ २३; से ११ २४ प्रप
से १४ १६ ३ ११) १ ४ पत्र ८
४४ प्रप) ।

वृहण न [वृहण] १ वड, मल्लीकण १ २
पुं, अरिग बडि (पण्य १ १) अ व २२
गुया ४७४-मा २८) ।

वृहणी की [वृहणी] विद्या-विरोप (पत्र ७
११८) ।

वृहोली की [वृ] स्थानी बलिया बरिया
(हे ३, ११) ।

वृहायण वि [वृहक] जसनेवाला (घण्य १)

वृदि न [वृधि] वही वृष का बिकार (हा १
१ शाय्या १ १ प्रप) । पण्य पुं [पन]

बलि-पुत्र अविश्य जना हृषा वही (पण्य
१७-पत्र २२२) । सुह पुं [सुह]
१ दीप-विरोप (पत्र २१ १) । २ एक
नगर (पत्र २१ २) । ३ पर्वत-विरोप
(राज) । बण्य वड पुं [पर्व] १
एक पत्ता, गुन-विरोप (पुत्र १२) । २ गुन-
विरोप (पौता सम ११२ पण्य १-पत्र
११) । वाहय की [वासुका] बल्लरति
विरोप (जीव १) । वाहय पुं [वाहन]
गुन-विरोप (महा) । सर पुं [सर] बास-
इत्य-विरोप मत्तार, (हे ३ २२ ३, ११) ।

वृदि वि [वृधि] १ वही 'कुहावरीय मण्डण'
(बर्मेन २३), 'अर्मेन वडी' (पुत्र ५, ११) ।
२ देता लगावार दीन दित का बजवात
(संजीव २८) ।
वृदिउप न [वृ] तबनोत मैनुं मकन (हे
२, १२) ।

वृदिपु पुं [वृ] वृन-विरोप बरिय बेंब मा
कैप वा वेड (हे ३ १२) ।

वृदिप रेवो वृदिप (मा-बेरी १७) ।

वृदिस्वर } पुं [वे] बरितर, वही पर की
वृदिस्वार } मत्तार, बाध-विरोप (हे ३,
११) ।

वृदिपु पुं [वे] कवि वातर (हे ३ ४४) ।

वृदिय पु [वे] पलि-विषय 'बं तावयति
विदियमोर् मरति अरोप वि के वि मोर'
(पुत्र ४४७) ।

वृधक [वृ] देता लखन करना । वृध देह
(महि हे २ २ ३) धावा महा कस) ।
महि वृह वृहमि वृहमि (हे ३ १७
धावा) । कर्म विवह (हे ४ ४१८) । वृध
विह वृह वृध, वृधमाय (पुत्र १ २२२;
वा २३ ४४४ हे ४ १७२ वृह १ शाय्या
१ ४-पत्र १८१) । वृध दिव्य,
विज्यामा दीपमाणा (वा १ १) सुर ३
७२१ २, सम १२; गुया २ २ मा
११) । वृध वृध वृध वृध (मि
१ १ पि ४८७ पुत्रा लव) । वृध-वृध
(पत्रा) । वृ धायक, वृध (पुत्र १ ११
गुया २३३ ४४४ २३२) । वृध, वृध
(मर) (हे ४ ४४१) ।

वृध रेवो वृध । वाहय न [वृधालक]
कस से बीसा वास (मा १३-पत्र १८) ।

कवड पुं [कवड] पानी का छोटा वडा ।

कुंम [कुंम] कस का वडा । 'वृध
पुं [वारक] जस का पात्र-विरोप (मय
१३-पत्र १८) ।

वृध रेवो वा ८ वावर (हे ३ १) ।

वाह रेवो दाह = वर्य, वाह (विदे ८४४)
कर्म वाह (विदे ४१) । कवड, वाह
ज्याय (कय) ।

वाह पुं [वृ] प्रपिप, वाजिनदार, बमाल
करनेवाला (हे ३, १८) ।

वाह पुं [वाय] वाह, जस (शाय्या १
१-पत्र १७) ।

वाह वि [वायि] वडा जेवाला (वा पु
१११) ।

वाह वि [वृदि] विज्यामा हृषा (विदे
१ २२) ।

वाह पुं [वायि] १ पैपु संपति का
विदेवार (अ व ४७-वडा) । २ कीक
जमान-वीथी (बय्य) ।

वाहज्याण रेवो वाह = वर्य ।

वाहय न [वृयक] पाणिग्रहण के समय
वर-वपू की बिया बाठा इत्य (विदि ४१६) ।

वाह वि [वाय] वावा बेनेवाला (महा) १
गुया १११) ।

वाह रेवो वा = वा ।

वाओययि वि [वाओवरिक] बनोवर रोप-
वावा (मि १ ७) ।

वाकल्य (अप) रेवो वृकल्य । वाकल्य
(प्राज्ञ ११६) ।

वाप रेवो वाह (हे १ २१४) ।

वाडिम न [वाडिम] कस-विरोप मत्तार
(महा) ।

वाडिमी की [वाडिमी] मत्तार का वेक (मि
२४) ।

वाडगासि रेवो वृडगासि (बर्मेन १ ४१ टी) ।

वाडा की [वृडा] वडा वीथ कस-विरोप
बीमक वृड, वाड (हे २ ११ ; गवड) ।

वाडि वि [वृट्टिम] १ बज्जनाला । २ पुं
विहक पण्य (विरी ४१) । सुपर, वृडक
'कि वृडीममरीयो नियर वृह केवरी विह'
(पत्र ७ १८) ।

वाडिमा की [वृ] वाडी वृष के नीचे का
भाग समु पुं वृडी के नीचे या वृडी पर के
बाल (हे २, १ १) ।

वाडिआडि की [वृट्टिआडि] १ वाडा
वाडिआडि की वंकि । २ वृन-विरोप
(वृह ३; वीथ) ।

वाण पुं [वान] १ बाल कछन श्याम
'एए हर्षति शण्य' (पत्र १४ २, ८ कय)
प्राप् ४८ २७ १७२) । २ हाथी का बर
(वाय) वड गवड) । ३ की बिया काय वृ
(गवड) । विरय पुं [विरत] एक पत्ता
(गुया १) । सासा की [शासा]
सत्रामार (टी ८) ।

वाणनराय न [वाणनराय] बर्मेन-विरोप
विदे के वड रेवो की वृषा नदी होती
है (रय) ।

वाणपादिमिया की [वाणपादिमिया] बाल
कछन वर्यदे 'देवद विज्यामी बय्यमा
देववारि वर । वाणपदिमिती वा देव
का वाणपादिमिया' (बर्मेन ७३७) ।

न [मासुप] देव दीर मनुष्य संवर्णी हवी
नती का विरसे बरुन हो ऐसी कथा-बालु
(क २)।

विष्णु न [विष्णु] १ हैला तीन विन का
नमस्कार अथवा (संशोध २)। २ वि देव-
सम्बन्धी 'विष्णो मनुष्या य विष्णवा ज्ञ
वाया विविहाविमायिवा' (गुण १ २ २
१२)।

विष्णु केो वृषभ (गुण १११)।

विष्णु केो वृष 'मनोह विष्णुसंस्तुति' (दुप्र
११२)।

विष्णुवाग पु [विष्णुवाक] ली की एक बाति
(मरु ११)।

विष्णुवासा की [वे] नमस्कार हैम-विरोध
(१२, १३)।

विष सक्त [विष्] १ नहना। २ प्रतिपादन
करना। विषह (वर्ग)। वरुह. विस्समाज
(पत्र)।

विष दु [विषा] एक देव-विमान (वेदक
१११)।

विष नि [विषय] विषा में जलज (घे २,
३)।

विषभा की [विषय] वलर, नाराज (वरु १)।

विषाद केो [विषा-दि] (दुष्क २ टी-पत्र
७)।

विषा } की [विषा] १ विषा, पुं मावि
विषि } न विषाद (नरु प्रादु ११३)
विषी } नहा गुण २१७ कण्ड १ ४

६ ११ क)। २ प्रीक्षा की (वि १ १२)।

अक्ष न [अक्ष] विष्णु की का वरुह (घ
२१)। कुमरी की [कुमारी] हैम-
विरोध (गुण ४)। कुमार पु [कुमार]
नमस्कार हैम की एक बाति (वर्ण २
टी)। कुमारी केो कुमरी (नहा गुण
४१)। गम पु [गम] विष्णु-हली (घे
२ १: २ ४१)। गहद पु [गहमेन्द्र]
विष्णु-हली (वि ११३)। अक्ष केो अक्ष
(गुण २२१ नहा)। अक्षयाक्ष न [अक्ष-
याक्ष] १ विष्णु की का वरुह। २ ज-विरोध
(मि १)। अर पु [अर] वेदक वेदक
करनेवाला वरु (मग १३)। अरुा केो

अरुा (उप ७१५ टी)। अरुिय केो
अरुिय (ज्वा)। डाह पु [डाह]
विष्णु में हैम-वाला एक वरु का प्रकाश,
विषमें मोष धम्माकार दीर अर प्रकाश
दीवडा है य वरु की कलनों का वरुह है
(मग १, ७)। पुत्राय पु [अनुपाव]
विष्णु का वरुह (मरु १)। इति पु
[इति] विष्णु-हली (गुण ४८)। वाह
केो वाह (मग १ ७)। वि पु [वावि]
वेद वरुह (दुष्क २)। देवडा की [देवडा]
विष्णु की वरुहारी केो (रंगा)। पाक्सि
पु [प्रोक्षि] एक प्रकर का वातप्रत्य
(वीर)। माज पु [माज] विष्णु
(अर वीसा कण्ड विष्णु १ १)। मरु न
[मात्र] धम्मा वरुह (अ ७४६)। मोह पु
[मोह] विष्णु का प्रम (विह
१२)। पचा की [पचा] वेदक वरुह-
हली (घ ११३)। पचिय नि [पचिय]
विष्णु में विरोधवाला (ज्वा)। वीय पु
[व्याघ्र] विष्णु का प्रकाश (विष्णु १
२)। वह पु [वह] विष्णु-का नार
(पत्र २ १)। वाह पु [वाह]
विष्णुवा विष्णु का वरुह (घ ११३)।
वेरमाज न [वेरमाज] हैम वरुह को
पातने का एक विष्णु-विष्णु में वरुह-वाले
का परिमाण करना (वर्ग २)। वरुय न
[वरुय] केो वेरमाज (वीर)। सोरिय
पु [सोरिय] स्वस्तिक-विरोध (वीर)
कोरियय पु [कोरियय] १ स्वस्तिक
विरोध वरुह-वाले स्वस्तिक (मरु १ ४)
२ व. एक देव-विमान (घम १)। ३ वरुह
वरुह का एक विष्णु (अ)। इति पु
[इति] विष्णु विष्णु विष्णु में विष्णु वरुह
वाले वाह हली। इति-वह पु [इति]
वह पु [इति] विष्णु में विष्णु हली के वातप्रत्य
विष्णु-वरुह. वे वाह है-पचोत्तर, नील
वरुह गुहली वरुह-विष्णु. दुष्क, नाराज,
वरुह दीर वेदक-विष्णु (अ ४)।

विसेम पु [विगिम] विष्णु विष्णु-हली
(नरु)।

विसे नि [हर] देवने वीय प्रत्य मान
का विष्णु (वर्ग ४१)।

विसे
विसे
विसेमाय } केो वरुह = वरु।

विसेमाय केो विसे।

विसे केो वरुह = वरु।

विषा म [विषा] वी प्रकाश (वि १ २७)।

विषि की [विषि] हैम वीरुह (वि २, १११)
गुण)। म नि [मन] हैम-वाले
वीर (गुण)।

वीय केो वीय = वीय (ना ११४ २४७)।

वीय केो वीय (गा ११३)।

वीयमाज केो वा = वा।

वीय नि [वीय] १ रं वीय (प्रादु ११३)।
२ दु-विष्णु, दुष्क (छाया १ १)। ३ वीय
मन (अ ४ २)। ४ वीय वरुह वीय-वरुह
(विष्णु १ २, मरु)।

वीयार पु [वीयार] वीय का एक विष्णु
(कण्ड अ ४ २४ २२७ टी)।

वीयक [वीय] पुन [वीयक] वरुह विरोध
वीयक [विष्णु]।

वीय केो विष्णु = विष्णु। वरु. वरुह-विष्णु
विष्णु वीय (गुण १ २ २१३)।

वीय क [वीय] १ वीयला वीय-वरुह।

२ वीय-वरुह। ३ वीय-वरुह। ४ वीय-वरुह।

५ वीय-वरुह। ६ वीय-वरुह। ७ वीय-वरुह।

८ वीय-वरुह। ९ वीय-वरुह। १० वीय-वरुह।

११ वीय-वरुह। १२ वीय-वरुह। १३ वीय-वरुह।

१४ वीय-वरुह। १५ वीय-वरुह। १६ वीय-वरुह।

१७ वीय-वरुह। १८ वीय-वरुह। १९ वीय-वरुह।

२० वीय-वरुह। २१ वीय-वरुह। २२ वीय-वरुह।

२३ वीय-वरुह। २४ वीय-वरुह। २५ वीय-वरुह।

२६ वीय-वरुह। २७ वीय-वरुह। २८ वीय-वरुह।

२९ वीय-वरुह। ३० वीय-वरुह। ३१ वीय-वरुह।

३२ वीय-वरुह। ३३ वीय-वरुह। ३४ वीय-वरुह।

३५ वीय-वरुह। ३६ वीय-वरुह। ३७ वीय-वरुह।

३८ वीय-वरुह। ३९ वीय-वरुह। ४० वीय-वरुह।

४१ वीय-वरुह। ४२ वीय-वरुह। ४३ वीय-वरुह।

४४ वीय-वरुह। ४५ वीय-वरुह। ४६ वीय-वरुह।

कुमार पुं [कुमार] एक देव-जाति (मम ११ ११)। ण्यु वि [कु] द्वीप के मार्ग का वातकार (उप ११५)। सागरपक्षि श्री [सागरपक्षि] सैन घन्य-विशेष जिसमें द्वीपों और मनुष्यों का गणन है (ठा १ २—पत्र १२४)।

श्रीय पुं [श्रीय] शीघ्र का एक नगर, श्रीय (पत्र १११)।

श्रीय अ पुं [श्री] इक्ष्मास तिरिपि (श्री १, ४१)।

श्रीय अ पुं [श्रीयक] १ प्रवीण दिया प्रियम धातुक (भा २२२ महा)। २ वि श्रीयक, प्रकाश, रोमा-काक (कुमा)। ३ न छत्र विशेष (मवि २१)।

श्रीय न पुं [श्रीपाद] प्रवीण का नाम देवनागे कल्पवृक्ष की एक जाति (अ १)।

श्रीय न देवो श्रीय अ = श्रीयक (भा १; धावन)। श्रीय अ पुं [श्री] बलकमुनि-विशेष 'कुलतस्थि संयुधं भवत्येव श्रीय' (सुर १ १८०)।

श्रीय न [श्रीयन] प्रकाश (श्रीय ७४)।

श्रीयना श्री [श्रीयना] प्रकाश 'कुलो संयुधस्य श्रीयना' (त १७५)।

श्रीयनिष्ठ वि [श्रीयनीय] १ बलरथि को बड़ोनेवाला (छाया १ १—पत्र १६)। २ रोमायमान वैश्वयमान (पण्ड १७)।

श्रीयय देवो श्रीय = विष्णु।

श्रीयायण पुं [श्रीयायन, द्वेयायन] एक प्राचीन क्षत्रिय जिसने द्वारका नगरी बनाने का निश्चय किया था और जो प्राचीनी जमानेकी बाल में भरत-क्षेत्र में एक द्वीप पर होण (अंत १५, सम १२४ कुप्र १३)।

श्रीय पुं [श्रीयन] व्याघ्र की एक जाति, श्रीयिष्ठ ॥ शीत (भा ७११ छाया १ १—पत्र १३, पण्ड १ १)।

श्रीयज वि [श्रीयित] १ वसाया हुआ (पत्र २२ ७)। २ प्रकाशित (श्रीय)।

श्रीयिष्ठ पुं [श्रीयिष्ठ] कल्पवृक्ष को एक पर्वत को धातुकार की दूर करता है (पत्र १ २ १२३)।

श्रीयिष्ठा श्री [श्री] १ जयदेविका सुत कीट विशेष ॥ २ व्याघ्र की हड्डी की इन्को

हड्डीयों के धारण करने के लिए रखी जाती है (श्री १ २३)। ३ व्याघ्र-संकेती पित्रके में रखा हुआ तिरिपि पत्थी (छाया १ १७—पत्र २३२)।

श्रीयिष्ठा श्री [श्रीयिष्ठा] छोटा दिया मनु प्रवीण (श्रीय १)।

श्रीयिष्ठा वि [श्रीयिष्ठा] द्वीप में उत्पन्न द्वीप में पैदा हुआ (छाया १ ११—पत्र १७१)।

श्रीयी (मय) देवो दूरी (रमा)।

श्रीयी श्री [श्रीयिष्ठा] मनु प्रवीण छोटा दिया 'श्रीयिष्ठा टीह कुडी' (भा १६)।

श्रीयुसय पुं [श्रीपासय] कातिक बड़ी प्रमाणत की जाती श्रीपासवी (श्री १६)।

श्रीसंत { देवो दक्षल = दश ।

श्रीसमाज }

श्रीह वि [श्रीय] १ धामल लम्बा (अ ४ २; प्राप् कुमा)। २ पुं श्री माताबाला स्वर (सिग)। ३ कोरल देश का एक राजा (उप ५ ३८)। कय [कय] धर्मकर्म (प्राभा धम्म १—१—४)। क्यिस्मि श्री [क्यिस्मि] संज्ञाविशेष कुट्टि-विशेष जिससे सुदीर्घ मूलकाय की बातों का सम्यक् और सुधीर्घ मरिच्य का विचार किया जा सकता है (श्री १२ विवे ३८)। क्यिस्मि वि [क्यिस्मि] १ श्रीय कर्म से उत्पन्न विरंजना 'श्रीकर्मिणो रोमकर्मिणो' (अ १ १)। २ श्रीयकर्म-सम्बन्धी (धावन)। कया श्री [यात्रा] १ लम्बी सड़क। २ मरण मीठ (पत्र २६)। 'कया वि [कय] जिसको साथ ने काय हो वह (मिनु १)। पयदा श्री [निद्रा] मरण मीठ (रात्र)। ईत पुं [ईत] १ फारसपर्व का एक मासी बक-बत्ती राजा (पत्र १५४)। २ एक वैष्णुनि (संत)। 'ईसि वि [ईसिम] इरली इरली (सुर १ १; श्री १२)। दसा श्री [दसा] सैन ईक-विशेष (अ १)। विट्टि वि [विट्टि] १ इरली इरली। २ श्री. श्रीय-विट्टा (कर्म १)। पट्ट पुं [पट्ट] १ धर्म साथ (का ५ २२)। २ बराबर का एक लम्बी (इह १)। पास पुं [पास] १ दूरत क्षेत्र के लोगहूँ यात्री विन-देव (पत्र ७)। 'विहि वि [विहिम] इर

बत्ती (पत्र २६ २२ ११ १ १)। पाहु पुं [पाहु] १ मरण-क्षेत्र में होनेवाला तीसरा वायुदेव (सम १३४)। २ गणनायक बलप्रम का पूर्व-जन्मीय नाम (सम १५१)। माह पुं [माह] एक सैन मुनि (कर्म)। माह वि [माह] लम्बा घसटापाधा (छाया १ १८ ठा २ १ ३, २—पत्र २४)। मझ वि [मझ] श्रीयकर्म से गम्य (ठा ५ २—पत्र २४)। माठ न [माठ] लम्बा बाहुल्य (ठा १)। राय, राय पुं [राय] १ लम्बी रात। २ बहु रात्रिबाला विन-नाम (संति १७ रात्र)। राय पुं [राय] एक राजा (महा)। 'खेग पुं [खेग] बलस्थि का बीज (साभा)। खेगसत्य न [खेग-रात्र] धनि बहि (साभा)। 'येयद्व पुं [वेदाध्य] लनाम-क्याठ पर्वत (ठा २ १—पत्र १६)। सुच न [सुच] १ बड़ा घुला (मिनु ३)। २ धामल्य माहुण्डु श्रीहृत्पुत्र परकर्म लीपन परिपुत्रो (पत्र १ १)। सेण पुं [सेन] १ धनुषर वैष्णवी-यानी मुनि-विशेष (सु २)। २ इस धर्मपरिणी कर्म में उत्पन्न देवराज क्षेत्र के पाठने विन-देव (पत्र ७)। त्र, त्रय वि [त्रय] १, त्रयुक्त लम्बी छत्राभा बड़ी धनुषाला विरंजीवी (श्री २ २ ठा १ १ पत्र १४ १)। सण न [सण] लम्बा (अ १)।

श्रीह देवो विज्ञाह (कुमा)।

श्रीहय वि [श्रीयसाय] त्रि को देवने में प्रथमकी पर्वता श्रीहंभा (प्राहु १७९)।

श्रीह्रीह पुं [श्री] शंख (श्री ५, ४१)।

श्रीहृदि श्री [श्रीहृदि] शिरि १ ५)।

श्रीहृर देवो श्रीहृर = श्रीय (श्री २ १७१ सुर २ १८ प्राहु १११)। पय वि [पय] लम्बी पावनाला बड़े नेत्रबाला (पुरा १४७)।

श्रीहृरिय वि [श्रीयित] लम्बा दिया हुआ (पत्र १)।

श्रीहृया श्री [श्रीयिष्ठ] भारी धातुय-विशेष (सुर १ १३ कर्म)।

श्रीह्रीर एक [श्रीयिष्ठ + हृ] लम्बा करना। श्रीह्रीरि (मय)।

हु केवो हु (हे २ १४) ।

हु केवो वष = हु । कने = हुकर (हिंते २८) ।

हु कि न [हिं] हो संकल्प-विशेषात्मा (हे १ २४० कम्म १ उवा) ।

हु पु [हु] २ कृष वेव पाव (उर १) । २ कला सामान्य (हिंते २३) ।

हु म [हित] हो बाद, हो बन्ध (पुर १६ २१) ।

हु म [हु] धन धनी का सुवचन प्रत्यय — १ धामन । २ दुष्टा बाली । ३ दुष्टिभ्य कठिनाई । ४ मित्रा (हे २ २१० प्राप् १२८ गुण १४१) उवा १ १ उवा) ।

हुम न [हुत] सन्निवन्-विशेष (उम २१) ।

हुम न [हित] पुन पुनत बोधा (मि १२१) ।

हुम वि [हुत] १ पीठित हैमन किया हुम्य (कन १२ टी) । २ वेक-मुक्त । ३ विविध, कर्षी (पुर १ १ १ मसु) । विस्-विम न [विस्मयित] १ कण विशेष । २ धर्मिक-विशेष (उम) ।

हुमकलर पु [हिं] पदक गुणवत् (हे २, ४०) ।

हुमकलर वि [हुपसर] १ पञ्चम, मुह, मन्त्र (उ १२ टी) । २ दुष्टी, कण लीनर (हिंते) । ३ (रया (धामन) ।

हुमगुण पु [हुमगुण] हो पञ्चाशुधो का लक्षण (हिंते २१२) ।

हुवर वि [हुवर] दुष्टिभ्य नईलाई से को लिहा का संकेत (प्राह २६) ।

हुमन न [हुमन] १ वन कण्डा । २ मद्रिध नक्ष, सुमन्यक (हे १ ११८, प्राप्) । रेवो हुमन ।

हुमाहु पु [हुमाहि] कण्डा कनिय पोर कैरव से हीन बर्त (हे १ २४२ ४ ७६) ।

हुमा-नय वि [हुमाकनय] हुक से कनय पौन्य (उ १ १—प्रा २६९) ।

हुमार न [हार] बरतान, प्रवेश-मार्ग (हे १ ७६) ।

हुमापाह वि [हुमापाह] विचम व्यापन कठिनाई से हो संकेत (प्राह १ ४) ।

हुमातिमा की [हुमतिमा] १ श्रेया हार । २ हुत हार, पञ्चार (प्राह १ २) ।

हुमापन न [हुमापन] हृदिता क एव हुम (उम १४०) ।

हुमय वि [हुमिरीय] हुपन (हे १ १ १; हुमय २ ४) हुमा कम्प (उम ४) ।

हुमय (म) वि [हुमय] हो-बाद, हो मा बार (प्राह १२) ।

हुमय } एक [हुमय] निष्ठा करना, हुमय } दया करना । हुमय, हुमयार (हे ४ ४) ।

हुतन वि [हुतन] हुता हुपन (हे २, २४ हे १ २४) । हार वि [हार] हुने मे भी विशेष धारणा (हे ११ ४०) ।

हुतमि न वि [हुतमि] ऊपर रेवो (प्रा) ।

हुतम केवो हुमक (प्रा १२६ पद) ।

हुतम पु [हुतम] १ सर्व को एक पाठि हुतम (हे ७ २१) । २ श्रीविष्णु-विशेष एक महावह (उ २ १—प्रा ७) ।

हुतमि केवो हुतमि (मन २, ११) ।

हुतमि न [हिं] मने की धारणा (हे २, ४२ पद) ।

हुतमिमा की [हिं] कलावी की (हे २, ४२) ।

हुतमि पु की [हुतमि] बाध-विशेष (कनः पुर १, २ पद, हुत ११८) ।

हुतमि की [हिं] कठि, ली (हे २, ४) ।

हुतम केवो हुतम (हे ४०) ।

हुतम केवो हुतम (पद) ।

हुतम न [हुतम] पाव निमित्त काय या काय (म २०) मति) ।

हुतम पु [हुतम] सनात दुष्टि (मि ४१) ।

हुतम केवो हुतम (मति) ।

हुतम पु [हुतम] पाव कने निष्ठा धारण (उम १२६ हे १ २ ४) मति) ।

हुतमि } वि [हुतमि] क हुतम हुतमि } करकेरवा, ली (म १ २,

हुतमय पु [हुतमय] निमित्त काय यापण पठित काय का धारण (पद) ।

हुतमय न [हुतमय] हुतम प्रसारण (प्रा २३ १२ ४) ।

हुतमय न [हुतम] पाव-नय (प्राह १ १) मि ४६) ।

हुतमर वि [हुतमर] हो हुतम से निष्ठा का संकेत नष्ट-काय (हे ४ ४१४ पद ११) । आरम वि [कारक] हुतम कने को करोपता (म १०६) हे २, १ ४) । करन न [कारन] कठि काय को करना (म २०) । करि वि [कारि] रेवो आरम (उ २ ११) ।

हुतमर न [हिं] माव माव में एहि के बाद प्रारं में निष्ठा काय काय (हे २, ४२) ।

हुतमरकय न [हुतमरकय] पाव निष्ठा का धारण करवा (संजीव २) ।

हुतमर वि [हिं] धारणकाय, धारणकी (पुर १ ११ पद २०) ।

हुतमर पु [हुतमर] धारण हुतम (म १ १) ।

हुतम केवो हुतम (मति) ।

हुतमरकय की [हिं] पीकण, पीकणो (हे २, ४०) ।

हुतमर न [हुतमर] निमित्त हुत (म १ १) ।

हुतमर वि [हिं] १ मद्रिध धारण वि-निष्ठा । २ धर्म-पीठ (हे २, ४२) ।

हुतम पु [हुतम] १ पदक कट, पीक लोहा मन का कोम (हे १ ११) हुतमा धारण माण्डा न धारण (प्रा १ १) पावा कन कन ४१; २; प्रम २६, १२४ २२) । २ मति नष्ट से दुष्टिभ्य से कठिनाई से (म) । ३ वि हुतमन, हुतमर हुतम (हे १ १) । ४ कला (म) । कर वि [कर] हुतम मन (प्रा १२४) । ५ वि [कर] हुतम से पीठित (प्रा १२४) व ४४२ प्राप् १४२) ।

प्रावेशन न [प्रावेशन] हुतम से पीठित की कोम, धारण हुतमा (प्रा १२) ।

मजिप वि [मजिप] हुतम निमित्त हुतम कानन निष्ठा हो वद (उ १) । प्राह वि [प्राह] हुतम से धारण-धारण (कन

दुग्धोपसिद्ध नि [दुग्धपित्त] कट से नाशित (पात्र) ।

दुग्ध नि [दुग्ध] दोष-मुक्त, इषित (दोष ११ । पात्र दुग्ध) । प्य पुं [सिद्ध] दुग्ध कोष पानी प्राप्ती (पत्र १ ११६, १२ १२) ।

दुग्ध नि [वि द्रिष्ट] दोष-मुक्त (दोष ७४७ कम्) 'पयस्सुदुग्ध' (दुग्ध १७१) ।

दुग्धया न [दुग्धस्यात्] दुग्ध बगह (मय १६ २) ।

दुग्धय [दुग्ध] बराह यमुनार (व २ १ निर १ १ मुपा ११८ ह ४ ४ २) । दुग्धय दोषो दुग्धय (विक ३० पात्रम) ।

दुग्ध्याम न [दुग्ध्याम्] १ शरीरित धामस । २ दुग्ध नाम बराह धामस । ३ एक प्रकार का गर्भ (मय १२ ५) ।

दुग्धिया नि [दुग्ध] पीकित दुग्धित (गा ११) ।

दुग्धिया दोषो दुग्धिया (पात्र) ।

दुग्धियात् न [दुग्ध] १ बरन पर निवृत्त बरन । २ बरन की के कसर के नीचे का भाग (१ ५, २५) ।

दुग्धिया नि [दुग्ध] दुग्धिया दुग्धिया (१ ५ ४२) ।

दुग्धियात् न [दुग्धियात्] नदी के निवृत्तता कट-धाम हो वह (पात्र ७ १) ।

दुग्धियात् न [दुग्ध] १ दुग्धिया । २ कट से बो देना वा सके (१ ५, ४२) ।

दुग्धियात् न [दुग्धियात्] दुग्ध से स्वागत करने योग्य (पा ११४) ।

दुग्धियात् न [दुग्धियात्] दोषो दुग्धियात् (पात्र) ।

दुग्धियात् न [दुग्धियात्] दुग्ध से बोना हुआ (मि १२ ११) ।

दुग्धियात् न [दुग्धियात्] बराह कटन यमुनार (पत्र ७ ५) ।

दुग्धियात् न [दुग्धियात्] दुग्धिया हरी, बिही (मि ११) ।

दुग्धियात् न [दुग्धियात्] कट-बराह स्वागताय-स्वागत (मय २ ५) ।

दुग्धियात् न [दुग्धियात्] जिसका बरन कट-धाम हो वह (वक्र १२८ का ३२८) ।

दुग्धियात् न [दुग्धियात्] दुग्ध को दुग्ध से घाल किया जा सके वह (व ५, ११) ।

दुग्धियात् न [दुग्धियात्] दुग्धियात् दुग्धियात् (मुपा ४० ११५ का ११) ।

दुग्धियात् न [दुग्धियात्] १ गरी । २ बराह किमाय बानी गरी (कम् १२ १) ।

दुग्धियात् न [दुग्धियात्] कट से घाले योग्य दुग्ध से करने योग्य (वक्र) (पानी १७) ।

दुग्धियात् न [दुग्धियात्] दुग्ध से पार करने योग्य, दुग्धिया (१ ५ २५ १ १) ।

दुग्धियात् न [दुग्धियात्] योग्य, बरनी (१ ५ ४१ पात्र) ।

दुग्धियात् न [दुग्धियात्] दोषो दुग्धियात् (पात्र) दुग्धियात् (पात्र) ।

दुग्धियात् न [दुग्धियात्] दुग्धियात् दुग्धियात् (मुपा २ ५) ।

दुग्धियात् न [दुग्धियात्] जिसको संतुष्ट करना कठिन हो वह (वक्र ५) ।

दुग्धियात् न [दुग्धियात्] बरन की के कसर के नीचे का भाग (१ ५ ४२) ।

दुग्धियात् न [दुग्धियात्] दुग्धियात् दुग्धियात् (व १ ५) ।

दुग्धियात् न [दुग्धियात्] दुग्धियात् दुग्धियात् (मुपा २ ४०) 'नहि विदुस्सहा हति दुग्धियात् पीत' (मुपा १५) ।

दुग्धियात् न [दुग्धियात्] १ दुग्धियात् विवर्तित-पत्र (मय ७५ यवि घण) । २ निर्बल गरीब (मुपा ४६) ।

दुग्धियात् न [दुग्धियात्] नमस्सहोद, कट-गरीब (१ ५ ४०) । की डा (१ ५, ४०) ।

दुग्धियात् न [दुग्धियात्] दुग्धियात्, धामस (१ ५, ४१) ।

दुग्धियात् न [दुग्धियात्] बराह बरन करने की धामस दुग्धियात् विवर्तित-पत्र (मय ७५ यवि घण) । २ निर्बल गरीब (मुपा ४६) ।

दुग्धियात् न [दुग्धियात्] दुग्धियात्, धामस (१ ५, ४१) ।

दुग्धियात् न [दुग्धियात्] दुग्धियात्, धामस (१ ५, ४१) ।

दुग्धियात् न [दुग्धियात्] दुग्धियात्, धामस (१ ५, ४१) ।

दुग्धियात् न [दुग्धियात्] दुग्धियात्, धामस (१ ५, ४१) ।

दुग्धियात् न [दुग्धियात्] दुग्धियात्, धामस (१ ५, ४१) ।

दुग्धियात् न [दुग्धियात्] दुग्धियात्, धामस (१ ५, ४१) ।

दुग्धियात् न [दुग्धियात्] दुग्धियात्, धामस (१ ५, ४१) ।

दुग्धियात् न [दुग्धियात्] १ दुग्धियात् से देना हुआ । २ वि दुग्धियात् बराह (मय १ २-पत्र २६) ।

दुग्धियात् न [दुग्धियात्] बरनी से बराह विवर्तित (दोष ११) ।

दुग्धियात् न [दुग्धियात्] दुग्धियात् से देने योग्य (व २२४) ।

दुग्धियात् न [दुग्धियात्] दोषो (व ५) ।

दुग्धियात् न [दुग्धियात्] दुग्धियात्, धामस (१ ५, ४१ पात्र) ।

दुग्धियात् न [दुग्धियात्] दुग्धियात्, धामस (१ ५) ।

दुग्धियात् न [दुग्धियात्] दुग्धियात्, धामस (१ ५) ।

दुग्धियात् न [दुग्धियात्] दुग्धियात्, धामस (१ ५) ।

दुग्धियात् न [दुग्धियात्] दुग्धियात्, धामस (१ ५) ।

दुग्धियात् न [दुग्धियात्] दुग्धियात्, धामस (१ ५) ।

दुग्धियात् न [दुग्धियात्] दुग्धियात्, धामस (१ ५) ।

दुग्धियात् न [दुग्धियात्] दुग्धियात्, धामस (१ ५) ।

दुग्धियात् न [दुग्धियात्] दुग्धियात्, धामस (१ ५) ।

दुग्धियात् न [दुग्धियात्] दुग्धियात्, धामस (१ ५) ।

दुग्धियात् न [दुग्धियात्] दुग्धियात्, धामस (१ ५) ।

दुग्धियात् न [दुग्धियात्] दुग्धियात्, धामस (१ ५) ।

दुग्धियात् न [दुग्धियात्] दुग्धियात्, धामस (१ ५) ।

दुग्धियात् न [दुग्धियात्] दुग्धियात्, धामस (१ ५) ।

दुग्धियात् न [दुग्धियात्] दुग्धियात्, धामस (१ ५) ।

दुग्धियात् न [दुग्धियात्] दुग्धियात्, धामस (१ ५) ।

दुग्धियात् न [दुग्धियात्] दुग्धियात्, धामस (१ ५) ।

दुग्धियात् न [दुग्धियात्] दुग्धियात्, धामस (१ ५) ।

दुष्टोदधि [दुष्टोदधि] समुद्र-निरेव
दुष्टोदधि [दुष्टोदधि] विरुद्धा पानी दुष्ट की तरह
स्वादि है बीरसमुद्र (भा ४७३ अ २११
टी)।

दुष्टोदधी की [वि] मो-निरेव विरुद्धी एक
बार दोहने पर फिर भी दोहान किया का छके
ऐसी नाम कामके (रे ३, ५)।

दुष्टा केही दुष्टा (अभि १११)।

दुष्टिमित्त केही दुष्टिमित्त (पा २७)।

दुष्टय दु [दुष्टय] १ दुष्ट नीति कुनीति । २
बनेक बर्गवाली वस्तु में किसी एक ही
बर्ग की मातृकर रूप पर्यं क प्रविष्टा करने
वाला पक्ष (साम्य १३) । ३ हि दुष्ट नीति
अप्यस्य-नारी (अ ७१८ टी) । कारि हि
‘कारिण’ अन्वय करनेवाला (दुष्टा १४६)।

दुष्टिभक्त केही दोनिकस (अ ७ ३ टी—
अ १ ७)।

दुष्टिगह्वर हि [दुष्टिगह्वर] विधवा पिछा दुष्ट
से हो छके वह, दक्षिणार्ध (अ ५ ११३)।

दुष्टिभोद हि [दुष्टिभोद] १ दुष्ट से बलने
योग्य । २ दुर्गम (दुष्ट १ १३ १२)।

दुष्टिमित्त केही दुष्टिमित्त (भा २७)।

दुष्टिय न [दुष्टिय] दुष्ट कर्म दुष्पद, ‘दक्षिण’
वर्तिन न दुष्टियाति’ (दुष्ट १ ७ ४)।

दुष्टियत्थ हि [वि] कित का लेवना लिख-
नीय रूप को बारछ करनेवाला । वेदत अपन
पर ही बह-वहना हुआ ‘नोर हि कुंभसमी-
निरं वरां दुष्टियत्थवच्छलं निवत्’ (अ)।

दुष्टिरिक्त्य हि [दुष्टिरिक्त्य] को कछिअरि से
देना का छके वह (अप्य अदि)।

दुष्टिवार हि [दुष्टिवार] टोफने के लिए
प्रत्यय विरुद्धा विरारुष्ट दुष्टिय से हो
छके वह (दुष्टा ११३) यहा)।

दुष्टिवारणीय हि [दुष्टिवारणीय दुष्टिवार]
अर केही (अ १४३ ७४१)।

दुष्टिसम्य हि [दुष्टिसम्य] अण्य ऐति के
रूप हुआ (अ ३, २—अ ११२)।

दुष्ट केही विम = विन (अ)।

दुष्टम हि [दुष्टम] १ ही धनकरवाला ।
२ दु. अण्युक्त (अ १)।

दुष्टमसि हि [दुष्टमसि] १ ही प्रलेखना
(अ ४, ७)।

दुष्टमस्य दु [दुष्टमस्य] दुष्ट पक्ष (दुष्ट १ ३
१)।

दुष्टमस्य न [दुष्टमस्य] १ ही पक्ष (दुष्ट १ २
१) । २ हि ही पक्षवाला (दुष्ट १ १२ ३)।

दुष्टमिमाह न [दुष्टमिमाह] दृष्टिमात्र का
एक सूत्र (अ २ १३७)।

दुष्टमोहार हि [दुष्टमोहार] को लालों में
किसका समावेश हो छके वह (अ २ १)।

दुष्टमोहार हि [दुष्टमोहार] अर केही
(अ २ १)।

दुष्टमिमाह केही दुष्टमिमाह (दुष्टा १२२)।

दुष्टम हि [दुष्टम] १ ही वैरवता । २ दु
म्लय (आय १ : दुष्टा ४ १) । ३ न
बाड़ी लोट (अ २ ३ भा)।

दुष्टम दु [दुष्टम] कापिस्युर अर एक राजा
(आय १ १९)।

दुष्टरिषय हि [दुष्टरिषय] दुष्टपक्ष दुष्ट
से छोड़ने योग्य (अ ७१८ टी रम्य १४)।

दुष्टरिषयणीय हि [दुष्टरिषयणीय]
दुष्टरिषय अर केही (अ)।

दुष्टस केही दुष्टस (अ ३, १—अ
१२१)।

दुष्टत दु [दुष्टत] दुष्ट कदुष्ट (अ २३,
२१)।

दुष्टेय हि [दुष्टेय] दुर्ग, अशुभ (अदि)।

दुष्टेय दु [दुष्टेय] दुष्ट लाली (अदि)।

दुष्टेय हि [दुष्टेय] १ दुष्टयोग करने-
वाला (अ २ १—अ १३) । २ विरुद्धा
दुष्टयोग किया क्या हो वह (अ ३ १)।

दुष्टेय हि [दुष्टेय] १ दुष्टयोग करने-
वाला (अ २ १—अ १३) । २ विरुद्धा
दुष्टयोग किया क्या हो वह (अ ३ १)।

दुष्टेय हि [दुष्टेय] १ दुष्टयोग करने-
वाला (अ २ १—अ १३) । २ विरुद्धा
दुष्टयोग किया क्या हो वह (अ ३ १)।

दुष्टेय हि [दुष्टेय] १ दुष्टयोग करने-
वाला (अ २ १—अ १३) । २ विरुद्धा
दुष्टयोग किया क्या हो वह (अ ३ १)।

दुष्टेय हि [दुष्टेय] १ दुष्टयोग करने-
वाला (अ २ १—अ १३) । २ विरुद्धा
दुष्टयोग किया क्या हो वह (अ ३ १)।

दुष्टेय हि [दुष्टेय] १ दुष्टयोग करने-
वाला (अ २ १—अ १३) । २ विरुद्धा
दुष्टयोग किया क्या हो वह (अ ३ १)।

दुष्टेय हि [दुष्टेय] १ दुष्टयोग करने-
वाला (अ २ १—अ १३) । २ विरुद्धा
दुष्टयोग किया क्या हो वह (अ ३ १)।

दुष्टेय हि [दुष्टेय] १ दुष्टयोग करने-
वाला (अ २ १—अ १३) । २ विरुद्धा
दुष्टयोग किया क्या हो वह (अ ३ १)।

दुष्टेय हि [दुष्टेय] १ दुष्टयोग करने-
वाला (अ २ १—अ १३) । २ विरुद्धा
दुष्टयोग किया क्या हो वह (अ ३ १)।

दुष्टेय हि [दुष्टेय] १ दुष्टयोग करने-
वाला (अ २ १—अ १३) । २ विरुद्धा
दुष्टयोग किया क्या हो वह (अ ३ १)।

दुष्टेय हि [दुष्टेय] १ दुष्टयोग करने-
वाला (अ २ १—अ १३) । २ विरुद्धा
दुष्टयोग किया क्या हो वह (अ ३ १)।

दुष्टेय हि [दुष्टेय] १ दुष्टयोग करने-
वाला (अ २ १—अ १३) । २ विरुद्धा
दुष्टयोग किया क्या हो वह (अ ३ १)।

दुष्टेय हि [दुष्टेय] १ दुष्टयोग करने-
वाला (अ २ १—अ १३) । २ विरुद्धा
दुष्टयोग किया क्या हो वह (अ ३ १)।

दुष्टेय हि [दुष्टेय] १ दुष्टयोग करने-
वाला (अ २ १—अ १३) । २ विरुद्धा
दुष्टयोग किया क्या हो वह (अ ३ १)।

दुष्टेय हि [दुष्टेय] १ दुष्टयोग करने-
वाला (अ २ १—अ १३) । २ विरुद्धा
दुष्टयोग किया क्या हो वह (अ ३ १)।

दुष्टेय हि [दुष्टेय] १ दुष्टयोग करने-
वाला (अ २ १—अ १३) । २ विरुद्धा
दुष्टयोग किया क्या हो वह (अ ३ १)।

दुष्टेय हि [दुष्टेय] १ दुष्टयोग करने-
वाला (अ २ १—अ १३) । २ विरुद्धा
दुष्टयोग किया क्या हो वह (अ ३ १)।

दुष्टेय हि [दुष्टेय] १ दुष्टयोग करने-
वाला (अ २ १—अ १३) । २ विरुद्धा
दुष्टयोग किया क्या हो वह (अ ३ १)।

दुष्टेय हि [दुष्टेय] १ दुष्टयोग करने-
वाला (अ २ १—अ १३) । २ विरुद्धा
दुष्टयोग किया क्या हो वह (अ ३ १)।

दुष्टेय हि [दुष्टेय] १ दुष्टयोग करने-
वाला (अ २ १—अ १३) । २ विरुद्धा
दुष्टयोग किया क्या हो वह (अ ३ १)।

दुष्टेय हि [दुष्टेय] १ दुष्टयोग करने-
वाला (अ २ १—अ १३) । २ विरुद्धा
दुष्टयोग किया क्या हो वह (अ ३ १)।

दुष्टेय हि [दुष्टेय] १ दुष्टयोग करने-
वाला (अ २ १—अ १३) । २ विरुद्धा
दुष्टयोग किया क्या हो वह (अ ३ १)।

दुष्टेय हि [दुष्टेय] १ दुष्टयोग करने-
वाला (अ २ १—अ १३) । २ विरुद्धा
दुष्टयोग किया क्या हो वह (अ ३ १)।

दुष्टेय हि [दुष्टेय] १ दुष्टयोग करने-
वाला (अ २ १—अ १३) । २ विरुद्धा
दुष्टयोग किया क्या हो वह (अ ३ १)।

दुष्टेय हि [दुष्टेय] १ दुष्टयोग करने-
वाला (अ २ १—अ १३) । २ विरुद्धा
दुष्टयोग किया क्या हो वह (अ ३ १)।

दुष्टेय हि [दुष्टेय] १ दुष्टयोग करने-
वाला (अ २ १—अ १३) । २ विरुद्धा
दुष्टयोग किया क्या हो वह (अ ३ १)।

दुष्टेय हि [दुष्टेय] १ दुष्टयोग करने-
वाला (अ २ १—अ १३) । २ विरुद्धा
दुष्टयोग किया क्या हो वह (अ ३ १)।

दुष्प्रसु नि [दुर्प्रसु] क्षम्य सपह इय
(पावा) । सुणि वु [सुनि] मुक्ति के लिए
सपाय सपु (पावा) ।

दुष्प्रह नि [दुर्प्रह] दुर्प्रह, प्रियता बहल
बर्तना से हो सक्त बहु (म १११; मुर १
१४) ।

दुष्प्रा देतो दुष्प्रा (दुष्पा मुर १ ११०) ।
दुष्प्रा नि [दुष्पादि] मयिपयका (स्य
६ २) ।

दुष्प्राय वु [दुष्पाह] दुर्प्रह इय नकि
'बन्धोपनि दुष्पाधो न य बाधयो परस
कोशयो' (पठन १ १ १४१) ।

दुष्प्राय वु [दुष्पाह] इय पठन (एभि ४) ।

दुष्प्रा नि [दुष्पाह] इय म रोने योग्य
क्षम्य (म १२ ११; स ६०९ टी) मुग
१२० १०१; एभि १११) ।

दुष्प्रा नि देतो दुष्प्रा नि = दीर्घादि (अय) ।

दुष्प्रायो धी [दि] दुष्प्राय (पाव) ।

दुष्प्राय वु [दुष्पाह] एय मनि (एभि
११०) ।

दुष्प्रिअह नि [दुर्प्रिअह] वरिपय-वकि
नाम मया (स २, १-५४ ११२) ।

दुष्प्रिअह [दि] [दुर्प्रिअह] मय का कृत्
दुष्प्रिअह [दि] मयिपय बनेना दुर्प्रिअह
(पाव म १२) ।

दुष्प्रिअह नि [दुर्प्रिअह] इय से बान्ते
योग्य बान्ते की क्षम्य 'मयुननरिपुण
मयुननरिपुण' (पठ १ १) ।

हुं पदप नि [दुर्प्रह] इय से बान्ते
योग्य बान्ते म बान्ते योग्य (दुर्प्र २१०) ।

दुष्प्रिअह नि [दुर्प्रिअह] वरिपय अय
(पठ ११ १२ बन्) ।

दुष्प्रिअह नि [दुर्प्रिअह] मय से नि
बान्ते इय (पावा) ।

दुष्प्रिअह देतो दुष्प्रिअह (एय) ।

दुष्प्रिअह नि [दुर्प्रिअह] दुर्प्रह इय
म रिपु की क्षम्य हो मने का (स २,
१ टी-म १११) ।

दुष्प्रिअह नि [दुर्प्रिअह] मय देतो
(रिप) ।

दुष्प्रिअह नि [दुर्प्रिअह] १ सपह
विमाय । २ निहृद क्षम्य क्षम्य काम कोष
नाम (उय ११६ टी) ।

दुष्प्रिअह नि [दुर्प्रिअह] मयह दुष्प्रह
मयह (स १४० मुर १ १४० १४
२१) ।

दुष्प्रिअह नि [दुर्प्रिअह] इय बने को
क्षम्य (वका १०) ।

दुष्प्रिअह नि [दुर्प्रिअह] इय मयह
(स्य १ १२) ।

दुष्प्रिअह नि [दुर्प्रिअह] १ सपह धी से
विमा दुष्प्रिअह नि [दुर्प्रिअह] नि [दि]
(मुर ४ १२ ११ १४१) । २ मयुनरिपु
मयुनरिपु (मय १) ।

दुष्प्रिअह नि [दुर्प्रिअह] इयह इय से रोने
योग्य (स १ २ ४ ४४ ११ ११) बन्ना
१०) ।

दुष्प्रिअह नि [दि] दुर्प्रह इय से माले
योग्य (स १ २) ।

दुष्प्रिअह नि [दुस्प्रिअह] विपय निवि
(मयि) ।

दुष्प्रिअह देतो दुष्प्रिअह (मयि) ।

दुष्प्रिअह नि [दुस्प्रिअह] दो बार मुने से ही
उने क्षम्य सपह मय सेने की क्षम्य
(मय १२ ०) ।

दुष्प्रिअह नि [दुस्प्रिअह] दुर्प्रह (स १
४-५४ ११२) ।

दुष्प्रिअह देतो दुष्प्रिअह देतो दुष्प्रिअह (मय
१ ०) ।

दुष्प्रिअह देतो दुष्प्रिअह देतो दुष्प्रिअह (स १) ।

दुष्प्रिअह देतो दुष्प्रिअह (स १ ११२ मुर १२,
११० ११६) ।

दुष्प्रिअह नि [दुष्प्रिअह] दुष्प्रह, बट-मय
(पठ २६, १२) ।

दुष्प्रिअह नि [दुर्प्रिअह] दुर्प्रह
(पठ २४, ११) ।

दुष्प्रिअह देतो दुष्प्रिअह (मयि) ।

दुष्प्रिअह नि [दि] से का क्षम्य-विपय
(म ४६) ।

दुष्प्रिअह नि [दि] से का क्षम्य-विपय
(मय १ १२ १२) ।

दुष्प्रिअह नि [दुर्प्रिअह] मयह इय (एभि
२) ।

दुष्प्रिअह नि [दुर्प्रिअह] मयह इय से पावा
का सेने इय (स २११ टी १०) ।

दुष्प्रिअह नि [दुर्प्रिअह] मयह देतो (मुर
१ ११) ।

दुष्प्रिअह वु [दुष्प्रिअह] क्षम्य इय एय
मयह का मयि (म १२६) ।

दुष्प्रिअह नि [दुष्प्रिअह] दुर्प्रह (मय) ।

दुष्प्रिअह नि [दुष्प्रिअह] दुर्प्रह (दुष्पा =
११६) ।

दुष्प्रिअह देतो दुष्प्रिअह (दुष्पा) ।

दुष्प्रिअह नि [दुष्प्रिअह] दुष्पा इय मय
(पठ २० ६) ।

दुष्प्रिअह नि [दुष्प्रिअह] दुष्प्रिअह (मय) ।

दुष्प्रिअह नि [दुष्प्रिअह] क्षम्य इय मय
मयह का मयि (म १२६) ।

दुष्प्रिअह नि [दुष्प्रिअह] क्षम्य इय मय
मयह का मयि (म १२६) ।

दुष्प्रिअह नि [दुष्प्रिअह] क्षम्य इय मय
मयह का मयि (म १२६) ।

दुष्प्रिअह नि [दुष्प्रिअह] क्षम्य इय मय
मयह का मयि (म १२६) ।

दुष्प्रिअह नि [दुष्प्रिअह] क्षम्य इय मय
मयह का मयि (म १२६) ।

दुष्प्रिअह नि [दुष्प्रिअह] क्षम्य इय मय
मयह का मयि (म १२६) ।

दुष्प्रिअह नि [दुष्प्रिअह] क्षम्य इय मय
मयह का मयि (म १२६) ।

दुष्प्रिअह नि [दुष्प्रिअह] क्षम्य इय मय
मयह का मयि (म १२६) ।

दुष्प्रिअह नि [दुष्प्रिअह] क्षम्य इय मय
मयह का मयि (म १२६) ।

दुष्प्रिअह नि [दुष्प्रिअह] क्षम्य इय मय
मयह का मयि (म १२६) ।

दुष्प्रिअह नि [दुष्प्रिअह] क्षम्य इय मय
मयह का मयि (म १२६) ।

दुआ ऐसी घूआ (पद्) ।

वृद्ध श्रेष्ठो वृद्धः । पञ्चसय न [पञ्चरात्र]
एक श्रेष्ठ (उत्ता) ।

द्विज सत् [८] मम करना बिहना
 जाया । द्विज (भाषा) । द्वि- द्विज,
 द्विजभाषा (मीन) छाया १ १ मय
 भाषा; महा) । द्वि- द्विजित्तय (कय) ।

दृष्टं न [वृत्तस्य] वृत्ती का अपर्य वृत्तीपन
(पन्थ ३३ ४३) ।

वृक्ष की [दृष्टि] ? इस के काम में मित्रक की हुई थी समाचार-दृष्टि की दृष्टि (६४ १९०)। २ दिन साधु की के मित्र मित्र का एक दोष (हा १४-पत्र १९६)। पिछ ५ [पत्र] समाचार पत्र से मित्र की दृष्टि (पत्र २ १९६)। दो वृक्ष ।

दृष्टं वि [दृष्टं] हेतुन विद्या दृष्ट्या 'हा विद्य-
वर्त्यत इत्येव (?) एव' मयं तुम् (स ७९३) ।

वृणं वृ [व] इती हायी (वे ५, ४४- पठ) ।
वृण (मप) षो वृण (विम) ।

दुष्पात्रं वि [३] १ मध्यमः । २ लघुः,
लघुः लघुः (वि ३, ३६) ।

दूध घण [दुग्धम्] दूधमा दुग्धित होमा
तम्हा पुसोति दूधमिज्जा पद्दमिज्ज व दुग्धणी
(भा १३) ।

दृमग रेणी दुमग (एणा ! ११—
१६९) ।

बृहग्नं न [दीर्घाग्न्य] बृह्नाग्नं नराणां
तमीष (उप पृ ३१) ।

संज्ञा वचना । इमं इमे (भुवा वः) इय
इ य २१) । वयं इमिम् (महि)

वा दुर्मेन (मे १ ११) । अथ हृदि
अन (मुता २१५) ।

दुम लो दुम = बरतम् (हि ४ २४) ।
 दुमक { वि [दायक] बरताय-अनर पीडा
 बरताय { बरतक (बरत ? ३ : बरत ?)

दूमज रि [शायर] उपनाम कखेराना (मु.
१ १ २ २७)।

दूमग न [दुपन सावन] गरिजात साद
(पसह १ १)।

दृमग ऐवो दुम्मण = दुर्मगध् (मृष १
२ २)।

ह्रीं उद्दिग्ध-मन्त्रक (गान्—मातृती २५) ।

धूमिञ्च [वृत्त, दा. चैत्र] संतापित पीडित
(मुष्ण १ १११ २१)।

४ २४ अयम्)।

दूर न [दूर] १ प्रतिकट प्रमथीनः 'स्वेष'
 दूर न [दूर] १ प्रतिकट प्रमथीनः 'स्वेष'
 दूर न [दूर] १ प्रतिकट प्रमथीनः 'स्वेष'

(पाठ ४) ।

दूसरे दिना दुसरे (संवि १०) ।
दूस मक [दुप्] इषित होना बिहय होना

वृत्त सक [वृत्त] बोधित करना, वृत्त—

दूस न [दूज्य] १ वल कपडा (सम १२१)

गणि पु [गणिन्] एक वैय व्याचारे

नारा होने पर पाठसिपुत्र में अभिविक्त एक
सूत्र (सूत्र) : इति ह [सूत्र] सूत्र सूत्र

पुटी (स २१७) ।
 वसम वि [वपक] दीप प्रकट करेवासा

वृत्तग वि [वृत्तग] वृत्ति करलेबासा (मुप)

२७४ सं १२४)।
 वृत्तग वि [वृत्तग] वृत्तग विमलमनेवाला

दूषण न [दूषण] दूषित करना (अ० ७३)।

सूत्र १८ [दूषण] १ शेष धारण । २
कर्तक शाय (तुंडु) । ३ पुं रागण की मौसी

कलशात्ता (स २२८) ।

कास-निरोध पाण्डवा धारा 'दूधमे काये'
(सद्वि १२६) । दूधमा यैतो वरसम

दुस्तमा (सम ११ ठा ११) । मुसमा
रेगी दुस्तममुसमा (ठा २ १ सम १४) ।

वृसमा एवो दुम्ममा (सम ११) ज्ञ २११
 टी सं १४)।

(पण १७—पण २१) । दिण्ण, 'दिण्ण' दुं [वृत्त] व्यक्तिकाच नाम, एक धारवाह-
पुत्र (पण १७—पण २१) । दीय
दुं [दीय] दीन-विशेष (बीज १) । दूस्
न [दूस्] देवता का ब्रह्म, शिव ब्रह्म
(बीज १) । 'देव' दुं [देव] १ परमेस्वर,
परमात्मा (पण २१) । २ इन्द्र देवों का
स्वामी (पण २१) । 'नट्टिया' बी [नट्टिका]
नाट्येवासी देवी देव-मंदी (पण ११) ।
'नयरी' बी [नयरी] धमरावती स्वर्ग-मुटी
(पण १२ १५) । पडिक्खोम दुं [प्रति-
क्षोम] तमस्काय धमकार (मग १ ५) ।
अडिक्खोम दुं [परिक्षोम] कण्ड्य-नाभि
(मग १ ५) । पड्यय दुं [पर्यय] पर्यव-
नित्येय (अ २ १—पण ८) । पससाय
दुं [पससा] राजा कुमारान का विवाह
का नाम (पण २) । फडिक्खुं दुं [परिच]
तमस्काय, धमकार (मग १ ५) । मइ
दुं [मइ] १ देव-दीप का धमिष्ठता देव
(बीज १) । २ एक प्रविष्ट शैलार्थ (धार् ८१)
३ मूमि बी [मूमि] १ स्वर्ग
देवलोका । २ मण्डप मुलु धमना य
चिह्नी चित्रेणो देव-प्रथिमपुत्रो (पण १२२) ।
महामइ दुं [महामइ] देव-दीप का
धमिष्ठता देव (बीज १) । महापर पु
[महापर] देव-नामक स्रुत का धमिष्ठता
देव-विशेष (बीज १ इ) । रइ दुं [रति]
एक पत्नी (मग १२२) । रअण दुं [रअ]
राजपत्नीय एक राज-भुमार (पण २,
१११) । रण्य न [रण्य] तमस्काय,
धमकार (अ ४ २) । रमण दुं [रमण]
१ सीमावर्ती नयरी का एक स्थान (विता
४ ४) । २ राख का एक प्रधान (तम
११ ११) । राय दुं [राय] इन्द्र (पण
२, १८० ४६, ११) । रसि दुं [रसि]
नारद मुनि (पण ११ १८ ७७ १) ।
अअ ओग दुं [ओग] १ स्वर्ग (मग-
णमा १ ४ गुण १११० का ११) । २
देव-नाभि 'अअिहा' से मंदी देवलोका
पण्डिता १ पोषा नवविहारा देवलोका
पण्डिता से पठ—अण्णामी बण्णवत्त,
ओउहिमा नैमसिण्ण (मग २ ६) ।

ओगामण न [ओगामण] स्वर्ग में
उत्पत्ति प्राप्तीगमणार्थ देव-लोकागमणार्थ कुल
मपन्ध्याया पुत्री बौद्धिमा (मग १४२) ।
'वर' पु [वर] देव-नामक स्रुत का धमिष्ठता
मग देव (बीज १) । वरू बी [वरू]
देवायता देवी (पण १) । सर्पली बी
[सर्पली] १ देव-कुल प्रतिशेष । २ देवता
के प्रतिशेष से भी हुई शीला (अ १—पण
४७१) । संणिपाय दुं [संनिपाय] १
देव-समागम (अ १ १) । २ देव-समुह । ३
देवों की भीड़ (पण) । सम्म दुं [शर्मन्]
१ इस नाम का एक ब्राह्मण (महा) । २
ऐक्य क्षेत्र में उत्पन्न एक विनयेन (मग
१२१) । 'साळ' न [साळ] एक नगर का
नाम (अ ७१८ टी) । सुवरी बी
[सुवरी] देवायता देवी (पण २२) ।
सुय देवो सुसुय (पण ७) । सेज पु
[सेज] १ लखार नगर का एक राजा,
विश्वरूप दुष्ट नाम महापरा का (अ ६—
पण ४३६) । २ ऐक्य क्षेत्र के एक विनयेन
(पण ७) । ३ अण्ड-क्षेत्र के एक प्राची विनयेन
के पूर्ववर्त का नाम (टी १६) । ४ धनानु
मैमिना का एक शिष्य एक मण्डप्य मुनि
(पण) । सस न [सस] देव-अथ विन-
मनिर-संभवो जन (पण ५) । सुसुय दुं
[सुसुय] अण्ड-क्षेत्र के अर्द्ध प्राची विन-येन
(मग १२१) । इर न [गुह] देव-मन्त्रि-
(अ ४११) । इरेय पु [विदेव] अर्द्ध
देव विन मणानु (अ १२ ६) । [अण्ड]
दुं [अण्ड] ऐक्य क्षेत्र में धामाभी अर्द्धाक्षिणी
क्षेत्र में उत्पन्न होनेवाले कीर्त्तिसर्व विनयेन
(मग १२४) । अण्ण बी [अण्ण] १
महापर महावीर की प्रथम माता (पण २,
११, १) । २ पत्र की पत्राक्षी राजि का
नाम (कण्य) । अण्णिय दुं [अण्णिय]
धम, महापुत्र महामुग्ग घण-पण्डित (दीन
विता १ १ महा) । अण्णिय दुं [अण्णिय]
एक मुनिविष्ट शैल धामार्थ (पण ७) । अण्ण
देवो रण्य (मग १ ३) । २ देवों का कीड़ा
स्वाम (अ १) । अण्य पुन [अण्य] स्वर्ग
(अ २१५ टी) । अहिंय पु [अहिंय]
परमेस्वर, परमात्मा विनयेन (अ ४१ टी)

३) । अहिंय दुं [अहिंय] इन्द्र देव
नामक (पण १ १) ।
वेद्य पुन [वेद्य] एक देव-विमान (वेद्य
१११) । कुकु बी [कुकु] मगान्मु मुनि-
गुप्त स्वामी की वीरा-शिल्पिका का नाम
(विचार १२६) । प्यवय पुन [प्यवय]
कमानवार बुध्मवासा शिष्य धामन-स्वाम
(पण २ १५, ३) । वमिस्स पुन
[वमिस्स] धमकार-पति, तमस्काय (मग
१, ५—पण २१८) । विता बी [विता]
मगान्मु बावुपुत्र की वीरा-शिल्पिका (विचार
१२६) । पडिक्खोम दुं [परिक्षोम]
कण्ड्यपति कण्ड्यपति पुत्रों की रेखा (मग
१, ५—पण २७) । रमण दुं [रमण]
मन्त्रीधार द्वीप के मध्य में पूर्व-दिशा स्थित
एक धर्मनगरि (पण २१६ टी) । वुइ दुं
[वुइ] तमस्काय (मग १, ५—पण
२१८) ।
वय देवो वइय (अ १२६ टी, महा ६ १
१२१ टी) । वु नि [वु] वीरिप-गण
का नातकार (पण २ १) । वर नि [वर]
मग पर भी म्मा रत्नेवाजा (पण) ।
वेद्य बी [वेद्य] वीरिप का माता,
धामाभी अर्द्धाक्षिणी का क्षेत्र में होनेवाले एक
वीरिप-देव का पूर्व मग (पण २ १८३,
मग १२२ ११५) । देवो वेद्यी ।
वेद्यपण न [वे] पत्र पुण्य पत्रा कृपा पत्र
(अ ४, ४६) ।
वेद्य देवो वा ४ ।
वेद्यग न [वे] विम्याह देवपुत्र ब्रह्म (अ
७१८) ।
वेद्यग न [वेद्यग] स्वर्ग शिखर पडिठ
का वेद्यगले रम्य (सम्य ११) ।
वेद्यमर देवो वेद्यगार (मग १ ५—पण
२१८) ।
वेद्यगार दुं [वेद्यगार] विनिर-विनय
धमकार का स्रुत (अ ४ २) ।
वेद्यकिस्सि दुं [वेद्यकिस्सि] एक धमय
देव नाभि (अ ४ ४—पण २७४) ।
वेद्यकिस्सिया बी [वेद्यकिस्सिया]
नामन-विशेष जो धमय देव-मोर्ति में अर्पित
का कारण है (अ ४ ४) ।

मै वला ह्या (सुर १ ११२) । 'सहा की
[समा] बर्नगला (अ ५ ११२) ।

वैसिअ रेको वैसिअ: 'पवित्रम बविमै सम्य'
(पवि मा १) ।

वैसिअय वि [वैसिअय] बिजने उपरोध
बिया ही बह (सुर १ १, २५) ।

वैसिअय रेको वैसिअ = वेय (इह ३) ।

बसी की [बेसी] भापाविरोध धारण प्राचीन
प्रायः भापा का एक मेर (इ १ ५) ।

भासा की [भापा] बही धर्म (आमा १
१: धीन) ।

वेमूण वि [वेरोन] कुच कम धंरा की नवी-
बाला (मम २ १ ३ व २०) ।

वेरस वि [हरय] १ बेकने योग्य । २ बेकने
को राज्य (स ११६) ।

वेह रेको वेकल । वेई, वेए (स ११ १;
वि ११) । बह वेहमय (मा १ ११) ।

वेह पुंन [वेह] १ शरीर, बाय (की २०: कुच
१२३ प्राय १२) । २ पुंन मिषाच-विरोध
(इका परल १) । रय न [रय] मैनुन
(बमा १ ०) ।

बहबलिया की [वेहयलिषा] मित्रा-भूति
भीष की धामीबिना (आमा १ ११—पन
११६) ।

वेहणी की [वे] पन बर्नम बाध कोसे
(इ १, ४०) ।

वेहरय (पय) न [वेहगृहक] वेह-नगिर
(बमा १ ०) ।

बहकी की [वेहकी] बीषट, हार के लीने की
नचही (स २२३: दे १ १२, सुर १०३) ।

वेह पुंन [वेहिय] पाया भीष (स ११२) ।

बहु (पय) न [वेहकुल] वेह-न्याल, नगिर
(मवि) ।

हा य [हिया] दो प्रकार से दो ठण (मुना
२१३: ११२) ।

हा वि न [हि] दो पनय मुन (इ १;
१५) ।

दा पुंन [दोस] हाय बाहु (विम १११
रंभा बणु) ।

हाअई की [हियदी] धर-विरोध (मि) ।

हाआअ पुंन [दे] इम, ईन (इ २, ५६) ।

दोइ रेको दो—विना (इह ३) ।

दोयुर [वे] रेको दोयुर (स ४) ।

दोकिरिय वि [द्विक्रिय] एक ही समय में दो
क्रियाओं के धनुर की मानेबाला (अ ७) ।

दोकर रेको दुकर (मवि) ।

दोकरार पुंन [द्विअकर] फल ननुचक
(इह ४) ।

दोमई रेको दुमई (मवि) ।

दोसई अय वि [द्विअण्डय] बिसे को ठुके
मिप गर हों बह (मवि) ।

दोसई वि [द्विअण्डय] बूणा करनेगला
(वि ७५) ।

दोराय न [दोराय] १ दुर्गति दुर्गता (पंच
४) । २ राखिय निर्बलता (मुना २३) ।

दोरायि रेको दोगादि (वि २१२) ।

दोराय पुंन [दोराय] एक वेह-विमल
(वेह १५२) ।

दोराय पुंन [दोराय] सतम-आलोष वेह
विरोध (मुना ११) ।

दोरा न [दे] मूम गुण (इ ३, ५२: पइ) ।

दोरा रेको दुगाय (सुर ० १११) । कर
वि [कर] दुर्गति-नमक (पन ७१ १) ।

दोराय रेको दोगा (मा ७१) ।

दोराय पुंन [दे] हापी हली (वि ४११
शोभाय ४) पइ पाय महा लघुय ४ स
दोराय ४११) ।

दोराय पुंन [द्विअय] विनाबर बरा क एक
परा का नाम (पन ३, ५४) ।

दोरा वि [द्वितीय] इवप (मम २ ० विना
१ २) ।

दोरा न [दोय] इवप, इव-नर्न (आमा १
० मा बय) ।

दोरा य [द्विस्] दो बार, दो बरत एवं
न विनामिता दोर्यं ठण्यं सधु-नर्न (सुर
२ १६) ।

दोराय न [द्वितीय] १ इवप धीन । २
पकया ह्या शाक (इह १) । ३ तीयन,
करी (दीप ११७ मा) ।

दोराय पुंन [द्विअय] १ दुर्गति । २ वीर
(सुर १ २) ।

दोराय वि [द्विअय] दोरने योग्य (माया २
४ २) ।

दोरा पुंन [द्विअय] १ धनुर्वेद के एक मुनिवद
धातम जो पाएकन बीर कीरों के एक वे
(आमा १ १६) बणी १ ४) । २ एक
प्रकार का परिमाण (को २) । सुह न
[सुय] गप, जल बीर स्वम के मार्गबाला
गहर (परह १ ३) बण्य बीर) । 'मिह पुं
[मिह] मेर-विरोध, बिचही बारा से बड़ी
बसरी घर बाय बह बर्न (विदे १५२०) ।

मुया की [मुया] सवय की की न
नाम बिख्या (पन १४ ५४) ।

दोराय पुंन [दे] १ धनुर्वेद गाँव का मुचिया ।
२ शाकि हलबाहु, हल बीरनेबाला हलबाहु
(इ ५ २१) ।

दोराय की [दे] घराय ननुमली (इ ५
२१) ।

दोरा की [दोरा] १ नौका छोटा बहाय
(परह १ १ २ ४० बम १२ टी) ।

२ पागी का बड़ा हुँका (मणु ५४१) ।

दोरा की [दुस्तरदी] कु मदी 'एकतो
वहूँ पदतो दोरादी विमल' (अ ५१
टी मुना ५११) ।

दोरा न [दोस्तर] दुस्तरा दुर्गति
(ब ४ ७) ।

दोराय वि [दुर्गति] दुह से रेने योग्य
(सि ४) ।

दोराय पुंन [दे] बर्न-बूय बमई का बरा
ह्या मायक-विरोध (इ ३ ५६) ।

दोरा वि [दोरा] दोरा-नर्न (स १ १ टी) ।

दोराय } न [दोराय] धर-विरोध
दोराय } (विम) ।

दोराय पुंन [द्विअय] विनाबर दो बाय
करा (अ ३ ३—पन ११६) ।

दोराय वि [दुर्गति] धारण कर से
बनने योग्य (मम ७ १—पन १ २) ।

दोरा पुंन [दे] धनुर्वेद स्वर्न-गायक (परह) ।

दोराय वि [दोराय] दोराय (माया २ १
१ १) ।

दोराय न [दोराय] दुर्गति (वि २०३:
मम ५२) ।

दोराय वि [द्विअय] दो मायगा, दो
बायगा (अ १५० टी) ।

दोमणसिय वि [दोमैणसियङ] किम्ब छोङ
 घट्ट (हा २, २—यन् १११) ।
 दोमणस्स न [दोमैणस्स] बैकण्य, दोप
 मन् नी दुण्णा (मुप २, २ क२१ क३) ।
 दोमामिअ वि [दोमैसिअ] दो मण का
 (यन् मुर १४ २२) । ओ. आ (सम
 २१) ।
 दोमिय (यन्) दोमो वूमिअ = दारिद्र (यन्) ।
 दोमिओ ओ [दोमिओ] निर्मिन्निओ (यन्) ।
 दोमुह वि [दोमुह] १ दो दुहुवत्ता । २
 दु दुहन्निओ (यन्) । ३ दुहुवन् (भा २२१) ।
 दोर दु [दो] १ दोप बाया मून् (यन् ४
 २, मुप २२९ मुर १, ११) । २ दोटी
 एवी (मोप २३२ २४ मा) । ३ दणि-मून्
 (हे ३ ३८) ।
 दोरिया दोो दोरी (मिदि १९) ।
 दोरी ओ [दो] दोटी एवी (पा १९) ।
 दोर घट्ट [दोमय] १ दिला । २ भूतना ।
 दोर (हे ४ ४८) । दोरी (यन्) ।
 दोलयन न [दोयनङ] भूतन घट्टोन
 (हे ८ ४१) ।
 दोमपा } ओ [दोस] घुसा दिशोता (मुपा
 दोस } २८२ मुपा) ।
 दोसङ्ग वि [दोसङ्गिय] १ दिला हुपा ।
 २ संरुपि (मिवा ११६) ।
 दोस्यमाण वि [दोस्यमाण] १ दिला
 हुपा । २ संरुप कला हुपा (मुपा ११७
 नङ्ग) ।
 दोमिया दोो दोम्य (मुर १ ११४) ।
 दोमिय वि [दोमिय] भूतनेगता (मुपा) ।
 दोप दु [दो] १ यन्नाय दारि (यन्) ।
 दोप ओ [दोप] घटा हुप की नम्य
 पावन्नाय (मुपा १ १९ का १४ टी,
 नङ्ग) ।
 दोपण दोो दोपण = दियण (हे १
 २४ मुपा) ।
 दोपर (यन्) दोो दुपार (यन्) ।
 दोपारिअ } दु [दोपारिअ] दारणा वर
 दोपारिअ } वर वट्टार (मिदु २, लाय
 १ १ मन् ४ २१ मुपा ४२१) ।

दोविह दोो दुविह (यन् २ मन् १) ।
 दोवेओ ओ [दो] दारणा का मोयन (हे ४,
 २) ।
 दोवण दोो दोवण (सि ४ ४२, न
 ८७) ।
 दोस दोो दोस = दुप (मोप, यन् ७९८ टी) ।
 दोस दु [दो] दुप घटा हुप (मोप
 मुर १ ७३; यन् ६; प्रमू १९) । "मु
 वि [दो] दोप का बलकार, विदु (मि
 १ २) । इ वि [प] दोप-नारका भूयति
 पोहो दोप दु [दो] (मुपा १२१) ।
 दोस दु [दो] १ यन् प्रावा (हे २ २९) । २
 मोप मोप प्रसा (हे ३ २९ पङ्) । ३ दोप
 दो (मोप म्या हा १ यन् ३) मुप १
 १९) यण २३ मुर १ ३३ सण योका
 मुप ३७१) ।
 दोस दु [दो] हान इल नाहु (मि
 २, १) ।
 दोसणिअ दु [दो] यन् यन्ना यन् (हे
 ४, २१) ।
 दोमा ओ [दोपा] यन् यन् (मुर १ २१) ।
 दोमाकण न [दो] मोप मोप (हे ४, २१) ।
 दोसाणिअ वि [दो] निर्मन्निअ हुपा (हे
 २ २१) ।
 दोसायर दु [दोसाय] १ यन्, यन् (यन्
 ७२; टी मुपा २७२) । २ दोपी की बल
 दु (मुपा २७२) ।
 दोसायन दु [दो] दारणा यन् यन्
 (यन्) ।
 दोसायन दु [दोसायन] दोप-मुक, दु
 (यन् ११७ ४१) ।
 दोस वि [दोपिय] दोपनाता, दोपी (मुप
 ४१८) ।
 दोमिअ दु [दोपियङ] यन् का म्यापी
 (भा ११; यन् १९९) ।
 दोमिय [दो] दोो दोमिय (यण २ २)
 दोमिया [दो] दोो दोो (यन् ४, ४—यन्
 १) । या ओ [दो] यन् यन् एक न
 एवी (यन् ४ १ २४ लाय २)
 दोमिनी ओ [दो] दोमिय = योम्या, यन्
 यन्ना (हे ४, २) । दणिमुपा दोपी
 यन् (मुप ४१) ।

दोसियण न [दोपियण] योपी यन्
 (यन्) ।
 दोसिअ वि [दोपय] दोप-मुक (यन्
 ११ टी) ।
 दोसिअ वि [दो] दोप-मुक, दोपी (मिदि
 १११) ।
 दोसीय न [दो] यन् का योपी यन् (यण २,
 २ यन् १४२) ।
 दोसीअ वि [दोसीअ] दुप यन्नायना (यन्
 ७९) ।
 दोसीअ वि न [दोसीअ] योपी
 ३२ (यन्) ।
 दोह उक [दोह] दोह कला । यन् दोह
 (मोप ४) ।
 दोह प [दो] दोह (हे २ २४) ।
 दोह वि [दो] दोह दोप (यन् २) ।
 दोह दु [दो] दोह दोप (यन् यन्) ।
 दोहमा न [दोमिअ] दुप यन्ना यण्ट,
 यन्नायनी (यण्ट १ ४ मुर १ १७४ पा
 ११२) ।
 दोहिग वि [दोमिअ] दुप यन्नायना
 यन्नायनी यन्नाय (यन् १९) ।
 दोहण न [दोहण] दोहण दुप निकलन
 (यण्ट १ १) । दोहण न [पाटन]
 दोहण-यन्ना (मिप २) ।
 दोहणदारी ओ [दो] १ दोहणदारी ओ (हे
 १ १ का २, २९) । २ यण्टदारी यन्ना
 यण्टदारी ओ यण्टदारी (हे ४, २९) ।
 दोहणी ओ [दो] यन् काय, यन् (हे ४
 ४८) ।
 दोहण वि [दोहण] दोहणदारी, (पा ४९१) ।
 दोहण वि [दोहण] दोहणदारी, यण्टदारी
 (का १२७ टी यन्) ।
 दोहण न [दोहण] यण्टदारी ओ का यण्टदारी
 (हे १ २१७ २२१ यन्) ।
 दोहण म [दोहण] यो यण्ट (हे १ २७) ।
 दोहणम वि [दोहणम] यण्टदारी यो यण्ट
 यन्ना यन्ना दोहण (हे १ २७ मुपा) ।
 दोहणम न [दो] यण्टदारी, यण्ट (हे ४,
 २) ।
 दोहि वि [दोहण] यण्टदारी, यण्टदारी
 (य ४९६) ।

बोहि नि [बोहिन्] बोह कलेताला (यहि) ।

बोहिण्य नि [हिमिम] विहण्ड निवण्ड
बोहण्ण किमा गया हो बह (प्राक २१) ।

बोहिण्ण पुं [बोहिन्] लङ्गीका लङ्गा माती
(हे १ १ ८, गुग २४४) ।

बोहिणी की [बोहिणी] लङ्गी की लङ्गी
नलिनी (पहा) ।

बोहण्ण पुं [ब] लङ्ग लुल्ल (हे २,
४६) ।

होम रेकी दोस = (हे) अत्रियत्सहोयो
(कुम १) ।

ब्रवण्ड (घण) न [बे भव] मय डर, भीति
(हे ४ ४२२) ।

ब्रह्म पुं [ब्रह्म] ब्रह्म ब्रह्मण्य सरोवर, भीम
(हे २ ८ कुमा) ।

ब्रेहि (म) की [ब्रेहि] लङ्गा (हे ४ ४२२) ।
ब्रेह रेकी वाह = ब्रेह (नि २१५) ।

॥ इय विरियाइअसद्महण्यधम्मि बण्यपइसद्मकल्लो

पंक्तीसन्तो लरणी समतो ॥

घ

घ पुं [घ] बल्ल-स्वामीय बल्ल-विरोध
(मात प्राप्ता) ।

घञ् रेकी घञ् (वा २) ।

घण्य पुं [घ्याण्य] काक, कीय (ज ५२१;
पंथा ११) ।

घण्य पुं [घे] भीय भ्रमर, मय (हे २, २७) ।

घेत न [घ्यान्त] मन्त्रकार, धिप (पुर १
१२; क ११) ।

घेत न [घ्यान्त] ब्रह्म (हेन १) ।

घेत न [घे] घति घटित्य घट्यन्त 'घट-
ति घुपलमि' (पञ्च २६; विदे १ १६,
५६) ।

घेत नि [घ्यात्] १ घीन में लगाया हुआ
(छाया १ १ भीत पर १ १७ विदे
१ २६ धनि १४) । २ घण्य-पुल, घटित्य
(विह) ।

घेया की [घे] लङ्गा शरण (हे २, २७) ।

घेयुधन्य न [घेयुधन्य] दुश्चर का एक
नगर, जो प्रायः बल 'घेयुका' नाम से प्रसिद्ध
है (गुग ६२८; कुम २) ।

घेयोध्यि (घर) नि [अमित] कुमाया हुआ
(घण) ।

घेत धक [घेत] लट होना । घेत, बंघ
(पह) ।

घेत धक [घेत] १ लङ्गा करना । २
लुट करना । बंघ (सुप १ २ १) । बंघ
(घम २) ।

घमाह धक [घुप्] व्याप करना लोडना ।
घमाह (हे ४ ६१) ।

घसाहिय नि [घुक्] परित्यक्त छोड़ा हुआ
(कुमा) ।

घसाहिय नि [घे] व्यापल लट (हे २,
२६) ।

घगघग धक [घगघगाय] १ 'बघ-बघ'
घावा करना । २ बसना, घटित्य बसना ।
बघ घगघगत (छाया १ १; पञ्च १२
२१ अदि) ।

घगघगाइ नि [घगघगायित] 'बघ-बघ'
घावावाधा (कय) ।

घगघगा रेकी घगघग । बघ घगघगाइ-
माण (नि २२८) ।

घगीकय नि [घे] बहाया हुआ घटित्य
प्रतीत्य 'घगीकय' का प्रतीत्य (वा
१४) ।

घज रेकी घज = घजन (कुमा) ।

घट रेकी घिट्ट (हे १ ११; पञ्च ४६,
२६; कुमा १ ५२) ।

घट्टासुण्य पुं [घट्टासुण्य] घना दुग का
घट्टासुण्य एक पुन (हे २ २७ छाया
१ १६ कुमा प १ नि २७५) ।

घट्ट न [घे] बड़ मने से भी के का शरीर
(गुग २४१) ।

घट्टहिय न [घे] लरणी मन्त्रिक (गुग
१७६) ।

घन न [घन] १ घित विमल स्वच्छ
जंगल सम्पत्ति (उत्त ६; सुप २ १ प्राप्ता
२१ ७६ कुमा) । २ घटित्य घनिय
या परिच्छेद इत्य-निग्री से भीतर या
से अन्त-विच्छेद योग्य पदार्थ (कय) । ३ पुं
कुबेर, बल-वर्धन 'घन यो घिरी पलोध्न
बलकमि' (गुग ११) । ४ स्वामि-व्याप
एक घेरी (उत्त २२२) । ५ बय लार्चवाह का
एक पुन (छाया १ १८) । इत्त इत्त
नि [बन्] घनी बलवाला (कुम २४४,
१ २६२ घिह १) । 'गिरि पुं [गिरि]
एक लैत महवि को बलवाली के पिता से
(कय घ १४२ टी) । गुप्त पुं [गुप्त]
एक लैत मुनि (मातम) । गोब पुं [गोब]
बय लार्चवाह का एक पुन (छाया १ १८) ।
'बह पुं [बह] एक लैतमुनि (कय) ।
अदि पुं की [अदि] कुमा लैत-अय, लैत

घटी को [घात्री] १ बाई, जमाता बाई (लम्ब १२२) । २ घुपवी मुनि । ३ धाम लही-बुद्ध धोवने का पेड़ (हे २, ८१) । रेवो घाई ।

घचूर पु [घचूर] १ बुद्ध-विरोध बनूण । २ न बनूण का पुष्प (सुपा १२४) ।

घचूरिय वि [घाचूरिक] विघने बड़प का मत्ता किया हो बड़ (सुपा १२४ १७६) ।

घरय वि [खल] बंध प्रात नट नमो हुआ (हे २ ७६ छस) ।

घन रेवो घण्य = गण्य (कुमा प्राप् २३ ८४ १३३, उवा) ।

घन न [घाम्य] १ घन भाना घन (उवा गुर १ ४६) । २ घन्य विरोध 'कुसल्य हह घनय कलाया' (पव १३६) । ३ बनिपा (सुनि १) । कोष्ठ पुं [कीन्] नाक में होनेवाला कीट, कीट-विरोध (बी १७) ।

'गिहिं दुब्बो [निधि] बाल रखने का घर, कोठाघार, भंडार (उ ४, ३) । पराय पु [प्रत्यक] बाज का एक गल (ब १) ।

'पिडान न [पिटक] नाक का एक गल (ब १) । पुच्चिय न [पुच्चिधाम्य] इन्द्रिया किया हुआ धाम्य (उ ४ ४) ।

'किक्खित न [विधितधाम्य] विहीलं भाना (उ ४ ४) । विरुच्चिय न [विरुद्धिधाम्य] नासु से इच्छा किया हुआ धाम्य (उ ४ ४) । संकटिडय न [संकटिधाम्य]

कोट से काटकर बने—वसिष्ठान में नाया क्या नाय (उ ४ ४) । तयार न [गार] कोठाघर, बाल रखने का घर (सिद्ध ७) ।

घसा की [घाम्य] धाम्य, धानाक 'समित्त वाईसायो वलायी छनवाईयो (उ ४ ७६ टी) ।

घसा की [घाम्य] एक की का नाम (उवा) । धम एक [घ्या] १ बसता बीकना धाम में ठाना । २ खन करना । ३ बासू पुजा ।

बमइ (महा) । बमेइ (कुप १४६) । बह, धर्मव (सिद्ध १) । कबइ धम्ममाणा (कपा छाया १ १) ।

धमग वि [धाम्यक] धमनेवाला (धीप) । धमण न [धमन] १ धाम में ठारना (धामाणि १ १ ७) । २ बासू-पुण (पण्ड १ १) ।

३ धि, यद्ध, बमगी धानी (पव) । धमपि १ बी [धमनि नी] १ मझ, धमणी १ बमगी बीकनी । २ नाड़ी विप (सिपा १ १ उवाट धीट २७) ।

धममम एक [धमधमय] 'बद-बद' धावाक करना 'बमबमइ विरं बणियं बामइ सुलीयं भग्गयं विट्ठी' (सुपा १ १) । बह धमधर्मव धमधमार्थव धमधर्मव (सुपा १२४ नाट—मासवी ११६ छाया १ ८) ।

धमास पुं [धमास] बुद्ध-विरोध (पण्ड १७) । धमिअ वि [ध्यात] विधमें बासू घर बिचा क्या हो बह 'धमिओ संलो' (कुप १४६) ।

धमिय वि [धमाड] बाल में ठारना हुआ 'धमियधमय पुं कार हापवर्नं हुअ' (सोह ४७) ।

धम्म पुं [धर्मे] १ एक देव-विमल (वेधेअ १४३) । २ एक दिन का उवाड (संघोअ ३८) ।

धम्म पुं [धर्मे] १ शुच धर्म कुराव-जगक मज्झिम, उवाचार (उ १) । सम १ २ धावा सुप १ ६, प्राप् २२ ११४ सं ३४) । २ पुण्य पुण्ड (सुप १ २४ धावा ४) । ३ स्वभाव अर्द्ध (सिद्ध २) । ४ पुण्य पर्याय (उ २, १) । ५ एक धरणी पराध, जो बीज को पति-किया में सहायता पहुँचाता है (न ३) । ६ बर्तमान धरवसिणी काल में जलान पनहर्ने जिन-देव (स ४३) पठि ।

७ एक बणिज (अ ७२८ टी) । ८ विपति, मर्यादा (माह २) । ९ बसुण कायुक (सुप १ २४ पव) । १० एक कै नुनि (कय) । ११ 'धुअइज्जा' पुन का एक सम्मन (धम ४२) । १२ धावाए, पीठ, व्याहार (कय) ।

कच पुं [कुच] शिष्य (माक) । कर न [पु] नाव-विरोध (सं १) । क्खिअ वि [क्खिअव] बर्न की बाधनाला (पव) ।

क्खी की [क्खा] धर्म-सम्पत्ती (पव) (अ २, धम १२ छाया २) । कइ वि [कथिन्] धर्म-कथा कहनेवाला, धर्म का उपदेष्टा (धोअ ११३ धा वा १) । कयय वि [कयमक] धर्म की बाधनाला (पव) ।

कय पुं [कय] धर्म का साधन वृत्त उदीर (पं १ ६) । कयाइ वि [क्यायिन्] धर्म-प्रतिपादक (धीप) । कयाइ वि

[क्यावि] धर्म से क्याविवासा धर्माला (धीप) । गुरु पुं [गुरु] धर्म-करोक उद, धर्माचार (अ १) । गुअ वि [गुप्] धर्म रखक (पव) । पोस पुं [पोय] कईएक कै नुनि दीर धावायी का नाम (माह १ टी ७ धावा ४ मा ११ ११) । 'वच्छ म [वक्ष] जितदेव का धर्म-प्रकाशक बह (पव ४ : सुता ३२) । 'वच्छवट्ठि पुं [वक्ष-वर्त्तिन्] जित देव (माह १) । 'पत्ति पुं [वक्किन्] जित भपका (कुम्मा १ १) ।

जयायी की [जननी] धर्म की प्राप्ति करानेवाली की धर्म-देयिका (पं १ १६) । जस पुं [जरास्] कै नुनि-विरोध का नाम (धावा ४) । जागरिया की [जागरी] १ धर्म-विपत्त के लिए किया जाता बायरण (मप १२ १) । २ वन से छटने दिन में किया जाता एक उत्सव (कय) । गम्प पुं [गम्भ] १ धर्म-सोचक ध्वज इन्द्र-ध्वज (पव) । २ ऐरावत क्षेत्र के पक्षमें मावी जिन-देव (धम १३४) । 'गम्भण न [ध्यान] धर्म-चित्तान गुण ध्यान-विरोध (धम ६) । 'गम्भयि वि [ध्यानिन्] धर्म ध्यान से कुछ (माव ४) । 'ट्टि वि [टिप्पिन्] धर्म का धमिनायी (सुप १ २ २) ।

प्यायग वि [प्यायक] १ धर्म का ठेठा (धम १ पठि) । प्यु वि [प्य] धर्म का हाठा (सं ४) । ठिलवय पुं [ठीर्यकर] जिनकबल (उट २३, पठि) । 'त्य न [ती] धर्म-विरोध एक प्रकार का इधियार (पव ७१ १३) । 'तिव रेवो 'ट्टि (पं ४४ ४) । सिक्कय पुं [सिक्कय] बधि जिना में सहायता पहुँचाने वाला एक धरणी पराध (कय) । दय वि [दय] धर्म की प्राप्ति करानेवाला धर्म-देयक (मप) । 'दार न [द्वार] धर्म का लाप (उ ४ ४) ।

दार पुं [दार] धर्म-नाली (कय) । दास पुं [दास] बलान महानीर का एक शिष्य दीर उपदेष्टाना का कटा (अ) । 'दइ पुं [देव] एक प्रसिद्ध कैल (धामार्थ (सो १ ७) । देसाग दसय वि [द्वाराक] धर्म का उपदेष्ट करनेवाला (राव मा १६) । दुआ की [पु] धर्म-व्य

धम्म पुं [धर्मे] १ एक देव-विमल (वेधेअ १४३) । २ एक दिन का उवाड (संघोअ ३८) ।

धम्म पुं [धर्मे] १ शुच धर्म कुराव-जगक मज्झिम, उवाचार (उ १) । सम १ २ धावा सुप १ ६, प्राप् २२ ११४ सं ३४) । २ पुण्य पुण्ड (सुप १ २४ धावा ४) । ३ स्वभाव अर्द्ध (सिद्ध २) । ४ पुण्य पर्याय (उ २, १) । ५ एक धरणी पराध, जो बीज को पति-किया में सहायता पहुँचाता है (न ३) । ६ बर्तमान धरवसिणी काल में जलान पनहर्ने जिन-देव (स ४३) पठि ।

७ एक बणिज (अ ७२८ टी) । ८ विपति, मर्यादा (माह २) । ९ बसुण कायुक (सुप १ २४ पव) । १० एक कै नुनि (कय) । ११ 'धुअइज्जा' पुन का एक सम्मन (धम ४२) । १२ धावाए, पीठ, व्याहार (कय) ।

कच पुं [कुच] शिष्य (माक) । कर न [पु] नाव-विरोध (सं १) । क्खिअ वि [क्खिअव] धर्म की बाधनाला (पव) ।

क्खी की [क्खा] धर्म-सम्पत्ती (पव) (अ २, धम १२ छाया २) । कइ वि [कथिन्] धर्म-कथा कहनेवाला, धर्म का उपदेष्टा (धोअ ११३ धा वा १) । कयय वि [कयमक] धर्म की बाधनाला (पव) ।

कय पुं [कय] धर्म का साधन वृत्त उदीर (पं १ ६) । कयाइ वि [क्यायिन्] धर्म-प्रतिपादक (धीप) । कयाइ वि

[क्यावि] धर्म से क्याविवासा धर्माला (धीप) । गुरु पुं [गुरु] धर्म-करोक उद, धर्माचार (अ १) । गुअ वि [गुप्] धर्म रखक (पव) । पोस पुं [पोय] कईएक कै नुनि दीर धावायी का नाम (माह १ टी ७ धावा ४ मा ११ ११) । 'वच्छ म [वक्ष] जितदेव का धर्म-प्रकाशक बह (पव ४ : सुता ३२) । 'वच्छवट्ठि पुं [वक्ष-वर्त्तिन्] जित देव (माह १) । 'पत्ति पुं [वक्किन्] जित भपका (कुम्मा १ १) ।

जयायी की [जननी] धर्म की प्राप्ति करानेवाली की धर्म-देयिका (पं १ १६) । जस पुं [जरास्] कै नुनि-विरोध का नाम (धावा ४) । जागरिया की [जागरी] १ धर्म-विपत्त के लिए किया जाता बायरण (मप १२ १) । २ वन से छटने दिन में किया जाता एक उत्सव (कय) । गम्प पुं [गम्भ] १ धर्म-सोचक ध्वज इन्द्र-ध्वज (पव) । २ ऐरावत क्षेत्र के पक्षमें मावी जिन-देव (धम १३४) । 'गम्भण न [ध्यान] धर्म-चित्तान गुण ध्यान-विरोध (धम ६) । 'गम्भयि वि [ध्यानिन्] धर्म ध्यान से कुछ (माव ४) । 'ट्टि वि [टिप्पिन्] धर्म का धमिनायी (सुप १ २ २) ।

प्यायग वि [प्यायक] १ धर्म का ठेठा (धम १ पठि) । प्यु वि [प्य] धर्म का हाठा (सं ४) । ठिलवय पुं [ठीर्यकर] जिनकबल (उट २३, पठि) । 'त्य न [ती] धर्म-विरोध एक प्रकार का इधियार (पव ७१ १३) । 'तिव रेवो 'ट्टि (पं ४४ ४) । सिक्कय पुं [सिक्कय] बधि जिना में सहायता पहुँचाने वाला एक धरणी पराध (कय) । दय वि [दय] धर्म की प्राप्ति करानेवाला धर्म-देयक (मप) । 'दार न [द्वार] धर्म का लाप (उ ४ ४) ।

दार पुं [दार] धर्म-नाली (कय) । दास पुं [दास] बलान महानीर का एक शिष्य दीर उपदेष्टाना का कटा (अ) । 'दइ पुं [देव] एक प्रसिद्ध कैल (धामार्थ (सो १ ७) । देसाग दसय वि [द्वाराक] धर्म का उपदेष्ट करनेवाला (राव मा १६) । दुआ की [पु] धर्म-व्य

धम्म पुं [धर्मे] १ एक देव-विमल (वेधेअ १४३) । २ एक दिन का उवाड (संघोअ ३८) ।

धम्म पुं [धर्मे] १ शुच धर्म कुराव-जगक मज्झिम, उवाचार (उ १) । सम १ २ धावा सुप १ ६, प्राप् २२ ११४ सं ३४) । २ पुण्य पुण्ड (सुप १ २४ धावा ४) । ३ स्वभाव अर्द्ध (सिद्ध २) । ४ पुण्य पर्याय (उ २, १) । ५ एक धरणी पराध, जो बीज को पति-किया में सहायता पहुँचाता है (न ३) । ६ बर्तमान धरवसिणी काल में जलान पनहर्ने जिन-देव (स ४३) पठि ।

७ एक बणिज (अ ७२८ टी) । ८ विपति, मर्यादा (माह २) । ९ बसुण कायुक (सुप १ २४ पव) । १० एक कै नुनि (कय) । ११ 'धुअइज्जा' पुन का एक सम्मन (धम ४२) । १२ धावाए, पीठ, व्याहार (कय) ।

कच पुं [कुच] शिष्य (माक) । कर न [पु] नाव-विरोध (सं १) । क्खिअ वि [क्खिअव] धर्म की बाधनाला (पव) ।

क्खी की [क्खा] धर्म-सम्पत्ती (पव) (अ २, धम १२ छाया २) । कइ वि [कथिन्] धर्म-कथा कहनेवाला, धर्म का उपदेष्टा (धोअ ११३ धा वा १) । कयय वि [कयमक] धर्म की बाधनाला (पव) ।

कय पुं [कय] धर्म का साधन वृत्त उदीर (पं १ ६) । कयाइ वि [क्यायिन्] धर्म-प्रतिपादक (धीप) । कयाइ वि

[क्यावि] धर्म से क्याविवासा धर्माला (धीप) । गुरु पुं [गुरु] धर्म-करोक उद, धर्माचार (अ १) । गुअ वि [गुप्] धर्म रखक (पव) । पोस पुं [पोय] कईएक कै नुनि दीर धावायी का नाम (माह १ टी ७ धावा ४ मा ११ ११) । 'वच्छ म [वक्ष] जितदेव का धर्म-प्रकाशक बह (पव ४ : सुता ३२) । 'वच्छवट्ठि पुं [वक्ष-वर्त्तिन्] जित देव (माह १) । 'पत्ति पुं [वक्किन्] जित भपका (कुम्मा १ १) ।

जयायी की [जननी] धर्म की प्राप्ति करानेवाली की धर्म-देयिका (पं १ १६) । जस पुं [जरास्] कै नुनि-विरोध का नाम (धावा ४) । जागरिया की [जागरी] १ धर्म-विपत्त के लिए किया जाता बायरण (मप १२ १) । २ वन से छटने दिन में किया जाता एक उत्सव (कय) । गम्प पुं [गम्भ] १ धर्म-सोचक ध्वज इन्द्र-ध्वज (पव) । २ ऐरावत क्षेत्र के पक्षमें मावी जिन-देव (धम १३४) । 'गम्भण न [ध्यान] धर्म-चित्तान गुण ध्यान-विरोध (धम ६) । 'गम्भयि वि [ध्यानिन्] धर्म ध्यान से कुछ (माव ४) । 'ट्टि वि [टिप्पिन्] धर्म का धमिनायी (सुप १ २ २) ।

प्यायग वि [प्यायक] १ धर्म का ठेठा (धम १ पठि) । प्यु वि [प्य] धर्म का हाठा (सं ४) । ठिलवय पुं [ठीर्यकर] जिनकबल (उट २३, पठि) । 'त्य न [ती] धर्म-विरोध एक प्रकार का इधियार (पव ७१ १३) । 'तिव रेवो 'ट्टि (पं ४४ ४) । सिक्कय पुं [सिक्कय] बधि जिना में सहायता पहुँचाने वाला एक धरणी पराध (कय) । दय वि [दय] धर्म की प्राप्ति करानेवाला धर्म-देयक (मप) । 'दार न [द्वार] धर्म का लाप (उ ४ ४) ।

दार पुं [दार] धर्म-नाली (कय) । दास पुं [दास] बलान महानीर का एक शिष्य दीर उपदेष्टाना का कटा (अ) । 'दइ पुं [देव] एक प्रसिद्ध कैल (धामार्थ (सो १ ७) । देसाग दसय वि [द्वाराक] धर्म का उपदेष्ट करनेवाला (राव मा १६) । दुआ की [पु] धर्म-व्य

यमित्र रि [यसित] बसा इय (हम्मिर
११)।

घा वृक् [घा] वारुह करमा । वाह, वाघ्य
वाघ्य (वह) । कर्म वीर्य (लिह) ।

या शब्द [ध्वं] ध्यान करना विनियम करना ।
आध्यात्मि (धर्मि ७६) ।

धा लङ् [धाङ्] १ शीघ्रता । २ शुद्ध करना
 मोता । धाङ् वाङ् (इ ४ २४) । धङि
 वाङि (पङ्) ।

आइम बि [आविम] बीका हुमा (पे ८, १८)
अविम)।

षाडभसंख ऐखो षायइ-संख, (महा) ।

भाई के दो बच्ची (द्वे २ बहः पद्म ६७) । ४
भाई का काम करने से प्रातः की हुई मित्र
(छा ३ ४) । ५. कल्प-मित्र (मित्र) । 'पिप्लव'
पुं. 'पिप्लव' भाई का काम कर प्रातः की
हुई मित्र (पद्म ६७) ।

भाई बेबो घायई, (जय १४ टी) ।

भाउ पु [बाउ] १ सोना चांदी सोना
लोहा सोना छोटा और बस्ता में काट बल
(जी १) । २ मेर, मनसिल यासि पचाई (१
४ ४ पचाई १ २) । ३ हठीर-बारर
बल्लु—कक, बाउ पिता रख रख, मसि
केर, यासि मका और मुक (पीन मु
१३५) । ४ बुझी बल ठेक और बाउ
बार महाभूत (दुम १ १ १) । ५ भा
बरख प्रसिद कस-कोमि 'मु' 'प' यासि
(बल्लु) । ६ रपपाव प्रसिद (स २४१)

मालव-शासक-प्रदिग्ध शासनाधिकार-विरोध
 (पृष्ठा २, १४) । य वि [ज] १ बाणु
 बाणल । २ बाण-विरोध (पंचांग) । ३ ताम्र
 कम्ब (ग्रन्थ) । बाण्य वि [बाणिक]
 धौचिह्न धार्ष्टि कै बोध है ताम्र भाषि भी लोभ
 बरैयू बदलेमाता विधिवावर (पृष्ठ ३५)

धातुं पुं [धातु] पत्यपत्तिं वामकं अन्तरं रो
वा एक इति (अ. १, १) ।

धाउसोसज न [धानुशोपज] धावीवित त
(बंवीव ३) ।

भाह यक् [निर् + स] बाह् निलना
बाह् (ह्र ४ ७२) ।

पाठक [निर + सारय] बाहर निकालना । छंद पाठिकाल (पृष्ठ २१) । कथक-पाठिकाल (पृष्ठ १०, १८, २१, २२) ।
पाठक [भ्रान्त] भ्रमण करना । १ भ्रमण करना । भ्रमण (पृष्ठ ७) । कथक-पाठिकाल (पृष्ठ १०—पृष्ठ २४) ।

भाषण न [भास्टन] बख्तर निकालना (बन
४)।

घाटण न [घाटन] १ प्रेक्षा । २ नाट्य
(घोष) ।

साक्ष्य कि [६ प्राटक] बाका उत्तरेबात्ता
न्यायपुरिस्ता ह्या तत्त्व (सिरि ११४५) ।

पाठाविजय वि [निस्सारित] बाह्य निष्पत्ती
हस्ता निष्पत्ति (पृष्ठ २२ व) ।

षाडि वि [दे] निरस्त निरस्त (वि ३, ३३) ।

घाबिअ वि [नि.सुव] बाहर निक्का ह्या
(कुमा) ।

आदिभ्यः पुं [दे] आद्यम् वदन्ता (दे ५, ५२) ।

प्राचिन वि [निस्सारित] निर्वाचित बाह्य
निष्ठाया तुम्हा (पदम १ १ १, स २२८)
उप ७२४ टी) ।

पाटी की [पाटी] १ गजपों के पत्त (मुद्र
२, ४ प्रक)। २ हथवा धातुमय पाटी
(कण्ठ)।

घाण ऐसी घण्ट्य = वन्य (वन्ध ६) ।

घण्टा की [घन्ता] बन्धिया एक प्रकार का
नसामा (वे ७ १६) प्राक)।

मालुख वि [मालुख] मनुष्य, मनुष्या मे
मिथुन (ज ५ १) मुर ११ ११२३ मरी
११३३ मय ४२३) ।

पाण्डुरिज्ज व [६] कम्प-नेव (रे ५ ९) ।

घाम हुन [घामम्] घईकाट, वर्ष : २ रा
घाति में बाण्डटा : १ दि वर्ष-मुक्त : ४
रह घाति में बाण्ड (लंदीय १६) ।

धाम न [धामन्] क्त कृत्वा (माघ २३)
कृत्) ।

पाय वि [मात] १ रुद्र संज्ञा (धोव ७
मा. नुर २ १७) । २ न. सुमित्र मुकाम
(वृ २) ।

पान ३ } श्री [पाठकी] वृत्त-विरोध नाम
पाय ३ } का पक्ष (पक्ष १ पक्ष २)
का. ठा २ } एवम् २२२)। 'सिंह पु'
[सिंह] स्वनाम-कात् एक हीप (ठा २
३: पक्ष)। 'सिंह पु' [पक्ष] स्वनाम
कात् एक हीप (बी ३: ठा ३: पक्ष)।

भारत [धारम्] ? भारत कला । २
कला रचना । भारत (भारत) । भारत भारत,
भारत भारत भारत भारत भारत
(भारत १ १११ १११-१११ १ १ १११
भारत १११ १११) । भारत भारत
भारत भारत भारत, (भारत १११) भारत
१, १) । भारत भारत भारत भारत
भारत (भारत १) । भारत १, भारत ११
भारत भारत १११) ।

धार १ [धार] १ बाध-संबन्धी बल । २ वि
धारण करीबाना (एक) ।

धार वि [रे] ननु, नोय्य (रे १ २६)

भारता वि [भारत] बाळूड करेवाला (क्या
जय वृ ७५ बुधा २५४) ।

धारण न [धारण] १ चालने की प्रवृत्ति ।
२ बहल । ३ खल । खलना । ४ परिचालन
करना । ५ प्रवृत्ति (श्लोक छ १, १) ।

पारया की [धारया] १ मया का स्थिति
(धामय) २ विषय प्रकृत करोवानी बुद्धि (अ
न. व. ५) ३ ज्ञात विषय का अभिप्रेत
(विशे २२१) ४ प्रवर्धय विषय
(धामय) ५ म की स्थिति ६ वर का
एक अवयव बली वा बल (मय अ. २)
बद्धार बु [व्यवहार] व्यवहार-विशेष
(अ ३. २)

भारणा श्री [भारप्पा] नकान का संका,
नरन (भाषा २ २ ३ १ टी. पन ११३) ।

पारणिज्ज वेत्तो धार - धारस् ।

भारणो की [भारणी] १ भारण कलौराली
(वीन) । २ व्याख्यान क्रिस्तिन की प्रथम
शिक्षा (सम १५२) । ३ भगुदेव धारि धनेक
पत्राओं की पक्षी वा नाम (संत व्याख्या १ :
पिपा १ १ : काना १ १) ।

पारण्योय षो धार = पारम् ।

भारत-भाषा-भार (भाषा १) भाषा ।
भारत-भाषा-भार = भारत ।

घारा की [व] एण-मुनि एण-मुनि का
प्रथम (दे ३, २६)।

घारा की [घारा] १ मरु के घासे का साग,
घार (मरु) प्राप्ता २२)। २ प्रवाह खाली
(महा)। ३ घास की पति-विदेय (कुमा-
महा)। ४ जल घारा पानी की घारा। ५
बर्षा घृति। ६ प्रव पानी का प्रवाह रूप से
पतन (पुष्ट)। ७ एक राक्ष-नली (भावम)।
कर्मण दु [कर्मण] कर्मण की एक
वाति जो बर्षा से पतती-मुकती है (कुमा)।
घर दु [घर] मेरु (मुग २ १)। बारि
न [बारि] घारा से पिछा बस (मन १ १
१)। बारिय नि [वारिक] बहा घारा
से पली पिछा हो बह (भा १ १ १)।
ह्य नि [ह्य] बर्षा से छिड़क (कर्म)।
हर रेको घर (मुग १ १ १२४)।

घारा की [घारा] मालव देश की एक नदी
(मेष्ट ८८)।

घारावास दु [रे] १ मेरु मेरु बेंग (दे ३,
११; पत्र)। २ मेरु (दे ३, ११)।

घारि नि [घारि] बाण्ड कलेकला (धीन
कर्म)।

घारिय रेको घार = घार्यु।

घारिष्ट न [घारिष्ट] बटवा लक्ष्मणा बर्ष
क्षाम (भावम म कोरा घ २१
भावमला कमा पत्र २२६)।

घारिणी रेको घारणी (धीन)।

घारिचप रेको घार = घार्यु।

घारिय नि [घारि] बाण्ड किमा हुमा
(धीन भाषा)।

घारी रेको घारी (दे ३, ५१)।

घारी रेको घारा (कुमा)।

घारेराप } रेको घार = घार्यु।
घारेयय

घाव सरु [घाव] १ बीड़ा। २ मुख
कराया बीठा। बावह (दे ४ २२८; २३८)।
बह, घावैन घावमाण (प्राप्ता ८० महा
कर्म)। छह घाविकुण (महा)।

घावण न [घावण] १ बेन से बमन, बीड़ा।
(मुग १ ७)। २ बमन, बीठा (मुग
१ १४)।

घावणय पु [घावण] बीड़े से हुए बमनार
पहुंचाने का काम करनेवाला हलका
रथिया (मुग १ १ २६४)।

घावणया की [घाव] स्तन-पाल करना (उप
८ ११)।

घावमाण रेको घाव।

घाविक नि [घाविक] बीठा हुमा (मनि)।

घाविर नि [घाविर] बीड़कला (घण,
मुग २४)।

घावी रेको घाह = घावी (उप ११६ टी
घ ११; मुर २ ११२ ११ ६८)।

घाहा की [ह] घाह, पुकार, बिस्काइट
(पत्र ३३ ८८; मुग १ १० ३४)।

घाहायि न [ह] घाह पुकार, बिस्काइट
(स ३०; मुग ३ ८ ४६५ महा)।

घाहिय नि [ह] पनायित भगा हुमा (बम्म
११ टी)।

घि घ [घि] बिस्काइट, बी (रमा)।

घिह को [घृति] १ मेरु बीरज (मुग १
८ पत्र)। २ बाण्ड (भावम)। ३ बाण्डा,
झाल कियम का घटिस्वरण (विने)। ४

बाण्ड प्रमनार (मुग १ ११)। ५ घटिमा
करन २ १)। ६ बीर की घटिमायिका
रेवी। ७ रेवी की प्रतिमा-विदेय (रमा
याणा १ १ टी—पत्र ४१)। ८ विविध-
ह की घटिमायिका रेवी (रुह ठा २३)।

हृह न [हृह] घृति-रेवी का घटिमायि
छिन्न-विदेय (रमा)। घर दु [घार]
१ एक घण्टा महावि। २ 'घण्टा-बसा'
घुन का एक घण्टापन (धीन १८)। ३ मीत
नि [मन्] बीरजकला (ठा ८ पत्र
२, ४)।

घिह की [घृति] ठेला लपाठार तीन दिन
का कमान (धीन १८)।

घिहय नि [घिहय] १ पिनार हुमा
(ब १)। २ न. पिनार, विस्काइट
(रुह १)।

घिहय न [घिहय] विस्काइट, बिस्काइट
(छाया १ १६)।

घिहयि नि [घिहय] बिस्काइट हुमा
(मुग १ १०)।

घिहयि नि [घिहय] बिस्काइट हुमा
(मुग १ १०)।

घिहयि नि [घिहय] बिस्काइट हुमा
(मुग १ १०)।

घिहयि नि [घिहय] बिस्काइट हुमा
(मुग १ १०)।

घिहयि नि [घिहय] बिस्काइट हुमा
(मुग १ १०)।

घिहयि नि [घिहय] १ बिस्काइट, विस्काइट
(पत्र १ १३ २६)। २ घुमिक मनुष्य
के समय की एक बह-नीति (ठा ७—पत्र
१६८)।

घिहयि नि [घिहय + घार्यु] बिस्काइट,
विस्काइट करना। कक घिहयिनिमाण
(नि २६१)।

घिहय नि [घिहय] बीरज घृति (दे २ १४)।

घिहय नि [घिहय] बाण्ड करने योग्य (छाया
१ १)।

घिहय नि [घिहय] घात-योग्य बिस्काइट
(छाया १ १)।

घिहयि नि [घिहय] घिहयि, घिहयि
बहयि निमि। बी 'घल' महा नाम
घिहयि (भावम)।

घिहयि नि [घिहय] घिहयि, घिहयि
घिहयि ३ घाय बहयि निमि (महा
उप १२६ भाष १)।

घिहयि नि [घिहय] घिहयि, घिहयि
घिहयि ३ घाय बहयि निमि (महा
उप १२६ भाष १)।

घिहयि नि [घिहय] घिहयि, घिहयि
घिहयि ३ घाय बहयि निमि (महा
उप १२६ भाष १)।

घिहयि नि [घिहय] घिहयि, घिहयि
घिहयि ३ घाय बहयि निमि (महा
उप १२६ भाष १)।

घिहयि नि [घिहय] घिहयि, घिहयि
घिहयि ३ घाय बहयि निमि (महा
उप १२६ भाष १)।

घिहयि नि [घिहय] घिहयि, घिहयि
घिहयि ३ घाय बहयि निमि (महा
उप १२६ भाष १)।

घिहयि नि [घिहय] घिहयि, घिहयि
घिहयि ३ घाय बहयि निमि (महा
उप १२६ भाष १)।

घिहयि नि [घिहय] घिहयि, घिहयि
घिहयि ३ घाय बहयि निमि (महा
उप १२६ भाष १)।

घिहयि नि [घिहय] घिहयि, घिहयि
घिहयि ३ घाय बहयि निमि (महा
उप १२६ भाष १)।

घिहयि नि [घिहय] घिहयि, घिहयि
घिहयि ३ घाय बहयि निमि (महा
उप १२६ भाष १)।

घिहयि नि [घिहय] घिहयि, घिहयि
घिहयि ३ घाय बहयि निमि (महा
उप १२६ भाष १)।

घिहयि नि [घिहय] घिहयि, घिहयि
घिहयि ३ घाय बहयि निमि (महा
उप १२६ भाष १)।

घिहयि नि [घिहय] घिहयि, घिहयि
घिहयि ३ घाय बहयि निमि (महा
उप १२६ भाष १)।

न देखो या

१ प्राकृत भाषा में नकारपरि सब शब्द एकान्वयित होते हैं, यथाऽप्यारि के नकार के स्थान में निरव
या विकल्प से 'अ' होनेका आशङ्कणों का सामान्य नियम है (प्रथ २ अ० ६ रे ९ रे
टी। हे । २३४ पं १ १ १) और प्राकृत-साहित्य-ग्रन्थों में दोनों तरह
के प्रयोग पाए जाते हैं। इससे ऐसे सब सब शब्द एकान्वय के प्रकरण
में या जाने से यहाँ पर पुनरावृत्ति कर व्यर्थ में पुस्तक का क्षेत्र
बढ़ाना उचित नहीं समझा गया है। पञ्चम्याण एकार के
प्रकरण में अपरि के 'अ' के स्थान में सर्वत्र 'न'
समाप्त हैं। यही कारण है कि नकारपरि
शब्दों की प्रमाण एकान्वयित शब्दों
में ही दिए गए हैं।

प

पञ्च [प] १ प्रोष्ठ-स्वामीय व्यञ्जन वर्ण-
विशेष (प्राप) । २ पाप-स्याग 'पति य
पारवर्ज्ये' (घातन) ।

प च [प्र] र्ण चर्त्त क्त्वा भूषणं प्रत्यय-
प्रकर्ष- 'वर्णमर्ष' (वे २ ११) । २
प्रारम्भ- 'वर्णमर्ष' 'पञ्चमर्ष' (अं १
भा १ १) । ३ क्त्वापि । ४ क्त्वापि
प्रसिद्धि । ५ क्त्वापि । ६ क्त्वापि
(निष् १ ६ २ २१०) । ७ प्रत्यय भूषण
(निष् ७०१) । ८ क्त्वापि (निष् १
१०) । ९ क्त्वापि क्त्वापि क्त्वापि
(अ ४ २-पञ्च १११ टी) ।

प रि [प्राप्] पूर्ण लक्ष्मिभ्य (भवि) ।
पञ्चगम पु [लक्ष्म] दक्ष-गिरेय (निप) ।
पञ्चप पु [मङ्ग] राक्षस-गिरेय (वि १२,
८१) ।

पञ्चम श्रेणी पाठ्यम् = प्रगतम् (प्राक् ७५) ।
 पश्च [प्रति] ? घट्टेय-नृपक (रत्न १
 १) । २ लक्ष्य लक्ष्य, प्रोक्त 'मध्यम' पश्च
 कर्तव्य (मध्यम १४१) ; कर्तव्य ११) ।

पहलू [पनि] १ अरु अर्ग, परगणित करने
बाता (नाम, पृ १११, ११२) । २ मापिक

१ रत्नक 'मुषई' 'तिप्रयगणवई' 'नरवई'
(मुपा ११ मयि १०; ११) । ४ यईछ,
जतमा यईछवई (मयि १०) । घर म
[गृह] समुल्ल (पठ) : क्या उदया
औ [घना] पवि-मेधा-यउमण औ
बुलतरी छी मनी (या ४१५; गुर १ १०) ।
हर रेणो घर (है १ ४) ।

पइ देखी पडि (ठा २ १; काम घर २१)।
पइअ बि [दे] १ मलित विरह्य १ २
न. पहिया रप-वह (दि १ १४)।

पञ्च श्रेयो पण^२ = प्राप्ति (सि ३ ४३) ।

पञ्चमं वैश्वं पश्य म पश्य ।

पङ्कजपरण न [प्रत्युपपरण] प्रसुत्वार,
प्रतिशेषा (रमा) ।

पञ्चमः वेगो परिपूर्णः (मात्र—दिन ५५) ।

सर्वप्रमाणे हेचो सर्वप्रमाण (प्रमाण १ : ११)

ସମସ୍ତଙ୍କୁ ସ୍ୱାଗତ କରୁଛି ।

पञ्च (पञ्च) हेतु पाञ्चक (पञ्चक) :

प्राचिन (१५) व नव (१५) ।

पञ्चमः स्तोत्रपादः (श्लोक—४५५)

पक्ष्यक्षम पुं [प्रतिपक्ष्यक्षम] मृद-गिरीय
(पत्र) ।

प्राकृत (पाठ) कि [प्रतिव] सिद्धात् प्राकृत (पाठ) ।

पञ्चम (मल) नि [पञ्चम] निच हुमा (मल) नि

पश्चिम (पश्चिम) नि [प्रातः] निता रुपा सप्त
(पश्चिम) :

(R4) I

(R5) I

पशुपति पञ्चम (मन्त्र सप्त) ।

पशुद्वि [५] १ विष्णु एव को जाना हो

अहं । २ विरल । ३ पुं भाव एत्वा (३)

4 (4) 1

पशुदु रेखो पगिदु (सुद्धि ३ टी) ।

पञ्चदश वि [३] प्रेषित मेवा हृषा 'अहं च'

कुमार मिश्रको समपरायण विपुल पत्रिका

(संक्षेप ३) ।

पश्चिद् पुं [प्रविष्ट] अपशब्द सुसार्थभाष के

पिता का नाम (सम १२) :

पाइए कि [प्रविष्ट] जिसने प्रवेश किया हो

पद (म ४२९) ।

पशुद्वयं च [प्रति-व्यापय] नृतिं याति

१० विपि-शूर्यक स्वात्मा वरणा । पादुमेयदा

(पंजा ७ ४३) ।

पञ्चदशम रेणो पञ्चदशम (छम) ।

पञ्चमार सङ्ग [प्र + चेत्य] प्रवेष्ट कराना ।
पञ्चमार (महि) ।

पञ्चमारिय नि [प्रवेशित] जिसका प्रवेश
कराया गया हो वह, 'पञ्चमारियो म नपरि'
(महा मणि) ।

पञ्चम धुं [दे] जयन्त इत्य का एक पुत्र
(दे १, १८) ।

पञ्चम सङ्ग [प्रति + हा] व्याप कराना ।
सङ्ग पञ्चिहय (उप) ।

पञ्च केतो पञ्च = पञ्चि (पञ्च) हैं ? ४ गुर
(१०१) ।

पञ्च नि [प्रवीत] १ किञ्चत् । २ विजयस्त ।
३ प्रसिद्ध विपनात (निते ७ ८) ।

पञ्च न [प्रतीक] संय यदयन (रत्ना) ।
पञ्च श्री [प्रतीति] १ विरचाय । २ प्रसिद्धि
(पञ्च) ।

पञ्चप देवो पञ्चिह । पञ्चिह (मध) ।

पञ्चप धुं [प्रवीप] शैपरक, विद्या (पाप
की ?) ।

पञ्च नि [प्रवीप] १ प्रविष्ट (हे १
२ १) । २ धुं गुरुन (उप १४८ टी।
हे १ २११) ।

पञ्च (मर) देवो पञ्च । पञ्चिह (महि) ।

पञ्च (मर) नि [पञ्चिह] मित्र हुआ (मित्र) ।

पञ्च केतो पागय = प्राह्य (प्राह ३) ।

पञ्च धुं [दे] नि, निवत् (दे १ ३) ।

पञ्च न [प्रयुज] संस्था-विशेष 'प्रयुज' को
बीछनी लाय से गुणने पर जो संस्था
लाय हो वह (उप ४२ ४) ।

पञ्चम न [प्रयुज] संस्था-विशेष 'प्रयुज'
को बीछनी लाय से गुणने पर जो संस्था
लाय हो वह (उप ४२ ४) ।

पञ्चम सङ्ग [प्र + युज] १ योजना युक्त
कराना । २ उपकारण कराना । ३ प्रयुज
कराना । ४ प्रेरणा कराना । ५ स्मरण
कराना । ६ कला । पञ्चम (महा मणि नि
३ ७) । पञ्चमिह (मणि) । पञ्चमिह,
पञ्चमान (वीन पञ्च १२, १३) । कञ्च
पञ्चमान (मनी २१) । ६ पञ्चमिह
पञ्चम (सङ्ग २, ३) । उप ४२८ टी। नि
११८४ पञ्चम (मर) (हुमा) ।

पञ्चम नि [प्रयोजक] प्रेरक, प्रेरणा करने-
वाला (पञ्च १) ।

पञ्चम नि [प्रयोजन] प्रयोग करनेवाला
(पञ्च १४ १) । देवो पञ्चमिह ।

पञ्चमय १ श्री [प्रयोजना] प्रयोग (वीन
पञ्चमिह) । ११४) । 'पञ्चमिह' कञ्च
कञ्चमिह पञ्चमिह दुर्क (कञ्च २) ।

पञ्चमिह नि [प्रयुक्त] जिसका प्रयोग किया
गया हो वह (मुपा १४ ४४०) ।

पञ्चमिह नि [प्रयोजक] प्रयुक्ति करनेवाला
(उप ३ १) ।

पञ्चमिह नि [प्रयोजक] प्रयुक्ति करनेवाला
(उप ३ १) ।

पञ्चमिह नि [प्रयोजक] प्रयुक्ति करनेवाला
(उप ३ १) ।

पञ्चमिह नि [प्रयोजक] प्रयुक्ति करनेवाला
(उप ३ १) ।

पञ्चमिह नि [प्रयोजक] प्रयुक्ति करनेवाला
(उप ३ १) ।

पञ्चमिह नि [प्रयोजक] प्रयुक्ति करनेवाला
(उप ३ १) ।

पञ्चमिह नि [प्रयोजक] प्रयुक्ति करनेवाला
(उप ३ १) ।

पञ्चमिह नि [प्रयोजक] प्रयुक्ति करनेवाला
(उप ३ १) ।

पञ्चमिह नि [प्रयोजक] प्रयुक्ति करनेवाला
(उप ३ १) ।

पञ्चमिह नि [प्रयोजक] प्रयुक्ति करनेवाला
(उप ३ १) ।

पञ्चमिह नि [प्रयोजक] प्रयुक्ति करनेवाला
(उप ३ १) ।

पञ्चमिह नि [प्रयोजक] प्रयुक्ति करनेवाला
(उप ३ १) ।

पञ्चमिह नि [प्रयोजक] प्रयुक्ति करनेवाला
(उप ३ १) ।

पञ्चमिह नि [प्रयोजक] प्रयुक्ति करनेवाला
(उप ३ १) ।

पञ्चमिह नि [प्रयोजक] प्रयुक्ति करनेवाला
(उप ३ १) ।

पञ्चमिह नि [प्रयोजक] प्रयुक्ति करनेवाला
(उप ३ १) ।

सम्पन्नविहङ्ग बाध पञ्चविहङ्ग (मुपा
४०२ मङ्ग) । २ विचार, सम्यक् (सं ३) ।

पञ्चमिह धुं [प्रयुज] कञ्च-विशेष पञ्चमिह
का पञ्च कञ्च (दे १ ३ १) ।

पञ्चमिह सङ्ग [प्र + युज] प्रयुक्ति कराना । ६
पञ्चमिह (वी) (गान्—सङ्ग ४०) ।

पञ्चम नि [प्रयुक्त] जिसका प्रयोग किया
गया हो वह (मुपा मणि) । २ म प्रयोग
(गान् १ १) ।

पञ्चम धुं [वीन] सङ्ग का कञ्चम पोडा
(प्राह १ धुं ११०) ।

पञ्चम न [प्रवीत] प्रवीत, प्राञ्चम कान्ठम पिना
(रत्ना १) ।

पञ्चम नि [प्रयुक्त] जिसने प्रयुक्ति की हो वह
(उप) ।

पञ्चमिह श्री [प्रयुक्ति] १ प्रवीत (मप १५) ।
२ सम्यक्, कृतार्थ (पाप गुर २, ४४)
३ ४४) । ३ कार्य काय काम । वाञ्छ नि
[पञ्चमिह] कार्य में लगा हुआ (वीन) ।

पञ्चमिह श्री [प्रयुक्ति] वाञ्छ हरीष्ट (उप
धुं २२८ पञ्च) ।

पञ्चमिह धुं देवो पञ्चम — प्र + युज ।

पञ्चम [प्रयोजक] १ प्रयोग-कर्ता । २ प्रेरणा
कर्ता । ३ कर्ता निर्वोदी । श्री ना (सङ्ग
४४) ।

पञ्चम नि [दे] १ गुरु, पर (दे १ ११) ।

२ नि प्रोपित प्रकाश में गया हुआ 'पञ्चमिह
मोहि पञ्चमिह धुं म युगपञ्चमिह मणि मणि'
(पा १० ११० देवा ३ पञ्च १० ३)
कञ्च ७६ नि ११२ उप दे १ ११)
मणि) । पञ्चम श्री [पञ्चम] जिसका
पञ्चमिह मणि हो ७७ श्री (वीन ४११)
मुपा २ ४) ।

पञ्चमिह देवा पञ्चम ।

पञ्चमिह देवो पञ्चमिह (मप ११ ११ टी) ।

पञ्चमिह देवो पञ्चमिह = प्रीति (मप
११ ११ टी) ।

पञ्चम नि [पञ्च] १ मुक्ति-कर्ता कर्मन (दे
१ १११) । पञ्च १ ३ कर्म वीन प्राप्
१११) । २ देव-विमान-विशेष (मप ११
१११) । ३ कर्म-विशेष 'पञ्चम' को बीछनी
लाय न गुणने पर जो संस्था लाय हो वह

(छ २ अ ४ इक) । ४ कन-अम्य-विरोध (दीन बीन १) । १ सुगनी सय का एक जिहास (छमा २) । १ मिन का तबर्वा झुल्ल (ओ २) । ७ बसिय एचक-वर्षत का एक तिहार (छ ८) । ८ पुं राजा रामकन-सीता-नति (पठम १ २, २३) । १ धाठवां बल्लेन बीहण्ड के बड़े भाई । १

इस धरसरपिडीका में जलस तबर्वा बल्लवर्ती राजा राजा पयोधर का पुत्र (पठम २, १२१ १२४) । ११ एक राजा का नाम (अ १४८ टी) । १२ मयम नामक का मयलगा के (छ २ १) । १३ यछेन में धाठवां जलसरपिडी में जलस होलाका धाठवां बल्लवर्ती राजा (सप १२४) । १४ यछेन का यात्री धाठवां बल्लेन (सम १२४) । १५ बल्लवर्ती राजा का निधि को दीन-नामक गुजर बर्ती की पुंति कछा है (पठ १२६ टी) । १६ राजा मेछिक का एक वीन (निर १ १) । १७ एक वीन मुनि का नाम (कम्य) । १८ एक छुर (कम्य) । १९ पच-भुज का बसिहाता है (छ २ ३) । १ महापच नामक बितरेन के पास होला सेनरत्ता एक राजा, एक भवरी राजपि (अ ४) । शुभम न [शुभम] । धाठवें के लोक में स्थित एक धन-मिगत का नाम (सम १३) । २ प्रथम देवलोच में स्थित एक देव विमल का नाम (महा) । ३ पुं राजा मेछिक का एक वीन (निर २ १) । ४ एक भवरी राजपि महापच नामक बितरेन के पास होला सेनरत्ता एक राजा (छ ४) । 'धरिय न [धरिय] । राजा रामकन की बीहरी—बलिन । २ प्राकृत धाया का एक प्राचीन वन, वीन पमास (पठम १ १२१) । नाम पुं [नाम] । बागुरेन विष्णु (पठम ४ १) । १ धाठवां जलसरपिडी काल में बल्लेन में होलाका प्रथम बिन-देन का नाम (अ ४६) । १ बल्लि-बालुदेन के एक बालसरिक राजा का नाम (छमा १ १६—पठ २११) । दस न [दस] बमन-नर (पठ) । दह पुं [दह] निरिप ब्रवार के बर्ती से परितुष्ट एक महाप हन का नाम (नम १ ४) । नया बदन १ १

१) । दस पुं [दस] एक धापी राजपि को महापच नामक बितरेन के पास होला होला (अ ८) । नह केवो जाम (अ १४८ टी) । पुर न [पुर] एक बसिहातप नगर, को धाठवर्त 'माछिक' नाम से प्रसिद्ध है (राज) । प्यम पुं [प्यम] इस धन धरिणी काल में जलस यह बिन-देन का नाम (कम्य) । प्यमा की [प्यमा] एक पुष्क-पिडी का नाम (कम्य) । प्यह केवो प्यम (अ २, १ अ ४१ पति) । महु पुं [महु] राजा भ छिक का एक वीन (निर २ १) । माछि पुं [माछि] बिचावर बंश के एक राजा का नाम (पठम २ ४२) । मुह केवो पठमापण (बह ४) । रहु पुं [रहु] । बिचावर-बंश का एक राजा (पठम २ ४१) । २ महाप तपरी के राजा बल्लेन का पुत्र (महा) । 'राय पुं [राय] राज-वर्ती मणि विरोध (११४ ११६) । राय पुं [राय] पाठवीकएर की धनर कंका तबरी का एक राजा बिछेन दीपरी का बहण्ड किमा का (छ १) । रजस्त पुं [रजस्त] । उत्तर-मुछेन में स्थित एक वृक्ष (अ २ १) । २ वृक्ष छह बड़ा कमल (बीन १) । रया को [रया] । कमलिनी पपिडी (बीन १ मम कम्य) । २ कमल के धाठवरत्ता की बड़ी (छमा १ १) । यईसय बईसय न [यईसय] पठावरी-देवी का दीवर्न नामक देवलोच में स्थित एक विमल (पठ छमा २—पठ २२१) । बरदेइया की [बरदेइया] । कमलों की बह बसिना (पठ) । बम्प दीप की बगरी के ऊपर रही हुई देवी की एक सोम-मुनि (बीन १) । मुहु पुं [मुहु] छैय की बपाकार रचना (पठ १ १) । सर पुं [सरस] कमलों के वृक्ष छरीर (छमा १ १ कप्य महा) । सिरी छी [सी] । मयम बल्लवर्ती मुमुयन की पठपनी (सम १२२) । १ एक की का नाम (छमा) । सेण पुं [सेण] । राजा मेछिक के एक वीन का नाम बिछेन ब्रवार महापूर के पास होला की की (निर १ १) । १ नामपार-बादीय एक देव का नाम (सी) । सेहर पुं

[सेहर] । पुष्पीपुर तबरी के एक राजा का नाम (बम ७) । सार पुं [सार] । कमलों का छह । २ छरीर (अ १११ टी) । 'सयम म [सयन] पठाकार धाठव (अ १) ।

पठमाग पुं [पठाग] कैसर (स १ १४) । पठमप्यह पुं [पठमप्यह] बिमल की ठेकरी राजा की का एक वीन धाठवर्ती (विता १) ।

पठमा की [पठा] । १ कमी । २ देवी-विरोध । ३ लीप, लर्न । ४ बुज-विरोध कुमुम-पुष्प (पठ २) ।

पठमा की [पठा] । १ वीसवें दीवर्न की मुनिमुहसतारी की मया का नाम (अ १२१) । २ दीवर्न देवलोच के छह की एक पठपनी का नाम (अ ८—पठ ४२४ कप्य १ २ १२१) । ३ भीम नामक छलेन की एक पठपनी (अ ४ १—पठ २ ४) । ४ एक बिचावर कया का नाम (पठम ४, २४) । ५ राय की एक कली (कम ४४, १) । ६ बगरी (पठ) । ७ बलसरिक-विरोध (पठ १—पठ १६) । ८ वीसवें दीवर्न की धाठवरत्ता की मुनि किमा का नाम (पठ ४) । ९ मुसुना-बम्प की उत्तर किमा में स्थित एक पुष्कपिडी (सु) । १ वृक्ष बल्लेन दीर बागुरेन की मया का नाम । ११ सेयम-विरोध (राज) ।

पठमाग पुं [पठ] वृक्ष विरोध पमाग का वंश बल्लव (स २, २) ।

पठमापण पुं [पठानन] एक राजा का नाम (अ १ ११ टी) ।

पठमाग पुं [पठम] यह दीवर्न का नाम (पठम १ १) ।

पठमार [पठ] केवो पठमाग (स २ २ टी) ।

पठमाई की [पठावरी] । १ बम्परी के मुने परत के पूरै ठरठ के बल्ल परत पर छलेन की एक विरुमाटी-देवी (अ ४) । २ बल्लव पाठपान की धाठव-देवी को राज राज बल्लेन की पठपनी है (संति १) । ३ वीहण्ड की एक पठनी का नाम (संति १२) । ४ दीन-नामक छलेन की एक पठपनी (नम १ ३) । ५ सकेन की एक

पडणी (छाया २—पत्र २३३) । १ कम्पे-
पर राजा हरिहर की एक की बा नाम
(पान ४) । २ राजा हरिहर की एक पत्नी
(पान ७ ६) । ३ बसोपमा के राजा हरिहर
की एक पत्नी (बन ८) । ४ ठेठनपुर के
राजा ननकेनू की पत्नी (बंश १) । ५
कौरावली नगरी के राजा शताधिक के पुत्र
उपम की पत्नी (बिवा १ २) । ६ शतक-
पुर के राजा शिवक की पत्नी (छाया १ २) ।
७ राजा हरिहर के पुत्र बालमुपार की
भार्या का नाम । ८ राजा महाबल की भार्या
का नाम (जिह १ १ २ पि १३६) । ९
बीरवंत हीरकर भीमनिमुनउत्तमी की माता
का नाम (पत्र ११) । १० पुण्यपीठिनी
नगरी के राजा महापथ की पत्नी (पात्र
१) । ११ कम्पामक विजय (१३) । १२ नगरी
(बं ४) ।

पडमावली (धर) की [पडमावली] एक
किये (विण) ।

पडमिणी की [पडमिनी] १ ननकिनी,
ननल-मठा (राम गुण १३३) । २ एक भेड़ी
की की का नाम (बन ७८६ टी) ।

पडमुचर पु [पडमाचर] १ ननके ननकी
भीमहालपथ के पिता का नाम (मन
१३२) । २ ननके परंत के सहायक बन का
एक सिहली परंत (३६) ।

पडमुचर की [पडमाचर] एक प्रकार की
छात्र छात्र नीनी (छाया १ १०—पत्र
पान २२६, १७) ।

पडर नि [पडपुर] मनुज बट्ट (हि १ १८) ।
कुमा भू ४ ७४) ।

पडर नि [पडर] १ पुर-संनकी नगर के संनक
रामराजा । २ नगर में छत्रेवता (हि १
१३१) ।

पडर पु [पडर] पुत्राजक नन-नंदीय
दुन का पुत्र (बंश १) ।

पडरा (पड) रेडो पुत्र (बंश १) ।

पडर नि [पडर] पुत्राजक, पुत्र का
बनाया हुआ देवता लह बगदर-बनाया
(बंश ६३) ।

पडर नि [पडर] पुत्राजक, पुत्राजक,
पडर नि [पडर] नंदीय (हि १ १११
११२) । 'पडर' (प्रम) 'पडर' (बंश
१) ।

पडर नि [पडर] पडरा । पडर (हि
४ ६) । २ १ २६) ।

पडर नि [पडर] पडरा पडर (पडर १
१) ।

पडर नि [पडर] पडरा हुआ (पात्र) ।

पडर नि [पडर] पडरा हुआ (पात्र) ।

पडर नि [पडर] पडरा हुआ (पात्र) ।

पडर नि [पडर] पडरा हुआ (पात्र) ।

पडर नि [पडर] पडरा हुआ (पात्र) ।

पडर नि [पडर] पडरा हुआ (पात्र) ।

पडर नि [पडर] पडरा हुआ (पात्र) ।

पडर नि [पडर] पडरा हुआ (पात्र) ।

पडर नि [पडर] पडरा हुआ (पात्र) ।

पडर नि [पडर] पडरा हुआ (पात्र) ।

पडर नि [पडर] पडरा हुआ (पात्र) ।

पडर नि [पडर] पडरा हुआ (पात्र) ।

पडर नि [पडर] पडरा हुआ (पात्र) ।

पडर नि [पडर] पडरा हुआ (पात्र) ।

पडर नि [पडर] पडरा हुआ (पात्र) ।

पडर नि [पडर] पडरा हुआ (पात्र) ।

पडर नि [पडर] पडरा हुआ (पात्र) ।

पडर नि [पडर] पडरा हुआ (पात्र) ।

पडर नि [पडर] पडरा हुआ (पात्र) ।

पडर नि [पडर] पडरा हुआ (पात्र) ।

पडर नि [पडर] पडरा हुआ (पात्र) ।

पडर नि [पडर] पडरा हुआ (पात्र) ।

पडर नि [पडर] पडरा हुआ (पात्र) ।

पडर नि [पडर] पडरा हुआ (पात्र) ।

पडर नि [पडर] पडरा हुआ (पात्र) ।

पडर नि [पडर] पडरा हुआ (पात्र) ।

पडर नि [पडर] पडरा हुआ (पात्र) ।

पडर नि [पडर] पडरा हुआ (पात्र) ।

पडर नि [पडर] पडरा हुआ (पात्र) ।

पडर नि [पडर] पडरा हुआ (पात्र) ।

पडर नि [पडर] पडरा हुआ (पात्र) ।

पडर नि [पडर] पडरा हुआ (पात्र) ।

पञ्चोदु [प्रयोग] १ छत्र-वीरगा (अथ ११) । २ जीव का व्यापक, केवल का प्रत्यक्ष 'जगती दुर्गमो पञ्चोदुदुष्टी य तिस्रो वै' (अथ २४) अथ १ १ सम्म १२३, अथ २२४) । ३ प्रेक्षा (आ १४) । ४ ज्ञाप (आ १) । ५ जीव के प्रकृत में बारह-भुव मन धारि (ठा ३ ३) । ६ बल विचार साधन (अथ ४) । कम्म न [नर्म] मन धारि की चेष्टा से प्राप्त-प्रेक्षा के साथ संबन्धिता नर्म (अथ) । कम्म न [कम्म] जीव के व्यापार द्वारा होनेवाला किसी वस्तु का निर्माण 'होइ छ एण जीव्यावाटे वैद्य यं विनिम्मासं पञ्चोदुदुष्टं तवं बहुसो' (विसे) । "किरिया की [क्रिया] मन धारि की चेष्टा (ठा ३ ३) । पञ्चुय न [स्पर्शक] मन धारि के व्यापार-स्थान की छवि-द्वारा नर्म-परमात्मियों में बहुनेमता एव (अथ २१) । संघ दु [बन्ध] जीव-प्रकृत द्वारा होनेवाला बन्धन (मन १६ ३) । मद्र की [मद्रि] वाक्-विषय-परिच्छाल (अथ ४) । संपमा की [संपन्] वाचार्थ का वाक्-विषय सामर्थ्य (अथ ६) । मा स [प्रमाणा] जीव प्रकृत से (वि ११४) ।

पञ्चोदु केतो पञ्च = प्र + दुन् । पञ्चोदु (अथ ४४) ।

पञ्चोदुय नि [प्रयोदुय] विनिश्चयक निर्णायक समक (पर्व ११२१) ।

पञ्चोदु वैको पञ्चु = प्रकृष्ट (प्राज्ञ धीमति ४) ।

पञ्चोदु न [प्रताप] प्रताप प्राक्तर-व्यष्टि पैता । पञ्चु [पञ्च] अन्तर्गत होनेवाला, बहुत बाल का बाह्यबाल (आथा १ १) ।

पञ्चोदु [प्रताप] ऊपर केतो (धीमति) ।

पञ्चोदुय दु [प्रयोदुय] १ प्रतीय जीव का बुद्धि । २ प्रतीय का स्थित रहित वाह्यो केवल मन्त्रण नियन्त्रण धरणीय पञ्चोदुय पञ्चोदुय के नाम पाण्डुरी (अथ ११ ११) अथ ४४८) ।

पञ्चोदुय दु [प्रयोदुय] १ कण्ठ । २ स्थित-वर्धन स्थित-वर्धन (अथ ११—अथ ४४ १) ।

पञ्चोदुयि दु [पञ्चोदुयि] समुद्र (अथ १४४) ।

पञ्चोदु [पञ्चोदु] पठित परवर, वरोप (अथ १) ।

पञ्चोदु की [प्रताप] १ नगर के भीतर का छाया (अथ) । २ नगर का बरवाला 'नोदु' पञ्चोदु मं (पाण्डु मुवा २३१) या १२ अथ ५ ३३) धरि) ।

पञ्चोदुय दैको पञ्चोदुय । पञ्चोदुयै (वि २४४) ।

पञ्चोदुय दु [प्रमाणा] मेघ बाल (पठन ८, ४४) से १ २४) गुर २ ८३) ।

पञ्चोस स्र [प्र + श्रिप्] होव करता और करता । पञ्चोस (मुक १ १४) ।

पञ्चोस दु [दि प्रदेव] प्रदेव प्रकृष्ट होव (अथ १) अथ एका बाल ४ गुर १३, १ पुण्ड ४९३, कम्म १ महावि ४ पुण्ड १ अथ ११९) ।

पञ्चोस दुन [प्रताप] १ लम्बाकाव रिज और धारि का धर्म-कर्म (वि १ १४-कुमा) । २ नि प्रकृष्ट दोनों से मुक्त (वि २ ११) ।

पञ्चोदुय (अथ) वैको पञ्चोदु (अथि) ।

पञ्चोदुय दु [पञ्चोदुय] १ स्तन मन (पाण्डु १ २४ पठन गुर २, १) । २ वैक-बाल (अथ १) । ३ अन्त-विरोध (विम) ।

पञ्च दुन [पञ्च] १ करीब नीचक दावा कर्मो नीच 'अथमिदं वि मो लार्थ पञ्च वदोदुपरी' (आ १ १ १ १ ४१ १३४ प्राप् २३) ।

'मुद्र व पञ्च' (अथ ११४) । २ वाय (अथ २ २) । ३ अर्थकम इन्द्रिय नीचक का धर्मिदु (वि १) । आश्रित्ता की [आश्रित] अन्त-विरोध (विम) । पञ्चो की [प्रमा] नीची गरल-मुनि (अथ १६ १६) । पञ्चु नि [पञ्चु] १ नर्म-प्रकृष्ट (अथ १ १ २ २) । २ वात-प्रकृष्ट (अथ २ २) ।

पञ्च की [पञ्च] नीची गरल-मुनि (अथ कम्म १ १) ।

पञ्चमा की [पञ्चमा] नीची गरल-मुनि (अथ ११ १२८) ।

पञ्चपद की [पञ्चपदी] पुष्पत नामक विषय के पश्चिम तरफ की एक नदी (अथ ३ ४) ।

पञ्चिय नि [पञ्चिय] पञ्च-पुण्ड, नीचबाला (अथ १ ३) धरि) ।

पञ्चिय दि [पञ्चिय] करीबबाला (आ २४ वा ७९९ कम्म पुण्ड १८४) ।

पञ्चिय न [पञ्चिय] कर्म पण्ड (अथ पुण्ड १४१) ।

पञ्च दुनी [पञ्च] १ पञ्च पाणि पाञ्च पञ्च (वि ७४) अथ पठन ११ ११३) या १४) । २ पण्डु, नीच, पञ्चबाका (पठन) । ३ पण्डु नि [पञ्च] पञ्च-विरोध (अथ) ।

पञ्च दुनी [पञ्च] पञ्चो पञ्चिया पञ्चो (आ १४) । नी की (वि ४४) ।

पञ्चुविभा की [पञ्च] पञ्च न (अथ १४) पञ्चुदी १ ११ ८) ।

पञ्च स्र [पञ्च] प्रकृष्ट करता । पञ्च (वि ४ ४४) ।

पञ्च न [पञ्च] धर्म (अथ २१) ।

पञ्च नि [पञ्च] वाक् विवक्त अन्त-विरोध, मुवा नीचक (पाण्डु १ १६ १ विम) ।

पञ्च एक [पञ्च + एक] अन्त-विरोध करता । पञ्च (अथि) । अथ, पञ्चोदुयि (अथि) ।

पञ्चोदु न [पञ्चोदु] अन्त, नपस (वि १ १३३) अथ वा ७ २) ।

पञ्चु नि [पञ्चु] वैको पञ्चु (विम १ १ ३ ७२) वाय) ।

पञ्च नि [पञ्च] नीच २ (वि १ १२३) अथ अथ) । उन् न [पञ्च] अन्त-विरोध (अथ २२२) । अथि दु [पञ्च] अन्त-विरोध (अथ २२२) ।

पञ्चोदुय नि [पञ्चोदुय] १ नर्म-प्रकृष्ट (अथ १ १ २ २) । २ वात-प्रकृष्ट (अथ २ २) ।

पञ्चोदुय नि [पञ्चोदुय] १ नर्म-प्रकृष्ट (अथ १ १ २ २) । २ वात-प्रकृष्ट (अथ २ २) ।

केवलवान धीर निषण्णि । २ काम्मिस्सुद,
वहा वेत्थे जिन-देव धीमिअल्लस क पावो
कप्पल्लसु हए से (ही २५) । ३ वन-विरोध
(कोप) । कोट्ठुग नि [कोट्ठक] १ पांच
कोट्ठो से युद्ध । २ पुं वरुण (देव) । गण्ड
न [गण्ड] पाच के ये पाच पचास—हूब बही-
हुत सोमय धीर मून पंचवत्थ (कप्प) ।
गाह न [गाय] गाथाकण्ठ बाजे पांच
पच (कप्प) । गुण नि [गुण] पांचगुणा
(ठा ५१) । पिअ पुं [पिय] एठ जिन
देव धीपचयस, जिनके पावो कप्पल्लसु निना
मत्तम में हए से (ठा ११ कप्प) । आम
न [याम] १ दंडिआ छरय मनीय,
छावय धीर व्याग ये पांच महावत्त । २ नि
जिसमें इन पांच महावत्तों का निष्पण्ण हो बहु
(ठा १) । जउइ की [नवति] पंचान्ते
२३ (काल) । जउय नि [नवठ] २३
बां (काल) । वाळीस (पप) कीन
[पत्तारिआ] पैठबीय ४३ (विम
पि ४४२) । पिली की [लीली] पांच
लीलो का समुपाय (बर्न २) । सीसइम नि
[सिअसम] पैठीसवां ३२ बां (पण्ण
११) । दस नि न [दवान] पण्णइ १
(कप्प) । दसम नि [दसम] पण्णइ
१२ बां (आमा १ १) । दसी की
[दसी] १ पण्णइ १३ की (विसे
२०१) । २ पुणिया । ३ धममात्ता (नुज
१) । दसुअरसय नि [दसुअरसठ
सम] एक ही पण्णइ ११३ बां (पणम
११३ २५) । नइइ देवो जउइ पि
(४००) । नावि नि [द्वानिज] मणि
भुज मणि, मन-पर्यव धीर केवल इन पावो
बावो में युद्ध सर्वव (सम १२) । पछी
की [पची] पाच की को पछनी को चउरुंसी
धीर युद्ध पंचनी ये पाच विविधा (पण्ण
२१) । पुम्मासइ पुं [पुमांवाइ] हावें
जिनके धीरुअल्लस जिनके पावो कप्पल-
लस पुमांवाइ मत्तम में हए से (ठा २, १) ।
पुस पुं [पुस] पण्णइ जिनके धीरवर्ण
पाच (ठा ३, १) । बाण पुं [बाण]
कामदेव (पुर ४ २५४ बुमा) । मूय न
न [भूत] इकिवी, जम धीमि बन्नु धीर

धाम्मा ये पांच पचास (पुस १ १ १) ।
मूयवाइ नि [मूयवादिस्] धाम्मा धादि
पचासों को न मान कर केवल पांच भूतों को
ही माननेवाला नासिक (पुस १ १ १) ।
महठवइय नि [महावठिक] पांच महा
वत्तोंवाला (पुस २ ७) । महठवय न
[महावठि] हिंसा प्रलय कीपी मैजुन
धीर परिइह का सर्वना परित्याग (पण्ण २
३) । महामूय न [महामूय] दुक्खी
जम धीमि बन्नु धीर धाम्मा ये पांच
पचासों (विसे) । मुठ्ठिय नि [मुठ्ठिक]
पांच मुठ्ठियों का, पांच मुठ्ठियों से पूर्ण
क्रिया बाटा (कोप) । छाया १ १
कप्प महा । मुइ पुं [मुक] सिह
पंचानल (ज १ ११ टी) । यसी रेवो
दसी (पणम ११ १५) । रेउ, राय
पुं [राय] पांच राउ (सा ४३ पण्ण २,
२—पण १४१) । रासिय न [राशिक]
गण्णिक-विरोध (ठा ४ १) । रुधिय नि
[रुधिक] पांच प्रकार के कल्लेवाला (ठा ४
४) । वरुग न [वस्तुक] धाम्मा हरि
मत्तम-विजित मन्थ-विरोध (पंचव १ १) ।
वरिस नि [वर्प] पांच बर्प की मज्झता
वाला (पुर २ ७१) । विह नि [विष]
पांच प्रकार का (अणु) । वीसइम नि
[विश्रितम] पचीसवां (पणम २३, २४) ।
संगइ पुं [संगइ] धाम्मा धीरुअल्लसु
हुत एक बैल धम्य (पंच १) । संबंअरिय
नि [संबंअरिय] पांच बर्प परिमाण
बगना पांच बर्प की धाम्मावाला (पण ७३) ।
सठ नि [पठ] पैठवां १३ बां (पणम
१३, २१) । मट्ठि की [पटि] पैठव
१३ (कप्प) । समिय नि [समिय]
पांच समिवर्णों का पालन करनेवाला (सं
८) । सर पुं [शर] कामदेव (पाक
पुर २, २३ गुग १ रंथा) । सीस पुं
[सीय] केन-विरोध (दीव) । सुणय न
[सुण्य] पांच धाणिक-कल्प (पण १
१ ४) । सुत्तग न [सुत्तक] धाम्मा
धीरुअल्लसु-निमित्त एक बैल धम्य (पणु
१) । सेअ सेअय, सेअय पुं [रीअ,
क] मज्जेदीपि में निवत धीर पांच बर्तों

ये निमुपित एक कोटा दीव (महा बुह ४) ।
सोगंधिअ नि [सौगंधिक] इयापी
अर्धग क्कुर, कंदोअ धीर बाटीअल—जापअल
इन पांच मुगन्धित वस्तुओं से संलुप 'मत्तव
पक्खोपधिअ' संतोलेण, धमकेअउ-भादिहिं
पक्खाम्मि (उवा) । हउरि नि [समव]
पण्णउवां ७३ बां (पणम ७३ ८६) ।
हउरि की [समठि] १ संख्या
विरोध ७३ । २ जिनकी संख्या पण्णउर
हो के (पि २१४ कप्प) । हउरुअर पुं
[हउराअर] मज्झा महाधीर, जिनके
पावो कप्पल्लसु उअरउअमूनी-मत्तम में हए
से (कप्प) । उइ पुं [युन] कामदेव
(अण) । जउइ की [नवति] १ संख्या
विरोध पंचान्ते २३ । २ जिनकी संख्या
पंचान्ते हो के (सम १७० पणम २
१ १ पि ४४) । जउय नि [नवठ]
पंचलवां २३ बां (पणम २३ ११) ।
जण पुं [जान] सिह मत्तम (गुग
१७१ मणि) । जण्णइय नि [जण्णनिज]
हिंसा प्रलय कीपी मैजुन धीर परिइह का
धाणिक व्यापराता (उवा) जम छाया १
(१२) । जाम रेवो दीम (इह १) ।
जस कीन [जाम] १ संख्या-विरोध
पचास ३ । २ जिनकी संख्या पचीस हो
के 'पंचास धमियाअल्लसीयो' (सम ७) ।
जसग न [जसक] धाम्मा धीरुअल्लसु
हुत एक बैल धम्य (पंचा) । सीइ की
[सीति] १ संख्या-विरोध वस्तो धीर
पांच ८३ । २ जिनकी संख्या पचासो हो के
(सम १२ पि ४७१) । सीइम नि
[सीतिवम] पचासीवां ८३ बां (पणम
८३ ११ कप्प पि ४४२) ।
पंचअण्य देवो पंचअण्य (पण्ड) ।
पंचंग न [पञ्चाङ्ग] १ होइह से चउरु धीर
मत्तक में पांच ठपिअयव । २ नि पुआंअ
पांच संपत्ता (प्रमाण धादि) 'पंचयं कटिय
वाहे पणिआय' (पुर ४ ६६) ।
पंचगुणि पुं [के] परएअ-अज रंटी का पाच
(२१ १७) ।
पंचगुणि पुं [पञ्चागुणि] इत्त हाय (आमा
१ १ कप्प) ।

पंचगुप्तिया छी [पञ्चागुप्तिया] कस्तो-
रिप (पण्य १—पत्र ३१)।

पंचग वि [पञ्चग] पांच (इपदा धारि) की
कीपत वा (वचि ३ १३)।

पंचग न [पञ्चग] पांच वा समूह (भाषा)।

पंचगण पुं [पञ्चगण्य] शीटरण का शब्द
(बाप ८२३ वा ८४४)।

पंचग न [पञ्चग] १ पांचपन पाञ्च-
पंचगण्य] क्यदा (नुर १ ५)। २ कण्य
भील (नुर १ २५ कण्य हर ५ १२४)।

पंचग वि [पञ्चगुपु] पांच क्वांती में
गुण-पिच (नलेही) बाता (निग धा ४१)।

पंचगुल पुं न [पञ्च] पांच-बन्धन किलेय
मपी पाचने वा पाञ्च-किलेय (निग १
—पत्र ८३ टी)।

पंचम वि [पञ्चम] १ पांचवां (क्या)। २
पुं लच-किलेय (छ ७)। पाच की
[पाच] भरन की एक छद्म की पति
(क्या)।

पंचमहामूर्ख वि [पञ्चमहामूर्ख]
पांच महाबली की मानेवाला मूर्खपण
वा मनुष्य (गुप २ १ २)।

पंचमालिख वि [पञ्चमालिख] १ पांच
मान की छत्र का। २ पञ्च मान म गुण
इमेवा (धर्मपत्र धारि)। छी का
(गम ११)।

पंचमिख वि [पञ्चमिख] पांचवां पंचम
(चोप ६१)।

पंचमा की [पञ्चमा] १ पांचवीं (शमा)।
२ निवि-किलेय पचमी क्वि (छ २३।
वा २)। ३ क्यदण-मिख पचापान
निमिख (क्या)।

पंचमस केरी पञ्चमज्य (पासा १ १६
मुता २६४)।

पंचमर्या छी [पञ्चमर्या] बुनारिलम
रिटेर हाथ में कनेवाले वी-वी-वी-वी-वी
की एक कालि (कोर २)।

पंचमरी छी [पञ्चमरी] पांच बर-मुपवाला
एक क्वात बड़ा भीरपचमरी में कने
बनारस के बरन बारात किया का इन क्वात
वा बरिगच करे लोन 'पञ्चमरी' बगर के

पाच कोरावरी गरी के किनारे मान्छे हैं, बर
कि धातुकि लोचक लोन बरतर एजकसे के
बलिछी धीर पर, कोरावरी के किनारे, इसका
होना बिज कले है (कतर ८१)।

पंचमपण पुं [पञ्चमपण] विहू मुपपण
(साम्य १३८)।

पंचमाय न [पञ्चामय] ये बीच बन्दु—बड़ी
बुन की मनु ठपा शहर (सिरी २१८)।

पंचाट पुं [पञ्चाट] कामगार-करीवा एक
ध्वि (साम्य १३८)।

पञ्चाट पुं न [पञ्चाट पञ्चाट] १ डेर
किलेय, पञ्चाट डेर (छाया १ न महा
पण्य १)। २ पुं पञ्चाट डेर का राजा
(ध्वि)। ३ क्य-किलेय (विन)।

पञ्चाकिया की [पञ्चाकिया] पुनरी कछारि
निविछ छीटी किलेय (क्या)।

पञ्चाकिया की [पञ्चाकिया] १ हुप-राज
की क्यवा भीरवी (बेही १२८)। २ बल
वा एक सेव (क्या)।

पञ्चाकण्य] कीन [हि पञ्चाकण्य] १
पञ्चाकण्य] पञ्चाक-किलेय पचपन, २३।
२ किली संख्या पचपन हीरे (हि २, १७४
हे २ २०; हे २, १७४)।

पञ्चाकस वि [हि पञ्चाकण्य] पचपनवां
(पचम २३, ११)।

पञ्चाकिय वि [पञ्चाकिय] १ बड़ बीच
पञ्चाकिय] किलेय लका बीच, गल
भीन भीर बल ये बारी इतिवा हीं (पण्य
१ क्य-पत्र १; भीन)। २ न लका
धारि पांच इतिवा (बर्म ३)।

पञ्चाकिया की [पञ्चाकिया] १ पांच की संख्या
बला। २ पांच लि वा (बर्म १)।

पञ्चुबर कीन [पञ्चुबर] बट पीर
जुम्बर, क्वात भीर बाराजुम्बर का कल
(ध्वि)। छी छी (मा २)।

पञ्चुबरमय वि [पञ्चुबरमय] एक
की पांचवां १ २ वा (पत्र १ २, ११६)।

पञ्चकिय वि [हि] निमिख 'केल लोचन
कीदर' केहि दुर्बल-कल व पञ्चकिय
(बर्म)।

पञ्चमु पुं [पञ्चमु] कामेय बरन (क्या
२४)।

पञ्चि पुं [पञ्चि] पञ्छी, पलो पञ्छ
किपिया (छा १ ३१ टी)।

पञ्चर पुन [पञ्चर] १ धाधार, क्वाक्या
प्रचर्क धारि पुन-गण। २ उप्पाय-बनम-
किलेय क्वाय-प्रचर्क। ३ लचक्या-प्रति-
मेव (बर्म १)।

पञ्चर न [पञ्चर] निमिख निमिख (पत्र
कपू कपू २)।

पञ्चरिय पुं [हि] क्वाक्या वा कर्मावरी-किलेय
(सिरी ४९७)।

पञ्चरिय वि [पञ्चरिय] निमिख में बर किया
हुवा (बर्म)।

पञ्चरि वि [पञ्चरि] वरन कीका बड़
(पुता ३४४ क्या ३)।

पञ्चरि पुं की [पञ्चरि] प्रमाण करने के लिए
कोका हुवा बर-सुट हुल-क्या-किलेय
छेकल कर-बन (क्या)। 'ठड पुं [पुट]
कामिल-सुट छेकल कर-बन (छा १२१
टी)। ठड कड वि [पञ्चरि]
किलेय प्रमाण के लिए हाथ कोका हो बर
(बर्म कीन)।

पञ्चरि न [] लोचक बल मु-ह-मांवा बल
'पञ्चरि' कर्मवी पञ्चरिछी बरिछी
(सिरी ११८)।

पंड वि [पण्ड] डेर-किलेय में कलन।
की की 'पीछी पंडरालीमुपपण्य' (क्या)।

पंड पुं [पण्ड, क] १ लुपुठ क्योव
पंडा] (कोर ४१७-सम १२) पासा)। २
पंडाय न येव बरन का एक बर (दा २
३) इक)।

पंडय केरी पंडय (हि १ ७)।

पंडर पुं [पण्डर] १ भीरव मानक भीर वा
किलेय (बर्म)। २ रोच कले, किलेय
२४। ३ वि रोचर-पंडा, पंडे (क्या)।

पंडर मुं [पण्डर] रोदाक्यर-किलेय पंडराय
वा पुन (छ ३३२)।

पंडर केरी पंडर (सम ७१)।

पंडर पुं [हि] छ बरानेय टिग (हि ६
२३)।

पंडर पुं [हि] किलेय, बीच वा बरिगि
(बर्म)।

पंडरिय केरी पंडरिय (बर्म)।

पञ्चाज देवी पञ्च = पञ्च पञ्चि, 'पञ्चमहो
पञ्चाजमहो' (भाज ११)।

पञ्चि पञ्च [पञ्चिक, पञ्चिक] पुष्पाङ्क,
पञ्च 'पञ्चि एव पञ्च' (काय ११८)।
पञ्चा पुष्पा शम्भा १ न। बन्ध १ (११८)।
पञ्चपुष्पाङ्की की [पञ्च] कुरुर-पुष्प से पञ्ची बार
मालीव की (वि १, ११)।

पञ्चपि [पञ्च] शीर्ष शम्भ १ (११२)।

पञ्चपि [पञ्चपि] निरुपित (निम्)।

पञ्चपि [पञ्च] प्लेपित निरुपित शीर्ष की
की हो वह (वि १ १७)।

पञ्च पञ्च [पञ्चाप] मलिन करता। पञ्च
(विसे १ १२)।

पञ्चपि [पञ्चाप] कर्तव्य करनेवाला
हृत्पु कर्तव्यवाला (वि १ ७ पुष्पा १४१)।

पञ्चपु [पञ्चाप, पञ्चाप] शूरी एव शूरी (वि
१४ पाप भाषा)। कीकिय कीकिय
[पञ्चाप] निरुपित शीर्ष शम्भ में
पञ्चपुष्पाङ्की की हो वह शम्भ का शीर्ष
(महा ४४)। 'पिप्साप पुञ्जी' [पिप्साप]
की शूरी-निरुपित होने के कारण पिप्साप के पुष्प
वाक्य पञ्चाप हो वह (काय १२)। मूकिय
पु [मूकिय] विद्यापट मनुष्य-निरुपित
(पञ्च)।

पञ्चपु [पञ्चाप] कुरुर, कुरुरा (वि १ २१)।

पञ्चपु [पञ्चाप] पञ्च (पञ्च)।

पञ्चपु [पञ्चाप] एक पञ्च का लेख,
ऊपर लक्ष्य (वि १ ४)।

पञ्चपु [पञ्चाप] १ कीकिय कीकिय। २ बार,
कुरुरा (वि १ ११)। ३ वि पञ्च, पञ्च
हुया (वह)।

पञ्चपु [पञ्चाप] १ पुञ्च पञ्च-वम्भ
(वि ११, १११)। २ वि पञ्च-पुञ्च
(पञ्च)।

पञ्चपु की [पञ्चाप] कुरुरा कुरुरा-पिप्साप
की (पुष्पा)।

पञ्चपु [पञ्चाप] शूरी-पुञ्च निरुपित
हुया 'पञ्चपुञ्च' (वह)।

पञ्चपु [पञ्चाप] पञ्च की
हो (वि १११)।

पञ्चपु की [पञ्चाप] कुरुरा, कुरुरा-पिप्साप
की (पुष्पा ११, २ १ १४१)।

पञ्चपु [पञ्चाप] पञ्च (पञ्चा १ १)।

पञ्चपु [पञ्चाप] पञ्च-पिप्साप एक प्रकार
का शीर्ष (वि १—पञ्च २४८)।

पञ्चपु [पञ्चाप] कुरुरा कुरुरा (वि १)।

पञ्चपु [पञ्चाप] कुरुरा कुरुरा (वि १)।

पञ्चपि [पञ्चाप] कुरुरा कुरुरा (वि १)।

पञ्चपि [पञ्चाप] कुरुरा कुरुरा (वि १)।

पञ्चपि [पञ्चाप] कुरुरा कुरुरा (वि १)।

पञ्चपि [पञ्चाप] कुरुरा कुरुरा (वि १)।

पञ्चपि [पञ्चाप] कुरुरा कुरुरा (वि १)।

पञ्चपि [पञ्चाप] कुरुरा कुरुरा (वि १)।

पञ्चपि [पञ्चाप] कुरुरा कुरुरा (वि १)।

पञ्चपि [पञ्चाप] कुरुरा कुरुरा (वि १)।

पञ्चपि [पञ्चाप] कुरुरा कुरुरा (वि १)।

पञ्चपि [पञ्चाप] कुरुरा कुरुरा (वि १)।

पञ्चपि [पञ्चाप] कुरुरा कुरुरा (वि १)।

पञ्चपि [पञ्चाप] कुरुरा कुरुरा (वि १)।

पञ्चपि [पञ्चाप] कुरुरा कुरुरा (वि १)।

पञ्चपि [पञ्चाप] कुरुरा कुरुरा (वि १)।

पञ्चपि [पञ्चाप] कुरुरा कुरुरा (वि १)।

पञ्चपि [पञ्चाप] कुरुरा कुरुरा (वि १)।

पञ्चपि [पञ्चाप] कुरुरा कुरुरा (वि १)।

पञ्चपि [पञ्चाप] कुरुरा कुरुरा (वि १)।

पञ्चपि [पञ्चाप] कुरुरा कुरुरा (वि १)।

पञ्चपि [पञ्चाप] कुरुरा कुरुरा (वि १)।

पञ्चपि [पञ्चाप] कुरुरा कुरुरा (वि १)।

पञ्चपि [पञ्चाप] कुरुरा कुरुरा (वि १)।

पञ्चपि [पञ्चाप] कुरुरा कुरुरा (वि १)।

पञ्चपि [पञ्चाप] कुरुरा कुरुरा (वि १)।

पञ्चपि [पञ्चाप] कुरुरा कुरुरा (वि १)।

पञ्चपि [पञ्चाप] कुरुरा कुरुरा (वि १)।

पञ्चपि [पञ्चाप] कुरुरा कुरुरा (वि १)।

पञ्चपि [पञ्चाप] कुरुरा कुरुरा (वि १)।

पञ्चपि [पञ्चाप] कुरुरा कुरुरा (वि १)।

पञ्चपि [पञ्चाप] कुरुरा कुरुरा (वि १)।

पञ्चपि [पञ्चाप] कुरुरा कुरुरा (वि १)।

पञ्चपि [पञ्चाप] कुरुरा कुरुरा (वि १)।

पञ्चपि [पञ्चाप] कुरुरा कुरुरा (वि १)।

पञ्चपि [पञ्चाप] कुरुरा कुरुरा (वि १)।

पञ्चपि [पञ्चाप] कुरुरा कुरुरा (वि १)।

पञ्चपि [पञ्चाप] कुरुरा कुरुरा (वि १)।

पक्षम देखो पयास = प्रकाश (विष) ।

पक्षि देखो पणिट्ट (राज) ।

पक्षिण वि [प्रक्षिण] १ सम, बोधा हुआ ।

२ वर पिना हुआ 'बहि पक्षिणा (श्र)

विर्वाति पुण्या' (उत्त १२ १३) । देखो

पक्षम = प्रकीर्ण ।

पक्षिप्रति वि [प्रक्षिपित] बहिष्ठ बहिष्ठ

(यु १ ८) ।

पक्षि देखो पगह = प्रक्षिप (प्राह १२) ।

पक्षि (सी) देखो पगह = प्रक्षिप (स्वप्न

१ मनि ६२) ।

पक्षि देखा पक्षिण (उत्त १२ १३) ।

पक्षिण न [प्रक्षिण] के के लिए केंद्रना

(वच १) ।

पक्षु देखो पक्षर = प्र + कृ । पक्षु (कम्म

१ १) ।

पक्षुय्य सक [प्र + कृ] कोष करना

गुला करना । पक्षुय्यि (महावि ४) ।

पक्षुय्यित (इह) वि [प्रक्षुयित] झुझ, कुपित

गुलाया हुआ (ह ४ १२९) ।

पक्षुय्यि उपर देखो (महावि ४) ।

पक्षुय्य सक [प्र + कृ, प्र + कृ] १ कने

करने का प्रारम्भ करना । २ प्रसव कराना ।

३ करना । पक्षुय्य (वि १ ८) । वक्ष

पक्षुय्यमाम (सुर १९ २४ वि १ ८) ।

पक्षुय्य वि [प्रक्षुय्य, प्रक्षुय्यि] १ कने-

नामा कर्ता । २ पुं प्राप्तित देकर बुद्धि

करने में समर्थ हुए (ह ४२ ठा ८ पुण्ड

१५९) ।

पक्षुय्यि वि [प्रक्षुय्यि] कने स्वर से चित्राया

हुया (उत्त १२ १३) ।

पक्षुय्य देखो पक्षाट्ट (राज) ।

पक्षुय्य पुं [प्रक्षुय्य] गुला, कोन (वा १४) ।

पक्ष वि [पक्ष] पक्ष हुआ (ह १ ४० २

७२ पाय) ।

पक्ष वि [पक्ष] १ सम बहिष्ठ । २ समर्थ,

पक्ष पक्ष हुआ (ह १ ४४ पाय) ।

पक्ष वि [प्रमाय] प्रमाण प्राप्ति (सुवा

१०) ।

पक्षग्राह पुं [पक्ष] १ मकर, मयपक्ष (ह

१ २३) । २ पानी में बसेयमा विहारा

बन-जानु (वि ४, ५०) ।

पक्षग वि [पक्ष] १ बसहल बसहियु । २

समर्थ, शक्त (ह १ १२) । ३ पुं बालक

(ह १३) । ४ एक प्रकार का । ५ पुंको-

पक्षम देखो बहिष्ठ में खुलेनामी एक मनुष्य

जाति (पौरा राज) । जी. जा (खाया ११

धीन हक) । ६ पुं एक शीघ्र जाति का बर,

शबर-मुह (परा १२) । उक्त न [पक्ष]

१ बालक का बर (ह १ १) । २ एक पक्षि

कुस 'पक्षकुल' बसेतो सखी इपरोवि

पक्षिओ होह' (पाय १) ।

पक्षजि वि [पक्ष] १ अतिशय शीघ्रमाल भूष

शोभना हुआ । २ पक्ष मीमा हुआ । ३

मित्रवत् प्रियभावी (ह १ १२) ।

पक्षमिय पुंको [पक्ष] एक प्रकार के में

खुलेनामी मनुष्य-जाति (परा १ १—पक्ष

१४ हक) ।

पक्षम न [पक्षम] केवल भी में बनी हुई

नल, मिठाई दाहि (मुवा १८०) ।

पक्षम सक [प्र + कृ] प्रसव से समर्थ

होना । पक्षमह (सव १२—पक्ष १०८) ।

पक्षम सक [प्र + कृ] १ प्रसव से बाला

बला जाता मनन करना । २ एक प्रयत्न

होना । प्रक्षिप्त होना । पक्षमह (उत्त १

१३) । पक्षमहि (उत्त २० १४ वक्ष १

१३) । बालुमायमेव पक्षमे' (सुय १ २

१ ११) ।

पक्षम पुं [प्रक्षम] प्रस्ताव प्रसव (मुवा

१०४) ।

पक्षमनी की [प्रक्षमणी] विधान-विशेष (सुय

२ २ २०) ।

पक्ष वि [पक्ष] १ समर्थ, शक्त (ह १

१०४ पाय ११ १ ४ वक्ष ४४) ।

१ बर्त-मुक्त, बहिष्ठ (सुर ११ १ ४ पा

११८) । २ शीघ्र 'बालार पक्षमबला' (वा

४१२ वि ४१२) ।

पक्ष देखो पक्षस (पाय) ।

पक्षसपक्ष पुं [पक्ष] १ शरम । २ व्याम (ह

१ ५३) ।

पक्षाय वि [पक्षाय] पक्षमा हुआ

'पक्षायपामिपक्षायि' (वक्ष १२) ।

पक्षि सक [प्र + क] केंद्रना । वक्ष

'पक्षि व पक्षि व कक्षर व उक्षर पक्षि

माया' (खाया १ २) । -

पक्षिप्रति वि [प्रक्षिपित] बिधने कीया का

प्रारम्भ किया हो बक्ष (खाया १ १ कय) ।

पक्षेय वि [पक्ष] पक्षा हुआ (उत्त) ।

पक्षम पुं [पक्ष] बैरिका का एक भाग (पाय

८२) ।

पक्षय पुं [पक्ष] १ पक्ष पक्षपात, पाषा

महीमा पक्षय विन-उत्त (उत्त ४—पक्ष

८५ कुमा) । २ गुप्त की कृष्ण पक्ष

उत्तमा दीर क्षेपण पक्ष (वीर २ ह २

१ ६) । ३ पक्ष पक्ष, कक्षा के नीचे

का भाग । ४ पक्षों का प्रत्यक्ष-विशेष

पक्ष, पक्ष, पक्ष (कुमा) । ५ वर्तमान-

प्रतिष्ठ अनुमान-प्रमाण का एक प्रत्यक्ष

साध्यता की वस्तु (विशे २८२४) । ६ शरक,

दीर । ७ मल्ल, बक्ष टोपी । ८ पक्ष

उत्तमा । ९ शरीर का पाषा भाग । १

उत्तमा । ११ दीर का पक्ष (ह १ ४४) ।

१२ उत्तमा (वक्ष १) । ग वि [ग]

पक्ष-मागी पक्ष-पर्याय स्थायी (कम्म १ १८) ।

'पिंड पुं [पिंड] वास्तव-विशेष—१

बाय दीर बाय पर बक्ष बाय कर देना ।

२ दोनों हाथों से शरीर का बलन कर बैठना

(उत्त १ १२) । य पुं [क] पक्षा शक्त

कृष्ण (कय) । बक्ष वि [पक्ष] शरक-

बायता (वक्ष १) । बाय वि [पायि] पक्ष

पक्षपात करनेवाला शरकपाटी करनेवाला

(उत्त ७२८ टी. कम्म १ टी) । बाय पुं

[पाय] शरकपाटी (उत्त १० स्वप्न

४२) । बाय (सी) देखो बाय (पाय—

विशे २ मल्ल १५) । बाय देखो बाय

(सुवा २ १ २६५) । बाय पुं [बाय]

पक्ष-सम्बन्धी विधान (उत्त १२२) । बाय

पुं [बाय] बैरिका का एक देश-विशेष

(व १) । बाय वि [पायि] पक्ष

पाटी (ह ४ ४ १) । बाय वि [पायि]

[पायि] शरक-विशेष (व ७२५) ।

पक्षम न [पक्षम] वास्तव शरक-पाय

'पक्षम' शरकपाटी बक्ष ४२५' (विशे

१) ।

पक्षोद्ध एक [प्र + धाव्] इकमा
प्राप्ताएन कए। छंङ् पक्षोद्धिय (सु
२.५५)।

पक्षोद्ध एक [प्र + स्फोटय] १ बुध
भइना। २ शस्त्रमार भइना। पक्षोद्धिमा
वङ्क पक्षोद्धत (सु ४ १)। प्रयो पक्षोद्ध
विना (सु ४ १)।

पक्षोद्ध पु [प्रस्फोट] प्रमाजंन, प्रतिपेक्षन
की क्रिया-विशेष (पक्ष २)।

पक्षोद्धय न [राधुन] बृत्तन कथना (हुमा)।
पक्षोद्धिमा वि [राधित] निमार्थित भइ
कर गियेना हुमा (वि ९ ७ पाय)।

पक्षोद्धिय देखी पक्षोद्ध = राध, प्र + धाव्।

पक्षोद्ध एक [प्र + क्रोमय] सुख कएना
योग छलन कर दिसा बैना। कबहु
पक्षमुक्कर्मत (वि २ २४)।

पक्षोद्धय न [राधुन] १ स्थापित होनेवाला।
२ वि छट होनेवाला (पक्ष)।

पक्षम (वि) देखी = पक्षमः 'पक्षमस्यमर्ष'
(प्राप् १२४)।

पक्षोद्ध देखी पक्षोद्ध = प्रत्येक (पक्ष २)।

पक्षस वि [प्रत्य] प्रत्येक छीज देख (प्राप्)।
पक्ष ३ [प्रकृति] १ प्राप्ति स्वभाव (सफ
कम्म १ २)। २ गुर १४ १२ गुणा ११)।

२ प्रत्येक धर्म प्रत्युत धर्म 'नविहेतुधर्म पवर्ध
स्मेर' (वि २५ २)। ३ प्राप्ति धीर छात्र-
पक्ष नन-समुद्र; 'विप्रमुद्रा बहुधर्म पवर्ध'
(गुणा २१०)। ४ मुग्धकार पावि बलरह
समुद्र-वाहिनी बह्मरसगन्धवारस की दो

न को एव (पाक १२)। ५ कर्म का नर (सम
६)। ६ पक्ष रज धीर लन की साम्या
बस्ना। ७ बलरह के एक पुत्र का नाम (पक्ष)।

धर्म पु [विष्णु] कर्म-गुरुत्वा में विप्र-
शक्तियों का पैदा होना (कम्म १ २)। देखी
पराधि।

पक्ष पु [प्रकृष्ट] १ पीठ-विशेष। २ पक्ष
का प्रत्येक प्रत्येक (बीज १)।

पक्ष एक [प्र + कजय] निष्ठा करना।
'धर्मिय बयं(क)ने धनुषा पव(क)ने' (पाचा)।

पक्ष वि [प्रकृष्ट] व्यक्त, पुता सग पक्ष
(वि ११६)।

पक्ष एक [प्र + कजय] निष्ठा करना।
'धर्मिय बयं(क)ने धनुषा पव(क)ने' (पाचा)।

पक्ष वि [प्रकृष्ट] व्यक्त, पुता सग पक्ष
(वि ११६)।

पक्ष वि [प्रकृष्ट] प्रविष्टि विनिमित्त (लत
११)।

पक्ष पु [प्रगर्भ] बड़ा पक्ष या मरु (पाचा
२ १ २)।

पक्षन न [प्रकटन] प्रकट करना कुता
करना (एकि)।

पक्षि की [प्रकृति] १ मेर, प्रकार (सम)।
२—देखी पक्षि (सम २६)। गुर १४
१०)।

पक्षिकय वि [प्रकटोक्त] व्यक्त किया हुमा
सग किया हुमा (गुणा १०१)।

पक्षिद्ध एक [प्र + कृप्] क्षीयता। कबहु
पक्षिद्धस्माणा (वि १ १)।

पक्षि देखी पक्षि = प्र + कृप्। छंङ्-
पक्षिपक्षा (सु २ १ १०)।

पक्षि देखी पक्षि = प्र + कृप् (सु १
८ ३)।

पक्षि वि [प्रकृष्ट] १ उपाय होनेवाला
प्राप्ति होनेवाला 'बहुपुण्यकर्म्या हुमा
पक्षिमाक्षि' (सु १ १ १६)। देखी
पक्षि = प्रकृष्ट (पाचा)।

पक्षिपक्षि वि [प्रकृष्टिय] प्रकृष्ट, कृष्ट
'ए उपायि किंही पुनमासि पक्षिपक्षि'
(सु १ ३ १ १६)। देखी पक्षिपक्षि।

पक्षिपक्षि वि [प्रकृष्टिय] प्रकृष्ट, कृष्ट
'ए उपायि किंही पुनमासि पक्षिपक्षि'
(सु १ ३ १ १६)। देखी पक्षिपक्षि।

पक्षिपक्षि वि [प्रकृष्टिय] प्रकृष्ट, कृष्ट
'ए उपायि किंही पुनमासि पक्षिपक्षि'
(सु १ ३ १ १६)। देखी पक्षिपक्षि।

पक्षिपक्षि वि [प्रकृष्टिय] प्रकृष्ट, कृष्ट
'ए उपायि किंही पुनमासि पक्षिपक्षि'
(सु १ ३ १ १६)। देखी पक्षिपक्षि।

पक्षिपक्षि वि [प्रकृष्टिय] प्रकृष्ट, कृष्ट
'ए उपायि किंही पुनमासि पक्षिपक्षि'
(सु १ ३ १ १६)। देखी पक्षिपक्षि।

पक्षिपक्षि वि [प्रकृष्टिय] प्रकृष्ट, कृष्ट
'ए उपायि किंही पुनमासि पक्षिपक्षि'
(सु १ ३ १ १६)। देखी पक्षिपक्षि।

पक्षिपक्षि वि [प्रकृष्टिय] प्रकृष्ट, कृष्ट
'ए उपायि किंही पुनमासि पक्षिपक्षि'
(सु १ ३ १ १६)। देखी पक्षिपक्षि।

पक्षिपक्षि वि [प्रकृष्टिय] प्रकृष्ट, कृष्ट
'ए उपायि किंही पुनमासि पक्षिपक्षि'
(सु १ ३ १ १६)। देखी पक्षिपक्षि।

पक्षिपक्षि वि [प्रकृष्टिय] प्रकृष्ट, कृष्ट
'ए उपायि किंही पुनमासि पक्षिपक्षि'
(सु १ ३ १ १६)। देखी पक्षिपक्षि।

पक्षिपक्षि वि [प्रकृष्टिय] प्रकृष्ट, कृष्ट
'ए उपायि किंही पुनमासि पक्षिपक्षि'
(सु १ ३ १ १६)। देखी पक्षिपक्षि।

पक्षिपक्षि वि [प्रकृष्टिय] प्रकृष्ट, कृष्ट
'ए उपायि किंही पुनमासि पक्षिपक्षि'
(सु १ ३ १ १६)। देखी पक्षिपक्षि।

पक्षिपक्षि वि [प्रगर्भ] बड़ा पक्ष या मरु (पाचा
२ १ २)।

पक्षिपक्षि वि [प्रगर्भ] बड़ा पक्ष या मरु (पाचा
२ १ २)।

पक्षिपक्षि वि [प्रगर्भ] बड़ा पक्ष या मरु (पाचा
२ १ २)।

पक्षिपक्षि वि [प्रगर्भ] बड़ा पक्ष या मरु (पाचा
२ १ २)।

पक्षिपक्षि वि [प्रगर्भ] बड़ा पक्ष या मरु (पाचा
२ १ २)।

पक्षिपक्षि वि [प्रगर्भ] बड़ा पक्ष या मरु (पाचा
२ १ २)।

पक्षिपक्षि वि [प्रगर्भ] बड़ा पक्ष या मरु (पाचा
२ १ २)।

पक्षिपक्षि वि [प्रगर्भ] बड़ा पक्ष या मरु (पाचा
२ १ २)।

पक्षिपक्षि वि [प्रगर्भ] बड़ा पक्ष या मरु (पाचा
२ १ २)।

पक्षिपक्षि वि [प्रगर्भ] बड़ा पक्ष या मरु (पाचा
२ १ २)।

पक्षिपक्षि वि [प्रगर्भ] बड़ा पक्ष या मरु (पाचा
२ १ २)।

पक्षिपक्षि वि [प्रगर्भ] बड़ा पक्ष या मरु (पाचा
२ १ २)।

पक्षिपक्षि वि [प्रगर्भ] बड़ा पक्ष या मरु (पाचा
२ १ २)।

पक्षिपक्षि वि [प्रगर्भ] बड़ा पक्ष या मरु (पाचा
२ १ २)।

पक्षिपक्षि वि [प्रगर्भ] बड़ा पक्ष या मरु (पाचा
२ १ २)।

पक्षिपक्षि वि [प्रगर्भ] बड़ा पक्ष या मरु (पाचा
२ १ २)।

पक्षिपक्षि वि [प्रगर्भ] बड़ा पक्ष या मरु (पाचा
२ १ २)।

पक्षिपक्षि वि [प्रगर्भ] बड़ा पक्ष या मरु (पाचा
२ १ २)।

पक्षिपक्षि वि [प्रगर्भ] बड़ा पक्ष या मरु (पाचा
२ १ २)।

पक्षिपक्षि वि [प्रगर्भ] बड़ा पक्ष या मरु (पाचा
२ १ २)।

पञ्चाङ्ग नि [पञ्चाङ्ग] प्रचुर छायावाधा
(पनि १६)।

पञ्चाङ्ग नि [पञ्चाङ्ग] १ इका हुवा
माप्तादि। २ छिटाया हुवा (पत्र) पनि।

पञ्चाङ्ग रेको पञ्चाङ्ग = प्र + ऋणम्।

पञ्चाङ्ग दु [पञ्चाङ्ग] पात्र बापने बर
कहा (सोब २१५ मा)।

पञ्चाङ्गि (शी) नि [पञ्चाङ्गि] बोभा हुमा
(नाट—गुण २१२)।

पञ्चाङ्गि नि [पञ्चाङ्गि] रेको पञ्चाङ्गिनि
(पञ्)।

पञ्चाङ्गुतावि नि [पञ्चाङ्गुतावि] पया-
ताप-पुत्र पञ्चाङ्ग कलेवाभा (पय १४१)।

पञ्चाङ्गो (शी) रेको पञ्चाङ्ग = पञ्चाङ्ग (वि
१६)।

पञ्चाङ्गण न [पञ्चाङ्गण] पासेब, रास्ते में
बाने का चीजन 'बाइसे करिसे पञ्चाङ्गणस
भारि' (महा)।

पञ्चाङ्गण न [पञ्चाङ्गण] १ माप्तावन
कहा। २ वि माप्तावन कलेवाभा। या
की 'ठा' माप्तावन 'परपुत्रपञ्चाङ्गण' (बन)।

पञ्चाङ्ग रेको पञ्चाङ्ग। पञ्चाङ्ग (कास)।

पञ्चाङ्ग की [वि] पिपिका, पिपरी, बेमारि
रहित मापन-विशेष (१६ १)। पिपय
न [पिपय] 'पञ्चाङ्ग' का पिपरी (मय ७
८ टी—पञ्च १११)।

पञ्चाङ्ग (माप) रेको पञ्चाङ्ग (१६ १८८)।

पञ्चाङ्गनाम रेको पञ्चाङ्ग = प्र + धर्म्य।

पञ्चाङ्ग न [मापयित] १ रास की मुद्रि
कलेवाभा कर्म पात्र का द्रव्य कलेवाभा कर्म
(बन गुप्ता ११६; १२)। २ मात की मुद्रि
कलेवाभा कर्म (पैना १६ १)।

पञ्चाङ्गि नि [मापयित] मापयित का
भागी, दोरी (उप १०६)।

पञ्चाङ्ग न [पञ्चाङ्ग] १ पश्चिम दिशा (उपा
७४ १)। २ वि. पश्चिम दिशा का पायात्र
(महा ६ २ २१ प्राय)। ३ पिपय का
का 'विपयस पञ्चाङ्ग' (पञ्)। ४
पश्चिम बरम 'पुष्पपञ्चाङ्ग' (विप
पञ्च) (मय ४४)। ५ न [पि]

पञ्चाङ्ग न [पञ्चाङ्ग] १ पश्चिम दिशा (उपा
७४ १)। २ वि. पश्चिम दिशा का पायात्र
(महा ६ २ २१ प्राय)। ३ पिपय का
का 'विपयस पञ्चाङ्ग' (पञ्)। ४
पश्चिम बरम 'पुष्पपञ्चाङ्ग' (विप
पञ्च) (मय ४४)। ५ न [पि]

पञ्चाङ्ग न [पञ्चाङ्ग] १ पश्चिम दिशा (उपा
७४ १)। २ वि. पश्चिम दिशा का पायात्र
(महा ६ २ २१ प्राय)। ३ पिपय का
का 'विपयस पञ्चाङ्ग' (पञ्)। ४
पश्चिम बरम 'पुष्पपञ्चाङ्ग' (विप
पञ्च) (मय ४४)। ५ न [पि]

पञ्चाङ्ग न [पञ्चाङ्ग] १ पश्चिम दिशा (उपा
७४ १)। २ वि. पश्चिम दिशा का पायात्र
(महा ६ २ २१ प्राय)। ३ पिपय का
का 'विपयस पञ्चाङ्ग' (पञ्)। ४
पश्चिम बरम 'पुष्पपञ्चाङ्ग' (विप
पञ्च) (मय ४४)। ५ न [पि]

पञ्चाङ्ग न [पञ्चाङ्ग] १ पश्चिम दिशा (उपा
७४ १)। २ वि. पश्चिम दिशा का पायात्र
(महा ६ २ २१ प्राय)। ३ पिपय का
का 'विपयस पञ्चाङ्ग' (पञ्)। ४
पश्चिम बरम 'पुष्पपञ्चाङ्ग' (विप
पञ्च) (मय ४४)। ५ न [पि]

पञ्चाङ्ग न [पञ्चाङ्ग] १ पश्चिम दिशा (उपा
७४ १)। २ वि. पश्चिम दिशा का पायात्र
(महा ६ २ २१ प्राय)। ३ पिपय का
का 'विपयस पञ्चाङ्ग' (पञ्)। ४
पश्चिम बरम 'पुष्पपञ्चाङ्ग' (विप
पञ्च) (मय ४४)। ५ न [पि]

उत्तरार्ध उत्तरी भाषा हिता (महा ७ २
१—पञ्च ८१)। सेख दु [रौख] वस्तुपत्र

पर्वत (पञ्च)।

पञ्चिमा की [पञ्चिमा] पश्चिम दिशा (कुमा
महा)।

पञ्चिमि नि [पञ्चिम] पीछे से ऊपर
पीछे का (विपे १०६२)।

पञ्चिमापिपय रेको पञ्चिमापिपय (पय
१४)।

पञ्चिमा (माप) रेको पञ्चिम (मनि)।

पञ्चिमा १ नि [पञ्चिम, पाञ्चास्य] १
पञ्चिम (पञ्चिम) १ पञ्चिम दिशा का। २ पिपय,
पुत्रपी (वि ११२ १२५ नि ४)।

पञ्चिमापिपय पु [परपाचाप] पञ्चाङ्ग
परपाचाप (सम्पत् ११ बर्मा १२, १२२)

पञ्चिमापिपय (माप) नि [परपाचापित]
विपकी परपाचाप हुमा हो बह (मनि)।

पञ्चिमापिपय रेको पञ्चिमापिपय (१६ ७६)।

पञ्चिमापिपय न [वि] पासेब रास्ते में निहा
कले की चीजन-सामग्री कलेवा (१६, २२)।

पञ्चिमापिपय १ नि [परपाचापपन्न] पीछे
पञ्चिमापिपय १ नि [परपाचापपन्न] पीछे
पञ्चिमापिपय १ नि [परपाचापपन्न] पीछे

पञ्चिमापिपय १ नि [परपाचापपन्न] पीछे
पञ्चिमापिपय १ नि [परपाचापपन्न] पीछे

पञ्चिमापिपय १ नि [परपाचापपन्न] पीछे
पञ्चिमापिपय १ नि [परपाचापपन्न] पीछे

पञ्चिमापिपय १ नि [परपाचापपन्न] पीछे
पञ्चिमापिपय १ नि [परपाचापपन्न] पीछे

पञ्चिमापिपय १ नि [परपाचापपन्न] पीछे
पञ्चिमापिपय १ नि [परपाचापपन्न] पीछे

पञ्चिमापिपय १ नि [परपाचापपन्न] पीछे
पञ्चिमापिपय १ नि [परपाचापपन्न] पीछे

पञ्चिमापिपय १ नि [परपाचापपन्न] पीछे
पञ्चिमापिपय १ नि [परपाचापपन्न] पीछे

पञ्चिमापिपय १ नि [परपाचापपन्न] पीछे
पञ्चिमापिपय १ नि [परपाचापपन्न] पीछे

पञ्चिमापिपय १ नि [परपाचापपन्न] पीछे
पञ्चिमापिपय १ नि [परपाचापपन्न] पीछे

पञ्चिमापिपय १ नि [परपाचापपन्न] पीछे
पञ्चिमापिपय १ नि [परपाचापपन्न] पीछे

पञ्चिमापिपय १ नि [परपाचापपन्न] पीछे
पञ्चिमापिपय १ नि [परपाचापपन्न] पीछे

पञ्चाङ्ग की [पञ्चाङ्ग] पश्चिम-दिशा भाग
की सी मा लपट (कुप ११०)।

पञ्चाङ्ग न [पञ्चाङ्ग] पञ्चाङ्गिनि कीचनी
पाय, रोमी (विप ४००)।

पञ्चाङ्ग रेको पञ्चाङ्ग = पञ्चाङ्ग (बन)।

पञ्चाङ्गि नि [पञ्चाङ्गि] पुत्र मा पुत्रुह की
विप हुमा मापक-पाण की बलि (मापा २
१ ४ २)।

पञ्चाङ्ग न [पञ्चाङ्ग] मोहन-पञ्चाङ्ग मोहन
सेना (उप १४५)।

पञ्चाङ्ग वर [पञ्चाङ्ग] पितामा, पात्र करना।

पञ्चाङ्ग (विना १ १)। कनक 'पञ्चाङ्ग' से
हो सब सब पञ्चाङ्गमापाट्टर 'रसवि'
(पुप १ २ १ २५)। ३. पञ्चाङ्ग
(मय ४)।

पञ्चाङ्ग न [पञ्चाङ्ग] बन्नी-बन्नी नाम (अ ४ ४—
पञ्च १००)।

पञ्चाङ्ग न [पञ्चाङ्ग] पात्र-पञ्चाङ्ग जल 'धर्म' का
पञ्चाङ्ग न [पञ्चाङ्ग] पात्र-पञ्चाङ्ग जल 'धर्म' का

पञ्चाङ्ग न [पञ्चाङ्ग] पात्र-पञ्चाङ्ग जल 'धर्म' का
पञ्चाङ्ग न [पञ्चाङ्ग] पात्र-पञ्चाङ्ग जल 'धर्म' का

पञ्चाङ्ग न [पञ्चाङ्ग] पात्र-पञ्चाङ्ग जल 'धर्म' का
पञ्चाङ्ग न [पञ्चाङ्ग] पात्र-पञ्चाङ्ग जल 'धर्म' का

पञ्चाङ्ग न [पञ्चाङ्ग] पात्र-पञ्चाङ्ग जल 'धर्म' का
पञ्चाङ्ग न [पञ्चाङ्ग] पात्र-पञ्चाङ्ग जल 'धर्म' का

पञ्चाङ्ग न [पञ्चाङ्ग] पात्र-पञ्चाङ्ग जल 'धर्म' का
पञ्चाङ्ग न [पञ्चाङ्ग] पात्र-पञ्चाङ्ग जल 'धर्म' का

पञ्चाङ्ग न [पञ्चाङ्ग] पात्र-पञ्चाङ्ग जल 'धर्म' का
पञ्चाङ्ग न [पञ्चाङ्ग] पात्र-पञ्चाङ्ग जल 'धर्म' का

पञ्चाङ्ग न [पञ्चाङ्ग] पात्र-पञ्चाङ्ग जल 'धर्म' का
पञ्चाङ्ग न [पञ्चाङ्ग] पात्र-पञ्चाङ्ग जल 'धर्म' का

पञ्चाङ्ग न [पञ्चाङ्ग] पात्र-पञ्चाङ्ग जल 'धर्म' का
पञ्चाङ्ग न [पञ्चाङ्ग] पात्र-पञ्चाङ्ग जल 'धर्म' का

पञ्चाङ्ग न [पञ्चाङ्ग] पात्र-पञ्चाङ्ग जल 'धर्म' का
पञ्चाङ्ग न [पञ्चाङ्ग] पात्र-पञ्चाङ्ग जल 'धर्म' का

पञ्चाङ्ग न [पञ्चाङ्ग] पात्र-पञ्चाङ्ग जल 'धर्म' का
पञ्चाङ्ग न [पञ्चाङ्ग] पात्र-पञ्चाङ्ग जल 'धर्म' का

पञ्चाङ्ग न [पञ्चाङ्ग] पात्र-पञ्चाङ्ग जल 'धर्म' का
पञ्चाङ्ग न [पञ्चाङ्ग] पात्र-पञ्चाङ्ग जल 'धर्म' का

पञ्चाङ्ग न [पञ्चाङ्ग] पात्र-पञ्चाङ्ग जल 'धर्म' का
पञ्चाङ्ग न [पञ्चाङ्ग] पात्र-पञ्चाङ्ग जल 'धर्म' का

पञ्चाङ्ग न [पञ्चाङ्ग] पात्र-पञ्चाङ्ग जल 'धर्म' का
पञ्चाङ्ग न [पञ्चाङ्ग] पात्र-पञ्चाङ्ग जल 'धर्म' का

पञ्चाङ्ग न [पञ्चाङ्ग] पात्र-पञ्चाङ्ग जल 'धर्म' का
पञ्चाङ्ग न [पञ्चाङ्ग] पात्र-पञ्चाङ्ग जल 'धर्म' का

[नामन्] प्रकृतर एक कर्म-विशेष (उज-
तन १७) ।

पञ्चत न [पर्याप्त] तनद्वारा बीजस विन
का कलत्त (संजीव १८) ।

पञ्चतर [ह] केओ पञ्चतर (पद—पत्र
२१) ।

पञ्चति की [पर्याप्त] १ खडि सामर्थ्य
(पुत्र १ १४) । २ बीज की नू खडि,
विशेष हाप पुष्पको ओ बहल करने तथा
सकरो धाया, हापीर धारि के रूप में बजत
के का काम होता है, बीज की पुष्पको को
बहल करने तथा परिणामसे या पशुको की खडि
(अश्व, बन्ध १४६, नव ४ ४ ४) । ३
प्राप्ति पूर्ण प्राप्ति (हे २ १२) । ४ दुष्टि
विमर्षवशात्प्राप्तिमात्र की लक्ष्य पर्याप्त १
(ज ७३८ टी) ।

पञ्चति की [पर्याप्त] १ पूर्ण पूर्णता
(बर्षि १८) । २ प्राप्त भवसात (पुत्र
२ ८) ।

पञ्चत पु [पञ्चम] यैक-विशेष विनक एक
बार बजने से भूमि में एक हजार वर्ष तक
विनाशदाकारी है 'पञ्च' (ज) ओ छे
बहुतेर छे छे बहोरो का बलभलाई
अर्थि (अ ४ ४—नव २७) ।

पञ्चत पु [ह] प्रायिक प्रविशत, विनाश
का विना परावर्त (नव ६, वत ७, मुर १
१७४ २२) ।

पञ्चत पु [पञ्च] १ पुनः-काल का एक वेद,
उपाधि के प्रथम समय में पुनः-विशेष के बर्ष-
पर्याप्त बीज की की पुनः व क बीज होता
है कल्ले रूपरे समय में ज्ञान का निष्ठा
कर बहल है नू पुनःकाल (कन १ ७) ।
२—केओ पञ्चाव (बन्ध १ १) खडि
विशे ४७७ ४८० ४८१ । ३ समाप्त
पु [समाप्त] पुनःकाल का एक वेद प्रकृतर
एक वर्ष-पुनः का अनुपात (बन्ध १ ७) ।

पञ्चत न [पञ्चम] निरवध धारणा
(विशे ८१) ।

पञ्चत हा [पञ्च] बहल, बीजस । पञ्च-
त पञ्च (हे ४ २, हे ६ २२ बुना) ।

पञ्चतय पु [प्रकरक] एकप्रमाण-नामक तरक-
शुक्ली का एक तरकालास (हा १—पत्र
११२) । मन्त्र पु [माध्य] एक तरकालास
(अ १—पत्र ११७ टी) । लक्ष्य पु [पर्य]
मन्त्राभास-विशेष (अ १) । सिद्ध पु
[लक्षित] एक तरकालास तरक-स्थान
विशेष (अ १) ।

पञ्चत केओ पञ्चत । पञ्चवेद (पद्म) । बहु
पञ्चतय (कन) ।

पञ्चतय वि [प्रत्यय] बतलेबाला (हा
४ १) ।

पञ्चतय पु [प्रत्यय] हापीर तरक-मुनि
का एक तरक-स्थान (हेरक ८) ।

पञ्चतय वि [प्रत्यय] १ बहाया हुआ
कन (बहा) । २ नूय बमकलेबाला, केओय
माल (पञ्च २) ।

पञ्चतय वि [प्रत्यय] १ बतलेबाला ।
२ नूय बमकलेबाला (मुरा ११८, एहा) ।

पञ्चतय वि [प्रत्यय] खडि (विचार
१२५) ।

पञ्चत पु [पर्य] १ परिच्छेद विर्या (विशे
८१ भावत) । २ केओ पञ्चाप (धावा,
जान विशे २७२२ सम १२) । कसिपु न
[कृत] कुरुरेव पूर्ण-अव तक का ज्ञान
मुन्यतन-विशेष (पञ्चा) । काय वि
[जात] १ विन कलत्त की प्राप्त (पद्म
२, ३) । २ ज्ञान धारि कुञ्जोबाला (हा १) ।
३ नू विप्रेषकोश का अनुपात (धावा) ।
ज्ञाय वि [जात] बल-प्राप्त (अ १) ।
द्विप पु [विनत] विनक, विनक] न-
विशेष इत्य की लोचक केवल पर्याप्त की
ही मुख्य बतलेबाला परा (सम १) । ज्ञान,
नय पु [नय] नही प्रकृतर एक वर्ष
(पत्र विशे ७२) कुरुरेव विर्या व धावा
निर्देश पञ्चतयवस (सम ११) ।

पञ्चतय न [पञ्चत] परिच्छेद, निरवध (विशे
१) ।

पञ्चतयत एक [पञ्च + तयत] १
कल्ले धारणा में पञ्चा । २ विरोध करना ।
३ खडिप के साथ बल करना । पञ्चतयतु

(ही) (मा १६) । पञ्चतयतैवि (वि
१२१) ।

पञ्चतयत न [पर्यवसान] धन धारणा
(सम) ।

पञ्चतयत न [पर्यवसित] धनदान, कला
अपञ्चवसिप हाप (धावा) ।

पञ्चा केओ पञ्चा (हे २ ८३) ।

पञ्चा की [पञ्चा] मार्ग प्रस्ता भेष न
पञ्च तथा मानस्य पञ्चतयतयता (सम
१२७) हे १ १ कुप्र १७६) ।

पञ्चा की [ह] निःसंखि लोही (हे १ १) ।

पञ्चा की [पर्याप्त] धारणा, ब्रह्म-वेद
(हे १ १ पाद) ।

पञ्चा केओ पञ्चा धनविन्यसिप नहि विनका
विन्यसिप नहि पञ्चा प्राप्ति ११) ।

पञ्चाअर पु [प्रजागर] भावपुत्र जिता का
धनस्य (सम ११) ।

पञ्चातय वि [पर्याप्त] विशेष धातुय
ध्यातुय (उ २ १७१) हे ४ २१६) ।

पञ्चातय एक [पर्या + भाव] का
करता । अर्थ पञ्चातयता (पत्र) ।

पञ्चातय पु [पर्याप्त] १ समान वर्ष का नावक
तय (विशे २२) । २ पूर्ण प्राप्ति (विशे
८२) । ३ पर्याप्त-नय, वन्य-पुत्र । ४ पर्याप्त
का कुरुरेव या कुरुरेव कालास (विशे १२१,
४७६, ४८० ४८२ ४८३) हा १
१) । २ ज्ञान विनारी (हावा १ १) ।
३ प्रकार, मेह (धावत) । ४ प्रकृतर । ८
निर्देश (हे २ २४) । केओ पञ्चाव तथा
पञ्चाव ।

पञ्चाव पु [पञ्चाव] तातय धावा, धाव
(सुपनि ११२) ।

पञ्चाव एक [प + काल] नवान्त,
मुन्यतय । पञ्चाव (विशे) । अर्थ पञ्चा-
विन, पञ्चाविन्य (नव २, १) पद्म) ।

पञ्चाव न [प्रत्यय] पुनःबाला (ज
१२७ टी) ।

पञ्चाविन वि [प्रत्यय] बतला हुआ,
मुन्यतय हुआ (मुरा १११) प्राप्ति १) ।

पञ्चाव की [ह] प्राप्ति] १ भाव की
मज्जाबारी बतली । २ विना की यातावती,
बरापी (पत्र ७-हे १ ४१) ।

पञ्चिजममाण रेखो पञ्च = पाप्य ।

पञ्चुद्र नि [पयुं] पञ्चक्या हुवा (?)
मिगरी ए कया कयुं छातविमं धरमं ए
पञ्चुद्र (पा २२१) ।

पञ्चुन्युद्र नि [पयुं] पञ्चि उन्मुक
(गाट) ।

पञ्चुनसर न [दि] उक्क के हुस्य एक प्रसार
का दण (दि १ ३२) ।

पञ्चुण्य पुं [पयुं] १ यीहण के एक पुत्र
का नाम (संत) । २ नामरत्न (हुमा) । ३
विष्णुका शास्त्र में प्रतिपादित कयुंयुं कय
विष्णु का एक सौ (दि २ ४२) । ४ एक
वैष्णवि (निष् १) । रेखो पञ्चुम ।

पञ्चुच नि [पयुं] कठि कठि 'माणिह
पञ्चुचकपयपनणह' (स ११२) 'निष्
कायकामपञ्चुचकपयपनणह' (स १२६) (मि) ।
रेखो पञ्चुच ।

पञ्चुवास पुं [पयुं] निषे प्रनिषे
(निषे २२) ।

पञ्चुम रेखो पञ्चुण्य (छापा १ १ संत
१४ पुत्र १८ गुवा १२) । २ नि यमी
भीमस प्रमुत्त बगभासा पञ्चुनयोनि
पञ्चुमसवर्णो (हुमा १२) ।

पञ्चुपट्टा वक [पयुं] + पट्टा] उपस्थित
होना । हेह- पञ्चुपट्टा (टी) (गाट—
रेखो २२) ।

पञ्चुपट्टि नि [पयुं] उपस्थित
मीहुर धारि, उत्तर (उत्तर १० ४२) ।

पञ्चुवास वक [पयुं] + वास्] सेवा
करना अधिक करना । पञ्चुवास पञ्चु
वासि (उत्तर ४२) । बह पञ्चुवासमाण
(छापा १ १ २) । बह पञ्चुवासिज
माण (हुमा १०८) । संक- पञ्चुवासिमा
(कय) । ३ पञ्चुवासिज (छापा १
१) बीर ।

पञ्चुवासन न [पयुं] वास्, अधिक,
आमना (कय स १११ उर १२० टी
मि १८) ।

पञ्चुवासन न [पयुं] वास्, अधिक,
आमना (कय स १११ उर १२० टी
मि १८) ।

पञ्चुवासन नि [पयुं] वास्, अधिक,
आमना (कय स १११ उर १२० टी
मि १८) ।

पञ्चुवासन नि [पयुं] वास्, अधिक,
आमना (कय स १११ उर १२० टी
मि १८) ।

पञ्चुवासन नि [पयुं] वास्, अधिक,
आमना (कय स १११ उर १२० टी
मि १८) ।

पञ्चुवासन नि [पयुं] वास्, अधिक,
आमना (कय स १११ उर १२० टी
मि १८) ।

पञ्चुवासन नि [पयुं] वास्, अधिक,
आमना (कय स १११ उर १२० टी
मि १८) ।

पञ्चुवासन नि [पयुं] वास्, अधिक,
आमना (कय स १११ उर १२० टी
मि १८) ।

पञ्चुवासन नि [पयुं] वास्, अधिक,
आमना (कय स १११ उर १२० टी
मि १८) ।

पञ्चुवासन नि [पयुं] वास्, अधिक,
आमना (कय स १११ उर १२० टी
मि १८) ।

पञ्चुवासन नि [पयुं] वास्, अधिक,
आमना (कय स १११ उर १२० टी
मि १८) ।

पञ्चुवासन नि [पयुं] वास्, अधिक,
आमना (कय स १११ उर १२० टी
मि १८) ।

पञ्चुवासन नि [पयुं] वास्, अधिक,
आमना (कय स १११ उर १२० टी
मि १८) ।

पञ्चुवासन नि [पयुं] वास्, अधिक,
आमना (कय स १११ उर १२० टी
मि १८) ।

पञ्चुवासन नि [पयुं] वास्, अधिक,
आमना (कय स १११ उर १२० टी
मि १८) ।

पञ्चुवासन नि [पयुं] वास्, अधिक,
आमना (कय स १११ उर १२० टी
मि १८) ।

पञ्चुवासन नि [पयुं] वास्, अधिक,
आमना (कय स १११ उर १२० टी
मि १८) ।

पञ्चुवासन नि [पयुं] वास्, अधिक,
आमना (कय स १११ उर १२० टी
मि १८) ।

पञ्चुवासन नि [पयुं] वास्, अधिक,
आमना (कय स १११ उर १२० टी
मि १८) ।

पञ्चुवासन नि [पयुं] वास्, अधिक,
आमना (कय स १११ उर १२० टी
मि १८) ।

पञ्चुवासन नि [पयुं] वास्, अधिक,
आमना (कय स १११ उर १२० टी
मि १८) ।

पञ्चुवासन नि [पयुं] वास्, अधिक,
आमना (कय स १११ उर १२० टी
मि १८) ।

पञ्चुवासन नि [पयुं] वास्, अधिक,
आमना (कय स १११ उर १२० टी
मि १८) ।

पञ्चुवासन नि [पयुं] वास्, अधिक,
आमना (कय स १११ उर १२० टी
मि १८) ।

पञ्चुवासन नि [पयुं] वास्, अधिक,
आमना (कय स १११ उर १२० टी
मि १८) ।

पञ्चुवासन नि [पयुं] वास्, अधिक,
आमना (कय स १११ उर १२० टी
मि १८) ।

पञ्चुवासन नि [पयुं] वास्, अधिक,
आमना (कय स १११ उर १२० टी
मि १८) ।

पञ्चुवासन नि [पयुं] वास्, अधिक,
आमना (कय स १११ उर १२० टी
मि १८) ।

पञ्चुवासन नि [पयुं] वास्, अधिक,
आमना (कय स १११ उर १२० टी
मि १८) ।

पञ्चुवासन नि [पयुं] वास्, अधिक,
आमना (कय स १११ उर १२० टी
मि १८) ।

पञ्चुवासन नि [पयुं] वास्, अधिक,
आमना (कय स १११ उर १२० टी
मि १८) ।

पञ्चुवासन नि [पयुं] वास्, अधिक,
आमना (कय स १११ उर १२० टी
मि १८) ।

पञ्चुवासन नि [पयुं] वास्, अधिक,
आमना (कय स १११ उर १२० टी
मि १८) ।

पञ्चुवासन नि [पयुं] वास्, अधिक,
आमना (कय स १११ उर १२० टी
मि १८) ।

पञ्चुवासन नि [पयुं] वास्, अधिक,
आमना (कय स १११ उर १२० टी
मि १८) ।

पट्टा बन्नामा किमी प्रकार का व्यभिचार
पत्र (पुन ११ अं १) । १ रैठम । ७ पाठ
घन (भा २२ अणु) । ८ रैठयो कपडा ।
२ छत का कपडा (कण्य बीर) । १
मिहसत गरी पट्ट (पुन २८ गुणा २५२) ।
१२ बसाबसु (पत्र) । १३ पट्टी कोरा
घाति पर होना बाटा बन्ना बन्नेछ
पाटा 'बहर'पुनपमलपुनकेछ सिरिबन्नाछ
किन्दि घाटने बन्नेछन् (महा विना १ १) ।
१३ कान्तिपेट (पुन २) । १४ पु
[वा] पत्र नाँव का पुत्रिया (अं १) ।
चडी टी [कुटी] टी बन्नेछ (पुन १३
१२०) । करि पु [करि] प्रमाण हसी
(गुना १०१) । कार पु [कार] ठगुनाय
नक कुलेनाका कुलाहा (पण १) । वासिना
की [वासिना] एक छिपे-मुल्ल (३५
५१) । साका की [साका] कायम बैत
मुनि के रूखे का खान (गुना २ २) । मुत्र
न [मुत्र] रैठमी घुमा (घाबन) । हस्ति
पु [हस्ति] प्रमाण हसी (गुना १०२) ।
पट्टिप [पु] [पु] पत्र नाँव का पुत्रिया
पट्टिप (गुना २०१ १११) ।
पट्टिप न [पट्टिप] १ रैठमी बन् । २
छत का बन् (पा २२ अणु) ।
पट्टिप रैठो पट्ट (बस) ।
पट्टिप न [पट्टिप] कपड, बन्ने (महा बीर)
आमा गुमा) ।
पट्टिप की [पट्टिप] पट्टणी (सिदि
११२२) ।
पट्टिप रैठो पट्ट (छा छाया १ ११) ।
पट्टिप न [पट्टिप] रैठमी बन् (बन्नि
७२) ।
पट्टिप की [पु] पट्ट, कोरी की पट्टी कन्
'हो'पिया पट्टा कान्तिपेट पट्टिप (महा
गुन १ १) ।
पट्टिप वि [पट्टिप] पट्ट पर सिद्ध बन्ना
नाँव बन्नेछ, पुत्रि पट्टिपनायमि पट्टिपनाय
पट्टिपनाय बन्नेछो पुत्रि को घाति कुटीप
विपत्ति (गुना २०१) ।
पट्टिप की [पट्टिप] १ छोटा कन्ना, बन्नी
'विपत्तिप' (गुना १ १) । २ रैठो
पट्टिप 'पट्टिप' (पत्र—अं १) ।

पट्टिप पु [पु] पट्टिप बन्नेछ-विपत्ति एक
प्रकार का हस्तिपार (पट्टि १ १ पत्र न
५४) ।
पट्टि की [पट्टी] १ बन्नीपट्टि । २ हस्तिपट्टिका
हाथ पर की पट्टी 'कन्तीपट्टिप' (विपत्ति १ १—पत्र २५) ।
पट्टिप पुन रैठो पट्टिप 'पट्टिप' (पुन १ १) ।
पट्टिप की [पु] पत्र-आमा, नाथ पुनपट्टी
में 'कन्' सिद्धिपट्टो कोलेछ ठगुनायी
पट्टिप 'विपत्ति' (गुना ११०) । रैठो
पट्टिप ।
पट्टिप न [पु] कन्तिपट्टिप नाँव पत्रा बन्
'पट्टिप' नाँव कन्तिपट्टिप (नाम) ।
पट्टि वि [पट्टि] १ पत्रपट्टी पत्रपट्ट, पट्टिप
(छाया १ १—पत्र ११) । २ हस्तिपट्टिप
१ प्रमाण पुत्रिया (बीर पत्र) ।
पट्टि वि [पट्टि] विपत्ति कन्तिपट्टि पट्टिप
बन् (बीर) ।
पट्टि न [पट्टि] १ पट्ट, कट्टी के पोछे का
भाग (छाया १ १—गुना) । २ छत ऊपर
का पत्र 'पट्टि' पट्टि 'न' (नाम) ।
बन् वि [बन्] पुनपट्टी पुनपट्टी (गुना) ।
पट्टि वि [पट्टि] विपत्ति पुत्रा पट्टा हो
बन् । २ न पत्र, पत्रा 'पट्टि' पट्टि
पट्टिप (छा १—पत्र १०२) ।
पट्टिप एक [प + स्वाप] १ प्रमाण
कपटा बन्ना । २ प्रमाण कपटा । ३
प्राप्ति कपटा । ४ प्रमाण के स्वाप कपटा ।
५ प्रमाण के । पट्टिप (३५ १०) ।
पट्टा पट्टिप (कन्) । ६ पट्टिप
(कन् गुना १२०) ।
पट्टिप रैठो पट्टिप (कन् १ ११ टी) ।
पट्टिप न [प्रमाण] १ प्रमाण कपटा ।
२ प्रमाण 'पट्टि' पट्टिप (पुन) ।
पट्टिप की [प्रमाण] १ प्रमाण कपटा ।
२ प्रमाण कपटा 'पट्टि' पट्टिप (बन् १) ।
पट्टिप वि [प्रमाण] १ प्रमाण कपटा
कपटिप (छाया १ १—पत्र ११) । २
प्राप्ति कपटा (विपत्ति १२०) ।

पट्टिप वि [प्रमाण] १ प्रमाण कपटा (पत्र
गुना) । २ प्रमाण (विपत्ति २) । ३ विपत्ति
कपटा (गुना १२, ४) । ४ प्रमाण के
स्वाप कपटा (पत्र ११) ।
पट्टिप [पु] की [प्रमाण] प्राप्ति-
पट्टिप वि [विपत्ति] प्रमाण कपटा में
विपत्ति पट्टिप प्रमाण कपटा नाँव बन् (छा
२, २ विपत्ति २) ।
पट्टिप रैठो पट्टिप । बन् पट्टिप (पा
५४) ।
पट्टिप न [प्रमाण] प्रमाण (गुना १४२) ।
पट्टिप रैठो पट्टिप । पट्टिप (३५ १०) ।
पट्टिप (वि २४१) ।
पट्टिप रैठो पट्टिप (३५ ११ गुना,
वि १ २) ।
पट्टि की रैठो पट्टिप = पट्टि (बन्ना कट्ट) । मंड
न [मंड] पट्टिप नाँव पट्टिप (३५ २) ।
पट्टिप वि [प्रमाण] विपत्ति प्रमाण कपटा
हो बन्, पट्टिप (३५ ११ बीर ८१ पत्र
गुना ७) ।
पट्टिप वि [पु] पट्टिप विपत्ति (पत्र) ।
पट्टिप वि [प्रमाण] प्रमाण कपटा
बन्नेछ (पा १४) ।
पट्टिप न [पु] कट्टिप, मंड के बन्ने पत्र
का कपटिप (३५ २१) ।
पट्टि रैठो पट्टि (बन्ना कट्ट) ।
पट्टिप पु [पट्टिप] बन् के पुन रैठो बन्ने
पर विपत्ति रैठो बन्ना बन्ना बन्ना (पत्र
१११) ।
पट्टि रैठो पट्टि । पट्टि (टी) (गन्—गुना
१४) । पट्टि (विपत्ति) । कन् पट्टिप
(वि १ २ १११) ।
पट्टि रैठो पट्टिप (कन्) ।
पट्टि एक [पट्टि] पत्रा, विपत्ति । बन्
(उप वि २१ १४४) । बन् पट्टिप
पट्टिप (भा २५५ पट्टिप पट्टि १) ।
पट्टि पट्टिप (गन्—उप १०) । ६
पट्टिप (कन्) ।
पट्टि पु [पट्टि] बन् कपटा (बीर कन्
५२, ५ ११२ भा १५) । बन् रैठो गार
(पत्र) । कुटी की [कुटी] टी, बन्ने
(३५ १, टी १) । गार पु [गार]

उपुत्तय, कपडा कुतेवापा (पण्ड १ २—
पण २०)। सुवि वि [सुवि] प्रमुप
सुवायी को प्रहल करने में सुवै बुद्धिवापा
(वीर)। मंडन पु [मण्डन] ठंडू, बक-
मंडन (वाक)। मा वि [म] कपला
बकमला (पण्ड)। वाम पु [वास]
बक में वाता वाता कुट्टन-कुट्टी पादि
मुपस्थित प्याथे (पण्ड स ३१)। मावय
पु [मावय] १ बक कपडा। २ बोटी
पहलाने का कपडा बक (नर ६, ११)। ३
बोटी बीर बुद्धि (छाया १ १—पण ११)।
पञ्चमा की [दे] प्रत्यक्षा] क्या बहुत का
विज्ञा या बोरी (वि १ १४ पाय)।

पञ्चमुप रेको पञ्चमुप (वि ११२)
पञ्चमुप्या की [पञ्चमुप] १ प्रविशन्,
प्रविशन् (वि १ ८८)। २ प्रविशन् (कुमा)।
पञ्चमुप्या की [दे] ज्वाट वपुष का विस्मा
(वि १ १४)।

पञ्चमुप रेको पञ्चमुप (पण्ड १२)।

पञ्चवर पु [व] बाबा बैबा विपुष मावि
(वि १, २२)।

पञ्चवर पु [पञ्चवर] बीर, उत्तर (ग—
मुप्य ११८)।

पञ्चममाप रेको पञ्चम = प्र + पञ्च ।

पञ्चन [पञ्चन] पाठ, विरता (छाया १
१ मायू १ १)।

पञ्चपीथ वि [प्रत्यपीथ] विरोधी प्रतिपक्षी
दीर्घ (प ४५६)।

पञ्चपीथ रेको पञ्च = पञ्च ।

पञ्चपुपिया की [पञ्चपुपिया] कोय बक,
वाम (संवीन २)।

पञ्चम रेको पञ्चम (वि १ ४—गण्ड १८८)।

पञ्चन [पञ्चन] १ सपुष्ट, संवाद, कुप
(कुमा)। २ बैन वाक्पुथी का एक ऊपरकर,
विज्ञा के समय पाल पर डका बाजा बक-
कर (पण्ड २, २—पण १४८)।

पञ्चन [वि] बीर, विरता, मही का बका
हुया एक प्रकार का बाजा जिससे मकल
हाए जाते हैं (वि १, ५ पाय)।

पञ्चप्या की [वि] पञ्चप्या बठरी पञ्च
पञ्चम] दुवपरी में 'पञ्च' 'पञ्चमी'।

'पुण्यमवपुष्पायो' (छाया १ ८)। की
'जिमा, विज्ञा (स २११) सुवा १)।

पञ्चमा की [वि] पञ्चमुप पञ्चमग बक
गुह ठंडू (वि १ १)।

पञ्चम वक [प्र + पञ्च] कपला वप
कला। कपक पञ्चममाप (पण्ड १ २)।

पञ्चम पु [पञ्चम] बाप-विरोध गपडा बोल
(वीर) खीर महा)।

पञ्चम वि [दे] पूर्ण वप हुया (स १८)।

पञ्चमि पु [पञ्चमि] बोल बकनेवापा
बोटी बोलकिया (पण्ड ४८ ८६)।

पञ्चमि की [पञ्चमि] कोय बोल (गुर
१ १११)।

पञ्चम रेको पञ्चम = पण्ड + वप । क
पञ्चममप्य (वि १४ १२)।

पञ्चम वि [पञ्चमि] विष्ने पकायन
किया हो वह माया हुया (वि ११ ११)।

पञ्चममप्य रेको पञ्चम ।

पञ्चम्या की [पञ्चमि] बोटी पञ्चमा
मला-मला (गुर १४२)।

पञ्चमा पु [पञ्चम, पञ्चम] पञ्चम ज्वा
(कय वीर)।

पञ्चमा रेको [पञ्चम] क्या ज्वा (महा
पञ्चमा) पाम हे १ २ ४ प्राय मठक)।

पञ्चमा पु [पञ्चम] १ मत्प की
एक कावि (वि १ ८—पण ८६)। २

पञ्चमा के ऊपर की पञ्चमा (वीर)। इरण
न [इरण] विजय-प्राप्ति (संवा)।

पञ्चागार न [] नौका में लफने-
वा बक (वरी ४ १ प्रारम्भ बीर वप
१११)।

पञ्चागार रेको पञ्चागार (वि १ २१२)।

पञ्चागारि वि [पर्यागार] जिस पर पयो
बाबा मया हो वह (कुमा १ ११)।

पञ्चमी की [वि] १ वीर, वरी (वि १
६)। २ नर के ऊपर की बढाई बावि की
कपली पण्ड (वक ७)।

पञ्चम रेको पञ्चम (गण्ड—मुप्य २४१)।

पञ्चि वि [पञ्चि] बकनेवापा (मुप्य १४४)।

पञ्चि य [पञ्चि] इन वषों का सुषक समय—
१ प्रम (वप १)। २ वपुर्गता (विजय
७८२)।

पञ्चि य [पञ्चि] इन वषों का सुषक समय—
१ विरोध 'पञ्चमव' 'पञ्चामुव' (मठका
पठम २ २ २)। २ विरोध विविधता
'पञ्चमनविजय' (वीर)। ३ बीसा म्याति
'पञ्चिवा' 'पञ्चिवा' (पण्ड १ १ वे १
१२)। ४ वापस पीछे 'पञ्चम' (वि १
१)। ५ गुर १ १४१)। ५ मतिमुप्य
संभुवाता 'पञ्चिवा', 'पञ्चिवा' (पण्ड २
२ गण्ड)। ६ प्रविशन् बकता 'पञ्चिवा'
(वि १२४१)। ७ फिर से 'पञ्चिवा'
'पञ्चिवा' (गण्ड १४४ दे १ ११)। ८

प्रतिनिधितान 'पञ्चम' (उप ७८ वे)।

६ प्रविशन् विपे 'पञ्चम' (मप
वप ४६)। १ प्रविशन्, प्रविशन्
'पञ्चम' (वि २ ४६)। ११ स्वमा-
'पञ्चम' (ग २१)। १२ कापी वि
व्या 'पञ्चम' (गुमा ४४२)। १३

मतिमुप्य मतिमुप्य 'पञ्चम' (वीर)। १४
वापस मुप्यता 'पञ्चम' (पण्ड १ ४,
१११)। १५ लुपता छोटाई 'पञ्चम'
(कय पण्ड १)। १६ प्रवृत्ता क्या
'पञ्चम' (वीर)। १७ मतिमुप्य,
वर्तमानता (ग ४ ४—पण्ड १८)। १८

निरपेक्ष वीर हक प्रयोग होता है, 'पञ्चम'
(पण्ड १ ४, ६) 'पञ्चमारेयम्' (मप)।

पञ्च रेको परि (वि ४ ४ ४ १६, १६,
मठ ७)।

पञ्चि वि [वि] विपक्ष, विपक्ष (वि १ १२)।

पञ्चि वि [पञ्चि] १ विपक्ष (ग ११
मायू ४, १ १)। २ विष्ने बकने की
प्रारम्भ किया हो वह 'भागवतमेश व
पञ्चि' (वपु)।

पञ्चम रेको पञ्च = पण्ड ।

पञ्चमि वि [पञ्चमि] १ मतिमुप्य।
२ उपलिया 'वपु' (विपक्ष विपक्षिणी'
(विपक्ष)।

पञ्चमि वि [वि] कर्मकर, नौकर (दे
१ १२)।

पञ्चमग वक [वपु + वप] वपुप्य
करता, पीछे जाता। पञ्चमग (वि ४
१ ७ वप)।

चन्द्रं तु [वि] मुखं ईह (दे १ २४) ।
चन्द्रा वि [प्रत्येपक] ग्रहण करनेवाला
(दे १ १) ।

चन्द्रा न [प्रतीक्षा] प्रतीक्षा बाट (मौन
१ ७८) ।

चन्द्रा न [प्रत्येपण] १ ग्रहण धारण
ता । २ उत्तराण विनिवारण 'कुम्भितपञ्चि
ग्रहणयोग्या पञ्च कस्या मङ्गिराण' (गठव)
चन्द्राया [प्रत्येपण] ग्रहण धारण
निम्न (११) ।

चन्द्राण्य [वि] [प्रतिचन्द्र] माच्छादित
हस्तः १ वक्ष हस्ता (शामा १ १—पत्र
१ पत्र) ।

चन्द्राय तु [दे] समय, काल (दे १ ११) ।
चन्द्राय देवो पञ्चिच्छा (प्रीति) ।

चन्द्रायण न [प्रतिचन्द्र] देवो पञ्चि
च्छायण (पत्र) ।

चन्द्रा श्री [प्रतीक्षा] ग्रहण धीनीक्षर
(दे १ १ छल) ।

चन्द्रायण न [प्रतिचन्द्र] माच्छादक-
नक्षत्र प्रकाशक-नक्षत्र 'हिरण्यपञ्चिच्छायाण न नो
रत्नपञ्चि चन्द्रायण' (भाषा छाया १
१—पत्र १३ टी) ।

चन्द्रायण न [प्रतिचन्द्र] चन्द्रायण
बाधण (पुत्र २) ।

चन्द्राया श्री [प्रतिचन्द्र] प्रतिचिन्म
परमार्थ (उप २२१ टी) ।

चन्द्रायामाया देवो पञ्चिच्छा = प्रति + ह्य ।
पञ्चिच्छा वि [प्रतीक्षा, प्रतीक्षित] १
गृहीत, स्वीकृत (उ ४ २४) कदा मौन गुणा
२४) । २ विरोध रूप से नाभिष्ट (मन) ।

पञ्चिच्छा देवो पञ्चिच्छा = प्रति + ह्य ।
पञ्चिच्छा श्री [वि] १ प्रतिहारि । २ विर
क्त से स्थायी हुई संधि (दे १ २१) ।

पञ्चिच्छा
पञ्चिच्छा देवो पञ्चिच्छा = प्रति + ह्य ।
पञ्चिच्छा देव

पञ्चिच्छा वि [प्रतीक्षा] प्रतीक्षा करने
वाला बाट करनेवाला (वचना ११) ।

पञ्चिच्छा वि [प्रतीक्षा] करने की बात
पुत्र की बाधा केरु कुम्भ के वक्ष के बाधार्थ
क पास उनकी धनुषादि से शास्त्र पढ़नेवाला
मुनि (पौरि १४) ।

पञ्चिच्छा वि [दे] छल छलान (दे २
१७४) ।

पञ्चिच्छा देवो पञ्चिच्छा 'चन्द्रि निपञ्चिच्छा'
(उप ७२८ टी) ।

पञ्चिच्छा श्री [प्रतीक्षा] प्रतीक्षा बाट (मौन
१ ७८) ।

पञ्चिच्छा देवो पञ्चिच्छा (वेद ७२) ।
पञ्चिच्छा पञ्च [प्रति + चक्ष्] उत्तर पश्चात् ।

पञ्चिच्छा (मन) ।
पञ्चिच्छा देवो पञ्चिच्छा = प्रति + बाण ।

पञ्चिच्छा (हृ १) ।
पञ्चिच्छाया वि [प्रतिचन्द्रा] सेव-गुण्या
करनेवाला (उप ७२८ टी) ।

पञ्चिच्छाया वि [प्रतिचन्द्र] जिसकी सेवा
गुण्या की गई हो वह (पुर ११ २४) ।

पञ्चिच्छाया पञ्च [प्रति + चक्ष्] १ सेवा
गुण्या करना निर्वाह करना निवाला । २

प्रत्येपण करना । पञ्चिच्छाया (कय) । कय
पञ्चिच्छाया (मिया १ १ उवा महा) ।

पञ्चिच्छाया तु [प्रतिचन्द्रा] १ सेवा-गुण्या ।
२ पञ्चिच्छा, 'चन्द्रिपो सिद्धि माण्डु विज
पञ्चिच्छाया' (गुणा ४७२) ।

पञ्चिच्छाया न [प्रतिचन्द्रा] ऊपर देवो
(वच १) ।

पञ्चिच्छाया देवो पञ्चिच्छाया (दे १
४१) ।

पञ्चिच्छाया श्री [प्रतिचन्द्रा] प्रतिचिन्म
प्रतिमा परमार्थ (वेद ७२) ।

पञ्चिच्छाया श्री [प्रतिचन्द्रा] १ स्व-समान
वक्ष मुक्ति । २ धर्मा (पुत्र ४) ।

पञ्चिच्छाया तु [प्रतिचन्द्रा] कार्यण आदि मोक्ष
का प्रतिपादक मोक्ष चूर्ण-विरोध (पुर ५
२ ४) ।

पञ्चिच्छा वि [प्रतिचन्द्रा] मय्यत्त निम्न बह्व
चतुर (पुर १ १३, १३ १५) ।

पञ्चिच्छाया वि [प्रतिचन्द्रा] संस्कारित (दे
१ ४२) ।

पञ्चिच्छाया वि [प्रतिचन्द्रा] जिसकी
प्रतिष्ठा की गई हो वह (पञ्च १४) ।

पञ्चिच्छा देवो पञ्चिच्छा (भाट—मासदी ७) ।
पञ्चिच्छा पञ्च [प्रति + स्थापय] प्रतिष्ठित
करण । पञ्चिच्छा (वि २२ १३१) ।

पञ्चिच्छाया देवो पञ्चिच्छा (भाट—वेदी
११२) ।

पञ्चिच्छाया (दी) देवो पञ्चिच्छाया (प्रति
१८०) ।

पञ्चिच्छाया देवो पञ्चिच्छा (पञ्च १ २२) ।
पञ्चिच्छाया न [प्रतिचन्द्रा] हर वषह (मौन
४) ।

पञ्चिच्छा देवो पञ्चिच्छा (वि २२ १३) ।
पञ्चिच्छाया वि [प्रतिचन्द्रा] मया प्रथम, पुरम
पञ्चिच्छायाया विरिद्धाया (विज २५) ।

पञ्चिच्छायाया वि [वि] छल में पहनने का
वक्ष (दे १ १५) ।

पञ्चिच्छायाया पञ्च [प्रतिचन्द्रा + पञ्च] पीछे
की ओर पीछे बाधण करता । पञ्चिच्छाया
(प्रीति) । वह पञ्चिच्छायाया, पञ्चिच्छायाया
माय (दे १३ ७३, भाट—मासदी २३) ।

पञ्चिच्छायाया पञ्चिच्छाया (प्रीति) ।
पञ्चिच्छायाया वि [प्रतिचन्द्रा] पीछे की ओर
पञ्चिच्छायाया [गुणा (भाट ६४ क मिया १५,
उवा वे १ २५) पत्रि १२४) ।

पञ्चिच्छायाया वि [प्रतिचन्द्रा] उमान,
गुणा (पत्र १०) ।

पञ्चिच्छायाया पञ्च [प्रतिचन्द्रा + पञ्च]
बाहर निकलना । पञ्चिच्छायाया (उवा) ।
पञ्च पञ्चिच्छायाया (उवा) ।

पञ्चिच्छायाया पञ्च [प्रतिचन्द्रा + गम]
बाहर निकलना । पञ्चिच्छायाया (उवा) ।
पञ्च पञ्चिच्छायाया (उवा) ।

पञ्चिच्छायाया पञ्च [प्रतिचन्द्रा + पापय]
मर्त्य करना । पञ्चिच्छायाया (शामा १
७—पत्र ११०) ।

पञ्चिच्छायाया वि [प्रतिचन्द्रा] १ छल गुण,
वचन । २ विरिद्धायाया की प्रतिष्ठा का
वक्ष करने के लिए प्रतिष्ठा की तरफ से
मनुष्य उमान है—प्रतिष्ठ (भाट ४ १) ।

पञ्चिच्छायाया देवो पञ्चिच्छायाया = प्रतिचि +
ह्य । वह पञ्चिच्छायाया (भाट, उवा
२४) ।

पञ्चिच्छायाया देवो पञ्चिच्छायाया = प्रतिचि +
ह्य । वह पञ्चिच्छायाया (भाट, उवा
२४) ।

पञ्चिच्छायाया वि [प्रतिचन्द्रा] प्रिष्ठ, हैप
हुक (पञ्च १ १—पत्र ७) ।

कतो पुइलेहि बिहा

बेसा पडिम्य संपद,
(बका १११) ।

पडियाइकल एक [अया + कया] अया
करना । पडियाइकल (वि १११) ।

पडियाइकल वि [अया + कया] अया
पडिअ, बीडा हुमा (छ १ १ भाग बका
बका विना १ १; बीग) ।

पडियाअन न [दे पर्याणक] पर्याण के
बीके बिना बाटा कय बापि का एक उपकरण
(छाया १ १—पत्र २३) ।

पडियाण्ड पु [अया + न] विरोध मान्य
प्रभु धाहा, बहुत धान (बीग) ।

पडियाणम न [दे पत्रानक, पयाणक]
पर्याण के बीके रखा बाटा बका भापि का
एक बुझवाये का कणकण (छाया १
१७—पत्र २३२ टी) ।

पडिवारणा बी [प्रतिवारणा] निषेध (बका
१७ ३४) ।

पडियायूर एक [दे] बिज्जा पुस्ता होना ।
ह- 'पडियायूरयय' न कयाहि पाय
कापि' (बाक २३, १४) ।

पडि वि [प्रति] निषेध (हुमा) ।

पडिअ बेको पडिअ (ता १३ भा वे ७
१६) ।

पडिअजि वि [दे] कन हटा हुमा (वि
१, १२) ।

पडिअकल वि [प्रतिअकल] निषेध रखा
बी गई हो बह (अधि) ।

पडिअ पु [प्रतिअ] प्रतिअ प्रतिअ
(बका भा ३३) सुर १ २४४) ।

पडिअय पु [प्रतिअ] लाली रकपन;
'उमहूर रकपनविअयेदुमिअनरकपनविअय' ।
पाछीनरकपनर ब प्रतिअकलय इना बय्ये'
(बका) ।

पडिअगम [दे] बेको पडिअजिअ (वट) ।
पडिअक [प्रति + क] प्रतिअक करना,
प्रतिअक करना । बह पडिअजिअ (वि १२,
६; वि १७३) ।

पडिअय [क] [प्रति + अय] १ रोचना
पडिअय घटकरना । २ ब्याह करना । पडि

अय (वि ८ १६) । बह, पडिअय (वि
११ ३) ।

पडिअक वि [प्रतिअक] रोका हुमा, घटकरना
हुमा (हुमा ८३, बका ३) ।

पडिअक [वि] [प्रतिअक] १ अय सुभर,
पडिअक [बाद, मनेहुट] (सम ११७ उवा
बीग) । २ कपना, प्रयत्न कपनाला घट
भाउतिबता (बीग) । ३ अयापण कपनाला ।

४ सुभर कपनाला (बीग ३) । ५ योग,
अभि (सम ८७ भा १३; सम ८, १) ।

६ अहय समान (गामा १ १—पत्र ११) ।
७ समान कपनाला अहय भाकारनाला (बत
२६ ४२) । ८ न. प्रतिअक प्रतिअक

'कययि विअकय कययि वि अयि वल
पडिअक लिअय' (सुर ११ २३ भा राय) ।

९ समान कय समान भाउति 'सुभरअक-
कारि पायड बिअइअसुरा' (हुमा २६ भा)

१ पुं अह-विरोध नूत-निकाय का अह
बिना का अह (छ २ ३—पत्र ८३) । ११

विना का एक मेह (बका १) ।

पडिअसि वि [प्रतिअसि] रमणीय
सुभर (भाका २ ४ २ १) ।

पडिअय पुन [प्रतिअय] प्रतिअय
प्रतिअ 'विअिअ पडिअय यदेअय' (भाक
३६) ।

पडिअय पुन [प्रतिअय] प्रतिअय
प्रतिअ 'विअिअ पडिअय यदेअय' (भाक
३६) ।

पडिअयय बी [प्रतिअयय] १ समान
कय अहय या अहय । २ समान वेप
भाण (वत २८ १) ।

पडिअय बी [प्रतिअय] एक बुझकर पुन
बी अहय का नाम (सम १३) ।

पडिअय पु [प्रतिअय] पुनरापण (सुर
३३) ।

पडिअय पु [प्रतिअय] अकाट (बका
भा ३१४) ।

पडिअयि वि [प्रतिअयि] रोक्नेबता
(बका) ।

पडिअय एक [प्रति + अय] प्राप्त करना ।
अह पडिअय (सम १ १३) ।

पडिअय पु [प्रतिअय] प्राप्त काय (सम
२ ३) ।

पडिअय वि [प्रतिअय] लय हुमा अय
(वि २ ८६) ।

पडिअय न [दे] बलीक कोट-विरोध-अह
मुतिना-अय (वि १ ११) ।

पडिअय एक [प्रति + अय] प्राप्त करना ।
पडिअय (वत १ ७) । अह पडिअय
(सम १ १३ २) ।

पडिअय [क] [प्रति + अय] अय अय
पडिअय [छा] बापि को हान देना । पडि
अय (कात) । बह पडिअयमेमाण

(छाया १ ३ भा उवा) । अह पडिअय
मिना (सम ८ ३) ।

पडिअय न [प्रतिअयन] बाग देना
(रवा) ।

पडिअयि वि [प्रतिअयि] मिना हुमा
'अय संत बुवारि पडिअयि' (वि १४) ।

पडिअयि वि [प्रतिअयि] अय अय लीन
(बकी ३३) ।

पडिअय एक [प्रति + अय] १ निरीअ
करना देना । २ विचार करना । पडिअय
अय कय भा 'अये बाये पडिअय अय

अये काय य अय' (सम १ ७ २) ।
अह अय बाये पडिअय अय' (सम १
७ २) पडिअय (भा) । ३ पडि
अय, पडिअय (अय) । ४ पडि
अय, पडिअय (अय) । ५ पडि
अय (अय) ।

पडिअय पु [प्रतिअय] बी पडिअय
(बका, २६६) ।

पडिअय बी पडिअय (अय) ।

पडिअय न [प्रतिअयन] निरीअ (अय
३ भा अह) ।

पडिअय बी पडिअय (वत २६,
१) ।

पडिअय बी [प्रतिअय] निरीअ
निकाय (अय) ।

पडिअय बी [प्रतिअय] छा] ना एक
अय (अय) (वत ११) ।

पडिअय वि [प्रतिअय] निरीअ
अय (अय) ।

पडिअय बी [प्रतिअय] निरीअ
अय (अय) ।

पडिअय बी [प्रतिअय] निरीअ
अय (अय) ।

पडिअय वि [प्रतिअय] निरीअ
अय (अय) ।

पडिअय वि [प्रतिअय] निरीअ
अय (अय) ।

पडिअय वि [प्रतिअय] निरीअ
अय (अय) ।

पडबोधिज्ज वैवो पडिवाहिय (अमि २६) ।
 पडिबोह सङ्ग [प्रति + बोधय्] १ कम्मला ।
 २ बोध देना सम्बन्धना ज्ञान प्राप्त कम्मा ।
 पडिबोहेइ (अप्य म्हा) । कम्प, पडि
 बोहिज्ज (अमि २६) । सङ्ग पडिबोहिज्ज
 (गाठ—मल्लो ११६) । हेइ पडिबोहिज्ज
 (महा) । हे पडिबोहिपाय (अ ७ ७) ।
 पडिबाह पुं [प्रतिबोध] १ बोध सम्पन्न ।
 २ जलपि वाक्पणा (अट्ठा सि १७१) ।
 पडिबाग्रा वि [प्रतिबाधक] १ बोध धेने-
 वाला । २ कम्मपेत्ता (विदे २४० टी) ।
 पडिबाहया न [प्रतिबोधन] वैवो पडि
 बाहू = प्रतिबोध (अमि स ७ ५) ।
 पडिबाहि वि [प्रतिबाधिय] प्रतिबोध प्राप्त
 कम्मपेत्ता (आभा २ १ ८) ।
 पडिबोहिय वि [प्रतिबोधित] विरक्तो प्रति-
 बोध किया गया हो वह (आभा १ १ ;
 अमि) ।
 पडिभंग पुं [प्रतिभंग] संघ विगच्छ (सि ३
 ११) ।
 पडिभज्ज चक [प्रति + भज्] चट्टला
 ट्टणा । हेइ पडिभज्जिउं (अमि ४) ।
 पडिभङ्ग न [प्रतिभङ्ग] एक बलु को
 बेचकर उसके बजने में लगी बाली बीज
 (अ २ १ गुर ६ १३) ।
 पडिभंस चक [प्रति + भ्र क्षप्] भ्रष्ट करना
 नष्ट करना 'पडिभंसो पडिभंस' (अ १६१) ।
 पडिभग्य वि [प्रतिभग्य] भासा हुष्य
 पलायित (मोय २११) ।
 पडिभह पुं [प्रतिभट] प्रतिपत्ती मोक्षा (सि
 ११ ७२ आण २६ अमि) ।
 पडिभज्ज चक [प्रति + भज्] उत्तर देना
 जवाब देना । पडिभज्ज (अट्ठा अण १
 २१३) पडिभज्जि (महावि ४) ।
 पडिभगिय वि [प्रतिभगिय] प्रत्युत्तरण
 जितना उत्तर दिया गया हो वह (अट्ठा गुण
 ६) ।
 पडिभज्जि वि [प्रतिभज्जि] १ निपटार
 (अमि १५) । २ न. प्रत्युत्तर, निपटार
 (अमि ६) ।
 पडिभज्ज चक [प्रति + भज्] कृपया
 दर्शन करना । अट्ठा अण १ गुणपणिक अमि

पडि पडिभमिय पुण्डरीकोर्ध्वं वर्णितं (अमि) ।
 पडिभमिय वि [प्रतिभ्राम्य परिभ्राम्य]
 घूमा हुष्य (अमि) ।
 पडिभमय न [प्रतिभमय] अम, अर (पठम ७३
 १२) ।
 पडिभा चक [प्रतिभा] मासुम होना । पडि
 भावि (ही) (गाठ—उला ७) ।
 पडिभाग पुं [प्रतिभाग] १ संघ, भाग
 (अम २३ ७) । २ प्रतिभिम (अमि) ।
 पडिभास चक [प्रति + भास] मासुम
 होना । पडिभसवि (ही) (गाठ—मुण्ड
 १४१) ।
 पडिभास चक [प्रति + भास] १ उत्तर
 देना । २ जेतना, कम्मा अन्ते पडिभा
 सीध (सुप १ १ १ ६) ।
 पडिभिम्य वि [प्रतिभिम्य] संघ, संलग्न
 (सि ४ २) ।
 पडिभिम्य वि [प्रतिभिम्य] मेर-भ्रातृ
 (अम—आभा १६ वैद १४२) ।
 पडिभुम्य पुं [प्रतिभुम्य] प्रतिभो
 दुर्गम—वैद-अष्ट (अमि २७) ।
 पडिभु पुं [प्रतिभु] भागिकार, बमाल
 कम्मपेत्ता मनीषिता (गाठ—वैद ७२) ।
 पडिभ्रह पुं [प्रतिभ्रह] अलम्बन किया
 'पडिभ्रो पचाय्' (अमि) ।
 पडिभोइ वि [प्रतिभोइ] पडिबोध करने-
 वाला 'अकावपडिभोइ' (आभा २ १
 १ १ ४ ३) ।
 पडिभ वि [प्रतिभ] अलम्बन हुष्य (मोइ
 १३) ।
 पडिभ वैवो पडिभा । हुइ वि [प्रतिभवि]
 १ कम्मोलन में अलम्बना । २ भिम्य विदेय
 में निवृत्त (अमि २, १—अमि १ अ ३,
 १—अम २६१) ।
 पडिभं चक [प्रति + भज्] उत्तर
 देना । पडिभं (अमि १७, ६) ।
 पडिभस पुं [प्रतिभस] प्रतिपत्ती चक
 (अमि) ।
 पडिभा औ [प्रतिभा] १ प्रति प्रतिभिम्य
 विग्राहिकारकेले पडिभू (अमि १ ;
 भा ना १ ११४) । २ वाक्पेत्ता । ३
 दैन-साधक नियम-विदेय (अमि २ १ ;

अम १६, अ २, १ ३ १) । 'गिइ न
 [गिइ] भवि (सि १२) । वैवो पडिभ' ।
 पडिभाप न [प्रतिभाप] किल्ले पुण्डरी पावि
 का टीक किया जाता है वह रती माया
 भावि परिमत्ता (अमि) ।
 पडिभाप न [प्रतिभाप] प्रतिभा, प्रतिभिम्य
 (वैद ७३) ।
 पडिभि [प्रति + भा] १ टीक
 पडिभिम्य करता मत करता । २ विदेय
 करना । कर्म पडिभिम्य (अमि) । कम्प
 पडिभिम्यमाज (अमि) ।
 पडिभु चक [प्रति + भु] अलम्बना ।
 हेइ पडिभुचिठे (सि १४ २) ।
 पडिभुअ्या औ [प्रतिभुअ्या] निवेय
 निवारण (अमि १) ।
 पडिभु वि [प्रतिभु] छोड़ा हुष्य (सि ३,
 १२) ।
 पडिभोअ्या औ [प्रतिभोअ्या] कुत्तर
 (सि १ ४१) ।
 पडिभोअ्या न [प्रतिभोअ्या] कुत्तर (अ
 ४१) ।
 पडिभोअ्या वि [प्रतिभोअ्या] कुत्तर करने
 वाला (अमि) ।
 पडिभोअ्या वैवो पडिभोअ्या (मीन) ।
 पडिभ वैवो पडिभ (अमि) ।
 पडिभ चक [प्रतिभ] पुण्डरीक-विदेय,
 टीक पुनी विमिषाहो ईकै पडिभ
 कम्मपेत्ता न दमगुणि कम्मपु (महा) ।
 पडिभमाय न [प्रतिभामाय] अमहा,
 अमर (अमि १ ११) ।
 पडिभ वैवो पडिभ = प्रति + अ ।
 पडिभय न [प्रतिभय] मोक्ष, अमर
 (सि ११६) ।
 पडिभरि वि [प्रतिभरि] वैदित देना
 किया हुष्य (मोइ १ ३) ।
 पडिभा औ [प्रतिभा] १ अहंम 'प्रतिभम-
 विमत्ता' (अमि आभा) । २ पडिभा (अ ३
 २—अम ११४) ।
 पडिभा औ [प्रतिभा] अम-विदेय
 'प्रतिभम' न गुणता
 बहुधा अहंम कोत्ता विदेय ।

कतो पुरछेहि बिछा

बैसा पडिअस संपडइ,
(बसा ११५)।पडियाइकस सक [प्रसा + स्या] व्याप
कला। पडियाइकस (वि ११५)।पडियाइकियस वि [प्रसा + स्या] व्यक्त
परिच्छद, बोझा हुआ (अ २, १ सग जना
कस बिचा १ १; बीर)।पडियाणस न [वि पयाण] पर्वण के
हीने दिया बाधा करने धारि का एक उपकरण
(छाया १ १७—पत्र २१)।पडियाणदं पुं [प्रयान्त] स्त्रीय धानस,
प्रभुत धानस, बहुत धानर (बीर)।पडियाणय न [वि पटानक, पयाणक]
पर्वण के हीने रखा बाधा न करने धारि का
एक उपकरण का एककरण (छाया १
१७—पत्र २१२ छि)।पडिवारणा की [प्रतिवारणा] निरोध (पत्रा
१ १४)।पडियासूर सक [वि] चिह्नता उस्ता होना।
इ- 'पडियासूरेयस्य न कयाइहि पत्र-
बाण' (भाक २३, १४)।

पडिरि [प्रति] गिलेताता (हुमा)।

पडिरस बेको पडिरि (पत्र ११ का छे ७
१२)।पडिरिजि वि [वि] लज हटा हुआ (वि
१, १२)।पडिरिजि वि [प्रति] विजयी रसा
की गई ही रह (अभि)।पडिरि पुं [प्रति] प्रतिष्ठा, प्रतिष्ठा
(नरक या १३, मुर १ २४४)।पडिरि पुं [प्रति] काली रक्षण-
'कन्याइर बयपडिरिपेटुमिअरठपडिरिप'।
बाणोवरठनर न कलिहउवसइ इमा कय्य'।
(नरक)।

पडिरिगम [वि] बेको पडिरिजि (पत्र)।

पडिरि सक [प्रति + क] प्रतिष्ठा करना,
प्रतिष्ठा करना। नरक पडिरिअ (वि १२,
६ वि ४०१)।पडिरि सक [प्रति + क] १ रोकना
पडिरि सक [प्रति + क] २ ब्यात करना। पडि-बीर (वि ४ १२)। नरक, पडिरिपेट (वि
११ २)।पडिरि वि [प्रति] रोका हुआ, मटकया
हुआ (मुपा २३, बसा २)।पडिरि वि [प्रति] १ रम्य सुन्दर,
पडिरि २ नरक, मनेहल (सम ११७ बसा;
भीर)। २ कन्या, प्रशस्त लयला वाद्य

भाषितवासा (भीर)। ३ प्रसाधारण कन्याता।

४ सुपन कन्याता (भीर ३)। ५ वाय,
अवि (स ४७ सम ११ बस ६ १)।

६ सहाय सभात (छाया १ ६—पत्र ११)।

७ समान कन्याता सहाय भाषितवासा (उत
२६ ४२)। ८ न. प्रतिविम्ब प्रतिबुद्धि-'कन्यावि विच्छस्य कन्या वि प्रथम वस्त
पटिर्न मिच्छ' (मुर ११ २१८ छाय)।९ समान कन्या समान भाषित 'मुमुपडिरि-
नारि पासइ विन्याइरमुबा' (मुपा २१८)।१० पुं सहायिनेय मुनिकन्या का उत्तर
दिना का इन्द्र (अ २, ३—पत्र ४३)। ११

विषय का एक मेर (बस १)।

पडिरिपि वि [प्रति] पियं [पि] पलीय
सुन्दर (भासा २ ४ २ १)।पडिरिपु वि [प्रति] प्रतिविम्ब प्रतिविम्ब
प्रतिभा 'डिरिपि पडिरिपुया वरेकन्या' (भासा
४१)।पडिरिपु वि [प्रति] प्रतिपणता १ समा
नरक, सहायता या सहाय। २ समान वेप

बाण (उत २६ १)।

पडिरिपु की [प्रति] एक मुमकर पुरस
की पली का नाम (बस १३)।पडिरिपु पुं [प्रति] पुनरोपण (पुन
२३)।पडिरिपु पुं [प्रति] रकाबट (नरक-
या ७२४)।पडिरिपि वि [प्रति] प्रतिविम्ब १ ठेकना
(नरक)।पडिरि सक [प्रति + क] प्राप्त करना।
उत पडिरिपि (पुन १ ११)।पडिरि सक [प्रति] प्रतिविम्ब १ प्रति
२ ३)।पडिरि वि [प्रति] कन्या हुआ सम्बन्ध
(वि ६, ४९)।पडिरिपु न [वि] कन्या कीट-निरोध-मुन
मुनिका-स्तुप (वि १ ११)।पडिरि सक [प्रति + क] प्राप्त करना।
पडिरिपु (उत १ ७)। उत पडिरिपु

(पुन १ ११ २)।

पडिरि सक [प्रति + क] सम्बन्ध सम्बन्ध]
पडिरिपु १ साधु धारि को दान देना। पडि-नरक (नरक)। नरक पडिरिपुसभाण
(छाया १ १६ मक उमा)। उत पडिरि

मिचा (नरक २)।

पडिरिपु न [प्रति] प्रतिविम्ब १ बान देना
(रसा)।पडिरिपु वि [प्रति] प्रतिविम्ब १ सिखा हुआ
'धर्म मते सुनारि पडिरिपि' (वि १४)।पडिरिपु वि [प्रति] प्रतिविम्ब १ धर्म का
(नरक ११)।पडिरिपु सक [प्रति + क] १ निरीक्षण
करना देना। २ विचार करना। पडिरिपुउत कन्या (पत्र)। पडिरिपु बाण पडिरिपु सार्य
एक काण्ड न धर्म (पत्र १ ७ २)।उत मुपडि बाण पडिरिपु सार्य (पुन १
७ १२)। पडिरिपु (पत्र)। उत पडिलोहिया, पडिरिपु (कन्या)। उत पडि
लोहियस्य (पत्र ४ कन्या)।पडिरिपु पुं [प्रति] बेको पडिरिपु
(नरक, २१५)।

पडिरिपु बेको पडिरिपु (पत्र)।

पडिरिपु न [प्रति] निरीक्षण (पत्र
१ मा मते)।पडिरिपु न [प्रति] निरीक्षण (पत्र
१ मा मते)।पडिरिपु की [प्रति] निरीक्षण (पत्र
१ मा मते)।पडिरिपु वि [प्रति] निरीक्षण (पत्र
१ मा मते)।पडिरिपु की [प्रति] निरीक्षण (पत्र
१ मा मते)।पडिरिपु वि [प्रति] निरीक्षण (पत्र
१ मा मते)।

पहिसिद्ध नि [दि] १ शीत रूप हुआ । २ मन प्रिय (दि १ ७१) ।

पहिसिद्ध नि [प्रतिपिद्ध] निपिद्ध, निवारित (पाम वष घोष १ दी घस) ।

पहिसिद्ध की [दि] प्रतिस्पर्ध (वष) ।

पहिसिद्ध की [प्रतिपिद्ध] १ अनुस्य सिद्ध । २ प्रतिपुन सिद्ध (दि १ ४४, वष) ।

पहिसिद्ध केयो पहिष्पद्धि (संति १६) ।

पहिसिद्धेग दु [प्रतिश्लोक] श्लोक के उत्तर में कहा गया श्लोक (सम्पत् १४५) ।

पहिसिद्धियय दु [प्रतिस्पर्धक] एक स्तन का विरोधी स्तन स्तन का प्रतिपुन स्तन (कण) ।

पहिसिद्धि स [न] [प्रतिशीर्षक] १ शिरो पहिसिद्धि २ केतुन पक्षी (कण) । २ शिर के प्रतिपक्ष शिर, विद्या (पाय) धारि का बनाया हुआ शिर (वष १ २—यज १) ।

पहिसिद्ध दु [प्रतिपिद्ध] १ ऐतत्त बर्ण के एक भारी मुसकर (सम्प १३१) । २ मरुतयेन में उत्पन्न एक मुसकर पुत्र का नाम (पञ्च १ ३) ।

पहिसिद्ध स [प्रति + भू] १ प्रतिज्ञा करना । २ स्वीकार करना । पश्चिमुद्ध, पश्चिमुद्ध (भीत नय घग) । बहु पहिसुलमाण (वष १ नि १) । संक्षु पहिसुगिता पहिसुगेता (पाम ४ कण) । हे पहिसुगेताप (नि १७८) ।

पहिसुगय न [प्रतिपयय] शरीकार (उज ४२१) ।

पहिसुगय की न [प्रतिपयय] १ युगला पुनर उगा जवाहरेना प्रत्युद्ध (वष २) । की ला (वष २) । २ मरुत (वषा १२ १३) ।

पहिसुगय की [प्रतिपयय] १ शरीकार, स्वीकार । २ युक्ति-विद्या का एक दोन पायावर्ध-वीरवारी विद्या माने पर बनवा शीकार और अनुवीरन (वर्ष १) ।

पहिसुगय नि [प्रतिपयय] गानी रिक्त, रूप 'नय निरस निवारिगुणा' (अ १ दी—यज १६) ।

पहिसुगय नि [दि] प्रतिपुन (दि १ १) ।

पहिसुद्ध नि [परिगुद्ध] मयत्त गुड (विष ८ ७) ।

पहिसुय नि [प्रतिभुत] १ स्वीकृत शरीरक (उज ५ १५४) । २ न. शरीकार, स्वीकार (वष २९) । केयो पहिसुय ।

पहिसुय केयो पहिसुय १ प्रतिपुन (वष १ १—यज १८) ।

पहिसुय की [प्रतिपुन] प्रयय-विरोध एक प्रकार की सेवा (अ १ दी—यज ४४४) ।

पहिसुद्ध दु [प्रतिपुन] प्रतिपली बोद्धा (शान) ।

पहिसुय दु [प्रतिपुन] युवतियों की एक मेणी मयत्त-कार पर रखेनाला बाधुव (वष १) ।

पहिसु नि [दि] प्रतिपुन (दि १ १६ मवि) ।

पहिसु दु [प्रतिपुन] सुर्व के सामने सेवा बना उत्ताग-विपुन द्वितीय सुर्व (प्रपु १२) ।

पहिसु दु [प्रतिपुन] श्व-युगु (यज) ।

पहिसिद्ध की [प्रतिपयय] श्व-युगु (यज ११ ११ नि १) ।

पहिसिद्ध दु [प्रतिपयय] तब के दीर्घ ना पाम (यज १४४) ।

पहिसिद्ध स [प्रति + सेय] १ प्रतिपुन सेवा करना निपिद्ध बन्धु की सेवा करना । २ छुन करना । ३ सेवा करना । पश्चिक्क, पश्चिक्क, पश्चिक्क (कस वष १ छन) । बहु पहिसिद्ध, पहिसिद्धमाण (वष १ सम्प १६, नि १७) पश्चिक्क-मरुती पश्चिक्क पश्चिक्क पश्चिक्क (यज) । ४ पहिसिद्धियक (वष १) ।

पहिसिद्ध केयो पहिसिद्ध (निपु १) ।

पहिसिद्ध न [प्रतिपयय] निपिद्ध बन्धु का मयत्त (कस) ।

पहिसिद्ध की [प्रतिपयय] ऊपर केयो (सम्प १३, ७ उज घोष २) ।

पहिसिद्ध नि [प्रतिपयय] प्रतिपुन सेवा करनेवाला निपिद्ध बन्धु का सेवा करनेवाला (सम्प १३, ७) ।

पहिसिद्ध की [प्रतिपयय] १ निपिद्ध बन्धु का धारित (यज ८ १) । २ सेवा (यज १२) ।

पहिसिद्ध नि [प्रतिपयय] शास्त्र-प्रतिपिद्ध बन्धु का सेवा करनेवाला (वषा पञ्च ३ २८) ।

पहिसिद्ध नि [प्रतिपयय] निपिद्ध बन्धु का धारित किया गया हो वह (नय-भीत) ।

पहिसिद्ध नि [प्रतिपयय] प्रतिपिद्ध बन्धु की सेवा करनेवाला (अ ७) ।

पहिसिद्ध स [प्रति + सिध] निपेय करना निवारण करना । ४ पहिसिद्ध-अय्य (सम्प) ।

पहिसिद्ध दु [प्रतिपयय] निपेय निवारण रोके (यज १ मा वषा ४) ।

पहिसिद्ध नि [प्रतिपयय] निपेय-कटा (वर्ष ४ ११२) ।

पहिसिद्ध न [प्रतिपयय] ऊपर केयो (निवे २७१ मा २७) ।

पहिसिद्ध नि [प्रतिपयय] बितका प्रतिपेय किया गया हो वह निवारित (विषा १ ३) ।

पहिसिद्ध-यज केयो पहिसिद्ध = प्रति + सिध । पहिसिद्ध दु [प्रतिपयय] प्रतिपुन पहिसिद्ध प्रयय सम्यक् (अ ४ ४ १२ १८ वा २२२ नि ११) ।

पहिसिद्ध नि [दि] प्रतिपुन (वष) ।

पहिसिद्ध केयो पहिसिद्ध (नय—युद्ध १८८) ।

पहिसिद्ध नि [प्रतिपयय] परिपय (नय—युद्ध १२१) ।

पहिसिद्ध दु [प्रतिपयय] श्व हाथियों की छुने का स्थान ज्ञापय (यज ८७ वा ४ २७१ छ १८७) ।

पहिसिद्ध केयो पहिसिद्ध (वषा ८ ४६) ।

पहिसिद्ध नि [प्रति + भायय] १ प्रतिज्ञा करना । २ स्वीकार करना । बहु पहि श्मावयय (नय—वैशी १८) ।

पहिसिद्ध नि [प्रतिपयय] मरुतेना स्वप्न-मरुता (यज) ।

पहिसिद्ध स [प्रति + भू] १ युगला २ शरीकार करना । पश्चिमुद्धि (यज २ १) । पश्चिमुद्धि (यज १४ १४) ।

पहिसिद्ध नि [प्रतिपयय] प्रतिपुन । २ स्वीकृत (यज ४ १) । केयो पहिसिद्ध ।

बाठ (अ ४ २) 'होति य पञ्चमणिपाठ
सुमि वंशजिमा आहण' (हसि १)।

पहड़ न [रे] १ कड़ फिडर, छोटी बाड़ी। २
रि निपण्डित (रे १ ८)।

पहुड़कसि नि [रे] छिखल देव (रे १ १५)।

पहुड़पी की [रे] बरनिका परवा (रे १
२२)।

पहड़ रेको पहुड़ह। पहुड़ह (रे ४ १४४
१)।

पहोअ नि [रे] बाल लडू छोटा (रे १ २)।

पहोअयस नि [प्रत्ययस्य] धातुपाठि
कातु 'महुनिहकामनपवतपयोचलने' (उवा)।

पहोवार एक [प्रत्युप + वारय] प्रतिद्वय
उपचार करता। पहोवारि पहोमारि (मग
१३—पग १७२)। पहोमारि (मग १३—
पग १७२)। पहोमारि (पि १२२)। कड़

पहोअ (१) या रिखमाण पहोमारिग
माय (पि १२३ मग १३—पग १७२)।

पहोवार पु [रे] लकण (पि २८)।

पहोवार पु [प्रत्युपचार] प्रतिद्वय उपचार
(मग १३—पग १७२)।

पहोवार पु [प्रत्युपचार] १ मगठण। २
मगिर्माका 'मगठस बासल शेरिख धावार
बावरहोयारे होला' (मग १ ७—पग २७१
४ १—पग ३ २)।

पहोवार पु [पहावनार] फिदी बलु का
पर्वों में बिहार के लिए मगठण (अ ४
१—पग १५५)।

पहोवार पु [प्रत्युपचार] कनकार का कनकार
(पग)।

पहोवार पु [रे] १ लणपी। २ परिदर,
'पासल पहोवार' (मग १४२)।

पहोअ पु [पहोअ] लता विधेय परलस
का नाव (पण १—पग १२)।

पहोअ न [रे] बर का पीछा धातु (रे
१ १२ ग १११ कड़ २२५)।

पहु नि [रे] बरन छेरे (रे १ १)।

पहुं न पु [रे] फिडिडा पहोअ की पुत्र (रे
१ २)।

पहुंपी की [रे] नैल 'पहुंपीनार' (मग
५७)।

पहुंपी की [रे] १ बहल दुधगली। २
दोहोपली (रे १ ७)।

पहुय पु [रे] सैवा पाड़ा पुनरुपे में
'पारो' 'सो बेर हयो बरसो पहुयपिछण'।

पहुय की [रे] बरण-पाठ पाठ-प्रहार (रे
१ ८)।

पहुस नि [रे] सुसंमित मन्थी तरह से
संमित (रे १ १)।

पहुविअ नि [रे] समापित समाप्त कयमा
हुय (पग)।

पहुिया की [रे] १ छोटी सैव बाड़ी। २
छोटी पी बहिमा (पिपा १ २—पग २९)।

१ प्रथमप्रयुता की। ४ लव-प्रयुता मशिपी
(मग १)। पहुी की [रे] प्रथम-प्रयुता (रे
१ १)।

पहुआ की [रे] बरण-पाठ पाठ-प्रहार
(रे १ ८)।

पहुह एक [सुभ] सुभ होला। पहुह
ह (रे ४ १४४ कुमा)।

पहु एक [मह] १ पकम धम्यात करता।
२ बलता कलता। पहुह (रे १ १२४
२११)। कर्न पहोअ, पडिअ (रे १
११)। बह पहोठ (गुर १ १)।

कड़ पहिअर पहिअमाण (मुग ११७)
ज २१ टी)। छंड, पहिआ (रे ४
२७१ पड़) पडिअ पहिअण (मौ) (रे
४ २७१) पडि (मग) (पिग)। हेह,

पडिठ (पा २ कुमा)। छ पडिअण
पहोअण (पंथ १) बला १)। प्रयो. पहाअ
(कुम १८२)।

पहु पु [पहु] काळीय बेश-किये (हक)।

पहा नि [पाठक] पकलाला (बण)।

पहा न [पाठन] पाठ, धम्यात (मिरे
११५७ कण्य)।

पहम नि [प्रथम] १ पहला भाव (रे १
३३, कण्य उवा मग कुमा, माधु ४८
१८)। २ प्रथम लता (रे)। ३ प्रथम सुभय
(बण)। करण न [करण] धातु का
परिणाम-किये (पंथा १)। 'कसाय पु
[कसाय] कसाय-किये मल्लजुबली
बलाय (मण्य)। हुजि, ठाजि नि
[रुथानि] मल्लजुबली-मुथि, धम्यात
(पंथा १२)। पाठस पु [पाठय]
धातु माध (मिह १)। समोसरण न

[समसरण] बर्पा-कल 'विस्मयोरछण'
उपुअर वं पहुच बासाबाओमहो पहमसमो

छण भरखर' (मिह १)। सरय पु
[सरय] मार्गशीर्ष मास (मग १३)।

सुरा की [सुरा] नया शक्-छण (रे)।

पहमा की [प्रथम] १ प्रथम तिथि पकमा
(मग २२)। २ ध्याकरण-प्रसिद्ध पहोपी
मिर्माका 'छिहरे पहमा होर' (मण्य)।

पहमासिआ की [दे प्रथमासिआ] प्रथम
मोख (मोख ४७ भा; कर्न १)।

पडमिअ } नि [प्रथम] पहला भाव
पहमिस्तुअ } (मग भा २८० मुग २७ पि
पहमिस्तुअ } ४४२: ५२३: किये १२२९

पडमुअण } (गमा १ १—पग १४४
पडमेस्तुअ } बह १ पग २१ ११ बण
१२, छण)।

पडाअ [श्री] मोने रेको (ग—बैठ ८२)।

पडाव एक [पाठय] पकमा। पडावेह (मग
१)। छंड, पडाविअण पडावेअण (मग
११)। हेह, पडाविठ पडावठ (मग
११)। छ पडाविअण, पडाविअण
(मग ११)।

पडावम नि [पाठक] धम्यात (मग १)।

पडावम न [पाठन] पकमा (कुम २)।

पडाविअ नि [पाठिअ] पकमा हुमा (मुग
४२१: कुम २१)।

पडाविअर नि [पाठिअण] विरले
पडावा हो बह (मग ११)।

पडाविअ नि [पाठिअ] धम्यात (मग
पडाविअ } १)।

पडि } रेको पड = पठ।

पडिअ नि [पाठिअ] पकमा हुमा (कुमा प्राहु
१८८)।

पडिअर नि [पाठिअ] पकमा हुमा (कुमा प्राहु
१८८)।

पडिअर नि [पाठिअ] पकमा हुमा (कुमा प्राहु
१८८)।

पडिअर नि [पाठिअ] पकमा हुमा (कुमा प्राहु
१८८)।

पडिअर नि [पाठिअ] पकमा हुमा (कुमा प्राहु
१८८)।

पडिअर नि [पाठिअ] पकमा हुमा (कुमा प्राहु
१८८)।

पय रेको पंथ (गुवा १ क १ : कम्म २ ११२ ३१) । जइइ की [नयति] पंथावे नये धीर पंथ (वि ४४४) । तीस कीन [विश्रुत] वैसीस तीस धीर पंथ (धीर कम्म ४ ३३ वि २७३ ४४२) । तुअइ रेकी पाउइ (गुवा २७) । रस वि व [वरात्त] पनछ (सरा) । बसिय वि [पत्रिक] पंथ रन का (गुवा ४ २) । बीस कीन [विश्रुति] पनीस बीस धीर पंथ (धम ४४ क १३ कम्म २) । तीसइ की [विश्रुति] बही पंथ (वि ४४२) । सट्टि की [पति] पैठ छाउ धीर पंथ (धम ७८ वि २ १) । सय न [शुद्ध] पंथ की (६ ६) । सीइ की [श्रीणि] पंथानी पसी धीर पंथ (कम्म २) । सुअ न [सुम] पंथ हिंस-स्वात (एण) ।

पय पु [पत्र] १ शब्द, होऊ 'नयनपरोषा कुम्भनैलस' (महा) । २ प्रशिक्षा (भाक) । ३ न । ४ विज्ञेय ननु, ज्ञायक 'एतल विज्ञेयिय पराक' (दी १)

पय पु [प्रय] पन प्रशिक्षा (गाठ—मानवी १२४) ।

पय १ न [पञ्चक] १ पंथ का छट्टइ (पंथ पण्णा १ ११) । २ लन-विशेष गौरी छप (धंनोव ३७) ।

पयप्रतिष्ठ वि [वि] प्रश्रुति स्थल किन्न हृष (६ १, १) ।

पयअस रेको पयपस (हि २, १७४ टि; राज) ।

पयइ की [प्रयति] प्रलय नमस्कार (पजय २२ ११ गुर १२ ११३ गुण) ।

पयइ वि [प्रययि] १ प्रलयना लैही प्रेमी । २ पुं पति स्वामी (पाछ बउ १७) । ३ याचक धनी श्रावी (पउ २४९ २३१ गुर १ १) । ४ बुज रामा 'नयइएणपति पणललो' (बउ ७२७) ।

पयइगी की [प्रययिगी] पत्नी, धर्य मित्र, भोज (गुवा २११) ।

पयइय वि [प्रययिउ, प्रययि] रेको पयइ = बलवि (बउ) ।

पयराणा की [पयाज्जना] वेरवा बारीकना (क १ ११ टी गुवा ४९ ३ गुण २) ।

पयराण [पयज्जक] पंथ का छट्टइ (गुर १, ११२ गुवा ११२ की २ ३ ११ कम्म २ ११) ।

पयसा पु [वि] पनऊ १ लैबाज सेवार वा सेवार, गुण-विशेष जो नम में कल्प होत है (इह ४ क ४ पण १ लुंकि) । २ कर, बर्षा-काल में मुषि काठ याचि में कल्प होने नाचा एक प्रकार का बल-नीज (पाछा पत्रि ४ व—प ४२१ कम्म) । ३ कर्म-विशेष मुख्य पंथ (इह १ म ७ १) । रेकी पयय (६) । मट्टिया मट्टिया की [सुसि] नदी याचि के पूर के बरप होने पर रू बारी कोमल किन्ही मिट्टी (नीज १ पण १—प २२) ।

पयय थक [प्र + नृत्] नाचना नृत्य करना । बन्, पययमाण (शाम १ ४—प १३१ गुवा ४७९) । की जी (गुवा २४२) ।

पययण न [प्रययण] गुण नाच (गुवा १२४) । पययिज वि [प्रयुत्त] नाचा हुआ चितका नाच हुआ हो नह (छाया १ १—प १२) ।

पययिज वि [प्रयुत्त] नाचा हुआ 'प्रमना एकनुरयो पययिजया बैबरा' (महा गुण १) ।

पययिज वि [प्रययिज] नचाया हुआ (प्रि) । पययु वि [प्रयय] प्रकय से नाच को श्राव (गु १ १ २) वे ७ गुर २, २४७ १ २६ खि क) ।

पयय वि [प्रयय] परिलट (धीर) ।

पयपण रेकी पयपस (क ४ ४७ टि) ।

पयपण्यइ रेको पयपसइ (क ४ ४४ टि वि २७१) ।

पयपस-कीन [वि] पञ्चपञ्चागात् पयप, पयस धीर पंथ (६ २, ४ कम्म लय ७२ कम्म ४ ४४ ३१ टि ३) ।

पयपसइ वि [वि] पञ्चपञ्चागात् पयपना ३१ ना (कम्म) ।

पयपसिय रेकी पयपसिय (इक) ।

पयपसिय पु [पंथप्रसिद्ध] कम्पर जेन की एक नाचि (व १ १४) ।

पयस छक [प्र + नृत्] प्रलय करता, नम करता । पयसइ, पयसप (४ १४४ क) । कइ पयसित (छउ) । कइ पयसियत्त (गुवा ८८) । छइ पयसिय पयसिकय पयसिकय पयसिणा, पयसिणु (धम ११३ भाक वि ३२ प ४४) ।

पयसय न [प्रयमन] प्रलय नमस्कार (क ४ गुवा २७ ३२१) ।

पयसिय रेकी पयस ।

पयसिय वि [प्रयय] १ मना हुआ (बना धीर) । २ बिस्ने नये का श्राव्य किम हो नह (छाया १ १—प २) । ३ शिखे नम किया गया हो नह 'पयमिषी अछेए राजा' (४ ७१) ।

पयसिय वि [प्रयसिय] मनाया हुआ (प्रि) ।

पयसि वि [प्रयस] प्रलय करनेवाला नमनेवाला (गुवा गुण ११ छउ) ।

पयय थक [प्र + पी] १ स्वेद करना श्रेय करना । २ श्रावना करना । कइ पययव (६ २ २) ।

पयय वि [प्रयय] १ बिस्ने प्रलय किन्न पया हो नह 'पययइसुनपयकम्ब' (गुवा २४) । २ बिस्ने नमस्कार किया हो नह 'पययइसुनपयकम्ब' (गुर १ १११ गुवा ३११) । ३ श्राव (गु १ ४ १) । ४ शिखे, कीचा (नीज ४ छउ) ।

पयय पु [प्रयय] १ लौह, श्रेय (छाया १ २) नह ना २७) । २ श्रावना (कम्ब) । ३ वि [वि] स्वेदना श्रेयी (क १११) ।

पयय पु [वि] पंथ करन (६ ७ ७) ।

पयय पु [वि] पनऊ १ लैबाज सेवार, गुण-विशेष । २ कार, बल-नीज (धीर १४२) । ३ नृत्य कर्म (महा १ ४) ।

पययस वि [वि] पञ्चपञ्चागात् वैत-लीबनी ४२ ना (पजय ४४, ४१) ।

पययस [वि] पञ्चपञ्चागात् पययाक्षिस १ पययिज, पययि धीर पंथ ४२ (धम १४ कम्म २, २७ टि १ क ४ ४४ कीचा वि ४४४) ।

‘संज्ञाभाषाणि सम्भाषिणः बह्वैक्या पथिहाय’
(उत्तर ११ १) :

पथिहाय देवो पथिहा ।

पथिहि दुग्धी [प्रतिधि] १ एषाण्य धनवान्
(पण्ड २ १) । २ कामना धनवान् (स
७७) । ३ पुं पुरुषस्य द्रुत (पण्ड १ १) ।
वायु-मूर १ ४ मृता ४१२) । ४ विष्ट
आहार (वसति १) । ५ माता कष्ट (मात्र
४) । ६ व्यवस्थापन (पत्र) ।

पथिहि दुग्धी [प्रतिधि] बड़ा दिधि (स
८, १) ।

पथिहिष वि [प्रतिहित] १ प्रयुक्त, व्यापृत
(वसति ८) । २ व्यवस्थित (मात्र ४) ।

पथीय वि [प्रयत्न] १ निर्मित कृत, रचित
‘अवशिष्टं पथीय’ (सिंह १२ ७) मूर १२
१२) मृता २ १६७) । २ निष्पन्न द्रुत
धर्मि स्त्रोह १) प्रयुक्तान्ता, ‘विष्णुना इत्यो
संज्ञायां पथीयप्राप्तौ’ (वस ८, १७) उत
११ ७ मौर १२ भा धीयः द्रुत २) । ३
निर्णीत प्रदर्शित भावना (मनु ५ भा
३) । ४ मनीज मुक्तर (वस २, ४) । ५
धम्मन् व्यापारित (मृग १ ११) ।

पथीयाग देवो पथिहाय (मात्र ८) पृष्ठ
१२) ।

पथु देवो पथोष्ठ । बह्व. पथुमेमाण (पि
२२४) ।

पथुमिष्ठ देवो पथोष्ठिष्ठ (वायु १ गुण २४-
प्रायु १११) ।

पथुमीम धीन [पथुमिष्ठि] संस्कार-विशेष
बोधो धीम धीर पथः । २ जितरी संस्कार
बोधो ही ने (ब १ १ पि १ ४ २७१) ।

पथुनी गम्य वि [पथुमिष्ठि] बन्धोत्तरा
२२ भा (पि ११२) ।

पथय सक् [प्र+पथ] १ प्रेरणा करण ।
२ रीतना । ३ गत करना । पथोत्तर
(मात्र) : ‘पथाय बन्धाय पथोत्तराय’ (उत
१२ ४) । बन्ध पथोत्तराय (हावा
१ १ पाद १ १) । धीर पत्रात (मृग
१ १) ।

पथोत्तर न [प्रसादय] प्रेरण (स : का
३ ४११) ।

पथोत्तर वि [प्रसादय] प्रेरक (वायु) ।

पथोष्ठि वि [प्रसादय] १ प्रेरणा करणान्ता ।
२ पुं प्राशन दण्ड बैत इत्यादि द्विजेने की
बह्वी (पण्ड १ १—पत्र २४) ।

पथोष्ठिष्ठ वि [प्रमोदित] प्रेरित (वीर्य वि
२४४) ।

पथय वि [प्रसू] बलवार, वन विपुल (उत
१ ८) मृग १ १) ।

पथय वि [प्राप्त] १ ब्रह्मवत्ता बुद्धिमान् वत
(हि १ २९ का १२१) । २ वि प्राप्ति
धन्यो (मृग २ १) ।

पथय न [पथे] पत्र पत्ता पत्तो (द्वया) ।

पथय देवो पथिष्ठ ७ पत्र (पत्र) ।

पथय धीन [वि] पत्रात, २ । धीर पत्रा
(बह्व) ।

पथय देवो पथ पत्र (पि २७१ ४४ ;
४४२) । रस वि न [पत्रात] पत्रात,
१२ (उत २६१ पत्रा) । रस वि [पत्रा]
पत्रात (उता) । रसी की [पत्रा] १
पत्रात (उता) । २ विवि-विशेष (पि २७१ कथ) ।
रह देवो रस (मात्र) । रह वि [पत्रा]
पत्रात १२ भा (मात्र) । देवो पत्र =
पथ ।

पथय वि [पार्थ] पत्त धन्यो, पत्तो का
पत्तो कि संज्ञा रखनेवाला (पत्र) ।

पथय देवो पथय १ । ब वि [पत्र] ब्रह्म-
वत्ता (का ११२ टी) ।

पथय देवो पथय १ । ब वि [पत्र] ब्रह्म-
वत्ता (का ११२ टी) ।

पथय देवो पथय १ । ब वि [पत्र] ब्रह्म-
वत्ता (का ११२ टी) ।

पथय देवो पथय १ । ब वि [पत्र] ब्रह्म-
वत्ता (का ११२ टी) ।

पथय देवो पथय १ । ब वि [पत्र] ब्रह्म-
वत्ता (का ११२ टी) ।

पथय देवो पथय १ । ब वि [पत्र] ब्रह्म-
वत्ता (का ११२ टी) ।

पथय देवो पथय १ । ब वि [पत्र] ब्रह्म-
वत्ता (का ११२ टी) ।

पथय देवो पथय १ । ब वि [पत्र] ब्रह्म-
वत्ता (का ११२ टी) ।

पथय देवो पथय १ । ब वि [पत्र] ब्रह्म-
वत्ता (का ११२ टी) ।

१ विद्या-विशेष (वायु १) । ४ प्रत्यय
प्रतिपत्त (पत्रा ४१) । स्त्रोहो की
[प्रोपय] बन्ध का एक श्रे (अ ४ २) ।
पथोत्तरा की [प्रसापनी] बन्ध का एक
श्रे (पत्र) ।

पथयपथिष्ठ पुं [पथयपथि] व्यवहार देवो
की एक वाति (रस) ।

पथय देवो पथय (सि ४ ४) ।

पथय पत्र [प्र+प्रापय] प्रकथन करना
जाने देवता प्रतिपत्त करना । पथोत्तर,
पथोत्तर (उता मन्) । बह्व पथयपथि
पथयपथिष्ठ (पत्रा, पि २२१) । ४. पथय
पथिष्ठ (अ ७) ।

पथयपथि वि [प्रसापक] प्रकथन प्रतिपत्त
(सिंह २४१) ।

पथयपथि वि [प्रसापन] १ प्रकथन प्रति
पत्त । २ शास्त्र, विद्या (सिंह २४१) ।

पथयपथि वि [प्रसापन] प्रापक, विप्रक
(संज्ञा २) ।

पथयपथि की [प्रसापना] १ प्रकथन प्रति-
पत्त (हावा १ २, उता) । २ एक श्रे
धाम्य श्रे ‘अवत्ता’ मृग (वस) ।

पथयपथि देवो पथय ।

पथयपथि की [प्रसापनी] प्रापक-विशेष धर्म-
श्रेष्ठ ध्या (वस १ १) ।

पथयपथि धीन [वि] पत्रापत्रात [पत्र-
पत्र, पत्रात धीर पत्र (हि १, २७) पत्र) ।

पथयपथि देवो पथय (सिंह २४७) ।

पथयपथि देवो पथय ।

पथयपथि वि [प्रसापित] प्रतिपत्त ब्रह्म-
पिष्ठ (मृग ४१ ११) ।

पथयपथि वि [प्रसापित] प्रतिपत्त ब्रह्म-
पिष्ठ करीबाना (अ ७) ।

पथयपथि देवो पथय ।

पथय पत्र [प्र+प्रा] १ प्रकथन करना ।
२ पथोत्तर श्रेष्ठ ज्ञाना । बन्ध, पथोत्तर
(वस) ।

पथय देवो पथय (हि) ।

पथय की [प्रसा] मनुष्य की बह्व व्यवहार
में धीरवी धारणा (मृग ११) ।

पथय की [प्रसा] १ बुद्धि मति (का १२४
७२२ टी मृग १) । २ ज्ञान (मृग १

होता है (पृष्ठ १ १)। सद्यन्ताम न
[शरीरानाम्] वही पुनर्कर्म धर्म (धर्म
१७)।

पत्थेय वि [पत्थेय] नाम कथण (एवं
१३ १३१ टी)।

परय एक [प्र + धर्म] १ प्रार्थना करना।
२ धर्मिण्या करना। ३ भटुकाना रोकना।
पत्थेय, पत्थेयि (उप धर्म)। कर्म पत्थेयधर्मि
(महा)। बहु पर्येत पत्थेय पत्थेयमाणा
(नट—मन्त्रवि २३ गुण २१३ प्रामु
१२)। 'कामे पत्थेयमाणा धनमा धर्मि
दुग्ध' (उप १२७ टी)। कथञ्च पत्थेय्यत
पत्थेय्यमाणा (गा ४ घुर १ २ से
१ ११ कथ्य)। कृ पत्थेय, परधर्मिञ्च
पत्थेय्यन्त्य (गुण १० घुर १ ११६ गुण
१२८) पृष्ठ २ ४)।

परय दु [पार्थ] १ धर्मन मय्य परयश्च
(स ११२) बेही १२१ गुण)। २ पाश्चात्
देव के एक राजा का नाम (पञ्च १७ ८)।
३ भद्रिकपुर नगर का एक राजा (गुण
१२२)।

परय दु [पार्थ] १ प्रार्थन प्रार्थना (राज)।
२ को शिरो का उपवास (छंदोग १८)।

परय देवो परय = पथ (पा ८१४ पथम्
१७ ६४ पथ)।

परय देवो परय = प्र + धर्म्यु।

परय दु [पार्थ] १ कुञ्च का एक परिमाण
(इह १ बीजस्य ८८० औं २६)। २ शिवा
एक कुञ्च का परिमाण (उप ५ ६६)
'पत्थेय्य ४ से पुरा धारी हीरुनमरा ४ सेठुल'
(कव १)।

पर्येत धर्म परय = प्र + धर्म्यु।

पर्येत देवो परया।

परया देवो परयाय (धर्म)।

परय दु [प्रानर] १ रथचक्रविरोधना
धनुष (उप ४ ४—परय १०६)। २ घर्षण
के बीज का समतल भाग (पृष्ठ २ सम
२१)।

परय वि [प्रानर] १ विद्याय हृष्या। २
दिता हृष्या (मन ६ ८)।

परयाय न [प्रार्थन] प्रार्थना (बह्म ३६)।

परयाया } की [प्रार्थना] १ प्रार्थना
परयाया } बान्धव (भाष ४)। २ याचना-
नाय। ३ विव्रति निवेदन (मग १२ ३
घुर १ २ गुण २१६ प्रामु २१)।

परय देवो परय = पथ्य (छाया १ १)।

परय वि [प्रार्थक] धर्मिण्या करनेवाला
(गुण १ २ २ १६ छ २२१)।

परयाय देवो परय = प्रथ (उप १७६ टी
धर्म)।

परयाय न [पथयन] शब्दस्य पाथेय्य मार्ग
में जाने का मुख्य क्रमेण (छाया १ १२
छ १३; पृष्ठ ८ ८ गुण १२४)।

परय एक [प्र + स्तु] १ विद्याना। २
दिताना। ३ पत्थेय (कथ ४ ६)।

परय दु [प्रानर] पत्थेय, पत्थेय्य (धीय-
ज्व पथम् १७ १६ मिरि १३२)।
'पत्थेय्येणमो कीवो पत्थेय्यं बन्धुमित्र'।
मियायिषो छरे पथ्य धन्याति मियायि
(छुर ३ २७)।

परय न [वि] वाच-नाशन सात (बह्म ४)।

परय देवो परयाय (प्रामु १३ २)।

परय न [प्रानर] विद्याना 'बह्मपत्थेय्य'
एवं तथा एवं (बर्मे १४०)।

परय मन्त्रिञ्च न [वि] कीमाह्न करना (वि ६
१६)।

परयाय की [वि] करण-नात नात (वि ६
८)।

परय रिञ्च दु [वि] पत्थेय कोरन (वि ६ २)।

परय रिञ्च वि [प्रययु] विद्याया हृष्या
'पत्थेय्येणमो' (पार्थ)।

परय देवो परयाय (वि १ १८ गुण) पथम्
५ २१६)।

परयाय एक [प्र + रथा] प्रस्थान करना
प्रवास करना। बहु परयाय (वि १ ३७)।

परयाय न [प्रस्थान] प्रयाण गमन (मर्मि
८१) मर्मि ६)।

परयाय दु [प्रानर] १ विस्तार (उपर २६)।
२ दुष्टन। ३ पृथ्वीविभिन्न शब्दा। ४
पितृ प्रसिद्ध प्रक्रिया विरोध (प्रामु)। ५
प्रार्थन के रथना विरोध (उप १—पथ
१७१) कथ)। ६ विनाश (मि ३ १
१११)।

परयाय की [वि] १ निरुद्ध, समूह (वि ६
१६)। २ शब्दा विहीना पुनर्परी में
'पत्थेय' (वि ६ १६) पाथ गुण १२)।

परयाय एक [प्र + स्थाय] प्रारम्भ
करना। बहु परयायर्जन (ह्रास्य १२२)।

परयाय दु [प्रानर] १ प्रसर। २ प्रसव
प्रकरण (वि १ १८ गुण)।

परयाय वि [प्रस्थित] १ जिसने प्रयाण
क्रिया हो वह (वि २ १६ घुर ४ ११८)।

परयाय वि [प्रस्थित] १ जिसने प्रयाण
क्रिया हो वह (वि २ १६ घुर ४ ११८)।

परयाय वि [प्रस्थित] १ जिसने प्रयाण
क्रिया हो वह (वि २ १६ घुर ४ ११८)।

परयाय वि [वि] रथम् बन्धो करनेवाला (वि
१ १)।

परयाय वि [प्रस्थित] प्रार्थी प्रार्थना करने-
वाला (धर्म)।

परयाय वि [प्रस्थित] विरोध पाश्चात्तादा
प्रष्ट पत्थेय्यमाणा (उप)।

परयाय } की [वि] कथ का कथा हृष्या
परयाय } भाग्य-विरोध (धर्म ४०६)।

'पिथ्या पिथय न [पिथक] कथ का
कथा हृष्या पाश्चात्-विरोध (वि १ १)।

परयाय देवो पत्थेय्य = प्रस्थित प्रापित
(माङ्ग २२)।

परयाय दु [परिधि] १ राजा नरेत् (छाया
१ ११) पाथ)। २ वि दुर्विधी का विकार
(छाया)।

परदी की [वि पार्थ] पाथ साजन 'धर्म'
कञ्चोरसिद्धि पाथमा मद् पद् विमुर्धति
(मा २४ धर्म)।

परधीय न [वि] १ लुब्ध बन्ध, मोक्ष कपड़ा।
२ वि, लुब्ध मोक्ष (वि १ ११)।

परयाय वि [प्रानर] १ प्रकरण-प्राप्त प्राकर
शिक (घुर १ १२१) मर्मि)। २ प्राप्त
मय्य (गुण १ ४ १ १७)।

परयाय देवो परयाय = प्र + स्तु। बहु परयाय-
देवा (कथ)।

परयायमाणा }
परयाय } देवो परय = प्र + धर्म्यु।
परयायमाणा }
परयायय्य }

पथोव नि [प्रतोव] १ प्रस्ताव करनेवाला ।
२ प्रवर्तक । को खोई (पथ १ १—
पथ ४२) ।

पथम (१) खो पथम (पि ११) ।

पथ खो पथ = पथ (अन पथन १११ ई ४
२० पथ २ १ गट—गुण ४१) ।

पथ अठ [गम्] बाला गमन करना ।
पथम (ई ४ १६२) । पथमि (गुमा) ।

पथसिम् नि [प्रथसिम्] विद्याया हृषा
मथ्यावा हृषा (भा १) ।

पथसिम् नि [प्रथसिम्] १ विद्युत दक्षिण
की तरफ से लेकर मथ्यावापर प्रपण किया
हो वह । २ न दक्षिणामर्त प्रपण पथसिम्-
हीकर्मयो म्थार (प्रमौ १११) । खो
पथसिम् ।

पथसिम् एक [प्रथसिम्] प्रथसिम्
करना दक्षिण से लेकर मथ्यावापर प्रपण
करना । ईड. पथसिम्गेड (पथम ४४.
१११) ।

पथसिम् की [प्रथसिम्] दक्षिण की
धोर से मथ्यावापर प्रपण (गाट—वैत
१४) ।

पथन न [पथन] प्रत्यागन शरीति कपना
(अन ४४१) ।

पथन (ही) न [पथन] पिरण (गाट—
मालती १०) ।

पथम (ही) खो पथम (गाट—गुण १११) ।

पथन खो पथम = पथम पथम पथम
(इक) ।

मथसिम् खो पथसिम् (अपि) ।

पथम न [प्रथम] पंथाव नयी (गुमा) ।

पथ नि [प्रथम] केलावा (गाट—
मिळ ४) ।

पथम न [प्रथम] राज विपण (पीप
अपि ४१) ।

पथ नि (ही) गु [पथम] केला करनेवाला
केला (अवी १० गाट—वैती ११) ।

पथ नि [प्रथम] केलावा (मिठे
११) ।

पथन खो पथम (पा १११) ।

पथसिम् नि [प्रथसिम्] प्रथम दक्षिण
प्रपण से दक्षिण दिशा में स्थित (वीव १) ।
खो पथसिम् ।

पथसिम् (ही) खो पथसिम् (पा १,
गाट—मिळ २१) ।

पथन खो पथन (राज) ।

पथन की [प्रथम] दिक्का ईशान धारि
केला 'पंथि पाण पथि मिळानु प'
(पाथा) ।

पथसिम् खो पथसिम् ।

पथन एक [प्र + वीपम्] १ कलावा । २
प्रकार करना । पथसिम् (मि २४४) । नड
पथसिम् (पथम १ २ १) ।

पथन खो पथन = प्रथम (गाट—गुण
१) ।

पथसिम् की [प्रथम] कीटा विप
(गाट—गुण ११) ।

पथन गुन [प्रथम] कोट, किता (भाषा
१ १ २) ।

पथन नि [प्रथम] प्रथम विप को
मात (अन ११ गुण १) ।

पथमोथम न [पथमोथम] पथ-विपान धीर
रुम्भार धार का पापमर (एक) ।

पथमि नि [प्रथमि] प्रथम प्रपण
पीप (इक १) ।

पथन एक [प्र + वीप] देव करण ।
नडपि (पंथा २ ११) ।

पथमया की [प्रथमया] प्रथमया देव
मालवी (अन ४४१) ।

पथन एक [प्र + वीप] प्रथम से केला ।
पथन (अपि) । संत 'पथसिम् न विस्त
नयावा' (अन १० पि ११४) ।

पथन खो पथन = प्रथम (अपि) ।

पथन गु [प्रथम] देव (अपि १०) ।

पथसिम् नि [प्रथसिम्] प्रथम शरीरमि
(पाथा) ।

पथन खो पथन = दे, प्रथम (अपि ११)
मिळ १) ।

पथन खो पथन = प्रथम (एक) ।

पथ न [दे] १ काम-रुम्भार (ई १ १) । २
कीटा विप (पाथा) ।

पथन [पथ] खो, वृत्त काव्य (प्राथ
२१) ।

पथन खो पथन = प्रथम (गुण १ ११ १) ।

पथन की [पथन] १ मार्ग, पला (गुमा
१०१) । २ पीप, खेडी (अन २, ४) । ३
पिपिटी कम (अनम) । ४ प्रथम प्रपण
(अन २) ।

पथन गु [प्रथम] पंथ गाट । [माव गु
[माव] पथम-विपान वलु के गाट होने
पर वलु का भी अभाव होता है-वह (मिठे
१०१०) ।

पथन नि [दे] अड, सल कीटा (ई १
१) । २ खीट वृत्तपीठ में 'पथन' 'पथ-
पथ' मुरी पथन' (मिठि ४११) ।

पथन नि [दे] खो वारसी में पथन
(पथ) ।

पथन नि [दे] विपान गुण नट मया हो वह,
गुण-नट (ई १, ११) ।

पथन खो पथनिय (अपि) ।

पथन खो पथन (गाट—गुण २ १) ।

पथन खो पथन = प्र + पथन । प्रथम-
पथन (पीप एका १ २—पथ ८४) ।

पथन एक [प्र + पथ] वीप धारि
वैव से बना । संत पथनिय (गाट) ।

पथन न [प्रथम] १ वीप वैव से
गमन । २ वीप की वीप विपि (पा १) ।
३ प्रथम (अपि १ १०) ।

पथन नि [प्रथम] १ वीप हृष
(गाट पथ १ ४) । २ पथ-पीप (एक) ।

पथन नि [प्रथम] वीप हृष (पा
२) ।

पथन नि [प्रथम] १ वीप हृष
(गाट पथ १ ४) । २ पथ-पीप (एक) ।

पथन नि [प्रथम] वीप हृष (पा
२) ।

पथन नि [प्रथम] १ वीप हृष
(गाट पथ १ ४) । २ पथ-पीप (एक) ।

पथन नि [प्रथम] वीप हृष (पा
२) ।

पथन नि [प्रथम] वीप हृष (पा
२) ।

पथन नि [प्रथम] वीप हृष (पा
२) ।

पन देहो पंच । १, रस नि ब [ब्रह्म]
पनह बस और पंच १२ (कम १ ४
२२ ६८ की २२) ।
पनय (वि ब्रह्म) देहो पणय प्रलय (वि ४
३२९) ।
पन देहो पणय = पण (मुना ११२) कुप
४ ८) ।
पन देहो पणय = वि (अप कम ४ २४) ।
पन देहो पणय = प्रह (भावा कुप ४ ८) ।
पन नि [प्राह] १ पंडित वागधर विद्या
(छ ७ छ १२१ बर्नर ४२) । २ नि
प्रम-संकीर्ण (सुप २, १ २६) ।
पन देहो पच । १, रस नि ब [ब्रह्म]
पनह १२ (१२ २२ सम २२) मन सण ।
रस रसम नि [ब्रह्म] पनह १२
का (सुप १२, २२ ; पनम १२, १ ०) ।
रसो की [ब्रह्म] १ पनह १ । २
पनह १ नि (कम) ।
पन देहो पणिम प्रलय (अ १ ११ टी) ।
पनगया की [पण्णाङ्गा] वेसा, बाणङ्गा
(अ १ ३१ टी) ।
पनग देहो पण्णा = पणय (विना १ ७ ;
सुप २ २३८) ।
पनह देहो पणह (कम) ।
पनह देहो पणह (छाया १ १ ; अण
सम १) ।
पनसति की [पणससति] पणह ७२
(सम ८२ वि १) ।
पनसि देहो पणयि (सुप १२१ ; छ १२ ;
महा) । २ पणह नाम । विषये प्रमाण विना
आप बह (छ २४) । ३ पनसा भोग-अण
मनारीण (वाग १११) ।
पनसु नि [पणससति] वागधर प्रतिपत्त
(वि १२) ।
पनपणिया की [प्रमपणिया] देहो पुमप
तिना (कम) ।
पनपमइ देहो पणपमइ (वि ४२) ।
पनय देहो पणय (वाग) । १ रिउ पुं [रिपु]
यह बनी (वाग) ।
पनया की [पनया] बलन पनयापरी को
छाव-देवी (वि १) ।

पनय देहो पणय । पनय (अ) । कर्न
पनयि (अ) । २ पनययंत (सम
११४) । छह पनययंत (वि २८२) ।
पनय नि [प्रपाप] प्रतिपत्त प्रकृत
(कम २ ८२ टी) ।
पनय देहो पणयय (सुप २२२) ।
पनयया देहो पणयया (मप पण १
छ ४ ४) ।
पनयय देहो पणयया (सम ११) ।
पनययंत देहो पनयय ।
पनय देहो पणया = प्रह (भावा छ ४ १ ;
१) ।
पनय देहो पणया = वे (पच २) ।
पनयह सक [पुप] मर्न करना । पनयह
(वि ४ २२६) ।
पनयि नि [सुपित] विना मर्न किया
बना हो बह (वाग कुमा) ।
पनय देहो पणय (पणह वि १ १) ।
पनयस (पण) नि ब [पणयय] पनह
१२ (अप) ।
पनय देहो पणयस (सम ७ ; कुमा) ।
की सा (कम) । इस नि [पम]
पनय १ का (पण २ २३) ।
पनह देहो पण (कम) ।
पनह (मप) देहो पणह = वे प्रलय (अप) ।
पनह देहो पणह (सुप २२२) ।
पनह नि [मपययित] भावा ह्या (वि
१२१ ११६ ना—पुप २८) ।
पनयामह पुं [मपयामह] १ अण
विना (अण) । २ पनयामह का विना
पणय (बर्नर १४२) ।
पणय पुं [मपुय] वीह, पुन का पुन, पोता
(सुप ४ ७) ।
पणय } पु [मपय] वीम का पुन पोते
पणय } का पुन पणोता (वि ८१२ राज) ।
पण सक [म + आप] प्राप्त करना । पणोह,
पणोति (वि २ ४ जत १४ १४) ।
पणोति (सो) (वि २ ४) । छह पण
(अण १०; वीप २२; वि २२१) । ह-
पण (वि २१८०) ।
पणम नि [पणक] बलसति-विरोध (सुप
२ २६) ।

पणह } पुं [पणह] १ पापह पुं या
पणह } उर की बहुत पणो एक प्रकार
की रोटी (पच १७ अवि) । २ पापह के
भाकरासता मुप मुपह (वि १) ।
पापय पुं [पापह] तरकावा-विरोध
(वि २१) । मोपय पुं [मोपह] एक
प्रकार की मिट बलु (अण १७—पच
२११) ।
पणहिया की [पणहिया] विन भासि की
बनी हुई एक प्रकार की चाव बलु (अण
१; वि २२१) ।
पणह देहो पणह (ना—वि २१) ।
पणोह पुं [पु] वातक पणो पणोह या
पणोह (वि १ १२) ।
पणोह नि [पणोह] १ बला पणो के
बीजा ह्या (अण १ १ छाया १ ८) ।
२ व्यास 'बपणोयबेणया' के (पच ४
टी) । ३ म बला सापिना (पण १२८) ।
पणोह } देहो पण ।
पणोह म [मपयय] प्रयत्न करणा
(अण) ।
पणह पुं [पु] मपि-विरोध (वि १ १) ।
पणह नि [पु] प्रतिपत्त (वि १
२२) ।
पणु नि [पु] १ वीह लमा । २ वीह-
मा, वण (वि १ ४४) ।
पणुह सक [म + पुप] १ विना ।
२ पुप । पणुह (पण ७४) ।
पणुह पुं [पणुह] तरकावा-विरोध
(वि २१) ।
पणुह देहो पणुह 'आपणुह' (सुप
२ २६) ।
पणुह सक [म + पुप] १ करणा,
विना । २ वीह । पणुह (वि १२, ७७ ;
या १४०) ।
पणुह नि [पणुह] करका ह्या (वि
१ १२) ।
पणुह सक [म + पुप] विना । बह,
पणुह (वि २८) ।
पणुह नि [पणुह] विना ह्या
(वाग १ १) । का १ ११७ पण १
११, सुप २, ७१; बह १ या १११ २७)

‘हम धर्मिण्यु राधेयै पण्डितबोमहाबाय’
(सम १९१)।

पण्डितवि [प्रवृत्ति] ऊपर देखो (समत
१ १) धर्मि)।

पण्डितभा की [प्रवृत्ति] देखो पण्डु-
हिमा (स ११९ घ)।

पण्डितिय न [प्रवृत्ति] जम सत (सम
१९)।

पण्डोह देखो पण्डुह। पण्डोह पण्डोह
(बाबा १४१)।

पण्डोह बक [प्र + पण्डोह] १ मङ्गला
मङ्गलक मिलाय। २ मास्त्रमन करना। ३

प्रयोग करना। पण्डोह (ना ४११)।
पण्डोह (सत २९ २४) बक पण्डोह

पण्डोहयत पण्डोहेमाय (स १४९ वि
४११ छ १)। संज्ञ ‘पण्डोहेयत धर्म
कर्म’ (बाबा १७)।

पण्डोहज न [प्रणोटन] १ मङ्गला प्रकट
कुल (योग स १९१)। २ मास्त्रमन,
मास्त्रमन (पण्ड २ २—पत्र १४ ना निज
२९१)।

पण्डोहजा की [पण्डोहजा] ऊपर देखो
(योग २९१; सत २९, २९)।

पण्डोहिम वि [वि प्रणोटित] निष्पत्ति
मङ्ग कर विराधा हुमा (वि ९ २७ पाय)-
‘पण्डोहिमबोहनामस’ (पठि)। २ प्रेक्षा
हुमा टीका हुमा ‘पण्डोहिमवर्धिका’ न
ते हुवि विराधा’ (दीवीर १७)।

पण्डोहेमाय देखो पण्डोह = प्र + पण्डोह।

पण्डु देखो पण्डुह (पण्ड)।

पण्डुहिम देखो पण्डुहिम (वि ९ १११)
पिण्ड)।

पण्डु सक [प्र + पण्डु] प्रत्यक्ष रूप से
कहना विस्तार से कहना। पण्डुहिमा (सत
२ ९, २०)।

पण्डु पु [प्रवृत्ति] १ सत्य प्रथ परतार
धर्मित नाय-मनु (रंज)। २ धर्मिण्यो
विराधा (सत ११ ७)।

पण्डुभाय [प्रवृत्ति] प्रत्यक्ष रूप से धर्मित
नाय-मनु की रचना करना न पण्डोह
(नम २१)।

पण्डु वि [प्रवृत्ति] बहिष् प्रवृत्ति प्रवर
(हुमा)।

पण्डु की [प्रवृत्ति] प्रकट बापा विरोध
पीड़ा (छाया १ ४)।

पण्डु वि [प्रवृत्ति] १ प्रवीर्य निपुण (वि
१९ १४)। २ बापा हुमा (सुर ३-२९१)।

३ किसी प्रवृत्ति तरह बालकरी प्राप्त की हो
बहु (बाबा)।

पण्डु वक [प्र + पण्डु] १ बापु कहना।
२ जान कहना। कर्म पण्डुप्रतिम (वि
२४१)।

पण्डुभाय न [प्रवृत्ति] प्रकट बोधन (पत्र)।

पण्डु देखो पण्डोह। पण्डोहनाय (पत्र
७ २)।

पण्डु पु [प्रवृत्ति] १ बापुह। २ जान
समय (बाबा २४ वि १९)।

पण्डुभाय देखो पण्डोभाय (पत्र)।

पण्डोह वि [प्रवृत्ति] प्रवीर्य-कर्म (वि
१७१)।

पण्डोहिम वि [प्रवृत्ति] १ बापा हुमा।
२ किसी ज्ञान न कराय कमा हो बहु (हुमा
१११)।

पण्डु देखो पण्डु (वि ४ २११ १, ११)।

पण्डु देखो पण्डुभाय = पण्डु। पण्डुह
(वि ४ १११)।

पण्डु देखो पण्डुभाय = पण्डु। पण्डुह
(वि ४ ४१)।

पण्डु देखो पण्डु (वि १११)।

पण्डु वि [प्रवृत्ति] नम (प्रीत प्राज्ञ २४)।

पण्डु } वि [प्रवृत्ति] १ पण्डुह,
पण्डुसिद्ध } प्रवृत्ति नम हुमा (पण्ड
१ १ पठि १११ ना ११ सुर १

१२१ ना १११ १२)। २ विस्तृत (वि ४
४२)। ३ तु नमनास विरोध (वि २९)।

पण्डुभाय पु [वि प्राग्भाय] १ संज्ञा समुदा
कला (वि १ १९ वि ४ ९ सुर १
२२१; पण्डु बहः हुमा २१)।

पण्डुभाय पु [वि] विवि-पुत्र परत-नम (वि
१ १९)। ‘पण्डुभायका बापु की पण्डु
बापु’ (पत्र १)।

पण्डुभाय पु [प्राग्भाय] १ माह बाप, ‘पुने
संज्ञा-पण्डुभाय’ (नम ४ टी)। २ ऊपर

का भाव (वि ४ २)। ३ बोधा कमा हुमा
परत का भाव (छाया १ १—पत्र ११ सत
२, ७)। ४ एक देव एक भाव (वि १ २९)। ५
ऊपर परमाय (पण्ड)। ६ पुन, परत के
ऊपर का भाव (पठि)। ७ वि बोधा कमा
हुमा ईश्वरगत (सत १११ छ १)।

पण्डुभाय की [प्राग्भाय] संज्ञा-विरोध पुत्र
की संज्ञा से प्रतीत रूप से पण्डुभाय (छ
१—पत्र १११ छ १९)।

पण्डुभाय वि [प्रवृत्ति] ज्ञान ‘मनुभाय कमे
पण्डुभाय बहुरूपेण’ (नमि १२)।

पण्डुभाय पु [वि प्राग्भाय] भाव विराधा (वि
१ १)।

पण्डु पु [प्रवृत्ति] १ विवि-पुत्र नायक इन्द्र का
एक बोधनाय (वि ४ १) इन्द्र)। २ वि-
विरोध पीर समुदा-विरोध का धर्मिण्यो के
(पत्र)।

पण्डु वि [प्रवृत्ति] संज्ञा पुन (नम ४ टी)।

‘पण्डु देखो ‘पण्डु, ‘पण्डु, ‘पण्डु, ‘पण्डु’
(नम ४ टी)।

पण्डुभाय पु [प्रवृत्ति] १ प्रवृत्ति पण्डुभाय-
वि-विरोध (छ २ १)। २ पुन ईश्वर-विनाय
(सम ४, १४ पत्र २९७)।

पण्डुभाय वि [प्रवृत्ति] पण्डुभाय ‘पण्डुभाय-
पण्डुभाय’ (सत २१ ७१)।

पण्डुभाय की [प्रवृत्ति] १ विवि-पुत्र की
एक नम की नाम (छ २, १)। २ नम
की एक पण्डुभाय का नाम (छ ४ १)।
३ पुन की एक पण्डुभाय का नाम (सम
१ २)।

पण्डुभाय की [प्रवृत्ति] विवि-पुत्र की
एक नम की नाम (बाबा १)।

पण्डुभाय वि [प्रवृत्ति] पण्डुभाय विवि-पुत्र
(बाबा)।

पण्डुभाय पु [प्रवृत्ति] १ पण्डुभाय-विनाय
के ऊपर विराधा का इन्द्र (छ २, १ ४ १
सम ११)। २ पण्डुभाय-विनाय के एक पण्डुभाय-
विनाय का धर्मिण्यो के (छ ४ २)।
३ पण्डु पण्डु (वि ४ ११)। ४ पण्डुभाय
परत के एक विराधा का धर्मिण्यो के (पत्र)
पण्डु पु [समय] इन्द्र (वि ४ ११)।

परमसंघ न [परमसंघ] स्वहता (बर्मेस १ ७२)।

परमसंघ न [परमसंघ] १—२ विद्युत्कारक केने के इतिहास और इतिहास नामक दोनों इतिहास के लोकपालों के नाम (अ ४ १—पत्र १२७ ६६)।

परमसंघ [प्र + मस] कहना बोलना। परमसंघ (महा ६७)।

परमसंघ नि [परमसंघ] उक्त, कथित (६७)।

परमसंघ [प्र + मस] प्रमण करना प्रमाण। परमसंघ (मु १२३)।

परमसंघ [प्र + मस] १ समर्थ होना पूर्ण बना। २ होना उत्पन्न होना। परमसंघ (वि ४७३)। बह. परमसंघ (सुपा ८६)। नाट—विष्णु ४२)।

परमसंघ [प्रमस] १ उत्पत्ति बन्ना प्रसूति प्रसव (अ ६, बसु)। २ प्रथम उत्पत्ति का कारण (एहि)। ३ एक कैलपुत्रि बन्नु-स्वाती का स्थित (कण्ड बसु, एहि)।

परमसा की [परमसा] लुपित बानुसेव की पटरानी (पत्रम २ १८६)।

परमसिध नि [परमसिध] जो समर्थ हुआ हो 'सा विष्णु विष्णुए उद्योगमुनिम परमसिध ने' (बर्मेस १२३)।

परमा की [परमा] १ कर्मात्त लेज (महा ७ बर्मेस १३३३)। २ प्रमाण 'निष्पत्त्योमा एमा सर्वपत्त ले विप्रसि' (वेदिक ३२)।

परमास [परमास] १ प्रातःकाल सुख परमास [परमास] २६ सुर ३, ३३ महा ६ २४४)। २ वि प्रकटित रमणीय परमास (अ १४८ टी)। 'शोभय नि [संसर्गिणम्] प्रायसिक प्रमास-सम्कन्धो, सुख का (सुर ३ २४४)।

परमास पुं [परमास] प्रकट कर (सम १३३)।

परमास बेको परमास = प्र + मासन्। परमास, परमासि (अ १४ १४४)। बह. परमासि (सुपा १७२)।

परमास बेको परमास-प्रमास (सम २४)।

परमास की [परमासकी] १ कौलसे विन-देव की मठा का नाम (अ १३३)। २ रावण की एक पत्नी का नाम (पत्रम ७४

१३)। ३ उत्तम रावण की पटरानी और बैसा गये की पुत्री का नाम (विहि)। ४ बमदेव के पुत्र निपण की मन्त्री (महा १)। ५ राजा बल की पत्नी (सम ११ १३)।

परमास नि [परमास] प्रमाण बढ़ानेवाला शोभा की इतिहास करनेवाला (सा ६ ३२३)। २ उत्पत्ति-कारक। ३ वीर्य बलक (सुर १६८)।

परमास न [परमासन] नीचे बेको (मु ९)।

परमासना की [परमासना] १ मद्रास्य, वीर्य। २ प्रसिद्धि प्रस्तापि (साया १ ११—पत्र १२२ सा ६) महा)।

परमासय नि [परमासय] वीर्य बढ़ानेवाला (इंशो १३)।

परमासक पुं [परमासक] कुल-विशेष (राव)। परमासिध बेको परमास = प्र + मासन्।

परमास संक [प्र + मास] बोलना भाषण करना। परमासि (विदे ४५२ टी)। बह. परमासिध, परमासय परमाससाग (अ ३ २३ पत्रम २५, १४८ ८६ १)।

परमास संक [प्र + मास] प्रकटित होना। परमासि (सुख १२)। मुक्ता—परमासिध (मय भुम्भ १३)। यदि परमासिध (सुख १३)। बह. परमाससाग (कम्प)।

परमास संक [प्र + मासन्] प्रकटित करना। परमास (मय)। परमासि (सुख १—पत्र १४)। बह. परमाससिध परमास साग (पत्रम १ ८ ३३ रमण ७३ कम्प) उदा नीत मय)।

परमास पुं [परमास] १ यवना महावीर के एक पुरुष का नाम (सम १३ कम्प)। २ एक विष्णुवादी परम का प्रविष्टा देव (ठा ३ १—पत्र १२)। ३ एक कैलपुत्रि का नाम (बर्मे ३)। ४ एक विष्णुवादी का नाम (बन्म ३१ टी)। ५ न टीर्क-विशेष (बर्मे ३ महा)। ६ वैद-विष्णुवादी-विशेष (सम १३ ४१)। 'विदेव न [टीर्क] टीर्क-विशेष परमासकी की पवित्र विदेव से विगत एक टीर्क (६६)।

परमासा की [परमासा] परमासा बसा (पत्रम २ १)।

परमासिध नि [परमासिध] उक्त, कथित (सुपा १ १ १२)।

परमाससाग बेको परमास = प्र + मासन्।

परमास बेको परमासि (अ ३३)।

परमास नि [परमासि] इत्यादि बरीख (मय बसा महा)।

परमासि [परमासि] प्रारम्भ कर (महा परमासि [दे] मुक्त कर, लेखन 'आत्ममायायी परमासि [परमासि] (सुर ४ १९७ कम्प परमासि [महा ६ ७३२ २७३ १)।

परमास नि [परमासि] यदि नीचे भाषण उदा मुक्ता (अ १ ११)।

परमास पुं [परमास] १ इत्यदि बसा के एक राजा का नाम (पत्रम १ ७)। २ स्वामी मालिक (पत्रम २३ २४; बह २)। ३ राजा गुन 'परमास मयाम्पु कुलपत्त' (विदे २)। ४ वि सपक, इतिहास (सा २७ मय १३, बसा ठा ४ ४)। ५ योग्य, वाक्य 'परमासि का कोमोति का एमहा' (विदे २)।

परमास संक [प्र + मासन्] मीम करना। परमासि (टी) (कम्प ६)।

परमासि (टी) बेको परमासि (मुक्ता)।

परमास नि [परमासि] १ विदेव बाने का प्रारम्भ किया हो बह (सुर १ २८)। २ विदेव बोजन किया हो बह (स १ ४)।

परमास बेको परमासि (पत्रम १ ७३; स परमास २७३)।

परमास नि [परमास] प्रकट, प्रकट (मय पत्रम २, ३, साया १; सुर १ ८१) महा)।

परमास (मय) बेको स्वमोगा 'मौक्त-परमाससाग' बर्मेस (विदे)।

परमास नि [परमासि] यदि मलिन (साया १ १)।

परमासक नि [परमासक] १ प्रमासक विदेव पत्र। २ विष्णु के समय किया जाता एक तरह का उद्योग (स ७४)।

परमासक नि [परमासि] १ विहित। २ विष्णु के समय विदेव उद्योग किया गया हो बह (बसु सम ७२)।

परमास संक [प्र + मासन्, मासन्] मासन् करना, साक-मुद्रण करना परमासि यदि बूति बरीख की बुर करना। परमास (बसा

परमसंज्ञ न [प्रमज्झन] स्वसत्ता (बर्मेस १ ७६)।

परमसंज्ञ पु [प्रमज्झन] १—२ विपुलकुमार
को के हरिकल्प और हरिसह नामक दोनों
हस्तों के लोकपालों के नाम (अ ४ १—पत्र
१२७: ६६)।

परमसंज्ञक [प्र + भव्] कहना बोलना।
परमसंज्ञक (महा सण)।

परमसंज्ञिण [प्रमसिण] उक्त, अभित
(सण)।

परमसंज्ञक [प्र + भव्] प्रमण करना
मज्झना। परमसंज्ञि (सु १३१)।

परमसंज्ञक [प्र + भू] १ समर्थ होना पहुँ
चना। २ होना उत्पन्न होना। परमसंज्ञ (पि
४७३)। बहु परमसंज्ञ (सुपा ८९ नाट—
चिक ४२)।

परमसंज्ञ पु [प्रमज्झ] १ उत्पत्ति बन्ध प्रवृत्ति
प्रसन्न (आ ६, बसु)। २ प्रसन्न उत्पत्ति का
कारण (एवि)। ३ एक सैन्यसि बानुन्वासी
का पित्र्य (अन्य बसु, एवि)।

परमसा की [प्रमसा] तृतीय बानुदेव की
पटरानी (पत्रम २ १५६)।

परमसिद्धि [प्रमूठ] की समर्थ हुआ हो 'छा
विशया सिद्धमुप जगत्पुनरुत्थिम परमसिद्धि मेव'
(बर्मेसि १२९)।

परमा की [प्रमा] १ कर्मण देव (महा बर्मेस
११११)। २ प्रमाण 'निष्कृत्योपा उमा
सर्वपरमा दे विप्रसिद्धि' (श्वेत ३२)।

परमावध [पुन [प्रमाव] १ मातृवध सुबह
परमावध (पत्रम ७ १६)। २ गुर ३ २४४
महा स २४४)। २ वि प्रकाशित परमावध
परमावध (अ १४५ दी)। तथा वि
[संसीध] प्रामाणिक प्रमावध-सम्बन्धी
मुबह का (गुर ३ २४५)।

परमार पु [प्रमार] प्रकट मार (अम १३१)।

परमावध के [परमावध] १ मातृवध सुबह
परमावध (पत्रम ७ १६)। २ गुर ३ २४४
महा स २४४)।

परमावध के [परमावध] १ मातृवध सुबह
परमावध (पत्रम ७ १६)। २ गुर ३ २४४
महा स २४४)।

परमावध की [परमावध] १ मातृवध सुबह
परमावध (पत्रम ७ १६)। २ गुर ३ २४४
महा स २४४)।

११)। १ स्वाम्य राजपि की पटरानी और
बेड़ा लहेय की पुत्री का नाम (पवि)। ४
बलदेव के पुत्र निषय की भार्या (भाष १)।
२ राजा बल की पत्नी (मव ११ ११)।

परमावध वि [प्रमावध] प्रमाण बढ़ानेवाला
शोभा की वृद्धि करनेवाला (भा ६ २३)।
२ उत्पत्ति-कारक। ३ वीर्य वनक (अम
१९८)।

परमावध न [प्रमावध] नीचे देखो (पु ९)।
परमावध की [प्रमावध] १ मज्झम
नीचा। २ प्रसिद्धि प्रकाशित (छाया १
११—पत्र १२२ का ६ महा)।

परमावध वि [प्रमावध] वीर्य बढ़ानेवाला
(संयोग ३३)।

परमावध पु [प्रमावध] वृद्धि-विशेष (राज)।

परमावध के [प्रमावध] १ मातृवध सुबह
परमावध (पत्रम ७ १६)। २ गुर ३ २४४
महा स २४४)।

परमावध स [प्र + माव्] १ बोधना प्राप्त
करना। परमावध (विदे ४६ दी)। बहु
परमावध, परमावध परमावध (अ
६ २३)। पत्रम १२, १८, ८९ १)।

परमावध स [प्र + माव्] १ प्रकाशित होना।
परमावध (सुख १६)। मुक्ता—परमावध
(भा; सुख १६)। मणि परमावध (सुख
१६)। बहु परमावध (अम)।

परमावध स [प्र + माव्] १ प्रकाशित
करना। प्रमावध (अम)। परमावध (सुख
१—पत्र १४)। बहु परमावध परमावध
माव (पत्रम १ ८ १३)। पत्रम ७२, कर्म
जवा भीषा महा)।

परमावध पु [प्रमाव] १ समवाय महावीर के
एक कृपाकर का नाम (अम १६)। २
एक विप्लवपत्नी पर्वत का पवित्रावा देव
(अ २ १—पत्र १६)। ३ एक सैन्य मुनि
का नाम (बर्मे १)। ४ एक विषयकर का
नाम (अम १६ दी)। ५ न तीर्थ-विशेष
(अ ३ महा)। ६ देव-विमान-विशेष (अम
११ ४६)। तिलक न [त थ] तीर्थ-
विशेष मातृवध की पवित्रावा देव विवत
एक तीर्थ (अम)।

परमावध की [प्रमाव] पवित्रा देव (पत्र
२ १)।

परमावध वि [प्रमावध] उक्त, अभित
(सुपा १ १ १६)।

परमावध वि [प्रमावध] १ मातृवध सुबह
परमावध (पत्रम ७ १६)। २ गुर ३ २४४
महा स २४४)।

परमावध वि [प्रमावध] १ मातृवध सुबह
परमावध (पत्रम ७ १६)। २ गुर ३ २४४
महा स २४४)।

परमावध वि [प्रमावध] १ मातृवध सुबह
परमावध (पत्रम ७ १६)। २ गुर ३ २४४
महा स २४४)।

परमावध वि [प्रमावध] १ मातृवध सुबह
परमावध (पत्रम ७ १६)। २ गुर ३ २४४
महा स २४४)।

परमावध वि [प्रमावध] १ मातृवध सुबह
परमावध (पत्रम ७ १६)। २ गुर ३ २४४
महा स २४४)।

परमावध वि [प्रमावध] १ मातृवध सुबह
परमावध (पत्रम ७ १६)। २ गुर ३ २४४
महा स २४४)।

परमावध वि [प्रमावध] १ मातृवध सुबह
परमावध (पत्रम ७ १६)। २ गुर ३ २४४
महा स २४४)।

परमावध वि [प्रमावध] १ मातृवध सुबह
परमावध (पत्रम ७ १६)। २ गुर ३ २४४
महा स २४४)।

परमावध वि [प्रमावध] १ मातृवध सुबह
परमावध (पत्रम ७ १६)। २ गुर ३ २४४
महा स २४४)।

परमावध वि [प्रमावध] १ मातृवध सुबह
परमावध (पत्रम ७ १६)। २ गुर ३ २४४
महा स २४४)।

परमावध वि [प्रमावध] १ मातृवध सुबह
परमावध (पत्रम ७ १६)। २ गुर ३ २४४
महा स २४४)।

परमावध वि [प्रमावध] १ मातृवध सुबह
परमावध (पत्रम ७ १६)। २ गुर ३ २४४
महा स २४४)।

परमावध वि [प्रमावध] १ मातृवध सुबह
परमावध (पत्रम ७ १६)। २ गुर ३ २४४
महा स २४४)।

परमावध वि [प्रमावध] १ मातृवध सुबह
परमावध (पत्रम ७ १६)। २ गुर ३ २४४
महा स २४४)।

परमावध वि [प्रमावध] १ मातृवध सुबह
परमावध (पत्रम ७ १६)। २ गुर ३ २४४
महा स २४४)।

परमावध वि [प्रमावध] १ मातृवध सुबह
परमावध (पत्रम ७ १६)। २ गुर ३ २४४
महा स २४४)।

परमावध वि [प्रमावध] १ मातृवध सुबह
परमावध (पत्रम ७ १६)। २ गुर ३ २४४
महा स २४४)।

परमावध वि [प्रमावध] १ मातृवध सुबह
परमावध (पत्रम ७ १६)। २ गुर ३ २४४
महा स २४४)।

परमावध वि [प्रमावध] १ मातृवध सुबह
परमावध (पत्रम ७ १६)। २ गुर ३ २४४
महा स २४४)।

परमावध वि [प्रमावध] १ मातृवध सुबह
परमावध (पत्रम ७ १६)। २ गुर ३ २४४
महा स २४४)।

परमावध वि [प्रमावध] १ मातृवध सुबह
परमावध (पत्रम ७ १६)। २ गुर ३ २४४
महा स २४४)।

परमावध वि [प्रमावध] १ मातृवध सुबह
परमावध (पत्रम ७ १६)। २ गुर ३ २४४
महा स २४४)।

परमावध वि [प्रमावध] १ मातृवध सुबह
परमावध (पत्रम ७ १६)। २ गुर ३ २४४
महा स २४४)।

परमावध वि [प्रमावध] १ मातृवध सुबह
परमावध (पत्रम ७ १६)। २ गुर ३ २४४
महा स २४४)।

परमावध वि [प्रमावध] १ मातृवध सुबह
परमावध (पत्रम ७ १६)। २ गुर ३ २४४
महा स २४४)।

परमावध वि [प्रमावध] १ मातृवध सुबह
परमावध (पत्रम ७ १६)। २ गुर ३ २४४
महा स २४४)।

परमावध वि [प्रमावध] १ मातृवध सुबह
परमावध (पत्रम ७ १६)। २ गुर ३ २४४
महा स २४४)।

पमिष्ठक एक [प्र+मीळ] विशेष संकीर्ण
करना अनुवृत्ता। पमिष्ठह (हे ४ २१२,
प्राय)।

पमाय^१ रेवो पमा = प्र + मा।

पमील रेवो पमिल्ल। पमीलह (हे ४ २१२)।

पमुइय वि [प्रमुइय] हर्ष-आपद हृषित
(वीप बीप १)।

पमुंय एक [प्र+मुय] धोइना परियाण
करता। पमुंयि (उप)। कमी पमुंयह
(वि १४२)। मवि पमोक्कवि (माया)।

४६ पमुंयनाम (उप)।

पमुक्क वि [प्रमुक्क] परित्यक्त (हे २ १०
पठ)।

पमुक्कय रेवो पमुह (मुवा १ : ५ ११;
बी १)।

पमुक्किय पुं [प्रमुक्किय] नरणावाह
विशेष (रेवेक २७)।

पमुल रेवो पमुक्क (वि १११)।

पमुवि वि रेवो पमुइय (मुव १ २)।

पमुळ वि [प्रमुळ] धावत मुग (नाट—
माता ४४)।

पमुह वि [प्रमुह] १ लक्ष्मी हट्टिनामा,
‘एकमुह’ (माया)। २ पुं ल-विशेष
ज्योतिष्क देश विशेष (उप २ ३)। ३ न
प्रदुष्ट धारण्य, धारि धारात ‘रिपाणक-
उरिष्को योगा पुहरे हर्षित कुणमहुव’
(पउम १ ११ पम)।

पमुह वि क- [ममुळ] १ बयिळ, धारि।
२ प्रमाण वेड, मुळ (वीप प्राव ११२)।

पमुहर वि [प्रमुहर] नापाव बधारी
(उप १७ ११)।

पमइल वि [प्रमेवस्विक] विचरे छरीर में
जहाँ बहुत हो बह, पुसे पमेने बजने पाइनेति
य नो बह (हे ४ २२)।

पमेय वि [प्रमेय] प्रमाण-विषय, सत्य-
पराई (पमई ११२)।

पमेह पुं [प्रमह] रौप-विषय, पैह रौप
मुन-बीप बहुमुक्ता (निह १)।

पमोअ पुं [प्रमोह] १ धारण्य, पुठी, हर्ष
(मुव १ ७० मुहा उक्ति)। २ उपाय-बैर
के एक उपा का नाम एक सेना-पति
(पउम २, २११)।

पमोक्क^१ रेवो पमुंय।

पमोक्क पुंन [प्रमोक्क] १ कुटि, निवाण
(मुव १ १ १२)। २ प्रमुत्तर, बजाक
‘नो उवाएह’ किचिचि पमोक्कनकाइवें
(मा)।

पमोक्कय न [प्रमोक्कन] पठियाण ‘अठ-
कठिंय धवयासिय बाहुमोक्कण’ करे
(लाया १ २—यन न)।

पमोयणा बी [प्रमोयना] प्रमोयन, प्रमोह
बाह्य, धारण्य (हेव ४११)।

पम्माअ एक [प्र+म्मे] धारिक म्मान
होता। पम्माअवि (शी)। (वि १३१ नाट—
माता १३)।

पम्माअ [वि [प्रम्माअ] १ विशेष म्मान
पम्माअ]। पम्माअ मुल्लया हुया ‘पम्माअ-
विरोडाई व। वह से जामाई बंगाई’ (वा
११ गा ११ डि)। २ दुक्क ‘बहवा य
वायपाभा यभा पम्माअविक्कल्ला’ (ममई
४३)।

पम्माअ वि [प्रम्माअ] १ निस्तेज मुल्लया
हुमा। २ न चौकाल मुल्लया ‘पम्मा
(? म्मा) एएएणिगी’ (पमु ११२)।

पमि पुं [वि] पाणि हाय कर (पह)।

पममुक्क रेवो पमुक्क (हे २ १० पठ
हुमा)।

पममुह वि [प्रामुह] पुन की धोर विरका
पुं हो बह (पवि बज्जा १६४)।

पमहु पुंन [प्रमह] १ धनि-बीप बरनी
बीप के बास (पाध)। १ पध धारि क
केसर, किन्नर (उवा मन विगा १ १)।
१ सुन धारि का धावत माग। ४ पध
पवह (हे २ ७४ प्राय)। १ पैह का धय
माग (वि १ २)। १ पध माग ‘छापलहु
मागल्लल्लल्लल्लल्ल’ (वि १२, ७५)।
७ महाविहै बर्ष का एक विजय—पट्टेय
(उप २ १ ६४)। व न, एक बैर-विमान
(उप ११)। कउ न [कउल] एक बैर
विमान का नाम (उप ११)। कूह पुं
[कूट] १ परवै-विशेष (उप)। २ न
अमोक्क नामक बैरबीक का एक बैर-विमान
(उप १५)। १ परवै-विशेष का एक विजय
(उप २ १ ६)। बमम न [बमम]

बैर-विमान-विशेष (उप ११)। पम न
[प्रम] अमोक्क का एक बैर-विमान
(उप ११)। ‘लेस, लेस न [लेरय]

अमोक्क-विशेष एक बैर-विमान (उप ११
उप)। वण न [वण] बही पुनोक्त
धर्य (उप ११)। (सिंग न [अठक] बही
धर्य (उप ११)। ‘सिद्ध न [सिद्ध] बही
पुनोक्त धर्य (उप ११)। विच न [विचै]
बही धर्य (उप ११)।

पम्ह रेवो पठम (पह १ ४—पठ १०
उप-बीप १)। मय वि [मय] १
कमल की गज। २ वि कमल के समान
पम्हवाला (मय १ ७)। ‘लेस वि [लेदय]
पया नामक लेदयावाला (मय)। लेसा की
[लेरया] लेरया-विशेष पौनर्बी लेरया
वाला का शुभकर परियाण-विशेष (उप १
१)। उम ११)। लेस रेवो लेस (पह १
१०—पठ ११)।

पम्ह एक [प्र+म्ह] मुंय बाता विस्वरण
होता। पम्हय (पह ११)।

पम्हावई बी [पद्मअवती] महाविहै
बर्ष का एक विजय, प्रदेय-विशेष (उप २
१ ६४)।

पम्हु वि [प्रामुह] १ विस्मृत (वि ४
४२)। २ विरको विस्वरण हुया हो बह
‘वि पम्हु वि बहं नुन कण्णपण्णविह
माविज्जएण’ (वि १ १२)।

पम्हु वि [वि] १ प्रमट, विस्मृत (वि ४
४५)। २ कौप हुया, प्रसन्न ‘पम्हु का
पठिबिर् वि का एण्ड’ (बव १)।

पम्हय वि [प्रमह] १ पम से उताप।
२ न एक प्रकार का मुता (पमभा)।

पम्हर पुं [वि] मागु, प्रकाल-मरण (वि
१ १)।

पम्हु वि [प्रमह] पम-मुक्त गुहर
धारि-बीपवाला (हे २, ७४)। मुता पठ
भीन पठ मुव १ ११८ पाध)।

पम्हु पुं [वि] किन्नर पध धारि क केसर
(वि १ ११; पठ)।

पम्हिय वि [वि प्रमहिय] बरमित
सकेर जिहा हुया ‘मायएणमेहापनाहपम्ह
विजयगिगिमायो’ (उप ११)।

पम्हस छक [वि + स्सु] विस्मरण करना
भूत बला। पम्हस (पह); पम्हसिभानु
(घ १४८)।

पम्हसाविष वि [विस्मरिण] भुक्ता हुमा,
विस्मृत कृपा हुमा (बुध २ ४)।

पम्हा बी [पहमा] १ बैरवा-विशेष पध-
लेखा; भाणा का मुकुट परिलाम-विशेष
(कर्म १ २१ या २४)। २ विजय-शेखर
विशेष (पञ्च)।

पम्हार पुं [है] अपमृग, बेनीय मरु
(ह १ १)।

पम्हाई बी [पम्हावती] १ विजय-विशेष
बी एक मण्टी (अ २ १ इक)। २ पर्वत-
विशेष (अ २ १—पत्र)।

पम्हट्ट वि [है] १ लट, लट प्राप्त (है ४,
२२८)। २ विस्मृता पम्हट्ट विस्मृति
(शाय) 'कि न तर्प पम्हट्ट (छाया १
४—पत्र १४४ विचार २१४)।

पम्हुत्तरबहिर्दण्ड न [पम्होत्तरावर्तक]
छलोक में स्थित एक शेर विमान (कर्म
१२)।

पम्हुस छक [वि + स्सु] भुक्ता विस्मरण
करना। पम्हुस (है ४ ४१)।

पम्हुस छक [प्र + मुहा] हाथी कण्ठ।
पम्हुस मम्हुस (है ४ १ कुमा २१)।

पम्हुस छक [प्र + मुपु] बीघा का कोष्ठ
कण्ठ। पम्हुस पम्हुस, पम्हुसि (है
४ १८४ कुमा ११४ कुमा २१)।

पम्हुसज न [विस्मरण] विस्मृति (वैशा
१४, १४)।

पम्हुसिज वि [विस्मृता] भिन्ना विस्मरण
हुमा हो वह (हुमा २४ ४१ टी)।

पम्हुस छक [स्सु] स्मरण करना, याद
करना। पम्हुस (है ४ ४४)।

पम्हुस वि [स्मर्तु] स्मरण करनेवाला
(हुमा)।

पर्म छक [पर्म] पुराणा छक करना।
पर्म (है ४ ६)। पर्म पर्यय (रण)।
छक पर्म (हुमा २१४)।

पर्म छक [पर्म] १ जला। २ जाला। ३
विचारना। पर्म (विशे ४ ४)।

पर्म पुन [पर्मसु] १ छीर, हुमा 'पर्मो'
(है १ १२) बीर १२१ पाप)। २ पापी
बच (हुमा १११ पाप)। हर देखो
पर्मोहर (विप)।

पर्म पुं [प्रम] प्रसीध कम्प (पाषा)।

पर्म पुन [पर्म] १ विरहित के साध का छक,
'पर्मपक्षपात' शीर्षक न छे नामियाई
पर्मवि (विशे १ १ प्रामु ११४ या
२१)। २ छक-समुह, नाम 'जपसपमा
इहं छकपा' (अ १ १४ या २१)।
३ पैर, पाँच बरछ 'बाई न छकपाउकलीह
लानो छेमि मेरुप, कर्मपुं बालो इह'
नाम न छकप पर्म पर्मपुं मिमो छि'
(हुमा १; बर्नि १४ हुमा १ १४ या
२१)। ४ पार्श्व-पार्श्व (हुमा २ २१२
हुमा १२४ या २१; प्रामु १)। ५ पध
का बीघा हिस्सा (मृग)। ६ मिमित
भरण (धाला)। ७ लाला 'पर्मपाउपर्म
हि छेव ति' (हुमा २, ११४ या २१)।

पर्मो धर्माचार 'हुमापप' कि नहि
पर्मिचर देव मे पुछो' (हुमा २ १०४
या)। ८ पध छक १ प्रमो ११
अवसाध (या २१)। १२ लट बल-विशेष
(हुमा १ १ २८)। १३ लोम न [लोम]
शिब कर्मण 'हुमाह घ घी पर्मोवकपु'
(बस ६ ४ १)। १४ पुं [पर्म] पदाति
पर्म व्यासा 'हुमाह छह हुमो पाहो छह
पर्मोव' (पत्र १ १ २)। पास पुं
[पास] भाषण बाल धारि बलन (हुमा
१ १ २ ४२)। १५ लट पुं [पर्म]
पदाति व्यासा (विशे ४ ४ ४१)।
बागाह पुं [विग्रह] पक्षी-शेखर (विशे
१ १)। बिभाग पुं [विभाग] कर्तव्य
धीर पदाति का पदा-स्मरण विशेष साध-
पाटी-विशेष (या १)। बीह देखो पास-
बीह (पत्र ४ हुमा ११४)। समास
पुं [समास] परो का लुकार (कर्म १
४)। गुमाति वि [गुमाति] एक बर
मे स्नेह धनुष बरी ना बी स्नेहबल करने
बी शक्तिबला (धीर इह १)। 'गुमा
रिबी बी [गुमाति] बुद्धि-विशेष एक
पर्म के बलपुं से हुमो समुत्त बरी ना लव
बला मलोतली बुद्धि (पत्र २१)।

पर्म (पर्म) देखो पर्म = प्राप्त (विशे)।

पर्म देखो पर्म = प्रका। 'पाह वि [पाह]
१ प्रका का पाहक। २ पुं हुमा-विशेष
(विशे ४२)।

पर्म वि [पर्म] देखना, पीहपर्म (रंछ)।

पर्मइ बी [पर्मवि] रंछि का प्रयास (मृग
११२)।

पर्मइ देखो पर्मइ (या ११४ गड गड
ल ११ सत ११४ मृग, हुमा १४१)।

पर्मइ पुं [पर्मो, पर्मो] बल-पार्श्व
बाटीय देखो का छक (अ २, १)।

पर्मइ देखो पर्मो (पत्र)।

पर्मो पुं [पर्म] १ धूप रंछि (पर्म)। २
हुमा-पुष्प-पर्मो पर्मो इह 'हुमा-पुष्प-पर्मो'
(अ ४२८ टी)। ३ रंछ-विशेष, रंछ-
पर्म-विशेष (अ ४ ४ विरि १ १४)।
४ छक पर्मिना, छकनेवाला छीटा छि
(या १ १४ पाप)। ५—६ देखो
पर्म = पर्म, पर्म पर्म (पत्र ४ ४—
पत्र १४ पाप)। बीहिया बी [बीहिया]
१ छक का कर्म। २ जिना के शिर्ष
पर्म बी छह बला बी में हो पर्म बरी
की छोले हुमा जिना मेना (उप १ १६)।
बीही बी [बीही] बरी पुनोह पर्म (अ
१ १६)।

पर्मपुन पुं [पर्मपुन] मल-कर्म-विशेष,
नक्षत्री पर्मपुन का एक प्रकार का बल
(विशे ४ ४—पत्र ४२)।

पर्मवि [पर्मपुन] १ मृग लोहा प्रम।
२ बलाक पर्मकर (पत्र १, १ १४
पर्म)।

पर्मवि [पर्मपुन] धनुष जल (पत्र
४ ४)।

पर्मवि देखो पर्म = पर्म।

पर्मि छक [प्र + कर्म] धर्माध कर्म।
मह. पर्मिमाज (ह ११६)।

पर्मि छक [प्र + जर्म] १ बला,
बला। २ कर्मकर करना। पर्मि (मृग)।

छह पर्मिपुन पर्मिपुन (मृग १
२ ४)। छ पर्मिपुन (या ४२ हुमा
१२२)।

बहा देह (भा २१)। बाय वि [पाव्]।
 भट्ट वैयालता (भा २१)। बाय वि [बाक्]।
 फीत शक्ति (भा २१)। बाय वि [बाय]।
 १ विरोध मान्य से शत्रु की विना करनेवाला।
 २ पुं स्त्री धनान्त्र। १ सुन्द, योडा (भा २१)। बाय वि [पाव]। घाल-मुन्द, को प्रारम्भ में ही सुन्द हो बह (भा २१)।
 बाय वि [प्राय]। देव विनाशवाला (भा २१)। बाय वि [पाय]। अँठ खावाला निचरी खा का उतम प्रबन्ध हो बह। २ अत्यन्त प्यासा। १ पुं राजा गेरु (भा २१)। बाय वि [क्याव]।
 १ इतर के पास विरोध बनानेवाला। २ पुं मित्र माचक (भा २१)। बाय वि [पायस्]। १ हुंसे की खा के लिए हथियार रखनेवाला। २ पुं सुन्द योडा (भा २१)। बाया की [भ्यात्रा]। बेरवा बारोला (भा २१)। बाया की [भ्यागस्]।
 धरती कुल (भा २१)। बाया की [भ्यापा]। धीरुम छत्र की विधि (भा २१)। बाया की [पाता]। कुत-नीमी (भा २१)। बाया की [प्राया]। हुन क्य (भा २१)। बाया की [पारा]। मर-मुनि (भा २१)। बाया की [बाक्]। करमीर-मुनि (भा २१)।
 बाया की [बाक्]। दुप-रिक्ति (भा २१)। बाया की [पाव्]। रखनी बन्य-विरोध (भा २१)। बाया की [भ्यात्रा]। सेप बाध-विरोध (भा २१)।
 बिपस दु [विदेरा]। परदेरा, विदेरा (पदम १२ १६)। बस देवो बस (बह ५ २६४ अति)। "संतिग वि [सत्क]। पर-संभली परलीय (पद १ ३)। समप दु [समय]। इतर हरीन का सिद्धांत "बनभया नयनामा ताहदा केव परधम्य" (सम १४५)। हुम वि [सुत]। १ हुंसे से गुट, क्य से पाकि (प्रज)। २ पुंजी, कीलक निक पत्ती (क्य)। की. भा (पु १ १५ पाय)।
 १ पाय देवो पाय (प्रासु १ ४५ धम १७)।
 १ पीण देवो पीय (बर्मे १ ११५)। पाय वि [पाक्]। परपीन परलन (पदम ६४

१४ जव १६२ म्हा)। १ हीण वि [पीन]। परलन परलय (माट—मालवि २)।
 पर देवो परा—घ (भा २१ पदम ६१ ८)।
 पर घ [परम्]। १ परलु किणु, "बं तुनं कायवेति वि परं दुह दूरे मय" (म्हा)।
 २ उपाय "नो से कयह पयो बाहि, ठेय परं, बल्य म्हायंरंखलरितारं कसलपति ति केति" (कस १ २१ २४—७४ १२—२६)।
 १ केवल कस "एस म्हा संतावे, परं माउसवमन्त्रलेख जह म्हागल्लवि" (म्हा)।
 परं घ [परम्]। बायाली बरं "बयं कसं परं परति" (वि २)। "कयं परं परति"।
 पुरिखा बिंति वि घालयंपति (प्रासु ११)।
 परंग घक [परि + घक्]। बलना पति कला। कयह-परंगिजामाण (वीर)।
 परंगमाण न [पर्यङ्गन]। वीर से बलना, बलमाण (वीर)।
 परंगमाण न [पर्यङ्गन]। बलना बलमाण कला (भा ११ ११—पद १४५)।
 परंयम वि [परतम्]। क्य को हेतुन करने वाला (झ ४ २—पद २१९)।
 परंयम वि [परतम्]। १ क्य पर कोष करनेवाला। २ क्य-विषयक प्रधान रखने-वाला (झ ४ २—पद २१९)।
 परंतु घ [परम्]। किणु (पुगा ४६६)।
 परंयम वि [परयम्]। १ क्य को पीडा पहुँचाने वाला (ज ७ १)। २ क्य को हल करनेवाला। १ क्य धारि को सिक्तालेवाला (झ ४ २—पद २१९)।
 परंपर } वि [परम्पर]। १ क्रिन्-क्रिन् परंपरा } (उति)। २ क्य-विषय परंपर परंपरा } छिद—(पद १)।
 १)। १ पुन परम्पर बलिभिल्ल बाप (ज ७११)। "पुरिसपरंपरएखे देखि द्धुम बाहिना"। "एव बन्धपरंपरो" (बाय १)।
 "परंपरो" (क्य)। बर्मे १ १११। ११ ६)।
 परंपरा की [परम्परा]। १ क्य-विषय परंपरा (क, वीय पाय)। २ बलिभिल्ल बाप परंपरा (शाय १)। १ निरुत्तर, स-व्यवधान (ध १)। ४ क्य-विषय परंपरा

परंपरापरंपरा केव परंपरीनपरंपरा केव (झ २ २ मप ११ १)।
 परंभरि वि [परम्भरि]। हुंसे का के मने वाला (झ ४ ३—पद २४७)।
 परंमुह वि [पराम्मुह]। हुंसे-विषय विमुह (वि २१७)।
 परकीय वि [परकीय]। क्य-सम्बन्धी इतर परकीय } से सम्बन्ध रखनेवाला (वि ४१ परक }। पुगा १४६ मपि १११ पद स्वय ४ स २ ७ पद)। "न सेविताया पमया परका" (मोय ११)।
 परक न [वि]। छीय प्रमाह (वि ६ ८)।
 परकट वि [परकटम्]। १ विरुद्ध परकट क्रिया हो बह। २ क्य से बाधक "माया गुपानं दुरजनाउल्लस कुबमानं दुपारकटं मय" (भाय)। १ न. परकट म। ४ उतम प्रयत्न। १ मनुमान "ने पदुदा महाभागा नीर मयनचरविरो मनुदं वैपि परकटं" (तुम १ स २२)।
 परकम घक [पर + कम्]। परकम करना। परकमे परकमेका परकमेकाति (भाय)। बह-परकमेव परकममाय (भाय)। १ परकमिषयक परकम (छाया १ १)। पुग १ १ १)।
 परकम घक [पर + कम्]। १ बाया। २ बायेबन करना। ३ घक प्रवृत्ति करना। परकमे (बह ३ १ १)। परकमिषयका (बह ४ ४१)। छक परकम (बह ४ ३२)।
 परकम पु [परकम]। बर्मे बायि वि निम्न मान (बह ३ १ ४)।
 परकम पुग [परकम]। १ बीय बह शक्ति सामर्थ्य (वि १ ४६ डा १ १)। पुगा, "उल्ल परकमं नीयमाछे न तप सुवं" (ममत् १७)। २ उल्लाह। ३ शिष्टा प्रयत्न (भाय)। प्रासु ६१ भाय)। ४ शत्रु का नाश करने की शक्ति (ब १)। ५ पर-भायस पर-परायस (झ ४ १)। भाय)। ६ पन पति (बह २ १ १)। ७ मार्ग (शाय ४ ४ ४ ४ ४)।
 परकमि वि [परकमि]। परकम-संयन (बर्मे ११ १२)।

परग न [ह] परक] १ दुण-विटोय, विटोये
दुण दुने बाने हैं (भाषा ० २ १ २ ;
मुप १ २ ०) । २ बाय-विजय (मुप
१ २ ११) ।

परग नि [पारग] परग गज का बग हुमा
(भाषा १ १ ११ १ २, २, १ १४) ।

परगमय नि [प्रगाराक] प्रगारा करनेवाला
(हु ४६) ।

परगप नि [परापे] परपे महीना बहुमुख
(रु ७ ४१) ।

परज (घन) सर [परा + जि] परजय
करता हुआ । परजद (घनि) ।

परजय (घन) नि [पराजित] परजय-
मान हुआ हुआ (घनि) ।

पराम नि [ह] १ पर-कय परपीन
कयन 'मेनि'वा मुष्पाटनगई के देन
देनगइया परन' (रु ४ ११ रु ४५) ।

२ दुन परनगना बरापीनता (रु १—
पन २ १ मा ७ पन ११४) ।

परटु केनो परिअटु ० परितरि (बीजय २२२ ;
पर १९) वम ३, २६) ।

परसा छी [ह] नर-विटोय (१६, ३)
'अपार' दुगवाली अपारदेनमि कय
परसा क्यो कीसा न क्यो (मुग १२) ।

परसारिउ दु [पारारिक] परली-कयट
(गम १ २ १ ७) ।

परख नि [ह] १ कीति दु-गिन (१६
७ पाप मुग ० ४ १६ १८० पर ३
२२ नगा) २ कीति । ३ मोर करतोफ
(१६) । ४ कयन 'मेनि' बगडा सीग
न सेनगई 'रु' हनि (बगडा १८)

परपर केनो परपर (रि १११ मा—
बाग्ये १६) ।

परपयबयाय (को परमय पर + मु
परमय नि [ह] कीर हागीर (पर)

परमाय दु [ह] दुग मेनुन (१६ १२)
परम नि [परम] १ पराट, नर-विटोय (गप
१ ६ को १७) २ वम बरौतन
पहु (१८० ४ वर १ गुग) ३ वम
पदन (गप १ १ मा की) । ४
वम वम वम (रु १ ३) । २ दु

मोन मुकि । १ वम बारिज (भाषा
मुप १ ६) । ० न. मुच (रु ४) । ४

नगावार पन किं का अपाव (हंकीय
२५) । ६ दु [ह] १ वम परन,
बाय-विटोय 'अप' परपे केने म्पुटु

(का वर १) । २ मोन मुकि (रु १६)
पण १ १) । ३ वम बारिज (मुप १

६) । ४ वम. केनो कीने 'रु' वर १ पर
महुमिदुपटु (परि वर १) । वम केनो
म (वम १२१) । 'रु' वम [ह] १

वम नम 'वम' परम' (पाप) परम
वम' (घनि १२) । २—४ केनो दु
(मुग २४ ११) । वम वम १६४ मगा) ।

रु न [ह] वमोय वमियार, वमोय
वम (रि १ १) । वमि नि [ह] वमि
१ मोन देनगना । २ मोन-वम' का

कनवार (भाषा) । वम [म] १ वीर,
दुग-वमन विट मोन (मुग १६) । २

वम वम का अपाव (हंकीय २८) । वम
न [ह] वम मोन निमिदु मुकि (गप
मि पर ४ १ वम ४५) । 'रु' दु

[ह] वम] वमोय वम, परमवर
(मुग मुग ०३ वण ४१) । वम
केनो वम (मुग १२०) । वम केनो

'रु' (घनि) । वम छी [ह] वम] मुकि,
मोन केनेनि वमिदु वरिदरिदु

वमवम वम' (मुग १२०) । वमिदु
दु [ह] वमिदु वम' वम' वम' वम' का
वम वम (वम १) । वमिदु न

[ह] वम] वम-विटोय (वम ४ ७१) ।
मम-वमिदु नि [ह] मम-वमिदु
वमिदु वमिदु, वमिदु वमिदु (वीर

वम) । मम-वमिदु नि [ह] मम-वमिदु
वमिदु वमिदु (वम १) । 'रु' वम

[ह] वम] वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु
(रु १ ७) २ वमिदु वमिदु वमिदु
(रु १ १) । 'रु' वमिदु, वमिदु वमिदु

वमिदु (वम १८) । वमिदु वमिदु
वमिदु वमिदु (वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु
वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु

वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु
वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु
वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु

वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु
वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु
वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु

वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु
वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु
वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु

वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु
वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु
वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु

वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु
वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु
वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु

वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु
वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु
वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु

परमाइमिदु नि [परमवमिदु] वमिदु वमिदु
वमिदु वमिदु (रु ४ १) ।

परमिदु दु [परमिदु] १ वमिदु वमिदु
(पाप वमिदु ७८) । २ वमिदु वमिदु
वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु

वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु
वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु
वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु

परमुद नि [परामुद] वमिदु वमिदु (वमिदु
२६) ।

परमुदगारि } नि [परमोपरमिदु] वमिदु
परमुदगारि } वमिदु वमिदु वमिदु (मुग २
४२, १ १०) ।

परमुद केनो परमुद (रु २, १९) ।

परमिदु केनो परमिदु (मुग वमिदु वमिदु
४६६) ।

परमसर दु [परमोपर] वमिदु वमिदु वमिदु
वमिदु वमिदु (वमिदु ४४४ वमिदु) ।

परमुद नि [परामुद] वमिदु वमिदु वमिदु
वमिदु वमिदु (वमिदु १२) । वमिदु वमिदु
वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु

परम न [परक] वमिदु वमिदु वमिदु (रु
१४ १४) ।

परमोद नि [परमोदिक] वमिदु वमिदु
वमिदु वमिदु (भाषा वमिदु ११६ पण १ २) ।

परमाय नि [परमाय] १ वमिदु वमिदु वमिदु
वमिदु वमिदु (वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु
वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु

परमाय नि [परमाय] १ वमिदु वमिदु वमिदु
वमिदु वमिदु (वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु
वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु

परमाय नि [परमाय] १ वमिदु वमिदु वमिदु
वमिदु वमिदु (वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु
वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु

परमाय नि [परमाय] १ वमिदु वमिदु वमिदु
वमिदु वमिदु (वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु
वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु

परमाय नि [परमाय] १ वमिदु वमिदु वमिदु
वमिदु वमिदु (वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु
वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु

परमाय नि [परमाय] १ वमिदु वमिदु वमिदु
वमिदु वमिदु (वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु
वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु

परमाय नि [परमाय] १ वमिदु वमिदु वमिदु
वमिदु वमिदु (वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु
वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु

परमाय नि [परमाय] १ वमिदु वमिदु वमिदु
वमिदु वमिदु (वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु
वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु

परमाय नि [परमाय] १ वमिदु वमिदु वमिदु
वमिदु वमिदु (वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु
वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु

परमाय नि [परमाय] १ वमिदु वमिदु वमिदु
वमिदु वमिदु (वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु
वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु वमिदु

परग न [दि परक] १ लुख-विरोध विरुधे
बुद्ध इति कते हैं (भाषा २, २ १ २)
पुप २ २ ७) । २ बाज-विषय (पुप
२ २ ११) ।

परग नि [परग] परग पुष का कमा हुमा
(भाषा २ १ ११ १; २ २ १ १४) ।

परप्रसव नि [प्रसवराक] प्रसव करनेवाला
(पुप ४१) ।

परगय नि [परार्थ] महर्ष महर्षा बहुमुख
(रस ७ ४१) ।

परज (घर) एक [पर + जि] परजक
कला हउला । परजकर (महि) ।

परजिय (घर) नि [परजित] परजय-
श्राव हउला हुमा (महि) ।

परक नि [वे] १ पर-कल परबीन
परकला वैरुडवा । मुक्करपरवादि ते देवज-
वोलापुक्का परकल (जय ४ ११ इह ४) ।

२ पुन परकला परबीनला (अ १—
बन २ २; मय ७ न—पत्र ११४) ।

परह वैको परिअह = परिचर्य (बीजक २२२;
बन १११ कमर २, २२) ।

परबा की [वे] सर्व-विरोध (२ १ २)
‘जन्मार्थ’ मुलमाखी मपारुहसमि मय
परबा, कुंठो पीडाए मदी (मुपा १२) ।

परहारिअ पु [पारहारिक] परबी-कमर
(पत्र १ २, १ ७) ।

परह नि [वे] १ पीठ, मुक्ति (२ १
७) । पाम मुक ७ ४ ११ १२०० अ ह
२२ महा) । २ पठित । ३ पीठ, कलेक
(२ १ ७) । ४ कला ‘पीठ परदा पीठा
न वेसपुण्डरबिखो होलि’ (कमरो १४) ।

परप्पर वैको परोप्पर (रि १११; मय—
मालती ११) ।

परममबामाय वैको परामय न पय + पु ।

परमय नि [वे] बीर कलेक (बह) ।

परमाअ पु [वे] मुण्ड वैजुन (२ १ १७) ।

परम नि [परम] १ कण्ट, सर्वाधिक (पुप
१ १; बी १७) । २ कल सर्वोत्तम
वैह (पत्रक ४ बर्ष १ मुपा) । ३ उत्तम
पण्ड (परह १ १, मय बीन) । ४

प्रबल बुद्ध (भाषा बर २ १) । २ पु

मोक्ष मुक्ति । १ सर्वम कारिण (भाषा
पुप १ १) । ७ न. बुद्ध (रस ४) । ८

कपादार पाँच किंवा कपवाध (संबोध
२८) । ६ पु [‘मि’] १ सल क्वाले,

वास्तविक पीन ‘घर परपट्टे सेठे मण्ड’
(जय बर्ष १) । २ मोक्ष मुक्ति (जय १८;

परह २ १) । ३ सर्वम कारिण (पुप १
२) । ४ पुन. वैको नीचे रज = ली ‘पर

महुमिदिमुहा’ (पठि बर्ष २) । पय वैको
मन (सम १११) । २ ब पुन [‘मि’] १

लक्ष द्रव्य ‘मति परमल’ (पाप) परम-
लक्ष (पत्र ११) । २—४ वैको ह

(मुपा २०१ ११) । ससा प्रापु १९४ महा) ।

रय न [‘मि’] सर्वोत्तम इतिवार, मयोव
प्रस (वे १ १) । बंमि नि [‘विराज’]

१ मोक्ष वैभववाला । २ मोक्ष-मार्ग का
वातकार (भाषा) । अ न [‘म’] १ बीर,

मुक्क-बाल मिह योवन (मुपा ११) । २
एक दिन का उपवास (संबोध २८) । पय

न [‘पु’] मोक्ष निर्वाण मुक्ति (पाप-
मति बनि ४) । पना १४) । पय पु

[‘मय’] सर्वोत्तम भासा परमेस्वर
(मुपा मुपा २१ खल ४१) । पय

वैको पय (मुपा १२७) । ‘पय वैको
‘पय (महि) । पयवा की [‘मसा’] मुक्ति,

मोक्ष ‘वेवेवि पाषाणित धरिरेधिरपूरी
परमकर्म पती’ (मुपा १२७) । बोधिसत्त्व

पु [‘बोधिसत्त्व’] परमाईष्ट धर्म्म ल का
पय कल (मोक्ष १) । वैजिअ न

[‘संकरय’] संकम-विरोध (कम्य ४ ७) ।

सोमयस्सिय नि [‘सोमनस्सिय’]
सर्वोत्तम फलवाला, ईश्वर मयवाला (वीन

नय) । सोमयस्सिय नि [‘सोमनस्सिय’]
बही बर्ष (वीन कय) । ‘होअ की [‘होअ’]

कयक विरकार (मुपा ४७) । ३ न
[‘मय’] १ कला मयुय बही बपर

(पत्र १ ७) । २ बीधित बाज उपर
(विपा ११) । ३ पु [‘पु’] सर्व-सुख

परमाहमिय नि [परमार्थमिक] बुद्ध का
प्रतिपत्ती (रस ४ १) ।

परमिदि पु [परमेस्वर] १ ब्रह्मा, ब्रह्मण्य
(पाप) समल ७) । २ बर्ष, पिड

भवात्त उपलब्ध बौर मुनि (मुपा ११;
बौर ११ मय ११ मिसा २) ।

परमुअ नि [परामुअ] परमयक (पत्र ७
२२) ।

परमुपायि { नि [परमोपायिक] बहा
परमुपायि { उपकार करनेवाला (दूर १,
४२ २ १७) ।

परमुह वैको परमुह (वे २ १९) ।

परमेदि वैको परमिदि (मुपा पवि वेध
४११) ।

परमेसर पु [परमेसर] सर्व-सर्व-समल
परमात्मा (समल १४४ मयि) ।

परमुह नि [परामुह] विमुह दुर्-विह-
ज्जाली (मुपा १ २) काय ७११; ना
१८०) ।

परय न [परक] भावितव्य मतिव्य (जय
१४ १४) ।

परमेइअ नि [‘पारमेइअ’] बमलपर
संबन्धी (भाषा सम १११; परह १ २) ।

परबाव नि [‘प्रबाव’] १ प्रकट रख के
प्रिया करनेवाला । २ पु साधक, रम

हृदयनेवाला (या २१) ।

परबाप नि [‘प्रबाव’] १ बेट पला कने-
वाला । २ पु उत्तम क्रीडा (या २१) ।

परबाय पु [‘प्रबाव’] नाव (अन) घले का
कोय बह बर बहा नाव ईश्वरीय फल

बला है, कोलर, बहार (या २१) ।

परवाया की [‘प्रबाव’] धिर-मदी बहरी
मदी (या २१) ।

परस (पय) वैको पयस = स्वर्ग (मिह मयि) ।

मणि पु [‘मणि’] रज-विरोध किंवा
मर्त से मोक्ष मुक्त होना है (मिह) ।

परपण्य (घर) वैको परपण्य (मिह) ।

परसु पु [परह] प्रक-विरोध पत्रक मुलर,
मुलारी (मय २ ११; मय १; २१;
काय) । यम पु [‘यम’] बमलीन मयि
या पुन किन्हे चोपे बर निःश्रयि मुक्ती
की की (मुपा रि २) ।

परसुहस दु [हे] कुय रेह बरज (२१ २२) ।

परस्तर धुकी [हे पराशर] वेन, पनु-विरोध (पण्ड ११ राज) । भी दी (पण्ड ११) ।

परसुहस नि [परामृत] परनिव हयमा पया (पयम ११ ८) ।

परा य [परा] इन यो का सुचक धम्य—

१ भातिभुवन संभुजडा । २ त्याग । ३ बर्ण । ४ प्राशन्य मुस्यता । ५ विभज्य । ६ यति यमन । ७ भङ्ग । ८ पनावर । ९ शिखर । १० प्रभाषतन (हे २ २१७) ।

११ सुग धावत (डा १ २ या २११) ।

परा भी [हे परा] दुसु विरोध (पण्ड २ १—पय १२१) ।

पराह सक [परा + जि] हयमा परजय करण । संज पराहयता (मुमनि १२२) ।

पराहय नि [परजिन] परामय-यास (पयम २, ८१ बरिग घ ११३४ गुर ६ २३ ११ १०२ लत १२ १२) ।

पराहय (परा) नि [परगत] क्या हया (मनि) ।

पराहय केओ परातिग । पराहय (पि ४०१ मय) ।

पराह्ये भी [परकीपा] इतर व संभव रजने-बासी बह नाविन को पण्डप से प्रेम करे (हे ४ ११ ११०) । रेओ पराय = परकीय ।

पराकम केओ पराकम (पुप २ १ १) ।

पराक्य नि [पराक्य] निपकय निरस्त (पयम १) ।

पराकर सक [परा + क] निराकय करण । पराकरिण (सी) (गाट—बैत ११) ।

पराजय दु [पराजय] परिजय यमिम हार (राज) ।

पराजय } सक [परा + जि] परजय परजिण } करण हयमा । मुन, परजय विष्ण (पि ११०) । मनि पराजिणस्तर (पि १२१) । संज पराजिणिया (दा ४ १) । हेह पराजिणियार (यम ७ ६) ।

पराजिणिय } केओ पराहय = परजिय परजिय } (ज ५ १२० म्हा) ।

पराज केओ पाय = प्राय (गाट—बैत १४ ११२) ।

पराजग नि [परकीय] धम्य का द्वारे का 'कत्य विरासुधुसय' हत्येण पराणपि नो किये' (पण्ड २ १) ।

पराजिय नि [परजात] पहुँचा हया (मनि) ।

पराजी सक [परा + जी] पहुँचाना । पराणप (मनि) । पराणमि (स २१४) 'बह मण्डि का निवेधमिसेण पुमं धाममिरे पराणमि' (कुम १ १) ।

परानमय न [परानयन] पहुँचाना 'नियम मिश्रपरानमये का लमा धनि य ज्ययो एव' (डा ७२८ टी) ।

परामय सक [परा + मू] हयमा । कनक परामयिज्यंत, परकमयमात्र (ज १२ टी लाया १ २१ १८) ।

परामय दु [परामय] पराजय हार (पिया १ १) ।

परामयिज्य नि [परामृत] यमिमृत हयमा हया (मनि ६८) ।

परामट्ट रेओ परामट्ट (यम १८ ७७) ।

परामरिस सक [परा + मुश] १ निचार करता विवेचन करण । २ सार करण । परामरिसह (मनि) । बह परामरिसंत (मनि) । संज परामरिसिय (गाट—पुण्ड ८७) ।

परामरिस दु [परामर्श] १ विवेचन निचार (प्राग) । २ बुद्धि उपपत्ति । ३ स्मर्त । ४ धम्य-शास्त्रिक व्याभि-मिरिट् क्य से पक्ष का ज्ञान (हे २ १ १) ।

परामिट्ट } नि [परा + मु] १ निचारित परामट्ट } निवेधित । २ सट्ट हया हया (गाट—पुण्ड १२ हे १ १११ घ १ कुम ११) ।

परामुन सक [परा + मुश] १ स्मर्त करण हया । २ निचार करण विवेचन करण । ३ धाम्यावित करण । ४ पीकना । ५ सोर करण । परागुर (कय) । कर्त 'सुपे परागुरिणर एमिमिहृतिवचरुमिहि' (उतर १२१) । बह-मिमचरिणरेण नयलाई परामुसंतण किये' (कुम ११) ।

कनह परामुसिजमाण (स १४६) ।

परामुसिय रेओ परामुट्ट (यम पाय) ।

पराय सक [प्र + राज] विरोध शोभा । बह परायंत (कय) ।

पराय दु [पराग] १ बुली रज 'पणु पंमु रयो परायो य' (पाय) । २ पुन-रज (कुमा गठक) ।

पराय } नि [परकीय] पर-संबन्धी इतर परायग } से संबन्ध रखनेवाला 'नो प्रमणा पयमा दुसुको कयमिहि हृति गुदाय' (सट्ट १ ११ हे १ १०९ मय ८ १) ।

परायण नि [परायण] उत्तर (कम १ ११) ।

परारि य [परारि] भाषामो शेषर बर्त (प्राय ११ हे २) ।

पराउ रेओ पराउ (प्राय ११८) ।

पराय (परा) सक [प्र + आप] प्राप्त करण । पराहि (हे ४ ४४२) ।

परावत सक [परा + वृत्] १ बलना, पलटना । २ पीके लौटना । परावतह (उतर ४८) । बह परावतमाण (राज) ।

परावत सक [परा + वर्य] १ कियण । २ भावित करण । परावतति (पय ७१) । परावतति (सोह ४०) । सट्ट 'नो धारेण मयिमं यरे परावतिऊण नियमय' (कुम १०८) ।

परावत दु [परावर्त] परिवर्तन हेरहेर, हेरहेरे (स १२ ज ५ २० म्हा) ।

परावति नि [परावर्ति] परिवर्तन करने-वाला 'वेधपरावतिउपी दुमिया' (पहा) ।

परावति भी [परावर्ति] परिवर्तन, हेरहेरे (ज १ ११ टी) ।

परावति नि [परावर्ति] परिवर्तित बनना हया (पहा) ।

परस्तर दु [परार] १ पनु-विरोध (राज) । २ यति-विरोध (पीन वा ४१२) ।

परामु नि [परामु] प्राय-वहित मुन (बा १४ कर्त ७०) ।

पराह रेओ परामय = परामय (पुण १) ।

पराहय नि [हे पराहय] निपुण दुह किय (म २४१ से १ ११ ज ५ १८८ को ११४ बरजा २१) 'महिलेपराहयो' (पयम ११ ७४ मुज २, १०) ।

परिग्राहो (विंते १२३) गुर ११ १२४),
केचि पय्दुवा नाई गरीपरिक्रमणं एव
(गुर २०१; बण्ड ३२) । २ संस्कार वा
कारण-भूत यन्त्र (शक्ति) । ३ परिकृत
विरोध । ४ संस्कार-विरोध एक वस्तु की
गुणा (हा १ — पत्र ४६६) । ५ मिथ्यापन
(पत्र १३३) ।

परिक्रमणा श्री कन्दर देवो 'छेदमन्त्र'
निम्न न तस्य परिक्रमणा नय विग्राहो
(विंते १२४) तस्य २४० लंघीय २३३
धारा १४) ।

परिक्रमिय नि [परिक्रमन] परिक्रमे
स्तिष्ठ, संस्कारिण (बण्ड) ।

परिक्र देवो परिक्रार = परिवार (पित्र) ।

परिक्रमन न [परिक्रमन] श्रमणे 'भार'
परिक्रमणमयनमनुविमयते (गुरा ३) ।

परिक्रमिष्ठ नि [परिक्रमिष्ठ] १ गुरु, सविष्ट
(गिरि १ १) । २ व्याज (तस्य २१२) ।

१ श्रुत 'धर्मनिरासितकर्म' न पत्र ३६
चोई (बर्हि २३) ।

परिक्रमणा श्री [परिक्रमणा] श्रमणः
'होत्वापरिक्रमणागुणोर्मयुषा' (गुरा ३) ।

परिक्रमय नि [परिक्रमय] सर्वतोपय न
वतिन पात्राणा (बण्ड) ।

परिक्रमण नि [परिक्रमण] धर्मिय वरिष्ठ
रवनाणा (बण्ड)

परिक्रमण न [परिक्रम] धीवात (बण्ड) ।

परिक्रम न [परि + क्रम] श्रमण
बण्ड नमः । बरिहदेर (गुरा) बरिहदेर
(बण्ड ६ ७२) । बर्हि बरिहदेर (नि
२४१) । इह पदरहो (धीर)

परिक्रम न [परिक्रम] धर्मिय श्रमण
(गुरा २) ।

परिक्रमणा श्री [परिक्रमणा] कन्दर देवो
(बण्ड)

परिक्रमणा श्री [परिक्रमणा] १ बण्डोप । २
बण्ड नि १३६)

परिक्रम नि [परिक्रम] श्रमण
बण्ड (बण्ड) ।

परिक्रम देवो परिक्रम 'धर्मियश्रमण'
परिक्रमण (गुरा) ।

परिक्रमिष्ठ नि [परिक्रमिष्ठ] व्याजिष्ठ
रवनाणि (गुर ११) ।

परिक्रमिष्ठ नि [परिक्रमिष्ठ] १ परिकृत वैष्टि,
'नियतविक्रमिष्ठि' (बर्हि २४) । २
व्याज (गुर १ २६) ।

परिक्रमिष्ठ नि [परिक्रमिष्ठ] विष्टि विष्टि
(गुर २६४ टी) ।

परिक्रमिष्ठ वक्र [परि + क्रम] १ गुरो
बण्डा, वैष्टि करता । परिक्रमिष्ठि (बण्ड) ।
वक्र परिक्रमिष्ठि (गुरा) ।

परिक्रमिष्ठ गुर [परिक्रमिष्ठ] गुरा वावा,
वैष्टि (गुर २ २, २३ धीर स ७७३,
बर्हि १ ४) ।

परिक्रमिष्ठ नि [परिक्रमिष्ठ] वक्रिय वक्रि
बण्डोपणा (गुरा) ।

परिक्रमिष्ठ नि [परिक्रमिष्ठ] वक्रिभूत
(विंते १०३) ।

परिक्रमिष्ठ नि [परिक्रमिष्ठ] विष्टि वक्र
(गुर १ १) ।

परिक्रमिष्ठ नि [परिक्रमिष्ठ] वक्रिय वक्रि
(बर्हि १२४) ।

परिक्रमिष्ठ नि [परिक्रमिष्ठ] वक्रिय वक्रि
(गुरा १) । वक्र गुरा) ।

परिक्रमिष्ठ नि [परिक्रमिष्ठ] वक्रिया वक्रि
(बण्ड) ।

परिक्रमिष्ठ नि [परिक्रमिष्ठ] वक्रिया वक्रि
(गुरा १ ४ १२) ।

परिक्रमिष्ठ नि [परिक्रमिष्ठ] वक्रिया वक्रि
(बण्ड) । २ वक्रि वि वक्रि । ३ वक्रि
बण्डा । ४ वक्रि वक्रि बण्डा । बरिहदेर
(गुरा ४६) । बरिहमिष्ठ (गुरा २३) ।

परिक्रमिष्ठ (गुरा) (नि ४०१) । वक्रि परिक्रमिष्ठ
(गुरा) इ परिक्रमिष्ठ (गुरा १
२ — पत्र १ ३) इह परिक्रमिष्ठ (गुरा १
२ २) ।

परिक्रमिष्ठ देवो परिक्रम = वक्रिय (गुरा १
१ गुरा वक्र १ १४) ।

परिक्रमिष्ठ देवो परिक्रमिष्ठ (गुरा २) ।

परिक्रमिष्ठ देवो परिक्रम = वक्रि + वक्रि
बरिहदेर (नि ४ वि ८३) ।

परिक्रमिष्ठ वक्र [परि + क्रम] बण्डा
वक्रिया करता । परिक्रमिष्ठ वक्रि, वक्रि

परिक्रमिष्ठ (गुरा) गुरा वक्रिया १२८३ व
४२७) । वक्रि परिक्रमिष्ठ; परिक्रमिष्ठ
(गुरा वक्र १ ४) । वक्रि परिक्रमिष्ठ
(गुरा) । वक्रि परिक्रमिष्ठ (गुरा) ।

परिक्रमिष्ठ नि [परिक्रमिष्ठ] वक्रिया वक्रि
(गुरा ४२७ या १४) ।

परिक्रमिष्ठ नि [परिक्रमिष्ठ] वक्रिया वक्रि
(गुरा ४२७ या १४) ।

परिक्रमिष्ठ नि [परिक्रमिष्ठ] वक्रिया वक्रि
(गुरा ४२७ या १४) ।

परिक्रमिष्ठ नि [परिक्रमिष्ठ] वक्रिया वक्रि
(गुरा ४२७ या १४) ।

परिक्रमिष्ठ नि [परिक्रमिष्ठ] वक्रिया वक्रि
(गुरा ४२७ या १४) ।

परिक्रमिष्ठ नि [परिक्रमिष्ठ] वक्रिया वक्रि
(गुरा ४२७ या १४) ।

परिक्रमिष्ठ नि [परिक्रमिष्ठ] वक्रिया वक्रि
(गुरा ४२७ या १४) ।

परिक्रमिष्ठ नि [परिक्रमिष्ठ] वक्रिया वक्रि
(गुरा ४२७ या १४) ।

परिक्रमिष्ठ नि [परिक्रमिष्ठ] वक्रिया वक्रि
(गुरा ४२७ या १४) ।

परिक्रमिष्ठ नि [परिक्रमिष्ठ] वक्रिया वक्रि
(गुरा ४२७ या १४) ।

परिक्रमिष्ठ नि [परिक्रमिष्ठ] वक्रिया वक्रि
(गुरा ४२७ या १४) ।

परिक्रमिष्ठ नि [परिक्रमिष्ठ] वक्रिया वक्रि
(गुरा ४२७ या १४) ।

परिक्रमिष्ठ नि [परिक्रमिष्ठ] वक्रिया वक्रि
(गुरा ४२७ या १४) ।

परिक्रमिष्ठ नि [परिक्रमिष्ठ] वक्रिया वक्रि
(गुरा ४२७ या १४) ।

परिक्रमिष्ठ नि [परिक्रमिष्ठ] वक्रिया वक्रि
(गुरा ४२७ या १४) ।

परिक्रमिष्ठ नि [परिक्रमिष्ठ] वक्रिया वक्रि
(गुरा ४२७ या १४) ।

परिक्रमिष्ठ नि [परिक्रमिष्ठ] वक्रिया वक्रि
(गुरा ४२७ या १४) ।

परिक्रमिष्ठ नि [परिक्रमिष्ठ] वक्रिया वक्रि
(गुरा ४२७ या १४) ।

परिक्रमिष्ठ नि [परिक्रमिष्ठ] वक्रिया वक्रि
(गुरा ४२७ या १४) ।

परिक्रमिष्ठ नि [परिक्रमिष्ठ] वक्रिया वक्रि
(गुरा ४२७ या १४) ।

[illegible]

परिपट्ट एक [परि + पट्] धावात कृता ।
अन्य परिपट्टिर्भवत् (यथा) ।

परिपट्टन न [परिपट्टन] धावात (नञ् १८) ।

परिपट्टन न [परिपट्टन] निर्गन्तु एवम्
(विष् १) ।

परिपट्टिय नि [परिपट्टिय] प्रकृत्य तावत्
(बीज १) ।

परिपट्ट नि [परिपट्ट] १ निघका वर्ण
किम्प मया हो न्ह निघा हुमा । 'अथर्वपरि-
पट्ट' (हे १ १७४) ।

परिपाय रेवो परिपाय (उज्ज) ।

परिपास एक [परि + पास] निपात,
शोभन कृता । ईह-परिपासेर्भ (भाषा) ।

परिपासिन् नि [परिपासिन्] परिपण-दुष्ट
'एकपा वा परिपासिन्मुने भवति' (भाषा १
१ १ २) ।

परिपुष्मिन् नि [परिपुष्मिन्] छन्दः छन्द-
कौटो विस्तृतः शैलता (पञ्च २ १) या
१४८) ।

परिपेत्तव्य
परिपेत्तव्य
परिपेत्तु
परिपेत्तु
रेवो परिपेत्तु ।

परिपोष एक [परि + पोष] १ शोभना ।
२ अथर्वमन्त्र कृता । न्ह-परिपोषित
परिपोषेताम् (वि १ ११ बीज पाया १
४—नञ् २०) ।

परिपोषण न [हे परिपोषण] निघार (ता
४ ४—नञ् २३) ।

परिपोषिन् नि [परिपोषिन्] शैलवैभवा
(पञ्च) ।

परिपय रेवो परिपय = परिपय (नट—
राज ७०) ।

परिपय रेवो परिपय । ईह-परिपयम्
परिपय (यथा) ।

परिपयन नि [परिपयन] यथिष्ठन भवत्
(हे १४) ।

परिपय रेवो परिपय (महा बीज) ।

परिपयता रेवो [परिपयता] वैभवा अथि
(नृपा १२६) ।

परिपय एक [परि + पय] निघेय भवता ।
परिपय (विष्) ।

परिपयिन् नि [परिपयिन्] निघेय भवता
हुमा (हे १ २) ।

परिपयारण नि [परिपयारण] वैभवा कलेवला,
वैभवा (नट—मासवि १) । बी । राया
(नट) ।

परिपयारण बी [परिपयारण] वैभुन-अपि
(ता २, १) ।

परिपयिन् एक [परि + पयिन्] निघेय
कृता निघार कृता । परिपयित, परिपयिते
(यज्ज ७०) । कर्म परिपयितव्य (यज्ज) (उज्ज) ।
नह परिपयितव्य, परिपयितव्य (यज्ज ५३
११ ४) ।

परिपयिन् नि [परिपयिन्] निघका
निघन किम्प मया हो न्ह (उज्ज) ।

परिपयिते नि [परिपयिते] निघेय
कलेवला (उज्ज) ।

परिपिट्ट एक [परि + पिट्] यथा स्थिति
कृता । परिपिट्ट (यथा) ।

परिपिय नि [परिपिय] यथा यथा हुमा,
यथा हुमा यथायथा हुमा (बीज) ।

परिपुन रेवो परिपुन । परिपुनियमात्र
(बीज) । एक परिपुनिय (यज्ज ११ १) ।

परिपुनय रेवो परिपुनय (यज्ज ११ ७२) ।

परिपुनिय नि [परिपुनिय] निघका कुम्पन
किम्प मया हो न्ह 'परिपुनियमात्र' (यज्ज
२२ ८) ।

परिपय एक [परि + पय] परिपय
कृता, शोभन कृता । परिपय, परिपय
(यथा, यज्ज १००) । न्ह-परिपयित (यज्ज
११०) । ईह-परिपयित परिपय
परिपयिता (वि २२ उज्ज ११ १)
यज्ज) । ईह-परिपयित, परिपयित (यथा
नट) ।

परिपय नि [परिपय] निघका परिपय
किम्प मया हो न्ह (वि २ २) । गुर १,
१२ । नृपा ४१ । नट—राज १२२) ।

परिपय न [परिपय] परिपय (य
२१) ।

परिपय नि [परिपय] परिपय कृते
कृता (बीज यज्ज १४) ।

परिपय १ पुं [परिपय] व्याप, शोभन
परिपय १ (यथा ११ १४ उज्ज ७२२
बीज ७०) ।

परिपय नि [परिपय] व्याप कृते व्याप
'अथर्वेयि अथर्वेयि शैलियमसे परिपय
(बीज २४) ।

परिपय नि [वि] परिपय ऊपर ऊँका हुमा
(यथा) ।

परिपय रेवो परिपय (यज्ज १४२ टी) ।

परिपय रेवो परिपय, 'अथर्वमन्त्रमन्त्रो
यज्जो यज्ज परिपय' (यज्ज १ १ वि
१) परिपयित (यज्ज ११) ।

परिपय नि [परिपय] परिपय-कृता (यज्ज
१११) ।

परिपय नि [परिपय] १ व्यापकृत
परिपय १ कृता हुमा (यथा) । २ परिपय
दुष्ट परिपय-कृत (यज्ज ४) ।

परिपय नि [परिपय] परिपय कलेवला
(यज्ज १११) ।

परिपय रेवो [परिपय] परिपय यथायथा
(यज्ज ११ ना विष् ४४० उज्ज ११) ।

परिपय रेवो परिपय (यथा ११) ।

परिपय एक [परि + पय] १ निघ
कृता निघेय कृता । २ यज्ज काय
यज्ज । परिपय (यज्ज १०१) । ईह-
'परिपयित यज्जो यज्ज यज्ज निघेय
यज्ज यज्ज' (यथा—वि १ १
२२१) ।

परिपय नि [परिपय] १ यज्ज हुमा
'अथर्वमन्त्र परिपय' (यज्ज ११) । २
निघेय निघेय (यथा ४) ।

परिपयिन् बी [परिपयिन्] १ परिपय,
निघेय । २ परिपय काय (यज्ज २२) ।

परिपय रेवो परिपय (यज्ज १११
यज्ज) ।

परिपय नि [परिपय] १ परिपय
'यज्जो यज्ज' (यथा १११) । २ परि
यज्ज (यथा १११) ।

परिपय पुं [परिपय] निघेय निघेय
(यज्ज १११४ यज्ज १११) ।

परिपय नि [हे परिपय] नट, बीज
(यथा) ।

परिपयमाय (अ ७) हाया १ १—पय
११) ।

परिपयम न [परिपयम] परिपाम (बर्मेत
४७२, ३५ १) ।

परिपयमि } वि [परिपय] १ परिपय
परिपय } (याम) । २ दुष्टि कथा 'यह
परिपयमो बन्यो यह तं चोपति न पुपति'
(बर्मेत ५) । ३ मरणात्तर को प्रत्य (अ
२, १—पय २१ ति २६२) । वय वि
[वयम्] १ वृक्ष वृक्षा (छाया १ १—
पय ४५) ।

परिपयम न [परिपयम] विनाह (अ
१ १४ गुण १०१) ।

परिपयमा श्री ऊपर देखी (बर्मेत ११६) ।

परिपय देखो परेयम । परिपय (घाट
११) म्हा) ।

परिप्राप्त पुं [परिप्राप्ति] परिपय 'यह तुम्ह
देण मयं परिप्राप्ति' लज्जलेश कययो'
(वयम २१ २४) ।

परिप्राप्त लज्ज [परि + पयम्] परिप्राप्त
करता । परिप्राप्ति (अ २ २) । कय
परिप्राप्तिप्रमाण, परिप्राप्तप्रमाण (महा
ठा १) । हेतु परिप्राप्तिप्रमाण (अ १
४) ।

परिप्राप्त पुं [परिप्राप्त] १ मरणात्तर प्रपित
कमलप्रमाण (बर्मेत ४७२) । २ शीर्ष कल
के अनुभव के उत्पन्न होनेवाला प्रमाण-वर्ष
विशेष (अ ४ ४—पय २ १) । ३ प्रमाण
बर्मे (अ १) । ४ पयमयम यमो-भाष
(विष्णु २ १) । ५ वि परिप्राप्त करकेला
पिन्टुका परिप्राप्त (वय १ ६६ १) ।

परिप्राप्तगया श्री [परिप्राप्तगय] परिप्राप्त
परिप्राप्तगया } कला कलाप्रकरण (पराय
३४—पय ७३४ ति २१७) ।

परिप्राप्तय वि [परिप्राप्तय] परिप्राप्त करते
करता (अ १) ।

परिप्राप्तमि वि [परिप्राप्तमि] परिप्राप्त होने
का (अ १ १ पय १ १) । बायन
न [बायन] बायन-न के परिप्राप्त होनेवाला
काल उपायन बायन (अ २ ३७) ।

परिप्राप्तमि वि [परिप्राप्तमि] १ परिप्राप्त
कय परिप्राप्त के काल । २ परिप्राप्त
संख्या । ३ पुं परिप्राप्त । ४ बायन-विशेष ।

'कलाप्रकरणपरिप्राप्तमो परिप्राप्तमो लय्यो'
(ति २ १७१) १४२४) ।

परिप्राप्तमि वि [परिप्राप्तमि] परिप्राप्त किया
हुआ (वि ११२ नव) ।

परिप्राप्तमि श्री [परिप्राप्तमि] दुष्टि
विशेष शीर्ष कल के अनुभव के उत्पन्न होने-
वाली दुष्टि (अ ४ ४) ।

परिप्राप्त वि [परिप्राप्त] कलाहुया परिप्राप्त
(वयम ११ २७) ।

परिप्राप्त लज्ज [परि + पयम्] विनाह
करता । परिप्राप्तय (अ २ ११२) । क
परिप्राप्तयिष्य परिप्राप्तयक (अ २ ११
१२४) ।

परिप्राप्तन न [परिप्राप्तन] विनाह करत
(गुण १६८) ।

परिप्राप्तमि वि [परिप्राप्तमि] विनाह विनाह
करता बना हो यह (गुण १६८) बर्मेत
११६) गुण १४) ।

परिप्राप्तपुं [परिप्राप्त] १ लम्बाई, विस्तार
(काया से ११ १२) । २ परिपि (अ १११
अ २ २) ।

परिपिच्छय देखी परिपि ।

परिपिच्छ देखो परिपि = परि + पय ।

परिपिच्छय देखो परिपि = परि + पय ।

परिपिच्छय श्री [परिपिच्छय] विनाह कय
(वयम ११ १) ।

परिपिच्छय वि [परिपिच्छय] वयमय,
पयमय-प्रत्य (वयम ११, २१) ।

परिपिच्छा श्री [परिपिच्छा] संयुक्त, कलावि
(अ २ २२) ।

परिपिच्छा न [परिपिच्छा] वयमय प्रत्य
(वि २ ११६) ।

परिपिच्छिमि वि [परिपिच्छिमि] १ प्रत्य
हुया कलाय किया हुआ (पय २३) ।
२ वार-आय (छाया १ १ मा ६६
१ ११ १२ १४) । ३ परिप्राप्त (वय १ १) ।

परिपिच्छिमा श्री [परिपिच्छिमा] १ द्वि
विशेष निबन्धों की या तीन बार एक-एक
विना गया हो न द्वि-वर्षों की या तीन
बार की लम्बाई (विष्णु १) की हुई से । २
तीन-विशेष निबन्धों बायन-परिप्राप्तों की
मात्रा-मात्रा की मात्रा हो बह तीन (अ २) ।

परिपिच्छ वि [परिपिच्छ] विनाह विनाह
हुया हो यह (अ ४ ४) ।

परिपिच्छय लज्ज [परिपिच्छ + पयम्]
बर्मे प्रकार से प्रपित परिप्राप्त करता ।
लज्ज परिपिच्छयि (अ ७) ।

परिपिच्छया लज्ज [परिपिच्छ + पय] १ लज्ज
होता । २ दुष्टि का मा मोक्ष को प्रत्य
करता । परिपिच्छयमि (अ ५) । गुण
परिपिच्छयानु (वि २ ११) । माय परि
पिच्छयमि (वय) ।

परिपिच्छाय न [परिपिच्छाय] दुष्टि, मोक्ष
(माया कय) ।

परिपिच्छय श्री [परिपिच्छय] ऊपर देखो
(अ ५) ।

परिपिच्छय देखो परिपिच्छय (मोक्ष) ।

परिपिच्छ लज्ज [परि + पय] १ विनाह करना ।
२ देखना । कय, परिपिच्छय, परिपिच्छ-
माय (अ २ १७) माया) ।

परिपिच्छ लज्ज [परि + पय] बायन निबन्ध
कय, परिपिच्छ (अ १११) ।

परिपिच्छ वि [परिपिच्छ] विनाह विनाह
किया बना हो यह (अ ४ ४) । लज्ज ।

परिपिच्छ वि [परिपिच्छ] कयना हय रय
का (वय १) ।

परिपिच्छ देखी परिपिच्छ । परिपिच्छ (अ ४ ४
४ ४) । हेतु परिपिच्छ (अ २) । क
परिपिच्छय (गुण ४७२ गुण ११६) ।

परिपिच्छय (अ ५) वि [परिपिच्छय] विनाह
विनाह करत बना हो यह (अ ४) ।

परिपिच्छय देखी परिपिच्छय (अ १ ५,
११) ।

परिपिच्छ वि [परिपिच्छ] बायन, बायनार (माया
१ ३, ४ ४) ।

परिपिच्छ देखो परिपिच्छा (छाया १ १,
१ २) ।

परिपिच्छ लज्ज [परि + पय] बायन । लज्ज
परिपिच्छय (माया कय) । हेतु परिपिच्छा
(श्री) पयि १ १) ।

परिपिच्छा श्री [परिपिच्छा] १ बायन बायनार
(माया कय) तथा १ १२) । २ विपि
(माया) । ३ वयोपयन विनाह (अ २ १

१ १)। ४ ज्ञान-पूर्वक प्रस्थापान (ठा २, २)।

परिष्ठापय वि [परिज्ञान] ज्ञान ज्ञानप्रवृत्ति (बर्मेस १२२३ कप ५ २७४)।

परिष्ठापय रेवो परिष्ठाप = परि + स्था।

परिष्ठापय वि [परिष्ठाप] विविध बाणा हुमा (धम १६, धावा)।

परिष्ठाप वि [परिष्ठान्] परिष्ठाप-मुक्त (विष-मुक्तो न परिष्ठापि तह विष्ठाप-परीष्ठापि) (बर्मे १)।

परिष्ठान वि [परिष्ठान्] सर्वथा विन्न निर्निष्ठ (धामा १ ४—पत्र ६० विरा १, १; ज्म)।

परिष्ठान वि [परिष्ठान] विशेष ताप—प्रत्यक्ष बर्मेस (पठक)।

परिष्ठान् सक् [परि + ठाप्] विरम्भ करमा। बद्ध-परिष्ठान् (पत्र ४८ १)।

परिष्ठानिय वि [परिष्ठान] नृप कितावा हुमा (सक)।

परिष्ठानि वि [परिष्ठान] प्रत्यक्ष पठना (मुता ३८)।

परिष्ठान् सक् [परि + ठाप्] १ संवत् होना प्रथम होला। २ परमात्मा करना। ३ बुद्धी होला। परिष्ठान् (महा ३३) परिष्ठान्ति (धुम २, २३) 'ठा' बोधोपमाप्रमाणक परिष्ठान्ति पत्रा (बर्मेस १)। संवत् परित्तिष्ठान् (महा)।

परिष्ठान् सक् [परि + ठाप्] परिष्ठाप ज्ञानात्मा। परिष्ठान्ति (धुम २, २३)।

परिष्ठान्प न [परिष्ठान] परिष्ठान् होला (धुम २, २३)।

परिष्ठान्प न [परिष्ठान] परिष्ठाप उपमात्मा (धुम २, २३)।

परिष्ठान्ति वि [परिष्ठान्ति] उक्ता हुमा (बोध ८८)।

परिष्ठान्ति वि [परिष्ठान] परिष्ठाप मुक्त (सक)।

परिष्ठान्प न [परिष्ठान] १ रज्जु। २ बाल्यविषय (धुम १ १ २ १)।

परिष्ठान् रेवो परिष्ठान्प = परि + ठाप्।
३. परिष्ठान्प (वि २४)।

परिष्ठाप पु [परिष्ठाप] १ संवत् बाह्य। २ परमात्मा। ३ बुद्धी (महा ३३)।

यर वि [कर] बुद्धीसाधक (पत्र ११ ६)।

परिष्ठापय रेवो परिष्ठान्प = परिष्ठापन (बोध)।

परिष्ठापय वि [परिष्ठापय] १ संवत्पि (बोध)। २ उक्ता हुमा (बोध १४०)।

परिष्ठाप पु [परिष्ठाप] प्रत्यक्ष होनेवाला ज्ञान (धामा १ १—पत्र ११)।

परिष्ठान्ति वि [परिष्ठान्ति] द्वितीय (सक)।

परिष्ठान्ति वि [परिष्ठान्ति] ठोप-प्रत्यक्ष संवत् (ज्म ३३ ३ १)।

परिष्ठान्ति वि [परिष्ठान्ति] ठोमा हुमा (सक)।

परिष्ठान्ति रेवो परिष्ठान्ति।

परिष्ठान्ति सक् [परि + ठोप्] छाना। बद्ध 'ठोप्' परिष्ठान्ति बर्मेस (पत्र १३२)।

परिष्ठान्ति सक् [परि + ठोप्] संवत् करना। यन् परिष्ठान्ति (सक १२)।

परिष्ठान्ति पु [परिष्ठान्ति] प्रमाण मुक्ति (महा—पत्र २३)।

परिष्ठान्ति वि [परिष्ठान्ति] संवत् किया हुमा (सक)।

परिष्ठान्ति वि [परिष्ठान्ति] १ स्थान (सि १८१)।

२ प्रपन्न (धुम २ १ ६)। ३ संवत् विष्ठापि विष्ठापि हो सके धामा (धम १ १)।

४ परिष्ठान्ति नियत परिष्ठापनामा (ज्म ४१७)। ५ संवत् होला। ६ बुद्धि, हलका (ज्म २७; ३३४)। ७ एक ठो सेकर प्रसन्नोप विष्ठापना (बोध ४१)। ८ एक विष्ठापना (सक १)। करना [करय] अनुकूल (धम २७)। जीव पु [जीव] एक ठो सेकर विष्ठापना विष्ठापना (पत्र १)। पंथ न [पंथ] संवत्-विष्ठाप (धम ४ ३१; ३१)। संसारि वि [संसारि] परिष्ठान्ति संसारनामा (ज्म ४१७)। संवत् न [संवत्] संवत् विष्ठाप (धम ४ ३१; ३८)।

परिष्ठान्ति रेवो परिष्ठान्ति। संवत् परिष्ठान्ति (सक ३१) परिष्ठान्ति (धम)। (विष्ठाप)। परिष्ठाप १ सक् [परि + ठोप्] प्रत्यक्ष करना। परिष्ठान्ति १ परिष्ठान्ति परिष्ठान्ति, परिष्ठान्ति परिष्ठान्ति (महा ३ ३ ४०३) ३ ४ २९८)।

परिष्ठान्ति वि [परिष्ठान्ति] प्रत्यक्ष-कृत (मुता ४ ३)।

परिष्ठान्ति न [परिष्ठान्ति] रज्जु (धम १४ ११, मुता ७१ धामा ८ ८ ४०)।

परिष्ठान्ति न पुन [परिष्ठान्ति] संवत् विशेष (धुम २३४)।

परिष्ठान्ति रेवो परिष्ठान्ति (धम)।

परिष्ठान्ति न पुन [परिष्ठान्ति] संवत्-विष्ठाप (धुम २३४)।

परिष्ठान्ति वि [परिष्ठान्ति] संवत् किया हुमा (धुम २३४) (धामा १ १—पत्र ११)।

परिष्ठान्ति सक् [परिष्ठान्ति + क] अनु करना प्रत्यक्ष करना। परिष्ठान्ति (धम)।

परिष्ठान्ति न [परिष्ठान्ति] १ प्रत्यक्ष। २ विष्ठाप [विष्ठापि] परिष्ठान्ति (धम)।

परिष्ठान्ति वि [परिष्ठान्ति] प्रत्यक्ष किया हुमा (मुता ४०३)।

परिष्ठान्ति सक् [परि + क] अनु करना। कर्त्तु, परिष्ठान्ति (मुता १ ७)।

परिष्ठान्ति वि [परिष्ठान्ति] विशेष संवत् परिष्ठान्ति १ नृप भोग (बर्मेस ३३८; ३३८ ३३८ धा ११)।

परिष्ठान्ति सक् [परि + क] ठोमा। कर्त्तु परिष्ठान्ति (धम)। (विष्ठाप)।

परिष्ठान्ति पु [परिष्ठान्ति] संवत् (धम २ ८ ३३)।

परिष्ठान्ति वि [परिष्ठान्ति] किया हुमा (विष्ठाप १२३)।

परिष्ठान्ति वि [परिष्ठान्ति] उपनिष्ठ (मुता २ ३७)।

परिष्ठान्ति रेवो परिष्ठान्ति (मुता २२)।

परिष्ठान्ति सक् [परि + क] किया करना। परिष्ठान्ति (ज्म २, ११)। बद्ध, परिष्ठान्ति (पत्र २६ १२, ४२, ११)।

परिष्ठान्ति न [परिष्ठान्ति] विष्ठाप, प्रत्यक्ष परिष्ठान्ति विष्ठापनामा (महा ३ ३ ४०३) (धम ४ ३१)।

परिपूय वि [परिपूय] आता हुमा (कम्प) छु १२)।

परिपूर सक् [परि + पूरय] पूर्ण करना, भरपूर करना। बहू परिपूरत (वि ११७)।
सह परिपूरिअ (भाट—भाषावि ११)।

परिपूरिय वि [परिपूरिय] भरपूर, व्याप्त (सुर २, ११)।

परिपेच्छ सक् [परि + पेश] चेतना। बहू परिपेच्छत (पञ्च ११)।

परिपेरत दु [परिपेरत] प्राप्त भाव (शाम्बा १ ५ ११) सुर ११, २ २)।

परिपेरिय वि [परिपेरिय] जिसको प्रेरणा दी गई हो बहू (सुभा १८६)।

परिपेय वि [परिपेय] १ सुख, सहज खास आसान (वि १ ११)। २ भट्ट १ १ भिःसार। ५ बरफ चीन (राज)।

परिपेयिअ सक् [परिपेयिअ] (वा १७७)।

परिपेय सक् [परि + पेश] मेकना। परिपेय (मणि)।

परिपेयन न [परिपेयन] मेकना (मणि)।

परिपेयस वि [परिपेयस] सुख, मनोहर (सुभा १ ११)।

परिपेयिय वि [परिपेयिय] मेकना हुमा (मणि)।

परिपोय सक् [परि + पोय] गूय करना। बहू परिपोयिअत (राज)।

परिप्यमाण न [परिप्यमाण] परिमाण (मणि)।

परिप्यय सक् [परि + प्य] ठीका गोठा लगाना। बहू परिप्ययत (वि २ २५) १ ११ पत्थ)।

परिप्यय वि [परिप्यय] बाल्युत व्याप्त (राज)।

परिप्युता श्री [परिप्युता] चौका विरोध (राज)।

परिप्येद दु [परिप्येद] १ रचना-विरोध 'अमर भाषापरिप्येदो' (गठक)। २ समस्त चरन (वा ५२)। ३ श्रेष्ठ प्रमत्ता 'धोवा रमेवि विविम्व भाषायेव वर लंछणपुर्वेति'। छ-परिप्येदिय निय लोभा प्रविशारयस्य न' (गठक)।

परिप्युड वि [परिप्युड] बल्युत सट (वि ११ १ सुर ५ ११५ मणि)।

परिप्युड दु [परिप्येद] १ प्रत्येक नेशन। २ वि कोनैबाला विनेरका 'उपनयन

परिप्युड वेव ठेमला पत्रमंतवर्ष' (मन्)।

परिप्युड सक् [परि + प्युड] बहना।

परिप्युडि (श्री) (भाट—उत्तर २८)।

परिप्युडन न [परिप्युडन] हितन चरन (सह)।

परिप्युडिय वि [परिप्युडिय] स्फुटि-युक्त 'अमरु परिप्युडि' (मणि)।

परिप्युड दु [परिप्युड] सतं छुना (वि ७५ १११)।

परिप्युडन न [परिप्युडन] ऊपर सेको (ज १८६ टी)।

परिप्युडि वि [परिप्युडि] लिखार, बवार (बर्नस १११)।

परिप्युडिय वि [परिप्युडि] व्याप्त (सह १ १७२)।

परिप्युड सेको परिप्युड = परिप्युड (पत्रम १ ८ प्राप् १११)।

परिप्युडिय वि [परिप्युडिय] क्रय हुमा अम (पत्रम १८ १)।

परिप्युड सेको परिप्युड। परिप्युड (सह)। बहू परिप्युडत (सह)।

परिप्युडिय सेको परिप्युडिय (सह)।

परिप्युडिय वि [परिप्युडिय] छुना हुमा दुखित (विप)।

परिप्युड सक् [परि + प्युड] सतं करना छुना। बहू परिप्युडत (बर्नस १२१ १११)।

परिप्युडिय वि [परिप्युडिय] पौछा हुमा (ज १ १५)।

परिप्युडिय वि [परिप्युडिय] छुना हुमा 'अमरभाषापरिप्युडिय' इत्येतदित्यक्तपुत्राय विविधाय विधीयति' (शाम्बा १ ११) ज १५८ टी)।

परिप्युडन न [परिप्युडन] दुखि अचय (सुर २ २ १)।

परिप्युडत वि [पे] १ विपिड निषाणि। २ नैड, डरोको (वि १ ७२)।

परिप्युडिअ (श्री) लोके सेको (वा १)।

परिप्युडि वि [परिप्युड] पठित स्मृत (शाम्बा १ ११ सुभा १ १; मणि १५४)।

परिप्युड सक् [परि + प्युड] पर्वत करना मन्त्रना। परिप्युड (भाट ७१ मणि)

बहू परिप्युडत (सुर २ ८७ १ ५ ५ ७१ मणि)।

परिप्युडन न [परिप्युडन] पर्वत (महा)।

परिप्युडिय वि [परिप्युडिय] भक्ता हुमा (वि ११ सण मणि)।

परिप्युडिअ वि [परिप्युडिअ] मय-मस्त (पत्रम ११ १११)।

परिप्युडिअ वि [परिप्युडिअ] पद्यम प्राप्त (सुभा २५५)।

परिप्युडिअ वि [परिप्युडिअ] भांग हुमा (पालागु १५)।

परिप्युडिअ सेको परिप्युडिअ (महा वि ८२)।

परिप्युडिअ वि [परि + मणिपु] कहनेबाला (सह)।

परिप्युडिअ सेको परिप्युडिअ। परिप्युडिअ (महा)। बहू परिप्युडिअ, परिप्युडिअ (महा) सण मणि १५)। छहू परिप्युडिअ (वि १८२)। छहू परिप्युडिअ (महा)।

परिप्युडिअ सेको परिप्युडिअ (मणि)।

परिप्युडिअ वि [परिप्युडिअ] पर्वत करने बाला (सुभा २११)।

परिप्युडिअ सक् [परि + मू] पद्यम करना लिखकार। परिप्युडिअ (मन्)। कर्न परि

मणिमणि (मोह १ ५)। छ परिप्युडिअ (शाम्बा १ १)।

परिप्युडिअ दु [परिप्युडिअ] पद्यम लिखकार (श्रीम स्वप्न १; प्राप् १७३)।

परिप्युडिअ दु [परिप्युडिअ] पार्थव छात्र, शिक्षावादी दुमि (बव १)।

परिप्युडिअ न [परिप्युडिअ] ऊपर सेको (राज)।

परिप्युडिअ श्री [परिप्युडिअ] ऊपर सेको (श्रीम)।

परिप्युडिअ वि [परिप्युडिअ] बर्नस (बर्नस १११)।

परिप्युडिअ सक् [परि + भाषय] बातना, विचार करना। परिप्युडिअ (कम्प)। बहू परिप्युडिअ, परिप्युडिअ परिप्युडिअ (भावा २ ११ १८ छाया १ ७—पत्र ११७; १ १ ७५)। बहू परिप्युडिअ

माण (पञ्च) । ईङ्. परिमाइया परि
माइया (कथ्य धीम) । ईङ्. परिमाएत
(वि १७१) ।

परिमाइय वि [परिमाइय] किलक किमा
हुया (पञ्च २, १ १ २) ।

परिमायैत वैको परिमाय ।

परिमायण न [परिमायण] बौता बैता
(निङ १११) ।

परिमाय छ [परि + भावय] १ पर्व
धीनय करता । २ जलत करता । परिमाय
(महा) । ईङ्. परिमायिऊण (महा) ।
ह परिमायणीय (पञ्च) ।

परिमाइय वि [परिमाइय] प्रमायक
कमलि-कर्ण (अ ४ ४—पञ्च २१२) ।

परिमायि वि [परिमायि] परिमाय करे-
बला (पवि ७१) ।

परिमाय छ [परि + भाय] १ प्रवि-
पन्न करना कहुना । २ किमा कला । परि
माय, परिमायि परिमाय, परिमाय
(अ १० २, द्रुम १ १ १ ५ २
७ ११; विदे १४४) । बङ्. परिमाय
माय (पञ्च २१ १७) ।

परिमाया औ [परिमाय] १ धिउ (संकोच
१ । माच ११) । २ डिउकर । ३ द्रुयि
दीक-विदेय (पञ्च) ।

परिमायि वि [परिमायि] परिमाय-वर्ता
‘पञ्चविपरिमाय’ (अ १७) ।

परिमायि वि [परिमायि] प्रविपणित
(द्रुमि भाउ २१) ।

परिमिह छ [परि + मिह] मेहन करना ।
कमळ परिमिहमाय (अ ५ १७) ।

परिमीय वि [परिमीय] बरा हुया (अ) ।

परिमुंछ छ [परि + मुंछ] १ बला
धीनय करना । धिउन करना धिउना । २
बाज्जार धिउय में बैता । बर्मा परिमुंछिऊ
बिपुंछ (वि २४६, कथ्य १ २१) ।
बङ्. परिमुंछ परिमुंछमाय (वि २४
छाया १ १) कथ्य । कथ्य परिमुंछमाय
(धीन अ १ १; छाया १ १—पञ्च १७) ।

ईङ्. परिमुंछ (अ २, १) । छ. परिमोग
परिमोचय (वि १४ ५४) ।

परिमोचय न [परिमोचय] परिमोच (अ
११४ टी) ।

परिमोचय औ [परिमोचय] ऊपर वैको
(अ ४४) ।

परिमुच वि [परिमुच] विमुच परिमोच
किमा बला हो बह (द्रुमा १) ।

परिमुच १ वि [परिमुच] वैपि परिमोच
परिमुच १ मेपेया हुया वेप हुया (पञ्चा २
११ १; २ ११ ११) ।

परिमूच वि [परिमूच] परिमूच डिउछ
(अ २ ७ २ गुर ११ १२२ विदय
७१४ महा) ।

परिमोच वैको परिमोग (अ १११) ।

परिमोच वि [परिमोगिम्] परिमोग करे
बला (वि ४ २। माच—छु ११) ।

परिमोग पु [परिमोग] १ बारबार भोग
(अ २, १ टी भाय १) । २ विमुका बार
बार भोग किमा बार बार विमुका (धीन) ।
३ विमुका एक ही बार भोग किमा काम—
को एक ही बार काम में लाना याया बह—
महाय, पाय दधि (अ) । ४ बाज बलुओं
का भोग (पाय १) । ५ पायेवन (अ १
१) ।

परिमोग
परिमोचय } वैको परिमुंछ ।

परिमोचु
परिमोच छ [परि + मुच] मार्जन करना
(संवि ११) ।

परिमोच वि [परिमुच] १ विमुच नोमल ।
१ बायल मुकर, लज (बर्ष ७२१;
२२) । औ ठई (विदे ११२२) ।

परिमोचि वि [परिमुचि] बापें मोर
से मुंछिउ (छा) ।

परिमोचय न [परिमोचय] मार्जण विमुका
(अ ११ १) ।

परिमोच वि [परिमोच] मुच नोलाय
(द्रुम २ १ ११; अ ११ ११; अ ११ ११
पञ्चा धीनय करता । अ १ १) ।

परिमोचि वि [परिमोचि] विमुचि
मुंछिउ (अ) धीनय गुर १ ११) ।

परिमोच वि [परिमोच] मन्, बीता
(अ २ ७ ७१२) ।

परिमोचि वि [परिमोचि] कलक धालो-
नित (अमृत २२१) ।

परिमोच वि [परिमोच] मन्, धाल (गुर
४ २४) ।

परिमोच [परि + मार्ग] १ धने-
परा करना बीतना । २ मन्, मार्ग
करना । बङ्. परिमोचय (माच—वि १
१) । ईङ्. परिमोच (महा) ।

परिमोचि वि [परिमोचि] मोर करनेवाला
(मा २२१) ।

परिमोचि वि [परिमोचि] मुनेवाला
(द्रुमा २) ।

परिमोच वि [परिमोच] १ विमुका हुया (वि
१ २। अ ४१) । २ पायल्लि ‘परिमु-
मेपिह’ (वि ४ १७) । ३ मार्जि रोमि
(अ) ।

परिमोच छ [परि + मर्च] मर्च करना ।
बङ्. परिमोचय (गुर ११ १७२) ।

परिमोच न [परिमोच] मर्च पायि
(अ—धीन) ।

परिमोच औ [परिमोच] धीनय करना
कैनी—पैर कला पायि (नि १) ।

परिमोच छ [परि + मन्] बाहर करना ।
परिमोच (अ) ।

परिमोच छ [परि + मन् मुच] १
किमा । २ मर्च करना ‘औ मरुमोचि’
परिमोच (अ) (द्रुम ४२२)

‘अभिमुचि’ मपि परिमोचि
छातें बाज्जारि छी मुपि ।

छातें बाज्जारि छी मुपि ।
छातें बाज्जारि छी मुपि ।

बाज्जारि छी मुपि ।
(मा ११२) ।

परिमोच पु [परिमोच] १ मुच-मन्मोचि ना
मर्च (वि १ १४) । २ मुच (द्रुमा पाय) ।

परिमोच न [परिमोच] १ परिमोच । २
विमुका (मा ४२ पञ्च) ।

परिमोचि वि [परिमोचि परिमुचि]
विमुका मर्च किमा बला हो बह (अ ११७
१७ ११; महा, कथ्य ११ १) ।

परिमोचि वि [परिमोचि] मुचि (अ २
१ १) ।

परिमा (मा) देशो पश्चिमा (पश्चि) ।

परिमाइ श्री [परिमाति] परिमाण त्रिण
छाष्टील दशमौचकपात्र न परिमणयि सुनर
परिमाइ व (अति) ।

परिमाण न [परिमाण] मात माप मात
(बीन स्वप्न ४२; प्राप् ७७) ।

परिमाण धु [परिमार्श] लसं (छाया १ १;
यद ४ १ ४८; ६ ७९) ।

परिमाण धु [हि] बीक न बछु-किरोय
(छाया १ ६—पत्र १३७) ।

परिमाति नि [परिमर्शिन] लसं बरनेगमा
(नि १२) ।

परिमिण मीने देशो ।

परिमिण सच [परि + मा] माता सीतला ।

परि मिमर्जन (गुवा ७७) । परि मिम्र,

परिमय (पत्र ३६ पत्र ४६ २२) ।

परिमिभ नि [परिमिभ] परिमाण-मुक्त
(कपा ४ ३ ३ बीन पण्ड २ १) ।

परिमिअ नि [परिपुव] परिपवि केष्टि
(पत्र १ १ अति) ।

परिमिआ सच [परि + म्ल] म्मान होला ।

परिमिआनि (हो) (नि ११९ ४७६) ।

परिमिआन नि [परिमिआन] म्मान निष्पद्य
निष्ठेय (मात) ।

परिमिहिर नि [परिमोचय] बरियाय करे-

बाणा (छठ) ।

परिमुअ सच [परि + मुअ] परिमाण
करता । परिमुअर (छठ) ।

परिमुअ नि [परिमुअ] परिपय (गुवा

२३२ महा छठ) ।

परिमुद्र नि [परिमुद्र] रद्र (मा ४४) ।

परिमुअ सच [परि + हा] जानता । बरि

मुअनि (कपा १ ४) ।

परिमुअनि नि [परिआत] जाना हुमा

(पत्र १९ ११; कप) ।

परिमुअ सच [परि + मुअ] बोधे करता ।

न परिमुअन (मा २०) । बरि परिमु

गिअन (कप २६) ।

परिमुअ सच [परि + मुअ] लसं करता,

हुमा । परिमुअर (अति) ।

परिमुअन न [परिमोचन] १ बरि १ २

करता दम् (मा २१) ।

परिमुअनि नि [परिमुअ] स्वप् (महाति ४-
अति) ।

परिमुअन देशो परिमुअन (मा २६) ।

परिमुअ देशो परिमिण ।

परिमोचल नि [दे परिमुअ] स्वैर,

स्वच्छपी (अति) ।

परिमोचय धु [परिमोच] १ मोदा मुक्ति

(भाषा) । २ परिपय (गुप १ १२ १) ।

परिमाय सच [परि + मोचय] छोछाणा

छुनाप करता । परिमाय (गुम २ १

१६) ।

परिमोचन न [परिमाचर] मोय छुछाण

(गुप ४ २५ बीन) ।

परिमाय धु [परिमाय] बाधे (महा) ।

परिपय सच [परि + अपय] १ पात में

जाना । २ लसं करता । ३ किमुपि करता ।

छह परिपयि (मात) (अति) ।

परिपय सच [परि + पय] पुजना । छह

परिपयि (मात) (अति) ।

परिपयन न [परिपयन] लसं करता (गुप

१ १) । देशो परिपयन ।

परिपयिअ नि [परिपयिअ] किमुपि 'पत्र

छाणमागपरिपयिअ' (अति) ।

परिपयिअ नि [परिपयिअ] मुक्ति (अति) ।

परिपय सच [परि + बन्ध] बन्ध करता

लुपि करता । कबह परिपयिअमाग

(बीन) ।

परिपयन न [परिपयन] बन्ध लुपि

(भाषा) ।

परिपय सच [हा] १ देशमा । २

जानता । परिपय (अति) उअ परिपयिअ

(अति) ।

परिपयिअ देशो परिपयिअ (अति) ।

परिपयिअ श्री [परिपयिअ] वरत (बर्तय

३ मा ३१ पत्र १२, २) ।

परिपयिअ श्री [परिपयिअ] देशो परिपयिअ

'जतो बान' बरिपो परिपयिअ रिपयिअ लसं

(बिद ११) ।

परिपय सच [परि + पयय] करता

करता, बिदय करता । बरि परिपयमाग

(भाषा १ २, १ २) ।

परिपयन न [परिपयन] कल्पना (बर्तय

१२०८) ।

परिपय धु [परिपय] जान-यहजान किरोय

कप से जान (पत्र ४ १ २२ १९ अति

११६) ।

परिपय नि [परिपय] पयित मुक्त (प

२२) ।

परिपय सच [पर्या + दा] १ समया

बहुल करता । २ बिमाय से बहुल करता ।

परिपय (गुप २ १ १७) । छह

परिपयिअ (हा ७) ।

परिपयिअ नि [पर्याय] छंछुल कप से गृहीत

(हा २ १—पत्र ११) ।

परिपयिअ देशो परिपयिअ (हा २ १—पत्र

११) ।

परिपयिअया श्री [पर्यायान] समया

बहुल (पण्ड १४—पत्र ७७४) ।

परिपयिअ नि [पर्याय] भाषी (पत्र) ।

परिपयिअ नि [पर्यायादीत] पर्याय को

पयित (पत्र) ।

परिपय देशो पय्याय (बीन ज्ञा महा

कप) ।

परिपयय नि [पर्यायन] १ पर्याय से

भागत (कप १ २१ गुप १ २१ छाया

१ १) । २ सर्वया निपय (छाया १ ७—

पत्र ११९) ।

परिपय सच [परि + दा] जानता ।

परिपय परिपयिअ (नि १७; पत्र) ।

परिपयन न [परिपयन] लसं (गुप १ १

२ ९ ७) ।

परिपयन न [परिपयन] १ रिपयय यमा

मेनद । २ समयाय जान (अति) ।

परिपयन न [परिपयन] १ गमन (हा १) ।

२ बाध जान (हा ७) । ३ बरिपय (हा

१ १) ।

परिपयन न [परिपयन] जानता (प

११) ।

परिपयिअ नि [परिपयिअ] परिपय

मुक्त (गुप १ १ २ ७) ।

परिपयिअ नि [परिपयिअ] जाना हुमा

रिपय (पत्र ७८ ११; पत्र १०८ अति) ।

परियाणिज पुं [परियाणिज] १ यान
वाहन । २ विमान-विहारे (डा ८) ।

परियादि कैरो परियाइ । परियादिपति
(कण्) । छंठ परियादिपति (कण्) ।

परियाय कैरो पन्थाय (डा ४ ४ गुण ११) ।
रिये २०११ बीन धावा (उवा) । १

परियाय मठ 'यदि' परियायि कोर बुवा
कोरि य' (गुण १ १ १ १) । १

प्रज्या बीया (डा १ २—पत्र १२१) ।
११ प्रज्या (पत्र ४) । १२ जिन-नेत्र के

केचन-माल की कर्माति का समय (छाया १
५) । धर पुं [भक्ति] बीया की छोया

के इड (डा १ २) ।

परिवापनरमुमि छी [पर्यापनरमुमि]
मुमि] जिन के केचन माल की उत्पति

के समय के केचन मालर छंठ प्रथम मुक्ति
पमेराने के बीच के समय का मालर (छाया

१ ८—पत्र १२४) ।

परिवार छंठ [परि + पार] १ धन-
मुपया करना । २ संकोष करना रिये

धन बरछा । परिवार (डा १ १) धा) ।
३ परिवारमात्र (छत्र) । करु परि

परिमात्र (डा १) ।

परिवार पुं [परिवार] मैत्रुन रिये-मैत्रुन
(पत्र १४—पत्र ४ १ डा १ १) ।

परिवार रि [परिपार] १ रिये-मैत्रुन
करेलाता (पत्र २ डा १ ४) । २ धन

मुपया करनेलाता (रिये १ १) ।

परियाण न [परियाण] १ सैन्य-मुपया
(गुण १८—पत्र २११) । २ नाम की

(पत्र १४) ।

परियाणया छी [परियाणया] करु
परियाणा } कैरो (पत्र १४ डा १,

१) । सट पुं [दाण] रिप-केचन के
मलय का छी का करु (रिये १) ।

परियाय कैरो परिवार (पत्र १४) ।
परियाययत्र न [परियाययत्र] विचार

विचार (गुण १) ।
परियाय कैरो परिवार = परिवार (पाचा

बीच १२४) ।
परियाययत्र यत्र [पर्या + यत्र] १ रिये-मैत्रुन

होय । २ मालर के रिये-मैत्रुन होय । ३

यत्र यत्रया । परियाययत्र, परियाययत्रि
(कण् धावा) ।

परियाययत्र न [पर्याययत्र] त्याग
प्राप्ति (रिये १) ।

परियाययत्रया छी [पर्याययत्र] मालेन
(डा १ ४—पत्र १४४) ।

परियाययत्र कैरो परिवारय (गुण २ २
१२) ।

परियाययत्रा छी [परियाययत्रा] परियाय
संवात (बीन) ।

परियाययत्रिया छी [परियाययत्रिया] कर्माय
यत्र यत्रयल रिपि (छाया १ १४—पत्र

१ १) ।

परियाययत्रि रि [पर्याययत्र] रिपि यत्र-
परियाययत्र] रिपि (पाचा २ १ १ १ ४

४ मय १४ २ यत्र) ।

परियाययत्र रि [पर्याययत्र] यत्र प्रात (पाचा
२ १ १ १) ।

परियाययत्र यत्र [पर्या + यत्रय] यत्राय
करया । परियाययत्र (उवा १८ २४ गुण

१५ २४) ।

परियाययत्रा पुं [पर्याययत्र] मठ, संयाडी
का माल (पाचा २ १ ४ २) ।

परियाययत्र रि [परियाययत्र] रिये-मैत्रुन
(रिये १) ।

परियाययत्र रि [परियाययत्र] रिये-मैत्रुन
(रिये १) ।

परियाययत्र रि [परियाययत्र] रिये-मैत्रुन
(रिये १) ।

परियाययत्र रि [परियाययत्र] रिये-मैत्रुन
(रिये १) ।

परियाययत्र रि [परियाययत्र] रिये-मैत्रुन
(रिये १) ।

परियाययत्र रि [परियाययत्र] रिये-मैत्रुन
(रिये १) ।

परियाययत्र रि [परियाययत्र] रिये-मैत्रुन
(रिये १) ।

परियाययत्र रि [परियाययत्र] रिये-मैत्रुन
(रिये १) ।

परिरद्ध रि [परिरद्ध] धार्मिक (पा
११८) ।

परिरद्ध पुं [परिरद्ध] १ परिधि परिरद्ध (उवा
११ २११ पत्र ८१, ११ पत्र १२५ बीन) ।

२ पर्याय, समानार्थक यत्र 'एकपरिधेय'
ति वा एकपर्याय ति वा एकपर्याय ति

ति वा एकपर्याय ति वा एकपर्याय ति
ति वा एकपर्याय ति वा एकपर्याय ति

ति वा एकपर्याय ति वा एकपर्याय ति
ति वा एकपर्याय ति वा एकपर्याय ति

ति वा एकपर्याय ति वा एकपर्याय ति
ति वा एकपर्याय ति वा एकपर्याय ति

ति वा एकपर्याय ति वा एकपर्याय ति
ति वा एकपर्याय ति वा एकपर्याय ति

ति वा एकपर्याय ति वा एकपर्याय ति
ति वा एकपर्याय ति वा एकपर्याय ति

ति वा एकपर्याय ति वा एकपर्याय ति
ति वा एकपर्याय ति वा एकपर्याय ति

ति वा एकपर्याय ति वा एकपर्याय ति
ति वा एकपर्याय ति वा एकपर्याय ति

ति वा एकपर्याय ति वा एकपर्याय ति
ति वा एकपर्याय ति वा एकपर्याय ति

ति वा एकपर्याय ति वा एकपर्याय ति
ति वा एकपर्याय ति वा एकपर्याय ति

ति वा एकपर्याय ति वा एकपर्याय ति
ति वा एकपर्याय ति वा एकपर्याय ति

ति वा एकपर्याय ति वा एकपर्याय ति
ति वा एकपर्याय ति वा एकपर्याय ति

ति वा एकपर्याय ति वा एकपर्याय ति
ति वा एकपर्याय ति वा एकपर्याय ति

ति वा एकपर्याय ति वा एकपर्याय ति
ति वा एकपर्याय ति वा एकपर्याय ति

ति वा एकपर्याय ति वा एकपर्याय ति
ति वा एकपर्याय ति वा एकपर्याय ति

ति वा एकपर्याय ति वा एकपर्याय ति
ति वा एकपर्याय ति वा एकपर्याय ति

ति वा एकपर्याय ति वा एकपर्याय ति
ति वा एकपर्याय ति वा एकपर्याय ति

ति वा एकपर्याय ति वा एकपर्याय ति
ति वा एकपर्याय ति वा एकपर्याय ति

ति वा एकपर्याय ति वा एकपर्याय ति
ति वा एकपर्याय ति वा एकपर्याय ति

परिष्ण देवो पर = पर (वि १०) ।
 परिष्णायसि नि [दि] भग्नान्-मयि (वि ११) ।
 परिष्णो देवो परिष्णो = दे (उप ४९) ।
 परिष्णो देवो परिष्णो । बहु परिष्णित्,
 परिष्णित् (धीव) ।
 परिष्णस्य भक्त [परि + स्तृस्] विर पञ्चम
 शरत् जला । परिष्णस्य (वि ४ ११७) ।
 परिष्णस्यु नि [परिष्णित्] गमन करने में
 समर्थ (अ ४ ४—पञ्च २७१) ।
 परिष्णस्य (पञ) नि [परिष्ण] सर्वथा टेका
 (मणि) ।
 परिष्णस्य सक [परिष्णस्य] जला । ईह
 परिष्णित् (सम्पत् ११७) ।
 परिष्णित् नि [परिष्णित्] को ठग गया
 हो (वि ४ १८) ।
 परिष्णित् नि [परिष्णित्] विरोधी दुरमन
 (वि ४ १; मन्त्र—विष्णु ७) ।
 परिष्णित् न [परिष्णित्] लुपि प्ररंभा
 (भाषा) ।
 परिष्णित् नि [परिष्णित्] लुपि पुनित
 (पञ्च १ ९) ।
 परिष्णित् नि [परिष्णित्] देवो परिष्णित् (धीव) ।
 परिष्णित् तु [परिष्ण] परिष्णित्-का (पञ्च
 २१ २४) ।
 परिष्णित् न [वि] यथापरा निष्ण 'छाया-
 एव परिष्णित्' (कल्प २१४२) ।
 परिष्णित् देवो परिष्णित् 'अज्ञानेव
 ह्यपरिष्णित्' (छाया १ १९ टी—पञ्च
 २२१ धीव) । देवो परिष्णित् ।
 परिष्णित् सक [मति + पद] स्वीकार करना ।
 परिष्णित् (मति) ।
 परिष्णित् सक [परि + पश्य] बधिर
 करना, परिष्णित् करना । परिष्णित् (मति) ।
 ईह परिष्णित्, परिष्णित् (भाषा
 नि ४१९) ।
 परिष्णित् न [परिष्णित्] परिष्णित् (मर्मत्
 ११२) ।
 परिष्णित् ओ [परिष्णित्] ऊपर देवो
 (मर्म) ।
 परिष्णित् नि [परिष्णित्] परिष्णित् (मर्म
 मर्म) ।

परिष्ण देवो परिष्ण = परि + मर्मत् । परि
 मर्मत् (मर्म) । ईह परिष्णित् (मर्म)
 (मर्म) ।
 परिष्णित् न [परिष्णित्] भाषितं भाषितः
 'भाषितः' (संज्ञा ३१) ।
 परिष्णित् देवो परिष्णित् (मा ४२) ।
 परिष्णित् देवो परिष्णित् (मर्म) ।
 परिष्णित् सक [परिष्णित्] योमन्त्रार (स
 ९८) ।
 परिष्णित् सक [परि + पश्य] पञ्च । मर्म-
 परिष्णित् परिष्णित् (पञ्च २ ९२ ९७
 उप ५ १) ।
 परिष्णित् नि [परिष्णित्] विष्णु हुमा (हुमा
 १९ मर्मत् २१ मर्मत् १ १ पञ्च
 १ २४) ।
 परिष्णित् सक [परि + मर्म] मर्मत् ।
 परिष्णित् मर्म (मर्म) । मर्म परिष्णित्
 (धीव) । मर्म परिष्णित् परिष्णित्,
 परिष्णित् (मा १४१, छाया १ १९
 मर्मत् छाया १ १) ।
 परिष्णित् न [परिष्णित्] परिष्णित्, मर्मत्
 (मर्मत् मर्मत् ८७५) ।
 परिष्णित् ओ [परिष्णित्] ऊपर देवो (वि
 ४ २) ।
 परिष्णित् देवो परिष्णित् = परिष्णित्
 (मर्म १९ टी) ।
 परिष्णित् नि [परिष्णित्] मर्मत् हुमा
 (मा १४२ ४११) ।
 परिष्णित् देवो परिष्णित् ।
 परिष्णित् सक [परि + मर्म] मर्मत्
 करना । मर्म परिष्णित् (मर्म) ।
 परिष्णित् नि [परिष्णित्] विष्णु मर्मत्
 किया गया हो बहु (मर्म ७) ।
 परिष्णित् देवो परिष्णित् = परि + मर्म । परि
 मर्म (उप ११ १) । परिष्णित् (मा ७) ।
 बहु परिष्णित् (मा २८१) ।
 परिष्णित् देवो परिष्णित् = परि + मर्म । बहु
 परिष्णित् परिष्णित् (स ४ मर्म १ २,
 १ १४) । ईह परिष्णित् (मर्म) ।
 परिष्णित् देवो परिष्णित् = परिष्णित् 'निष्णित्
 परिष्णित्' (हुमा ११४) । २ संज्ञा मर्मत्
 (मर्म) ।

परिष्ण देवो परिष्ण = परिष्णित् (काव) ।
 परिष्णित् देवो परिष्णित् (वि २८१
 मर्म—विष्णु ८१) ।
 परिष्णित् (मर्म) नि [परिष्णित्] पञ्च
 यथा परम किया गया 'मर्म' मर्मत्
 मोर् 'मर्म' परिष्णित् (मर्म) ।
 परिष्णित् नि [परिष्णित्] मर्मत्
 'मर्म' परिष्णित् (मर्म) ।
 परिष्णित् देवो परिष्णित् (हुमा २१२) ।
 परिष्णित् न [परिष्णित्] मर्म, मर्मत् (मर्म) ।
 परिष्णित् नि [परिष्णित्] मर्मत्
 'मर्म' परिष्णित् (मर्म) ।
 परिष्णित् देवो परिष्णित् (हुमा २१२) ।
 परिष्णित् न [परिष्णित्] मर्म, मर्मत् (मर्म) ।
 परिष्णित् नि [परिष्णित्] मर्मत्
 'मर्म' परिष्णित् (मर्म) ।
 परिष्णित् देवो परिष्णित् । मर्म-
 परिष्णित् (मर्म) ।
 परिष्णित् देवो परिष्णित् (उप १११ टी) ।
 परिष्णित् सक [परि + मर्म] मर्मत् मर्मत् ।
 परिष्णित् (मर्म १ १) ।
 परिष्णित् सक [परि + मर्म] मर्मत् करना ।
 परिष्णित् परिष्णित् (भाषा) । बहु
 परिष्णित् (मर्म १ १) ।
 परिष्णित् नि [परिष्णित्] परिष्णित्
 (हुमा १२१) ।
 परिष्णित् नि [परिष्णित्] परिष्णित् (हुमा
 १ १) ।
 परिष्णित् सक [परि + मर्म] मर्मत् करना ।
 परिष्णित् परिष्णित् (मर्म १ १) ।
 परिष्णित् नि [परिष्णित्] परिष्णित्
 (हुमा १२१) ।
 परिष्णित् नि [परिष्णित्] परिष्णित् (हुमा
 १ १) ।
 परिष्णित् सक [परि + मर्म] मर्मत् करना ।
 परिष्णित् परिष्णित् (मर्म १ १) ।
 परिष्णित् न [परिष्णित्] भाषित् (मर्म) ।
 परिष्णित् ओ [परिष्णित्] मर्मत् मर्मत्
 (मर्म १ १) ।
 परिष्णित् नि [परिष्णित्] परिष्णित्
 किया गया हो बहु (मर्म ७) ।
 परिष्णित् देवो परिष्णित् = परि + मर्म । परि
 मर्म (उप ११ १) । परिष्णित् (मा ७) ।
 बहु परिष्णित् (मा २८१) ।
 परिष्णित् देवो परिष्णित् = परि + मर्म । बहु
 परिष्णित् परिष्णित् (स ४ मर्म १ २,
 १ १४) । ईह परिष्णित् (मर्म) ।
 परिष्णित् देवो परिष्णित् = परिष्णित् 'निष्णित्
 परिष्णित्' (हुमा ११४) । २ संज्ञा मर्मत्
 (मर्म) ।

परिभाष्य वि [परिभाषित] पक्का हुआ (पठन ३७ १४)।

परिभाई श्री [परिभाई] कर्कश-जाला 'बह' वस्तु ठाढ़ बना बह्मपरिभाई बह्म पठा' (पठन ४२, ४१)।

परिभाइ सक [पठय्] १ अथवा संगत करता। २ खनना, निमज्ज करता। परिभाइइ (३४ ४ २)।

परिभाइइ कैओ परिपाइइ (नमः)।

परिभाइि श्री [परिपाटि] १ पकड़ि रीति (विने १ ८४)। २ पीछ, थोड़ि (उत्त १ ३२)। ३ कम परंपरा (संवे २)। ४ सुनार्थ बाजना सम्प्रदाय 'विश्वविद्यालयी धर्मिकबोध' (बर्मेस १४)। 'एकपदीहि' बर्षि न करे परि भाइयाएतवि वारि' (पुत्तक ११)।

परिभाइिअ वि [पठित] पठित (कुमा)।

परिभाइ कैओ परिभाइि 'परिभाइयाएय' इन्ह उर्य' (पठन ३१ १ १; पाठ)।

परिभाइ पु [परिभाइ] निष्ठा शेष-नीरुत (बर्मेस १४ ४)।

परिभाइि श्री [परिभाइिनी] शीला-स्त्रिये (उत्त)।

परिभाय कैओ परिभाइ (कम दीन पत्र १३, ४) छाया १ १ छ ३२ धामनि (१४)।

परिभाया पु [परिभाइइ] संपातो परिभायय } बाबा (छला गुर १३, २)।

परिभायणी श्री [परिभाइनी] छत ठांजली शीला (उत्त ४४)।

परिभाइ सक [परि + भाइय्] १ बैठन करना। २ बुझन करना। बह परिभाइयन (उत्त १३ १४)। छंछ परिभाइिवा (सुप १ ३ २, ३)।

परिभाइ पु [परिभाइ] दुह-भोज करके मनुष्य (दीन मद्रा कुमा)। १ न, म्याज (पाथ)।

परिभाइ न [परिभाइ] १ निधनपण (पठ १ १—नम १६)। २ धाम्मज्ज, धामा (३१ ८६)।

परिभाइ वि [३] अर्थ पठन (३ १)।

परिभाइि वि [परिभाइि] १ परिभाइ संभव। २ बैठन 'बहा दे जुहुई बने मन्थपरिभाइि' (उत्त ११ २३ काव)।

परिभाइ कैओ परिभाइ। परिभाइ (३ १ ३१ टी)।

परिभाइ सक [परि + पाइय्] पकड़न करना। परिभाइइ, परिभाइइ (अर्थ मद्रा)। बह, परिभाइयन (गुर १ ३०१)। छंछ परिभाइयि (उत्त)।

परिभाइ कैओ परिभाइ = परिभाइ (छाया १ ८—नम १११)।

परिभाइयि वि [परिभाइयि] कड़ा कर फिर से बीसा हुआ (छ ४ ४)।

परिभाइिया श्री [परिभाइिया] शीला-स्त्रिये फिर से मद्राबो का धारण (छ ४ ४)।

परिभाइ पु [३] केन में सोनेबाजा पुष्प (३ १ २६)।

परिभाइ न [परिभाइस] बह कड़ा 'अन्धोबुद्धमन्थपरिभाइ' गुप्तिमवर्षि वि म्पेछ-परिभाइ' (अर्थ)।

परिभाइि वि [परिभाइि] बधनेबाजा (सुपा ४२)।

परिभाइयि वि [परिभाइयि] मुद्राकित मुकुट-मुकुट 'मन्थपरिभाइयि' (अर्थ)।

परिभाइ सक [परि + भाइय्] १ बहल करना। २ धावादि खेलना, छपाई-नीड़ा करना 'विश्वविद्यालयी धर्मिकबोध' (मद्रा)।

परिभाइ पु [परिभाइ] बल का उल्लास बहल।

'भित्तुबर्षि' अर्थ विषयधर्मपण्डितगुरु बर्षि'। परिभाइो विम बुद्धस बहल छपाइयो बहो (वा ३७७)।

परिभाइ पु [३] बुद्धिमान, धर्मिक (३ १ २३)।

परिभाइय न [परिभाइय] धाम्मिक-धर्मिक 'धाम्मपरिभाइयि' (उत्त ८ ८१) मद्रा)।

परिभाइ सक [परि + भाइ] बैठन करना। परिभाइइ (मद्रा ७४) धामा १ ४४)।

परिभाइि सक [परि + भाइ] १ कलन होना। २ धामा। परिभाइिइ (मद्रा १ ४ २, ३ वि ४८४)।

परिभाइयि वि [परिभाइयि] ठाढ़ना बिल-हूत (सुप १ ३ १ २)।

परिभाइि वि [परिभाइ] पठना हुआ (३ ८८) सुपा १२४)।

परिभाइस सक [परिभाइ + भाइ] बहल। परिभाइसि परिभाइसि (मद्रा १ १ २, ३)।

परिभाइि श्री [परिभाइि] परिभाइ (सुप ३८७)।

परिभाइि वि [परिभाइ] जो बिना बह हो बह (सुपा २७)।

परिभाइस सक [परिभाइ + भाइस] १ बिना करना। २ पठाना जगमान। छंछ परिभाइसि (मग)।

परिभाइयि वि [परिभाइयि] १ बिष्ट। २ पठाना (सुप २, ३ १)।

परिभाइयि वि [परिभाइयि] मुद्रा-पुष्प (छला)।

परिभाइयि वि [परिभाइयि] मुद्रा पुष्प टपक हुआ (छला)।

परिभाइि वि [परिभाइि] कलना हुआ (कलना)।

परिभाइि वि [परिभाइ] बिटोल बिरल (नम ३ १२६)।

परिभाइसि वि [परिभाइसि] निष्ठा (कल)।

परिभाइ सक [परि + भाइ] बैठन करना। परिभाइ (मद्रा ७४)।

परिभाइ सक [परि + भाइ] पठन, बिना। छंछ परिभाइस (उत्त १४ ६)। परिभाइस पु [परिभाइ] धाम्मिक (बर्मेस १२६)।

परिभाइयि वि [परिभाइयि] अर्थ विष्णु, 'मन्थ' अर्थ विष्णु (मद्रा ७४)। परिभाइ (गुर १२ १४)।

परिभाइ सक [परि + भाइ] पठना हुआ करना। परिभाइ (उत्त १४)।

परिभाइि वि [परिभाइि] बिटोल हुआ भी बहो बह (उत्त ११ १ टी)।

परिधीह न [परिपीठ] भासल-विरोध (अर्थ) ।
 परिधीह छक [परि-धीह] बलता ।
 छंङ परिधीहियाण (भाषा २ १ ८ १) ।
 परिधुह नि [परिधुह] परिधीह डेहिय
 (छाया १ १४ बर्निक २४ दीव महा) ।
 परिधुहय नि [परिधुह] १ छा हया । २
 न भास भिवाध (पद २४) । ऐसो
 परिधुसिध ।
 परिधुह देसो परिधुह (भाष १२) ।
 परिधुहि भी [परिधुह] डेह्य (भाष १२) ।
 परिधुसिध नि [परिधुह] सिध रछा हया
 'जे निनभू धनेसे परिधुसिध' (भाषा १ ५
 १ १ १ २) । ऐसो परिधुहय ।
 परिधुसिध नि [परिधुह] पठ धुवण हया
 (भाषा २ १ १ १) ।
 परिधुह नि [परिधुह] समर्न (उप ७ २) ।
 परिधुह नि [परिधुह] स्तुन (भाष ८१
 उत ७) ।
 परिधुह नि [परिधुह] १ बलन, बलिह
 (उप ७ २१) । २ मसिल छुट (भाषा २
 ४ २, ४) ।
 परिधुह नि [परिधुह] बहन किया हया
 बीर हया 'न बहस्यति धर्मे पुण विपरि
 हर्त इति लोह' (बर्निक ७) ।
 परिधुहय देसो परिधुहय (उप) ।
 परिवेह छक [परि + वेह] डेहना
 बपेटा । परिवेह (अर्थ) । छंङ परिवेहिय
 (भिह १) ।
 परिवेह दु [परिपेट] डेह्य वेह्य वा भाव
 हो सिक्कर डेहनाण्डुहपरिवेह' (छिदि
 १८) ।
 परिवेहाविय नि [परिवेहिय] डेहिय कथना
 हया (नि १ ४) ।
 परिवेहिय नि [परिवेहिय] डेहा हया कथ
 हया कथे हया (पर ७१५ टी १७ २,
 नि १ ४) ।
 परिवेह छक [परि + वेह] कथना
 'कथपरिपेट परिवेह' (अर्थ) ।
 परिवेहिय नि [परिवेहिय] कथन-सीम
 (पद १) ।
 परिवेह छक [परि + वेह] कोपना । नह
 परिवेहमाय (भाषा) ।

परिवेस छक [परि + वेस] परोपना ।
 परिवेस (छाया १८१) । कर्म परिवेसिहम
 (छाया १ ८) । नह परिवेसंठ परि
 वेसयंठ (भिह १२ छाया १११ छाया
 १ ७) ।
 परिवेस दु [परिवेस] व १ डेह्य (गठ १) ।
 २ मज्ज वेसावि से सुय-बाह क डेहनाकर
 मज्ज 'परिवेसो वेसे फलवण्यो' (पठम
 ११ ४७) छ ११२ टी गठ १) ।
 परिवेसाण न [परिवेसाण] परोपना (छ
 १८७ विह १११) ।
 परिवेसाणा भी [परिवेसाणा] ऊपर देसो
 (भिह ४४१) ।
 परिवेसि [परिवेसिह] समीप में रहते
 बाला (पद ७) ।
 परिवेसा छक [परि + वेस] १ छंङ
 कथन करना । २ बीहा सेना । परिवेस
 परिष्कारवाधिय (छाया १ १ ४ १ नि
 ४६) ।
 परिवेस नि [परिवेस] परिवेहिय 'छाया
 परिष्कारो विह सप्युपिह्यमावेसो' (बधु) ।
 परिवेस नि [परिवेस] विरोध अन्य
 (भाष—गुण ७) ।
 परिवेस्य दु [परिवेस्य] बर्निक बर्निक
 का मत (उप १ १ टी) ।
 परिवेस छक [परि + वेह] बहन करना
 बाण करना । परिवेह (समीप २२) ।
 परिवेसाइया भी [परिवेसाइया] संवाधिनी
 (छाया १ ८ महा) ।
 परिवेसाज (टी) दु [परि + वेस] संवाधिनी
 (भाष ४६) ।
 परिवेसाज (टी) दु [परिवेसाज] संवाधिनी
 (नि १७७ पद—गुण ८४) ।
 परिवेसाजिमा (टी) डेसो परिवेसाइया
 (भा २) ।
 परिवेसाय देसो परिवेसाज (सुपनि ११२
 भीप) ।
 परिवेसाय दु [परिवेसाज] संवाधिनी
 परिवेसाय साहु (अर्थ) ।
 परिवेसाय नि [परिवेसाज] परिवेसाज-
 छान्को (अर्थ) ।
 परिवेसाय नि [परिवेसाज] परिवेसाज-
 छान्को (अर्थ) ।
 परिवेसाय नि [परिवेसाज] परिवेसाज-
 छान्को (अर्थ) ।

परिसेह छक [परि + सेह] मय करना
 डरना । नह परिवेसमाय (छाया १ १
 २) ।
 परिवेसि नि [परिवेसिह] सीध (पण्ड
 १ १) ।
 परिवेसा छक [परिसे + समा] १ पण्ड
 छंङ जाना । २ मिली करना । छंङ
 परिवेसाय (उप ७ १) ।
 परिवेसा भी [परिसे + समा] संवाधिनी
 (पठम २ ४६) भीष ४ पठ—गाथा
 ११ तंहु ४ छण) ।
 परिवेसा दु [परिवेसा] वंग वीहण (हम्मोर
 ११) ।
 परिवेसा दु [परिवेसा] धर्मिज्ञ (पठम
 २१ १२) ।
 परिवेसाय नि [परिवेसा] छुट सहिह
 (बर्निक ११) ।
 परिवेस छक [परिसे + रयापय] संवाधन
 करना । परिवेस (भा) (पिप) ।
 नह परिवेसंठिय (अप ४६) ।
 परिवेसंठिय नि [परिवेसायिह] संवाधिय
 (छंङ १८) ।
 परिवेसंठिय नि [परिवेसंठिय] सिध रछा
 हया (महा) ।
 परिवेस नि [परिवेसा] नका हया (महा) ।
 परिवेसाय नि [परिवेसायिह] बाधिय
 (छ २११) ।
 परिवेसा छक [परि + वेह] बलना
 मय करना डरना डरना । परिवेसा
 (अ १ टी छ १७१) । नह परिवेसंठ,
 परिवेसमाय (का ११७ ४ १११) ।
 छंङ परिवेसिहय (छाया १११) । छ
 परिवेसिहय (छ १११) ।
 परिवेसाय न [परिवेसाय] परिवेसाय (छ
 २, १२, ११ २१; छाया २ १) ।
 परिवेसाय नि [परिवेसाय] १ पठ
 (अर्थ) । २ न. परिवेसाय परिवेस (भा
 १ १) ।
 परिवेसाय नि [परिवेसाय] नयन करने-
 बाला (छाया १ १ नि २११) ।
 परिवेसाय (भा) नि [परिवेसाय] धर्मिय
 (छ) ।

परिसङ्घ एक [परि + सङ्घ] सम्पुङ्ग होय ।
 परिसङ्घ (भाषा २ १ १, १) ।
 परिसङ्घिय वि [परिसङ्घित] सङ्घा हुय
 विन्दु (भाषा २ २ १) ।
 परिसङ्घ वि [परिसङ्घ] दुस्र भोटा (से
 १ १) ।
 परिसङ्घ वि [परिपण्ण] भो ऐयन हुमा हो
 नीडित (बन्धन १७ १) ।
 परिसङ्घ एक [परि + सङ्घ] बन्धन ।
 परिसङ्घ (गट—विज ११) ।
 परिसङ्घि वि [परिसङ्घि] १ बन्धनेभला
 (गण) । २ पुष्पी हाथ धोर पर से बन्धने-
 भला बन्धु—बन्धन छर्वा माथि माथि
 गण । छे जी (बोध २) ।
 परिसङ्घ भेयो परिसङ्घ (गट) ।
 परिसङ्घ वि [परिसङ्घ] सम्पुङ्ग भो पुच
 हुमा हो नह (से ११ १२ गुर १२
 २२) ।
 परिसङ्घि जी [परिसङ्घि] समाधि
 पुष्पेण (उप १२० स २२) ।
 परिसङ्घिय वि [परिसङ्घिय] भो समाधि
 किया गया हो, पुच किया हुमा (विदे
 ११ २) ।
 परिसङ्घ एक [परि + सङ्घ] पुर्ण
 करण । संघ परिसङ्घिभ (मनि ११०) ।
 परिसङ्घ पु [परिसङ्घ] नगर धारि के समीप
 वा स्थान (प्रीत गुण ११ मोट ७१) ।
 परिसङ्घि वि [परिसङ्घि] सम्पुङ्ग
 (गण) ।
 परिसङ्घ एक [परि + सङ्घ] भन्ना टाकना ।
 नह परिसङ्घ (उट्ट ११ ४१) ।
 परिसङ्घ पु [परिसङ्घ] केयो परिसङ्घ (बन) ।
 परिसङ्घि [परिसङ्घ] १ सम्पुङ्ग, बन्धन (साम
 चीन बरट रिता १ १) । २ परिसङ्घ (स
 १ १—नय १२०) ।
 परिसङ्घ केयो परिसङ्घ (पत्र) ।
 परिसङ्घिय केयो परिसङ्घ ।
 परिसङ्घ एक [परि + सङ्घ] १ सम्पुङ्ग
 बन्धन । २ ध्यान बन्धन । परिसङ्घ (कला
 बन) । संघ परिसङ्घिभ (का) ।

परिसङ्घ एक [परि + सङ्घ] १ बन्धन
 उन्नर उन्नत । २ धन । ३ रक्षण परिसङ्घ-
 विज भोष्ण (स १ १ २०) । परिसङ्घ
 विजि भुम्भ, परिसङ्घि भवि परिसङ्घिभ (भाषा
 २ १ २) ।
 परिसङ्घि जी [परिसङ्घि] बन्धन बीला
 (ब १) ।
 परिसङ्घि जी [परिसङ्घि] पुष्पकण्ठ
 (सुमनि ७ २) ।
 परिसङ्घि वि [परिसङ्घि] परिसङ्घि-
 विज (बोध ११) ।
 परिसङ्घि वि [परिसङ्घि] परिसङ्घि-
 विज (सिद्ध २२२) ।
 परिसङ्घि जी [परिसङ्घि] गिण्या हुमा
 (स १ १ ११) ।
 परिसङ्घ एक [सङ्घ] सङ्घ होला । परि
 सङ्घ (हे ४ ११०) ।
 परिसङ्घ वि [परिसङ्घ] नीचे केयो
 (गट) ।
 परिसङ्घि वि [परिसङ्घि] इच्छा कला
 (बन्धन) ।
 परिसङ्घि वि [सङ्घ] सङ्घ सम्पुङ्ग
 (हुमा) ।
 परिसङ्घि वि [परिसङ्घि] इच्छा किया
 हुमा (भाषा १ १) ।
 परिसङ्घ एक [परि + सङ्घ] १ नीचे
 हुमा । २ बन्धन । संघ परिसङ्घिय
 (भाषा २ १ १) ।
 परिसङ्घि केयो परिसङ्घि (स १) ।
 परिसङ्घि वि [परिसङ्घि] प्रतिपादित
 वट (सङ्घ) ।
 परिसङ्घ एक [परि + सङ्घ] सीधना ।
 परिसङ्घिभ (उप २ १) । नह परिसङ्घ
 माग (काका १ १) । बन्धन परिसङ्घिमाग
 (कल १ १४) ।
 परिसङ्घि वि [परिसङ्घि] भविष्ट, बाली
 बला हुमा (भाषा १ २ १ २) ।
 परिसङ्घि वि [परिसङ्घि] विष्ट विष्टि
 टीला (बन्धन) ।
 परिसङ्घि वि [परिसङ्घि] १ बीबा हुमा
 (भा १ १ सङ्घ) । २ न. बरिष्ट विष्ट
 (गण १ १) ।

परिसङ्घि वि [परिसङ्घि] परिसङ्घ बाबा
 (स १) ।
 परिसङ्घि एक [परि + सङ्घ] सम्पुङ्ग
 कला प्राप्त कला । संघ परिसङ्घिभ
 (सङ्घ) (सङ्घ) ।
 परिसङ्घि न [परिसङ्घि] सम्पुङ्ग प्राप्त
 (रङ्ग सङ्घ) ।
 परिसङ्घि वि [परिसङ्घि] सम्पुङ्ग
 (सङ्घ) ।
 परिसङ्घि केयो परिसङ्घि (पत्र) ।
 परिसङ्घि वि [परिसङ्घि] भुम्भ बला हुमा
 (विता १ २ १२) ।
 परिसङ्घि वि [परिसङ्घि] लाली रिक्त गुण
 (से ११ १०) ।
 परिसङ्घि वि [परिसङ्घि] सर्वना सोमा हुमा
 (गट—उन्नर २१) ।
 परिसङ्घि वि [परिसङ्घि] निर्जन निर्जन (का
 सङ्घ) ।
 परिसङ्घि जी [परिसङ्घि] किमुक्ति, निर्जन
 (बन्धन १ ११) ।
 परिसङ्घि केयो परिसङ्घि (विदे २२ १
 सङ्घ) ।
 परिसङ्घ (बन) एक [परि + सङ्घ]
 गुणा । संघ परिसङ्घिभ (बन) (सङ्घ) ।
 परिसङ्घि जी [परिसङ्घि] गुणा (हुमा
 १ १) ।
 परिसङ्घ पु [परिसङ्घ] केचन (प्रीत १००) ।
 परिसङ्घ पु [परिसङ्घ] १ बाली बला हुमा
 भविष्ट (से १ २१ पत्र १२ ४) । न
 सम्पुङ्ग १ १) । २ सम्पुङ्ग-भविष्ट वा
 एक भेद परिसङ्घिभ (बन्धन १२ ११) ।
 परिसङ्घि वि [परिसङ्घि] १ बाली बला
 हुमा (पत्र) । २ परिसङ्घिभ निर्जन
 'वज्रवि वज्रगुण बन्धुवि
 बन्धुगुण बन्धुगुण विष्ट वा बन्धुगुण ।
 वरिष्ट विष्टिभो विष्ट
 के हुमा सम्पुङ्ग-भविष्ट' (ग ४ १) ।
 परिसङ्घ पु [परिसङ्घ] प्रतिवेद विष्टिभ
 'वाग्भुष्ट वाग्भुष्ट वाग्भुष्ट वाग्भुष्ट
 ईष्ट वाग्भुष्ट वाग्भुष्ट वाग्भुष्ट' (बन्धन) ।

परिहृत्कृत्य परिहृत्वा (द्वय ७२, द्वय १
४ १ २३) । इ परिहृत्विभ्य (स ११३) ।

परिहा ङी [परिहा] ङाई (वर ४ २३
वाच) ।

परिहाइम नि [हे] परिहाइ (वर ४) ।

परिहाइवि ङेको परिहाइ = परि + बाधम् ।

परिहाइ न [परिधान] १ वस्त्र, कपडा
(द्वय ३९; द्वय ३३) । २ नि परिहृत्तेनसा
पञ्चमेनसा 'अभिहितसा लङ्गिबतत्परि
हाडी' (पञ्च ११ ११३) ।

परिहाइवि ङी [परिहावि] ह्रास गुणधान
यवि (सम ६०-अ १२६, ङी ११ प्राय
११) ।

परिहाइ नि [हे] ङीय दुर्बल (हे १ २३;
वाच) ।

परिहायित
परिहायमाय } ङेको परिहा = परि + हा ।

परिहार दु [परिहार] कण्ठ इति (वर १) ।

परिहार दु [परिहार] १ परिष्कार नर्तन
(वर १) । २ परिशील, आगमन 'एवं ऋतु
योगता । ब्रह्मसङ्काश्यापो पञ्चपरिहार
विहृति' (सम १३) । ३ परिहार विमुक्ति
नामक संयमनचिह्न (सम ४ ११ २१) ।
४ विषय (वर १) । ५ लभ-विरोध (सम ४, २३
वर १) । 'विमुक्तिम' 'विमुक्तीय न
[विमुक्ति] नावि-विरोध संयम-विरोध
(सम ४, २३ वर १३) ।

परिहारि नि [परिहारि] परिहार करने-
वाला (इह ४) ।

परिहारिम नि [परिहारिम] धावात्वात्
हुनि ऋतुक् विहाटी नैव हातु (धावा २, १
४) ।

परिहारिणी ङी [हे] हेर न म्याई हई पैत
(हे १ ११) ।

परिहारिव नि [परिहारिव] १ परिहाय के
योग (इद २) । २ परिहार नामक लभ वा
आनन्द (वर १६) ।

परिहाइ दु [हे] यत्न-मिदय नीटी (हे १
२३) ।

परिहाय सक [परि + धापय] परिष्कार ।
वद परिहार्य (वर) (वर) ।

परिहाय सक [परि + धापय] ह्रास करना,
नम करना होन करना । वद परिहायैमाय
(छाना १ १—पत्र २) ।

परिहायिम नि [परिहायित] हीन किया
हुना (वर ४) ।

परिहायिम नि [परिहायित] परिष्कार हुआ
(वहा गुर १ १७ स २२३; द्वय ३) ।

परिहाइ दु [परिहाइ] कण्ठ इति (वा
७०१; पञ्च) ।

परिहाइया ङी [परिभापना] ज्ञानमन्त्र
(भावा २) ।

परिहि दुंकी [परिहि] १ परिवेष्ट 'ससिबिं
न परिहिता वदं सिनेय लस्य पञ्चभिं'
(वर १२३) । २ परिष्कार-विस्तार (रज) ।

परिहिइ नि [परिहिइ] परिष्कार हुआ (लभ-
मन्त्र, कप्य धीय पात्र गुर २ ४) ।

परिहिइकृत्य ङेको परिहा = परि + बा ।

परिहिइ सक [परि + हिइ] परिष्कार
करना । परिहिइय (सम ४ १ टी—पत्र
१२२) । वद परिहिइव परिहिइमाय
(पञ्च ४ १६० १ २३ १३३, धीय) ।

परिहिइवि नि [परिहिइवि] परिष्कार
भक्त हुआ (पञ्च १ १११) ।

परिहिइया } ङेको परिहा = + बा ।
परिहिइयम् }

परिहिइयमाय ङेको परिहा = परि + हा ।

परिहीन नि [परिहीन] १ कम लुप्त (धीय) ।
२ क्षीय क्षिप्त (गुण १) । ३ पीडित,
निराश (वर) । ४ न ह्रास शरय (पञ्च) ।

परिहुन नि [परिहुन] विस्तार मोन किया
वहा हो वद (सि १ १४ १४ १३३) ।

परिहुम नि [परिहुम] पठयित अभिमुक्त
(स ११४ पञ्च १ ६, सि २) ।

परिहुन न [वि-परिहायिक] धानुक्त-विहीन
(धीय) ।

परिहु सक [परि + मु] पठयन करना ।
परिहु (वर) ।

परिहुइ ङेको परिमोग (वर ४) ।

परिहुइ सक (वर) सक [परि + हुइ] कम
हुना । परिहुइ (विग) ।

परिहु सक [परि + हु] ज्ञान पमन करना ।
परिहि (सि ४३३) । वद परिहि (सि
४३३) ।

परिहु सक [हिप] कृष्ण । परिहु (सि ४
१४१) । परिहि (द्वय) ।

परिहु सक [भूम] प्रपण करना, दुष्टता ।
परिहु (सि ४ १११) । परिहि (पञ्च १
१—पत्र ४४) ।

परिहाय दु [परिहाय] निर्वात विमल
(वर १४) ।

परिहाय ङेको परिमोग = परि + लभ 'सि-
म्यो पयलुगडाइसापो बोमुलपेहो परि-
समि' (वर १३) ।

परिमोग ङेको परिमोग (द्वय ४१७ अलभ
२५४ पत्र ४ ६) ।

परिमाइ ङेको परिमाइ (बीवद १२१ १२२
पत्र १२३) ।

परिह ङेको परिह (वर) ।

परिहइ दु [हे परिहइ] हेतु विपरी-
यमान्मिष्टं एवण्णं वाय एव' (धीय
७ ६) ।

परिहस दु [परिहस] धार्मिक (द्वय) ।

परिहइ नि [परिहइ] नर्तन (सम १,
६ टी) ।

परिहाय ङेको परिहाय = परिहाय (पञ्च
१ १ १ वर २३७) ।

परिहार ङेको परिहार = परिहार (द्वय
वेद्य ४०) ।

परिहाइ न [परिहाइ] पठयन (सि २,
१४) ।

परिहाइ ङेको परिहाइ (वर) ।

परिहाइ दु [परिहाइ] नृत्य नाचि हे होनेवाली
नीम (धावा धीय वर) ।

परिहाइ नि [परिहाइ] ङी रोने लगा हो वद
(स ७२३) ।

परिहाइ ङेको परिहाइ (सि १४ ३ टी
गुवा १११ या १ गुण २३) ।

परिहाइ } ङेको परिहाइ (सि १ १३, १
परिहाइ } १४ या १२४ वर १ माहा
४ ४) ।

परिहाइ ङेको परिहाइ (द्वय ४) ।

परिहाइ नि [परिहाइ] नि [परिहाइ] नि
अवस्थित (वर २) ।

परिहाइ नि [परिहाइ] नर (स १४४) ।

परिहाइ नि [परिहाइ] १ कलम (वर १२१) ।
२ वहा हुआ (धीय नि ४ १) ।

परुष सक [प्र + रूपय] प्रतिपादन कटाव ।
परुषे, परुषेति (दीप, कथा मय) । संक्ष.
परुषइत्ता (ठा १ १) ।

परुषा वि [प्रुषक] प्रतिपादक (सक) कुत्र
१८१) ।

परुषण न [प्रुषण] प्रतिपादन (पण) ।
परुषणा की [प्रुषणा] ऊपर देखो (भाष
१) ।

परुषिभ वि [प्रुषिभ] १ प्रतिपादित
लिखित (पण्ड २ १) । २ प्रकटित
'उत्तरार्द्ध' पण्डितपरुषिभमाधुरमुत्तरमाधुरि
द्यौ' (सवि २१) ।

परुष धु [वि] पिशाच (वि १ १२) पाप
यत्) ।

परुष य [परेष] बार धनदार (महा) ।

परुषमण्य वैको परिक्रमण (कय) ।

परुषय म [वि] पाप-पतन (वि १ ११) ।

परुष वि [परेषुस्तन] परलो का परलो
होनेवाला (सिंह २४१) ।

परो य [पर] एकट, 'परोरुतिष्ठि ठवैरि'
(ठका) ।

परोइय वैको परुषय (उप ७१८ टी) ।

परोक्क म [पराक्] १ प्रत्यक्ष-कृत प्रमास्य

'पक्कमपरोक्क' इत्येव वयो वनमाह' (सुर
१२, १) । २ वि परोक्ष-श्रमाय का
विषय अश्रमाय (मुद्रा १४७ हे ४ ४१८) ।
३ न पीछे, धातु की पीछे में मम परोक्के
कि छप धन्युयुय ? (महा) ।

परोट्ट वैको परोट्ट=पर्यट (पठ) ।

परोप्पर } वि [परस्पर] आपस में (वि १
पराप्पर) १२ कुमा कयू पाठ) ।

परोपचार धु [परोपचार] कुरे की यत्ताई
(माट-युष्म ११८) ।

परोपचारि वि [परोपचारि] कुरे की
यत्ताई करनेवाला (कसम ३ १) ।

परोपर वैको परोप्पर (माह २१ १) ।

परोपिय वैको परुषय (उप ७२८ टी स
४०) ।

परोय सक [प्र + रु] १ उत्पन्न होना ।
२ बहना । परोयि (टी) (माट) ।

परोह धु [मरोह] १ उत्पत्ति (कुमा) । २
द्वि । ३ मरु, नीलेश्वर (वि १ ४०) ।

'पुत्रवधाय परोहे रेह माहापतिष्' (वर्मा
११८) ।

परोह न [वि] घर का पिछला दीपक, घर
के पीछे का भाग (दीप ४१७) पाप या
१८३ या बरजा १ १ १ ८) ।

पठ सक [पठ] १ बीना । २ जाना । पमह
(वह) । वैको पठ = बह ।

पठ (धन) सक [पठ] पढ़ना विरग ।

पमह (विग) । बह पठन (विग) ।

पठ (पण) सक [प्र + कटय] प्रकट करना ।

पम (विम) ।

पठ सक [पठ + अय] भगता

'भोरण कनुपाय व

पानलपहियाय कुकुटी रह ।

रे पमह पमह बाह्य

बह पण्डितपर पण्ठी' (बज्जा

११४) ।

पठ न [वि] खेर, पसोहा (वि १ १) ।

पठ न [पठ] १ एक बहुत छोटी ठोस बार
ठोसा (ठा १ १ मुद्रा ४१७ बरजा १८
कुम ४१६) । २ मांस (कुम १८६) ।

परोष सक [प्र + छर] पतिभण्य
करना । परोषेज्जा (दीप) ।

परोषण न [प्रुषण] उत्सव (दीप) ।

परोह धु [पठामण्ड] घन बूना दोठने का
काम कलेवाला कपरीयर, 'पक्कई परोहो'
(प्राक्ष १) ।

परोह धु [पठामण्ड] प्याज (उप ११
१८) ।

परोह सक [प्र + छर] सटका । परोह
(वि ४००) । बह परोषमाण (दीप महा) ।

परोह वि [प्रुषय] १ सटकनेवाला सटका
(पण्ड १ ४ टाय) । २ बज्जा, दीर्घ (सि
१२, ११, कुमा) । ३ धु. धु-विशेष एक
महाहय (उप १) । ४ धु-विशेष धु-
रान का बालाई धु-वि (उप ११) । ५ धु
कामल-विशेष (दीप) । ६ एक सटका का
नाम का कय (हृ १) । ७ धु. (उप
११) । ८ बह परोह का एक शिखर
(अ ४-पम ४१६) । ९ धु. (उप ११)
१ ठा ४ १-पम १८३ १ वैभ-विभाग
विशेष (उप १८) ।

परोह सक [प्र + छर] सटका । परोह
(वि ४००) । बह परोषमाण (दीप महा) ।

परोह वि [प्रुषय] १ सटकनेवाला सटका
(पण्ड १ ४ टाय) । २ बज्जा, दीर्घ (सि
१२, ११, कुमा) । ३ धु. धु-विशेष एक
महाहय (उप १) । ४ धु-विशेष धु-
रान का बालाई धु-वि (उप ११) । ५ धु
कामल-विशेष (दीप) । ६ एक सटका का
नाम का कय (हृ १) । ७ धु. (उप
११) । ८ बह परोह का एक शिखर
(अ ४-पम ४१६) । ९ धु. (उप ११)
१ ठा ४ १-पम १८३ १ वैभ-विभाग
विशेष (उप १८) ।

परोह सक [प्र + छर] सटका । परोह
(वि ४००) । बह परोषमाण (दीप महा) ।

परोह वि [प्रुषय] १ सटकनेवाला सटका
(पण्ड १ ४ टाय) । २ बज्जा, दीर्घ (सि
१२, ११, कुमा) । ३ धु. धु-विशेष एक
महाहय (उप १) । ४ धु-विशेष धु-
रान का बालाई धु-वि (उप ११) । ५ धु
कामल-विशेष (दीप) । ६ एक सटका का
नाम का कय (हृ १) । ७ धु. (उप
११) । ८ बह परोह का एक शिखर
(अ ४-पम ४१६) । ९ धु. (उप ११)
१ ठा ४ १-पम १८३ १ वैभ-विभाग
विशेष (उप १८) ।

परोह सक [प्र + छर] सटका । परोह
(वि ४००) । बह परोषमाण (दीप महा) ।

परोह वि [प्रुषय] १ सटकनेवाला सटका
(पण्ड १ ४ टाय) । २ बज्जा, दीर्घ (सि
१२, ११, कुमा) । ३ धु. धु-विशेष एक
महाहय (उप १) । ४ धु-विशेष धु-
रान का बालाई धु-वि (उप ११) । ५ धु
कामल-विशेष (दीप) । ६ एक सटका का
नाम का कय (हृ १) । ७ धु. (उप
११) । ८ बह परोह का एक शिखर
(अ ४-पम ४१६) । ९ धु. (उप ११)
१ ठा ४ १-पम १८३ १ वैभ-विभाग
विशेष (उप १८) ।

परोह सक [प्र + छर] सटका । परोह
(वि ४००) । बह परोषमाण (दीप महा) ।

परोह वि [प्रुषय] १ सटकनेवाला सटका
(पण्ड १ ४ टाय) । २ बज्जा, दीर्घ (सि
१२, ११, कुमा) । ३ धु. धु-विशेष एक
महाहय (उप १) । ४ धु-विशेष धु-
रान का बालाई धु-वि (उप ११) । ५ धु
कामल-विशेष (दीप) । ६ एक सटका का
नाम का कय (हृ १) । ७ धु. (उप
११) । ८ बह परोह का एक शिखर
(अ ४-पम ४१६) । ९ धु. (उप ११)
१ ठा ४ १-पम १८३ १ वैभ-विभाग
विशेष (उप १८) ।

परोह वि [प्रुषय] सटका हुमा (कय
मवि स्वय १) ।

परोह वि [प्रुषय] सटकनेवाला सट-
का (मुद्रा ११ सुर १ २४८) ।

पठ सक [वि] बज्जा 'इय विपयनपमो'
(कुम ४२०) नाट) ।

पठक धु [पठक] बह का पठ (कुमा वि
११२) ।

पठक न [पठक] कल-विशेष (पाषा २ १
८ १) ।

पठक वि [प्रुषय] पानी, धनुषय बाला-
'भक्तमनस' (पाषा १ १८) दीप) ।

पठक सक [पठि + अस्] १ पठना,
बहना । २ सक पठना बहना । पठक
(विम) 'कोडाकापरीवि' हु नो बहणवि
पठक' (संघोष १८) । संक्ष. पठक (धन)
(विम) । वैको पठक ।

पठक वि [प्रुषय] १ कथित सट, प्रताप-
धु (मुद्रा ११४) से ११ ७१) । २ न
प्रताप कय (दीप) ।

पठक धु [प्रुषय] १ कुलान, कयलान-कय ।
२ कय का कयने काय में कय (से २,
२) पठक ७२, ११) । ३ विभाग, 'आमयमाह-
पठक' (टी १) । ४ विभाग-कय । ५ विभाग
(हे १ १८७) । ६ धु [१६] प्रताप-कय
का धु (पठक ७२ ११) । ७ धु [१६]
प्रताप का कय (सय) । ८ धु [१६]
प्रताप का कय का कय (सय) ।

पठक धु [प्रुषय] १ कुलान, कयलान-कय ।
२ कय का कयने काय में कय (से २,
२) पठक ७२, ११) । ३ विभाग, 'आमयमाह-
पठक' (टी १) । ४ विभाग-कय । ५ विभाग
(हे १ १८७) । ६ धु [१६] प्रताप-कय
का धु (पठक ७२ ११) । ७ धु [१६]
प्रताप का कय (सय) । ८ धु [१६]
प्रताप का कय का कय (सय) ।

पठक धु [प्रुषय] १ कुलान, कयलान-कय ।
२ कय का कयने काय में कय (से २,
२) पठक ७२, ११) । ३ विभाग, 'आमयमाह-
पठक' (टी १) । ४ विभाग-कय । ५ विभाग
(हे १ १८७) । ६ धु [१६] प्रताप-कय
का धु (पठक ७२ ११) । ७ धु [१६]
प्रताप का कय (सय) । ८ धु [१६]
प्रताप का कय का कय (सय) ।

पठक धु [प्रुषय] १ कुलान, कयलान-कय ।
२ कय का कयने काय में कय (से २,
२) पठक ७२, ११) । ३ विभाग, 'आमयमाह-
पठक' (टी १) । ४ विभाग-कय । ५ विभाग
(हे १ १८७) । ६ धु [१६] प्रताप-कय
का धु (पठक ७२ ११) । ७ धु [१६]
प्रताप का कय (सय) । ८ धु [१६]
प्रताप का कय का कय (सय) ।

पठक धु [प्रुषय] १ कुलान, कयलान-कय ।
२ कय का कयने काय में कय (से २,
२) पठक ७२, ११) । ३ विभाग, 'आमयमाह-
पठक' (टी १) । ४ विभाग-कय । ५ विभाग
(हे १ १८७) । ६ धु [१६] प्रताप-कय
का धु (पठक ७२ ११) । ७ धु [१६]
प्रताप का कय (सय) । ८ धु [१६]
प्रताप का कय का कय (सय) ।

पठक धु [प्रुषय] १ कुलान, कयलान-कय ।
२ कय का कयने काय में कय (से २,
२) पठक ७२, ११) । ३ विभाग, 'आमयमाह-
पठक' (टी १) । ४ विभाग-कय । ५ विभाग
(हे १ १८७) । ६ धु [१६] प्रताप-कय
का धु (पठक ७२ ११) । ७ धु [१६]
प्रताप का कय (सय) । ८ धु [१६]
प्रताप का कय का कय (सय) ।

पठक धु [प्रुषय] १ कुलान, कयलान-कय ।
२ कय का कयने काय में कय (से २,
२) पठक ७२, ११) । ३ विभाग, 'आमयमाह-
पठक' (टी १) । ४ विभाग-कय । ५ विभाग
(हे १ १८७) । ६ धु [१६] प्रताप-कय
का धु (पठक ७२ ११) । ७ धु [१६]
प्रताप का कय (सय) । ८ धु [१६]
प्रताप का कय का कय (सय) ।

पठक धु [प्रुषय] १ कुलान, कयलान-कय ।
२ कय का कयने काय में कय (से २,
२) पठक ७२, ११) । ३ विभाग, 'आमयमाह-
पठक' (टी १) । ४ विभाग-कय । ५ विभाग
(हे १ १८७) । ६ धु [१६] प्रताप-कय
का धु (पठक ७२ ११) । ७ धु [१६]
प्रताप का कय (सय) । ८ धु [१६]
प्रताप का कय का कय (सय) ।

पठक धु [प्रुषय] १ कुलान, कयलान-कय ।
२ कय का कयने काय में कय (से २,
२) पठक ७२, ११) । ३ विभाग, 'आमयमाह-
पठक' (टी १) । ४ विभाग-कय । ५ विभाग
(हे १ १८७) । ६ धु [१६] प्रताप-कय
का धु (पठक ७२ ११) । ७ धु [१६]
प्रताप का कय (सय) । ८ धु [१६]
प्रताप का कय का कय (सय) ।

पठक धु [प्रुषय] १ कुलान, कयलान-कय ।
२ कय का कयने काय में कय (से २,
२) पठक ७२, ११) । ३ विभाग, 'आमयमाह-
पठक' (टी १) । ४ विभाग-कय । ५ विभाग
(हे १ १८७) । ६ धु [१६] प्रताप-कय
का धु (पठक ७२ ११) । ७ धु [१६]
प्रताप का कय (सय) । ८ धु [१६]
प्रताप का कय का कय (सय) ।

पठक धु [प्रुषय] १ कुलान, कयलान-कय ।
२ कय का कयने काय में कय (से २,
२) पठक ७२, ११) । ३ विभाग, 'आमयमाह-
पठक' (टी १) । ४ विभाग-कय । ५ विभाग
(हे १ १८७) । ६ धु [१६] प्रताप-कय
का धु (पठक ७२ ११) । ७ धु [१६]
प्रताप का कय (सय) । ८ धु [१६]
प्रताप का कय का कय (सय) ।

पठक धु [प्रुषय] १ कुलान, कयलान-कय ।
२ कय का कयने काय में कय (से २,
२) पठक ७२, ११) । ३ विभाग, 'आमयमाह-
पठक' (टी १) । ४ विभाग-कय । ५ विभाग
(हे १ १८७) । ६ धु [१६] प्रताप-कय
का धु (पठक ७२ ११) । ७ धु [१६]
प्रताप का कय (सय) । ८ धु [१६]
प्रताप का कय का कय (सय) ।

पठक धु [प्रुषय] १ कुलान, कयलान-कय ।
२ कय का कयने काय में कय (से २,
२) पठक ७२, ११) । ३ विभाग, 'आमयमाह-
पठक' (टी १) । ४ विभाग-कय । ५ विभाग
(हे १ १८७) । ६ धु [१६] प्रताप-कय
का धु (पठक ७२ ११) । ७ धु [१६]
प्रताप का कय (सय) । ८ धु [१६]
प्रताप का कय का कय (सय) ।

पठक धु [प्रुषय] १ कुलान, कयलान-कय ।
२ कय का कयने काय में कय (से २,
२) पठक ७२, ११) । ३ विभाग, 'आमयमाह-
पठक' (टी १) । ४ विभाग-कय । ५ विभाग
(हे १ १८७) । ६ धु [१६] प्रताप-कय
का धु (पठक ७२ ११) । ७ धु [१६]
प्रताप का कय (सय) । ८ धु [१६]
प्रताप का कय का कय (सय) ।

पठक धु [प्रुषय] १ कुलान, कयलान-कय ।
२ कय का कयने काय में कय (से २,
२) पठक ७२, ११) । ३ विभाग, 'आमयमाह-
पठक' (टी १) । ४ विभाग-कय । ५ विभाग
(हे १ १८७) । ६ धु [१६] प्रताप-कय
का धु (पठक ७२ ११) । ७ धु [१६]
प्रताप का कय (सय) । ८ धु [१६]
प्रताप का कय का कय (सय) ।

पठक धु [प्रुषय] १ कुलान, कयलान-कय ।
२ कय का कयने काय में कय (से २,
२) पठक ७२, ११) । ३ विभाग, 'आमयमाह-
पठक' (टी १) । ४ विभाग-कय । ५ विभाग
(हे १ १८७) । ६ धु [१६] प्रताप-कय
का धु (पठक ७२ ११) । ७ धु [१६]
प्रताप का कय (सय) । ८ धु [१६]
प्रताप का कय का कय (सय) ।

पवरंग न [दि प्रघराङ्ग] सिर, मलक (हे १, २८)।

पवरपुण्डीय पुन [प्रघरपुण्डीय] एक
है-विमान (भाषा २ ११, २)।

पवरा श्री [प्रघर] भगवान् वासुपुत्र्य श्री
शास्त्रवेदी (पव २७)।

पवरिस घक [प्र+घृष] बरघना कृष्टि
करता। पवरिस (मवि)।

पवज रेको पवज (कप्या कुम २४७)।

पवज घक [प्र+घस] प्रयाण करना
विशेष जाना। वज पवसत (सि १ २४
या २४)।

पवसण न [प्रवसन] प्रवास विदेश यात्रा
मुसफिरि (स १२१ उप १ ३१ टी)।

पवसिध वि [प्रोपित] प्रवास में क्या हुआ
(वा ४२ ८४; मुर ३, २११ गुमा ४७१)।

पवह घक [प्र+वह] १ बहना। २
घक टपकना करना। पवह (मवि
मि)। वज पवह (मुर २ ७२)। वज
पवहिता (सम ८४)।

पवह घक [प्र+हम्] मार रासना।
वज 'पिच्छन पवह' मग्न करन में कलिय
कलन (गुमा १७२)।

पवह वि [प्रवह] १ बहनेवाला। २ टपकने-
वाला। बहनेवाला 'महु छलीयो घर्गवरण-
बहामा' (विपा १ १—पत्र ११)।

पवह पुं [प्रवाह] १ बोल बहान बल-बाधा
(वा १२२, २४१ कुमा)। २ प्रवृत्ति। ३
म्यवाह। ४ बहाव घम (हे १ १८)। ५
प्रवाह (राज)।

पवहण पुन [प्रवहण] १ नौका बहान
(शापा १ १ सि १२७)। २ पानी घाटि
बाहन 'पुनवणा भित्तियना भित्तियना
बहलउन्ना' (मिग-मनु पाठ ७)।

पवहाइज वि [हे] प्रवृत्त (हे १, १४)।

पवहायिय वि [प्रवाहिय] बहाना हुआ
(मवि)।

पवा श्री [पवा] जलदाय-स्वान पानी-पाला,
प्याज (मीर पण्ड १ १) महर)।

पवाइ वि [प्रवाहिय] १ बार कलनेवाला
बादी। २ बारिक (गुम १ १ १ वज
४७)।

पवाइज वि [प्रवाह] बहा हुआ (वापु)
'पवाइज कर्त्तबग्या' (स १८२, पत्र १७
२७) छाया १ ८८ स १२)।

पवाइज वि [प्रवाहिय] बहाना हुआ (कप्य
मीर)।

पवाण (परा) रेको पमाप—प्रमाण (कुमा,
वि २२१ मवि)।

पवाइ सक [प्र+पाठय] पिपना। वज
पवाइमाय (सम १७ १—पत्र ७२)।

पवाइ रेको पवाइ (बर्ग १ १११)।

पवाय घक [प्र+वा] १ चुक जाना। २
बहना (हवा का)। ३ सक नमन करना।
४ छिछा करना। पवाय (प्राङ ७१)। वज
पवायस (भाषा)।

पवाय पुं [प्रवाह] १ किनारती बलभुति
(गुमा १ उप ४ २२)। २ परंपरा
प्राप्त करनेवा। २ मत दर्शन 'पवाय पवाय
बाणेका' (भाषा)।

पवाय पुं [प्रपात] १ वरं गह्वर (छाया १
१४—पत्र १२१ हे १ २२)। २ ऊँच
स्वान से बिछा जल-धनुह (सम ८४)। ३
छट-छुट पिपकार परवत-स्वान। ४ रात में
पकनेवाली बाह बाप (राज)। ५ पतन (अ
२, १)। वज पुं [प्रह] वज मुरज बहा
परत पर से लगे पिछी हो (अ २ १—
पत्र ७१)।

पवाय पुं [प्रवाह] १ प्रकट पवन (पण्ड २
१)। २ वि बहा हुआ (पवन) (संवि ७)।
३ पक-छिछ (हह १)।

पवायग वि [प्रवाचक] पाठक प्रभाषक
(विदे १ १२)।

पवायग न [प्रवाचन] प्रपठन घम्यन
(सम ११७)।

पवायग श्री [प्रवाचना] ऊपर रेको (विदे
२=१२)।

पवाय रेको पवायग (विदे १ १२)।

पवाइ पुन [प्रवाह] १ बहाव, किनार
(गाम १४१ छाया १ १ गुमा ११२)।
१ गुमा, विजुन (गाम कप्य)। मीर वंन
वि [बह] प्रवाहना (छाया १ १;
मीर)।

पवाइज वि [प्रपातिय] जो पतने सवा हो
बह (अ ७२८ टी)।

पवास पुं [प्रवास] विदेश-गमन परदेस-
मात्रा (गुमा ११७; हेका १७; सिदि १११)।

पवासि } वि [प्रवासिय] घुसफिर (गाम
पवास) १ वज पव; वि ११५ हे ४
१२१)।

पवाइ सक [प्र+वाहम्] बहाना बहाना।
पवाइ (मवि)। मवि पवाइहिदि (विदे
२४२ टी)।

पवाइ रेको पवह = प्रवाह (हे १ ६८ वज;
कुमा छाया १ १४)।

पवाइ पुं [प्रपात] प्रकट पीडा (विपा १
२—पत्र २)।

पवाइय न [प्रवाहन] १ बज पानी
(गाम)। २ बहाना बहन कपना (विदे
१२१)।

पवि पुं [पवि] बज बज का घम-विशेष
(अ २११ टी गुमा ४७७; कुमा घर्गवि
८)।

पवर्गभिज वि [प्रविजन्मित] प्रोक्षित
घुमल (गाम १११ य)।

पविआ श्री [वि] पवी का पल-पान (हे १,
४ ८ १२; पाम)।

पविइण्य वि [प्रवितीर्ण] बिपा हुआ (मीर)।

पविइण्य } वि [प्रवितीर्ण] १ व्याप्त
पविइण्य } (मीर छाया १ १ टी—पत्र
१)। २ विक्षित तिरछ (छाया १ १)।

पविइय सक [प्रवि + कटय] घात-स्वापा
करना। पविइय (सम ११)।

पविइय वि [प्रविइयित] प्रवर्ध से विक-
ठित (राज)।

पविइर सक [प्रवि + क] कटना। वज
पविइरमाय (अ ८)।

पविइलज वि [प्रवीलित] विरीडित
घमर्तमिछ (स ७४१)।

पविइल्य रेको पविइर 'गविचकले य
संठ पविइलति सउइमि' (मुर १ १
२ २)।

पविइय वि [वि] विजुन (वह)।

पविइतिय वि [प्रविइतिय] गमन-बाह सवर्ग
(गाम १७७)।

पञ्चदश नि [प्रयुक्त] बड़ा हुआ निरोप हुआ (११ १२)।

पञ्चदश श्री [प्रयुक्ति] बड़ा (पञ्च ११ ११)।

पञ्चदश नि [मोक्ष] १ जो कहने लगा हो, जिसने बेतला आरम्भ किया हो वह (पञ्च २० ११ २४ २१)। २ उक्त कवित (मोक्ष ८२)।

पञ्चदश [दि] देखो पञ्चदश 'सुखं पुं' से। गये पञ्चदश (पञ्च २१ २१)।

पञ्चदश नि [प्रयुक्त] प्रकट से प्रामाण्य (पञ्च १२)।

पञ्चदश नि [प्रयुक्त] १ बाण किया हुआ (१ ११)। २ निरुद्ध (पञ्च)।

पञ्चदश नि [प्रयुक्त] १ निरोपित प्रति-पक्षित 'पञ्च' सत् भीषण न किरोहि पञ्चदश (१ १७ १७ १७)। २ निरुद्ध निरुद्ध (पञ्च)। ३ नैत किया हुआ (उप ११ ११ ११ ११)।

पञ्चदश नि [प्रयुक्त] कर्मित (पञ्च १, ७)।

पञ्चदश एक [प्र + येयु] १ निरुद्ध करता। २ नैत करता। ३ अनुन करता। पञ्चदश (पञ्च १ ७ २४)।

पञ्चदश नि [प्रयुक्त] निरुद्ध हुआ बेदा हुआ (पञ्च १२ १२ ४)।

पञ्चदश देखो पञ्चदश। पञ्चदश (पञ्च १ २ २)। हेतु पञ्चदश (पञ्च)।

पञ्चदश नि [प्रयुक्त] १ प्रकृत प्रतिपक्षित। २ ज्ञान, निरुद्ध। ३ अनुन करता (पञ्च)।

पञ्चदश नि [प्रयुक्त] प्रकर्मित (पञ्च १ १—पञ्च ४७) उप २२ ११)।

पञ्चदश नि [प्रयुक्त] कर्मित (पञ्च ८ १४)।

पञ्चदश एक [प्र + येयु] कृत्या। पञ्चदश (पञ्च)। पञ्चदश (पञ्च ४६)।

पञ्चदश पुं [प्रयुक्त] नैत श्री सुखा (उप ४ २—पञ्च २२ ११)।

पञ्चदश [प्रयुक्त] १ नैत, सुखा (पञ्च २२ २२ २२)। २ नैत का एक विस्तार (पञ्च)।

पञ्चदश पुं [प्रयुक्त] पञ्चदश (पञ्च)।

पञ्चदश पुं [प्रयुक्त, क] १ प्रयुक्त, पञ्चदश (पञ्च १ १)। २ प्रयुक्त (पञ्च १२)। ३ निवासी बगलात में उत्पत्ति निवासी मोनि में प्रवेश (पञ्च १२ २२)।

पञ्चदश नि [प्रयुक्त] प्रवेश करनेवाला (पञ्च)।

पञ्चदश नि [प्रयुक्त] सुखा हुआ (पञ्च)।

पञ्चदश पुं [प्रयुक्त] पञ्च का पुत्र (पञ्च ७)।

पञ्चदश पुं [प्रयुक्त] १ पञ्च नैत (पञ्च ४६) श्री १२ सुखा १ ७)। २ उत्पत्ति लीहार (सुखा १ ७ या २८)। ३ पुत्रिमा और प्रमाताला विधि। ४ पुत्रिमा और प्रमाताला पञ्च (पञ्च १७—पञ्च १७)। ५ पुत्रिमा और प्रमाताला का विन

पञ्चदश नि [प्रयुक्त] सुखा हुआ य

पञ्चदश नि [प्रयुक्त] सुखा हुआ य

पञ्चदश नि [प्रयुक्त] सुखा हुआ य

पञ्चदश नि [प्रयुक्त] सुखा हुआ य

पञ्चदश नि [प्रयुक्त] सुखा हुआ य

पञ्चदश नि [प्रयुक्त] सुखा हुआ य

पञ्चदश नि [प्रयुक्त] सुखा हुआ य

पञ्चदश नि [प्रयुक्त] सुखा हुआ य

पञ्चदश नि [प्रयुक्त] सुखा हुआ य

पञ्चदश नि [प्रयुक्त] सुखा हुआ य

पञ्चदश नि [प्रयुक्त] सुखा हुआ य

पञ्चदश नि [प्रयुक्त] सुखा हुआ य

पञ्चदश श्री [प्रयुक्त] नैत निरुद्ध (पञ्च)।

पञ्चदश पुं [प्रयुक्त] सुखा निरोप (पञ्च)।

पञ्चदश पुं [प्रयुक्त] १ नाप-निरोप (पञ्च २२ २२—पञ्च १४६)। २ नैत

नैत प्रमाताला वनस्ति (पञ्च १)। ३ सुखा-निरोप (पञ्च १)।

पञ्चदश नि [प्रयुक्त] पञ्च—प्रमाता—नैत का बना हुआ (पञ्च २ २ २ २)।

पञ्चदश पुं [प्रयुक्त] १ नाप। २ नाप, नाप। ३ नाप सुखा (पञ्च १ १६)।

पञ्चदश श्री [प्रयुक्त] १ नाप पति। २ नाप सुखा (पञ्च १ २ ४ ४)। ३ नाप सुखा (पञ्च १ १७)।

पञ्चदश श्री [प्रयुक्त] नैत निरुद्ध पञ्चदश नि [प्रयुक्त] सुखा १ १—पञ्च ११)।

पञ्चदश नि [प्रयुक्त] सुखा १ १—पञ्च ११)।

पञ्चदश नि [प्रयुक्त] सुखा १ १—पञ्च ११)।

पञ्चदश नि [प्रयुक्त] सुखा १ १—पञ्च ११)।

पञ्चदश नि [प्रयुक्त] सुखा १ १—पञ्च ११)।

पञ्चदश नि [प्रयुक्त] सुखा १ १—पञ्च ११)।

पञ्चदश नि [प्रयुक्त] सुखा १ १—पञ्च ११)।

पञ्चदश नि [प्रयुक्त] सुखा १ १—पञ्च ११)।

पञ्चदश नि [प्रयुक्त] सुखा १ १—पञ्च ११)।

पञ्चदश नि [प्रयुक्त] सुखा १ १—पञ्च ११)।

पञ्चदश नि [प्रयुक्त] सुखा १ १—पञ्च ११)।

पञ्चदश नि [प्रयुक्त] सुखा १ १—पञ्च ११)।

पञ्चदश नि [प्रयुक्त] सुखा १ १—पञ्च ११)।

पञ्चदश नि [प्रयुक्त] सुखा १ १—पञ्च ११)।

पसण्या की [प्रसभा] मरिच बाक (खामा १ १६; विना १ २)।

पसच वि [प्रसक्त] १ विनाका हुमा (गवड ११)। २ घावक (गवड १११ जग)। ३ आसि-अस्त धमिष्ठ-प्रति के बीप से कुछ (विदे १=१९)।

पसचि की [प्रसक्ति] १ आसिच धमिष्ठ (जग १११)। २ आसिच-बीप (गवड ११९)।

पसत्य वि [प्रसत्य] १ प्रसिद्धीय, स्थायीय। २ श्रेष्ठ पसत्ता (हि २ ४२; कुमा)।

पससि की [प्रससि] १ श्रेष्ठोत्तीर्ण बर-बाण (गवड समता ८१)।

पसत्यु दु [प्रसत्यु] १ मेधावाची मरिचक का प्रत्ययक (ठा १ १)। २ बनी-खक का पसक (ठा १ १ भीर)। ३ मन्त्री प्रमात्य (गुप २ १ १९)।

पसत्र बेको पसण्या (महद मरिच गुमा ११४)।

पसभा बेको पसण्या (पाय; पत्रम १ २, १२२; बुध २ २१)।

पसप्य दु [प्रसप्य] विस्तार, फैलाव (अप्य १)।

पसप्यग वि [प्रसप्यग] १ प्रसर्प से जाने-बाला मुपाकिरी करनेवाला। २ विस्तार को प्राप्त करनेवाला (अ ४ ४—पत्र २६४)।

पसम भक [प्र+शाम्] धमकी वरु प्रगत होला। पसमति (पाक १९)।

पसम दु [प्रसम] १ प्रसक्ति शान्ति (कुमा)। २ लजहार से जवाब (श्रीराम १८)।

पसम दु [प्रसम] किरण मरिच—केर (पाय ४)।

पसमजम [प्रसमज] १ प्रसद शयन (गिड १११; गुर १ २४२)। २ विप्र प्रसन्न करने-वाला (स ११४)। की पी (कुमा)।

पसमाविम वि [प्रसामित] प्रशान्त किया हुआ (स १२)।

पसमिक्ख सक [प्रसम्+इक्ख] प्रसर्प से देखना। उक्ख पसमिक्ख (उप १४ ११)।

पसमिण वि [प्रसमिण] प्रशान्त करनेवाला, शांत करनेवाला। 'पामिठि, पावपमिण पाव विख दुह पामिण' (उमि १७)।

पसम्म बेको पसम = प्र+शम्। पसम्मह (वड)। बह पसम्मव (सि १ २२ गवड)।

पसय दु [वे] १ मुग-विरोध (वे ९, ४-पण्ड १ १)। मरिच सण महर। २ मुप-मिण्डु (विना १ ४)।

पसय वि [प्रसु] फैला हुआ 'पसयवि' (बका ११२ १४४)। बेको पसिअ = प्रसद।

पसर पक [प्र+स] फैलना। पसर (पि ४७७; मरिच)। बह-पसरव (गुर १ १८ मरिच)।

पसर दु [प्रसर] विस्तार, फैलाव (हि ४ ११७; कुमा)।

पसरण न [प्रसरण] ऊपर बेको (अप्य)।

पसरिअ वि [प्रसु] फैला हुआ विस्तृत (भीप बा ४ मरिच लाया १)।

पसरेह दु [वे] विनयक (वे ९ ११)।

पससिअ वि [वे] प्रेरित (पट)।

पसव सक [प्र+सु] बन्ध बना ऊपर करना। पसवह (हि ४ २११)। पसवति (जग)। बह पसवमाण (गुमा ४४४)।

पसव (अप) सक [प्र+वि] प्रवेश करना। पसवह (प्राक १११)।

पसव दु [प्रसव] १ बन्ध ऊपरति (कुमा)। २ न पुण, कुमा 'पुणं पसवं पसवं न' (पाय) 'पुण्यसि म पुण्यमणि म पुण्यसि' (वहैव हौति पसवणि' (समि १ ३९)।

पसव [वे] बेको पसय। 'पसव हवि प' (पत्रम ११ ७७)। 'नाह दु [नाथ] मुग-राव सिंह (स ११७)। राय दु [राज] सिंह (स ११७)।

पसवबह न [वे] विनोद (वे ९ १)।

पसवण न [प्रसवन] प्रसुति, क्लम-भजन (अप स ४४४ गुर १, २४४)।

पसवि वि [प्रसवि] बन्ध देनेवाला (नाट—रज्जु ७४)।

पसविअ वि [प्रसु] बी बन्ध देने वाला हो बिजने बन्ध दिया ही बह 'उममेन पसविअ

हं महाकिसेण मरणा' (गुर १ २१; गुमा १८)। बेको पसुअ = प्रसुत।

पसविअ वि [प्रसविअ] बन्ध देनेवाला (नाट)।

पसस्त बेको पसस।

पसस वि [प्रसस्य] प्रसुत शयनवाला (गुमा ४४४)।

पसाइम वि [प्रसावित] १ प्रसव किया हुआ (स १८६ ५७९)। २ प्रसन्न होने के कारण दिया हुआ 'मगविषयगमसं पसाइमं कइयवताइ' (गुर १ १९१)।

पसाइमा की [वे] क्लिप्त के छिद्र पर का फटी-पुटा, फिसी की पसरी (वे १, २)।

पसाइयअ बेको पसाय = प्र+सय।

पसाम वि [प्रसाम] शाण होनेवाला (पट)।

पसाच सक [प्र+साच] प्रसन्न करना, मुग करना। पसमति पसाचि (पा ११ चिन्ता ११)। बह पसाअमाण (पा ७४२)। हेक पसाई पसाई (महद पा १२४)। इ पसाइयअ (गुमा १९१)।

पसाय दु [प्रसाय] १ प्रसति प्रसन्नता 'कुपि' 'अणमणपसायअको' (बपु)। २ इया, मेहलासी (कुमा)। ३ प्रणय (पा ७१)।

पसायण न [प्रसायण] प्रसन्न करना, 'देव पसामण' (अहलपणे) (गुर १, गुमा ७ महा)।

पसार सक [प्र+सार] सारना, फैलाना। पसारे (महा)। बह पसारमाण (शास १ १; पाय)। सक पसारिम (नाट—मुक्क ५२१)।

पसार दु [प्रसार] विस्तार, फैलाव (अप्य)।

पसारण न [प्रसारण] ऊपर बेको (गुमा १८१)।

पसारिअ वि [प्रसारिअ] १ फैलाया हुआ (अप नाट—बेणी २१)। २ न प्रसारण (अमत्त १११ सव ४ १)।

पसास सक [प्र+सास] १ शासन करना, हुकूमत करना। २ ठिकाना देना। ३ पालन करना। बह 'रज्जं पसासेमाणे विहर' (शास १ १ टी—पत्र ९३ १ १४—पत्र १=८ भीन महा)।

पसप्णा बी [प्रसप्णा] नविण शक (छाया १ १६) विना १ २)।

पसप्ति वि [प्रसप्ति] १ विपत्ता हुआ (गदर ११)। २ व्यापक (गदर १११) वर)। ३ प्रापति-वस्तु वणिष्ट-प्राप्ति के दोष से मुक्त (विधि १२११)।

पसप्ति बी [प्रसप्ति] १ व्यापक, वणिष्ट (जप १११)। २ प्रापति-दोष (गदर १११)।

पसप्ति वि [प्रसप्ति] १ प्रसप्तीय, स्थापनीय। २ श्रेष्ठ धर्मात् (हि २ ४३, कुमा)।

पसप्ति बी [प्रसप्ति] बंशोत्कीर्ण बंश-बर्तन (गदर सम्यक ३१)।

पसप्ति पुं [प्रसप्ति] १ सेवानार्थ गणित का धर्मापक (अ ४ १)। २ बने-शाक का पाठक (ठा ४ १; बी०)। ३ मन्त्री धर्मापक (सुध २ १ ११)।

पसप्ति बी [प्रसप्ति] पसप्ति (महद धर्मा कुमा ११४)।

पसप्ति बी [प्रसप्ति] पसप्ति (पाप पत्र १ २ १२२ मुक्त २ १३)।

पसप्ति पुं [प्रसप्ति] विस्तार, फैलाव (अप्य १)।

पसप्ति वि [प्रसप्ति] १ प्रसप्ति के जाने-बाला मुपाकृति करनेवाला। २ विस्तार की प्राप्ति करनेवाला (अ ४ ४—पत्र २१४)।

पसप्ति धक [प्र+सप्ति] धर्मात् वर) सम्य होता। पसप्ति (पाठ ११)।

पसप्ति पुं [प्रसप्ति] १ प्रसप्ति स्थापित (कुमा)। २ सपत्नार की वपवात (सीधी १८)।

पसप्ति पुं [प्रसप्ति] विरोध मेहवत—केर (पाप ४)।

पसप्ति न [प्रसप्ति] १ प्रसप्ति सम्य (विध १११; सुर १ २४४)। २ वि प्रसप्ति करने-वाला (व ११३)। बी जी (कुमा)।

पसप्ति वि [प्रसप्ति] प्रसप्ति किया हुआ (व १२)।

पसप्ति धक [प्रसप्ति+ईस] प्रसप्ति के ईस। ईस पसप्ति (अप १४ ११)।

पसप्ति वि [प्रसप्ति] प्रसप्ति करनेवाला प्राप्ति करनेवाला 'प्राप्ति पसप्ति वि पाठ विध ११ पसप्ति' (अपि १०)।

पसप्ति बी [प्रसप्ति] पसप्ति = प्र+सप्ति। पसप्ति (गदर)। वर) पसप्ति (वि १ २२) गदर)।

पसप्ति पुं [वि] १ मुन-विरोध (वि १ ४—पत्र ११)। २ धर्म सत्ता (महा)। ३ मुन-विरोध (विपा १ ४)।

पसप्ति वि [प्रसप्ति] फैला हुआ 'पसप्ति' (बना ११२ १४४)। बी [प्रसप्ति] = प्रसप्ति।

पसप्ति धक [प्र+सप्ति] फैला। पसप्ति (वि ४००, धर्मा)। वर) पसप्ति (सुर १ २३ धर्मा)।

पसप्ति पुं [प्रसप्ति] विस्तार, फैलाव (हि ४ १३० कुमा)।

पसप्ति न [प्रसप्ति] ऊपर बी [अप्य]।

पसप्ति वि [प्रसप्ति] फैला हुआ विस्तार (बीपा या ४ धर्मा छाया १)।

पसप्ति पुं [वि] विस्तार (वि १ ११)।

पसप्ति वि [वि] मेहवत (व)।

पसप्ति धक [प्र+सप्ति] अन्य सेवा, व्यवसाय करना। पसप्ति (हि ४ २३१)। पसप्ति (अप)।

पसप्ति धक [प्र+सप्ति] प्रसप्ति करना। पसप्ति (अप ११३)।

पसप्ति पुं [प्रसप्ति] १ अन्य व्यवसाय (कुमा)। २ न मुन प्रसप्ति 'मुन पसप्ति पसप्ति न' (पाप) मुन पसप्ति न मुन पसप्ति न मुन पसप्ति न

पसप्ति [वि] बी [प्रसप्ति] 'पसप्ति' धर्मात् (अप ११ ७०)। नह पुं [पाप] मुन पाप विध (व ११०)। पाप पुं [पाप] विध (व ११०)।

पसप्ति धक [वि] विस्तार (वि १ १)।

पसप्ति न [प्रसप्ति] प्रसप्ति अन्य-बान (काप ४ ७४—सुर १, २४८)।

पसप्ति वि [प्रसप्ति] अन्य करनेवाला (मह—रुद्र ७४)।

पसप्ति वि [प्रसप्ति] बी [अप्य] के लवा हो, विधने अन्य किया हो वर) 'समेव पसप्ति

ई महाविरोध नह' (सुर १ २३; मुपा १३)। बी [प्रसप्ति] = प्रसप्ति।

पसप्ति वि [प्रसप्ति] अन्य देनेवाला (मह)।

पसप्ति बी [प्रसप्ति] प्रसप्ति करनेवाला (मुपा १४४)।

पसप्ति वि [प्रसप्ति] प्रसप्ति करनेवाला (मुपा १४४)।

पसप्ति वि [प्रसप्ति] १ प्रसप्ति किया हुआ (व १८१; १७१)। २ प्रसप्ति होने के कारण विपा हुआ 'पसप्ति' पसप्ति करनेवाला' (सुर १ १११)।

पसप्ति बी [वि] विस्तार के विर पर का पसप्ति, विस्तार की पसप्ति (वि १, २)।

पसप्ति धक [प्र+सप्ति] प्रसप्ति करना। पसप्ति (वि ४००, धर्मा)।

पसप्ति पुं [प्रसप्ति] विस्तार, फैलाव (हि ४ १३० कुमा)।

पसप्ति धक [प्र+सप्ति] प्रसप्ति करना। पसप्ति (वि ४००, धर्मा)।

पसप्ति वि [प्रसप्ति] फैला हुआ विस्तार (बीपा या ४ धर्मा छाया १)।

पसप्ति पुं [प्रसप्ति] १ प्रसप्ति, प्रसप्ति करनेवाला (कुमा)। २ प्रसप्ति (पा ७१)।

पसप्ति न [प्रसप्ति] प्रसप्ति करना 'पसप्ति' पसप्ति करनेवाला (कुमा)। ३ प्रसप्ति (पा ७१)।

पसप्ति धक [प्र+सप्ति] प्रसप्ति करना। पसप्ति (वि ४००, धर्मा)।

पसप्ति वि [प्रसप्ति] फैला हुआ विस्तार (बीपा या ४ धर्मा छाया १)।

पसप्ति पुं [प्रसप्ति] १ प्रसप्ति, प्रसप्ति करनेवाला (कुमा)। २ प्रसप्ति (पा ७१)।

पसप्ति न [प्रसप्ति] प्रसप्ति करना 'पसप्ति' पसप्ति करनेवाला (कुमा)। ३ प्रसप्ति (पा ७१)।

पसप्ति धक [प्र+सप्ति] प्रसप्ति करना। पसप्ति (वि ४००, धर्मा)।

पसप्ति वि [प्रसप्ति] फैला हुआ विस्तार (बीपा या ४ धर्मा छाया १)।

पसप्ति पुं [प्रसप्ति] १ प्रसप्ति, प्रसप्ति करनेवाला (कुमा)। २ प्रसप्ति (पा ७१)।

पसप्ति न [प्रसप्ति] प्रसप्ति करना 'पसप्ति' पसप्ति करनेवाला (कुमा)। ३ प्रसप्ति (पा ७१)।

पसाइ एक [प्र + साधय] १ बस में करना । २ सिद्ध करना । पसाइह (गठ बहि) । बड़ पसाहोमान (वीर) ।
पसाहरा बि [प्रसाधक] साधक, सिद्ध करवाला (बर्ग २१) । उस बि [उम] १ जड़त साधक । २ ब. ब्याकरउ-प्रसिद्ध कारक-वितेव कण्ड-कारक (विसे २११२) ।
कौ पसाइय ।

पसाइय न [प्रसाधन] १ सिद्ध करना, साधना । 'विजयापसाइपुत्रबन्धिकाहृद संतिष्ठत्येतौ' (पुर १ १२) । २ जड़त साधक 'समुत्तन मारयतौ दुल्लहि पयवतुई पचइस पैमसासत न लिबंति बने' (स ७४४) । ३ जलभर, बुलब (साया १ ३) से १ ४४) । ४ बुलब यात्रि की खाकाट मुसलपसमणालेखि (बन्ना ११४ सुपा ११) ।

पसाइय कौ पसाहरा (काज) । २ खाने-बाना (पन ११ ११) ।

पसाहा की [प्रसाह] खाबा की खाबा, कीटी खाबा (साया १ १) वीर प्या) ।

पसाहायि बि [प्रसाधित] विनूति करवा पना धनवाया हुआ (पनि) ।

पसाहि बि [प्रसाधिन] सिद्ध करवाला 'मनुजवत्साधितौ' (सवीर ८ २४) ।

पसाहिबि बि [प्रसाधित] धनकट किम हुआ, खाया हुआ (सि ४ ११) पाप) ।

पसाहिबि बि [प्रसाधिन] प्रणयानुल (पुर ८ १) ।

पसिब घक [प्र + सव] प्रमल होना । पसिब (सा १ ४ ४१३) है १ १ १) ।

पसिब (सठ) । सड़-पसिऊन पसिऊन (सठ सुपा ७) ।

पसिब बि [प्रसून] केवा हुआ फिलीरई नसिधायि । (वा २२ २२१) ।

पसिब ब [रि] पुन-मल गुपरी (सि १ १) ।

पसिब एक [प्र + सिब] डेन करना । बड़-पसिबमाय (पुर १२ १०२) ।

पसिबि (रि) कौ पसिबि (पाप) । पसिब-मल बि [प्रसिद्ध] दीकनवा (वा ११२ वा) ।

पसिबन न [प्रसून] प्रमल होना 'मल-कमलुं बहपसिबन' प्रसिबनप्रसुतिबनौ' (वा १०२) ।

पसिबिबि कौ पसिबिबि (रि १ ७४ वा १११ बड़) ।

पसिबि पुन [प्रसून] १ पुन्य प्रमल (पुपा ११ ४११) । २ बरंसा मारि में केवा का पाहाण, मलबिधा-वितेव (सम १२१) बड़ १) । 'विजा की [विधा] मलबिधा वितेव (स १) । पसिबि न [प्रसून] मलबिधा के बर मे इज्ज यात्रि में केवा के पाहाण हाथ बला हुआ शुभमुन पन का कनन (पन २) बड़ १) ।

पसिगिय बि [प्रसिद्ध] पुन हुआ (पुपा ११ १२१) ।

पसिबि बि [प्रसिद्ध] १ क्स्वाव विनूत (महा) । २ प्रय है मुडि की प्रात पुन (सिदि १११) ।

पसिबि की [प्रसिद्ध] १ क्वावि (रि १ ४४) । २ सोंक का धवाबल बाजेन का पसिब (मनु विद्य ४२) ।

पसिबि कौ पसीम (विसे १४) ।

पसीम कौ पसिब म + सव । वरीय, वरीवर (पुर १) । सड़ पसीऊन (सठ) ।

पसीम दु [प्रसिद्ध] ठिय का ठिय (पठम ४ ७१) ।

पसु दु [पसु] १ कण्ड-वितेव वीर वृकला प्रसी कृपाय माणि-मात्र (जुमा वीर) ।

२ पन, कण्ड (पसु) । मय बि [मूत] पसु-पुन (पुपा १ ४ २) । 'मिह दु [मिप] विरयें पनु का धोप बिवा बला ही बह बह (पठम ११ ११) । बड़ दु [पसि] म्यानि मिन (वा १) पुपा ११) ।

पसुत बि [प्रसून] रोपा हुप (रि १ ४४) प्राय हाया १ ११) ।

पसुति की [प्रसुति] पुन रोव वितेव म्यानि-विचारण होने पर की धरेकला (पन) कौ पसु ।

पसुन (पन) कौ पसु (पनि) ।

पसुन दु [रि] क्व पन (रि १, ११) ।

पसु एक [प्र + सु] कन्य केवा ब्रह्म करना । बह. पसुअमाय (वा १२१) । बड़. पसुइरा (पन) ।

पसु बि [प्रसु] प्रव-कटा कन-कला (मोह २१) ।

पसुब न [रि] पुन कुन (रि १, २, पाप) पनि) ।

पसुब बि [प्रसुव] १ क्स्वाव की पसा हुआ ही (साया १ ७) पन प्राप् १२२) । २ कौ पसविय (परा) ।

पसुबम व [प्रसवन] कन-बाल (पुपा ४ १) ।

पसु की [प्रसुति] १ प्रसव, कन्य, जयति (पठम २१ १४) प्राप् १२२) । २ एक प्रकार का नुठ रोग म्यानिसे विचारण करने पर की पुन का पसविय, कपरी का पन बना (सि १) । 'रोम दु [रोम] रोम-विसेव (पठम २२) ।

पसुइय दु [प्रसुविक] नाटोय-विसेव (सिदि ११७) ।

पसुय न [प्रसु] कुन पुन (जुमा बड़) ।

पसेब दु [प्रसेव] पसीवा (रि १ १) ।

पसेबि की [प्रसेवि] धरातर वीरि—वीरि (सि ११) पन) ।

पसेव दु [प्रसेन] प्रमल पसवनाय के प्रमल बाजक का नाम (विचार १०७) ।

पसेवइ दु [प्रसेनजित] १ पुनकर-पुन-विसेव (पठम १ २२, सम ११) । २ मुनर के पना धनकमल का एक पुन (सठ १) ।

पसेवि की [प्रसेवि] धरातर बादि 'भूदारवैरिपलेखी कौ सौमि' (साया १ १—पन १७) ।

पसेया कौ पसेव (पन) ।

पसेव एक [प्र + सेव] विसेव केवा करना । बड़ पसेवमाय (पु २२) ।

पसेवय दु [प्रसेवक] कोन्ना, केवा प्यानि कपलेकण जयति बरंति कोपि वल बहय' (जुमा) ।

पसेविमा की [प्रसेविक] कौ, कोनो (रि २, २२) ।

पसस सक [हर] बैभना । पसस (पह
प्राक ७१) । बह पससमाज (पाषाण पीता
बहु, बिना १ १) । क पसस (ज ४ १) ।
पसस (ही) बैभो पास = पसस (धमि १८१)
मनि २१ स्वज ३११) ।

पसस बैभो पसस = हर ।

पससोहर नि [परयोहर] बैभो हर
कोटि करलेबासा, सुनाए, सभदा 'अबु एवो
पससोहरो देखो' (ज ७२८ टी) ।

पससि नि [पसिम] बैभेनेभला (पण १) ।

पससेय बैभो पसस (मुक २ ८) ।

पह नि [प्रह] १ मप्र । २ किनीव । ३
बासक (प्राक २४) ।

पह पु [पयिम] मार्य रास्ता (हे १ ८८)
नाम बुना भा २८८; बिसे १०३२, कण
भीम । "वेसय नि [वेराक] मार्य-स्योक
(पठम ६८ १०) ।

पहपह पु [पे] मप्रु पुमा बाघ-किरोय (हे
१, १८) ।

पहकर बैभो परमकर (ज २३ ७६ गुल
२३ ७३ इक) ।

पहकरा बैभो परमकरा (इक) ।

पहकर पु [प्रमजन] १ बापु, पवन (वाप) ।
२ बैभ-अति-किरोय मरनाति बैभो की एक
मरानार कावि (मुना ४) । ३ एक रावा
(मनि) ।

पहकर [वि] बैभो पहयर (छाया १ १)
कण पीता कव पु ४७० बिना १ १ रावा
मह १ ११) ।

पहटु नि [पे] १ हात उदव (हे १ ८)
पह १ । २ धरिपतर हट, कोरे ही समय के
पुने बैरा हुना (पह १) ।

पहटु नि [प्रहट] मायित्त हट-प्राय
(पीन म्म) ।

पहण सक [प्र + हण] मार बासना ।
पहण पहणे (महा उत १८ ४१) ।
कर्म पहणइ (महा) । बह पहणत
(पठम १ १ ११) । कण पहसस,
पहससमाज (नि ३४; मुर १ १४) ।
हेर पहणित पहणेत (मुन २३ महा) ।
पहण न [पे] हुन मंत्र (हे १ २) ।

पहणि की [पे] संयुक्त का किरोय सामने
भास हुए का म्मकाय (हे १ ५) ।

पहणिय बैभो पहय = प्रह (मुना ४) ।

पहय पु [प्रहय] रासक का मामा (से
१२ ३३) ।

पहय नि [पे] सवा हट (हे १ १) ।

पहयम सक [प्र + हयम] मप्रु से मति
करना । पहयम (हे ४ ११२) ।

पहयम न [पे] १ मुर-बात बैभ-मुएह (हे
१ ११) । २ काउ-नल मुएह । ३ बिन,
छिह (से १, ४१) ।

पहयमंत
पहयममाज } बैभो पहण - प्र + हण ।

पहय नि [प्रह] १ बट, पिवा हुमा (पे
१ ३८० बह १) । २ मार मना मया,
मिहव (महा) ।

पहय नि [प्रह] जिस पर प्रहार किया गया
ही बह 'पहया मरिमियमसेण' (महा) ।
पहय नि [पे] निकर, सपुह, मुन (हे ३
१३, जय ११ वाप) ।

पहय सक [प्र + ह] प्रहार करना । पहय
(अभ) । बह, पहयत (महा) । संह, पहयिज
(महा) । हेर, पहयित (महा) ।

पहय पु [प्रहार] १ मार, प्रहार (हे १ ९८
पह प्रय सति २) । २ बह पर प्रहार
किया हो बह स्थान (से २ ४) ।

पहय पु [प्रह] पीन की का समय (वा २८
११ वाप) ।

पहयण न [प्रहयण] १ बह मातृप (बाघा
पीन पिना १ १ गज) । २ प्रहार-क्रिया
(से १ १८) ।

पहयपहया बैभो पहापहया (पण १—पठ
१४) ।

पहयय पु [प्रमराज] नयनेभ का छहवां
प्रतिशतुनेभ (सम १२४) ।

पहयिज नि [प्रहय] १ प्रहार करने के लिए
उदव (मुर १ १११) । २ निन पर प्रहार
किया गया हो बह (मनि) ।

पहयिस पु [प्रहय] बाकह, गुणो 'पहयोमो
पहयोमो पीको' (वाप मुर १ ४) ।

पहयविद (पी) नि [प्रहयविद] बायित्त
(स्वज १ १) ।

पहय सक [पुणे] हुमना कपिता कोषा-
हिनना । पहय (हे ४ ११० पह १) ।
बह पहयत (मुर १ १११) ।

पहयिज नि [प्रहयिज] नयनेभला कोमता
(हुमा मुना २ ४) ।

पहय सक [प्र + म] १ जण होना । २
समय होना । पहय (पंथा १ ८ ७
सति ११) । मनि पहयिस (नि ३२१) ।
बह पहयत (माट—मासि ७२) ।

पहय पु [प्रमय] जयति-स्थान (धमि ४१) ।

पहय को पहय - प्रमय (स ११०) ।

पहय बैभो पह = प्रह (बिसे १ ८) ।

पहय पु [प्रमय] एक पैन मारिप (हुमा) ।

पहयिज नि [प्रमय] को समय टपा हो
'मणिहुमनायुमा सव नो पहयिज मरित्त'
(मुना १११) ।

पहस सक [प्र + हस] १ हुना । २
काहाय करना । पहस (मनि सण) । बह
पहसव (छण) ।

पहसम न [प्रहसन] १ काहाय, पिहास ।
२ माटक का एक मेह हास्य-व्यंग्य
माटक काटक-किरोय 'पहसउणायो म्मसव
बयय' (स ७११ १७०; हास १११) ।
पहसिय नि [प्रहसित] १ को हुने बया
हो (मनि) । २ बिरका काहास किया हो बह
(मनि) । ३ न हास्य (हह १) । ४ पु
पठममय का एक विद्या-विन (पठम
१३ ३६) ।

पहा सक [प्र + हा] १ त्याग करना । २ बह,
कम होना कील होना 'पहेन कोहे' (ज
४ १२; नि ३९६) । बह पहिलमाय,
पहलमाय (मन राज) । छह, पहाय
पहिलमाय (बाघा १ १ १ १ बह १) ।

पहा की [प्रवा] १ रीति व्यवहार । २
क्यापि प्रविधि (बह १) ।

पहा की [प्रवा] कानि तेन धाबोक पीति
(पीन पाया मुर २ २३४ हुना बैभ
२१४) । मरह बैभो भासहय (पठम १
११) । मर पु [कर] १ नृत्य रीति । २
पामकन के मर मय से वाघ पीता बैभेना
एक पामि (पठम ७३, हास १) । बह पी

['पग'] घाटों बागुने की चण्णी (पत्रम २ १८७)।

पहाड स [प्र + प्राग्य] इतर उतर
मनाता बुलाता। पहासेति (मृद्वि ७ टी)।
पहास नि [प्रधान] १ नामक कुबिधा
मुक्त 'पहासज' सम्बन्धि हू पुण्यपुण्यति'
(मुग १ ८) 'तत्त्ववि बलिपहासा' सेट्टी
वेममालनामयी (मुग ११७)। २ उत्तम
ब्रह्मण श्वेत सोमन (पुर १ ४५) महा
मुना पहा १ (१२)। ३ जीव. प्राति—
सक २४ धीर उलोपुल की साम्यावस्था
'ईमगुल नरे लीर पहासा' पहासे' (मुय
१ १, २ १)। ४ मुं नविन मन्त्री (अधि)।

पहाण मुं [पायण] पहाण (बज्रपण)।

पहाण न [प्रहाण] पहाण विमल (बर्त ८
८७१)।

पहाणि ओ [प्रहाणि] इतर देवी (रत १
७ नर १८१ टी)।

पहाय न [प्र + भ्रमय] विहाता, मुना।
नवः पहासिजति (मि ७ १२)।

पहाय देवी पहा = प्र + हा।

पहाय न [प्रमान] १ प्रायःनाय पहेल
(पदक मुग १६ १ २)। २ नि बजा
मुक (मि २ ४८)।

पहाय देवी पहाय = प्रहार (हे ४ १४१।
हल ११२ अधि)।

पहाया के बाहाया (यु)।

पहाय न [प्र + प्राय] १ विमल बना
निकार बना २ नियम करण। मुना
पहाण, पहाण, पहाणि (मुग २, ७
१६ धीर नि ११७ मुग २ १ १)।
न पहादेमात (मुग २ ४ ४)।

पहा देवी पहा = पहा (घाघा हे १ १)।
पहापहा ओ [प्रहापहा] निर्विकल
(नव ११)।

पहादि नि [प्रहादि] इतर कनेगाला
(मुग ११२ जानू २)।

पहादि नि [प्रहादि] निव नर नगर निव
नया हो कर (म ११)।

पहादि नि [प्रहादि] विविध विविध
(यण)।

पहादयु नि [प्रपारविदु] विमल करनेवाला
'पहादये घणुबनेति नर पहादेता भवति'
(मग २ १)।

पहाय स [प्र + भायय] प्रयाय-मुक्त
बला सीरित कला। पहाय (हण)।
छं पहायिऊल (हण)।

पहाय (भर) स [प्र + मू] समर्थ होना।
पहाय (अधि)।

पहाय मुं [प्रभाय] १ शक्ति, सामर्थ्य। 'मुं
न केतुनिमुक्त पहाय' (छाया १ १४
अभि १)। २ नय धीर बल का होना।
३ मद्रास्य 'ठाकाहाय' केर मे अविना
भविस्सति' (स २६ पत्र)।

पहायगा देवी पभापत्र (मुग २८४)।

पहाबिनि नि [प्रपायिनि] शीघ्र हुमा (स
१८४ या ११३ पत्र)।

पहाबिनि नि [प्रपायिनि] शीघ्रनेवाला (नवा
१२ स २ २)।

पहाय स [प्र + भाय] बोलना। पहाय
(मुग ४ १) 'भायय मुनि' तं विदुविमला
पहाय शान' (नवा)।

पहाय स [प्र + भाय] बयनका
ब्रह्मण। न पहासेत (धर्मे १६)।

पहाय मुं [प्रहाय] पहाण यावि विठेन
हाय (मग १ ११)।

पहाया की [प्रहाया] देवी-विठेन (नवा)।

पहिनि नि [पाय पयिक] मुपाहिनि (हे २
१२२ मुना बर पत्र बर)। साया
की [पहाया] मुपाहिणला बर्तणाला
(बर्त ७ महा)।

पहिनि नि [प्रयिनि] १ विमल। २ अवि
विमल (पीर)। ३ पहाय-नियम एक
पहा एक लंका-नियम (नव १: २६२)।

बहिनि नि [प्रदिनि] बेका हुमा त्रैवि (म
१ ४२ ७९८ टी; बय २ टी)।

बहिनि नि [वि] बयिनि विविध (हे १ १)।

बहिनि देवी पहा = प्र + हा।

बहिमय नि [प्रदिमय] दिना करनेवाला
(धीन ७२१)।

बहिमयमा देवी पहा = प्र + हा।

पहिनु देवी पहाड = पहाड (पीर पुर १
१४८, मुग १११ ४१७)।

पहिर स [परि + भा] पहिरा, पहिरा।
पहिर, पहिरति (मि बर्त ७)। करे
पहिरिब (संकोच १४)। नवः पहिरति
(मि १८)। छं पहिरिब (बर्त ११)।
प्रयो. छं पहिरियेऊल पहिरियिऊल
(मि ४२१ ७७)।

पहिरावय न [परिभायन] १ पहिरा। २
पहिरावय, नैत में—हनाम में दिया बजा
नकाति हणपी में—'पहिरावय' (या २८)।
पहिरायि नि [परिभायि] पहिराय हुमा
(महा अधि)।

पहिरिय नि [परिदिनि] पहिर हुमा पहा
हुमा (कमल २१८)।

पहिरि नि [वि] बहना प्रथम (संवि ४७
अधि नि ४४१)। धी धी (मि ४४१)।

पहिरि स [वि] पहिर बहना भाये बहना।
पहिरिब (मि)। छं पहिरिब (मि)।

पहिरि नि [मर्मुमि] मुव विमलनेवाला
भयान दिवस (मग २ ८७)।

पहिरि देवी पहाडी = द्विती (माट)।

पही नि [प्रहीण] १ पहीण (मि १११
भा)। २ पट, ललित (मुग २ १ १)।

पहु मुं [प्रमु] १ पर्यवेष्ट, बरणा (मुग)।
२ एक राज-गुल बगुर के किमपाय न
एक मुक (बनु)। ३ लानी मासिक (पुर
४ ११६)। ४ वि सार्थ सविमल 'पह
विहिन पहास ली' (जानू ४८)। ५ अवि-
नवि मुधिया नायक (हे १ १)।

पहु देवी पहीर (रण)।

पहु देवी पहीर (नव)।

पहु मुं [प्रमु] सार नयवि विठेन निव
(हे ४ ४४)।

पहु स [प्र + मू] बहना। पहा
(हे ४ १६)। न पहामय (पीर
२ ४)।

पहु देवी पहा। पहा (नव)।

पहु देवी पहा (हे १ १११ टी १
४६)।

पहु मुं [प्रामु] यति विमल (न
२ १)।

पाअ वगमण न [पाउपोवगमन] वनरुण-
विरोध मण्डप विरोध (सम ११) धीन कय
मम)।

पाओवगय वि [पाउपोवगय] वनरुण विरोध
से मय (धीन कय धंत)।

पाओस पुं [वि प्रोप] मरुप, देव (अ ४
४—पत्र २०)।

पाओसिय देवो पाओसिय (पत्र ११२)।

पाओसिया देवो पाओसिया (बर्ग १)।

पांडविम वि [वि] वनरुण पाणी से पीना
(११ २)।

पांडु देवो पंडु (पत्र २४७)। सुम पुं
[सुठ] वनरुण का एक मेर (अ ४
४—पत्र २०३)।

पाक देवो पाग (कय)।

पाकम न [प्राकम] वीप की घाट धिक्की
में एक धिक् [पाकमपुठेण] दुली धुवि व
मीरे वलि व धुवि वरु (पुत्र २७७)।

पाकार पुं [पाकार] पिना दुर्ग (अ ४ ४—
पत्र २०३)।

पाकि (ही) देवो पागय (परी २४) गठ—
देवो (१) वि ११ २२)।

पाटीह देवो पासंड (वि २१३)।

पाग पुं [पाक] १ वनरुण (धीन) उवा
गुवा १७४)। २ वीरु-विरोध (गठ)। ३
विपाक परिणाम (बर्ग ११३)। ४
वनरुण वृष्टन (धाम)। सासय पुं
[शासन] वृद्ध, वनरुण (वि ४ २१३,
पत्र १२ १)। सासगी की [शासनी]
वनरुण-विपा (पुत्र २ २ २७)।

पागइव वि [पाइविक] १ स्वाधिविक।
२ पुं धाराण मनुष्य, प्राकृत लोका (पत्र ११)।

पागह एक [प्र+कम्प] प्रकट करना,
कुला करना व्यक्त करना। वरु-पागडेमाण
(अ १ ४—पत्र १७१)।

पागह वि [प्रकट] व्यक्त, कुला (पत्र ११,
४२) धीन कय)।

पागहय न [प्रकटन] १ प्रकट करना। २
वि प्रकट करनेवाला (बर्ग २१)।

पागहिय वि [प्रकटिय] व्यक्त किया हुआ
(उवा वीर)।

पागहिय } वि [प्राकपिय, क] १ धम
पागहिय } धामी 'पाय्दी (१) पुं पठुप
वृद्ध (पत्र १ १)। २ प्रवर्तक प्रवृत्ति
करनेवाला (पत्र १ १—पत्र ४३)।

पागहम न [प्रागहम] वृष्टन, धिक् (सुम
१ ३ १ ४)।

पागहिय } वि [प्रागहिय, क] वृष्टन
पागहिय } वनरुण वृष्ट, वीरु (सुम १ ३, १
४ २ १ १८)।

पागय वि [प्राकय] १ स्वाधिविक वनरुण
विष्ट। २ वानरुण की प्राचीन लोका-भाषा
'वनरुण पाय्मा वीर' (अ ४—पत्र ११३
वि १ ४ ११ टी वमण १४ गुवा १)।
३ पुं धाराण वृष्टिवाला मनुष्य धाममय
वोप 'वेसि धामागोत न पाय्मा वरुणवेसि' (सुम १ १)
'किन्तु महावर्ममो वृष्टवर्मो
पाय्मावस्त' (वि २ ११, २, ११)।
भासा की [भापा] प्राकृत भाषा (पत्र
२१)। धाराण न [व्याकरण] प्राकृत
भाषा का व्याकरण (वि १ ४ २३)।

पागार पुं [प्राकार] पिना दुर्ग (अ ४ ४—
पत्र २०३)।

पाजावय पुं [प्राजावय] १ वनरुण का
व्यष्टिवाला वीर। २ वनरुण (अ १ १—
पत्र २१३)।

पाटप (वृष्टि) देवो वाडव (पत्र)।

पाठीण देवो पाठीण (पत्र १ १—
पत्र ७)।

पाठ देवो पठ—पाठ्य 'वर्धवपकगुहि
पार्थी' (सुम १ ७)।

पाठ एक [पाठय] पिना। पाठे (पत्र)।
धीन पाठिय पाठिकय (कय १११
पत्र ४३)। वनरुण पाठिकय (अ १
१२ टी)।

पाठ देवो पाठय=पाठक 'वीर वीरुवाहो
सय वीरु वेसवर्मि' (गुवा ३१)।

पाठवर वि [वि] पाठक विनरुण (वि १
४४)।

पाठवर पुं [पाठवर] वीर, वनरुण (पत्र
१ ४४)।

पाठन न [पाठन] विनरुण (अ १)।

पाठन न [पाठन] १ विनरुण पाठना
(सुम १ ७)। २ वीरुवमण वनरुण-वनरुण
धुमना 'वन्तुवडरविनरुणविनरुणवमणवमण
वमणी' (गुवा २ १७)।

पाठना की [पाठना] वनरुण देवो (विपा १
१—पत्र ११)।

पाठय पुं [पाठक] वृष्टन वमना वनरुण
पाठय वंरु (बर्ग ११) विपा १ ८
महा)।

पाठय वि [पाठक] विनरुणवमना। की विष्टा
(सुम २ ४३)।

पाठय पुं [पाठक] १ वानरुण-विरोध वनेत वीर
एक वनेत वनरुण वीर। २ वि वनेत-वनेत
वनेतवमना (पत्र)। ३ न वानरुण-वमण
वनेत का वृष्ट (पा ४ ११, १२, १३, १४,
गुवा)। ४ वानरुण वृष्ट का वृष्ट पाठन का
वृष्ट (पा १)।

पाठय पुं [वि] १ वृष्ट वनरुण-विरोध। २ वनरुण
वनेत। वनरुण (वि १ ७ ७१)।

पाठयवमण पुं [वि] वृष्ट वनरुण-विरोध (वि
१ ४३)।

पाठय की [पाठक] वृष्ट विरोध पाठन का
वृष्ट पाठय (अ ४ ११, १२, १३, १४, १५, १६, १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २४, २५, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५, ३६, ३७, ३८, ३९, ४०, ४१, ४२, ४३, ४४, ४५, ४६, ४७, ४८, ४९, ५०, ५१, ५२, ५३, ५४, ५५, ५६, ५७, ५८, ५९, ६०, ६१, ६२, ६३, ६४, ६५, ६६, ६७, ६८, ६९, ७०, ७१, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ७७, ७८, ७९, ८०, ८१, ८२, ८३, ८४, ८५, ८६, ८७, ८८, ८९, ९०, ९१, ९२, ९३, ९४, ९५, ९६, ९७, ९८, ९९, १००)।

पाठय की [पाठक] वनरुण देवो (पा
४ १८)। वनरुण वृष्ट न [वृष्ट] वनरुण
विरोध वृष्टा की वनरुण वृष्ट विनरुण वनेत
का वनरुण वनरुण (वि २, १३, १४, १५, १६, १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २४, २५, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५, ३६, ३७, ३८, ३९, ४०, ४१, ४२, ४३, ४४, ४५, ४६, ४७, ४८, ४९, ५०, ५१, ५२, ५३, ५४, ५५, ५६, ५७, ५८, ५९, ६०, ६१, ६२, ६३, ६४, ६५, ६६, ६७, ६८, ६९, ७०, ७१, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ७७, ७८, ७९, ८०, ८१, ८२, ८३, ८४, ८५, ८६, ८७, ८८, ८९, ९०, ९१, ९२, ९३, ९४, ९५, ९६, ९७, ९८, ९९, १००)।

पाठयि वि [पाठयि] वनेत वनरुण वनेतवमना
विनरुण वृष्टा (पत्र)।

पाठयि देवो पाठयि (अ ४ ११)। वृष्ट
न [वृष्ट] वनेत वनरुण (बर्ग ४२)। वृष्ट
न [वृष्ट] वनेत वनरुण (पत्र)।

पाठय न [पाठय] वृष्टा विनरुण (बर्ग
१ टी)।

पाठयन न [वि] वनरुण वीर वनरुण
वृष्टन-विरोध (वि १, १८)।

टुणग, 'ठण' न 'स्वापन' शैव मुनियों का एक जनकण पाय रखने का मन्त्र-मन्त्र (विदे २२२२ टी योष ११८)। 'गिजोग, 'निजोग' न 'नियोग' शैव साधु का यह उपकरण-समुह—पाय पायकन पायस्वापन, पायस्वरिका पटल रत्नकारा धीर पुष्पक (विदे २१ ३३ ३ विदे २२२२ टी)। पडिमा श्री 'प्रतिमा' पाय-संज्ञकी धर्मिण—प्रतिज्ञा-विशेष (अ ४ ३)। रेको पाय = पाय।

पाय (पाय) रेको पत्त = प्रात (विग)।

पाय म [पायस्] प्रायः बहुत करके पायपाण बड़ेरि सि (विदे ४४१)।

'पाय धृ न [पाय] पुष्प, 'संयुक्त धर्मिण-संविपस्य' (विदे १२)।

पायय रेको पा = पा।

पाय रेको पाय (स ७११ गुमा २८, ४१४)।

पाय म [पायस्] प्रमत्त (धुम १ ७ १४)।

पायगुह्य धृ [पायगुह्य] पैर का धर्मण (आमा १ ८)।

पायनलिधु धृ [पायनलिधु] पदमलिधुत शाक, पायनलिधु-मूत्र (विदे १२४)।

पायस न [पायान्त] गीत का एक मंत्र, पाय सुनीव (सम २४)।

पायसुय धृ [पायसुय] पैर बांधने का कठिनय ठाकण (विता १ १—पय ११)।

पायक रेको पायय = पायक (नय १)।

पायक रेको पायक (सम्य १०३)।

पायकिल्लप्य न [पायकिल्लप्य] प्रविष्टा (पठम १२ २२)।

पायग न [पायक] पाय (पायक २४८)।

पायकिल्लप्य धृ [पायकिल्लप्य] पाय-पायन करने पाय-क करनेवाला करने 'पायिनी नाम पायकिल्लप्य संयुक्त' (सम्य १४४ कट धीन नय २२)।

पायक रेको पायक = प्र + कट्य। पयक (विदे)। नय पायकिल्लप्य (गुमा २२२)। कय पायकिल्लप्य (पा १२२)। नय पायकिल्लप्य (धुम १)।

पायक न [वि] संयुक्त धर्मिण (वि १ ४)।

पायक रेको पायक = प्रकट (हि १ ४४ प्रायः योष ७३ भी २२ प्राय १४)।

पायक रेको पायक = प्राकट्य 'पहिले बाह विदे सुमरं पकिममि मयद्वयोमं पाय कगणिमा विम रति पसरो सहुं पायकममि' (विदे २२)।

पायक नि [पायक] पायकिल्लप्य (विदे २२०२ टी)।

पायकिल्लप्य नि [प्रकटित] व्यक्त किया हुआ (धुम ४० से १ २३; ना १२२, २१; गड ४ १२८)।

पायकिल्लप्य नि [प्रकट] कुला (नय १ ८)।

पायय न [पायन] विज्ञाना पाय करमा (आमा १ ७)।

पायस न [पायान्त] पयसि-समुह, पयसों का भरकर (उत् १८ २ धीन कय)। गिय न [नीक] पयसि-सम्य (वि ८)।

पायपुष्पण न [पायपुष्पण] पाय-विशेष शयन छोटा।

पायपुष्पण धृ [वि] पुष्पकट मुर्त (वि १ ४२)।

पायय न [पायक] पाय (धुम ४३)।

पायय रेको पाय = पाय (पाय)।

पायय रेको पायय (हि १ १७)।

पायय रेको पायय (वि १ ७)।

पायय रेको पायय = पायक (विदे १२२)।

पायय रेको पाय = पाय (कय)।

पाययस धृ [पाययस] पायकन का बोधन, कलपाय बलबला (आमा आमा १ ८)।

पायक न [वि] कय, पयस (वि १ १८)।

पायक धृ [पायक] कय पयस (पाय)।

पायक रेको पा = पा।

पायस धृ [पायस] धुम का मिष्टान्न छोटा 'पायसो धीर' (पाय गुमा ४१८)।

पायसो म [पायसस] प्रायः बहुत कर (उत् ४४२ पय १, २७)।

पायार धृ [पायार] किला कोट, दुर्ग (पाय १ २१ गुमा)।

पायक न [पायक] रण-रण पयो मुनय (हि १ १८; पाय)। कय धृ [कयस]

समुह के मध्य में स्थित कलराकार नल्लु (धुम)। पुर न [पुर] नवर-विशेष (पठम ४२ १२)। मयिर न [मयिर] पलाय स्थित गृह (महा)। हर न [गृह] गरी धर्म (महा)।

पायक न [पायक] पायय सिय पिरत सिक (नयपय पय १८१)।

पायलंकरपुर न [पायलंकरपुर] पलाय लंका रणय की राजधानी 'पायलंकारपुर' विगं पला मयिगमा' (पठम १ २ १)।

पायायक न [पायायक] पयोपय का बीर हवां मुहूर्त (सम ११)।

पायायि नि [पायित] किलाया हुआ (पठम ११ ४१)।

पायाहिण न [पायहिण्य] १ पैलन (पय ११)। २ कलिय की धोट 'पायहिण्ये विदि वंतिमाहि मयय नयिपय' (विदे १२२)।

पायाहिणा रेको पयाहिणा 'पायाहिण करि' (उत् २, २२ मुह २, २२)।

पार म [पार] धरणा करने में समर्थ होता। पार पार (वि ४ ८१ पाय)। नय पारत (गुमा)।

पार सक [पारय] पार पहुँचना पूर्ण करना। पारय (वि ४ ८१ पाय) है। पारिपय (सम १२ १)।

पारयुन [पार] १ ठ, किलाय (आमा)। २ पय किलाय 'पयरी पार' (पाय)। 'पिह नह होरी पयकलियार' (विता १)।

३ पयको धायानी कय। ४ मयय-मोक्ष-मि नयक यारि (धुम १ १, २८)। ५ मोग मुक्ति, निवारि 'पार' दुष्कृत्युत्तरं दूरा विधि' (वि ४)। गयि [ग] पार जाने-वाला (धीन गुमा २२४)। गयि नि [गय] १ पार-मय (मय धीन)। २ धृ विम-मय मययल पहिल (य १२२ टी)। गयि नि [गयि] १ पय पहुँचनेवाला (मयय कय धीन)। पायय न [पायय] सय प्रम-विशेष (आमा १ १०)। पय नि [विह] पार की कलनेवाला (धुम २ १ १)।

मोय नि [मोग] पार-मयय (कय)।

पाठाविभ वि [पाठिन्] अय्यवि (मह ११)।

पाठाविभवंत वि [पाठिवन्त] विभने पद्या हो मह (मह ११)।

पाठाविउ } वि [पाठिविउ] वदलवावा
पाठाविउ } (मह ११; १)।

पाठिवि वि [पाठिवि] पद्यावा ह्या अय्यविउ (मह १)।

पाठिविअवंत रेवो पाठाविभयवंत (मह ११)।

पाठिवा की [पाठिका] वदनेवासी की (कण्)।

पाठिव } वि [पाठिविउ] अय्यविउ वदने-
पाठिव } वावा (मह ११)।

पाठीय पुं [पाठीन] मय्य-विरोध 'पाठिया' मय्यनी मय्य की एक वावि (मा ४११ वि १२)।

पठोनामास पुं [पृथगामास] बाधने धम-
धम का एक मय्य (एवि २११)।

पाय सक [प्र + आनय] विमला। बहु-
पायप्रव (मह-पायसी १)।

पाय पुंकी [वि] वरष बरषाल (रे १ १०)
अन पुं १२४ मया पाय हा ४ ४ व
१) की गा (मुक १ १ महा)। 'उठी
की [उठी] बाधाल की मय्यकी (गा
२२७)। विमला की [विमला] बाधाली
(अ ७११ टी)। 'हैधर पुं [हैधर]
मय्य-विरोध (व ७)। विमल पुं [विमि
पवि] बाधाल-मय्य (महा)।

पाय न [पान] १ पीना पीने की क्रिया (पुर
१ १)। २ पीने की चीज पाणी पावि
(मुक २ टी पवि महा पावा)। ३ पुं
मुय्य-विरोध 'अणुपणुकासमहमपायमया
मय्यिवावे' (पणु १)। पय न [पयन]
पीने का मय्यन प्यावा (रे) गमर न
[गमार] मय्य-गद (एवा १ २ महा)।
'हैधर पुं [हैधर] एकाय वर (वैवोच
१२)।

पाय पुं [पान] १ पीन के मय्यन-युत के
वत पय्य-पय्य-विमल, मय, वचन और
हरीर का वन अणुपणुका वर विमल (की
२१ पणु १ महा हा १ १)। २ मय्य-
पय्यविमल विरोध, अणुपणुका-मय्य-मय्यविमल
वाव (हा मय्य)। ३ वचन, प्राणी चीन

'पय्यविमल के विविहृति मया' (मुम १ ७
११ हा १ पावा कय)। ४ चीनवि
चीन (मुपा २११; २११ कण्)। इय
वि [यय] प्रायवला प्राणी (वि १)।
अय पुं [अयय] प्राय-मय्य (मुपा २१०
१११) वाय पुं [व्याय] मय्य मय्य
(मुपा १ १०)। आयय वि [आयय]
प्राणी चीन वचन (पावा १ १ १)।
माह पुं [माव] प्राणनाम पवि स्वामी
(रमा)। अयय की [अयय] की पली
(मुपा १ १ ०)। मह पुं [मय] विमल
(पणु १ १)। विमि की [विमि]
मय्यन-विमल (महा)। सम पुं [सम]
पवि स्वामी (पाय)। सुमुम न [सुमुम]
सुम वचन (कय)। 'हिय वि [हय]
प्राय-मय्य (रमा)। इव वि [वय]
प्रायवला प्राणी (प्राय)। 'इवाइया की
[विवाविवा] विमल-विरोध विमल से होने-
वाला मय्य-मय्य (मह १०)। इवाय पुं
[विवाय] विमल (ववा)। 'उ पुं
[उय] मय्यन-विरोध बाधवा पुं (वय
२३ २१)। पाय पाय पुं [पाय]
अणुपणुका वीर विमल (मय्य १ ७
१०)। अयय पुं [अयय] मय्यन
विरोध-मय्य मय्यन वीर पूरक नामक
प्राणी की वचन का जय (मह १)।

पायनकर वि [प्रायनकर] प्राय-मय्य
(मुपा ११४)।

पायवि वि [प्रायवि] प्राय-मय्यवला
'प्रायविवावे' वहा' (मुपा ४२२)।

पायन पुं [पानक] १ मय्य-विरोध
(वचन १)। मुक २ टी कय)। २
वि वन वदनेवाला (?)। 'ए पायवी व
वतो मय्य' (मय्य २२; ७०)।

पायवि की [वि] रमा मय्य (रे १ ११)।
पायन वक [प्र + अय] विमल वचन,
मय्य वचन। पायवि (वय २ का)।

पायय न [पानक] रेवो पाय = पान (विदे
२१००)।

पायय पुं [प्रायय] स्वयं-विरोध वचन देर
की (वय १० मय कय)। २ विमल-
वचन-विमल-विरोध (वय १११)। ३ प्रायय

स्वयं का वक (हा ४ ४)। ४ प्रायय वचन-
मय्य मय्य-मय्य देव (पणु)।

पायवा की [उपानव] वहा 'प्रायवापी
मय्य व वचन मय्य मय्य' (मुम १ १
१०)।

पायाअम पुं [वि] वचन बरषाल (रे १
१०)।

पायम पुं [प्राय] विमल (मय)।

पायामी की [प्रायामी] वीचन-विरोध (मय
१ १)।

पायाली की [वि] दो हावा का प्रहार (रे १
४)।

पायि पुं [प्रायिन्] वीर, मय्य वचन
(पावा प्राय १११ १४)।

पायि पुं [पायि] हय, वचन (मुपा स्वय
२१ १)। गहण रेवो गहण (मयि)।

माह पुं [मय] विमल (मुपा १०१ मयवि
२११)। गहण न [महण] विमल,
हारी (विमल १ १ स्वय ११; मयि)।

पायि न [पानीय] पानी वचन (हे १
१ १; प्राय पणु १ १ मुपा)। वारिया
की [वारिका] विमल-विमल-विमल-विमल-
पायिवावे (?) मय्य वचन (हावा १
१२-वय १०१)। हारी की [हारी]
विमल (रे १ १४ मयि)। रेवो पायिअ।

पायिनि पुं [पायिनि] एक मय्यि मय्यकण
कार वचन (हे २ १४०)।

पायिनीअ वि [पायिनीअ] मय्यि-मय्यि-
पायिनि मय्यि मय्यि (हे २, १४०)।

पानी रेवो पाय = (रे)।

पायी की [पानी] वचन-विरोध 'पायी मय्य-
मय्य पुं वचन मय्य मय्य' (पणु १-वय
११)।

पानी रेवो पायिअ (हे १ १ १; प्राय
१ २)। वरी की [वरी] विमल (एवा
१ १ टी-वय ४१)।

पाय पुं [प्राय] १ प्राय पावा। २ पायो
मय्य (मय्य १ ४ वीन कय)। ३
मय्य-मय्य-विमल-विमल-विमल-विमल-विमल-
पायिवावे (?) मय्य वचन (हावा १
१२-वय १०१)। वय पायिनि से मय्य
(हे १ २)।

पाठ १) दैवो पाय = पात्र (सुप १ ४ २
पा १ पण्ड २ १—पत्र १४५)। 'बैभन न
[बैभन] पाय बाँधने का बन्ध-कड़वा बैन
मुनि का एक लोकरण (पण्ड २ २)।

पाठ १) दैवो पाय = पात्र (विपा १ १)। सम
वि [सम] पैय-विशेष (अ ७—पत्र
१४४)। 'हृदय न [हृदय] हृदय
नामक पायुर्बै बैन भयप-भय का एक
प्रतिपाद विषय (सम १२५)।

पाठ १) दैवो पाय = प्रायुः। पायुःस्य (वि
१४१)। पायुःकालि (सुप १ २ २ ७)।

पाठ १) दैवो पायो = प्रलम् (मुन १ १)।

पाठोक्तिय वि [प्राज्ञाविक] प्रवीर-कल का,
प्रवीर-कलानी (वीर १२५)।

पाठ १) दैवो पायव (वा २१७ ७)।

पायम दैवो पायम (बर्ष ७८१)।

पायार एक [पा + यम् पाय + धारय]
पकारा 'पायाय विप्रदे' (वा ११)।

पायव वि [पायव] विरले बैन मुपा
पायि (विपु ११)।

पायाविय } वि [प्राभावि] प्रबल
पायाविय } लक्ष्मी (वीर १११ पयु
१, पायि १)।

पाय एक [प + पाय] प्राय करना
मुन्यो में 'पाय'।

'कापेदे पायि विरल विपययोसबैभन'।
सो सपबो पायव नरनयन कम्मवरण'।
(पण्ड १२)। कर्म वामिन्न (पण्ड १४२)।

पायण [प्राभाय] प्रयाण प्रयाण
(बर्ष ७८१)।

पायदा औ [वि] दोनो पैर से नयन-नयन (वि
१ ४)।

पायम दैवो पायम (वि १४१६)। नैय
१२४)।

पायम पु [पाय] इतीकन नरक सेनी का
नाम करनेवाला मुन्य 'पायम' इतिपाय
पायवा बैनपा 'विम' (वा १४४
पत्र १ ४ ४१)। 'मुन ११, २)। 'हृदय
विपि वा मुन्य (पण्ड १४१७)। 'हृदय
केरुण, पञ्चनी (वा १४४)। 'को नाम
पाय' कुण्ड, नयन मुन्य' (वा १११)।

पाया औ [पाया] रोम-विशेष मुन्यो पाय
(मुपा २२७)।

पायाव पु [पायाव] पयार, पयार, पयार
नयनक मुन्य-विशेष (पण्ड)।

पायि एक [वि] लार सेना। पायि
(पयार २, २ २ १)।

पायि न [वि अपयि] १ बार बैन,
पायि बैन का पाय कर हल करना। २

वि को लार लिया पाय नह (वि १२
१११ भाषा ठा १ ४ १)। 'वीर १४२
५, पत्र १२४; वंका ११ २। मुपा १४४)।

पायि वि [वि] लार बैन मुपा (पाया
१ १ १)।

पायु वि [ममु] पयिन्न (पाय १
१२७)।

पायु न [पायमूल] पैर का मूल नाम पौ
का पाय नयन (नयन १ १; मुर ८ १११)
वि १२)। 'दैवो पायमूल = पायमूल।

पायोक्त दैवो पयु = प्रयु (लारा १ २)
न मगा)।

पायोक्त पु [प्रमो] मुक्ति, मुक्तपाय (न
१४५ टी)।

पाय पु [वि] १ रक-नय, रक का पहिना (वि
१, १७)। २ लक्ष्मी (नय)।

पाय पु [पाय] १ पायन-विनय। २ पयो
(प्राज्ञ ११)। नय २५ टी)।

पाय वि [पाय] पाय-योग्य (नय ७ २२)।

पाय दैवो पाय (नय)।

पाय पु [पाय] १ पयन (वंका २ २२ से
१ ११)। २ लक्ष्मी 'पुणो पुणो लक्ष्मि'।

पाय पु [पाय] पाय नये की जिवा (पा
२१)।

पाय पु [पाय] १ नयन नयि (वा ११)।

२ पैर नयन पौन 'नयन' नयन म पाय
(पाय लारा १ १)। ३ पय का बीजा
विनय (वि १ ११४; वि)। ४ विरल

'पयु' लक्ष्मी 'पाय' (पाय नयन २५)। ५
लक्ष्मी, नयन का नयन (पाय)। ६ लक्ष्मी
नयन (नयन २)। ७ पयु का एक

नाम (नय)। 'नयन' नयन [पायनिय]
पैर प्रयायन का एक मुन्य-पाय (पय)।

नयन पु [नयन] पैर पौनो का नय
नयन (नय १७ ७)। 'मुन्य' पु

[मुन्य] मुन्य-विशेष (लारा १ १७
टी—नय २१)। 'पाय पु [पाय] नयन

नयन (वि)। 'पाय पु [पाय] पैर से
नयन (लारा १ १)। 'पायि वि [पायि]

पैर से पायायन करनेवाला पाय-विशेष
(नयन ११ ११)। 'जाय' नयन

[जाय, क] पैर का पाय-विशेष (वीर
नयन ११ पण्ड २ २)। 'पायन [पाय]

मुपा पयारी (वि १ १३)। 'पयु पु
[ममु] पैर एक नयन-विशेष का एक पाय

पय (लारा १ १—पय २१)। 'पौद दैवो
बीज (पाया १ १ नय)। 'मुन्य' न

[मोहन] नयन-विशेष (नयन ११ ७ २ नय
नयन)। 'पयन' पैर पयन

प्रयाय-विशेष (नयन ११ १५)। 'मूल न
[मूल] १ दैवो पायु (नय)। २ मुन्यो

की एक लाराय नयि लक्ष्मी की एक
नयि 'समायन' पायु' नयन

पायु' नयि 'समायन' पायु' नयन
'समायन' पायु' नयन

'समायन' पायु' नयन
'समायन' पायु' नयन

'समायन' पायु' नयन
'समायन' पायु' नयन

'समायन' पायु' नयन
'समायन' पायु' नयन

'समायन' पायु' नयन
'समायन' पायु' नयन

'समायन' पायु' नयन
'समायन' पायु' नयन

'समायन' पायु' नयन
'समायन' पायु' नयन

'समायन' पायु' नयन
'समायन' पायु' नयन

'समायन' पायु' नयन
'समायन' पायु' नयन

'समायन' पायु' नयन
'समायन' पायु' नयन

'समायन' पायु' नयन
'समायन' पायु' नयन

टुपण, 'ठषण न' [स्वापन] शैत मुक्कियाँ का एक समकाल पाय रखने का बस-कराह (विशे २१२२ टी घोष ११८)। निजोग, 'निजोग दु' [नियोग] शैत छात्र का यह उपकरण-समूह—पाय पायबन्ध पायस्थान पायनैरारिक पयन रजकाल्य दीर दुपक (विशे २१ ११ १ विशे २१२२ टी)। 'पडिमा की [प्रविमा] पाय-संक्षेपी प्रविग्रह—प्रविग्रह-विरोध (अ ४ १)। रेको पाइ = पाय।

पाय (पय) रेको पय = प्राप्त (विशे)।

पाय स [प्रायस्] प्राय = बहुत करके—पायपाय बरेह रि' (विशे ४४१)।

'पाय वृ ३ [पाय] पुष्य 'छकुमा सविष उलियाया' (पवि १४)।

पायय रेको पा = पा।

पाय रेको पाय (स ७११ गुपा २८) ११६४ पायक ७१)।

पाय प [प्रायस्] प्रकट (दुष १ ७ १४)।

पायगुड दु [पादागुड] पिर का धंशुठा (छाया १ ८)।

पायकडि दु [पावकडि] पयबनिकडि खास पावकडि मोष-गुन (पवि १६४)।

पायल न [पायल] शीत का एक मेघ पाय दुधरीत (रम १४)।

पायदुस दु [पायदुस] पिर बाँके का कलम समकाल (विशे १ १—पय ११)।

पायक रेको पायय = पायक (बब १)।

पायक रेको पाइक (सम्य १७१)।

पायकिलण्य न [पायकिलण्य] प्रयच्छिता (पयन १२ १२)।

पायग न [पायक] पाय (ययक २४८)।

पायकिलण्य न [पायकिलण्य] पाय-नायन कर्न पाय-यय करेनाया कर्न 'पायिपी नाम पयकिलण्यो धंशुलो' (सम्य १४४ बग्य दीन नय २६)।

पायक रेको पायक = प्र + कटय्। पायक (पवि)। बड पायकडि (गुपा २२६)। कड पायकिलण्य (पय १८१)। हेठ पायकिलण्य (दुप १)।

पायक न [रे] प्रकट धाँप (रे १ ४)।

पायक रेको पागड = प्रकट (हे १ ४४)। प्राय मोष ७१ की २२ प्राय १४)।

पायक रेको पागड = प्रायय यईपि वाय विपले छपरी परिसमिष प्रसन्नोर्ध्वा पाय बयिष्ठा विष रति पसरो धंशु प्राययवि' (पवि २६)।

पायक वि [प्रायय] पायकवि (विशे २१७६ टी)।

पायकिलण्य वि [प्रकट] म्यक किया गुपा (दुप ४ वे १ ११; या ११६ २१; पयक स ११८)।

पायकिलण्य वि [प्रकट] गुना (बग्या १ ८)।

पायन न [पायन] पिलाना पल कराना (छाया १ ७)।

पायन न [पायय] पयति-समूह पालों का सत्कर (उत १८ २ दीप कय)। गिय न [नीक] पयति शैत (पि ८)।

पायपुष्य न [पायपुष्य] पाय-विरोध छाप सकोरा।

पायपयय दु [रे] कुनकुट गुन (रे १ ४४)।

पायय न [पायक] पय (पयक ४१)।

पायय रेको पाय = पय (याम)।

पायय रेको पायय (हे १ १७)।

पायय रेको पायय (पि १ ७)।

पायय रेको पायय = पायक (पवि १२१)।

पायय रेको पाय = पाय (कय)।

पायय रेको [प्रायय] प्रायकल का योजन, कलपाय बबबना (छाया छाया १ ८)।

पायय न [रे] बड, यई (रे १ १८)।

पायय दु [प्रायय] बड वे (याम)।

पायय रेको पा = पा।

पायय न [पायय] बड का मिशाल कीर 'पायको कीर' (याम गुपा ४१८)।

पायको स [पायय] प्राय बड कर (पय ४४१ पया १ २७)।

पायार दु [पायय] किला कोट, दुई (याम; हे १ २५८) गुमा)।

पायक न [पायक] खा-तल यो गुन (हे १ १८)। पाय)। कडार दु [कडार]

समूह के मध्य में स्थित कडाराकार बडु (समूह)। पुर न [पुर] नगर-विरोध (पयन ४४, २६)। मंदिर न [मंदि] पायस-स्थित नूह (महा)। इर न [शुह] नदी मय (महा)।

पायक न [पायक] पायस शैत पिरत शैत (कययय पय १८२)।

पायस-धरपुर न [पायस-धरपुर] पायस-धरका रायण की रायकानी 'पायस-धरपुर शाय पया मरनिगया' (पयन १ २ १)।

पाययक न [मादायय] प्ररोध का शीत हवा मुन (सम ११)।

पायययि वि [पायय] पिलाना गुपा (पयन ११ ४१)।

पायययि न [पायययि] १ कल (पय ११)। २ बल्लि की धीर 'पायययि' विवि वंतिमहि म्यय वंतिमय' (विशि ११६)।

पायययि रेको पयययि 'पायययि कथि' (उत ११ १६ गुन १, २६)।

पार यक [यक] सकना करने में समर्थ होना। पार पारेह (हे ४ ८६) पाय)। बड पारेह (गुमा)।

पार यक [पायय] पार पययना पुर्ण करना। पारेह (हे ४ ८६) पाय) हेठ, पारिषय (मग १२ १)।

पार पुन [पार] १ पट, किरास (छाया)। २ पता किरास 'पयरी पार' (याम) 'किह म्हे होरी मयबलिया' (पिता १)। ३ पलीक, धानी कय। ४ मनुय-मीक-मिल लक धारि (युप १ १ २८)। ५ मोय मुकि, निराल 'पार पुष्यपूरत गुना मि' (हे ४ ४)। ग वि [ग] पार बाने-बाना (दीप गुपा २१४)। गय वि [गय] १ पार-साय (बग्य दीप)। २ पु विन-बेन-सायन प्रहंय (उत १२२ टी)। गामि वि [गामि] पर पययनेना (याम; कय दीप)। पायग न [पायक] येन इय-विरोध (याम १ १७)। विरि वि [विरि] पार की बलनेना (युप २ १ १)। मोय वि [मोय] पार-साय (कय)।

पाशरण पु [प्रापरण] एक स्नेह्य भावि
(मुच १२२)।

पाशरण न [प्रापरण] बरन, कपड़ा (हि १
१०५)।

पाशरिय नि [प्राधुत] प्राधुतित (दुम १८)।
पायन देवो पाउम (दुम ११७)।

पाशा की [पापा] गणने निवेष्ट को प्राधुत
को बिहार के पास पाशापुरी के नाम से
प्रसिद्ध है (क्या की ३; पंथा १६, १७
पत्र ३४ विचार ४६)।

पावाइ नि [प्रवादिस] बाबाट, बागमिक
(मुम २ ६ ११)।

पावाइज नि [प्राप्राजिक] संन्यासी (पय
२२)।

पावाइज नि [प्राप्राजिक] देवो पावाइ
(सावा)।

पावाइज } नि [प्रावादिक] बाबाट, बर-
पावादुय } नि (मुम १ १ १३; २
२, ८ नि २५५)।

पावार पु [प्रावार] १ रंघनाला कपड़ा। २
मोय बन्धन (पत्र ४४)।

पावारय देवो पारय = प्रावारक (हि १ २७१;
दुमा)।

पावालित्रा को [प्रपावालित्र] प्रपा वा
व्यात्र पर निवृत्त की (पा १९१)।

पावामु } नि [प्रवासिम, क] प्रवास
पावामु } करनेवाला (नि १ ३१; १
६५ दुमा)।

पाविन नि [प्रास] सग विना हुआ (दुम ३
१६ स १८५)।

पाविन नि [प्रापिक] प्रात बरवाया हुआ
(नए नाट—मुच २७)।

पाविन नि [प्रापिक] सचकोर किया हुआ
गुप्त विनाश हुआ (दुमा)।

—प्रापिक नि [पापिक] पापक पापी (पत्र
७९८ वीं मुर १ १११ १ २ ३५ मुमा
१९६, वा १४)।

पावीड देवो पायवीड (पत्र ३ १ ६;
२७ दुमा)।

पावीर्यस देवो पावर्म (नि ४ ६ ४१४)।
पावुम नि [प्रावुम] प्रावर्मा (पत्र ४)
पावर्मास देवो पाव = प्र + पार।

पावैस नि [प्रावैस] प्रवेशित प्रवेश के
सायक (पौप)।

पावस पु [प्रावैरा] बरन के दोनों तरफ
सटका रंघा (खामा १ १)।

पास सक [ह्यु] १ देवता। २ बाकला।
पासइ, पासेइ (कय)। पासिम = परम
(बावा १ १ ३ २)। बने पासिम (नि
७)। बर पासिम, पासमान (स ७५
कय)। संक. पासिम पासिचा पासिचार्ण,
पासिया (नि ४६३, कय नि ४८१ महु)।

है पासिचय, पासिमि (नि १०७-१०७)।
है पासिचय (कय)।

पास पु [पारस] १ बर्तमान घबसपिछी-वाल
के तैरुवे जिन-देव (सम १३ ४१)। २
भगवान् पारसनाथ का धर्मसायक यज्ञ (पति
८)। ३ न कया के मोरे का माय, पार
(खामा १ १६)। ४ समीन निवृत्त (दुम
४ १०६)। ५ निवृत्त नि [पारसीय]
भगवान् पारसनाथ की पञ्चम में संन्यास
(सम)।

पास पु [पारा] कंसा बन्धन-रज्जु (मुर ४
११०-मौर दुमा)।

पास न [रे] १ बाज। २ बाज। ३ कुल
प्रास। ४ नि विरोध कुलीन शोष-हीन
(हि ६ ७३)। ५ पुन. कय बहू ना धन-
निवृत्त 'निवृत्त को तैरुवे पावेण विना न
होर यह रंघे' (पत्र २)।

पास नि [पारा] पसर, निवृत्त, बन्धन
दुलित 'एष पारसियासी कि करिस्थ' (सम
२)।

पासिगिनि नि [प्रासजिक] प्रसंग-संन्यासी,
बादुराणिक (दुमा २७)।

पासिड न [पामण्ड] १ बाबर घसरय बर्न
बर्न का रंघ (अ १; खामा १ ८; पत्र
पा १)। २ सट (पुपु)।

पासिड } नि [पामण्डन क] १
पासिडिय } पारस की लोक में दुम पावे के
लिए बर्न का रंघ रखनेवाला (मदनि ४
मुम २०२ मुमा ६११ १ ६ १६२)। २
पुं पत्नी का दुम 'कमार बलपारे
पावे (१ ६) बल हाके निवृत्त'। पारवार
य सके (पत्र २—बावा १६४)।

पासिड नि [पारस] कंसा बन्धन-रज्जु (मुर ४
११०-मौर दुमा)।

पासिड नि [पारस] कंसा बन्धन-रज्जु (मुर ४
११०-मौर दुमा)।

पासिड नि [पारस] कंसा बन्धन-रज्जु (मुर ४
११०-मौर दुमा)।

पासिड नि [पारस] कंसा बन्धन-रज्जु (मुर ४
११०-मौर दुमा)।

पासिड नि [पारस] कंसा बन्धन-रज्जु (मुर ४
११०-मौर दुमा)।

पासिड नि [पारस] कंसा बन्धन-रज्जु (मुर ४
११०-मौर दुमा)।

पासिड नि [पारस] कंसा बन्धन-रज्जु (मुर ४
११०-मौर दुमा)।

पासिड नि [पारस] कंसा बन्धन-रज्जु (मुर ४
११०-मौर दुमा)।

पासिड नि [पारस] कंसा बन्धन-रज्जु (मुर ४
११०-मौर दुमा)।

पासिड नि [पारस] कंसा बन्धन-रज्जु (मुर ४
११०-मौर दुमा)।

पासिड नि [पारस] कंसा बन्धन-रज्जु (मुर ४
११०-मौर दुमा)।

पासिड नि [पारस] कंसा बन्धन-रज्जु (मुर ४
११०-मौर दुमा)।

पासिड नि [पारस] कंसा बन्धन-रज्जु (मुर ४
११०-मौर दुमा)।

पासिड नि [पारस] कंसा बन्धन-रज्जु (मुर ४
११०-मौर दुमा)।

पासिड नि [पारस] कंसा बन्धन-रज्जु (मुर ४
११०-मौर दुमा)।

पासिड नि [पारस] कंसा बन्धन-रज्जु (मुर ४
११०-मौर दुमा)।

पासिड नि [पारस] कंसा बन्धन-रज्जु (मुर ४
११०-मौर दुमा)।

पासिड नि [पारस] कंसा बन्धन-रज्जु (मुर ४
११०-मौर दुमा)।

पासिड नि [पारस] कंसा बन्धन-रज्जु (मुर ४
११०-मौर दुमा)।

पासिड नि [पारस] कंसा बन्धन-रज्जु (मुर ४
११०-मौर दुमा)।

पासिड नि [पारस] कंसा बन्धन-रज्जु (मुर ४
११०-मौर दुमा)।

पासिड नि [पारस] कंसा बन्धन-रज्जु (मुर ४
११०-मौर दुमा)।

पासिड नि [पारस] कंसा बन्धन-रज्जु (मुर ४
११०-मौर दुमा)।

पासिड नि [पारस] कंसा बन्धन-रज्जु (मुर ४
११०-मौर दुमा)।

पासिड नि [पारस] कंसा बन्धन-रज्जु (मुर ४
११०-मौर दुमा)।

पासिड नि [पारस] कंसा बन्धन-रज्जु (मुर ४
११०-मौर दुमा)।

पासिड नि [पारस] कंसा बन्धन-रज्जु (मुर ४
११०-मौर दुमा)।

पासिड नि [पारस] कंसा बन्धन-रज्जु (मुर ४
११०-मौर दुमा)।

पासिड नि [पारस] कंसा बन्धन-रज्जु (मुर ४
११०-मौर दुमा)।

पाठपर वृ [दे] गगल पाठावन (दे १ ४३)।
पाठपर वृ [पाठापर] मयूख समर (पाठ
पुत्र २०)।

पाठपरि नि [पाठि] निचको पाठय कपया
गया हो बह (पुत्र ११२)।

पाठपर वृ [पाठापर] १ श्रुति-विरोध (मूय
१ १ ४१)। २ न गोत्र विरोध को
वर्णित गोत्र की एक शाखा है। ३ नि उग्र
गोत्र में वारण (हा ७—पत्र ३६)। ४
वृ मिथुन। ५ कर्म-स्थानी संस्थानी 'अभिनि
वाचमदा धरि' (मूय २ ११)।

पाठिआसिय नि [पाठिओपिक] मुनि-जनक
वान प्रमथना-मूख वान पुस्तकार (सम्पत्
१२२: व १६३ गुर १९ १८३: निवार
१०१)।

पाठिच्छा देखो पाठिच्छा 'व्यवस्थितान बिडा
निह मयन्नि लामि पाठिच्छा' (हा १०३:
व २ ७३)।

पाठिच्छन् देखो पाठिच्छन् (छाया १
८—पत्र १३२)।

पाठिजाय देखो पाठिय = पाठिजाय (मुमा)।
पाठिदुपयिजाओ [पाठिदुपयिनि] समित
विरोध मन धारि के कर्म में सम्या प्रवृत्ति
(नम १ धोर बय)।

पाठिहो [मयूनि] प्रमथन बह, कपया
'विश्वरूप मयूनि-पाठि पाठिहो बह
लेग' (हा २१)।

पाठिगामिअ देखो पाठिगामिअ = पाठिगामिअ
(मूय बय ५ १६)।

पाठिगामिअ देखो पाठिगामिअ (वार
पाठिगामिअ) १ छाया १ १—पत्र ११)।

पाठिगामिअओ [पाठिगामिअ] द्वारे
को बरित—दुन कारने से होयेगा
कर्म-कथ (नम १)।

पाठिगामिअओ [पाठिगामिअ] कर देखो
(नम २)।

पाठिगामिअ देखो पाठिगामिअ (मूय मुता
२० बय)।

पाठिगामिअ देखो पाठिगामिअ = पाठिगामिअ
कर्म (हा २६)।

पाठिगामिअ वृ [पाठिगामिअ] रानि विरोध (नम
१ १—पत्र १)।

पाठिमह वृ [पाठिमह] दूय विरोध कपय
ना वेह (कपु)।

पाठिय नि [पाठि] पूर्ण क्रिया हुआ (वय
१६)।

पाठिय वृ [पाठिजाह] १ देव-कर्म-विरोध
कर्म-सर्व-विरोध। २ कपय ना वेह 'कपु
पाठियाय म पठियवरो मानईयो' (मुमा
२ १३)। ३ न पुन-विरोध कपय का
पूत को रक्त बर्ण का धीर मयन्त शोच्य
मान होता है, 'गृहिण ए विद्वान् पाठियविध
मुदीह' छंद बगद सविध' (नमि)।

पाठियस वृ [पाठियात्र] देव-विरोध 'परि
कर्मतो पतो पाठियतविध' (पुत्र ३९९)।

पाठियस न [दे परिषर्] पठि के वृद्ध
माय की नाम पठि (एनि ४३)।

पाठियाय देखो पाठिय = पाठिजाह (मुमा
७६: वे ६ २८ महा व ७३६)।

पाठियायजिया देखो पाठियायजिया (हा २
१—पत्र १६)।

पाठियायजिया देखो पाठियायजिया (व
३९६)।

पाठियायिअ नि [पाठियायिअ] काबी रखा
हुआ (नम)।

पाठिअय न [पाठिअय] संस्थागत
संस्था (पत्र २२ २४)।

पाठिअयओ [पाठिअय], पाठिअयिअ]
संस्थापको (नम २ २०६)।

पाठिअय नि [पाठिअय] संस्थाप-संस्था
(पत्र)।

पाठिअय नि [पाठिअय] कर्म समाज
(नमि ६)।

पाठिअयजियाओ [पाठिअयजिअ] परि
छात्र—विद्यमान से होकराना कर्म-कथ
(नम ४)।

पाठिअयओ [दे] कथा (दे १ ४३)।
पाठिअओ [दे] १ प्रवृत्ति। २ महति,
मानई। ३ विर मुन्य महति बड़ा देर
ही कर्मो हूँ मैं (हा ७३)।

पाठिअयव नि [पाठिअयिअ] कर्म के
मिथुन (हा ६—पत्र ४३१)।

पाठिअ (य) नि [पाठिअ] कर्म-विरोध
पठिअ कपय हा बरितगा (नम)।

पाठिअमय न [पाठिअसक] पुन-विरोध
कर्म मुनिओ के एक पुन का नाम (कपु)।
पाठिओ [दे] दोन-आए विरोध दोन
क्रिया पाठा है बह पाठ-विरोध (दे १, १०
पत्र २७७)।

पाठिओ नि [पाठिओ] पार मयन्त धीर
मयन्त पाठिओ' (पमि १३ विरि ४=६:
सम्पत् ७३)।

पाठिअमय वृ [दे] विषय (दे १ ४४)।

पाठिअमय वृ [दे] वृद्ध विरोध (दे १ ४४)।

पाठिअमय देखो पाठिअमय (माता १ ६
१ नि)।

पाठिअमय नि [दे] मानिओन सेलो हन मे
स्वामी 'पमिअमय ब पाठिअमय' (दे
१ ४४)।

पाठिअमय देखो पाठिअमय बहवरी बहवरी
को माता (निग १ १)।

पाठिअमय वृ [पाठिअमय] १ पठि-विरोध बहवरी
(दे १ ४४)। २ पुन मुता १२८)। ३ पुन
विरोध। ४ न पुन-विरोध (पलए १०)।

पाठिअमय नि [पाठिअमय] पठि-विरोध
पठि-संस्था (नमि ३ २)।

पाठिअमय देखो पाठिअमय (हा १ ४४: व ३७३:
महा)।

पाठिअमय नि [मयूनि] प्रवेष्टाता धीर
का (महा)।

पाठिअमय [पाठिअमय] पाठिअमय
कथा (नम महा)। बह पाठिअमय
पाठिअमय, पाठिअमय (पुत्र २ ७३:
म ४३: महा धीर कथा)। पाठिअमय
पाठिअमय, पाठिअमय (नम महा) पाठिअमय
(पा) (हा ४ ४४१)। ५ पाठिअमय
पाठिअमय (पुत्र ४३१ १०६ महा)।

पाठिअमय देखो पाठिअमय = पाठिअमय
(नम)।

पाठिअमय वृ [दे] १ बहवरी टपन केनेगा।
२ नि कर्मो कर्म-कथ (दे १ ४४)।

पाठिअमय [पाठिअमय] पाठिअमय-विरोध 'मुदीह का
कर्म का निवारण का बरितगा' (नम)।
२ नि कपय कर्म-कथ' को कर्म-कथ
कर्मो कर्म' (नम)। ३ नि (नम ४)।

पापरण पुं [पावरण] एक स्नेह्य बालि (पुष्प १३२)।

पावरण न [पावरण] बल कपड़ा (हे १ १७३)।

पापरिय वि [पापुव] बाधधारित (सुर १८)।

पापम रेको पापम (सुर ११७)।

पासा की [पासा] नगरे तिरोय को बाधकन की बिहार के पास पासादुपे क नाम मे प्रसिद्ध है (कल्प ली ३ पंथा ११ १७)।

पासा वि [प्रसाध] बाध, दारुणिक (सुर १ १११)।

पापाइय वि [प्रापामिक] संयासी (रण २२)।

पापाइय वि [प्रापादिक] रेको पापाइ (पासा)।

पापाइय } वि [प्रापादिक] बाध दारु पापादुय } निक (सुर १ १ ११३) २ २ ३३; वि २६५)।

पापाइय पुं [पापाइ] १ रंथावाला कपड़ा २ मोय बज्ज (वज ३४)।

पापाइय रेको पापय = प्रावारक (हे १ १७१ पुसा)।

पापाइय ओ [प्रापाइय] प्रा पा व्यास पर निरुक्त की (पा १९१)।

पापाइय } वि [प्रापामिक] क प्रस पापाइय } कलेयता (वि १ २१ हे १ १३ पुसा)।

पापि वि [प्राप] मण बिना हुपा (सुर १ १९; व १५९)।

पापि वि [प्रापि] शत बरसाया हुप (बल) कल—मुष्प १७)।

पापि वि [प्रापि] वधवार विपा हुपा गृह बिनाया हुपा (पुसा)।

—पापि वि [पापि] कपल बानी (उर ७२ वीं सुर १ ११३; २ २ ३३ मुसा १९१ या १४)।

पापि रेको पाप-वि (वज १ ११ हे १ २७ पुसा)।

पापि रेको पापम (वि ४ १, ४१४)।

पापु वि [पापु] बाध-वि (सि ४)।

पापुमा रेको पाप = द + पाप।

पापेस वि [पापेस] प्ररोगिष्ठ, प्रवेष्ट के सायक (पीप)।

पावस पुं [पावेरा] बध के दोनो तरफ मरकटा रंथ (छाया १ १)।

पास सक [हृदा] १ देवता २ बालता।

पास, पासे (कल्प)। पावि = पर्व (भाषा १ ३ ३)। कर्ष पाविष्ठ (वि ७)।

पास, पासन, पासमाग (व ७३३ कल्प)। सङ्ग पासि = पासिचा पासिचान, पासिया (वि ४१३; कल्प वि ३३३ महा)।

हेह पासिघण, पासिर् (वि १७०-१७७)। ह पासियक (कल्प)।

पास पुं [पास] १ बर्तमान सचविणी-कास के लेखने विन-देर (वज १३ ४१)। २ भगवान् पारवनाथ का मन्त्रिण्यक मण (संति ८)। ३ न कृष्ण के नीचे का मण पतिर (छाया १ १६)। ४ सनी निवट (सुर ४ १७१)।

पासि वि [प्रापि] मयवान् पारवनाथ की परम्परा में संजाय (सा)।

पास पुं [पास] पंथा कल्प-रग्ग (सुर ४ ११०-पीप पुसा)।

पास न [वि] १ घण्टा २ दंत ३ गुण प्रास ४ वि विरोध मुहीन शोभा-दीन (वि ९, ७३)। ५ पुं क. मय बलु का मल मियल 'मिन्नुसा संकोता बाधेण विपुल न होय वह रेको (पाव २)।

पास वि [पास] पास, मिष्ट, कल्प, मुक्ति 'एस पासिपराको वि करिस्थ' (कल्प १ २)।

पासि वि [पासि] प्रसं संकोपी पापुर्विक (मुसा २७)।

पासि न [पासि] १ पापक प्रजाय पर्व पर्व का दीन (म १ छाया १) २ वज (पुसा)।

पासि वि [पासि] पास, मिष्ट, कल्प, मुक्ति 'एस पासिपराको वि करिस्थ' (कल्प १ २)।

पासि वि [पासि] प्रसं संकोपी पापुर्विक (मुसा २७)।

पासि न [पासि] १ पापक प्रजाय पर्व पर्व का दीन (म १ छाया १) २ वज (पुसा)।

पासि वि [पासि] पास, मिष्ट, कल्प, मुक्ति 'एस पासिपराको वि करिस्थ' (कल्प १ २)।

पासि वि [पासि] प्रसं संकोपी पापुर्विक (मुसा २७)।

पासि न [पासि] १ पापक प्रजाय पर्व पर्व का दीन (म १ छाया १) २ वज (पुसा)।

पासि वि [पासि] पास, मिष्ट, कल्प, मुक्ति 'एस पासिपराको वि करिस्थ' (कल्प १ २)।

पासि वि [पासि] प्रसं संकोपी पापुर्विक (मुसा २७)।

पासि न [पासि] प्रसं संकोपी पापुर्विक (मुसा २७)।

पासि वि [पासि] पास, मिष्ट, कल्प, मुक्ति 'एस पासिपराको वि करिस्थ' (कल्प १ २)।

पासि न [पासि] १ पापक प्रजाय पर्व पर्व का दीन (म १ छाया १) २ वज (पुसा)।

पासि वि [पासि] पास, मिष्ट, कल्प, मुक्ति 'एस पासिपराको वि करिस्थ' (कल्प १ २)।

पासि न [पासि] १ पापक प्रजाय पर्व पर्व का दीन (म १ छाया १) २ वज (पुसा)।

पासि वि [पासि] पास, मिष्ट, कल्प, मुक्ति 'एस पासिपराको वि करिस्थ' (कल्प १ २)।

पासि न [पासि] १ पापक प्रजाय पर्व पर्व का दीन (म १ छाया १) २ वज (पुसा)।

पासि वि [पासि] पास, मिष्ट, कल्प, मुक्ति 'एस पासिपराको वि करिस्थ' (कल्प १ २)।

पासि न [पासि] १ पापक प्रजाय पर्व पर्व का दीन (म १ छाया १) २ वज (पुसा)।

पासि वि [पासि] पास, मिष्ट, कल्प, मुक्ति 'एस पासिपराको वि करिस्थ' (कल्प १ २)।

पासि न [पासि] १ पापक प्रजाय पर्व पर्व का दीन (म १ छाया १) २ वज (पुसा)।

पासि वि [पासि] पास, मिष्ट, कल्प, मुक्ति 'एस पासिपराको वि करिस्थ' (कल्प १ २)।

पासि न [पासि] १ पापक प्रजाय पर्व पर्व का दीन (म १ छाया १) २ वज (पुसा)।

पासि वि [पासि] पास, मिष्ट, कल्प, मुक्ति 'एस पासिपराको वि करिस्थ' (कल्प १ २)।

पासि न [पासि] १ पापक प्रजाय पर्व पर्व का दीन (म १ छाया १) २ वज (पुसा)।

पासि वि [पासि] पास, मिष्ट, कल्प, मुक्ति 'एस पासिपराको वि करिस्थ' (कल्प १ २)।

पासि न [पासि] १ पापक प्रजाय पर्व पर्व का दीन (म १ छाया १) २ वज (पुसा)।

पासि वि [पासि] पास, मिष्ट, कल्प, मुक्ति 'एस पासिपराको वि करिस्थ' (कल्प १ २)।

पासि न [पासि] १ पापक प्रजाय पर्व पर्व का दीन (म १ छाया १) २ वज (पुसा)।

पासि वि [पासि] पास, मिष्ट, कल्प, मुक्ति 'एस पासिपराको वि करिस्थ' (कल्प १ २)।

पासि न [पासि] १ पापक प्रजाय पर्व पर्व का दीन (म १ छाया १) २ वज (पुसा)।

कुमा)। अमा की [वमा] पली अर्थ (कुमा)। अर वि [व] शीति-नानक (नर—विण)। अरिणी की [वरिणी] धमना महावीर की मारा का नाम निरला बेकी (कल्प)। गंय पुं [ग्रन्थ] एक प्राचीन बैन मुनि धाराय मुद्रिपत दीर शुभसिद्ध का एक सिध्द (कल्प)। आथ वि [आय] जिसको पली प्रिय हो वह (या ११८)। आमा की [आया] प्रेम-यात्र पली (या ११६)। ईसाज वि [ईशन] १ निरला वरीन प्रिय—शीतिपर हो वह (छाया १ १—पत्र १६ दीप)। २ पुं बह-विरोध (ठा २ १—पत्र ७६)। ईसला की [ईशन] मन्ना महावीर की पुत्री का नाम (धामन)। धमन वि [धर्म] १ बने की मन्नामन्ना (छाया १ २)। २ पुं की रामना के साथ बैन शीमा बेनेनामा एक पन्ना (पत्रम ८३, ३)। माउग पुं [भाउ] पति का भाई (जय १५० टी)। मासि वि [मापिम] प्रिय-वत्ता (महा २८)। 'मिउ पुं [मिउ] १ एक बैन मुनि जो बाने पीछले धर्म में पावना बानुबेह दुषा बा (पत्रम २ १७१)। 'मिउय वि [मिउक] १ प्रिय का भन—पंथीय करनेवाला। २ न एक दीप (छ १११)। 'मय वि [मयुण] नीति-प्रिय (मारा)। मय वि [मय, मयक] भारत प्रिय (माथा)।

पिअ बेको पीअ, 'पीअपीअ निपापिअ' (मय सण) मधि)।

पिअ बेको पिअ (महा ७१, १ ८)। हर न [गृह] पिता का घर, पीअ, मेहर, मय (पत्रम १७ ७)।

पिअमा बेको पिआ (या ११)।

पिअमह (धर) वि [पीअमिह] शीति जन-आनेवाला, कुत करनेवाला (मधि)।

पिअमहिय (धर) बेको पिआ (मधि)।

पिअर वि [मिअर] १ मण्ट-कर्ता हट-कर (महा ११ १४)। २ पुं एक बन्नीय राजा (जय ६७२)। ३ रामना के पुत्र बन्न का पूर्व जन्म का नाम (पत्रम १ ४ २६)।

पिअरु पुं [मिअरु] १ कृत-विरोध मिअरु, कटु हरी का पेड़ (पाप धीम सम १३२)।

२ बंश, मालांगी का पेड़ 'पिअरुको कंठ' (पाप)। ३ की एक की का नाम (विआ १ १)। 'होअ की [व्यतिअ] एक की का नाम (महा)।

पिअरय वि [मिअरय] मयुर भापी (सुर १ १३) ४ ११८ महा)।

पिअवाह वि [मिअवाहि] अर बेको (जय ११ १४ मुअ ११ १४)।

पिअय न [वि] पुअ पुअ (दि १ ४७)।

पिअय न [पान] पीला 'पुअयमिअमिअर' (धर्मि १२३) मुअ ३ १) जय १३६ टी ३ २६१) मुआ २४४, कैय २७)।

पिअया की [पुअना] रीता विरोध, जिसमें २४१ हापी २४१ रय ७२६ कोरी दीर १२११ प्यार हो वह मरकर (पत्रम २६ ३)।

पिअमा की [वि] मिअरु कुत (दि १ ४६ पाप)।

पिअमाहरी की [वि] कोकिता विकी (दि १ ११ पाप)।

पिअय पुं [मिअय] कुत-विरोध निजवधार का पेड़ (दीप)।

पिअर पुं [पिउ] १ मारा-पिता मा-बापा 'मुअकु मिअयमिअ पिअर' 'पिअराई कं-लाई' (धर्मि १२२)। २ पुं पिता का (पाप)।

पिअरय एक [मअ] मीमा पीमा। पिअरय (महा ७४)।

पिअअ (धर) बेको पिअ = प्रिय (निप)।

पिअ की [मिआ] पली, काता धार्मी (कुमा ईका २६)।

पिआमह पुं [पिआमह] १ बड़ा कपुलन (दि १ १७) पाप जय २६७ टी ४ २३१)। २ पिता का पिता बन्ना (जय)। तगम पुं [तनय] जन्मना, मार-विरोध (दि ४ ३७)। त्य न [तअ] धन-विरोध बन्ना (दि १२, ३७)।

पिआमारी की [पिआमारी] पिता की माता दादी (मुआ ७७२)।

पिआ (धर) वि [मिअर] प्यार (जय ३२ मधि)।

पिआरी (धर) की [मिअर] प्यारी प्रिया पली (निप)।

पिआअ पुं [मिआअ] कुत-विरोध पिअल बिनी की का पेड़ (कुमा पाप ६ ३ २१, पस्स १)।

पिआल पुं [मिआल] कुत विरोध बिनी बिनी का पाप (हर २ ११)।

पिआसा बेको पिआसा (या ८१४)।

पिअ बेको पीअ, 'पिअ पिअ सिट्ट' (पत्रम ११ १४)।

पिअ पुं [पिअ] १ पिता काप (जय ७२८ टी)। २ मन्ना-जन्म का धनिहायक बैन (मुअ १ १२ वि ३६१)। मेह पुं [मेअ] बन्न-विरोध जिसमें बाप का होम निमा बाप वह यज (पत्रम ११ ४२)। वग न [वन] रमण (मुआ ३३६)। हर न [गृह] पिता का घर, पीअर (पत्रम १८ ७ सुर ६ २३६)। बेको पिअ।

पिअय पुं [पिअय] बापा बाप का भाई 'मुआपो पीअमिअमिअ (१ ७४)' (विआर ४७०)।

पिअय वि [पिअय] पिता का पिअ-संजयी (धर)।

पिअ १ पुं [पिअ] १ बाप पिता (सुर १ पिअ १ १७४ धीम लय ६ १११)।

२ पुं न मां बाप माता-पिता 'प्रमया यह पिअरि मां पचाई' (धर्मि १४७ मुआ ३२६)। कनम पुं [कनम] पिअ-नर पिअ-कुल (कुमा)। कुल न [कुल] पिता का बंश (पत्र)। 'धर न [गृह] पिता का घर, पीअर (मुआ १ १)। बड़ा बड़ी की [प्यअ] पिता की बहिन कुआ कुआ कुआ (या ११ ६ २ १४२) पाप छाया १ ११) 'कोति निजमि (१ निज) सनकोर' (छाया १ ११—पत्र २११)। 'पिअ पुं [पिअ] मुअ-मोकन बाअ में प्रिया बाता पीअन (धारा २ १२)। भगिणी की [मगिनी] कुटी पिता की बहिन (सुर ३ ८२)। यज पुं [पजि] दम धरज (दि १ १३४)। बय न [यन] रमण (पत्रम १ ३, २१ पाप ६ १ १३४)। 'सिआ की [प्यअ] कुटी (ह

२. १४२ कुमा) सेनकण्ठा की [सेन
कण्ठा] राजा श्रीरिषि की एक पत्नी (पृष्ठ
२४)। तत्काल सेना 'सिन्धु' (विष्णु १
१—१४४)। हर सेना घर (गुरु १
१६, पृष्ठ)।

पिचम प्यो पिइय (रज) ।

पिठबा की [दे-पिरुण्णत्तु] कुन्ने पिठा की
बहिन (पत्नी) ।

पितृणां १ स्त्री [६] सखी वयस्या (वह १७१।
पितृणां २१) ।

पिठम्बी की [६] १ कर्मास, कपास । २ लूब
साठिका कई की घुनी (दि ६ जन) ।

पिण्ड दो पिण्ड (ई २ १५४) ।

पिंशर पुं [अपिंशर] १ 'अपि' शब्द । २
अपि शब्द की व्याख्या (हा १ — पृ
४१३) ।

पिंसा श्री [पिंसा] द्वितीया यथा (पाय) ।
पिंस्येस एव [पिंस्येस्य] सुवता । बहु
पिंस्येसमाय (एव) ।

पिंग देखी पंग = ग्रह (कुमा • ४१) ।

पिंग पुं [पिङ्ग] १ कपिल गणेश, पीत वर्णः ।
२ जि पीता पीत रंग का (पात्र) कुम्भा
वर्ण १४) । ३ पुंल्लि, कपिलस पक्षी । श्री
गा (पुत्र १ ३, ४ १२) ।

पिनाग पु [३] धर्मद वन्दन (३ ५ ४८) ।

पिङ्गलपुं [पिङ्गल] १ शीत-शीत बर्णः । २
 नि शीत-विषय दीप-वर्णवत्त्वा (कुमा ४
 ४ २ धीय) । ३ पुं यद् बिलेय (आ २
 ३) । ४ एक मय (विरि १११) । ५ चक्र-
 वर्ती का एक निजि घामुपको की पुति करी
 वाया एक निजल (आ ६, क २६१ टी) ।
 ६ इण्य उपशम-स्थेय (बुज ३) । ७
 श्रुत-सिक्त का वर्ती एक कवि (विर) । ८
 एक सैन कायक (मय) । ९ न पात्र का
 एक धन-रथ (विर) । कुमार पुं [कुमार]
 एक राजकुमार, किसी पवमान युवावर्तमान
 के सदीय बीसा भी बी (कुमा ६१) । बल
 वि [बल] १ शीतो-शीतो पाण्डिता (य
 ४ २-बल २ न) । २ पुं शमि-स्थेय
 (लज १ १ टी) ।

पिण्डमयण न [पिण्डसावन] १ पोष-विद्येय
को अतएव पोष की एक श्रमणा है। २ पुंजी
उक्त पोष में अतएव (ठा ७)।

पिंगसिद्धि वि [पिङ्गलिङ्ग] नीला-नीला किम्बा
 पुष्पा (ये ४ रङ्ग बडका पुष्पा न) ।

पिंगलिन वि [पैल्लिङ्ग] पिपल-संवादी
(पिप) ।

पिंगा पेठो पिंगा ।

पिप्रयण न [पिप्रयण] तथा-तथा का खेप
(इय)।

पिंगिष्य वि [शुद्धित] शब्द विद्या कृपा
(कृपा) ।

पिङ्गम कुञ्जी [पिङ्गिमन्] पिङ्गता पीलापम्
(पञ्च) ।

पिरीकय बि [पिरीकय] पीसा क्रिया हुआ
 'बलकय सुसिद्धिमुपेकपिरीकय ज्य' (बहुय
 ३)।

पिण्डुस पुं [पिण्डुस] पञ्च-पिण्डुस (पण्ड १
१-पण्ड ५)।

विष्णु पुंलिंग [३] पञ्च कटोर, पञ्च कटोर
(३५५५)।

सिद्ध } केवो पिच्छ (माया मय सुषा
 पिच्छ } १४१) ।

पिछो लो [पिच्छो] साधु का एक उपकरण
 नाथि सेह निशा पिछो (पिछो) (विचार
 १९)।

पिबोली की [३] कुह के पल्ल से बसाया
 गया दुल-बन बाघ-विहोव (दि ३ ४४)।

पिङ्ग सङ्ग [पिङ्ग] पीनगा कर्द का पुनरा ।
 यह पिङ्गव (पिङ्ग २.७४ घोल ४६५) ।

विशेष न [विशेष] शीतल (विशेष १ २)
२७ ११)।

पिङ्गल पुं [पिङ्गल] १ पीठ-रथ कहलें रथ-
पीठ मिथिल रूप । २ बि रथ-पीठ कहलें-
काला (पङ्कजः कुण्ड १ ७) ।

पिंजर बक [पिंजरब] एक-मिथिल पीठ-
वर्त-मुक्त करता। बक पिंजरयंत (पञ्च
१३, १)।

पिङ्गारण न [पिङ्गारण] रत्न-निधिव शीत-
वर्णवासा करणा (कल)।

पिञ्जरिम् पि [पिञ्जरि] पिञ्जर कर्णवाता
 पिञ्ज इषा (हम्पीर १९ बम्ब कुवा
 ५२४)।

पिंसरुद्ध पु [दे] पलि-मिरोव माफ्फड पली
निचके वो मुँह होते हैं (दे ५ २) ।

पिञ्जिब वि [पिञ्जिब] पीमा इय (वि ७
१४) ।

पिञ्जिष्य वि [ह] विपुल (वि १ ४२) ।

पिंड धन [पिण्डध] १ एकवित्त करण,
संस्तुत करण । २ धन एकवित्त होय,
मित्रता । पिण्ड, पिण्डय (अनः पिंड ११) ।
धनः पिण्डिकण्य (कुमा) ।

पिंड पु [पिण्ड] १ कठिन द्रव्यों का संश्लेष (पिण्डमा २)। २ सुबुद्ध, संश्लष्ट (योग ४ क) विसे २ ०)। ३ पुण्ड्र वरीष्ण की बड़ी हुई मोल बस्तु, बर्तुलाभर पदार्थ (पुण्ड्र २, ३)। ४ भिक्षा में मिश्रता व्यापार, पिंडा (ज्वा ठा क)। ५ वेद का एक पैर। ६ वेद, लीला।

[illegible]

Figure 1

पिहू एक [पिहूय] पीछा ठाकन करना ।
 पिहू, पिहूइ (भाषा निक या १७१ सिंदि ११२) । बड़ पिहूव (सिं) ।
 पिहू न [बि] पैट, वरर (पंजा १ १६; बर्मी १११; इरान २१३; कब २११; गुप्ता १६१) ।
 पिहू न [पिहू] ठाकन भाषा (गुप्ता २ २ १२) । पिह ११० पण्ड १ १; मोन १६१) का १ १) ।
 पिहू न [पीडन] पीडा क्लेश (गुप्ता २ २ १२) ।
 पिहूया की [पिहूना] ठाकन (मोन ११७) ।
 पिहूकमया की [पिहूना] ठाकन करना (भा १ १—पंजा १ २) ।
 पिहूय नि [पिहूय] पीडा हुया ठाकित (गुप्ता २ १२) ।
 पिहू न [पिह] क्यहुक यादि ना माया कर्त्त (शामा १ १) १ १ १ १ ७७ ना १) ।
 पिहू न [पूड] पीठ शरीर के पीछे का हिस्सा (मीरा ल) ।
 मो य [तस्] पीछे से, छुट भाग से (पंजा सिं १ १ मीर) । करेडा न [करण्डक] छुट-पंजा पीठ की बड़ी हड्डी (तंजु ११) । बर नि [बर] छुट-पंजा क्युवासी (गुप्ता) । बेको पिहू ।
 पिहू नि [पुड] १ गुप्ता हुया । २ न. लपरी (पं ११७) ।
 पिहू नि [पुड] १ गुप्ता हुया । २ न. प्ररत-क्या-बेसि किलोय छु बनेवे पिहू (पा १४१) ।
 पिहूव न [बि पूडाण्ड] छुट पीठ (बि १ ४६) ।
 पिहूलडय की [बि] पक-गुप्ता, बहुर मरिच (बि १ २) ।
 पिहूलडरिया की [बि] बरिच, काक (पाय) ।
 पिहूय नि [प्रडय] डुके योग्य, गिरक-परीडी नि कपो नि पिहू (पिहू भा) (पंजा) ।
 पिहूकय पुन [पिहूकय] पैरर यादि कक-डय (पंजा ७ ७१४) ।
 पिहू की [पूड] पीठ शरीर के पीछे का भाग (बि १ १२१; शामा १ १) पंजा

गुप्ता पड) । ग नि [ग] पीछे बकनेवाला (पा १२) । बम्या की [बम्या] बम्या कमी के पल की एक तरफ (कय) । मंस न [मंस] परोख में घम के शेष का कीर्तन 'पिटुमंस न बाइया' (बम न ४७) । संसिय नि [मांसिक] परोख में शेष बोलनेवाला पीछे झिन्ना करनेवाला (मम १७) । माइया की [मावक] एक क्युलर-यादिनी की 'बेनिया पिटुमाइया' (कय २) । बेको पिहू न छुट ।
 पिहू की [पिहू] घाटा की बड़ी हुई मरिच (बि २) ।
 पिहू पुं [पिह] १ बंश-पन यादि का बका हुमा पाक-निरोध । २ कक्या बरीकता 'पा ठाक ठैर मरिया दे दे दे बाल मड सिंदि पडियो' (गुप्ता १७१) ।
 पिहग बेको पिहब = पिटक (मोन क्वा-गुप्ता १६) ।
 पिहबज्या की [बि] कमी (बि १ ४६) ।
 पिहब न [पिटक] १ बंशम पाक-निरोध 'भोयमंसि (१ सि) बय करेडि' (शामा १ १—पंजा ८१) । २ शेष पंजा शेष की का छुड (गुप्ता १६) ।
 पिहब नि [बि] यादिन (पड) ।
 पिहब एक [अर्थ] पैरा करना, कर्जान करना । पिहब (बड) ।
 पिहबजा की [पिटिक] १ बंश-पन यादिन-निरोध (बि ४ ७ १, १) । २ छोटी मंहुया पेटी शिपरी (क १८७ १६७ दो) ।
 पिहू एक [पीडय] पीडा । पिहू (पाया (सि २७१) ।
 पिहू एक [अर्थ] पीने विरग । पिहू (पड) ।
 पिहूइय नि [बि] प्रयण (बड) ।
 पिहू य [पुडक] पकन गुप्ता (पड) ।
 पिहूर पुन [पिहूर] १ प्रयण-निरोध ल्वाकी (पाय भाषा गुप्ता) । २ बुर-निरोध । ३ घुलान मोबा । ४ मन्वाक-बय बरनिच (बि १ २ १) ।
 पिहूय एक [पि + माड, पिमि + पा] १ बकना । २ पडिना । ३ पडिना । ४

बांनना । पिहूइ, पिहूइर (सि ११६) ।
 पिहूइय, पिहूइयस (बमि १८२, पंजा) ।
 पिहूइ नि [पिनइ] १ बहूना हुया (पाय मीरा पा १२८) । २ बड बरिच (पंजा) । ३ बहूना हुया 'नियकडोपि पिहूइ लक सिरे रज्जुबिचको' (गुप्ता १२१) ।
 पिहूइयि (शरी) नि [पिहूयापि] बहूना हुया (पाट—शुजु १८) ।
 पिहूइ पुं [पिनाकिर] महादेव सिं (कय बड) ।
 पिहूइ की [बि] भाजा घारेड (बि १ ४८) ।
 पिहूग पुन [पिनाक] १ सिं-बगुन । २ महादेव का क्वाक (बर्मी ११) ।
 पिहूगि बेको पिहूइ (बर्मी ११) ।
 पिहूग बेको पिहूग (पंजा) ।
 पिहूय पुं [बि] बमालार (बि १ ४६) ।
 पिहूइ नि [पिहूय विनिहू] बेको पिहूइ = पिहूइ (पण्ड २ ४—पंजा ११) ।
 बम्य मीर) ।
 पिहूया एक [पिनि + पा] बेको पिहूइ = पि + पा । बिहू-पिहूयस (मीरा सि १७८) ।
 पिहूया बेको पिहूया (पंजा) ।
 पिहूया की [बि पिहूय] कक-कय-निरोध ब्यामक, बम्य-गुप्ता (कय १) ।
 पिहू की [बि] कामा इर की (बि १, ४१) ।
 पिहू पुन [पिह] शरीर-निरोध बम्य-निरोध, सिंय बड (पाय बड) ।
 आर पुं [आर] विर से होया क्वाक (शामा १ १) ।
 मुक्का की [मुक्का] विर की बकता से होनेवाली बेकोपी (पमि) ।
 पिहूय न [पिहूय] बम्य-निरोध, पीकन (गुप्ता १४४) ।
 पिहूइ पुं [पिहूय] पाया, पिहू या पिहूय । बरि (कय कय १७१, सिंदि २६१ बर्मी १२७) । ४ ४६५, गुप्ता ११४) ।
 पिहूय नि [पैरिच] सिंय कड, सिंय संबली (तंजु १६ शामा १ १) मीर) ।
 पिहू य [पुडक] प्रयण गुप्ता (बि १ १) गुप्ता) ।
 पिहूय बेको पिहूय (पाट—बिह १ १) ।
 पिहूय पुं [पिहूय] बेको पिहूय यादि पिहूय । पुं [पिहूय] बेको पिहूय यादि पिहूय । का कय पिहूय बेको पिहूय

भाय बन्धना है वह (सूय २ १ २१ २ १
११; २ १ २८)।

पिपीक्षि पुं [पिपीक्ष] बीट-विरोध
बीट्टा (कल)।

पिपीक्षिः श्री [पिपीक्षि] बीट्टी
पिपीक्षिः श्री बीट्टी (पयह १ १ बी ११;
छाया १ ११)।

पिप्यह सः [ह] बड़बड़ाना को मन में ध्ये
हो बहना। पिप्यह (ह १ १ १ १)।

पिप्यहा श्री [ह] अणु-विपीक्षिका (ह १
५८)।

पिप्यह्रि वि [ह] १ को बड़बड़ाना हो। २
न बड़बड़ाना निर्यह उल्लास बड़बड़ (ह
१ १)।

पिप्यय पुं [ह] १ मयह (ह १ ७८)। २
निराह धुल (पाथ)। १ वि. उल्लस (ह १
७८)।

पिप्यय पुं [ह] १ हूँ। २ बुध (ह १
७८)।

पिप्यरी श्री [पिप्यरी] पीपर का पाथ
(पाथ १)।

पिप्यल पुं [पिप्यल] १ पीपर हूय
परम्य (अ १ ११ १) पाथ हि १)।
२ पुप्य पुप्य (पिपा १ १—पय ११
७५ ११८)।

पिप्ययः वि [पिप्ययः] पीपर के पाथ का
बना हुआ (पाथा २ २ १ १४)।

पिप्यसि श्री [पिप्यसि, सी] दोपकि-
पिप्यसिः विरोध पीपर 'पाथिनिनिगु'।
मण्येका धारम हो' (पथा २, १ पाथ
१०)।

पिप्यह्रि श्री [पिप्यह्रि] पीपर (वह)।

पिप्यिया श्री [ह] बीट का येन (होति)।

पिप्ये श्री विप्य = पा। पिप्यो (वि ५८ १)।
सह विप्यो (पाथा)।

पिप्य न [ह] नन कासी (ह १, ५१)।

पिप्य पुं [पिप्य] मेन सीति मनुज (पाथ
गुर २ १७२ १८)।

पिप्याय पुं [पिप्याय] १ बड़-विरोध निरली
का है। २ न बड़-विरोध निरली विप्यी
(ह २, २ १४)।

पिपास (धन) श्री [पिपासा] व्यास (धन)।

पिपिबी श्री [ह] लुपिका भिप्या (ह १
५७)।

परिपिरिया श्री परिपिरिया (पाथ)।

पिरिबी श्री [पिरिबी] १ कुप्य-विरोध
नलसि-विरोध (पय १)। २ बाय-विरोध
(पाथ)।

पिप्ये श्री पीप्य। कर्म निनिमह (पाथ)।

पिप्यन्तु पुं [प्यन्तु] १ बड़-विरोध
पिप्यन्तु पिप्यन्तु पाथ का पड़ (धन
१२२ ७५ ११ ७५)। २ एक वल
का पीपर हुआ 'पिप्यन्तु पिप्यन्तु' (निपु
१)।

पिप्य न [ह] निप्यन्तु देन बिप्यी बल्य
(ह १ ५८)।

पिप्ये श्री पीप्या (वि २२१)।

पिप्याय न [पिप्याय] कोड़ा कुप्यी (सूय १
१ ५ १)।

पिप्यन्तु देन पिप्यन्तु (निपार १५८)।

पिप्यि श्री [प्योहा] बड़-विरोध विप्यी
विप्यी (सु १८)।

पिप्यन्तु न [ह] पुप्य सीट (वह)।

पिप्यन्तु श्री [प्योहा] पुप्यी (वि ७५ पय
पिप्यन्तु)। १—पय ११)।

पिप्यन्तु देन पिप्यन्तु (पाथा २ १ ८ १)।

पिप्यन्तु वि [प्योहा] बड़ (ह २ १ १)।

पिप्यन्तु पुं [प्योहा] बड़ बड़ (ह २ १ १)।

पिप्ये श्री पय = विप्य। पिप्य (धन)।

पिप्य सः [म + दय] १ प्रेरणा करना।
२ प्रवृत्त करना। पिप्ये (वय १)।

पिप्य न [ह] प्यी का बन्ना।

पिप्य न [मिप्य] प्रेरणा (ह १)।

पिप्या श्री [मिप्य] प्रेरणा (ह १)।

पिप्यि श्री [ह] मान-विरोध (वय १)।

पिप्यि वि [मिप्य] बीट्टा हुआ (पाथ मय
मुमा)।

पिप्यि वि [मिप्य] निप्यी प्रेरणा की न
हो वह (मुमा ११ १)।

पिप्यि श्री [ह] १ लुप-विरोध लुप्य लुप्य।
२ बीट्टी, बीट्टी विरोध। ३ बम पय्या (ह
१ ७८)।

पिप्य (ह) देनो पिप्य (वय २)।

पिप्य न [ह] को पय्यी के लुप्य (ह १
५१)।

पिप्य देनो हूय (ह २ १८२) मुमा मय्य)।

पिप्य सः [पा] पीप्य। पिप्य (विप्य)। मुमा
मय्यिप्या (पाथा)। कर्म निप्यीमि (वि
११८)। सह विप्यि, पिप्यिप्या,
पिप्यि (पाथा १ १ २ मय्य)। हे-
पिप्यि, पिप्यिप्य (पाथा ५२ ५५)।

पिप्य देनो पिप्य = (ह) (मय्य)।

पिप्याय वि [पिप्याय] पीप्य श्री हूय
बन्ना (मय—मय्य)।

पिप्या श्री [पिप्या] व्यास पीप्य श्री
हूय (मय पाथ)।

पिप्याय वि [पिप्याय] लुपि (ह ५५
ह)।

पिप्याय देनो पिप्याय (अ ५ ५२
मय ५८)।

पिप्य देनो पिप्य (वह)।

पिप्य सः [पिप्य] पीप्या। पिप्य (वह)।

पिप्य पुं [पिप्या] १ निप्य बण मय्यिप्य
ह १ २ वि विप्य बण्यता (पाथ मुम
१ २ १ १)।

पिप्यि [ह] देनो पय्यि (मुमा १ ७) मुम
ह २ १५२)।

पिप्य पुं [पिप्याय] निप्य बन्ना-पाथि
देनो श्री हूय बण्यि (ह १ १८१) मुमा
पाथ अ २१४ ५७ ७८)।

पिप्याय वि [पिप्याय] मुप्यि (ह १
७७) मुमा पय बण्य)।

पिप्याय देनो पिप्याय (ह १ १८१) पयह १
५ मय्य हण्य)।

पिप्याय न [पिप्याय] मय्य (पाथ मय्य)।

पिप्याय पुं [पिप्याय] लुप्य बीट्टी-विरोध।
श्री मय्य (पाथ)।

पिप्याय सः [कय्य] करना। निप्यन्तु,
निप्यन्तु, निप्यन्तु, निप्यन्तु, निप्यन्तु (ह
५ २; ५ ८८; मुम ८, १८१; मय १८२,
मुमा)।

पिप्याय पुं [पिप्याय] लुप्य लुप्य बड़-विरोध
लुप्यन्तु (गुर १ ११ मय्य १८५ का
१७७ पाथ)।

पाड न [वि] १ ईन पले का फन (रे १ २१) । २ छुह, हुन 'उद्वि' बलप'दीन' पण्डा बिरो जिरो (वि) कन्या' (घ २११) । ३ पीड, छीर के पीछे का मान 'इतिपीडसमाधी' (वि २२) ।

पीडग न [पीडक] देखो पीड = पीड नियः (क) पण्ड १ १ बघ ७ २८) । पीडरत्नड न [पीडरत्नड] नरंघ-सीर पर स्थित एक प्राचीन बैन सीर (पत्र ७ १४) ।

पीडाणिय न [पडाणीक] धरु-नेना (छ २, १—पत्र ३ २) ।

पीडिमा की [पीडिका] वासुन-विरोप मडन 'मासीपी पीडिमा' (वाप) । देखो पेडिया ।

पीडी की [दे पीडिक] कल-विरोप पर ना एक साधार-काठ पुनरली में 'पीडि' । 'उत्तो नियतिऊ' मरुट पवार' जान पड़ेह । छ 'उत्तोनीकिमलो छामेण' 'उत्तोनीय' छ' (बर्गि २१) ।

पीग सक [पीनय] पुन करना । पीछि (घ १ १) ।

पीग सक [प्रापय] पुन करना । छ 'देको पीगपिज' ।

पीग वि [वि] बजुर बजुलो (रे १, २१) ।

पीग वि [प्राप] पुन जासन कापिठ (रे २ १२४ वाप कुमा) ।

पायग न [प्रापन] पुन करना (बर्गि २४५) ।

पीगपिज वि [प्रापनीय] श्रित-पत्र (दीन क' पण्ड १०) ।

पीगपिज वि [दे पीनपिज] बर्ग के निर्गत बर्ग से बिना हुमा 'पीगपिजिउनीपिमा' को बरदेह ब 'बरस' (प्राप १ १—बर्ग ११) ।

पागाना की [दे पीनपा] न' महरार (प्राप १ १) ।

पीगिअ वि [प्रापिज] १ छीरि (छ १) । २ कापिठ परिउठ (छ ७ २१) । ३ पु 'उत्तोनी-ब्रह्म' सोम-विरोप, की रहने मुन' या कण का बिरो पर या मण्ड के बाप इतर का' में हुमे मुन' कापिठ के बाप उपचय को इतर हुमा हो बर सोम (पुन १२) ।

पीगिम पुंकी [पीनता] पुनता मांसतडा (रे २ १२४) ।

पीयमाण देखो पा = पा ।

पीयमाण देखो पी = पी ।

पीरिपीरिया की [वि] बाप-विरोप (घ ४२) ।

पीस सक [पीडय] १ पीसना, वेरना, बबाना । २ पीडा करना हैपन करना । पीसह, पीसेह (बाप १४२, वि २४) । कण्ड पीडिअत (बा १) ।

पीसग न [पीडन] बबान पीसन वेरना 'भा'रिपीए माछी पीसगमीय व' दिधमाहि' (का १६१) 'वैतनीएकमे' (पत्रा) ।

पीसा देखो पीडा (ज ४११; पुपा १२५) ।

पीसपय वि [पीडक] १ वेरनेवाला । २ पु तेसी बंन से तेम निकालनेवाला (बग ११) ।

पीसिम वि [पीडित] पीसा या वेर हुमा (बीग छ २ १; छ) ।

पीसिम वि [पीगप] बबाना बाबने से बना हुमा (बस माहि की पाइठि) (छवि २ १०) ।

पीलु पुं [पीलु] १ बुन-विरोप पीलु का वेड (बण्ड १ करना ४१) । २ हापी (वाप छ ७१२) । ३ न हुमा 'पद' बहुमं हुड बनी पीलु कीर न' (वि २११) ।

पीलुज पुं [दे पीलुक] हापक, बबा 'उत्तोनी-ब्रह्म' वीरुमारकलोसविणक-रा' (वा १ २) ।

पीलुहु वि [दे पुलु] देखी पीलुहु (रे २ ११) ।

पीबर वि [पीबर] कापिठ पुन (प्राप १ १; पाप पुग १११) । गम्मा की 'गर्भा' को निकट अर्थ में ही मजब करनेवाणी हो बर की (धोपा ५१) ।

पीस देखो पीम = पीड (रे १ २१, २, १ ३ पुमा) ।

पीस सक [वि] पीडना । पीर (वि ७१) । बर पीसन (वि २७५ प्राप १ ७) । छ पीसिअन (पुन ४२) ।

पीसन न [पिपण] १ पीसना बबाना (कण्ड १ १ ज २ १४० एण्ड १८) । २ वि पीसनेवाला (पुम १ २ १ १२) ।

पीसन वि [पिपक] पीसनेवाला (पुम २१) ।

पीह सक [सुह, प्र + इह] मसिवावा करना, माहना । पीहि पीहिना (पीन' छ १ १—पत्र १४४) ।

पीहग पुं [पीडक] नबनाव छिग को पीसाव वाली एक बलु (ज १११) ।

पु की [पु] छीर (बिसे २ २४) ।

पुअ न [पुलु] १ तिदय गति । २ मयप, मयप-गति 'पुअमा पु (१ पु) मयप' (बिसे १४१ छी) । जुड न [पुड] मयप पुड ना एक प्रकार (बिसे १४००) ।

पुअह पुं [वि] वल्ल पुमा (रे १, २१ वाप) ।

पुमाह वि [वि] १ वल्ल पुमा (रे १ न) । २ ऊनत (रे १, ५; पड) । ३ पु विपण (रे १ = वाप पड) ।

पुमाहपी की [वि] १ विपण-गृहीत की मुवगित महिता । २ ऊनत की । ३ हुमटा मसिवावा (रे १ २४) ।

पुमाह सक [पुअव] से बला । छ पुमावइसा (छ १ २) ।

पुं पुं [पुं] पुन मर (वि ४१२ का १२ छी) । देखी पुग, पुनाग, पुबक माहि ।

पुंग पुं [पुंग] १ बाप का बाब मय 'तल व तल्ल पुं वि बर मयण' डिपमाले' (बर्गि २०; ज २ १२२) । २ न देर निमान-विरोप (ज २२) ।

पुंगमा न [दे प्रांगम] हुमता निम की एक छिग पुनरली में 'पोलु' (पुग १२) ।

पुंगिअ वि [पुंगि] पुं-पुं विप ह्य 'पुंगिअ डिपको वरो पुंगियो' (बण्ड) ।

पुंगड पुं [वि] थेट उतन (अं) ।

पुंगवि [पुंग] थेट उतन (पुग ११८; पु ४१; बग) ।

पुं सक [प्र + पण्ड] बौद्ध का करना । पुंन (ज १७ रे ४ १ २) । ३ पुंसीम (वि १२२) ।

पिमुनिम नि [कथित] १ कहा हुआ । २
सूचित (गुप्त २१; पाप कुत्र २७५) ।
पिमुनय (पे) पुं [किरमय] भावर्त (प्राक्
१२४) ।

पिह एक [एह] इच्छा करना वाहना ।
पिहाइ (अप ३ २—पत्र १७३) । छंड
पिहाइचा (अप ३ २) ।

पिह नि [पुनक] क्लिप्त कुहा 'पिहपिह' (विदे ५४) ।

पिहं य [पुनक] मनप (हे १ १३७—५६) ।

पिहं दु [हे] १ भाव-विरोध । २ नि विमर्श
(हे १ ७२) ।

पिहं रेकोमिह (हे १ २ १) कुमा (अप) ।

पिहय न [पिधान] १ इच्छा, विहाय (गुर
१९ १२४) । २ इच्छा प्राप्ति (अप ३ ३२; अथर्व ४९ गुप्त १२१) ।

पिहयया की [पिधान] प्राप्ति (अप ३ ३२) ।

पिहय रेको पिह = पुनक (कुमा) ।

पिहा एक [पि + धा] १ इच्छा । २ बंध
करना । पिहाइ (अप ३ २) । छंड पिहाइचा
पिहिऊन (अप ३ २ कहा) ।

पिधान रेको पिहय (अप ४ ७७ पत्र १२,
कप) ।

पिधानिया की [पिधानिया] इच्छा (पाप) ।

पिधानी की [पिधानी] अर रेको (पे) ।

पिहिय नि [पिहित] १ इच्छा हुआ । २ बंध
करा हुआ (पाप कप ३ ४—अप
२९) गुप्त ९१) । [अप नि [पिहय] १

विहने प्राप्ति को रीति हो (अप ४) । २
पुं एक कैल गुप्त का नाम (पत्र २ १) ।

पिहिय रेको पिहय 'पापपछे केवरो
पिहरो नपय मप्यो के' (अप ३ पत्र) ।

पिहिय (पाप) की [पिहिय] पुनि कपटी ।
पाह पुं [पाह] राजा (अप) ।

पिहिय नि [पुनक] मनप किया हुआ
(विदे १२२) ।

पिह नि [पुह] १ विहरी (कुमा) । २

पुं एक राजा का नाम (पत्र २ ५४) ।

पम पुं [पम] नील कप (हे १,
२ १) ।

पिह रेको पिह = पुनक (गुर ११ १२;
अप) ।

पिह रेको पिहय, पिहय नि को कप
(अप ३ ४४) ।

पिहं न [पिहण] १ नप-विरोध (अप
१२ २) ।

पिहय [हे] रेको पेहय (पाप २ १ ७

१) । अह पुं [अह] मय-विरोध का

किता हुआ रीति (पाप २ १ ७ १) ।

पिहय रेको पुहय (अप ४) ।

पिहय पुन [पुहय] भाव-विरोध निहका

(पाप २ १ १ ४ ४) ।

पिहय नि [पुहय] विहरी (पत्र १ ४

४७) । २ १४१ कुमा) ।

पिहय न [हे] पुह के मय से बहना वाता
पुन-पाप (हे १ ४७) ।

पिह रेको पिहा । पिह, पिह (अप २२
११ गुप्त १ २, २ ११) । छंड पिहय
(विदे ५४) ।

पिहो य [पुनक] मनप क्लि (विदे १) ।

पिहोम नि [हे] अह, अह, पुन (हे
१ २) ।

पी एक [पी] पाप करना । अह 'अमुह-
अमिह' विहय पुन पीयमापी (अप २१) ।

पीम पुं [पीत] १ पीत बर्ण पीता रीप ।

२ नि पीत बर्णवाला पीता (हे १ १७३

कुमा प्राप) । ३ निहका पल किया गया

ही बह (हे १ ४ १ १६ १४४) । ४

निहने पाप किया हो बह (अप) ।

पीम नि [पीत] शीति-मुल, अहय (पीत) ।

पीमर (अप) नीले रेको (विदे) ।

पीमर रेको पीम = पीत (हे १ १७३

अप) ।

पीमरी की [पेयसी] पेय-पाप की (कुमा) ।

पीह पुं [हे] अह बोका (हे १ ५१) ।

पीह की [पेयसी] १ पेय करनेवाला (कप)

पीह २) । २ अह की एक कली का

नाम (पत्र ७४ ११) । अह पुन [अह]

एक विहायमान अहय विहय-विहाय

(हे १ १७३; अप १२४) । गम न [गम]

महापुत्र रेको का एक पाप-विहाय (अप

अप) । वाप न [वाप] हर्त होने के

कारण बिना वाप वाप पालीक

गुर ४ ११) । अमिय न [अमि]

अमि का एक गुण (कप) । ३

[अमि] १ अमि-मुल विहाय

२ पुं महापुत्र रेको का एक गुण

(अप ४—अप ४३७) । अहय पुं [

अमि] भाव का बोकोर नाम (गुर

१२१ कप) ।

पीहय पुं [हे] अह-विरोध, पुन

अह 'पीहय' अहय अहय अहय अहय

अह (अप १) ।

पीहय न [पीहय] अहय गुहा (पाप

पीह एक [पीहय] १ अहय कर

करना । पीह, पीह (विदे ४) ।

कई पीहय (विदे) । अहय पी

पीहय (विदे ११ १ २, अ

अप) ।

पीह रेको पीह । अह नि [अह]

अह (अप १ १ १४३) ।

पीहय की [हे] अह की की (हे १

पीह की [पीह] पीह अहय

(पाप) । अह नि [अह] पीहय

'अमि' अमि अमि अमि अमि अमि

अमि अमि अमि अमि अमि अमि

अमि अमि अमि अमि अमि अमि

अमि अमि अमि अमि अमि अमि

अमि अमि अमि अमि अमि अमि

अमि अमि अमि अमि अमि अमि

अमि अमि अमि अमि अमि अमि

अमि अमि अमि अमि अमि अमि

अमि अमि अमि अमि अमि अमि

अमि अमि अमि अमि अमि अमि

अमि अमि अमि अमि अमि अमि

अमि अमि अमि अमि अमि अमि

अमि अमि अमि अमि अमि अमि

अमि अमि अमि अमि अमि अमि

अमि अमि अमि अमि अमि अमि

अमि अमि अमि अमि अमि अमि

अमि अमि अमि अमि अमि अमि

अमि अमि अमि अमि अमि अमि

पाठ न [पे] १ ईल परते का पठ (हे १, २१) । २ छद्म, रूप 'उद्धि' कणपरस्त्रीय पण्डा विद्यो विद्यो (वि) कणविद्या (स २११) । ३ पीठ, छपीर क पीठे का मान 'हृत्विषोक्तसमाधौ' (वि ६६) ।

पीठग न [पीठक] रेयो पीठ = पीठ पीठय (क) मण्ड १ १० इत ७ २०) । पीठरस्यं न [पीठरस्य] कर्म-छीर पर स्थित एक प्राचीन कैवर्त (पदम ७७ १४) ।

पीठागि न [पाठानीक] प्रव-नेना (ठा ३, १—पत्र १२) ।

पीठिका छी [पीठिका] धम्म-विशेष मन्त्र 'आमं पीठिका' (पाम) । रेयो पीठिका ।

पीठी छी [पे पीठिका] कण-विशेष पर का एक आधार-कण्डा पुनरायी में 'पीठिका' 'तली नियमितम्' मण्ड पवार का पठेद । सा धर्मोपनिषत्ते धर्मेषु धर्मिकम्' (धर्म ११) ।

पीग छ [पीनय] पुन करना । पीण्डि (राय १ १) ।

पीग छ [पीगय] पुन करना । छ रेयो पीग यज ।

पीग नि [पे] कण्ड कण्डोण (हे १, २१) ।

पीग नि [पीन] पुन, मान काचित (हे २ १२४ पाम, पुना) ।

पीगय न [पीगय] पुन करना (पमि १४०) ।

पीगयिज नि [पीगनीय] पीठि-जक (छीर मण्ड पण्ड १७) ।

पीगायय नि [पे] पेनायिक बर से निवृत्त बर से निवा ह्या 'पीगाययिज्यायिज्यायै कोरयते व धर्मज' (पामा १ १—पत्र ११) ।

पीगाया छी [पे पीगाया] पर धर्मार (पामा १ १) ।

पीगिज नि [पीगिज] १ छेपित (पण्ड) । २ काचित कण्ड (पत्र ७ २१) । ३ पुं कण्डोण-कण्ड कोन-विशेष, जो पठे मुद का पठ का विषे ७७ वा मण्ड के बाध होकर बाध से मुदो मुदो का के बाध परब को बाध ह्या हो बह दोम (पुन ११) ।

पीगिम पुंछी [पीनता] पुना बाधता (हे २ १२४) ।

पीगमाग रेयो पा = वा ।

पीगमाय रेयो पी = पी ।

पीरिपीरिया छी [पे] बाध-विशेष (पम ४२) ।

पीछ छ [पीछय] १ पीनता देना बाना ।

२ पीडा करना हैउन करना । पीछ, पीछे (पामा १२४, नि २४) । कबह पीछिज (पा १) ।

पीछग न [पीछन] बान पीन देना 'आरुणिलो' माणी पीनलमिष म दिमपमि' (पाम ११६) 'अंतीमणम' (पाम) ।

पीछा रेयो पीछा (पत्र ४११; पुना १२०) ।

पीछाय नि [पीछक] १ परेनेना । २ पुं छेनी बंध से देन निछावेना (बग्या ११) ।

पीछिम नि [पीछित] पीछा वा वेप ह्या (छीर ठा १ १४) ।

पीछिम नि [पीछाचम] बानासा बावे से ब्या ह्या (बध धर्मि नी माडि) (बध २ १७) ।

पल्लु पुं [पील] १ पुन-विशेष पील का वेद (पण्ड १; बग्या ४१) । २ हाथी (पाम ७ ७१२) । ३ न पुन 'एल्लु बहुमाने पुन पयो पीलु छीर' (पि १११) ।

पीलुम पुं [पे पीलु] शाक, ब्या 'छरुंठिमली' लंठोपीमाकण्डोण-विमण्ड-रा' (पा १ २) ।

पल्लु नि [पे पल्लु] रेयो पिलुड (हे १ २१) ।

पीपर नि [पीपर] पचय पुन (पामा १ १; पाम पुना १११) । गम्या छी 'गमि' को विजय धर्मि में ही प्रव करनेवाणी हो बह छी (छेपका ४१) ।

पीपड रेयो पीप = पीठ (हे १ २१) । २, १ १ पुना) ।

पीप छ [पिप] पीपना । पीप (पि ७१) । बह पीप (पि ३७४ पामा १ ७) । बह पीमिज (पुन ४२) ।

पीसग न [पिपण] १ पीसना, बाना (पण्ड १ १ पत्र १४० पण्ड १७) । २ नि पीसनेना (पुम १ २ १ १२) ।

पीसय नि [पिपण] पीसनेना (पुना ६१) ।

पीह छ [पुह, म + ह] धम्मिना बना बाना । पीहं, पीहं (छीर ठा १ १—पत्र १२४) ।

पीहग पुं [पीठ] बाना विपु को पीहा बायी एक बलु (पत्र १११) ।

पु छी [पु] छपीर (वि २ १२) ।

पुम न [पुल] १ विपु छी । २ मण्ड धम्म-गति 'बुद्धो पुं (१ पु) मण्ड' (वि १२१६ छी) । जुद न [पुद] धम्म पुन का एक प्रकार (वि १२०७) ।

पुमं पुं [पे] वल्ल पुना (हे १ २१ पाम) ।

पुमा नि [पे] १ वल्ल पुना (हे १ ७) । २ वल्ल (हे १ ७ पत्र) । ३ पुं विपण (हे १ ७ पामा पत्र) ।

पुमायणी छी [पे] १ विपण-गुह्यी छी धुवर्मि मरिता । २ वल्ल छी । ३ पुना धर्मि-विपण (हे १ २४) ।

पुमान म [पुमय] से बाना । बह पुमय-विपण (ठा १ २) ।

पुं पुं [पुं] पुन मरि (पि ४१२ बग्या १२ छी) । रेयो पुग, पुनाग, पुनच धर्मि ।

पुं पुं [पुं] १ बाध का धर्म मान 'तम व मण्ड पुं विपण धर्मि विपण-गुह्यी' (पमि १७, पत्र १२२) । २ न देव विपण-विपण (मण्ड २२) ।

पुं गम न [पे] मण्ड पुना विपण की एक छी विपण में 'पुं गम' (पुना ६२) ।

पुं गम नि [पुं गम] पुं-पुन विपण ह्या 'आरुं विपण मण्ड पुं गम' (पत्र १२) ।

पुं गम पुं [पे] वेद, वल्ल (मण्ड) ।

पुं गम नि [पुं गम] वेद वल्ल (पुना ३१२; पु ४१; पाम) ।

पुं गम छ [म + वल्ल] वेदना बना करना । पुं गम (पत्र १७५ ४ १ १२) ।

पुं गम नि [पुं गम] १ पुं-पुन विपण ह्या 'आरुं विपण मण्ड पुं गम' (पत्र १२) ।

पुं गम पुं [पे] वेद, वल्ल (मण्ड) ।

पुं गम नि [पुं गम] वेद वल्ल (पुना ३१२; पु ४१; पाम) ।

पुं गम छ [म + वल्ल] वेदना बना करना । पुं गम (पत्र १७५ ४ १ १२) ।

पुङ्गि वि [पुङ्ग] उपविष्ट (छाया १ १ व ४११)।

पुङ्गु केवो पिङ्गु = पुङ्ग (प्रायः संक्षिप्त ११)।

पुङ्गु वि [स्फुटयन्] विद्यते स्वर्तं क्रिया हो वह (प्रायः १ ७ व ८)।

पुङ्गुर्द ईको पोटुर्दई (पुङ्ग १ १)।

पुङ्गुवया की [मोक्षपरा] कवच-विरोध (पुङ्ग १ २)।

पुङ्गि की [पुङ्ग] पीयूष उपवच (विष्ट २२१ केम ५)। २ अष्टिदा बवा (परा १ १—पत्र ११)। म वि [मन्] १ पुष्टिबला। २ पुं भस्मपुं मन्त्रादीनां का एक शिष्य (भगु)।

पुङ्गि ईको विष्टि = पुङ्ग 'वाक्पटुस्मिन् पश्यतो पुङ्गि पुष्टे समाम्बुधौ' (य ११: ११ ८७)। प्रायः संक्षिप्त ११)।

पुङ्गि की [पुष्टि] पुष्कल प्रल। य वि [ज] प्रल-कथित (य २ १—पत्र ४)।

पुङ्गि की [पुष्टि] स्वर्तं। य वि [ज] स्वर्त-कथित (य २, १)।

पुङ्गिवा की [पुष्टि] प्रल से होनेवाली क्रिया—कर्मक (य २ १)।

पुङ्गिवा की [पुष्टि] स्वर्त से होनेवाली क्रिया—कर्मक (य २ १)।

पुङ्गिस् केवो पोटुिष्ठ (भगु २)।

पुङ्गीया की [पुष्टीया] ईको पुङ्गिया = पुष्टिका (न १)।

पुङ्गीया की [पुष्टीया] पुष्कल से होनेवाली क्रिया—कर्मक (न १)।

पुङ्गु पुं [पुङ्ग] १ प रजसु-विरोध। २ पुङ्ग-वर्धित क्तु (एव १४)।

पुङ्ग पुं [पुङ्ग] १ पित्र संघन परस्पर जीमन्त मिमन्त मिमन्त 'प्रीतिपद—'ताई करकपुष्टेय शीघो हो' (पीप म्हा)। २ काल होम धर्म का चमरा 'पुष्टमपुष्ट संशुद्धि' (ज्या २४ टी पठ १११७)। पुमा)। १ संवत् कलाय, मित्रा हुता हो क्ता 'मिमपुष्टमि' (ज्या पठ १७१)। ४ होमवि पत्नी का पाक-विरोध (यथा १ ११)। ५ वधावि-विरोध पात्र रोप (रथा)। ६ वाक्पटुस्मिन् कर्म (ज्या पठ १)। ७ वयस पत्र 'पश्यतो' (सिद्ध ११)। अथय

न [भोजन] लभ, क्कर (कच)। वाय पुं [पाक] १ पुट-वातो से दोषवि का पाक-विरोध। २ पाक-क्रिया धीवच-विरोध। य (१ व) बाण्डि' (छाया १ ११—यत्र १८१)।

पुङ्ग (पी) केवो पुङ्ग = पत्र (वि २१२)। प्रायः। पुङ्गइम वि [रे] पिणीकृत एवमिष्ट (वि १ २४)।

पुङ्गइपी की [रे पुङ्गिनी] गन्धिनी वय लिनी (वि १ २४, विष्ट २१)।

पुङ्ग पुं [पुट] केवो पुं = पुट (यथा)।

पुङ्गपुडा की [रे] पुं से पीटी बनाया एक प्रकार की वस्त्रक वस्त्रक (य १८)।

पुङ्गम ईको पुङ्गम (प्रति ७)। वि १ ४)।

पुङ्गम केवो पुङ्गम (यथा पुना १११)।

पुङ्गि म [रे] पुं, वय। २ विष्णु (वि १ ५)।

पुङ्गिवा की [पुष्टि] पुं, पुङ्गि (वि २, २२)।

पुङ्ग (पी) ईको पुङ्ग = पुङ्ग (प्रायः)।

पुङ्ग केवो पिङ्ग (पत्र)।

पुङ्गम वि [प्रम] पक्षा (वि १ २४)। पुमा-त्वन २११)।

पुङ्गि ईको पुङ्गि (वाचवि १ १ २ मय ११, १)। वि १७)। अइय अइय वि [अवि] पुङ्गिरी रथीराला (बीज) (परा १ वा ११, १)। ठा १ प्राधानि १ १)। अइय केवो पुङ्गि-अय (वाचवि १ १ २)।

पुङ्गि की [पुङ्गि] १ पुङ्गिरी बरती भूमि (वि १ ५ १११ का १ ४)। २ कठि-न्याय कुलबला पदार्थ इय-विरोध—पुष्टिका पात्रा का भूत धारि (परा १)। ३ पुङ्गिरीका का जीव (बी १)। ४ ईसा-मिष्ट के एक बोलना की मय-विही (ठा ४—यत्र ४ ४)। ५ एक विष्णुवादी के (ठा ५—यत्र ४११)। ६ कलाय पुत्रमाला की माया न नाव (यत्र)। अइय केवो पुङ्गि अइय (यत्र)। अय वि [अय] पुङ्गिरी रथीराला (बीज) (प्राधानि १ १ २)। वह पुं [पवि]

यथा (ठा ७)। सत्र म [राक] १ पुङ्गिरी का रत्न। २ पुङ्गिरी का रत्न हल, कुलाल धारि (वाचा)। वेतो पुङ्गि, पुङ्गिरी। पुङ्गीभूय वि [पुङ्गभूय] को वयन हुय हो (पुना १११)।

पुङ्गुम वि [प्रम] पक्षा वाच (वि १ २४, पुमा)।

पुङ्गो य [पुङ्ग] प्रलय, मित्र (पुना ११२)। यत्र १ पावक ४; धारा)। इह वि [अय] विविध बन्धनाना (वाचवि १ ८)। अय पुं [अय] प्रकृत वयन, वाचाय लोफ (यत्र १ १ १)। 'अय पुं [जीव] विविध प्राणी (यत्र १ १ २, १)। 'विमाय' 'विमाय वि [विमाय] अनेक प्रकार का, वाचि (यत्र ४ ४—यत्र २८)।

पुङ्गोअ वि [रे पुङ्गअ] पुङ्गपुष्ट विष्टि, 'नमिरी अयो पुङ्गोअ' (यत्र १ १ ४)।

पुङ्गोय वि [पुष्टिअय] पुङ्गिरी की टाङ्ग लव वयन करीबला (यत्र १ १ २४)।

पुङ्गोवि वि [पुष्टिअय] पुङ्गिरी के वयन में रहा हुय (यत्र १ १२, ११)। प्राधानि)।

पुङ्ग एक [पु] १ पविन कला। २ वयन धारि की पुवपीठ कला, सत्र करत।

पुङ्ग (वि ४ २४१)। पुङ्गि (छाया १ ७)। कर्म पुष्टिअय, पुङ्ग (वि ४ २४२)।

पुङ्ग य [पुङ्ग] इत यवी का वयन अयय—१ जेद, विरोध (विष्ट २११)। २ वधापाठ मिमन्त। ३ धारि, प्रत्या। ४ शिष्टी वार, वाचा। ५ वधापाठ। ६ वयन (परा २, ४)। वयन पुमा की १७)। प्रायः २, २: ११—त्वन ७२ म्हा)। ७ वयन पुं की वयन अयय होला है (मिष्ट १)। अय म [अय] विष्ट से बनाला। २ वि विष्टि विष्ट से वयन की वयन वयन—विष्टि ली म होह पुष्टिअय (यत्र)। अय वि [अय] विष्ट से बना बना हुया ठावा (यत्र ७१ टी, क्म)। 'पुय य [पुय] विष्ट, वारणा। पुयअय म [पुयअय] विष्ट विष्ट वयन, वारणा मिमन्त (वि १

पुट्टि वि [पुट] ज्यमित (छाया १ १ छ ४११) ।
 पुट्टि केओ पिड्ड = पुट (आपरा धीवि १६) ।
 पुट्टव वि [सुसुवन्] विद्यते स्वरं विद्या ही नह (आपा १ ७ न न) ।
 पुट्टवर्द रेओ पोडुवर्द (सुवन् १ १) ।
 पुट्टवमा ओ [मोसपरा] मज्ज-विरोध (सुवन् १ ३) ।
 पुट्टि ओ [पुट] पोवस उपचय (विदे १२१ वेस ५) । २ प्रविद्या क्या (पह २ १—पन २६) । म वि [मात्] १ प्रविद्या । २ पुं क्मात्वा महावीर का एक शिष्य (सु) ।
 पुट्टि रेओ पिड्डि = पुट, 'पाप्साधिसस पसरो पुट्टि पुते समारुधम्मि' (आ ११ ११ न ७) प्रमा धीवि १६) ।
 पुट्टि ओ [पुटि] पुष्कल मल । य वि [ज] मल-मलित (अ २, १—पन ४) ।
 पुट्टि ओ [सुटि] स्वरं । य वि [ज] स्वरं-मलित (अ २, १) ।
 पुट्टिया ओ [पुटिअ] मल से होनेवाली विद्या—कर्मवन् (अ २, १) ।
 पुट्टिया ओ [सुटिअ] स्वरं से होनेवाली विद्या—कर्मवन् (अ २, १) ।
 पुट्टिस केओ पोडुडि (अनु २) ।
 पुट्टिया ओ [सुट्टिया] केओ पुट्टिया = सुट्टिका (नम १ न) ।
 पुट्टिया ओ [पुट्टिया] पुष्कल से होनेवाली विद्या—कर्मवन् (नम १) ।
 पुट्ट पुं [पुट] १ प म्माव-विरोध । २ पुट्ट-परिचित बलु (एन १४) ।
 पुट्ट पुं [पुट] १ निव संवन् पसरर ओज्जल निमाव निमाव 'पंचमिपुट्ट—' 'याहे नरत्तपुट्टे नोपी सो' (वीन महा) । २ बल होत धारि का चक्रा 'हुत्तमपड संवत्तपुट्टिया' (आ १४ टी पड १११) पुता । ३ संवत्त क्माव, मिहा हुवा से क्या 'विज्जपुट्टिओ' (आप पड ३७३) । ४ ओपवि पत्रने का पाव-विरोध (छाया १ ११) । ५ वनविधिचित पाव, लोना (रेव) । ६ पाप्माव वल्लन (आप पड ३) । ७ वल्ल पप 'पुट्टो' (मिह १३) । अयज

न [मेहन] मार, खार (कड) । बाय पु [पाक] १ पुट-पावो से ओपवि का पाक-विरोध । २ पाव-निपाव ओपवि-विरोध पुट (१ न) बाणी (छाया १ ११—पन १५) ।
 पुट (टी) केओ पुच = पुन (पि २१२) प्राय ।
 पुटडन वि [वे] निरुद्ध एवमित (१ १ २४) ।
 पुटडपी ओ [वे पुनडिनी] नविनी, कम गिरी (१ १ २१ मिह २१) ।
 पुडग पुं [पुटक] केओ पुट = पुट (आ) ।
 पुडपुका ओ [वे] मुँ से सीधी बनाना एक प्रकार की धमक धाना (न १) ।
 पुडम केओ पुडम (मिह ७१; पि १ ४) ।
 पुडम केओ पुडग (आ पुता १११) ।
 पुडिग न [वे] ईह वल । २ मिडु (१ १, ५) ।
 पुडिका ओ [पुटिका] पुके पुमिया (१ १, १२) ।
 पुडु (टी) केओ पुच = पुन (प्रम) ।
 पुई केओ पिई (न) ।
 पुडम मि [प्रमम] पह्ला (हे १ १३ कुमा लन २११) ।
 पुडवि रेओ पुडवी (आपा १ १ २ म ११ १; पि २७) । अयज 'अयय वि [अयिक] द्विती लपेलता (वीन), (एल १ म ११ ३) ठा १ आपा १ १ २) । आय रेओ पुडवा-अय (आपा १ १ २) ।
 पुडवी ओ [द्विती] १ द्विती बण्ठी भूमि (हे १ १११ ठा १ ४) । २ काकि-आवि पुडवाला पवार इन्ध-विरोध—द्वितीका पामा बलु धारि (एल १) । ३ द्वितीकाव का जीन (बी २) । ४ ईह-केर के एक लोकावत की धम-महिनी (ठा ४ १—पन २ ४) । ५ एक विज्जुमापी रेरी (अ ५—पन ४१६) । ६ वल्लन पुडमपलता की बावा का बाय (एन) । अयज केओ पुडवि अयज (एन) । अय वि [अय] द्विती लपेलता (वीन), (आपा १ १, २) । अड पुं [पवि]

पवा (अ ७) । 'सस्य न [राक] १ द्विती का खल । २ द्विती का खल, इल मुडाव धारि (आपा) । केओ पुडई, पुडवी ।
 पुडीमूय वि [प्रममूय] ओ पलन हुवा हो (पुता २११) ।
 पुडम वि [प्रमम] पह्ला धार (हे १ १३ कुमा) ।
 पुडो य [पुवग] प्माव, निव (पुता ११२) खल १; बावक ४; आपा) । ईह वि [अय] निमित्त धमियापलता (आपा १ ७ न) । अय पुं [अन] प्रकृत मनुय, धाराए लोच (पुम १ १ ११) । अय पुं [जीव] निमित्त प्राणी (पुम १ १ २, १) । 'विमाय' 'विमाय वि [विमाय] ओर प्रकार का बहिन (एन अ ४ ४—पन २८) ।
 पुडोका वि [वे पुवजक] कुमानु निव म्पसित कमिई जकी पुडोका' (पुम १ १ १४) ।
 पुडोवम वि [द्विचिपुपम] द्विती की वय धन बहल करेलता (पुम १ १, २७) ।
 पुडोसिय वि [द्विचिपिमा] द्विती के धमय में खा हुवा (पुम १ १२, १३ आपा) ।
 पुय सक [पू] १ पविन कटा । २ बल धारि की लुवविट करण, कट करण । पुय (हे ४ २४१) । पवति (छाया १ ७) । कर्न, पुडिअ, पुवव (हे ४ २४२) ।
 पुय ध [पुन] इन धन का लुवक धमय—१ नेव विरोध (विदे ११) । २ धनधारण मित्तव । ३ धनिकार, प्रस्ता । ४ द्विती बार, बारलार । ५ म्मावतर । ६ धनुष (पह २, १ बडा कुमा दीगा की ३७) आनु १, २२ १६—पन ७१ मिय) । ७ पामाति में लो बलका प्रयोग होता है (मिडु १) । अय न [अय] फिर से करता । २ वि, निजो फिर से बलका की बाय बडा 'पिर्न संव न होइ पुसकण्ड' (अ) । 'अयज वि [अय] फिर से म्मा बला हुप, तावा (पन ४१६ टी वय) । 'पुय य [पुन] फिर फिर, बारबार । 'पुयवलय न [पुन-अय] फिर फिर आना, बारबार निमित्त (१ १

३२)। क्मय पुं [मय] किर से क्मयति
किर से क्मय-मण्य (विषय ११७० धीन)।
'क्यु' की [म्य] किर से विराहित की
निराका पुनर्लभ हुआ ही वह कहिला 'यस्य
पुण्यमृण्यो नि निराश्रित्य पण्यम' (कुप
२० २०६)। 'यस्य' 'यस्य' [अपि]
किर से (महा ७८ १ ११ १३)।
'यस्य' की [आश्रित्य] पुन-पुनर्लभ
(विषय)। क्यु नि [पल] किर से कहा
हुआ। २ न पुनर्लभ (विषय २०)। य
य [अपि] किर से (महा १२ माह
८०)। 'क्यु' पुं [पय] १ नृप-विरोध
(विषय १ १२)। २ मन्त्र-विरोध के
पुन कर्म का नाम (विषय १२१ पत्र २
१७२)।

पुन्य (मा) रेकी पुण्य = पुण्य। मंत वि
[मन्] पुण्यमाली (विषय)।
पुन्यम क [हन्] रेकना। पुण्यपद (पल्लव
१२२)।

पुन्य पुं [वि] क्यय चापहात (२१ १८)।
पुन्य वि [पय] पयिष कलेकाता। की
की (कुमा)।

पुन्यम [य] हन्-मण्य बारबार, किर-किर
पुन्यमन्त' 'मन्' पुन्यमन्त' छोड़कर छोड़कर
पुन्यमन्त' (२ १ १७२ कुमा) 'य' विषय
छोड़कर छोड़कर 'पुन्यमन्त' (विषय
२०७)।

पुन्या क रेकी पुन्य = पुन्य (वि १२१
पुन्याह १ १२ पुन्या पत्र १ १०
पुन्याह १)।

पुन्य (मा) रेकी पुन्य = पुन्य (कुमा नि
१२२)।

पुन्यो रेकी पुन्य = पुन्य (धीन कुमा माह
८०)।

पुन्या रेकी पुन्य-पुन्य, पुन्यमन्त (माह १)।
पुन्याम क [म + नृपय] १ रेकना
बलना। २ मन्त्र-विरोध कलना। पुन्यमन्त
(विषय १२ ४)।

पुन्य पुं [पुन्य] १ पुन्य कर्म पुन्य (वीन
महा ७३१ पत्र)। २ दो जगत्
केना 'मन्' पुं (१ २०) कुनी (१ ११)

पुन्यमन्त पुन्य (संवीन ३०)। १ वि
पयिष 'मन्' पुन्यमन्त' (कुमा)।
कमसा की [कमसा] मन् देन के एक
पय का नाम (पत्र)। पुन्य पुं [पय]
विपदापत्त' का एक स्वनाम-क्यात पत्रा (पत्र
१ १२)। मंत, मन्त वि [पय]
पुन्यमन्त नामपत्रा (२ २, १२२ पत्र)।
रेकी पुन्य = पुन्य।

पुन्य नि [पुन्य] १ संयुक्त, मन्पुन्य, पुन्य
(धीन मन् मन्)। २ पुं क्रीडामार रेकी
का कालिदास कर्म (मन्)। १ कृष्ण कर्म
का कालिदास कर्म (पत्र)। ४ विवि-विरोध
पत्र की दोषकी कर्मों और पत्रकी विवि
(मुन्य १० १२)। २ पुन्य विरोध-विरोध
(२०)। क्मय पुं [क्यय] संयुक्त मन्
(मन् १)। दोस पुं [पाप] दोस कर्म
का एक कर्म निरन्तर (विषय १२४)। मन्
पुं [मन्] १ संयुक्त कर्मना। २ विपदा
पत्र के एक पत्र का नाम (पत्र २, २०)।
'पय' पुं [पय] कृष्ण कर्म का कालिदास
कर्म (पत्र)। मन् पुं [मन्] १ स्वनाम
क्यात एक मन्-विषय, विषय मन्मन्त मन्मन्त
के पाप दोषों के एक पुन्य का नाम (मन्)। २
मन्मन्त का एक कर्म (४ १)। ३ पुन्य
मन्त कर्म-विषयों का नाम (२०)। ४ पत्र का
विषय-विरोध (धीन मन् १ १)।
मासी की [मासी] पुन्या विवि (१)।
पय पुं [पय] पत्रा कालिदास का पुन्य
विषय मन्मन्त मन्मन्त के पाप दोषों की की
(मन्)। रेकी पुन्य = पुन्य।

पुन्यमन्त की [पापमासी] विवि-विरोध
पुन्यमन्त (धीन मन्)।

पुन्यमन्त न [वि] मन्मन्त के कर्म मन् (१
११ पत्र)।

पुन्या की [पुन्य] १ विवि-विरोध पत्र की
२, १ मन् १२ की विवि (संवीन २०)
पुन्य १ (२)। २ पुन्यमन्त मन्मन्त
मन् की कर्म मन्मन्त-मन्मन्त (२०)
पत्रा २ 'पुन्यमन्त' के कर्म-विषय
मन्मन्त के कर्म मन्मन्त-मन्मन्त
मन्मन्त के कर्म मन्मन्त-मन्मन्त
मन्मन्त के कर्म मन्मन्त-मन्मन्त

पत्रा एव मन्मन्त' (मन् ४ १ २०
पत्र २ ४)।

पुन्यमा १ रेकी पुन्याम (पत्र ४१ १२ वे
पुन्यमन्त) २, १२ १२, १२ नि २१२)।
पुन्याम की [वि] मन्मन्त, कृष्ण पुन्यमन्त
(१ २ २३ पत्र)।

पुन्याह पुं [पुन्याह] १ पुन्य विषय पुन्य
विषय (मन् १२२, पत्र)। २ मन्मन्त-विरोध
पुन्याह' (वि ४ १ ७३४)।

पुन्यमन्त की [पुन्यामन्त] पुन्याम (संवीन
११)।

पुन्याम की [पुन्याम] विवि-विरोध पुन्य
मन्त (मन् १२४)। यद पुं [यद] १
पुन्याम का मन्त (महा १२४)।

पुन्याममन्त की रेकी पुन्याममन्त (विषय
११ मा २२, पुन्य १ १)।

पुन्य पुं [पुन्य] मन्मन्त (मन् १० कुमा, पुन्य
१२ १२४ मन्मन्त २० ७०)। पुन्या १ (२)।
मन् की [पुन्य] मन्मन्त की (पुन्या
२०२)।

पुन्यमन्त पुं [पुन्यमन्त] मन्मन्त-विरोध,
पुन्यमन्त विपदापत्र का एक 'पुन्यमन्त' (विषय
१—पत्र १२)। २ न विपदापत्र
का मन्त 'पुन्यमन्त' (विषय १२०)।

पुन्य पुं [पुन्य] रेकी पुन्य (महा)।

पुन्य पुं [वि] मन्मन्त-विषय, पुन्य
मन्त (विषय २०)।

पुन्यमन्त पुं [पुन्य] पुन्या (मन् ८६१;
१२ १४)।

पुन्याम की [पुन्याम] मन्मन्त-विषय पुन्य
मन्त (विषय २०)। (पत्र २०)। पुन्या
१२२ मन् ८१२)।

पुन्य रेकी पुन्य (माह १२)।

पुन्य पुन्यमन्त वि [पुन्यामन्त] पुन्य
मन्त के मन्मन्त 'पुन्यामन्त' विवि
मन्मन्त (पत्रा १ १—पत्र १०)।

पुन्या की [पुन्या] १ पुन्य मन्त
(मन् १२४)। २ पुन्य (२ १ १२,
कुमा)।

पुन्या रेकी पुन्य (माह १२)।
पुन्या की [पुन्य] मन्मन्त (मन्)।

देव धर्मे (सम १; मन्त्र पवि) । ३ नीचा विचारविधि, कर्तुं वापुषे (सम ७ ; पत्रम ५, १२३) । ४ भगवान् मन्त्रमात्र का प्रथम भावक (विचार ३७८) । ५ वीर्यवृत्त (समस्त २२९) ।

पुत्री की [पुत्री] नवरी रह्य (कुमा) । नाह पुं [नाह] नवरी का अधिपति राजा (अन ७२५ टी) ।

पुत्रीस पुन [पुत्रीस] पिता (शाय १ ८ ७ ११६ टी १२ टी पाठ) 'पुत्रपुत्रीये य रिक्तसि' (कर्मणि १६) ।

पुत्र पुं [पुत्र] १ स्व-नाम-व्याप्त एक राजा (मति १०९) । २ वि मरुत, मरुत । की. ६ (मह २८) ।

पुत्रसुरिआ की [वि] पत्न्यरुह, जगुण्या (२६ ५) ।

पुत्रमिह केही पुत्रिमिह (पठ) ।

पुत्र्य पुं केही पुत्र्य=पूर्व 'य ईरलो पुत्र्य' सिद्धिभो (स्वप्न १५) 'धर्मक-पाठ्य' 'वैष्णव' (गुमा २२ नाट—पुत्र्य १२१ वि १२३) ।

पुत्रस (ही) केही पुत्रस (मह ७१ स्वप्न २६ मति ७५; प्रती ६९) ।

पुत्रसोत्तम (ही) केही पुत्रिसोत्तम (वि १२४) ।

पुत्र्यम पुं [वि] पुत्र कल्प (२६ २३) ।

पुत्र्यम पुं [पुत्र्यम] पुत्र, स्व-पत्र (पठ) ।

पुत्र्यस पुं [पुत्र्यस] एक वीर-वीर्यय राजा (वि ४ ५ ४) ।

पुत्रे केही पुत्र 'जल मतिप पुत्रे पण्या मन्त्रे वल पुत्रोक्ति' (भाषा) । कइ वि [कइ] भोले विद्या हुआ पूर्व में दिया हुआ (वीर्य १ २ २ १ १) । कर्म न 'कर्म' पहले करने का काम पूर्व में तो जागे किया 'पुत्रोक्ति' जंगु पुत्रोक्ति' (मोक्ष ४५६ ६ २ २०) । धार पुं [धार] ब्रह्माल, धार (उत्तर २६ ७ मृग २६, ७) । बरह केही कइ (पठ ११—पठ ७६९) । पण्ड १ १) । वाप पुं [वाप] १ कन्दे नापु । २ पूर्व पिता का वरन (छाया १ ११—पठ १०१) । सीरवि की [वि]

संस्कृति पहले ही किया जाता विमनवार—योगीश्वर (भाषा २ १ १ २ २ १ ४ १) । सयुय वि [संस्कृत] १ पूर्व परिचित । २ स्व-यत्न का सहा (भाषा २ १ ४ ३) ।

पुत्रेस पुं [पुत्रेस] मार-स्वामी (मति) ।

पुत्रा केही पुत्र (मोक्ष ५५ कुमा) । अ ग वि [ग] सपगामो, सपरेव (मति ४ ; वि २३४५) । गम वि [गम] नही सपरे (अप ५ १२१) । माइ वि [मागिन्] होय को छोड़ कर पुत्र-मात्र को ग्रहण करते बाला (नाट—वि १७) ।

पुत्रकर सक [पुत्रस् + क] १ धाये करता । २ स्वीकार करता । ३ सम्माल करता । संक पुत्रेकरिभ, पुत्रेकरिभ (मा १९ सूय १, १ १ १२) ।

पुत्रेचमपुत्र न [पुत्रेचमपुत्र] एक विद्यापत्र नभर का नाम (इक) ।

पुत्रेपग पुं [पुत्रेपग] इल-निरुप (मोप) ।

पुत्रेह पुं [पुत्रेह] पुत्रेहित (अन ७२५ टी कर्मणि १४६) ।

पुत्रेह वि [वि] १ विपय पत्रम । २ पत्रोक्त (१) (२ १ १५) । ३ पुत्र, पाइत मति का मन्त्र (२ ६ १२) । ४ मयडा, बरनामा का धर्ममाग (मोप १२२) । ५ नाग, नागक-धर्ममाग परसे मन्त्र बरनामा पुत्रेहस्वको । यह सिद्धी ईश्वरि छापका (गुमा २४५; वृ २) ।

पुत्रेहिम पुं [पुत्रेहिम] पुत्रेका नामक होय मति के कर्मि-कर्म करनेवाला ब्रह्माल (गुमा काल) ।

पुत्र पुं [वि] पुत्र्य चीय कोस पुत्रीका 'के पुत्रा विम्वरि' (अ १—पठ २२१) ।

पुत्र वि [पुत्र] मन्त्रित जयत 'पुत्रान्तिपुत्र' (वृ १ १९) ।

पुत्र सक [पुत्र] जयत होता (वृ १ १९) ।

पुत्र सक [पुत्र] १ जयत । २ पुत्र, पुत्र (मह ७१ ६ ५ १५१) । ३ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ४ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ५ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ६ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ७ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ८ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ९ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । १० पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ११ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । १२ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । १३ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । १४ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । १५ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । १६ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । १७ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । १८ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । १९ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । २० पुत्र, पुत्र (मा २३१) । २१ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । २२ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । २३ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । २४ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । २५ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । २६ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । २७ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । २८ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । २९ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ३० पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ३१ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ३२ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ३३ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ३४ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ३५ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ३६ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ३७ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ३८ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ३९ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ४० पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ४१ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ४२ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ४३ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ४४ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ४५ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ४६ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ४७ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ४८ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ४९ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ५० पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ५१ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ५२ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ५३ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ५४ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ५५ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ५६ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ५७ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ५८ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ५९ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ६० पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ६१ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ६२ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ६३ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ६४ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ६५ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ६६ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ६७ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ६८ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ६९ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ७० पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ७१ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ७२ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ७३ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ७४ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ७५ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ७६ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ७७ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ७८ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ७९ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ८० पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ८१ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ८२ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ८३ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ८४ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ८५ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ८६ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ८७ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ८८ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ८९ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ९० पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ९१ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ९२ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ९३ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ९४ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ९५ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ९६ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ९७ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ९८ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । ९९ पुत्र, पुत्र (मा २३१) । १०० पुत्र, पुत्र (मा २३१) ।

१९ मुर ११ १२ १२ २०४ ७ २१२) । संक पुत्रेस (५ १८६) ।

पुत्र पुं [पुत्र] १ रोमास (कुमा) । २ उत्त-निरुप, मति को एक बालि (पण्ड १) । पत्र १६ ७७) कल्प) । ३ बलवर कल्प विरुप पाह का एक नेत्र 'दीमावपुत्र' (त-पुत्रोत्तम—पण्ड १ १—पठ ७) ।

कइ पुन [कइ] उत्तमवरा मन्त्र-पुत्री की एक कलह (अ १) ।

पुत्रअग वि [वृत्त] रेवनेवाला, प्रेताक (कुमा) ।

पुत्रअगन [पुत्रअग] पुत्रकित होना (कल्प) ।

पुत्रआस सक [उत् + अस्] उत्पत्ति होना ब्रह्माल वला । पुत्रमाप (२ ४ २ २) । क-पुत्रआसमाग (कुमा) ।

पुत्रइस वि [इस] बैसा हुआ (मा ११५; मुर १४ ११ पाप) ।

पुत्रइम वि [पुत्रइम] रोमासित (पासा कुमा ४ १६ कल्प महा वा २) ।

पुत्रइस सक [पुत्रइस] रोमासित होना । यह पुत्रइसित (वृ) ।

पुत्रइस वि [पुत्रइस] रोमास पुत्र रोमासित (वृ १५५) ।

पुत्रइस केही पुत्रइस=इस ।

पुत्रइस पुं [वि] भगव वीर (वृ) ।

पुत्रइस न [वि] बलवर निरुप (पण्ड १ ३—पठ ४२, वीर) ।

पुत्र पुं केही पुत्रम=पुत्रक (वि २ १ टि पुत्रम) । शाय १ १ ७५ १ ४ कल्प) ।

पुत्र पुन [पुत्र] नी-निरुप (भाषा १ ११ १) ।

पुत्रा पुं पुन [पुत्रा] १ वरार वर 'भग पुत्राय १ वरार वरार पुत्राय' (संवीर १५ पठ ६१) । 'किवाप होर वर पुत्रा' (मृ १ ७ २१) । २ वरार मति शुक्र मन्त्र (उत्तर २ १२ मृग २ १९) । ३ वर पुन मति पुत्रम इय । ४ वर वरारमा इय । 'विधि' होर पुत्रा वरार मति वर पुत्रा' (वृ २) । ५ पुन मने वरार की निवार बरारवाला मुनि, विविधावाटी वापुसी का एक नेत्र (अ १ २; ३, १, संवीर २८ पठ ६१) ।

पुस पुं [पौव] मस-विपौव पौव मास 'पुसो' (मस १) ।

पुसिख वि [मोन्सिख मूट] पौख हुमा (पउख से १ ४२) या ४४) ।

पुसिख पुं [पुपथ] पुस-विरोप (या १२२) ।

पुसस पुं [पुपथ] १ मस-विरोप इतिहा से छात्रो मसस (मस ११ मस सन ८ १७ हा १ १) । २ वैदी मसस का वनि पति वेन (पुस १ १२) । ३ अपि-विरोप (पस) । माणस, मानव पुं [मानव] मानव इति-माठक माठ-बारण भावि (छाया १ ८-पन १११ टी-पन १११) । देखो पुस=पुप्य ।

पुसदेवप न [पुप्यदेवठ] कैतेर हाव विरोप (संवि १२४) ।

पुसतायन न [पुप्यायन] योत्र विरोप (मुस १ ११) ।

पुह देवो विह=पुसक (हि १ १०७) । पुह देवो वि [मूल] वसन को गुहा हुमा हो (धम ६) ।

पुहर् १ की [पुविपीर] १ एदीय वसुदेव की पुहर् १) माठा का भाव (पसम २ १८४) । २ एर गपी का नाम (पसम २ १८८) । ३ मगम गुणादेय की माठा का नाम (मुसा १६) । ४-देवो पुहरी पुहरी (मुसा है १ ८८ १११) । घर पुं [घर] पत्रा (पसम ८३, ४) । नाह पुं [नाह] पत्रा (मुसा १११) । पठु पुं [पसु] पत्रा (ज ७२८ टी) । पाल पुं [पाल] पत्रा (मुस १ २४१) । राय पुं [पाल] विना की बाटवरी छटापी का काठमपी देठ का एक पत्रा पुहरीएएए धर्ममपीनरिणे (सुति १ ६ १) । वर पुं [पति] पत्रा (मुसा २ १ २४४ ११६) । बाल देवो पाल (ज १४ टी) ।

पुहसस पुं [पुविपीर] पत्रा (मुसा १ ४ २४१) ।

पुदस न [पुसक] १ मेव कार्यस (मसु) । २ विलार (पस) । ३ वृत्त (मस १ २ हा १) । ४ वि विन वसन 'मसु' (पसम १ ११) । 'विपव न [विपव]

मुसस भ्यान का एक मेव (संवीप ११) । देखो पुहुठ पोहड़ा ।

पुहसिख देखो पोहसिप (मस) ।

पुहय देखो विह=पुसक; 'पुहय देखीण' (मुसा) ।

पुहयि १ देखो पुहरी पुहरी (वि १८९) या पुहरी १) १४ मस प्रमु १) १११ सन १११ स ११२) । २ मसवान भोवसुता की बीषा-विपिका (विचार १२६) । ३ एक सस का नाम (सिप) । बंद पुं [बस] एक राजा (पति २) । पाल पुं [पाल] १ एक राजकुमार (ज ६८९ टी) । २ देखो पुहरी-पाल (सिंर ४२) । पुर न [पुर] एक मस का नाम (ज ८४४) ।

पुहरीस पुं [पुविपीर] पत्रा (हि १ १) ।

पुहु वि [पुस] विपल विस्तीर्ण । की इ (मस २८) ।

पुहुठ न [पुसकस] १ दो से मर ठक की संका (मस ४४ की १, मस) । २-देवो पुहस (हा १-पन ४७१ ४२१) ।

पुहुपी देखो पुहुइ (हि २ १११) ।

पू देखो पुं । सुम पुं [राक] पीठा मर विन-विपि (मा १६१ म) ।

पुस एक [पुसम] पुसा कला । पुस (महा) । कर्म पुसवि (पस) । नक पुसवि (मुसा २२४) । कक पुसवि (पसम १२, ६) । ३ पुसपीस पुसमस, पुसपिज (मा-मुस ११२; जवर १६१) । पीप छाया १ टी पीप का २ ८ ज ३२ टी) । पीप पुसवि (महा) ।

पुस न [वि] वनि डी (२६ २६) ।

पुस पुं [पुस] १ पुन विरोप मुसापी का पाव (पस) । २ न. क-विरोप मुसापी (स १४२) । देखो पुस । पकड़ी 'पकड़ी की [पकड़ी] मुसापी का वेठ (पसम २३ ७६, कल १) ।

पुस न [पुस] छावा मुसा भावि मुसाका, वसन-वास करत, देर-मसिद बसना भावि वन-वसुदेव के दिव का कार्य 'मसिदावि' (स ७११) ।

पुस वि [पुस] १ पतिन मुस (छाया १ ३; मीर) । २ न. लकठार का रिनो का

जवास (संवीप २८) । ३ वि पुस भावि से छा-पुन-विह किया हुमा (छाया १ ७-पन १११) ।

पुस न [पुस] पीप कुसक एक मस के निकला हुमा मस खदेय विपसा हुमा मुन (पस १ १ छाया ३ ८) ।

पुसण न [पुसन] पुसा सेका (कुसा पीप मुसा २८४ महा) ।

पुसणा की [पुसना] १ ऊपर देखो (पस २ १ से ७१३; संवीप ६) । २ नाम विपुसा (पुस १ १ ४ १७) ।

पुसणा की [पुसना] १ पुस मसठे बावन, पुसणी) भावि (पुस १ १ ४ १३) । विपसा ४१ मुसा २४ पस १ ४) । २ वावर, मेरी मी (पुस १ १ ४ १३) ।

पुसम वि [पुसक] पुसा कलेवामा (पुस १३ १४३) ।

पुसर देखो पोर=पुसर (या १४ की १३) ।

पुसस पुं [पुस] वसप पुस पाव-विरोप (वि १ ८८) ।

पुसखिया की [पुसिका] ऊपर देखो (पस ४) ।

पुसा की [वि] पिता-महीला मुसाविट की (हि ६ २४) ।

पुसा थी [पुसा] पुस वरस सेका (कुसा) । मस न [मस] पुस के सिद विपविज भोजन (सु २) । मस पुं [मस] पुसोवन (कुस ८२) । 'रह पुं [रह] रासस-मस मे वसन एक पत्रा का नाम एक संका-विपि (पसम २ २४६) । 'रिह, रूह वि [रू] पका-मोस (मुसा ४६१ मसि ११८) ।

पुसाविह वि [पुसाहाव] पुसिठ-पुसक (ज २, १ टी-पन १४२) ।

पुइ वि [पुति] १ कुसपी कुसपीराणा (पसम ४४ २३ ज ७२८ टी पसु ४१) २। वन-वि (पस १४ १) । ३ की दुसम ४ वसिज (पस १६) । ४ विजा का एक सोप पुति-कर्म (वि २६८) । ५ रोव-विरोप एक भावि-का-पीप काका-पीप (वि २ ८) । ७ पुस, पीप: 'मस-पुसिप' (महा), पुस वसविपुस' (पुस १४ ४६) 'मस कुली

पञ्चम वि [अध्याय] इति विनिर्णय (१२४
८९ ७१ ४ १९१ ८ ८८) ।

पद सक [सिप] केना। देकर (हि ४ १४)। कर्म पेल्लिअर (उप)। नर पल्लन (हुमा)। छंछ पल्लिअम (पहा)।

पेछ केको पर = प्र + ईय्। देकर (माह १)। कन्ध पल्लिअर (सि १ २२)। छंछ पाछ (धर), पेछिअर (सिप)। ह पल्लेय्य (मोयम १८ टी)।

पेछ सक [पीछ] पीछना बहाना पीछना। पेछिम पेछिमि (स १७४ टि)।

पेछ सक [पूर] पूरना मरना। कन्ध पल्लिअर (सि १ २२)।

पस पुन [प] बका छिपु बासक (उप वेदा २१९)। 'अयिमि पेसपाइ' (उप २२ टी)।

पेसम केको पेरम (सिप १९)।

पेसम केको पेरण (पय १ १ मउठ)।

पेसम न [सपय] छंछना (कर्म २)।

पेसम पु [पे] केको पेस = (रे) (सिप १ २-पय १९)। 'अयिमि विपारि' (पुन २ ११)।

पेसम केको पेरम (ह १)।

पेसम पु [पेसक] सगल महावीर के पाव बीमा मेकर अन्तर विमान में लग्न एक पैत मुनि (पुन २)।

पेसम [केको पेर]। पेसम पेसाकर (माह पेसम १)।

पेसिम सि [सि पीछि] पीछि (रे १ २७)। 'अपिपारायपीपी' (पहा)।

पेसिम केको पारिम (पय १२१ सिप १)।

पेसियेय केको पेस = प्र + ईय्।

पेसक घ घान्गल-मुक गयम (पय १)।

पेस सक [प्र + पय] मेरना, पयम। पेसक, पेसक (सिप मरु)। कन्ध पेसमन (सि ४६)। रका। छंछ पेसिम पेसिम (मा ४ मरु)। ह पसइयय पसिमण्य पेसयय (पुन १ २७० ११)। डा ११९ टी)।

पेस केको पीम। कन्ध पेसयन (धर)।

पम पु [मिप] १ कर्मर, नीयर, धन बावर (उप १११ मप १ २, २, ३ मरु)। २ सि मेरने सोप (हि २ १२)।

पेस पु [सि पेस] १ सिप देव में होनेरानी एक पुन-जानि (पहा २ २, १ ८)।

पेस सि [सि पेस] पेस नामक बालर के कर्म के बा बहा हुमा (कर्म) (पहा २ २, १ ८)।

पेसम न [सि] कार्य काज प्रयोजन (सि १ २७ मपि छापा १ ७-पय ११०) पयम १ १ २६)।

पेसम न [मिपय] १ पलना, मेरना। २ निवीजन आभाण (हुमा पय १)। ३ घावा घावेर (सि १ २४)।

पेसमआरी की [सि] हुती हुत-कर्म करने-पेसमआरि की की (सि १ २६)। पय १)।

पसगा की [पेय] पीछना वेणु निपाए जगोहमेमणार ह्ये (उप २२० टी)।

पेसक सि [परास] १ मुनर, मनोर (भाषा मउठ)। २ मनुष्य, मनु (पाप)। ३ कीमस (मउठ)।

पसक न [सि] सिप देव के पेस नामक पसमस पय के कर्म के मुनर पयम से निपाए बस 'सिपिउ बा पेसमसिउ बा' (२ घावा २ २, १-पुन १४३)। 'पिपारि बा पेसमसिउ बा' (३ घावा २ २, १ ८ (पय)।

पसक सक [प्र + पय] मेरना। कन्ध पसकयय (उप ११९ टी)।

पसमय न [मिपय] मंत्रनाय मुनरे के डार प्रेण (उप पयि)।

पेसमिअर सि [मिपि] मेरना हुमा प्रका-पिठ (पाप ठा २६)।

पसाय सि [पिपाय] पिपाय-संभली (ह २)।

पसि की [पि] केको पसी (पुन ४७०)।

पसिम सि [मिपि] १ मेरना हुमा प्रिठ (पहा ११२)। अकि कल। २ मंत्रण (पय १ ११)।

पसिमआरी की [पसिम] कय ह्येक; 'पेस केमया डि बा पेसापेमेपि डि बा' (पुन १)। घावा २ ७ २, ७-८ ६)।

पसिमआर पु [मिपिअर] नीयर, मय, कर्मर (पयम ६ १२)।

पेसिमपंड (सी) सि [मिपिअर] प्रिठ मेरना हो बह (सि २६६)।

पेसी की [पिरी] मोय-पण्ड मोय-पण्ड (हुनु ७)। केको पसिआ।

पसुण्य न [पेण्य] पण्ड में मोय पेसुम कीरन हुपली (सीप मप १ ११ २ छापा १ १ मप मुपा ४२१)।

पेसियय केको पेस = प्र + पय।

पेसिमपंड केको पेसिमपंड (सि १९६)।

पेह सक [प्र + इह] १ मेरना, निरीयण करना ध्यान-पूर्वक देखना। २ चिन्तन करना। पेह पेह (सि ८७ उप) पेहि (पुन १६२)। मपि पेहिअमि (सि ११)। कन्ध पेह, पेहमा (पय १२४ मय २२)। सि १२४)। छंछ पेहाए पेहिया (कर्म सि १२४)।

पह सक [प्र + इह] १ इच्छा करना। २ आर्चना करना। पेह (स ४ २)।

पेहम न [मिपय] निरीयण (पहा ४ १६)।

पेहा की [मिपय] १ निरीयण (उप मय १२)। २ बायोसर्व बा एक सोप बायोसर्व में बन्दर की छह छिड नुट को हिलने छला (पय ५)। ३ पराजोवन चिन्तन (पहा ४)। ४ मुक्ति मति (उप १ २७)।

पेहापिय सि [मिपिअर] ह्येक चित्तनाय हुमा (उप ४ १८८)।

पहि सि [मिपिअर] निरीयण (भाषा उप)। की की (सि १२१)।

पेहिय सि [मिपिअर] निरीयण (पहा)।

पेहुन न [सि] १ पिच्छ, पक्ष (सि १ २७-पापा बा ७११ ७१२, कन्ध ४७ मउठ १४१ मउठ)। २ मयुर पिच्छ, मयुर पंथ पिच्छ (पय १ १ २, २, ३ छापा १ १) केको पिहुन।

पात्र मक [प्र + य] निरीयण हुपय। पोसिठ (कय ५ १८ मपि ७४)। कन्ध पायमाग (स २१२)। छंछ पाइअम (कर्म १७०)।

पोस सि [प्रा] निरीयण हुमा (सि १ ७९)।

पाभ पु [पाव] १ मयुर प्रहण नीरा (पाप मुपा ८८ १९६)। २ बासक सिपु कन्ध (सि ८ ८१ पाप मुपा १९६)। ३ न बह, बहा (स १ १-पय ११४)।

पोम पुं [रे] १ बर बुल बाय बी का पुं ।
२ छोटा छवि (रे १ ८१) ।

पोमइया बी [रे] मित्रकारी लडा बडा
विरोध (रे १ ९१) पाय ।

पोमइ बि [रे] १ सम-प्रति मित्र । २
पण्ड नावर (रे १ ९१) ।

पोमइ पुं [रे] लयन हीन (रे १, ९२) ।

पोमज न [प्रथम, प्रोतन] पिरोना पुण्ड
हुना (पायन) ।

पोमजपुर न [पोतनपुर] नगर-विरोध (मुपा
२ २) बधि ।

पोमया बी [प्रथपना प्रोतना] पिरोना
(अ ११६) ।

पोमय बि [पोतन] पोत से उत्पन्न होनेवाला
प्राणी—हत्ती घाँस (अ १ १) ।

पोमय पु [पोतक] बेबी पोम = पोत (उपा
घोस) ।

पोमस्य पु [रे] १ शारिण मास का एक
उत्सव जिसमें पत्नी के हाथ से लेकर पति
बधु की जाता है । २ एक प्रकार का
बपू—बाय-विरोध पुं । ३ बाल बल्ल
(रे १ ८१) ।

पोमाई बी [पोताई] १ लड़ुन की कलम
करनेवाली बिचा-विरोध २ लड़ुनिका पति-
विरोध (मिसे १४५१) ।

पोमाइय बि [पोतायुस पोतक] बेबी
पोमय (पन १ २ २७) ।

पोमाय पुं [रे] धाम-प्रवाल बाँस का छवि
(रे १ ९१) ।

पोमाख पुं [रे] लयन बलीवर (रे १ ९२) ।

पोमाख [रे पोतक] कपा: विनु नाक
(पोय ४४७) ।

पाय पु [रे] १ हलवाई पिठाई केनेवाला ।
२ बलीवर (रे १ ९१) । ३ विमान, हुमा
हुमा (पोय ११९) । ४ पण्ड (इ १) ।

पोइय बि [मोत] पिरोना हुमा (रे ७ ४४)
हर इ १ २ पाय ।

पोइयइय बेबी पाइय = मोत (पोय २३६
टी) ।

पाइयां बी [रे] मित्रकारी लडा, कबी
पाई [विरोध] (रे १ ९१) पण्ड १—
पण्ड १४५) ।

पोउया बी [रे] कटीय—मुखा पोवर (मोईडा)
का पतिन (रे १ ९१) ।

पोग पुं [रे] पाक कपना (अ १८) ।

पोगिड बि [रे] पका हुआ परिवार पर
पाक-मुक्त कपनी भाषा में 'पिमि-
'अनेत्रि छईमहिबनिवीय-

पुण्डमिप्रिधिवरिगिआ ।

मिडिउरकपुण्डमिप्रिधिवरि-
विगुआ कवि विडिडि ।
(अ १८) ।

पोज न [रे] कुल पुण्ड अपर धर्मियो
बडी पालियो हीर (उपनि १) ।

पोज बेबी पुं । बड़न न [बर्धन] नगर
विरोध (महा) । बड़ियाया बी [वर्धनिक]
बैम मुनि-मण की एक छाया (कप) ।

पोज पुं [रे] बुल का बनिपति (रे १
पोइय १ १) । २ पण्ड (पण्ड १ ४—पण्ड
४८) । ३ पवित्रिउ प्रवस्थाका कमल
(मिसे १४२२) । ४ कपल का पुण्ड 'पण्ड'
पु पौमायी नावे पुण्डिह सुयं नाथ'
(सुपनि १) ।

पोइरिगिमी बेबी पुंइरिगिमी (अ १ १) ।

पोइरिमी बेबी पुइरीम = पुइरीक (अ
४४१) ।

पोइरी बी [पोइरी पुण्डक] बम्बुडीय के
मेर के उतर बक पर खड़ेवाली एक
विनुमाटी बी (अ १) ।

पोइरीय बेबी पुंइरीय = पुइरीक (वीन
छाना १ २, ११) घम ११ केने ११
सुपनि १४९) ।

पोइराय २ न [पोइरीय] १ पण्ड-
पोइरीय [विरोध] रकु-मणि (सुपनि
१२४) । २ बेबी पुइरीय = पोइरीक (सुप
१ २ १) सुपनि १४४ १२१) ।

पोइरक [कपा + इ पण्ड + क] पुका
रता बाह्यन करता । पोइरक (रे ४
९) ।

पोइ बि [रे] घाटे लयन पीर कल्ल लडा
बीच में मित्र (महिष) । 'पोइरम' (उप
१२, ९) ।

पोइय पुं [पोइय] १ घमन के-विरोध ।
२ कल लय में बनेवाली न्येय बाँस (पण्ड
१ ११) ।

पोइय न [कपाहरण पुण्डक] १ पुका
पाह्यन । २ बि पुकाखेला (कुमा) ।

पोइय बेबी पुण्ड । पोइरिडि (महा) । क-
पोइरिडि (मुपा १८) ।

पोइरिय बि [पुण्ड] १ पुकाय हुमा (सुप
१ १९४) । २ पण्ड (अ १) ।

पोइर बेबी पुण्ड = पुण्ड (अ १९८२) ।

पोइरि बेबी पोइरिय (अ १ ११ टी) ।

पोइरन न [पुण्ड] १ बल वाली । २
पण्ड कमल । ३ पण्ड-कोय । ४ एक पीर
घमने-नगर के पाठ का एक कलाक-
टी । ५ हाथी की सूँड़ का घड भाग । ६
बाय-भाण्ड । ७ पाण्ड हुकल । ८ पण्ड-
कोय लयन की म्याल । ९ पुण्ड पुं ।

१ पुण्ड रोय की पोपि । ११ पीर-विरोध ।
१२ पुण्ड कपाई । १३ ल, पाण्ड १४
पाकरा 'नोकर' (रे १ १९१ २ ४
संति ४) । १५ पुं, नाय-विरोध । १६ रो-
विरोध । १७ पाण्ड कपी । १८ एक छाया
का नाम । १९ पण्ड विरोध । २० बल्ल
पुका नोकर' (अ १) । बेबी पुण्डक ।

पोइर बि [पोइर] १ पुण्ड-सम्बन्धी ।
२ पण्डार लयनवाला 'नोकर' पण्ड' (बाय ७) ।

पोइरिमी बी [पुइरिमी] १ कलाक
विरोध बल्ल वाली (छाना १ १—पण्ड
६१) । २ पण्डिनी कमलिनी पण्ड-महा
'अनेत्र बा पोइरिणीमास' (अ ११
९) । ३ गरी (कुमा) । ४ पण्ड-महा । ५
पुण्ड-पण्ड (रे २ ४) । ६ बीकेय लडा
यव बीकेय वाली (पण्ड १ १) रे २, ४) ।

पोइरक बेबी पुण्डक (पण्ड १—पण्ड १४
घाना २ १ ११) ।

पोइरसिडिहक } बेबी पुण्डसिडिह
पोइरसिडिहक } भाय (पण्ड १—पण्ड
१२) पण्ड ।

पोइरक पुं पुं [पुण्डसिडिह] एक लय लय-
क, मित्रका हुपल नाम लयन का (पण्ड) ।

पायग पुं पुं [पुण्डक] १ कपा विडिडि
पायग पुं पुं [पुण्डक] १ कपा विडिडि
'पोका' (अ १ १) अ २ ४ ४ ४ ४

फडिअ वि [स्फटिय] बोवा हुया 'यो बीरे
सबरीह नरेह फडिया कडाति वा मला' (मुना
१११)।

फडिअ } बेको फडिअ = स्फटिक (वाट—
फडिअ } रजा ५१) 'फडिअहाउनिमा'
(निज ७)।

फडिअ बेको फडाअ (नर)।

फडिअ वु [परिप] १ धर्मका भाषत (दे
११ ३८)। २ कुहार (दे १ २४)।

फडिअ बेको फडिअ = परिखा (दे १२
७१)।

फडु } दुन [दे स्वर्ध क] १ धर्म
फडु } भाष, निस्वा पुनरायी में 'फडिअ'
फडु } 'कमिअकमिअ' कुली कडाया य
फडुहुवा } फडुहुवा ७' (निज २१३)। २

धर्मको कण के सविद्या के बराबरी फडु का
एक कणवत दिस्वा लघुप्राय का एक धर्म
कोटा विभाय जो धर्मको लघुप्राय क सम्पन्न के
धर्मको होत 'फडुअ' हुमाहुमि कडाहुति'
(बीर ४१)। ३ धर्म भाषि क दोटा
विज विवर। ४ धर्मविद्या का निर्णय-ज्ञान
'फडा य धर्मवेडा' 'फडा य धर्मप्राप्ती'
(निजे ७१५ ७१६)। ५ लघुप्राय 'ताल
यन्त्रयमा फडिअ दुर्ध' (फासत भाङ्ग १)।
६ लघुप्राय-विशेष कर्मण-लघुप्राय; निष्पन्न-
कर्मण-धर्म भाषयप्राय लघुता (कमप २८
४४ ५१ १ २८ ३, ८८१ ८८२ बीरव
७९)। ७ धर्मविद्या 'बीर' 'तामि कडु
कड हुमाहुति' (वै २, १७६ १७७)।
८ वडु वु [पति] कण के धर्मविद्या विवर
का भाषक (हृ १)।

फडु वु [फज] फज, धर्म बी रजा (दे १,
१२, भाषा का २४)। मुना १११)।

फडु वु [दे फजक] कडा, कडा सवाले
का कणवत (जत २२, ३)।

फडु वु [दे] कसवि-विशेष 'धर्मवी
कडा-धर्मवी' फडु वु वडु य धर्मव
(वण १—५५ १४)।

फडु वु [पनम्] कडाहु का वै (वण
१)। १ ११२, प्राय)।

फडा बी [फडा] फज (मूर २, २१६)।

फडि वु [फजिम्] १ सांघ सार भाष (वप
११० टी पाषा मुना ११६ महा कुमा)।

२ यो कडा या एक दुव फडा बी सना
(निग)। ३ धर्म-निष्ठा का कडा विरता-
नार्थ (निग)। 'फिप वु [फिह] मधवाय
पारवनाय (कुमा)। पडु दु [प्रमु] १
नायकुमार बेको का एक स्वामी बरलेत्र
(टी १)। २ रोप भाग (बर्नि २७)। राम
दु [याम] १ रोप भाग (कुप २७२)। २
विमल-कटा (निग)। लखा बी [अडा]
नायका कडी-विशेष (कम्पु)। वडु दु
[पति] १ धर्म-विशेष बरलेत्र (मुना ११)।
२ नाग-प्राय (योड २६)। ३ विमलकार
(निग)। सेहर दु [रोलर] प्राय विमल
का कडा (निग)।

फजि दु [फजीन्] १ नाग-प्राय रोप भाग
(भासु १११)। २ विमलकार (निग)।

फजिअ क [फोरम्] बोरी करना।
फजिअह (नता १४६)।

फजिअ वु [दे फजिअ] कडा कडा सवाले
का कणवत (मुन १ ४ १ ११)।

फजीसर दु [फजीसर] बेको फजिअ
(निग)।

फजुअय बेको फजुअय (यव)।

फज दु [स्वर्ध] स्वर्ध, हिर्ध (कुमा)।

फडा बी [स्वर्ध] कडा बेको (दे १ ११;
मुना १ १८)।

फडि वि [स्वर्ध] स्वर्ध कडावाला (यव
२१)।

फर } दु [दे फज, क] १ कडा भाषि
फर } का कडा। २ कडा। (दे १ ७९, १,
८२, कम्पु दु २ ११)। बेको फज,
फज्ज।

फरज वु [दे फरज] धर्म-विशेष 'फरजि
प्राय' लेवि दु [फरजि] बीरवी (बर्नि
८)।

फरजि वि [व] कडा हुमा दिहा हुमा
कमिअ (कम्पु)।

फरस बेको फरिअ = सार (रंभा हाट)।

फरस दु [पटु] दुवदु दुवदुअ कडा
(बर्नि नि ४)। राम दु [याम] बरलेत्र
विशेष कसविअ धर्म का पुन (मत १२१)।

फरर क [फरफराय] फरर भावाय
करा। बर, फररव (बर्नि)।

फरर देको फरिअ = स्पर्ध (हृ)।

फरिस क [स्वर्ध] कडा। फरिअ
(पड) फरिअ (भाङ्ग २७)। कर्न फरि
विमल (कुमा)। कडा-फरिसिअ (बर्नि
११६)।

फरिस } दुव [स्पर्ध, क] स्पर्ध कडा
फरिसा } (भाषा फर १ १ य ११२;
प्राय पाषा कडा) 'न य बीरव लघुप्राय'
(वण २ ४४)।

फरिसिअ न [स्पर्ध] धर्म-विशेष लवि-
निय (मुन २२४)।

फरिसिअ वि १ पडु मुना हुमा (कुप ११
४२)।

फरिअ बेको फजिअ = परिखा (साया १
१२)।

फरुअ वि [पसु] १ कर्म कजि (नवा
पाषा ६ १ २३२, प्राय)। २ न कुनवत,
निष्ठु, भाष 'य धर्म विमल कडा बेको'
(मुन १ ४४ ७ २१)।

फरुअ } दु [दे पसु क] कुम्भकार,
फरुअ } कुम्भकार, फरुअ, कुम्भकार 'फरुअ-
यनकसवति' (हृ ४४)। सास बी 'सास'
कुम्भकार-दु (हृ १)।

फरुसिअ बी [पसुअ, पसुअ] कर्मका
निष्ठुता (भाषा)।

फरुअ क [फरु] कडा, कडाविष होमा।
कडा (पा १७६ ४४४) कडावि (विदि
१२२)। बर, फरुअ (दे ७ ६६)।

फरु वु [फरु] १ कडा का सव (भाषा)
कड कुमा कडा बी १)। २ साय
'फरुअ' ले सुमिणाल एरवि विमल कडा
बीर (का ६८९ टी)। ३ कर्न 'कुम्भकार'
कडा बीर (वै २१; कर्न १)। ४ धर्म-
विशेष कर्न का पुन य धर्म कडा—परिणाम
(वम ७२, ६ ४ ११२)। ५ धर्म। ६
प्रयोग। ७ विद्या। ८ भाषय। ९
भाष का धर्म भाष। १० यव। ११ कडा।
१२ कुम्भ, धर्मविशेष। १३ कडा। १४
कर्म कडा-धर्म-विशेष (दे १ २१)।
१५ कडा कडा भाषा का धर्मिअ पडु

कैला हुआ (पुर २ २३६) काय १७
पुत्रा १७४ पुत्र २१)।

फारक नि [वि स्फारक] स्फारक की
बाण कलेबा, 'त' नावर्त बहूत कारका
गुरुवणयो दुलका' (भर्षी ८०)।

फारकिय न [पारुय] पसरा कलेबा,
कलेबा 'फारकिय कलायति' (भाषा)।

फारक केो 'फारक'।

फारक केो फारक। फारक (हि १ १६८
१२२)। कल फारकिय, फारकियमाय
(पा १२१ समय १७४)। उरु फारकिय
(पा ४८६)।

फारक पुन [फारक] १ लोभय कृप एक
प्रकार की लोभ की बन्धी कीन (बना)। २
प्रभ से की बन्धी एक प्रकार की किय-
परीक्षा उपन-कियेय (मुपा १८६)। ३
कलाय, लोभ 'वीथि न्व विह्वलको' (कुप १२)।

फारक न [पाटन फारकन] विहाण
'कोली कि न छोडि छोडुकोयें त' तावर्त
फारक' (रंगम १२१)।

फारक केो 'फारक'।

फारक की [फारक] फारक लोभ (कुप
२७७ दुष्टक १२)।

फारक की [वि फारक] १ फो कीयो
कियेय २ वाक 'विहाणियसिन् धरिफका
बहो' (बंका ८३)। ३ फारक, दुष्टका '—
गालाहीनपुत्रीकफारकिय' (जग
३३)।

फारकिय नि [पाटित फारकित] विहाण
(कुपा पण्ड १ १—पत्र पत्र २२ ११;
मोप)।

फारकिय न [वि फारकिय] केल-कियेय में होता
कल-कियेय 'अविहाणिय का कल-कियेय का
कल-कियेय का कल-कियेय का (भाषा २, ३,
१७)।

फारकिय [वि] [फारकिय] १ एन-कियेय
फारकिय (कप)। २ वि फारकिय-एन का
फारकिय (वि १२१ कप ६८६ मुपा ८८)।

फारकिय पु [पारिमद] १ फारक का वेद। २
बेदाय का वेद। ३ विन्य कय वेद (१ २२२)।

फारक एक [रुद्रक स्योय] १ सय कला
मुपा। २ पात्रन कला। फारक, फारक
(हि ४ १८२ कप)। कमी फारकिय (कुपा)।
कल फारकिय, फारकिय (वंका १ १२
पण्ड २, १—पत्र १२३)। कल, फारका
इजमाय (पत्र—क)। उरु फारकिय,
फारकिय (बत २६, १; मुप २६, १
कप कप)।

फारक पुन [स्योय] १ सय, कुपा (भा १०४
१०४)। २ फारकिय कीविन्य केल-कियेय
(अ २ १—पत्र ७८)। ३ फारकियेय
'एन-कियेय केल-कियेय' (मुप १ ६,
२ २२)। ४ फारकिय विन्य (वत ४
११)। ५ सय किय लका (मप)। ६
रोय, ७ पण्ड, ८ पुन, लहाई, ९ पुन कल-
बायु। १ कप, पत्र, ११ कल।
१२ 'क' से लेकर 'म' तक के पत्र।
१३ वि सय कल-कियेय (हि २ २२)।

किय पु [कीय] किय का एक
के (विह्व ४)। पाय नायन '—नायन'
कल-कियेय कल-कियेय सय का कारणमुन
कल (पत्र ७८)। 'मोप वि [मन्]
सय-कला (अ २, ३ कप)। 'मय वि
[मय] सय-मय सय से विह्व 'कला
मयायी लोकायने' (अ १)।

फारक नि [स्योय] सय कलेबाता
(मप ४ ४)।

फारक न [स्योय] १ सय-किया (का
१६)। २ सय-किय, लका (पत्र १७)।

फारकिय [वि] [स्योय] १ सय-किया
फारकिय (अ १ ४ १२३)। २ पत्र (पत्र)
(२६)। ३ पत्र (पत्र)।

फारकिय नि [स्योय] १ कुपा मुपा (पत्र ४१
पत्र २७८२)। २ पत्र: 'अविह्व कल-
विह्व पत्र' 'अविह्व पत्र' 'अविह्व' (पत्र
४)।

फारकिय नि [स्योय] सय कलेबाता
(वि १ १)।

फारकिय नि [स्योय] १ सय-किय, लका।
२ पत्र (पत्र ४—पाषा २२२)।

फारकिय न [स्योय] लमिय (मप
पाषा १ १७)।

फारकिय [वि] [स्योय, क] कलेबा कीय
फारकिय 'रुद्रक कियेय कियेय कियेय कियेय
कियेय' (वंका १ १ १०४)। २ पत्र (पत्र २२ २)।

फारकिय [वि] [वि] प्रेव—विहाण का
विहाण 'यह कियेय कियेय' (मुपा
४२२)।

फारकिय पु [वि] सय कियेय (वि १, ८३)।

फारकिय न [वि] [वि] कियेय कियेय कियेय
का सय-कियेय (मुप ४, १३)।

फारकिय [वि] [वि] १ लोभ विहाण। २
दुष्टका कियेय। ३ पत्र कियेय। ४ पत्र-
किया कियेय। फारकिय (हि ४ १७७ पत्र
७३)। पा १८३; कियेय २८८; फारकिय (वत
२ १)। फारकिय (वि १२३)। फारकिय
कियेय, फारकिय (कुप १२३ पत्र
७३८)।

फारकिय नि [वि] विहाण 'फारकिय कल-
कियेय न फारकिय' (पा ११ कियेय)।

फारकिय की [वि] १ सय-कियेय 'पा फारकिय
कियेय कियेय कियेय कियेय' (वि १२३)।
२ पत्र-कियेय सय में कियेय कियेय पत्र-
कियेय (पत्र १)। कियेय पुन 'मियेय'—मार्ग में
कियेय पत्र-कियेय कियेय कियेय कियेय कियेय
कियेय कियेय (मुपा १२३)।

फारकिय केो फारकिय (वि ४ १७७)।

फारकिय नि [वि] कियेय कियेय १ पत्र-कियेय
नट, कियेय (मोप ७ १११ ११२) से ४
२४ १२)। २ पत्र-कियेय कियेय कियेय (मोप
१७४ कियेय)।

फारकिय नि [वि] कियेय (वि १ ८४)।

फारकिय नि [वि] कियेय कियेय (वि १,
८३)।

फारकिय न [वि] कियेय—कियेय कियेय कियेय
कियेय कियेय (मुपा ७२, पत्र १ १)।

फारकिय [वि] [वि] कियेय, कियेय। कल-
कियेय (कियेय ८२)।

फिरक पुन [रे] बाली घासी घार होने-
बाली बाली घासी 'समचिता बुनि बस्यो'
घरई कइईति घननलीपरीति । भट्टि विमि-
सचिता फिरककुतावि समसि' (सुपा
५२५) ।

फिरिय वि [राठ] यवा हुवा
'भोवणबामलहोई गुरिया हइ'
वि विमययो फिरिया ।

बै मुमर घासलो
मुमरि हु एउ पंखरयो'
(बमरि ११६) ।

फिरिय रेको फिरिय (वे ५) ।
फिरियुस मर [रे] फिरियमा चिचरमा
बिरला । बह 'वेराबिबमुविमले फिरियुस-
माया न बावबामिम' (मुर २० १४) ।
रेको फेरियुस ।

फीम रेको फाय (सुप २ ७) ।
फीमिमा की [रे] एक बाल की मीठाई,
मुमरली ये फेरी' । (समर १७) ।

फुना की [रे] कुँक, मुह से हवा निकलता
(मोह १७) ।

फुनार व [फुहार] फुनार, फुनित ल'
घारि की घासल (पुर २ २३७) ।

फुन की [रे] फेरकन (रे ५ ५४) ।

फुन रेकी फेद-लगा । फुन (वे १२ ७७) ।

फुनमा की [रे] कटीपति, बरबरे
फुनमा । की मरु (गार वे १ ५४) छेउ
फुनमा । ५४, मोह १७ हइ । बमर १
२३) ।

फुनमा की [रे] कटीपति, 'घावरा डरनर'
मिहुर भिन्न कुमुप न्य बिरनेको' (ज
७२ टी) । २ कपार-मरि, गुहा करण
की घाव (मुप १ ८) ।

फुनरु } बक [रे] १ कपारन बला ।
फुनरु } १ कपार । फुनरु (हेर १०५) ।

फुनरु [सुप म + बमरु] कौपण'
नाम बला । कुँकरी (मोह ११) ।

फुनरु रेको कपारन (ज ५ १४) ।

फुनरु मर [सुप + क] १ कपारना कुँ
कु कपारन बला । २ क कुँह मे हवा
निकलना कुँकना कुनरु (मि) । बह
मुनरु (म १०५) मुनरुन (म) (रे
५ ११२) ।

फुनरु की [रे] १ मिपा (रे १ ५१) । २
कुँक (मुप १२) ।

फुनरु व [फुनरु] फुनरु, फुँ फुँ की
घासल (मुप १५५ बहा) ।

फुनरु वि [फुनरु] फुनरु हुवा (माम
५) ।

फुनरी की [रे] रकरी, मोमिन (रे ६, ५४) ।

फुनरा बीन [रे] रिक्क-रापर का पचक
विरोध कटि-शेख (सुपति ७२) ।

फुनरुफुनरु वि [रे] बिनीली रोपबला
परलर घासल-विबरे हुए केवलाला-लस
बुलायो फुनफुनारयो' (जग) ।

फुट } एक [सुट भोज] १ विरमा,
फुट } बीनमा । २ प्रकट होय । ३ फुटमा
फटय हुमा । ४ फट होय । फुट, फुटै,
फुटै, फुट (सि ११, मोह ११, रे ५
१७७, २११) जग मरि विम बा २२) ।

मरि फुटिबरे बीनरु मरिबलाबलमिपरी
वा' (मोह ११) फुटिबरे (मि १२१) । बह
फुटैव फुटमाण (पह १) १ पा २ ४०

मुर ५ १२१; लाय १ १-मर १६) ।

फुट वि [सुटिबरे] १ फुट हुमा हुय
हुमा बिनीली (म ७२८ टी समर १५४)

मुर २ ६ १ १५४; ११ ११) । २
भट, पति (मुमा) । ३ विरु 'फुटिबरे'
हबरीत' (जग १ १५) विम १ १) ।

फुटमा न [सुटमा] १ फुटमा हुमा (मुप
५७) । २ वि फुटमा बाली होनेबला
(रे ५ ५२२) ।

फुटिबरे वि [सुटिबरे] बिनीली, 'फुटिबरेयो'
(मुमा ७ १४) ।

फुटिबरे वि [सुटिबरे] कपारना (मल) ।

फुट रेको फुट-सुट (मि १११) ।

फुट रेको फुट-सुट (मि १११) ।

फुट रेको फुट-सुट (मि १११) ।

फुट रेको फुट-सुट (मि १११) ।

फुट रेको फुट-सुट (मि १११) ।

फुट रेको फुट-सुट (मि १११) ।

फुट रेको फुट-सुट (मि १११) ।

फुट रेको फुट-सुट (मि १११) ।

फुटमा न [सुटमा] हुमा, बमरि होय
(पह १ १-मर २१) ।

फुमा की [सुटमा] घासल-नामक बहरीत
की एक पचली, इमरली-विरोध (ज ५
१ १६) ।

फुमा की [सुटमा] घास की कल, 'लमरु-
मुनिबरेविमरुविमरुविमरुविमरुविमरुविमरु'
(मल) ।

फुमिबरे वि [सुटिबरे] १ विरमा, बिना
हुमा (माम पा ११) । २ फुट हुमा,
बिनीली (म १११) । ३ विरु (मर १
२-मर ५) ।

फुमिबरे (मर) रेको फुमिबरे (मर) ।

फुमिबरे की [सुटिबरे] होय फेम,
फुमरी (मुमा ११) ।

फुम रेको फुट । फुम (मर) ।

फुम वि [रे सुट] हुमा हुमा (म ११५
टी कप २, ५२ टी) ।

फुमरुस न [रे] बहरीत घन-विरोध,
कैमर (सुपति ७३) मर २४ २४) ।

फुमरु मर [भम] मरुत कला । फुमरु
(रे ५ १११) । मरु, फुमरु (मुमा) ।

फुमरु मर [रे फुट + क] कुँक बाल,
फुमरे हुमा बला । फुमरु (म ५ १) ।

बह, फुमरु (म ५ १) । मरु, फुमरु (म
(म ५ १) ।

फुमरु मर [सुट] १ कपारना, बिना ।
२ कपारना । ३ विरमा घासल । ४
बहरीत होय मरुत होय 'फुमरु'
बीनरु बहरीत बापल' (म १२ ७१
मि) । बह, फुमरु फुमरु (म १२२
मुर २ १२१) बहा विम वे ६ २४ ११
२१) । बह फुरिया (ज ७) ।

फुमरु मर [अप + ह] मरुत बला
घासल । मरु, फुमरु (म १) ।

फुमरु मर [सुट] कपारना फुमरुमरुत
बहरीत- (मर १ १-मर ५२) ।

फुमरु (मर) रेको फुट-सुट (मि) ।

फुमरु न [सुटमा] १ कपारना हुमा बिना
हवा बला 'मरु फुमरुमरुत मरु रेकी
घासल' (मुर ११ १२०) । २ फुमरु
(मुमा १) बहा रेकी बमरु (१११) ।

पुष्पों का व्यापक में सम्मिल हो वह नदी
(कम्प १ २४ ३१ ३२ ३३ ३४ ३५)।

वर्षे ब्रह्मण्यक्रेतुं सग्नो (सम्पत् १५ ।
कल्पः क्षीनः सि २५) ।

वसदीपिका सि [स्रष्टादीपिका] ब्रह्मदीपिका-
शास्त्रा में लक्षण (सि ११) ।

वंशदीपिका श्री [स्रष्टादीपिका] एक वै-
मुनि-शास्त्र (सि ११) ।

वंशसिद्धि न [स्रष्टादीपिका] एक वै-
मुनि-कल्प (कल्प) ।

वंशहर न [दे] कल्प पद्य (दे १ ११) ।
वंशाय वैशो वंश (पञ्च ५, १२२) । "गच्छ

पुं [गच्छ] एक वै-मुनि कल्प (दी २८) ।
वंशि } श्री [वासी] १ वगवान् आत्मनश्च

वंशि } श्री एक धृषी (कल्प पञ्च ५, १२
ठा ५, २, धम ६) । २ सिपि-विशेष (धम

१३; भा) । ३ कल्प-विशेष (धृषा १२४) ।
४ धर्मपत्नी वैशि (सि ७९४) ।

वंशुत्तर पुं [स्रष्टादीपिका] एक विनायावाच-
क-विनायक-विशेष (विशेष ११४) । वंशसूत्र

न [पर्वतसूत्र] एक वै-मुनि कल्प (धम १६) ।
वंशि पुं [वंशि] मरुट, मोर (कल्प २९) ।

वंशिण (धम) ऊपर वैशो (सि ४ ६) ।
वक्ष वैशो वक्ष (वक्ष १ १—पञ्च ५) ।

वक्ष न [दे] वक्षः वक्षिण (दे ६, ८१;
धृषा १२४ वक्ष) ।

वक्षस न [दे] धन-विशेष 'वक्षसः' धृषाया
विनायिकाविनायकत्वम् (धृषा ५ १२; वक्ष ८

१९) ।
वक्ष वैशो वक्ष (दे २, १; धृषा १६) ।

वक्षद्वि पुं [वक्षद्वि] वैश-विशेष वक्षद्वि
वैशः वक्षद्वि-विशेषवक्षद्वि-विशेष वक्षीय-
वक्षद्वि (धृषा १४) ।

वक्षी श्री [वक्षी] वक्षुषी, वक्षुषी श्री वक्ष
(विना १ १; मोर १०) ।

वक्षद्वि पुं [दे] वैश-विशेष (दी १३) ।
वक्षसि [वक्षसि] वक्षसि वक्षसि (वक्ष

१ १ धृषा १०२) । वक्षसि [वक्षसि]
वक्षसि वक्षसि वैशसि वैशसि वक्षसि

(वक्षसि) ।
वक्षसि न [वक्षसि] वक्षसि, वक्षसि वक्षसि

वक्षसि वक्षसि वक्षसि वक्षसि वक्षसि
वक्षसि वक्षसि वक्षसि वक्षसि वक्षसि

वक्षसि [वक्षसि] १ वक्षसि-विशेष वक्षसि-
वक्षसि वक्षसि वक्षसि (धृषा १ १ २ ८) ।

२ वक्षसि वक्षसि (वक्ष १३) ।
वक्षसि } वैशो वक्षसि = वक्षसि ।

वक्षसि पुं [वक्षसि] वक्षसि वक्षसि (धृषा १३) ।
वक्ष (धम) सि [दे] वक्ष वक्षसि (धम) ।

वैशो वक्षसि ।
वक्षसि वक्षसि [वि+वक्षसि] विनायक वक्षसि,

वक्षसि वक्षसि (वक्षसि) ।
वक्षसि श्री [दे] वक्षसि वक्षसि (धृषा १११) ।

वक्षसि श्री वक्षसि (धृषा १११) ।
वक्षसि वैशो वक्षसि (दे १ २ २) ।

वक्षसि पुं [वक्षसि] वक्षसि वक्षसि (धम
वक्षसि ७११ धृषा २ ५) ।

वक्षसि [दे] वैशो वक्षसि (दे ७ ४०) ।
वक्षसि } (धम) वैशो वक्षसि (धम) ।

वक्षसि श्री [वक्षसि] १ वक्षसि-विशेष
वक्षसि १२ । २ वक्षसि वक्षसि वक्षसि वक्षसि

वक्षसि वक्षसि वक्षसि वक्षसि (धम १३ वक्षसि
वक्षसि) । श्री वक्षसि (धम १३) ।

वक्षसि श्री वक्षसि (धम १३) । वक्षसि
न [वक्षसि] १ वक्षसि वक्षसि वक्षसि वक्षसि

वक्षसि वक्षसि वक्षसि वक्षसि (धम १ १—
वक्षसि १३; वक्षसि २ १—धम १ ४) ।

वक्षसि [वक्षसि] वक्षसि वक्षसि (धम
१३) ।

वक्षसि वक्षसि [वक्षसि] १ वक्षसि-विशेष
१२ वक्षसि (धम १२ १०; वक्षसि १२) । २

धम वक्षसि वक्षसि वक्षसि वक्षसि (धम
१ १) ।

वक्षसि वैशो वक्षसि ।
वक्षसि वक्षसि श्री [वक्षसि] १ वक्षसि-विशेष

वक्षसि वक्षसि वक्षसि वक्षसि (धम १४४) ।
२ वक्षसि वक्षसि वक्षसि (धम) ।

वक्षसि [वक्षसि] १ वक्षसि वक्षसि, वक्षसि
वक्षसि वक्षसि वक्षसि वक्षसि (धम) । २ वक्षसि

वक्षसि (धम) । वक्षसि, वक्षसि पुं [वक्षसि]
१ वक्षसि वक्षसि (दे १ १०) । २ वक्षसि

वक्षसि वक्षसि (धम १ ७—वक्ष
११६) ।

वक्षसि पुं [वक्षसि] वक्षसि वक्षसि (धम
४६) ।

वक्षसि पुं [दे] वक्षसि वक्षसि (धम वक्षसि
(दे १ ८२) ।

वक्षसि } वैशो वक्षसि (धम वक्षसि) ।
वक्षसि वक्षसि

वक्षसि पुं [दे] १ वक्षसि, वक्षसि (दे १ ८८) ।
२ वक्षसि वक्षसि (दे १ ८८ वक्षसि १८

वक्षसि वक्षसि वक्षसि वक्षसि (धम १ २२१; धम
४६; वक्षसि वक्षसि) ।

वक्षसि पुं [वक्षसि] एक वक्षसि-विशेष वक्षसि
वक्षसि (विक्षा २११ दी ७) ।

वक्षसि पुं [वक्षसि] वक्षसि वक्षसि (दे १ ८
१ ८ वक्षसि वक्षसि वक्षसि वक्षसि) ।

वक्षसि [वक्षसि] १ वक्षसि, वक्षसि वक्षसि
वक्षसि (दे ४ १८०; वक्षसि) ।

वक्षसि पुं [वक्षसि] १ वक्षसि, वक्षसि वक्षसि
(दे ४ १८०; वक्षसि) । २ वक्षसि वक्षसि वक्षसि

वक्षसि वक्षसि (धम) वक्षसि वक्षसि वक्षसि
(धम १११; वक्षसि ८३) ।

वक्षसि वक्षसि [वक्षसि] वक्षसि वक्षसि
वक्षसि (दे १ ८२) ।

वक्षसि पुं [वक्षसि] १ वक्षसि वक्षसि-विशेष (धम
१८ १३) । २ वक्षसि वक्षसि वक्षसि वक्षसि

(वक्षसि १ १ वक्षसि १३, १३) । वक्षसि न
[वक्षसि] वक्षसि वक्षसि वक्षसि (विक्षा

४१ १) ।
वक्षसि श्री [वक्षसि] वक्षसि-विशेष (दे १ ६) ।

वक्षसि श्री [वक्षसि] वक्षसि-विशेष वक्षसि
वक्षसि (धम १३) ।

वक्षसि पुं [वक्षसि] वक्षसि-विशेष वक्षसि
वक्षसि (धम ४११ दी वक्षसि) ।

वक्षसि पुं [वक्षसि] वक्षसि वक्षसि वक्षसि
वक्षसि (दे १ ८८) 'वक्षसि वक्षसि'

(१ वक्षसि वक्षसि) (धम) ।
वक्षसि वक्षसि [वक्षसि] वक्षसि वक्षसि

वक्षसि वक्षसि वक्षसि वक्षसि वक्षसि
वक्षसि वक्षसि वक्षसि वक्षसि वक्षसि

बहुला की [बहुला] १ सी पैसा (पाय) ।
२ इस नाम की एक की (बना) । बग न
[यन] मण्डप लगी का एक प्राचीन बन
(टी ७) ।

बहुलि पुं [बहुलिन] स्वयम्भूत एक
राम-पुत्र (उप १३७) ।

बहुली की [बि] माया कष्ट हन्य (गुना
११) ।

बहुलिया की [बि] बड़े माई की की (पद्) ।

बहुली की [बि] बीहोपित रामभक्तिका सेलने
की पुण्यी (पद्) ।

बहुली केको बहुद (दि १ १११) ।

बहुलीविष्ट पुं [बहुलीविष्ट] व्याकरण-प्रतिष्ठ
एक सवाल (पद्यु १५७) ।

बहुल वि [प्रभुल] मृत प्रभु (पद्म) ।

बहुल्य पुं [बिमीतक] १ बहुला का वेद
(दि १ ८८ १ २, २ १) । २ न बड़ेका
का पत्र (कुमा) ।

बा वि [द्रा द्वि] दो दो की संख्या-
नाम । इस (पद्) केको बीस (पिग) ।
ईस देको बीस (पिग) । जइ की
[नयवि] बालके, १२ (सम ११ कम
१ २१) । पाठय वि [नयवि] १२ ना
(पद्म ११, ११) । पुत्र केको जइ
(पद्म १२) । याऊ, याओस कीन
[पलायिग] बन्दीय बासीय बीर
का ४२ (बन नव १५ मग; सम ११;
कन्य, बीन) की याओ, 'पानीसा (कम
१ १ कन्य) । याओसम वि [नयवि]
रिहाचम । बालीलका ४२ ना (पद्म ४२,
१७) । २, इस वि [दरा] बाह्य
१२ । 'आरमिगुविमबरी' (बंभीक २२,
कम्य ४ १; १५, नव २; १७ कन्य
की २८) कन्य) । इस वि [दरा] बाह्य
१२ ना (मुप २, १७) । रसंग कीन
[दरा] बाह्य नव वीम-यन (वि ४११)
की वि (पद्म) । रसम वि [दरा]
बाह्य (मुप २, २ २१; नव ४१ मग) ।
रसमासिप वि [दरा] बाह्य
मान ना बाप-मान-दीवधी (मुप १४१) ।

रसम न [दरा] बाह्य का सनूह (दीपमा

१५) । 'रसमरिसिप वि [दरा] बाह्य

बाह्य का (मुप १ २ कुम १) ।

'रसमरि वि [दरा] बाह्य प्रकार क

(नव १) । 'रसाह न [दराह,

दराह्य] १ बाह्य विन । २ नाम के बा

हूँ विन विना बाह्य प्रवर्ण करी (छाया

१५) । 'रसमरिसिप वि [दरा] बाह्य

बाह्य का (मुप १ २ कुम १) ।

'रसमरि वि [दरा] बाह्य प्रकार क

(नव १) । 'रसाह न [दराह,

दराह्य] १ बाह्य विन । २ नाम के बा

हूँ विन विना बाह्य प्रवर्ण करी (छाया

१ २ कन्य बीस मुर १ २२) । रसी की

[पुत्री] बाह्य की विन बाह्यी (सम २२,

पद्म ११७ १२ टी ७) । रसुचरसय वि

[दरा] बाह्य का एक सी बाह्य (पद्म

११२ २१) । रइ केको रस = बल्य (दि

१ २१६) । यष्टि की [पष्टि] बाह्य,

१२ (सम ७३, पद्म ३, १८ मुर ११

२१८; दैवद ११७) । कन्य (पद्म) । रेको

वस (पिग) । बण्य केको वस (कुमा) ।

यचर वि [सम] बाह्य का, ७२ ना

(पद्म ७२, १८) । यचर की [सम] बाह्य

बाह्य, ७२ (सम ८१) मग बीन मग

११६) । ब्रह्म कीन [पञ्चारा] बाह्य

पञ्चारा बीन के २२ (सम ७१ मग)

बाह्य की [बि] मा माया सुबहारी में 'माई

(कुम ८७) ।

बाह्य की [बि] मा माया सुबहारी में 'माई

(कुम ८७) ।

बाह्य की [बि] मा माया सुबहारी में 'माई

(कुम ८७) ।

बाह्य की [बि] मा माया सुबहारी में 'माई

(कुम ८७) ।

बाह्य की [बि] मा माया सुबहारी में 'माई

(कुम ८७) ।

बाह्य की [बि] मा माया सुबहारी में 'माई

(कुम ८७) ।

बाह्य की [बि] मा माया सुबहारी में 'माई

(कुम ८७) ।

बाह्य की [बि] मा माया सुबहारी में 'माई

(कुम ८७) ।

बाह्य की [बि] मा माया सुबहारी में 'माई

(कुम ८७) ।

बाह्य की [बि] मा माया सुबहारी में 'माई

(कुम ८७) ।

बाह्य पुं [बाह्य] १ बाह्य केत (का ३१४) ।
२ बाह्य, विष्णु (मुद्रा भाषा १११) । ३
वि पूर्व भ्रातृणी (पाप) । ४ मया नृत्य
(कप्य) । ५ पुं स्वभाव-व्यापक एक पितामह
राम (पञ्च १ २१) । ६ वि सर्वव्यापक
सर्वव्यापक (का ४ १) । ७ पुं [कवि]
तत्त्व कवि नम्य कवि (कप्य) । ८ पुं
[कवि] स्मृत होता पूर्व (मुद्रा) । माह
पुं [माह] यमक की छार-समूह करने-
वाला मीकर (पुर १ १२२) । माहि पुं
[माहि] बहो पूर्ववत् सर्व (छाया १
२—पञ्च ४) । पाय वि [पाय] बाल
हृदा करनेवाला (छाया १ २ १५) । तब
पुं [तपस] १ भ्रातृणी की तपस्वी
(अ. दीप) । २ वि भ्रातृ-पूर्वक तप करने-
वाला (कप्य १ २६) । तपस्वि वि
[तपस्वि] भ्रातृ-पूर्वक तप करनेवाला,
पूर्व तपस्वी (वि ४ १) । पंडित वि
[पंडित] भ्रातृ-पूर्वक तप करनेवाला कुछ
दोस्तों में एक ही चीर कुछ में भ्रातृ (बन)
मुद्रि वि [मुद्रि] स्पर्शित (बल ६) ।
मरण न [मरण] धरिष्ठ रक्त का पक्ष
सर्वव्यापी की मीठ (महा ५३७) । विपण,
वीपण पुं [विपण] बायल, बंदर
(छाया १ १) की. 'उपहारी बालवी-
पण' (का ३, १—पञ्च १ १) । हार पुं
[हार] बालक का छार-समूह करनेवाला
मीकर (मुद्रा ४२७) ।

बाह्य के दो कक्ष । पञ्च अ वि [ह] बह
की बालनेवाला (पाप १ २ ३, ३)
पाप) ।

बाह्य न [बाह्य] बालक, बचपन, बालकपन
बाह्य, पूर्ववत् (अ. ३ १) । के दो कक्ष ।

बाह्य के दो बाह्य = बाल (भा १११) ।

बाह्य पुं [ह] बालक-पुत्र (ह ६, ६२) ।

बाह्यगोप्यता की [ह] १ बाल-व्यभिच-
रणाव धर्म में बालना वाला कोट्य माया ।
२ बाली स्मृति (का ६, २४) ।

बाह्य की [बाह्य] १ मुद्रा की बाली
(मुद्रा) । २ मुद्रा की बाल घसलाने में
बाली घटा बह बर्ष तक की बाल (मुद्रा
११) । ३ बाल-व्यभिच (विन) ।

बाह्यगोप्यता की [ह] विरक्त, बालकपन
(मुद्रा १४) ।

बाह्य वि [बाह्य] बाल-व्यभिच मुद्रा के-
वाला (मुद्रा १४ १) ।

बाह्यता की [बाह्यता] बाला मुद्रा की
तपस्वी (मुद्रा ३१ महा) ।

बाह्यता की [बाह्यता] १ बालकपन मुद्रा
(अ. २) । २ मुद्रा के बालकी विद्या मरुता
बालिया (पाप) ।

बाह्य वि [बाह्य] पूर्व के बालक (पाप-
(अ. २६) ।

बाह्य लक्ष [बाह्य] १ विरक्त करता । २
देवता । ३ पीठा करता । ४ विरक्त करता ।

बाह्य, बाह्य (पाप १ १३, १६ १ नमः)
उप) बालि (मुद्रा १) । कनक बाह्यकाल
बाह्यमाला (पञ्च १५ १६ मुद्रा १४३)

धर्म २४४) क. बाह्यलक्ष (कप्य) ।

बाह्य पुं [बाह्य] पुं, बाल (ह १ ७)
पाप मुद्रा) ।

बाह्य पुं [बाह्य] विरक्त (अ. १४) ।

बाह्य के दो बाह्य (अ. १७) ।

बाह्य पुं [बाह्य] हाथ, मुद्रा (वि २) ।

बाह्य वि [बाह्य] १ देवता (पाप १
४६) । २ विरक्त (अ. १५३) । कनक बाह्यकाल
(पाप ११२) ।

बाह्य पुं [बाह्य] बालक, बाल (मुद्रा १४३)
का स्वभाव-व्यभिच मनी (मुद्रा ६) ।

बाह्य न [बाह्य] १ बाल विरक्त (अ. १५३)
१२७६) । २ विरक्त (पाप ११ ३) ।

बाह्यता की [बाह्यता] अर के दो (अ. ११२)
११२) ।

बाह्य के दो बाह्य (पाप) ।

बाह्य पुं [बाह्य] देव-विशेष (अ. १५३) ।

बाह्य न [बाह्य] स्मृता मोह (अ. १५३)
१५३) । २ विरक्त (पाप ११ ३) ।

बाह्य की [बाह्य] १ हाथ हाथ । २
विरक्त (मुद्रा १११) । ३ पीठा वरुण
लक्ष के हाथीनी पीठा (ह १) बह
१४) ।

बाह्य की [बाह्य] हाथ, मुद्रा (ह १ १६)
मुद्रा महा ज्ञा दीप) ।

बाह्य की [ह बाह्य] नरनाम-व्यभि
(विन ७७) ।

बाह्य पुं [ह बाह्य] बाह्य (मुद्रा ११-
बाह्य) वन २७१ महा बाला मुद्रा १२
१४) वि ४८१) ।

बाह्य न [बाह्य] बालक, बाल (वि २ ३) ।

बाह्य वि [ह बाह्य] बाह्य (ह २ १४)
पाप बाह्य, उप) । लो ध [ह बाह्य]
बाह्य के (कप्य) ।

बाह्य वि [बाह्य] बाह्य का (पाप ३
२, १—पञ्च १३, ३, ५, ५) । लक्ष
पुं [ह बाह्य] कनकपन का एक दो
कोटी पाप विरक्त पीठा पीठा की पीठा
विद्या बाह्य कनकपन (विन ४५१) ।

बाह्य वि [ह बाह्य] बाह्य का बाह्य
(मुद्रा २, १ ४२) ।

बाह्य वि [ह बाह्य] बाह्य का बाह्य
बाह्य के दो कक्ष करनेवाला (अ. १३) । लक्ष
१ १) वि १११ दीप कप्य) ।

बाह्य वि [ह बाह्य] विरक्त के बाह्य
की मुद्रा-विन नम के बाह्य का मुद्रा
(मुद्रा २ ७ १६ २६) ।

बाह्य वि [ह बाह्य] बाह्य का (अ. ११
२६२) ।

बाह्य पुं [ह बाह्य] १ हाथ मुद्रा (ह १
१६) बाह्य (मुद्रा) । २ पुं बालक अरुण
का पुत्र बाह्य (मुद्रा ११ १) । लक्ष
पुं [ह बाह्य] १ बालक विरक्त का एक
पुत्र लक्षिका का एक पुत्र (अ. १
५३३ ४३३) । २ बाह्य के लक्ष
का पुत्र (पञ्च ३, ११) । मुद्रा न [ह बाह्य]
का बाल (कप्य) ।

बाह्य पुं [ह बाह्य] स्वभाव-व्यभिच एक कवि
(मुद्रा १ ३ ४ २) ।

बाह्य वि [ह बाह्य] बालक लक्षिका (मुद्रा
४४४) ।

बाह्य की [ह बाह्य] लक्षिका बाल-विन
(पाप) ।

बाह्य के दो बाह्य (मुद्रा १६) ।

बाह्य पुं [ह बाह्य] बालक बाल (अ. १६)
(अ. १६) ।

विभेज्य रेको वरेज्य (पण १—पत्र ११) ।
बिराड पुं [बिराड] ? निपम-प्रतिष्ठ मय्य
बहुक पात्र मायामा फल-समुद्र । २ ब्रह्म
विरोध (पिप) ।

बिराड रेको बिराड (पु १ १८) ।

बिराडिया रेको बिराडिया (सम्पत्
बिराडि १२४; पाप) । २ बुधपतिवर्ष
विरोध हास से कलनेवाला एक प्रकार का
बाणी (पु २ ३ २२४) ।

बिराडिया की [बिराडिया] स्वयं-कर्म
विरोध (माया २ ? ३) ।

बिरुड न [बिरुड] इन्काव पवरी (सम्पत्
२४१) ।

बिरुड न [बिरुड] १ उद्य विवर, धर्म धारि
कन्युओं के धर्म का स्थल (बिरा १ ७
पत्र) । २ मूल मुद्रा (पप) । कोकोभारक
वि [बि] कोकोभारक दूसरे को आमुक
करने के लिए विवर बचन बीमनेवाला
(पण १ ३—पत्र ४४) । पतिव्या की
[पतिव्या] बाल की पतिव्या (पण २,
३—पत्र १५) ।

बिराड रेको बिराड (सम्पत् २४१) ।

बिराडिया रेको बिराडिया (पि २४१) ।

बिरुड पुं [बिरुड] १ बुध-विरोध बेल का पत्र
(पण १; क २ ११ टी) । २ न बेल का
फल (पप) ।

बिरुड पुं [बिरुड] १ धर्मावै वैय-विरोध ।
२ उद्य वैय वैय-विरोध मय्य-भाति (पण
१ १—पत्र १४) । रेको बिरुड = विपत्ति ।

बिरुड न [बिरुड] कर्म धारि के नाम का
पत्र, मुद्रा (पण १ १३; मुद्रा पाप) ।
नदी की [कट्टी] बलाक बक पवरी की
एक जटि (बि १ २३) । रेको बिरुड =
विपत्ति ।

बिरुड रेको बिरुड (बि १ २३) ।

बिरुडि की [बिरुडि] कर्म-विरोध कर्म
का कर्म (पि १ २) ।

बिरुडि की [बिरुडि] धर्म का धारक (बि १
न ३ पि २ २) ।

बिरुड घक [बि] उरगा । बिरुड (पत्र ५४
पि २ १) ।

बिरुड वि [बिरुड] बका, महात्मा । पत्र पुं
[नर] कर्म-विरोध (पिप) ।

बिरुड रेको बिरुड (बि २, १३४;
बिरुड १ १३४ २, १४ पत्र) ।
बिरुड रेको बिरुड (पत्र ५४; पु १ १८) ।

बिरुड रेको बिरुड (पत्र ५४) ।

बिरुड रेको बिरुड (बि २ २ २४) ।
बिरुड रेको बिरुड (बि १ २ २ ४२; पु १
१८; पु १ ४२) ।

बिरुड न [बिरुड] १ बिरुड बीया 'बिरुड-बीया'
बिरुड बीया नार बिरुड बिरुड (पत्र
१३१; पाप) की १३ बीया) । २ बिरुड
कारण 'बिरुड-कारण' बिरुड-बीया-बिरुड-
बिरुड-कारण (पत्र) । ३ बीया-बिरुड-
बिरुड-कारण से बिरुड बिरुड, बिरुड (पु १
२३; पत्र २) । ४ 'बिरुड' बिरुड (पि १
२३१) । बिरुड वि [बिरुड] बिरुड बिरुड को
बिरुड से बिरुड बिरुड का बिरुड बिरुड से बिरुड
बिरुड-बिरुड (बीया) । बिरुड वि [बिरुड]
बिरुड-बिरुड (पण १ १) । बिरुड की
[बिरुड] एक बीया पत्र से बिरुड पत्र बीया
पत्रों का बिरुड-बिरुड हाप बिरुड-बिरुड की ।
२ वि बिरुड बिरुड-बिरुड (पत्र १) । बिरुड वि
[बिरुड] बिरुड से बिरुड बिरुड-बिरुड-
बिरुड (पत्र १) । 'बिरुड' पुं [बिरुड] बिरुड-
बिरुड (पत्र) । बिरुड न [बिरुड] बिरुड-
बिरुड का बिरुड (पत्र) ।

बिरुड-बिरुड न [बिरुड-बिरुड] पत्र-विरोध एक
पत्र का बिरुड (पत्र १३१) ।

बिरुड-बिरुड न [बिरुड-बिरुड] बीया बिरुड का बिरुड—
बिरुड-बिरुड (बि १, २३) ।

बिरुड पुं [बिरुड] बीया रेको (बि १ २३ टी) ।
बिरुड पुं [बिरुड] बिरुड-बिरुड बिरुड-
बिरुड-बिरुड का बिरुड (बि १, २३, पाप) ।

बिरुड-बिरुड पुं [बिरुड-बिरुड] बिरुड-बिरुड
बिरुड की एक बिरुड (पत्र २४१) ।

बिरुड की [बिरुड] १ बिरुड-बिरुड बिरुड
(बि २४) का २३, पत्र २; पाप १
१; पु १ १३) । २ बिरुड-बिरुड
(बिरुड २ ३) ।

बिरुड रेको बिरुड = बीया
१—पत्र २३) ।

बिरुड न [बिरुड] बीया पत्र का बीया,
उरगा-बिरुड (पु १ १३) ।

बिरुड } बी [बिरुड टी] बिरुड रेको
बीया } 'बिरुड-बीया' बीया बिरुड
बिरुड-बिरुड (बिरुड १४) ।

बिरुड-बिरुड पुं [बिरुड-बिरुड] बिरुड-बिरुड
पत्र (पत्र १३१) ।

बिरुड-बिरुड } वि [बिरुड-बिरुड] बिरुड-बिरुड
बिरुड-बिरुड } बिरुड-बिरुड । २ बिरुड-बिरुड
बिरुड (पत्र १३१; पाप १ २ २३) । ३ पुं
पत्र का एक बिरुड (पत्र २३, २) ।

बिरुड-बिरुड वि [बिरुड-बिरुड] बिरुड-बिरुड
बिरुड-बिरुड (पत्र १३१; पाप १ २ २३) ।

बिरुड पुं [बिरुड] बिरुड-बिरुड-बिरुड-
बिरुड का एक बिरुड (बि १, २३) ।

बिरुड घक [बिरुड] उरगा । बिरुड, बिरुड (बि
४ २३; पत्र १ २३१) । बिरुड-बिरुड
(बीया १३१; पत्र ४२३ टी पु १) ।
बिरुड-बिरुड (पत्र २३१) ।

बिरुड-बिरुड रेको बिरुड-बिरुड (पि १३१) ।
बिरुड-बिरुड } वि [बिरुड-बिरुड] बिरुड-बिरुड
बिरुड-बिरुड } बिरुड-बिरुड (पि १३१; पत्र १ १)
बिरुड-बिरुड } पत्र १३, २४) ।

बिरुड-बिरुड वि [बिरुड-बिरुड] बिरुड-बिरुड
(पत्र १३१) ।

बिरुड-बिरुड वि [बिरुड-बिरुड] १ उरगा बिरुड (बि ४
२३) । २ न बिरुड, उरगा 'बिरुड-बिरुड'
बिरुड-बिरुड (पा १४) ।

बिरुड-बिरुड वि [बिरुड-बिरुड] बिरुड-बिरुड (पु १ १३)
बिरुड-बिरुड } बिरुड-बिरुड (पि १३१; पत्र १ १)
बिरुड-बिरुड } पत्र १३, २४) ।

बिरुड-बिरुड वि [बिरुड-बिरुड] बिरुड-बिरुड (पु १ १३,
२४; पत्र १३, २४; पत्र २, २) ।

बिरुड-बिरुड वि [बिरुड-बिरुड] बिरुड-बिरुड (पु १ १३,
२४; पत्र १३, २४; पत्र २, २) ।

बोहयेर न [बे] छम-विधेय (वाय) ।
 बोहिय पु [बोहिय] १ विस्मर केन संर
 बाय । २ वि विस्मर केन संरबाय का
 भुम्भसी 'बोहियविमृष्टी बोहियविमृष्ट
 होर ज्यसी' (विह १ ४१ २३३२) ।
 बोहिय वि [बे] गुह्यव्य-मन्त्र (?)
 'बोहियमणि बुन मण्ड' (बोबा ४१ टी) ।
 बोहुर न [बे] रम्यु बाही-मूक (वि १ २४) ।
 बोहिया श्री [बे] कपटिषा कीटी 'बेधरि
 न बहुर बोहियवि मय मन्त्रेति केवति' (वि
 ४ १३३) ।
 बोहर न [बे] पुष्ट, विद्या (वि १ २६) ।
 बोहि रेको बोहि (बीन) ।
 बोह [ह] रेको बोह [वाय] ।
 बोह वि [बोह] कुल-मण्ड (संघोष १४) ।
 बोहण्य रेको सुमन ।
 बोह [बे] वस्य बबल (वि ७ ८) ।
 बोभय न [बोभय] बीन रिखा जनेय
 (सम ११६) ।
 बोभय रेको सुमन ।
 बोधि रेको बोधि (ठा २ १—यम ४४) ।
 सध पु [सध] छम्यु बरीन को प्रास
 प्राणी, मर्त्य के का यल बीन (संघ ६) ।
 बोधिय वि [बोधिय] भावि धनयित
 (मर्त्य १ २) ।
 बोधय [बे] मूक (पय धकस्य ४७
 पय २४१) ।
 बोह न [बोह] कन-विधेय बेर (य २ ।
 वि १७) । यः कुमा) ।
 बोरी श्री [बोरी] बेर का याह (माह ४ वि
 १ १७) । कुमा हका २३२२) ।
 बोस एक [बोस] कुला, 'पंथोको सं
 बीन भिखवसिष्ठियु संथ बडो' (वाही
 ११४) । 'कुल बीनर धन' (सुख ११)
 बोहर, बोहण (संघोष १३) 'केसि य बंविपु
 बने विनायो ज्योति बोहिय म्हाभवेति'
 (सुम १ १ १) बोलेम (विह १३०) ।
 'बुभमिरी भोय बोहय बह' (जवर १२२) ।

बोह एक [क्यति + क्य] १ पवार होमा
 पुवरा । २ एक उत्तमन करण 'बूई ए
 एह, बंधीय ज्यको बागिणीय बोहे' (वा
 ८२४) 'पुणी सं बंधेण न बोहय क्यह'
 (पायक ३३) । बोसए (बंन) । रेको
 बोह = यम ।
 बोह पु [बे] १ कनकस कोबाइल (वि ६
 २ मका यका क्यु जय कय २ ६)
 'हासबीसकस' (वीग) । २ समूह 'कनक-
 गुरेण रक्षयिम वीसले पयपुस्तकसबी'
 (मय १ कुलक ३४) ।
 बोह्य पुन [बे] प्राह १ मयन हुना ।
 २ कर्ण बीबाय 'बहुत बोहने पमेति'
 (विपा १ १—यम १८) ।
 बोहिय वि [बोहिय] हुनाया हुमा (बक्या
 २८) ।
 बोहियी श्री [बे] सिपि-विधेय बाहरी सिपि
 का एक मेक 'भाह्यपरीबी बासिपिरी बोहि-
 सिपिरी' (सम ३३) ।
 बोह एक [क्यय] बोहना, क्युना । बोह
 (वि ४ २ प्राह ११६ सु ४ १२७)
 मर्त्य । कर्म. बोहियार (यय) (कुमा) ।
 ह बोहियार (यय) (कुमा) । मर्त्य, बोहा
 न (कुमा) ।
 बोहय पु [क्यय] बोह बचन (वा १ ३) ।
 बोहयय वि [क्ययिय] बोहने का स्वयक-
 नाता (वि ४ ४४४) ।
 बोहा श्री [क्या] नाप बला 'गीयबीसपय'
 (कय १ १२) ।
 बोहियवि वि [क्यवि] सुबाया हुमा (य
 ४२१ १११) ।
 बोहिय वि [क्यिय] १ पय । २ न, धमि
 (विह १ ४ ३८३) ।
 बोहय न [बे] लेख लेख (वि २६) ।
 बोह एक [बोहय] १ समझा, जान
 कयना । २ बयना । बोह (कय) । कर्म
 बोहियार (यय) । बह बोहिय बोहिय
 (सु १२, २४४) मय । कर्म बोहियार
 (सु १ १४२, न ११२) । ठेठ बोहिय
 (ययक १७६) ।

बोह पु [बोह] १ जान समन (वी १) ।
 २ बायण (कुमा) ।
 बोह्य रेको बोहय (वि १) ।
 बोहण रेको बोहय (जय २ ६, सु १ १७
 जवर १) ।
 बोहय वि [बोहय] बोह सेनाना जान-
 बाता (सम १ याना १ १) यम क्य) ।
 बोहय पु [बे] मायण छुपि-पाठक (वि ७
 २७) ।
 बोहारी श्री [बे] सुगरी धर्मार्थी म्हा.
 (वि १ २७) ।
 बोहि श्री [बाधि] १ मुख बने का नाम
 छमर्त्य की मासि 'बुद्धा बोहि' (जय १६
 २३८) 'बोहि विरोहि मयिमा मर्त्यरे मुख
 कम्मवर्ती' (विह ३३२) संघोष १४ सम
 ११६ कय ४८१ टी) । २ धमिया धनुम्या
 यम (पय २ १) । रेको बोधि ।
 बोहिय वि [बोहिय] १ भावि छमभया
 हुमा (यय) । २ विद्यावि विबोधि न्दवि
 किरखयणबोहियस्यरात — (क्य) ।
 बोहिय पु [बोहिय] मनुष्य हुपनेबला
 ओर (विह १) वेधय ४४४) ।
 बोहिय रेको बोह = बोधय ।
 बोहिय रेको बोहिय = बोधिक (यय) ।
 बोहिय पुन [बे] प्रहण बहान यमपाय
 मीम (वि ६ २६, य २ १ वेधय २४४
 सु २२२ विह १८३) छमय १२७
 सुपा २४४ विह) ।
 बोहियवि वि [बे] मयहल-विह (बक्या
 १२८) ।
 कर्म रेको मर्त्य (सुपा ४ ६) ।
 कर्मर रेको मयार (माह—सुपा १२) ।
 'क्यास रेको बक्यासा' किनु मयहना या
 विहियविहिय सुख न हुकोह (सुपा २६७) ।
 'विम वि [विम] वेधन कर्मनेबला, बाह-
 कर्मा 'धमयम' (याना १ ४ ४ १) ।
 ओ (यय) रेको यू । बोहि (प्राह १११) ।

(पञ्च ४४ ४ सुपा ३०) शास्त्र १ १ ;
सुर १४ १४ वा २०) ।

मन्त्रेण पु [मन्त्र] मन्त्र भोजन 'मोक्षीर
वीर्यवर्धनचामरं करिष्ये दात्र' (सुपा
२६०) ।

मन्त्रेण वैश्वो मन्त्र = मन्त्र ।

मन्त्रेण पुन [मन्त्र] बहव ज्ञाप्य बीली का
व्या हुया बाप इत्य मित्रैः (सुत्र २ टी) ।

मन्त्रेण वि [मन्त्र] मन्त्र करिष्येता
(सुत्र २६) ।

मन्त्रेण न [मन्त्र] १ भोजन (पण्ड २८) ।
२ वि ज्ञानेतात् 'मन्त्रेण' (वा २८) ।

मन्त्रेण वा बी [मन्त्र] मन्त्र करिष्येता
(उवा) ।

मन्त्रेण पु [मन्त्र] १ मूर्तः एव (उवा
१३ ४८; बह्व १) । २ धर्मि नमि ।
३ धर्मं कृत (वै) ।

मन्त्रेण न [मन्त्र] १ भोजन-विशेष
वी पीतम पोष बी दात्रा है । २ सुवी क्त
पोष में उत्पन्न (उ ४—पञ्च १६) ।

मन्त्रेण न [मन्त्र] विज्ञाप्य (उप
१६ टी) ।

मन्त्रेण वि [मन्त्र] ज्ञानेतात् (पीप) ।
मन्त्रेण वि [मन्त्र] ज्ञाना हुया (मनि) ।

मन्त्रेण वैश्वो मन्त्र = मन्त्र ।

मन्त्र पुन [मन्त्र] १ ऐश्वर्यः । २ क्त । ३
वि । ४ क्त कीर्ति । ५ कर्त्त । ६ प्रपन्ना
'इत्येति' (विने १ ४८ कैश्य २) । ७
मूर्त एव । ८ भावतत्त्व । ९ विज्ञाप्य । १०
भुक्ति, भोज । ११ बीर्तः । १२ दण्ड्य (दण्ड-
टी) । १३ ज्ञान (ज्ञाना) । १४ पुनःप्राप्तुनी
भाव (पुनः) । १५ बी. बीपि ज्ञान-विज्ञान
(पण्ड १ ४—पञ्च १८ सुत्र १) ।

१६ वैश्वेनोप दुराकास्तुनी नम्र वा
महिम्ना वैश्वेनोप वैश्वेनोप (उ २
३ सुत्र १ १२) । १७ हुया बीर्यवर्ध-
नोप के बीप वा ताल (हर ३) । दण्ड पु
'दण्ड' दण्ड-विशेष (३ ४ १६६) । १८
कौतः ६५ (वैश्व वा) । १९ बी 'वैश्वेन'
१ वैश्वेनोप-वैश्वेनोप नम्र (विने) । २

मन्त्रेण-मन्त्र पीपि बीन दण्ड-मन्त्र (पञ्च
२, १२३) । वैश्व वि [वैश्व] ऐश्वर्य-वि
हुया-मन्त्र । १ पुं परमेश्वर, परमात्मा
(पञ्च विने १ ४८ प्रपन्ना) ।

मन्त्रेण पु [मन्त्र] टोक्-विशेष—पुन के
पीपि भाग में द्वैतवत्ता एक प्रकार का
प्रेम (उवा १ १३ विपा १ १) ।

मन्त्रेण वि [मन्त्र] मन्त्र करिष्येता
(वा १६; बीपि ४४) ।

मन्त्रेण वि [मन्त्र] मन्त्र करिष्येता
(वा १६; बीपि ४४) ।

मन्त्रेण वि [मन्त्र] मन्त्र करिष्येता
(वा १६; बीपि ४४) ।

मन्त्रेण वैश्वो मन्त्र (पञ्च) ।

मन्त्रेण वैश्वो मन्त्र (पञ्च) ।

मन्त्रेण वैश्वो मन्त्र (पञ्च) ।

मन्त्रेण वैश्वो मन्त्र (पञ्च) ।

मन्त्रेण वैश्वो मन्त्र (पञ्च) ।

मन्त्रेण वैश्वो मन्त्र (पञ्च) ।

मन्त्रेण वैश्वो मन्त्र (पञ्च) ।

मन्त्रेण वैश्वो मन्त्र (पञ्च) ।

मन्त्रेण वैश्वो मन्त्र (पञ्च) ।

मन्त्रेण वैश्वो मन्त्र (पञ्च) ।

मन्त्रेण वैश्वो मन्त्र (पञ्च) ।

मन्त्रेण वैश्वो मन्त्र (पञ्च) ।

मन्त्रेण वैश्वो मन्त्र (पञ्च) ।

मन्त्रेण वैश्वो मन्त्र (पञ्च) ।

मन्त्र वैश्वो मन्त्र (पञ्च २ १ १ २) ।

मन्त्र वैश्वो मन्त्र = मन्त्र ।

मन्त्र वैश्वो मन्त्र ।

मन्त्र वैश्वो मन्त्र ।

मन्त्र वैश्वो मन्त्र ।

मन्त्र वैश्वो मन्त्र ।

मन्त्र वैश्वो मन्त्र ।

मन्त्र वैश्वो मन्त्र ।

मन्त्र वैश्वो मन्त्र ।

मन्त्र वैश्वो मन्त्र ।

मन्त्र वैश्वो मन्त्र ।

मन्त्र वैश्वो मन्त्र ।

मन्त्र वैश्वो मन्त्र ।

मन्त्र वैश्वो मन्त्र ।

मन्त्र वैश्वो मन्त्र ।

मन्त्र वैश्वो मन्त्र ।

मन्त्र वैश्वो मन्त्र ।

मन्त्र वैश्वो मन्त्र ।

मन्त्र वैश्वो मन्त्र ।

भमाइअ जि [भमिअ] हुमाया हुपा, छिपाया
हुपा (स ३ ११)।

भमाइ छक [भमय्] हुमाया छिपाया।

भमाइ (हे ४ ३०) भमाये (सुपा ११४)।

बइ भमाइठ (पउम १ ९ ११)।

भमाइ देवा भम = भय। भमाइइ (हे ४
१११) भमि।

भमाट दु [भम] भयण भयण बहर
(घोषय २६ टी १३ टी)।

भमाडण न [भमण] हुमाया (उ ४
२७)।

भमाइअ देवो भमाइअ (हुमा)।

भमाइअ जि [भमिअ] हुमाया हुपा
छिपाया हुपा (पउम १६, २३)।

भमाय देवो भमाइ = भयम्। भमाइइ,
भमाइइ (नि २२१; हे ४ ३)।

भमाम [इ] देवो भमत (हे १ १ १;
पाय)।

भमि श्री [भमि] १ धावर्त पायी का बह-
कार भयण (धण्ड २१)। २ बिअ-भम
करे श्री खण्ड (सिंहे १६२१)। ३ रो-
विरोध बहर 'भमिभमिभमिभमि' (हमरी
२८)।

भमिअ देवो भमाइअ (बी ४८ भमि)।
३ न भमरा; 'भमिभमिभमिभमिभमि' (बा
२२३)।

भमिअ देवो भमाइअ (पाय)।

भमिअय्य } देवो भम = भय।
भमिअ }

भमिर नि [भमिअ] भयण करेवाता (हे
२, १४२; गुर १ २२, ३ १८)।

भमुइअ [भू] नौ देवो 'भोइअ भमुइअ'
(पाय २, ११ १०)।

भमुइअ श्री [भू] श्री, श्रीक के ऊर श्री
रोम-भनी (पउम ३० २ श्रीका पाया
पाय)।

भमम् } देवो भम = भय। भमइ (पाय
भमम्) (६६) भमय (पा ४१२ ४४७)।

भमइ (हे ४ १११)। भमइइ (हुमा)।

भमर (पा) देवो भमर (विप)।

भय देवो भय। बइ देवो भयव = भयव।

भय एक [भय] १ देवा करता। २
विष्णु से कपा। ३ विमग करता। ४

प्रवृत्त करता। भयइ, भयइ (सम
१२४ हुमा) भय, भयइ (इ १) भयति

(सिंहे १६६)। ठम्हा भय श्रीक केरम'
(पु ११)। बइ भयव भयमाण (सिंहे
१४४; सुपा १ २ २, १०)। कइ

'भयपुभयमाणपुइहि' (हुमा)। छंइ
भइता (ठा १)। इ भइअ, भइअय्य,

भययय्य भइ भयणिअ (सिंहे ११८
२ ४६; उत १६, २३ २४-२२, कम्प

३ ११ सिंहे ११३; उत १ ४ सिंहे
३२ २ ७४; १८ श्रीक १४३, संभ

३, का सिंहे ६११; श्रीक १४०)।

भय न [भय] इर, नल धीति (पाया) लाया
१ १ पा २ हुमा प्रमु १६१ (७२)।

भर नि [भर] भय-भक्त (सि ३, ४४
११ ७२)। अणणा श्री [अननी] १

नाच जपन करेवाता (इ १)। २ बिषा
विरोध (पउम ७ ४४१)। बाइ दु [बाइ]

घण्ट-भर का एक रजा एक संज्ञा पति
(पउम ३, २६१)।

भय देवो भय (जभ हुमा ठण हुमा ४२;
गउठ)।

भय देवो भय (वीय विप)।

भयकर नि [भयकर] १ भय-भक्त घोषण
(हे ४ १११ उत भमि)। २ भयि-भय

हिण (पण्ड १ १)।

भयव देवो भय = भय।

भयव देवो भय = भयव (सुपा १ ११ ६)।

भयव देवो भयव (घोष ४८ उत २ ११

धीय)।

भयव देवो भय = भयव (सिंहे १४४६;
१४२१; ११२४)।

भयव देवो भय = भयव (सिंहे १४२४
धीय)।

भयव नि [भयव] भय से रजा करेवाता
(वीय सुपा १ ११ ६)।

भयव नि [भयव] भय से रजा करेवाता

'भयमाइअ श्री भयव' (सुपा १ ४ १
२२)।

भयव नि [भयव] देवक देवा करेवाता
(वीय)।

भयव } दु [सुनक] १ श्रीक, कर्मकर
भयव } (ठा ४, १ २)। २ नि पोपि

(पण्ड १ २ लाया १ २)।

भयव न [भयव] १ देवा (राय)। २

विनाय (सम १११)। ३ दु बोभ (सुपा १
६ ११)।

भयव देवो भयव (गाट—वेत ४)।

भयणा श्री [भयणा] १ देवा (जिपु १)।

२ विष्णु (सम १२४ १ ११ उत)।

भयपयइ } देवो भयपयइ (हे २ ११७
भयपयइ } पय)।

भयपयगाय दु [वि] मोरेक पुनघट का एक
नौ (हे १ २ २)।

भयणभ नि [भयणभ] भयव, भय-भक्त
(उ १२१)।

भयलि दु [भयलि] भयवदेव के भावी
भयवदेव के भयव का पुत्र-भयव नाम (सम
११४)। देवो छयालि।

भयलु नि [भयलु] भय, इरलोक (हे ६
१ ७ गउठ)।

भयवण (भय) देवो भयवण (भमि)।

भयवह नि [भयवह] भय-भक्त भय-भक्त
(सुपा १ ११ २२)।

भर एक [भर] १ भय। २ बाण करता।

३ पोषण करता। भय (भमि विप), भय
(कम्प ४ ७६)। बइ भरत (भमि)।

भय भरत, भरत भयव (सि १
२८४ ८ १ १०)। छंइ भयव (पाय ६)

भयव, भयव (पाय ६ १०)।

भयव, भयव (पाय ६ १०)।

भयव [भय] भयव करता भयव (पाय
४४ (हे ४ ७४ भय)। बइ भरत

(पा ४८ भमि)। बइ भरत भयव (हुमा)।

भयव [भय] १ भयव भयव भयव

भयव भयव भयव भयव भयव भयव

६८) । २ कहवन्ता हुवा 'मवलुसिलिमाए
 एओ मन्नाए भासिओ मंत्री' (मुग १८०) ।
 भाणु पुं [भाणु] १ मूर्त रहि (पञ्च ४८,
 १२ पुण्ड ११४) लिखि १२) । २ लिख
 (प्राप्त) । ३ मगमाय बर्तनका का रिता एक
 राजा (सम १११) । ४ ओ एक हजारी
 शक ओ एक मय-महिषी (पञ्च १ २
 १२६) । कण्ण पुं [कर्ण] चण्ण का
 एक धनुज (पञ्च ७ १७) । मई ओ
 [मत्त] चण्ण की एक पत्नी (पञ्च ७४
 १) । माहिणा [माहिनी] विद्या-विद्येय
 (पञ्च ७ ११६) । मिथ न [मिथ] न
 उज्जयिनी क राजा कसविन का छोटा भाई
 (राज्य विचार ४६४) । 'मिग पुं [मिग]
 एक विचार का नाम (महा छण) । 'सिरी
 ओ [सी] राजा कसविन की बहिन (राज्य) ।
 भास देओ ममाड ७ प्रपय । भास (६ ४
 १) । बण्ण भासिज्य (मा ४१७) । क
 भासयक्य (सी ७) ।
 भासण न [भासण] बुलाता किरण (सम्पत्
 १७४) ।
 भासत न [भासत] १ नकुविद्येय प्रपरी का
 कन्या हुवा मधु (पञ्च ४) । २ पुं लोक
 राज का एक भेद (निग) ।
 भासरी ओ [भासरी] १ नील-निरीय
 (राजा १ १०—पञ्च २२२) । २ प्रसिद्धा
 (कण्ण ४१) ।
 भासिअ रि [भासिअ] १ बुपमा हुवा (६ २
 ११) । २ प्रत्य विद्या हुवा भासत-विद्य
 विद्या हुवा 'कलमप्रमिषी हव (न २७;
 पयसि २१) ।
 भासिणी ओ [भासिनी] भासवन्ता (६
 १ १२; बुग) ।
 भासिणी ओ [भासिनी] १ नील-नीला ओ ।
 २ ओ मरिजा (पा १२ मु १ ७१ मुग
 ४३१; समस १२१) ।
 भास देओ भाड (बुग) ।
 भासत देओ भा—भा ।
 भापन पुं [भाजन] १ पात्र । २ पात्र ।
 ३ बीज 'भापला भापनी' (६ १ ११
 २६७) 'ति बिद बज न बुधभापण, छण
 जीसि कर' (म १६०; बुग) ।

भापन न [भाजन] भाकरा पान (पञ्च
 २ २—पञ्च ७७६) ।
 भापयण पुं [भाजनाङ्ग] कलकल की एक
 भाति पात्र देननामा कलकल (पञ्च १ २
 १२) ।
 भापणिअ देओ भापिअ (बर्तन १२
 का) ।
 भापमाय देओ भास = भाषय ।
 भापर देओ भाड (बुग) ।
 भापय पुं [वे] भाप करन जतम भाति का
 पोड़ा (६ १, १ ४; पास) ।
 भाप पुं [भाप] १ बीमा दुष्य (बुग) ।
 २ कलकली कल, कलकली बीज (भा
 ४ ४) ३ भाप संगतन करने का धर्मिभट
 'भासकमेदिपुते ओ निवमार हकिपु निवपुते
 न य कोइ सकर' (शानु १७) । ४ परि
 भाण-विद्येय 'भापवीथी इह' भास भाप
 दुष्य कह छटा' (शानु १२१) । ५ परिषद,
 पन-भाप यात्रि का संग्रह (पण्ड १ ४) ।
 गानो य [प्रदास] 'भास भास के परिभाष
 वे 'बधुचलमल्ले दुष्कमली का भापको
 य' (शानु १ ४—पञ्च १२४) । बह वि
 [पह] बीमा होवना (भा ४०) । 'बह
 वि [पह] बरी धर्म (पञ्च १७ २२) ।
 भास छी [भासनी] भापा वाली भाप
 कल (पास) । देओ भासरी ।
 भासराय } न [भासराय] १ नील-विद्येय
 भासराय } ओ नील नील की एक छाटा
 'ह' (कण्ण १२४) । २ पुं भापन
 नील में छाटा 'बी बीमा से गमा से भासरा
 (१ शानु) 'वे मरिजा' (छ ७—पञ्च
 ११) । कति-विद्येय (बीपमा ८४) । ४
 बुनि-विद्येय (नि २११ २६७ १६१) ।
 भास देओ भास (मुग १४ १६२) ।
 भास न [भास] १ भासवर्त बल-नील
 (राज) 'बहा निरने वलविनी कलकल'
 'कलकल पुं' (छ २ १ १४) । २
 कलकली की का बुध म्हाभास (पञ्च
 १ २, १६) । ३ कल-विद्येय विनये वाहदा
 नील बुध का वर्तन है, कल-बुनि प्रलीन
 महाभास (बुग ४२ १ ८) । ४ कल

मुनि-प्रलीन भास-कास (धणु) । ५ वि
 भासवर्त-सम्बन्धी, भासवर्त का (ठा २
 १—पञ्च १६) 'तय बलु बरे बुने मुरिया
 पलाता छ' कहा—भास देओ मुरिय, एरब
 'वे मुरिय' (बुग १ १) । 'खेत न
 [मिथ] भासवर्त (छ २ १ टी—पञ्च
 ७१) ।
 भापिअ वि [भापिअ] भास-सम्बन्धी
 'भा भापिअकहा हव भीमकुणनजनछणि
 कोहिला' (मुग २६) ।
 भासरी ओ [भासरी] १ मल्लो देओ (पि
 २ ७) । २ देओ भास (६ १२६) ।
 भासिअ वि [भासिअ] भापि भासना मुक
 (६ ४ २; शानु १ १ पञ्च—११४) ।
 भासिअ वि [भासिअ] १ भासना भापि
 (पञ्च ११४) । २ जिस पर भास लावा
 गया हो वह, भास-मुक किया गया (मुक
 २ २४) ।
 भासिआ देओ भास (६ २ १ ७; शानु
 शानु २) ।
 भासिअ वि [भासप] भापि बीमनास
 (बर्तन ११७) ।
 भास छ पुं [भासछ] ओ बुद्ध धीर एक छटीर
 भाता पत्नी पवि-विद्येय (कण्ण ४१ महा
 ६ ६ १ ८) ।
 भास न [भास] लता (पास बुग) ।
 भासुं की [वे] देओ मल्लुं की (पञ्च १६) ।
 भास पुं [वे] मल्ल-वेला काज-नीका
 (छ १७) ।
 भास छ [भासप] १ भासिअ कला दुष्क-
 पान कला । २ कलन करना । भास
 (पिने ६८) भासिअ (नि २२६) 'भासछ
 भास' (६ १२) भासपु (पण्ड) । बर्त,
 भासिअर (शानु १७) । बह भासन,
 भासमाय, भासमाय (मु १ ८२; बुग
 २६४; बग) । छह, भासिआ, भासिअर
 (उग) कहा । ४ भासिअर, भासिअर
 भासवर्त (कण्ण काज १४ ८४) ।
 भास पक [भास] १ विपना लता
 मनुष्य होना । २ पक होना, उचित मनुष्य
 होना

मिपुय [मिदिम मिदिम] मेपभाज
मेपभाज (रंग, पत्र २. २२; गट—विज
१७ वि २८५; २ १४५) महा। डेह
मिदिपय, मिपुं मेपुं (वि २७५) कप
वि २७४)। ड. मिदिमय (पत्र २, १)
मेपभाज (वि १ २२)।

मिपय व [मेपु] कपय, मिपेय (पुर १९
२९)।

मिपयवा बी [मेपय] ऊपर देवो (पुर १
७२)।

मिदिवाक (टी) देवो मिदिवाक (माक
५७)।

मिमस देवो मिमस (पुपा ५१; १२२,
वि २ २)।

मिमक्षिप वि बिहृ बक्षित [मिहृ] मिप
पुपा 'ठा पक्ष मापयो मिमसो य (१ म)
पक्षमक्षिपविपयो' (कर्मि वि ५)।

मिमसार पु [मिमसार] देवो मंससार
(वीर)।

मिमा बी [मिमसा] देवो ममा (पत्र)।

मिमिसार पु [मिमिसार] देवो मंससार
(छ २—पत्र ४४ वि २ २)।

मिमि बी [मिमि] नाय-मिरेय कल (ठा
२ टी—पत्र ४९१)।

मिमल क [मिहृ] मीक नायय कपना
कना। मिमल (पंथीय ११)। नक
मिमलमय (पत्र १४ २९)।

मिमय न [मिहृ] १ मिमा मीक। २ मिमा
लहृ (पंथीय २१९; २१७) 'न कप
मय मिमले' (पत्र २२, ४)। मीमि
वि [मीमि] मीक से मिहृ कलेबला,
मिमना (पत्र २ वि ५४)।

मिमल देवो मिमल (वि २७ कुत्र १५३;
कर्मि १)।

मिमलन न [मिमल] मीक मीपय, कपना
(कर्मि १)।

मिमल बी [मिमल] मीक नायय (क
पुपा २७७) विप। यर वि [मिमल]
मिपु (पत्र)। यरिया बी [मिमल]
मिमल के मिम कर्म (माका मीक; मीक)

७४ कना)। लामिय पु [मिमि] मिपु-मिपेय (वीर)।

मिमसा १ वि [मिमसा] मिमा मीपे-
मिमसा १ माका मिमा से यरी-मिमिह
कलेबला (छ ४ १—पत्र १८२, पापा
२ १ ११ १) कप २, २५ कप)।

मिमस पु [मिमस] १ मीक से मिपिह
कलेबला छापु मुपि, संयासी क्षपि
(माका पत्र २१ कुपा पुपा १४२; प्रापु
१९९) 'मिमसलीको य कपी मिपु वि
मिमिपिपो लप' (कर्मि १)। २
मीक संयासी 'कर्मि कर्म न पक्षर कर्मिह
मिमसलमय' (मुपि ११)। बी मी
(पापा २ २ १ १ कप १ ११; कुत्र
१८५)। पमिमा बी [मिमिमा] छापु का
मिमिह-मिमिह मुपि का कप-मिमिह (क
मीक)। पमिमा बी [मिमिमा] छापु का
कर्मि, छापु के मिमिह, से मिपु या मिपुली
का से बं पुरा कर्म कलेबला कर्मिह मिपु-
मिमिह, मीक का मीपे या रत का' (पापा
२, ११ १ ४)।

मिमसु ड देवो मिमसुड (पत्र)।

मिमसुड देवो मिमसुड (पत्र २४)।

मिमसि (पत्र) वि [मिमसि] मिमापि
मीक मीपेय (विप)।

मिमसु देवो मिम (पत्र ४ ५६; मीक १७४)।

मिमसि देवो मिमसि (वि १२४)।

मिम पु [मिम] १ कप लेक मीक (पत्र
पुर २, १२ पुपा १ ७)। २ वि पमि
लहृ मीक कलेबला (विप १ ७—पत्र
७२)। ३ वि. मीपेय मीपेय (पत्र १
१—पत्र ४)। माय पु [मिम] मीक
(पुर ४ १२२)।

मिमस देवो मिमस (वि २७)।

मिमसा देवो मिमसा (पा १९२)।

मिमसुड वि [मिमसुड] १ मिमापि
मिम से मिपिह कलेबला। २ पु मीक
छापु (छाप १ १२—पत्र १२१)।

मिम न [मिम] कर्मिह कर्मिह-मिम
(विप १ १—पत्र ११)।

मिम देवो मिम (छ २, १—पत्र ७१
कप ७१)।

मिमिप देवो मिमिप (कर्म)।

मिमिप बी [मिमिप] मीक मीक (कर्म)।

मिमिप वि [मिमिप] मीक का मिप,
कुत्र (पत्र १ १—पत्र २२१)।

मिम पु [मिम] मीक। कर्म 'मिमिह
छापि मिमिह कलेबला' (विप १ १)।

मिमस व [मिम] मीक, कपिह कुत्र मीक
'मिम' (विप ७२१ २ १)।

मिम बी [मिम] ऊपर देवो (विप १२२)।

मिम क [मिम] मिमा—१ मिमा कप,
छाप। २ कप मीक कप। मिप
(कर्मि) मिपि (विप ४२)। कर्म मिपि
(कर्म १२ टी मीक)।

मिमस व [मिम] कपिह, मुपेय 'मिमिह
मिमिह कर्म' (पुपा २२२)।

मिमिप वि [मिम] मिपेय मुपेय मीक से क
कप पुपा (पत्र) मीक)।

मिमसि पु [मिम] मिमिह-मिमिह (पत्र १
१ पत्र ७)।

मिम देवो मिम (पत्र ७ गट—वीर १४)।

मिम (कर्म) पु [मिम] कर्म का क
कर्म (विप)।

मिम देवो मिम (विप २)।

मिम १ म [मिम] १ कर्म,
मिम १ कर्म। २ पापा मिम (पत्र
२, ७ २, ७ २, ७)।

मिम न [मिम] १ कर्म, कपना (२ ६,
१ २)। २ मीक, मीक (विप)।

मिमि बी [मिमि] मीक (पत्र कुत्र)।
मिम न [मिम] मीक—मीक का मीक
मिमि मिमिह कर्मिह कर्मिह कर्मिह
मिमिह' (कर्म)।

मिमिह वि [मिमि] कर्म से मिप (वि ६,
१ २)।

मिमिह न [मिमिह] एक मीक-मिमिह (कर्म
१५)।

मिमि वि [मिमि] मीक कलेबला (पत्र २)।
मिमि } देवो मिमि।

मिमि देवो मिमि। मिमिह (पापा २, १ ६,
२)। कर्म मिमिह (पापा २ १ ६,
२)।

१)। मणि विरिस्सि (भाषा २ १, ६ १)।
२ १२२)।

मिन्न वि [मिन्न] १ विचारित कथित
(भाषा १ ८ उ० अ० पाठ ५५)। २
प्रस्तुति स्थिति (अ ४ ४; पृष्ठ २ १)।
३ वायु विस्फोट, विस्फोट (अ १ १)। ४
परिष्कार, परिष्कृत 'जीवजड भाषणे मीन'
(इह १ वा ४)। ५ उ० क० म०
(म०)। कदा की [कदा] मैथुन-संबन्ध
नाम, एतन्नाम (म० १६)। पहाडिय
वि [पिण्डपाठिक] स्थिति वस वासि
सेने की प्रतिष्ठावाला (पृष्ठ २ १—पत्र
१)। मास पु [मास] पचीस दिन
का मास (जीव)। सुष्ठु न [सुष्ठु]
पल्लवर्द्धन मूल सुष्ठु (पत्र)।

मिण्ड पु [मीण्ड] १ स्वभाव-वशात् एक
कुक्ष्येय्य दायिग मणि नीम पिण्डाश्च
२ वाहिण्य-पक्षि रस-विशेष भयानक रस।
३ वि मन्त्र-व्यक्त मयंकर (हे २, २४
प्राक् १३३ कुमा)।

मिभमल वि [मिभ, पल] व्याकुल (हे २
२८)। २ प्राक् १४४ कुमा बज्जा (१२६)।

मिभमस्य न [मिभ, मस्य] व्याकुल बज्जा
(कुमा)।

मिभिभस्य च [भास् + चह = वाभास्य]
वाक्य हीना। क०, मिभमसमाज
मिभिभसमीय (भाषा १ १—पत्र १८;
पत्र १२५)।

मिभार पु [हे हिमोर] हिम वा घन्य भाव
(?) (हे २ १७४)।

मिभार यो भयग (लघु)।

मिभरा पु [हे] अठल। यो मिभिह (पुन
होत्र पुन २८२ इली)।

मिभरा यो मिलाय (वह १ १२)।

मिभिग लक [हे] धर्म्य वरणा, धर्म्य
वरणा। मिभिग (भाषा २ ११ १। ४
५) मिभ १०)। क० मिभिग (मिभ
१०)। प्रयो, मिभिगव्य (मिभ १०)
क० मिभिगव्य (मिभ १०)।

मिभिग [पु] [हे] वाक्य-विशेष प्रकृ
मिभिग (पु १६)। ३)।

मिभिग पु [हे] धर्म्य, धार्मिक-मल्ल-वैद्य
मर्म्य (पुन १ ४ २, ८ टी)।

मिभिग पु [हे] मिलाह द्विच पत्नी (पत्र
१२४)।

मिभिग की [हे] पत्नी हुई बनी, पुत्री की
रक्षा—कट (भाषा २ १ २, २)।

मिभ पु [मिभ] १ धर्म्य देव-विशेष (पत्र
२७४)। २ एक धर्म्य वासि (पुन २ ४
१ ३४ मही)।

मिभमाळ पु [मिभमाळ] स्वभाव-वशात्
एक प्रसिद्ध धर्म्य-वैद्य (मिभ १२४)।

मिभमर्द्ध की [मिभमर्द्ध] मिभान का पेट
(अ १ ११ टी)।

मिभिज वि [मिभिज] कथित टोका हुमा,
'पंचमध्वन्युक्तो पामाये मिभिजो जेस'
(वह)।

मिस यो भास = मास। मिस (हे ४
२ १; पृष्ठ)। क० मिसंव, मिसमाण
मिसमीय (पत्र १ १२७ ७२, १०;
भाषा १ १)। मीन कुमा भाषा १ १;
पत्र १२५)।

मिस लक [पुन] बज्जा (प्राक् १२,
भाषा १७०)।

मिस लक [भाष्य] बज्जा। मिभ, मिभ
(प्राक् ६४)।

मिस न [पुन] १ धर्म्य, धर्म्य धर्म-
वाक्य। 'मन्त्रविमलिनदेव' (मिभ २८;
पत्र १२ टी; लघु ११; धर्म)।

मिस यो मिस (प्राक् १२, पत्र १ पुन
२ १ १८)। क० पुन [क०] एक
प्रकार की जाने की मिभ लघु (पत्र १०—
पत्र २११)। मुणाकी की [मुणाकी]
कमलिनी (पत्र १)।

मिसम पु [मिसम] १ धर्म विविध
(हे १ १८ कुमा)। २ धर्मवाक्य-विमलिन
वा प्रत्यय पत्र (पत्र ८)।

मिसंव यो मिस = मास।

मिसंव न [हे] धर्म्य (हे ६, १ १)।

मिसरा यो मिसम (भाषा १ १—पत्र
१२४)।

मिसरा लक [हे] क०, बज्जा। मिभलेमि
(वह १११)।

मिसमाण यो मिस = मास।

मिसरा की [हे] धर्म्य वक्त्र के का नाम
मिभय (मिभ १ ८—पत्र ८१)।

मिसाव लक [भाष्य] बज्जा। मिभलेमि
(प्राक् १४)।

मिसिजा की [हे] धर्म्य। धर्म्य-विशेष
मिसिजा की धर्म्य का धर्म्य (हे १, १ २;
पत्र पुन १७२)। भाषा १ ८ उ० १४८
टी मीन पुन २ १ ४८)।

मिसिज यो मिसज मिभलेमि (पत्र
११२ ध)।

मिसिजी की [मिसिजी] कमलिनी पत्नी
(हे १ २१८ कुमा वा १०८) पत्र ११
महा पाय)।

मिसी की [पुनी] यो मिसिजा (पत्र)।

मिसाळ न [हे] धर्म्य-विशेष (अ ४ ४—
पत्र २८२)।

मिह पु [मी] बज्जा। मिह (पत्र)।
मी क० भेद्य (पुन २४४)।

मी की [मी] १ मय, जो बंदी बंद बनार
धर्म्य (भाषा)। २ वि बज्जा
धर्म्य (भाषा)।

मीन वि [मीन] बज्जा (हे २ १२५
४ २३ पाठ कुमा बज्जा)। मीय वि
[मीन] धर्म्य बज्जा (पुन १ १५)।

मीन की [मीन] बज्जा (पुन २ २१५
धर्म ८११ प्राक् २४)।

मीन वि [मीन] बज्जा (वह २४)।

मीन वि [मिह] बज्जा 'वा मय्य-मिह'
विमलिन न धर्म्य (वह)।

मीन [हे] यो मिभ। क० मीनवि
(वह) (धर्म)।

मीन वि [हे] यो मिभिय (पुन १११)।

मीन वि [हे] यो मिभार (कुमा)।

मीन वि [मीन] १ धर्म्य, धर्म्य
(वह) पत्र १ १ १ ४४ प्राक् १४४)।

२ पुन एक धर्म्य धर्म्य (वह ४४१)।
३ धर्म्य-विमलिन का धर्म्य विमलिन का धर्म्य
(वह २, १—पत्र ८२)। ४ धर्म्य का
धर्म्य धर्म्य प्रतिष्ठावाक्य 'धर्म्य' य

मीन धर्म्य न धर्म्य (वह १२४)।
५ धर्म्य-वैद्य का एक धर्म्य, एक धर्म्य

जत ६, १। वि ५ ७। हे २ १५, कुमा
माक १४।। हेक सुजिचण, मोचु,
भाक्क (वि १७० हे ५ २१२ बाबा)
सुजय (घ) (कुमा)। क सुख, सुजि
यय सुजिचण मोचकण सुचकण मोच
मोगा (कु ११। बर्गि ४१ उप ११६
टी बा १६ गुण ५२५। निम्मा ५२
सम्मत २१६ छाया १। पञ्च ६५६५
हे ५ ११२ गुण ५६३ बरम ६० २२।
हे ७ २१ बाप २१५। उप ७ ७५ गुण
११६ मणि)।

सुजग वि [मोखक] मोखन करेबाबा (वि १२३)।

सुजय रेको सुज = दुख।

सुजय न [मोखन] मोखन (वि १२१)।

सुजया की कर रेको (प १ १)।

सुजय रेको सुजग (घ)।

सु जात तक [मोखय] १ मोखन करना।

२ पलन करना। ३ सोच करना। सुजावेर

(महा)। ककह सुजाविजित (पञ्च २

५)। चक सुजाविजित, सुजाविजा

(वि ५२०)। हेक सुजावेर (पञ्च १

५० टी)।

सुजावय वि [मोखक] मोखन करनवाला

(व २११)।

सुजाविज वि [मोखित] विजये मोखन

करना वना हो वह (बर्गि १० कु ११६)

सुजिज रेको सुज = दुख।

सुजिज रेको सुज (मणि)।

सुजिर वि [मोखय] मोखन करेबाबा

(गुण ११)।

सुज दुखे [हे] सुख, बरह दुखणी में

'दुख' (हे १ १)। बी. बी. 'जिणी' (हे

१ १० टी) मणि)।

सुजाव [हे] कर रेको (हे १ १)।

सुभल न [हे] बध-पात्र (व्य १ २१)।

सुहवि (घ) रेको भूमि (हे ५ १६५)।

सुध तक [कु] मुकम, राजन का

मोखन। सुधर (बा ११५ प)।

सुधय दु [हे] १ स्थान दुहा। २ बध

भावि का मल (हे ६, ११)।

सुखिभ न [सुखित] स्थान का शब्द (पाप

वि २६)।

सुखिर वि [सुखिय] मुकनेवाला (कुमा)।

सुखला की [हे सुसुभा] मूक सुभा (हे

१ १ १ छाया १ १—पात्र २०, महा

उप १७६ बाप १६ सम्मत १६७)।

सु वि [बा] मूक (बर्गि ६६)।

सुखिभ न वि [हे सुसुखित] मूक सुभातुर

(पात्र ५५ १२५ गुण ५ १। उप ७२०

टी ७ २५६ हे २६)।

सुसुगुय तक [सुगुगुय] 'सुग' 'सुग'

मोखन करता। वह सुगुगुय (पञ्च

१ ५, २६)।

सुग वि [सुग] १ मोहा हुआ बक, कुटित

(छाया १ ८—पात्र ११३। घ)। वि

भात हूहा हुआ (छाया १ ८)। २ हाथ

वना हुआ कि मयक बोधियी पूर्वविहारा-

भगविहारा (उप ७१० टी)। ५ मूक

हुमा 'कलकल हूहा' (उप ५१२)।

सुग (घ) रेको सुज। सुगह (घ)।

सुसग रेको सुसग (मणि)।

सुसग रेको सुसग = सुख (बर्गि १२५)।

सुख रेको सुज सुखर (घ)।

सुख दु [सुखे] १ सुख-विशेष। २ न सुख

विशेष की कल (कपू उप ५ १२७ गुण

१)। पत्र वरत न [पत्र] बरी पत्र

(पात्र नोट वि ११)।

सुख रेको सुज।

सुख वि [सुखय] मनुष्य धनस (धीन

वि ५१५)।

सुखिय वि [हे सुग] १ मूक हुआ पाय।

२ दु बाबा कुहा हुआ घ (व्य १ २—

पात्र १५५)।

सुजा तक [सुखय] विर, दुःख (घ)।

गुण ५७२)।

सुगण दु [अण] १ की का नर्म। २ बालक,

मिम् (बलि १७)।

सुत वि [सुत] १ मजिब (छाया १ १

उप १५५ १०)। २ बितने मोखन किया

हो वह 'ये मावरी न कुमा' (गुण १ १५;

गुण ११)। ३ कैपि। ४ मनुष्य 'मय

हाय मए मोपा बुता विरकमोवना' (उप

१६ ११ छाया १ १)। ५ न भगण

मोवना 'हायगुताविमणि म' (उप १६

१२)। ६ विर-विरोध (हा १)। मोगि वि

['मोगिय' बितने मोरी का वेषन किया

हो वह (छाया १ १)।

सुचकत वि [सुचकय] बितने मोखन

किया हो वह (वि १६७)।

सुचकय रेको सुज।

सुति की [सुति] १ मोखन (व्य १७;

व्य ७२)। २ मोत (गुण १ ८)। ३

बाकीविना के लिए किया जाता बाँध खेक

बादि पिराव 'जमेखी नाम पुरी रिना

रसव न कुमाकुली' (बा १११ टी कु ११६)

४ बाक दु [पाक] गिरावदार

(बर्गि ११५)।

मुपु वि [साकय] मोकनेवाला (बा ६

खोब १२)।

मुपुण दु [हे] धूय लीकर (हे १ १)।

मुपयस दु [हे] बिल्ली को डेका जाता मोखन

(कपू)।

मम रेको मम = मय। मुमह (हे ५ १६१

उप)। संह मुमिपि (घ) (उप)।

मुम की [अ] १ मी माँक के कर

भगगा की टोप रवि (भाक उपा; हे २

मुमया ११७ बाप कुमा पाप पव

भुमा ७१)।

मुमिज रेको भमिम = भगव 'भूमिपणू'

(कुमा)।

मुमिम (घ) रेको मुमि (वि)।

मुसिमा की [हे] पिना, श्रवाली किया

वि (हे १ १)।

मुसिप वि [हे] बलिब बलि-नित;

भरकुविपि 'भूमिपुर्वीभूमिपुर्वी' पतिमा वि

मुसिपि 'वप वली' (गुण २२६, हे ६,

१६) मुसुर (१६) मुसिपि' (गुण

२११; वृ ६ वृणी पा १०८)।

मुत तक [अ] १ मनुष्य होता। २

पिला। ३ मूनना 'मुसिपि' के मणा मणा

हा पणायी दुसरी (पात्र १६ हे ५

१७७)।

(६५) ४ २ १-यम ८५) । २ राजा
दुष्टि का पट्ट-हरी (मय १० १) ।
अद्वयह ५ [तिनप्रम] मुलात्त ४४
का एक उत्तात-वर्षत (यम) । (याय) देवी
पाय (विदे १५१ प २२ टी) ।

मूलज्य ५ [ने] कोटी हूँ कम मुनि में किया
बाता यत (वि १ १००) ।

मूला की [मूला] १ एक क्षेत्र साक्षी
महति स्मृत्यय की एक भूमि (कप्य पति) ।
२ इन्द्रप्रो की एक राजबन्धी (कोर १) ।

मूला की [मूला] १ संघति बन, शीतल
'ता परदेरी' मुँह विहिरिता मुरियु-पट्टाई'
(पुर १ २२३ गुवा २४८) । २ भूम
रात 'बारमराउसमुल्लम' मूला-पट्टाई-
रौण' (मा ४ ८ ८, मउ) । ३ महा-
क्षेत्र की भूमि 'मूल' मूल' मूल' मूल'
न' (गुवा १४८ ३३३) । ४ मुनि (मूल
१ ६ १) । ५ मूल-पट्टा (उत १२ ११) ।
कर्म पुन [कर्म] शरीर प्राप्ति की रक्षा
के लिए किया जाता भूमि-मूल-मूल-मूल'
(प ७ ८ ८ ८ ८) । पण पण वि
[मूल] १ मूल-पट्टा की मुद्रितता (उत
१२ ११) । २ राज की मुद्रितता (उत
१२ ११) । ३ मूल की मुद्रितता (उत
१२ ११) ।

मूल ५ [मूल] मूल का इन्द्र (वि
१६ १) ।

मूल ५ [मूल] मूल का इन्द्र (वि
१६ १) ।

मूल ५ [मूल] मूल का इन्द्र (वि
१६ १) ।

मूल ५ [मूल] मूल का इन्द्र (वि
१६ १) ।

मूल ५ [मूल] मूल का इन्द्र (वि
१६ १) ।

मूल ५ [मूल] मूल का इन्द्र (वि
१६ १) ।

मूल ५ [मूल] मूल का इन्द्र (वि
१६ १) ।

मूल ५ [मूल] मूल का इन्द्र (वि
१६ १) ।

मूल ५ [मूल] मूल का इन्द्र (वि
१६ १) ।

मूल ५ [मूल] मूल का इन्द्र (वि
१६ १) ।

मूल ५ [मूल] मूल का इन्द्र (वि
१६ १) ।

मूल ५ [मूल] मूल का इन्द्र (वि
१६ १) ।

मूल ५ [मूल] मूल का इन्द्र (वि
१६ १) ।

मूल ५ [मूल] मूल का इन्द्र (वि
१६ १) ।

मूल ५ [मूल] मूल का इन्द्र (वि
१६ १) ।

मूल ५ [मूल] मूल का इन्द्र (वि
१६ १) ।

मूल ५ [मूल] मूल का इन्द्र (वि
१६ १) ।

मूल ५ [मूल] मूल का इन्द्र (वि
१६ १) ।

मूल ५ [मूल] मूल का इन्द्र (वि
१६ १) ।

मूल ५ [मूल] मूल का इन्द्र (वि
१६ १) ।

मूल ५ [मूल] मूल का इन्द्र (वि
१६ १) ।

मूल ५ [मूल] मूल का इन्द्र (वि
१६ १) ।

मूल ५ [मूल] मूल का इन्द्र (वि
१६ १) ।

मूल ५ [मूल] मूल का इन्द्र (वि
१६ १) ।

मूल ५ [मूल] मूल का इन्द्र (वि
१६ १) ।

मूल ५ [मूल] मूल का इन्द्र (वि
१६ १) ।

मूल ५ [मूल] मूल का इन्द्र (वि
१६ १) ।

मूल ५ [मूल] मूल का इन्द्र (वि
१६ १) ।

मूल ५ [मूल] मूल का इन्द्र (वि
१६ १) ।

मूल ५ [मूल] मूल का इन्द्र (वि
१६ १) ।

मूल ५ [मूल] मूल का इन्द्र (वि
१६ १) ।

मूल ५ [मूल] मूल का इन्द्र (वि
१६ १) ।

मूल ५ [मूल] मूल का इन्द्र (वि
१६ १) ।

मूल ५ [मूल] मूल का इन्द्र (वि
१६ १) ।

मूल ५ [मूल] मूल का इन्द्र (वि
१६ १) ।

मूल ५ [मूल] मूल का इन्द्र (वि
१६ १) ।

भोक्ष्य न [इ] पावेय-विरोध, प्रबन्ध-श्रुत
पावेय (दे १ १ ८) ।

मोषात् (मा) रेवो भू-वात् (मि) ।
मोहा (पर) रेवो भू-अ (मि) ।

अत्रि (पर) रेवो मंति = प्राप्ति (दे १
१६) ।

॥ इय विरिपाइअसहमहज्जन्मि मयापाइअसहज्जलो

ठीतरपो ठरंथो धमथो ॥

म

म पु [म] मोह-स्वाधीय व्याप्त-बले विरोध
(मा) ।

म घ [मा] मउ गरी (दे ४ ४७ म कुपा-
ति १४ ११४ मवि) ।

मअमा : [मृगा] विहार (मवि १५) ।

मइ ओ [मुनि] मोउ मणु (गुर १ १४१) ।

मं ओ [मति] १ बुद्धि मया मयीया

'मंग मई मणीया' (गण गुर १ १५१)

कुपा प्रागु ७१) । २ ज्ञान विरोध प्रीत्य

धीर मन मे एण्ण होनेरामा ज्ञान (टा ४

४० मुदि बम्प १ १ ४ ११ १४

निरे १०) । मअमा न [अल न] विरिष

मं-ज्या विध्याशय-मुक्त मति ज्ञान (मन

विरे १४ बम्प ४ ४१) । पाय

ज्याय नोन म [ज्ञान] ज्ञान-विरोध

(वि १ ७ १४ ११० बम्प १ ४) ।

मागाररा म [मानारग] मनि-ज्ञान

वा माररा मने (विरे १ ४) । नापि

वि [ज्ञानय] मति ज्ञानरामा (मन)

पनिगा ओ [पाविठ] एक देव बुद्धि

रामा (मन) । धर्म म पु [स ग] बुद्धि

विन्द (मन गुर ११६) । म मं

दा वि [मा] बुद्धि-माय माय ११

माय मं) ।

मइ रेवो मइ मइ (गुर ४)

मइअ वि [मन] मर-मुक्त, मयन (दे ७

१६ १४ १४ १ ७११) ।

मइअ रेवो मइ मइ ।

मइअ वि [मि मतिठ] १ भविष्य विपश्यत

(दे १ ११४) । २ न मोमे हृष्ट मोमों के

पाय-जान के नाम में समीप एक काहु-मय

बन्धु छोटी वा एक धीमा- 'मंयते मइयं

मिय' (मन ७ २७ पण्ड १ १-मन ८) ।

मअ वि [मय] व्यापण प्रविष्ट एक

वसित-श्रवण विवृत्त बवा हृषा 'मयमइयदि

म-मुरण्ड' (मन) 'मिण्डमि मीठीवर्ष

एवमय (मइ) ।

मअमा ओ [मृगा] विहार (मि १११४) ।

मइय पु [मि] राज वा एक पीनिक वातर

विरोध (मे ४ ७ ११ ८१) ।

मइय पु [मृगा] १ विरु वंजान (मइ

१ : गुर ११ २४१ मइय) । २ एव वा

एक मेर (मि) ।

मइय रेवो म अ = मयीय (पर) ।

मइया घ [मय] मुन्दे (गण) ।

मइमा-हमा ओ [मि मनिमाइनी] मुप

मं-रा रा (दे १ १११ मइ) ।

मइरा धा [म मय] ऊपर रेवो (मय मे

२ ११ ७ २७ दे १ १११) ।

मइरा म [मिरेव] ऊपर रेवो (गण) ।

मइय वि [म मय] देवा मय-मुक्त मयमय

(दे २ १ गण वा १४ मय १११

मइ) ।

माय पु [मि] मयन मय-मुक्त (दे १

१४१) ।

मइय वि [मि मसिन्] मय-देवक, ठेक

पिष्ट कीरा (दे १ १४१ दे १ ४७) ।

मइय घ [मसिन्] मया मयन, मयन

मयन । मयन, मयन, मयति मयति

(मवि घण वि ११११) । मय, मयन

(मवि वि ११११) । मय, मयन (मय २,

१) । मइयिपयन (ठ ११११) ।

मइय घ [म मसिन्] ठेक-पी

होना कीरा मयन । मय मयन (दे १,

४७ १ २७) ।

मइयन [मसिन्] मयन मयन (मय) ।

मइयमा ओ [मसिन्] १ ऊपर रेवो

(मय ७) । २ मयन, मयन ।

मयन 'मइय मयन मयन' (गुर १

१२) मयन मयन मयन मयन मयन

मयन मयन मयन मयन मयन मयन

मयन मयन मयन मयन मयन मयन

मयन मयन मयन मयन मयन मयन

मयन मयन मयन मयन मयन मयन

मयन मयन मयन मयन मयन मयन

मयन मयन मयन मयन मयन मयन

मयन मयन मयन मयन मयन मयन

मयन मयन मयन मयन मयन मयन

मयन मयन मयन मयन मयन मयन

मयन मयन मयन मयन मयन मयन

मयन मयन मयन मयन मयन मयन

मयन मयन मयन मयन मयन मयन

मंठ वि [वि] १ छट, कुषा, बरमास। २ पु
बन्ध (१६ १११)।
मंड सक [मण्ड] सुमित कणा सजना।
मंडर (पठ) मंडरि (वि २२७)।
मंड सक [दि] १ धाने भरना। २ मारन-
करना, पुनरुत्थी में 'मंडु' 'मो मंडर रस
पारुषो बंधु' (मंथि)।
मंड पुन [मण्ड] रस 'पयाएवर व लो
बनविहिरिमासे कर, मंडाव सारएण
गोपमसीध' (जवा)।
मंडम रेको मंडव = मण्डन (गण-छट्ट
२८)।
मंडम पु [मण्डक] बाध-विरोध मांडा
मंडग एक प्रकार की रोटी (ज ५ ११५
प ४ टी कुज ५४; बर्मा ११६)।
मंडग वि [मण्डक] विमूक, सोया बड़ाने-
बासा 'संवि व 'कोरमुद्रव'।
(कम)।
मंडम न [मण्डन] १ धुलत भूषा (बन्धः
प्राय ११२)। २ वि विमूक सोया बड़ाने-
बासा (पठक कुमा) की ली (प्राय २५)।
भाद्र की 'बासी' धामुण्य पहनावेवासी
बासी (छात्रा १ १-प ४७)।
मंडम पु [वि मण्डक] धान कुषा (१६
११५ पाय ४ १८८; कुज २८; धम्मस
१६)।
मंडम न [मण्डक] १ समूह मूक (कुमा
पठक सप्प १६)। २ वेद (ज १५२
टी कुज ५६ २८)। ३ गोल बुलाकर
पठाने (कुमा पठक)। ४ दोन प्रकार के
केल (ज १ ४-प ११५ पठक)। ५
चन-गुप्य भाषि का चार-पेन (धम १६)
पठक)। ६ लोहा, बन्ध (स १६ १;
५ ३, ५)। ७ एक प्रकार का मूक रोप।
८ एक प्रकार की बुलाकर धाव-धु (वि १
१)। ९ किन् 'दग्ध सति' बन्धक
विहण्डकगण वसणो' (पठक)। १० कुम्हों
का स्नान-विरोध (पठ)। ११ मण्डाकार
परिचर (कुज १ ७; स १५६)। १२
लिख बोध (ज ७-प १६८)। १३ पु
मण्डाविक-विरोध (विज १६)। ५ वि
[मण्ड] मण्डन में परिचरण करनेवाला

(कुज १ ७)। विहिय पु [विपिय]
मण्डावीरा (मंथि)। विहिय पु
[विपिय] बही धर्म (मंथि)।
मंडल पुन [मण्डल] योडा का मूक समय का
धावन (ब १)। पवेस पु [मंडेरा]
एक प्राचीन लीन शास्त्र (संवि २)।
मंडलगा पुन [मण्डलगा] लवहार, बन्ध
(१६ १५; मंथि)।
मंडम पु [मण्डक] एक मस बाण
कर्म-मयकों का एक बाट (पणु ११३)।
मंडम पु [मण्डक] १ मण्डाकार कला
बाण, बन्ध-बाट बनेकर (बी ७)। २ मण्ड
मिक राजा 'सेरीयं विहण्डक पुनमे
मंडविपयाणो हाया' (धम ५२)। ३ लपें
की एक काटि (पणु १-प ११)। ४
न लीन-विरोध को करेव मोक्ष को एक
शाखा है। ५ पुंकी उस मोक्ष में लता (ज
७-प १६)। 'पुरी की [पुरी] मकर
विरोध कुनरुत का एक मकर, जो धावन
की 'मंडक' नाम से प्रसिद्ध है (पुषा १६६)।
मंडम वि [मण्डक] मण्डाकार बना
कुमा 'मंडविपयकोरि' मण्डक-विह-
विह' (पुषा ५ बन्ध १२; पठक)।
मंडम वि [मण्डक, मण्डक] १
मण्डाकारवाला। २ पुं मंडक रूप से विह
पर्वत विरोध (ज १ ४-प ११५ पणु
१ ५)। ३ मण्डावीरा, धामाय राजा
(छात्रा १ १; पणु २ ५ कुमा कुप
१२ महा)।
मंडकी मंड [मंडकी] १ पंक्ति सेरीय समूह
(स ३, ७६, पणु २ ३६)। २ पथ की
एक प्रकार की पंक्ति (स ११ १६; महा)।
३ बुलाकर मंडक-समूह (लोच १७
पठक)।
मंडकी रेको मंडकमि = मण्डकमि 'पह
लवरेवेलिहिकोडाविपयकोरि' (पुषा
७१ ज १-प ११६)।
मंडप पु [मण्डप] १ विभाष-व्यास। २
बाही धर्म के वैदिक स्नान (बीन १; स्नान
१६; महा कुमा)। ३ स्नान धर्म करने का
गृह 'हाणमंडवि' 'मोयमंडवी' (कम)
धर्म)।

मंडव न [मण्डक] १ लीन-विरोध। २ पुंकी
उस मोक्ष में लता (ज ७-प १६)।
मंडविजा की [मण्डविज] सोडा मण्डव
(कुमा)।
मंडवमण्ड म [मण्डकमण्ड] लीन-विरोध
(पुज १ १६ ३६)।
मंडावज न [मण्डन] सजना विमूक
करना। पार्थ की [मंडा] सजनेवासी
बासी (धावा २ १५ ११)।
मंडावज वि [मण्डक] सजनेवासा (मि २)।
मंडि वि [मण्डक] १ मुक्ति (कम)
मंडिम कुमा)। २ पुं. मण्डाव महावीर के
पु लवण का नाम (धम १६ विह
१८ २)। ३ एक मोर का नाम (बर्मा
७२; ७३)। कुविह पुन [कुविह] विह-
विरोध (ज २ २)। 'पुन पु [पुन]
मण्डाव महावीर का लवण मण्डव (कम)।
मंडि अ वि [वि] विहिय बन्धमा कुमा। २
विहाना कुमा
'संवाह इवविहिया मंडि' (मंडि पाये।
बन्धमंडि बाणमाला बन्धमण्डवि बन्धमंडि
(पणु ८)।
१ पागे वर ह्या 'मंड मंडि वरमण्डुलो
बंधु' (मंथि)। ४ धावना 'पुन मंडि
कण्डाविहिय लाम' (मंथि सप्प)।
मंडि पु [वि] धपुन, पुषा पठाव-विरोध
(१६ १, ११७)।
मंडी की [वि] १ विभाषिक, बन्ध (१६
१११; पठक)। २ पथ का धप रस मंडि।
३ मंडी कण्ड सेई (धाव ५)। पावुडिया
की [मण्डविह] एक मिठा-बोण धम के
मंडि बनना मंडी को बुलावे नाम में लवकर
की बासी मिठा का मण्ड (धाव ५)।
मंडु रेको मंडु (धा २८ पणु १ १;
मंडु) है २, २५ पठ; पाय)।
मंडुविह, की [मण्डविह, मंडी] १ की
मंडुविह { मंड मंडी, बावुटी (ज १५७
मंडुकी { टी ११७ टी)। २ धाव-
विरोध बन्धमंडि-विरोध (जवा;
प १५)।

मंद् पु [मन्द्] १ दृढ-विशेष शक्तिवर (पुर १ २०५)। २ शरीर की एक भावि (आ ४ २—पत्र २ ८)। ३ हि. प्रसन्न शीमा मुद्रा (पाप प्रामु १ ३२२)। ४ घन शोभा (मापु ७१)। ५ धूर्त बह्म शक्तिकी (मृग १ ४ १ ३१ पाप)। ६ नीच पत्र 'भूमेव दक्षिणं त्वं म मन्त्र' (प्रामु १६)। ७ राज-मन्त्र रोमी (नल ८०)। उल्लिख्य की [पुण्या] शैवी-विशेष (पंचा १६ २४)। मग्ग वि [माग्य] कमन्तीव (गुग १७६ महा)। माग्र वि [माग माग्य] बही धर्म (साधन २२ कुमा)। माह वि [मागि] बही धर्म (स ७५६ गुग २२६)। माग रेको भाज (पुर १ १८)।

मंद् न [मन्ध] १ शीघ्र, रोक 'न न मन्धे मन्धे कीह विविधो बह्म मनुष्यो वा' (गुग २२६)। २ मुर्छा वेधकृती 'कालस्य महर्षीय' (गुग ४ १ २६)।

मंद् न्न म [मन्दा] बगना, शरम (पत्र)। मंद् न् १ न [मन्द्] सेम-विशेष, एक प्रकार मन्त्रों का बाल (पत्र ठा ४ ४—पत्र २८२)।

मंद् र पुं [मन्द्] १ पर्यंत-विशेष मेघ पर्यंत (मृग ४७ सम १६)। २ १०४ कल्प गुग ४७)। २ धनवान् विनयनाथ का प्रथम गणवर (सम १२९)। ३ बाणछीन का एक राजा मन्धरवार का पुत्र (पत्र ६ १७)। ४ घन का एक त्व (विष)। २ मन्तर-नवत का विविधमक देव (स ४)। पुत्र न [पुत्र] मन्तर-विशेष (रुद्र)।

मंदा की [मन्दा] १ मन्ध-की (बगना १ ६)। २ मनुष्य की कय धनव्याप्य में तीसरी मन्त्रा २१ स ३ बर्ष तक की कथा (पुं १६)।

मंदाद्वी की [मन्दाद्वी] १ मंदा त्वी मायोरी (पत्र १ ४)। पाप)। २ धनवान् के पुत्र सन की की वा नाम (पत्र १ ६ १२)।

मंदाय विवि [मन्] शनैः शोने से 'मंदाय मंदाय पम्पदाय' (नीच ७)।

मंदाय न [मन्दाय] शैव-विशेष (पं १)। मंदाय पु [मन्दाय] १ कलाकृत-विशेष (गुग १)। २ पारित्य कृत। ३ म मन्दाय कृत का कृत 'मन्दायमन्त्रसिद्धयुग्म' (कम्प पत्र)। ४ पारित्य कृत का कृत (बका १ ६)।

मंदिज वि [मान्दि] मन्त्रावाता मन्त्र आने व मंदिज मूत्र (पत्र ८ १)।

मंदिन न [मन्दि] १ मृग पत्र (पत्र ४)। २ मन्दिन विशेष (रुद्र पात्र १)।

मंदिन वि [मन्दि] मन्दिन-नय का 'कीह पुत्र सोदा वि व मीपुत्र मंदिन व बह्मणा' (पत्र २२, २३)।

मंदिन न [दि] १ मृग पत्र (पत्र ४)। २ मन्दाय-नय (दि ६ १४१)।

मंदिन पुं [दि] मन्दिन पत्र (पत्र १ १—पत्र ७)।

मंदिन की [मन्दिन] मन्ध-शला (गुग ४७)।

मंदिनी की [मन्दा] १ राज-पत्नी मंदिनी (वि १३ २७)। २ एक मन्त्र पत्नी (स १७७ ६)।

मंदिनाय (मा)। वि [मन्दिनाय] मन्त्र मन्त्र (पत्र १ २)।

मंदाय पुं [मा] मन्दिनी हरिवंश का एक राजा (पत्र २२, २७)।

मंदाय पुं [मन्दाय] मन्दिनाय का एक मन्त्र (पत्र १ ४ ११)।

मंदाय पुं [दि] मन्दिनाय, मीमं (दि ६ ११६)।

मंदिनी (मा)। एक [मा + मी] कले का विशेष करना प्रथम देना। एक मंदिनीसिद्धि (मन्दि)।

मंदिनीय वैश्वी मांदिनीसिद्धि (मन्दि)।

मंस पुं [मंस] मंस, मंस विविध 'मन्दायामी मंस मंस मंस' (गुग २ १ ६४)। मांसा मीमं २४५ कुमा; १ १ २६)। इति वि [मंस] मंस-मीमं (गुग १ १६)। मंस न [मंस] मंस मुक्त का लम्प (मांसा २ ४ १)। 'मंसु' पुं वि [मंसु] १ मंस-मंस मंस। २ मंस-मंस मंस, मंस-मंस-मंस 'मंसि' मंसि

मंस-मंस (सम ६)। मंसि वि [मंसि] मंसि-मंसि (कुमा)। मंसि मंसि वि [मंसि] मंसि मंसि (पत्र १ २, ४४)। 'मंसि-मंसि' (पत्र २६ २७)।

मंस न [मंस] मंस का मंस, मंस का मंस (मांसा २ १ १ ५ ६)।

मंस वि [मंसि] मंसि मंसि (पत्र २ २६ पात्र १ ४)।

मंस की [मंसि] मंसि-मंसि-मंसि मंसि (पत्र २ २—पत्र २२)।

मंस पुं [मंस] मंसि-मंसि-मंसि मंसि मंसि मंसि (मंस ६ मंस कुमा) 'मंसि' (दि १ २६ पात्र), 'मंसि' (पत्र)।

मंस देवा मंस 'मंसि-मंसि-मंसि' (मांसा)।

मंसि मंसि न [दि] मंसि-मंसि मंसि-मंसि (वि २८६)।

मंसि वि [मंसि] मंसि-मंसि (दि २ १२६)।

मंसि मंसि [मंसि] मंसि-मंसि (मंसि २४४)।

मंसि पुं [मंसि] १ मंसि, मंसि मंसि (मा १७)। मंसि पुं [मंसि] मंसि १ ६; २ ७२; कुमा १; कुमा)। २ मंसि मंसि मंसि-मंसि मंसि (मांसा मंसि पा ६३ दे ६ ११६)। ३ मंसि का एक मंस (विष)। मंस पुं [मंस] मंसि-मंसि मंसि-मंसि (मंस १ २६)। मंसि मंसि पुं [मंसि] मंसि का मंस (मंसि)।

मंसि मंसि न [दि] मंसि-मंसि मंसि-मंसि (दि ६ १२७)।

मंसि की [मंसि] मंसि मंसि (मंसि १ १)।

मंसि मंसि वैश्वी मंसि (मंसि)। मंसि पुं [मंसि] १ 'मंसि' मंसि। २ 'मंसि' के प्रयोग-मंसि मंसि-मंसि मंसि-मंसि एक मंसि मंसि-मंसि (मा ७—पत्र १६७)।

मंसि मंसि मंसि (पत्र २६२; १ २ ६६)।

मंसि पुं [दि] १ मंसि-मंसि मंसि मंसि मंसि मंसि (दि ६ १२४)। २ मंसि मंसि-मंसि मंसि मंसि मंसि मंसि मंसि (मंसि)। ३ मंसि मंसि मंसि मंसि मंसि मंसि मंसि (दि १३ मंसि मंसि १६)। मंसि मंसि (दि ६ १२४)।

मसल सफ [ससु] १ दुपका, स्नेहमिअ
करना । २ बी, टैन आदि लिअइ इअ से
माणिअ करना । मसल (पद), मसलति
(का १४० टी) मसिअअ मसलअअ
(भाषा २, ११ २१ १) । हेअ मसलअअ
(नम) । हे मसिअअअ (पोष १८२ टी) ।
मसलअ न [मसल] १ मसलन मसलीअ
(छ २२७ पया २२) । २ मसिअ अमसल
(मिह १) ।
मसलअ नु [मसल] १ मसि । २ माल । ३
बरा बसि । ४ डिअका मसि (मसि १३,
मि १ ६) ।

मसिअअ वि [मसिअ] दुआ हुआ (पाप
२८ १२ बीअ १४२ टी) ।

मसिअअ न [मसिअ] मसिअ-मसिअ मसु
(पाप) ।

मसिअअ बी [मसिअ] मसो (११
१२१) ।

मसअअ वि [वि] हल-मसिअ हल में बंधा
हुआ (मिअ १ १—पय ४८ ४६) ।

मसअ नु [मसअ] पय-मसल-मसिअ टीअ
न मसल की बीअ (मिअ) ।

मसअअअ बी [वि] १ मसल का कुअ ।
२ मसल का कुअ 'मसल' का मसलअअ
(छ २, १४ १६) ।

मसअअअ बी [वि] मसलअअअ १ मसि
मसिअ का मसल । २ मसि की मसि (छ
२ २ १४ १६) ।

मसअ नु [मसअ] १ मसलअअ मसलअ
मिअ (मसल १ २ बीअ हल मसल ११
४३ मसल १ ४) । २ मसल (मसल २)

(मीअ ५ ४८ टी) । मसल न [मसल] मसल
मिअ (मसल) । मसल मसल ।

मसल म [वि] मसल, मसिअ, मसल में 'मस'
(११ ४ टी) ।

मसल नु [मसल] मसल (मसल १) ।

मसल सफ [मसल] १ मसल । २
मसल । मसल मसल (मसल १) । हे १
१४) । मसल मसल मसलमसल (पा २ २
मसल १४८ टी मसल मसल १) । मसल
मसलमसल (मसल) (मिअ) । हे मसलमसल
(मसल) । हे मसलमसल मसलमसल (मि
१४ २० मसल ११) ।

मसल सफ [मसल] मसल मसल, मसल ।
मसल (१४ २१) ।

मसल नु [मसल] १ मसल, मसल (मसल १४
मसल मसल २ । ११० मसल) । २ मसलमसल
मसल (मिअ ११४१) । मसल म [मसल]
मसल से (११ १०) । मसल म [मसल]
मसल मसलमसल (मसल १४४) । मसल म
[मसल] १ मसल में मसल । २ मसल से
मसल मसल की मसलमसल (मसल २ १ १) ।
मसल म [मसल] मसल-मसल (मसल मसल) ।
मसल म [मसल] मसल का मसलमसल
(मसल २) । हे मसल [मसल] मसल-मसल
(मसल ४४) । मसलमसल म [मसलमसल]
मसल का मसलमसल (मसल २) ।

मसल नु [मसल] १ मसल (मसल २ २—
मसल ४४) । २ मसलमसल-मसल, मसलमसल
मसल मसल-मसल (मसल ११)

मसल नु [वि] मसल, मसिअ (१६ १६,
मसलमसल १११ मसल १ ११ मसल २ २१;
मसल मसल) ।

मसलअ वि [मसल] मसलमसल (मसल
११ ४३) ।

मसलअ नु [मसल] १ मसल (मसल १४) ।
२ मसल मसल (मसल) । ३ मसलमसल
मसल (मिअ ११) । ४ मसलमसल, मसलमसल,
मसलमसल (मसल मसल १) ।

मसलअ नु [मसल] १ मसलमसल । मसलमसल
मसलमसल (मसल १४ १ मसल ११२)
मसलमसल (मसल १) । २ मसलमसल मसल
मसलमसल मसल मसलमसल मसलमसल मसल
मसलमसल (मसल ४ १ ११ मसल १) ।

मसलमसल बी [मसलमसल] मसलमसल मसलमसल
(मसल १४४) ।

मसलमसल वि [वि] मसलमसल मसल मसल
मसलमसल (१६ १२४) ।

मसलमसल नु [मसलमसल] मसलमसल
मसलमसल मसल मसलमसल (मसल १४ १२४)

मसलमसल बी [मसलमसल] १ मसलमसल मसल
मसलमसल । २ मसलमसल मसलमसल (मसल
१ १) ।

मसलमसल वि [मसलमसल] १ मसलमसल मसलमसल
(मसल १, ११) । २ मसलमसल मसल, मसलमसल
(मसल) ।

मसलमसल वि [मसलमसल] मसल मसलमसल
(मसल १४) ।

मसलमसल वि [वि] मसलमसल, मसलमसल (मिअ
११२१) ।

मसलमसल नु [मसलमसल] मसलमसल मसलमसल
(मसल १ ४ १२, मसल १ ४४) ।

मसलमसल नु [मसलमसल] मसल (मसल १ २ मसल २) ।

मसलमसल मसल [मसलमसल] मसलमसल मसल मसल
मसलमसल मसलमसल में 'मसलमसल' मसलमसल
'मसलमसल' । मसल मसलमसल मसलमसल
मसलमसल (मसल ११४ मसल मसल) ।

मसलमसल नु [मसलमसल] १ मसल, मसलमसल (मसल
मसल ४ १४) । २ मसलमसल मसलमसल मसल
(मसल १२१ मसल २ १११) ।

मसलमसल बी [मसलमसल] मसलमसल मसलमसल
'मसलमसल' मसलमसल मसलमसल मसलमसल
(मसलमसल १२) ।

मसलमसल बी [मसलमसल] १ मसल मसल (मसल
मसल १ १४) । २ मसल मसलमसल मसल
(मसल) ।

मसलमसल नु [वि] मसलमसल मसल मसल (मसल
मिअ ११) ।

मसल मसल [मसल] मसल मसल । मसल (मसल
१४ १२१) ।

मसल (मसल) मसल मसल मसलमसल मसल
मसल (मसल) ।

मसल म [वि] मसल मसल (१६ १११) ।

मसल नु [मसल] मसल, मसल (मसल
मसलमसल १ मसल मसल मसल १
१ मसल) । मसल नु [मसल] मसल

वा मसल [मसल] मसलमसल (मसल
१२ मसल [मसलमसल] मसलमसल मसलमसल
मसलमसल मसलमसल मसलमसल (मसल २
१—मसल ४३) । मसल मसल मसलमसल
(मसल २ १—मसल ४३) ।

मसल मसल मसल । मसल मसल [मसल]
मसलमसल (मसल) ।

मसल नु [मसल] मसलमसल (मसल
मसलमसल) । मसलमसल मसलमसल मसलमसल

मनुष्य पुं [दे मनुक] बाल विशेष (घम ४४)।

मनु की [दे] ? बलात्कार, हठ, बलावस्ती (दे ६, १४ पाप सूर १ ११६ मुक्त २ १२)। २ घाला कुट्टम (दे ६ १४ गुण २७२)।

मनुष्य वि [मनुष्य] जिसका मर्त्य किया गया वो शूद्र (हे २ १६ पक्ष वि २२१)। मनुष्य से वो मनुष्य (घम)।

मनु से वो मनु । मनु (हे ४ १२९)।

मनु पुं [मनु] संभावितों का धारण प्रतिपत्ति का निवासस्थान 'मनु' (हे १ १२२ गुण २१४ बन्धा २४ मणि)। 'मनु' (आम)।

मनु से वो मनुष्य (कुमा)।

मनुष्य वि [नु] ? लक्षित पुनरावृत्ति में 'मनुष्य' 'एवात् शीघ्रहीनो विवात्मविधात् वारिष्वा' (मिनि १७)। २ परिवर्तित (दे २ ७४, पाप)।

मनु की [मनु] शीघ्र मनु (गुण १११)।

मनु सक्त [मनु] ? मनुष्य। २ बालता। ३ चित्तन कला। मनुष्य मनुष्य (पक्ष कुमा)। कनु मनुष्यमण (मन ११ ७; विदे ८१३)।

मनु पुं [मनु] मन, धन्यकरण चित्त (मन ११ ७ विदे ११२२ सत्य ४२, ६ २२ कुमा मनु ४४ ४८ २२१)।

अनुपति की [अनुपति] मन का संवयम (वि १२४)। अरुप न [अरुप] चित्तन, परलोचन (धारक ११७)। अनुप वि [रुप] मन को संवय में रखनेवाला (मन)।

अनुप की [रुप] मन का संवय (उत्त २४ २)। अनुप वि [रु] ? मन को बालनेवाला मन का बालकार। २ मनुष्य, मनुष्य (माह १८)। कीपि वि [कीपि] मन को धारणा मालनेवाला (पक्ष १ २—पक्ष २७)। जोष पुं [योग] मन की शैल, मनोव्यापार (का)।

अ, पु, पुन से वो अनुप (माह १८ पक्ष)। संमयी की [संमयी] विद्या-विशेष मन की सत्य करनेवाली विद्या शक्ति (पक्ष ७ ११७)। नाप न [दान] मन का शास्त्रकार करनेवाला ज्ञान मन-

पर्यव ज्ञान (कम्म १ १८ ४ ११ १७; २१)। नापि वि [ज्ञानि] मन-पर्यव नामक ज्ञानवाला (कम्म ४ ४)। पक्षवि की [पक्षवि] दुष्टों को मन के रूप में परिणत करने की शक्ति (घम ६ ४)।

पक्षवि पुं [पर्यव] ज्ञान-विशेष दूसरे के मन की धारणा को बालनेवाला ज्ञान (मन शीघ्र विदे ८१)। पक्षवि वि [पर्यवि] मन-पर्यव ज्ञानवाला (पक्ष २१)। पक्षि विद्या की [प्रक्षि] मन के प्रक्षों का उत्तर देनेवाली विद्या (घम १२१)। वमि वि [वमि] मनो-वमवाला हठ मनवाला (पक्ष २ १ शीघ्र)। माह्य वि [माह्य] मन को मनुष्य करनेवाला, विचारक (पा १२८)। योगि वि [योगि] मन की शैलवाला (मन)।

यमाजी की [यमाजी] मन के रूप में परिवर्तित होनेवाला पुन-मनुष्य (पक्ष)। यम न [यम] एक विचार-मनुष्य (रक्त)। समि वि [समि] मन का संवय (अ ८—पक्ष ४२२)। समि वि [समि] मन को संवय में रखनेवाला (मा)। संस पुं [संस] कुरु-विशेष (पिप)। हर वि [हर] मनोहर, मनुष्य, विचारक (हे १ १२६ शीघ्र कुमा)।

हरप पुं [हरण] निवृत्त-विशेष एक मात्र-व्यक्ति (पिप)। मिराम मिराम मेक्ष वि [मिराम] मनोहर (घम १४२ शीघ्र उप १२२ उप २२ टी)।

म वि [माप] मनुष्य, मनुष्य (घम १४२ विद्या १ १ शीघ्र कप)। सेवो मयो ।

मर्ण सेवो मजय (माह १८)। मर्णसि वि [मनसि] प्रकृत मनवाला (हे १ २१)। की यी (हे १ २१)। मर्णसि की [मनसि] ज्ञान बल मर्ण मर्णसि की एक उपवास, मर्णसि मेरिज (कुमा हे १ २१)।

मण पुं [मन] एक बल मन-मुनि महापि कर्म-परायण का पुन दीर दिव्य (कप्य बर्षि १८)। सेवो मजय ।

मण पुं [मन] एक बल मन-मुनि महापि कर्म-परायण का पुन दीर दिव्य (कप्य बर्षि १८)। सेवो मजय ।

मण पुं [मन] एक बल मन-मुनि महापि कर्म-परायण का पुन दीर दिव्य (कप्य बर्षि १८)। सेवो मजय ।

मण पुं [मन] एक बल मन-मुनि महापि कर्म-परायण का पुन दीर दिव्य (कप्य बर्षि १८)। सेवो मजय ।

मण पुं [मन] एक बल मन-मुनि महापि कर्म-परायण का पुन दीर दिव्य (कप्य बर्षि १८)। सेवो मजय ।

मण पुं [मन] एक बल मन-मुनि महापि कर्म-परायण का पुन दीर दिव्य (कप्य बर्षि १८)। सेवो मजय ।

मण पुं [मन] एक बल मन-मुनि महापि कर्म-परायण का पुन दीर दिव्य (कप्य बर्षि १८)। सेवो मजय ।

मण पुं [मन] एक बल मन-मुनि महापि कर्म-परायण का पुन दीर दिव्य (कप्य बर्षि १८)। सेवो मजय ।

मण पुं [मन] एक बल मन-मुनि महापि कर्म-परायण का पुन दीर दिव्य (कप्य बर्षि १८)। सेवो मजय ।

मण पुं [मन] एक बल मन-मुनि महापि कर्म-परायण का पुन दीर दिव्य (कप्य बर्षि १८)। सेवो मजय ।

मण पुं [मन] एक बल मन-मुनि महापि कर्म-परायण का पुन दीर दिव्य (कप्य बर्षि १८)। सेवो मजय ।

मण पुं [मन] एक बल मन-मुनि महापि कर्म-परायण का पुन दीर दिव्य (कप्य बर्षि १८)। सेवो मजय ।

मण पुं [मन] एक बल मन-मुनि महापि कर्म-परायण का पुन दीर दिव्य (कप्य बर्षि १८)। सेवो मजय ।

मण पुं [मन] एक बल मन-मुनि महापि कर्म-परायण का पुन दीर दिव्य (कप्य बर्षि १८)। सेवो मजय ।

मण पुं [मन] एक बल मन-मुनि महापि कर्म-परायण का पुन दीर दिव्य (कप्य बर्षि १८)। सेवो मजय ।

मण पुं [मन] एक बल मन-मुनि महापि कर्म-परायण का पुन दीर दिव्य (कप्य बर्षि १८)। सेवो मजय ।

मण पुं [मन] एक बल मन-मुनि महापि कर्म-परायण का पुन दीर दिव्य (कप्य बर्षि १८)। सेवो मजय ।

मण पुं [मन] एक बल मन-मुनि महापि कर्म-परायण का पुन दीर दिव्य (कप्य बर्षि १८)। सेवो मजय ।

(महा) । वा ममत्वं मममात्रं (पुर १४
१७१ मन्त्राः ममत्वं १ ७ पुर १

मरुह पुं [दे] मृध-पिपाह (दे १ ११५)।

मरुवय बैहो मरुअम (गा १०७ कुमार विह २६)।

मरुम बैहो मरिस। मरुसिख (मखि)।

मरु छक [मरु] बाण करण (भा १ ११ टी—पत्र ५८)।

मरु बैहो मरु। मरुह, मरुह (दे ५ १२६ प्राह १८ मखि) मरुमि (दे १ ११) मरुसि (पुर १ १)। कर्म मरुसिह (पंचा १६ १) मरु मरुसि (दे ५ ५२)। कर्म मरुसिह (दे १ ११)। छक मरुसिह मरुसिह (कुमा, वि ५८५)। छ मरुसिह (दे १११ विवा ३)।

मरु पुं [दे] खेह, पलीता (दे १ १११)।

मरु पुं [मरु] १ खेह (कुमा प्रागु २३)। २ पाप (कुमा)। ३ बैहो कुमा कर्म (विद्य १२२)।

मरुपिअ वि [दे] पली मरुपिअ (दे १ १२१)।

मरुअ न [मरुअ, मरुअ] मरुअ मरुता (मय १२३, पत्र १३ १५, पुग ५५ पंचा ११ १)।

मरुअ पुं [दे] मरुअ पातरण-विरोध (गामा १ १—पत्र १३ १ १७—पत्र २२६)।

मरुअ पुं [दे] मरुअ १ पहाड़ का एक भाग (दे १ १५५)। २ छान बनीया (दे १ १५७ पाप)।

मरुअ पुं [मरुअ] १ बनीया बैह में स्थित एक पर्वत (पुग ५२१, कुमा पत्र)। २ समय-पर्वत के निचले-बोली बैह-विरोध (पत्र २७३ मिय)। ३ छत्र-विरोध (मिय)। ४ बैह-विमान-विरोध (लेख १५५)। ५ न पौबएर कर्म (बीह १)। ६ पुं की मरुअ बैह का निवासी (पत्र १ १)। 'केह पुं [केह] एक राजा का नाम (पुग ६ ७)। 'गिरि पुं [गिरि] एक सुप्रसिद्ध बैह व्यापार्य धीर कर्मकार (इह राज)। 'रंह पुं [रंह] एक बैह कर्मकार का नाम (पुग १५२)। 'दि पुं [दि] पर्वत-विरोध (पुग ५७७)। मरु वि [मरु] १ समय बैह में कर्म। २ न कर्म (मरु)। मरु की

[मरी] राजा मरुकेयु की बी (पुग १ ७)। य [रु] बैहो मरु (पत्र)। रुह पुं [रुह] कर्म का पत्र (पुर १ २८)। २ न कर्म-कर्म (पत्र)।

रुह पुं [रुह] समय पर्वत (पुग ५३६)। गिरि पुं [गिरि] मरुपर्वत से बहता शीतल पर्वत (कुमा)। 'यल बैहो रुहल (रंमा)।

मरुअ वि [मरुअ] १ समय बैह में कर्म (मरु)। २ न कर्म (मरु)।

मरुअटी की [दे] ठरणी पुगि (दे १ १२५)।

मरुअ पुं [दे] पुग-मरुअ (दे १ १२)।

मरि वि [मरि] मरुता, मरु-पुल (मखि)।

मरिअ वि [मरिअ] मरुता मरुता मरुता हो वह (पा ११ कुमा दे १ ११३) बीह छाया १ १)।

मरिअ न [दे] १ छह छेह। २ पुग (दे १ १५५)।

मरिअ वि [मरिअ] मरु-पुल, मरिअ 'मरुमरिअमरुता' (पुग ११६ गउह)।

मरिअन बैहो मरु = मरु।

मरिअ वि [मरिअ] मरुता मरु-पुल (कुमा पुग १ १)।

मरिअन वि [मरिअन] मरिअ किया हुआ (अ)।

मरिअन वि [मरिअन] मरिअ मरुता (पत्र)।

मरुअन बैहो मरु = मरु।

मरुअन बैहो मरिअन वि ५५ गउह—पत्र १८)।

मरु छक [मरु] बैहो मरु = मरु (मय १ ३३ टी)।

मरु पुं [मरु] १ पर्वत का दुली लकने-बाता बाहु बोला (बीह कमा पत्र २ ५५ कुमा)। २ पाका 'बीहविरोधमरुता' मरुता मरुता मरुता (पत्र १११)। ३ मरु का कर्म-मरु-मरुता। ४ कर्म का मरुता मरुता (मय १ १—पत्र १७६)। मरु न [मरु] दुली (कमा दे ५ १२१)। 'दि पुं [दि] एक राज-

कुमार (गामा १ ८)। बाह पुं [बाह] एक पुत्रिकात प्राचीन बैह व्यापार्य धीर कर्मकार (सम्मत १२)।

मरु न [मरु] १ पुग कुल (अ ५ ५)। २ कुल की दुली दुली मरुता (पत्र मरुता)। ३ मरुता-मरुता पुग-मरुता (इ २ ७६)। ४ एक बैह-मरुता (मय १६)। ५ बैह 'मरुता वि मरुता मरुता' (मय १११ मा १ पत्र ११२)।

मरु पुं [मरु, 'दि] मरु-विरोध (मय मरुता वि ५६)।

मरु पुं [दे] मरु १ पात्र विरोध, मरुता शरण (विदे २५७ टी-विह २१)। २ पुग मरुता मरुता १५ गामा १ १ दे १ १५५, प्रवी ७७)। ३ कर्म पात्र-मरुता (दे १ १५५)।

मरु न [दे] मरु-मरुता एक छह क मरुता। २ वि मरुता से एक (दे १ १५५)।

मरुपी की [दे] मरुता-मरुता मरुता (दे १ ११२ पात्र मरुता १८)।

मरि वि [मरि] मरुता-मरुता (मय १ ११ टी)।

मरि वि [मरि] मरुता-मरुता मरुता-मरुता (बीह)।

मरि की [मरि] १ मरुता-मरुता का नाम (मय ५३ गामा १ ८)। मरुता १२ पत्र)। २ मरुता-मरुता मरुता का नाम (दे २, १८)। पाह, नाह पुं [नाह] मरुता-मरुता (मय १११)।

मरि की [मरि] पुग-विरोध (मय १ ११ टी)।

मरिअमरु पुं [मरिअमरु] एक राजा का नाम (कुमा)।

मरिअ की [मरिअ] १ पुग-मरुता-विरोध (गामा १ ८, पुग ५६)। २ पुग-विरोध (कुमा)। ३ मरुता-विरोध (मय)।

मरिअन न [मरुता-मरुता] १ पुग-मरुता-मरुता। २ मरुता-मरुता (मय १, ११ टी—पत्र ५८)।

मरु बैहो मरि (गामा १ ८)। पत्र २० १५, विचार १५५ कुमा)।

(हे २ १२) । 'प्यं दुं' [आत्मन] महान्
माता महा-मुख्य (पद्य ११८ १२१) ।
एकल वि [मह] महान् एकबाला (पुपा
१११) । माहुं दुं [माहु] राज्य बंध का
एक राजा एक संक्षय-पति (पद्य ३, २६५) ।
'बोह' दुं [अनोभ] महा-सागर,

'यं कुलं चोदं खण्डा
विष्वाधिया उहा मुक्ता ।

महबोहे बंधुणं बहु
पुत्रपति नाम्ना लब्धं
(छम्पट १२) ।

महदुं [मह] १ एक राज-कुमार
(विपा २ ७) मय ११ ११ दीप) । २ वि
विपुल बसवाला (मय प्रीय) । रेको महा-
पंड । अयय वि [मय] महात्म-बालक
(पण्ड १ १) । अयय न [मय] अंधी
आदि शीत इत्य (पुपा २ १ २२) । मरुप
दुं [मरु] एक महापि बल्लभ दुमिन्धिये
(पद्य २३) । मास दुं [मास] महान्
पथ (परी) । बर रेको बर (छाया १
१—पद्य ३७) । 'रव' दुं [रव] राजा
बंध का एक राजा एक संक्षय-पति (पद्य ३
२६५) । तिसि नु [अयि] महर्षि महा-
पति (लक्ष पण्ड ३७) । 'रिह' वि [रिह] महर्षि
बुद्धि के योग्य बहु-मुख्य श्रीमती (विपा १
३) दीप वि १४ । 'दाय' दुं [दाय]
महान् पवन (योग ३८७) । उययय वि
[अयि] महापुत्रवाला (पुपा ४७४) ।
अयय नुं [अय] महान् वर 'महत्त्वया
पथ हुति हर्ष' (पद्य ११ २३) । 'सेवा
महत्त्वया वे कस्तुपुत्रपुत्रियि न हृ छम्पट'
(सिक्का ४८ मका उभ) । अयय दुं
[अयय] विपुल कार्य (अय ५ ८) ।
ससागा की [सायका] वय-विशेष एक
अकार भी नाप (जोब १३३) । मिव दुं
[मिव] एक राजा पठ कस्तुपुत्र प्रीय नामुर्षेय
का पिता (वम १३२) । सुख रेको महा
सुख (अर्थ ११३) । सण दुं [सेन]
१ पाठ्य विमर्ष का पिता (वम १३) ।
२ एक राजा (महा) । ३ एक यात्र (ल
१४८) । ४ न कल-विशेष (विदे
१४४) । रेको महा-सेन । रेको महा' ।

महधर दुं [हे] गह्वर-गति निष्ठक मर मातृक
(हे १ १२३) ।

महर्षि म [महापि] १ प्रति बड़ा । २ अत्यन्त
विपुल । अह वि [अह] प्रति बड़ी बटा-
बाला (पद्य ३८ १२) । महर्षिदुं दुं
[महर्षिदुं] अत्यन्त-बंध का एक राजा
का नाम (पद्य ३, १) । महापुत्रिस दुं
[महापुत्रिस] १ सर्वोत्तम पुत्र्य सर्व-अष्ट
पुत्र्य । २ कितने बिन मयमात्र (पद्य १
१८) । महर्षय वि [महर्ष] अत्यन्त
बड़ा 'महर्षयः पति संधारि' (उवा धम
७२) । श्री. 'लिया (मय उवा) ।

महर्षि रेको मह = महय ।
महर्ष दुं [हे] वर्यु, ऊँ (हे १ ११७) ।
महर्ष रेको मह = महय (भावा प्रीय कुमा) ।
महर्ष न [माहय] १ महर्षय । २ महर्षयवाला
(छा १ १—पद्य ११७) ।

महर्ष न [हे] पिता का बर (हे १ ११४) ।
महर्ष न [महर्ष] १ विप्रीय (पे १ ४३
बला ८) । २ वर्यु (कुप १४८) । ३ वि
मातेवाला 'पतितामस्यमहर्ष' (पण्ड १
४४) । ४ पिता कलेवाला 'माहर्ष न
बधु' क मयमहर्ष' (अर्थ ३३, ३४, ३५, ३६)
२२३) । श्री जी (पा ४६) ।
महर्ष दुं [महर्ष] पण्ड बंध का एक राजा,
एक संक्षय-पति (पद्य ३, २६२) ।

महर्षि रेको मह = मह ।
महर्षि रेको महर्ष (छा १ ४ छाया १
१ प्रीय) ।

महर्षी की [महर्षी] श्रीपति-विशेष श्री वर्यु
बाजी श्रीपति (पद्य ४६) ।

महर्षार न [हे] १ मयय मातृक । २
भोजन (हे १ १२३) ।

महर्षार दुं [हे] मयात्म्य प्रमाण 'गुह
गुहर्षयण किरिण महर्षार एवो' (रंभा
४४४) ।

महर्ष रेको मयमय । महर्षय (हे ४ ७८
पद्य गा ४२) महर्षय (उवा) । बह
महर्षय (नाम ११७) । वं महर्षय
(पुपा) ।

महर्षय वि [महर्ष] १ किता हुया (हे १
१४६) बय्या (१३) । २ मुद्रिय (रंभा) ।

महर्षय रेको महर्षय, 'विप्रीयविशिष्टो महर्षय
हर्ष' (भा १ ४) ।

महर्षा रेको महा 'महर्षाद्विप्रीयमर्षमय-
मर्षयविशिष्टो' (छाया १ १ टी—पद्य १
दीप विपा १ १) मय ।

महर्ष वि [हे] मयमय मयय (हे १,
११३) ।

महर्षयपण्ड रेको महापण्डय (पद्य—छा
१७६) ।

महर्ष वि [हे महर्ष] १ वर्यु बड़ा (हे
१ ११३ उवा मयय गुर १ ३४ पंथा
३ १६) संभोज ४७ प्रीय १३६ प्रापु
१४३ मय १२ पुपा ११७) । २ वर्यु,
विशाम विशील (हे १ १४६ प्रति १
छ १२२) मयि) । श्री 'छिया (प्रीय पुपा
११३ ४७७) ।

महर्ष वि [हे] १ मुकर, बापाट, बकबादी
(हे १ १४३ पद्य) । २ पु. कलवि
छुप (हे १ १४३) । ३ वर्यु, निबह (हे
१ १४३ गुर १ ३४) ।

महर्षि रेको महर्ष 'हरिगृहपतिमहर्षि
पयमहर्षयपण्ड विप्रीय' (पुपा ११) ।

महर्ष रेको मयमय (कुमा मयि) ।

महा श्री [महा] लक्ष-विशेष (वम १२
गुर १ ३, इक) ।

महा रेको मह = महय (उवा) । अहर्ष न
[अहर्ष] संक्षय-विशेष मय साह महापण्ड-
योग श्री संक्षय (को २) । अहर्ष न
[अहर्ष] संक्षय-विशेष मय साह पण्ड
(को २) । अहर्ष रेको अहर्ष (गट—नैत
८२) । अहर्ष न [अहर्ष] संक्षय-विशेष
मय साह महापण्डयोग श्री संक्षय (को २) ।

अहर्ष दुं [अहर्ष] अहर्ष कवि समर्प कवि
(पद्य ४७४ मयय ८४३ रंभा) । अहर्ष दुं
[अहर्ष] अहर्ष रेको श्री एक बापि
(पण्ड १ ४३ प्रीय इक) । अहर्ष दुं
[अहर्ष] १ महाविहर्ष कर्त का एक विमय-
पथ—मातृ (छा १ ३ इक) । २ वि-
विशेष (अ ४) । अहर्षा की [अहर्षा]
पतिराय नामक इक की एक वय-मयिनी
(छा ४ १—पद्य ३ ४ छाया २ इक) ।
अहर्ष दुं [अहर्ष] राजा वीर्य का एक

पुन (निर १ १)। कण्ठा की [कण्ठा]।
 पना धेरिक की एक पत्नी (घं २३)।
 कपय वु [कपय] १ बैत धन-विशेष
 (धरि)। २ कपय का एक बरिपण्य (घं
 ११)। कण्ठा न [कण्ठा] संख्या-विशेष
 बीपछी लख महाकम्पाप की संख्या (को
 २)। कपय बैबी मह इय्य (घमस
 १५५)। कपय वु [कपय] १ प्योरल
 बैबी का उत्तर दिख का इय्य (अ २, १
 ३६)। २ वि महाय शरीरकला (क्या)।
 कपय वु [कपय] १ महाइय-विशेष एक
 इय्य-कला (दुय २; अ २ ३)। ३
 बरिया लयल-सुख के पलायन-कला का
 धरियायक बैत (अ ४ २—पत्र २२३)।
 ३ एक इय्य, विद्या-निकाय का उत्तर दिख
 का इय्य (अ २, ३—पत्र ५३)। ४ परमा
 धर्मिक बैबी की एक बावि (घम २३)। ५
 बसु-कुमार बैबी का एक लोभपाल (अ ४
 १—पत्र १२३)। ६ बैतय इय्य का एक
 लोभपाल (अ ४ १—पत्र ११)। ७ गव
 निविर्को में एक निविर् को बलुपी की पुर्त
 कला है (अ ८ ६५ टी अ ८—पत्र
 ५२६)। चलायी लयल-न्याय का एक
 लयलपाल (अ ४, ३—पत्र १५५)। घम
 ५)। ८ निशाय बैबी की एक बावि
 (घम)। ९ लयनविधि बरि की एक
 लयन विन लयन (दुय १७५)। ११ निज
 म्यायेव (घम १)। १२ बरयविधि का एक
 लयलपाल (घं १)। १३ पना धेरिक का
 एक पुन (निर १ १)। १४ न एक बैत-
 विनय (घम १६)। कपयि की [कपयि]
 १ एक विद्या-विधि (घं १)। २ पयमा
 नुपविनय की लयल-विधि (घं १)। ३
 पना धेरिक की एक पत्नी (घं २३)।
 कण्ठा की [कण्ठा] एक पना-विधि (अ
 ४ ३—पत्र ११६)। कुमुद कुमुद न
 [कुमुद] १ एक बैत-विनय (घम ११)।
 २ संख्या-विशेष बीपछी लख महाकुमुद
 की संख्या (को २)। कुमुद न [कुमुद]
 १ संख्या कुमुद की बीपछी लख के
 कुमुद पर को संख्या लख हो बह (को २)।
 कुम वु [कुम] कुम-विनय (बम)।

कुम न [कुम] १ बम कुम (निर ८)।
 २ वि प्रसन्न कुम में लयन विनय का बै
 यकुमुद (घम १ न २४)। मंगा की
 [मंगा] परियय-विशेष (घम ११)। गह
 वु [गह] १ सुय यवि विविध (घम
 ५७)। गह वि [गह] गहरी हटी
 (घम ५७)। गिरि वु [गिरि] १ एक
 बैत गह (घम ५५)। २ बड़ा पर्वत
 (बम)। गोब वु [गोब] १ गहय पत्र।
 २ विन मन्त्राल (जना विसे २६५६)।
 गोस वु [गोस] १ ऐरल क्षेत्र के एक
 धानी निनय (घम १२४)। २ एक इय्य
 लयल कुमार बैबी का उत्तर दिख का इय्य
 (अ २ ३—पत्र ३)। ३ एक कुमकर
 पुरय (घम १३)। ४ परमाधर्मिक बैबी
 की एक बावि (घम २६)। ५ न. बैतविनय-
 विशेष (घम १२ १७)। बंय वु [बंय]
 ऐरल नय के एक धानी लोभकर (घम
 १२४)। अबिज वु [अबिज] बड़ी
 लयल-विधि का बैत के लयल-विधि लोभ
 (घम)। अबिज वु [अबिज] महा-लार
 (घम ५५५)। बस वु [बस] १ बस
 लयल-विधि का एक लोभ (अ ४—पत्र ५२६)।
 २ ऐरल क्षेत्र के लयल-विधि लोभ-विधि
 (घम १२४)। ३ वि गहय लयल (ज
 १२ १३)। जाह की [जाह] कुम
 विशेष (घम १)। जाह न [जाह] १
 बड़ा माल-माल। २ बावि, संयम
 (घम)। ३ एक विद्या-विधि का लय
 (घम)। ४ वु. योय कुम (घम)। कुम
 न [कुम] बड़ी बरि (घम ३)। कुम
 वु न [कुम] महाय पति (घम १३)।
 ल बैबी यम 'बयलुधायक-विधि बयलुधायक-
 विधि' का (घम १३)। ल बैबी की
 [ल] बड़ी बरि (घम ५ ११)।
 लयल-विधि वु [लयल-विधि] १ लय
 लयल का एक लोभपाल (अ ४ १—
 पत्र १६)। २ न. एक बैत-विनय (घम
 १३)। लयल बैबी लयल (घम)।
 लयल बैबी लयल (घम)। लयल न
 [लयल] १ लय-विधि। २ वि यति लय
 लयल (लय ३ ५५)। लयल बैबी

नीय (घम)। लयल लयल वि
 [लयल-विधि] महाय लयल (घम—
 लयल ३३) लयल ४ ५ लयल विधि (१)।
 लयल वि [लयल-विधि] बड़ी बरि (घम
 २, ३३; ३ ११)। लयल-विधि की [लयल-
 विधि] लयल लयल-विधि (घम १७२)।
 लयल की [लयल] बड़ी बरि (घम ७२६)।
 लयल की [लयल] लयल-विधि (अ ३,
 ३—पत्र १११)। लयल न [लयल-विधि]
 महाय लयल को लयल लयल के कुम पर
 को लयल लयल हो बह, लयल-विधि (को
 २)। लयल-विधि वु [लयल-विधि] लयल-
 विधि के लयल-विधि का लयल-विधि (घम)। लयल-विधि
 वु [लयल-विधि] बड़ी बरि (अ ३ १—पत्र
 ११)। लयल बैबी लयल-विधि (घम)
 २ न. एक बैत-विनय (घम १३)। लयल-विधि
 वु [लयल-विधि] लयल लयल का एक
 लयल-विधि लयल लयल के लयल लयल
 की लयल (घम २)। लयल वु [लयल] १ लय
 लयल लयल-विधि (घम १ १२)। २ लयल
 लयल-विधि (घम १ १२) लयल ७१)।
 लयल की [लयल] लयल-विधि (घम)। लयल
 वु [लयल] एक लयल (घम ३३, ३८)।
 लयल वु [लयल] लयल का एक लयल
 (निर १ ३)। लयल की [लयल] बड़ी बरि
 (घम २७) लयल। लयल-विधि लयल
 लयल-विधि (घम)। लयल न [लयल]
 बड़ा लयल (घम २ ४)। लयल वु [लयल]
 लयल-विधि लयल लयल (लयल)। लयल
 न [लयल] १ लयल-विधि, लयल-विधि
 को लयल लयल के कुम पर को लयल
 लयल हो बह (को २)। २ एक लयल-विधि
 (घम १३)। लयल-विधि न [लयल-विधि]
 लयल-विधि लयल को लयल लयल के
 कुम पर को लयल लयल हो बह
 (को २)। लयल-विधि वु [लयल-विधि]
 लयल लयल (जना)। लयल की [लयल]
 लयल लयल (घम १ १६)। लयल
 लयल-विधि [लयल-विधि] लयल, लयल
 (घम १; ५५ टी)। लयल-विधि न
 [लयल-विधि] एक लयल लयल-विधि (घम १
 १६)। लयल की [लयल] एक लयल-विधि

(हा १ १—पत्र १२१) । परमपुं [परा] १ मृत्योर्न का भावी प्रथम दीर्घक (सम १२१) । २ मुहूर्तविपरीत मयी का एक राजा दीर दीक्षे से राजवि (शाया १ ११—पत्र २४३) । ३ मातृवर्ष में उत्पन्न लवर्षा ऋतुवर्षी राजा (सम १२२ परम २ १४३) । ४ मृत्योर्न का भावी लवर्षा ऋतुवर्षी राजा (सम १२४) । ५ एक राजा (हा १) । ६ एक मित्रि (हा १—पत्र ४४१) । ७ एक इह (सम १ ४ हा २, १—पत्र ७२) । ८ राजा मेषिक का एक वीर (मिर १ १) । ९ वेद-विरोध (वीर) । १ बुध-विरोध (अ २ १) । ११ न संख्या विरोध महाप्राप को भीषणी मातृ से कुले पर को संख्या लब्ध हो बहु (को २) । १२ एक वेद-विमान (सम १३) । परमार्जय न [पराङ्ग] संख्या-विरोध पर को भीषणी मातृ से कुले पर को संख्या लब्ध हो बहु (को २) । परमा की [परा] राजा मेषिक की वर पुत्र-वधु (मिर १ १) । पंडित वि [पण्डित] बह विमान (रमा) । पट्टन न [पत्तन] बड़ा शहर (अ) । पण्य परम वि [परा] भेद बुद्धिमान (अ ७७३ वि २७६) । परम न [परम] एक वेद-विमान (सम १३) । परमा की [परमा] एक रात्री (अ १ ११ टी) । परम पुं [परम] महाविशेष बर्ष का एक विजय-मातृ (हा २, १) । परिण्या परिमा की [परिमा] बाधार्थ सुख के प्रथम मृत्योर्न का साधनी सम्पन्न (राज मातृ) । परम पुं [परा] मनुष्य (वड) । परम पुं [परा] बड़ा रात्रा राज-मार्ग (मय परम १ १ टी) । पाण न [प्राण] बहुलोक्त-सिद्ध एक वेद-विमान (उप १ ८ १८) । पायाक्ष पुं [पायाक्ष] बड़ा पाठाव-कलश (हा ४ २—पत्र २२६ सम ७२) । पाणि की [पाणि] १ ब्रह्म पत्न्य । २ शास्त्रोक्त-मन्त्रिण मन्त्र-विधि—यामु 'महापाणि महापाते' ब्रह्म बरिचयमोचमे । का या पाणिमहापाते विना बरिचयमोचमे' (उप १ ८ २८) ।

'पिठ पुं [पिठ] पिठा का बड़ा भाई (मिरा १ १—पत्र ४) । पीठ पुं [पीठ] एक लैन महिष (संदि ८१ टी) । पुंल न [पुंल] एक वेद-विमान (सम २२) । पुंल न [पुंल] एक वेद-विमान (सम २२) । पुंलरीय न [पुंलरीय] १ विमान खेत कमल (उप) । २ पुंल ग्रह-विरोध (सम १ ४) । ३ वर-विरोध । ४ वेदो पुंलरीय (राज) । पुर न [पुर] १ एक विमान-परम (इ) । २ मगर-विरोध (मिरा २ ७) । पुरा की [पुरी] महापन्न-विजय की राजधानी (अ २, १—पत्र ८) । पुरिस पुं [पुरिस] १ भेद पुत्र्य (अ २ ४) । २ विपुत्र्य विजय का उत्तर पिठा का ब्रह्म (अ २, १—पत्र ८३) । पुरी वेदो पुरा (इ) । पौंडरीय न [पुण्डरीक] एक वेद-विमान (उ १३) । वेदो पुंलरीय (अ २ १—पत्र ७२) । फल वेदो मह-वफल (अ) । 'फलिह न [फलिह] विधोरी परंत का एक उत्तर-विमान-स्थित मृत (उप) । वल वि [वल] १ महात् बलबाला (मय) । २ पुंल ऐतल वीर का एक भावी दीर्घक (सम १२४) । ३ ऋतुवर्षी मरु के बंध में उत्पन्न एक राजा (परम २, ४ हा ८—पत्र ४२१) । ४ सोमवर्षीय एक मन्त्र-विधि (परम १, १) । ५ पौंडरीय वेद-विमान का पूर्व-वर्षीय राजा (परम २ ११) । ६ मातृवर्ष का भावी ब्रह्मर्षी ब्रह्मर्षि (सम १२४) । बाहु पु [बाहु] १ मातृ-वर्ष का भावी ब्रह्मर्षी ब्रह्मर्षि (सम १२४) । २ रात्रा का एक सुख (वड २६ १) । वपर विवेक-वर्ष में उत्पन्न एक ब्रह्मर्षि (मातृ ४) । मर न [मर] वर-विरोध (पत्र २७१) । महा-विमा की [महाविमा] नीचे वेदो (वीर) । मद्रा की [मद्रा] वर-विरोध कायोक्त-व्यास का एक वर (हा २ १—पत्र १४) । मय वेदो मह-वमय (मातृ) । माध, माग वि [माग] महनुमाव महामय (मिर १७४ मद्रा पु ११८ अ २ १) । मीम पुं [मीम] १ चरमों का उत्तर पिठा का ब्रह्म (हा २ १—पत्र ८३) । २ मातृवर्ष का भावी मातृवर्षी ब्रह्मर्षि

(सम १२४) । ३ वि बड़ा मयातक (बंघ ४) । मीमसेण पु [मीमसेन] एक कुलकर पुत्र का नाम (सम १२) । मुज पु [मुज] वेद-विरोध (वीर) । मुजग पु [मुजग] वेद माप (उ ७ ११) । मोया की [मोगा] एक महा-नदी (अ २, १—पत्र १२१) । मर्द पुं [मुकुन्द] वाच-विरोध (मग) । मरि पु [मरि] १ सवोक्त धामाय, प्रभाव मन्त्री (वीर) मुया २२३ छाया १ १) । २ हस्ति-वीर्य का मय्यस (शाया १ १—पत्र ११) । मंस न [मोस] मनुष्य का मंस (कपु) । मस पुं [अमाय] प्रभाव मन्त्री (कुमा) । मस पुं [माय] हस्तिवक हाथी का महापद 'उठो मरिहनिबत्स मृगय' सिद्धमयिहृदयिमा । परमपिपमहामया मतावि पनाया मरि' (उप १२४) ।

मर्या की [मर्या] राजा मेषिक की एक पत्नी (वीर) । मरु पु [मरु] महो-त्वक (मातृ ४) । मरुत वि [मरुत] मरि बड़ा (मुया २६४ अ १११) । माह (पर) की [माया] ऋतु-विरोध (मिर) । मातया की [मातृया] मातृ की बही बहन (मिरा १ १—पत्र ४) । माडर पुं [माडर] विमान के रक्षणीय का मरिपति (हा ४, १—पत्र १ १ इ) । मायसिजा की [मायसिजा] एक विमान-वेदी (संदि १) । माहण पुं [माहाण] बह ब्रह्मण (अ) । मुयि पुं [मुयि] बह ब्रह्म (कुमा) । मेह पुं [मेय] बड़ा भेद (शाया १ १—पत्र ४ हा ४ ४) । 'मेह वि [मेय] बुद्धिमत् (अ १४२ टी) । 'मोक्ष वि [मूर्ख] बड़ा वेद-वृत्त (अ १ ११ टी) । मण पुं [मन] बह वीर (मुया २२१) । परम वेदो अस्त (वीर कपु) । रक्सल पु [रक्षम] लंका कपी का एक राजा की वनवास का पुत्र या (परम २ १११) । ७४ पुं [रव] १ बड़ा रव (अ २, ४—पत्र ११) । २ वि बड़ा रवराज । ३ बड़ा योद्धा बह

हजार शेरों के साथ धनेना बृम्हेनसा
(नृप १ ३ १ १) बरु)। रदि नि
[रदिन] देवो पुन का रप वीर रप
धर्मे (पुन ७२६ टी)। राप पु [राप]
१ बड़ा राजा राजविजय (पुन ७१६
टी) रवात (पुन)। २ धार्मिक देव इन्द्र
समान अधिपति देव (पुन १२, १)। ३
लोकपाल देव (सम १)। रिदु पु [रिदु]
बलि नामक इन्द्र का एक शतपति (इन्द्र)।
रिसि पु [रिसि] बड़ा भूमि, श्रेष्ठ प्राणु
(उप)। रिह रह देवो महा-रिह (पि
१४ मणि १२०)। रापु पु [रापु]
प्रसिद्धा मलेन्द्रक की उत्तर दिशा में स्थित
एक नगरपाल (धेन्द्र २४)। रोहस पु
[रोहस, रोहस] वादवी तरु-भूमि का
एक नगरपाल — नरक-स्नान (सम २६ छा
२, ३—पुन १४१ इन्द्र)। रोहिणी की
[रोहिणी] एक महा-विद्या (पुन)। रोजर
पु [रोजर] बड़ा पस-भूमि (छा ४
२—पुन २२१)। रोजरी की [रोजरी]
१ एक श्रेष्ठ-वर्ण (छा ७२ टी)। २ रज-
विशेष (विन)। ३ श्रेष्ठ कर्मि। ४ बारी-
विशेष (गान)। रोजरी का [रोजरी]
बर्मा-विशेष, बड़ा नामक संख्या की बीघरी
लाकड़ के पुष्पों पर जो संख्या लक्ष हो वह
(छा ७२)। सया की [सया] संख्या-
विशेष महाभारत की बीघरी लाकड़ के पुष्पों
पर जो संख्या लक्ष हो वह (जी २)।
सोहिमन्त पु [सोहिमन्त] बलीक के
महिम-मन्त्र का रचनाति (छा ३ १—पुन
३ २ इन्द्र)। पक्ष न [पक्ष] नरकर
संघट्ट पर बसे वाता का बहुवचन (पुन
२२१)। पक्ष पु [पक्ष] विनय-विशेष
विश्व वर्त का एक प्राल (छा २, ३ इन्द्र)।
पक्ष की [पक्ष] बरी (इन्द्र)। पक्ष
न [पक्ष] बहुवचन के विश्व का एक वन
(टी ७)। पक्ष पु [पक्ष] बरी वृक्ष
(मणि)। पक्ष पु [पक्ष] विनय-विशेष
(छा ३ ३—पुन २ इन्द्र)। पक्ष देवो
मह-व्यय (पुन १२)। पक्ष पु
[पक्ष] १ गिणु का एक प्रकार (बरु)।
२ बड़ा पुन (पुन १ ७ २२)। बरु

देवो वह (पि १ २८)। बाह पु [बाह]
ईश्वर के वर-वैद्य का रचनाति (छा ३
१—पुन ३ ३ इन्द्र)। बाह पु [बाह]
बड़ा बाह, महा-पक्ष, विनय-विशेष
(छा १)। पिगाह की [पिगाह] धरि
विकार-लक्ष के वस्तु—मनु, मांस मय वीर
बाहल (छा ४ १—पुन २ ४ पक्ष)।
पिगाह नि [पिगाह] बड़ा विनय-लक्ष
‘महाविनय-मुद्रा-पक्ष-वृद्धि-पक्षो महाविनय-
लक्षो’ (कर्म)। पिगाह पु [पिगाह] बरी
विशेष देव-विशेष (सम १२, छा ७ वीर
पक्ष)। पिगाह न [पिगाह] श्रेष्ठ देव
गृह (छा)। पिह न [पिह] नरप
धरि बड़ा विनय (पुन)। वीर पु [वीर]
१ वीरयल समन के धर्मिण वीरकर (सम
१) छा ११ १)। २ वि महा-पक्ष-
वर्ण (विन ११)। वीरिण पु [वीरिण]
वर्ण-वृद्ध के एक राजा का नाम (पुन
३ ३)। वीरि, वीरि की [वीरि वी]
बड़ा बाहल (पुन ११ ३४)। २ श्रेष्ठ
मार्ग (बाह)। वेग पु [वेग] एक
वेन-लक्ष भूतों की एक प्रकार की बाति
(पुन इन्द्र)। वेन-वैद्य की [वेन-वैद्य]
बरी पक्ष-विनय-लक्ष (कर्म)। सही
की [सही] लक्ष पक्षिण टी (पुन ७२६
टी पक्ष)। सखि की [सखि] एक
विचार-की (पुन १ ४—पुन ७२)।
सखि नि [सखि] बरी पक्ष-लक्ष
(पुन १ ११)। सख नि [सख]
पक्ष-वैद्य (छा ११) महा)। समर पु
[समर] महापक्ष (बरा)। सया
सयम पु [सयम] पक्ष-महावीर का
एक लक्ष (छा)। सामय न
[सामय] एक देन-विनय (सम ११)।
साह पु [साह] एक पुनय (पक्ष)।
साह-वैद्य पु [साह-वैद्य] राजा
वृद्धि वीर के लक्ष की लक्ष (पुन ७
२—पुन ११२)। सीह पु [सीह] एक
राज-पक्ष-वैद्य वीर वस्तु का विन
(छा ३—पुन ७२)। सीह-विशेष
सीह-विशेष न [सीह-विशेष]
का-विशेष (पुन ७२—पुन १२२)। सीह-सय पु [सीह-सय]

महावीर के पास श्रेष्ठ वेन वस्तु
विशेष के लक्ष राजा वैद्य का एक
पुन (पुन २)। सीह पु [सीह] १ एक
वेन-वैद्य वस्तु वैद्य (सम ११ विन
२ १)। २ छा १ वैद्य का एक (छा २
१—पुन ७२)। ३ न, एक देन-विनय (सम
१२)। सीमिण पु [सीमिण] लक्ष लक्ष का
एक पुनय लक्ष (पुन १ १—पुन ११)।
पि ७२)। सीह पु [सीह] १ बड़ा
लक्ष। २ लक्षों का राजा विनय-विशेष
(पि १ २) महा)। सीमिण सीमिण
की [सीमिण] लक्ष-विनय की लक्ष
विनय (कर्म)। सीह की [सीह]
श्रेष्ठ (छा २७)। सीह पु
[सीह] एक राजा लक्ष-विनय नामक
विनय-विशेष का उत्तर दिशा का इन्द्र (इन्द्र
छा २ ३—पुन ७२)। सीह पु [सीह]
१ देन-विनय के एक वीर विनय (सम
१२)। २ राजा वैद्य का एक पुन
विनय-लक्ष महावीर के पास श्रेष्ठ की
की (पुन २)। ३ एक राजा (पि १ १—
पुन ७२)। ४ एक वान (छा १ ३)।
५ न एक वान (विन २ ७२)। देवो
महा-सय। सीह-वैद्य पु [सीह-वैद्य]
राजा वैद्य का एक पुन (पि २२)।
सीह-वैद्य की [सीह-वैद्य] राजा
वैद्य की एक वीर (पुन २२)। सीह
पु [सीह] १ बड़ा वीर (पुन १ १)।
२ न नर-विशेष (पुन २२ २३)।
सीह-वैद्य, सीह-वैद्य पु [सीह-वैद्य] विनय
वैद्य के वर-वैद्य का रचनाति (छा ३,
३ इन्द्र)। सीह पु [सीह] एक नर-विशेष,
वैद्य-वैद्य की विनय (सम १२३)।
‘विनय, विनय पु [विनय] १
वैद्य-विशेष (पुन १ २, १ ३ छा २,
३ पक्ष)। २ देन-विशेष (पुन ४)।
महाभारत नि [नि] पक्ष, वीरयल (३ ६,
१११)।
महाभारत पु [नि] महाभारत (मणि)।
महाभारत पु [नि] महाभारत (पुन १२२)।
महाभारत न [महाभारत] रोज-वैद्य, पक्ष-विनय
(पुन १ ७ का ११ का २२ टी)।

महाणसि वि [महानसिम्] खोई बगाने-
बाधा, खोइबा। श्री. पी (छाया १—
पत्र ११७)।

महाणसिय वि [महानसिक] ऊपर देखो
(बिपा १ c)।

महाविज न [दे महाविज्] ब्योम माफाठ
(दे १ १२१)।

महासवि दुं [महामसिन्] महापठ हसित
पक (यम १२१ टी)।

महारिय (धन) वि [महीय] मेघ (बय
१)।

महाज पुं [दे] नार, उपपति (दे १
११९)।

महाज्जख वि [दे] लख बगान (दे १
१२१)।

महाज्जय देखो मह = मज्ज (छाया १ c—जवा
धीप) 'मा बसि कम्माई महासमाई' (उप
१ २९)। श्री 'सिया (धीप)।

महालय पुं न [महालय] १ उत्तमों का स्थान
(यम ७२)। २ बड़ा पालन। ३ वि
बुद्धता बड़ा शरीरवाला (सूय २, २, ९)।

महाज्जय पुं [दे महाज्जयपक्ष] पाठ-यम
कर्मिण (प्रवृत्तों माधव) माध का हृष्य
पक्ष (दे १ १२७)।

महाज्जदी की [दे] नकिनी, कमलिनी (दे १
१२२)।

महाविजय पुं [महाविजय] एक देवविमान
(भाषा १ १३, २)।

महासमय पुं [दे] वस्तु, युक्त-वशी (दे १
१२७)।

महासदा की [दे] सिता शृगाली (दे १
१२, पाप)।

महासेस वि [महासेस] महोत्सव नगर से
संलग्न खानेवाला महोत्सव का (पत्रम २२,
२३)।

महि देखो मही (कुमा)। लख न [लख]
भू-पीठ, भूमि-पुत्र (कुमा पत्रम: प्राप ५४)।
गोयय पुं [गोयय] मनुष्य (कवि पक्ष)।
पठ न [पठ] भूमि-जन (पद)। पाठ पुं
[पाठ] राजा (बय)। मंडल न [मण्डल]
भू-मण्डल (कवि दे ४ ३७२)। रमण पुं
[रमण] राजा (भा १७)। बह पुं

[पति] राजा (छाया १ १ टी—धीप)।
बह देखो पठ (दे १ १२२; कुमा)।
बह पुं [पठ] राजा (प्र १)। वाळ
पुं [पाळ] १ राजा नरपति (दे १
२२९)। २ स्थिति बाक नाम ध्वज-
'बेह पुं [वेह, पीठ] मही-जन भू-जन
(दे १ ४ ५४)। सामि पुं [स्वामिन्]
राजा (कुमा)। हर पुं [पर] १ परंत
(पाप से १ १८ ४ १७; कुमा ११७)।
२ राजा (कुमा ११७)।

महिअ वि [मविअ] निवृत्त (दे २, १७)
पाप)।

महिअ वि [महित] १ पुजित सत्त्व (दे
१२ ४७ जवा धीप)। २ न एक देव-
विमान (यम ५१)। ३ पुना सत्कार (छाया
१ १)।

महिअ वि [महीयस्] बड़ा पुन 'गम-
निघोषो महिषो को छाया गवापमहि कर' (प्र
१ ८७)।

महिअदुअ न [दे] बी का विद्वत् भट-मल
(यम)।

महिआ की [महिअ] १ सुवर्ण बर्ण सुव
कल-मुपार (पद १ बी ५)। २ बुमिका
हुंम दुहाय (धीप २; पाप)। ३ मेघ-
समूह 'भूजनिषो कविमा महिया' (पाप)।
देखो महिआ।

महिअ पुं [महेअ] १ बड़ा इन्द्र वैशाखी
(धीप कल्प छाया १ १ टी—यम ९)।
२ परंत-विरोध (दे ४ ३४)। ३ स्थिति महान,
बड़ा (छ ४ २—यम २१)। ४ एक
राजा (यम २, २१)। ५ ऐश्वर्य बर्ण का
सारी १२ बी शीर्षक (यम ७)। ६ पुन
एक देव-विमान (यम २२; वैजय १५१)।
७ न [भय] एक देव-विमान (यम
२७)। ८ पुं [भिय] हनुमान के मातापुत्र
का नाम (यम २, १८)। ९ भय पुं
[भय] १ बड़ा भय। २ इन्द्र के भय
के समान भय बड़ा इन्द्र-भय (छ ४
४—यम २१)। ३ न एक देव-विमान
(यम २२)। दुहिया की [दुहिया]
धन-मनुष्य हनुमान को माता (यम २
२१)। 'विजय पुं [विजय] इन्द्र-पुत्र

बंश का एक राजा (यम ५, ६)। सीह
पुं [सिह] १ कुंर सेठ का एक राजा
(ज ७२८ टी)। २ समुत्तार बज्रवी का
एक मित्र (महा)।

महिअ वि [महेअ] १ महेअ-सम्यक्।
२ वलाठ-विरोध (पद २१५)।

महिअदुअभिमय न [महेअोत्तरापर्यसक]
एक देव-विमान (यम २७)।

महिआ देखो महिआ (जीव ३१)।

महिअ वि [महेअ] महलाकाशी (सूय
२ २ ९१)।

महिअ की [महेअ] महलाकाशी
अपरिचित बाधता (पद १ १)।

महिअ वि [दे] मद्र से घंघट, ठक-सत्कारित
(बिपा १ c—यम ८३)।

महिअ वि [महिअ क] बड़ी शक्ति
महिअदुअ } बाधा महान विमलता (बा
महिअदीय } २७ यम: बीमका १ बीम
प्र ७९)।

महिअ पुं [महियन्] १ महान माहात्म्य,
गौरव (दे १ ३२, कुमा पत्रम मवि)। २
पौषी का एक प्रकार का ऐश्वर्य (दे १ ३२)।

महिअ देखो महिअ (महा राज)।

महिअ की [महिआ] की नारी (कुमा
दे १ ५१ पाप)। भूम पुं [भूय] भू
पाप का विनाश (वि २ ९४)।

महिअिया की [महिअिया, महिअ] ऊपर
देखो (छाया १ २, यम १५ १५२,
प्राप २४)।

महिअिया की [मिअिया, मिअिया]
देखो मिअिया (यम)।

महिअ पुं [महअ] मैत्रा (यम धीप
गा २५७)। सूर पुं [सुर] एक
बाधक (य ११७)।

महिअ पुं [दे] हनुमान के मातापुत्र
(दे १ १२)।

महिअ वि [महिअ] मैत्रता, मैत्र
अपने-वला (पद १ ५४)।

महिसिअ न [दे] मविपो-सुवह (दे १
१२४)।

महिषी की [महिषी] १ राज-वली (छ ४
१)। २ मैत्र (पाप यम २६ ५१)।

महेशि बेहो महन्तिसि (सम १२३ परह
१ १ उप १३७ ७२८ टी प्रति ११८)।

महोअर पुं [महोवर] १ राषण का एक
पाई (सि १२, ५४)। २ बि बहु-अओ
(निह १)।

महोअहि पुं [महोवि] महोअवर (सि ३
२ महा)। ख पुं [१३] मानर-अर का
एक राजा (पठन ६ ३१)।

महोअध्वर बेहो महोअध्व (सुर १ ११)।

महोअहि बेहो महोअहि (पह २ ४ उप
७२८ टी)।

महोअरा पुं [महोअरा] १ अन्तर बेहो की
एक भाति (पह १ ४—पत्र १८; इह)।
२ बड़ा सोप। ३ महान्-काय सर्व की एक
भाति (पह १ १—पत्र ८)। ४ 'त्य न
[१३] मन्त्र क्रियेय (महा)।

महोअरकट पुं [महोअरकट] रज-क्रियेय
(उप १७)।

महोअसव बेहो महोअसव (गठ—रत्ना २४)।

महोअसहि की [महोअवि] मठ कीनवि
(पठन)।

मा म [मा] मठ नहीं (बिह १८४ प्रमु
२१)।

मा ओ [मा] १ लक्ष्मी कीवत (सि ३, १३)
सुर ११, ३२)। २ सीमा (सि ३ १३)।

मा ४ एक [मा] १ समान, घटना। २
मात्र ४ एक माप करना। ३ निबय करण
काण्य। माह, माअह, माअव माअजा (पत्र
४ कुमा प्राक ११) सर्वेय १८ बीय)।

४ सर्व माअत (कुमा ४ ३ से २
६, पा २७८)। कव-सिखित मिलमाज
(सि ७ १६, उप ७६, बीय १४४)। इ-

माअवका 'माया सहस्र-माअवा', माअव
(सि ६, ३; महा कय)। बेहो मेअ = मेय।

माअहि पुं [माअवि] हज का घाति (सि
१३, २१)।

माअर बेहो माअ = माप (कुमा हे ३ ४१)।

माअहि बेहो माअहि (सि १३, ४६)।

माअहिआ की [३] माअवका मावा की
बहन (सि १ ११३)।

माअही की [मागही] काण्य की एक पीति
(कय)। बेहो माअहिआ।

माआवा } की [माव] १ माँ, बतरी (पह
माह } अ ४ १; कुमा प्रमु १७७)।

२ बेवता बेनी (हे १ ११३, ३ ४६, मुह
३ ६)। ३ की गरी। ४ माया (वैवा १७
४८)। ५ धूमि। ६ विमुति। ७ लवनी।

८ रेतनी। ९ धातुकर्णी। १० बटापायो।

११ हज-वाल्मी हज्जायल (पह १ हे १
११३, ३ ४६)। पर न [१३] बेनी-

मन्त्रि (मुह ३ ६)। टाण ठाण न

[३] स्मान] १ माया-स्थान (वैवा १७ ४८,
सम १६)। २ माया अन्त-सोय (वैवा १७

४८) उअर ८४)। 'मिह पुं [३] मेअ' मन्त्र-
क्रियेय जिसमें माता का मन्त्र भिया नाम वह

मन्त्र (पठन ११ ४२)। इर बेहो 'पर (हे
१ ११३)। बेहो माउ माया = माप।

माइ वि [मायि] माया-मुक्त, मायावी
(मन्त्र कय ४ ४)।

माइ म [मा] मय, नहीं (प्राक ७८)।

माइ } वि [३] १ रोमर रोमनामा प्रमुत
माइअ } बालों से मुक्त (सि ३ १२८ छाया

१ १८—पत्र २३७)। २ समुचित दुय
क्रियेयनामा (बीय मफ छाया १ १ टी—

पत्र ३ घट)।

माइअ वि [मायि] समाना हुमा, घटा हुमा
(मुह ६ १)।

माइअ वि [मायिक] मायावी (सि ६, १४७)
छाया १ १४)।

माइअ वि [मायिक] मायन-मुक्त, परिमित
(सु २ १५ हे ४ पत्र ६८)।

माइअ बेहो मा = मा।

माइ बेहो माइ = मा (हे २, १६१ कुमा)।

माइराग न [३] हज्जायल (ज ३६३)।

माइह [३] बेहो मायव (पत्र ३ ४१६)।

माइह पुं [मागत्र] सिंह, कम्पटी 'एअवर
पहुअरियमाइहवइरुअयमाअिअ' (बला

४२)।

माइहज्जाल } न [मायेन्जाल] मायन-नय,
मायन-वाअ } क्वायटी प्रवेज (सुर २ २२६)

स १६)।

माइहा की [३] धाममरी, धामना का मय
(सि ६, १२६)।

माइहिआ की [मागहिआ] धुप में बस
की प्रालि (ज २२ टी मोह २१)।

माइहि वि [३] मुहु कोमल (सि १ १२६)।

माइअ बेहो माइ = मायि (सु १ ४ १

१८ धाअर भा घोष ४१३ पठन ११

१३; बीय ठा ४ ४)।

माइआह } पुं की [३] माअवाह] कीनिय
माइआह } बन्तु क्रियेय सुत्र कीट-क्रियेय (उत

१६ १२६ बी १३; पुण्ड २६१)। की हा

(सु १ १८ १३ बी १३)।

माउ बेहो माइ = माप (भा सुर १ १७६,
बीय प्रामा कुमा पह १ हे १ १३४

११३)। गगम पुं [मान] की-नय (हह

१)। अहा बेहो 'सिआ (हे २ १४२

पा १४८)। 'पिठ पुं [३] पिठ] मां-बाप

(सुर १ १७६)। स्मारी की [मारी] माँ

की मां नानी (रंभ २)। सिआ सी

'सिआ की [३] पय] माँ की बहन मीदी

(हे २ १४२ कुमा बिना १ ३) सुर ११

२१६ वि १४८ बिना १ ३—पत्र ४१)।

माउ } वि [माउ, क] १ प्रमावा
माउअ } प्रमाअ-कटी छय जानना।

२ परिमाअ-कटी जाननेना। ३ पुं, बीय।

४ धाअर 'माउ' 'माउपो' (पह १ हे १

१११ प्राय प्राक ८ हे १ ११४)।

माउअ वि [माउक] मावा-संनवी (हे १

१११ प्राय प्राक ८ वाअ)।

माउअ पुं [माउक, क] १ मकर भावि
अभावि अभावि 'मरीय' छुं निजिय सावामीट

माउअक' (सम ६६ धाअ ३)। २ अवर।

३ कय (हे १ १११ प्राय प्राक ८)।

मीये बेहो।

माउआ की [माउअ] १ माता मां (छाया

१ ६—पत्र १२८)। २ ऊअर बेहो (मम

१६)। पय पुं [३] 'पय' शाओ के धार-भूत

अन्त्र—अन्त्राअ अय बीर टीय (सम १६)।

माउआ की [३] माउअ] दुर्गा पावैटी

क्या (सि १ १४७)।

माउआ की [३] १ उकी सदेवी (सि १

१४७ पय, छाया १ ६—पत्र १२८)।

२ ऊअर के होउ पर के बल दूय 'अपय

मन का (गुर ४ ७२) । ४ पु. मृगान्त्य के
पञ्चरत्नस्य वा मायक (इक) ।

मायसिञ्ज वि [मानसिञ्ज] मन-संकेपी मन
का (वा २४) बीज ।

मायसिञ्जा की [मानसिञ्जा] एक विद्या-वैरी
(संति ६) ।

मायि वि [मानिन्] १ मान-युक्त, मानयत्ना
(अन क्रम २०६, क्रम ४ ४) । बी.

णिगा (कुमा) । २ पु. एष्य का एक
कुम (पत्रम ३६ २) । ३ परित-विरोध । ४

कूट-विरोध (एक इक) ।

मायिञ्ज वि [दि मानिञ्ज] मनुज (३ १
१३ पाप) ।

मायिञ्ज वि [मानिञ्ज] सफल (पठ) ।

मायिञ्ज न [मायिञ्ज] रज विरोध मायिञ्ज
(गुरा २१० बना २ कण्) ।

मायिञ्ज रेको मायि (पत्रम ७१ २०) ।

मायिञ्ज पु [मायिञ्ज] १ यत् निकम्प के
अन विद्या का इक (अ २ १—पत्र ८२

इक) । २ यत्नरत्नों की एक वाणि (सिदि
१६६ इक) । ३ रेव-विरोध । ४ विचार

विरोध (एक इक) । ५ एक रेव-विमान
(एक) ।

मायिञ्ज रेको माय = मायक ।

मायी की [मानिञ्ज] २२६ वर्गों का एक
काप (मणु १२२) ।

मायुम पु [मायु] १ मनुष्य, मानव
मार्ग (मृग १ ११ १ पण्ड १ १ छ

गुर ३ ३६ प्राय कुमा) २ मनुष्य विषय-विषय
के इक त मनुष्य विरल (कुम २) मयाणि

मायिञ्ज-मनुष्यमायि विषय-विषय (कुम २६) ।

२ वि मनुष्य-संकेपी 'विदिह' बहानु-वि
पुन्यार्थ-विषय, व कहा विदि विमान-विषय

मनुष्य व (४ २) ।

मायुमी की [मायुमी] १ जी-मनुष्य मानवी
(पत्र २४१: कुम १९) । २ मनुष्य से

संकेत रखनेवाली 'मनुष्यी भावा' (गुर
१०) ।

मायुस्स रेको मायुम (माया बीम बर्मा
११ वन २: विदे १ ७): 'मायुस्स

भावा' (अ १ ३—पत्र १४२) 'मनुष्य-भावा'
शेव-मोहाई (कण्) ।

मायुस्स } न [मायुन्, क] मनुष्य-व
मायुस्सिय } मनुष्य-मनुष्यता (गुरा १६६,

४ १११ प्राय ४० पत्रम ३१ ८१) ।

मायुस्सो रेको मायुमी (पत्र २४) ।

मायुस्स रेको मायुम (गुर २ १७२ ठा ३
१—पत्र १४२) ।

मायुस्स पु [मायुस्स] मायिञ्ज पत्र (मरि) ।

मायुस्सोमा (मय) की [मनोरमा] मय-विरोध
(विष) ।

मायुस्स रेको मायुम (वीर) ।

मायुस्स रेको मायुम (ठा २, ३—पत्र
८) ।

मायुस्स रेको मायुम (पावा २, १ ८
१) ।

मायुस्स रेको [वि] माय, बननी (३ १
१११) ।

मायु रेको माय = की (प्राठ ८) ।

मायु रेको मायुम = मायुमी (हास १११) ।

मायु रेको [वि] मय-मय, मय-मय
मय (३ १ १२६, पण्ड) ।

मायुस्सिञ्ज न [वि] अर रेको (३ १
१२६) ।

माय म कोम मय-मय का मय-मय
(पत्रम ३८ ३६) ।

माय } पु [वि] माया, मा का मय (गुरा
मायग } ११ १९३) ।

मायग } वि [मायग] १ मयी मय
मायग } (पावा पण्ड ७१) । २ मय-मय
(मृग १ १ २ २८) ।

मायग रेको मायग = (३) (पत्रम ६८ ३३,
४ ७११) ।

माया की [वि] मायी माया की मय (३ १
११३) ।

माया वि [माया] 'मा' 'मा' मय-मय,
मय-मय (मय ४३३) ।

माया पु [माया] १ मय-मय-विरोध ।
२ मय-मय मय मय-मय-विरोध
(इक) ।

मायि म सबी के मय-मय में मय-मय
माया मय-मय (३ २ १६३ कुमा) ।

मायिमा } की [वि] माया की मय (विषा
मायी } ३ १—पत्र ४१: ३ १, ११२:

मा २ ४ प्राठ १८) ।

माय वि [माय] मय-मय मय (मय ३,
८२ दी पुण्ड १७२ मया) ।

माय वि [माया] मय-मय, 'मय-मय'
मय-मय (मय १) ।

माय रेको मय = मय 'मय-मय-मय-मय'
(मृग २ १ ४८) ।

माय रेको माया = माया (पावा) ।

माय रेको मय = मय । म वि [वि]
मय-मय का मय-मय (मृग २ १ ३७) ।

माय रेकी [वि] मय-मय (पत्रम ३३
७६) ।

मायग पु [मायग] १ मय-मय मय-मय
का मय-मय । २ मय-मय मय-मय का

मय-मय (संति ७ ८) । ३ मय-मय मय-मय
(पाप गुर १ ११) । ४ मय-मय मय-मय
(पाप) ।

मायग की [मायग] १ मय-मय (मय
१) । २ मय-मय (माय १) ।

मायग पु [मायग] मय-मय (मय १ १ ३७):
मृग २४२:

मायग पु [मायग] मय, मय (गुरा २४२:
मृग २४२) ।

मायग पु [वि] मायग मय मय का
मय (३ २ १७४): मय ३ १ १२८: मृग
७ १ १०) ।

मायग रेको मय-मय (मय १८ १) ।

मायग रेकी [मायग] मय-मय (मय १:
मृग १ १) ।

मायग की [वि] मय-मय मय (३ १
११६) ।

मायगिमा की [मयगिमा] मय-मय में
मय की मय-मय मय-मय

'मय-मय मय-मय मय-मय'
मय-मय मय-मय मय-मय

मय-मय मय-मय मय-मय
मय-मय मय-मय मय-मय

(गुरा २) ।

मापद्विज (अ) कैना मापद्विज (अवि) ।

मापा = वेगो माइ = माण्ड, 'मापाइ धई' र्धन्यो (मर्मैर २, पाप विना ११ पद) ।
 पित्र, 'पिनि पुन ['पिण्] मी-वात
 (वि १११; म १८२) । मरु पुं ['मरु']
 मा का वात (मुर ११ ४२; गुण १४४) ।
 'पिपि क्वा पिपि' इतिमात्र होर मरु
 मापाविनि मरुपिपिपि (वज्र १० २१) ।
 'केजय हेवेल वरि मापाविपिपि' ठोरमण्डाई
 (मुर १ २१२, १ २१५; मर्मैर ११
 मही) ।

मापा कैरी मणा = मापा, 'नो वरममय'
 पाहमोयण धाहमणा (उठ ११ ८ धीन
 उठ कम) ।

मापा औ ['मापा'] १ कण्ठ कण ठाव
 कोडा (मपु कुमा ठा १ ४ पाप प्रापु
 १०२) । २ इन्द्रजल (हे १ २३५ उठ
 म२१) । ३ मन्वातर-विरोध 'हो' प्यार
 (मिरी १२०) । ४ छन-विरोध (मि) ।
 'पार पुं ['नर'] पुन-कैर-पारी औ-पादि
 (मर्मैर १२ ४) । 'धीम न ['धीम'] 'हो'
 मरु (मिरी ४ १) । मास पुं ['मास']
 कण-पूर्वक कण्य कण (छम्प १ १)
 कण्ड १ २ कण धीन) । यत्तित्र पचीय
 नि ['प्रत्ययिक'] कण्ड से होलेवाला कण-
 कण्ड (कण ठा २ १ क १०) । 'वि वि
 ['पिपि'] मापापुन (वज्र ४८ ११) । औ.
 'पिपी (गुण १२०) ।

मापि नि ['मापि'] मापा-पुन, मापावी
 (अठ नि ४ ४) ।

मार नर ['मार'] १ ठाउर कण्ड । २
 म्हा कण्ड । मार मार (बापा कुमा
 का) । मरि मारद्विज (मि १२) । कर्म
 मारिज (अ) १ कर्म मारन मारव (नर
 १२) वज्र १ २, ७५) । कर्म मारिज
 (गुण १२०) । कर्म मारिजा (मही) मारि
 (का) (हे ४ ४१६) । हेरु मारज
 (मही) । कर्म मारिज मारयम्य (वज्र
 ११ ४२) मारिज (का १२० ठो) ।

मार पुं ['मार'] १ ठाउर (गुण ११५) । २
 कण्ड मीन (बापा गुण २ २ १०) का
 १ ४ ४) । ३ कण कण (गुण १ १ ४)

४) । ४ बान्नेर कर्म (उठ ७१८ ठो) ।

५ कौवा कण्ड का एक मरुकापम (अ ४
 ४—प २१२; हेरु १) । १ नि मार-
 कणा (छम्पा १ १६—प २ १) । मरु
 औ ['मरु'] धी (गुण १ ४) ।

मार पुं ['मार'] मरि का एक कण्ड (अ
 १) ।

मारण नि ['मारण'] माणेवला । औ. 'रिण'
 (कुम २१२) ।

मारण न ['मारण'] १ ठाउर । २ म्हा (म
 १११) ।

मारण (अ) नि ['मारण'] मारनेवाला
 (हे ४ ४४४) ।

मारणनिध नि ['मारणानिध'] मरु के
 कण्ड कण्ड का (अ ११) ११२ धीन
 कण्ड कण्ड) ।

मारजया औ ['मारजा'] मारजा (मपु
 मारजा) पद ११ म्हा १ १) ।

मारज कैना मापा (अ धीन ४४) ।

मार औ ['मार'] मरि-कण का कण्ड, गुण
 (छम्पा १ १६—प २ १) ।

मारि औ ['मारि'] १ ठो-मरि मरु-कण्ड
 कण्ड (व ४२२) । २ मारु (अवय) । ३
 कौवा, मरु (उठ १२६) ।

मारि औ मार = मारु ।

मारि नि ['मारि'] मारनेवाला (मही) ।

मारिज पुं ['मारिज'] ठाउर का एक कण्ड
 (वज्र २ ७) । कैना मारिज ।

मारिजि कैना मारु (वज्र ८२, २६) ।

मारिज नि ['मारिज'] माप हुना (मही) ।

मारिजगगा औ ['हे'] कुलिश औ (हे ६
 १११) ।

मारिज पुं ['हे'] कौवा 'वीर' मारिजे
 (अठि ४०) ।

मारिज नि ['मारिजा'] मरे कैना (गुण) ।

मारी औ ['मारी'] कैना मारि (व ४२२) ।

मारिज पुं ['मारिज'] मरि-विरोध (अ
 ४२६) । हेरी मारिज ।

मारिज १ ['मारिज'] एक विद्यावर
 मारिज १ ठाउर ठावा (वज्र ४ ११२) ।

१ ठाउर का एक कण्ड (वज्र २१ २०) ।

मारुज पुं ['मारुज'] १ वज्र मरु (अ
 गुण २ ४ मुर १ ४० ११ ११४) वात
 १४ मही) । २ कण्ड का विद्या (हे ६
 ४४) । 'वज्र पुं ['वज्र'] इन्द्रजल (मि
 ४४ हे १ ८०) । एव न ['म'] मरु-
 विरोध बाताम (वज्र २६, ११) ।

मारुज नि ['मारुज'] मरु के कण्ड, मरु-
 विरोध 'हो' धमम-कण मरुधम कण्ड
 मने होर (उठ १८५ ठो) ।

मारुज पुं ['मारुज'] इन्द्रजल (मि १०) ।

मारुज कण ['मारु'] १ ठो-मरु । २ कण्ड
 होना । क 'मरुधम-कण मरुधम' (छम्पा
 १ १—प २ ४) ।

मारु पुं ['हे'] १ धाउर कौवा (हे ६
 १४६) । २ मरु मरुधम-कण (हे १
 १४६ छम्पा १ १—प २ ४) पद ११
 १४) । ३ नि मरु (हे १ १४६) ।

मारु पुं ['हे'] १ ठो-विरोध (वज्र
 १८ ११) । २ मरु का मरुधम-कण
 मरुधम-कण 'मारु' (छम्पा १, १—
 प २ ४) मरुधम-कण मरुधम-कण १, १—
 प ४—प ११२) । ३ मरुधम-कण
 (अ ४) ।

मारु कैना मारु । मरु नि ['मरु'] मरु
 (उठ ११५) ।

मारु औ ['मारु'] १ मरुधम-कण ।
 मारुधम १ २ मरुधम-कण (वज्र २६, ७४
 पाप कुमा) । ३ मरुधम-कण (मि) ।

मारुधम पुं ['मारुधम'] मरुधम-कण के
 मरुधम-कण का मरुधम (अ ४, १—प
 १ २ ४४) ।

मारुधम औ मारुधम = मारु ।

मारुधम कैना मारुधम = हे. मारु (अ १ १—
 प २ २१) ।

मारुधम पुं ['मारुधम'] १ मरुधम-कण-विरोध
 (अ ४ का १४२ ठो) । २ मारुधम-कण का
 मरुधम मरुधम (पद १ १—प २ ४) ।

मारुधम पुं ['मारुधम'] मरुधम-विरोध, मरुधम
 को कण्ड से बान्नेरानी एक मरुधम (अ
 ४) ।

१४)। श्री. 'द्विधा (पाप)। २ न. पुन्य
स्वयं पुन्यपथ (पाप)। सुख दु [सुख]
१ प्रनयं द्वि-विशेष (पाप २०४)। २ न.
नयन-विशेष (पाप)। देवो मेध।

सिद्धि दु [सिद्धि] प्राय-विशेष (कर्म १)।

सिग देवो मय = मय (विधा १)। सुख २
२२७ सुधा १२० धन)। 'सीधो सिगाए
समस्तस्य वया' (सुध १ १ २१)। गंध
दु [गंध] पुन्यपथ मनुष्य की एक पदवि
(कर्म)। नाह दु [नाय] सिद्ध (सुधा
११२)। वर दु [पति] सिद्ध (सुध १
१ सुधा १११)। वालु-सी की [वालुसी]
नयन-विशेष (सुध १०—पत्र २१)।
'रि दु [रि] सिद्ध (उप ११ २ २)।
सिद्धि दु [सिद्धि] सिद्ध (सुध १ २४)।

सिगाया की [सुगाया] शिकार (सुधा २१४
दुध २१ मोह १२२)।

सिगाय न [सुगाय] ऊपर देवो (उप
१० १)।

सिगासिर देवो मगासिर (धम ८, इक पि
४४१)।

सिगावई देवो सिगा-वई (पत्रम २ १८४
२२ २१ उवा संत, दुध १८१, पत्रि)।

सिगी की [सुगी] १ हरिणी (मय)। २
विधान-विशेष (पाप)। फु न [पु] की
का पुन स्वान, मोहि (पाप)।

सिग्गु देवो मग्गु (पत्र, कुमा)।

सिग्गु (मय) देवो इग्गु = इय 'न उ देव
कपु सिग्गु न न वडु (महि)।

सिग्गु दु [सिग्गु] वयन, प्रनयं मनुष्य
(पत्रम २० १० १४ ४१ ही १२, सरोज
११)। पदु दु [प्रसु] स्नेहको का राजा
(रंघ)। 'पिय न [प्रिय] पमासु, व्याज
मनुज 'मिग्गुपियं दु कुत का गंधो ठा न
विमयी' (इह २)। 'सिद्धि दु [सिद्धि]
यवो का राजा (पत्रम १२, १४)।

सिग्गु न [सिग्गु] १ मयल वयन, वडु।
२ वि. मयल 'वडु' 'मिग्गु' से एकाग्र
(कर्म) 'वडु' 'मय' 'मिग्गु' (पत्रम २१
२१)। ३ मिग्गु-विशेष, सत्य पर विरक्त नही
रखनेवाला सत्य का मयजाना 'मिग्गु

विशेषविधानका सत्य एकाग्रमनियो कोर
(विशे २१२)।

सिग्गु देवो मिग्गु (धम १ २; ४)।

कार दु [कार] मिग्गु-कर्म (वयन)।
च न [सु] सत्य सत्य पर मयजाना
सत्य बर्न का मयिरवस्त (ठा १ १
प्राप १; मय जीव जय २११; कुमा)।
'जि जि [सिग्गु] सत्य बर्न पर विरक्त
नहीं करनेवाला परमार्थ का मयजाना (बं
१८)। 'विद्धि 'विद्धिय' 'विद्धि' 'विद्धिय'
जि [विद्धि, क] सत्य बर्न पर मयजाना नहीं
रखनेवाला जिन-बर्न से विद्धि बर्न को मानने
वाला (धम २१ कुमा ठा २, जीव;
छ १)।

सिग्गु य [सिग्गु] १ मयल, वडु
(वयन)। २ कर्म-विशेष मिग्गु-मोक्षधीय
कर्म (धम २ ४-१४)। ३ पुन-स्वतन्त्र
विशेष मयल पुन-स्वतन्त्र (धम २ २ १
११)। दसय न [दसय] १ सत्य सत्य
पर मयजाना (धम ८ मय जीव)। २ मयल
बर्न (कुमा)। नाय न [नान] मयल
ज्ञान विपरीत ज्ञान, मयल (मय)। सुय
न [मय] मयल शास्त्र, मिग्गु-विशेष-विशेष
शास्त्र (संवि)।

सिग्गु य [सु] मयल। सिग्गु (सुध १
७ १)। यग्गु सिग्गुमाय (मय)।

सिग्गु य [सु] देवो मा = या।

सिग्गु य [सिग्गु] मुनि पवित्र (उप ७२८
१)।

सिग्गु य [सु] सिद्धि, जोष करता। सिद्धि
कपु (सिग्गु)। प्रयो सिद्धि (सिग्गु)।

सिद्धि जि [सिद्धि] यद्वा, मयल 'सुमिद्धि'
मयल यद्वा सिद्धि 'सुमिद्धि' (बनी
१२, कपु सु १२, १७) है १ १२०
रंघ)।

सिग्गु य [मा, सी] १ परिमाण करता
मात्रा दीजता। २ बालन, निश्चय करता।

सिग्गु (विशे २१८) सिद्धि (पत्र २२४)।

सिग्गु न [मान] मान, माय परिमाण (उप
५ ७७)।

सिग्गु न । बलाकार, बलरंसी (१ १
१११)।

सिग्गु देवो सुग्गु (माध ८, रंघ)।

सिद्धि दु [सिद्धि] १ सुय, उवि (सुधा १४४,
सुध ४ १; पाम बला १४४)। २ मयल-देव-
विशेष मनुष्य का मयल का मयल का देव
(ठा २ १—पत्र ७७ सुध १ १२)। ३
मयल का सीधु मयल (धम २१; सुग्गु
१ ११)। ४ एक राजा का नाम (विधा
१ २)। ५ पुन. सत्य मयल सत्ता मिटो
सही बर्नको (वयन) 'प्रायमिठा' (ध
७ ७) 'सिद्धि मिटो इह' (ध ७ १२;
सुधा १४४, प्राय ७५)। 'केसी की [केसी]
इह परीत पर रखनेवाली एक सिद्धिवादी
देवी 'वर्न' का मिट (रंघ) 'केसी' (ठा ८—
पत्र ४४१ इह)। गा की [गा] विरोधन
बलीन की एक मय-मयिनी एक इकाई
(छ ४ १—पत्र २ ४)। गवि दु
[नन्दिम] एक राजा का नाम (विधा २
१)। हाम दु [हाम] एक दुधकर
पुत्र का नाम (धम ११)। देया की
की [देया] मनुष्य का नाम (पाप)। य
जि [यज] मिग्गुमाय (उप १ १८)।
सेण दु [सेन] एक पुन-विशेष-युन (सुधा
१ ७)।

सिद्धि देवो मेध = माय (धम की ११
प्राय १४४)।

सिद्धि दु [सु] कर्म का (१ ६, १२१
सु ११ ११८)।

सिद्धि की मयि १ मान परिमाण। २
सत्यता

'उपमयवायमयि मिटोय यद्वा मोमयि दुग्गु'
उपमयवायमयि मिटोय यद्वा यजमयि'
(पत्रम १७)।

सिद्धि की [सुधिय] मिटो मटो (मयि
२४१)। बडु की [बडु] राजा देव की
प्राचीन राजवासी (विधा ४८)।

सिद्धि य [सिद्धि] मिग्गु को बडुता।
बडु. सिद्धिमाय (उप ११ ७)।

सिद्धि न [सिद्धि] १ मय-विशेष को बडु
मय की एक राजा है। २ पुन की उज योम में
जयन (छ ७—पत्र ११)।

मिथिलवा पुं [दे] श्लेष, पवित्र वडा बाई (दे १ १२२)।

मिथी की [मिथी] मिथवा सेली (सुप्र २ ७ १९ या १४ प्रान्)।

मिथुन रेको मिथुन (पञ्च १६ ११)।

मिथु रेको मिथ (पवि १८३)। गत—एला (=)।

मिथिल पुन [मिथिल] १ मरिच का बाइ। २ मरिच मिर्चा (पण्ड १७—पञ्च १११ दे १४)। य १ टी पञ्च २२१)।

मिथिया की [दे] मुठी खोपड़ी (दे १ १२२)।

मिथि { मुठी [मुठी] मिथि प्रया
मिरी { ठेक 'मिथिमिथिप्रय' (मील)
मिरी { 'कण्ठा खमिर (टी) या' (मील)
मिरीय { 'मिथिमिथिप्रय' (मील)
य १—पञ्च २२१) 'मिथिमिथिप्रय'
किन्तुलेय— (मील) 'मिथिमिथिप्रय'
मिथिमिथिप्रय' (पण्ड १ ४—पञ्च ७२)।

मिथि एक [मिथि] मिथि। मिथि (दे ४ ११२ रंका गहा)। कन्, मिथिमिथि (दे ४ ४१४)। कन् मिथि (दे १ ११)।

मिथिल पुन रेको मिथिल = स्नेह (मील ४४)। कन् १८ ३८ १११ जग १ १६) 'मिथिल' (पि १८१)।

मिथिल न [मिथिल] मेम मिथिल एकविठ होना 'मिथिलमिथिल' (पञ्च १७७)। पुन २२)।

मिथिल की ऊपर रेको (जग १२८ टी) कन ७ ६)।

मिथि { एक [मिथि] मिथिल मिथिल
मिथि { होना। मिथिल, मिथिल (दे २ १ १४ ४ २४ पञ्च)। कन् मिथि
अंत मिथिलमिथिल (पि १११ या १ १, याया १ ११)।

मिथिल { वि [मिथिल] मिथिल मिथिल
मिथिल { (एला १ १—पञ्च १७ ४ ४२३) दे २ १ १ पुन गहा)।

मिथिल न [दे] वर्या (?) — वायव्यदिक्-
वायव्यदिक् (मील)।

मिथिल की [मिथिल] मिथिलमिथिल (जग ४२३)।

मिथिल वि [मिथिल] मिथिल (या ४४३)।

मिथिल वि [मिथिल] मिथिल (या ४४३)।
मिथिल रेको मिथिल = स्नेह (दे १ ४४३)।

मिथिल वि [मिथिल] १ मरिच का बाइ। २ मरिच मिर्चा (पण्ड १७—पञ्च १११ दे १४)।

मिथिलमिथिलमिथिल (पण्ड १ ४—पञ्च १११)।

मिथिल रेको मिथिल (मील २२ टी)।

मिथिल एक [मिथिल] मिथिल, मिथिल (मील २२ टी)। कन् मिथिल (पञ्च १११)। प्रयो. कन् मिथिलमिथिल (पण्ड १ ४—पञ्च १११)।

मिथिलमिथिल वि [मिथिल] मिथिल (या ४४३)।

मिथिल (या) रेको मिथिल (पि)।

मिथिल वि [मिथिल] मिथिल (या ४४३)।
मिथिल (पञ्च १११)। प्रयो. कन् मिथिलमिथिल (पण्ड १ ४—पञ्च १११)।

मिथिल वि [मिथिल] मिथिल (या ४४३)।

मिथिल रेको मिथिल (पि)।

मिथिल वि [मिथिल] मिथिल (या ४४३)।

मिथिल (या) रेको मिथिल (पि)।

मिथिल वि [मिथिल] मिथिल (या ४४३)।

मिथिल (या) रेको मिथिल (पि)।

मिथिल वि [मिथिल] मिथिल (या ४४३)।

मिथिल (या) रेको मिथिल (पि)।

मिथिल वि [मिथिल] मिथिल (या ४४३)।

मिथिल (या) रेको मिथिल (पि)।

मिथिलमिथिल वि [दे] मिथिल (या ४४३)।

मिथिलमिथिल वि [दे] मिथिल (या ४४३)।

मिथिलमिथिल वि [दे] मिथिल (या ४४३)।

मिथिलमिथिल वि [दे] मिथिल (या ४४३)।

मिथिलमिथिल वि [दे] मिथिल (या ४४३)।

मिथिलमिथिल वि [दे] मिथिल (या ४४३)।

मिथिलमिथिल वि [दे] मिथिल (या ४४३)।

मिथिलमिथिल वि [दे] मिथिल (या ४४३)।

मिथिलमिथिल वि [दे] मिथिल (या ४४३)।

मिथिलमिथिल वि [दे] मिथिल (या ४४३)।

मिथिलमिथिल वि [दे] मिथिल (या ४४३)।

मिथिलमिथिल वि [दे] मिथिल (या ४४३)।

मिथिलमिथिल वि [दे] मिथिल (या ४४३)।

मिथिलमिथिल वि [दे] मिथिल (या ४४३)।

मिथिलमिथिल वि [दे] मिथिल (या ४४३)।

मिथिलमिथिल वि [दे] मिथिल (या ४४३)।

मिथिलमिथिल वि [दे] मिथिल (या ४४३)।

मिथिलमिथिल वि [दे] मिथिल (या ४४३)।

मिथिलमिथिल वि [दे] मिथिल (या ४४३)।

मिथिलमिथिल वि [दे] मिथिल (या ४४३)।

मिथिलमिथिल वि [दे] मिथिल (या ४४३)।

मिथिलमिथिल वि [दे] मिथिल (या ४४३)।

मीट रेवो मित्र = मित्र (संज्ञ १७) ।
मीर्मस सक [मीर्मास्] विचार करना ।
ह. व-मीर्मसा प्रुक् (स ७१) ।
मीर्मसा ओ [मीर्मासा] बैमिनीय स्तन,
पूर्वमीर्मासा (मुद्र ११; प्रमवि १८) ।
मीर्मसिय वि [मीर्मासित] विचारित (का
१८९ टी) ।
मीय ओ [दे] शीर्ष कुम्भी बड़ा मुद्रा
(सुपनि ७१) ।
मीळ म्क [मीळ्] मीचला बन्व होला
सकुचाला । मीलइ (हे ४ २१२ पद) ।
मीळ रेवो मिळ (वि ११) ।
मीळच्छीकर दु [मीळच्छीकर] १ यत्न
रैठ-विरोध "मीलच्छीकाररेवोवरि बसिबो
बपरबाणायपा" (हमीर १३) । २ एक
यत्न रणा (हमीर १३) ।
मीळय न [मीळय] संकोष (कुमा) ।
मीळय रेवो मिलाज "मणयणमणमीलणीबमा
मिस्मा" (वि ११; राज) ।
मीळिय रेवो मिलाज = मिश्रित (विम) ।
मीस सक [मिस्मय] मिलासा मिषण
करना । कर्म. मीसिबइ (वि १४) ।
मीस वि [मिस्म] १ संयुक्त, मिला हुमा
मिस्मि (हे १ ४१ २ १७ कुमा कम्म
२ ११ १२, ४ ११ १७, २४ मन्
४१ २ २२) । २ न लयदाय टीम मिलो
का जयवास (संकोष २८) ।
मीसासिय वि [मिस्म] संयुक्त मिला हुमा
(हे २, १७ ; कुमा) ।
मीसिय वि [मिस्मि] अंगर रेवो (कुमा
कम्म धवि) ।
मुस सक [मोयस्] मुष्ट करना । कनइ
मुसज्ये (सि ७ १०) ।
मुस सक [मुस्] झोड़ना । मुसइ (हे ४
११), मुपति (मा ११६) । बह. मुसज्ये,
मुसमाय (मा १४१ से ४ १३, वि ४२३) ।
संज्ञ. मुसता (मा) ।
मुस वि [मुस्] मद्य हुमा (वि १ १२ गा
१४१, बमा १३२; प्राय १७; पदम १८
१४; जप १४२ टी) । बहण न [बहण]
रज-पान, ठटी घापी (हे २ २) ।

मुस वि [स्मृत] याव किया हुमा (मुस २
, ७ १२ घापी) ।
मुसक रेवो मिर्जक (प्राज्ञ न) ।
मुसंग रेवो मिर्जंग (पद सम्मत २१८) ।
मुसंगी ओ [दे] कीटिका भीटी (हे १
११४) ।
मुसगय दु [दे] भाला बास और धम्मपर
पुण्यतो से बना हुमा है ऐसा मिम्य ज्ञान
(अ ७ टी—पत्र १८१) ।
मुसण न [मोचन] कुठारा झोड़ना (सम्मत
७८; विरे ११११; जप १२) ।
मुसज (मप) रेवो मुस = मुष्ट (विम) ।
मुसा ओ [मुस्] मिट्टी (संज्ञ ४) ।
मुसा ओ [मुस्] हर्ष कुरी घागण
"धुरयरसाधेवि दुर्व मरिस्व जमणइतस
सा एवा" (रमा) ।
मुसाओ ओ [दे] कुम्भी रोमिन बगबालिन
(हे १ ११३) ।
मुसाबिज वि [मोचित] कुठारा हुमा (स
४४४) ।
मुस वि [मोचिम्] झोड़नाला (विरे १४ २) ।
मुसज वि [मुचित] १ हविष मोक्ष-सात (सुर
७ १२३ प्राय १ ३४ जम धीय) । २ दु
पथका का एक मुसट (पदम १६ ३२) ।
मुसज वि [दे] मोचि-मुस विरोध मातावासा
"मुसो की होई बोधिमुद्रो" (सीप—टी) ।
मुसजंग रेवो मुसजंगी "जबतिपति कया
मुसजंगई नवरि छु" (सि १३१) ।
मुसंग रेवो मिर्जंग (हे १ ४६ ११७; प्राय
जम; कम्म मुसा १३२; पाप) । "मुसकर
दुन [मुसकर] मुसंग का ऊपरवाला घाग
(मन्) ।
मुसंगिया } ओ [दे] कीटिका भीटी (जम
मुसंगा } ११४ टी संघा ८९ विरे
१२ न सि १३१ टी) ।
मुसंगि वि [सुरजिम्] मुसंग बगबाला
(कुमा) ।
मुसंग रेवो मरिष = मुद्रक (प्राज्ञ न) ।
मुसज्ये रेवो मुस = मोक्ष ।
मुस वि [मोक्ष] झोड़नाला (सघ) ।
मुस रेवो मिड (कल) ।

मुसज्ये दु [मुसज्ये] १ मुस-विरोध (मन्
१६) । २ मुस-मुस-विरोध (मन्) ।
मुसज्ये दु [मुसज्ये] विष्णु मायवण (मट—
सैठ १२६) ।
मुसर रेवो मटर = मुसुर (पद) ।
मुसल रेवो मठल = मुसल (पद मुसा ८४) ।
मुसायण न [मुसायण] मोच-विरोध विरयका
नयन का मोच (सक) ।
मुंष रेवो मुस = मुस । मुंषइ, मुंषए (पद
कुमा) । मुका मुकी (सत ७६) । धवि
मोषट, मोषिधई दुविधई (हे १ १७१
वि १२३) । कर्म. मुण्णइ, मुकर, मुचति
(धमा हे ४ २१ महा मग) । धवि
मुचिधति (मप) । बह. मुचय (कुमा) ।
कनइ मुचय (वि १४२) । संज्ञ. मोचुं,
मोचुआण, मोचुय (कुमा पद, प्राज्ञ १४) ।
हे. मोच (कुमा) मुंषणहिं (मप) (कुमा) ।
क. मोचय, मुचय (हे ४ २१२ गा
१७२ मुसा १८६) ।
मुंष पुन [मुंष] मुंष वृण-विरोध जिसकी
रखी बगई बाही है (मुस २ १ १६;
नम्ब २ १६, जम १४८ टी) । "मेहम
की [मेहम] मुंष का कर्मिण (आया १;
१६—पत्र २११) ।
मुंषइ न [मीक्षिम्] १ मोच-विरोध । २
पुंकी मोच में जलन (ठा ७—पत्र १६) ।
मुंषकार दु [मुंषकार] मुंष की रखी
बगबाला शिकी (मन् १४६) ।
मुंसायण दु [मीसायण] श्रवि-विरोध (हे
१ १९ प्राय) ।
मुंशि दु [मीक्षिम्] अंगर रेवो (प्राज्ञ १) ।
मुंठ वि [दे] हीन शरीराला
"वे बमनेरमुद्रा पाय पावीं बमपाटी ।
दे हीं डुंयुटा बोधिनि मुंशुरा ठेति"
(संकोष १४) ।
मुंठ सक [मुंठय्] १ मुंठना बल
रवाहुमा । २ ठीका रेवा संघात रेवा ।
मुंठर (मप) मुंठइ (मुस २ १ ११) ।
प्रयो. बह. मुंठाभय (पंथा १ ४२ टी) ।
हे. मुंठावेर, मुंठापिचय, मुंठाबचय
(पंथा १ ४२ टी २ १ म्) ।

मुद्रिम् पुं० [वे] वर्षं चर्याह, प्रवृत्तयो मे
‘मोदयः’ ‘कम्पमुद्रिम्भीकरो’ (हम्मीर १३)।
रेको मोद्रिम्।

मुद्रु नि [मुद्र, मुषित] जिसकी चोटी हुई
हो वह (सिंह ४६६ गुर २ ११२) मुषा
१११) महा)।

मुद्रि पुं० [मुद्रि] घुड़ी घुड़ी गुँदा गुधा
‘मुद्रिणा’ मुद्रिम् (सिंह ४७६ १८२; पाय
रंभा मरि)। मुद्रम् न [मुष] मुद्रि से
की बारी बहाई, मुद्राघुकी (बाबा)।
मुष्य न [मुष्यक] १ बार बंधुस सन्ना
कुत्तार मुषक। २ बार बंधुस सन्ना
कनुषको मुषक (पत्र ८)।

मुद्रिष पुं [मोद्रिष] १ धन्यं रैष-विशेष।
२ एक धन्यायं मनुष्य-जाति (पण्ड १ १—
पत्र १४)। ३ मुद्रि से बहनेवाला मल
(पण्ड २, ४—पत्र १४६)। ४ नि मुद्रि-
सन्नामी (कम्प)।

मुद्रिष पुं [मुद्रिष] १ मल-विशेष जिसकी
बहने ने मारा का (पण्ड १ ४—पत्र
७२ सिंह)। २ प्लावं रैष-विशेष। ३ एक
धन्यं मनुष्य जाति (हक)।

मुद्रिषा की [वे] हिल्का हिषकी (वे ६
११४)।

मुद्रु रेको मुद्र (कुमा)।

मुद्रु नि [मुष्य, मुद्र] मुर्ब बेरबुस
(हम्मीर २१)।

मुष एक [द्रा मुष] बालमा। मुषह,
मुषति, मुषिमो (हे ४ ७ कुमा)। कर्न,
मुषिज्यर (हे ४ २२२) मुषिज्यानि
(हाम १४८)। नह मुषजत मुषित (महा
पत्र १४८)। कम्प मुषिज्यमाज (वे
२, ११)। सहु मुषिय, मुषिर्द मुषि-
कग मुषेऊज (दीपा महा)। ह
मुषिज्यल मुषेज्यम् (कुमा वे ४ २४
क ४२) कम्प ल की १२)।

मुषेय न [हान मुषन] हान बालकाटी
(गुर १८४) उषीय २४४ बर्नि (१२४,
लख)।

मुषमुष एक [मुषमुषाय] कम्पय रुक
कम्पा बहकम्पा। नह, मुषमुषजत
मुषमुषित (महा)।

मुषाक पुं [मुषाक] १ पण्डित के ऊपर
की बेल—मठा (भाषा २ १ म ११)।
२ बिह पण्डित। ३ पण्डित के नाम
का ठग—मुष (पाय खाया १ ११
दीप)। ४ बीरण का मुस। ५ पण्डित कम्पा
‘मुषातो’ ‘मुषात’ (पाय हे १ १११)।

मुषासि पुं [मुषासि] १ पण्डित। २
पण्डित प्रदेश कम्पवाला स्वात ‘मुषासी
बगली’ (मुषा ४११)।

मुषासिआ की [मुषासिआ, ‘से] १
मुषासी ३ बिह-ठग, कम्प-नाल का मुषा
(माय—रमा २१)। २ बिह का बंधु
(पत्र ४)। ३ कम्पिनी (राज)। रेको
मुषासिआ।

मुषि पुं [मुनि] १ राय हे-पण्डित मनुष्य,
संत वाद, अपि पति (भाषा पाय मुमा
पत्र ४)। २ पण्डित अपि ‘जबहिनसं न
मुषिसा’ (मुषा ४८६)। ३ राय की
सन्ना। ४ कम्प-विशेष (सिग)। रंय पु
[‘बम्प’] १ एक प्रसिद्ध सैन धन्यायं बीर
रंयकार, को बारी बेरसुरि के पुत्र ने (बम्मी
२२)। २ एक राय-मुष (महा)। नाह पुं
[‘नाय’] वादुषों का नाम (मुषा १६
२२)। गुंगल पु [‘गुङ्गल’] येह मुनि
(मुषा ४७ म ४१)। राय पु [‘राय’]
मुनि-नामक (मुषा १६)। वर पुं [‘वर्’]
वही धर्म (मुषा १८१ २ ६)। वर पुं
[‘वर’] येह मुनि (गुर ४ २६ गुषा
२४४)। येसयत पु [‘येसयस’] मुनि-
प्रभाव, येह मुनि (हय १ ६, २)। सीह
पु [‘सीह’] येह मुनि (सि ४१६)।

मुष्यय पुं [‘मुष्यय’] १ बर्तमान काल में
ऊपल आरतवर्ष के बीसवें दीर्घकर (सम
४१)। २ बादावर्ष के एक सौ दीर्घकर
(सम १२१)।

मुषि पुं [वे मुनि] इत-विशेष धन्यति
हुम (वे ६ १११) कुमा)।

मुषि नि [द्राव, मुषित] बाबा हुषा
(हे २, १६१) पाय मुषा मरि ११ पण्ड
१ २ क १४१ टी)।

मुषि नि [वे मुषि] बह-मुषीय मुष-
किट, पापत (कन १२—पत्र ६१४)।

मुषि पुं [मुनीम्] येह मुनि (हे १ ८४
मग)।

मुषिर नि [द्राव, मुषित] बालनेवाला
(सण)।

मुषीरा पुं [मुनीरा] मुनि-नायक (क १४१
टी मरि)।

मुषीसर पुं [मुनीसर] ऊपर रेको (मुषा
१६१)।

मुषीसिम (ध) पुं [मनुष्यत्व] १
मनुष्यत्व। २ गुणार्थ (हे ४ ३१०)।

मुष एक [मुष्य] घुवता पेटाव करात।
मुषति (गुर ६२)।

मुष न [मुत्र] प्रसवण पेटाव (मुषा ११६)।

मुष रेको मुष—मुष (सम १: वे २ १०
की २)। १ जय पुषी [‘जय’] मुष योनों
का स्वात, रैषवापार बायक मुषिनी (हक)
की या (हा ८—पत्र ४४) सम २२)।

मुष नि [मुष] १ मुषिबला स्ववात,
बायबाला (वैल ६१)। २ कति। ३
मुष। ४ मुष्य-मुष (हे २ १)। ५ पुं
बरावत एक दिन का जपवात (दीपा
१८)। ६ एक प्राय का नाम (कम्प)।

मुष रेको मुषा (दीप सि ६७ वैल १४)।

मुषय रेको मुष।

मुषा की [मुष्य] मोदी मीछक (कुमा)।
वाल न [‘वाल’] मुष्य-सुह मोषियों
की सन्ना (दीप सि ६७)। वाम न
[‘वामर’] मोषियों की सन्ना (हा ४
२)। वकि, वकी की [‘वकि की’] १
मोदी की सन्ना मोदी का हार (सम ४४)
पाय)। २ उप-विशेष (वैल ११)। ३ दीप-
विशेष। ४ मुष्य-विशेष (राज)। मुषि की
[‘मुषि’] १ मोदी की दीप। २ मुष्य-विशेष
(वैल २४ पत्र ४ २१)। हक न [‘हक’]
मोदी (हे १ २११) कुमा प्राय २)।
हकि नि [‘हकि’] मोदीबला
(कम्प)।

मुषि की [मुषि] १ कन माफार ‘मुषि
सिमुषेय’ (सिंह १६ सिंसे ११८२)। २
प्रतिविम्ब, प्रतिपुति प्रतिपण ‘बम्पुसु-
मुषि-

कठर्य (धनीय २) । ३ शरीर, शरीर (पुर १ ३) पाप) । ४ बाह्यिक कथितव्य (हि २ ३) प्रायः) । संत वि [संतु] मुक्तिवत्ता पूर्व, वनी (वनीति ३) मुता १३६ पृ २०) ।

मुक्ति की [मुक्ति] १ मोक्ष निर्वाण (भाषा पाठ्य ग्रन्थ १२३) । २ निर्वाणता, संतोष (पा ११) । ३ मुक्त कीर्ति का स्थान ईश्वरप्राप्त्यर्थ मुक्ति (अ ४—पत्र ४४) । ४ निर्वाणता (भाषा) ।

मुक्ति वि [मुक्ति] बहु-भूत रोपणाला 'उत्तरि' च पाठ मुक्ति च वृत्तिर्वाच्य विनिर्वाण (भाषा) ।

मुक्ति वि [मोक्ति, मोक्ति] मोती पिरोने या पूर्वले बला (अ ४ २१) ।

मुक्तिवत् न [मोक्ति] मुक्त मोती (हि २ ४८, कुप ३, कुमा मुता २४—२४६) प्राय १२ १०१) । केही मोक्ति ।

मुक्तोष्ठी की [वि] १ मुक्तपत्र (तं ४१) । २ बहु छोटा बाला की ऊपर नीचे छोटी छोटी धार मध्य में विच्छिन्न हो (पत्र) ।

मुक्त वि [मुक्त] मोक्ष गल्लोका (पत्र ३) की तथा (छोटी ४४ कुमा) ।

मुक्तग रेको मुक्तग (अ ४—पत्र १ २) ।

मुक्ता की [मुक्ता] हर्ष कुटी । मर वि [कर] हर्षजनक (पृ १ ९ ६) ।

मुक्ता पुं [वि] बाह्य-निर्वाण पल्लवमु की एक बाण (बीज १ टी—पत्र १९) ।

मुक्त एक [मुक्त] १ मोक्ष लक्षणा । २ मुक्त करता । ३ प्रवक्त करता । मुक्त (वर्म ११ टी) ।

मुक्त पुं [वि] १ लक्षक । २ सम्मान (?) (अ ४३ ३ ४४४) ।

मुक्त पुं [मुक्ति] धैर्य (जा) 'केही मुक्त' पर । मुने कि बहु बहुविधुकी एव (पत्र २३ २४) ।

मुक्ता की [मुक्ता] १ मोक्ष, क्षय (मुता १२१ बजा १२९) । १ शैली (वरा) । ३ धर्म-विशेष-विशेष (बीज १४) ।

मुक्ति वि [मुक्ति] १ विद वर मोक्ष लक्ष्य ही हो वर । २ वर विद्या हुमा (पापा १ २—पत्र ४९ अ १ १—पत्र १११) ।

मुक्ति की [मुक्ति] धैर्य (पत्र १ मुक्ति) । ४ वर वीज तं १२) । वर पुं [वर्म] धर्म-लक्ष्य लक्ष-विशेष (बीज ४ २ ४४) ।

मुक्ति की [मुक्ति] १ वर की लता (पत्र १—पत्र १३) । २ वरता वर (अ ४ १—पत्र २३६, अ ४ १२, पत्र १३३) ।

मुक्ती की [वि] मुक्त (वि १ १३३) ।

मुक्तपु रेको मुक्तपु (पत्र १—पत्र ४४) ।

मुक्त रेको मुक्त (बीज) कर्म प्रोक्त (१३ कुमा) । म वि [म्य] १ मत्तक में ज्ञान ।

२ मत्तक-वत् प्रवेष्ट । ३ पूर्व-वर्तीय रकार पाणि गरी (कुमा) । य पुं [म] केत बल (पत्र १ १—पत्र २४) । मुक्त न [मुक्त] मत्तक-वीजा रोप विशेष (शाय १ १३) ।

मुक्त वि [मुक्त] १ मुक्त, मोक्ष-मुक्त । २ मुक्त, मोक्ष, मोक्ष-जनक (हि २ ४४ प्राय कुमा विता १ ४—पत्र ४०) ।

मुक्ता की [मुक्ता] मुक्ता की गंधिका का एक नेत्र नाम-वेष्टा-विष्ट धनुषि जीवना (कुमा) ।

मुक्ता (पत्र) केही मुक्ता (कुमा) ।

मुक्ता केही मुक्त (वरा कर्मा वि ४ २) । मुक्त पुं [वि] वर के ऊपर का निर्वाण कल, मुक्तापी में 'वीज' (२ ९, १३३) । केही मोक्ष ।

मुक्तपु वि [मुक्त] मुक्त होने की वाह बला (सम्पत् १४) ।

मुक्तपु [वि] [मुक्तपु] १ धर्मलक्ष मुक्त । मुक्तपु २ धर्मलक्षणा (पत्र १ १२ २, पत्र) ।

मुक्तपु एक [वर्ण] वरता वर कर । मुक्तपु (पत्र ४२) ।

मुक्तपु पुं [वि] कर्ण पोष्य (वि ९, १४०) ।

मुक्तपु पुं [वि] मुक्तपु १ कर्णजित पोष्य की भाव (वि ९ १४० बी ९) । २ गुणजित (पत्र १ २००) । ३ लक्ष-लक्ष्य धर्म, लक्ष विविध धर्म-वत् (अ १४ टी की १ बीज १) ।

मुक्तपु की [मुक्तपु] लक्ष की कल वरापी में लक्षी वरा—व से ६ वर

वक को वरता (अ १०—पत्र २१६) तं १९) ।

मुक्त एक [वर्ण] १ विनाश करना । २ लक्ष जरीज करना । ३ वीज बताना । ४ लक्ष्य करना । ५ व्यास करना । ६ वीजना । ७ वंजना । मुक्त (पत्र ४३) ।

मुक्त एक [मुक्त] वीजना । मुक्त (वि ४ ११४ पत्र) ।

मुक्त पुं [मुक्त] रेल-विशेष । रिट पुं [रि] वीजपु (टी ९) । 'वेरिय पुं [वेरिय] नहीं धर्म (कुमा) । रिट पुं [रि] नहीं धर्म (वर्म १२४) ।

मुक्त की [वि] वरापी मुक्त (वि ९, १३३) ।

मुक्त पुं [मुक्त] मुक्त, वाय-विशेष (कुमा मुक्त) पाठ-या २२३ मुता १३३) संत वर्तित ११२ कुप २०० वीज अ ४ २१९) । केही मुक्त ।

मुक्त पुं. [मुक्त] एक भारतीय वीज के वर वर विचार छ बिदा गुप्त मुक्त (पा ९) ।

मुक्त केही मुक्त (बीज अ ४ २३९) । २ धर्म विशेष, लक्ष-विशेष (बीज) ।

मुक्ति की [वि] मुक्तिवत् पानल-विशेष (बीज) ।

मुक्ति वि [मुक्ति] वीजा हुमा (कुमा) ।

मुक्ति वि [वि] १ वृद्धि, हृय हुमा (वि ९, १३३) । २ मुक्ता हुमा वर कल हुमा (मुता २४०) ।

मुक्ति पुं [सीध] १ प्रविष्ट वधिय-वत् (अ २११ टी) । २ मीर वत् में ज्ञान 'उपविष्ट मु' (मुक्तिवत्) (वि २१३०) ।

मुक्त पुं [मुक्त] १ वरापी वर-विशेष (अ १४ २४०) । २ वर-विशेष (अ १४ २४०) । ३ पुं की मुक्त वर का निवासी मुक्त (पत्र १ १—पत्र २४) । की 'की (१३३) ।

मुक्ति की [वि] वर-विशेष (पत्र) ।

मुक्त केही मुक्त = वर (वि २, ११२ कुमा मुता १११ पत्र २४०) ।

मुक्त [वि] वर-विशेष की वर (वि ९ १३३) ।

मेय पि [मिय] १ जातने योग्य प्रमेय पवार्न, बलु (उच १८० २३) । २ जातने योग्य (बड) । अ पि [म] पवार्न-जाता (उच १८, २३; मुल १८ २३) ।

मेय पुन [मियस] १ शरीर-स्वयं बाहु-विशेष पवार्न (तुंग ३८ छाया १ १२—पत्र १७३ पत्र) ।

मेयज न [ने] भाग्य घन (१६ १३८) ।

मेयज पु [मिदाय] मेयार्न योग में उत्पन्न (मुय २ ७ १) ।

मेयज पु [मिताय] १ मज्जा महावीर का वस्त्राणवर (सम १६) । २ एक बैन मयवि (उच गुपा ४ ८, जिने ४३) ।

मेयय पि [मियक] काता कण्ठ-वर्ण (पत्र ११६) ।

मेयय पि [मे] घसहन घसकिपु (१६ १३८) ।

मेयल पु [मेयज] पर्वत-विशेष । कसा की [कस्या] नर्वा ली (ताय) ।

मेयबाइय पुन [मिदायक] एक भारतीय देश, मेयबा; यहाँ बाहुनि घसकिपि मेय बाइय हनीर-पेय (हनीर २७) ।

मेयपि १ की [मिदिनी] १ वृषि की बछी मईपी (मुपा १२; कुमा प्राय २२) । २ पर्वत-विशेष (मुपा १३; समर १७२) । "महा पु [नाय] राजा (उच १८९ गुपा १ ८) । पत्र पु [पवि] १ राजा । २ पर्वत-विशेष की विष्णु-उपवर्णोपि कोटदेई न मेयपि-विन न पु मावर्नो (मुपा १२) ।

मायि पु [स्वामि] राजा (उच ७२८ टी) ।

मेयपीसर पु [मेयनीसर] राजा (उच ७२८ टी) ।

मेय पु [मे] हस्तिक महावर (१६ १३८) । केओ मिड ।

मेओ की [मे] मेओ, मेओ मयरीया (१६ १३८) ।

मेय दुओ [मे] मेओ मेय मेय, माइर (उच ७२) । की [मे] मेओ, मेओ (१६ १३८) । मुय पु [मुय] १ एक घसकिपि । २ घसकिपि विशेष में पवर्न-ली मयुज-मायि (उच ४ १—पत्र २२९ ४३) । बिदाया की

[विदाया] बलपति-विशेष मेय-विशेष (उच ४ १—पत्र १८३) । केओ मिड ।

मेयल केओ मेयल (पत्र) ।

मेयज न [मिय] मान, टीस बट बटकर जिसने माना मान बह (मयु १३४) ।

मेय केओ मेय (कुमा गुपा २ १) ।

माकिनी की [माकिनी] मयन बल के ठिब पर पवर्न-ली एक विष्णुमाटी केओ (उच ८—पत्र ४१७) । पत्र की [पवी] एक विष्णुमाटी केओ (उच ८—पत्र ४१७) ।

वाहण पु [वाहन] एक विदायर राज-कुमार (पत्र २, १३) ।

मेयकप की [मेयकप] एक विष्णुमाटी केओ (उच ८—पत्र ४१७) ।

मेयज केओ मिजज—मेयज (वीच २४—वीच ७२८ टी; मुय २६७) ।

मेय केओ मेय—मेय (पत्र) छाया १ ८—पत्र १३२ या १८) ।

मेयज केओ मिजज (महा ४ ११; ४ २४) ।

मेय केओ मिड । प्रयो मेयज (मि) ।

मेयम पु [मे] मुग-पुन (१६ १३८) ।

मेयज पु [मे] मयबा लता, पुवर्न-ली में "मेय" यल मयपु-पुवर्न-ली संवायिक-पुवर्न-मयुपि (मुपा ३३१) ।

मेयज केओ मेय (उच १२४) ।

मेय पु [मे] बलि-सहाय, बलि को मय करलेता (१६ १३८) ।

मेयक पु [मे] कल-विशेष कल का कोट रंभा (पत्र १ १—पत्र ८) ।

मेयि पु [मिय] पयु-मयन-काय; कप के बीच का काय, कप पयु की बीच कर मयन-मयन किता जाता है (१६ २२३, मय १ ८—छाया १ १—पत्र ११) । २ धारा, समर; धमर वि य ए कुमु बल मेओ पमयल बाइर धावर्न पयु मेओपु (बरा) "मुय-विन मयपु-पुवर्न-ली मयन-मयन-मयन" (पा १ १ २२३ संयोग २४) । "मय पि [मय] १ धारा-काय धारा-पुव (पा) । २ मयन-पुव मय में मय (मुमा) ।

मेयया } की [मिनय] १ किताय की पली; मेयया } २ लय की एक वेया (मम ४२ नाट—मिज ४० पिग) ।

मेय न [मात्र] १ धाम्य संयुता । २ धमयण "मेय-पुवर्न" (१६ ८२) ।

मेयल [मे] केओ मिजल (पत्र १२ १३२) ।

मेटी की [मेटी] मिता बोली (१६ १३ या २०२; उच १६९ छ) ।

मेयुपिया केओ मेयुपिया (मि १) ।

मेय (पत्र) पि [मय] मेय (पत्र १२ धमि) ।

मेरा पु [मेयक, मेययक] १ लुटीय प्रवि-बाइय राजा (पत्र २, १३९) । २ पुन मय-विशेष (उच पि १ २—पत्र २०) ।

१ बलपति का वस्त्रा-पुवर्न-ली "मेय-मेय" (माया २ १ ८ १) ।

मेय की [मे मिरा] मयबा (१६ १३९ पात्र कुम ३३३; मय १०; उच १ ८७; कुमा वीच) ।

मेय की [मेरा] १ लुटी-विशेष पुन की लता (पत्र २ १—पत्र १२३) । २ बरम-पुवर्न-ली मय (मय १२२) ।

मेय पु [मेय] १ पर्वत-विशेष (उच प्राय १३४) । २ लुटी-विशेष (मि) ।

मेय पु [मेय] पर्वत कोई की पहाड़ (पात्र २, १० २) ।

मेय ल [मेय] १ मिता । २ बल-काय । मय, मेय (मम पि ४८९) ।

मेय-मेयल मेय (मि ४८९ मय) ।

मेय पु [मेय] मेय मिता संयोग मिता (मुपि १३; १६ १२ संयोग १६) ।

"मेय पिपमेय मेय पुपि" (मुय ११) ।

मेयल न [मेयन] कय केओ (प्राय ३२) ।

मेयल पु [मेयल] १ संयोग संयोग (मुमा) । २ मेय मय-पुवर्न का पुवर्न-ली (१६ ८७ पि ८९) ।

मेयल ल [मेय, मिमय] मिताय मिताय करता; मिमय (१६ ४ २) । मय मिमय (मि २२२) । मय, मेयल (मय) (१६ ४ ४२६) ।

मेयल-पुवर्न मेय केओ ।

मेखय एव [मिस्] एकवित होता 'पकि-
मिखमिखा एकवती मेखायति' (कय)। (पं०
मेखयित्ता (कय)। ४. मेखययव (बीकना
३३ टी)।

मन्त्राय वेदो मेख्यः । मिताय (यनि) ।
मेख्यः पुनः [मेख] १ मिताय अयम मिताय
(मुला ४११) १ मिताय च मिताय मुलाय-
मितायस्य मन्त्राय (सुवि १४१) ।

मेखाणा केो मेख्य (धत्तयि १६) ।
 मेखाण्ड (प) केो मख्य 'यलुतल्लहिल्ल-
 वल्ल दुधियि वल्लह पल्ल' (सिदि ७१) ।
 मेखाण्य केो मेखाणा (सुप १६१; वयि) ।
 मेखाविभ नि [मेखिय] भिलाय ह्या इकड्ड
 निप्य ह्या (सि १ १५) ।

मध्यम वि [मिलिय] किंवा कृपा (अ १
१ टी—११ ११६, मध्यम कर्मा).
'एवं कुलीनवंशो धर्मीयवर्गो मेलिपो संतो ।
पावेइ कृत्यपिपासी पैतयवोपासकधर्म'।

मेछी की [ब] बहति बम-छमूह का एकलित
 (ब्रानू ३३)

मेखीय रेडो मिडीय (पन्ना २, ६): ‘अपस्त्री
एकज्जावत्तरयेगममेखील्लिधुपतपा’ (ब
११४। ७-३५)।

मोक्ष शैवी मित्र । भक्तवत्सल (वि ४ २१), निराली
 (पुनः १३) । लज्जा मोहनीय (महा) । लज्जा
 मोहनीय मोहनीयम् (मा) वि ४ १३३
 वि ५५५ । क मणिमन्त्र (अ २३३) ।

मेष्ठन्य व [मोचन] कोकना पथिवाप (प्रा.
११)।

मेष्ट्रियसि वि [माथित] कुन्नाय कुमा (५
५ १५ म्मा) ।

मेघ केही एव (पि ३३३) ।
मेघाह } बेबी भन्नाहय (तो १५, वो
मेघाह } नव) ।

मेस दु [मय] १ मेष, मेष बाहर (गुर १
२१) । २ राशि-मियोन (विचार १ १ १
१ ३३) ।

मोहं नु [मोह] १ मद्र. बहवर (बीप) ।
 कावागुह, गुर्वरी नून-इय-विनेव (वि
 ४४) । २ कावागुह गुमिगिवाव का रिता (ब
 १५) । ४ एक कैव मावि (दंत १५) ।

छाया वैशिक का एक पुत्र (छाया १ १—
 पत्र १७)। १ एक वैश-विमान (वैश ११२)। २ छात्र-विशेष (विश)। ३ एक
 वैशिक-पुत्र (मुद्रा ११७)। ४ एक वैशुभि
 (कव)। ५ वैश-विशेष (पत्र)। ६ वैशुभि
 वैशिक-विशेष नौका। ७ एक राक्षस।
 ८ एक-विशेष (आज्ञा ६ १ १८०)। ९
 एक विद्यावर-नगर (इक)। कुमार पु
 [कुमार] छाया वैशिक का एक पुत्र (छाया
 १ १ पत्र)। रम्भाण पु [रम्भाण] पञ्च
 नर का एक छाया एक वंशपति (पत्र २,
 २६६)। पञ्च पु [पञ्च] पञ्च का एक
 पुत्र (पत्र ११ ६८)। पुर न [पुर]
 वैशिक पर्वत के पश्चिम ओर का एक नगर
 (पत्र ४ २)। मुर पु [मुर] १ वैश
 विशेष (पत्र)। २ एक मराठीय। ३ मर-
 ठीक-विशेष का निवासी कुरुष (आ ४ २—
 पत्र २२६; इक)। रज न [रज] विष्णु-
 लता का एक वैश टीर्थ (पत्र ७७ ६१)।
 कश्मल पु [कश्मल] १ पञ्च-नर का
 धर्म पुत्र जी बंश का छाया या (पत्र
 २, २६१)। २ पञ्च का एक पुत्र
 (पत्र ८ १४)। सीह पु [सीह]
 विद्यावर-नर का एक छाया (पत्र ४, ४१)
 सेठी मय।

मेह ५ [मेह] १ सेवन (सुप्प १ ४ २,
११) । २ टीप-विटीप प्रमेह (मा १ ३ सुब
१ १५) ।

मेईकए बेसी मेपकए (रक) ।

मोक्षशीरुत [३] बब पानी (३ ६ ११६)।

मेहण व [मेहण] १ भरण, उपकाना । २
प्रत्ययण पूव 'महमिहण' (घाषा १ १
१ २) । ३ प्रत्य-विष (राज) ।

मेहणि नि [मेहनिभ] भरणेवाचा (प्राचा) ।

मेहरपुं [६] चाम-मन्द, बरि का मुखिया
(६१, १२१) मुर १५, १६)।

मेहरि पुष्प [३] कल-कीड, पुन (पी १२)।

मेहरिबा { की [दि] बालेबासी की (मुपा
मेहरी { ११५ }

मोहम्मद मुं. [मोहम्मद] कृत-विहीन (पद्य
१५ ११)।

मेहना वी [मेहना] काली, काली
(पाया पहा १ ४५ वीया या ४५५) ।

मेहलिजिया जी [मेहलिजिया] एक जैन
मुनि-शाखा (धर्म) ।

मेहा की [मेया] एक बीजासी बननेवाली
एक घस-महिषी (ठा ५, १—१४ १ २
इक) ।

मेहा की [मेघा] कुडि मरीया प्रभा (बन
१२५) से १ (१५) हास्य १२५) । भर बि
[भर] १ कुडि-मरीया । २ गुं जल-मरीया
(विन) ।

मेहा वी [मेघा] यन्त्रह-मल (एरि १७४)।
महावर्द्ध केवो मेघ-वर्द्ध (रुक्)।

मेधावन्त्य न [मेधावर्ज] एक विद्यावद-
व्यर (इह) ।

मेहावि पि [मेहाविह] दुष्टिमान्, प्रज
(स २, १: श्याया १ १ श्याया; कय्य
योवा जय १४२ टा कुज १४) नयवि
१५)। जी पी (कय—कय १११)।

महि १६० मद्रि (पृ ६, ४२) ।
मेदि नि [मेदिनि] मद्रि मद्रि मद्रि

'मा'मेपिण्यं' (माया) ।

मेहिय न [मेधिक] एक वन मुनि-मुन्य
(कन्य) :

मेहिछ पुं [मेभिछ] जन्माल् पात्रवताय के
 रंश का एक सैन मुनि (मय) ।

महज्ज } न [मिहुन] उडि-मिह्ण, उंपीन
मेहज्ज } (वय १ पण्ड १ अ उमा
पीन प्राप् १०८ मद्दा) ।

संज्ञाप्य पुं [३] पुष्पा का लक्षण (३६, ३७)।

मेहुपिब वुं [६] मामा का बरक (ए ४)।

मेहुनिमा की [६] १ लकी चर्च की
कल (६६, १४) । २ लकी की लकी
(६६, १४५ लकी) ।

मेहुआ की मेहुआ: 'हिसाबियबीपरिलो मेहुआ-
परिलोई म तिसिमलो' (गोप ३३:३)।

मेरेछ न [मेरेय] यय-विदेय (मात १७७)।

मो ध-इत धर्मी का सुखक धर्म्य—
 धनबाधित मित्रक (सुधीन वर) नामक
 १२६। २ नाम-धर्मि (पद्य १ ए, २,
 धर्मी १२६। २ नाम-धर्मि)

मोज सक [मुक्] जोड़ना व्याख्या ।
मोज (शब्द ७ ११६) । मोज मोरत
(वि ८ ११) ।

मोज सक [मोज] कुजना व्याख्या
करना । मोजवि (शी) (माट-मासवि
४१) । कबह मोजवत (वा १७२) ।

मोज पुं [मोज] हर्ष कुटी (पयल १३)
गुह्य धर्म) ।

मोज वि [वे] १ अविगत । २ पुं निर्मल
भावि का बीजकोट (वि १ १४८) । ३ पुं
पराज (पुप १ ४ २, १२ निर ४८८
कस पया १३) । पविमा की [मविमा]
प्रवचन-विषयक नियम-विशेष (ठा ४ २—
पत्र १४ बीन वर ६) ।

मोज पुं [मोज] कुज-विशेष 'सखर-
मोज' नामक वस्तुपत्रासे करके य' (पयल
१—पत्र ११) ।

मोजा वि [मोज] मुल कलेवला (सम
१ पत्रि पुपा २१४) ।

मोजा पुं [मोज] वज्र, मिश्रण-विशेष
(संठ १) पुपा ४ १) । रेडो मोदव ।

मोजन न [मोजन] नीचे रेडो (वि १७४)
वज्र) ।

मोजना की [मोजना] १ परिधाय (बावक
११४) । २ मुक्ति, कुटकार (पुप १ १४
१८) । ३ कुजना मुक्त करना (उप
११) ।

मोज रेडो मोजा (सम; पत्र ११३, ४)
पुप ४ १) नाट-विश २१) ।

मोजा की [मोजा] कबरी कुज बैला का
पात्र (पत्र) ।

मोजा सक [मोज] कुजना । मोजा
बेमि मोजावेदि (माट—उत्त २३, मुक्क
११६) । मवि मोजावतवि (वि २२८) ।
कर्म मोजावित्तव (पुप २२१) । वज्र
मोजावत (पुपा १८२) ।

मोजावत न [मोजन] कुजकार करना
(वि ११८८ व ४७) ।

मोजावि [वि [मोज] कुजना पुपा
मोज (वि १३१, नाट—मुक्क ८१)
मुर १ १) पुपा ४७७) वज्र मुर २
११) २, ४७७ पुपा २१२) मवि) ।

मोज पुं [वे] वल्ल-विशेष (पट) ।

मोज रेडो मुज = मुज (वि १, ११६)
२ २) ।

मोज पुं [मोज] धर्म-कुज धर्म का कुंज ।
मोज सक [वे] मेवना मुजपटी में
'मोजकु' मज्झी में 'मोजकु' । मोजकु
(धर्म) ।

मोज रेडो मुज = मुज (पट) ।

मोजावि [वी] की [वे] हृष्य कण्ठ्य, कमल
मोजापी } का कला मय भाव (वि १
१४) ।

मोज रेडो मोज 'नियमित' भण्ड
तुर्न मोजकत वेणु विमर्षि' (पुपा ११२) ।

मोज रेडो मुज (पुपा २८) है ४
११६) ।

मोजवि वि [वे] १ प्रेषित, मेवा हुमा
(पुपा २२१) । २ विष्ट (पुपा १४) ।

मोज रेडो मुज = मोज (बीन पुपा;
है २ १७४; उप २१४ टी मज; वज्र) ।

मोज रेडो मुज = मुज (पत्र २२१) ।

मोज न [वे] कलवि-विशेष (पुप २,
२ ७) ।

मोजन न [मोजन] मुक्ति कुजकार
(वि ४१८ मुर २ १७) ।

मोजा पुं [वे] बालर-विशेष (पुपा ४ ८) ।
रेडो मुजाह ।

मोजा पुं [वे] मुज कर्मका बीर (वि १
११६) ।

मोजा पुं [मुज] मुज, मोजरी । २
कलका का वे (है १, ११६; २ ७७) ।

३ पुज-विशेष मोज का पात्र (पयल
१—पत्र ११) । ४ रेडो मुजग । पापि
पुं [पापि] एक बैल मज्झ (संठ १८) ।

मोजावि वि [वे] संकुचित मुजित (वि
१ ११६ टी) ।

मोजावत न [मोजावत] मोजा
मोजावत १ मोज-विशेष (इक टा ७)
मुज १ ११) । २ पुं की पत्र मोज में
धन्य (वि ७—पत्र ११) ।

मोजा रेडो मुजाह । मोजाह (१)
(वाला १४६) ।

मोज रेडो मोज = मोज 'मोजमोजा'
(पयल १ १—पत्र ११) ।

मोज रेडो मोज = मोज। संठ-मोजा
(मवि ४७) ।

मोज न [वे] धर्मनी एक प्रकार का वृत्त
(वि १ ११६) ।

मोज रेडो मोज = (वि) (पुप १ ४ २
१२) ।

मोजा रेडो मोजा = मोजक (वज्र) ।

मोजा सक [रम्] मोजा करना । मोजाह
(वि ४ ११८) ।

मोजावत न [रत्] रति-मोजा रत्त मज्झ
(पुपा) ।

मोजावत न [मोजावत] मोजा-विशेष वि-
क्या भावि में भावना से उत्पन्न वेणु (पुपा) ।

मोजावत न [वे] बालर (वि २२७) ।
रेडो मुज्झिम ।

मोज सक [मोज] १ मोजा टेंडा
करना । २ मोजा । मोजवि (मुर ७ ६) ।

मोजा मोज, मोजवि, मोजवत (मवि-
पया व २२७) । कबह मोजावत
(पत्र ५ १४) । संठ मोजेड (पुपा ११८) ।

मोज पुं [वे] वज्र, मज (वि १ ११७) ।

मोजा वि [मोज] मोजावत (पयल १
४—पत्र ७२) ।

मोजा न [मोजन] मोजा मोजा (वज्रा
१८) ।

मोजा की [मोजन] ऊपर रेडो (पयल १
१—पत्र ११) ।

मोजावि वि [मोज] १ मज मवि पुपा
(वा २४६ छाया १ ६—पत्र १२७)
पयल १ १—पत्र ११) । २ मजवि
मोजा पुपा (विपा १ १—पत्र १८ व
११२) ।

मोज पुं [मोज] एक कण्ठ-मुज (पुप २) ।

मोजावत न [मोजावत] मज-विशेष (वि १
१ २) टी ७) ।

मोज न [मोज] मुजिल वाली वा संव
कुली (बीन पुपा २१७) मज्झ । वर वि
[वर] मोज वज्रावा वाली वा संव

पण्ड २ १—पण्ड १)। पण्ड १ [पण्ड]
संयम धारिण (सम १ ११ ६)।

मोयावाजा की [वि] प्रथम बहुति के समय
विठा की ओर से बिना बाजा अलग-पुर्वक
मिथक्या (उप ७१८ टी)।

मोयि वि [मोयिन्] बोलबाता (उप) गुना
१४ संदीप ११)।

मोच केओ मुच = मुच (बर्मसं ७१)।

मोचम् केओ मुच ।

मोचा केओ मुचा (वि ७ २२) दंडि ४
प्राक् १ पण्ड १)।

मोचि केओ मुचि = मुचि (पण्ड १ २—
पण्ड २४)।

मोचिज केओ मुचिज (बा ११ लज्ज ११
वीज गुना २११ महा पण्ड)। बाम न
[बाम] अन्ध-विरोध (विम)।

मोचुआज
मोचु
मोचून } केओ मुच = मुच ।

मोच्य रेयो मुच (वी ६ दंडि ४ पि १२३)
आता)।

मोचम् केओ मोचम् = मोचक (लज्ज ६)।
२ न अन्ध-विरोध (विम)।

मोच्य [वि] केओ मुच्य (दे ४)।

मोच पुं [वि] पण्ड चरकाल (दे १ १४)।

मोच पुं [मार] १ पण्ड विरोध मयूर (दे १
१७१) गुना)। १ अन्ध-विरोध (विम)।

मोच पुं [वच्य] एक प्रकार का बालन
(गुना १४२)। महा की [शिखा] एक
महीचि (दी १)।

मोचउता } य. गुना अर्थ (दे २, २१७)
मोचउता } गुना। अन्ध-विरोध ११—७७
मुचिनिच-विरोध)।

मोचिउ पुं [वि] गिल धारि का मोचक, बाप
विरोध (उप)।

मोरा वि [मायूरक] मयूर के पिच्छी के
विपण्ड (पापा २ २ ३ १)।

मादराय पुं [वि] पण्ड चरकाल (दे १
१४)।

मोचिउ पुं [मोचि] १ एक अन्ध-विरोध। २
मोचिउ बंध में अलस (वि ११४)। गुना पुं
[पुच] पण्ड चरकाल का एक अन्ध-विरोध—
प्रकाश विपण्ड (सम १६)।

मोचि की [मोचि] १ मयूर पक्षी की चारा
मोचि (वि १११; ना—मुच्य १८)। २
विद्या-विरोध (गुना ४ १)।

मोच्य पुं [वि] मोचक] बंधन के लिए बाड़ा
हुया मुच (उप)।

मोचि केओ मचि (कच) सम १६)।

मोच केओ मुच (दे १ १२४) जवा उप पुं
१ ४ कापा १ १—पण्ड १ ४)।

मांस पुं [मोय] १ मोटी। २ मोटी का मांस
‘परा अन्ध मोच एवि धमपुं’ (गुना २२१;
पण्ड)।

मोस पुं [मोय] मुठ, अलस पण्ड
‘अन्ध-विरोध मोचि पण्ड’ ‘अन्ध मोचि
पण्ड’ (ठा ४ १ १ धीप कण्ड)।

मोसज वि [मोयज] मोटी करनेवाला (गुना
४७)।

मोसकि } की [वि] मुराखी मीराखी
मोसकी } बकालि विरोध का एक मोच
बक धारि की प्रतिबिम्बना करते समय मुठ
की तरह अन्ध वा मोचि मोच धारि का लट्टी
कराय प्रतिबिम्बना का एक मोच ‘अन्ध-विरोध
य मोचकी लट्टी’ (उप २६ १६; १४ धीप
२१२ २१६)।

मोसा केओ मुसा (का ६ १ ११६)।

मोह बक [मोह्य] १ प्रथम में अलस।
२ मुच करना। मोह (मवि)। वह
मोहय माह्य (पण्ड ४ १ ११ ११)।
३ केओ मोहयिज।

माह केओ मउह (दे १ ७१ गुना गुना
४१७)।

मोह वि [मोय] १ निम्न विरोध (वि १
७ ४ ४८१), ‘मोहा नवकाय की मुठ
लोह पण्ड’ (उप १०३; धम १)।
अन्ध ‘मोह बंधी बन्धी’ (पण्ड ७३)।
२ अलस, पिच्छा ‘पिच्छा मोह विरोध
अन्ध अन्ध पण्ड’ (पापा)।

मोह पुं [मोह] १ मुठ का चरकाल अलस
(मापा गुना पण्ड १ १)। २ विरोध
मापा (गुना २ २१)। ३ विच्छेद की अलस
(गुना ४, २)। ४ पाप मोच। ५ काम
मोह्य ‘मोहाय अलस पण्ड कामपण्ड मुह
विच्छेद’ (गुना २४ पण्ड ४ ४)। ६ मुह
वेहोटी (लज्ज ११; व ६११)। ७ अन्ध
विरोध मोह्यीय कर्म (कर्म ४ १ ११)।
८ अन्ध-विरोध (विम)।

मोहण न [मोहन] १ मुच करना। २ माप
धारि से बंध करना (गुना २१६)। ३ मुह
वेहोटी (विच्छेद)। ४ अन्ध-विरोध गुना
करनेवाला अन्ध-विरोध (गुना २१६)। ५
माप का एक पण्ड। ६ अन्ध अलस (कण्ड)।
७ अन्ध, अन्ध विच्छेद (व ७१; कापा १ ४
धीप ३)। ८ वि अन्ध अलस (व २१७ ७४४)। ९ मोह्य मुच करी-
वाला ‘मोह्य पण्ड’ (बर्मि ११; गुना
३ २४ कर्तुर २२)।

मोहयिज वि [मोह्यीय] १ मोह-कर्म।
२ न कर्म-विरोध मोह का चरकाल-मुठ कर्म
(सम ११) अन्ध अन्ध धीप)।

मोहपी की [मोहपी] एक मोहपी (दी १)।
मोह न [मोहय] मापाया अलस (पण्ड
२ २—पण्ड १४७ गुना १८)।

मोह वि [मोह] मापा, अलस (का
१—पण्ड २१६)।

मोहविज वि [मोहविज] अन्ध केओ (ठा
१—पण्ड २७१ वीज गुना २२)।

मोहविज न [मोहविज] मापाया अलस
(का गुना २१६)।

मोहि वि [मोहि] मुच करनेवाला (अन्ध)।

मोहिपी की [मोहिपी] अन्ध-विरोध (विम)।

मोहि वि [मोहित] १ मुच बिना गुना
(पण्ड १ ४ ३१)। २ न निम्न
अन्ध अन्ध-विरोध (पापा १ ४—पण्ड
१११)।

मोहविज वि [मोहविज] अन्ध-विरोध का
आकार (गुना २)।

मोहविज केओ मोहि-विरोध पण्ड अन्ध-विरोध

सुप्रकृतित्तन सीमित्तुमपट्टित्तनसुप्रकृतित्तन
पाइभसहमहणयो (मुद्रा १ १) ।

मि ध पाइभसहमहणयो सुप्रकृतित्तन
पाइभसहमहणयो (मुद्रा १ १) ।

मिध देखो इय (पाइ २१) ।
मिध देखो मिस = मिध । मिध (पाइ ७१) ।

॥ इय धिरिपाइभसहमहणयो मिध मयापहसहमहणयो
मिधसहमहणयो तरुनी समयो ॥

य

य पु [य] धनुस्पातीय मयन बर्त-विदेन
मयन बर्त (मयन प्राया) ।

य म [य] १ हेतु-मुचक मयन (बर्त
१८१) । २ देखो य = य (य १ १) ।
यम १, यम ११, २ य १२, यम
रम २ ११, ४ य १० हेतु
११ यम २०) ।

य देखो य (यम) ।

य नि [य] हेतुवाता (मीय यम मीय १) ।

यमया देखो जैयगा (यमि ७) ।

यमय एक [यम] १ यमन करण । २
यम करण । यम यमिय (य १, १—
य १ १) ।

यम नि [यम] यमनयत करणिय 'यम-यम'
(यम २, २ ११) ।

यम देखो यम (यम २२१) ।

यम देखो यम 'यम-यम' (यम २, ७१) ।

यम देखो यम = य (यम) ।

यम देखो यम = य (यम १ १२१) ।

यमय (यम) देखो यमय 'यि वि य
यम यमय यम यमय यमय' (यि १४
यि) ।

यमय देखो यमय = यम (यम ११, २८) ।

यमिय नि [यमिय] यम करणयम,
यमय करणयम 'यमययमिय यमययमिय'
(यम ११ १) ।

यमयि य [यमयि] यमययम-यमय मयन,
यमययम-यमय यमय (यम १४ ११) ।

यमययय देखो यमयययय (यम १४८
यि) ।

यम देखो यम = यम 'यि यमय यो यम'
(यम १ १—यम ७७) ।

यम देखो यम = यम (यम) ।

यम देखो यम = यम (यम) ।

यम देखो यम = यम, 'यमययम य मयमयि'
यि यमि 'यमयययय' (यि १११) यम
यम) ।

यमय एक [यम] यमय । यमय, यमय
यमय, यमयि यमययो यमयि (यि
११० यम यमयि १७) यि ११ यम
१ १) ।

यमय देखो यमय = यम (यम २) ।

यमय देखो यमय (यम १ २४१) ।

यमय (यम) देखो यमय = यमय (यम) ।

यमययय नि [यमययय] यमय, यमय
यमययय यमययय (यम १, २, २) ।

यमय देखो यमय = यमय 'यमय यमययय'
(यमय ११० यमय) ।

यमय } (यि म) देखो यमय (यि १,
यमय) १११) ।

यमयि (यम) } देखो यमयि = यमय, यमि-
यमयि (यि) } यमि (यमयि यमयि) (यम
१ १) । यमयि (यि) (यम १११) ।

यमय (यि) देखो यमय (यि ४ २८) ।

यमय देखो यमय (यि १११) ।

॥ इय धिरिपाइभसहमहणयो मिध मयापहसहमहणयो

मिधसहमहणयो तरुनी समयो ॥

र

दु [र] बर्न-क्यरीय ब्यजन बर्न-कियेन
(चिरि १६५) (रिच)। गण दु [गण]
छन्द-नाम-रविन्द्र मय-नाथ धरारामे लीन
स्वर्य ना समुपय (रिच)।

घ. बान-मुक बन्धय (ह २ ११७ कुना)।

घ [रि] निबय-मुक बन्धय (बसि १
१२२)।

च [रि] १ बान-बीडा, मुल वैकुण
(बि १ १२) कुना)। २ बानरेन को की
(कुना)। ३ बीडि डिन धनुपम (कुना
मुना २११)। ४ बर्न-कियेन (कम् २ १)।

३ ब्रह्मानु पययम की मुक्त शिष्य (ब
५)। ९ दु मुतामक बन्धय बान ना एक
केनातवि (रक)। आर, कर रि [कर]

१ रति-बन्ध (वा १११)। २ दु पर्वत

रिचो (रक १ २, डा १)। यहा)। बीडि

की [बीडा] बान-बीडा (महा)। किति

की [किति] बरी बर्न (बाप २ १)।

पर न [ग्रह] मुल-बन्धिर, निमा-नुर

(नि ११९)। जाह, नाह दु [नाथ]

बानरेन (कुना नुर १ ११)। पदु दु

[प्रभु] बही बर्न (कुना)। पयमा की

[पयमा] निबय-मुक बान की एक बान-

कियेन (रक डा ४ १—बन २ ४)।

रिचय दु [रिचय] १ बानरेन (कुना ७१)।

२ एक रक ३ १ निबय बरी की एक बानि

(रक)। रिचय की [रिचय] बान-बन्धिर

के रक रिचो की एक बान-कियेन (पुना

२—बन २३२)। ययय न [ययय]

बान-बीडा-नुर (बहा)। यीन रि [यन]

१ बान-बन्ध (३ १)। यीन रि [यन]

१ बान-बन्ध (३ १)। यीन रि [यन]

१ बान-बन्ध (३ १)। यीन रि [यन]

१ बान-बन्ध (३ १)। यीन रि [यन]

१ बान-बन्ध (३ १)। यीन रि [यन]

१ बान-बन्ध (३ १)। यीन रि [यन]

दु [सुमग] बानरेन (कुना)। सेपा की
[सेपा] निबय की एक बान-कियेन
(रक डा ४ १—बन २ ४)। हर न
[ग्रह] मुल-नुर मुल-बन्धिर (बन १४५
की महा)।

रु दु [रुचि] रुचि, रुच (बा १४ से १
१४ १२, कयु)।

रुम रि [रुचि] बानमा रुपा, रिमिठ (मु
४ २४४ कुना बीडा कय)।

रुम रि [रुचि] बान मावि की रीड-
मिति (मयु १२४)।

रुमाय बक [रुचय] बानमा। रुम
रुमायि (बी १)।

रुमोड रि [रु] बनिमिति (बि ७ १)।

रुमोडी की [रु] रति-मुप्या (बि ७ १)।

रुमोडि रको रय = रयन्।

रुमर न [रु] बान, रिम (बि ७ ११;
बन्)।

रुमर न [रु] रति-मुप्या रति-मुप्या,
मुप्या (बि ७ ११)।

रुमरि रि [रुमरि] रय से रुम रयबला
(रि १२२)।

रुमाडिपा रको रय-बाडिपा 'बायि
रय-बाडिपा' (चिरि १ २)।

रुमर दु [रुमर] बानरेन बान (कुना)।

रुमाडिपा की [रु] रति-मुप्या बान,
मुप्या (चिरि १ १)।

रुम रको रय = रयन्, 'रुमरुडि बानेन'
रिचो' (बि ४२ यीन)।

रुमर रि [रुमर] बानरेन बान (कुना)।

रुमाडिपा की [रु] रति-मुप्या बान,
मुप्या (चिरि १ १)।

रुम रको रय = रयन्, 'रुमरुडि बानेन'
रिचो' (बि ४२ यीन)।

रुमर रि [रुमर] बानरेन बान (कुना)।

रुमाडिपा की [रु] रति-मुप्या बान,
मुप्या (चिरि १ १)।

रुम रको रय = रयन्, 'रुमरुडि बानेन'
रिचो' (बि ४२ यीन)।

रुमर रि [रुमर] बानरेन बान (कुना)।

रुमाडिपा की [रु] रति-मुप्या बान,
मुप्या (चिरि १ १)।

रुमोड बक [रुमोड] १ बानमा। २
रुमोड बानमा, बानमा। ३ रुमोड (बि ४
४४५ बाना १४)।

रुमोडि रि [रुमोडि] बानिठ (बहा)।

रुमोडि रि [रुमोडि] बानिठ (बहा)।

रुमोडि रि [रुमोडि] बानिठ (बहा)।

रुमोडि रि [रुमोडि] बानिठ (बहा)।

रुमोडि रि [रुमोडि] बानिठ (बहा)।

रुमोडि रि [रुमोडि] बानिठ (बहा)।

रुमोडि रि [रुमोडि] बानिठ (बहा)।

रुमोडि रि [रुमोडि] बानिठ (बहा)।

रुमोडि रि [रुमोडि] बानिठ (बहा)।

रुमोडि रि [रुमोडि] बानिठ (बहा)।

रुमोडि रि [रुमोडि] बानिठ (बहा)।

रुमोडि रि [रुमोडि] बानिठ (बहा)।

रुमोडि रि [रुमोडि] बानिठ (बहा)।

रुमोडि रि [रुमोडि] बानिठ (बहा)।

रुमोडि रि [रुमोडि] बानिठ (बहा)।

रुमोडि रि [रुमोडि] बानिठ (बहा)।

रुमोडि रि [रुमोडि] बानिठ (बहा)।

रुमोडि रि [रुमोडि] बानिठ (बहा)।

रुमोडि रि [रुमोडि] बानिठ (बहा)।

रुमोडि रि [रुमोडि] बानिठ (बहा)।

रुमोडि रि [रुमोडि] बानिठ (बहा)।

रुमोडि रि [रुमोडि] बानिठ (बहा)।

रुमोडि रि [रुमोडि] बानिठ (बहा)।

रुमोडि रि [रुमोडि] बानिठ (बहा)।

रुमोडि रि [रुमोडि] बानिठ (बहा)।

रुमोडि रि [रुमोडि] बानिठ (बहा)।

रुमोडि रि [रुमोडि] बानिठ (बहा)।

रुमोडि रि [रुमोडि] बानिठ (बहा)।

रुमोडि रि [रुमोडि] बानिठ (बहा)।

रुमोडि रि [रुमोडि] बानिठ (बहा)।

रुमोडि रि [रुमोडि] बानिठ (बहा)।

टी: रक्षि २)। १ पुं कक्ष-विरोध (विप)।
४ वि. कुटीर करनेवाला, राक्षसक (कुमा)।
रक्षण पुं [रि] १ बड़ा कुम्भ (रि ७ १)।
२ कुम्भवा पात्र-विरोध (रि ७ १ पात्र)।

रक्षायि } वि [रक्षित] राक्षसक किया
रक्षित } हुआ (रि ७ १)। ४ व पद
महा श्रेष्ठ २०२)।

रक्षा की [रक्षा] रक्षि विवरा (अप १ १११
मन्वा ४४ कपु विग)।

रक्षुम न [रि] रक्षु रक्षी पुत्रपत्नी में
"रक्षु" (रि ७ १)।

रक्षक [रक्ष, राक्षय] रक्षणा पक्षता।
"रक्षो राक्षसोः स्मृत" रक्षक (माह ७)
रक्षि (स २४२)। बह रक्षित (छाया १
७—पत्र ११७)। रक्षि रक्षिण (कुप
२ ४)।

रक्ष न [रक्ष] रक्षि विवर (वा १४२) रक्ष
रक्षि)।

रक्षय न [रक्षय राक्षय] रक्षणा, पक्ष
पात्र (मा १४ पत्र १८ सुमति १२१ टी,
गुप १२)। ४ टी। घर न [रक्ष] राक्ष-
स्य (पत्रा १२)।

रक्षय न [रक्षय] पात्र-गृह, रक्षोद्वार (छाया
१ १ १४)।

रक्षक [रक्ष] रक्षिता पक्षता करना।
रक्ष (रि ४ १२४ माह १२, पक्ष)।

रक्षय न [रक्षय] कक्ष-कण्ड, पक्षता करना
(कुमा)।

रक्ष के रक्ष। रक्ष, रक्ष (रि ४ १२४
पक्ष)।

रक्षय के रक्षय (कुमा)।

रक्षक [रक्ष] रक्षिता पक्षता करना। रक्ष
(रि ४ १२२) रक्षित (कुमा)।

रक्ष के रक्ष। रक्ष (माहा १४२)।

रक्षक [रक्ष + रक्ष] राक्षस करना।
रक्ष (पक्ष)।

रक्ष पुं [रि] कक्षोप-पक्षक द्विदोष का
रक्ष (रि ७ १)।

रक्षा की [रक्षा] १ कक्षा केला का पक्ष
(गुप १४४ १ ४ गुप ११७ पात्र)। २
रक्षोप-विरोध एक पक्षक (गुप २२४

रक्षय २)। १ वैरोधन पात्रक बक्षीय की
एक पक्ष-पक्षिणी (रि २, १—पत्र १ २)
छाया २—पत्र २२१)। ४ राक्षस की एक
पत्नी (पत्रम ७४ ५)।

रक्षक रक्ष [रक्ष] रक्षय करना पात्रम
करता। रक्षक (अम मन्वा)। मुका. रक्षोप
(कुमा)। बह रक्षित (वा १८, टीपा मा
१७)। कक्ष-रक्षोप-मात्र (माह—माहटी
२५)। ४ रक्षक, रक्षोप-रक्षिण-पक्षक,
रक्षोप-पक्षक (रि १ ४)। रक्ष १ पक्ष
गुप २४)।

रक्ष पुं [रक्ष] पक्षक (पात्र कुप
१११ गुप १२)। रक्षि रक्षी रक्षोप-पक्षक
(रि २, १—पत्र १ २)।

रक्ष नि [रक्ष] १ पक्षक रक्ष करनेवाला
(अप १ ११८ कपु)। २ पुं, एक रक्ष पुं
(कपु)।

रक्ष के रक्ष = रक्ष।
रक्षय } नि [रक्षक] रक्षय-कर्ता (माह—
रक्षय } माहति २१ रक्ष; कुप २११)
साँ २२)।

रक्षय न [रक्षय] रक्ष, पक्षक (गुप ११
११७)। पक्षक (गुप २१)।

रक्षय की [रक्षय] रक्ष के रक्ष (अम ८२
स २२)।

रक्षयिणी की [रि] रक्षी हुई की रक्षोप-
रक्षी रक्षक (गुप १५२)।

रक्षय के रक्षि [रि] रक्षय रक्ष करनेवाला
(माह)।

रक्षय पुं [रक्षय] १ रक्षों की एक पक्षि
(पक्ष १४—पत्र १५)। २ विद्यावर-सुपुत्री
का एक पक्ष (पत्रम २, १२२)। ३ रक्ष-
विरोध में पक्षक मनुष्य, एक विद्यावर-पक्षि:
के रक्षि विद्यावर-पक्षक मनुष्य का रक्ष
(पत्रम २, २२७)। ४ विद्यावर, कपु (रि
१२, १७)। नक्ष—गुप ११२)। ५ रक्षोप-
की रक्षोप-गुप (स ११)। गुप १ ११)।
रक्षी की [रक्षि] रक्षक मनुष्य (रि १२,
८४)। रक्षय की [रक्षय] रक्षी
रक्ष (रि १२, ७५)। माह पुं [रक्ष] रक्ष
राक्षोप का रक्ष (रि ८, १ ४)।
रक्ष न [रक्ष] रक्ष-विरोध (पत्रम
७१ ११)। रक्ष पुं [रक्ष] रक्षक

टीप (पत्रम २, १२१)। "नाह के रक्ष पाह
(पत्रम २, ११)। बह पुं [रक्षि] राक्षसों
का रक्षिता (पत्रम २, १२१)। से ११ १)।
रक्षि पुं [रक्षि] रक्षी मनुष्य (रि १२, ७४
२१)।

रक्षसि पुं [रक्षसे] रक्षसों का रक्ष
(पत्रम १२ ४)।

रक्षसी की [रक्षसी] १ रक्षक की की
(माह—गुप २१८)। २ रक्षि-विरोध (रि
४४ ४ टी)।

रक्षसे रक्ष के रक्षसि (रि १२ ७७)।

रक्ष की [रक्ष] १ रक्षक पक्षक (वा १;
गुप १ १ १११)। २ रक्ष मन्वा 'रक्ष
रक्ष' रक्षक रक्षि (पत्र २५ गुप
११७)।

रक्षि रक्षि [रक्षि] १ रक्षिता (पत्रम वा
१११)। २ पुं एक रक्षि रक्ष मनुष्य (कपु
रि २२५८)।

रक्षिता के रक्षसी (रि १७)।

रक्षी की [रक्षी] मनुष्य मनुष्य की रक्ष
रक्षी (पत्र ११२)। पक्ष (रि ११२)।

रक्षोप नि [रक्षोप] रक्ष में रक्ष
(रि १११)।

रक्षि [रि] के रक्षोप (पक्ष)।

रक्ष के रक्ष = रक्ष (रि २, १ ८२)
पक्ष)।

रक्षय न [रि] कुपुम-वक्ष (रि ७, १; पत्रम;
पत्रम)।

रक्ष पुं [रक्ष] रक्षि रक्ष का एक रक्ष
(पत्रम २२, २२)।

रक्षक [रि] रक्ष रक्ष, रक्षक रक्ष,
रक्षक करना। रक्ष रक्षि रक्षि (गुप;
मन्वा ११२)। रक्ष, 'रक्ष रक्षि रक्ष' मन्वा
(गुप ११२)। बह, रक्षित (रि १)। रक्ष,
रक्षि रक्ष (मन्वा ११२)।

रक्षय न [रि] रक्ष २ रक्षक। १ नि
रक्षक करनेवाला, रक्षक (कुमा)।

रक्षि नि [रि] रक्षि रक्षक (कुमा)।

रक्ष की रक्ष (रि ११)।

रक्ष की [रक्ष] रक्षिता (मा १११ टीपा
कपु)।

रत्नकण्ठर न [रि] कीडु मय विरोध (रि ७ ४)।

रत्नचक्र पुं [रि] १ हंस। २ व्याघ्र (७ ११)।

रत्नचि (घप) देवो रत्नि = रत्नि (रि १२६)।

रत्नय न [रि] रत्नक] बन्धु कृष्ण का कुल (रि ७ १)।

रत्ना की [रत्ना] एक नदी (घम २७१ ४१ इ०)। यत्पयाय पुं [यतीमपाव] इह विरोध (ठा २, ३—पत्र ७१)।

रत्नि की [रि] प्राज्ञा हनुम (रि ७ १)।

रत्नि की [रत्नि] रात निरा (रि २ ७२ कुमा प्रसू ६)। अंधय रि [अन्धक]

रात को नहीं देख सकेनेला (गा ११७ रा० २१)। अर रि [अर] १ रात में

निहलेला (२ पु राघव (प०)।

‘निबह न [निवस] रात-विन, ग्रहनिरा

(रि ८८)। देवो राइ = राति।

रत्निचर देवो रत्नि = अर (बर्नि ७२)।

रत्निविआह न [रत्निविचस] रात-विन

ग्रहनिरा निराचर (पञ्च ७८)।

रत्निविच न [रत्निविच] अर देवो

रत्निविच (पत्रम ८ १४७ ७२ ८२)।

रत्निच रि [राज्यन्] की रात में न देख

सकता ही नह (प्राय १७१)।

रत्नीय पु [रि] नापित इमान (रि ७

२) पत्र)।

रत्नपत्र न [रत्नपत्रा] बाह नन्त (पण्ड

१ ४)।

रत्नोभा की [रत्नोभा] एक नदी (इ०)।

रत्नोपक देवो रत्नोपक (गा—गुण १४२)।

रत्ना देवो रत्ना (बा ४ मी १२ गुर

१ १६)।

रत्न रि [रत्न, राइ] रत्ना ह्या, पत्र (रि ११३ गुमा ११३)।

रत्नि रि [रि] प्रज्ञा, नेत्र (रि ७ २)।

रत्न रि रत्न (गुमा ४ १) कुमा)।

रत्न हक [बा + हक] धाम्ना करना।

रत्न (पत्र ७१)।

रत्न पु [रि] बलीक कुनछी में ‘राको’

(रि ७ १) पत्र)। २ राक-विरोध करि कंठ

पायुतिरु रत्नम (घल)।

रत्नचिआ की [रि] शोभा पोह (रि ७ ४)।

रत्ना रि [रि] राग यवाय (बा १४ अर २

१२) बर्नि ४२)।

रत्नस देवो रत्नस = रत्न (गा ८७२) ८६४

६४४)।

रत्न राक [रत्न] १ कीड़ा करना। २ संयोग

करना। रत्न रत्न, रत्नि रत्न रत्न रत्न

(कुमा)। भवि रत्नरत्नि, रत्नरत्नि (कुमा)।

कर्म रत्नरत्न (कुमा)। नह रत्न, रत्न

माण (बा ४४) कुमा)। रत्न रत्न रत्न रत्न

रत्नरत्न, रत्नरत्न (रि २ १४१ १ ११६

महा रि ११२) रत्नरत्न, रत्नरत्नरत्न

रत्नरत्न (घप) (रि १८८)। हेह रत्नरत्न

(घप १८८)। रत्न रत्नरत्न (गा ४११)

देवो रत्नरत्न रत्नरत्न रत्न। प्रयो

रत्नरत्न (रि ११२)।

रत्न न [रत्न] १ शोभा, शोभा। २ गुण,

संयोग, रत्न-शोभा (पत्र १८८ गुमा ४२

४८८)। ३ रत्न-शोभा शोभा (कुमा)।

४ गुं अन्न मिश्रण (पत्र)। ५ पति नर

स्वामी (पत्र ११ ११ रिग)। ६ रत्न-

विरोध (रिग)।

रत्नरत्न रि [रत्नरत्न] १ गुण मनीष,

रत्न (पत्र पत्र भवि २)। २ न, एक

रत्न-विना (घम १७)। ३ गुं नलीकर

दीप के मध्य में जलर बिना की घोर विष

एक शस्त्र-विनि (पत्र २१६ टी)। ४ एक

विजय, प्रान्त-विरोध (ठा २ ३—पत्र ८)।

रत्नी की [रत्नी] १ नदी की (पत्र

४ १८८) प्राय ११३ १८)। २ एक

गुणरत्नी (इ०)।

रत्नीय रि [रत्नीय] रत्न, यतीरम (पत्र

स्वय ४)। यत्न गुमा २१३ भवि)।

रत्नी की [रत्नी] बली की (कुमा १)।

रत्नीय देवो रत्न।

रत्नीय रि [रत्नी] १ शक्ति विरोध शोभा की

ही नह (कुमा ४ १)। २ न, यत्न

शोभा (पत्र १ ६—पत्र ११३) कुमा

गुमा १७३) प्राय ११३)।

रत्नीय रि [रत्नी] रत्ना ह्या (कुमा १

८६)।

रत्नि रि [रत्न] रत्न करनेवाला (कुमा)।

रत्न रि [रत्न] १ मनोरम रत्नीय गुण

(पत्र १६ ४०) गुर १ १६) प्राय ७१)।

२ गुं विजय-विरोध एक प्रान्त (ठा २,

१—पत्र ८)। ३ रत्न का दास (रि ६

४७)। ४ न एक रत्न-विना (घम १७)।

रत्नीय पुं [रत्नीय] १ एक विजय प्रान्त

रत्नीय विरोध (ठा २ ३—पत्र ८)।

२ एक गुणरत्नीय रत्नीय का रत्न-विरोध

(घम १२) ठा २ ३—पत्र १७ इ०)। ३

न, एक रत्न-विना (घम १७)। ४ पति

विरोध का एक रत्न (रि ४)।

रत्न देवो रत्न। रत्न (पत्र १३)।

रत्न रत्न [रत्न] रत्ना ‘नो मोएना नो

एएना नो मोएना नो नोएना नोएना

(पत्र)।

रत्न रत्न [रत्न] रत्ना निमाए करना।

रत्न, एए (रि ४ ६४) पत्र नह)। कर्त

रत्नरत्न (रि ४ ८०)।

रत्न पुं [रत्न] १ रत्न भूम (श्रीका पात्र

गुम २१)। २ पत्र, गुण-रत्न (रि १

४८)। ३ रत्न-रत्न में रत्न प्रकृति का एक

गुण (कुम २१)। ४ रत्न-रत्न कर्म (कुमा

७ ४८) पत्र १२२)। ५ पत्र न

[पत्र] रत्न भूम का एक रत्न (श्रीका

११८ पत्र २ ३—पत्र १४८)। रत्न

की [रत्नी] रत्नीय की (रि १ १२३)।

हर पुं [हर] रत्न भूम का एक रत्न (श्रीका

११३)। २ पत्र न [हर] रत्नीय की

भूम (पत्र १ १)। ३ पत्र

रत्न (पत्र १ १)। ४ पत्र

रत्न [रत्न] १ रत्न रत्न (श्रीका

गुम १ १२) गुमा १ १) प्राय ११३)। २

रत्न (रि ६ ४२)। ३ न रत्न-रत्न रत्न

(घम १२) पत्र १ १२३) पत्र १ १ १

१)। ४ गुमा ४ १)।

रत्न पुं [रत्न] रत्न (कुमा १ ७) पत्र)।

रत्न देवो रत्न (पत्र १ १४ १७)।

रत्न देवो रत्न रत्न (बा १२, गुमा

१८८)।

रत्न न [रत्न] रत्ना रत्न-रत्न करना

(पत्र १ ६ १२)।

रथप वि [रथप] नलोकाया विपत्ति
नलोकाया विपत्ति (छा)।

रथप पुं [रथप] रथप (न १०१ टी)
पाथ नाम १ २। मत् ४३ (१)।

रथप पुं [रथप] १ मातृपुत्र मातृ बहुरूप
पत्न्य मत्ति 'रुते पत्न्या समुपपन्न' (मि १ १ न १११ छाया १ १) गुण
१४० बी १ गुण १२ १ १)। २

रथप, रथपति यें रथप (छा २१ गुण १
४०) तन्निष्ठ नर-मातृपुत्रा विरथा रथ-
पतिरेक्यता (रथप १११)। १ रथप-

रथप (मि)। ४ हाप-रथप (छाया १
१ वय ११)। १२ रथप-रथप का

एक दूट (छा ४ २)। १३ रथप-रथप का
रथप (छा ४ २)। १४ रथप-रथप का

रथप (छा ४ २)। १५ रथप-रथप का
रथप (छा ४ २)। १६ रथप-रथप का

रथप (छा ४ २)। १७ रथप-रथप का
रथप (छा ४ २)। १८ रथप-रथप का

रथप (छा ४ २)। १९ रथप-रथप का
रथप (छा ४ २)। २० रथप-रथप का

रथप (छा ४ २)। २१ रथप-रथप का
रथप (छा ४ २)। २२ रथप-रथप का

रथप (छा ४ २)। २३ रथप-रथप का
रथप (छा ४ २)। २४ रथप-रथप का

रथप (छा ४ २)। २५ रथप-रथप का
रथप (छा ४ २)। २६ रथप-रथप का

रथप (छा ४ २)। २७ रथप-रथप का
रथप (छा ४ २)। २८ रथप-रथप का

रथप (छा ४ २)। २९ रथप-रथप का
रथप (छा ४ २)। ३० रथप-रथप का

रथप (छा ४ २)। ३१ रथप-रथप का
रथप (छा ४ २)। ३२ रथप-रथप का

रथप (छा ४ २)। ३३ रथप-रथप का
रथप (छा ४ २)। ३४ रथप-रथप का

रथप (छा ४ २)। ३५ रथप-रथप का
रथप (छा ४ २)। ३६ रथप-रथप का

रथप (छा ४ २)। ३७ रथप-रथप का
रथप (छा ४ २)। ३८ रथप-रथप का

(रथप १ २)। संख्या की
[संख्या] १ संख्या की नामक विषय की

संख्या की (छा २, १—पत्र ४)। २ संख्या-
की बहुरूप-नामक छद्माक्षी की एक

संख्या की (रथप)। संख्या की [संख्या]
संख्या की नामक विषय की एक संख्या की

(रथप)। सार पुं [सार] १ एक रथा
(रथप)। २ एक रथ का नाम (न ३२०

टी)। सिंह पुं [सिंह] एक केन प्राच्य
संकेतप्रतिपादक कर्ता (सिंह १२)। सिंह

पुं [सिंह] एक रथा (न १ ११ टी)।
सेहर पुं [सेहर] १ एक रथा (छा

१)। २ विष्णु की बहुरूपी रथा की में
विष्णु एक केन प्राच्य की रथ संस्कार

(मि ११४)। ३ अर, गार पुं [अर]
१ रथ की जान (वह)। २ अर (पाथ

गुण १४)। प्राप्ति १४) छाया १ १०—पत्र
१४)। प्राप्ति १४)। प्राप्ति १४)। प्राप्ति १४)

(न ११ १४)। प्राप्ति १४)। प्राप्ति १४)
मय (महा दीप)। प्राप्ति १४)। प्राप्ति १४)

कन्या। २ एक बलिष्ठ-युव (मा ११)
। प्राप्ति, प्राप्ति की [प्राप्ति] प्राप्ति १

रथों का हार (वय २२)। २ रथ-विष्णु
(सिंह २२)। ३ रथ-विष्णु (रि ४ ४०)।

४ एक विष्णु-रथ-रथप (वय २, २२)।
। प्राप्ति न [प्राप्ति] रथ-विष्णु (महा)।

। प्राप्ति पुं [प्राप्ति] रथप का मित्र (वय
४ २२, १)। प्राप्ति पुं [प्राप्ति] रथप

रथप (वय ४ २२)। प्राप्ति वि
[प्राप्ति] रथप, रथप का मित्र (रथ)।

रथपप्राप्ति वि [रथपप्राप्ति] रथप-
रथप (वय २ २२)।

रथप की [रथप] विष्णु इति (न
१२, १०—पत्र ११ गुण १ ४ रथ)।

रथप की [रथप] रथप नामक रथ
प्राप्ति (न १०१)।

रथपि पुं [रथपि] एक रथ की नाम रथ
इति रथ का रथप्राप्ति (न १० २०

अर, अर पुं [अर] रथप (रि १ ४
रि कय)। प्राप्ति नाह पुं [प्राप्ति]

रथप (पाथ गुण ११)। मय न
[मय] रथि में नाह (गुण ४२२)।

रथप पुं [रथप] रथप (छा)।
रथप पुं [रथप] रथप (कय)।

रथप पुं [रथप] रथप (कय)।
रथप पुं [रथप] रथप (कय)।

रथपि पुं [रथपि] रथप (कय)।
रथपि पुं [रथपि] रथप (कय)।

रथपि की [रथपि] रथपि रथपि (छा
१)। रथ २२ रथपि (४०) की ११ रथपि)।

रथपि की [रथपि] १ रथपि रथ (पाथ
गुण १११)। २ रथपि रथ (पाथ

गुण १११)। ३ रथपि रथ (पाथ
गुण १११)। ४ रथपि रथ (पाथ

गुण १११)। ५ रथपि रथ (पाथ
गुण १११)। ६ रथपि रथ (पाथ

गुण १११)। ७ रथपि रथ (पाथ
गुण १११)। ८ रथपि रथ (पाथ

गुण १११)। ९ रथपि रथ (पाथ
गुण १११)। १० रथपि रथ (पाथ

गुण १११)। ११ रथपि रथ (पाथ
गुण १११)। १२ रथपि रथ (पाथ

गुण १११)। १३ रथपि रथ (पाथ
गुण १११)। १४ रथपि रथ (पाथ

गुण १११)। १५ रथपि रथ (पाथ
गुण १११)। १६ रथपि रथ (पाथ

गुण १११)। १७ रथपि रथ (पाथ
गुण १११)। १८ रथपि रथ (पाथ

गुण १११)। १९ रथपि रथ (पाथ
गुण १११)। २० रथपि रथ (पाथ

गुण १११)। २१ रथपि रथ (पाथ
गुण १११)। २२ रथपि रथ (पाथ

गुण १११)। २३ रथपि रथ (पाथ
गुण १११)। २४ रथपि रथ (पाथ

गुण १११)। २५ रथपि रथ (पाथ
गुण १११)। २६ रथपि रथ (पाथ

बाँधो का बछल (पठ)। तस्य वि [मय]
बाँधो का बना हुआ (आया १ १—पठ
१४० वि ७)।

रयय पुं [रयय] मोदी (स २५६; पाठ)।

रययमे की [र] विरल बाल्य (स ३३)।

रययाही केहो राय-बाहिआ (सिरि ७३८)।

रयाय सक [रयय] बनबाग; निर्माण
करना। रयायेह रयायनिह; रयायेह (कय)।

रंय रयायेहा (कय)।

रयायि वि [रयय] बनबाग हुआ (स
४१३)।

रख की [रे] रियत, मालकरीये (स ७
१)।

रखि पुं की [रे] बन्ना मयुर रख (मल
२)।

रख सक [रु] १ बहया मोलना। २ बच
करना। ३ रखि करना। ४ बच रीत।

१ रख करना 'मुझ रखि परिसाए' (मुघ
१ ४ १ १८) रख (सि ४ २३१ रखि
१)। बह-रखत, रखत (आया १ १—
पठ १२, रिक; धीप)।

रख सक [रायय] बुनबाग धाड़ान करना।

बह-रखत (धीप)।

रख सक [रे] धाड़ करना। रखि—रखिह
(रखि)।

रख पुं [रख] १ रख-धावाक (कय); मूहा
छा-रखि। २ रिक मयुर रखयता 'रख
परास करसबुध' (पाठ)।

रय (यय) केहो रय = रखय (रखि)।

रखी } (यय) केहो रयज (रखि)।

रखण न [रखय] धावाक करना 'परासये न
करेयुपा सबा रखणसीता धावी' (महा)।

रखण } (यय) केहो रयज = रख (सि ४
रखस } ४१२; रखि)।

रयय पुं [रे] यन्त्र-बहय विनोने की लकी।

मुनराही में 'रययों' (सि ७ १)।

रखरख सक [रोरय] १ बह धावाक
करना। २ बारबार धावाक करना। बह
रखरखत (धीप)।

रखि वि [रयय] धावाक करेयुपा (सि १
२४)।

रयि न [रयि] १ सूर्य सूरज (सि २, २२
गठ सण)। २ रास-रय का एक राजा
(पठम २, २१२)। ३ बर-बुल बाक का
पेड़ (सि १ १७२)। 'तिय पुं [तियस]
१ बलभु बर का एक राजा (पठम २,
४)। २ रास-रय का एक राजा एक
भिय (पठम २, २१५)। 'तिया की
[तिया] एक बिया (पठम ७ १४१)।

'नयन पुं [नयन] रयि-बह (मा १२)।

'नयन पुं [नयन] रयि-बह (मा १२)।

'नयन पुं [नयन] रयि-बह (मा १२)।

'नयन पुं [नयन] रयि-बह (मा १२)।

'नयन पुं [नयन] रयि-बह (मा १२)।

'नयन पुं [नयन] रयि-बह (मा १२)।

'नयन पुं [नयन] रयि-बह (मा १२)।

'नयन पुं [नयन] रयि-बह (मा १२)।

'नयन पुं [नयन] रयि-बह (मा १२)।

'नयन पुं [नयन] रयि-बह (मा १२)।

'नयन पुं [नयन] रयि-बह (मा १२)।

'नयन पुं [नयन] रयि-बह (मा १२)।

'नयन पुं [नयन] रयि-बह (मा १२)।

'नयन पुं [नयन] रयि-बह (मा १२)।

'नयन पुं [नयन] रयि-बह (मा १२)।

'नयन पुं [नयन] रयि-बह (मा १२)।

'नयन पुं [नयन] रयि-बह (मा १२)।

'नयन पुं [नयन] रयि-बह (मा १२)।

'नयन पुं [नयन] रयि-बह (मा १२)।

'नयन पुं [नयन] रयि-बह (मा १२)।

'नयन पुं [नयन] रयि-बह (मा १२)।

'नयन पुं [नयन] रयि-बह (मा १२)।

'नयन पुं [नयन] रयि-बह (मा १२)।

'नयन पुं [नयन] रयि-बह (मा १२)।

'नयन पुं [नयन] रयि-बह (मा १२)।

'नयन पुं [नयन] रयि-बह (मा १२)।

'नयन पुं [नयन] रयि-बह (मा १२)।

'नयन पुं [नयन] रयि-बह (मा १२)।

'नयन पुं [नयन] रयि-बह (मा १२)।

'नयन पुं [नयन] रयि-बह (मा १२)।

'नयन पुं [नयन] रयि-बह (मा १२)।

'नयन पुं [नयन] रयि-बह (मा १२)।

विरोध (यि)। ११ मायुय धारि रखयता
परास (सम ११ न २८)। नाम न
[नामान] कर्म-विरोध (सम १७)। स
वि [र] रख कर बालभर (मुपा २११)।

'मिह वि [मिहय] रखयानी बीजों का
भेल-सेम करेयुपा (पठम ७२ २२)।

'मिह वि [मिहय] रखयानी बीजों का
भेल-सेम करेयुपा (पठम ७२ २२)।

'मिह वि [मिहय] रखयानी बीजों का
भेल-सेम करेयुपा (पठम ७२ २२)।

'मिह वि [मिहय] रखयानी बीजों का
भेल-सेम करेयुपा (पठम ७२ २२)।

'मिह वि [मिहय] रखयानी बीजों का
भेल-सेम करेयुपा (पठम ७२ २२)।

'मिह वि [मिहय] रखयानी बीजों का
भेल-सेम करेयुपा (पठम ७२ २२)।

'मिह वि [मिहय] रखयानी बीजों का
भेल-सेम करेयुपा (पठम ७२ २२)।

'मिह वि [मिहय] रखयानी बीजों का
भेल-सेम करेयुपा (पठम ७२ २२)।

'मिह वि [मिहय] रखयानी बीजों का
भेल-सेम करेयुपा (पठम ७२ २२)।

'मिह वि [मिहय] रखयानी बीजों का
भेल-सेम करेयुपा (पठम ७२ २२)।

'मिह वि [मिहय] रखयानी बीजों का
भेल-सेम करेयुपा (पठम ७२ २२)।

'मिह वि [मिहय] रखयानी बीजों का
भेल-सेम करेयुपा (पठम ७२ २२)।

'मिह वि [मिहय] रखयानी बीजों का
भेल-सेम करेयुपा (पठम ७२ २२)।

'मिह वि [मिहय] रखयानी बीजों का
भेल-सेम करेयुपा (पठम ७२ २२)।

'मिह वि [मिहय] रखयानी बीजों का
भेल-सेम करेयुपा (पठम ७२ २२)।

'मिह वि [मिहय] रखयानी बीजों का
भेल-सेम करेयुपा (पठम ७२ २२)।

'मिह वि [मिहय] रखयानी बीजों का
भेल-सेम करेयुपा (पठम ७२ २२)।

'मिह वि [मिहय] रखयानी बीजों का
भेल-सेम करेयुपा (पठम ७२ २२)।

'मिह वि [मिहय] रखयानी बीजों का
भेल-सेम करेयुपा (पठम ७२ २२)।

'मिह वि [मिहय] रखयानी बीजों का
भेल-सेम करेयुपा (पठम ७२ २२)।

'मिह वि [मिहय] रखयानी बीजों का
भेल-सेम करेयुपा (पठम ७२ २२)।

'मिह वि [मिहय] रखयानी बीजों का
भेल-सेम करेयुपा (पठम ७२ २२)।

'मिह वि [मिहय] रखयानी बीजों का
भेल-सेम करेयुपा (पठम ७२ २२)।

'मिह वि [मिहय] रखयानी बीजों का
भेल-सेम करेयुपा (पठम ७२ २२)।

'मिह वि [मिहय] रखयानी बीजों का
भेल-सेम करेयुपा (पठम ७२ २२)।

'मिह वि [मिहय] रखयानी बीजों का
भेल-सेम करेयुपा (पठम ७२ २२)।

'मिह वि [मिहय] रखयानी बीजों का
भेल-सेम करेयुपा (पठम ७२ २२)।

'मिह वि [मिहय] रखयानी बीजों का
भेल-सेम करेयुपा (पठम ७२ २२)।

'मिह वि [मिहय] रखयानी बीजों का
भेल-सेम करेयुपा (पठम ७२ २२)।

'मिह वि [मिहय] रखयानी बीजों का
भेल-सेम करेयुपा (पठम ७२ २२)।

'मिह वि [मिहय] रखयानी बीजों का
भेल-सेम करेयुपा (पठम ७२ २२)।

'मिह वि [मिहय] रखयानी बीजों का
भेल-सेम करेयुपा (पठम ७२ २२)।

राइ बेहो राचि (हे २ ८८) काय १८६ महा पद) । २ बमरेख नी एक घस मशिरी (छ ५ १—पत्र १ २) । ३ दितानेन क सोम सोरुपान नी एक पगुली (छ ४ १—पत्र २ ४) । मयत न [मयत] राचि-भोजन राच में जाना (गुवा ४८३) । मोअय न [मोअन] बही यन (सम १६ कव) । बेहो राई = राचि ।

राइ बी [राजि] कीक धोली (पाय धीय) । २ रैमा लकीर (कम १ १६ गुवा ११७) । ३ राई, राज-दीपन एक प्रकार का मसाला (हे १, ८८) ।

राइ नि [रागिन्] राग-मुक्त, रागनाचा (बसा १) । बी जी (महा) ।

राइ नि [राजिन्] होमनेवासा (निज १९) । राइ बेहो राय = रागन (हे २ १४५ ३ १२) २३ कुमा) ।

राइअ नि [राजित] होमिष्ठ (वे १ २९ कुमा ९ ९९) ।

राइअ नि [राजिक] राचि-सम्पत्ती (सत २९ ४६ दीप नदि) ।

राइआ बी [राजिअ] राई का मास, गोसाइईम कबो बमबोले राइआ पचाई (बा १७१ य) । बेहो राइआ ।

राईइ दु [राजेअ] बड़ा रागा (कुमा) ।

राईअि दु [राजिन्वि] राच-रित महीपन (पग म्याका कय पत्र ७८) सम २१) ।

राइअ नि [राज-अिय] राग-सम्पत्ती (हे २ १४८ कुमा) ।

राइआ बी [राजिअ] राई राग-अरों (गुव ४२) ।

राइअिअ नि [राजिक] १ बालिनबला, संययी (वेना १२, ९) । २ पर्यय से ब्येउ, सारुअ-आति नी धरतला से बड़ा (सम १७, २८ कय) ।

राइअिअ नि [राजकअ] रागा के समान बिसरतला, भीमल (गुव १ २ ३ १) ।

राइअन् दु [राजअ] राज-दीपन राचिय राइअ (बम १११) कय दीप मय) ।

राइअरुपा संह, बीरकर (महीपनक अविम बारजितकना बैमिरी बुदि विमयक)

राइअ नि [रागिन्] राग-मुक्त (बेनेख २७८) ।

राई बी [राजो] बेहो राइ = राचि (पत्र गुवा १४३ मायु १२ पत्र २३३) ।

राई बी [राजि] बेहो राइ = राचि (पाय लाया २—पत्र १३) । दीप गुवा ४६१ कय) । दिखस न [दियस] राचिपिय धागिअ (गुवा १२७) ।

राईमई बी [राजोमडा] रागा समयेन की पुभी बीर भमबल मेमिलान बी पलो (पदि) । राईअ न [राजीय] कमल पप (पाय हे १ १८) ।

राईअर दु [राजेअर] १ रागाओं के मासिक महापत्र । २ गुवपत्र (दीप) उवा कय) ।

राअच दु [राजपुत्र] रागपुत्र राचिय (प्रक १) ।

राअल दु [राजकुल] १ रागाओं का गुन राग-समूह (कुमा हे १ २९७ प्रप्र) । २ रागा का संघ (पत्र) । ३ राग-सूह बरवार, 'एँ इंसिअल राअलस बूरेल पणानी कीरि बल बमहादि एन बिउबिउबिउ' (मोह ११) । बेहो राजोज ।

राअजिय नि [राजकुलिक] रागकुल-सम्पत्ती (गुव २ ३१) ।

राअल बेहो राइअ (प्रक १२) ।

राअसि दु [राअरि] १ श्वेत रागा । २ अवि-मुख रागा संकलामा नृति (धमि १३) निज ९८) मोह १) ।

राओ म [राओ] राच में (लाया १ — गुवा ९१ गुवा ४६७ कय) ।

राओअ बेहो राअअ

‘हो किंरि पणें सयणेहि
विमसिय किंरि नाण्डुतेहि ।
दिपि मई राओसे एन
भनुतलि मयुअर ॥
(पमीर १४४) ।

राग बेहो राय = राग (कय गुवा १४१) ।

रागि बेहो राइ = रागिन् (वम ११७ ४१) ।

राअअ बेहो राइअ । पत्तीली बी [गुहियो]

दीठा बालरी (वम ४९ ३७) ।

राय } [दू ३] बेहो राय = रागन (हे राचि } १ ११३ १ ४३ प्रप्र) ।

राय बेहो राय = रागन (हे ४ २९७ नि १६८) ।

राअस नि [राअस] राओ-गुल प्रमाण ‘राग राचिअल गुलस’ (कुव ४२८) ।

राडि बी [राडि] गुम बिन्नाअट (गुव २ १३) ।

राडि बी [रे राडि] संग्राम लड़ाई (हे ७ ४) ।

राडा बी [राडा] १ किमूरा (बम १ १८ कय) । २ मन्थरा (बम १ ८) । ३ बंगल का एक प्रसव । ४ बंगल देठ की एक गपरी (कय) । इच नि [वन्] मन्थ माला ‘मन्थरापहो बमो पकासाल संपद’ (बम १ ८) । मयि दु [मयि] काच-मयि (सत २ ४२) ।

राअ सक [वि + नम्] विरोध ममता । राअइ (?) (मावा १४६) ।

राअ दु [राअन्] राणा रागा (बंभ सिरि ११४) ।

रागय दु [राअक] १ राणा रागा (दी १३ सिरि १२३) १२३) । २ सोय रागा (सिरि १८९ १ ४) ।

रागिआ } बी [राजिअ, बी] राजी राग रागों } पलो (कुमा ३) मासक २३ दी सिरि १२३) १९७) ।

राअ सक [राअय्] राअ कपला । इ राअयअय (सत ८३) ।

राअ दु [राअ] १ बी राअअ रागा बरल का बड़ा पुन (स १३ जय १७१) कुमा) । २ बरपुअन (गुमा १ ९) । ३ धनिन परिबारक-विरोध (दीप) । ४ बमरेख बतय नागुरेन का बड़ा माई (पाय) । ५ नि रमने नाता (पत्र ४७३) । कय दु [कय] रागा यैणिक का एक गुन (राग) । कय बी [इण्णा] रागा यैणिक की एक पली (सं १२) । मयि दु [मयि] परल-विरोध (वम ४ १९) । गुअ दु [गुअ] एक राअनि (गुव १ ३ ४ २) । देव दु [देव] दीपयअय (वम ४२, १६) । गुअ दु [गुअ] एक देव मुनि (पद १) । गुअ बी [गुअ] पलीना मयि (दी ११) । राअिआ बी [राअिआ]

दिलोरेन की एक प्लगमी (छ ४-५५
५३९ इक)।

रामनिज्ज न [रामप्पायक] रमणीयता
इत्यर्थे (वि. २८) ।

रामा जी [रामा] १ जी नदिका गाँव (कुं
१. कुमा-पाथ बन्ना १ ४ उप नदिका
दी) । २ नदिके त्रिपथे की माता (ब्रम
१२१) । ३ दैत्योक्त की एक पत्नी (ठा
४—पृष्ठ ४२१) हक । ४ दक्ष-विद्ये
(विग) ।

रामायण न [रामायण] १ बालमीय-भूषण
एक संस्कृत काव्यग्रन्थ (पद्य २ १११
महा)। २ रामचन्द्र तथा रामल की लड़ाई
(पद्य १ २, ११)।

यमिष्य वि [रमित] रमण वयसा ह्यमा (म
११) वयस्य ८ (११)।

रामेश्वर पु. [रामेश्वर] इति ए भाष्यं वा ए
प्रित्त-दीर्घं (सम्मत ८४) ।

राय बक [राजू] समनता, सीमता । राय
(हि ४ १) । यह राय रायमान
(राय) ।

साय देखो रा = ₹ १। रायदा (बाक ११)।

राय नु [राग] १ ग्रेम प्रीति (गानु १०)
 २ बल्लर, डेब 'म वेदराष्ट्रा' (केने
 २७)। ३ रैवना, रंजन। ४ बर्णन।
 मनुमानः १ राजा भरतसि। २ बन्धु, बन्धु
 न मान बर्ण। ३ बाल रंजनाजी बन्धु
 १ बल्लर प्रावि स्वर (हे १ १)।

राय पू [राजन्] १ राजा बर-वति, को
(माया) उवा या २०) मुना १ ३)।
राज कयमा (मा २० हमीर १ बर-
३)। १ एर बदायू (मुज २)। १ एर
१ एर वति। १ एर १ ३ मुनि बरिब
येठ सारिब (हे १ ४२ २)। १ एर
यजिनाता (से १ २)। १ एर नि
(निप)। १ एर नि [बीय] राज-
(मा २२) उवा पू [पुत्र] राज-
राज मुयार (मुज १) १ २३)। उवा
राजन् (हे १ २१० मुना १ ३)
वति १ ४)। बीर देवी ईम (मा
१ ४)। उवा देवी वति (मा

'केर, का वि' ['क्षीय] राज-संजाली (इ
 र १४७: कुमा वर)। गिह न ['गृह]
 मगल देव की प्राचीन राजवाली को धातुक
 'राजकेर' नाम से प्रसिद्ध है (ठा १ —यम
 ४७७: उगा: घोट)। 'गिह की' ['गृही]
 नहीं मनें (ठी १)। नयप पु ['नयमक]
 कुट्ट-विरोध उत्पन्न कम्पन-कुट (वा १२)।
 धम्म पु ['धम्म] राजा का वर्तमान (गाट—
 उत्तर ४१)। घामी की ['घानी] राज
 नगर, राजा का मुख्य नगर, बड़ी राजा
 राजा हो (गाट—वैत ११२)। पत्ती की
 ['पत्ती] राजी (मुर ११ ४: बुता १७४)।
 पसेयीय वि ['पसेयीय] एक वैत धामर
 राज (पय)। पह पु ['पह] राज-मार्ग
 (महट्ट गट्ट—वैत ११)। 'पिंड पु
 ['पिण्ड] राजा के बर को पिंडा—माहुर
 (धम ११)। उत देखो बण (मज्झ)

पूर न [पूर] गहर-विरोध (पञ्च १) ।
 'पुरिस धुं [पुरुष] राजा का भावनी
 राज-नर्म-पाटी (पञ्च २ ४) । मरग धुं
 [मारो] राजनय, चक्र (पौन मारो)
 मास धुं [माय] वायु विरोध बरपटी
 (पा १० वीं पंक्ति ४३) । राय धुं [राज]
 राजाधी का राजा, राजेश्वर (मुवा १ ७) ।
 'रिसि वैवो रायसि (शाना १ ५—पञ्च
 १११) हय ७२२ यी हुमा राय) । रुजल
 धुं [रुजल] रुज-विरोध (पौन) । छप्पी धुं
 [छप्पी] राज-नय (पामि १११) मदी
 छप्पिय धुं [छप्पिय] छप्पिय बलदेव के पू
 नय का नाम (सम १११) । बहूय
 [बालेक] राज-नर्म-पाटी बाप-अपुत्र (हे १
 १) । बदी धी [बदी] गदा-विरोध
 (पण १—पञ्च १९) । बाहिमा बाई
 धी [बाहिमा] 'पाटी' चतुर्विध शैव-नय
 बण राजा की चतुर्विध पैदा के बा
 लपाटी (बुना ६५ १११: १९ मुवा
 २२२) । 'सहबुध धुं [साथ] बज्जल
 राजा बह राजा (बन १२२) । 'सिद्धि
 [सिद्धि] गहर-केड (बकि) । 'सिरी
 [सिरी] राज-पाटी (मै १ ११) । मु
 धुं [मु] राज-नय (बन ७२२ यी हुमा
 रुज धुं [रुज] रुजल पैदा (बन ७२

ये)। सुअ दुं [सुअ] कन्न-कित्तेय 'विश्व-
हृत्तपये' रावमुए पावडेइवमुये' (पद्य ११
४२)। सेज दुं [सेज] कन्न-कित्तेय
(पिय)। सेहूर दुं [शेहूर] १ महादेव
मिथ १ २ एक राजा (मुवा २२३)। ३ एक
कवि कर्पूरमंजरी का कर्ता (पद्य)। ईस
दुंके [ईस] १ कथाम ईस कबी। २ मठ
राजा (सुर १२ १४ वा १२४ मठ) मुवा
११६ रंदा म्थि)। ३ 'सी' (मुवा ११४
माट—रंदा २३)। हूर म [हूर] राजा
का महाव (पद्य २ २३, है २, १४४)।
हामी बैको धामीठ (धन म पद्य २
म)। हिराय हिराय दुं [अधिराय]
राजाओं का राजा कन्नमरी राजा (रंदा
मुवा १ २)। हिज दुं [अधिप] बही यर्ब
(मुवा १ २)।

राय रेवो राय = राय (दि ६, ७२) ।
 राय पु [रे] बटक, मोरैया पट्टी (दि ७ ४) ।
 राय पु [राय] राय राय (ग्रन्थ) ।
 राय रेवो राय = राय ।
 रायरेवु पु [रे] १ रेवराय रेवराय
 रायरेवु रेव (पत्र ३ ७ १४) । २ पु
 राय (दि ७ १४) ।
 रायरेव पु [रायरेव] रायरेवराय, राय
 रेवराय (ग्रन्थ) ।
 रायरेव पि [रायरेव] रायरेवरायराय
 राय का रायरेव (ग्रन्थ) ।
 रायराय रेव [रे] कलिका बोट (दि ७ ६) ।
 रायराय पु [रायराय] कलिका बोट
 विरेव (अ २ १—पत्र ७७) ।
 रायरेव रेवो रायरेव = रायरेव (अ
 मोरैया १२१) ।
 रायरेव रेवो [रायरेव] विरेव, विरेव का
 रेव (पत्र २३ ७६) ।
 रायरेव रेवो रायरेव (अ १ १—पत्र ११४
 अ १२६ दि) ।
 रायरेव रेवो [रायरेव] राय रेव राय
 करने की रेव (राय ११७) ।
 रायरेव रेवो [रायरेव] रेवो रायरेव
 रेव (अ १) ।
 रायरेव रेवो रायरेव (अ १ ६ ३ ११) ।

ईक्षिय न [रवण] लण्य, धावाय कर्मणा
(स ४२) ।

ईष्ट वेद्यो रंज । ईष्ट (ई ४ २७ पृ०) ।

क. ईष्टव (स १२ पत्रम १ १ १३ पत्र) ।

ईष्टपथा श्री [रे] धरणा धनारर (पि २१) ।

ईष्टपिशा श्री [रे] रवणिम् [रे] रोचन-मिमा
(धामा १ ११-पत्र २ २) ।

ईष्टिम न [रु] कुञ्जराय धामाय 'ईष्टिम्
धामिधिर्य' (धामा कुमा) ।

ईष्ट पुन [रु] मिना तिर का नष्ट नमना
'मिना य सुंरंश' (पुन १३३ बगडा
मिना सृष्ट) ।

ईष्ट पुं [रे] धर्मिक विठव धूपारी (रे
७) ।

ईष्टिय नि [रे] सप्त (रे ७ न) ।

ईष्ट नि [रे] १ विपुल प्रभुर (रे ७ १४
ना ४ २ गुना २३३ नम १२ ११२) ।

२ विठव विस्तीर्ण (पि ७१ स ७ २,
पत्र ११ मीन) । ३ सुल मीटा मीन
(धामा) । ४ सुनर, धामा (रे ७ १४) ।

ईष्टी श्री [रे] विस्तीर्ण मीनाई (मना
११४) ।

ईष्ट एक [रु] रोचना मरुता । ईष्ट
(ई ४ १३३ २१) । नम ईक्षित,
लम्प, समर (ई ४ २४३, गुमा) । नष्ट-
ईष्ट (गुमा) । नष्ट ईक्षित नममाग
ईक्षित (पत्रम ७१ २६ से ४ १७
मिनि) । ई. ईक्षित (मिनि ३) ।

ईक्षिय नि [रु] रोका गुमा (गुमा) ।

ईष्ट पुन [रे] १ लथा नम धाम (पत्र
१११ १२ मना ४२) । २ ईक्षित
(मना ४२) ।

ईष्टन न [रोचन] रोचन नम करला
नाम (पि ११२) ।

ईष्ट वेद्यो रंज (पि २) ।

ईष्ट वेद्यो रंज । ईष्ट (ई ४ २१३, मना) ।
नष्ट, ईक्षित (पि २३३) । ई. ईक्षित
(रे १ १) ।

ईक्षिय न [रोचन] रोचन धरणा धनारर
(पत्र १ १ गुना १७० ना ११) ।

ईक्षिय नि [रोचन] रोचन धरणा (स १३१) ।
ईक्षिय नि [रोचन] धरणा धरणा, नम
मना गुमा (पा २७) ।

ईक्षिय नि [रु] रोका गुमा (गुमा २३
गुमा ११७) ।

ईक्षिय न [रे] नम धरणा नम धरणा
(पत्र २३) ।

ईक्षिय वेद्यो रंजिय (पि २७७) ।

ईक्षिय पुन [रु] नम धरणा धरणा (धामा
१ १) । २ १२७ प्राय नम धरणा नम
२ प्राय १ प्राय ११८) । 'नम धरणा
नम धरणा' (पि ११) । २ ईक्षिय विष्टि
(पुन १ ४ १ २३) । मना न [मना]
नम नम (नम) । 'मना नम' [मना]
नम नम नम नम नम नम नम (नम) ।

सप्त न [मना] नम धरणा धरणा (स
१११) । 'नम धरणा' [मना] नम धरणा
(पि १७३) ।

ईक्षिय नम धरणा (पत्र) ।

ईक्षिय नम धरणा (पत्र) ।

ईक्षिय नम धरणा (पत्र) ।

ईक्षिय नम धरणा (पत्र) ।

ईक्षिय नम धरणा (पत्र) ।

ईक्षिय नम धरणा (पत्र) ।

ईक्षिय नम धरणा (पत्र) ।

ईक्षिय नम धरणा (पत्र) ।

ईक्षिय नम धरणा (पत्र) ।

ईक्षिय नम धरणा (पत्र) ।

ईक्षिय नम धरणा (पत्र) ।

ईक्षिय नम धरणा (पत्र) ।

ईक्षिय नम धरणा (पत्र) ।

ईक्षिय नम धरणा (पत्र) ।

ईक्षिय नम धरणा (पत्र) ।

ईक्षिय नि [रु] रोका गुमा (गुमा) ।
ईक्षिय श्री [रे] रोका (गुमा १३) ।

ईष्ट नि [रु] रोचन-मिमा (उना मुर २
१२१) । २ गु. नम धरणा धरणा (पत्र
२८) ।

ईक्षिय न [रे] नम धरणा (मिनि) ।

ईक्षिय नम धरणा (मिनि) ।

ईक्षिय नम धरणा (मिनि) ।

ईक्षिय नम धरणा (मिनि) ।

ईक्षिय नम धरणा (मिनि) ।

ईक्षिय नम धरणा (मिनि) ।

ईक्षिय नम धरणा (मिनि) ।

ईक्षिय नम धरणा (मिनि) ।

ईक्षिय नम धरणा (मिनि) ।

ईक्षिय नम धरणा (मिनि) ।

ईक्षिय नम धरणा (मिनि) ।

ईक्षिय नम धरणा (मिनि) ।

ईक्षिय नम धरणा (मिनि) ।

ईक्षिय नम धरणा (मिनि) ।

ईक्षिय नम धरणा (मिनि) ।

ईक्षिय नम धरणा (मिनि) ।

ईक्षिय नम धरणा (मिनि) ।

ईक्षिय नम धरणा (मिनि) ।

ईक्षिय नम धरणा (मिनि) ।

रेसमिमा } श्री [रे] १ करोटिका एक
रेसमी } प्रकार का स्वयं-नामन (पाण्डु
३७ १२) । २ सप्त-मिकोच (३७ १२) ।
रेसमि रेसमी रेसमि } जो अणु सदा-प्रसिद्धी
काय रेस सप्तमिरेसमि (स १२७) ।
रेसि (पा) रेसो रेसि (ह ४ ४२२, छण) ।
रेसिमि [रे] विषय काटा हुआ (३७
१२) ।
रेसि (पा) रेसो रेसो (ह ४ ४२२) ।
रेसिमि म. मिमित लिपि, वास्ते 'ब्रह्म-
नाडपरिस्तास एव रेसिमि मुसलवी' (पंजा
११ ४) ।
रेस पा [राम] दीपना रोमना कमरना ।
रेस रेस (ह ४ १) वात्ता १२
महा) । बह. रहस्य (कप्य) ।
रेसा श्री [रेसा] १ विष्णु-विरोध लक्ष्मी
(पौन ४८६ पञ्च मुपा ४१; बन्ना १४) ।
१ वीक्ष, वीण (कप्य) । १ पञ्च-विरोध
(सिप) ।
रेसा श्री [रजना] रोसा वीक्षि (कप्य) ।
रेसिमि न [रे] विषय पुत्र कटी हुई वृक्ष
(३७ ११) ।
रेसिमि [रासिम] रोसिमि (पुर १
१८१) ।
रेसिमि [रेसावन्] रेसावन्ना (ह २
१२६) ।
रेसिमि } वि [रासिम] रोसिमिना (पुर
रहित १ २ मुपा २६) 'नये नये
विमले' (अ ७२८ वी) ।
रेसिमि रेसो रेसिमि-रेसावन् (अ ७२८
वी) ।
रेस रेसा रुज = रुज । रोस (हंमि १६; प्राक्
१) । बह. रोसम, रोसमाग (ग ४४४;
अ ३ १२८; मुर १ २२६) । हेत राई
(हंमि १७) । १ रोसमम रोसमम (वि
१ ४४४ ग १२८ हेत ११) ।
रेस रेसो रुज = रुज । रोस, रोस (मय
का) 'रोस न वृत्त ही वेत वृत्ति वसना
निष्' (रंम) । बह. रास्यत (पा १) ।
रोस रु [रोस्य] १ रसि कला । २
कमल कला कला । रोस रोसि रोसि
(अ १८ ११; म) । रो रोस्यता
(अ २६, १) ।

रोस रु [रोस्य] रसि कला । रोस
(अ २६, १ ७७) ।
रोस रु [रोस] रसि
'कुम्हाररोसा विरमा वासा
मण्डिमेन मेव कुम्हारि ।
वी मण्डिमकुम्हारि विरममयो
पयासो मे' (बिह २१) ।
रोस रु [रोस] मयम बीमापि (पाण्डु) ।
रोसम वि [रोसक] १ रसि-वत्तक । २ न
कमलक का एक मेर (हंमि १२ मुपा
२२१) ।
रोसम न [रोस] रोसा रुत (ह १ १
मुपा २२१, २८६) ।
रोसम न [रोस] १ एक विरहित-कृत
(रु) । २ न सोरोचन (पञ्च) ।
रोसना श्री [रोसना] रोरोचन (स ११
४२ नम) ।
रोसमिमा श्री [रे] वाक्मि वात (३७
१२, पाण्डु) ।
रोसमम रेसो रोस = रुज ।
रोसमिमा वि [रोसिम] रसामा हुआ (ग
११४ मुपा ११७) ।
रोस वि [रोसिम] रोसममा बीमार (मह) ।
रोस रेसो रुज = रुज 'महि सुरोसि विरले
कुम्हारोई कमहारि' (मि १२१) ।
रोसम वि [रोसिम] १ पञ्च वपना हुआ
(म) । २ विभीषित (अ १—पञ्च ११२) ।
रोस वि [रोसिम] रोसममा (ग १८६;
व) ।
रोसम वि [रे] रुक गरीब (३७ ११) ।
रोस रु [रोस] रोसना । रोस (ह ४
१८२) ।
रोसम वि [रे] रोसिमि पति विर (वृ)
रोसमि } वि [रे] १ रुको रुसममा ।
रोसमि } २ रुको विर (३७ ११) ।
रोस रु [रोस] १ बीमारि रसिमि (पञ्च
पञ्च १ ४) । २ एक कप्य-वाक्मि वातक
(पञ्च २११) ।
रोसि वि [रोसिम] बीमार (मुपा २७१) ।
रोसिम वि [रोसिम] रुज रेसो (मुपा
१ १४) ।

रोसिमिमा श्री [रोसिमिमा] रोस के वरुण
की वाक्मि रोसा (ह १—पञ्च ४७१) ।
रोसिमि रेसो रोसि (पञ्च) ।
रोसम वि [रे] रुक गरीब (३७ ११) ।
रोस रेसो रोस । रोसम (वृ) ।
रोसम रु [रे] रुज वपु-विरोध पुनरुपों में
'रोस' (३७ १२; विरा १ ४ पाण्डु) ।
रोस रु [रे] १ रुको-रुत, वाक्मि पति रु
वात, पित्त पुनरुपों में 'रोस' (३७
११) मीप १११ १७४ निर ४४ रुह १) ।
रोस रु [रे] रोसि रो (महा) ।
रोस रु [रे] १ रोसमा मरना । २
मयार करना । ३ हृण करना । रोसिमि (व
२७४) । मर रोसिमि (अ ३ १११) ।
रोस न [रे] रुक का मान रु-मयाण (३
७ ११) ।
रोसि श्री [रे] १ रुसा मयिमा । २ वृषी
की रुसिका (३७ १२) ।
रोसम रेसो रुज = रुज ।
रोस रु [रोस] १ रुकोच का वपना मुहूर्त
(म २१) । २ एक रुसि रुसि मयरे
मर वपु-विरोध वाक्मि (ह १—पञ्च ४७०) ।
३ पञ्च-रुत-वाक्मि रुज न रुसों में एक रु
(पञ्च) । ४ वि वाक्मि रुक रुसि
(अ ४ ४ महा) । ५ न वपन-विरोध
मिमा पति रुक रुस का विरुत (वीन) ।
रोस रु [रु] रुकोच का वपना मुहूर्त
(मुपा १ ११) । रेसो रुज = रुज ।
रोस वि [रे] १ रुसिमा । २ न मय (३
७ १२) ।
रोस रु [रोसम] रुसि वाक्मि रोसा (वीन
वाक्मि रुस) । रुस रु [रुस] रुसि वाक्मि
रुसि (वाक्मि १ १—पञ्च ११ मुर २,
१ १) ।
रोस रु [रोस] रुसि में रुसि मय (व
१ ८) ।
रोस रु [रोसम] रुसि वाक्मि रुसा (वीन
वाक्मि रुस) । रुस रु [रुस] रुसि वाक्मि
रुसि (वाक्मि १ १—पञ्च ११ मुर २,
१ १) ।
रोस रु [रोसम] रुसि वाक्मि रुसा (वीन
वाक्मि रुस) । रुस रु [रुस] रुसि वाक्मि
रुसि (वाक्मि १ १—पञ्च ११ मुर २,
१ १) ।

छाटप घक [वि + लप्] बिचाप करना, बिक्रम होकर देना। सासपह (प्राङ ७१)।
 छाटपिष न [वि] १ प्रवास २ बलीन।
 १ घाटपिष (वि ७ २७)।
 छाटप देको छाटप। सासपह (प्राङ ७१)।
 छाटप न [छाटन] स्नेह-पूर्वक पालन (पत्रम २१ ५८)।
 छाटप देको छाटप। सासपह (प्राङ ७१)।
 छाटप सक [छाटप्य] १ भूष बनना।
 २ बारबार मोलना। ३ यष्टि मोलना।
 छाटपह (सुम १ १ १६)। १ घक।
 छाटपमात्र (उत्तर १४ १)।
 छाटपन न [छाटपन] यष्टि बनान (पण्ड १ ३-पत्र ४१)।
 छाटपन [देको छाटप] सासपह, सासपह छाटपन (प्राङ ७१)।
 छाटप न [छाटक] लाता मार (वि ४ १६)।
 छाटस वि [वि] १ मुहु, मोमस। २ भीन इच्छा (वि ७ २१)।
 छाटस वि [छाटस] सम्यक्त मोहप (पाम ६ ४ ४ १)।
 छाटस की [छाटस] बार, मुँह से पिछा कत लव (भीन या १११ कुमा गुमा २२६)।
 छाटस देको छाटस। कुमुदिमहृषिभरुष कण्ठवरिरेन्नासिपरीधो (मरक)।
 छाटस वि [छाटस] स्नेह-पूर्वक पालित (वि)।
 छाटपि (पत्र) पु [नाटिप] वृद्ध-विरोध (वि)।
 छाटिप वि [छाटपत्र] मारनाका (मुमा २११)।
 छाट सक [छाटप] कुलनाका नहनाका।
 लापपना (सुम १ ७ २४)।
 छाट देको छाटप (अ ३ ७)।
 छाटप न [वि] कुलनी लुप विरोध बलीप, बल (वि ७ २१)।
 छाटप [पु] छाटप १ पत्रि-विरोध (विवा सभा)। २ ७-पत्र ७१ पण्ड १ १-पत्र ५)। २ वि कटनेनाका (विदे १२ १)।
 छाटपिपि वि [छाटपिपि] वलप से संकट (विवा १ २-पत्र २७)।

छाटप [देको छाटप्य (वीन) रजा कस्त। छाटप १ ममि ६२; पत्रि)।
 छाटप [देको छाटप (उमा)।
 छाटपि (पत्र) वि [छाट] लाया हुमा (वि)।
 छाटपि की [वि] लपतोम (सुम १ २ १ १८)।
 छाटि वि [छाटिप] कटनेनाका (अ १२२)।
 छाट सक [छाटस] भाषना। सासपि (पाम १ १)।
 छाट न [छाटस] १ मरलगाक-प्रतिष्ठ वेपय प्रादि (कुमा)। २ पुष, नाच (पाम)। ३ की का नाच। ४ बाप दुष्य भीर गीत का समुपय (वि २ ६२)।
 छाटस [पु] छाटस १ राख गनेनाका। छाटस २ पय राख बोर्वनेनाका मारक (छापा १ १ टी-पत्र २ भीन पण्ड ७ ४-पत्र १२२ कप)।
 छाटप पु [छाटस ह छाटस] १ प्रपाय देव-विरोध। २ पु की प्रपाय देव-विरोध का खुनेनाका। की। सपाया (भीन छापा १ १-पत्र १७ हक घोट)। देको हकासिय।
 छाटपयिपय पु [वि] छाटसक्यिपय मयुर, मोर (वि ७ २१)।
 छाट सक [छाटप] प्रगठा करना। लाह (वि १ १८)।
 छाट देको छाट (अ ४ ४ १६ मा १२ छापा १ २)।
 छाटप न [वि] भोग्य मेव, छाप वस्तु की भेंट (वि ७ २१ १ १ छवि ७८ टी: रमा ११)।
 छाट देको छाट (वि १ २२; कुमा)।
 छाट देको छाटप (किपट १७)।
 छाट देको छाटपि (वि)।
 छाटपि देको छाटपिपि (पत्र)।
 छाट सक [छाटप] लेपन करना भीपना।
 छिपह (प्राङ ७१)।
 छिप वि [छिप] १ बीपा हुमा (अ ४ २२)।
 २ न, लेप (प्राङ ७)।
 छिपार पु [छिपार] बं बं (प्राङ ६)।
 छिप पु [वि] बल बलका (वि ७ २२)।
 छिपि वि [वि] १ माधिय। २ भीन (वि ७ २८)।
 छिपय देको छिप (मुमा ११६)।

छिप सक [छिप] १ बाला। २ पीठ करता। ३ छाटपन करना। कर्म सिंगिप (धनोप २१)।
 छिप न [छिप] १ छिप, निरासी (प्राङ २४ पत्र)। २ छाटपिपि का लेप-बारण छाटु का घपने कर्म के अनुवार लेप (कुमा विदे १२२ टि ४ १ १-पत्र १ १)।
 ३ अनुमान प्रमाण का साधक हेतु (विदे १२४)। ४ पूर्ण पुष्य का घासाबारण छिप (गुम)। ५ छाट का कर्म-विरोध मुसिन प्रादि (कुमा राज)। छाट पु [छिप] लेपकारी छाटु (अ ४ ४ १)।
 छाटि पु [छाटि] बही धर्म (अ ४ १)।
 छिपि वि [छिपिप] १ साप्य हनु घ वाली बाटी वस्तु (विदे १२४)। २ किसी धर्म के लेप की बारण करनेनाका छाटु, छापासी (पत्रम २२३ मुर २, ११)। की या (कुम ४३४)।
 छिपिपि वि [छिपिपि] १ अनुमान प्रमाण (विदे ६२)। २ किसी धर्म के लेप की बारण करनेनाका छाटु, छापासी (मोष्ट १ १)।
 छिप न [वि] १ कुली-स्थान कुल का सम्भव। २ प्रणि-विरोध (अ ८ टी-पत्र ४१६)। देको छिपक।
 छिप न [वि] १ हापी प्रादि की विहट कुपणवी में भीर (छापा १ १-पत्र ७३ अ २४ टी १)। २ लैवत-यष्टि पुपन पत्नी (पण्ड २, २-पत्र १२१)।
 छिपिपि की [वि] घन-बकप प्रादि की विहट, मोष्ट कुपणवी में भीर (अ ४ २१७)।
 छिप देको छे = बा।
 छिप सक [छिप] भीपना लेप करना।
 छिपह (वि ४ २४६ प्राङ ७१)। कर्म सिपह (माभा)। बक-छिपेमात्र (छापा १ १)। कर्म, छिपिपि, छिपिमात्र (भीपना १६३, रजस २६)।
 छिपन न [छिपन] लेप भीपना (विद २४६)।
 छिप ११६)।
 छिपिपि वि [छिपिपि] लेप कपया हुमा (अ ४ ४)।
 छिपिपि वि [छिपिपि] भीपा हुमा (कुमा)।

सुसिध वि [वे] कस्य मसिन वि ११
४२)।

सुसिध सक [सुसिध] १ बाव लक्षणा । २
भाजन्य कला दूर करना । सुसिध (महि) ।
मूढा सुसिध (भाषा) ।

सुसिध वि [सुसिध] केय-रहित किया हुआ
मुसिध (मुस २१२ मुपा १४१) ।

सुसिध सक [सुसिध म + सक] मारन
करना पोषता । सुसिध (हि ४ १ ५ प्राक
१७ भाषा १११) । बह लुंठ (कुमा) ।

सुसिध सक [सुसिध] मूढता । सुसिध (मुपा
११२) । बह लुंठ (बर्मा १११) ।
बह सुसिध (मुस २ १४) ।

सुसिध न [सुसिध] मूढ (मुस २ ४१
मुपा) ।

सुसिध वि [सुसिध] सुगन्धाला सुसिध
(बर्मा १११) ।

सुसिध वि [सुसिध] कम सुनन चकचक
बोहपा जगसिधमसा सुसातोण कणु
मपिण्वतो बमिधमलेख (मुस २ १) ।

सुसिध वि [सुसिध] बहाव नदीय बहाव
बसी वे विपा हुआ (विम) ।

सुसिध सक [सुसिध] १ बोव करना, विनाश
करना । २ लुंठान करना । सुसिध, सुपा
(प्राक ७१ मुस १ १ ४ ७) । कर्म
मुस (मसा) मुपा (मुस १ २ १
११) । बह सुसिध सुसिधमात्र (वि
१४२ उपा) । बह सुसिध (वि
१८२) ।

सुसिध वि [सुसिध] बीज कलेवला
(भाषा मुस २ २ १) ।

सुसिध धी [सुसिध] विनाश (परा १
१—परा १) ।

सुसिध वि [सुसिध] लीन कलेवला
(भाषा) ।

सुसिध धी [सुसिध] १ लवक कर्म का
उपा (हि ७ २५ मुपा ५ ११२ मुस
४१) । २ सदा बसी (हि ७ २५) ।

सुसिध सक [नि + सु] मुफा दिया ।
मुस (हि ४ ५१ पर) । बह सुसिध
(मुपा ५५ २१) ।

सुसिध सक [सुसिध] मुस (हि ४
१११) ।

सुसिध वि [वे] सुसिध, लीन हुआ (परा) ।
सुसिध वि [निलेन] सुसिध हुआ किया हुआ
(या ४१ २५५ विम) ।

सुसिध वि [सुसिध] १ भन (कुमा) । २
बीमार, रोपी (हि २ २) ।

सुसिध वि [सुसिध] मुसिध केय-रहित
(कर्म विम २१७) ।

सुसिधमात्र देवो लेय = लोक ।

सुसिध वि [सुसिध] दृष्टा हुआ कसिध
(कुमा) ।

सुसिध वि [निलेन] सुका हुआ किया
हुआ (विम) ।

सुसिध पु [सुसिध] १ स्वर्ग विरोध सुका स्वर्ग
(अ १ सम ४१) २ वि कदा स्वर्गभावा
लेय रित सुका कबा (उपाय १ १—परा
७) कर्म धीय) । देवो सुसिध = बस ।

सुसिध वि [वे सुसिध] १ भन भया हुआ
(हि ७ २५; हि २ २५ ४ २५५) । २ रोपी
बीमार (हि २ २५ ४ २५५ पर) ।

सुसिध देवो सुसिध = मुस । मुस (परा) ।

सुसिध सक [सुसिध] मुस (परा) ।

सुसिध देवो सुसिध = लप । मुस (कुमा १
१) ।

सुसिध वि [सुसिध] मुस मय (बर्मा ७) ।

सुसिध पु [सुसिध] रोका, देवा ईद धावि का
मुस (हि ७ २५) ।

सुसिध देवो सुसिध (परा २१) ।

सुसिध सक [सुसिध] मुसकाल सेना । बह
सुसिध (स २५५) ।

सुसिध वि [सुसिध] देवा हुआ (मुपा ५ १
५ १११) ।

सुसिध देवो सुसिध = मुस । मुस (हि ४ २५१) ।

सुसिध सुसिधमात्र सुसिध (परा ११
पर) सुसिध (परा) (वि १५८) ।

सुसिध वि [सुसिध] बाया हुआ (बर्मा १११;
विम ४ ४) ।

सुसिध वि [सुसिध] बीज-भावा 'कले मुसो हसरो
ल' (विम १०७) ।

सुसिध न [सुसिध] बोपी का माल (भाषा
१११) ।

सुसिध पु [सुसिध] १ भ्याव (परा १ २
विम ४) । २ वि लोसुप ममट (परा
विम ४ ७—परा ७५ प्रासु ७१) । ३
न सोय (परा १) ।

सुसिध न [सुसिध] सम-उप-विरोध विरोध
ममुपा कर्म सुसिध पत्रमविध ध' (परा १
१४) । देवो सुसिध = सोय ।

सुसिध पुन [सुसिध] धार-विरोध (भाषा २
११ १) ।

सुसिध वि [सुसिध] १ देवो सुसिध ।
सुसिधमात्र } देवो सुसिध ।

सुसिध सक [सुसिध] १ सोय करना ।
सुसिध } २ बाधक कला । सुसिध सुसिध
(हि ४ ११५ मुपा) सुसिध (परा) । ३
सुसिधमात्र (परा २ १—परा १४१) ।

सुसिध देवो सुसिध = मुस । सुसिध (विम ११) ।

सुसिध धी [वे] बाध-विरोध (दे ७ २४) ।

सुसिध देवो सुसिध । सुसिध (विम) । बह सुसिध,
सुसिधमात्र (मुपा ११; मुस १ २११) ।

सुसिध वि [सुसिध] सेदा हुआ (मुस ४
१८) ।

सुसिध वि [सुसिध] पूणिठ बसित (बरा
मुपा काय ८११) ।

सुसिध देवो सुसिध = मुस । सुसिध (परा १११) ।

सुसिध देवो सुसिध ।

सुसिध सक [सुसिध] मारन करना पोषता ।

सुसिध (हि ४ १ ५ पर प्राक ११; महि) ।

सुसिध न [माजन] मुसि (कुमा) ।

सुसिध देवो सुसिध = मुस (परा) ।

सुसिध धी [वे] मुस-मुपा सुसिध-विम म
जस धी भावि (दे ७ २४) ।

सुसिध धी [मुस] १ बाधक रोम-विरोध
(परा १ २ ७; मुपा १४५) ममुपा (१२) ।

२ बाध बलावला सुसिध मकुपी (लोप
१११) से ।

सुसिध [सुसिध] मुसता बोपी करना । सुसिध
मुसि, मुसि (बर्मा ५ १; विम ११; मुस
४१) । देवो सुसिध (मुपा १ ७) बर्मा
(१२५) । यदे बह सुसिध (मुपा ११२) ।

सुखिभ वि [वि] कस्य मतिन (वि १२, ४२)।

सुख सक [सुख] १ मत्त उभायना । २ धनजन करना हूर करना । सुख (मति) । मुका मुविमु (माया)।

सुखिभ वि [सुखित] केन-रहित किया हुआ मुषिभ्य (मुष २२२) मुया १४१)।

सुख सक [सुख] प्र + उपसृज् । मार्जन करना पोंधना । सुख (हे ४ १२ प्राङ् ६७ भाषा १२१) । बह सुखित (मुया)।

सुख सक [सुख] सुटना । सुटीव (मुया ११२) । बह सुखित (बर्गवि १११) । बह सुखित (पुर २ १४)।

सुख न [सुखन] सुट (पुर २ ४२ मुया)।

सुखाक वि [सुखाक] मुनेवाला मुनेय (बर्गवि १२१)।

सुखा वि [सुखाक] बह सुखन बहबर्ग बेजिदा लक्षितमनासा मुनेवाला पशु बलिजरीये बलिमयजरीये (मुय २ २)।

सुखेभ वि [सुखेभ] बह सुखे, बह बहो से लिया हुआ (विभ)।

सुख सक [सुख] १ मोन करना, विनाश करना । २ स्वीकृत करना । सुपह, सुपहा (प्राङ् ७१ मुय १ ४ ४) । कर् सुख (यथा) सुपह (सुय १ २ ११) । बह सुपह सुपमाण (वि (वि १४२) जहा) । बह सुपिचा (वि १८२)।

सुपह सुवि [सुपहिय] मोन करनेवाला (पाषा मुय २ २ १)।

सुपणा यो [सुपणा] विनाश (पह १ १-य १)।

सुपिचा वि [सुपि] मोन करनेवाला (पाषा)।

सुदी यो [वि सुदी] १ लवक, फलों का गुच्छ (हे ७ २८ मुया या १२२ मुय ४१) । २ बटा, बत्ती (हे ७ २८)।

सुख सक [नि + ख] मुकना, दिना । सुख (हे ४ २२; बह) । बह सुख (मुया, बगमा २१)।

सुख सक [सुख] मुकना । सुख (हे ४ ११६)।

सुख वि [वि] मुक, घोया हुआ (पह) । सुख वि [तिरुन] मुका हुआ दिना हुआ (या ४२ २२८ विग)।

सुख वि [सुख] १ मन (मुया) । २ बीमार, रोमी (हे २ २)।

सुख वि [सुखित] मुषिभ्य केन-रहित (कम वि २१७)।

सुखमाण बेहो खेय = मोन । सुखिभ वि [सुखिभ] मुका हुआ बहिय (मुया)।

सुखिभ वि [तिरुन] मुका हुआ दिना हुआ (विग)।

सुख सु [सुख] १ स्वर्ग विरोध मुका स्वर्ग (अ १ धम ४१) २ वि ख स्वर्गवाला सेव रहित, मुका क्का (खामा १ १-यन ७३ कम भीत) । बेहो सुख = बह ।

मुया वि [वि सुय] १ मन मोया हुआ (हे ७ २३ हे २ २ ४ २३५) । २ रोमी बीमार (हे २ २४ ४ २३८ पद)।

सुख बेहो सुख = मुन । सुख (पह) । सुख सक [सुख] सुटना । सुख (पह)।

सुख बेहो खेय = लव । सुख (मुया १ १)।

सुख वि [सुखित] मुका यथा (बर्गवि ७)।

सुख सु [खेय] रोका बेला रेट भावि क मुकना (हे ७ २२)।

सुख बेहो सुख (पह २२)।

सुख सक [सुख] मुकना, सेटना । बह सुखमाण (अ २२४)।

सुखिभ वि [सुखित] बेदा हुआ (मुया २ २ ४ ११६)।

सुख बेहो सुख = मु । सुख (हे ४ २४१) । कर् सुखिभ, सुख (यथा हे ४ २४२)।

बह सुखिभ, सुखिभ (प्राङ् १६४ पद) स्थापि (य) (वि २८८)।

सुपिभ वि [सु] बाया हुआ (बर्गवि १२२, विरि ४१)।

सुप वि [सु] मोन-वाला 'क्रेय मुतो इमरो ल' (बह १७७)।

सुख न [सुख] मोपी का मात (भायक २१ टी)।

सुख सु [सुख] १ व्याध (पह १ २) वि ४) । २ वि सोमुप नम्य (पाषा विपा १ ७-यन ७७ प्राङ् ७६) । ३ न मोन (हह १)।

सुख न [सुख] कम्-कम्-विरोध विद्याय पशुना कर्क सुख पत्रमपाणि ध' (यध १ ६४) । बेहो खेय = मोन ।

सुख पुन [खेय] धार-विरोध (पाषा २ ११ १)।

सुपयत } बेहो सुप । सुपमाण } बेहो सुप ।

सुपयत } धक [सु] १ मोन करना । सुपयत } २ धावक करना । सुपयत सुपयति (हे ४ १२३ मुया) सुपय (पह) । क. सुपयठव (पह २ २-यन १४६)।

सुप बेहो सुख = मुन । सुपय (संघि ११)।

सुपणी बी [वि] बाध-विरोध (हे ७ २४)।

सुख बेहो सुख । सुख (विग) । बह सुख सुखमाण (मुया ११ मुय १ २११)।

सुखिभ वि [सुखित] मेदा हुआ (पुर ४ १८)।

सुखिभ वि [सुखित] मुषिभ्य बहिभ (जहा मुया काय ८११)।

सुख बेहो सुख = मु । सुख (पह १२१)।

सुख बेहो सुग । सुख सक [सुख] मार्जन करना पोंधना । सुख (हे ४ १२, पद; प्राङ् ११, मति)।

सुख न [माजन] मुषि (मुया)।

सुख बेहो सुख = मुन (पह)।

सुभा भी [वि] मुप-मुप्या मुय-क्रेय य पत बी प्राति (हे ७ २४)।

सुभा भी [सुभा] १ वाकि रोम-विरोध (पंथा १८ २७ मुया १४७) लवप (१२) । २ जाल बननेवाला हवि मकड़ी (मोय १२३ से)।

सुख [सुख] सुटना मोपी करना । सुख मुय, सुय (बर्गवि) । लव २१; मुय २४) । हे-ह-ह-ह (मुया १ ७; बर्गवि १२४) । बह सुखिभ (मुया १२२)।

सूत्र वि [सुम्भ] सुलेनासा । की की तो नमि एव कये जो एवं मन्त्रात्मकम् । वस्साउ विमन्त्रि परिसर्वादि निगारे । (विना २२ । काय २१७) ।	सूत्रि वि [सुत्रि] १ सुत्रि सुत्र मया (पा १२) । २ सुत्रि वीरि (सम्प १७२) । ३ विनामि (संवी १) । ४ विधि (पाषा) । सूत्र स [सुत्र] कस्य । नोना । नुरे नुरे (पा; छाया १ १—पत्र २१) । सूत्र सुत्रि (वि २१७) । सूत्र सु [सुत्र] सुनि साउ मया (सर्व २ १) ।	सुत्र सु [सुत्र] १ सुत्र कया स्वे-पि पाषा वि (२१ ७) । २ सुत्र संय विधि पाषा (सुप १ १ १ १) । ३ न व विरो निर्विकल्पक (संवी २२) । रेको नमन् । सूत्रि वि [सुत्रि] वीरि सुत्र (छाया १ १—पत्र ११ कम्प प्री) । से स [सु] सेना सल कला । वेर (हे ४ २२५) कुमा । स. छि (सुप २२२ वि) । स. सवि (पा) (हे ४ ४४) । स. सवि (पा) (हे ४ ४४) । सेन न [सेन] १ सनहा, व्यापार (सुप ४२२) । २ सेना विपार (सुप २२२) । सेन सेको छि (पत्र) । सेन सेको सेर = सेर (स २२) । सेनावि सेको लिखापि (वि ७) । सेनसु [सुत्र] १ सन-विरो । २ एक प्रवि सन से (सुप १ ११ १ म कम्प प्री) । सेनसु [सुत्र] १ सनसु सनसु १ सनसु सैय । २ एक सनसु-पाषा (सुप २ १ ११) । सेनसु वि [सु] सनसु सनसु (वि २ २१) । सेन सेको छि = सन । सेन सुन [सुत्र] रोहा, ईट सन पाषा ना सुन (वि २११ मी सन नय, महा) । सेन सु [सुत्र] १ सनसु सनसु (स सेनसु) (२ ४ २२) । सेनसु सु [सु] १ रोहा बाट । २ वि सन (२ ४ २२) । सेनसु न [सु] सनसु सुनि (२ ४ २२) ।	सेनसु सु [सु] रोहा बाट (२ ४ २२) पाषा । सुत्र न [सुत्र] १ विरि-वरी पाषा-सु (छाया १ २—पत्र ७२) । २ सन सु (कम्प) । विरि सुको [सु] कम्प- विरो (प्री) । रेको सनसु = सन । सुत्र न [सुत्र] विधि, प्री (सर्व २२, सु १) । सुत्र न सु [सुत्र] १ सनसु (वि २११) सुत्र सनसु (सु १४२) । सेना की [सेना] सेन-विना (ज ११, १२) । सेन सेको सेन (पाषा सुप २, २ १५ वि १४२) । सेन सु [सुत्र] १ सेन (स १४ पत्र २ १) । २ सन-विना सन (संवी १४) ३ सुत्र सनसु सनसु के सन सन सन- विना एक सुत्र (सुप २ ७ २) । स वि [सुत्र] सेन-विनि (संवी २१२) स ४ ४—पत्र ४४ वि) । सेन न [सेन] सेन-कण (प १११) । सेना वि [सेनसु] १ सेन सन (स १) । सेन सु [सुत्र] १ सन सन सन (पाषा २ ४ २) । २ सेन (२ १) । सेन वि [सु] १ विनि । २ पाषा । ३ विनि सन-विनि । ४ सुत्र (२ ४ २२) । सेन सु [सुत्र] १ सेन सन सन सन (स) । सेन स [सुत्र] सन सेको (वि १ ७) । सेनसु १ की [सुत्र] १ सन सेको (प्रि सेनसु) (४ ४ २—पत्र २) । सन । सेन की [सुत्र] १ विना-विरो (सुप २ २ १७) छाया १ ११—पत्र २११) । सेन की [सुत्र] १ सेन सन । २ सन विना सनसु सेन सनसु सनसु (वि २१) २ ११ । ३ सन (सुप १ १) । ४ से सेनसु (स) । ५ सनसु ना विना- विरो, सनसु सनसु के सनसु के सनसु सेनसु सनसु ना सनसु विना । ६ सनसु के सुप ना सनसु विना की सनसु
--	--	---	---

मे निमित्त-मृत कृष्णारि इत्य (यण उवा)
वीण क ११२१ वीणव ७७१ उवाच ४०१
परा १० कर्म ४ ११ ११)।

सेसा श्री [ज्या] आसा (यण ११; १७)।
सेसिय वि [सेसिय] स्वेप-मुक्त (उ ७१२)।
सेसुरभपद दु [से] कलोका पु वृहा
(अन्यत्र पत्र २४१)।

सेसा देवो ससा (मग)।

सेह देवो सिह = सिह। सेह (माह ७)।
सेह देवो सिह = सिह। सेह (माह ७)।
सेह (यण) देवो स्य = मय। सेह (मिप)।
सेह दु [सेह] धनमेह, पाटन (पत्र २,
२०)।

सेह दु [सेह] १ सिङ्गा, सेहान धर
सिङ्गाव (य २४४ उवा)। २ पत्र किट्टी
(कम्पु)। ३ देव सेहवा। ४ सिपि १२ वि,
धनम नो सिङ्गा नाम (हे २ १६१)। ५
सेहक सिङ्गावासा 'सम्पत्ति सेहपले उवाह'
(बन्ना १)। वाह वि [वाह] किट्टी
से वासेनामा पत्र-माहक (पत्र ११ १
मुना ५११)। वाहवा, वाहय वि
[वाहक] बही धर्म (मुना १११, ११२)।
साह्य श्री [शाह्य] पाट्यावा (य ७२८
दी)। रिय दु [श्याय] कान्धम सिङ्गा
(यहा)।

सेहद वि [से] सम्यक् पुन्य (हे ७ २३
ज)।

सेहय न [सेहन] पाटन वासाव (पत्रम
१ १ ७)।

सेहरी श्री [सेरता] कर्म सेहरी (पत्रम
२१ ४ या २४४)।

सेहल देवो सहा (य ५११)।

सेहा देवो सिहा (वीण कर्मा कम्पु कुप
११२ एन १२)।

सेहिय वि [सेरिय] सिपयसा ह्य (दी
७)।

सेहु दु [से] मङ्ग, रोह, देवा (हे ७ २४)।

सेह देवो रोह = रोह। सेह दीपवा
(कव)।

सेह वर [सेह] अकपु देवता। वर
साजरीव (माह)। वर अकमात्र (य
१४२ दी)। वर-सेह (कुप १)।

सेह दु [सेह] १ बमसिधम धारि इवा
का धारार मृत भाकार-सेह अक, रंसार,
मुन। २ वीण धनीय धारि इव। ३
यमय, धारसिका धारि कर्म। ४ पुण
पर्याय, धर्म। ५ जन मनुय धारि प्राणि
धर्म (ठा १—पत्र ११ दी—पत्र १४ यण
७ १ २८ कुमा को १४ मय १२ ७१
मर १२ ११)। ६ धारलोक प्रकाश
(बन्ना १ १)। गा न [म] १
ईवभाभावा नामक धुपिरी मुक्त-स्थान
(सम्प १ २—पत्र १ २ १६)। २ धुपि,
मोक्ष निर्माण (पाप)। गाधुभिन्ना श्री
[मस्तपिङ्ग] मुक्त-स्थान ईवभाभावा
धुपिरी (इक)। 'गाधुभिन्ना श्री
[मस्तपिङ्ग] बही धर्म (इक)। पाणि
दु [नामि] मेर परंत (मुन ५)। पत्राय
दु [मया] वन-मृति कृताव (गुर २
४७)। मगम दु [मय] मेर परंत (मुन
५)। वाम दु [वाह] वन-मृति
कोमेधि (य २१ मा ४५)। गास दु
[मया] लोक-सेह, धारोक्त-मय धारक
(मय)। [गायन न [माग] कृताव
कोमेधि (मय)। देवो सेहा।

सेह दु [सेह] धुमन, मोहता देवो का
ज्वाण क्वाणम (मुना १४१ कुप १७१
सम्प १ १—पत्र १; धोय उवा)।

सेह दु [सेह] धरलण, सिम्ब (पत्रम
१६१)।

सेहिय दु [सेहिय] एक देव-जाति
(कम्प)।

सेहय न [सेहय] पुण-सहित धय
पराव नाम (कव)।

सेहवा (यण) श्री [सेमन्दा] कर्मव (हे
४ ४२१)।

सेहय न [सेहय] धारि बयु मेर (हे
१ ११; २ १६४ कुमा याम गुर १
२२३)। वय न [पत्र] धारि साम,
बनसी, वन (हे १ १७)।

सेहपिङ्ग वि [सेपयन] धार-माता
(मुना २)।

सेहपि श्री [से] वनसिध-विरोध (वण
१—पत्र ११)।

सेहम वि [सेहिय] सिपिय ह्य (या
२७१ य ७११)।

सेहय वि [सेहिय] लोक-वन्नी जीवारिक
(भावा; विप १ २—पत्र १ यामा १
१—पत्र १११)।

सेहय वि [सेहय] लोक-वन्नी लोक-
युय वन्नावारण 'सेहय-वन्नी' (या ११
विपे ८०)। देवो सेहयुतर।

सेहयय वि [सेहयय] ऊपर देवो
(या १)।

सेह वि [से] मुन दीप ह्य (हे ७ २१)।

सेह दु [सेह] वन-विरोध घेणी से पुणित
प्रवर (मय १७१)। वय देवो वय
(यण ११)।

सेहा देवो सेह = लोक (ठा १ २ १
१—पत्र १४२ कर्म कुमा गुर १ ७४
हे १ १७७ प्राय २३ ४७)। ७ न एक
देव-विमान (यम २३)। सेह न [सेह]
एक देव-विमान (यम २३)। कुह न
[सेह] एक देव-विमान (यम २३)।

'गाधुभिन्ना श्री [मस्तपिङ्ग] मुक्त-स्थान
सिद्धि-स्थान (यम २२)। लघा श्री
[पात्र] लोक-वन्नीवार, रोनी (यामा १
२—पत्र ८८)। हिंदु श्री [स्थिति] लोक-
वन्नी (य १ १)। इतर न [सेह]
वीण धनीय धारि वन्नी-वन्नी (मय)।

नामि दु [नामि] मेर परंत (मुन ५
दी—पत्र ७३)। नाह दु [नाह] वय
का वामो परमेश्वर (यम १; मय)।

परिपूर्णा श्री [परिपूर्णा] ईवभाभावा
धुपिरी मुक्त-स्थान (यम २२)। पाह दु
[पाह] इवा के विलास देव-विरोध (य
१ दीप)। पत्र दु [यम] एक देव
विमान (यम २३)। विदुसार पुन
[विदुसार] वीरवर्मा वन्नी-वन्नी (यम
४४)। मगमपिङ्ग पुन [मगमपिङ्ग]
वन्नी-विरोध (य ४ ४—पत्र २४३)।

मगमपिङ्ग पुन [मगमपिङ्ग]
वन्नी धर्म (यम)। रूप न [रूप] एक
देव-विमान (यम २३)। सेह न [सेह]
एक देव-विमान (यम २३)। वय न
[वय] एक देव-विमान (यम २३)।

(अ १—पृ १११)। कपुअ पुं [कपुअ]
लघप्रत्यय-नरक का एक नरक-स्थान (अ)।

ओङ्गुवायिभ वि [वि] रचित-पुण्य भित्तो
पुण्या की हो वह (दे ७ २१)।

ओङ्गुय वेको ओङ्गुअ (मुप २ १ ४४)।

ओय सक [ओयम्] भोज करना विन्यस
करना। ओयेइ (महा)।

ओय पुन [ओय] विन्यस विनाश, धपठेता
‘कन-लोचकाया’ (कुप ४) ‘या इहे वामु
वहि तोय व तुम मरिससा होमु’ (बर्गेनि
१११)।

ओह वेको ओम = ओम (कुमा प्रपु १७१)।

ओह पुन [ओह] १ वामु-विरोध बोहा
(विपा १ १—पृ १११; पामा कुमा)। २
बाहु, कोई भी वामु: ‘नह बोहाण मुबल
क्यास वल वयास रमणार्’ (मुपा
१११)। कर पुं [‘कर’] ओहार (कुप
१५५)। जंय पुं [‘जंय’] १ शयन में
छलन वितीय प्रतिवामुबन राजा (सम
११४)। २ राजा कर्णव्योह का एक पुत्र
(महा)। ‘जंयपण न [‘जंयपण’] महुप
के धरित का एक वन (दी ७)।

ओह वि [ओह] ओह का ओह-निमित्त (दि
१४ २)।

ओहिंगी की [ओहिंगी] छन्द-विरोध
(विह्व)।

ओहस पुं [ओहस] छन्द-विरोध क्यक
छन्द (पद)।

ओहार पुं [ओहार] ओहार, ओह का कय
कनेवाता धिक्की (दे ५, ७१; अ न—पृ
४७०)।

ओहि } वेको ओहा ‘कुम्भम् य पयलेनु
ओहिव } य ओहिवम् य कहुसाहिङ्गोमु’
(सुपनि ५०: ७१)।

ओहिव पुं [ओहिव] १ काम रंग रक्त-
कले। २ वि रक्त बसवाका पाव (दि २
४: अ)। ३ न रवि, नुन (पद १
७१)। ४ ओय-विरोध को कौटिक नाम की
एक शाखा है (अ ७—पृ १११)।

ओहिवम् पुं [ओहिवम्, ओहिवम्]
पडावी महाधर्मी में टीसरा महापद (मुम्ब
२)।

ओहिवम्ब पुं [ओहिवम्ब] १ एक महापद
(अ २ १—पृ ७७)। २ बयरेण क
महिष-वैष का मयिपति (अ १ १—पृ १
२: अ)। ३ राज की एक जाति (आपा
१ १—पृ १११; कपु अ ११ ७१)।
४ एक वेद विपल (वेनेन ११२: १४४)।
५ छन्दसा धुमिरी का एक कम्बड (छन्द
१ ४)। ६ एक पूर्व-पुत्र (अ)।

ओहिआ } एक [ओहिआम्] सल
ओहिआम् } होना। ओहिआम्, ओहिआम्
(दि १ ११० कुमा)।

ओहिआम्ब पुं [ओहिआम्ब] छन्दसा का
एक नरकपात (अ ५०)।

ओहिव पुं [ओहिव] पाषाण धुतिलिप के
रिम्ब एक वैन मुनि (एहि ११)।

ओहिव } न [ओहिआम्ब] गोत-विरोध
ओहिआम्ब } (मुम्ब १ ११ टी अ,
मुम्ब १ ११)।

ओहिआ } की [वि] वनसति-विरोध कय
ओहिणीम् } विरोध (पद १—पृ ११)
‘ओहिणीम् य ओह य’ (अ ११ ११, मुम्ब
११ ११)।

ओहिव वि [वि] ओहिम्ब] सम्पत्, मुम्ब (दि
७ २१ पद ८, १७ या ४४४)।

ओही को [ओही] ओही का वन हुषा
मानक-विरोध कय (अ ५११: याव १)।

ओह वेको ओस = मत्। ओह (पाद ७२)।

ओह यक [ओस] विचकना सरकना
गिर पड़ना। ओह (दे ४ ११७ पद)।
नह ओस (मन्त्रा १)।

ओहण न [ओहण] विचकना पतन (मुपा
११)।

ओहाय सक [ओसम्] विचकना। संह
ओहायिभ (मुपा १ ८)।

ओहायिभ वि [ओसित] विचकना हुमा
(कुमा)।

ओसिअ वि [ओस] विचक कर निय हुमा
(कुप १५७ पद ५४)।

ओसिअ वि [वि] हॉपल (अ)।

ओसुप वेको ओसुप (पद १—पृ ४ :
पि २१)।

ओवि की [ओवि] पाषाण, मयोर कुले
(अ)।

ओव पुं [ओव] ओव वेको (बर्गेन
२११)।

ओसिय पुं [ओसिक] एक भगवत् मनुष्य-
जाति (पद १ १—पृ १४)।

ओहयक [ओ + ओ] विपना। ओहयक
(दे ४ ११ पद १)। नह ओहयक
(कुमा)।

ओहय वि [वि] १ कट (दे ४ २१०)। २
पद (पद)।

॥ अय विरियाइसङ्गणम् अयि अयाइसङ्गणम्
अयिअइसङ्गणम् ॥

बास देको पाऊ (कुम ११३)। 'वीर
पुं [वीर] भवत्सु महावीर (उर)। 'सिंग
न [सिङ्ग] एक देव-विमान (उम २३)।
'सिद्धु न [सिद्ध] एक देव-विमान (उम
२३)। 'हाम न [हात] एक देव-विमान
(उम २३)। 'पय न [पयन] नरिहक-
प्रणीत खास, चार्मिक-स्टीन (एरि)।
'ल्यम पुन [ल्यम] परिपुष्ट बाकाय-वेन,
हृष्टं जपन् (उम नि २२)। 'पय न
[पयत] एक देव-विमान (उम २३)। 'हाम
न [हामन] नौवीक, वन-वर्ति (उम
२३ टी)। 'लगादिय देको अमन्थिय (नि
२३)।

खेगिना करो खेद-लीकिक (नर्वी
१२४८)।

खेगुत्तर करो खेदुत्तर। वडिचय न
[वडिचय] एक देव-विमान (उम २३)।
खेगुत्तर पुं [खेगुत्तर] पुनि हाडु। २
निक-हास्य, वन विहास्य (पलु २६)।

खेगुत्तरिम नि [खेगुत्तरिक] १ पापु
का। २ निज हासन का (पलु २६)।

खेगुत्तरिय देको खेदुत्तर रय (पलु ७९४)।

खेदुत्तर [खेदुत्तर] वीर्य सेना। नौदर
(हे ४ १८)। वड खेदुत्तर (पलु)।

खेदुत्तर [खेदुत्तर] १ देवता। २ प्रवृत्त
होना। नौदर नौदरी (पलु ७९ गुप्त १
१२ १८)। वड खेदुत्तर (गुप्त १२६)।

खेदुत्तर पुं [खेदुत्तर] १ कर्मा बास (निपु
साधु ४)। २ पुष्टो हावी वा खेदुत्तर बना
(पलु १ १—पलु १३)। खेदुत्तर
(पलु १ १)।

खेदुत्तर नि [खेदुत्तर] नरिह (हे ७ २२)।

खेदुत्तर नि [खेदुत्तर] नरिह (७९)।

खेदुत्तर पुं [खेदुत्तर] देव, देव (हे २४)।

खेदुत्तर नि [खेदुत्तर] पुन्याय हृष्ट (ना
७९१)।

खेदुत्तर [खेदुत्तर] कपास निहासना मोड़ना
'नरिहो मे 'नौदर'। वड खेदुत्तर (उम)।

खेदुत्तर पुं [खेदुत्तर] १ नौदर निहासना मोड़ने
का वापर (उम १ १ ४३ उम)। २
पलु १८८८, वीर्यवेद (१२ ८ या)।

२ : संकोच ४४)। १ नि स्तुत। ४ दमि
(हे ७ ७२९)।

खेदुत्तर पुं [खेदुत्तर] कपास के वीर
निकालने का मन्त्र (पलु)।

खेदुत्तर नि [खेदुत्तर] निहासना हृष्ट,
गुन्याय हृष्ट (उम ११ ९७)।

खेदुत्तर न [खेदुत्तर] १ पुन, नयक। २ सावय,
नरिह-कर्मि (प ११५ गुप्ता)। ३ पुं,
वृक्ष-विदेय (उम ४२ ७ या २)। पलु
४)। ४—देवो लय (हे १ ७९१ प्रपु
पलु)। वीर)।

खेदुत्तर नि [खेदुत्तर] नयक-वृक्ष, वरक
सम्बन्धी (पलु ७९९)।

खेदुत्तर न [खेदुत्तर] नरिह-कर्मि (पलु १)।

खेदुत्तर न [खेदुत्तर] नौदी का मात (प १७९)।

खेदुत्तर पुं [खेदुत्तर] वृक्ष-विदेय (गुप्ता १
१—पलु ११)। पलु १ गुप्त १ ४ २
७ वीर्य गुप्ता)। देवो लय = लोम।

खेदुत्तर देवो लय = गुप्त (पलु)। पलु १ ७
१ २२१ प्रपु)।

खेदुत्तर देवो लय 'नौदर' बाप 'नौदर' हो
निकालने के लिये नौदर के लिये नौदर

पलु ११)। वड खेदुत्तर (पलु ११)।

खेदुत्तर वड [खेदुत्तर] गुन्याय बास
देव। वड, खेदुत्तर (गुप्ता २१)।

खेदुत्तर पुं [खेदुत्तर] वरक गुप्ता (गुप्ता
कपास वीर्य उम ४ ४)। २ नि वीर्य-
वृक्ष (पलु)।

खेदुत्तर नि [खेदुत्तर] नौदी बास
(गुप्ता २ १२, ३)।

खेदुत्तर [खेदुत्तर] नौदर (कपास
खेदुत्तर ४ ४)। वड ४ ४६)।

खेदुत्तर पुं [खेदुत्तर] देव, देवो वीर्य (गुप्ता)।
वड ४ ४ ४—पलु २०१)। स नि

[१] नौदर-वृक्ष (वड)। वड पुं [वड]
वीर्य देवो का बना हुआ वड (गुप्ता १
७—वड ७७ वीर्य गुप्ता १ २)। वड १

पुं [वड] १ नरिहासना-विदेय (वड २०)।
२ देवो वड देवो का बना हुआ (पलु २,
११)। वड पुं [वड] नरिह वड वड

नौदर (उम २, २)। वड पुं

[वड] वड देवो वड वड वड
वड देवो वड वड वड (पलु वड
१७१)।

खेदुत्तर पुं [खेदुत्तर] नरिह (निपुष्ट वीर्य
वड ११ वीर्य वड)।

खेदुत्तर वीर्य [खेदुत्तर] १ वड वीर्य (उम ४
२२२)। २ वड वीर्य वड वड वड
(वड १)।

खेदुत्तर न [खेदुत्तर] वड वीर्य निहासना (गुप्ता
२, १ ४ १)।

खेदुत्तर पुं [खेदुत्तर] १ नरिह वड। २ वड वड
(निपु)।

खेदुत्तर वड [खेदुत्तर] १ देवता। २ वड
वड वड वड वड वड वड वड वड वड

वड वड वड वड वड वड वड वड वड वड
वड वड वड वड वड वड वड वड वड वड

वड वड वड वड वड वड वड वड वड वड
वड वड वड वड वड वड वड वड वड वड

वड वड वड वड वड वड वड वड वड वड
वड वड वड वड वड वड वड वड वड वड

वड वड वड वड वड वड वड वड वड वड
वड वड वड वड वड वड वड वड वड वड

वड वड वड वड वड वड वड वड वड वड
वड वड वड वड वड वड वड वड वड वड

वड वड वड वड वड वड वड वड वड वड
वड वड वड वड वड वड वड वड वड वड

वड वड वड वड वड वड वड वड वड वड
वड वड वड वड वड वड वड वड वड वड

वड वड वड वड वड वड वड वड वड वड
वड वड वड वड वड वड वड वड वड वड

वड वड वड वड वड वड वड वड वड वड
वड वड वड वड वड वड वड वड वड वड

वड वड वड वड वड वड वड वड वड वड
वड वड वड वड वड वड वड वड वड वड

वड वड वड वड वड वड वड वड वड वड
वड वड वड वड वड वड वड वड वड वड

वड वड वड वड वड वड वड वड वड वड
वड वड वड वड वड वड वड वड वड वड

वड वड वड वड वड वड वड वड वड वड
वड वड वड वड वड वड वड वड वड वड

वड वड वड वड वड वड वड वड वड वड
वड वड वड वड वड वड वड वड वड वड

वर्द्धनी की [वैदेही] १ एका जनक की की
सीता की मन्था (पत्र २९ ७३) । २ जन
कात्मजा, सीता । ३ हृदि। हृत्वी । ४
विपत्नी पीष। बहिष्की (संवि १) ।

वर्द्धनम न [विषम] विषमवर्द्धन विपरीत-
पन (विदे १२२८) ।

वर्द्धसिन् वि [व्यतिरिक्त] व्यतिरिक्त (पात्र
२ १ १ २) ।

वर्द्ध देवी वर = वर (ह १ १२२) ।

वर्द्ध पुन [वर्द्ध] १ एन-विदेय होकर, होय
(सम ६१; वीप क्मा मय कुमा) । २

एन का पक्ष (वर्द्ध) । ३ एक देव-विमान
(संवि १११; सम २३) । ४ विद्युत् विष्मयी
(कुमा) । ५ पु एक मुनिपुत्र विन महावि
(कम १२ १ ६; कुमा) । ६ कौत्सिका
वृक्ष । ७ स्वेय कुमा । ८ कौत्सिका का एक
प्रतीक । ९ न बाधक विष्णु । १० बाधी ।

११ कौत्सी । १२ वृद्धवृक्ष । १३ एक प्रकार
का वीणा । १४ वृद्ध-विदेय । १५ व्योमिप
प्रतिष्ठ एक वीस (ह २ २ ४) । १६

कौत्सिका छोटी कला (सम १२६) । कृद्ध
न [कृद्ध] कला प्रसाधिनी का एक
वर्द्धनमय कला (एन) । कृद्ध न

[प्राक्त] एक देव-विमान (सम २३) ।
कृद्ध न [कृद्ध] १ एक देव-विमान (सम

२३) । २ देवी विदेय का पापमनुष्य एक
विश्वर (एन) । ऊप पु [ऊप] १ मय-

वेष में एतान् लुपित प्रविष्टमनुष्य (सम
१२४) । २ पुष्कलावती विनय के गोप्यव

न्याय का एक राजा (पात्र) । पयस न
[पयस] एक देव-विमान (सम २३) ।

मगध की [मगध] विमान-विदेय एक
प्रकार का वृक्ष (स ४ १—पत्र १६२) ।

एन न [एन] एक देव-विमान (सम
२३) । ऐस न [ऐस] एक देव-विमान

(सम २३) । एन न [एन] देव-विमान-
विदेय (सम २३) । सिन न [सिन] एक देव-विमान का नाम (सम २३) । सिद्ध

पु [सिद्ध] एक राजा (कम १२ ४) ।
सिद्ध न [सिद्ध] एक देव-विमान (सम

वर्द्धनी के स्थित वे (कम) । सेणा
की [सेना] १ एक इन्द्राणी वायव्य

नामक-वर्द्धनी की एक पक्ष-महिषी (एना
२—पत्र २३२) । २ एक विष्णुमायी देवी

(एन) । हर पु [हर] हर (वर्द्ध) ।
मय वि [मय] वृद्ध राजा का बना हुआ

(सम ६१) श्रीप वि ७ १ १२३) की
मह, मती (वीप ३ वि २ ३ डि ४) ।

पयस न [पयस] एक देव-विमान (सम
२३) । १ सेमनापय न [श्रवणमनापय]

वर्द्धन-विदेय (सम १४६) नव) । देवी
काय = वर ।

वर्द्ध की [पयस] एक वीन मुनि-राजा
(कम) ।

वर्द्धाग न [पयस] विरक्ति, वरहीनता
(पत्र २६, २) ।

वर्द्धाग पु [पयस] १ एक पर्वत देव । २ न.
प्राचीन प्राचीन नगर-विदेय को मय्य देव

को एनकायी की 'वर्द्धाग मय्य वरणा
पयस' (पत्र २०३) ।

वर्द्धाग देवी वर्द्धाग (नवि) ।
वर्द्धाग वि [वर्द्धाग] इतना विष्णु (मुर

पयसिन् १ ७ काल प्राय १७५) ।
वर्द्धाग न [वर्द्धाग] विमान एकल स्थान देवी

वर्द्धाग मय्य मुसुहार विरजणाह
वर्द्धाग-वर्द्धाग (मा ८७) ।

वर्द्धाग वि [वर्द्धाग] विमान एकल (मुर
१२, ४४ वेष्ट ४६४) ।

वर्द्धाग की [पयस] एक वीन मुनि-राजा
(कम) ।

वर्द्धाग की [वर्द्धाग] १ एक विद्या-देवी
(संवि १) । २ मय्या मय्या-वर्द्धाग की

राज्य-देवी (संवि १) ।
वर्द्धाग-वर्द्धाग न [वर्द्धाग-वर्द्धाग]

एक देव-विमान (सम २३) ।
वर्द्धाग पु [वर्द्धाग] १ मय्य (वर्द्धाग

विमान के देव (सम ३, १ सम ७४) ।
४ पुन, एक वीर-विमान देव-विमान (पत्र

२४७ सम १४) ।
वर्द्धाग पु [वर्द्धाग] इतना देव (ह ७ २१) ।

वर्द्धाग पु [वर्द्धाग] वर, वरपति (ह ७ ४२) ।
वर्द्धाग पु [वर्द्धाग] वर को एक वरपति वरपति

वर्द्धाग पु [वर्द्धाग] वर को एक वरपति वरपति
वर्द्धाग पु [वर्द्धाग] वर को एक वरपति वरपति

वर्द्धाग पु [वर्द्धाग] वर को एक वरपति वरपति
वर्द्धाग पु [वर्द्धाग] वर को एक वरपति वरपति

वर्द्धाग पु [वर्द्धाग] वर को एक वरपति वरपति
वर्द्धाग पु [वर्द्धाग] वर को एक वरपति वरपति

वर्द्धाग पु [वर्द्धाग] वर को एक वरपति वरपति
वर्द्धाग पु [वर्द्धाग] वर को एक वरपति वरपति

वर्द्धाग पु [वर्द्धाग] वर को एक वरपति वरपति
वर्द्धाग पु [वर्द्धाग] वर को एक वरपति वरपति

वर्द्धाग पु [वर्द्धाग] वर को एक वरपति वरपति
वर्द्धाग पु [वर्द्धाग] वर को एक वरपति वरपति

वर्द्धाग पु [वर्द्धाग] वर को एक वरपति वरपति
वर्द्धाग पु [वर्द्धाग] वर को एक वरपति वरपति

वर्द्धाग पु [वर्द्धाग] वर को एक वरपति वरपति
वर्द्धाग पु [वर्द्धाग] वर को एक वरपति वरपति

वर्द्धाग पु [वर्द्धाग] वर को एक वरपति वरपति
वर्द्धाग पु [वर्द्धाग] वर को एक वरपति वरपति

वर्द्धाग पु [वर्द्धाग] वर को एक वरपति वरपति
वर्द्धाग पु [वर्द्धाग] वर को एक वरपति वरपति

वर्द्धाग पु [वर्द्धाग] वर को एक वरपति वरपति
वर्द्धाग पु [वर्द्धाग] वर को एक वरपति वरपति

वर्द्धाग पु [वर्द्धाग] वर को एक वरपति वरपति
वर्द्धाग पु [वर्द्धाग] वर को एक वरपति वरपति

वर्द्धाग पु [वर्द्धाग] वर को एक वरपति वरपति
वर्द्धाग पु [वर्द्धाग] वर को एक वरपति वरपति

वर्द्धाग पु [वर्द्धाग] वर को एक वरपति वरपति
वर्द्धाग पु [वर्द्धाग] वर को एक वरपति वरपति

वर्द्धाग पु [वर्द्धाग] वर को एक वरपति वरपति
वर्द्धाग पु [वर्द्धाग] वर को एक वरपति वरपति

व

व दुं [व] १ धातुव व्यञ्जन मर्त्य-विशेष
विशका नवाखुस्वान् वत् धीर योऽतु
(अथ प्राप्ता) । २ दुं व वसु (वि १ १।
२, ११) ।

व ध [व] रेवो इव (वि १ ११ पा १ ;
११, १४) ७१ मुना है २ १ २, प्रावु
१) ।

व रेवो वा = व (हे १ १७) वा ४२ ११४
मुपय प्राक् २१ यधि) ।

व रेवो पाया = वाय् । क्लेयय वि
[क्षेयक] वक्त्र क्य विरल—वहव्य (वा
१४२ य) । व्यङ्गाय पु [पवित्रा] एक
श्रीवर्ग वधि 'गच्छवही' कर्म्य क्य कर्ता
(कच) ।

वज्रगोष्ठा वी [वे] १ जयत वी । २ दुःशीव
वी (पद्) ।

वज्राक्ष मज [म + अ] पसरता छिन्ना ।
वज्राक्ष (पद्) ।

वज्राक्ष रेवो वावाह = वावाह (सिंह २) ।

वज्र ध [वे] वज्र धर्मी वा सुवक्त्र कर्म्य—
१ वज्राक्ष लक्ष्य (विशे १) । २
मकुल । ३ शरीव । ४ पारुषी (वैभ)

वज्र ध [वे] वधि, कर्म्य वज्र 'अकुलवह
अक्षर' (मुना ४१) ।

वज्र वि [वृधिव] वज्रावता वधयो (जट
मुना ४११) । वी वी (जट १७१) ।

वज्र वी [वाय्] वासी वज्र (यम २१
कर्म्य जट ४ वा ३१ मुना १४४ कर्म
४ २४ १७१ २) । गुण वि [गुण]

वासी वा वज्रवज्रा (वापा ७१ ४) ।
गुण वी [गुण] वासी क्य वज्र
(वापा) । ओम, 'जाग पुं [योग]

वज्र-वासर (मज १४४ १ २) । अति
वि [वाधिव] वज्र-वज्रावता (वज्र) ।

'मंथ वि [मा] वज्रावता (वापा १,
१ ६, १) । 'मिथ न [मात्र] विरल
वज्र (वर्ष १४४ २ ४, ४४) । वी

वर्ष ।

वज्र वी [वृधिव] वाज्र कटि धावि वे वज्राई
वासी स्वाकरीय वेरा 'पलाय' वज्रगु
मीरति वही' (वा १ । वज्रा वा ११)
जय १४४ वज्र १ १ १११ वज्रा वी)
'वज्र वीरति वज्र' (वर्मि २१) वज्रा
४२) ।

वज्र रेवो वज्र = वधि (वा १११ से ४ १४
कर्म्य मुना) ।

वज्र रेवो वज्र = वज्र ।

वज्र रेवो वज्र = वज्र ।

वज्र वि [वे] १ वीथ, विशका वाग किना
पना हो वज्र (हे ७ १४) । २ धातुव
वज्र मुना 'वज्रावता' वज्राव
(वापा) ।

वज्र वि [व्ययित] विशका क्य किना
क्या हो वज्र, 'विमिथ' वज्राव वज्राव
(मुना १७७ ७१ ४२) ।

वज्रावता पुं [वेवर्ग] १ विवर्ग वेरा का उवा ।
२ वि. विवर्ग वेरा में कर्म्य (वज्र) ।

वज्रावता पुं [व्ययित] वज्रावता वज्राव
(मुना १११ ४४) ।

वज्रावता रेवो वज्र = वज्र ।

वज्रावता वी [वृधिव] वीदा वीरुव विव
१ ६ मुना २४ ४४ वीथ ४४) ।

वज्रावता वि [वृधिव] वज्रावता वज्राव
धावि वे उवा वी वज्रावता वापा धावि
(हे १ १११) ।

वज्रावता वी [वृधिव] वज्रावता वज्राव
(हे १ १११) ।

वज्रावता वी [वृधिव] वज्रावता वज्राव
(हे १ १११) ।

वज्रावता वी [वृधिव] वज्रावता वज्राव
(हे १ १११) ।

वज्रावता वी [वृधिव] वज्रावता वज्राव
(हे १ १११) ।

वज्रावता वी [वृधिव] वज्रावता वज्राव
(हे १ १११) ।

वज्रावता पुं [वृधिव] वज्रावता वज्राव
(हे १ १११) ।

वज्रावता न [वृधिव] वज्रावता वज्राव
(हे १ १११) ।

वज्रावता पुं [वृधिव] वज्रावता वज्राव
(हे १ १११) ।

वज्रावता पुं [वृधिव] वज्रावता वज्राव
(हे १ १११) ।

वज्रावता पुं [वृधिव] वज्रावता वज्राव
(हे १ १११) ।

वज्रावता पुं [वृधिव] वज्रावता वज्राव
(हे १ १११) ।

वज्रावता पुं [वृधिव] वज्रावता वज्राव
(हे १ १११) ।

वज्रावता पुं [वृधिव] वज्रावता वज्राव
(हे १ १११) ।

वज्रावता पुं [वृधिव] वज्रावता वज्राव
(हे १ १११) ।

वज्रावता पुं [वृधिव] वज्रावता वज्राव
(हे १ १११) ।

वज्रावता पुं [वृधिव] वज्रावता वज्राव
(हे १ १११) ।

वज्रावता पुं [वृधिव] वज्रावता वज्राव
(हे १ १११) ।

वज्रावता पुं [वृधिव] वज्रावता वज्राव
(हे १ १११) ।

वज्रावता पुं [वृधिव] वज्रावता वज्राव
(हे १ १११) ।

वज्रावता पुं [वृधिव] वज्रावता वज्राव
(हे १ १११) ।

वज्रावता पुं [वृधिव] वज्रावता वज्राव
(हे १ १११) ।

वज्रावता पुं [वृधिव] वज्रावता वज्राव
(हे १ १११) ।

वज्रावता पुं [वृधिव] वज्रावता वज्राव
(हे १ १११) ।

वज्रावता पुं [वृधिव] वज्रावता वज्राव
(हे १ १११) ।

वज्रावता पुं [वृधिव] वज्रावता वज्राव
(हे १ १११) ।

बंजुलि नि [बन्जुलि] वैतय बृजवत्ता ।
की जो (बज) ।

बंम नि [बम्भ] रूप बजित (कुमा) ।

बंम की [बम्भ] बंम की यमुनवती की
(पम्भ २१ २३ गुमा ३२४) ।

बंट न [बन्त] कज वा पतो का बन्धन (विह
४२) ।

बंटग पु [बन्तक] बंट बिभाग (विह १२) ।

बंट पु [बे] १ भङ्ग-विभाग धर्मिवाहित
पुनरुत्थी ये 'नारी' (बे ७ २३ योप २१८) ।

४ बरह टुम्हा । १ मरह (बे ७ २३) ।

४ बुर्य रास (बे ७ २३ मुर २ १२५) ।

रम्य २३। विरि १११२) । १ वि विन्त्य,

लेह-विह (बे ७ २३) । १ बुर्य ज

(या १२) ।

बंट नि [बन्त] बंम नाम, माटा, बीना

(बे ४ ४७७) ।

बंटन (धन) न [बन्तन] बंटन, बिभाग

(विह) ।

बंजुलि नि [बे] बीन्त्य (पम्भ) ।

बंजु देवो बंजु (पा २२४) ।

बंजु न [बे] पम्भ (बे ७ १६) ।

बंजु देवो बंजु (पा १७४) ।

बंजु पु [बे] कज (बे ७ २२) ।

बंट नि [बान्त] पतिव बिप गुमा (बे १

१ टी) ।

बंट पु [बान्त] १ बिपका बन्धन किया क्या

हो बह (ज) । २ पुन, बन्धन 'बंटि ह वा

विप्टि ह वा' (म) ।

बंटर पु [बन्तर] एक बंम बन्ति (बे २७)

महा) ।

बंटरिख पु [बन्तरिख] ऊपर देवो (म) ।

बंटरिणी की [बन्तरिणी] बन्तर-वासीय देवी

(गुमा ३२३) ।

बंट देवो बन्त ।

बंटि देवो बन्ति (पा २७७; ४६३) ।

'बंट देवो पम्भ (बे ११३ १ ४२३ ११

पम्भ बन्तमाण (पोप १० ४ १ धमि

१७२) । बन्त, धन्त्यमाण (उप २८६

टी प्राप् १६२) । बंजु धन्त्य धन्त्यो,

धन्त्युप धन्त्युप, धन्त्युप धन्त्युप

(कुमा १ १ बंजु कम्पाव; हे १ १४९

पंज) । हेक-धन्त्युप (ज) । ४ धन्त्य,

धन्त्य, धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप (धन्त्य

धन्त्य १४७ इत्य १ धन्त्य १ १ प्राप् १६२

माट-मुम्भ ११ बह १) ।

धन्त्य न [धन्त्य] धन्त्य धन्त्य (पम्भ १ १)

धोता प्राप्) ।

धन्त्य } धन्त्य [धन्त्य] बन्धन करनेवाला

धन्त्य } (पम्भ ६ २८१ १ १ ७३१ महा

धोता मुम्भ १ १) ।

धन्त्य न [धन्त्य] १ प्रथम प्रथम । २

स्वयं स्वयं (कम्प मुर ४ १२३ ज) ।

कम्प पु [धन्त्य] धन्त्युप कट (धोप) ।

पम्भ पु [धन्त्य] धन्त्युप (धोप) । माका,

माका की [धन्त्य] धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप

धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप

धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप

धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप

धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप

धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप

धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप

धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप

धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप

धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप

धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप

धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप

धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप

धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप

धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप

धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप

धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप

धन्त्युप देवो धन्त्युप = बन्त ।

धन्त्युप नि [धन्त्युप] धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप

धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप

धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप

धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप

धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप

धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप

धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप

धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप

धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप

धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप

धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप

धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप

धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप

धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप

धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप

धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप

धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप

धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप

धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप

धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप

धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप

धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप

धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप

धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप

धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप

धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप

धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप

धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप

धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप

धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप

धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप

धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप

धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप

धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप

धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप धन्त्युप

वस्यपि [अपसक्त] १ कृतं, ज्यः २ पु
 न्यः ३ विद्येय (अ ४ ३—पु ३४५) ।

४ ११३ सुपा २७६६ मुर १ १११ प्राप्
कृपा महा ।

यत्र वि [कृण्वि] कृण्व-कृण्व, पातवाता
य ४२८ १४२ वज्र, ७३, ११ ।

य ४३ [वृणापक] मिश्रक निष्ठाट 'वृणि
त्यसि सि वृणिषो पापमाप्सो वृणोषति'
निष्ठ ४४१ ।

यत्र न [वृणिवि] वृणोषि-वृणिवि एव
मल (वि ११४८ सुपाति ११) ।

येना श्री [वृणिक्] वृणिक् वृणेना,
वृणेनापिपाद्य वृणमापिप (यत्र ७
उवा) ।

यिना श्री [वृणिता] वृणिता, वृणिता,
य १७ कृपा वृणु २ सम्पत् १७१ ।

यिज रेवो वृणिव = वृणिव (यत्र १४) ।

यिज न [वृणिक्] व्यापार, वेत्ता,
यिज } 'वृणिव्यस्य हृदं वृणु विवृणुति
वृणिव्यस्य' (सुपा ११ १४२) 'उन्मेली-
भाक्को वृणिव्यस्य' (यत्र ११ १६५ य
४४१ मुर १ १; मुर ११४८, सुपा १८४
प्राप् ८ यत्रि य १२) । त्रय वि
[कृण्वि] व्यापारि (सुपा १४१ अ ३
२४) ।

यिजि रेवो वृणोमय (यत्र १, १ ११) ।
वृणीमय १ वृणिव, वृणीम (यत्र २, २, १) ।
वृणी श्री [वृणी] १ वृणी से प्राप्त वृण (यत्र २,
८-यत्र १४१) । २ वृणी-वृणोमय विसे
कृपा विवृणुता है (यत्र) ।

वृणामया दु [वृणीपक] व्यापक मिश्रक
वृणामय } निष्ठाट (यत्र २, १; सुपा १९८,
यत्र ७५ ४११) ।

वृणो वृ ४५ वृणी वृणु वृणोमय—१ मिश्रक
(यत्र २ २ १; कृपा) । २ विवृणुता । ३
वृणुवृणोमय । ४ वृणोमय (यत्र २, २ १) ।
वृणोवृ वृणी वृणोमय (यत्र २१) ।

वृणु वृक [वृणुवृ] १ वृणुवृ कृपा । २
वृणुवृ कृपा । ३ वृणुवृ । वृणुवृमो (वि
४१) । वृणु वृणुवृमय (वि ११८८)
वृणुवृमय (यत्र) (यत्र ४ १४३) । वृ
वृणुवृ (पा १४) । वृ वृणुवृमय (वि
२७१) । ४ वृणुवृमय, वृणुवृमय (यत्र
२, १७३ यत्र) ।

वृणु वृ [वृणी] १ वृणी वृणा (यत्र
२ ७) । २ यत्र, वृणी (यत्र १) । २
वृणु वृणी वृणु (यत्र ४ ४ ४ उवा) । ४
वृणु वृणी वृणु । १ वृणुवृ वृणु वृणी
वृणु । १ वृणु । ७ वृणुवृमय । ८ वृणुवृ,
वृणा । १ वृणुवृमय वृणी वृणु । १ वृणु-
वृणुवृ । ११ वृणुवृ । ११ वृणुवृमय ।

११ वृणु वृणु । १४ वृणु (यत्र १ १७७
प्राप्) । १२ वृणुवृमय वृणु वृणी वृणी
का वृणुवृमय वृणी (यत्र १ २४) । १६
वृणुवृ । १७ वृणु वृणु (यत्र) । १८ वृणु,
वृणुवृ (यत्र १ १४२) । वृणु वृणु वृणु

[वृणुवृ] वृणुवृमय (यत्र वृणु १७) ।
वृणु वृ [वृणु] वृणु वृणुवृमय
(यत्र) । वृणु वृ [वृणुवृ] वृणुवृमय-वृणु
वृणुवृमय (यत्र १) । वृणु वृ [वृणु] वृणुवृमय,
वृणा (यत्र २ २१) । वृणु वृ

[वृणुवृ] वृणुवृमय-वृणु वृणुवृमय (यत्र
१ उवा) । वृणु वृ [वृणुवृ] वृणुवृमय-
वृणुवृमय (यत्र उवा) ।

वृणु वृ [वृणी] वृणु वृणु वृणु । सम न
[वृणु] वृणु वृणु का एक वृणु (यत्र २
२१) ।

वृणु वृ [वृणी] वृणु वृणु । २ वृणु ।
(यत्र ७ ४१) ।

वृणु वृ [वृणी] वृणु वृणु । २ वृणु ।
(यत्र ७ ४१) ।

वृणु वृ [वृणी] वृणु वृणु । २ वृणु ।
(यत्र ७ ४१) ।

वृणु वृ [वृणी] वृणु वृणु । २ वृणु ।
(यत्र ७ ४१) ।

वृणु वृ [वृणी] वृणु वृणु । २ वृणु ।
(यत्र ७ ४१) ।

वृणु वृ [वृणी] वृणु वृणु । २ वृणु ।
(यत्र ७ ४१) ।

वृणु वृ [वृणी] वृणु वृणु । २ वृणु ।
(यत्र ७ ४१) ।

वृणु वृ [वृणी] वृणु वृणु । २ वृणु ।
(यत्र ७ ४१) ।

वृणु वृ [वृणी] वृणु वृणु । २ वृणु ।
(यत्र ७ ४१) ।

वृणु वृ [वृणी] वृणु वृणु । २ वृणु ।
(यत्र ७ ४१) ।

वृणु वृ [वृणी] वृणु वृणु । २ वृणु ।
(यत्र ७ ४१) ।

वृणु वृ [वृणी] वृणु वृणु । २ वृणु ।
(यत्र ७ ४१) ।

वृणु वृ [वृणी] वृणु वृणु । २ वृणु ।
(यत्र ७ ४१) ।

वृणु वृ [वृणी] वृणु वृणु । २ वृणु ।
(यत्र ७ ४१) ।

वृणु वृ [वृणी] वृणु वृणु । २ वृणु ।
(यत्र ७ ४१) ।

वृणु वृ [वृणी] वृणु वृणु । २ वृणु ।
(यत्र ७ ४१) ।

वृणु वृ [वृणी] वृणु वृणु । २ वृणु ।
(यत्र ७ ४१) ।

वृणु वृ [वृणी] वृणु वृणु । २ वृणु ।
(यत्र ७ ४१) ।

वृणु वृ [वृणी] वृणु वृणु । २ वृणु ।
(यत्र ७ ४१) ।

वृणु वृ [वृणी] वृणु वृणु । २ वृणु ।
(यत्र ७ ४१) ।

वृणु वृ [वृणी] वृणु वृणु । २ वृणु ।
(यत्र ७ ४१) ।

वृणु वृ [वृणी] वृणु वृणु । २ वृणु ।
(यत्र ७ ४१) ।

वृणु वृ [वृणी] वृणु वृणु । २ वृणु ।
(यत्र ७ ४१) ।

वृणु वृ [वृणी] वृणु वृणु । २ वृणु ।
(यत्र ७ ४१) ।

वृणु वृ [वृणी] वृणु वृणु । २ वृणु ।
(यत्र ७ ४१) ।

वृणु वृ [वृणी] वृणु वृणु । २ वृणु ।
(यत्र ७ ४१) ।

वृणु वृ [वृणी] वृणु वृणु । २ वृणु ।
(यत्र ७ ४१) ।

वृणु वृ [वृणी] वृणु वृणु । २ वृणु ।
(यत्र ७ ४१) ।

वृणु वृ [वृणी] वृणु वृणु । २ वृणु ।
(यत्र ७ ४१) ।

वृणु वृ [वृणी] वृणु वृणु । २ वृणु ।
(यत्र ७ ४१) ।

वृणु वृ [वृणी] वृणु वृणु । २ वृणु ।
(यत्र ७ ४१) ।

२५) । २ धातु पञ्चलन (पञ्च १२, ४१) । ३ स्थिति । ४ स्थान । ५ वर्तन, होना । ६ नि वृत्तिमाना । ७ ध्वनिमाना (वर्ति १) ।

पञ्चमा श्री [पञ्चता] ऊपर देखो 'पञ्चता-
नक्षत्रो कञ्चो' (पञ्च २१) । धातुम ।
पञ्चमी श्री [पञ्चमी] मार्ग पञ्चा (पञ्च १
—पञ्च २४) विदे ११ ७; धूमि ११ टी;
गुण २१८) ।
पञ्चद्वि [वि] १ गुण । २ बहु द्विविध
(वि ७ ५) ।

पञ्चमाय पुं [पञ्चमान] १ कञ्च-विशेष,
कला का (पञ्च १) । २ नि
वर्तमान-कालीन विद्यमान । ३ पुं विषय
मायका (वर्तन १७१) ।
पञ्चरी देखो सञ्चरी (कम ८१; प्राप् १२१;
वि ४२१) ।

पञ्चक देखो पञ्च = बच् ।

पञ्चा श्री [वि] पुनःकञ्च पुनःकञ्च-कञ्च
(पञ्च १ ४—पञ्च ७ ठं २) । देखो
पञ्च = (रे) ।

पञ्चा श्री [पाञ्चा] १ वायु, नवा (वि १ १०—
गुण १८७; प्राप् १; गुण) । २ कुल
हरीश्वर (पाञ्च) । ३ वृत्ति । ४ ध्वनि । ५
प्रति-कर्म कर्त्ता । ६ कल्पवृक्ष, निवृत्ती ।
७ कल्प का धनुष । ८ कल्प-कर्मक पुनः-
कार (वि १ १) । ज्योतिष पुं [ज्योतिष]
काशीय (वि २ ३) ।

पञ्चार वि [वि] वसित पञ्च-पञ्च (वि ७ ४१) ।
पञ्चि श्री [वि] धीमा (वि ७ ११) ।
पञ्चि देखो वृद्धि (का २२१; २२४) विदे
(२२१) ।

पञ्चि वि [पञ्चि] कनिष्ठा (गुण) ।
पञ्चि श्री [पञ्चि] वृद्धि (गुण २ ४ २) ।
देखो पञ्चि ।

पञ्चि श्री [पञ्चि] पञ्च एक कल्प, पञ्चमी
कल्प । 'पञ्चमी' [पञ्चि] प्रविष्टा-
विशेष, निवृत्त समय में जो शीघ्रकर विचलन
हो उठे विषय की निवृत्त-कल्प स्थाना
(वैद्य १२) ।

पञ्चि वि [पञ्चि] कलाकार, 'पञ्चि' (वि २ ३) । २ पुं टीका श्री टीका (पञ्च

४१ विदे १४२२) । ३ पञ्च की टीका—
व्याख्या (विदे १३४२) ।

पञ्चि वि [पञ्चि] १ वृत्त—गोल किन्ना
हुता (पञ्च १ ७) । २ धातुवित (पञ्चि) ।

पञ्चि देखो पञ्चय = प्रत्यय (धीन) ।

पञ्चि देखो वृद्धि (पञ्च) ।

पञ्चि श्री [पञ्चि] मार्ग पञ्चा (पञ्च १
—पञ्च २४) विदे ११ ७; धूमि ११ टी;
गुण २१८) ।

पञ्ची देखो पञ्ची = पञ्ची (पा ७१ १ १;
७३) ।

पञ्च देखो पञ्च = बच् ।

पञ्चकाम वि [पञ्चकाम] बीसने की बाह
बाबा (पञ्च ११; पञ्च ४४ स्थान १;
पञ्च—वि ४ ४) ।

पञ्चक देखो कट्टक (पञ्च) ।

पञ्च पुं [पञ्च] कपड़ा (भाषा २ १४
२२) ज्ञात पञ्च १ १; ज्ञ ४ १३३; गुण
७२; ४११; गुण २४ ७ ७) । 'पञ्च' न
[पञ्च] नवा विशेष (न २ टी—पञ्च
१७७) । पञ्च वि [पञ्च] वृत्त कोनेवाला
(पञ्च १ ४ २ ७) । पञ्च पुं [पञ्च]
एक कैल पुं (पञ्च २२) । पञ्चमि पुं
[पञ्चमि] एक कैल पुं (टी ७) ।

'पञ्चा श्री [पञ्चा] विद्या-विशेष विज्ञान
प्रमाण वृत्त देखो वृत्त हो टी बीमार
पञ्च हो वायु (वैद्य १) । मोक्ष वि
[पञ्च] वृत्त कोनेवाला (वि ४१) ।
पञ्च वि [पञ्च] वृत्त किन्ना गुण (गुण
११ २२) ।

पञ्चक पुं [वि] वृत्तपुं ठं, कपड़-कोट,
कपड़ (वि ७ ४२) ।

पञ्च देखो पञ्च = बच् ।

पञ्चा पुं [पञ्चा] कल्प की एक पाणि
जो वृत्त के का काम करता है (पञ्च १ २
१२१) ।
पञ्च देखो पञ्चर = कटार (पा १२१) ।

पञ्चविज न [पञ्चविज] दो कैल वृत्त-पुं
के काम (कम) ।

पञ्चक वि [पञ्चक] पञ्चकाली किन्ना
(वि ४२४ गुण १ ११ गुण ११३)
महा) ।

पञ्चमी श्री [वि] वृत्त-विशेष (पञ्च १—
पञ्च ११) ।

पञ्चमीय पुं [वि] बाध-विशेष 'वृत्त-
कला-विशेष' मोक्ष कर्म 'पञ्चि' (गुण
१ ७) ।

पञ्चि पुं [पञ्चि] २ द्वि मरक (मन १
१ १० १; छाया १ १८) 'नक्षत्र-
वायु-विशेष' वायु-विशेष 'नवा' (वृत्त-
विशेष १८) । २ मरक, गुण 'पञ्चि'
पञ्चा' (वायु पञ्च १ ३—पञ्च ११) ।
३ कटार में खाली—सली—सली बैठने का
स्वाय, धातु का एक धातु (धीन) । कम न
[पञ्चि] १ विर भाषि में कर्म-कृत हाथ
किन्ना बाधा दैन पाणि का पञ्च । २ पञ्च
पाठ करने के लिए गुण में पञ्च पाणि का
किन्ना बाधा प्रयोग (वि १ १—पञ्च १४—
छाया १ ११) । पञ्च पुं [पञ्च] कैल
का शीघ्र प्रयोग (वि १ १) ।

पञ्चि वि [पञ्चि] वृत्त कोनेवाला किन्ना
(पञ्च) ।

पञ्ची श्री [वि] वृत्त वापों को पञ्च-पुं
(वि ७ ११) ।

पञ्च पुं [पञ्च] १ पञ्च की वृत्त (पाञ्च ज्ञात;
पञ्च = गुण १ १; प्राप् ३ १११) छ
४ १ टी—पञ्च १०) । २ पुं, पुं-पञ्चों
का धातु—प्रकट, पञ्च-विशेष (पञ्च २४,
छवि धातु कम ७) । पाञ्च, पाञ्च
पुं [पाञ्च] पञ्चा वृत्त-काल का एक वृत्त-
काल की वृत्त (टी २) इन्मीर १२) ।

पञ्च पुं [पञ्च] १ वृत्त, वृत्त 'वृत्त-वायु-विशेष'
विशेष 'कर्म' (गुण) । २ वृत्त-विशेष-
वायु (छाया १ ११) । ३ वृत्त-विशेष
(गुण) । पाञ्च वि [पाञ्च] वृत्त-
वायु का धातु-विशेष (छाया १ ११; वृत्त-
विशेष ११) । पञ्चा श्री [पञ्चा] वृत्त-विशेष-
काल (धीन न २) ।

पञ्च पुं [पञ्च] वृत्त की वृत्त
वृत्त-विशेष-वायु-विशेष (पञ्च १—
पञ्च १२ १४ पञ्च १२१) ।

पञ्च पुं [पञ्च] ऊपर देखो 'पञ्च' (गुण
१ ७) कोनेवाला (वी १) ।

यद् देवो यय = बहू । बहसि बहू (बहा-
मना कम्प) । मुका बहासी (मग) । हेह
बहिष्य (कम्प) ।

यद् देवो बय = वय (प्राठ १२ माट—जिह
५६) ।

यद्दिवा देवो बहसा (हक) ।

यद्दिवा देवो वि [दे] बहसि सीया हुमा
(रे ७ १) ।

यद्दमा देवो यद्दमा (भावा) ।

यद्दम न [दे] यार्हिकी । यद्दम बावत मेक-
मन दुपि (रे ७ ११ हे ४ ४ १ हुमा
११२, यद्दम यद्दमा डा रे १—पत्र ४११) ।

२ पुं छज्जो तरक का वृषा मरुत्तक—
तरक-स्वान (बेनेह १२) ।

यद्दिवा देवो [दे] यार्हिकी बहसी छया
बहसि दुपि (मम २ ११—पत्र ४१७
धीन) ।

यद् देवो यद्दम = बर्षय । बर्ष बहसि (मुपा
२) ।

यद्द पुन [यार्ह] बर्षेय्यु, बर्षा यद्दो
(१ कम्पो बहो) (गामा रे १ ८० पत्र
८१ छमत्त ७४) ।

यद् देवो यिद् = बह (प्राठ ७) ।

यद्दम न [यार्ह] १ बहसि बहसी (गामा
१ ८ कम्प) । २ वि बहसिगामा (उप
१७१ यद्द) ।

यद्दिवा देवो [यार्ह] १ बहसि बहसी (गामा
१ ८ कम्प) । २ वि बहसिगामा (उप
१७१ यद्द) ।

यद्दिवा देवो [यार्ह] १ बहसि बहसी (गामा
१ ८ कम्प) । २ वि बहसिगामा (उप
१७१ यद्द) ।

यद्दिवा देवो [यार्ह] १ बहसि बहसी (गामा
१ ८ कम्प) । २ वि बहसिगामा (उप
१७१ यद्द) ।

यद्दिवा देवो [यार्ह] १ बहसि बहसी (गामा
१ ८ कम्प) । २ वि बहसिगामा (उप
१७१ यद्द) ।

यद्दिवा देवो [यार्ह] १ बहसि बहसी (गामा
१ ८ कम्प) । २ वि बहसिगामा (उप
१७१ यद्द) ।

यद्दिवा देवो [यार्ह] १ बहसि बहसी (गामा
१ ८ कम्प) । २ वि बहसिगामा (उप
१७१ यद्द) ।

यद्दिवा देवो [यार्ह] १ बहसि बहसी (गामा
१ ८ कम्प) । २ वि बहसिगामा (उप
१७१ यद्द) ।

यद्दम (गामा १ १—पत्र २४ पत्रम
१ २ १२) । ४ पुं पुष्य पर भाव्य पुष्य
पुष्य के कम्प पर बहसा हुमा पुष्य । ५
स्वस्तिरक-पत्रक । ६ प्राधाय विरोध एक
वहसा का महस (गामा १ १—पत्र २४
टी—पत्र ३७) । ७ प. एक मां बह नाम
प्रतिक्रम धाम प्रद्विषामस्त बहमे बहमाख्य
वि नाम हस्ता (धामम) । ८ वि हता
निमान धमिमांशी बहसि (मोम) ।

यद्दम वि [व] प्रभात मुष्य (रे ७ ११) ।

यद्दम स [यार्ह] बहसा पुष्यपरी में
"बहायु" । बह. यद्दम (संदि १२
संयोग ४१ ८) ।

यद्दमि वि [यार्ह] यद्दमा हुमा (जिप) ।

यद्दम स [यार्ह] यद्दमा हुमा (जिप) ।

यद्दम स [यार्ह] यद्दमा हुमा (जिप) ।

यद्दम स [यार्ह] यद्दमा हुमा (जिप) ।

यद्दम स [यार्ह] यद्दमा हुमा (जिप) ।

यद्दम स [यार्ह] यद्दमा हुमा (जिप) ।

यद्दम स [यार्ह] यद्दमा हुमा (जिप) ।

यद्दम स [यार्ह] यद्दमा हुमा (जिप) ।

यद्दम स [यार्ह] यद्दमा हुमा (जिप) ।

यद्दम स [यार्ह] यद्दमा हुमा (जिप) ।

यद्दम स [यार्ह] यद्दमा हुमा (जिप) ।

यद्दम स [यार्ह] यद्दमा हुमा (जिप) ।

यद्दम स [यार्ह] यद्दमा हुमा (जिप) ।

यद्दम स [यार्ह] यद्दमा हुमा (जिप) ।

यद्दम स [यार्ह] यद्दमा हुमा (जिप) ।

यद्दम स [यार्ह] यद्दमा हुमा (जिप) ।

यद्दम देवो यण्य = बर्षय । बर्षहि (हुमा
यन) । हेह. यण्य (हुमा) । ५ यण्यगम
(गुर २ १७ यण्य २४) ।

यद्दम देवो यण्य = बर्ष (यय बहा मुपा १ १,
यट १६ कम्प ४ ४ ४ १) ।

यद्दम देवो यण्यय (कम्प मा २१) ।

यद्दम देवो यण्यय (उप ७१ ८ टी; विरि
७२७) ।

यद्दम देवो यण्यय (रमा) ।

यद्दम देवो यण्यय (विह १ ८ कम्प) ।

यद्दम देवो यण्यय (मम) ।

यद्दम देवो यण्यय (मम) ।

यद्दम देवो यण्यय (मम) ।

यद्दम देवो यण्यय (मम) ।

यद्दम देवो यण्यय (मम) ।

यद्दम देवो यण्यय (मम) ।

यद्दम देवो यण्यय (मम) ।

यद्दम देवो यण्यय (मम) ।

यद्दम देवो यण्यय (मम) ।

यद्दम देवो यण्यय (मम) ।

यद्दम देवो यण्यय (मम) ।

यद्दम देवो यण्यय (मम) ।

यद्दम देवो यण्यय (मम) ।

बल्यमहि [३] ऐषो बल्यमहि (३९ २१) ।
बल्यम ऐषो यद्वया 'योमहिस्विन्नसन्नुस्सो'
(पद्म २, ३ ३७ ११ इह सि ३५) ।

सिचन्य देषा यस्य = नय् ।

।सिर नि [ससिमु] वास करमेवासा रहने-
वासा (मृग ६.७ सम्भव २१७) ।

साध्य वि [वशात्] वर में किया हुआ,
 प्रतीत किया हुआ (मृग ५: महा)।

वशीकरण न [वशीकरण] बरा में करने के
लिए किया जाता मन्त्र प्रादि का प्रयोग
(छाया १ १४ प्रामु १४ मङ्ग)।

पसायरीजी औ [परीकरणा] बरीकरख
निष्ठा (मर १३ ब३) ।

यसीहूज नि [यसीभूज] या मधीन दृषा हे
बाह (जव १८६ टी)।

यसु न [यसु] १ पत्न, इष्य (पाशा मूष १
११ १८ बुमा) । २ संयम कायि (पाशा
मूष १ ११ १८) । ३ वृ जिहव ।

श्रीराम राम-छन्द । १. सर्वतः सर्वथा
 साधु (आधा १ १ २ १) । १. आठ वं
 संख्या (विज १४४ विज) । ७. धर्मिणा मया
 का प्रणिता है (य २ १ मुज १

१२)। ५ एक छाया का नाम (पञ्चम ११
२१ मत्त १ १)। ६ एक पशुसंघ-पूर्वों के
महर्षि (शिरो २११४)। १ एक छत्र का
नाम (शिरो)। ११ शिरो शिखर की म

पट्टाश्री (रु०) । १२ न. सावान्त्रिक देव
वा एरु विमान (रु०) । १३ गुजुर्गु सा
(रु० १५ घन १५ उज १२ ११)

गुप्ता जी [गुप्ता] स्थिति की ए
पर्याप्त (डा ८—पत्र ४२१ इफ ए
२—पत्र २३३)। "द्वय पुं [द्वय] मर
पानु" की शीर्षस्थ धोर समेद का रिता (

६ मय १२२ घण्टा)। नन्द
[नन्द] एक वृद्ध हो जलम तनवार (१
२ २२ मय)। गुप्त [गुप्त] व
घटा. प्रसाद. राजास्य का मित्र (१

१२१)। वरपु [५७] वरपु-व
जय एक यम (जय २, ४)। भाग
[भाग] एक धर्म-महक नाम (वरा
भाग दो [भाग] वरपु दो

१८५५ (१८)। मृदु १ [मृदि]
 २०० मृदि वा मृदि (मृदि २)
 २००० मृदि वा मृदि [मृदि]

द्वयवान्, यन्त्री श्रीमन्त (मूय १ १३ वं
१ १५, ११ याचा)। २ संयमी चापु
(मूय १ १३ वं याचा)। मत्ता लौ

[पि] [अ] [इ] [उ] [ए] [ओ] [अं] [अः] [अङ्ग]

(आ - पत्र ४२६, एता २ इ)। सह
वु ["अङ्ग"] अङ्ग विद्येय (विम)। हाय
ये ["भाय"] । भायसे से देव-कृत मुनस-

बुद्धि (अप ११; कण्य ८५ उप १२ १६
विपा १ १) । २ एक श्रेष्ठिनी (अप ७२५
टी) ।
प्राप्तः = एक [पठ + प्रा] एक होना

यमुना । यमूना [यम् + न्वा] कुम्भारम्
यमुशात्र । मुषणा । यमुप्राह, यमुपामर
(हि ४ ११) । यमुप्राह (उप) । यमु
यमुभव (कुमा)। प्रयाः, यमाह, यमुआइव

यसुभाष वि [पुद्गात] मुक्क (पाप) स १
२ । यद्वत् शास्त्र ७७) ।

यमुनाइम नि [इशापव] मुक्त किय नय
मुखाया मया (सि १। २२) ।
यमुनाञ्जमाज देवा यमुना ।
यमधर वं [यमधर] एक धन इति (पठम)

पमुंघण च [पमुंघण] १ कुपिनी बली
(शाम बर्मि ४१ प्रासु १८२) । २ स्थि

४२६ पाण्य २, इक)। ३ बयरेण्ड क सोम धारि बायें लोकागर्भों की एक पटलपत्ती का नाम (अ ४ १-पत्र २ ४-इक)। ४

एक दिङ्मात्रि देवो (छ ८—पम ४३९
इह) । ३ नार्ये चरुर्त्ता रात्रा श्री पदरात्रो
(अम १३२) । ९ रात्रण श्री एक पत्नी
(अम ७८ १) । ७ एक धर्मि-पत्नी (अम

बमुखा (टी) देणा वमुहा (लख १८) ।

पुनः पुनः यो वासुपुत्र 'वसु' इत्यस्यैव
नामो बोधो भूमात्मन्त्या (विष्णु ११२
३वा १२ १३। १०) 'वसु' इति नाम्ना यद्
एवो नामो (१२ १२) ।

समुद्रः } प [समुद्रा] १ इन्द्रिय माली
 समुद्रः } (२४ ७१६ यी पाठः मुता २१ :
 ४७१) २ मन्त्रमन्त्र उपाध्वा वा दृष्ट

मध-महिषी एक द्वासी (ख ४ १—पत्र
२ ४ छात्रा २—पत्र २२२) एक। 'प्राह
नाह पुं [नाम] यना (अ ३६ ८ छी
नाम ३३ ३३)। 'प्राह ३ [प्राह]

मुनि-गृह, भोषण (पृष्ठ ४ १)। यह पुं
[पवि] राजा (पृष्ठ ६१ २)।
यस्य पुं [इ पुपल] १ निपुण-वाचक

मामन्त्रणं शब्द 'होमि ति वा योसि ति वा
यमुसि ति वा' (भाषा २ / २३) 'तद्वत्
होमे योसि ति सारणे वा यमुसि ति य'

धामग्रण शब्द 'ह्रीं वसुधै गोविता स्वर्ग्य
नमः शिवाय' (छाया ११—पत्र १११)।
श्री. छी (शब् ७ ११ भाषा ३ ४,

२३)।
यमुना जी [यमुना] वृषिणी पत्नी (वाच-
कृता)। हिम वृ [हिम] रत्ना (मुष्ण

वसु श्वे [वसु] ईशान्य की एक पट्टनी
(ठा ८—पत्र ४२१; इक छाया २—पत्र
२११) ।

यसंघे ज्ये [५] यथासा पात्र (गुण
५५१) ।
यस्स (श्री) देवो यस्सि । यस्सि (मृष्ट—
यस्स ३५५) ।

यस्तसि जि [पश्य] क्षीयते धामस्य (विम
८७२) ।
यस्तोक्तं न [वि] एक प्रकार की बीजा

‘अथवा य वस्तुहेतु रसति यय (१५) न
यष्टिपत्र पोष्टेण ब्रामिठ’ (भाव ११ टा)।
यष्टि वरु [यष्ट] १ यष्टिपत्र । २ यष्टि
यष्टिपत्र । ३ यष्टिपत्र । ४ यष्टिपत्र । ५ यष्टिपत्र ।

५५५। इति त्रयोविंशतिः । इति श्री
बलरामपरिव्रजस्य नाट्यस्य अष्टमोऽध्यायः ॥
५५६। अथवा अथवा अथवा ॥ अथवा ॥
५५७। अथवा अथवा अथवा ॥ अथवा ॥

पञ्च पुन्यद्वयमा पठति । त्रिषु
दे १ २ ३) पञ्च पदा पदमान (मह
पुर १ ११ पीत) । काह पुन्यमान (त्रि
२१ १२ १३) । हेतु ५३ परिभाष

पातुं (पातना १२२) वा १३)। क
पातुं (पातना १२२) वा १३)। क

पाउउ वि [दि पाउउ] बाउउ प्रताप-वीर्य
बकसाध (दे ७ २१) पाउउ बर)

पाउउअ दुन [ब] पुनका, पुनकाओ में
'बारु' 'प्रतिदिग्विधितवास्तवो बर ए
पत्तुई कइ' (स २१७) 'पाउउविधित
वास्तवो बर पत्तुई कइ' (बका १४) ।
पाउउआ } धी [—] देखो पाउउआ
पाउउआ } पाउउआ 'पाउउविधितवास्तवो
बर ए उ कहुई कइ' (वा २१७ घ, दे १
२२) ।

पाउउअ देखो पाउउअ = पाउउआ 'पाउउविधित
वास्तवो बर पत्तुई कइ' (बका १४) ।
शाङ्क १ ।

पाउउअ देखो पाउउअ = पाउउआ (शाङ्क १) ।
पाउउअ वि [पाउउअ] १ पाउउआ बका
हुआ । २ नास्तिक बरि (१४) ।

पाउउ बर [पाउउ] बकाया । बाउउ (बहा) ।
बह बाउउ (बहा) । कनक पाउउअ (गुन
१६) । ईह पाउउ (बहा) ।

पाउउ मर [पाउउ] १ पड़ना । २ पड़ना ।
बाउउ बाउउ (स कपा) । कनक पाउ
उअ (गुना ११ गुन १६) ।

पाउउअ वि [पाउउअ] वरन-प्रतिष्ठ हुआ व
दिवाया वा देना हुआ (स १७५) ।

पाउउअ धी [पाउउअ] बकाओ देखो
बाउउओ दुपयगपयका' (परि सम्यक्त
२१२) ।

पाउउअ धी [पाउउअ, न] वरन-
पाउउअ' कहुई वि वरनी बाउउअ
वरनका ? का) विमर्शित' (बका २
बहा १७५) । १—वय ११) ।

पाउउ धी [पाउउ] बर (धी वि २३
५५) । रिता १—वय ११) ।

पाउउ धी [पाउउ] वरनका का न क मा उ,
मा कनकअ 'पाउउ' बर व हो प्रतिष्ठ
दे (गुन १) ।

पाउउअ वि [पाउउअ] बर वरि हुआ
(१४ ६) ।

पाउउअ [पाउउ + क] बरिमात्र कनक
बरि बकाए, बाउउआ (क वि २६) ।
१५ — पाउउअ बरिमात्र (गुन १६
२११) । १५ — बरि पाउउअ (वय

७२) । ईह पाउउअ वि [पाउउअ] वरिमात्र (गुन
२११) ।

पाउउअ वि [पाउउअ] १ कनक, प्रतिष्ठान्त,
बरिमात्र (विम २२ गुन २) पत्तु १ १
६) । २ विरिबन, उत्तर (वीर उवा कपा) ।
३ कनकअ (परि १६) को २) ।

पाउउअ वि [पाउउअ] प्राउउअ
करनका (वय २) ।

पाउउअ धी [पाउउअ] आवा का एक
मेर, परत के उत्तर की भाग उत्तर क
बन (स ४ १—वय १ १) ।

पाउउअ वि [पाउउअ] वरि बरि (उवा
अ १; बर १२२ धी वय ७१ धी) । देखो
बाउउअ = पाउउअ ।

पाउउअ न [बकअ] गुन की कनक (लाय
११—वय २११) ।

पाउउअ वि [पाउउअ] गुन की लया—लाय
दे बका हुआ, 'पाउउअविधितवास्तवो' (वय ११
२—वय २११) ।

पाउउअ धी [ब] बरिमात्र-विधित (बकअ १—
वय २११) ।

पाउउअ वि [पाउउअ] बह पाउउ, बाउउ
(वर १) ।

पाउउअ धी [पाउउअ] गुन-बकाय, बका कनक
'२ १ एह पाउउअ' (बका ७५) ।

पाउउअ वि [पाउउअ] 'रि' देखो
बाउउअ वि [पाउउअ] गुनकी में 'बाउउअ'
'पाउउअविधितवास्तवो बरिमात्र बाउउअ (१०)
१' (बका १ २—वय २१ गुन २, २,
१५ रिता १ १—वय १) ।

पाउउअ वि [पाउउअ] व्याप्य न जय
(दे ७—वय २११) ।

पाउउअ वि [पाउउअ] व्याप्य न जे
पाउउ (गुन १—वय २११) । २ न
बरिमात्र-विधित—विधित वरिमात्र बरिमात्र
बरी मोर (वीर) ।

पाउउअ धी [पाउउअ] १ स्थाना (गुन
१) । २ स्थाना (२१५६) । ३ बरिमात्र
१५६६ (बका, कपा १) । ४ बरिमात्र
बरिमात्र बरिमात्र (वीर) ।

पाउउअ वि [पाउउअ] वरिमात्र
(वय १) । १ १५५५) ।

पाउउअ वि [पाउउअ] वरिमात्र (वीर
बकाया (लाय १ १—वय ११) ।

पाउउअ धी [ब] एक वरिमात्र-विधित (वी २१) ।
बका देखो बाउउ = बाउउअ । कनक बाउउअ
(भा—बाउउअ १६) । ईह पाउउअ
(हमिरी १७) ।

पाउउअ देखो बाउउअ = बाउउअ (वय ४६) ।

पाउउअ देखो बाउउअ = बाउउअ (व १११) ।

बाउउ देखो बाउउअ = व्याप्य (गुन २ १) ।

बाउउ धी [पाउउअ] बर, बाउउ (विता १
७) ।

बाउउअ वि [पाउउअ] १ बाउउ अरिमात्र
वीर-विधित । २ उत्तर प्रतिष्ठान्त ररि
पाउउअ का एक वय (विता १ ७—वय
७२) ।

बाउउ धी [पाउउअ] १ बाउउ अरिमात्र
वीर-विधित की वरिमात्र (वय २२ १५ वय
१६२) । २ बाउउ बाउउअ अरिमात्र वरिमात्र
स्थाना विमर्शितवास्तवो वरिमात्र बरिमात्र
(वय ५ २२५ दे ७ २१ वि बका)
'वरी धी बाउउअ वरिमात्र वरिमात्र
(विता २ १) । ३ वरिमात्र वरी वरीमात्र
वरिमात्र व्याप्य, वरिमात्र (वय १ १५)
'वरी वरिमात्र वरिमात्र वरिमात्र' (वय
७६) ।

बाउउअ धी [ब] वरिमात्र, वरिमात्र वा व्याप्य
(दे ७ २) ।

बाउउ देखो बाउउ (विम ११२ रिता १
४—वय २२, ज १ २६६) ।

बाउउ देखो पाउउअ 'वरिमात्र वरिमात्र
वरिमात्र वरिमात्र' (गुन १११) ।

बाउउ धी [पाउउअ] बकायन वरिमात्र
वरिमात्र (वय) ।

पाउउअ धी [पाउउअ] १ एक वरिमात्र
वरिमात्र । २ वि वय वरिमात्र वा वरिमात्र
वरिमात्र वरिमात्र वरिमात्र वरिमात्र
(गुन ६, १) वय) ।

बाउउ देखो पाउउअ = वरिमात्र (व १ लाय १
१—वय ११५) ।

पाउउअ धी [पाउउअ] वरीमात्र, वरिमात्र
'वरिमात्र' (वय १५६ दे ७ १२५
१५६) ।

बाहिम पुं [बि] मनु-विरोध परबद्ध पंजा
(२७ २७)।

बाहिम पुं [बि] इमि कीट (२७ २९)।

बाही की [बि] वृत्ति बाहू 'बहारारे कारिय
कटपट्टि बाहो' (कुं २२, २७ २९; २७
२९)।

बाहो की [वाटा] खोखा, ज्वालन (बर्ग
४१)।

बाहि { पुं [बि] बहिष्क-सहाय बैरम-मि
बाहिज { (२७ २९)।

बाय ब्रह्म [वि + नम्] विरोध मन्ना—
मठ होय। बायह (?) (भावा १२२)।

बाय बि [यान] बम में जलन बन-संस्मरी
(मौन सम १९)। परय प्यत्न पुं

[प्रत्यय] बम में खलनाता वायस तुदीय
वायम में स्थित पुत्रय (मौन ३७७)।

मौन संतर बंतर पुंकी [व्यपस्तर] बेरो
की एक बाहि (अप्य ४२ २) मुर १

१३७ दीपा की २४ महा वि २३१)।

की री (परण १७—पत्र ४२१ विम
२)। बाहिज की [बाहिज] धन

विरोध (पत्रि ३३)।

बाय बेहो पाय = पाय। बाय न [पात्र]
पेने का प्यासा (वि १=)।

बायय पुं [बि] बन्धनकार, कर्मन्त्र बन्धननासा
रिक्तो (२७ २४)।

बायय पुं [बायय] १ कर्मन्त्र, कर्म यकट
(पत्रि ११ पाय)। २ विचार मनुष्यों

का एक बंध। ३ बानर-बंद में जलन
मनुष्य (पत्रम ११)। वरी की [पुरी]

किन्तिन्ना नामक एक प्राचीन बरगो
(वि १४ ५)। 'कट पुं [कट] बानर

बंद का कोई भी उपाय (पत्रम ५, २३१)।

दीन पुं [दीय] एक दीप (पत्रम १
१४)। जय पुं [जय] हनुमान (पत्रम

२३ ४१)। यज्ञ पुं [यज्ञ] तुदीय
पत्रमन्त्र का एक वेदपाठि (वि २, ४१) १,

४२)। बेहो मानर।

बायविह पुं [बायवेह] बानर-बंदीय पुत्रो
का राजा बन्धी (पत्रम ८, ४)।

बायवाज पुं [बि] दत्त पुत्र (वि ७ ६)।

बायवा बेहो पायवा वाइया = वायवा
(वि १४२)।

बाया बेहो वायया = वायवा। वरिअ पुं
[बाय] वयमपन करनेवाला वायु, रिशक

'एहो जिय ला कीज बरायमपियो एहो
पुछ कछ' (उप १४२ टी)।

वायार सी की [वायजसी] गारुजय की
एक प्राचीन नरगो को बाय कल 'बनारस'

बाम से प्रसिद्ध है (वि २ ११९ खामा १
४ उगा दूक जय; बर्गवि ३, वि १८३)।

बायि बेहो वयि = वयिन् (वयि)। उल
'पुच पुं [पुच] बैरम-कुमार, बलिया का

बक्का (कुं ३२, पत्र २२३; ४ ४ विरि
१८४ बर्गवि १४)।

बायि की [बायि] बेहो बायि (संवि ७)।

वायिअ पुं [वायिअ] १ बलिया व्यापारी
बैरय (मा १२) मुर १ २४८, १३, २३

नाट—मुन्ना २३; बयु; विरि ४)। २
एक बाय का वाम (उगा बंध वि २)।

वायिअ (प्रय) बेहो वायिअ (संवि)।

वायिअ बेहो वायिअ = पानीय (मा २८२
विरि ४ मुना २२३)।

बायिअय पुं [वायिअय] बलिया, बैरय
व्यापारी (पत्रम ८९१ या २३१ जम

मुना २२३ २७३ प्रायु १८१)।

बायिअ न [वायिअय] १ व्यापार, बेनार
(मुना ३४३) पत्रि। २ एक बैत मुनि-कुल

का नाम (कम)।

बायिअ की [बायिअ] व्यापार 'बायिअत'
करर बायिअय धर्मिण' (खामा १११)।

बायिअय वि [बायिअय] बायिअय-कर्ता
व्यापारी (यकि)।

बाणी की [बाणी] १ बचन बाक्य (पत्रम)।
२ बामदेवा, सत्यदी बेनी (कुपा संवि

४)। ३ कल्प-विरोध (विप)।

बाणीय बेहो बाणीय (कप २२३)।

बाणीर पुं [बि] बन्धु ब्रह्म बाणु का पैर (वि
७ २१)।

बाणीर पुं [बाणीर] बैरम-कुल बंध का पैर
(पत्रम या ३२३)।

बाणु जुअ पुं [बि] बहिष्क बैरय 'एहो
हवा बरसो वीरय बराणु जुओ कोरि' (उप

७२८ टी)।

बाय बेहो वाय = बाय (अ २ ४—पत्र
८९)।

वायि { बेहो वाइअ = वायि (पत्रम १
वायि { ३—पत्र २८ दीप ७२२)।

वाइ बेहो वाय = बाय (पत्रम)।

वावि बेहो बाइ = वावि (जम)।

वायर बेहो वायर (विप १ २—पत्र ३६;
विसे ८९३; मुना ११८) 'मुन्नामनवानरावि

न राइ विमसंवि विचयाए' (बर्गवि १११)।

वायफ बेहो वायफ। वायफज (पत्र)।

वायिह (रो) बेहो वायह = व्यापार (नाट—
वेणी १७)।

वावाहा की [व्यावाहा] विरोध पीडा
(खामा १ ४ बैरम ३३३)।

बामसक [बमस] बमन कपडा के कपडा।
बामेह, बामेज (मा विह ६४६)। बंध

बामेसा (अप वम)।

बाम वि [बि] १ मूठ (वि ७ ४७)। २
प्राक्कल (पत्र)।

बाम वि [बाम] १ सव्य, बाय (अ ४ २—
पत्र २१९ कुमा मुर ४ १ पत्र)। २

प्रतिभूत धनुकुल (पत्रम ४११) २—
पत्र २८ पत्रम २३४ कुमा)। ३

मुन्ना, मनोहर, 'बामसोपसा (पत्रम)। ४
न सव्य पत्र 'बामसो' (पत्रम २३, ३१)।

५ बाय शरीर (मा ३ ३)। ओम्बजा की
[ओम्बजा] मुन्ना तैरबाजी की पकड़ी

(पत्रम)। ओम्बजावि, ओम्बजावि पु
[ओम्बजावि] बारीक-विरोध बन्धु को

पसल बामेसाके मत का प्रतिपक्ष शरीरिक
(पत्रम १ २—पत्र २८)। बह वि [पह]

प्रतिभूत बाधपत्र करनेवाला (इह १)।
पत्र वि [पत्र] बही पत्र (अ ४

२—पत्र २४३)।

बाम पुं [व्याम] परिणाम-विरोध, नीचे
कियाए हुए दोनों हाथों के बीच का अन्तःपत्र

(पत्र २२२; दीप)।

बामय पुं [बामन] १ संसर्ग-विरोध
शरीर का एक छेद का धारा, विमन

‘बहुवचनार्थक धर्म मन्’ (भा १२३) । ४
बनाया ‘बहुवचनार्थकधर्म’ (विरि
१२७) । ५ स्वीय स्वरता (भा २३) ।
‘त्य धुं [‘र्य] उत्पन्न-वर्ध’ ‘देहि धर्म कुसुह
नामार्थ’ (पञ्च ४१ २७) । त्वि नि
[‘रिभ्य] शास्त्रार्थ की बाह्यभाषा (पञ्च
१, २६) ।

‘बाय धुं [पाक] १ खोई । २ बलक । ३
हैय, बलभ (भा २३) । रेको पता ।

‘बाय धुं [‘पाठ] १ पलन (घ १२७ कुमा) ।
२ यमन । ३ जलन कुल (घे १ २२) ।
४ फली । ५ न पवि-समुह (भा २३) ।

‘बाय नि [पाठ] १ रत्ता कलेबाबा । २
पीनेवाला । ३ सुखनेवाला (भा २३) ।

वाय रेको वाय (भा २३) ।

‘वाय धुं [‘पाठ] १ पर्वत । २ पर्वत । ३
पुजा । ४ पुल । ५ फिरोल । ६ पैर । ७
बीना मान (भा २३) । रेको पाय = पाव ।

‘वाय रेको पाव = पाप (भा २३) ।

वाय धुं [पाय] १ रत्ता रत्ता । २ नि
पीनेवाला (भा २३) ।

‘वाय रेको यवाय = यवाय ‘बहुवचनार्थक नि
रे विगुणमन्त्राण्ड वर यवाय’ (जग) ।

वायलठ धुं [‘रे] १ पिठ, मीठपा । २ बार,
जलति (रे ७ वद) ।

बायगम न [‘रे] बैर, कुला जेटा (भा
२) । संघोष ४४ पन ४) ।

बायविप नि [वागविक] बचन-मात्र में
निर्मित (पञ्च) ।

बायग धुं [वायक] १ व्यवसायिक, व्यवसा-
यिक से धर्म का प्रकरण ठाक (सम्मत
१४१) । २ सम्मत्त सुन-पाठक मुनि (पञ्च
२) । संघोष २२, वार्थ १४७) । ३ पूर्व-पञ्ची
का बायग धुनि (पञ्च १—पञ्च ४
सम्मत १४१) । वार्थ १, ४४१) । ४ एक
प्राचीन कल मयि धीर कथकार, वरवार्थ
सुन का कर्ता की सम्मत्तविधि (वार्थ १
४४१) । ५ नि कथक मन्त्राला । ६ पङ्कने-
वाला (पञ्च २) ।

बायग नि [पाठक] बजनेवाला (कुमा १,
महा) ।

बायग धुं [बायक] जलुबाय बुबाहा (दि
१ २६) ।

बायगबस धुं [वायकवर्ध] एक दिन मुनि-वर्ध
(एनि १) ।

बायक धुं [‘रे] एक वेदि-वर्ध (कुम १४३) ।

बायक नि [व्याकृत] स्पष्ट, प्रकट धर्मवाला
(वचन ७) । रेको वागविक ।

बायकधध धुं [‘रे] बाय-विरोध रदुर नामक
वाता (रे ७ १२) ।

बायकता धुं [‘रे] सर्व की एक वादि (पयस
१—पञ्च २१) ।

बायण न [वाचन] रेको वायणा (नाट—
रत्ता १) ।

बायण न [वाचन] १ बजना (सुपा ११
२११ कुम ४१: म्हा कम्प) । २ नि
बजनेवाला (रे ७ ११ टी) ।

बायण धुं [‘रे] योग्योपायन बाय पथार्थ
का बोझ बाता सहाय, बायन (रे ७ २७
पाय) ।

बायणया धी [वाचना] १ पलन गुरु-
वायणा } धर्मोपे धर्म्यन (जग २१ १) ।
२ धर्म्यायन, पदाता (धम १ १, जग) ।
३ धर्म्यायन (पञ्च १४) । ४ धर्म-पाठ (कम्प) ।

बायणिक नि [वाचनिक] बचन-पञ्चमी
(नाट—विह ३२) ।

बायय रेको बायग = बायक (दि २ २२) ।

बायय रेको बागवण (दि १ २१६: कुमा
यनि पञ्च) ।

बायय नि [वायय] बाय रोक्ताय, बाय-
रोक्ते (विपा १ १—पञ्च २) ।

बायय रेको पायय (दि ७ १७) ।

बायय नि [वायय] बायय कोस का
(धनु २१२) ।

बायय धुं [वायय] १ बाययता-संघर्षी:
‘मासुधवायय फुडिपार्थ कमेक सवाय’
(सुर ८ ४२, महा) । २ न. की सुर से
फुडे हुई धुनि—यन् ‘बाययययययययय’
(कुमा) ।

बायय धी [बायय] पविन धीर जतर
के बीच की विठा, बायय कोष (झ १ —
पञ्च ४७७ सुपा १८: २१) ।

बायस धुं [वायस] १ कज कोमा (बना
मानु १११ हे ४ १२२) । २ कायोरार्थ

का एक कोप कायोरार्थ में कीए की तरह
हटि की इतर-जतर बुलाता (पञ्च २) ।

परिमंडल न [परिमण्डल] विद्या-विरोध

कीए के स्वर धीर त्वात वादि से सुपायन
पञ्च बलनेवाली विद्या (सुपा २, २ २७) ।

बाया धी [वाय] १ बायन बाणी (वायन
प्रासु १ पवि घ ४१२ से १ १०: घ
३२ ४ १) । २ बाणी की पविष्ठाधिक
रेकी छपवली (भा २३) । ३ व्याकरण-
शास्त्र (महा २) । रेको यङ् = बाय ।

बायाड धुं [‘रे वायाड] युक्त रोता (रे ७
२६) ।

बायाड नि [वायाड] वायल बजवायो (सुपा
११ वेद्य ११७ संधि २) ।

बायाम धुं [वायाम] कथरय शारीरिक
धम (झ १—पञ्च ११, छाया १ १—पञ्च
११: कम्प धीर त्वात ११) ।

बायाम सङ् [वायामय] कथरय कथय,
शारीरिक धम कथता । बङ्क ‘मुद्रुं नि
वायामेयो कार्य न करे विधि पुण’ (जग) ।

वायायन धुं [वायायन] १ वयाड भरोबा
(पञ्च ११, ११ घ २४१ पाठ महा) । २
धुं धम का एक धैरिक (पञ्च १७ १) ।

बायार धुं [‘रे] शिष्टि-वात पुनवली में
‘वायरो’ (रे ७ २१) ।

वायाड नि [वायाड] वयाड, बजवायी (भा
१२ पाय सुपा १११) ।

बायाड रेको पायाड (दि २, १७) ।

वायायिक नि [वायित] बजवाया धुवा
(घ २२७ कुम १११) ।

बायु रेका बाय = बायु (पुन १ १२ कुमा
धम ११) ।

बाय सङ् [वायय] रोक्ता, निपन करय ।
बाय (जग महा) । बङ्क बायय (सुपा
१११) । कथरय वायययय (कम्प १११,
महा) । रेङ्क बाययय (सुपा १ २, ७) ।

बाय वाययय, बायययय (सुपा २२२
२७२) ।

बाय धुं [‘रे वाय] कथक वाय-वाय (रे ७
२४) ।

बार पुं [बार] १ बभ्रु, भ्रु (गुण ११४ गुण १४ २४ सार ४२) गुमा सम्यक् (१७४) । २ धनस्य वेदा बभ्रु (अ १२७ गुण १२ सार) । ३ पुनं पयि पशु वे पयिष्ठस्य रिणु वेदे पयिष्ठस्य, घोमधार पयि (आ २११) । ४ यौना मरु का एक मरु-पत्तल (अ १—पय १४२) । ५ भारी पारिपटी (अ १४७ टी) । ६ मुष्ण, पशु (अ २, १ ४२) । ७ कुच-पिरेण । म. न. कल पिरेण (अ १७—पय २११) । ८ पुष्प की [मुनति] बारपत्ता वेदया (गुमा) । ९ जाम्बवा की [वीयता] बही पयं (आ १४) । १० रुमा की [उरुमी] बही (अ १४) । ११ बभ्रु की [बभ्रु] बही पयं (गुण ४४३) । १२ विज्या की [वनिता] बही पुनोक्त पयं (गुमा गुण ७४३) । १३ [विज्यासिनी] की [विज्या-सिनी] बही (गुमा गुण २) । १४ मुषटी की [मुष्मटी] बही पयं (गुण ७४३) ।

बार न [बार] बराना (आ २४) गुमा या न) । १ बह की [बही] बारका बरटी (गुण २३) । २ बार पुं [पार] बराना, बरीधार (गुमा) ।

पारत देवो बार—पारु ।

बारवार न [बारवार] फिर फिर (सि १, ११) अ २२४) ।

बारग पुं [पारक] १ भारी कम (अ १४७ टी) । २ छोटा कम लघु कमरा (वि २७) । ३ वि निराक भिन्नक (गुण २१ पर्मि ११३) ।

बारहिय न [बि] रक्त बन्ध, बल कपडा (अ २ ४२) ।

बारहु वि [बि] परिप्रेषित (अ २) ।

बारण न [बारण] १ निवेद्य रोक घटकाय निवारण (गुमा धोप ४४) । २ धन धन्य 'बारणवधार्थि' अर्पति पुनं धन-दुस्त (वि २१) । ३ वि धेनेनाभा निवारक (गुण ११२) । ४ पुं, हाथी (गाम गुमा गुण ११२) । ५ धन ना एक वेद (वि १) ।

पारण देवो पारण्य (सि १ २१) गुण ७४३) ।

पारणा की [वारण] निवारण घटकाय (अ २) ।

वारण पुं [वारण] १ एक घटकाय मुनि (सि १७) । २ एक अवि (अ १) । ३ एक अमरुत । ४ म. एक वर (अ २ टी) ।

वारण्य पु [वारण्य] अमरुत बोधी (पय) ।

वारय देवो वारा (रंभा छाया ११—पय १२४) अ २ ३२२) अ २४) ।

वारसिष की [बि] मन्त्रिक पुन-पिरेण (सि ७ १) ।

वारसिय देवो वारसिय 'वारसियमहायय' (गुमा ७१) ।

वार की [वार] १ देवी विनायक, 'अमो विनायक कन्या व कया पतिता वारा' (गुमा ४४३) । २ वेदा, बभ्रु 'या पुष्पकि निष्कमवद वारापु पुष्पि विनि ना वार' (अ २ टी) 'अर्धं मयै नापक्षिगम्य' (विपुलायन) ।

वारपयसी देवो वारापयसी (अ २ १४४) ।

वारपिय वि [वारित] विषका निवारण कया नम ही बह (गुण १४) ।

वारपु पुं [वारपु] १ वारपु बन्धन ना पुनंकीय नाम (अ १ २३) । २ वि वृक्ष के बहल (अ २) ।

वारपु की [वारपु] १ विद्या-पिरेण (अ २ १४२) । २ वराहविष्टर का बन्धना हुमा एक अर्धोत्प-धन्य, बरु-संहिता (अ २ २२) ।

वारि न [वारि] १ पानी, जल (गाम गुमा, अ २) । २ की. हाथी की पीने का स्वादा 'वारि वरिणारुण्य' (पय १ १७) । ३ अहो पुं [अहो] विपु की एक जति, ऐक्यायी विपु (गुण १४) ।

अव वि [मव] पानी का बना हुमा । ४. इ (सि ४ वि ७) । ५ गुण पुं [मुष्] देव बभ्रु (अ २) । ६ गुं [ह] बन्धी देवता वृष (अ ४४२) । ७ वि पुं [ववि] अहो, वार (अ २ ११) । ८ वार पुं [वार] अहो, पय (अ ११४ टी) । ९ वार पुं [ववि] १ एक अहो वरु, जो पना मरु के पुन वे

पौर विपु निष्काल पतिपुनि के पय देवा की की (अ २ १) । २ एक अमरुत पानी वृष जो पना वेष्टिक के पुन वे (अ २ १) । ३ ऐकल वर में जल्य बीबीरें निवेद्य (अ १२३) । ४ एक रापटी नि-प्रतिमा (अ २ २४) । ५ सेवा की [विप्या] १ एक रापटी नि-प्रतिमा (अ ४ २—पय २३) । २ पानीकोक में वृष-बाधी एक विपुमापी को (अ —पय ४३७) अ २३१ टी) । ३ एक गह्वरी (अ २, १—पय १२१ अ २) । ४ अर्धोत्प-धन में वृषमापी एक विपुमापी देवी (अ २ २३२) । ५ वर पुं [वर] देव (अ २) ।

वारिष पुं [बि] वारिष पति (सि ७ ४०) ।

वारिष वि [वारिष] १ निवारण प्रतिपि (अ २ २३) । २ वेष्टिक (सि २ २३) ।

वारिमा की [वारिमा] छोटा बराना, भारी (टी २)

'व्यास वर' (वि) व्यास पतिविही

कात्यायन के

'वो पयपुष्पिनिद्रुमाधी

वा? वारिमा विवादी ।

वो अविषममय्यो बोलीए निवको इव ।

(वर्ष १४२) ।

वारिष पुन [बि] विवाह, रापी (सि ७ २२, पय ७ ४४) ।

वारिसा देवो वारिसा (वि १ १) ।

वारिसिय वि [वारिष] १ वर-धनको (अ २) । २ वर-धनको: 'विपु वरटी मारा वारिषिवा विपुवपिपि' (अ २ २३) ।

वारि की [वारिष] भारी छोटा बराना (टी २) ।

वारि की [वारि] देवो 'वर्ष' का वृक्ष पय 'अहो वारि' के वृक्ष वरी विष्ट' (अ २, १२४ टी) ।

वारि न [वारि] वर वाने (सि १ ४ वि ७) ।

पारुष न [बि] १ जेय, वरटी । २ वि विषाद-पुन, 'या वारुषा वरु' (सि ७ ४४) ।

बास्य न [बास्य] १ कल पासी 'निम्न-
बास्य' मर्ममयी प्रत्ययवाचकानुपमेध (सिंहि
१११) । २ वि. कल-संज्ञकी (पत्रम १२,
१२७ गुर ८ ४२, महा) । त्व न [वि]
कल-विधिय वा (महा) । गुर न [गुर]
मर-विधेय (इक) ।

बास्यी की [बास्यी] १ मरिय घुप बाक
(पाप से २ १७ गुर १ २३ परह २
५—पत्र १५) । २ अवा-विधेय इह
बास्यी इहप्रम (कुमा) । ३ पविम दिवा
(अ १—पत्र ४७८ गुप २३३) । ४
मन्वाय मुनिप्रम की प्रम दिव्य क
माम (पत्र १२२ पत्र २) । ५ एक विन-
मारी बेदी (इक) । ६ कायेश्वर का एक
मोच—१ निम्न होवी मरिय की तरह
कायेश्वर में 'बुद्ध-बुद्ध' ध्याना करता । २
कायेश्वर में मन्वाला की तरह मोलते रहना
(पत्र ३) ।

बास्यी की [वि] इतिही हपिनी (घ ७१३
बास्यी २४) ।

बायेख बेको पायिख (घ ७१४) ।

बायेय्य बेको धार—बाय् ।

बाय एक [बाय्] १ मोक्ष । २ बाय
लोयान । बाम, बावे (हे ४ ११ ;
धमि सिंहि ४४२) । कल, बायिजित
(गुर १ ११९) । वंछ बायिज (महा) ।

बाय नु [बाय] १ सर्व सपि (कल;
छाया १ १ टी—पत्र ४) । २ गुह
हायी (गुर १ २१३ वेय २८) । ३
हिसक प्यु खायर (छाया १ १ टी—
पत्र ६ धीर) । बेको बिआछ—प्याय ।

बाय न [पाय] १ एक मोच जो कल-मोच
की एक छाया है । २ मुंही, जय मोच में
कलम (अ ७—पत्र ३६) ।

बाय बेमी बाय—बल (भीर पाय) । य
वि [वि] बेमी स बल हुआ (पत्र १ २
१२१) । वीयमी की [बीयमी] १
बायर पत्र पयकभर वंछा—बाय
पत्र ज्मेव बायपायो बायबीयि (भीर) ।
२ दोय ब्यल—पंथा 'वेयपायपाय
बीयपीहि बायजमासी' (छाया १ १—

पत्र १२३ गुर १ २, २८) । बि पुं [वि]
बही धर्म (पाप गुप २८१) ।

बाय बेको पाय=पाय (कल- मरि कुमा
१ ११) ।

बायिजेस न [वि] कल, सोना (हे ७
१) ।

बाय न [बाय] पाय-विधेय की बायि के
बसों का बना हुआ पाय (पापा २ १
८ १) ।

बायपोयिया की [वि] बेको बायग-
बायगपोयिया पोयिमा (गुर ४—पत्र
७ अट २ २४ गुह २ २४) ।

बाय न [बाय] धीयाना (गुर १ २४६) ।

बाय न [वि] गुह, हुम वंछ (हे ७
२७) ।

बाय नु [पाय] कल-मरि-विधेय (पाय) ।

बायवास नु [वि] मरक क बायपल (हे
२६) ।

बायि नु [ब्यायि] मरारी धर्मों को
पकने बायि का ब्यसाय करनेवाला सेप
(पत्र १ २—पत्र २६) ।

बायि नु [बायि] क्यु से जलम
गुलस्य क्यु न बाय हवार गुम को वंछ
पत्र के देव-मानवादे ने (मरक) । बेको
बायिख ।

बाया मुंही [बाय] कल, कल-विधेय
'धेयपाय बायाम्बध' (पा ११२) ।

बायि नु [बायि] एक विद्यावर-रजा
कपिरम (पत्रम २ १ से १ ११) । ठगम
नु [वनय] रजा बायि का गुम वंछ
(से ११ ८१) । सुय नु [सुय] नही
धर्म (से ४ १२; ११ २२) ।

बायि वि [बायि] बल देवा (से १ ११) ।

बायि वि [बायि] १ केजाला । २ वृ
कपिरम (प्यु १२२) ।

बायि वि [बायि] मोहा हुआ (पाय
२ ११७) ।

बायिमायेस न [वि] कल मुहल (हे
७ ५) ।

बायि नु [बायि] विद्यावर वंछ का एक
पत्रा (पत्रम ३ ४५) ।

बायिखि नु [बायिखि] एक पत्रावि
(पत्रम १४ १८) । बेको बायिखि ।

बायिख न [बायिख] गुह, वंछ (छाया
१ १ जमा) ।

बायिखि बेको बायिखि (मरक १२) ।

बायि की [वि] बाय-विधेय गुह क पत्रम से
बनाया बाया तुल-बाय (हे ७, २१) ।

बायि की [पायि] रजना विधेय पाय बायि
पर की माती कलुयी बायि की क्य (क्यु) ।
बेको पायि ।

बाय नु [बाय] १ परमात्मिक देवों
की एक बायि को मरक-मोचों को तरह
बायस—बाय में बने की तरह मुहले हैं (पत्र
२६) । २ वृही-मन्वाली (ज ५ २ ५) ।

बाय नु [वि] [बाय] वृति बाय, येन रज
बायि (कल) । 'मुहवा की [मुहवा]
वीधेय बरक-मुहवी (पत्रम ११८ २) ।
प्यमा, प्यहा की [प्रमा] वीधेय मरक-
मुहि (अ ७—पत्र १८८ इक वंछ १२) ।
मा की [मा] नही धर्म (ज ३९
१३७) ।

बाय नु [वि] पत्रम-विधेय एक तरह का
बाय 'बीयिपुत्रकभर' में प्रसपिब-
कलुके (वि १३७) ।

बाय नु [बाय] कल की बाय (पत्र १
गुर २८) ।

बाय नु की [बाय] कल की का पाय
बायि (पा १ गा १ घ) ।

बाय नु बेको बाय नु (घ १ २) ।

बाय एक [वि + आप] ब्याय करता ।

बाय (हे ४ १४१) ।

बाय म [बाय] मरया या (वि २ २) ।

बाय नु [बाय] कल मोह (हे १ १२९) ।

बायिख बेको बायिख । बायिखानि (घ
७४१) ।

बायिख एक [क] मर करता । बायिख
(हे ४ १८) ।

बायिखि वि [वि] मर करनेवाला
(कुमा) ।

बाय नु एक [ब्या + वंछ] मर जाता ।

बायिखि (मर) ।

वाचक पुं [वे] कुम्भी ज्माल (र ७ १४) ।
वाचक वि [व्यापृत] र व्यापृत (र ७ २८ टी) । २ विधी कार्य में बाध हुआ (र १ २ ९ प्राय कर्मा नुर १ २८) ।

वाचक वि [व्यापृत] नौदम्य हुप्र वाचक क्रिय हुआ (अ ११४) ।

वाचक र कीन [वे] विपरीत मैकुल (र ७ २५) । की जा (वाच) ।

वाचन न [व्यापन] व्यापन करता (विदे ४८) ।

वाचन्या वि [वामनक] डिवायो, डिवाय बीता, छोटे वृक्ष का (नज्मल न १११) ।

वाचपी की [वे] डिवा विवर (र ७ २४) ।

वाचप्या देवो वाचन (सावा १ १२) ।

वाचपि की [व्यापति] विवदत, मण्ड (वाच १ २—न ११४) अ १ २: छ ११४: ४१२ वर्य ११४ १७२) ।

वाचपि की [व्यापति] व्यापार (अ १ २) ।

वाचपि की [व्यापति] लिपि (अ १ ४—न १७४) ।

वाचन वि [व्यापन] विवदत-मण्ड (अ १ २—न १११ छ २४१ कर्म १५ छ ६) ।

वाचन पुं [वे] वामन, वाम का पुत्रिया (र ७ २४) ।

वाचर धक [व्या + पू] र काम में लगा । २ धक काम में लगाया । वाचर (र ४ ४) वाचर (विधि), 'वर्ग विधि परिष्कृत परिष्कृति वाचर' (अ १ ७ १५ न १७ १७) । न ७ वाचर (द्रुमा १ १२) । अतो, हेतु वाचरविज (अ ७ १२) ।

वाचन न [व्यापन] कर्म में लगान (विधि) ।

वाचक देवो वाचक = व्यापृत (अ १ ४ ४) ।

वाचक पुं [वे] वाचक टक-विधेय (अ ७) ।

वाचदारि वि [व्यापदारिक] व्यापहार वे वाचन्य रकनेवाला (र ७ विदे ११४) जीक ११) ।

वाचन (१) धक [अ + वाच] वचकार वाच वचद प्राप्त करना । वाचन्य (वाचन १२२) ।

वाचाय धक [व्या + वाच] वाच कलाय विनाय करना । वाचन्य (अ ११) मण्ड) । कर्म वाचन्य, वाचन्य (अ १७४) अवि वाचन्यवाच (वि २४८) । व ७ वाचाज्य (अ ७ १२१) । व ७ वाचाज्य (अ १२२) ।

वाचाय वि [व्यापारित] वाच कला वच, विनायित (द्रुमा २४२) 'वाचायवि (१४) की वेव विनतो कु एवी' (अ ४१२) ।

वाचाय वि [व्यापारिक] विवद विवद-कर्म (अ २२७) ।

वाचाय न [व्यापारन] विवा वाचकवा विवद (अ ११ १ २ १ १ १०२, दुर १२, २१६) ।

वाचाय देवो वाचाय (अ ७ २) ।

वाचार धक [व्या + वाच] काम में लगाना । न ७ वाचारित (न ७ २४) । व ७ वाचारिण्य (द्रुमा १२२) ।

वाचार पुं [व्यापार] व्यापार (अ १ १ २) —न ११४ प्राय ११: १२१: ४८—वि १७) ।

वाचार न [व्यापारन] कार्य में लगाना (विदे १ ७१ अ १ १) ।

वाचारि वि [व्यापारि] व्यापारिता (वि १४ १२ हम्मिर ११) ।

वाचारि (की) वि [व्यापारित] कर्म में लगाना हुआ (न ७—अ १२) ।

वाचि ध [वाचि] र धाच, वा (न १७) । २ की देवो वाची (पण्ड १ १—न ४) ।

वाचि वि [व्यापि] व्यापक (विदे २१४, अ २ ४—न ४ २२२) ।

वाचि वि [वे] विवदित (र ७ २७) ।

वाचि वि [वाचित] र वाचित अण्ड करमाया हुआ (र १ १२) । २ वामा हुप्र दुवदयी वे 'वाचि' 'व' वाची नुमनवे वमनवीर वाचि एव वीर' (अ ७ २) ।

वाचि वि [व्यास] धप हुआ (द्रुमा ६ २२) ।

वाचित वि [व्यापृत] व्यापितवाच, विवद (वर्ग १२२) ।

वाचिति के [व्यापृत] व्यापन, विवदित (वर्ग १ २) ।

वाचित देवो वाचन = व्यापित व्यापित (अ ४ २—न १११) ।

वाचि देवो वाचर । वाचि (न १) ।

वाची की [वाची] वगुणोत्त व्यापन-विधेय (धीन वचन प्राप्ता) ।

वाचुध } (टी) देवो वाचन = व्यापृत (वाच-वाचुध) मुम्ब २ १ वि २१ वाच १) ।

वाचाय न [वे] विवदित, विवद हुआ (र ७ २२) ।

वाच (वा) की [वाच] नटक की घना में वाचा (मुम्ब २७) ।

वास देवो वरिस = वृक्ष । वासि (वय) । मुम्ब, वासि (कय) । व ७ वासि (अ १ १—न १४१ वि १२१ २७७) ।

वास धक [वाच] र विवदों का—वगु पक्षियों का बोधना । २ वाचन करण, 'वीरवृक्षमि वाचन वामली वाचो वाचि-पक्षी' (न २२ ११) । वाच, वाच (विधि) द्रुमा २२१) । व ७ वासित (द्रुमा २२१ १५७) ।

वास धक [वाच] र धकार वाचना । २ वृक्षित करना । १ वाच करवाना । वाच (विधि) । न ७ वासित वासित (धीन कय) । व ७ वासिज (विदे ११७७ वर्ग १२२) ।

वास देवो वरिस = वर्य (अ २ कय की १४ पण्ड, द्रुमा, अ १ १: व १२ १२ १ १४ १ १४ न ४४ द्रुमा २७) ।

वाच न [वाच] का वाचा (वर्ग १) । धर वर पुं [वर] वर्य-विधेय (अ ४ २२१: अ १ १: अ १२: ४४) ।

वास पुं [वास] र विवद हुआ (वाचा अ ४ १ द्रुमा, प्राय १५) । २ वृक्ष (द्रुमा) वाचि । ३ वृक्षी अण्ड-विधेय (वचन) । ४ वृक्षी वृक्ष-विधेय 'पण्डव वाचनार्थ विविध वीरवा विवद' (द्रुमा २७: अ २) । ५ वृक्षी वगु की एक वाचि (पण्ड ३—न ४४) । धर न [वृक्ष] वगु-गुह (वाचा १ ११—न ४४)

२ १)। यधण न [यधन] बही घने (महा)। रेणु पुं [रेणु] सुक्को रज (दीप)। हर न [हर] ख्यन-गह (पुर ६, २७ गुपा ११२, भवि)।

पास पुं [पास] १ ऋषि-विशेष दुष्पण कृती एक मुनि (है १ ५, धन)। २ बिल्वार (स २ ८ टी)।

पास न [पास] बह, कपडा (पाय बन्ना १६२; धवि)।

पास देको पास = पास (मरु)।

पास देको पास = पारर (मरु १ मरु)।

पासना पुं [पासना] पासक कलखा 'वाहो सा पवित्रा निरंज मोलुख सिध-बास' (ज १११ टी; कुप १११ ज ५ १२७)।

पासंतु (पा) पुं [पासंतु] कृष का एक पासंत मेर (सि १६१ १६१ डि)।

पासंत पुं [पासंत] बर्षा-काल का पास-नाम (ज ५५५)।

पासंतित्रि वि [पासंतित्रि] बसंत-सम्पन्दी (है १)।

पासंतित्रि की [पासंतित्रि] 'नी' लता-पासंतित्रि १ विशेष (मीन बन्ध कुना पण पासंतित्रि) १—पत्र १२ छाया १ १—पत्र १६ पण १ ५—पत्र ७६)।

पासंती की [पासंती] कुम्भ का पुत्र (है ३ १२)।

पासना वि [पासना] १ खेपला (ज ७५८ टी)। २ पासना-कृती संस्कारपासक (बर्ष १२६)। ३ खन करनेवाला। ४ पुं श्रेष्ठिय पावि जल (भाषा)।

पासण न [पासण] पास बरतन, पुनछी में 'पासण'; 'विहं च पवतदुर्विषं बंधुपायं किं विरुण्णपाठं' (स ६१ ६२)।

पासण न [पासण] पासक करण (खनि १ १)।

पासणा की [पासणा] संस्कार (बर्ष १२६)।

पासणा की [पासणा] पल्लोक्त निरीय (सि १७७ १७८ टी) देको पासणया। पासण देको पासण। सजा की [पासणा]

यासिका का एक मेर, वह यासिका को यमक की प्रतीका में लय-यन कर बैठे हो (कुना)।

पासर पुन [पासर] विषय दिन (पाय मरु महा)।

पासव पुं [पासव] १ हज देव-पति (पाय मुपा १ ५—पत्र १५)। २ एक पत्र-कुमार (मिपा १ १—पत्र १ १)। 'केउ पुं [केउ]

हरिच का एक राजा राजा जनक का पिता (पत्र २१ ३२)। दृच पुं [दृच] विनयपुर नगर का एक राजा (मिपा २ ५)।

दृचा की [दृचा] एक पाश्चात्यिका (पत्र)। बणु पुं [बणु] हज-कुप (पत्र ४२६)। नयर न [नयर] भनचवती

हज-नयरी (मुपा ६ ६)। पुर की [पुर] बही घने (ज ५ १७६)। सुप पुं [सुप] हज का पुत्र वपण (पाय)।

पासवदृचा की [पासवदृचा] राजा नंद प्रद्योत की पुत्री और जयन—बीजानलपत्र की पत्नी (जनि ३)।

पासवार पुं [पासवार] १ तुण मोहा (है ३ २६)। २ पास कुचा 'विहृतिज्जह संपा क्का कि पासवाप' (बैप ११४)।

पासवाव पुं [पासवाव] पास कुचा (है ३ १)। पासन न [पासन] बह कपडा कुमोयछा कुमोयछा (पत्र १ २—पत्र ७६)।

पासा देको परिसा (कुना पास पुर २ ७८ ज २१)। रति की देको परिसा रत (है ४ ३६२)। पास पुं [पास] कुमोयछा में एक स्थान में किया जाता निवास (मीन काला कव्य)। पासिय वि [पासिय] बर्षा-काल घना (भाषा २ २ २ ५६)।

हू पुं [हू] मेर मेर (है ३ २५)। पासपिया की [पासपिया] बलसि-विशेष (पत्र २ १ १६)।

पासापी की [पासापी] रम्या मुद्रा (है ३ २२)। पासि वि [पासि] १ विनाय करनेवाला खेपला (पत्र १ १६, जपट मुपा ११५; कुप ४६ पीप)। २ बलना-कारक धक्कर स्पाक (सि ११७७)।

पासि की [पासि] बनुता बहरी का एक पत्र — पीनप 'न वि पाविबहरीय हई पवेरो कडेविधि' (बर्ष ५५६)। देको पासि।

पासिक १ वि [पासिक] बर्षा-काल घनी पासिक १ (पत्र १२—पत्र १२१)।

पासिह न [पासिह] १ मोह-विशेष (ज ५—पत्र १६ कपट मुप १ १६)।

२ मुंछी, पाठिह गोत्र में जयन (ज ७)। की हा डी (कव्य उत १४ २६)।

पासिहिया की [पासिहिया] एक कि मुनि-खाहा (कव्य)।

पासिहिया वि [पासिहिया] बरसनासा (ज ४ ४—पत्र २१६)।

पासिह १ वि [पासिह] १ बहामा हुपा पासिय १ निवासित (मोह २१)। २ बली रजा हुपा (धय धवि) (मुपा १२ २१२)।

३ मुंछित किया हुपा (कव्य पत्र १३३ महा)। ४ पासिह संस्कारि (पाय)।

पासी की [पासी] बनुता, बहरी का एक पत्र (पत्र ११ १ पत्र १४ ७८ कपट पुर १ २८ पीप)। सुह पुं [सुह] बनुते के तुल्य सुहमाता एक ठण्ड का बीठ, बीठिय बनु की एक जाति (जप १६ ११६)।

पासु पुं [पासु] एक महा-नाम, पासुनि १ सर्वान (सि २ ११ या ६६ बरुा पी ७—कुना सम्मत ७६)।

पासुव पुं [पासुव] १ पीकण नायवण (पत्र ११ ४—पत्र ७२)। २ बर्ष-बर्षा-पीपा, निवण-हृण का धनीप (ज ७० १२२, १२६ भवि)।

पासुव पुं [पासुव] पाठवर्ष में जयन बाहरी दिन कपण (ज ६३ कपट पत्र)।

पासुकी की [पासुकी] कुप का पुत्र (है ३ ४२)।

पाह सफ [पाहस] बहल कपना बलाग। पाह, पाह (धवि महा)। कपट पाहिलसाण (महा)। हेर पाहिल (महा)।

३ पाह पाहिल (है २ ७८ पाषा २ ४ २६)।

पाह पुंछी [पाहपु] मुपक बरेलिया (है १ ५७० पाय)। की हा (या १२१ सि १५२)।

पाह पुं [पाह] १ धय मोहा (पाय मुप १ २, १४ ज ७२ टी कुप १४० हम्पीर १५)। २ बहान मीका 'पाहोडुहा वरु' (सि १ २७)। ३ बारहल मोह कीना (मुप १ ४ ४४)। ४ परिमारा-विशेष

पाठ सो पाहक क्य एक मान (सुगु २६) ।
२ शास्त्रिक पाहो हुनेबनामा (सुगु १ २
१ २) । पाहिया को [पाहिय] बुझ
सवायो (बर्गि ४) ।

बाह्वाग्य } पु [वि] मन्थो समग्र प्रबल
बाह्वाग्य } (३७ ११) ।

पाहक वि [वि] बुझ मय हुमाः बहुबाह्वा
क्यमा (सुगु ७ १६) ।

पाहकिया को [वि] कनिर, बहोरो (सुगु
११७) ।

पाहक पुन [पाहन] १ रज पाहि यमा: 'बहु
निष्परायणा मो' (सुगु १ १ जमा
धीन क्य) । २ जहान नीरा यमना
पुनपछो मे 'बहाल' (जमा विरि ४२३
मुम्मा ११) । ३ म. क्वाता: 'बाह्वाग्य-
परितो' (सुगु १४७) । ४ शब्द, दोम
पाहि दोषमा, मार मार कर क्वाला (सुगु
१ २—जमा २६३ ३ २६३) । साम्य को
[पाह्य] यान खने वा कर (वीन) ।

बाह्वा को [पाह्य] बहन कयमा, दोम
पाहि दोषमा (पाहक २२ टी) ।

पाह्या को [वि] घेरा रोक क्वा (३७
१४) ।

बाह्या को [उपाह] बूया (वीन
जमा वि १४१) ।

पाहयि वि [पाहनिठ] बाहन संकथो (जमा
७२८ टी) ।

बाह्यिमा को [पाहनिठ] बहन कयमा
बनामा, 'पाहगमिथमा' (स १) ।

पाहनु रेको पाहर ।

पाहय वि [पाह] बजनेबना, हुनेबना
(जमा १ १७) ।

पाहय [पाहन] ब्यागल-बाल (वीन
१ ७ उर) ।

पाहर नक [क्या + ह] १ रोकमा क्वा ।
२ पाहुन कयमा । पाहर (हि ४ २२१
मुमा १२२ ब्वा) । कर्तपाहिर, पाहिर
(हि ४ २२१) 'बर्गिथि पहाण कर्तपह' (सुगु
११ ११) कर्त पाहिर (सुगु ११ ११) ।

बहु पाहिर (सुगु १ १ ११) ।
बहु पाहिर (सुगु १ १ ११) ।

बहु पाहिर (सुगु १ १ ११) ।
बहु पाहिर (सुगु १ १ ११) ।

बहु पाहिर (सुगु १ १ ११) ।
बहु पाहिर (सुगु १ १ ११) ।

पाहरय न [क्याहरज] १ जिक क्यन
(सुगु) । २ पाहुन (सुगु १२२ १ ६) ।

पाहरायि वि [क्याहारि] क्वाक्या हुमा
(सुगु १२३ महा) ।

पाहरिय रेको बाहिय = ब्याह (सुगु १
१२ ४ १ मुमा १२२ ब्वा) ।

बाह्यर वि [वि] बाह्यरयमा १ स्त्री
पुनपछो । २ उमा पुनपछो मे 'बाह्यरय' ।

बाह्यरय उमापयवि । निष्पुन
मन्थो लोरो बाह्यरय' (बर्गि १२४) ।

बाह्यिमा को [वि] बुझ मय कोय पक
पाह्यो १ प्रबल (बम्मा २२: २४ दे ७
१६) ।

पाहो को [वि] बाहुमा रे (३ ७ २४) ।

बाह्या को [वि] बुझ-विरोक 'वमिर्बन्धिया
वि वा बाह्याचन्धिया वि वा वमिर्बन्धिया
वि वा (सुगु ३) ।

बाह्यायि वि [बाह्य] क्वाया हुमा (सुगु) ।
बाह्य रेको पाहर । रोक बाह्या (पाह
१: वि ४२२) ।

पाहि मुम्मा [क्यायि] टोप बीमारी 'बन्धनि
बन्धी कन्तो' (सुगु ४ ४—जमा २२३ पाह
सुगु ४ ७२ जमा प्राय १२३ ब्वा) ।

'पययो लठ बाह्यो क्वाक्या' (सुगु) ।
बाह्यि [पाहिय] बहन कयनेबना, कनेबना
महा पयो बन्धयमा' (जमा) ।

बाहियि वि [पाहिय] क्वाया हुमा 'बाहियि
कन्ति बन्धुने बन्ध' (सुगु) 'दो लेख
लेख पाह्यो कन्तिबन्ध बाह्यो पाहो'
(मुमा १२७) ।

बाहिय रेको पाहिय = ब्याह (हि २ २४)
पर मुमा पाह्यो १ १—जमा ११) ।

पाहियि नि [क्यायि] टोपो बीमारी (वि
१ ७: पाह्यो १ १—जमा १७२ पाह्यो
१ ७—जमा २४ पाह्यो १ १—जमा २४
क्य) ।

पाहिया को [पाहिया] १ नथे (बर्गि १) । २
लेमा नथे क्वा कन्तिबन्ध बाह्यो कन्तिबन्ध
बहु कन्ति (पाह्यो) । ३ नथे-विरोक विरोक
१ हाथी, बरि २२, २३ कोर पाह्यो १ २
पाह्यो २३ बरि २२ (बम्मा २२ १) ।

पाह्यो [पाह्यो] क्वा-वि (विरोक १) ।
पाह्यो [पाह्यो] क्वा-वि (विरोक १) ।

पाह्यो [पाह्यो] क्वा-वि (विरोक १) ।
पाह्यो [पाह्यो] क्वा-वि (विरोक १) ।

पाह्यो [पाह्यो] क्वा-वि (विरोक १) ।
पाह्यो [पाह्यो] क्वा-वि (विरोक १) ।

पाह्यो [पाह्यो] क्वा-वि (विरोक १) ।
पाह्यो [पाह्यो] क्वा-वि (विरोक १) ।

पाह्यो [पाह्यो] क्वा-वि (विरोक १) ।
पाह्यो [पाह्यो] क्वा-वि (विरोक १) ।

पाह्यो [पाह्यो] क्वा-वि (विरोक १) ।
पाह्यो [पाह्यो] क्वा-वि (विरोक १) ।

पाह्यो [पाह्यो] क्वा-वि (विरोक १) ।
पाह्यो [पाह्यो] क्वा-वि (विरोक १) ।

पाह्यो [पाह्यो] क्वा-वि (विरोक १) ।
पाह्यो [पाह्यो] क्वा-वि (विरोक १) ।

बाहिय वि [क्याह्य] १ कन्ति कन्ति (हि
१ १२२ २ १६ प्राय) । २ बाह्य, कन्ति
(पाह्यो १ २) ।

बाहियि को [क्याह्य] १ जिक, कन्ति ।
२ बाह्य (सुगु २) ।

बाहिय रेको पाहर ।

बाहिय रेको पाह्यो = बाह्य ।

बाहिया को [बाह्या] १ मन्थ लेखने को
बहु (सुगु १४ मुमा १२७ महा) ।

बाहियि वि [क्यायिमा] टोपो (बम्मा २
टी) ।

पाहो रेको पाह्यो = ब्याह ।

पाहुनि वि [वि] पठ बन्ध 'दो पाहुनि
बन्ध' (सुगु ४२) । रेको पाहुनि ।

पाहुन रेको पाहिय = ब्याह (वीन) ।

वि रेको बाह्य = बाह्य (हि २ २२४ मुमा ४
१ १७: २२ कन्ति ४ १६ १ १६
२४) ।

वि य [वि] इन पाहो का वृषक मन्थ—
१ विरोक प्रमियमा: 'विबहा'
'विरोक' (सुगु ४ १ कन्ति १ १ सुगु
२, २१४) । २ विरोक 'विबन्ध'
(सुगु १ १ २ २४ कन्ति १ टी) । ३
विबन्ध 'विबन्ध' (विबन्ध)

(वीन १ २४ कन्ति १ टी पाह्यो) । ४
मुमा कन्ति विबन्ध (जमा ७२२ टी) ।

५ मन्थ 'विबन्ध' (वि २ १) । ६ मन्थ
'विबन्ध' (बम्मा) । ७ मन्थ 'विबन्ध' (सुगु)
८ मन्थ 'विबन्ध' (विबन्ध) (वीन
१११) । ९ पाहुनि (जमा १ ७७) । १०
पहो (सुगु १ १ सुगु ११ ४१) । ११ वि
पहो, उमेक । १२ पाहुनि कन्ति
कन्ति मन्थपाह्य पर विबन्ध 'विबन्ध'
(वि २४) ।

वि रेको विबन्ध 'वि गुरु होम विबन्ध'
मुमापाह्यो पदन्ध' (वि १११६) ।

वि वि [वि] बाह्य, वि (पाह्यो
वि २) । क्वा-वि [पाहुनि]
विबन्ध को विबन्ध बाहु को विबन्ध (सुगु
१ टी—जमा १) ।

वि रेको विबन्ध 'वि गुरु होम विबन्ध'
मुमापाह्यो पदन्ध' (वि १११६) ।

वि वि [वि] बाह्य, वि (पाह्यो
वि २) । क्वा-वि [पाहुनि]
विबन्ध को विबन्ध बाहु को विबन्ध (सुगु
१ टी—जमा १) ।

वि रेको विबन्ध 'वि गुरु होम विबन्ध'
मुमापाह्यो पदन्ध' (वि १११६) ।

वि वि [वि] बाह्य, वि (पाह्यो
वि २) । क्वा-वि [पाहुनि]
विबन्ध को विबन्ध बाहु को विबन्ध (सुगु
१ टी—जमा १) ।

वि रेको विबन्ध 'वि गुरु होम विबन्ध'
मुमापाह्यो पदन्ध' (वि १११६) ।

वि वि [वि] बाह्य, वि (पाह्यो
वि २) । क्वा-वि [पाहुनि]
विबन्ध को विबन्ध बाहु को विबन्ध (सुगु
१ टी—जमा १) ।

वि रेको विबन्ध 'वि गुरु होम विबन्ध'
मुमापाह्यो पदन्ध' (वि १११६) ।

वि वि [वि] बाह्य, वि (पाह्यो
वि २) । क्वा-वि [पाहुनि]
विबन्ध को विबन्ध बाहु को विबन्ध (सुगु
१ टी—जमा १) ।

विग्रह न [वि] १ प्रासुक् वल जीव-यवित्
पाप्मे (सुष १ ७ २१ डा ३ १—वच
११ १ २, २—वच ११११ धम १७० उत्त
२ ५० कप) । २ मय दक (विग्र २१११) ।
१ प्रासुक् मङ्गाद, विर्योत्त मङ्गाद 'अं किपि
पापरा मयत्तं तं मनुष्यं विग्रहं दुष्कृता'
(माया १ १ १ १) 'विग्रहं भोषा'
कप) ।

विग्रह वि [विग्रह] विग्रह प्राप्त (माया)
पत २ ५० कप वि २१११) ।

विग्रह वि [विग्रह] १ प्रवृत्त गुणा (सुष
१ २ २ २१ वंसा १ १ पच १११) ।
१ विग्रह विर्योत्त — मयोत्तमपचम
वयोत्तमपचम (माया १ १ १ १
वच) । १ गुण, मयोत्त (वच) । ४
प्रवृत्त प्रवृत्त (सुष २ २, १०) । १ गुण एक
मयोत्तमपचम (डा २ १—वच ७०
मुक्त २) । १ एक विग्रह रात्रा (वच
१ २) । भोइ वि [माजि] प्रवृत्त
= योत्तमपचम (वच ११) । १३३ पाइ गु
= 'मान' १३३ विग्रह (डा ४ २—वच
७० डा २ १—वच १११ न) ।

— १३३ य [विग्रह] विर्योत्त होता ।
पा— १३३) ।

— १३३) १ विग्रहो भी

विग्रह वि [विग्रह] १ विग्रह ।
२ पाश्चात्य (मुक्त ४ २; वच ११४) ।

विग्रह पुन [विग्रह] वेत्ता वंसा (माया;
हे १ ४९ पच १ १—वच) ।

विग्रह वि [विग्रह] विर्योत्त मय-यवित्
'संयति विग्रहकप' (यवि) ।

विग्रहा भी [विग्रहा] १ जल । २ गुण-
मुक्त यवि क मनुष्य । १ विग्रह । (माया-
हे १ १४१) । ४ वीर्य गुण संयति
(पाप, कप, गुणा) ।

विग्रहा वि [विग्रहा] विर्योत्त
(यवि) ।

विग्रहा वि [विग्रहा] प्रवृत्त विर्योत्त
(यवि) ।

विग्रहा वि [विग्रहा] मुक्त (पा १४१) ।

विग्रहा वि [विग्रहा] लुप्त-पचित
(डा ११) ।

विग्रहा वि [विग्रहा] वचन कर माया ।
वचन विग्रहा विग्रहा, विग्रहा (माया
१ १ १ २) ।

विग्रहा वि [विग्रहा] १ परिग्रह (सुष १
१ २ २१) । २ मनुष्य विग्रहा (सुष १
१ २ ११) । १ गुण परिग्रह-वचन
'विग्रहा विग्रहा विग्रहा' (यवि १३) ।
४ गुण विग्रहा विग्रहा क मनुष्य विग्रहा—
वचन विग्रहा (यवि १३) ।

(मवि न ४०९) । वच, विग्रहा (माया) ।
क. विग्रहा (यवि ४२० टी) ।

विग्रहा पु [विग्रहा] १ विग्रहा वचन की
कपमाया तं वचन विग्रहा विग्रहा
'कपमाया' (वच) । २ विग्रहा विग्रहा
(माया) । १ मय, प्रकाश-वचन विग्रहा
वचन विग्रहा विग्रहा विग्रहा (यवि १) ।
वेत्ता विग्रहा = विग्रहा ।

विग्रहा म [विग्रहा] ऊपर वेत्ता
'परिग्रहा विग्रहा विग्रहा विग्रहा विग्रहा'
(यवि १३; डा १४४) ।

विग्रहा भी [विग्रहा] ऊपर वेत्ता
(यवि २१) ।

विग्रहा वेत्ता विग्रहा (माया १३; पचन
२९ न) ।

विग्रहा वेत्ता विग्रहा = वि + वचन । विग्रहा
मय (माया १४) ।

विग्रहा वेत्ता विग्रहा = विग्रहा (यवि वचन) ।

विग्रहा वि [विग्रहा] १ विग्रहा विग्रहा
(माया) । २ प्रकाश, वेत्ता विग्रहा (विग्रहा
२ ११ मय २ १) । परिग्रहा पु
[विग्रहा] मनुष्य-वचन वेत्ता विग्रहा
पचन की एक विग्रहा-वचन विग्रहा
मनुष्य भी विग्रहा-पचन (यवि २२) । वेत्ता
विग्रहा = विग्रहा ।

विग्रहा वि [विग्रहा] विग्रहा मनुष्य-

विभरण न [वितरण] प्रवाल धरंछ (पंथा
७ १ उप ११७ टी घण्ड)।

विभरिण वि [विभरित] विभने विभरण
विना हो बहु विहृत (महा) 'विमोकोकमन्
नम्बु पद्धत्या विभरिया कुला दुग्ग' (पिड ४११)।

विभल धक [सुख] मोहना नक करना।
विमनह (बाला १३२)।

विभल धक [वि + गन्] १ नल बाग,
शीख होना। २ लकना, मलना। बहु
विभलन (पा ३१८, मुर १ १२७)।

विभल धक [ओज्य] मन्त्रुत होना (संवि
३३)।

विभल वि [विभल] १ हीन संपूर्ण (नरह
१ ३—पत्र ४)। २ उल्लि नजिय, नज्य
(सा २)। ३ विह्वल व्याकुल 'विभुद
रणह्वना दुर्बल नवि लम्पुछा' (पा
२०४)। ४ को विगत = विरल।

विभल धक [विभल्य] विभल बनाया।
विमनह (घण्ड)।

विभल धक [विभल] विभल (वि ८, २१)।
विभल को विभल = विभल (संकोप ४४)।
विभलधक वि [वि] दोरी, धम्मा (१७
११)।

विभलध वि [विभलध] १ गल-गल
गल (से २, ४२, घण्ड)। २ पल्लि, टल्ल
कर निप हुवा 'विभलध उल्ल' (पाथ)।

विभल धक [वि + पल] १ सुख होना।
२ धम्मरित्त होना 'बलन कीहा मुह
नम्बु विभलध' (मणि)।

विभल धक [वि + पल] विभल।
विमनह (माड ७१; हे ४ ११४)। बहु
विभलध, विभलधाय (दीप गुण २)।

विभलध वि [विभलध] विभलध
करोबन्ता (पठक)।

विभलध वि [विभलध] विभलध
विमनह (गुण २२३)।

विभलध वि [विभलध] विभलध प्रल
(पा १३; पाथ मुर २, २२२ ४ ३८
दीप)।

विभल को विभल = वि + हा। उल्ल
विभलध (पाथा १ १ २)।

विभलध को [विभलध] रोम विरोप
विभल, या बेराई (१८ ७१)।

विभलध को [विभलध] व्यापनाही
प्रसन्न करनेवाही (लापा १ २—पत्र ७६)।

विभलध को [विभलध] विभलध, विभलध
(पाथा २, २ १ १; मुर १ १४ १८)।

विभलध, विभलध (मुर १ १ २२
वि १११; मुर १ १४ १६)। बहु
विभलध (पाथा २ २ १ १)।

विभलध को [विभलध] विभलध (पाथा)।

विभलध धक [वि + धा] बालन, माधुम
करना। विभलध, विभलध (सा पा
४८) विभलध (वि ११) विभलध
विभलध (मुर १—पत्र ११; महा)।

कर्म, विभलध (सट्टि ११)। बहु
विभलध विभलध (दीप ज्म)।

उल्ल विभलध विभलध, विभलध
विभलध (मुर १ १८—महा धोम-कर्म)।

उ विभलध (ज १ १)।

विभलध न [विभलध] पालकाही बाल
'एकवि धम' कुनह विभलधविभलध
विभलध (सट्टि ११)। २ को विभलध।

विभलध न [विभलध] १ विभलध, विभलध
(मुर १७१ १ १ ११२)। २ विभलध
विभलध। ३ विभलध। ४ विभलध (हे १ १७७
माथ)। ५ विभलध विभलध, विभलध
विभलध (मुर २ ११८ हे १ १७७
माथ)।

विभलध वि [विभलध] विभलध, विभलध
(ज १ १११)।

विभलध न [विभलध] पालका, माधुम
करना (स २१७; मुर १, ७)।

विभलध को विभलध (मुर ११
दीप मुर १, २१ सण)।

विभलध वि [विभलध] विभलध, विभलध
(स २१७; गुण १११ मुर ४ २१४
१२, ७१ मिय)।

विभलध धक [वि + जनय] कर्म देना,
प्रसन्न करना 'कुनपाही में विभलध'
'विभलध वनन ज विभलध नाही' (ज
११८ टी)। उल्ल विभलध (पाथ)।

विभलध धक [वि + जनय] विभलध, विभलध
(स २१७; गुण १११ मुर ४ २१४
१२, ७१ मिय)।

विभलध धक [वि + जनय] कर्म देना,
प्रसन्न करना 'कुनपाही में विभलध'
'विभलध वनन ज विभलध नाही' (ज
११८ टी)। उल्ल विभलध (पाथ)।

विभलध धक [वि + जनय] कर्म देना,
प्रसन्न करना 'कुनपाही में विभलध'
'विभलध वनन ज विभलध नाही' (ज
११८ टी)। उल्ल विभलध (पाथ)।

विभलध धक [वि + जनय] कर्म देना,
प्रसन्न करना 'कुनपाही में विभलध'
'विभलध वनन ज विभलध नाही' (ज
११८ टी)। उल्ल विभलध (पाथ)।

विभलध धक [वि + जनय] कर्म देना,
प्रसन्न करना 'कुनपाही में विभलध'
'विभलध वनन ज विभलध नाही' (ज
११८ टी)। उल्ल विभलध (पाथ)।

विभलध धक [वि + जनय] कर्म देना,
प्रसन्न करना 'कुनपाही में विभलध'
'विभलध वनन ज विभलध नाही' (ज
११८ टी)। उल्ल विभलध (पाथ)।

विभलध धक [वि + जनय] कर्म देना,
प्रसन्न करना 'कुनपाही में विभलध'
'विभलध वनन ज विभलध नाही' (ज
११८ टी)। उल्ल विभलध (पाथ)।

विभलध धक [वि + जनय] कर्म देना,
प्रसन्न करना 'कुनपाही में विभलध'
'विभलध वनन ज विभलध नाही' (ज
११८ टी)। उल्ल विभलध (पाथ)।

विभलध धक [वि + जनय] कर्म देना,
प्रसन्न करना 'कुनपाही में विभलध'
'विभलध वनन ज विभलध नाही' (ज
११८ टी)। उल्ल विभलध (पाथ)।

विभलध धक [वि + जनय] कर्म देना,
प्रसन्न करना 'कुनपाही में विभलध'
'विभलध वनन ज विभलध नाही' (ज
११८ टी)। उल्ल विभलध (पाथ)।

विभलध धक [वि + जनय] कर्म देना,
प्रसन्न करना 'कुनपाही में विभलध'
'विभलध वनन ज विभलध नाही' (ज
११८ टी)। उल्ल विभलध (पाथ)।

विभलध धक [वि + जनय] कर्म देना,
प्रसन्न करना 'कुनपाही में विभलध'
'विभलध वनन ज विभलध नाही' (ज
११८ टी)। उल्ल विभलध (पाथ)।

विभलध धक [वि + जनय] कर्म देना,
प्रसन्न करना 'कुनपाही में विभलध'
'विभलध वनन ज विभलध नाही' (ज
११८ टी)। उल्ल विभलध (पाथ)।

विभलध धक [वि + जनय] कर्म देना,
प्रसन्न करना 'कुनपाही में विभलध'
'विभलध वनन ज विभलध नाही' (ज
११८ टी)। उल्ल विभलध (पाथ)।

विभलध धक [वि + जनय] कर्म देना,
प्रसन्न करना 'कुनपाही में विभलध'
'विभलध वनन ज विभलध नाही' (ज
११८ टी)। उल्ल विभलध (पाथ)।

विभलध धक [वि + जनय] कर्म देना,
प्रसन्न करना 'कुनपाही में विभलध'
'विभलध वनन ज विभलध नाही' (ज
११८ टी)। उल्ल विभलध (पाथ)।

विभलध धक [वि + जनय] कर्म देना,
प्रसन्न करना 'कुनपाही में विभलध'
'विभलध वनन ज विभलध नाही' (ज
११८ टी)। उल्ल विभलध (पाथ)।

विभलध धक [वि + जनय] कर्म देना,
प्रसन्न करना 'कुनपाही में विभलध'
'विभलध वनन ज विभलध नाही' (ज
११८ टी)। उल्ल विभलध (पाथ)।

विभलध धक [वि + जनय] कर्म देना,
प्रसन्न करना 'कुनपाही में विभलध'
'विभलध वनन ज विभलध नाही' (ज
११८ टी)। उल्ल विभलध (पाथ)।

विभलध धक [वि + जनय] कर्म देना,
प्रसन्न करना 'कुनपाही में विभलध'
'विभलध वनन ज विभलध नाही' (ज
११८ टी)। उल्ल विभलध (पाथ)।

विभलध धक [वि + जनय] कर्म देना,
प्रसन्न करना 'कुनपाही में विभलध'
'विभलध वनन ज विभलध नाही' (ज
११८ टी)। उल्ल विभलध (पाथ)।

विभलध धक [वि + जनय] कर्म देना,
प्रसन्न करना 'कुनपाही में विभलध'
'विभलध वनन ज विभलध नाही' (ज
११८ टी)। उल्ल विभलध (पाथ)।

विभलध धक [वि + जनय] कर्म देना,
प्रसन्न करना 'कुनपाही में विभलध'
'विभलध वनन ज विभलध नाही' (ज
११८ टी)। उल्ल विभलध (पाथ)।

विभलध धक [वि + जनय] कर्म देना,
प्रसन्न करना 'कुनपाही में विभलध'
'विभलध वनन ज विभलध नाही' (ज
११८ टी)। उल्ल विभलध (पाथ)।

विभलध धक [वि + जनय] कर्म देना,
प्रसन्न करना 'कुनपाही में विभलध'
'विभलध वनन ज विभलध नाही' (ज
११८ टी)। उल्ल विभलध (पाथ)।

विभलध धक [वि + जनय] कर्म देना,
प्रसन्न करना 'कुनपाही में विभलध'
'विभलध वनन ज विभलध नाही' (ज
११८ टी)। उल्ल विभलध (पाथ)।

विजराय दु [ब्युप्राय] विरा प्राथि-यव
(सुप २ ४ ३)।

विजस्य घक [वि + क वि + कुर्त्त] १
बनावा—विज्य घायर्ष्य से घायक करता।
२ घायक करता मरिचक करता। विजस्य
विजस्य (यव कण्ट महा, पि ३ ८)।
मुष्म विजस्य। मरि विजस्यसिधि (यव
३ १—यव १११) विजस्यसिधि (पि
२११)। मरु विजस्यमाय (सुप २ १)।
कण्ट विजस्यमाय (अ १—यव
४ २)। घक विजस्यमाय विजस्यमाय,
विजस्यमाय विजस्यमाय (यव पि ३ १
यव कण्ट सुप २७)। हेड विजस्यमाय
(पि ३ १)।

विजस्य न [विजस्य] १ शरीर-विरोध घनेक
सक्यो घोर विजस्यो की करते ये समर्थ
शरीर (यवम २ २ १८) यव ११२ कम्म
१ १७)। २ वर्म-विरोध वैजिय शरीर की
मरिध क काण्ड-मुल कर्म (कम्म १ ११)।
३ वि वैजिय शरीर से संकन खनेवाला
(कम्म ४ २१)।

विजस्यया की [विजस्य विजस्यया]
विजस्यया १ बनावा, शरीर-विरोध से
विज्य जाता बलु-विप्रास (सुपमि १११
पीपा पडम ११७ ११ यव २१)। २
शरीर-विरोध, वैजिय-कण्ट शरीर (वेवज
२१)।

विजस्यवि वि [वि] १ विरोध। दुःख-पीड
(वि १ २२)।

विजस्य वि [विजस्य, विजस्यवि] १
विजस्यया करनेवाला (यव ११७ टी)। २
विजस्य-शरीरवाला (यव ११ १२) सुप ११
११)।

विजस्यवि वि [विजस्य विजस्यवि] १
मिर्मि, कम्म हुआ (यव महा, पीपा सुप
)। २ घायक, विजस्य (वि १)।

विजस्यवि वि [विजस्य वि] वैजिय शरीर से
संकन खनेवाला (कम्म ४ २४)। केो
बजस्यवि।

विजस्य घक [ब्युप्राय + सुम्] कम्म।
विजस्य (यवम ३ १ २ ३) विजस्य
(यवम २ ११, १)।

विजस्य वि [विजस्य] विजस्य (यवम
उप १ १) सुप १ ७) प्राप् ११) यव
महा [विजस्य] (यवम ७७४) विजस्य
(सम्प २ ११)।

विजस्यया केो विओसगा (वि २, १७४
यव)।

विजस्यया न [ब्युप्राय, ब्यवस्यमन] १
उपम बनावा। २ सुप का घायक
या से ये पुष्टि विजस्ययलकस्यमयति
मरिध सामाधोर्ष्य पञ्चसुमनयाये विजस्य
(सुपम २ कम्म १२, १—यव १७८)।
३ वि विजस्यया 'सम्पदुपकायमरु विजस्य
मरु' (यव २ १—यव १)।

विजस्यया की [ब्यवस्यमन] उपम,
अव-मरिधाय (यव १७ १—यव ७२९)।

विजस्यमि केो विओसमि (यव)।

विजस्यम न [ब्युप्राय] मरिधाय (यव
१)।

विजस्यया की [ब्युप्राय] उपम केो
(यव यवम १ १—यव ४६)।

विजस्य केो विओसय। घक विजस्येचा
(कम्म १ ११ टि)।

विजस्यया केो विजस्यम (यव २, ४—
यव १११)।

विजस्यवि केो विओसवि (अ १—यव
१७)।

विजस्यया केो विओसिजा (यवम १ १
२, २)।

विजस्यया केो विजस्यया (यव
१२)।

विजस्य घक [वि + क] विरोध मोला।
विजस्य (सुप १ १ २, २१)।

विजस्य घक [विजस्य] विजस्य की तरह
घायक करता। विजस्य (सुप १ १
२ २१)।

विजस्यया केो विओसगा (यव १ २,
अव १ १)।

विजस्यवि वि [ब्युप्राय ब्युप्राय]
मरिधाय, कण्ट-मुल (सुप १ १ १
१)।

विजस्यवि वि [ब्युप्राय] विरोध क से खा
हय (सुप १ १ २, २१)।

विजस्यवि वि [ब्युप्राय] विजस्य तरह से
मरिध 'घायक' से विजस्य (सुप १
१ २ २१)।

विजस्य घक [ब्युप्राय] मरिध करता। घक
विजस्यया (सुप १ १ २२)।

विजस्य वि [ब्युप्राय] मरिध विजस्य। २
दु १७ सुप ११ (१७)। केो विजस्य।

विजस्यवि वि [वि] मरु, मरु-प्राय (वि ७
७२)।

विजस्य घक [ब्युप्राय + सुम्] मरिधाय
करता विजस्य विजस्यमरु (यवम
२ ११ १)।

विजस्य दु [ब्युप्राय] एवम-विरोध (यवम ४,
१)।

विजस्य वि [विजस्य] मरु प्रकाश
'मरु-विजस्य' विजस्य घ

विजस्य वि संकन।

विजस्यया केो विओसया मोह विजस्य
(यव)।

विजस्य घ [वि] उपम, 'यवमरु' विजस्य
अव मरु उपमरुमरुमरु विजस्य (यवम
१—यव ४)।

विजस्य दु [विजस्य] १ मरुमरु मरुमरु
(विजस्य ४७७) यवम १ २ विजस्य मरु
मरु। २ यवम-मरु (यव ७१)।

विजस्य दु [विजस्य] सुपम, विजस्य, विजस्य
(सुपम ११) यवम ४६ १ १ १७७; सुप
४ १२२ यवम)।

विजस्यवि वि [विजस्यवि] सुपम विजस्य
(वि ७, ७१ या ११२ ७ १ सुप १२,
११७)।

विजस्य केो विओस (सुप २ २११, ४,
१२१ यवम)।

विजस्यवि वि [विजस्यवि] विजस्य-मरु
(यवम १११)।

विजस्य घक [वि + घाय] घाय
करता। विजस्यवि (सुप १ ३, १ २१)।

विजस्यवि वि [विजस्यवि] विजस्य-मरु
(सु ७२)।

विजस्य दु [विजस्य] मरुमरु, एक मरुमरु
(मरु-मरु ११)।

विजस्यवि वि [विजस्यवि] विजस्य, विजस्य
(सुप ११ ११)।

बिभोरमण न [ब्युपरमण] विराजना,
विनाश 'कल्याणविभोरमण' (धीमता १६
श्लोक १२६)।

विभोरो वि [रे] वापिना ये-युद्ध (१०
११)।

विभोराय पु [व्यवपात] भ्रष्ट नाश
(वाचा १ १ १४)।

विभोरोमा पु [म्युत्सर्ग] १ परित्याग । २
उप-विशेष विरोधन से शरीर धारि न
व्यय (धीन)।

विभोरोमण देवो विजयमण (मण्ड २ २—
पत्र ११८ २ ४—पत्र १४६)।

विभोरोसमिय वि [व्यवसायित] उपराज
किया हुआ (कथ १ १ टि)।

विभोरोसणया देवो विजयसणया (धीन)।

विभोरोसय चक [व्यय + श्रमय] उपराज
करना ठगना करना, बर्बाद होना। चक
'तं धर्मियणं च-विभोरोसवेचा' (कथ)।

विभोरोसविय } देवो विभोरोसमिय धरि
विभोरोसिय } धोषविषयवाहू' (कथ १
१४ ४ ४); 'विभोरोसमिय का पुणो छोरी
छर' (कथ १ १ ४ ४ टि)।

विभोरोसिजा य [म्युत्सर्ग] परित्याग कर
(वाचा १ ६ २ १)।

विभोरोसिय वि [व्यवसायित] पर्यवसित धमात
किया हुआ (मृग १ १ ६ २)।

विभोरोसिय वि [विरोधित] कोरा-पट्टि
निपटारण मंगल 'विभ(रो)सियवरासि—
(मण्ड १ १—पत्र ४४)।

विभोरोसिय देवो विजयसिय (मि २१४)।

विभोरो पु [विभो] जावण जावति
(मि)।

विभ न [दे] वाप-विशेष (पत्र)।

विभियसिय वि [दे] १ पाटित विहायित ।
२ वाप (१४ २१)।

विभुय पु [वृद्धि] कयु-विशेष विभु (१
१ १२८ २ १६ म)।

विभय चक [वि + चट्] घनन होना । विभय
(प्राक् ७१)।

विभिय } देवो विभुय (१ १ २६ २
विभुय } ११ मृग ११ १६) पत्र
१६ १० प्राक् प्राक् ११; पा २१० म)।

विभय देवो वंजना 'देवीसविनयार्' (वंज)।
विभय देवो विभय = व्यक्त दुःखपटी में
'विभयों' (रंभ २)।

विभय पु [विभय] १ 'विभय' विभय-
(पा ११४; छाया १ १—पत्र १६)। २
व्यास ब्रह्मविद्या (१ २४ २ २६ प्राक्)।
३ एक वेद पुनि (विशे २४१२)। ४ एक
पंक्ति-पुत्र (मुग १४८)।

विभय चक [वृद्धि] बेटन करना सफेजना
दुःखपटी में 'विभय' 'विभय तं वंजना'
हममयपुत्रदेवी' (मुग २०१)। प्रया
पंक्ति, पितापितृ (मुग १८६)।

विभय न [वृद्धि] कय-यत्र धारि का कयन
(१ १ ११६ प्राक् ४ रंभा प्राप् १ २)।
विभय } न [दे] १ वशीकर-विद्या
विभय } 'धमा'पि दुःखवि(पत्रमि-
ट्याई करमापनाई कय्याई' (विमि २०)।
२ विभय धारि का प्रयोग (बृह १- विमि-
धारि परमंवि' (मण्ड १ ११)।

विभयिमा श्री [दे] गरी पोखी दुःखपटी
में 'विभय'; 'ठाक दुमरेण विता समुपमा
बलविधिय' 'दीप विधिय' (मुग
२६१)।

विभयिमा श्री [दे] १ गरी पोखी (मुग २
२, ज १६२ टी)। २ मुद्रिका धनुषीयक
दुःखपटी में 'दीदी' 'ज्जगारोवति' मुद्रा
कलयपमविभयिमा नियमा' (मुग १११)
'विभयिमा श्री विभयि(पि)महि' यह धनु-
कीर्ति' (स ७१)।

विभय पु [व्यन्तर] १ विभु धारि कुट यजु
(वर १२४); 'दुद्राण को म नीह विवर
कमाय न कमाय' (वज्रा १२)। २ एक
वेच-जाति; 'विभुय' गरी वि विवर धरि
किटप' (पा १२; मं २)।

विभयिमा श्री [वृद्धि] बेटन का भाव
विभय चक [विभु] १ जानना । २ प्राप्त करना
धर्म न ज विभयि तय तय' (मुग १ १६
२०)। बह, विभयमा (छाया १ १—पत्र
२६, विना १ २—पत्र १४)।

विभु देवो ६४—दुःख (मि ११८)।
विभारा } देवो वंशारय (मुग २ १ नाट—
विभारा } मृग ८८)। 'वर पु [पर] द्रव
(समा ७३)।

विभारा पुन [वृद्धि] मयुष का एक
वत (टी ७)।

विभुरि वि [दे] १ उज्ज्वल देवीयमान ।
२ मयुष सोपनजा दल-कंठ । ३ विभारा
म्यात । ४ विभारा 'कंठाई विभुरिमापुर
उपरीविभारायुवार्' सहीदी' (कयु)।

विभु देवो बंज (प्राक् १६)।

विभारा देवो विभाराय (प्राक् १६)।

विभय चक [व्यय] धीमता, धेनवा, वेवना ।
विभय, विभेजा (मि ८८६, मम)। बह
विभय (मृग २, ११)। चक विभिय
(वा—मुग्य २११)। इह विभिर् (स
१२)। इ विभयय्य (मुग २१६)।

विभय म [व्ययन] धेनवा, वेवना 'बल
विभय'—(धर्मि २२)।

विभिय वि [विभ] जो वेया मया हा बह,
विभ (समा १२८)।

विभय देवो विभय = विलय (मि)।

विभय देवा विभय । विभय (मि १११)।

विभय वि [विभय] व्याकुल धनकया
हुया 'विभय' (ज १२० टी कुट ६
१२८ धर्मि श्लोक ७३)।

विभिय वि [विभिय] धार्य-धरि
'धोपुण्य धीमता विभ (विभ)धो म पवला-
हो धीर' (वज्रा १६ म)।

विभिय देवा विभिय 'धाहृषविभियारा'
(वज्रा ८६)।

विभिय (टी) श्री [विभारि] धीय २०
(मृग १)।

विभय चक [वि + कट्] घनन करना ।
विभयय्य (मृग १ १४ २१)।

विभय चक [वि + कट्] हिन जाया
बलित होना । बह विभयमागा (मृग १
१४ १६)।

विभय चक [वि + कट्] १ विनाश,
बलाना । २ व्याप करना छोड़ना । ३ धन
मंथन व वाप विभय । ४ शरीर प्रवेश
करना । विभय (मृग १ १)। चक
विभयय्य (मुग १ १)।

विभय वि [विभय] कय विभन (वना
१६, १२)।

विश्वस देवो विश्व ।

विश्वस वि [विश्वसन्] १ पण्डितो गुरु
(गामा १ १—पत्र २१ विवे १ २४)
प्राप् १ ७ कप्य) । २ पुं पण्डितो गुरु-
भूमि का बरिचरान्तरक-मरक-स्वान
विश्वस (वेदेन्द्र १) ।

विश्वसि श्वी [विश्वसि] विश्वस पण्डित
(गामा १ १—पत्र २१) ।

विश्वस देवो विश्वस = विश्वस्य (वेदेन्द्र १ २) ।

विश्वस्य न [विश्वस्य] विश्वस देवता
(गुप्ता १ २, सङ्गि २ २) ।

विश्वस सक [वि + क्रम्] पण्डित्य करना
गुप्ता विश्वसता । अथ विश्वस्यस्तवि
(श्री) (पार्थ १) ।

विश्वस पुं [विश्वस] १ शीर्ष पण्डित्य (गुप्ता) ।
२ धामस्य (महा) । ३ एक राजा का नाम
(गुप्ता १ १२) । ४ राजा विश्वस्य (गामा
७) । अस पुं [यस्य] एक राजा
(महा) । पुर न [पुर] एक नगर का
नाम (श्री २१) । राय पुं [राज] एक
राजा (महा) । सेण पुं [सेन] एक
राज-कुमार (गुप्ता १ २२) । श्व, श्व
पुं [वित्य] एक धर्मिय राजा (गामा ४४
का सम्मत १४ गुप्ता १ २२ या ४४४) ।

विश्वस्य पुं [वि] कुरु राजाका भोज
(श्री ७ १७) ।

विश्वसि वि [विश्वसि] पण्डितो गुरु
(गुप्ता) ।

विश्वस वि [विश्वस] ब्याहृत देवैत (पत्र
१५२ प्राप्ता संशोध २१) ।

विश्वसमाय देवो विश्व ।

विश्व देवो विश्वस, 'ते नमस्विश्वस्यो गुरु
विश्वसपत्र न से पुण्डितो' (संशोध १६) ।

विश्वसि वि [वि] संकट, गुप्ता गुप्ता (सक
७ ४६) ।

विश्वसि वि [विश्वस] विश्व कटा गुप्ता
(पत्र १ १—पत्र २४) ।

विश्वसि देवो विश्वस (संशोध २८) ।

विश्वस सक [वि + क्रम्] देवता । विश्वस्य
(अप्ता) । कर्त, विश्वस्यीर्षय (वि २४८) ।

नक्ष, विश्वसित विश्वसित (वि १२७
गुप्ता २०६) । संक्ष विश्वसित (गामा—
गुप्ता ११) ।

विश्वसिय वि [विश्वसि] देवा गुप्ता (गुप्ता
विश्वस १ २२) अथि ।

विश्वस देवो विश्वस = विश्वस्य कप्यदि
क्षिपको गुप्तो नक्ष विश्वसिय (गुप्ता १ २७),
कप्यक्षिप-कामो देवस्य (सम्मत १ ४) ।
विश्वस सक [वि + क्रम्] विश्वस्य विश्वस्य,
देवता । कप्य, विश्वसित्यमाण (पत्र
१४) ।

विश्वसिया श्वी [विश्वसि] विश्वस विश्वस
'वीर नमस्विश्वसि विश्वसि' (गुप्ता
१ २४) । देवो विश्वसिया ।

विश्वस देवो विश्वस = विश्वसित (गुप्ता १,
१२२, गुप्ता १ २२) ।

विश्वस सक [वि + क्रम्] देवता । विश्वस
विश्वस्य (वि ४ २२ प्राप्ता गामा १ २२) ।

विश्वस (वि १ ४) । ७ १२) ।

विश्वस्य वि [वि] विश्वस, देवते योय (वि
७ १२) ।

विश्वस्य पुं [विश्वस] विश्वस्य गुप्ता से
गुप्ता विश्वस्य (वि १ २२) ।

विश्वस सक [वि + क्रम्] विश्वस्य ।
विश्वस (गामा) (गुप्ता २७) ।

विश्वस्य पुं [वि] १ स्थान कप्य (वि ७
२८) । २ पण्डित शीर्ष का नाम (वि ७
२८) से २, २७) । ३ विश्व, विश्व (वि
१ २४) ।

विश्वस्य पुं [विश्वस्य] १ विश्वस (गामा
१—पत्र २४ अ ४ २—पत्र २१६ ३
७ २८ पत्र) । २ शीर्ष 'नक्षस्यो देवो
यस्य भोजस्यस्य' धामस्यविश्वस्येय पण्डितो
(सम् २) । ३ ब्राह्मण स्मृत्य, मोक्षी
(गुप्ता १ १—पत्र ७) । ४ विश्वस्य
विश्वस (सम्मत ७ ८) । ५ गामा का एक
पत्र (कप्य) । ६ श्वस के दोनों शब्द के बीच
का पत्र (अ ४ २—पत्र २१६) ।

विश्वस्य मय वि [विश्वस्यमय] विश्वस, टोका
गुप्ता (सम्मत ७ ८) ।

विश्वस्य न [वि] गामा, कप्य कप्य (वि
७, १२) ।

विश्वस्य न [वि] गामा, कप्य कप्य (वि
७, १२) ।

विश्वस्य न [वि] गामा, कप्य कप्य (वि
७, १२) ।

विश्वस्य न [वि] गामा, कप्य कप्य (वि
७, १२) ।

विश्वस्य वि [विश्वस] विश्वस, कप्य-कप्य
(गामा ७ १—पत्र १ ७) ।

विश्वस सक [वि + क्रम्] १ विश्वस्य
विश्वस-विश्वस करना । २ देवता । ३ विश्व
कप्य देवता । विश्वस (कप्य) विश्वस्य
(गामा २ १) । कप्य विश्वस्य-विश्वस्य
(गामा) ।

विश्वस्य न [विश्वस्य] १ विश्वस्य । २
वि विश्वस्य 'कप्य' पत्र विश्वस्य-विश्वस्य
(गुप्ता ४७) ।

विश्वस्य श्वी [विश्वसि] विश्वसि (अथि) ।

विश्वस्य वि [विश्वसि] विश्वसि, विश्वस
(गामा १ १ ४१ रमा महा) ।

विश्वस्य वि [वि] विश्वस्य पण्डित
(वि ७ ११) ।

विश्वस्य वि [वि] १ धामस्य गामा । २
पण्डित (वि ७ २८) ।

विश्वस्य देवो विश्वस्य (कप्य) ।

विश्वस्य वि [विश्वसि] १ देवता गुप्ता
(गामा कप्य पत्र) । २ विश्वस्य पण्डित
'पण्डितविश्वस्य पण्डित' (कप्य ७ २८ टी
२ १ ११ महा) ।

विश्वस्य देवो विश्वस्य । विश्वस्य (गामा) ।

विश्वस्य वि [विश्वसि] विश्वस्य गुप्ता
विश्वस्य गुप्ता देवता गुप्ता (गुप्ता १, २ १
गुप्ता २ ४६ पत्र) ।

विश्वस्य सक [वि + क्रम्] १ विश्वस्य
करना । २ विश्वस्य । ३ देवता । विश्वस्य
(गामा) ।

विश्वस्य न [विश्वस्य] १ विश्वस्य ।
२ विश्वस्य (गामा १४) ।

विश्वस्य पुं [विश्वस्य] १ शीर्ष 'विश्वस्यो
विश्वस्यो' (गामा) । २ विश्वस्य, विश्वस्य
(वि १ १) । ३ विश्वस्य विश्वस्य विश्वस्य
(विश्वस्य १ ११) । ४ विश्वस्य विश्वस्य (गामा
१ २२) । ५ विश्वस्य विश्वस्य विश्वस्य
गुप्ता विश्वस्य (गामा २ ४—पत्र १ १२) ।

विश्वस्य वि [विश्वसि] विश्वसि, विश्वस्य
(वि ७ ११) । ५ विश्वस्य, विश्वस्य (वि २४
१ ७१) ।

विश्वस्य श्वी [विश्वसि] विश्वसि (अथि) ।

विश्वस्य वि [विश्वसि] विश्वसि, विश्वस्य
(गामा १ १ ४१ रमा महा) ।

विश्वस्य वि [विश्वसि] विश्वसि, विश्वस्य
(गामा १ १ ४१ रमा महा) ।

विजय वृ [विजय] १ नरकावास-विजय
एक नरक-स्वामि (वेद २०) । २ वि जय
यिष्ठ (मि १) ।

विजय १ [विजय] कर्म वं
विजय १ कर्म वं (मा २ १ १
१ २ १ २) ।

विजयिणी श्री [विजय] विजयी (कु २
२०२) ।

विजय श्री [विजय] १ राजा ब्रह्म, यथा
ज्ञान सम्पूर्ण ज्ञान (उत् २१ २ एहि
पर्वणि ११ कुमा प्रामु ४१) । २ मन्त्र
श्री-प्रतिष्ठित पञ्चर पञ्चि । ३ सामान्यता
मन्त्र (वि ४२४ यौव डा १ ४ यी—
पत्र ११६) । अनुपपन्नान्न [अनुपपन्न]
कैन दीन प्रजाय विजय, इसका पूर्व (सम
२१) । नारायण वृ [नारायण] यच्छि-विजय-
संपन्न भूमि (मम २ ६—पत्र ४२१) ।

नारायणश्री श्री [नारायणश्री] यच्छि-
विजय (मम २ ६) । 'पुण्यवाय देवो
अनुपपन्नान्न (पत्र) । नारायण [नारायण]
इसका पूर्व (वि २ ७) । विजय वृ
[विजय] विजय के वृष से प्राप्त किया
(वि ११) । मंत्र वि [यन्] विजय-
संपन्न (उत् ४२१) । अय वृ [अय]
पञ्चमासा (प्राप्ता) । 'सिद्ध वि [सिद्ध]
१ सर्व विजयों का प्रतिकृति, सभी विजयों
संज्ञा । २ विजयों के वृष से वृष एक
मन्त्रविद्या सिद्ध हो बुद्धि हो वृष; विजयवृ
वृषवृषी विजयवृषी छ पञ्च वेदादि
विजयवृषी मन्त्रविजय (प्राप्त) । हर वृ
[हर] १ विजयों का एक वृष (पत्र १
२) । २ वृषी, वृष वृष में उत्पन्न (मन्त्र) ।
श्री. श्री (मन्त्र) छ । ३ वि विजय-प्राप्ति-
यच्छि विजय-संपन्न (यौव उत्प ४ ४) ।

हरपञ्चवृष वृ [हरपञ्चवृष] एक प्राचीन
कैन भूमि जो भूमि वृष वृषविजय प्राप्ति
के स्थल से (कर्म) । हरि श्री [हरि]
एक वृष भूमि-ज्ञा (कर्म) । हर (पत्र)
न [हर] वृष-विजय (विजय) ।

विजयवृष (मम) देवो वंयावृष (मंत्र) ।

विजयहर वि [विजयहर] विजय-वृष-श्री
श्री. 'एसा विजयवृषी भावा' (मन्त्र) ।

विजयविजय देवो विजयविजय (पत्र) ।

विजय वृ [विजय] १ विजय-वृष का
एक राजा (पत्र १, १०) । २ देवों की एक
वादि प्रकृति देवों का एक देव (पत्र
४ ४—पत्र ६०) । ३ धामसंख्या मन्त्रों
का निवासि एक मन्त्र (प्राप्ता २—पत्र
२११) । ४ एक नरक-स्वामि (वेद २१) ।
१ श्री. ईशानेश्वर के सोम प्राप्ति लोकपालों की
एक-एक धामप्रतिष्ठा—पञ्चवृषी (डा ४ १—
पत्र २ ४) । १ नमन नामक वृष की एक
पञ्चवृषी (डा १, १—पत्र ३ २ प्राप्ता
२—पत्र २११) । ७ वृषी विजयी विजयवृषी
विजयवृषी (है १ ११ कुमा प १११) ।
८ संख्या धाम (है १ ११) । ९ वि विजय
कर्म के वृष-प्रजाता 'विजयवृषीमन्त्र' (उत् २२ ७) । वृष देवो वृष (वी ३—
पत्र १११) । कुमार वृ [कुमार]
एक वृष-वादि (मम इ) । कुमारी श्री
[कुमारी] विजयवृष पर एतेवृषी
विजयवृषी देवी 'वृषादि विजयवृषीमन्त्र'
विजयवृषी पञ्चवृषी (डा ४ १—पत्र
१६०) । विजय (१) विजय वृ
[विजय] मन्त्रवृष पर मन्त्र का एक
पञ्चवृष-वृष (है १ राज) । 'तेज वृ
[तेज] विजयवृष का एक राजा (पत्र
१, १०) । वृष वृ [वृष] १ एक वृष
वृष । २ वृष वृष-प्राप्ति मन्त्र-वादि (डा
४ २—पत्र २२१) । वृष वृ [वृष]
विजयवृष का एक राजा (पत्र १, १०) ।

वृष वृ [वृष] विजयवृष में उत्पन्न एक
राजा का नाम (पत्र १, १०) । पत्र,
पत्र पत्र वृ [पत्र] १ एक वृष-प्राप्ति
पर्वत का नाम (सम १ २ टी ४ २, १—
पत्र १११) । २—पत्र १११ वं ४ सम
१ २ इ) । २ वृष-विजय विजयवृष
वृष-प्राप्ति का एक वृष (वै ४ इ) । ३
वृष-विजय, विजयवृष नामक वृष-प्राप्ति
का वृष-प्राप्ति देव (वै ४) । ४ मन्त्रवृष
नामक का एक पञ्चवृष-वृष (डा ४ २—
पत्र २२१ इ) । ५ वृष पर्वत का विजय
वृष (डा ४ २—पत्र २२१) । ६ वृष-
वृष में वृष एक वृष (डा ४ २—पत्र

२२१) । ७ न एक विजय-वृष (है
२२१) । मन्त्र श्री [मन्त्र] एक श्री का
नाम (पत्र १ ४—पत्र २२१) । मन्त्र वृ
[मन्त्र] १ वृष-प्राप्ति वृष का वृष-प्राप्ति
एक वृष (मन्त्र) । २ वृष का एक वृष
(सं ११ २४) । ३ वृष-प्राप्ति का वृष
(पत्र) । मन्त्र वृ [मन्त्र] १ विजय-वृष
का एक राजा (पत्र १, १०) । १ एक
वृष-प्राप्ति । ४ वृष का निवासि मन्त्र (डा
४ २—पत्र २२१ इ) । मन्त्र वृ [मन्त्र]
१ विजयवृष मन्त्र, वृष-प्राप्ति मन्त्र । २
विजयी विजयवृषी मन्त्र (मम ७ १—पत्र
१ १) । वृष वृ [वृष] विजयी वृष-
विजयवृषी मन्त्र (मन्त्र—वेद
११ का) । वृष-प्राप्ति वृष [वृष-प्राप्ति]
विजयी की वृष-प्राप्ति (मन्त्र) । 'विजय
सिद्ध न [विजयसिद्ध] १ वृष-विजय (मन्त्र
२१) । २ विजयी का विजय (सं ४ ४) ।
'सिद्धा श्री [सिद्धा] एक राजा का नाम
(मन्त्र) ।

विजयवृष श्री [विजय] १ विजयी (मन्त्र—
वेद ११) । २ वृष नामक वृष के सोम
प्राप्ति वृषी लोकपालों की एक-एक पञ्चवृषी
'विजय मन्त्रा विजयवृषी (१) मन्त्रा'
(डा ४ १—पत्र २ ४ इ) । ३ वृष-
वृष की एक वृष-प्राप्ति (प्राप्ता २—पत्र २२१
इ) ।

विजयवृषी वृष [विजयवृषी] विजयी करने-
वाला (डा ४ ४—पत्र २२१) ।

विजयवृष देवो विजय-विजय (है २
विजयवृषी १०१ पत्र १११; कुमा प्राप्ति
विजयवृष ११ प्राप्ति वि २४४) ।
विजय देवो विजय । मन्त्र श्री [मन्त्र]
वृष-विजय (विजय) ।

विजय वृ [वृष] १ मन्त्र से प्राप्त वृष । २
मन्त्र (मन्त्र) ।

विजयवृष वृ [विजयवृष] वृष-प्राप्ति
'वृष-प्राप्ति वृषी वृष विजयवृषीमन्त्र'
(विजय) ।
विजयवृष वि [विजयवृष] वृष-प्राप्ति;
विजयवृष वृषा वृषा (उत् ४ ११ स
२०१) ।

विगम् धक् [कृष्ण] बीकना बेम करम्
मेवम् । विगम्ति (सुम १ १ १ २)
विगम्ते (पा ४४१) छङ् विगम्ज (सुम
१ १ १ २) । छ. विगम् (वृ०) ।

विगम् धक् [वि + पठ्] धनम् होता ।
विगम् (वाता १२२) ।

विगम् न [वि] बीक, वगम् ठेका गो
हमी वम्मि पडे विगम् वाक्य कुमरमपु
मये' (वर्गी १)

पाव कथावाक्येय न विगम्

(१ ४) तरं धारावामायेय

मुनिपुण विगम्ताई वरिचं

ममोदहकर्मि' (उ १११) ।

विगम् नि [विट्] विना हुपा 'जह रणि
देस बासेय विगम्ते केह ई विगम्' (पा
४४१) ।

विगम् केही विगम् = धक् ।

विगम्तिव नि [वि] १ निमित्त ध्यस्त)
'बीकम्भारपयवमविगम्तिव' (अ ७
१—पा १ ७ अ) ।

विगम्त केही विगम्त = विगम् (अ ७
१ टी—पा १ ७) ।

विगम्त छक् [वि + ध्यापय्] हुम्ता
वीक छक् की हुम करम् ठेका करम् ।
विगम्त (वृ०) हुम १२७) । कर्त्त
विगम्तिव (वा ४ ७; उ ४ ४) । छङ्.
विगम्तेरुज, विगम्तिव (वर्गी १२४
उ ४६६) । छ. विगम्तिव (वृ० ७
१७) ।

विगम्तज बीन [विष्वाप्स] हुम्ता ज
राति (उ ४४१; वृ० १२२ कुम २७) ।
को पा (वृ० १ २) ।

विगम्तिव नि [विष्वाप्स] हुम्ता हुपा
हुम क्रिया हुपा ठेका क्रिया हुपा (वि ४ ११)
१२, ७७ या १११ वृ० २ २२) ।

विगम्त } धक् [वि + प्य] हुम्ता ठेका
विगम्त } होम्, हुम होता । विगम्त (पा
४१ ६ २, २) । वङ् विगम्तर्ज (वा
१ २) ।

विगम्त } नि [विष्वाप्स] हुम्ता हुपा
विगम्त } उपलब्ध (वि १ ११) वाक्य
१ १—पा ११ १ १४—पा ११ १

वङ्ग मुग ४४४ वागु ११० वृ० २
१२२) । २ वङ्ग-विटोपा विगम्तपाय
वेरं वङ्गमेतल हुम्ति' (वृ० २१) ।

विगम्त केही विगम्त । विगम्ते (वा
४११) ।

विगम्तव केही विगम्तज (उ २१४ टी) ।

विगम्तिव केही विगम्तिव (वृ०) ।

विगम्तिव पु [वि] वृत्त की एक वाणि
(वृ० १—पा ४७) ।

विट् केही विडङ् (मल २१४ पाज) ।

विट् छक् [वि] धनम् करम् उच्छिष्ट
करम् विगम्ता हुपि करम्, धनवि
करम् । विट्ति (सुम १ १२) । कर्त्त
विट्तिव वंग क्रिया कि वाक्यार्थ' (वि
११४) । वङ् विट्तिव (विट्
११२२) ।

विट् पु [वि] धनम्-धनम् धनम्
धनम्ता 'हुम वरिच वंगमी, विट्
कुम्ता वा वरिच विट् कुम्ता न
केह के विट्मी' (कुम २४१) ६ ४
४२२) ।

विट्ताव न [वि] धनम् केही (उ ४ १) ।

विट्ति नि [वि] विगम्तेवामा धनवि
करम्ता । की वी (कृष्ण) ।

विट्तिव नि [वि] वृत्तिव क्रिया हुपा
धनवि क्रिया हुपा विगम्ता हुपा (वर्गी
४२ विट् ७१४ हुपा ११४ १२) । मङ्ग) ।

विट् की [वि] कटी, मोटकी (वीन १२४) ।

केही विट्ति ।

विट् नि [विट्] वरता हुपा (वि १ १४७
वृ०) ।

विट् नि [विट्] १ प्रविट्, पैदा हुपा (सुम
१ १ १ ११) । २ वृत्ति, वेड हुपा
(विट् १) ।

विट् नि [वि] वृत्तिव को कर ठेका हुपा
(वृ०) ।

विट् न [विट्] हुम वर (वृ०
१ २) ।

विट् न छक् [वि + वृम्ता] १ रोक्ता ।
२ वृत्ति करम्, वृत्त । विट् वरिच (वीन)
छङ् विट्तिव (वीन) ।

विट्तावामा की [विट्तावामा] वृत्ता
(वीन) ।

विट् वृत्त [विट्] धनम् 'विट्' (वृ०
वृ० ७—पा ४७) ।

विट् की [विट्] वीट, वृत्ति वर (वृ०
वृ० १२१ वागु १२०) । वृ ४
[वृ] वृत्तवृत्त, वृत्ति (वृ० ४४
१२) ।

विट् की [विट्] १ कर्त्त कर्त्त (वि
२, ४१) । २ वृत्ति-वृत्ति एक करम्,
वृत्ति वृत्ति (विट् ११४ वृ २२४) वृ
१२) । ३ वृत्त वर (वृ १२ २) । ४
वृत्त, वृत्ति विट् वृत्त वृत्त वर
वृत्त का कर्त्ता वृत्त वर (वृ १, ११) ।

विट् की [विट्] वृत्ति वरिच (वि १
११४ वागु ४७ वृत्ति २, वृत्त २ वृ
हुम वर) । केही वृत्ति ।

विट्ति नि [वि] वरिच (वृ०) ।

विट्ति व [विट्तिव] विट्ति वरिच (वृ
१ १२ टी—पा ४६६) ।

विट् पु [विट्] १ वृत्त वा (हुम वृ १
११४ वृ०) ।

विट् न [विट्] वर-वृत्त एक वृत्त का
करम् (वा १ १) ।

विट् वृत्त [विट्] वृत्तवृत्त, वृत्त
वृत्ति के वरिच को वृत्त वर का वर हुपा
वृत्ति के वृत्त का वर वृत्त (वृ० १
१—पा १२ ४७ वृ ४६, वृ०) ।

विट्तिव की [वि] वृत्ति, वृत्ति, वृत्त
(वि १ १७) ।

विट् केही विट् (वृ० १ १—पा १) ।

विट् वृत्त [विट्] १ वृत्त-वृत्त ।
२ वृत्ति वृत्त

वृत्त न वृत्त वृत्त वृत्त

वृत्त वृत्त वृत्त वृत्त वृत्त

वृत्त वृत्त वृत्त वृत्त वृत्त

वृत्त वृत्त वृत्त वृत्त वृत्त

विट् वृत्त [वि + वृम्ता] १ वृत्त
करम्, वृत्त करम् । २ वृत्त वृत्त । ३
वृत्त करम् । विट् वृत्त वृत्त, विट् वृत्त
(वृत्त वृत्त १२४ वृ १२१) । वृ

विजिमिअ वि [विनय] विरोध रूप से कठ
(अन-घोष छाया १ १ टी—पत्र ३)।

विजिमिअ वि [विनयित] नमाया हुवा
(बहक)।

विजय दु [विजय] १ धर्मयुद्ध, प्रलय
आदि अन्तिम युद्धादि विजय, नमस्कार (आवा,
आ ४ ४ टी—पत्र २३१ कुमा ७५
घोष मन्त्र) यहा प्रभु ७)। २ संयम
वर्धन (अम ११)। ३ बरकावाह-विरोध
एक बरक-स्वात (अन्तर २६)। ४ धर्मयुद्ध
हुँकरण। ५ विजय कीज। ६ मनुष्य।
७ वि विजय-युद्ध, विजय। ८ विजय,
युद्ध। ९ विजय केन्द्र हुवा। १० विजय-
संयम (ह १ २४२)। ११ दु. वाक्यानुसार
प्रता कर वल्लभ (पत्र १७)। मंद वि
[बन्] विजय-युद्ध (अ ५ ११६)।

विजय वि [विजय] १ विरोध रूप से नमा
हुवा (घोष)। २ दु. एक वैजयान्त (अम
१७)।

विजय केओ विजया। वजय दु [वजय]
बहक केओ (अम १२२)। सुअ दु [सुअ]
बहो धर्म (पत्र)।

विजयवृत्त केओ विजयवृत्त (पुत्र २६ ४)।

विजयवृत्त दु [विजयवृत्त] एक ठोड का नाम
(अम ७२ टी)।

विजयवृत्त न [विजयवृत्त] विजय-वृत्त। विजय-
वृत्त (अम १२२ टी)।

विजया ओ [विजया] पत्र की बाटा का
नाम (बहक)। वजय दु [वजय] बहक
केओ (ह १ ११)। पुत्र १२४)।

विजय केओ विजय। विजय (अम ७ १
कुमा २१)।

विजयसि वि [विजयसि] विजय-सि विजय
(ह १ ११)।

विजयसि अक [वि + नम] नष्ट होना
विजय होय। विजयसि विजयसि,
विजयसि (अम १२४ टी)। अन्तिम
विजयसि (अम)। बहक. विजयसिमा
(अम)। इ पत्रम (अम ४ १)। ४ १)।

विजयसि केओ विजयसि (वि ११६)।

विजय अ [विजय] विजय, विजय (बहक प्रभु
१ १२१)। १३)।

विजयसि (टी) केओ विजयसि = विजयसि
(अम—पुत्र २२४)।

विजयसि दु [विजयसि] अम एक वैजय-
वृत्त (अम १२४ टी)। २ अम १२४, पत्र १२४
(अम १२४ टी)। ३ पत्र (अम १२४ १७)।
त्य न [विजय] अम-विजय (अम ७ १७)।

विजयसि केओ विजयसि। विजयसि (अम)।

विजयसि अक [वि + नाराय] अन्तिम करना
नष्ट करना। विजयसि (अम १२४)। अन्तिम
विजयसि, विजयसि (अम १२४ १२)।
अन्तिम विजयसि (अम)। अन्तिम विजय-
सि (अम)। इ विजयसि (अम १२४)।

विजयसि पु [विजयसि] विजयसि (अम ७ ४
४२४)।

विजयसि वि [विजयसि] विजयसि (अम १२४)।

विजयसि न [विजयसि] विजयसि, विजयसि
(अम)। २ विजयसि (अम १२४ २)।
अम १२४, अम ७ २४)।

विजयसि अ [विजयसि] विजयसि (अम १२४)।

विजय केओ विजय। विजय (अम ७ १
कुमा २१)।

विजयसि अ [विजयसि] विजयसि (अम १२४)।

विजयसि अ [विजयसि] विजयसि (अम १२४)।

विजयसि केओ विजयसि (अम १२४)।

विजयसि वि [विजयसि] अन्तिम में विजयसि
(अम ७ ४२)।

विजयसि पु [विजयसि] विजयसि (अम १२४)।
अम १२४, अम ७ २४)। २ अम १२४, अम ७ २४)।

विजयसि अ [विजयसि] विजयसि (अम १२४)।

विजयसि केओ विजयसि = विजयसि + इ।

विजयसि वि [विजयसि] विजयसि (अम १२४)।

विजयसि केओ विजयसि। विजयसि (अम १२४)।

विजयसि अक [विजयसि + अम] अन्तिम करना
(अम १२४)। २ अम १२४, अम ७ २४)।

विजयसि वि [विजयसि] विजयसि (अम १२४)।

विजयसि अक [विजयसि + अम] अन्तिम करना
(अम १२४)। २ अम १२४, अम ७ २४)।

विजयसि अ [विजयसि] विजयसि (अम १२४)।

विजयसि वि [विजयसि] विजयसि (अम १२४)।

विजयसि अ [विजयसि] विजयसि (अम १२४)।

विजयसि वि [विजयसि] विजयसि (अम १२४)।

विजयसि अ [विजयसि] विजयसि (अम १२४)।

विजयसि वि [विजयसि] विजयसि (अम १२४)।

विजयसि अ [विजयसि] विजयसि (अम १२४)।

विजयसि वि [विजयसि] विजयसि (अम १२४)।

विजयसि अ [विजयसि] विजयसि (अम १२४)।

विजयसि वि [विजयसि] विजयसि (अम १२४)।

विजयसि अ [विजयसि] विजयसि (अम १२४)।

विजयसि वि [विजयसि] विजयसि (अम १२४)।

विजयसि केओ विजयसि (अम १२४)।

विभिजुज सक [विनि + युज] ओङ्ना
कर्म में सपना प्रवृत्त करना । विभिजुज
(कुप्र १११) ।

विभिज्वलण वि [विनिज्वलण] १ निज्वलण-
युक्त । २ प्रकटित हुआ । ३ निर्वाज,
कटा-युक्त (म ११ २१) ।

विभिज्रमाय रेको विणा = वि + धी ।

विभिज्रण न [विनिज्रण] निज्रण विना
(विशे १७७ संकोष ५१) ।

विभिज्रण धी [विनिज्रण] ऊपर देखो
(संकोष ५१) ।

विभिज्रिअ वि [विनिज्रिअ] वरभूत जिसका
परायण किया गया हो वह (महा रंभा
नाट—विष् ६) ।

विभिइ वि [विनिइ] विना हुआ, विकसित
(वाच) ।

विभिइत्तिवि नि [विनिइत्तिवि] विचारित
होया हुआ (सक) ।

विभिइयुज सक [विनि + यु] संवाला ।
बहु विभिइयुजमाण (वि २ १) ।

विभिण्कम वि [विनिण्कम] संछिन्न संघट्ट
(ज १११) ।

विभिण्कमिअ वि [विनिण्कमिअ] विभिण्क
बाहर निकला हुआ साक्षिकापाठ समी
पदसंदर्भ विभिण्कमिअ (पत्रम १ ५,
२१) ।

विभिणुहु रया विणिणुहु (वि २१५) ।

विभिभिन्न वि [विनिभिन्न] निरूपित
दुर्लभविभिन्नरिक्तमहुरविभासलक्ष्यम्
(एभि ११) ।

विभिमीअ वि [विनिमीअ] पीछा
हूया, मूछ हूया 'विभिमतुलमविणिमोह-
पण्ड ४ गुण मज्ज कोपाय' (या २) ।

विभिमुअ रेको विभिमुअ (वि २१५) ।

विभिमुय रया विभिमुय । बहु विभिमुय
(मो १ ५५) ।

विभिन्मविअ वि [विनिन्मवि] विचरित
कयाया हूया, इउ (ज ७२७ टो) ।

विभिन्माय न [विनिन्माय] रचना इति
(विश ११११) ।

विभिन्मय रेको विभिन्मयिअ (या १२१,
२१५, वाच महा) ।

विभिन्मुअ वि [विनिन्मुअ] वरिष्ठाका 'सम्भ
कर्मविणिन्मुअ तं बयं भूम माहुरं' (उत्त
२२, ३४) ।

विभिन्मुय वि [विनिन् + मुय] छोड़ना
परिष्ठाप करना । बहु विभिन्मुयमाण
(एमा १ १—पत्र ५१, वि ५८५) ।

विभिण रेको विणिण (अभि) ।

विभिण्ड रेको विभिण्ड । विभिण्डन (सक
८ १५) । बहु विभिण्डमाण (भाषा १
५, ४ १) ।

विभिण्ड वि [विनिण्ड] १ पीछे हटा हुआ ।
२ प्रकट विभिण्ड वि पण्डु (विश १५६) ।

विभिण्डयया धी [विनिण्डयया] निवृत्ति
(उत्त २२, १) ।

विभिण्य रेको विभिण्य (मुना ११५, धी
या ७१ कुप्र १८२) ।

विभिण्यिअ धी [विनिण्यिअ] निवृत्ति उपरम
(कुप्र १८२, पत्रम) ।

विभिण्डे दु [विनिण्डे] प्रतिबन्ध घट्मन्
(अभि) ।

विभिण्ड सक [विनि + यु] निवृत्त
होना पीछे हटना । बहु विभिण्डमाण
(भाषा १ ५, ४ १) ।

विभिण्डय रेको विनिण्डय (राज) ।

विभिण्डयया धी [विनिण्डयया] निरर्तन
विचम (अप १७ १—पत्र ७२७) ।

विभिण्डिअ वि [विनिपातव] मोचे गिर
हूया (वे १ १५७) ।

विभिण्डिअ रेको विभिण्डिअ (ज ७२७ टो) ।

विभिण्डिअ वि [विनिपातव] मार विचने-
काया (या ११) ।

विभिण्डिअ रेको विभिण्डिअ ।

विभिण्डिअ वि [विनिपातव] एक तरह का
मच्छ (राज) ।

विभिण्डा वि [विनिपातव] मार निचय
हूया ध्यातवित (ज १८८ टो महा न
२५, विष्ठा ७२) ।

विभिण्डा सक [विनि + पातव] मार
पिठना । क्वक विभिण्डाईव (पत्रम
५५ न) ।

विभिण्डिअ रेको विभिण्डिअ (वे १
११८) ।

विभिण्डा दु [विनिपातव] १ निपात
विभाषण } अन्तिम पत्रम विभाषण पर
क्षेत्रेण वि विद्वो विणिनासो वि न लोपमि
(वर्ग १२५ १२५, स २१५ ७१२) ।
२ मरण मीत (वे ११ १५ पत्रम या
१ २) । ३ संसार (राज) ।

विभिण्डाण न [विनिपातव] मार पिठना
(पत्रम ४ ५८) ।

विभिण्डा सक [विन + वारय] रोक्ना
निवारण करना नियंत्रण करना । विभिण्डा
(अभि) । क्वक विभिण्डाअव (नाट—
मुष्ण १५४) ।

विभिण्डाण न [विनिपातव] १ निवारण
प्रतिषेध । २ वि निवारण करनेवाला (पंचा
७ १२) ।

विभिण्डारि वि [विनिपातव] निवारण-
कर्ता (पंचा ७ १२) ।

विभिण्डारि वि [विनिपातव] प्रतिषेध
निवारण (महा) ।

विभिण्डिअ वि [विनिपातव] १ उचित, स्थित
(कुप्र १२२) 'सकर्मविभिण्डिअविचरिअ' (ज
५ १) । २ साक्षक, द्योतक (भाषा) ।

विभिण्डिअ रेको विभिण्डिअ (ज ७८६) ।

विभिण्डिअ रेको विभिण्डिअ (विश २६१६
उत्तर १२७ भाषक २२१, २२२ वंश १
१) ।

विभिण्डिअ वि [विनिपातव] निवारण, दुहा हुआ
उपरोध, उपरोध 'वयं विमो वि न वि
पतोद्वर्तयतेविभिण्डिअ' (पत्रम ४६) ।

विभिण्डिअ वि [विनिपातव] जन्म हुआ
अपिठ (वि १४ ४) ।

विभिण्डिअ दु [विनिपातव] १ स्थिति ज
बैठन । २ निवारण रचना (पत्रम) ।

विभिण्डिअ वि [विनिपातव] स्वार्थ
हूया हुआ (या १७८ गु १ ६२) ।

विभिण्डिअ वि [विनिपातव] १ विभाषण मनुष्य (६ ७
१८) ।

विधि—विधिभ

विधि देखो बधि = बधित (पत्र)।

विधु दु [विधु] १ भस्मात् वेदांशस्य के विधा का नाम (सम १११)। २ अथवा गन्ध का परिपक्व होना (अ २ १—पत्र ७७)। ३ धुनेवा के राजा धन्यकृष्ण का नववा पुत्र (सं १)। ४ एक बैल मुनि विष्णुधृमार नामक मुनि (भुजक ११)। ५ एक भेरी (अ १ १४)। ६ बाहुने नाचण घोड़य। ७ व्याक। ८ बलि दान। ९ धुआ। १० एक स्तुति-कर्ता मुनि (हि २ ७३)। ११ धर्म बलि के शिष्य एक बैल मुनि (पत्र)। १२ श्री. ग्याहने जिनके की माला का नाम (सम ११)। कुमार दु [कुमार] एक विष्णुसत् ११ मुनि (पत्र)। "सिरी श्री [श्री] एक शास्त्रज्ञ-पत्नी (यह)। यही विधु।

वितंड देखो विटह (पात्र)।

विटह वि [विटह] दुष्प्राप्त-विह निरुद्ध (अ २१४ टी)।

विटह दु [विटह] १ बाध का एक प्रकार का रुद्ध (अ २ १—पत्र ११)। २ एक महापुरु (भुजक २—पत्र २१५)। देखो विभट। ३ देखो विधय = विटह (अ ४ ४—पत्र २७१)।

विटह न [वि] कार्य काम काम (हि ७ १४)।

विटह वि [विटह] विशेष दृष्ट (परह १ १—पत्र १)।

विटह दु [विटह] १ एक महापुरु कर्वाणिक है विटह (अ २ १—पत्र २१५)। २ वि कक-पीठ, बप हुआ (यह)।

विटह श्री [विटह] एक मन्त्र-पत्नी (अ ३, ४—पत्र १११)।

विटह वि [विटह] १ द्विषक। २ प्रतिद्वन्द्व (पात्र)।

विटह देखो विभट = वि + वृ। विटहप विटहपो (वि १ ४३५)।

विटह (अ) बक [वि + स्तराय] विस्तार करना। विटह (वि)।

विटह देखो विटहण = विटहण (पत्र)।

विटह वि [विटह] रुद्ध, विटहकय (पत्र)।

विटह वि [विटह] मिथ्या प्रवृत्त, भ्रम (पात्र कय सख)।

विटिभिच्छिद्य वि [विटिभिच्छिद्य] फल का उच्छिद्य बाधा (अ)।

विटिभिच्छिद्य देखो विटिभिच्छिद्य (विट ११)।

विटिच्छिद्य देखो विटिच्छिद्य (अ)।

विटिगिच्छिद्य [वि + चिच्छिद्य] १

विचार करना, चिन्तन करना। २ संलग्न करना। ३ मित्रा करना। विटिगिच्छिद्य (सम २, २११, २, २१२, २, २१३)।

विटिगिच्छिद्य देखो विटिगिच्छिद्य (पात्र १ १ ११, ११, ११, ११, ११, ११)।

विटिगिच्छिद्य देखो विटिगिच्छिद्य (वि ७४ २१५)।

विटिगिच्छिद्य देखो विटिगिच्छिद्य (वि ७४ २१५)।

विटिगिच्छिद्य देखो विटिगिच्छिद्य (वि ७४ २१५)।

विटिगिच्छिद्य देखो विटिगिच्छिद्य (वि ७४ २१५)।

विटिगिच्छिद्य देखो विटिगिच्छिद्य (वि ७४ २१५)।

विटिगिच्छिद्य देखो विटिगिच्छिद्य (वि ७४ २१५)।

विटिगिच्छिद्य देखो विटिगिच्छिद्य (वि ७४ २१५)।

विटिगिच्छिद्य देखो विटिगिच्छिद्य (वि ७४ २१५)।

विटिगिच्छिद्य देखो विटिगिच्छिद्य (वि ७४ २१५)।

विटिगिच्छिद्य देखो विटिगिच्छिद्य (वि ७४ २१५)।

विटिगिच्छिद्य देखो विटिगिच्छिद्य (वि ७४ २१५)।

विटिगिच्छिद्य देखो विटिगिच्छिद्य (वि ७४ २१५)।

विटिगिच्छिद्य देखो विटिगिच्छिद्य (वि ७४ २१५)।

विटिगिच्छिद्य देखो विटिगिच्छिद्य (वि ७४ २१५)।

विटिगिच्छिद्य देखो विटिगिच्छिद्य (वि ७४ २१५)।

विटिगिच्छिद्य देखो विटिगिच्छिद्य (वि ७४ २१५)।

विटिगिच्छिद्य देखो विटिगिच्छिद्य (वि ७४ २१५)।

विटिगिच्छिद्य देखो विटिगिच्छिद्य (वि ७४ २१५)।

विटिगिच्छिद्य देखो विटिगिच्छिद्य (वि ७४ २१५)।

विटिगिच्छिद्य देखो विटिगिच्छिद्य (वि ७४ २१५)।

विटिगिच्छिद्य देखो विटिगिच्छिद्य (वि ७४ २१५)।

विटिगिच्छिद्य देखो विटिगिच्छिद्य (वि ७४ २१५)।

विटिगिच्छिद्य देखो विटिगिच्छिद्य (वि ७४ २१५)।

विटिगिच्छिद्य देखो विटिगिच्छिद्य (वि ७४ २१५)।

विटिगिच्छिद्य देखो विटिगिच्छिद्य (वि ७४ २१५)।

विटिगिच्छिद्य देखो विटिगिच्छिद्य (वि ७४ २१५)।

विटिगिच्छिद्य देखो विटिगिच्छिद्य (वि ७४ २१५)।

विटिगिच्छिद्य देखो विटिगिच्छिद्य (वि ७४ २१५)।

विटिगिच्छिद्य देखो विटिगिच्छिद्य (वि ७४ २१५)।

विटिगिच्छिद्य देखो विटिगिच्छिद्य (वि ७४ २१५)।

पठित। २ मृत (हि १, १२५)। १० संक्षिप्त, पूर्ण (सुर ४ ११, यहा)। प्याय वि [प्याय] पूर्ण प्राय (सुर ७ ८४)। देखो बट्ट = बट्ट।

पिच देखो पेश = पेश (सुप्रति १ ८)।

पिच देखो पिच (अ २२२)।

पिच वि [पि] १ पठित प्रतिमातो। २

पुं विलसित, विसास। ३ गर्व धृष्टकार (हि ७ ११)।

पिच दु [पिच] घनाचार, बहार (पत्र २१ १८ वृत्त २ ४८ म्पि)।

पिच देखो पिच (सुप्रति १ ८)।

पिच देखो पिच (सुप्रति १ ८)।

पिच देखो पिच (सुप्रति १ ८)।

पिच देखो पिच (सुप्रति १ ८)।

पिच देखो पिच (सुप्रति १ ८)।

पिच देखो पिच (सुप्रति १ ८)।

पिच देखो पिच (सुप्रति १ ८)।

पिच देखो पिच (सुप्रति १ ८)।

पिच देखो पिच (सुप्रति १ ८)।

पिच देखो पिच (सुप्रति १ ८)।

पिच देखो पिच (सुप्रति १ ८)।

पिच देखो पिच (सुप्रति १ ८)।

पिच देखो पिच (सुप्रति १ ८)।

पिच देखो पिच (सुप्रति १ ८)।

पिच देखो पिच (सुप्रति १ ८)।

पिच देखो पिच (सुप्रति १ ८)।

पिच देखो पिच (सुप्रति १ ८)।

पिच देखो पिच (सुप्रति १ ८)।

पिच देखो पिच (सुप्रति १ ८)।

पिच देखो पिच (सुप्रति १ ८)।

पिच देखो पिच (सुप्रति १ ८)।

पिच देखो पिच (सुप्रति १ ८)।

पिच देखो पिच (सुप्रति १ ८)।

पिच देखो पिच (सुप्रति १ ८)।

पिच देखो पिच (सुप्रति १ ८)।

पिच देखो पिच (सुप्रति १ ८)।

पिच देखो पिच (सुप्रति १ ८)।

पिच देखो पिच (सुप्रति १ ८)।

पिच देखो पिच (सुप्रति १ ८)।

पिच देखो पिच (सुप्रति १ ८)।

विपक्षी शब्द [विपक्षी] बाध-विरोध बोधा
(पक्ष १ ४—पक्ष १८ २, ३—पक्ष
१४६)।

विपक्ष वि [विपक्ष] पक्ष हुआ (उप ५
२११)। देखो विपक्ष।

विपक्ष देखो विपक्ष न निर्दिष्टविपक्ष-
लक्षणा (मुद्रा १ ३ २४)।

विपक्षिय वि [विपक्षिय] विपक्षी दुरमन
(संशोध २६)।

विपक्षिय न [विपक्षिय] बाधकें जैन
धर्म धर्म का मुख-विरोध (सम १२७)।

विपक्षनाम वि [विपक्षनाम] १ जो पक्षमा
नामा हो वह (भा २ सं ८६)। 'धामानु
धामानु' विपक्षनामानु संकेतियों' (संशोध
४४)। २ दण्ड होता जलता 'उत्तरिणा-
ननामविपक्षनामस्य नह निर्ध' (पक्ष
४१)।

विपक्षय देखो विपक्षय (पक्ष)।

विपक्षय देखो विपक्षय (कट—मुद्रा
२२६)।

विपक्षयि वि [विपक्षयि] देखो विपक्षयि (मिसे
२११४ समस्त २२७)।

विपक्षिये सक् [विपक्षि + सिप्] लिपे
कला। विपक्षियेइयय (मन ३, ७—
पक्ष २१४)।

विपक्षयि सक् [विपक्ष + माद्य] प्रणया
कला। विपक्षयि (भाषा १ ३ २ २;
वि २४४)।

विपक्ष देखो विपक्ष = विपक्ष (बाध ३)।

विपक्ष देखो विपक्ष = विपक्ष (भा २३२
का पक्ष)।

विपक्षविधि (द्यो) वि [विपक्षविधि] विपक्ष
विपक्ष का धर्म विपक्ष हो वह
'धर्म' धर्मिय' पक्ष' धर्म' धर्म' विपक्ष-
विधि' (हस्त १२१)।

विपक्षय सक् [विपक्ष + यद] १ कान-
रुध कला हिंसा कला। २ जो कानका
होय करता। ३ पक्ष उभय होता, उभ-
यम। विपक्षय, विपक्षय विपक्षय
(भाषा १ ७०)। देखो विपक्षय।

विपक्षय वि [विपक्षय] विरोध
पक्षयय विपक्षय धर्मय (पक्ष ११३
२२)।

विपक्षय न [विपक्षय] शरीर की
मांसरूप-प्रमाण धर्मि विपक्ष (भाषा २
न १)।

विपक्षयि वि [विपक्षयि] विपक्षि
युक्ति नामक मन्द-धर्मय' देखो
विपक्षि कहेह धर्मयि विपक्षयि' (हृ ३)।

विपक्षयि देखो विपक्षयि (पक्ष)।
विपक्षयि धक् [विपक्ष + रस] १
स्वस्थि होय विपक्ष। २ मूत्र कला। नह
विपक्षयि (धक् २२)।

विपक्षयि धक् [विपक्ष + यम्] १ नह
कला, कलाय को प्राप्त होता। २ विपक्ष
होय कला होता। विपक्षयि (वि ३
१२७)। नह विपक्षयि (मन ७
१—पक्ष १२२)।

विपक्षयि वि [विपक्षयि] कलाय को
प्राप्त (वि २१३)।

विपक्षयि सक् [विपक्ष + यम्] १
विपक्ष कला, उभय कला। २ नह कला
कलाय को प्राप्त कला। विपक्षयि
(स ११३)। नह विपक्षयि (उभय)।

विपक्षयि पु [विपक्षयि] १ कलाय
प्राप्ति (भाषा: यी)। २ उभय परिणाम
विपक्षयि धर्मय (मन ३ १११)।

विपक्षयि वि [विपक्षयि] कलाय
को प्राप्त (मन १ १ ६—पक्ष २११)।

विपक्षयि सक् [विपक्ष + पाप्] इतर
उभय धर्मय। विपक्षयि (उभय २३ ७)।
विपक्षयि देखो विपक्षयि (पक्ष)।

विपक्षयि सक् [विपक्ष + वासय] १
पक्षय। विपक्षयि (भाषा १ १२—
पक्ष १०३)। नह विपक्षयि (मन
१०३)।

विपक्षयि देखो विपक्षयि (मन १ १ ४;
भा २४ ७)।

विपक्षयि धक् [विपक्ष + धय] दूर
मायय नह विपक्षयि (स २११)।
विपक्षयि देखो विपक्षयि (वि २३२)।

विपक्षयि वि [विपक्षयि] देखो कला
(भाषा)।

विपक्षयि देखो विपक्षयि (पक्ष)।

विपक्षयि देखो विपक्षयि। नह, विपक्षयि
(पक्ष)।

विपक्षयि देखो विपक्षयि (पक्ष)।

विपक्षयि वि [वि] विपक्षयि, विपक्षयि (वि
७ ११)।

विपक्षयि देखो विपक्षयि (भाषा १ १—पक्ष ७४;
मन २ १—पक्ष १६)। विपक्षयि
'विपक्षयि' धर्मय में होने कला बाधक
कलाय कला (सम १२४)।

विपक्षयि वि [वि] विपक्षयि, विपक्षयि (वि ७ २७)।

विपक्षयि पु [विपक्षयि] विपक्षयि (वि १ १०३
महा)।

विपक्षयि पु [विपक्षयि, विपक्षयि] १ मूत्र धीर विपक्ष
न विपक्षयि। २ विपक्षयि मूत्र 'मूत्रयि' धर्मय
विपक्षयि विपक्षयि धर्मय विपक्षयि विपक्षयि
म पक्ष पाक्षयि' (विपक्ष ७०१ धीर महा)।

विपक्षयि देखो विपक्षयि (पक्ष)।

विपक्षयि वि [विपक्षयि] विपक्षयि हुआ
इतर धर्मय पक्षयि (वि २ ३, मन)।

विपक्षयि सक् [विपक्ष + क] इतर धर्मय पक्षयि
विपक्षयि। विपक्षयि (उभय)। नह विपक्ष-
यि (भाषा १ १—पक्ष १२७)।

विपक्षयि सक् [विपक्ष + युज] १ विपक्ष
यि (भाषा १ १—पक्ष १२७)।
विपक्षयि सक् [विपक्ष + युज] १ विपक्ष
यि (भाषा १ १—पक्ष १२७)।

विपक्षयि पु [विपक्षयि] विपक्षयि धर्मय
विपक्षयि। विपक्षयि (उभय)। नह विपक्ष-
यि (भाषा १ १—पक्ष १२७)।

विपक्षयि वि [विपक्षयि] विपक्षयि धर्मय
विपक्षयि (उभय)। नह विपक्षयि (भाषा १ १—
पक्ष १२७)।

विपक्षयि देखो विपक्षयि। नह, विपक्षयि (भाषा १ १—
पक्ष १२७)।

विपक्षयि देखो विपक्षयि (वि १६१)।

विपक्षयि वि [विपक्षयि] विपक्षयि धर्मय
विपक्षयि (वि १ १ ४)।

विष्णुगिरिस्तु [विप्रचर्य] इति पाठश्चा
 न्न दृश्यते 'वेत्ताविष्णुगिरिस्तु' (बर्मसं
 १२१७)।

विष्पगाख सङ् [नाशाय विष्प + गाखन्]
 गाय करण। विष्पगाख (इ ४ ११) पि
 ३३३)।

विष्णुपञ्चिका वि [नाशित, विष्णुपञ्चिका]
नाशित (कुम्भा) ।

निष्पगिद्ध नि [निष्पगिद्ध] १ दूरवर्ती दृष्टि पर
स्थित (स २२१) । २ दीर्घ अन्वय 'साह
निष्पगिद्धे निष्पगिद्धे' (छाया १ १३) ।

विष्पचय एक [विप्र + त्यज] लोभप्र
प्राय करण । क. विष्पचयइत्य (तं
३३) ।

विष्णुस्य वृ [विप्रत्यय] १ ध्वि, संशय
(उत्तर २३ २४) । ए वि प्रत्यय-संज्ञित
अक्षरवत्तया (उत्तर) ।

विष्णुसहस्रनाम [विष्णुसहस्रनाम] पवित्र (सुभाषित)
१ २—यत् ७३ पंथा १४ १ पं
१२१)।

विष्णुग्रह सक [विप्र + ह] परिष्ठाप करण
 छोड़ देना : विष्णुग्रह विष्णुग्रहि विष्णुग्रो
 (कम्, ज्वात सूच १ १ ३ उत ७; ४)

विष्णुसहस्रनाम (वि ३१) । ब्रह्म
विष्णुसहस्रनाम (अ २, २—पद ३३, ३४,
३५) । संक्ष. विष्णुसहस्रनाम विष्णुसहस्रनाम
(अ २३, २४, २५) । ब्र. विष्णुसहस्रनाम

विष्णुजहियम् (छाया १ १—पत्र ४८
वि ३७१) छाया १ १ —पत्र २४१)।
विष्णुजह ॥ विष्णुजह ॥ विष्णुजह ॥

एक परिष्कृत—संस्कृत-शब्द (सं. १२४) ।

विष्णुब्रह्मा } त्याद, परिध्याय (जात २४
७३ श्रीवा विद्ये ३ ६: पण्ड ३६—५
५४७)।

विष्णुजिह्व वि [विष्णुजिह्व] परिष्कृत (१९९९) ।
विष्णुजिह्व विष्णुजिह्व (नं०) ।

विष्पिण्डि मन्त्र [विपरि + इ] विपरित होन
उच्यते होन् । विष्पिण्डि (मुद्रा १ १२ १)

विष्णुविष्णाय व [वसतिष्णाय] प्रतिष्णाय
 षट्काल (गुह्या १ १३—पत्र २४३) ।
 विष्णुविष्णाय व [विमतिष्णाय] विमतिष्णाय

विष्पट्टिषण्ण देवो विष्पट्टिवत्त (पद ७७
टी)।

विष्णुविष्णु श्री [विष्णुविष्णु] १ विष्णु
(विष् २४) । २ प्रसिद्धा-नैव (ज ५१६)
विष्णुविष्णु वि [विष्णुविष्णु] १ विष्णु

विशेष रूप से स्वीकार किया हो वह, 'मिथ्या-
पपकर्मोऽपि परिणतकर्मालोऽपि २ मिथ्यातं किम्
विशेषेण बाधे वाह याभि इत्येता' (श्रुत्या १)

१३—यत्र १७७) । २ विरोध-प्राप्त विरोधी
मना हुआ (धाया ? १ ३) सुम ? ३
१ २१) ।

विष्पक्षिदेव } सङ्ग [विप्रति + नेवृष]
 विष्पक्षिदेव } १ बाजना । २ विचारण ।
 विष्पक्षिदेव (मात्रा १ २, ४ ४) विष्पक्षि
 देव (मात्रा १ २, ४ ४) विष्पक्षि

बिष्पबिसिद्ध नि [बिप्रतिपिद्ध] धान्य म
असंगत (अनर ३) ।

विष्णुऋषिः वि [विष्णोय] प्रसिद्ध (मान
१५७) ।
विष्णुऋषिः वि [विष्णोय] प्रसिद्ध (मान
१५७) ।

विष्णुजय १ एक [विष्णु + जय] १ गणना
विष्णुजय २ एक उत्तर होना । विष्णुजय
(सूत्र १ १२ १७) । एक विष्णुजय

(एज)।
विष्णुस्तन धक [विप्र + नञ्] कट होता
विनाश-प्राप्त होता। विष्णुस्तन (कट)

विष्णुजास दु [विष्णुजास] विष्णु (बर्मा
१७) ।

विष्णुतारक (बमोदि १४७) । केने विष्णुतार
 ऐमदि (सी) (माट—रुज ७१) ।

विष्णुमाय १ [विष्णुमाय] विविध प्रमाण

(१५११४१)।

विष्णुमुखा वक्त्र [विप्र + मुख] वीर्य
मुक्त करता । कर्म विष्णुमुखा (पृष्ठ २६,
४१) ।

विष्णुमुक्तं वि [विष्णुमुक्त] विष्णु (पौनः पुर
१ २१७) मुपा ४४९) ।
विष्णुम न [वि] १ कल-विष्णु । २ शन । ३

वि विप्रः । ४ पुं द्वे (वि ७ प ३) ।
विप्रसारक [विप्र + तारय] ठका ।
विप्रसारति विप्रसारैः (कप्र ३; वि ८) ।

कर्म विष्णुसारोमह (बुध ४४) । उह-
विष्णुभारिष्म (पि ५) ।
विष्णुभारणा की [विष्णुभारणा] बंधना

अतः (सुप्र ४० श्लो २४) ।
विष्णुमाश्रितं च [विप्रवारितं] शक्तिं तत्र
हृत्वा (श्लो १ १) ।

विष्णुरयं वि [वे] क्रियेव बोद्धव्यः 'अरय' इति
 इतिमुक्तप्राकारेण विष्णुर्लोकं समासेन चैव
 महादेवः पञ्चमीयं पादौ (पानं) ब्रह्मदेवित्

बिष्णुसामुस कैळी विपरासुस भावती कैष्णवी
 गोपेति विष्णुसामुसि धनस्य धनस्य वा.

एतद् विषयविपरिणाममिति (अत्र) ।
विपरिणाममिति विपरिणाम । न विपरि
णाममिति (अत्र) ।

विष्परिणम केनो विपरिणम (यस १, ७
टी—यस २१६ काल) ।
विष्परिणम केनो विपरिणम = विपरि +

खमम् । विपरिहामेति विपरिहामेति
(घाता) । अङ्ग. विपरिहामश्चा (घाते) ।
विपरिहामश्चो विपरिहामश्चो = विपरिहाम

(ध्यातु भज ३, ७ टी—यत् २३६) ।
विष्परिणामिय शक्तो विपरिणामिय (नम १
१—यत् २३६) ।

विष्परियासः षष्ठः [विपरि + आसम्]
 व्यत्ययः करणम्, अन्तः करणम् । विष्परियासेः
 (निष्ठा ११) । षष्ठः विष्परियासेः (निष्ठा ११) ।

विष्णुविद्यासु पुं [विष्णुसंज्ञ] १ अथर्व-
विष्णुविद्या (आथर्वण सूत्र १ ७ ११) । २
परिब्रज्यमान (सुत्र १ १२ ११) । १ ११ १

13)

विष्णुपुराण न [विष्णुपुराण] १ विष्णुपुराण
निकस (भाषक २४४ मुर २ २१७) । २
स्वप्न शिवान (पद्य) ।

विष्णुरिय नि [विष्णुरिय] विष्णुमित्र (गुप्ता
२ ४१ पद्य) ।

विष्णुनि नि [विष्णुनि] विष्णुनि प्रमुक्त
'यं यं पुरा विष्णुस्वर्गमिवारं गुरी ह्यरं'
(कथा ४४) ।

विष्णोदय वु [विष्णोदय] धोदा (गाठ—
छन्द २ ; नि १११ ; प्राय) ।

विष्णुद यो विष्णुद । वड विष्णुदमाय
(भाषा १ ४ १ १) ।

विष्णुद सक् [वि + पाठय] १ विष्णुद
कथा । २ वक्राया । वड विष्णुदिय
(भाषा २, ३ २, १) ।

विष्णुद यक् [वि + वृद्ध] कथा । वड
विष्णुद कि विष्णुद वक्रमममय र्णो
(गुप्ता ४२) ।

विष्णुद यो विष्णुद (गुप्ता २२) ।

विष्णुद यो [विष्णुदय] विष्णुद यो
काव्येयता (पद्य २, १) ।

विष्णुद नि [विष्णुद] १ विष्णुद यड । २
माहि (मुय १ १ २ २) ।

विष्णुद नि [विष्णुदय] विष्णुदो वाक्क
(वर्णित ४४२) ।

विष्णुद नि [विष्णुद] वामुद (विदि २११) ।
विष्णुद (सी) नीके यो (नि १११) ।

विष्णुद वु [विष्णुद] १ वड विष्णुद (पाठ
मुर १ ४२) । २ विष्णुद विष्णुद (मुर १
४२) । वड वु [विष्णुद] एक प्रविड
कथाय (गुप्ता १२) । वड वु [विष्णुद]
इय (मुर १ १७२) । मुर न [विष्णुद] स्वर्ग
(गमय १७२) ।

विष्णुद यड वु [विष्णुदय] इय (भाषक १४) ।

विष्णुद वु [विष्णुद] वामुद (वर्णित ४२) ।

विष्णुद यो विष्णुदय (कथा) ।

विष्णुदय न [विष्णुदय] वड कथा,
'मन्त्रवर्णविष्णुदय' (मय १२१) ।

विष्णुदय नि [विष्णुदय] १ विष्णुदय
'मुद्रवर्णविष्णुदय' (मय १२१) । २
वाम-वड (विदि १७४) ।

विष्णुद वु [विष्णुदय] विष्णुद वीसा
होता वमिर्ग वीसा विष्णुदो विष्णुदो
विष्णुदो य' (पाठ) । यो विष्णुदय ।

विष्णुद यो विष्णुद (मय १२१ कथा
४ १७४) ।

विष्णुद नि [विष्णुदय] विष्णुद-वाम-वड
(मय) ।

विष्णुद नि [विष्णुदय] १ विष्णुद यड,
वड वु वड वु (भाषा १ १ ४ १) ।

२ वु वड वड वड वड वड वड वड
वड वड वड वड वड वड वड वड

विष्णुद वु [विष्णुदय] वड वड वड वड
विष्णुद (पाठ) ।

विष्णुद नि [विष्णुदय] विष्णुद यड (प्रति
४) ।

विष्णुद वु [विष्णुदय] १ विष्णुद (पाठ
वड २४, १२७ गुप्ता) । २ वड वी वड वड

के वड वड वड वड वड वड वड वड
विष्णुद यड वड वड वड वड वड वड

विष्णुद यड वड वड वड वड वड वड
विष्णुद यड वड वड वड वड वड वड

विष्णुद यड वड वड वड वड वड वड
विष्णुद यड वड वड वड वड वड वड

विष्णुद यड वड वड वड वड वड वड
विष्णुद यड वड वड वड वड वड वड

विष्णुद यड वड वड वड वड वड वड
विष्णुद यड वड वड वड वड वड वड

विष्णुद यड वड वड वड वड वड वड
विष्णुद यड वड वड वड वड वड वड

विष्णुद यड वड वड वड वड वड वड
विष्णुद यड वड वड वड वड वड वड

विष्णुद यड वड वड वड वड वड वड
विष्णुद यड वड वड वड वड वड वड

विष्णुद यड वड वड वड वड वड वड
विष्णुद यड वड वड वड वड वड वड

विष्णुद यड वड वड वड वड वड वड
विष्णुद यड वड वड वड वड वड वड

विष्णुद यड वड वड वड वड वड वड
विष्णुद यड वड वड वड वड वड वड

विष्णुद यड वड वड वड वड वड वड
विष्णुद यड वड वड वड वड वड वड

विष्णुद यड वड वड वड वड वड वड
विष्णुद यड वड वड वड वड वड वड

(मय २२१ टी) । २ वड-विष्णुद (मुय २
२ २२) । ३ विष्णुद वड वड । ४ वड
वड वड (पद्य १ ४—मय १९) । यो
विष्णुद यड वड वड ।

विष्णुद वड वड [वि] वड-विष्णुद 'वड वड वड
वड वड वड वड वड वड वड वड वड वड

विष्णुद वड वड [वि + वड] वड वड वड
वड वड वड वड वड वड वड वड वड वड

विष्णुद वड वड [वि + वड] वड वड वड
वड वड वड वड वड वड वड वड वड वड

विष्णुद वड वड [वि + वड] वड वड वड
वड वड वड वड वड वड वड वड वड वड

विष्णुद वड वड [वि + वड] वड वड वड
वड वड वड वड वड वड वड वड वड वड

विष्णुद वड वड [वि + वड] वड वड वड
वड वड वड वड वड वड वड वड वड वड

विष्णुद वड वड [वि + वड] वड वड वड
वड वड वड वड वड वड वड वड वड वड

विष्णुद वड वड [वि + वड] वड वड वड
वड वड वड वड वड वड वड वड वड वड

विष्णुद वड वड [वि + वड] वड वड वड
वड वड वड वड वड वड वड वड वड वड

विष्णुद वड वड [वि + वड] वड वड वड
वड वड वड वड वड वड वड वड वड वड

विष्णुद वड वड [वि + वड] वड वड वड
वड वड वड वड वड वड वड वड वड वड

विष्णुद वड वड [वि + वड] वड वड वड
वड वड वड वड वड वड वड वड वड वड

विष्णुद वड वड [वि + वड] वड वड वड
वड वड वड वड वड वड वड वड वड वड

विष्णुद वड वड [वि + वड] वड वड वड
वड वड वड वड वड वड वड वड वड वड

विष्णुद वड वड [वि + वड] वड वड वड
वड वड वड वड वड वड वड वड वड वड

विष्णुद वड वड [वि + वड] वड वड वड
वड वड वड वड वड वड वड वड वड वड

विष्णुद वड वड [वि + वड] वड वड वड
वड वड वड वड वड वड वड वड वड वड

विष्णुद वड वड [वि + वड] वड वड वड
वड वड वड वड वड वड वड वड वड वड

विष्णुद वड वड [वि + वड] वड वड वड
वड वड वड वड वड वड वड वड वड वड

विभय—विमन

विभय रेखो विभज् । विभय, विमयति (कम्म
१ ११; भाषा उक्त ११ २३) ।

विभयणा औ [विमज्जना] विभय (सम्म
१ १) ।

विभर एक [वि + र] विलसत् करता
भूत जाता । विभर (पि १११) ।

विभय रेखो विहय (उभ मङ्ग) ।

विमवज्ज न [विमयज्] विम्व-करण नरक
करता (एव) ।

विमाइम नि [विमाइय] विमाग-योग (अ
१ २—पत्र १३४) ।

विमाइम नि [विमागिम] विमाव से बना
हुया (अ १ २—पत्र १३४) ।

विमाग पु [विमाग] घंट, बाँट (कल
छल) ।

विमागिम रेखो विमाइम = विमागिम (अ
१ १४१) ।

विमाय रेखो विमाग (रंभ) ।

विमाय न [विमाव] प्रकार काति ठेक
(एव) ।

विमाय पु [विमाय] परिचय 'कस्त पिच-
मरुताविमायो न हो' (घ ११०) ।

विमाय एक [वि + माय] १ विचार
करना ब्याप्त करना । २ विवेक से प्रयत्न
करना । ३ समझना । ४ विचार, विम
येव, विमयेवमाय (अ १ १०—अ १३०
टी. ४००) । ५ विचार, विमायिज्जत् विमा
विज्जमाय (वि ८ ३२; य ४३) । ६ वि
विमावचय (अ) । ७ विमावणीय (अ ८
२३४) ।

विमाय रेखो विमव 'उपा महाविमवेसु
पुत्राय योद्धा मय य' (मङ्ग) ।

विमायसु पु [विमायसु] १ वृद्ध, रवि । २
रविचार (पत्रम १० १००) । रेखो
पिह्वसु ।

विमावित नि [विमावित] विचारित
(एव) ।

विमावत एक [वि + भाव] १ विरोध कर
न करना स्पष्ट करना । २ व्याख्या करना ।
३ निकट से विचार करना । विमवत (पत्र
७१ टी) । ४ विमावित्यव्य (अति १६

पिङ्ग १२४) । हङ्क विमावितं (विरो
१ ४४) ।

विमासय न [विमापय] व्याख्या व्याख्यात
(विच १४२८) ।

विमासय नि [विमायक] व्याख्याया
व्याख्या-कर्ता (विरो १४२२) ।

विमासा औ [विभाया] १ विद्वत्-विधि
पाठिका प्राप्ति, मन्त्रा विधि धीर स्तोत्र का
का विधान (पिङ्ग १४३ १४४ १४२
२३४, १ २ उप ४१४ टी ४ १६) । २

व्याख्या विचरण सटीकण (विरो ११०२
१४२१ पिङ्ग १३७) । ३ विधान निबन्धन
(उप २८) । ४ विविध मापण (पिङ्ग
४१८) । ५ विरोधोक्ति (वेद ११७) । ६

परिचय का संकेत (कम्म १ २८० २६) । ७
एक मन्त्रादी (अ ४ १—पत्र १४१) ।

विमासिय नि [विमासित] प्रकाशित
उत्प्रेक्षित (सम्मल १२) ।

विमिष्य } रेखो विमिष्य = विमिष्य (अङ्क
विमिष्य } ४७ ; ११० ; उक्त १६, १६) ।

विमीसय पु [विमीपय] १ एवम का एक
छोटा मर्द (पत्रम १२) । २ विवेक बर्ण
का एक नामुखेन (एव) ।

विमीसायय नि [विमीपय] मन्त्र-जनक
धर्मकर (मणि) ।

विमीसिमा औ [विमिषिज्ज] सम्प्रसारण
(अ) ।

विमु पु [विमु] १ प्रभु, परमेश्वर (पत्रम १
११२) । २ माय स्वामी मायिक (पत्रम
७ १२) । ३ इन्द्राङ्गु संत के एक राजा
का नाम (पत्रम ४, ७) । ४ वि व्यापक
(विरो १२८४) ।

विमूख औ [विमूखि] १ ऐश्वर्य, विम्व (अ,
मौ) । २ ठगपट कुम्हार 'महाविमूखि
बलिपो विज्जवचय' (सुर १ १२ मङ्ग) ।

३ धर्मिण (पत्र २, १—पत्र १६) ।

विमूखय न [विमूखय] १ धर्मकार, ब्रह्म ।
२ योग 'विम्वालंकारविमूखय' (अ
मौ) ।

विमूसा औ [विमूया] १ विचार की घना
बट शरीर पर अन्तर-बल धर्म की घना
बट (म्याता १ २ १; मौया मौय १) ।

२ शरीर-शोभा 'महूलापो अन्तरवत्स कि
विमूसा काति' (अ १ २ ६३ ६६
६७ उक्त १६ ६) ।

विमूसिय नि [विमूसिय] विमूपा-पुत्र
धर्मकर, शोभित (मया उक्त ११ ६ मङ्ग
मिया १ १—पत्र ७) ।

विमोद } पु [विमोद] १ मेघन विचारण
विमोद } (बर्ण १ ४२६) 'न्यायप्राप्तम-
विमोदकमे' (मङ्ग उक्त ७२८ टी) । २ मेघ
प्रकाश 'उत्प्रेक्षितविमोदमे विमूपाय' (वेद १६४) ।

विमोय नि [विमोयक] मेघनकर्ता 'परमम्
विमोय' (बर्ण ७६) ।

विमू औ [विमि] अन्तर-विरोध (पिप) ।

विमूख नि [वि] मरिचक विरक्त (वे
७ ७१) ।

विमूख नि [विमूख] विरक्त विम्व
हुया (म्याता १ १ टी—पत्र १; मौय) ।

विम्विय नि [विम्विय] विम्वे बारे में मय
बहुत—हुम बुद्धि की नहीं है नह (सुर ११
६७) ।

विम्विष्य नि [विम्विष्य] विचारित,
परमोक्ति (विरो १ ४२) ।

विम्व रेखो विम्व (एव) ।

विम्व एक [वि + भागीय] १ विचार
करना । २ धर्मपण करना बौद्धता । ३
प्रार्थना करना माया । ४ धर्म्य करना
बाह्यता । विम्वय, विम्वय (उक्त उक्त
११ १८) । ५ विम्वय विम्वयमाय
(अ १३१ सुर २ १० से ११
मङ्ग) ।

विम्वय नि [विम्वय] १ धर्मित
मया हुया (विरो १२७ सुर ४ १००) ।
२ धर्मित स्वेति (पत्र) ।

विम्वय न [विम्वय] मयपण (एव) ।

विम्वय नि [विम्वय] १ विपण विम्व
शोभ-कृत (अ) सुर १ ११८ मङ्ग) ।
२ धर्म-विपण गुण विम्वयता विम्व (१
२—पत्र २७) । ३ विम्वय, हठपट (घ
७६) । ४ विम्वय मय धर्म्य मया हो नह
(से ४ ३१ पत्र) ।

विमर मक [वि + मर्य] १ संघर्ष करना । २ मराना करना । कबह विमरि जमान (छिद्र १ १८) ।

विमर दु [विमर] १ विमल 'पाठपुस्तिक-व्याख्यानविमर' (सुप्र १३ मन्त्र) । २ वन्द्य (प ३२२ पुन १६) ।

विमर न [विमर] जार देखो (सिध) ।

विमर रा [वि + मर] मलना पिकना । बहू 'क' मुनि व ल विमरना' (पुर ४ २४४) ।

विमर पु [वि] परबलसि-विरोध (परल १—पन ११) ।

विमर (प) श्री देखो । विमर (मि) ।

विमरि मक [वि + मर] विनाश ।

ह विमरिसिद्ध (टी) (मि १ ४) ।

विमरिस पु [विमर] विमल विचार (पन) ।

विमर नि [विमर] १ मर-प्रति विमुक्त निर्धन (पन पीन ४ ४६) पन २१

२०) पुन २ १४०) १६१) । २

पु. एव धर्मनियोग-मर्त्य हल्लम लेखने

विमर (बन ११) (सि) । ३ व्याख्यान में

होनेवाले का 'प' विमर' (सम १४४) ।

४ एक प्राचीन जन आचार्य और बरि विमरि

विमर की प्रथम छात्राई है 'प' (पन ११

११) । ५ एक महापुरुष ग्योत्रिक-देव-विरोध

(स २ १—पन ७८) । ६ बहाना प्रविष्ट-

का कापु-कर्मोप-मम (सम १४६) । ७ पुन

सद्वार समाज के एक का एक पारिवारिक

विमर (स ४—पन ४३०) । ८ दूध-देवता

में विमर एक देव-विमान (पन ११ देव

१४) । ९ एक पदिक देव-विमान (पन

४१) देव १४१) । १० बयारार घा-

टिनी का 'प' (पन ११) । ११ लघागार घाट विम

का जमान (बंसी ४६) । १२ पुं ब्रह्मा

बजा (पन १—पन १६) । १३ 'पास पु

[पास] एक पुनकर पुन (पन १२) ।

१४ पुं [पास] एक जैन आचार्य (महा)

पदा ७ [महा] कायद सीतावाचरी

की धन-विमर (विचार १२६) । १५

पु [वर] धन-प्राप्त देवता के एक का

एक पारिवारिक विमान (स १—पन

२१८) । १६ पुं [वाहन] १ धार-

वर्ष के भारी प्रथम विमर विमर के पुन

मम देवता तथा महापु हूँ (स १—पन

४२६) । २ पुनकर पुन-विरोध (सम १ ४

१२ १२१ पन १ १२१) । ३ व्याख्यान

का एक भारी प्रथम विमर (सम १४४) ।

४ एक जैन की अमर पारिवारिक के पुन

मम में पुन के (पन २ १४ १०) ।

५ पनकर संकल्प का पुन-जन्म नाम

(सम १२१) । ६ सामि पुं [स्वामि]

विमरकी का पारिवारिक देव (सि २ ४) ।

मुनि की [मुनि] यह बालुदेव की

पदना (पन २ १५१) ।

विमर न [विमर] मणि धार की लक्ष

पर विमर वर्ष (दे १ १४५) ।

विमर दु [वि] कल्प कोलाहल (दे ३

७२) ।

विमर की [विमर] १ कर्म विम (स

१—पन ४०) । २ बरले के लोकपालों

की धन-विमरि के नाम (स ४ १—पन

२ ४) । ३ बरले और बरले नाम के

कर्मपालों की धन-विमरि के नाम (स ४

१—पन २) । ४ बरले विमर की

लोका-विमरि (सम १२१) ।

विमरि वि [विमरि] विमर मरन

किया गया हो वह, पु (दे ३ ७) ।

विमरि वि [वि] १ पदर से उछ । २

उछ सहित उछाला (दे ३ ७२) ।

विमर न पु [विमर] विमरकी का

पारिवारिक देव (सि ७७१) ।

विमर न पु [विमर] देवत का का

एक की विमर (पन १४४) ।

विमरि (टी) वि [विमरि] विमर मरन

किया गया हो वह (ना—मावि ४) ।

विमर की [विमर] कीनी का (स १२

७७१) ।

विमर मक [वि + मर] धनमान

करना, उत्तर करना । विमरि (महा

२६) ।

विमर पुन [विमान] १ देव का विमान-

मरन (सम २, व १ १ १२) स १

उछा कल्प देव २१) २२१) पण १ ४—

पण १४४ (१२) । २ देव-मान धनमान-

धनमान में विमर करने में संपर्क (स ६,

७२) कन) । ३ धनमान उत्तर १४४

वि मान रहित, प्रमाण युक्त (स ६ ७२) ।

विमरि की [विमरि] विमर धन-

विरोध (सम ११) । मपन व [मपन]

विमानकार पुन (कप) । वाधि पुं

[वाधि] देवों की एक उत्तम पारि-

वैमर्तिक देव (पण १ ४—पन १५१

१२) ।

विमाना की [विमान] धनमान

उत्तर (विमर १२२) ।

विमानि वि [विमान] धनमान (विम

४११) कप) महा) ।

विमरि व [विमर] विचार करे।

गारि वि [गारि] विचार-वर्ष करने-

गारि (स १५५ १२४) ।

विमरि वि [विमर] विमरि विमर हुआ,

पुन (पन २ ७) महा) ।

विमरि न [विमर] विमर विमर

(पन १७१) ।

विमरि वि [विमर] विमर विमरि

(सि) ।

विमुक्त देव विमरि (पन) ।

विमुक्त मक [वि + मुक्त] १ पीछा

कर्म-मुक्त करना । २ विमुक्त करना ।

विमुक्त (मल) । कर्म, विमुक्त (जा २

१ १६) । बहू विमुक्त (महा) विमुक्त

[विमुक्त] माज (जा १ १—पन २२) ।

ह विमरि (ज २ १६) विमरि

(जा २, १—पन ४०) ।

विमुक्त देव विमरि (पण १ ४—पन

७२) ।

विमुक्त वि [विमुक्त] १ पुन हुआ, पुन

कर्म-प्रति विमरि (महा

४६ पाय धारि १६१) । २ विमरि

विमुक्त (महा ७७) । ३ विमरि

विमरि (जा २, १६ ७) ।

विमुक्तः पुं [विमोक्ष] छुटकारा मुक्ति (वि
११ ११६) प्राप्ति २२८ २२११ ध्वि १)।

विमुक्त्यण्य रेखा विमोक्त्यण्य (उत्त १८ ४
कुप्र ११११)।

विमुक्त्यन्त वि [विमुक्त्यन्त] मुक्त-प्राप्त (वि
११ २१)।

विमुक्त रेखो विमुक्त 'प्रतिनिपुणैर्गुणै' (विह
२१)।

विमुक्ति की [विमुक्ति] १ मोक्ष मुक्ति
(प्राप्ति ११३ कुप्र १११)। २ प्राप्ताय
पुत्र का प्रतिम सम्यक् (प्राप्ता २ ११
१२)। ३ धर्मिण (पण्ड २ १-पण्ड ११)।
विमुक्त्यण्य न [विमोचन] परिष्कार (धर्मो
१)।

विमुह वि [विमुह] १ पण्ड मुक्त लक्ष्मी
(पण्ड ११२ २८ मंत्र)। २ पुं एक पण्ड-
स्तान (मंत्र २८)। ३ पुं, प्राप्ताय मन
(पण्ड २ २-पण्ड ७७१)।

विमुह्य सक [वि + मुह] १ बधना व्याकुल
होना वैयर्थ होय। बह-विमुह्यन्ति (वि
२ ४१ ११ ४१)।

विमुह्यि वि [विमुह्य] पण्डपण्य हुमा (वि
४ ४४ या ७१२)।

विमुह्यि वि [विमुह्य] पण्ड मुक्त किया
हुमा (पण्ड १ १-पण्ड ४१)।

विमुह्य वि [विमुह] १ बधना हुमा। २
मनुष्य, मनुष्य (मनुष्य)।

विमुह्य वि [विमोक्ष] मोक्षना बधन-
कर्ता, 'अं नमः बाहुभित्त प्राप्ति मेवस्मिन्
मालविमुह्यन्त' (मंत्र १)।

विमोक्ष वि [विमोक्ष] कुप्रभा हुमा
(उत्त १ २-पण्ड ८८)।

विमोक्ष रेखो विमुक्त (वि १ ८)।

विमोक्षय न [विमोक्षय] १ छुटकारा
कुप्रभा बधन-मोक्ष (प्राप्ता सुप्र २ ७
१ पण्ड १ २ १८८ स १८ ७४२)।
२ वि कुप्रभा विमुक्त करेनाहा
'उत्तमुक्तविमोक्षय' (सुप्र १ ११ ३१ २
७ १)। की पी (उत्त २१, १)।

विमोक्षय वि [विमोक्षय] छुटकारा पाल-
नाहा 'वे दुक्त-विमोक्षय' (सुप्र १ १
२ ४)।

विमोक्षण न [विमोक्षण] मोक्षना (वि)।

विमोक्षय रेखो विमुक्त।

विमोक्ष सक [वि + मोक्षय] कुप्रभा
मुक्त करना। संक्ष, विमोक्षय (पण्ड)।

विमोक्ष रेखो विमुक्त।

विमोक्षय वि [विमोक्षय] छुटकारा बुर
करेनाहा 'न वे दुक्त-विमोक्षय' (सुप्र १
२ ४)।

विमोक्षय न [विमोक्षय] १ छुटकारा मुक्ति।

२ वि कुप्रभाहा दुक्तविमोक्षय
(पण्ड २ १-पण्ड ११)।

विमोक्षय की [विमोक्षय] छुटकारा (सुप्र
१ ११ २१)।

विमोक्ष सक [वि + मोक्षय] मुक्त करना
मोक्ष उपनाहा। विमोक्ष (महा)। संक्ष
विमोक्षय विमोक्षय (सुप्र १ १-
पण्ड ४१८)।

विमोक्ष रेखो विमोक्ष (प्राप्ता)।

विमोक्ष वि [विमोक्ष] १ मोक्ष-प्राप्ति (उत्त
४, २१)। २ पुं, विमोक्ष मोक्ष, बधन
(सुप्र २ २१)। ३ प्राप्ताय पुत्र का एक
अभ्ययन (सुप्र ११/४४ ४ १-पण्ड ४४२)।

विमोक्षय न [विमोक्षय] १ मोक्ष करना।
(सुप्र १ १८)। २ वि मोक्ष करेनाहा
(उत्त ७२४ ४)।

विमोक्षय वि [विमोक्षय] मोक्ष-प्राप्त (महा
२ १ २२)।

विमोक्ष वि [विमोक्ष] मुक्त कर (उत्त)।

विमोक्षय वि [विमोक्षय] प्राथम्य-वर्धित
वर्धित (सुप्र १ ११)।

विमोक्षय सक [वि + विमोक्षय] वर्धित होना
वर्धित होना प्राथम्य-वर्धित होना। कु
विमोक्षयि विमोक्षयणी (वि १ २४८
मंत्र २)।

विमोक्षय पुं [विमोक्षय] प्राथम्य, वर्धित (वि
२, ४४ पण्ड १ प्राप्ताय बधन ध्वि १)।

विमोक्ष सक [सुप्र] याव करना। विमोक्ष
(वि ४ ७४)।

विमोक्ष सक [वि + सुप्र] विमोक्षय करना
बधन या घाता मुक्त करना। विमोक्ष (वि ४
७४ प्राक्ष १३ पण्ड)। बह विमोक्षय
(पण्ड ११)।

विमोक्षय न [विमोक्षय] विमोक्षय (पण्ड ४
धर्मो ४१ सुप्र ८)।

विमोक्षय वि [वि] १ मुक्ति मुक्त प्राप्त।
२ विमोक्षय (वि १ ४१)।

विमोक्षय वि [विमोक्षय] विमोक्षय करेनाहा
याव विमोक्षय विमोक्षय विमोक्षय
याव' (कुप्र)।

विमोक्षय वि [विमोक्षय] कुप्र हाहा याव
न किया हुमा (कुप्र प्राप्ता)।

विमोक्ष रेखो विमोक्ष (उत्त ११ ४)।

विमोक्षय रेखो विमोक्षय (मनुष्य २२)।

विमोक्षय वि [विमोक्षय] कुप्र हाहा हुमा
(कुप्र भा २८)।

विमोक्षय (मनुष्य) रेखो विमोक्षय (मनुष्य)।

विमोक्ष सक [वि + विमोक्षय] प्राथम्य
वर्धित करना। विमोक्षय (महा विमोक्ष ११)।
बह विमोक्षय (उत्त ११ २१२)।

विमोक्षय न [विमोक्षय] प्राथम्य उपनाहा
विमोक्षय-करण (मनुष्य)।

विमोक्षय की [विमोक्षय] ऊपर रेखो
(विमोक्ष ११)।

विमोक्षय वि [विमोक्षय] विमोक्षय-वर्धित
(सुप्र १ ७४)।

विमोक्षय वि [विमोक्षय] प्राथम्य-वर्धित
किया हुमा (वर्धित १४७)।

विमोक्षय वि [विमोक्षय] विमोक्षय-प्राप्त
वर्धित (भा २८-पण्ड ११)।

विमोक्षय (मनुष्य) रेखो विमोक्षय। विमोक्षय
(मनुष्य)।

विमोक्षय वि [विमोक्षय] विमोक्षय पालनाहा
वर्धित होनाहा (पण्ड १२ २७)।

विमोक्ष रेखो विमोक्षय।

विमोक्ष सक [वि + सुप्र] बधना होना।
विमोक्षयि विमोक्षय (प्राप्ता २ २ २ ४)।

विमोक्ष पुं [विमोक्षय] प्राप्ताय, वर्धित
(सुप्र २ २-पण्ड ७७१)।

विमोक्ष सक [विमोक्षय] वर्धित, होनाहा। विमोक्ष
(वि ४ ११)।

विमोक्ष सक [विमोक्षय] व्याकुल होना। विमोक्ष
(वि ४ ११), विमोक्ष (कुप्र)।

विमोक्ष (मनुष्य) रेखो विमोक्षय (मनुष्य)।

२ निष्कट, प्रसिद्ध (५५) । देखो पिरुत्त ।
 पिरुत्त पुं [पिरुत्त] नरक-स्नान क्रियेय (देवेन्द्र
 २५) ।

विद्युप वृ [विद्यात्मन्] एक नरक-स्थान
(वेद २५)।

विद्युप एक [खेव्य] चित करना, खेर
जाना। विद्येय (भा १७)।

विद्युमा की [रे] क्या कपु की मोटी (रे
७ १४)।

विद्युप वृ [रे] नर्व क घल होला (रे ७
१३)।

विद्युप वृ [विद्युप] १ विद्या (पु २१;
गु १२० ती १)। २ छलीगा (ती १)।
३ वृ एक नरक-स्थान (वेद २५)।

विद्युमा की [यतिता] की महिषा नापि
(पम ६ २ १२५) पद; कुमा रंध
यति)।

विद्युप एक [वि + लप] रोना कर्षण,
पिछाना। विद्यवद (पद मरु)। बह-
विद्यवत विद्यवमात्र (महा छाया १
१—पम ४०)।

विद्युप वि [विद्यपन] टोनेपना, पिछाने-
बाला। या की [ठा] विद्या जल्प
(वीप)।

विद्युपि न [विद्यपित] विद्या कल्प
(पाभा दीप)।

विद्युपि वि [विद्यपित] विद्या करनेवाला
(कुमा छप)।

विद्युप एक [वि + लस] १ मौज करना।
२ बमकना। विद्यवद, विद्येय (महा)।
बह विद्यवत (कम मुर १ २२५)।

विद्युपन म [विद्युपन] १ विद्या मौज
(म ५ १८१)। २ वि. मौज करनेवाला
(मुर १ २२१ छि)।

विद्युपि म [विद्युपित] १ बटन-विद्येय।
२ शीति, बमक (महा)।

विद्युपि वि [विद्युपित] विद्यापि, विद्या
करनेवाला (मुग २ ४ १२४ कति १९
छप)।

विद्युप केो विप 'ममले न माछे दुष्टिछोवि
हो विप विप विपार' (म १७) 'पाव
न मरणीय विपार ही छरिबजो' (कुम
१ २)।

विद्युप केो विद्युप (पि २४१)।

विद्युप वृ [विद्युप] कल्प, विद्यव-विद्यव या
विद्यव होकर रोना परिदेन (म)।

विद्युपि वि [विद्युपित] विद्या-मुक्त
(वे ८९ अरि)।

विद्युप वृ [विद्युप] १ की का नेक-विद्यव।
२ की की मृ या-केटा विद्येय, येन वीर
विद्या-संबन्धी की की वेद्य-विद्येय (पण्ड २
४—पम १३२ दीप मरु)। २ टीवि
बमक (कुमा मरु)। ३ वेद्य-विद्येय मौज
(पम)। ४ 'पुर न [पुर] नरक-विद्येय
(मुग १२२)। यद् की [वरी] की
माटी, मरुजा (सि १ ७१) मरु)।

विद्युपि वि [विद्युपित] १ मौजी शीघ्र
(हास्य १७५ मरु)। २ बमकना। की
'पी' 'विद्युपि' की 'विद्युपि' की 'विद्युपि'
(मो)।

विद्युपि वि [विद्युपित] १ विद्या-
मुक्त (म ४ १)।

विद्युपि की [विद्युपि] १ माटी की।
२ करमा (म २२१ ८ १ म मरु)
माट—छना १ पि १४९ १७७)। रेकी
विद्युपि।

विद्युपि न [विद्युपि] १ की-संबन्धी मरुप
बह मरुप की काम के माने के कारण
विद्या नाम दुगह (कुमा या २१)। २ मरुप
(वा २१)। ३ मरुप, विद्युपि (म २१
पम)। ४ मरुप, मरुप। ५ मरुप
ठमाई। ६ मरुप-विद्युपि। ७ वि मरुप
म मरुप-मरुप। ८ विद्युपि-मरुप। ९ मरुप
मरुप-मरुप (वे १ ४९ १ १)।

विद्युपि वि [विद्युपि] बमक, मरुप (रे
७ १२ छप)।

विद्युपि वि [विद्युपि] बमक, मरुप (रे
७ १२ छप)।

विद्युपि वि [विद्युपि] बमक, मरुप (रे
७ १२ छप)।

विद्युपि वि [विद्युपि] बमक, मरुप (रे
७ १२ छप)।

विद्युपि वि [विद्युपि] बमक, मरुप (रे
७ १२ छप)।

विद्युपि एक [वि + लप] रोना करना,
बेचना पोखना। विद्युपि (सप)। लप
विद्युपि (सप)। लप विद्युपि (सप)
(कप)। प्रमो. बह. विद्युपि (मि १७)।

विद्युपि एक [वि + लप] १ मरुप होना। २
विद्युपि। विद्युपि विद्युपि विद्युपि (हि
४ २१; ४१८; मरि धन २४ संकोष २२,
मरुप २ २१)। बह. विद्युपि विद्युपि
माप (पम १ २ १ २२)।

विद्युपि केो विद्युपि = बीज (म २२९)।

विद्युपि वि [विद्युपि] विद्या दुधा विद्युपि
विद्युपि विद्या यथा हो मरु (मुर १ १२
१ १७) मरि)।

विद्युपि की [रे] कोमा वीर विद्युपि
शरीराली की, नागक बमकनाली माटी (रे
७ ७)।

विद्युपि एक [वि + लप] १ रेका करना।
२ विद्युपि बनना। ३ कोमा। विद्युपि
(मरि)। बह. विद्युपि (पम ७
१२)। बह. विद्युपि (मरुप)।
हह. विद्युपि (कप)।

विद्युपि एक [वि + लप] १ बाटना। २
कुमक करना। विद्युपि (कप)। बह.
विद्युपि (पम १ १७ मरु १४२)।
विद्युपि न [विद्युपि] रेका-कप (मुर
१)।

विद्युपि वि [विद्युपि] विद्युपि (मुर
१२, २)।

विद्युपि केो विद्युपि = बीज 'विद्युपि
बो विद्युपि' (कुम १११)।

विद्युपि केो विद्युपि = बमक 'बमक
विद्युपि नरक-स्थान पवित्र विद्युपि' (मुग
१)।

विद्युपि वि [विद्युपि] बमक-मरुप विद्युपि-
बमक (कुमा)।

विद्युपि वि [विद्युपि] १ विद्युपि दुधा, शरी-
मुक्त। २ विद्युपि 'विद्युपि दुध मरुप-
मरुप मरुप विद्युपि विद्युपि' (मुर २२,
पाभा मरुप मरुप)। ३ विद्युपि (पण्ड १
१—पम १४)।

विश्वरूपा वि [विप्रदीर्घ] विश्वरूपा हुमा (पञ्च ७८ २६; से १, २२ ११ ८६)।

विश्वरूपा वि [विश्वरूपा] विश्वरूपा बाका टेका (स २२१)।

विश्वरूपा की [विपश्चिन्ता] बाध-विश्वरूपा कीर्ण (पाम)।

विश्वरूपा वि [विपश्चिन्ता] १ पश्चिमी लक्ष्मी हुमा। २ पश्चिमी को प्रायः पर्यटन पका हुमा। ३ जल में प्रायः पश्चिमीमुख-विश्वरूपावर्धनप्रेषण देवाणं प्रवर्धनं वरुणाणं (अ १, २—पत्र १११)।

विश्वरूपा पुं [विपश्चिन्ता] १ बुधन, रिपु, विश्वरूपा-विश्वरूपावर्धन (पत्र ४ १२४ पञ्च ११)। २ व्यास-शास्त्र-प्रतिष्ठ विष्णु पञ्च, बहु बलु बहु शास्त्र प्राणि का प्रमाण हो (बर्धन १—पत्रा १४२)। ३ विश्वरूपा वर्धन (धनु)। ४ विश्वरूपा विश्वरूपा (अ १ टी—पत्र ११)।

विश्वरूपा की [विश्वरूपा] बहुतेरी रूपा (पत्र १ १ भाष ११ बर्धन १ ७२)।

विश्वरूपा वि [विश्वरूपा] व्यास के प्रवेश से महा हुमा व्यास-वर्धन-मुक्त (भाषा २, ३, १ ५)।

विश्वरूपास पुं [विपश्चिन्ता] विपश्चिन्ता विपश्चिन्ता, व्यास, पञ्च (उत्तर १ ४ गुण १ ४ प्रोच २४८)।

विश्वरूपा की [विश्वरूपा] १ एक महापरी (हा १—पत्र ४७७)। २ बल-प्रतिष्ठा की (पत्र)।

विश्वरूपा धक [वि + पश्] मरणा, गत होना। विश्वरूपा, विश्वरूपा (स १११ पञ्च १४७ गुण २ ४२)। अर्ध विश्वरूपा (पुत्र १६६)। बहु विश्वरूपा (भाषा—पत्रा ७७)।

विश्वरूपा धक [वि + वर्ध] परिष्कार करना। विश्वरूपा (उत्तर)। बहु विश्वरूपा, विश्वरूपा (उत्तर वर्ध १ १२)। ३ विश्वरूपा, विश्वरूपा (उत्तर ११७ टी प्रमि १८१)।

विश्वरूपा वि [विश्वरूपा] १ रूपा, बर्धन, विश्वरूपावर्धनप्रेषणं प्रवर्धनं से देव प्रवर्धन (गुण २ ७२)। २ परिष्कार, परिष्कार (सिद्ध १२६)।

विश्वरूपा वि [विश्वरूपा] वर्धन करुणासा (पुत्र २ ६ ४)।

विश्वरूपा न [विश्वरूपा] परिष्कार (उत्तर २२)।

विश्वरूपा की [विश्वरूपा] परिष्कार, विश्वरूपा १ परिष्कार, वर्धन (सम ४४ उत्तर १२ २ बर्धन २ ४)।

विश्वरूपा वि [विपश्चिन्ता] विश्वरूपा, उत्तर (पत्रा ११ १७ कम्म १ २१)।

विश्वरूपा पुं [विपश्चिन्ता] विपश्चिन्ता व्यास, विश्वरूपा (पत्रा उत्तर १४२ टी पत्र ११३ पत्रा ६ १ कम्म १ २४)।

विश्वरूपा पुं [विपश्चिन्ता] १ विपश्चिन्ता, व्यास (पत्रा पत्रा ८, ११)। २ भ्रम मिश्रण (गुण १ १३४)।

विश्वरूपा वि [विपश्चिन्ता] रूपा बर्धन परिष्कार (उत्तर १ १६ गुण १ १३२ पत्रा प्रमि)।

विश्वरूपा धक [वि + बुध] बर्धना, रूपा। विश्वरूपा (स ४ ११८)। बहु विश्वरूपा (गुण ६ ८ रंज)।

विश्वरूपा वि [विपश्चिन्ता] विप हुमा (कम्म १६ २२ मय ७ १ टी—पत्र ११८)।

विश्वरूपा धक [वि + बुध] बर्धना, बहु। विश्वरूपा (पत्रा १ १ टी—पत्र १७१)।

विश्वरूपा वि [विपश्चिन्ता] बहुकरुणासा 'महाविश्वरूपा' (उत्तर १६ ७)। की जी (उत्तर १६ २)। देवो विश्वरूपा।

विश्वरूपा की [विश्वरूपा] बर्धन रुपा (पत्रा १ ११)।

विश्वरूपा वि [विश्वरूपा] बर्धन हुमा (भाषा—पत्र)।

विश्वरूपा की [विपश्चिन्ता] १ बर्धन (गुण २१)। २ बर्धन, बर्धन-विश्वरूपा बहु बर्धनो बर्धन (पाम)।

विश्वरूपा वि [विपश्चिन्ता] बर्धन हुमा, बर्धन हुमा (कम्म)।

विश्वरूपा देवो विश्वरूपा = विश्वरूपा (उत्तर २ ४७७ गा २३ प्र)।

विश्वरूपा वि [विपश्चिन्ता] १ बुधन बुधन (से २ ४७ से ६०६)। २ विश्वरूपा, विश्वरूपा व्यास (पत्रा १ १—पत्र २४ से ८ ८७)।

विश्वरूपा वि [विपश्चिन्ता] १ दो १—पत्रा। २ पुं बुधन वृद्ध (उत्तर)।

विश्वरूपा पुं [विपश्चिन्ता] एक महापद्म, श्वेतविष्णु देव-विश्वरूपा (गुण २ १)।

विश्वरूपा की [विपश्चिन्ता] १ विश्वरूपा (पत्रा १ १—पत्र १३७ पत्रा १ २—पत्र १२ गुण २१४, उत्तर)। २ मरण मीठ (गुण २ ४१ स ११६)। ३ कार्य की परिष्ठा (गुण २१२ उत्तर ६६ १)। ४ प्रायः का (गुण २१२)।

विश्वरूपा वि [विपश्चिन्ता] विश्वरूपा हुमा-बुधना हुमा (से ६ ८)।

विश्वरूपा पुं [विपश्चिन्ता] एक महापद्म (गुण २ १)।

विश्वरूपा की [विपश्चिन्ता] १ विश्वरूपा टीका। २ विश्वरूपा (सिद्ध ६)।

विश्वरूपा न [विपश्चिन्ता] बहु बर्धन (कम्म)। देवो विश्वरूपा।

विश्वरूपा की [विपश्चिन्ता] बुद्धि बर्धन (स ६७३)।

विश्वरूपा पुं [विपश्चिन्ता] देव-विश्वरूपा (धनु १६४)।

विश्वरूपा देवो विश्वरूपा = विश्वरूपा (गुण ११६)।

विश्वरूपा वि [विपश्चिन्ता] १ मरणा प्रवर्धन विपश्चिन्ता (पत्रा १ १—पत्र १२७) स १४२ गुण २ ६)। २ बुधन, मय हुमा (पत्रा ४४ १) उत्तर १ ४७ स ७२६ प्रमि १६२ वर्धन १ ६४)।

विश्वरूपा धक [वि + वृध] मरणा करना विश्वरूपा करना। बहु विश्वरूपा (गुण २४६ सप्तर २१३)।

विश्वरूपा वि [वि] विश्वरूपा (पत्र)।

विश्वरूपा की [विपश्चिन्ता] कट बुधन (उत्तर ७२८ टी)।

विश्वरूपा धक [वि + वृध] मरणा करना। विश्वरूपा (पत्रा १ १ व्यास करना)। विश्वरूपा (पत्रा) विश्वरूपा (स ७१७)। बहु विश्वरूपा विश्वरूपा (गुण २४३)।

सिंसिपि पुं [सिंसिपि] १ एक महापद्म
ब्रह्मोदित इव-विशेष (अ १ १—पत्र ७७)।
२ वि बभूव-यद्विह (पत्र)। अथ
अप्यस्य पुं [अप्य] एक महापद्म (मुद्र
२)।

सिंसिनिविट्ट न [सिंसिनिविट्ट] विविध रम्या
अथैक महापद्म (पौन)।

सिंसिभ्यो योसंभ (महा)।

सिंसिभयया यो योसिंसिभयया (प्राचा १
८, १५)।

सिंसिभोजन वि [सिंसिभोजन] विविध साध
भोजन आदि का व्यवहार न किंवा काम बह,
संभोजन-काम, समाज-काम (अ १ १—पत्र
१)।

सिंसिभोग पुं [सिंसिभोग] साध बैठकर भोजन
आदि का व्यवहार (अ १ १)।

सिंसिमोविष यो योसिमोविष (अ १ १—
पत्र १११)।

सिंसिपय वि [सिंसिपय] १ अथवा प्रसिद्ध
प्रसन्नप्रसिद्ध (पाय १ १७)। २ विप्रसिद्ध,
विप्रसिद्ध (वि ११ ११)।

सिंसिपय मक [सिंसि + पय] १ अथवा प्रसिद्ध
होना प्रसन्न प्रसिद्ध, प्रसन्न से मिल न होना।
२ विप्रसिद्ध होना प्रसन्न होना। ३ विप्रसिद्ध
होना प्रसन्न होना। सिंसिपय, सिंसिपयि
(वि १ १११ २२) 'यो विप्रसिद्धो बभूवो
विप्रसिद्ध यो विप्रसिद्ध' (स १५ १ ७११)
'अपिपय बह विप्रसिद्ध' (पत्र २१),
विप्रसिद्ध (महावि ४)। बह, सिंसिपय
(अ २ २१ ७१ टी बर्मे १)।

सिंसिपयय न [सिंसिपयय] विप्रसिद्ध, प्रसन्न
का प्रसन्न (अ २ २१)।

सिंसिपय वि [सिंसिपय] १ विप्रसिद्ध होना
बला विप्रसिद्ध होना (मुद्र १ १)।
२ अथवा प्रसिद्ध होना प्रसन्न प्रसन्न से मिल न होना
होना प्रसन्न प्रसन्न प्रसन्न (मुद्र २ ११)
अप्यस्य १२१)।

सिंसिपय वि [सिंसिपय] विप्रसिद्ध-प्रसन्न
(वि १ ११ ७१ १)।

सिंसिपय यो सिंसिपय = सिंसिपय (बर्मे
१५)।

सिंसिपय यो सिंसिपयय (अ २ ११
४८)।

सिंसिपय यो यो सिंसिपयय (अ ४ १—
पत्र १११)।

सिंसिपय वि [वि] मविन पैदा (वि ७
७२)।

सिंसिपय पुं [सिंसिपय] १ अथवा का प्रसन्न
विप्रसिद्ध प्रसन्न, विप्रसिद्ध प्रसन्न; 'अप्यस्य-
विप्रसिद्ध' (पौन १७) मुद्रा १८)। २
अप्यस्य (पा १११)। ३ विप्रसिद्ध (वि १
१)।

सिंसिपयय वि [सिंसिपयय] १ अथवा प्रसिद्ध
प्रसन्न-प्रसिद्ध। २ अथवा प्रसन्न प्रसन्न (मुद्रा
१ ८)।

सिंसिपयय न [सिंसिपयय] यो यो यो (अ
२ १, ४) मुद्रा ११ ४८)।

सिंसिपयय यो [सिंसिपयय] १ अथवा
अप्यस्य। २ अथवा अथवा (अ ४ १—पत्र
१११)।

सिंसिपयय वि [सिंसिपय] अथवा प्रसन्न
'अप्यस्य यो सिंसिपयय' (अ ४ १—पत्र
१११)।

सिंसिपय यो यो सिंसिपयय (पाचा)।

सिंसिपय वि [सिंसिपय] यो यो यो (पत्र)।

सिंसिपयय वि [सिंसिपयय] अथवा-अथवा
किंवा अथवा अथवा (पाचा)।

सिंसिपय पुं [सिंसिपय] १ अथवा अथवा; 'विप्र-
सिद्ध' मुद्रा-अथवा-अथवा-अथवा-अथवा-अथवा-
(वि १ २२)। २ अथवा, अथवा अथवा
अथवा (वि १ २१)। ३ अथवा-अथवा अथवा
अथवा अथवा (वि)।

सिंसिपय स [वि + स] सयय १
विप्रसिद्ध प्रसन्न। २ अथवा, विप्रसिद्ध
(महा) अथवा, विप्रसिद्ध विप्रसिद्ध
(महा अथवा ४१)। ३ अथवा अथवा (टी)
(अथवा १)। ४. विप्रसिद्ध अथवा (टी)
(अथवा २)।

सिंसिपय यो [सिंसिपय] अथवा (अ
४)।

सिंसिपय वि [सिंसिपय, सिंसिपय] १ अथवा
अथवा अथवा अथवा (पौन १११)।

महा मुद्रा ११ ११७)। २ अथवा 'विप्रसिद्ध
अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा'
(अ)।

सिंसिपय मक [वि] अथवा अथवा, अथवा-
अथवा अथवा। सिंसिपय (वि ४ १७१ ४१)
विप्रसिद्ध (पत्र)। 'अथवा अथवा अथवा'
(मुद्रा)। अथवा-अथवा (स १७१)।

सिंसिपय मक [वि + अथवा] विप्रसिद्ध,
अथवा अथवा। सिंसिपय (महा ७१)
विप्रसिद्ध (महा १११)। अथवा अथवा,
अथवा अथवा (महा १ अथवा ४ ४—पत्र
२११)।

सिंसिपय स [वि + अथवा] विप्रसिद्ध
अथवा अथवा अथवा अथवा। सिंसिपय
(महा १११)।

सिंसिपय स [पत्र] विप्रसिद्ध अथवा अथवा।
विप्रसिद्ध (मुद्रा २ २१)।

सिंसिपय वि [वि] १ विप्रसिद्ध, अथवा (पाय
पत्र १ १)। २ विप्रसिद्ध अथवा अथवा
अथवा (महा ७७ अथवा ११७ अथवा २, मुद्रा
गुर १ ४२ अथवा १)। ३ अथवा अथवा,
अथवा, अथवा अथवा-अथवा अथवा हो अथवा
(वि १ १)। अथवा १११ अथवा)। ४ अथवा
(पत्र ७)।

सिंसिपय न [सिंसिपय] विप्रसिद्ध अथवा अथवा
'वि'। अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा-
अथवा अथवा अथवा (महा १)।

सिंसिपय } यो यो यो (पत्र)। १ २४।
सिंसिपय } मुद्रा १ १११)। 'अथवा अथवा
अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा' (अ)।

सिंसिपय वि [वि] १ अथवा अथवा-अथवा। २
अथवा, अथवा-अथवा (वि ७ १२)। ३ अथवा,
अथवा अथवा अथवा (अ)। ४ अथवा, अथवा-
अथवा अथवा (वि १ ११)। ५ अथवा
अथवा (वि ११ १)।

सिंसिपय वि [विप्रसिद्ध] १ अथवा अथवा अथवा
अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा
अथवा अथवा (पत्र)। २ अथवा अथवा
अथवा अथवा (मुद्रा २१)।

सिंसिपय यो यो यो (वि १ १२)।

सिंसिपय न [सिंसिपय] अथवा (पत्र)।

विसर्ज्य नि [विसर्ज्य] संज्ञा-सहित चैत्य
बन्धित (वि १ १८) ।

विसर्ज्य रेवो विसर्ज्य = विपण्य (महा वसु
राज) ।

विसर्ज्य नि [विसर्ज्य] संज्ञा-सहित (व १) ।

विसर्ज्य रेवो वीसर्ज्य (गुणा १ १—पत्र
११ सप्त ११ ज ७२० टी) ।

विसर्ज्य रेवो विसर्ज्य = विपण्य (पण्य १ ४—
पत्र ७२; कण्य नि १७) ।

विसर्ज्य वु [विसर्ज्य] १ विरिष्ट राज्य । २
वि विरिष्ट राज्यता (पण्य) ।

विसर्ज्य नि [विसर्ज्य] १ विपण्य शोध-मस्त
विपण्युक्त (पण्य १ ३—पत्र ११; व १, १८
मु १२) । २ वाचक वक्षी (वृष १ १२ १४) । ३ निपातः 'घोरपत्र केव
सर्पि विपण्य' (छाया १ १—पत्र ११) ।

४ वु घर्षण्य (मुष १ ४ १ २४) ।

विसर्ज्य रेवो विसर्ज्य ।

विसर्ज्य रेवो [विसर्ज्य] विपण्य-विशेष (पत्रम
७ ११४) ।

विसर्ज्य मक [वि + सृ] कैलास विस्तरण
म्यात होता । वक्ष विस्तरण्य, विस्तरण्यमान
(कण्य म्य धीन १७ ११) ।

विसर्ज्य वु [विसर्ज्य] एक नगर-स्थान (क्षेत्र
२७) ।

विसर्ज्य नि [विसर्ज्य] विस्तरण्यमान (मुषा
४ २७) ।

विसर्ज्य नि [विमर्ज्य] ऊपर रेवो (वृष) ।

विसर्ज्य रेवो वीसर्ज्य = वि + मन् । विस्तरण्य
(रंजा ११) ।

विसर्ज्य नि [विमर्ज्य] १ ऊपर-नीचा जलवा-
नगत (कुमा पत्र) । २ वस्य वसमान
कण्य (मन्, पत्र) । ३ वसुमन् एव
संख्या, क्षेत्र—एक टीन, पाँच घाट घोर ।

४ वाचक वक्षी वक्षी (वि १ २४ ११ व १) । ५
वृष, वाचक (मन् १ २) । वक्षर नि
[विमर्ज्य] वाचकवाचकवाचक वस्य विमर्ज्य-
वाचक (वि ४ २४) । 'ज्येष्ठवर्ज्य' [ज्येष्ठ-
वर्ज्य] महावर्ज्य (वृषी ११७) । वाच्य वु
[वाच्य] वस्यवर्ज्य (वृष) । सर वु [सार]
वक्षी (व १; मुषा १११; वृष) ।

विसर्ज्य न [वि] मज्जातक विस्तरण्य (व ७
११) ।

विसर्ज्य रेवो विसर्ज्य ।

विसर्ज्य नि [विमर्ज्य] १ वीच-वीच में
विमर्ज्य (वि १ ८७) । २ विपण्य बना हुआ
(वृष) ।

विसर्ज्य नि [विमर्ज्य] मुषा हुआ मल्ल
(वि १, ८७) ।

विसर्ज्य नि [विमर्ज्य] विमर्ज्य किया हुआ
विमर्ज्य-वाचक (वि १ ८७) ।

विसर्ज्य नि [वि] १ विमल निर्मल । २
वक्षी (वि ७ १२) ।

विसर्ज्य नि [विमर्ज्य] विमर्ज्य करनेवाला
की री (वा १२; प्राङ् ३) ।

विसर्ज्य मक [वि + मन्] विमर्ज्य करना
वाचक करना । मवि विमर्ज्यहिं (वा
१७१) । वक्ष विमर्ज्यमक (वि १ २) ।

विसर्ज्य नि [विमर्ज्य] १ निर्मल वक्ष्य (वृष
४११; वृष्टि ७८ टी) । २ वक्ष्य वृष्ट
(वाच) । ३ वक्ष्य वृष्ट (वीच) ।

विसर्ज्य वृष [विसर्ज्य] १ वृष, वर (वृष ७
१) । २ वृष वर वक्ष्य (वाङ् १) ।

विसर्ज्य वु [विमर्ज्य] १ वीच, इन्द्रिय वाचि
वे वाचा वाता वक्ष्य—वृष, वर वक्ष्य
वक्ष्य (वाच्य कुमा महा) । २ वक्ष्य वक्ष्य
(वक्ष्य) । ३ वक्ष्य-वीच, विमर्ज्य 'मोम-
वृष्टि' समान्यवक्ष्यवृष्टि' (व १ १ टी—
पत्र ११४ वक्ष्य १ १७ मुषा ११; महा) ।

४ वक्ष्य, वक्ष्य वक्ष्य 'मोमवक्ष्य'
(ज १८८ टी वक्ष्य १) । विमर्ज्य वु
[विमर्ज्य] वक्ष्य वक्ष्य वक्ष्य, वक्ष्य (मुषा
४१४) ।

विसर्ज्य वक्ष्य [वि + सृ] १ व्याप करना ।
२ वक्ष्य करना, मेक्षा । विमर्ज्य (व १) ।

विसर्ज्य मक [वि + सृ] वक्ष्य वक्ष्य
वक्ष्य विमर्ज्य वक्ष्य । वक्ष्य विसर्ज्य
(गुणा १ १—पत्र ११७ व १४ १४) ।

विसर्ज्य वक्ष्य वि + सृ] वक्ष्य वक्ष्य
वक्ष्य । विमर्ज्य (वक्ष्य ११) ।

विसर्ज्य वु [वि] वक्ष्य वक्ष्य वक्ष्य (वि ७
१२) ।

विसर्ज्य वु [विसर्ज्य] वक्ष्य, वक्ष्य वक्ष्य (मुषा
१ वृष १ १८१; १ १४) ।

विसर्ज्य न [विसर्ज्य] विमर्ज्य (वक्ष्य) ।

विसर्ज्य वृष [वि] वक्ष्य-विमर्ज्य (महा) ।

विसर्ज्य रेवो [विसर्ज्य] वक्ष्य वक्ष्य वक्ष्य
वक्ष्य वक्ष्य (विमर्ज्य १ ८—पत्र ७२) ।

विसर्ज्य नि [विमर्ज्य] वक्ष्य वक्ष्य वक्ष्य
(वि १११) ।

विसर्ज्य रेवो [वि] वक्ष्य, वक्ष्य वक्ष्य
(वक्ष्य) ।

विसर्ज्य नि [विसर्ज्य] वक्ष्य वक्ष्य वक्ष्य
वक्ष्य वक्ष्य (वक्ष्य) ।

विसर्ज्य वु [विमर्ज्य] वक्ष्य वक्ष्य वक्ष्य
(वक्ष्य ११; वक्ष्य १८७) । वक्ष्य वक्ष्य
[वक्ष्य] वक्ष्य-विमर्ज्य (वृष २ २ २७) ।

विसर्ज्य रेवो [विसर्ज्य] १ वक्ष्य वक्ष्य वक्ष्य
(वक्ष्य) । २ वक्ष्य वक्ष्य वक्ष्य वक्ष्य
(वक्ष्य ११ २४) ।

विसर्ज्य वक्ष्य [वि + वक्ष्य] वक्ष्य वक्ष्य
वक्ष्य वक्ष्य 'वक्ष्य वक्ष्य' (वक्ष्य ७१) वक्ष्य
वक्ष्य वक्ष्य (वक्ष्य ११४) ।

विसर्ज्य रेवो विसर्ज्य = वि + वक्ष्य । वक्ष्य
वक्ष्य वक्ष्य (वक्ष्य १ ८) ।

विसर्ज्य नि [विसर्ज्य] वक्ष्य वक्ष्य वक्ष्य
वक्ष्य वक्ष्य वक्ष्य वक्ष्य (वक्ष्य ४७१
वक्ष्य वक्ष्य १४) ।

विसर्ज्य नि [विसर्ज्य] वक्ष्य वक्ष्य वक्ष्य
वक्ष्य वक्ष्य वक्ष्य वक्ष्य (वक्ष्य ४७१
वक्ष्य वक्ष्य १४) ।

विसर्ज्य वक्ष्य [वि + वक्ष्य] वक्ष्य वक्ष्य
वक्ष्य वक्ष्य (वक्ष्य) । वक्ष्य वक्ष्य (वि १२
२१; मुषा २११) । वक्ष्य वक्ष्य (वक्ष्य
१४१) ।

विसर्ज्य नि [विमर्ज्य] वक्ष्य वक्ष्य वक्ष्य
वक्ष्य वक्ष्य वक्ष्य वक्ष्य (वक्ष्य वक्ष्य) ।

विसर्ज्य वक्ष्य [वि + वक्ष्य] वक्ष्य वक्ष्य
वक्ष्य वक्ष्य (वक्ष्य) ।

विसर्ज्य न [विमर्ज्य] १ वक्ष्य वक्ष्य
(वक्ष्य वक्ष्य) । २ वि वक्ष्य (वक्ष्य ७१
टी) ।

विसर्ज्य नि [विमर्ज्य] वक्ष्य वक्ष्य वक्ष्य
(वि १ ११) ।

विसर्ज्य (वक्ष्य) वक्ष्य [वक्ष्य] वक्ष्य-विमर्ज्य
(विमर्ज्य) ।

मिसाह नि [मिसाह] मिसाह-मुक्त हाक
पल (संकोच १९) ।

मिसाण न [मिषान] १ हाथी का बंध
(पुनः १—न न्यु २१) । २
शुभ लीप (मुक्त २ १ पाप-धीन) । ३
मुचर का बंध (उग) । ४ पु. व. देव-विरोध
(उग २० १२) ।

मिसान क [मिसान] मिसान शाण
पर बहाया । कर्म. विवाहीप्रति (टी)
(पुनः—मुक्त ११६) ।

मिसानि नि [मिसानि] १ धीनतामा ।
२ पु. हाथी, हाथी । ३ मृ. गार्क विपदा ।
४ मृ. गार्क मृ. गार्क (पुनः १४२) ।

मिसाय क [मि + साय] विरोध बधना,
पाप । कर्म. मिसायमान (साया १ १—
पन १० कर्म) ।

मिसाय पु [मिसाय] कर्म शोक, विपदा
पन्थेक (उग बन्ध मुता १ ४ ६ १
१२०६) । यम नि [यम] विपदा शोक-
पल (पा १४) ।

मिसाय नि [मिसान] १ मुचर रक्षित (वि
११६) । २ पु. व. देव-विरोध (मय १) ।

मिसार नि [मिसार] स्थाप-पक्षि 'धाम-
महति मिसार विपदा कर्मकर्म न नं पुन'
(विने ११६) ।

मिसार क [मि + सार] कैलास ।
कर्म. मिसारन (उग २२ १४) ।

मिसार पु [मि] कैय, देव (पर) ।

मिसार नि [मिसार] कर्म रक्षित, नि स्थाप
(उग) ।

मिसारन न [मिसारन] कर्मन (वि
२१ १) ।

मिसारनिप नि [मिसारनिप] स्थाप-
पक्षि (विपदा कर्म न स्थाप पक्षी दो बंध
(साय) ।

मिसारय नि [मि] १४ मीट कर्म (वि
११६) ।

मिसारय नि [मिसार] मिसार, कर्मन
पल (पुनः १ १—पन २१; कर्म दो
दुर १ ११ पाप १२)

मिसारि नि [मिसारि] कर्मनता ध्यापक
(मय) । की या (कर्म) ।

मिसारि पु [मि] कर्मनता, कर्म (वि ७
१२) ।

मिसाह नि [मिसाह] १ किलुप बहा,
विपदा, मृ. गार्क (पाप मुर २, ११६) प्रति
१) । २ पु. व. देव-विरोध कर्मनता मृ. गार्क
मृ. गार्क में एक मृ. गार्क (सा २ १—पन
१०६) । ३ एक रक्षित कर्मन-मिसाह का
उत्तर दिया का रक्षित (सा २ १—पन
१०६) । ४ पु. व. देव-विरोध कर्मन (उग १३,
देव ११६; पन ११४) । ५ एक मिसा-
ह-मिसार (रक्ष) ।

मिसाहय पु [मि] कर्मन, कर्म (दे ७
४१) ।

मिसाहय की [मिसाहय] १ एक कर्मन का
नाम कर्मनता कर्मन (मुता १ १ उग
२ ४) । २ कर्मनता कर्मनता की कर्म-
मिसाह (विपदा १२६) । ३ कर्मनता
विरोध कर्मनता मृ. गार्क कर्मनता है ।
४ कर्मनता-विरोध (रक्ष) । ५ कर्मनता
मृ. गार्क का मिसाह का नाम (मुता १ २,
१ २२) । ६ एक कर्मनता (पाप) ।

मिसाहय की मिसारि (उग १ १४) ।

मिसाहय नि [मिसाहय] किलुप मिसाह
का पुनः कर्मनता (कर्म १) ।

मिसाहय नि [मिसाहय] १ मिसाह
मिसाह मिसाह कर्मनता है । २ विरोध
का ये कर्मनता । ३ कर्मनता मिसाह मिसाह
मुता । ४ मिसाह मिसाह मुता (वि १ १३) ।

मिसाह पु [मिसाह] कर्मन कर्मनता
(पाप) ।

मिसाह की [मिसाहय] १ कर्मन-विरोध
(मय १) । २ कर्मन-कर्मनता नाम एक की
का नाम (उग १२२) । ३ एक मिसाह-
कर्म (मय) ।

मिसाहय नि [मिसाहय] १ कर्मन मिसाह
मिसाह । २ म. कर्मनता कर्मनता मिसाह मिसाह
मिसाह मिसाह मिसाह मिसाह (वि ४ १०६
४११) ।

मिसाह की [मिसाहय] १ कर्मनता नाम की
मुता । २ कर्मनता नाम की कर्मनता
(मुता १ १) ।

मिसाह की [मि] मिसाह मिसाह (वि
७ ११) ।

मिसाह की मिसाह (वि १ १२० पाप) ।

मिसाहय नाम की मिसाह = नि-यु ।

मिसाहय नि [मिसाहय] १ कर्मनता मुता (मुता
१ १, ७ पाप २ १—पन २६) । २
विरोध-मुता (मृ. गार्क) । ३ विरोध मिसाह, मुता
(मय ११) । ४ मुता, कर्मनता (पक्ष
२१—पन १०६) । ५ कर्मनता, मिसाह
मिसाहय (मिसाह) । ६ पु. व. देव, मिसाहय
मिसाह का कर्मनता मिसाह का रक्षित (सा २ १—
पन १०६) । ७ म. कर्मनता मिसाह मिसाह का
कर्मनता (उग १०६) । ८ मिसाह की [मिसाहय]
मिसाहय (पक्ष १ १) ।

मिसाहय की [मिसाहय] मिसाहय कर्म (वि
४ १०६) ।

मिसाहय नि [मि] मिसाह मिसाह मिसाहय (वि
७ १०६) ।

मिसाहय क [मि + मिसाह] मिसाहय-मुता
कर्मनता । कर्म. मिसाहय मिसाहय मिसाहय मुता
कर्मनता, मुता मिसाहय मिसाहय (मय १०६
२६) ।

मिसाह पु [मिसाहय] १ कर्मन मिसाह (पाप;
पन १ १) । मुता २२; कर्मनता ११) ।
२ मिसाह मिसाह मिसाह (मय ११६) ।

मिसाह की मिसाह (वि १ १२ पाप) ।

मिसाह की [मिसाहय] मिसाह मिसाह मिसाहय
'मिसाहय' मिसाहय मिसाहय मिसाहय (मय
११६) ।

मिसाहय क [मि + मिसाह] १ मिसाह कर्मनता ।
२ मिसाहय मिसाह, मिसाहय । मिसाहय, मिसाहय
मिसाहय, मिसाहय (मुता १ १ ४ १) । ३ ४ २, मय ४ ४—पन २० उग) । ४ मिसाहय
मिसाहय (वि १२०) ।

मिसाहय नि [मिसाहय] १ कर्मन, मुता ।
२ म. मिसाहय मिसाहय मिसाहय मिसाहय
मिसाहय मिसाहय मिसाहय (मुता १२, ११६) ।

मिसाहय का मिसाह = नि + यु ।

विशील वि [विशील] १ प्रहस्य-प्रहृत
व्यभिचारी (बन्धु उप १६७ टी) । २ बरप
लगावनामा विष्णु भाषणनामा (उप
११ ४) ।

विशुद्ध सक [वि + शुद्ध] शुद्ध करना ।
विशुद्ध (उप) । कः विशुद्धय, विशु-
द्धमात्र (उप १२ टी छाया १ १-पन
१४) जग पीन पुर १६, १११ ।

विशुण्य वि [विशुण] विनाश (पण्ड १
४-पन ८२) ।

विशुच वि [विशुच] १ प्रविष्ट । २
बपन पुत्र (मि) ।

विशुचया बेको विशोचिया (भाषक २६
ख २, १ २) ।

विशुद्ध वि [विशुद्ध] १ निर्जल निर्वाण (उप
११६, डा ४ ४ टी-पन २५१ प्राप्त २२)
उप ह १ १०) । २ विरल उन्मूल
(पण्ड १४-पन ४०१) । ३ पुं ब्रह्मेण
लोक का एक प्रवर (डा १-पन ११०) ।

विशुद्धि की [विशुद्धि] निर्दोषता निर्जला
(पीप या ७१७) ।

विशुद्ध सक [वि + शुद्ध] शुद्ध करना या
न भाषा । विशुद्ध, विशुद्धयि (महापि
१११), विशुद्धि (घ २ ४) ।

विशुद्धयि वि [विशुद्धय] विषय विमर्श
हुमा ही बह (घ २१४, मुच २, २६ पुर
१४ १०) ।

विशुद्धयि वि [विशुद्ध] विम किमा हुमा
भार्यविमर्शविशुद्धयिमा विमर्श लोहय
(नट १११) ।

विशुच न [विशुच] चत पीर रिप की
धमपनामा नाम बह समय चर विर पीर
चत शोको बरप होले (१० ४) ।

विशुच्य की [विशुच्य] रोच-विशेष हुमा
(उप पुर १६ ७१; भाषा २, २, १ ४) ।

विशुच्य की [विशुच्य] १ ज्ञा हुमा,
मुना हुमा (पण्ड १ १-पन १८) । २
बन्ध हुमा मूक (मुप १ २, २ २) ।

विशुच्य की विशुच्य । विशुच्य (भाष ११) ।

विशुच सक [विशुच] खेद करना । विशुच्य
(ह ४ ११२ प्रप ३१) । बह विशुच

विशुचमाण (उप मा ४१४ मुपा ३ २)
नट) । ३ विशुच्यम् (नट) ।

विशुच्य न [विशुच्य] १ बह । २ पोका (पण्ड
१ २-पन १४) ।

विशुच्य की [विशुच्य] बह, भाष्योस मुच
(ह १ ४) ।

विशुचि वि [विशुच] केव-मुच, विशुचि
(ह १ ७१) ।

विशुचि पुन [विशुचि] एक वैव-विमान
(उप ४१) ।

विशुचि की [विशुचि] १ विविधा-उपमनी
येति बह रेखा । २ वि विशुचि में स्थित
(उपि नि ११ ४ ४) ।

विसेस सक [वि + रोचय] विशेष-मुच
करना पुन भाषि हाप पुनर से मिन करना
विशेष से धर्मित करना, व्यवस्थित करना ।
विसेस विसेस (मि) छका सुपनि ११
टी मय विसे ७१; महा) । कने विसेसिबह
(विसे ११११) । सङ्घ-विसेसिब (विसे
१११४) । ३ विसेसयिज विसेस
(विसे १११६ १ १२) ।

विसेस पुन [विशेष] १ प्रमेद, पार्श्व
मिन्ता 'यु संपद्यमि विसेसमणि' (मुप
२ १ ४१ मय विसे १ ४, उप) । २ मेव
प्रफट 'यसिह विसेसे फलते (डा १
महा उप) । ३ भलपण्ड धनुक व्यर्थ
काज (बन की १६ महापि ११) ।
४ पर्याय वने पुन (विसे २१७) । ५
धर्मिक मरिचय व्यास 'यो विसेसेय तं
मुच' (सा प्राप्त १७१; महा, की १६) ।
६ ठिङ्क । ७ धर्मिस्त्याक-प्रतिष्ठ धर्मकार
विशेष । ८ विशेष-प्रतिष्ठ समय पदार्थ
(ह १ २१) । नु [ह] विशेष जलने
नामा (घ १२ महा) । भा म [वस]
बाध कले (महा) ।

विसेस पु [विसेस] प्रवक्तव्य (बन १) ।

विसेसय न [विशेषय] हुचर से मिन्ता
कानिनाता पुन भाषि (उप ४४४ भाष
८६; पन १ १२) विसे ११२) ।

विसेसयिज देया विसेस = वि + रोचय ।

विसेसय पुन [विशेषय] विषय कन्ध
भाषि वा मरुत-स्थित विह (भाषा से १०
७४; वेदी ४१; या १३८; मुप २२४) ।

विसेसि वि [विशेषय] १ विशेष-मुच
किमा हुमा भीष (सम १७ विसे २६८०) ।
२ धर्मिस्थित (भाष) ।

विसेस रेखा विसेस = वि + रोचय ।

विसेस वि [विशेष] रोच-प्रतिष्ठ (भाषा) ।

विसेसिया की [विसेसिया] १ विमान-
यमन प्रविष्टय मति । २ मय का विमान
में मय, धर्ममान पुन विसेस (भाषा)
विसे १ १२; उप बर्मस ५१२) । ३ संघ
(भाषा) ।

विसेसया पुन [विसेसय] की की का
विसेसया की का विसेस (वर्मि १७; पना
११ १२) ।

विसेस सक [वि + रोचय] १ मुच
करना, मय चरित करना निर्वाण बनाना ।
२ व्याप करना । विशुद्ध, विशुद्धि (उप
छका कः) । विशुद्धि (भाषा २ १ २
३) । हेङ्क-विसेसिचय (डा २ १-
पन २१) ।

विसेस वि [विशेष] रोच-प्रतिष्ठ (ह १
११) ।

विसेसय न [विशेषय] शुद्धि-करण (कः) ।
विसेसयना की [विशेषयना] अपर बेको
(डा ८-पन ४४१) ।

विसेसय वि [विशेषय] शुद्धि-कर्ता (मुप
१ १ १ १६) ।

विसेसि की [विशेषय] १ विशुद्धि
निर्वाण विमुच्यता (उपम १ २ ११६
उप पिङ १७१; मुपा १६२) । २ धर्मय
के योग्य प्रार्थित (धोप २) । ३ धर्मयक
धर्मय भाषि पद-वर्न (पण्ड ११) । ४
विद्या का एक दोष विष दोषसे भाष्य
का व्याप करने पर दोष विद्या या विद्या-व्याप
विमुच्य हो वह दोष (पिङ १६२) । अङ्कि
की [विशेषय] पुराँक विसेसि-योन का
प्रकार (पिङ १६२) ।

विसेसि वि [विशेषय] १ मुच किमा
हुमा । २ पुं योग-वर्न (मुप १ ११ १) ।

विहृ दुष्ठी [विप] १ मन्, प्रकार (उवा-
कम्)। २ पुन प्राकृत मग (मग २
२—पन ७७५) प्राप्ता १ ८ ४ ५
वचन १ २१)।

विहृ की [वि] कृष्णकी वैन का गाछ
(३७ ११)।

विहृग पु [विहृग] पवी विप्रिया पवक
(पाम) मन्त्र कम्प कुर १ २४५, प्राप्ता
१७२)। जाह पु [नाम] मन्त्र पवी
(मन्त्र ८२१ ८२४ १ २२)।

विहृग पु [विमन्त्र] विमन्त्र दुष्ठा पवी
(पण १ १—पन २४ गन्त्र ४ ४)।

विहृग विमन्त्र (मन्त्र) मन्त्र।

विहृगम पु [विहृगम] पवी विप्रिया (मन्त्र
मन्त्र १२) मन्त्र ७७ छण)।

विहृग छक [वि + मन्त्र] मन्त्रा, लोकात्,
विमन्त्र करना। छक विहृजिनि (पन)
(मन्त्र)।

विहृजिनि वि [विमन्त्र] मन्त्रा हुया 'मन्त्र-
पुतिपमणाविहृजियो' (मन्त्र)।

विहृग छक [वि + मन्त्र] विमन्त्र
करना विमन्त्र करना। विहृग (मन्त्र)।

विहृग म [विमन्त्र] १ विमन्त्र, विमन्त्र
(सम्पत् १)। २ वि विमन्त्र-कर्ता विमन्त्रक
(छण)।

विहृग वि [विमन्त्र] मन्त्रावस्था पवित्र
मुक्ता 'मन्त्रावि रे मन्त्र विहृगु मन्त्रा'
(या ११२)।

विहृगिनि वि [विमन्त्र] विमन्त्र (विमन्त्र
छण)।

विहृग पु [विहृग] पवी विप्रिया (पन्म
१४ ५ ४ ११७ उत्तर २ १)।

विहृग पु [विप] मन्त्र पवी (सम्पत्
२११)।

विहृग पुन [विहृग] प्राकृत, पन्म।
गह की [गवि] १ पन्म मन्त्र में मन्त्र
(पन्म १ १)। २ मन्त्र-विहृग, प्राकृत में
पवि कर छकने में मन्त्र-मन्त्र मन्त्र (सम्प
१७० कम्प १ २४ ४१)।

विहृग के विहृग। विहृग (मन्त्र)।

विहृगिनि वि [विमन्त्र] विमन्त्र विमन्त्र
(वि २ १२)।

विहृग मन्त्र [वि + मन्त्र] विमन्त्र होना
मन्त्र होना छक जाना। विहृग, विहृग
(मन्त्र) प्राकृत ७१)। मन्त्र विहृग (वि १
१४)।

विहृग छक [वि + मन्त्र] लोकात् विमन्त्र
करना। छक विहृगिनि (छण)।

विहृग के विहृग = विहृग (वि ४ २४)।

विहृग म [विमन्त्र] १ मन्त्र होना
विमन्त्र (मुपा १११ २४१)। २ मन्त्र
करना। ३ मन्त्रा 'मन्त्र मन्त्रा मन्त्र मन्त्र-
मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा वि मन्त्रा' (मन्त्र
८८)।

विहृग पु [वि] मन्त्र (पन्म)।

विहृग की [विमन्त्र] विमन्त्र मन्त्र
करना 'मन्त्राविहृगामन्त्रा विहृग
मन्त्रा मन्त्रा' (मन्त्र ४२)।

विहृग छक [वि] १ मन्त्रा मन्त्र (वि
१ १७४)। २ मन्त्रा, मन्त्र (मन्त्र)।

विहृग की [विमन्त्र] विमन्त्र, मन्त्रा पन्म
मन्त्र 'मन्त्र मन्त्र मन्त्रा मन्त्र मन्त्रा मन्त्रा
मन्त्रा मन्त्रा' (मुपा ४२१)।

विहृग छक [वि + मन्त्र] विमन्त्र
करना मन्त्र करना। विहृग (मन्त्र)।

विहृग म [विमन्त्र] विमन्त्र (मन्त्र)।
विहृग वि [विमन्त्र] विमन्त्र (मन्त्र)

विहृग वि [विमन्त्र] १ विमन्त्र, विमन्त्र
(मन्त्र ११ २)। २ मन्त्रा मन्त्र (मन्त्र १
१)।

विहृग के विहृग। विहृग (वि ४ २)।

विहृग पु [वि] मन्त्रा मन्त्र (मन्त्र १ १ २ २)।

विहृग पु [वि] मन्त्रा मन्त्र (मन्त्र १ १ २ २)।

विहृग के विमन्त्र (वि ७, ११) विहृग
२७४ कुर १ ४७ मुपा १११)।

विहृग के विमन्त्र (पन्म २४ ५, ७
१ १७०)।

विहृग के विहृग।

विहृग वि [विहृग] १ मन्त्रा मन्त्र (वि
१२ ४४ मुपा ४ १ विहृग १११ १११)
सम्पत् १११)। २ मन्त्रा, मन्त्र 'मन्त्रावि

मन्त्रा' (मुपा १ १ २ १)। ३ मन्त्रा
विहृग मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा
'मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा
मन्त्रा' (विहृग १११) 'मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा'
(मन्त्र)। ४ मन्त्रा (सम्पत् १११)।

विहृग पु [विहृग] मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा
मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा (वि १ २१४
मुपा मन्त्र १२०)।

विहृग की [विहृग] १ विहृग मन्त्रा २
वि मन्त्रा मन्त्रा (मन्त्र १)।

विहृग १ छक [वि + मन्त्र] १ मन्त्रा
विहृग १ मन्त्रा मन्त्रा १ मन्त्रा मन्त्रा।

१ मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा १ मन्त्रा मन्त्रा (मन्त्र २
२२)। मन्त्रा विहृग मन्त्रा (मन्त्र २ १)। मन्त्रा
विहृग मन्त्रा, विहृग मन्त्रा (वि ११२ उत्तर
२७ १)। मन्त्रा विहृग मन्त्रा (मुपा १
७ १)।

विहृग वि [विमन्त्र] विमन्त्र मन्त्रा मन्त्रा
विमन्त्र विमन्त्रा 'मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा
मन्त्रा' (विहृग २२४१)।

विहृग छक [विमन्त्र] मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा
मन्त्रा विहृग मन्त्रा (विहृग १ १—पन्म ११)।

विहृग म [विमन्त्र] १ विमन्त्रा मन्त्रा
मन्त्रा २ मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा
मन्त्रा मन्त्रा (सम्पत् १११)।

विहृग म की [विमन्त्रा विहृग] मन्त्रा
मन्त्रा मन्त्रा (पण १ १—पन्म २१) विहृग
२११)।

विहृग वि [वि] विमन्त्र मन्त्रा मन्त्रा (वि ७
१४)।

विहृग वि [विहृग] १ मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा
(पन्म २७ २८)। २ मन्त्रा मन्त्रा (मन्त्रा)।

विहृग के विहृग = विहृग (मन्त्रा मन्त्रा)।
विहृग के विहृग मन्त्रा मन्त्रा (वि १ २७
मन्त्रा—मन्त्रा ११)।

विहृग म [वि + मन्त्र] १ मन्त्रा मन्त्रा
मन्त्रा २ मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा
मन्त्रा मन्त्रा (विहृग ११)।

विहृग म की [विहृग] १ मन्त्रा मन्त्रा
मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा
(पन्म ४ ४)। मन्त्रा मन्त्रा, विहृग मन्त्रा
(मन्त्र २१ ११ वि ११ २१०)। मन्त्रा
विहृग मन्त्रा (वि २२२)। मन्त्रा विहृग मन्त्रा

७ ५१ रमा महा) । ३ प्रकर मं (से ३ ११ पृष्ठ १ १ मम) । ४ व्याकरणोक्त विभि-विरोध (पृष्ठ २ २—पत्र ११४) । ५ प्रस्ता-विरोध (पृष्ठ २ १ १२) । ६ विरोध 'विहायमप्यसं पृष्ठ' (मम १ १ ६) । ७ उक्ति (महा) । ८ मम परिपाटी (बृह १) ।

विहाय न [विहाय] परिपाल (पत्र) ।
विहायि (पत्र) वि [विहायि] कर्ता कर्तव्यता (घट) ।

विहाय सक [वि + भा] १ शोभा । २ प्रकाशना चमकना शोभा । विहायति (म १२) । बह्म-विहायति (तिरि २१८) ।

विहाय पुं [विहाय] १ धनदान दंत (से १ १६) । २ विरोधी दुस्मन परिपन्थी (से न ५४३ घ ४१२) ।

विहाय देवो विभाग (गङ्गा से १ ३२) ।

विहाय वि [विहाय] १ प्रकटित, 'विहाय विहाय वि जडिभो कर्ण' (कुप्र २९६) । २ न प्रयात प्राप्त कर्म (से १२ १६) ।

विहाय देवो विहाय = विहाय (धा २२) ।

विहाय देवो विहाय = वि + हा ।

विहाय (धा) देवो विहाय (मभि) ।

विहार सक [वि + धारय] १ धरणा करना । २ विरोध का से बाध करना । बह्म-विहारत (पत्र न, ११६) ।

विहार पुं [विहार] १ विचारण ममर पति (पत्र १ ४० जमा) । २ बीड़ा-स्नान (घट १) । ३ देव-गृह धन-मन्त्रि (जत ३ ७ कुमा) । ४ धनदाता धन-मन्त्रि 'धन-सर्व वरदुर्ध्व सर्व विहार' (उत १४ ७) । ५ बीड़ा (झ = कर्म) । ६ प्रति-वर्तन मुनि कर्ता, धार्याकार (वर १ छंदि जम) । भूमि धी [भूमि] १ स्वाभाव-स्नान (घाभा २ १ १ ८ कच कर्म) । २ विचारण-भूमि (वर ४) । ३ बीड़ा-स्नान । ४ कर्म धी वरद (कर्म पत्र) ।

विहारि वि [विहारि] विहार करनेवाला (घाभा जमा धा १४) ।

विहासि देवो विहासि 'दुवार विहासि' पाठ (ध १४८ ६) ।

विहाय देवो विहाय = वि + धारय । विहा-
न, विहासि (मभि) कर्म ३७) । कर्म-
विहासिजमा (घ ४१) । कर्म-विहासिज्य
(उर १४२) ।

विहाय न [विहाय] निर्माण कराना (बेहम १६) ।

विहायि न [विहाय] धातोपना 'एवं
विहासिज्य' प्रुणोसविहायणं वर्त' (पत्रा
६, ४६) ।

विहायि धी [विहायि] उचि निरा
(पत्रा जम ७९८ धी युवा १११) ।

विहायि पुं [विहायि] धमि धाय
(पत्रा) । देवो विहायि ।

विहासि वि [विहासि] छट, निरोध
'विहासि' (पत्रा धा २ ७) ।

विहासि वि [विहासि] उचि वि प्रकुल
(व ६७) ।

विहास पुं [विहास] हंती उपहास (मभि) ।

विहास } देवो विहास । छट विहा-
सिहासय } सिक्रम विहासेक्य विहा-
सासिक्य विहासेक्य (भा ११) ।

विहासायि } देवो विहासायि (भा ११)
विहासिय } ११) ।

विहि पुं [विहि] १ व्या जपुपन विहाता
(पत्रा मन्त्र १७) । मयं १२९ कुमा) । २
पुंभी-प्रकार, मेर (जमा) 'कर्मविहासि
ही' (पत्र ११६) । ३ धातोप विहा-
पुनान कर्मता (पत्रा १ ४८ धी) । ४
धम विहासि परिपाटी (बृह १) । ५
पति । ६ विरोध धाते धाता । ७ धाता
सूचक धाम । ८ व्याकरण का सूचक-विरोध ।
९ कर्म । १० हाथी को बाले का पत्र (हे १
१४) । ११ वेर धाम, 'मपुकोतो पृष्ठ
विही विहासि जं न करे' (मुद्र १ ८) ।
पाप कुमा प्रामु ५८) । १२ धीवि म्याय ।
१३ विहि, मयता (बृह १) । १४ धमि
कर्म (पत्रा ११) । 'नु वि [वि] विहि
न मन्त्रार (छामा १ १—पत्र ११) विहि
न ११८) । पयन न [पयन] विहि-
मास, विहि-मास, विहि-पयन (बेहम
७७४) । धाय पुं [धाय] धी पुंभी
मयं (पत्र ७५, बेहम ७७४) ।

विहि वि [विहि] १ कृत् मन्त्रित
मिभि (पत्रा महा) । २ पति (धौप) ।
३ धाम में जिसका विमान हो वह शाको
(पत्रा १४ २७) ।

विहि सक [वि + हि] विहि नपायों
से मारता, बध करना । विहि (घाभा १
१ ६) । कर्म विहि (पत्रा १ २—पत्र
४) ।

विहि वि [विहि] हिहा करनेवाला
'य-विहिसे कुम्भ ए दी' (घाभा १ ९ ४ १) ।

विहिस वि [विहिस] बध करनेवाला
(घाभा मन्त्र १ १) ।

विहिस न [विहिस] विहि प्रकार से
मारता (पत्रा १ १—पत्र १८) ।

विहि धी [विहि] १ विरोध विहा
(पत्रा १ १—पत्र ४) । २ विहि विहा
(सूत्र १ २ १ ४४) ।

विहाण वि [विहाण] १ धारा धनय
विहि (से ७ ५३ १३ ४६, मभि) ।
२ विहि मय कर दुष्कर्म-दुष्कर्म बना हुय
(ने १ १) ।

विहि म [वि] बाल धारण (उर ८४२
६) ।

विहि विहि वि [वि] विहि विहि प्रकुल
(पत्र) ।

विहिय देवो विहाय = वि + हा ।

विहि सक [वि + रय] बगला
निर्माण करना । विहि विहि (पत्रा ७४) ।

विहिय वि [विहिय] १ बजित रहित (पत्रा
१७२) । २ व्यक्त (कुमा) ।

विहोर सक [प्रति + रय] प्रताता काता
बाट बंहाता । विहोर (हे ४ १११)
विहोर (घ ४१८) ।

विहोर वि [प्रवीर] प्रवीर करनेवाला (कुमा
७ ३८) ।

विहार वि [प्रतावि] जिसको प्रवीर
को गई हो वह (पत्रा) ।

विहोस देवो विहोस (ने १४) ।

विहोसि देवो विहोसि (पत्रा १४४) ।

विहु पुं [विहु] १ कर्म बाध (पत्रा) । २
विहु धीवि । ३ धमा । ४ धम

वीरप्रणय वि [वीरप्रणय] विरहो रक्षा से
हवा कपटई परी हो वह (स ५४६)।

वीर पुंलिंग [वीरि] १ वरप, कर्मण (वायु
मय)। २ वायव्य गन्त (मय २ २—
७७२)। ३ संयोजक, संबन्ध (मय १
२—पत्र ८२२)। ४ पुनर्-वायु (मय १४
१ टी—पत्र ४४४)। वृद्ध न
[वृद्ध] प्रवेष्ट स मूल इत्य वयवय-वीर
वस्तु (मय १४ १ टी—पत्र ४४४)।

वीर की [विद्वति] १ विरह इति पुट
विद्या। २ वि पुट विद्यावाता (मय १
२—पत्र ४२५)। ३ देवा विद्या (मय
४ ५ टी)।

वीरगाढ वि [वीरगाढार] राम-प्रति (मय
७ १—पत्र २२३ वि १ २)।

वीरकृत वि [न्यतिकृत] १ व्यतीत,
पुनरावृत्त 'वाचस्पति वीरकृत' (सम ८६)। २ विरह उत्सर्जन विद्या हो
वह (मय १ १ टी—पत्र ४२६)।

वायव्यम सक [व्यति + क्रम] उत्सर्जन
करता। वृद्ध वीरकृतमाय (मय)।

वीरकृतनाम देवो वाञ्छ=वीरम्।

वीरमिस्स वि [व्यतिमिस्स] मिथित मिता
हुवा (वाचा)।

वीर्य वि [वीर्य] क्लिष्टो हवा की परी
हो वह (वीर महा)।

वायव्य सक [व्यति + प्रम] १ परि
भ्रमल करता। २ वयन करता, वाता। ३
उत्सर्जन करता। वीरप्रणय वीरप्रणय,
वीरप्रणय (मय २ टी मय १ १—
पत्र ४२६)। वृद्ध वीरप्रणय (वाचा
१ १—पत्र ११)। वृद्ध वीरप्रणय
वायव्यवाता (मय २ ८ १ १—पत्र
४२६)।

वीर की देवो वीर=वीरि (वायु मय १
२ २)।

वीरि म [विधि] १ वयन होकर, पुण होकर
(मय १ २—पत्र ४२६)।

वीरि य [विधि] १ विरह करके (मय
१ २—पत्र ४२६)।

वीर्यय देवो वीर्यय। वीर्यय (मय मुञ्ज
२ टी मय ७ १—पत्र १२४)। वृद्ध
वीर्ययमाय (मय १८ वि ७ १२१)।
वीरि देवो वीरि=वीरि (मय १४
१—पत्र ४४४)।

वीरि की [रे] वृद्ध रक्षा होटा वृद्ध
(रे ७ ७)।

वीर देवो वाञ्छ=वीरम्। वीर, वीरमि
(हे ४ २, वृत् ११)।

वीर्य देवो वाञ्छ (मुमा)।

वीर्य देवो वृद्ध (स १ ८)।

वीर्य देवो वीर्य (स १०)।

वीर्य पुं [वीर्य] वना राम (मय
७११)।

वीर्य वि [वीर्य] वयन राममिता
(वाचा १ ८—पत्र ४४४)।

वीर्य की [वीर्य] वना राम वाच
वीर्य (मय)। देवो वीर्य।

वीर देवो वीर (मय ७ २२६, मय)।

वीर सक [वि + चारय] विचार करता।

वीर्य, वीर्य (मय १२१ मा ७१)।

वीर देवो वाञ्छ (मय ११ १२)।

वीर्य म [वि] १ वयन करता (स १
१२)। २ विरि करता, वयन (स
७१२)।

वीर की [वीर] वाच-विरोध (मय मुमा
वा १११ स्वय १७)। वीर्या की
[वीर] वीर्य-विरोध वीर 'वा वृद्ध
वीर्यमिथित वीर्य वीर्या वीर्यामिथित'
(स १ ६)। वाच्य वि [वाच्य] वीर्या
वयनवाता (मय)।

वीर देवो वीर=वीर (मय २ १—पत्र
४२ वर १८—पत्र ४२६ मुञ्ज २ —
पत्र २२६)।

वीर्य देवो वीर्य (मय १ १—
वाच्य १८)। वय ४२६, वाचा १ १—पत्र
२४ २६)।

वाच्य देवो वीर्य देवो वीर्य (मय)।

वाच्य देवो वीर्य (मय १ १२—पत्र
१०४)। वृद्ध वीर्ययमाय (मय)।

वीर्य वीर्य (वीर)।

वीर्य सक [वि + मुदा, मीमांस] विचार
करता पर्यालोचन करता। वृद्ध
वीर्यसि (मय २१)।

वीर्यसि वि [विमर्श मीमांसक] विचार
करता (मय)।

वीर्य की [विमर्श मीमांस] विचार,
पर्यालोचन विचार की वाच्य (मय १ १
२ १७ वर २०६; १२६; २६५, वर
४२)।

वीर्यसि वि [विमर्श मीमांस] विचार
करता पर्यालोचन (मय २४)।

वीर पुं [वीर] १ वयन महावीर (मय १
१—पत्र २१ १ २ मुञ्ज २; वी १)।
२ वयन-विरोध (मय)। ३ वाच्य-प्रति
एक वर (मय १११)। ४ वि वयन
वृद्ध (वाचा मुञ्ज १ ८ २१; मुमा)। ५
वृद्ध एक वयन-विमान (मय १२ ६)। ६
न वयन वर वी वर वीर वीर वीर
एक विचार-मय (६)। ७ वृद्ध वृद्ध
[वृद्ध] एक वयन-विमान (मय १२)। वृद्ध
वृद्ध [वृद्ध] वयन वीर्य का एक वयन
(मय १ १ वि २२)। वृद्ध वीर
[वृद्ध] वयन वीर्य की एक वयन
(मय २२)। वृद्ध वृद्ध [वृद्ध] एक वयन-
विमान (मय १२)। वयन वृद्ध [वृद्ध] एक
वयन-विमान (मय १२)। वयन वृद्ध
[वृद्ध] वयन वीर्य का एक वयन
(मय १२)। वयन वृद्ध [वृद्ध] वयन
वृद्ध का एक वयन वयन (वी २
वृद्ध ११)। 'निहाय न [निहाय]
वयन-विरोध (मय)। वयन न [वयन]
एक वयन-विमान (मय १२)। वयन वृद्ध
[वृद्ध] वयन वीर्य का एक वयन
वयन (मय ११ वयन)। वयन वृद्ध [वृद्ध]
एक वयन वयन (मय)। वयन वृद्ध [वृद्ध]
एक वयन-विमान (मय १२)। वयन वृद्ध
[वृद्ध] एक वयन-विमान (मय १२)। वयन
न [वयन] वयन वयन वयन वयन वयन
'वयन वयन वयन वयन वयन वयन
(मय १ ११ २२)। वयन वयन

['बराणी] प्रसिद्ध है प्रथम राजा-प्रहार
की याचना (मिरि १ २४)। यत्न न
['यत्न] युद्ध का एक व्युत्पन्न शब्द
मूलक कर्म (ध्या १० २६)। 'मिठाई
को ['मिठाई] कसी-फिटो (पण्ड १—
११ ११)। 'सिग पुन' ['शुद्ध] एक देश
निवासी (धम १२)। 'सिद्ध पुन' ['सुद्ध]
एक देश-निवासी (धम १२)। 'सेन पु'
['सेन] एक प्रसिद्ध शेर याचक का नाम
(शाय १ १—११ १)। 'संजय पुन' ['संजय, भोजिक]
एक देश-निवासी (धम १२)। 'संजय पुन'
['संजय] भोजिक-निवासी (धम १२)।
'संजय न' ['संजय] याचक-निवासी शेर
के लक्षक सिद्धांत पर बैठने के लिये
प्रस्ताव (शाय १ १—११ १२)। 'संजय
वि' ['संजय] शेर-निवासी के
बैठनेवाला (धम १ १—११ १२)।

वीरगव पु' ['वीरगव] १ कर्मात्मा, महावीर
का पाद शिवा भोजनवाला एक राजा (धम
— ११ ११) २ एक राजा-प्रहार (ज १ ११
१)।

वीरघात ध्वज ['वीरघात] एक-फिटो का
ध्वज (धम ११ ११)।

वीरह पु' ['वीरह] रस-वर्ण (पण्ड १ १—
११ ११)।

वीरिअ पु' ['वीरि] १ भयानक याचक का
एक मुनि-वर्ण २ कर्मात्मा याचक का
एक कण (धम — ११ ११)। ३ पुन
याचक, कर्मात्मा (धम १ १—११ ११)
४ धम ११ ११)। ५ धम ११ ११)।
६ धम ११ ११)। ७ धम ११ ११)।
८ धम ११ ११)। ९ धम ११ ११)।
१० धम ११ ११)। ११ धम ११ ११)।

वीरगा ध्वज ['वीरगा] रस-वर्ण फिटो,
शिरा (१ ११)। धम ११ ११)।
(धम १—११ ११)।

वीरभारत-विजय पुन' ['वीरभारत-विजय]
एक देश-निवासी (धम ११)।

वीरगा ध्वज ['वीरगा] रस-वर्ण फिटो,
शिरा (१ ११)।

वीरगा ध्वज ['वीरगा] रस-वर्ण फिटो,
शिरा (१ ११)।

वीरगा ध्वज ['वीरगा] रस-वर्ण फिटो,
शिरा (१ ११)।

वीरगा ध्वज ['वीरगा] रस-वर्ण फिटो,
शिरा (१ ११)।

वीरगा ध्वज ['वीरगा] रस-वर्ण फिटो,
शिरा (१ ११)।

वीरगा ध्वज ['वीरगा] रस-वर्ण फिटो,
शिरा (१ ११)।

वीरगा ध्वज ['वीरगा] रस-वर्ण फिटो,
शिरा (१ ११)।

वीरगा ध्वज ['वीरगा] रस-वर्ण फिटो,
शिरा (१ ११)।

वीरगा ध्वज ['वीरगा] रस-वर्ण फिटो,
शिरा (१ ११)।

वीरगा ध्वज ['वीरगा] रस-वर्ण फिटो,
शिरा (१ ११)।

वीरगा ध्वज ['वीरगा] रस-वर्ण फिटो,
शिरा (१ ११)।

वीरगा ध्वज ['वीरगा] रस-वर्ण फिटो,
शिरा (१ ११)।

वीरगा ध्वज ['वीरगा] रस-वर्ण फिटो,
शिरा (१ ११)।

वीरगा ध्वज ['वीरगा] रस-वर्ण फिटो,
शिरा (१ ११)।

वीरगा ध्वज ['वीरगा] रस-वर्ण फिटो,
शिरा (१ ११)।

वीरगा ध्वज ['वीरगा] रस-वर्ण फिटो,
शिरा (१ ११)।

वीरगा ध्वज ['वीरगा] रस-वर्ण फिटो,
शिरा (१ ११)।

वीरगा ध्वज ['वीरगा] रस-वर्ण फिटो,
शिरा (१ ११)।

वीरगा ध्वज ['वीरगा] रस-वर्ण फिटो,
शिरा (१ ११)।

वीरगा ध्वज ['वीरगा] रस-वर्ण फिटो,
शिरा (१ ११)।

वीरगा ध्वज ['वीरगा] रस-वर्ण फिटो,
शिरा (१ ११)।

वीरगा ध्वज ['वीरगा] रस-वर्ण फिटो,
शिरा (१ ११)।

वीरगा ध्वज ['वीरगा] रस-वर्ण फिटो,
शिरा (१ ११)।

वीरगा ध्वज ['वीरगा] रस-वर्ण फिटो,
शिरा (१ ११)।

वीरगा ध्वज ['वीरगा] रस-वर्ण फिटो,
शिरा (१ ११)।

वीरगा ध्वज ['वीरगा] रस-वर्ण फिटो,
शिरा (१ ११)।

वीरगा ध्वज ['वीरगा] रस-वर्ण फिटो,
शिरा (१ ११)।

वीरगा ध्वज ['वीरगा] रस-वर्ण फिटो,
शिरा (१ ११)।

वीरगा ध्वज ['वीरगा] रस-वर्ण फिटो,
शिरा (१ ११)।

वीरगा ध्वज ['वीरगा] रस-वर्ण फिटो,
शिरा (१ ११)।

वीरगा ध्वज ['वीरगा] रस-वर्ण फिटो,
शिरा (१ ११)।

वीरगा ध्वज ['वीरगा] रस-वर्ण फिटो,
शिरा (१ ११)।

वीरगा ध्वज ['वीरगा] रस-वर्ण फिटो,
शिरा (१ ११)।

वीरगा ध्वज ['वीरगा] रस-वर्ण फिटो,
शिरा (१ ११)।

वीरगा ध्वज ['वीरगा] रस-वर्ण फिटो,
शिरा (१ ११)।

वीरगा ध्वज ['वीरगा] रस-वर्ण फिटो,
शिरा (१ ११)।

वीरगा ध्वज ['वीरगा] रस-वर्ण फिटो,
शिरा (१ ११)।

वीरगा ध्वज ['वीरगा] रस-वर्ण फिटो,
शिरा (१ ११)।

वीरगा ध्वज ['वीरगा] रस-वर्ण फिटो,
शिरा (१ ११)।

वीरगा ध्वज ['वीरगा] रस-वर्ण फिटो,
शिरा (१ ११)।

वीरगा ध्वज ['वीरगा] रस-वर्ण फिटो,
शिरा (१ ११)।

वीरगा ध्वज ['वीरगा] रस-वर्ण फिटो,
शिरा (१ ११)।

बीसाम पु [विधाम] १ विधान धरम् । २ मनुष्य व्यापार का व्यवहार, वायु बिम्बा का चर (हे १ ४१ छे २, ३१ महा) ।

बीसामण रेको विस्सामण (कुम् ११) ।

बीसामणा रेको विस्सामणा (कुम् ११) ।

बीसाम्य रेको विसाम = वि + स्वास्य । कु-

विसायणिय (पण्ड १७—पत्र ४१२) ।

बीसार रेको विस्सार = वि + स्मृ । बीसारे (वर्ग १११) ।

विसारिय वि [विस्सारित] पुत्रवाया हुमा (कुमा) ।

बीसास सक [मिश्रय] १ भिक्षा मिता-
वट करना । बीसास (हे ४ २८) ।

बीसासिय वि [मिश्रित] विबाया हुमा (कुमा) ।

बीसाय (धर) रेको बीसाम (कुमा) ।

बीसाम रेको विस्सास (प्राप्त) कुमा) ।

बीसिया धी [विक्रित] बीस संक्रमावाध (वच १) ।

बीसु न [वि] पुनक पुपु पुषा (हे ७ ७१) ।

बीसु न [विष्णु] १ समन्तात्, सब ओर से । २ समस्तपण समस्त्य (हे २ २७ ४१ १२ पत्र कुमा हे ७ ७१ छे) ।

बीसुम रेको वासंम = वि + सम् । बीसु-
मन्त्रा (ठा २ २—पत्र ३ ८० पत्र) ।

बीसुम सक [वि] पुष्य होण पुषा होण ।
बीसुमेरा (ठा २ २—पत्र ३ ८० पत्र) ।

बीसुमय न [वि] पुष्यय धसय होण (ठा २ २ छे—पत्र ३१) ।

बीसुमण न [पिपमण्य] विषाट (अ २ २ छे—पत्र ३) ।

बीसुय रेको विस्सुय (पण्ड १ ४—पत्र १८) ।

बीसेडि रेको बिसेडि (वाच १ छे वि
बीसेडि) १ ४) ।

बीहि पुन [वि] वाच. वाच-विरोध धासीण
वा बीहीण वा बीहासि वा बीहणि वा
(पुम २ २ ११) पत्र) ।

बीहि } धी [वीधि, का वी] १ मार्ग
बीहिया } रस्ता (धावा पुप १ २ १
बीही } २१ प्रवी १ मय ११ पत्र) ।
२ बीही वधि (घ १ ४) । ३ धन पाण
(ठा १८—पत्र ४१८) । ४ बाजार (अ २८
महा) ।

मुस वि [वि] १ कुता हुमा । २ कुतवासा
हुमा 'जम ठपुठा बीय मय पुप मं न
मयममम' (पत्र २२१) रेको पुप ।

मुस वि [वि] १ प्रापित । २ प्रार्थना
पुत्रय } धारि धे निपय, 'पुषी' (वर्ग ४) ।
१ विटि 'कुम्मुमुसा' (पुषा ११) ।

मुस वि [वक्त] कवित (उच १८ २६) ।

मुस (१) सक [वक्त + नमय] १ ठंडा करना ।

पु नर (वाता ११४) ।

मुताधी धी [पुताधी] नैमन मय पाय (वे
७ ११) ।

मुं रेको वं = मुं (पा ११४ छे १ ११) ।

मुंवारय रेको वंवारय (वे १ ११२ कुमा
पत्र) ।

मुंवाण रेको विंवाणय (हे १ १११ प्राप्त
संति ४ कुमा) ।

मुं रेको वंर (हे १ २३ कुमा १ १८) ।

मुस रेको मुस = वे (पत्र) ।

मुस वि [व्युत्क्रान्त] १ ध्वनिगत व्यतीत
पुनर हुमा 'मेलीस कुसंति महाधिप
मेलिप धरवर्ध' (पाप) 'पुसंति बहुकालो
पुस पवसेन कुण्ठस' (पुषा १११) । २
विस्तार विगट (पत्र) । ३ निष्कण्ट बाहर

निष्का हुमा (पिपु १६) रेको वासंति ।

मुसंति धी [व्युत्क्रान्ति] क्वरति (पत्र) ।

मुसम पु [व्युत्क्रम] १ इति, बहाव (पुम
२ ३ १) । २ क्वरति (पुम २ ३ १
२ ३ १७) ।

मुसक सक [व्युत् + कृ] १ पीछे बीसता
नापन लीयना । कुसाहि (धावा २ ३
१ १) ।

मुसक रेको मुसक (सक) ।

मुसक सक [वे वृत्तारय] मर्जत करना ।

कुसारेति (पत्र १ १) ।

मुसियरि न [वि मुस्यरित] मर्जना (म
१४८) ।

मुगाह पु [व्युत्क्रम] १ बहाव भगाहा
विग्रह सहाई (अ २ १—पत्र ३ पत्र
१ पत्र २६८) । २ बाह्र बहाव (उप पु
२४४) । ३ बहकाव (धरोप ४२) । ४
मिमागिनियेस, कथाग्रह (पत्र) ।

मुगाह वि [व्युत्क्रम] १ बहाव-कारक
मय मुगाहिप कह कथिना' (वच १ १) ।

मुगाहि वि [व्युत्क्रम] १ बहाव-संबन्धी
(वच १ १) ।

मुगाह सक [व्युत् + माहय] बहकाव
भात-विच करना । मुगाहो (महा) ।

बह, मुगाहमाण (साय १ १२—पत्र
१७४ पत्र) ।

मुगाहणा धी [व्युत्क्रम] १ बहकाव
(धोपना २२) ।

मुगाहि वि [व्युत्क्रम] १ बहकाव
हुमा भ्रमविच किया हुमा (कच वेहय
११७ विरि १ ८१) ।

मुस रेको मय = मय ।

मुसमाण वि [व्युत्क्रम] १ जो कदा कदा हो
वह (पुम १ १ ११ मय अ ११ छे) ।

मुसा य [उत्क्रा] कह कर (पुम २ २
८१ वि १८७) ।

मुस रेको पण्ड = पुष (पाट—पुस १४४) ।

मुस रेको पोख (कम् १ १) ।

मुस रेको पोखि ।

मुसियणा रेको मुसियन (पत्र) ।

मुसिय वि [व्युत्क्रम] १ विवे २४ २) ।

मुसिय वि [व्युत्क्रम] १ व्यभिचरि ।
मय हटा हुमा । २ विगट (अ) । ३ न.
मगाठार बीह्र रिता का उन्नाय (धरोप
१८) ।

मुसिय रेको पोखिय (पत्र २७१; कम्
२, २२ पुषा १४४) ।

मुसियण रेको पोखियण (अ १—पत्र
१४८) ।

मुस सक [यस] १ बला । मुस (प्राप्त) ।
रेको होय ।

मुसण न [वि] स्वाण पाण्डारन, बहना
(मर्ज १ २१ छे ११ २) ।

सुगन्ध वि [उद्यमान] पात्री के देव से बीया
पाठा कह जाता (पत्र १ २ २४) विरि
निगन्धोत्प्रेदि सुगन्धो (दे ४२)। देवो
बह = बहू।

सुगन्ध देवो पुष्प (वर्त १ २१)।
सुगन्धमाय देवो सुगन्ध (पत्र ८३ ४)।
सुग (पत्र) देवो वध = बहू। सुग (दे ४
२२२ गुमा)। छं सुगणिय, सुगणिय
(दे ४ १२२)।

उद्ग पक्ष [स्युत् + स्या] उद्या बड़ा
होना। सुद्ग (वि ११०)।
उद्ग वि [सुद्ग] १ बड़ा गुमा (दे १ १३०)
विवा २, १—वध १ गुमा १ वर)।
२ न सुद्ग (वध ४ १)।

सुद्ग देवो विद्गि वृत्ति (दे १ १३० गुमा)।
शय वु [शय] बगला जल-क्यू (वध
१४ २—वध १४४ वध)।

सुद्ग वि [सुस्वि] जो छंद कर बड़ा
होना हो बह (वधि)।
सुद्ग देवो सुद्ग = वृत्त संवद कर्मवर्तिगुदी
(वध २१ २२)।

सुद्ग पक्ष [सुप्] बगला (वधि १४)।
सुर्विज (वध २)।
सुद्ग पक्ष [पक्ष] बगला। बह सुद्गर्व
(१ २१)।

सुद्ग वि [पक्ष] १ बह धनकावाला,
गुमा (वधो नुर १ १ ४ गुमा १२०)
वध १२। प्राप् १११। वध)। २ बड़ा
प्राप् (गुमा)। ३ सुवि प्राप्। ४ धनुर्वि,
सुद्ग वि [सु] २ वधि बगला
(दे १ १११ २ ४ १)। ५ सुवि
छन्द, निवहार (वध)। ६ सु वि
बगला (वधो १ १२—वध ११३। वध
१४)। एक वध सुवि का वध (वध)।
७ वध व [सु] सुगन्ध, बगला
(गुमा १६ २४२)। बाह वु [वावि]
एक कर्म वधोवाले को सुगन्ध वधि
विधवध विवाह के वध से (वध १४)।
वाय वु [वाह] विवच्छो बड़ा
वधवधि (व २ ०)। वाका वु [वाय]
बगला (वधो १ १२—वध ११३ वधो)।
गुमा वि [गुमा] वध का वधवधि (व
११)।

सुद्ग वि [दे] विवत् (वध)।
सुद्गि वी [सुदि] १ बगला बगला (वापा
वध, वधो गुमा वध)। २ वधवधि, वधवि।
३ वधवि वधवि। ४ वधवधि-वधवि
वधो वधि वधो की एक वधो (गुमा
१ ११ दे १ १११)। ५ वधु। ६
वधवधि, वध। ७ वधवधि-वधो। ८ वु
वधवधि-वधो (दे १ १११)। वध वि
[वध] वध-वधो (गुमा १ १२१। २ २४)
वधवधि वि [वध] वधवधो वधवधि
वधो (वापा)। व वि [वध] वधवधो
(विवा १२४)।

सुगन्ध वि [दे] गुमा (वध १४१)।
सुगन्ध वि [दे] गुमा गुमा। वध-सुगन्ध
वधो (गुमा २२१)।

सुगन्ध वि [दे] १ वध वध (दे ४ २४
विवा १ २—वध २४)। २ वधि (दे ४
२४)।

सुग वि [वध] वध (वधो वध १ वध)।
सुग वि [वध] वधो गुमा (वध)।
सुग न [वध] वध, वधवि, वध (विध)।
वधो वध = वध।

सुग देवो सुग (वधो २१)।
सुर्वि वु [सुर्वि] वध, वधवधि, वधवधि
वध (वध १२४)। वध दे १ ११३ व
१२)।

सुवि देवो वधि = वधि 'वापावावधवि' (वध २ १ ४; प्राप् ३)।

सुवि वि [वधि] वधो गुमा वधो गुमा
(वापा वधो १ ४—वध १२४ वध वध
४१ वध १२४ वध २, १० से ११
गुमा १००)।

सुवि देवो सुवि = वध (वध)।
सुवास वु [सुवास] विवध (विध १४४)।
सुवि देवो वध = वधि (वध ४)।
सुवि देवो सुवि = वध (वध)।
सुवि देवो सुवि (वध १ १०—वध १२४ वध
१० वधि ४)।
सुवि देवो सुवि (गुमा १ १२४ गुमा २२;
वधि १। वधि गुमा दे ४ ४२१)।

सुर्वि वि [वध] वधो वधो वधो वधो
वध वधवधि वधवधि वधवधि सुर्वि
(वध २२ वि ११०)।

सुपाय वि [स्युत् + पाय] वधवधि
वधो वधवधि वधो वधो वधो वधो
(वधो १ १२—वध १४४ वधि)।

सुपक्ष व [दे] वध वध वध वध (दे ४
४४)।

सुपक्ष देवो वध = वध।
सुपक्षमाय देवो सुपक्षमाय (वध २२१)।
'सुर्वि देवो सुर्वि (वध ११)।
'सुर्वि देवो सुर्वि = वध (वध १४,
४४)।

सुवध वु [दे] वध वध वध वध (वध १११)।

सुवध देवो वध (वापा वध ४४ वध ४२;
वध—वध ११)।

सुवि वी [सुवि] वधि का वध। वधि,
वधवधि वि [वधि] वधो वधि वधि वधि,
वधो वधि (विध ११)। देवो सुवि,
वधि।

सुवि वि [सुवि] वधि वधि वधि, वधो
वधि 'सुवि वधि वधि वधि' (विध ११)।

सुवि वि [सुवि] वधि वधि वधि वधि वधि
वधि वधि वधि वधि वधि वधि वधि
(विध ११)।

सुवि वी [सुवि] वधि का वध। वधि
[वधि] वधो वधि वधि, वधि, 'वध वधि
वधि वधि' (वध १ ४ ११। १ ११ ११)
१ १२, ४ वधि १ १०। वधि २, १)।
देवो सुवि।

सुवधमाय देवो (वधो वधि वधि वधि
वधि वधि वधि वधि वधि वधि वधि
(वध १४ वधि ११; १२)।

सुवि देवो सुवि = वध (गुमा ११ १२)।
सुवि वि [सुवि] १ वधो वधि वधि वधि,
'वधि वधि वधि वधि वधि वधि वधि वधि
वधि वधि' (वध १४ वधि २। वधि १२४
वधि १२)। २ वधि वधि वधि वधि वधि
वधि वधि वधि वधि वधि वधि वधि
(वध १४ वधि १)। ३ वधि वधि, वधि वधि वधि

क्या (सत १२२) । ४ जन्मिन्, पुट (वि १ २) । ५ निष्ठा निम्ना हुया।
‘अमृतामृतं हृद्यो वृत्तान्तं मे महान् ईश्वर।
ते मस्तुष्टुमस्तुष्टुमस्तुष्टु सन्ने भवन्ति पावेय’
(बेद्य ४) ।

वृणाक वृण [वे] बाहक वृणा (राज) ।
वृण नि [वे] कुना हुमा वृण न तपदा वृण
नम किण्वि वेय यक्षिमनसि (मुपा १४१) ।
वेको वृण = (१) ।

वृण वृण [वृण] १ मुक के लिए की बाली
द्वय की रचना-विरोध (पण्ड १ ३—पण
४४ भोय स १ ३ हुमा) । २ वृण
(धम १ १ कुप २६) ।

वे वेको वृण = वे (पण्ड ४ पण) ।

वे पक [यि + इ] गट होना । वह (विदे
१७२४) ।

वे १) पक [व्ये] संवण करना । वेद,
वम } वेद, वेद्य (पण्ड) ।

वृण सक [वेद्य] १ धनुष करना
भोक्ता । २ बाणा । वेद्य, वेद्य, वेद्य
(धम्मन्तो ११ पण) । वृण वेद्य, वेद्यमाय
वेद्यमाय (धम्मन्तो १ पण ७२ ४२
मुपा २४१ छाया १ १—पण ११ नीम
पण २, १२२ मुपा १११) । वृण
वेद्यमाय (साग पण्ड १ १—पण २२) ।
वृण वेद्यमाय (मुपा १ १ २७) । वृण वय
वेद्यमाय वेद्यमाय (अ २ १—पण ४७
पण्ड २४ मुप २, १ मुपा ११४ म्हा) ।
वेको वेद्य = (वेद्य) वेद्यमाय वेद्यमाय ।

वेद्य पक [यि + पण्ड] विरोध करना ।
वेद्य (छवि ४२ टी) । वह वेद्य (अ ७—
पण १११) ।

वृण सक [यण्ड] कापना । वृण वृणमाय
(वा १२२ प) ।

वेद्य वृ [वेद्य] १ शास्त्र-विरोध आदेश पाणि
जब (विवा १ २ टी—पण १) । पाया
अण । २ कर्म-विरोध वेद्यवेद्य कर्म का
एक वेद्य, जिसके जय स वेद्युन की हृद्य
होटी है (धम्म १ २२) जय २ १११) ।
१ पायापण पाणि वेद्य पण्ड (पाया १ ३
१ २) । ४ विद्य, वाक्य (अ) । व वि
१०२

[वृण] वेद्यों का वाक्य (पाया १
१ २) । वि, विदि वि [वेद्य] वृद्य
वृद्य (वि ४११ मा २१) । पण्ड न
[वृण्ड] वृद्य-विरोध (पाया २ १२
१२) । पण्ड न [वृद्य] वेद्यो पण्ड
(पाया २ १२, २) ।

वेद्य न [वेद्य] कर्म-विरोध मुक एका वृण
का कायस मुन कर्म (धम्म १ १) ।

वेद्य वृ [वेद्य] वृद्य गति वृद्य वेद्यी (पाय
से १ ४१ हुमा महा पण्ड २१ ११) ।
२ प्रवाह । ३ वेद्य । ४ मुन पाणि वि-साय-
पण्ड । ५ संस्कार-विरोध (पण्ड ४१) । वेद्यो
वेद्य ।

वेद्यो वृ [वेद्य] परांन-विरोध जलिक
का विचार करनेवाला वृद्य (पण्ड १) ।

वेद्यो वि [वेद्य] १ भोक्ता-वाक्य धनुष
करनेवाला (धम्मन्तो १२ वृद्यो ११
भाषक १ २) । २ न धम्मन्तो का एक वेद्य
(धम्म १ ११) । ३ वि धम्मन्तो-विरोध
वाक्य वृद्य (धम्म ४ ११ २२) । वृद्य
वि [वृद्य] वृद्य विद्यो वृद्य विद्यो वृद्य
कय वृद्य वृद्य (मुप २ २ ११) ।

वेद्यवृद्ध न [वेद्य] १ उत्तराध्वन, छाती
में यज्ञोपवीत की छत्र पहना भाटा वृद्य,
मला पाणि । २ वृद्य-विरोध मर्त्य-वृद्य ।
३ कर्म के नीचे मर्त्य (छाया १ ८—
पण १११) ।

वेद्यवृद्ध सक [वृद्य] वृद्यता । वेद्यवृद्ध (हि
४ ४२ पण्ड) ।

वेद्यवृद्ध नि [वृद्य] वृद्य हुमा वृद्य
(मुपा पाय भवि) ।

वेद्यवृद्ध नि [वे] प्रत्युत, फिर से वृद्य हुमा
(वे ७ ७७) ।

वेद्यवृद्ध वृ [वे] वेद्यवृद्ध वेद्यी वेद्यवृद्धा
वृद्यी वृद्यी (पण्ड) ।

वेद्यवृद्ध वेद्यो वृद्यवृद्ध (वीय) ।

वेद्यवृद्ध न [वे] धम्मन्तो, निम्ना (वे
७ ११) ।

वेद्यवृद्ध वृ [वेद्य] परांन-विरोध (मुप १
१७ मुप १२२ महा पण्ड) ।

वेद्यवृद्ध न [वेद्य] विद्यवृद्धा विद्य-
वृद्धा (मुपा १२२) ।

वेद्यवृद्ध न [वेद्य] वृद्यो का वृद्य वृद्यवृद्ध
(पाय विवा १ १—पण ४२ स २
११०) ।

वेद्यवृद्ध न [वृद्य] १ धम्म कापना (वेद्य
४१२ गट—उत्तर ११) । २ वि वृद्यन
वासा (वेद्य ४१२) ।

वेद्यवृद्ध न [वेद्य] धनुष भोय (पाया
धम्म २ ११) ।

वेद्यवृद्ध वेद्यो विद्यवृद्धा (अ १ १ ११
पण्ड १ ४१ १११ १७४) ।

वेद्यवृद्ध नि [वेद्य] १ भोक्ता-वाक्य ।
वेद्यवृद्ध २ न कर्म-विरोध मुक-वृद्य
मर्त्य का कायस-मुन कर्म (सा ४ २
४ धम्म धम्म १ १२) ।

वेद्यवृद्ध वेद्यो वेद्यवृद्ध (विदे २२०) ।

वेद्यवृद्धी वृ [वेद्यवृद्धी] १ मर्त्य-वृद्धी
(मुप ४२२ वृद्य) । २ वृद्य-वाक्य वेद्यो की
एक वाणि जो वेद्यवृद्धी की विद्यवृद्धा कय
धम्म मर्त्य-वृद्धी को वृद्यता है (धम २२) ।
३ विद्य-विरोध (धमवृद्य) ।

वेद्यवृद्ध वेद्यो वृद्यवृद्ध = विद्यवृद्ध ‘विद्यवृद्ध
नियवृद्धवेद्य वृद्यवृद्ध विद्यवृद्ध’ (वृद्य
२) ।

वेद्यवृद्ध नि [वे] १ मुक, कोमल (वे ७
७४) । २ न धम्मन्तो (वे ७ ७४ पाय) ।

वेद्यवृद्ध न [वेद्यवृद्ध] विद्यवृद्धा वृद्यवृद्धा
(वृद्य) ।

वेद्यवृद्ध वेद्यो वृद्य = वेद्य ।

वेद्यवृद्ध वृ [वेद्यवृद्ध] वृद्य-विरोध वेद्य का वृद्य
(वे १ २ ७ पण्ड ४ ४२) ।

वेद्यवृद्ध नि [वेद्यवृद्ध] वृद्यवृद्धा वृद्यवृद्धा
वेद्यवृद्धा वेद्यवृद्धा वेद्यवृद्धा वृद्यवृद्धा
(वृद्यवृद्ध) ।

वेद्यवृद्ध सक [वे] वृद्यता प्रवृद्धा करना ।
वेद्यवृद्ध (पण्ड) । कर्म वेद्यवृद्धा (पा १ २) ।
वेद्यवृद्धा वृद्यवृद्धा (पा २ ४१ वृद्य १ १२) ।

वेद्यवृद्ध नि [वेद्यवृद्ध] विद्यवृद्धा वृद्यवृद्धा
वृद्यवृद्धा विद्यवृद्धा वेद्यवृद्धा (अ २, १—
पण ४) ।

वेङ्कट पुं [वेङ्कट] १ विष्णु नायक । २
रत्न, वैशाखी । ३ मन्त्र पत्नी । ४ धर्मक
बुद्ध सत्त्व बर्षी का नाम । ५ लोक-विरोध
विष्णु का नाम (हे १ १६६) । ६ पुन
मनुष्य का एक विष्णुर्धर्मी (टी ७) ।

वेङ्ग रेको वेङ्ग = वेप (उत्ता कण्य) कुमा ।
वङ्ग की [बती] एक गरी का नाम (टी
१२) । वंति नि [वेङ्ग] वेमबारा (पुर
२, ११७) ।

वेङ्ग रेको वेङ्गरे (ज्या) ।
वेङ्गरेय्या } की [वेङ्गरेय्या] का
वेङ्गरेय्या } के पाठ वङ्गा काठा बङ्ग,
जलपर्व (पत्र १२) 'कर्मविषयो वेङ्गरेय्या
काव्यामहाकाव्य' (संशोध ६) ।

वेङ्ग रेको वेङ्गरे (ज्या) ।
वेङ्गरेय्या } की [वेङ्गरेय्या] का
वेङ्गरेय्या } के पाठ वङ्गा काठा बङ्ग,
जलपर्व (पत्र १२) 'कर्मविषयो वेङ्गरेय्या
काव्यामहाकाव्य' (संशोध ६) ।

वेङ्ग रेको वेङ्गरेय्या (बर्ष ८८४) मुपा
२२) ।

वेङ्ग रेको वेङ्गरेय्या (बर्ष ८८४) मुपा
२२) ।

वेङ्ग रेको वेङ्गरेय्या (बर्ष ८८४) मुपा
२२) ।

वेङ्ग रेको वेङ्गरेय्या (बर्ष ८८४) मुपा
२२) ।

वेङ्ग रेको वेङ्गरेय्या (बर्ष ८८४) मुपा
२२) ।

वेङ्ग रेको वेङ्गरेय्या (बर्ष ८८४) मुपा
२२) ।

वेङ्ग रेको वेङ्गरेय्या (बर्ष ८८४) मुपा
२२) ।

वेङ्ग रेको वेङ्गरेय्या (बर्ष ८८४) मुपा
२२) ।

वेङ्ग रेको वेङ्गरेय्या (बर्ष ८८४) मुपा
२२) ।

वेङ्ग रेको वेङ्गरेय्या (बर्ष ८८४) मुपा
२२) ।

४ २—पत्र २२२, जीव १ २—पत्र २२
अ ४ २—पत्र २२२ जीव २—पत्र
३२७, ३२८ ३३१ ३४७) । १४ एक
धनुषर वेङ्गरेय्या का निवासी वेङ्ग (पत्र
२२) । १२ धनुष-मन्त्र के जलर वक्ता पर्यंत
का एक शिष्टाचार विनय य वि(२ ५) बर्षों
(अ ८—पत्र ४१६) । १३ नि प्रभाव
वेङ्ग (मुपा १ ६ २) ।

वेङ्गरेय्या की [वेङ्गरेय्या] १ स्वभा यदाक
(सम ३३७ मुपा १ ६ १) । २ मुपा १ ७
मुपा) । २ वं बर्षों की माता का नाम
(सम १२२) । ३ द्वापारक वाणि महाकाव्य
की एक-एक धर्मविद्या का नाम (अ ४ १—
पत्र २ ४) । ४ पूर्ण वक्ता पर धर्मविद्या की
विष्णुवादी रेकी (अ ८—पत्र ४१६) । ५
विष्णु-विरोध की धर्मवादी (अ २ १—पत्र
८) । ६ एक विद्यामन्त्र-मन्त्र (पुर २,
२०४) । ७ धर्मवक्ता की एक धर्म (पत्र
८) । ८ धर्मवक्ता वक्ता की धर्म
विद्या (सम ३३१) । ९ जलर धर्मविद्या
की धर्मविद्या का नाम (अ ४ २—पत्र २३)
(अ ४ २—पत्र २३) । १० धर्म की
धर्मविद्या का नाम (विद्या म विद्यामन्त्र
(१ वेङ्गरेय्या) (मुपा १ ६) । ११ धर्मवादी
धर्मवादी की धर्मविद्या (विद्या १२२) ।
वेङ्ग नि [वेङ्ग] योगी योग धनुषर करने
योग (संशोध १३) ।

वेङ्ग पुं [वेङ्ग] १ धर्मवक्ता धर्मवक्ता (पत्र
२२७) । २ धर्म-विरोध । ३ नि धर्मवक्ता
विद्या (हे १ १४८, २ २४) । सत्य न
[शक्ति] धर्मविद्या-धर्म (पत्र १७) ।

वेङ्गरेय्या न [वेङ्गरेय्या] १ धर्मविद्या-धर्म (पत्र
२२७) । २ धर्म-विरोध । ३ नि धर्मवक्ता
विद्या (हे १ १४८, २ २४) । सत्य न
[शक्ति] धर्मविद्या-धर्म (पत्र १७) ।

वेङ्गरेय्या न [वेङ्गरेय्या] १ धर्मविद्या-धर्म (पत्र
२२७) । २ धर्म-विरोध । ३ नि धर्मवक्ता
विद्या (हे १ १४८, २ २४) । सत्य न
[शक्ति] धर्मविद्या-धर्म (पत्र १७) ।

वेङ्गरेय्या न [वेङ्गरेय्या] १ धर्मविद्या-धर्म (पत्र
२२७) । २ धर्म-विरोध । ३ नि धर्मवक्ता
विद्या (हे १ १४८, २ २४) । सत्य न
[शक्ति] धर्मविद्या-धर्म (पत्र १७) ।

वेङ्गरेय्या रेको वेङ्गरेय्या (पुर १६ १७३) ।
वेङ्गरेय्या रेको वेङ्गरेय्या 'पत्रवेङ्गरेय्या मन्त्र' (पत्र
२७ १३) प्रकट २) ।

वेङ्गरेय्या (टी) रेको वेङ्गरेय्या (नट—मुष्ण
२२) ।

वेङ्गरेय्या रेको वेङ्गरेय्या (हे १ १६२, मुपा) ।
वेङ्गरेय्या पुं [वे] धर्मवक्ता धर्मवादी (पत्र
७८) ।

वेङ्गरेय्या रेको वेङ्गरेय्या 'अह वेङ्गरेय्या' (संशोध १२) ।

वेङ्गरेय्या पुं [वेङ्गरेय्या] धर्म-विरोध वेङ्ग का नाम
(पत्र २७ १२२ कण्य) ।

वेङ्गरेय्या पुं [वे] धर्मवक्ता, धर्मवादी (हे ७
७७) ।

वेङ्गरेय्या नि [वे] धर्म, धर्म, धर्मवादी
(हे ७ ७८) ।

वेङ्गरेय्या रेको वेङ्गरेय्या (मन्त्र हे १ ४१, २ ७
मुपा) या ७७) ।

वेङ्गरेय्या } नि [वे] धर्मवादी धर्म में धर्म
वेङ्गरेय्या } धर्मवादी धर्म नि या ७६
धर्म धर्मवक्ता २ पत्र ७, २) ।

वेङ्गरेय्या } रेको वेङ्गरेय्या (हे २, १३३)
वेङ्गरेय्या } धर्मवादी धर्मवादी (हे २, १३३) ।

वेङ्गरेय्या नि [वे] धर्म धर्मवादी (हे ७
४१) ।

वेङ्गरेय्या रेको वेङ्गरेय्या = वेङ्गरेय्या (मन्त्र) ।
वेङ्गरेय्या पुं [वेङ्गरेय्या] धर्म-विरोध (धर्म ६) ।

वेङ्गरेय्या [वेङ्गरेय्या] धर्मवादी (धर्म ६) ।
(हे ४ २२१) । धर्म, धर्म वेङ्गरेय्या (पत्र
४ २१ धर्म १ १) । धर्म धर्मवादी
मन्त्र (मुपा २४) । धर्म धर्मवादी धर्मवादी
वेङ्गरेय्या वेङ्गरेय्या (पत्र ४ ४) । धर्म
वेङ्गरेय्या (पत्र ४ ४) ।

वेङ्गरेय्या पुं [वेङ्गरेय्या] १ धर्म-विरोध (धर्म ६)
धर्म २२३; धर्म २ ६) । २ धर्म धर्मवादी
(धर्म २२३ से ६ १३) । ३ एक
धर्म-विरोध धर्म-विरोध, धर्म-विरोध (धर्म
१ १६—पत्र २१८; १ १७—पत्र २८
धर्म) ।

वेङ्गरेय्या रेको वेङ्गरेय्या (पत्र २७ १२२) ।

वेङ्गरेय्या पुं [वेङ्गरेय्या] १ धर्म-विरोध (धर्म ६)
धर्म २२३; धर्म २ ६) । २ धर्म धर्मवादी
(धर्म २२३ से ६ १३) । ३ एक
धर्म-विरोध धर्म-विरोध, धर्म-विरोध (धर्म
१ १६—पत्र २१८; १ १७—पत्र २८
धर्म) ।

वेङ्गरेय्या रेको वेङ्गरेय्या (पत्र २७ १२२) ।

वेङ्गरेय्या पुं [वेङ्गरेय्या] १ धर्म-विरोध (धर्म ६)
धर्म २२३; धर्म २ ६) । २ धर्म धर्मवादी
(धर्म २२३ से ६ १३) । ३ एक
धर्म-विरोध धर्म-विरोध, धर्म-विरोध (धर्म
१ १६—पत्र २१८; १ १७—पत्र २८
धर्म) ।

मय सक [मयम्] यमन, होना ।
मयन (हे १०५) पद ।

माय्य [वि [विमायक] विमाता की
माय्य] सेतान (सम्पत् १०१ मोह
८८) ।

मायि पृथ्वी [विमानिक] विमान-वादी
मैना एक उत्तम वैद-वादि (हे २) । की
"गिणी (परा १०—यम १ ; पंथा २,
१८) ।

मायिण्ड पु [वैमानिक] एक उत्तम देव
वादि विमानवादी मैना (मग पीय पण्ड
१ २—यम २१; की २२) ।

मनामा की [विनाया] धनिक पत्नी
(मग १ १ टी) ।

मेमि नि [यमि] मैं करता हूँ (मग) ।

मेमि पु [यिपण्ड] इली हाथी (मग ११
७११) । मेमा वड ।

मयाय [न [विमायक] मेमायुस
मेमायिक] मेमायुस (मग कस लाय
१ १; पीता मीयय १२१ पायक साया
१ १—यम ७४; नरी १ २२२, मु १११) ।

मेम नि [वि] मयमा, मयमा (हे १ १२२;
मग १२, मय १२१) ।

मेम नि [मार] मयमा (मग) ।

मेमग नि [मयय] विपमता ज्ञासीता
(मग मय १ ; मय १०१; मय ११२) ।

मेमग नि [विमयिक] विमय-युक्त
विपम (मग १ १११) ।

मेम नि [विमय] १ विमय-युक्त, विपम
युक्त (मग २ १११ कठ) । २ वहाँ पर
रना विपमता म हो वह यम । ३ वहाँ
पर प्रमाण वाकि यम से विपम रहते हो
वह यम (मग १११) ।

मेम नि [विमयिक] यमि के लिये वर
का समय (मग २६, २ मी ११२) ।

मेम नि [विमय] विपम निमि (मग
१ ; मग २२) ।

मेम पु [विमय] पाणीय विमय-युक्त
मग वर यम कस वहाँ मीर का मय (मग) ।

मेम पु [विमय] विमय, ज्ञासीता
(मग) ।

मेमि [मेमि] मयमा (मग ११
मेमि १११) ।

मेमि नि [मेमि] १ मयमा, एकली । २
मग, मयमा मय (मग ७१) ।

मेमि पु [मेमि] १ मग की एक वादि
"मयमि नि मयमय मेमिमो मयमय
जमीमो" (मय १२ मय) "मयमि" (हे
२ १११ मय) । २ विमानवादि-विमय
(मेमि ११२) । ३ मग वादि मयमि का एक
मायम विमय (मेमि २११) । ४ मग
मयमि परम का एक मयमि (मग २, ३—
यम ७ ; मग ८—यम ४११) । ५ मयमि
मयमि का एक मयमि (मग ८—यम ४११) ।

६ वि. मयमि मयमा (मग १ ४ मय) ।

मय नि [मय] मयमि का मय मय
(मग ७) ।

मेमि नि [मेमि] मयमि का मय मय
(मग ७) ।

मेमि नि [मेमि] मयमि का मय मय
(मग ७) ।

मेमि पु [मेमि] एक मयमि मय
मय-विमय (मग ११) । २ मयमि-विमय ।
३ म. मयमि-विमय (मय १४ १२) ।

मेमि पु [मेमि] मयमि-विमय (मय
१४, १७) ।

मेमि पु [मेमि] मयमि-विमय (मय
१४, १७) ।

मेमि पु [मेमि] मयमि-विमय (मग
७ ७४ मय) । २ वि. मयमि-विमय
(मग २ २—यम ११४) ।

मेमि पु [मेमि] मयमि-विमय (मग
७ ७४ मय) । २ वि. मयमि-विमय
(मग २ २—यम ११४) ।

मेमि पु [मेमि] मयमि-विमय (मग
७ ७४ मय) । २ वि. मयमि-विमय
(मग २ २—यम ११४) ।

मेमि पु [मेमि] मयमि-विमय (मग
७ ७४ मय) । २ वि. मयमि-विमय
(मग २ २—यम ११४) ।

मेमि पु [मेमि] मयमि-विमय (मग
७ ७४ मय) । २ वि. मयमि-विमय
(मग २ २—यम ११४) ।

मेमि सक [मय + मय] १ मयमि
मेमा मयमा मेमा । २ मयमा । ३ मयमि
मयमा । ४ मयमि मयमा मयमा । मयमि
(हे ४ १११ मय) । मग. मेमिमि (मग
८) । मग. मेमिमि (मग १ १८) ।
५ मयमि (मग) ।

मेमि सक [मय] १ मयमा २ मय
मयमा । मयमि (हे ४ १११) । मय मेम
मयमि (मग ४८२ मय) ।

मेमि नि [मय] १ मयमि मय
मयमा (मय मयमा ११२ मय ७४; मे
२४) । २ मयमि मयमि मयमा (मग
१११) ।

मेमि की [मेमि] मयमि मयमि का
मय (मग ७ ७४) ।

मेमि की [मय] १ मयमि, मयमि, मय
(मय मय) । २ मयमि, मयमि का मयमी की
मय (मग १ १—यम १४) । ३ मयमि
का मयमा (मग १ १२ मय मय) । ४
मयमि (मय १ २ २२) । ५ मयमि, मय
(मग १ २ २२) । मयमि [मय] मयमि,
मयमि के मयमि का मयमि (मग १ १ १ ;
मग २२७ टी) । मयमि पु [मयमि]
मयमि-मयमि का मयमि मयमि मयमि
(मय) ।

मयमि नि [मेमि] मयमि, मयमि । २ मय
मयमि (मग ७ ७४) ।

मेमि (मय) सक [मय + मय] मेमि
मयमा, मयमि मयमा । मयमि (मय) ।

मेमि नि [मेमि] मयमि-मयमि (मय) ।

मेमि की [मेमि] मयमि-विमय मयमि मय
(मग १ १४) । २ मयमि का मय मयमी में
मय मयमी मयमि मयमि (मग १११) ।

मेमि मेमि मेमि (हे १ ४ २ १) ।

मेमि पु [मेमि] १ मयमि, मयमि । २ मयमि (मग
७ ७४) ।

मेमि नि [मेमि] मयमि मयमि, मयमि (मग
७ ७४) ।

मेमि पु [मेमि] मयमि-विमय १ मयमि का मयमि । २
मेमि मयमि मयमि का मयमि (मयमा २ १ ४
१४) । ३ मयमि मयमि मयमि मयमि
मयमि (मग १—यम ४१ मय २४१) । ४

बेसङ्गा पु [युपङ्ग] युद्ध यमन-वाणीय
मनुष्य (गुप्त २ २ २४)।
बेसङ्गय पु [बेसङ्गय] बेहो बेसमण्य (हे १
१२२ ४४ बेसङ्ग २७)।
बेसबाबिय पु [बेसबाबिय] एक बैल युनि-
कल (कम्प)।
बेसवार पु [बेसवार] बनिमा बाबि मसामा
(गुप्त १८)।
बेसा बेहो बेस्ता (कुमा गुर १ ११९
कुमा २१२)।
बेसासिय पु [बेसासिय] १ एक धन्तरीय।
२ धन्तरीय बिरोध में धनेवासी मनुष्य-वाति
(ठा ४ २—यम २२२)।
बेसानर बेहो वससानर (सङ्ग ६ टी)।
बेसायण बेहो बेसियायण (यम)।
बेसासिध बि [बेसासिध] १ समुद्र में
फलम्। २ बिरोधात्मक वाति में कल्पन।
३ बिरोध बड़ा बिरोधी: 'यच्छब्द बेसासिया
बेह' (गुप्त १ १ १२)। ४ पुं मन्त्राय
श्रमभेद (गुप्त १ २ १ २२)। ५
मन्त्राय महावीर (गुप्त १ २ १ २२,
यम)।
बेसासी धी [बेसासी] एक नवरी का नाम
(कम्पा ११)।
बेसास बेहा थोसास: 'बो फिर बहामु
बेबाबो' (बर्मि १२)।
बेसासिध बि [बेसासिध, बिभारय]
बिरोधात्मक-वाति बिरोधशील, बिरोधात्मक-
वाति (यम २, १—यम १४२ बिपा ६, १—यम
१२० कम्प बीर सङ्ग १२)।
बेसाह बेहो धन्साह (गम बह १)।
बेसाही धी [बेसाही] १ बेसाह बह की
वृद्धि। २ बिरोध गम की धन्साह (हक)।
बेसि बि [बेसि] बेह करनेवाला (यम
२ १८० गुर १ ११२)।
बेसिध व्थो परसिध (हे १ १२२)।
बेसिध पुं धी [बेसिध] १ बेसि धिक्
(गुप्त १ ६ २)। २ म. बेसिध राध-
बिरोध, काक-यम (धनु ११) यम)।
बेसिध बि [बेसिध] बेस-इत्य बेस-इत्यो
(गुप्त २, १ १६) ध्या २, १ ४ १)।

बेसिध बि [बेसिध] १ बिरोध कम्प से
धनिमिध। २ बिनिध प्रकार से धनिमिध
(यम ७ १—यम २२१)।
बेसिट्ट बेहो वसिट्ट (बर्मि २०१)।
बेसिगा धी [बेसिगा] बरमा गणिका (मा
२७४)।
बेसिया बेहो बेस्ता 'कमासो न मुण्ड
कमासमिध बिपियायुग्म' (बल १११ अ
४ ४—यम २०१)।
बेसियायण पु [बेसियायण] एक नाम ताप
(यम १२—यम ११९ ११९)।
बेसी धी [बेसी] बेसि नाति की धी (गुप्त
१ ४)।
बेसुम पु [बेसुम] गृह बर (शङ्क २८)।
बेस्त बेहो वसस्त = बेसि (गुप्त १ ६, २)।
बेस्त बेहो बेस = बेसि (यम ११ १८)।
बेस्त बेहो बेस = बेसि (यम)।
बेस्ता धी [बेस्ता] १ पर्यायना गणिका
(बिसे १०३; मा १२९ ८६)। २
धोयि बिरोध वाह का यम (मङ्ग २९)।
बेस्तासिध बेहो बेसासिध (यम)।
बेह सङ्क [म + इह] बेहता धन्तरीय
करना 'अहा धन्तरीयसि धिगा भीर
बेह' (गुप्त १ १ १ १)।
बेह सङ्क [यध] बीषणा धेस्ता। बेह
(पि ४४६)।
बेह पुं [बेह] १ बेह धे (यम १२४)
यम १४२)। २ धन्तरीय धन्तरीय विपल।
३ धन्तरीय एक वल का गुणा (गुप्त १
६, १७)। ४ धन्तरीय धन्तरीय (यम
१ ३—यम ४२)।
बेह पुं [बेह] बिनि बिपाता (गुर
११ ३)।
बेहण बि [बेहण] बेह, धेह करना (यम
१४१) बर्मि ४१)।
बेहण बेहो वसणम (यम १ ११ टी)
बर्मि १०३ टी)।
बेहण पुं [बेहण] राजा बेहण का एक
गुण (धनु १ १ निर १ १)।

बेहण सङ्क [बेहण] ध्या। बेहण (हे
४ ६१ पृ)।
बेहण न [बेहण] बिनिध धेस्ये (यम)।
बेहणिध पुं [बेहण] १ धन्तरीय, विरोध।
२ बि धेसी (२७ १९)।
बेहणिध बि [बेहण] प्रणयि (हे ७
६९ टी)।
बेहण न [बेहण] १ बिबिधान रङ्गाया
धन्तरीय (मा ११ ह १ १४८ नलङ्ग
गुणा ११९)।
बेहास बेहो बेहायस (धापा १ १ २
ठा २ ४—यम ६३) धम १३; धम्य १
१९—यम २ २ मय)।
बेहासिय बि [बेहासिय] धापी धावि
से सङ्क कर मनेवाला (धीप)।
बेहासिय बि [बेहासिय] १ धापात-धन्तरीय
धन्तरीय में धोमवाला। २ म. धन्तरीय-
धन्तरीय का एक गुण (यम १२७)। ३ पुं
धन्तरीय का एक गुण (धनु)।
बेहासिय बि [बेहासिय] बिहास-धन्तरीय
बिहास प्रणय (गुप्त २ ४२)।
बेहास न [बेहास] १ धन्तरीय कम्प
(धापा १ ८—यम ११४)। धन्तरीय
बीष भाग (गुप्त १ २ १ ८)।
बेहास बेहो बेहायस (यम १२७ धनु १)।
बेहिय बि [बेहिय, बेहिय] धोने योग्य हो
हुकने करने योग्य (बल ७ १२)।
बेहिय बेहो धेहिय (धनु १२)।
बेहिय बेहो बेहिय (पि १ १)।
बेहिय बेहो धोमवाला। धन्तरीय धोमवाला
(यम)।
बेहिय बि [बेहिय] बिनि धिह (धीप)।
बेहिय बेहो धिह = धुह (हे १ १२६)।
बेहिय बि [बेहिय] धन्तरीय धन्तरीय धन्तरीय-
धन्तरीय, धन्तरीय धन्तरीय (१७ न)।
बेहिय धन्तरीय न [बेहिय] धोमवाला धन्तरीय
धोमवाला धन्तरीय (१७ न)।
बेहिय सङ्क [बेहिय] धन्तरीय (१७ न)।
बेहिय धन्तरीय (१७ न)।
बेहिय धन्तरीय (१७ न)।
बेहिय धन्तरीय (१७ न)।

समान धर्मबाला (इ १७) । २ तरकार (कुम ११२) । ३ यस्ता पञ्च (सम २१) । पाय न [पात्र] निज का नाम मुद्र की संज्ञा (रात्र) । 'प्यम वि [प्रम] निज से ही शोभनेवाला (सम १३७) । कमाय माय पु [भाव] प्रकृति, जिसकी 'स्त्रियासत्क मन्कसिद्धपासुदेवपरिपलम्भायो' (कुमा ३, ४४ सम २१ गुर १ २७ ४ १२३) ।

'कुमिन्सत् प्रावरत्स्य व

बधणासत्सत् प्रावरत्स्य ।

मतत्स मरत्स्य म

सम्भाषा पायवा भूति'

(प्रासु १४) ।

मायसु वि [भाव] स्वभाव का जान कार (पञ्च ७२, ४१) । यम बेहो जय (उवा हे २ ११४ गुर ४ ७३) प्रासु ७३ २३) । रूप खल न [रूप] लम्ब (पञ्च ७२ ११३ कुमा मयि गुर २ १४२) । संघेयन न [संघेयन] स्व-प्रत्यक्षान (मन १४) । हाज हाय बेहो माय (हे १ १३ ७ १७ यका गुर १ २२ प्रासु २ १३) । हाकनाइ पु [मायवा] स्वभाव से ही सब कुछ होता है ऐसा माननेवाला मत (अ १ ३) । हिकम [हित] १ निज का भडा स्त्रीय—धर्मो भलाही । २ वि निज का भला करने-वाला, स्वहितकर (मुवा ४१) ।

स' वि [स] १ सहित कुछ (सन ११७ यका उवा मुवा ११२) सण) । २ समान गुण्य 'सपु' 'सपु' (कम निर १ १) । सण्ड वि [सण्ड] उत्कृष्ट जल (हे १२, १८) या १४८ मन्क मुवा १८४) । अर वि [कर] कर-सहित (उ २ २६) । वर वि [गर] गिर-गुच्छ, गहरेका (हे २ २६) । इण्ड बेहो अपण्ड (मुवा ४१३) । उम वि [गुण] गुण-गुच्छ (मुवा १८३) । लण्ड, उम वि [पुण्य] पुण्य-गुच्छ पुण्य-शाली (या गुर २, ३ गुमा ११४) । ओस वि [तोप] समुद्र (अ ७२८) । ओस वि [दीप] दीप-गुच्छ (अ १२८८) । अम वि [अम] १ बगुच्छ मयोरपवाला (स्वय १) । २ मयोर-गुच्छ

इच्छावाला (रात्र) । अमजिजरा की [अमनिर्जरा] कर्म-निर्जरा का एक नेत्र (रात्र) । अममरण न [अममरण] मरण-विशेष पविष्ट-मरण (उत ३, २) । 'केय वि [केय] १ वृहस्प । २ प्रत्याख्यान विशेष (पञ्च ४) । कहर वि [अहर] बिहान, आनकार (मन्क १२८) समस १४३) । गार वि [गार] गृहस्थ (दीपम २) । गार वि [अमर] आकार-गुच्छ (मन ७२) । गुण वि [गुण] गुणवान्, सुणी (अम गुमा १४२ गुर ४ १२६) । 'गा वि [म] अठ उत्तम (हे ४ ४७) । गह वि [मह] उत्तरक बहण-गुच्छ गुह्र गह से आनल (पाय ७३) । 'पिण वि [पुण] बसु (मण्ड ३) । पकलु पकलुम वि [पकलु, पकलु] नेत्र बाला, बेहोका (पञ्च ६७ २३ बसु सं ७८) विना १ १—पञ्च ३) । चित्त वि [चित्त] चेतनावाला मनोव (उवा पञ्च) । चयण वि [चेतन] बहो मन (विसे १७२१) । चित्त बेहो चित्त (दीप २२ गुमा ६२३, १२६ वि १२६ ३३) । जिय बेहो ज्ञान (गुर १२ २८) । जाइ वि [याति] प्रकाश-गुच्छ (वि ४११ गुम १ ३ ७) । जोणिय वि [याति] ज्ञान-स्वप्नवाला संघाटी (अ २ १—पञ्च १८) । जीअ, जीअ वि [जीअ] १ ज्य-गुच्छ बगु की ओर-बाला । २ संघेयन कीचवाला (वि १२१) से १ ४२) । ३ न कला-विशेष मूत्र बालु बगु की घनीकन करने का ज्ञान (घोपा एम ७२ ४—पञ्च १४७) । इह वि [अ] १ इह १ इहका पु [अ] १ अल्ल उत्प-विशेष मुनिपुत्र तप (संघो ३८) । जणय जण्डय जण्डय वि [नलपण्ड] मन्क-गुच्छ पैलवा छिद्र भावि स्त्रायव कंठ (गुर २ ३ २३) या ४ ४—पञ्च २७१ गुम १ ३, २ ७) पण्ड १—पञ्च ४४ वि १४८) । जाह वि [नाभ] स्वाभो-वाला निचम कीही मातिज ही बह (विना १ २—पञ्च २७) रया कुमा) । लण्ड वि [लण्ड] लुण्ठ-गुच्छ उत्कृष्ट

उत्कृष्ट (हे १ ४१) । तर वि [स्वर] १ लघु-गुच्छ नेत्रवाला । २ म. शीघ्र, बस्ती (मुवा १२२) । उ वि [अ] धर्म-सहित बेह (पञ्च ६८ २४) । पया की [घवा] दीमाग्यबतो की जिसका पति जीवित हो बह की (मुवा ३१३) । नय वि [नय] व्यास-गुच्छ, व्यासही (मुवा ३ ४) । पकल वि [पक] १ पोखवाला पोखा से गुच्छ (हे २ १४) । २ सहायता करनेवाला सहायक मित्र (पञ्च २३६ उ १२७) । ३ समान पारसवाला बलिय पात्रि तरल स जो समान हो बह (निर १ १) । पुन वि [पुण्य] पुण्यशाली पुण्यवान् (मुवा ३८४) । प्यम वि [प्रम] प्रमा गुच्छ (सम १३ मम) । प्यरिभाव, प्यरिवाय वि [परिवाप] परिवाप—संठाप से गुच्छ (या १७ पञ्च) । 'प्यम द्या वि [पिरावक] पिरावक-महीच पागल (पण्ड २ ३—पञ्च १३) । 'प्यवास वि [पियास] दुपमुद्र, दुपुण्य (हे २ २७) । 'प्याह वि [प्याह] स्यावाला (हे ७ २६) । पकं वि [स्पण्ड] बसायमान (हे ८ ८) । पकल फळ वि [फल] सार्यक (म १३ १४ हे २ २ ४ प्रा ४८८) । पण्ड वि [पण्ड] बत बाण, बमिष्ठ (निच) । भण्ड बेहो फळ (हे १ २६३) कुमा) । मय वि [मनस] १ मनवाला विवेक-बुद्धिवाला (पण्ड २२) । २ समान मनवाला सम-वेप भावि से रहित मुनि, छात्र (बालु) । मणकल वि [मनरक] पुनोक्त धर्म (गुर २ ४ २) । मय वि [मय] मय-गुच्छ (हे १ १६ गुमा १८८) । महिहियअ वि [महिहियअ] महान् विचर बाला (प्रासु १ ७) । मिरिदअ मिरिय वि [मराधिक] मिरिद-गुच्छ (मक दीप ७४ ४ १—पञ्च ३२८) । 'मिर वि [मर्याद] मर्यादा-गुच्छ (ठा ३ २—पञ्च १२६) । यण्ड वि [यण्ड] गुण्य-गुच्छ (पञ्च, गुमा ३८४) । याण वि [ज्ञान] सम्यक् ज्ञानकर (मुवा ३४२) । योगि वि [योगिन्] १ व्यापार-गुच्छ, योगवाला । २ न पैदाय गुण-स्वप्नक (कम १ ११) ।

मिष्टेय (विष)। धमग पुं [‘ध्यायक’]
 भागप्रत्यक्ष की एक कवि (राज)। धर पुं
 [‘धर’] धीमत्पुत्र विष्णु (कुमा)। पाछ
 देखो बाछ (अ ४ १—पत्र ११७)। पुर
 न [‘पुर’] एक विद्याभार-नगर (इक)।
 १ नगर-मिष्टेय को धामनन कुनपल में संवे-
 ष्टर के नाम न प्रसिद्ध है (राज)। पुरी की
 [‘पुरी’] कुनयल देव की प्राचीन एकमात्र
 की पीछे से प्रसिद्धि के नाम से प्रसिद्ध
 है (की) (मिरि ७)। माछ पुं [‘माछ’] ब्रह्म
 की एक कवि (गीत १—पत्र १४१)। बाप
 न [‘बन’] एक उद्यान का नाम (जवा)।
 बणाय्य पुं [‘बयाय’] बणोयिक महाप्र-
 मिष्टेय (पुत्र २)। ब्रह्म पुं [‘बर्णे’]
 ब्रह्मिक महाप्र मिष्टेय (अ २ १—पत्र
 ७०)। ब्रह्मा देखो बणाय्य (अ २
 १—पत्र ७)। बर पुं [‘बर’] एक
 हीन। २ एक समुद्र (वीर इक)। वरोसास
 पुं [‘वरासमास’] १ एक हीन। २ एक समुद्र
 (वीर)। बाछ पुं [‘पास’] नाम-कुमार-देवों
 के बाछ और भुगतन नामक देवों के एक
 एक कौशल का नाम (इक)। बाछय पुं
 [‘पाचक’] १ कैलेश दर्शन का अनुगामी
 एक कवि (पत्र ७ १—पत्र १२१)।
 एक धार्मिक मत का एक उपासक (पत्र
 १—पत्र १७)। लाम्ब नि [‘लाम्ब’]
 संज्ञकता (छाया १—पत्र १११)।
 ‘नर’ की [‘नर’] नगर-मिष्टेय (टी १)।
 संत नि [‘संत’] संन्यास, विद्या, धर्म, विष्णु-
 भावा (अ ४ ११; ४१)।
 संज्ञक नि [‘संज्ञक’] १ दर्शन-मिष्टेय कविप्रति-
 ष्ठापन दर्शन (छाया १ १—पत्र १२,
 पुत्र १११)। २ नि संज्ञक मत का अनुगामी
 (वीर; पुत्र ११)।
 संज्ञ पुं [‘संज्ञ’] नामक अनुष्ठान-पात्र (वि
 १)।
 संज्ञास नि [‘संज्ञाय’] विष्णु की संज्ञा हो
 के वर (मिरि १७; धनु ११ टी)।
 संज्ञक नि [‘संज्ञक’] कर्म, कर्म (वि १२४
 टी १२७)।
 संज्ञास की [‘संज्ञा’] १ विष्णु कवि के उपन्यास
 न भाव-गोपनीय कवि की विद्या बाटा दोन

बेनार (भाषा २ १२, ४ २११ १ १
 १ वि २२५ वीर १२ ५५ भास १२)।
 संज्ञास की [‘संज्ञास’] दोन-पाक (अ ५)।
 संज्ञाय पुं [‘संज्ञाय’] दोन राज (अ ५
 ११ १२४, पत्र १—पत्र ४४ वीर १
 टी—पत्र ११)।
 संज्ञास पुं [‘संज्ञा’] मोरारी हार (वि ५
 १४)।
 संज्ञास पुं [‘संज्ञा’] कुन की संज्ञानुसार कठ
 भर बाटा होनेवाला वेन (वि ५ ११)।
 संज्ञास नि [‘संज्ञास’] समर्थ (अ २ ५१ टी)।
 संज्ञास पुं [‘संज्ञास’] काय विनाश (वि १
 ४२)।
 संज्ञास नि [‘संज्ञास’] संज्ञा-मुक्त ‘अप्य
 संज्ञासयुक्त वीर’ (मुम १ १ २१ १
 २ १ १ वि ४१) ‘अप्य वीर’ वीर मा
 पयाम’ (अ ४ १)।
 संज्ञास पुं [‘संज्ञा’] समुद्र शुक्ति के पाकर
 बाटा मत-अप्य विष्टेय (वि ५ १५)।
 संज्ञास देखो संज्ञास (पत्र १५)।
 संज्ञास पुं [‘संज्ञा’] कर्ण-पुत्र मिष्टेय संज्ञ-
 काय का नाम हुआ ताईक (वि ७)।
 संज्ञास एक [‘संज्ञास’] विनाश करता।
 संज्ञा संज्ञाविषय (अ २ १२)।
 संज्ञास नि [‘संज्ञास’] विनाश (अ ५
 १)।
 संज्ञास एक [‘संज्ञास’] १ विनाश करता।
 २ बाता। संज्ञा संज्ञास (मुम १ २ २
 ११)। ३ संज्ञास संज्ञास (अ ५ वी
 ४१) अ ५ कय)।
 संज्ञास एक [‘संज्ञास’] १ ध्याय करता।
 २ संज्ञास होता ध्याय होता निष्ठि करता।
 संज्ञास, संज्ञास (वि ४ ११; वर)।
 संज्ञा की [‘संज्ञा’] १ प्रका शुक्ति (भाषा
 १ १ ४ टी)। २ झल (पुत्र १ १४ न)।
 ३ संज्ञास (अ ५)। ४ विनाश पत्रा (मक
 धनु: कय: कुमा)। ५ कयलता (मुम २
 ७ १)। ६ नि [‘संज्ञा’] पत्रा (अ २
 १ टी वीर १ टी—पत्र १४ भा ४१)।
 संज्ञास नि [‘संज्ञास’] कर्म ही विना

लेने का उद्योगता संज्ञा की विनाश कि धनु
 किने हुए प्रवेष्टों में प्राप्त हो जाय (अ २
 ४—पत्र १ २, १—पत्र २११ वीर)।
 संज्ञास नि [‘संज्ञास’] १ विनाश पत्रा,
 संज्ञा। २ संज्ञास-राज (अ ४ ४—पत्र
 २११) मक कय वीर पत्रा ५१, ५)
 वीर १११)।
 संज्ञास नि [‘संज्ञास’] १ ध्याय मक-विनाश
 (कुमा १ ११)। २ ध्याय कयलता।
 ३ संज्ञास कयलता: ४ न लो। ५ निष्ठि
 पत्र। ६ संज्ञास संज्ञास: ७ ध्याय। ८
 प्रसिद्ध, प्रसिद्धि (वि १ ७४ ४ ११)।
 संज्ञास देखो संज्ञा = संज्ञा + कय।
 संज्ञास नि [‘संज्ञास’] संज्ञा-मुक्त (मुम १
 ११ प)।
 संज्ञाय पुं [‘संज्ञाय’] वीर मिष्टेय (पुत्र
 १ ११ इक)।
 संज्ञाय पुं [‘संज्ञाय’] इति की एक कवि ताव
 पुत्र (वि ५ १)।
 संज्ञाय देखो संज्ञाय = संज्ञा-मुक्त।
 संज्ञाय देखो संज्ञाय = संज्ञा-मुक्त।
 संज्ञाय नि [‘संज्ञाय’] विनाश विनाश
 कर्ता है ही नह (पुत्र ११२; स ४११)।
 संज्ञाय देखो संज्ञाय = संज्ञा-मुक्त (स १०१)
 पुत्र १४१)।
 संज्ञाय देखो संज्ञा = संज्ञा + कय।
 संज्ञाय नि [‘संज्ञाय’] संज्ञाय-मुक्त (अ ५
 ११)।
 संज्ञाय नि [‘संज्ञाय’] संज्ञाय-मुक्त, दोन
 विना हुआ (अ ५ १; वी ११)।
 संज्ञाय नि [‘संज्ञाय’] १ संज्ञा के लिए
 कयल-मिष्टेय संज्ञा की भाव में बाटा कय-
 लता। संज्ञा कयलता (अ ५ वीर)।
 संज्ञाय देखो संज्ञा = संज्ञा (अ ४११) वर
 २, ११) वीर १४१)।
 संज्ञाय की [‘संज्ञाय’] दोन राज (वीर
 १—पत्र २११, वी २ टी—पत्र १ ११ पत्र
 ४१)।
 संज्ञाय एक [‘संज्ञाय’] वीर करता, संज्ञाय
 करता। संज्ञाय (वि ४ १५ न)।

संघट्टिय जि [संघट्टि] १ सट्ट, छुपा
हुया (छाया १ ५—पत्र ११२ पत्रि) ।
२ संघटित संघटित (सम १६ १—पत्र
७६६ ७६७) ।

संघट्ट पक् [सं + पट्] १ प्रयत्न करना ।
२ संघट्ट होना मुक्त होना । ३ संघट्ट डकन
(अ ८—पत्र ४४१) । प्रयो संघट्टमेइ
(सूत्र) ।

संघट्ट जि [संघट्ट] मिल्लठ संघट्टसिलो
(पात्रा १ ४ ४ ४) ।

संघट्टण रेको संघयण (संघ—पु ४८ मंत्रि) ।
संघट्टया ओ [संघट्टना] रचना निर्माण
(सुनु १५८) ।

संघट्टिय जि [संघट्टि] १ संघट्ट मुक्त
(ध ४ २४) । २ मट्टि बट्टि (प्राप्ति २) ।
संघट्टि (टी) ओ [संघट्टि] समुह (वि
२९७) ।

संघयण न [वि संघनन] १ शरीर, कम
(ध ० १४ पात्र) । २ धर्मिक-रक्षा शरीर,
के द्वारा की रचना शरीर का बाह्य (सम
सम १४६ १४७, ज्ञा धीय वषा कम
१ ३८५ पट्) । ३ कर्म-क्रिये परिक
रचना का कारण-मुक्त कर्म (सम १७७ कम
१ २४) ।

संघयणि जि [वि संघननम्] संघनन-
बला (सम १४७, धनु ८ टी) ।

संघरिस रेको संघरिस (उप २९४ टी) ।

संघरिसिद्ध (टी) जि [संघरिसि] संघरि-मुक्त-
विता हुया (मा १७) ।

संघरसक [सं + घृप्] संघर करण ।
संघरस (मात्रा १ ७ १) ।

संघरसिद्ध रेको संघरिसिद्ध (मात्रा—मासि
२६) ।

संघाश्रम जि [संघाश्रित] १ संघर कर से
विषय (ठे ११ ११) । २ जोड़ा हुया
(पात्र) । ३ इच्छा किया हुया (पत्रि) ।

संघाश्रम जि [संघाश्रम] आर रेको (धीय
ध्याना १ १२ १ वि १ २ धनु १२,
रवति १ २७) ।

संघाह रेको संघाय = संघट्ट (धोचय १ २
पत्र)

संघाह १ ५ [वि संघाह] १ मुक्त
संघाहण १ मुक्त (उप १६ बर्मेस १ ६३,
ज ५ १६७ मुग १ २ १२३ धीय
४११ उर २०३) । २ प्रकट, मेव 'संघाहो
ति का नय ति वा पमो ति वा पमट्ट'
(निष्प) । ३ आश्रम-रक्षा नामक दैन धर्म-
ग्रन्थ का हुसरा धर्मग्रन्थ (सम १९) ।

संघाहण रेको संघाहण (कर्म) ।

संघाहणा ओ [संघट्टना] १ संघर १ २
रचना 'प्रकट' सुसमविंसाय (१ ४) 'साय'
(सूचि २) ।

संघाहो ओ [वि संघाह] १ मुक्त मुक्त
(ध ८ ७ प्राङ् ३० या ४१६) । २
उत्तरीय कर्म-क्रिये (टा ४ १—पत्र १६६)
छाया १ १६—पत्र २ ४ धीय १७७
विदे २१२६ पत्र १२४ कर्म) ।

संघाजय पु [सिद्धान्त] स्वेप्पा नाक में
से बहता इय पचाई (सुनु १३) ।

संघादिम रेको संघादिम (छाया १ १—पत्र
१७६ पत्र २ ४—पत्र ११) ।

संघाय सक [सं + पातय] १ संघट्ट करना,
इच्छा करना मिलाया । २ दिला करना,
मात्रा, संघाय, संघाय (कर्म १ १६,
मात्र १, १—पत्र २२६) । ३ संघायपिज
(उत्त २६ १६) ।

संघाय पु [संघाह] १ संघट्ट संघट्ट कर्म से
धर्मस्थान निवृत्ता (भवा हट ४ १) । २
समुद्र जला (पात्र, पत्रा धीय मात्र) ।
३ संघट्ट-क्रिये, ब्रह्मधर्म-मात्रा नामक
शरीर-रक्षा 'संघट्टण संघट्टण' (पोप) ।
४ मुक्तनाम का एक मेव (कर्म १ ७) ।
५ संघट्ट, संघट्टना (मात्रा) । ६ न
नामकर्म-क्रिये जिस कर्म के उद्देश्य से शरीर
योग्य पुत्र पुत्र-पुत्री पुत्रों पर धर्मस्थित
कर्म से स्थापित होते हैं (कर्म १ ११
११) । समास पु [समास] मुक्तनाम
कर्म एक मेव (कर्म १ ७) ।

संघायन य [संघावन] १ किम्व, दिला
(ठ १७) । २ रेको संघाय' का फल
पत्र (कर्म १ २४) ।

संघायया ओ [संघावना] संघट्टि । करना

न [करण] प्रयो को परहार संघट्ट कर्म
से रचना (विदे १३ ८) ।

संघार पु [संघार] १ बहु-बहु-धर्म प्रत्यय
(सुनु ४४) । २ मात्र (पत्र ११८ ८
ध ११६ टी) । ३ संघट्ट । ४ विद्यार्थी ।
५ मरक-क्रिये । ६ येरन-क्रिये (हे १
२६४ पत्र) ।

संघार (धर) रेको संघार = सं + ह । संघ
संघारि (विम) ।

संघारिय जि [संघारि] नाष्टि क्यपावि
(मंत्रि) ।

संघासय पु [वि] स्वर्ण बराबर (र ८
१३) ।

संघिय रेको संघिय = संघट्ट (प्राप) ।
संघिय जि [संघय] संघ-मुक्त, मनुष्य
(पत्र) ।

संघाहो ओ [वि] म्यतिकर, संघय (ध ८
८) ।

संघ (धर) रेको संघिय । संघट्ट (मंत्रि) ।

संघ (धर) पु [संघय] परिचय (मंत्रि) ।

संघ १ जि [संघयि] संघयना
संघाह १ संघट्ट संघट्ट करनेवाला (रुचि
१ १ पत्र ७१ टी) ।

संघय जि [संघयि] संघय-मुक्त (पत्र) ।

संघयार पु [वि] धर्मकर्म जगद

धर्मिणिय मुक्तकर्म इय
मुक्षिककर्मकर्मण्ये धीय ।

विपदिय संघयार ठ
मात्रपट्टिमुक्तकर्मण्ये ॥

(उर ७२८ टी) ।

संघर जि [संघर] पट्टिपट्ट (पत्र ७
७७) ।

संघर पु [संघर] १ संघट्ट (पत्र १ ४—
पत्र १२ पत्र, मात्र) । २ समुद्र (कर्म
पत्र) । ३ संघट्ट नामक (पत्र १) ।
"मास पु [मास] प्राप्त-संघट्ट नामक
क्रिये (पत्र) ।

संघर सक [सं + पर] १ बलना यति
करण । २ कर्मय यति करना धर्म्यो लक्ष
कर्म । ३ बोरे बोरे कर्म । संघर
(पत्र ४२४ मंत्रि) । ४ संघर (वि २,

संज्ञा वि [संज्ञित] ध्यातुय किमा
हुवा विज्ञित (बन्धा ७) ।

संज्ञा वि [संज्ञ] संज्ञा-युक्त, कथित
(विधा १ २—पत्र २१; यत्र) ।

संज्ञा देवो संज्ञा (पत्र) ।

संज्ञाया श्री [संज्ञापन] संज्ञित विज्ञापन
(उवा) ।

संज्ञा श्री [संज्ञा] १ पाह्य भावि का
यमित्य (सम ११; अत्र ११—
पत्र ११, प्रान् १०१) । २ मति, बुद्धि
(सम) । ३ संकेत, प्रमाण (वि ११ १३४
टी) । ४ धर्म, नाम । ५ सुवि की पत्नी । ६
गयत्री (हे २, ४२) । ७ विज्ञा पुषि (अ
१४२ टी) । ८ सम्पत्, धर्म (सम) । ९
धर्म, ज्ञान । (पत्र १११) । इति वि
[संज्ञ] दृष्टि विज्ञा हुवा कण्ठ म्हा हुवा
(बध १ १ टी) । मूढि श्री [मूढि]
पुषिपुष्पनी नी जय्य (अ १४२ टी बध
१ १ टी) ।

संज्ञापि वि [संज्ञापित] धनगत किमा
हुवा (पत्रा १२ ११) ।

संज्ञा वि [संज्ञा] १ ज्ञात गत का
भाष्यी (पत्र १ ११) । २ स्वजन सत्ता
(अ १११) । देवो संज्ञा ।

संज्ञा वृ [संज्ञास] संसार-व्याप, कर्तुं
धातय (गट—बैत २) ।

संज्ञानि वि [संज्ञानि] संसार-व्याप
कर्तुं-धातय वि, ब्रह्म (गट—बैत ८) ।

संज्ञा एक [स + ताङ्] लङ्गै क
विद्यै तैयार करण, पुन-बन्ध करण ।
संज्ञादि (दीप ४) ।

संज्ञा वृ [संज्ञा] १ पुन श्री तैयारी (वि
११ ११) । २ कथन, कथन (गट—
देवो १२) । पट्ट वृ [पट्ट] ठीर पर
नान्ने का बन्धन (बध १) ।

संज्ञा वि [संज्ञा] पुन श्री तैयारी
वि सम्पत् रत्नेयता 'संज्ञापित्य' वेष्टि
धर्म वेष्टि (छान्दा १ ११—पत्र ११०) ।

संज्ञा वि [संज्ञा] १ संज्ञा, ज्ञान, ज्ञान-
युक्त । २ धर्म, ज्ञान (अ २४ अत्र
पत्र) । ३ धर्म, ज्ञान (पत्र ७) ।

४ सम्पत्, धर्म, ज्ञान (अ २४) ।
५ न यो-विशेष जो बन्धित गौत्र की
शाखा है । ६ पुंस्त्री उत पौत्र में उत्पन्न
(अ ७—पत्र ११) ।

संज्ञि विज्ञा देवो संज्ञि विज्ञा (पत्र) ।

संज्ञि विज्ञा देवो संज्ञि विज्ञा (छान्दा १ १—
पत्र १२) ।

संज्ञि विज्ञा देवो संज्ञि विज्ञा (पत्र) ।

संज्ञि विज्ञा देवो संज्ञि विज्ञा (पत्र) ।

संज्ञि विज्ञा देवो संज्ञि विज्ञा (पत्रा २ १
२ ४) ।

संज्ञि विज्ञा देवो संज्ञि विज्ञा (पत्र) ।

संज्ञि विज्ञा देवो संज्ञि विज्ञा (पत्र) ।

संज्ञि विज्ञा देवो संज्ञि विज्ञा (गट—पात्रो
२१) ।

संज्ञि विज्ञा देवो संज्ञि विज्ञा (गट—उत्तर
४४) ।

संज्ञि विज्ञा वि [संज्ञि विज्ञा] विज्ञा हुवा
(विधा १ २—पत्र १८) ।

संज्ञि विज्ञा देवो संज्ञि विज्ञा (पत्र) ।

संज्ञि विज्ञा वि [संज्ञि विज्ञा] विज्ञा देवो संज्ञि विज्ञा
पत्रा देवो संज्ञि विज्ञा (पत्रा १८) ।

संज्ञि विज्ञा वृ [संज्ञि विज्ञा] ज्ञान सत्ता
(पत्र १ १८) । देवो संज्ञि विज्ञा ।

संज्ञि विज्ञा वि [संज्ञि विज्ञा] ज्ञान हुवा,
विज्ञित (पत्रा २ १ ४ ४) ।

संज्ञि विज्ञा वृ [संज्ञि विज्ञा] ज्ञान सत्ता
(वि १ १४) ।

संज्ञि विज्ञा वृ [संज्ञि विज्ञा] पत्रा
विज्ञा । नञ्, संज्ञि विज्ञा (पत्रा २
१ १ १) ।

संज्ञि विज्ञा वृ [संज्ञि विज्ञा] सम्पत् (पत्रा
७ १८) ।

संज्ञि विज्ञा देवो संज्ञि विज्ञा (छान्दा १ १
टी—पत्र २) ।

संज्ञि विज्ञा देवो संज्ञि विज्ञा (पत्रा १ ८ १
१ मन्त्र कथन गट—पात्रो ११) ।

संज्ञि विज्ञा देवो संज्ञि विज्ञा (पत्र) ।

संज्ञि विज्ञा देवो संज्ञि विज्ञा (पत्रा १ १२ ८ गट—पुन
११) ।

संज्ञि विज्ञा वि [संज्ञि विज्ञा] सन्धि-व्याप
(पात्र १२) ।

संज्ञि विज्ञा देवो संज्ञि विज्ञा (पत्र) ।

संज्ञि विज्ञा देवो संज्ञि विज्ञा (पत्रा २ १
२ ४) ।

संज्ञि विज्ञा वि [संज्ञि विज्ञा] ज्ञान के विज्ञ
सन्धि-व्याप विज्ञ-व्याप (पत्रा) । देवो
संज्ञि विज्ञा ।

संज्ञि विज्ञा देवो संज्ञि विज्ञा (पत्र) ।

संज्ञि देवो संज्ञि विज्ञा (पत्रा ११, १२) ।

संज्ञि विज्ञा [संज्ञि विज्ञा] १ ज्ञान-युक्त ज्ञान-व्याप
(पत्रा १ ८ ४ ४) । २ पुंस्त्री उत
विशेष विज्ञापन ज्ञान पुन संज्ञि विज्ञा
उ भाषा (वि १ ८ ८) ।

संज्ञि विज्ञा [संज्ञि विज्ञा] यका हुवा (साम्बा १ ४
अत्र १ १ ११२ विज्ञा १ १ ११
२ ८ ११) ।

संज्ञि विज्ञा [संज्ञि विज्ञा] १ ज्ञान धर्म,
धर्म, ज्ञान 'संज्ञि विज्ञा' इति विज्ञा विज्ञा
देवो (वि १ ४ ४ ४) । २
विज्ञि विज्ञा पात्रा विज्ञा (उत्तर ११, १२) ।

संज्ञि विज्ञा न [संज्ञि विज्ञा] ज्ञान (पत्र १
१ १ ४) ।

संज्ञि विज्ञा वि [संज्ञि विज्ञा] विज्ञा हुवा
(पत्रा १ १—पत्र १८) ।

संज्ञि विज्ञा [संज्ञि विज्ञा] ज्ञान ज्ञान
(पुन १ २ २) ।

संज्ञि विज्ञा देवो संज्ञि विज्ञा (वि १ ८ ४) ।

संज्ञि विज्ञा [संज्ञि विज्ञा] १ विज्ञा, विज्ञि विज्ञा ।
२ विज्ञि विज्ञा ।

विज्ञि विज्ञा विज्ञि विज्ञा विज्ञि विज्ञा
विज्ञि विज्ञा विज्ञि विज्ञा ।

विज्ञि विज्ञा विज्ञि विज्ञा विज्ञि विज्ञा
(पत्र १ ४ ४१) ।

संज्ञि विज्ञा [संज्ञि विज्ञा] ज्ञान-युक्त (पुन १ ४
११; वा १११; पुन ११ ११) ।

संज्ञि विज्ञा देवो संज्ञि विज्ञा (अत्र १ ८) ।

संज्ञि विज्ञा [संज्ञि विज्ञा] १ ज्ञान ज्ञान
ज्ञान । २ विज्ञि विज्ञा । सम्पत् (वि ४
१४ ४ २) । विज्ञि विज्ञि विज्ञा (वि

संतोसिञ्ज-संविट्

१२. गुण ४३१ । २ धान्यदि, कुर्ये (कम्प) ।

संतोसिञ्ज पुं [संतोषिञ्ज] संतोष दृति (उवा १६) ।

संतोसिञ्ज वि [संतोषिञ्ज] संतुष्ट क्रिया हुआ (महा ४७) ।

संथ वि [संस्थ] संस्थित (शिवे ११ १) ।

संथङ्ग वि [संस्तुङ्ग] १ प्राक्प्रस्थित, संथङ्गिय परस्पर के संस्तो से प्राक्प्रस्थित (भट्ट ट ४ ४) । २ वन निविड (प्राचा २ १ १ १) । ३ व्याप्त (उत २१ २२ ४०७) । ४ उपभे । ५ तुल जितने पर्याप्त भोजन किया हो वह (वस प्राचा २ ४ १ १ व ४ १) । ६ एकत्रित (प्राचा २ १ १ १) ।

संथण धक् [सं + स्तन्] पाक्य करना ।

संथलुठी (गुप्त १ २ ३ ७) ।

संथर सक [सं + स्तु] १ सिद्धिना कला विद्वान् । २ निस्तार पाना पार पाना । ३ निविड करना । ४ धक्. उपभे होना । ५ तुल होना । ६ होना पिघमान होना ।

संथर (वस २ १—पत्र १२७) उवा क्रमेण 'ए' सुन्ने सो संथरे ए' (गुप्त १ २ २ ११ प्राचा) संथरिञ्ज, संथरे, संथरेञ्ज (क्या व २, २, २ प्राचा) । वङ्ग संथर, संथरं संथरमाण (ज्वर १४२ ४०५ १८१ प्राचा २, १ १ ८) ।

वङ्ग संथरिणा (मय प्राचा) ।

संथर पुं [संथर] निराह (तिष्ठ १७२, ४) ।

संथर बेनी संथार (गुर २ २४७) ।

संथरण न [संथरण] १ निराह (हृ १) । २ विधीना कला (उवा) ।

संथर सक [सं + स्तु] १ लुपि करना, स्ताप्य करना । २ परिषय करना । संथरैञ्ज (गुप्त १ १ ११) । ३ संथरियिञ्ज (गुप्त २) ।

संथर पुं [संथर] १ लुपि, स्ताप्य, 'संथरो' पुं (मिथ १३ व ११ तिष्ठ १४४) । २ परिषय धनर्ष (व्याप्त तिष्ठ ११ ४४४) । ४४४. धावक व ८) । ३ वि लुपि-कृतो (गुप्त १ ११ १—पत्र २२ पत्र) ।

१०६

संथरण न [संथरण] ज्वर देहो (संथर २१ व ७५ व टी) ।

संथरय वि [संस्थापक] लुपि-कृतो (गुप्त १, ११—पत्र २११) ।

संथरियि देहो संथरिञ्ज (पत्र ८१ १) ।

संथार पुं [संस्तार] १ बने—गुरा प्रापि संथार्य की शय्या, विद्योता (गुप्त १ १—संथारय व ३ उवा उव भव) । २ धावक कमरा (प्राचा २ २ १ १) । ३ उपभय, प्राप्ता का वास-स्थान (वस ४) । ४ संस्तार-कृतो (वस ७१) ।

संथारय व ३ उवा उव भव । २ धावक कमरा (प्राचा २ २ १ १) । ३ उपभय, प्राप्ता का वास-स्थान (वस ४) । ४ संस्तार-कृतो (वस ७१) ।

संथारय व ३ उवा उव भव । २ धावक कमरा (प्राचा २ २ १ १) । ३ उपभय, प्राप्ता का वास-स्थान (वस ४) । ४ संस्तार-कृतो (वस ७१) ।

संथारय व ३ उवा उव भव । २ धावक कमरा (प्राचा २ २ १ १) । ३ उपभय, प्राप्ता का वास-स्थान (वस ४) । ४ संस्तार-कृतो (वस ७१) ।

संथारय व ३ उवा उव भव । २ धावक कमरा (प्राचा २ २ १ १) । ३ उपभय, प्राप्ता का वास-स्थान (वस ४) । ४ संस्तार-कृतो (वस ७१) ।

संथारय व ३ उवा उव भव । २ धावक कमरा (प्राचा २ २ १ १) । ३ उपभय, प्राप्ता का वास-स्थान (वस ४) । ४ संस्तार-कृतो (वस ७१) ।

संथारय व ३ उवा उव भव । २ धावक कमरा (प्राचा २ २ १ १) । ३ उपभय, प्राप्ता का वास-स्थान (वस ४) । ४ संस्तार-कृतो (वस ७१) ।

संथारय व ३ उवा उव भव । २ धावक कमरा (प्राचा २ २ १ १) । ३ उपभय, प्राप्ता का वास-स्थान (वस ४) । ४ संस्तार-कृतो (वस ७१) ।

संथारय व ३ उवा उव भव । २ धावक कमरा (प्राचा २ २ १ १) । ३ उपभय, प्राप्ता का वास-स्थान (वस ४) । ४ संस्तार-कृतो (वस ७१) ।

संथारय व ३ उवा उव भव । २ धावक कमरा (प्राचा २ २ १ १) । ३ उपभय, प्राप्ता का वास-स्थान (वस ४) । ४ संस्तार-कृतो (वस ७१) ।

संथारय व ३ उवा उव भव । २ धावक कमरा (प्राचा २ २ १ १) । ३ उपभय, प्राप्ता का वास-स्थान (वस ४) । ४ संस्तार-कृतो (वस ७१) ।

संथारय व ३ उवा उव भव । २ धावक कमरा (प्राचा २ २ १ १) । ३ उपभय, प्राप्ता का वास-स्थान (वस ४) । ४ संस्तार-कृतो (वस ७१) ।

संथारय व ३ उवा उव भव । २ धावक कमरा (प्राचा २ २ १ १) । ३ उपभय, प्राप्ता का वास-स्थान (वस ४) । ४ संस्तार-कृतो (वस ७१) ।

संथारय व ३ उवा उव भव । २ धावक कमरा (प्राचा २ २ १ १) । ३ उपभय, प्राप्ता का वास-स्थान (वस ४) । ४ संस्तार-कृतो (वस ७१) ।

संथारय व ३ उवा उव भव । २ धावक कमरा (प्राचा २ २ १ १) । ३ उपभय, प्राप्ता का वास-स्थान (वस ४) । ४ संस्तार-कृतो (वस ७१) ।

संथारय व ३ उवा उव भव । २ धावक कमरा (प्राचा २ २ १ १) । ३ उपभय, प्राप्ता का वास-स्थान (वस ४) । ४ संस्तार-कृतो (वस ७१) ।

संथारय व ३ उवा उव भव । २ धावक कमरा (प्राचा २ २ १ १) । ३ उपभय, प्राप्ता का वास-स्थान (वस ४) । ४ संस्तार-कृतो (वस ७१) ।

संथारय व ३ उवा उव भव । २ धावक कमरा (प्राचा २ २ १ १) । ३ उपभय, प्राप्ता का वास-स्थान (वस ४) । ४ संस्तार-कृतो (वस ७१) ।

संथारय व ३ उवा उव भव । २ धावक कमरा (प्राचा २ २ १ १) । ३ उपभय, प्राप्ता का वास-स्थान (वस ४) । ४ संस्तार-कृतो (वस ७१) ।

संथारय व ३ उवा उव भव । २ धावक कमरा (प्राचा २ २ १ १) । ३ उपभय, प्राप्ता का वास-स्थान (वस ४) । ४ संस्तार-कृतो (वस ७१) ।

संथारय व ३ उवा उव भव । २ धावक कमरा (प्राचा २ २ १ १) । ३ उपभय, प्राप्ता का वास-स्थान (वस ४) । ४ संस्तार-कृतो (वस ७१) ।

संथारय व ३ उवा उव भव । २ धावक कमरा (प्राचा २ २ १ १) । ३ उपभय, प्राप्ता का वास-स्थान (वस ४) । ४ संस्तार-कृतो (वस ७१) ।

संथारय व ३ उवा उव भव । २ धावक कमरा (प्राचा २ २ १ १) । ३ उपभय, प्राप्ता का वास-स्थान (वस ४) । ४ संस्तार-कृतो (वस ७१) ।

संथारय व ३ उवा उव भव । २ धावक कमरा (प्राचा २ २ १ १) । ३ उपभय, प्राप्ता का वास-स्थान (वस ४) । ४ संस्तार-कृतो (वस ७१) ।

संथारय व ३ उवा उव भव । २ धावक कमरा (प्राचा २ २ १ १) । ३ उपभय, प्राप्ता का वास-स्थान (वस ४) । ४ संस्तार-कृतो (वस ७१) ।

संथारय व ३ उवा उव भव । २ धावक कमरा (प्राचा २ २ १ १) । ३ उपभय, प्राप्ता का वास-स्थान (वस ४) । ४ संस्तार-कृतो (वस ७१) ।

संथारय व ३ उवा उव भव । २ धावक कमरा (प्राचा २ २ १ १) । ३ उपभय, प्राप्ता का वास-स्थान (वस ४) । ४ संस्तार-कृतो (वस ७१) ।

संथर पुं [संथर] बधिण हृत्सु, विद्याविभो निरेण कोषकवा वहुनि उस्स संथरो (कुप २१२) ।

संथरय न [संथरय] वसन्त, देवना वासस्थान (उव १३७ टी) ।

संथर वि [संथर] जो काय मया हो वह, जिसकी वंश मया हो वह (हृ २ ३५ गुप्ता ३ व पत्र) ।

संथर पुं [संथर] १ संतान संयुक्त संथरय १ संथर (व ८ १८ म ३११) । २ न संथर संथर (व ८ १८) ।

संथर वि [संथर] यति उवा गुप्ता (गुर २ २ ५, गुप्ता २११) ।

संथर पुं [संथर] १ रथ (वाग् महा) । २ भद्राचार्य में धरोत लक्ष्मिणो-काम में जल्पन देहप्रदा जिनदेव (वस ७) । ३ न लक्षण प्रसन्न । ४ नृप नृपता । ५ नम प्राप्ति 'जल्प ए' नई निष्कोपय निष्कलरुण' (कम्प) ।

संथर पुं [संथर] रक्षा संपन (ज्वर २ १ छल) ।

संथरमागिया १ [संथरमानिञ्ज नो] संथरमाणो १ एक प्रकार का माहृत एक छल की वासकी (प्रीत गुप्ता २ ५—वस १ १ १ १ टी—पत्र ४१; धोप) ।

संथरय सक [क] धनसम्पन्न करना सहाय देना । सहाय (हृ ४ १७) । वङ्ग संथरयंत (गुप्ता) । कवक. संथरयिञ्जत (भाट—मालती १११) ।

संथरयिञ्ज वि [संथरयिञ्ज] वज्र निष्पन्न (वाग् से १ १ १३ ७ गुप्ता १) गुप्त १६ भाट—मालती १११) ।

संथरयिञ्ज वि [संथरयिञ्ज] ऊपर देना (व १११; धन्यत ११०) ।

संथरयिञ्ज देहो संताप = सताप (व ८१७ ११४४ वि २०५ स्तन २७ धवि ११ माल १७६) ।

संथरय पुं [संथाप] धनुः, धनुः (शिवे २८) ।

संथरि वि [संथरि] १ विमल धनरा जिसकी वीर्य दिया गया हो वह उचित, वित्त (वाग् उ ३२८ टी; धोपय ११;

संघीर एक [सं + धीरय] आधावन देना
धीर देना । बड़ संघीरव (मुवा १७१) ।
संघारयिष्य वि [संघीरित] जिसको आधावन
दिना गया हो वह आधाविष (मुर ४
१११) ।
संघुष्य घम [सं + घीष् + घुष्] ।
पल्ला, मुलम्ला । २ घम, पलाना । ३
उपनिव करना । संघुष्य (इ ४ १२२
हुवा) । कर्म संघुष्यइ (बजा ११) ।
संघुष्य न [संघुष्य] । १ मुलम्ला पलना ।
२ प्रमासन, मुलम्ला (मरि) । ३ वि
मुलमलना (व २४१) ।
संघुष्य वि [संघुषित] । १ जगमा हुवा
मुलम्ला हुवा (मुवा ११) । २ पला हुवा
प्रवेष्ट मुलमा हुवा (गम-महा व २७) ।
३ उत्तेजितः 'संनिधियवसुसंघुष्यो वज्र-
सिधा म यक्ष्मि कोवणल' (व २४१) ।
संघुष्यद् (घो) ऊपर देना (गद-मुष्वा
२३१) ।
संघुम प्था संघुम । संघुम (बह) ।
संघ देना संघ = सं + धा । संघे, संघो
संघे (पाया १ १ १५; नि ५
गुप १ ४ १५) । बड़ संघो संघमाज
(पत्र १८ ११; वंश १४ २७; प्या;
नि २१) ।
संघ देको संघ (पाया १ ५, १४) ।
संघवरर न [संघावर] घावर घारि घावरो
की घाहवि (एरि १८७) ।
संघम्य प्था संघाम्य । संघम्य (मरि) ।
बड़ संघमिऊय (पदा) । इह संघमिऊ
(ब १७१) ।
संघन न [संघान] रज्जव करना बंधा करना
(ग २६) ।
संघ देको संघव (पद १ ४—पत्र ७) ।
संघ देको संघ (घो-वि १ २ टी—
पत्र ११) ।
संघ वि [संघ] क्या हुवा घनव (घो-
पत्र १२) ।
संघ बड़ [सं + घावय] बंधव घ
बहु व या । बंधव (घर १४) ।
संघ देको संघम्य । संघ (मरि) बंधव
(व १२२) ।

संघन्य न [संघन] संघाह (पत्र १
१४) ।
संघन्य देको संघन्य (मुवा २२) ।
संघा देको संघा (छ १—पत्र ११ पद
१ ३—पत्र २२ पाय मुर १ १७ वि
२४४ उप ७२१ व ३) ।
संघा वि [संघाव] विधाना हुवा पवित्रता
हुवा 'संघाव परियेले' (महा) । देको
संघाव (पत्र १२१) ।
संघाह देको संघाह = सं + नाह्य् । संघाह
(घो-वहु ११) । संघ संघाहिवा (वहु
१२) ।
संघाह देको संघाह = घाह (महा) ।
संघाह्य वि [संघाह्य] तय्यार किया हुवा
छाया हुवा (घो) ।
संघाह्य देको संघाह्य (पाया १ ११—
पत्र २१७) ।
संघि देको संघि (घम २; छ २ २—पत्र
२१ टी ४१ कर्म १ १) ।
संघि देको संघि (छ १—पत्र
४११ कर्म) ।
संघिट्टु वि [संघिट्ट] आधर क्योय में
लिय (मुप ४ ८) ।
संघिकारय वि [संघिकार] बाबा हुवा,
रवा हुवा (कर्म) ।
संघिगय वि [संघिगय] १ बजान गुप्त
(पत्र २ १ पाया १ १—पत्र २४; घो
१ ७१) । २ घु घगर (पत्र) । ३ घु
करीय पाह (पत्र ११ २८) ।
संघिगय घु [संघिगय] संघोय बजान
संघिगयो घुघ संघेय एण्डा (एरि १२८
टी) ।
संघिगय घु [संघिगय] १ निष्य मनुह
(पाया) । २ संघ (पाया १ २ २, ११) ।
संघिगय वि [संघिगय] निष्य किता हुवा
(पत्र १२८ मीर १११) ।
संघिगय वक [संघ + घु] वक
वक कोना । बड़ संघिगय (नि
४२२) ।
संघिगय न [संघिगय] वकवक वक
कि वकीय में वकन, निरवका (ब १७२) ।
संघिगय घु [संघिगय] वकवक, वकवक
(कर्म) ।

संघि देको संघि (पाया १ १—पत्र
१८ बजा घो १) ।
संघिगय वि [संघिगय] १ बजान
घुघ मरा हुवा । २ घुघ 'संघा माम मयो
पहुनरनबलसंघिगय' (घो-पाया १
१ टी—पत्र १) 'पति मगदा जययो
यमसंघिगय' (वपु) ।
संघि देको संघि (वि ८९ १ मरि) ।
संघि वि [संघि] क्या हुवा विरल ।
घारि वि [घारि] प्रविष्ट का परेन
करनाला (कर्म) ।
संघिगय देको संघिगय (पत्र ११
१११) ।
संघिगय न [संघिगय] आधर, आधर
'आमपला संघारि घरिगयि घरिगयि-
मय' (पद १ २—पत्र १४) ।
संघिगय देको संघिगय (पाया १
१—पत्र १५) ।
संघिगय वि [संघिगय] संघोय
कर्मयो कर्मपरसंघिगय (कर्म घो-
कर्म १४४) ।
संघिगय वि [संघिगय] संघोय
कर्मयो कर्मपरसंघिगय (पाया १ १—पत्र
११) ।
संघिगय वि [संघिगय] संघिगय रोय
वे कर्मपर रजानला (पाया १ १—पत्र
२ वहु ११ घो ७७) । २ घा-विरोय
कर्म मारो क संघोय व बजा हुवा घा
(घा १११ कर्म ४ १६ १७) । ३ घु
संघि व, घा संघोय (घा १११) ।
संघिगय वि [संघिगय] क्या संघि-
गय, कर्मपरसंघिगय (घो २१) ।
संघिगय वि [संघिगय] विरल
कर्म हुवा (पाया १ ११—पत्र २२१) ।
संघिगय घु [संघिगय] कर्म, कर्म
(कर्म घो) ।
संघिगय न [संघिगय] १ घाघा रवा
(घो) । २ वि विरल बजान रवा व
कर्म क घाघा बजान रवा रवा हुवा
(व) । ३ घाघा घो विरल कर्म व
कर्मपर—रेन (पाया १ १—पत्र
११ पत्र २७) ।

संपुष्प वि [संपुष्प] प्रेषित ३८०। बट
‘मन्त्रसङ्गमसि संपुष्पयुग्मसि सोऽन्नासासयसं
मुक्ताम्’ (उप ४४)।

संपुष्प } एक [संप्र + पुष्प] प्रेरणा
संपुष्प } कला। सङ्ग संपुष्पसि,
संपुष्पसि (वस २, १ १)।

संपुष्प रेवो संप्रम (छाया १ १—पत्र १)
हृन्म १११ नाट—मुष्प २)।

संपुष्पा की [दे] बेकर या बीकर (मिश्रण
विशेष) बनने का घटा सेवू कर वह घटा
बिना हटकर बना है (वे ८ व)।

संप्रति नि [संप्रति] १ सम्यक् प्राप्त (छाया
१ १ उवा विना १ १ मृग, बी १)
२ समस्त प्राप्ता हुआ (मुपा ४१२)।

संप्रति पुन [संप्रति] पुनः वा, मुपा
(मुपा ४१२)।

संप्रति की [संप्रति] १ सम्यक् वैभवं
संप्रति (वाच प्राप् २१ १२०)। २ संविधि।
१ पुनः एक दोहरा संघटी संविधि
(विना १ २—पत्र २०)।

संप्रति की [संप्रति] नाम, प्राति (विश्व
८२४—मुपा ११)।

संप्रति की [दे] १ बाधा हुमाटी लक्ष्मी
(वे ८ १५; वज्र १११)। विष्णु-पत्र,
प्रेम की पत्नी (वे ८ १८)।

संप्रति अ न [दे] शीम, जलसे (वे ८, ११)।
संप्रति अ } नि [संप्रति] १ निजने
संप्रति अ } प्रकाश किया हो वह, प्रकाश
प्रतिष्ठ (सं २१ व १११ मुपा १ ७)
१५१ छाया १ २—पत्र ३२)। अस्मिन्
‘अस्मिन्’ के विना ही अस्मिन् वनोपारब्ध
(१ पत्नी)। तद्विना ही मरु निरुद्ध पुरी
संप्रति अ न ॥”

(वज्र ११ ११)।

संप्रति अ [संप्रति] १ पुनः, उचित (मृग
१२)। २ पुनः, वा (पत्र ११)।

संप्रति नि [संप्रति] विना हुआ, प्रतिष्ठ
(मृग, पत्र)।

संप्रति रेवो संप्रम (छाया १ ८—पत्र
१५ छाया २ १२, १)।

संप्रम वि [संप्रम] पुनः नरपुनः उदय,
प्राप्ताय (संबोध ११ बर्ग १२१०)।

संप्रम वि न [संप्रम] संप्रम, अरक-
विशेष ‘अस्मिन्’ कल्पित कदा नरपुनः
उपपत्त्यो’ (ठा ८—पत्र ४२७)।

संप्रति रेवो संप्रम = संप्रति (मृग १२)।

संप्रति रेवो संप्रति = संप्रति (संवि २, वि
२ ४)।

संप्रम रेवो संप्रम = संप्र + मार्य।

संप्रमरे (श्री) (नाट—मुष्प २११)।

कर्म, संप्रमरे (श्री) (वि १४१)।

संप्रमरे की [संप्रमरे] अस्मिन्-विशेष
प्राप्ताय-मरु (व १)।

संप्रमरे वि [संप्रमरे] निमित्त, निर्णीत
(संवि)।

संप्रमरे वि [संप्रमरे] हृन्म-विशेष
हृन्म विना हुआ (कर्म कर्म प्राप् १ २
१ १)।

संप्रम नि [संप्रम] १ संविधि-पुनः (वज्र,
महा कर्म)। २ संविधि (विना १ २—पत्र
२२)।

संप्रम रेवो संप्रम।

संप्रमरे अक [संप्र + मुप] उभय हात
को प्राप्त करना। संकुचनंति (वज्र ७ २१)।

संप्रमरे अक [संप्र + मुप] मार्गन करना
मरुता हात-मुक्त करना। संप्रमरे (प्री
४४)। सङ्ग संप्रमरे प्राप्ता संप्रमरे
(प्री प्राप् २, १ ४ २)।

संप्रमरे अक [संप्र + मार्य] मृन्म
करना। संप्रमरे (प्राप् १ २, १)।

संप्रम वि [संप्रम] विमयात् वसंतात्
‘प्राप्ता’ संप्रम विमयात् न प्राप्तात्
मरुता’ (वि १११)।

संप्रम रेवो संप्रम (वाच प्राप् २१ १२०)।

संप्रमरे अक [संप्र + मुप] सम्यक् प्रकृति
करना। संप्रमरे (वज्र १११)। वज्र,
संप्रमरे (वज्र ८ १४)।

संप्रमरे वि [संप्रमरे] सम्यक् प्रकृति (मृ
४ ७२)।

संप्रमरे की [संप्रमरे] १ सम्यक् संप्रति,
वसंतात् विना मुप १ ८८;
मृग प्राप् २१)। २ मार्गन विमया

संप्रम (वज्र १)। १ प्राप्ति, ‘वसंतात्
विमयात् संप्रम’ (विम १११ वज्र १२)।
१२)। ४ एक विमया-की का नाम (वज्र
२२७ टी)।

संप्रम वि न [संप्रम] १ सम्यक् प्रकृति
मरुता हात संप्रम (प्राप् २ ११
१, प्राप् ८ मुपा २१८)। २ अस्मिन्-विशेष
मरुता-मरुता विमया हात विमया हात
(वि २ २२)।

संप्रम वि रेवो संप्रमरे वसंतात् संप्रमरे
(मुपा १११)।

संप्रमरे वि [संप्रमरे] संप्रम-
संप्रमरे } संप्रमरे संप्रमरे संप्रमरे (अ
२ १—पत्र १२ मुप १ ८, ८) अस्मिन्
प्राप्ता २२१)।

संप्रमरे पु [संप्रमरे] १ संप्रम, वज्र (मुप
१ २, २ २१ वज्र २, १)। २ अस्मिन्-विशेष
विमया (अ २ १—पत्र १२)। ३ मरुता
विमया स्मृत् कर्मा (मुप १ ८, ८)। ४
विमया वज्र (प्री)। ५ मृग संप्रम
मरुता (प्राप् १ ८—पत्र १२७ मुप
४ विमया वज्र २ ४)।

संप्रमरे वि पु [संप्रमरे] संप्रमरे वज्र
का एक प्राप्ता एक संप्रमरे (वज्र २,
२१)।

संप्रमरे अक [संप्रमरे + मृग] सम्यक्
प्राप्ता करना। सङ्ग संप्रमरे (संबोध
२१)।

संप्रमरे अक [संप्रमरे] वि [संप्रमरे] विमया
संप्रमरे (वज्र १२२; छाया
१ १ टी—पत्र ४)।

संप्रमरे वि [संप्रमरे] विमया, विमया
विमया (वज्र ७८, १२)।

संप्रमरे वि [संप्रमरे] १ सम्यक् विमया
विमया विमया (विना १ ८—पत्र १
उवा प्री)। २ विमया (वज्र २, २ २१)।

संप्रमरे वज्र [संप्रमरे + वज्र] वज्रन
प्रकृति करना। संप्रमरे (विमया १२७७)।

संप्रमरे (पत्र) अक [संप्र + मृग] विमया
संप्रमरे (विमया)।

संप्रमरे वि [संप्रमरे] १ संप्रम विमया
हृन्म। २ वज्र मरुता के विमया विमया हात
हृन्म (छाया १ १८—पत्र २११)।

संघाषणा की [संघाषणा] ऊपर देखो (पंथा ११ १७)।

संघाषण सक [सं + पाठय्] प्राप्त करना। संघाषण (अर्थ)।

संघाष सक [सं + आप्] प्राप्त करना।

संघाषेह (अर्थ)। संघ संघय (संघ १२)।

हेह संघाषित (घम १ एक सौ)।

संघाष सक [सं + आपय] प्राप्त करना। संघाषेह (उवा)।

संघाषण न [संघाषण] प्राप्ति नाम (साम्बा १ १६—यम २११ गुर १४ ४७)।

संघाषिअ वि [संघाष] प्राप्त सम्प (गुर २ २२१ गुणा ११३, छल)।

संघाषिअ वि [संघाषित] नीत जो से जामा पया हो वह (उवा)।

संघासंता वि [दे] होई, समता (वि ८ ११)।

संघिअ न [संघिअत] १ इन्हों का परस्पर संघोक्त (वि २)। २ समूह (सौ ४ ७)।

संघिअ वि [संघिअत] विराजमान किया हुआ एकत्र किया हुआ (सौ ४ की ४७) छल)।

संघिअ केहो संघेह = संघ + ईह। संघि-नई (बह २ १२)।

संघिह वि [संघिह] पिता हुआ (घुष १ ४ ५)।

संघिअ वि [संघित] नियमित। 'रज्जु विधिओ ब ईरकेहु विमुद्राएओससिणिअ' (पह २ ४—यम ११)।

संघिह सक [समपि + घा] पाठ्यपत्र करना, छनना। संघ. संघिहियाय (वि २६१)।

संघिह घु [संघिह] संघिअ लवण (गह ३)। केहो संघिह।

संघिअ वि [संघिअ] बनावत हुआ (गह १४४)।

संघिअिअ वि [संघिअित] कुछ किया हुआ (छल)।

संघिह घु [संघिह] संघाष समूह (बह १२, २७)।

संघिअ की [संघिअ] पीका बुझावत (बह १२, ११४ २२ १४३ ७८)।

संघुअ सक [सं + प्रच्छ] पूकना प्रसन्न करना। संघुअ (सी) (मट—वि २१)।

संघुअ कीन [संघुअन, संघरन] प्रसन्न वृद्ध (घुष १ १ २१ गुणा २१)। की. जा (बह १ १)।

संघुअ की [संघुअन] भग्न संघासंता (घम २१)।

संघुअ वि [संघुअ] संघासंताय प्रारण्यीय (पजम ११ ४७)।

संघुअ घु [संघुअ] १ घुड़े हुए वी समान बंध वाली वस्तु, जो समान धरो का एक बंध से जुड़ा 'कनाइसंघुअसमि' (बह १) 'बलसंघुअ' (बन्धु महा अर्थ से ७ ४१)। २ संघम समूह (घुष १ ४, १ २१)। फलता घु [संघुअ] दोनों परस्पर मिल बंधो पुस्तक विद्या की बंधो के समान विद्या (बह ८)।

संघुअ सक [संघुअ] जोड़ना दोनों हिस्सों को मिलाया। संघुअ (अर्थ)।

संघुअिअ वि [संघुअित] जुड़ा हुआ (छाया १—यम ११)।

संघुअ वि [संघुअ] १ दुर्लभ, पूष (उवा महा)। २ न बर दिलों का लगावत करना (संघो ३६)।

संघुअ सक [सं + पूज्य] सम्मान करना सम्मान करना। संघ संघुअय (पंथा ६, ७)।

संघुअिअ वि [संघुअित] सम्मानित (मह)।

संघुअ न [संघुअन] पूजन सम्मान (घुष १ १ ७ बर्ल ११४)।

संघुअिअ वि [संघुअित] पूरा किया हुआ, 'अधुअिअिअ' (महा छल)।

संघिह घु [संघिह] बनाव (पजम २ २७२)।

संघिअ सक [सं + आप्] मेजना। संघेह (महा अर्थ)।

संघिअ घु [संघेह] प्रेषण मेजना (छाया १ ८—यम १४७)।

संघिअ न [संघेह] ऊपर देखो (छाया १ ८—यम १४७ ४ १७१ बह अर्थ)।

संघिअिअ वि [संघेह] मेजना हुआ (गुर ११ १११)।

संघेह सक [सं + आप्] मेजना निरोध करना। संघेह, संघेह (बह २ १२० वि १२१ भाग उवा अर्थ)। संघे संघेहाय, संघिअ (छाया १ २ ४ ४१ १ ४ ३ २) घुष २ २ १ अर्थ)।

संघिअ की [संघेहा] परमोत्तम (छाया १ २ २ १)।

संघ न [ह] दुष्ट, बह-अर्थ (वि ८ १)।

संघाअ सक [सं + पाठय्] पढ़ना, सीना। संघाअ (अर्थ)।

संघाअ की [ह] वसिष्ठ, मेदि (वि ८ १)।

संघाअ सक [सं + स्मृत्] स्मरण करना 'माहाय संघेह' (छाया २, १ १ ३ २ १ ३ २ २, १ १ २ ४ ५)।

संघाअ घु [संघेह] स्मरण (छाया २ ४ ४ ४ टी ५ २ टी १ ४ १ वि)।

संघाअ न [संघेह] ऊपर देखो 'पराधीनसंघाअभाषो' (पंथा १ २७)।

संघिह घु [दे] संघोप लेना (भा ११)।

संघुअ वि [संघुअ] विच्छिन्न (वाह १४)।

संघुअिअ वि [संघुअ] प्रमादित 'बहलकर निमलसुखसिद्धिमुखा' (गुणा २११)।

संघ घु [रान्] १ बीज्य बानुस क एक घुष (छाया १ २—यम १ १ संघ १४)।

२ राजा कुमारपद के समय का एक सेठ (गुर १४१)।

संघ घु [रान्] बह अर्थ का घामुष (गुर ११, २)।

संघ सक [सं + वज्य] १ जोड़ना। २ भाता करना। कर्म संघज्य (विम ७२७)।

संघ घु [संघय] १ संघ, संघ (अर्थ)। २ संघोप (अर्थ १ ११)। ३ भाता समीह, रिशेराप (स्वयं ४१)। ४ जोड़ना, मेल (बह ३)।

संघिअिअ वि [संघिअिअ] सम्मान एतेवता (उवा अर्थ ११७ ४ १११)।

संघ घु [रान्] मुन-विरोध, हरिण की एक आधि (पह १ १—यम ७ १ ८, १ ४ ४ २४)।

संयम पुं [संयम] १ पालेय, राजसे में जाने का योग्यता 'कन्याही निय पञ्चोमसंयमो नियम लब्धौ' (संयम १३० पत्र, मुर ११२ दे १ १ नः महा) यति गुण २४) । २ एक नाक्यकार है (धामन) ।

संयमि केओ [संयमि] छिन्मि (धाया २, १ १ ४) ।

संयमि दुओ [शास्मि] कृत्-विशेष लेख्य का पै (मुर २ २३४ ८ १०) । केओ सिद्धि ।

संयमा केओ संयमा (पत्र २ ४६) ।

संयम छक [सं + बाय्] १ पीड़ा करना । २ कला कपी करना । संयमकना (निष् १) ।

संयम दु [संयम] १ नगर-विशेष कहाँ बहल्ल धारि चारो बहल्लों की प्रभुत्व कटी हो बहल्ल (रत १ १९) । २ पीड़ा 'संयमा बहल्ले पुनो पुनरुक्तमा धारसुधो धारसुधो' (धाया) । ३ वि संकीर्ण करता 'संयमि संयमि' (पाय) ।

संयम न [संयमन] केओ संयमन (धाया १ १ ४ २) ।

संयमन के [संयमन] केओ संयमन (धौ) ।

संयमनी के [संयमनी] विद्या-विशेष (पत्र ४ १३०) ।

संयमा के [संयमा] १ पीड़ा (धाया १ ४ ४ २) । २ धर्म-मर्द, कपी (निष् १) ।

संयमि वि [संयमि] १ पीड़ा (हृष १ २, १ १) । २ केओ संयमि (धौ) ।

संयम पु [संयम] १ संय (अ ४ २—पत्र २१६) गुण १ (१३१) । २ यमन का एक धारि—नगर-विशेष का पुन (पत्र ४१ १०) । ३ एक बह का नाम (पत्र) । लब्ध केओ [लब्ध] संय के धारि के बहान भिन्न-धौ (रत १ १२) । केओ संयम ।

संयम छक [सं + बाय्] सम्यक्, जान पना । संयम्य, संयम्य संयम्य (पहा

४ ४८४) गुण १ २, १ १ दे ७९) । नक संयम्यमाय (धाया १ १ २ २) ।

संयम वि [संयम] जान-पना (ज्या म्हा) ।

संयमि के [संयमि] जान, बोध (अन्य १९) ।

संयम पु [संयम] कव-पुष्टि, मुक्ति के भाकर का नक-संयम-विशेष (दे १ १९ कव) ।

संयमि के [संयमि] धय नम की प्राप्ति (नम १ १२९) ।

संयम छक [सं + बाय्] १ सम्यक्ता बुद्धि । २ धामन्य करना । ३ विद्विषि करना । संयम, संयम (धौ) म्हा) । कव. संयमिमाय (धाया १ १४) ।

क. संयमिमाय (अ ४ १—पत्र २४३) ।

संयम दु [संयम] जान बोध सम्यक् (धाया २) ।

संयम न [संयमन] १ ऊपर देओ (विशे २३१२) गुण १ १ दे ७७३) । २ धामन्य (कव) । ३ विद्विषि (धाया १ ४—पत्र १२१) ।

संयमि केओ संयमि (अ ४ १०२ दे ७९) ।

संयमि वि [संयमि] १ धमन्य गुण (धौ ४८) । २ विद्विषि (धाया १ ४—पत्र १२१) ।

संयम वि [संयम] १ धौ कव्यमा गुण नल (अ ४ १०३ म्हा, कव) । १ पुन प्रथम बरक का पोर्वा नरक-नरक-विशेष (लेख ४) । ३ न, कव, कव्यमा (म्हा) ।

संयमि के [संयमि] धमन्य ज्ञान (अ १ ११—पत्र ४ १) ।

संयमि वि [संयमि] संयम के बह गुण (अ ११ २—पत्र ४ १) ।

संयम वि [संयम] बुद्धि (अ १२, ११) ।

संयम छक [सं + बाय्] कव्य । संयम, संयमि (विशे) ।

संयमि वि [संयमि] कव्य, कव्य (विशे) ।

संयम छक [सं + बाय्] १ धमन्य प्रमण करना । २ कव. धमन्य होना कव्यमा । नक संयम (वि २०२) ।

संयम पु [संयम] १ धारण 'धमन्य धमन्य पमन्य व (पाय) । २ नम कव्यमा कव्य 'संयमो धमन्य धमन्य' (पाय) प्राय १ २ म्हा) । ३ ज्ञान (धौ) ।

संयम छक [सं + बाय्] १ धारण करना । २ धारण करना । ३ धारण करना संयम करना । नक. संयममाय (दे ४ ४१) ।

धौ. संयमि (धौ) (विशे) ।

संयम छक [सं + बाय्] धारण करना, बह करना । संयम, धमन्य (पहा वि ४१३) । नक. संयम, संयममाय (अ १४ गुण ११० दे ४ ४१) । नक. संयमि संयमणीय (धमन्य १ । अ २१० ठी) ।

संयम न [संयमन] धारण बह (अ २२२ धमन्य १ १—पत्र ४१ दे २४) कव्य १४) ।

संयम के [संयम] ऊपर देओ (अ २३ ठी) ।

संयमि वि [संयमि] धारण करना (अ १२ गुण ४२१) ।

संयमि वि [संयम] बह किया गुण (कव. कव २२) ।

संयम छक [सं + बाय्] धारण करना ।

संयम (अ ४ ११३) । कव. संयमि (कव्य ४) । नक. संयमि (अ) (विशे २२) ।

संयम छक [सं + बाय्] १ गुण पुनरी में 'धमन्य' । २ कव. धमन्य धमन्य होना । संयम (धौ) 'संयम' 'धमन्य' (धमन्य २१०) । संयम, संयमि (धौ) (विशे २२) ।

संयम के [सं + बाय्] १ धौ (अ ४ नम २) । १ धौ, धौ के धमन्य धौ का नम करनेवाली के (धमन्य) ।

संयम छक [सं + बाय्] १ धमन्य होना । संयम धौ धौ संयम होना । संयम

(वि ४७३) कल मयि)। बहु संभयत (गुण १६)। इ संभय्य (भा १२ मृषा १३)।

संभय तु [संभय] १ जगति (महा-उक् ६ ४ ११३)। २ संवाचना (मयि)। ३ बर्तमान व्यवस्थिती काय में ज्ञान होकर जिनके वा काय (मय ४१ पठि)। ४ एक दिन मुनि जो हृदय बानुवर के पूर्व-जन्म के गुण से (पठन २० १०६)। ५ कला-विशेष (वीर)।

संभय तु [इ] प्रवचन-प्रवृत्ति से होने-वाला बुझना (वे ४, ४)।

संभय (भा) देखो संभय = संभय (मयि)। संभयि वि [संभयिम्] जिसका सम्भर हो वह (पथ २, २२ भाग १३)।

संभयि देखो संभूज (वेद १२९)।

संभय्य देखो संभय = सं + भू।

संभाजय न [संभाज] बुझाए का एक प्राधान्य नवर (पठन)।

संभार वह [सं + भाय] नवाला से संवृत करता बाधित करता। संभार, संभारित तावड़े (प्राग्य १ १२—पठ १०३, १०६)। संभ संभारि (सिंह ११३)। ७. संभाजिज (प्राग्य १ १२)।

संभार तु [संभार] १ बहुत बाला 'संभार-कर्मसामर्थ्यमयं कथय' (उ १४८ दो भाग ११)। २ बाला याक प्रादि में ऊपर लता जडा मझता (प्राग्य १ १६—पठ ११६)। ३ पवित्र, इन्द्र-वचन (पठ १ ३—पठ १२)। ४ पदपत्रय कर्म का वचन (गुण २ ७ ११)।

संभारय वि [संभार] पाद किं ह्य (वे १४ १३)।

संभावि वि [संभावि] का कथना ह्य (प्राग्य १ १—पठ ७१; गुण १४ ३१३)।

संभात वह [सं + भात] संघातय। संभार (मयि)।

संभात तु [संभात] कोन कायय 'संभात-मुनि काय जलपत्र-व्यवस्था-विषय-कथना का तावडी काये लक, नवलीक काय १२१। ६६ व १२२। (१ १३ ७)।

संभावि वि [संभावि] संवाता ह्य (पठ)।

संभाय वह [सं + भाय] १ संवाचना करता। २ प्रथम नवर न वेवता 'न संभाय वि धारणे' (मोह ९)। संभाय (साम ४) सम्भायि मोह २२)। कर्म संभायि (वी) भाट—मुष्य २१)। ३ बहु संभाजित (भाट—पठ ११४)। संभा संभावि (भाट—पठ १३)। ४. संभायिज, संभायणीय (उ ७९६ टी ४ ११ या २३)।

संभाय वह [लुभ] सोन करता पाषाणिक करता। संभाय (वे ४ १३१ पठ)।

संभायया वी [संभायना] खनर (वे ४ १३ पठ)।

संभायि वि [संभायिन्] जिसका खनर हो वह (भा १४)।

संभायिज वि [संभायिज] जिसकी संभायना को मई हो वह (भाट—पठ १४)।

संभास वह [सं + भाय] बाजवीत करता, पाताय करता। इ संभासमय (गुण ११३)।

संभास तु [संभाय] संवायण बाजिता (उ ११२ ताव २१ पठ काय गुण ११२, २४२)।

संभास न [संभाय] ऊपर देखो (मयि)।

संभासा वी [संभाय] संवायण बाजवीत (वीर)।

संभासि वि [संभाय] संवायण 'संभासि-स्वापि' (काय)।

संभासि वि [संभायि] जिसके वच तावपण—बाजिता किं काय हो वह (महा)।

संभास न [संभाय] पाताय (पठ)।

संभज वि [संभज] १ पवित्र (पठ ११३)। २ पवित्र भूय, गुण कथ (पठ ११२)। ३ पठन। ४ विषय गुण पठ—प्राग्य (पठ २ १—पठ ११)। ५ पठन (पठ ११)। सोन वि [पठ न ८३] नवलीक-वचन पठन का वी पठन का वी पठन का

व मुने की दक्षिणाता (पठ २ १—पठ ११, वीर)।

संभज न [इ] पाताय (पठ ११, वीर)।

संभय वि [संभय] १ गुण, धारयविमर्श (गुण १ १, १)। २ वचन-पुन, संवृत्त; 'बहुसंभयिन्' (प्राग्य १ ११—पठ ११६ स १६ विने २१३)।

संभु तु [संभु] विन संभु (गुण २४ ५ या ११२ पठ १२)। २ पठन का एक मुष्ट (पठ २१ २)। ३ पठन-विशेष (वि)। पठि वी [गृहिणी] वीर पठि (गुण ४६२)।

संभु वह [सं + भु] काय भोजन करता, एक मणली में बैठकर भोजन करता। संभु (पठ)। २ संभुविषय (गुण २ ७ ११ स २ १—पठ २१)।

संभुजना वी [संभोजना] एकत्र भोजन-भार (पठ)।

संभु वि [इ] दुर्न पठ (वे ४ ७)।

संभू वि [संभू] १ ज्ञान संवात (गुण १ ३ ७ मयि)। २ तु, एक वन मुनि का प्रथम बानुवर के पूर्वजन्म में गुण से (पठ १२१ पठन २ ७६)। ३ एक प्रविष्ट वन बहानि ना स्तुत्य मुनि के गुण से (पर्व १०, काय ११)। ४ पठन-नायक काय (महा)। पठन तु [विजय] एक दिन पठि (गुण ४२१ विना २ २)।

संभू वी [संभू] १ जगति (पठ १७ १० या ११२ गुण ११ ११२ पठ १४६)। २ पठ विमृति (काय ११)।

संभू वह [सं + भू] पाताय करता। संभू (पठ)।

संभात तु [संभाय] गुणर धेन (गुण ११८ पठ)। देखो संभय।

संभाज वि [संभाजि] ज्ञान कावाय-वे विमृष्टन होने का पठन विमृष्टन काय-वचन पठि का पठन-पठि हो पठे देना काय (पाठन २ १६ या ११ ३२)।

संभाय तु [संभाय] वचन कावाय-वे विमृष्टन का पठन विमृष्टन-पठन (पठ ३१ वीर पठ)।

संस्कृतानि [संस्कृत] धर्मो उक्त एता
कनेरता (छाया १ १८—पत्र २४) ।
संस्कृतानि न [संस्कृत] धर्मो उक्त
(छाया १ १४ नि १११) ।
संस्कृतानि देवो संस्कृतानि (उत्तर २१ ११) ।
संस्कृतानि [सं + राध] पकता । इ
संस्कृतानि (कुप १०) ।
संस्कृतानि [सं + रुध] रोकता, घटकाता ।
कर्म संस्कृतानि, संस्कृतानि (हे ४ २४०) ।
यदि संस्कृतानि, संस्कृतानि (हे ४ २४०) ।
संस्कृतानि [सं + राध] घटकाता (कुप २१ पत्र
२४०) ।
संस्कृतानि [सं + राध] बाध को रोकने-
वाली धर्म-विशेष (गुण २१०) ।
संस्कृतानि [सं + रुध] पक्षि-प्राणतः ।
कर्म संस्कृतानि (गौ-गौ-वेणी ७०) ।
संस्कृतानि [संस्कृत] तथा हुमा संस्कृत
(गुण २२६) ।
संस्कृतानि [संस्कृत] संस्कृत होनेवाला
जुनेरता (गौ १०) ।
संस्कृतानि [संस्कृत] संस्कृतानि उक्त कथित
(गुण १ ११ गुण १२०, १२२, १२४, १२६) ।
संस्कृतानि देवो ।
संस्कृतानि [सं + रुध] संस्कृतानि करना ।
संस्कृतानि, संस्कृतानि (गौ १० पत्र १४०) ।
संस्कृतानि (छाया १ १—पत्र ११)
कर्म) । इ संस्कृतानि (गौ) ।
संस्कृतानि [संस्कृत] संस्कृतानि बालितानि
(गुण १२०) ।
संस्कृतानि [सं + रुध] बाधको
करता । संस्कृतानि (कर्म) ।
संस्कृतानि देवो संस्कृतानि = संस्कृतानि (गौ १०
११ पत्र ४ १) ।
संस्कृतानि [संस्कृत] संस्कृतानि । उक्त कथित ।
२ कर्म-गता हुमा (गौ १११) ।
संस्कृतानि [संस्कृत] संस्कृतानि (गौ ११)
संस्कृतानि [सं + रुध] संस्कृतानि करना । २ उक्त कथित
करता । ३ संस्कृतानि । ४ संस्कृतानि करना ।
धर्म-विशेष (गौ २, १ ११) । संस्कृतानि
(उत्तर ११ २४०) इति न ४ ७) । संस्कृतानि
संस्कृतानि (कर्म) ।

संस्कृतानि [संस्कृत] विद्वान् उपपन्नान्
से उक्त कथित का शोषण किया हो वह
(उत्तर ११) ।
संस्कृतानि [संस्कृत] संस्कृतानि-गुण (गौ ११)
संस्कृतानि [संस्कृत] विद्वान् उपपन्नान्
कर्म कथित भो कथित में किया हो वह,
संस्कृतानि (पत्र ११) ।
संस्कृतानि [संस्कृत] उप-विशेष उक्त
कथित का शोषण (उत्तर ११; न २० पत्र
११) ।
संस्कृतानि [सं + रुध] करना । कर्म
संस्कृतानि गुण-विशेष (गौ १ ११, ११)
संस्कृतानि [संस्कृत] उप-विशेष उक्त
कथित का शोषण (उत्तर ११; न २० पत्र
११) ।
संस्कृतानि [सं + रुध] कर्म विशेष (गौ २ २)
संस्कृतानि [संस्कृत] उक्त देवो (उत्तर ११
२१ गुण १४०) ।
संस्कृतानि [संस्कृत] १ बर्तन, धर्मको
(गौ २, १ १ २ उत्तर २४ ११ पत्र
११) । २ उक्त-पत्र उक्त-पत्र । ३ पत्र,
संस्कृतानि । ४ प्रकाश (गौ) । ५ वि-
विध-प्रकार-गता विद्वान् पर उक्त पत्र उक्त
हो वह (उत्तर २४ ११) ।
संस्कृतानि [सं + रुध] देवता । इ-
संस्कृतानि (गुण १ ४ ११) ।
संस्कृतानि [संस्कृत] संस्कृतानि
विपरीत प्रत्यय (उत्तर) ।
संस्कृतानि [संस्कृत] १ गुण, उक्त-पत्र
(गौ १; न ११ १४) । २ उक्त-पत्र विद्वान्
गुण-विशेष किया गया हो वह (उत्तर) ।
संस्कृतानि [संस्कृत] कर्म उक्त (उत्तर ११
२ ११) । पक्षि-प्राणतः न [प्रतिपक्ष-विशेष]
बर्त-विशेष कर्म को गुण-विशेष के वि-
परीत प्रत्यय (गौ १ ४—पत्र १११
पत्र ११) ।
संस्कृतानि [संस्कृत] १ व्योम-विशेष
व्योम-विशेष का विज्ञान (गौ १४ गुण १२)
२ वि-विध-प्रकार-गता विद्वान् (गौ १२४
पत्र) ।

संस्कृतानि देवो संस्कृतानि (हे २ २१) ।
संस्कृतानि [सं + रुध] १ एक स्थान में
रहना । २ संस्कृतानि करना । संस्कृतानि (गौ) ।
संस्कृतानि (गौ १ ८ ११) । उक्त
संस्कृतानि (उत्तर ४ ४—पत्र ८६) संस्कृतानि
(गौ १ ८ ११) ।
संस्कृतानि [संस्कृत] १ गौ (उत्तर २१६) । २
मम-विशेष गौ का धर्म-विशेष—संस्कृतानि (उत्तर
१ १०) । ३ गौ-विशेष, गुण को उक्त-
गता गौ (पत्र १—पत्र २१) । ४
पत्र-विशेष (उत्तर १—पत्र १०) । ५ पत्र ।
१ पत्र पर गौ-विशेष को उक्त-पत्र-विशेष
कर रहे वह स्थान गुण-विशेष (गौ) । देवो
संस्कृतानि ।
संस्कृतानि [संस्कृत] गुण-विशेष में उक्त
गौ (उत्तर १ ४११) ।
संस्कृतानि [संस्कृत] गौ-विशेष (गौ ४१)
देवो संस्कृतानि ।
संस्कृतानि [संस्कृत] १ पत्र पर गौ-
विशेष विद्वान् वह स्थान (गौ १ २—
पत्र ७१) । २ पत्र-विशेष (विशेष २ ४२) ।
संस्कृतानि [संस्कृत] पत्र-विशेष (उत्तर १—
पत्र १०) । देवो संस्कृतानि ।
संस्कृतानि [संस्कृत] संस्कृतानि उक्त-पत्र-विशेष
(१ ८ १२) ।
संस्कृतानि [संस्कृत] १ विद्वान्-विशेष
(गौ १) । २ संस्कृतानि (हे २ ११) ।
संस्कृतानि [सं + रुध] बर्तन । संस्कृतानि
(गौ) ।
संस्कृतानि देवो संस्कृतानि (गौ ४१) ।
संस्कृतानि [संस्कृत] बर्तन गौ (गौ) ।
संस्कृतानि [संस्कृत] बर्तन गौ
(गौ २ २२) । २ गौ-विशेष 'गौ-वि-
विध-प्रकार-गता विद्वान्' (गुण ११)
३ पत्र । ४ पत्र का विद्वान्-विशेष । ५
गौ-विशेष, बर्तन का विद्वान् । ६ एक विद्वान्
गौ (विशेष १) । देवो संस्कृतानि = संस्कृतानि ।
संस्कृतानि देवो संस्कृतानि (हे २, ११) ।

सुर ४ २४१) २ बह्व क्रिया हुआ (धी)।

संविधिष्य नि [संविधीर्ण] धन्वी लङ्
भ्यात् (अण् २—पञ्च १०)।

संविध्य सङ् [संवि + ईङ्] सम भाष
वे देवता, पदादि-पठित हो कर देवता।

बह्, संविधकमात्र (उत् १४ ३१)।

संविग नि [संविन्] संविग-युक्त, सप्त-मीह
मुक्ति का प्रसिद्धापी उत्तम छात्र (उत् १४
२, ४१ सुर ८ १११ चौबमा ४६)।

संविधिष्य नि [संविधीर्ण] संविधरिड,
संविधिष्य प्राप्तेषि (छाया १ १ टी—
पञ्च १ छाया १ ४—पञ्च २६)।

संविध्य सङ् [सं + विद्] विद्यमान
होता। संविध्यक (सुप्र १ १ २, १८)।

संविट्ट सङ् [सं + वेष्ट] १ बेट्ट करना,
बोझना। २ पोषण करना। संविट्टमाण
(छाया १ १—पञ्च ६१)।

संविधत् नि [संविधत्] पैदा किया हुआ
जातिव (उ २)।

संविधीय नि [संविधीय] विनम-मुक्त
(चौबमा ११४)।

संविध केवो संवीम (सुप्र १ १, १ १०)।

संविध नि [संविध] १ संभाव बना हुआ
(सुर १ २६)। २ विषय भाषण-
बाबा। ३ विमृष्ट कोट (सिदि १ २६)।

संविधिष्य नि [संविधिष्य] संवेद्य ज्ञान (विदे
११२६) बर्मेस २६६)।

संविध सङ् [सं + विद्] जानना
‘विष्णुपाठो न संविधे’ (उत् ७ २२)।

संविध नि [संविध] १ संयुक्त (उत्तर
१११)। २ धर्मसत्। ३ छात्र ‘संविधवर्धे’
(भाषा १ २, १ ६)।

संविधा षी [संविधा] संविधान रचना
बनावट (पात्र १)।

संविधुष्य सङ् [संवि + धृ] १ दूर करना।
२ परीक्षण करना। ३ धनकला विरकार
करना। संविधुष्यि संविधुष्यिषाणं
(भाषा १ २, १ २) सुप्र १ ११, ३०
पीर)।

संविमत् नि [संविमत्] बन्ध हुआ
‘संयुक्तविमत् पत्’ (सुप्र १११)।

संविभाष्य नि [संविभाग] १ विभाष
संविभाग करता बट (छाया १ २—
पञ्च ११ उवा पीर)। २ धार, धार
(उ ३१४)।

संविभाग नि [संविभागिन्] हुत्ते को ह
कर मोक्ष करनेवाला (उत् ११ ६, वत्
६, २ २१)।

संविभाव सङ् [संवि + भाव] पदा
भाव करना चिन्तन करना। संवि-
भाविक्य (पञ्च)।

संविधाय मङ् [संवि + यङ्] सोझा।
बह्, संविधायत् (पञ्च ७ १४६)।

संविध्य केवो संवेत्त। बह्, संविध्यत् (वै
४२)। संविध्यिऊय (सुप्र १११)।

संविधिष्य नि [संविधिष्य] जातिव (उवा)
संविधिष्य केवो संवेक्षिष्य = संवेक्षि (सुप्र)।
संविधिष्य केवो संवेक्षिष्य = (वे) (उवा
७ १)।

संविध मुं [संविध] घोसने का एक लासक
(मग ८ १—पञ्च ११६)।

संविधाण न [संविधान] १ रचना, बनावट
(सुप्र १८१, बर्मेस १२७, माल १११,
१११)। २ नेत्र, प्रकर (वै १)।

संवीम नि [संवीम] १ म्यात् (सुप्र १ १
१ १६)। २ पठित पढ़ना हुआ संवी-
मविम्वरणी (बर्मेस ६)।

संयुध केवो संयुध (वै १ १११; संवि ४
पीर)।

संयुध केवो संयुध (राम ४४)।

संयुध नि [संयुध] १ संयुक्त सङ्ग धावि
सूत (उ १ १—पञ्च १२१)। २ संयुक्त-
धाव्य प्रवृत्ति से रचित (सुप्र १ १ २
२४; वंता १४ ६ मग)। ३ निष्ठ, निष्ठ-
माय (सुप्र १ २, १ १)। ४ बाहु। ५
संयोजित (वै १ १७७)। ६ न, कान पीर
रहितों का निष्पन्न (अण् २, ३—पञ्च
१२१)।

संयुद्ध नि [संयुद्ध] बड़ा हुआ (सुप्र २
१ २१, पीर)।

संयुध नि [संयुध] संभाव, बना हुआ
‘पञ्चस्य वे संयुधत्कय संयुध’ (बगु
२६)।

सुप्र ४११ किरात १७—स्वप्न १७; धमि
४२१ किरात १४१; म्यात् सङ्)।

संयुध केवो संयुध (मात्र ४ १२ प्राय)।

संयुध षी [संयुध] संयुध (शङ्क ४
१२)।

संयुध नि [संयुध] १ उभार बना हुआ,
संयुध ‘बह् इह न्यारारिरो संयुधतेऽपि
एव संयुधे’ (सुप्र १८२; सुर ६, १२२)।

२ बह् कर किया गया हुआ बह् कर स्थित
‘उप लं वे मारारिवायया सेलं पञ्चस्ये
उत्तु (उत्तु) मगमग्या २ पञ्चस्येवेले संयु-
(उत्तु) मावि होला’ (छाया १ ६—पञ्च
१४७)।

संवेद्य नि [संवेद्य] प्रयुक्त-योग्य (विदे
१ ७)।

संवेद्य नि [संवेद्य] १ मग धावि के कारण
संवेद्य वे होली पञ्च—सोझा (मग)।

२ मग-नैयय संवार वे ज्ञापीयता। ३ मुक्त
का धनमाय मुद्रता (उ ११ सम १२१;
मग माल सुर ८ १११) सम्यत् ११६,
११६, सुप्र ४४१)।

संवेद्य न [संवेद्य] १ ज्ञान (बर्मेस ४४
सुप्र १४६)। २ वि बोध-नयन। षी, या
(उ ४ २—पञ्च २१)।

संवेद्य नि [संवेद्य] संवेद्य-यनन। षी
यां (उ ४ २—पञ्च २१)।

संवेद्य नि [संवेद्य] ऊपर देवी (उ ४
२—पञ्च २१)।

संयुध सङ् [सं + वेष्ट] जातिव करना,
काला (उ ७ २६)।

संयुध सङ् [सं + वेष्ट] बनावट। संवेत्त
(वै ४ २२२, सवि १६)।

संवेद्य सङ् [वे] संवेत्त सङ्ग संयुध
करना। संवेत्त (मग १६, १—पञ्च
७१२)। बह् संवेत्त संवेत्तमाय (उत्तु
मग १६ १)। संवेत्त संवेत्तमाय (मग)
१२१)।

संवेद्य नि [वे] संयुध, संयुधित ‘संयु-
धित मगमि’ (भाषा १ २ १२ मग १६
१—पञ्च ७१२, पञ्च ४१)।

संवेद्य नि [संवेद्य] जातिव (उ ७
२६)।

संमुख नि [संमुख] ? विमुख निर्मल (गुण २७१) । २ न. बपाचार ग्रीव नि क उपवास (संयोग २८) ।

संयुग नि [संयुग] युगल-युग (रत्न) । संसेम नि [संसेम] संकेत से बना हुआ (निष्ठा १२) । २ उक्तो हि नयी निष टीक से विनी बाध बहु पत्नी (अ १ १—यन १४०) कृत्य) । ३ तिष्ठ की बोधन (भाषा २ १ ७ = ४ विष्टोरक भाषा की बोधन (सू २, १ ७४) ।

संसेम नि [संसेमि] ? पत्नी से अलग होना (पण्ड १ ४—यन ७२) ।

संसेय धक् [सं + स्थि] संस्थाय 'वाय' व सं दूरे रहता स्थाय्य संस्थायि (मन्) ।

संसेय धु [संसेय] पत्नी । य नि [य] पत्नी से उत्पन्न (युग १ ७ १) भाषा) ।

संसेय धु [संसेय] सिधन (अ १ १) ।

संसेविय नि [संसेवित] प्रसेवित (गुण २२७) ।

संसेस धु [संसेस] सम्पन्न संयोग (भाषा १ २१, १) ।

संसेसिय नि [संसेसिय] संसेसिता (भाषा २, ११ १) ।

संसोषय न [संसोषय] मुद्रिकरण (वि ४२६) । वैको संसोषण ।

संसाधित नि [संसाधित] धन्यो तद्व युद्ध क्रिया हुआ (गुण १ १४ १८) ।

संसाधय धक् [सं + सोधय] शोध करता । सं-संसाधयिञ् (गुर १४ १८१) ।

संसोषण व [संसोषण] विरेचन बुलाव (भाषा १ १, ४ २) । वैको संसोषण ।

संसोहा की [संसोहा] खेय की (गुण १७) ।

संसाहि नि [संसाहि] योग्योक्तता (गुण ४७) ।

संसाहि य वैको संसाधित (यन) ।

संसे वैको संप (भाट—वि २२) ।

संसेय वैको संपय (सं) ।

संसे नि [संसे] संहार (संके २) ।

संसे नि [संसे] निता हुआ (पण्ड १ ४—यन ७) ।

संहार धक् [सं + ह] ? पण्डित करना । २ विनाश करना । ३ संघट्ट करना, संकेतना, समेटना । ४ से जाना । संहार (यन २११ हे १ १ ४ २२६) । कर्मा-

संहारिजमान (भाषा १ १—यन १७) ।

संहार धु [संहार] युद्धाय, सहाय 'संपाधो' संहारो निमरो' (गाय) ।

संहारय न [संहारय] संहार (यु ७७) ।

संहार वैको संहार = सं + सार्य । सं-संहारिण्य (भाषा १ २—यन १७१) ।

संहार वैको संहार (हे १ २१० बट्) ।

संहारय न [संहारय] बाध बनाये रहना, टिकाना 'बाधसहायणद्वय' (भाषा) ।

संहाय वैको संहाय = सं + साय । नट् संहायध्व (सी) (वि २७२) ।

संहिदि वैको संहिदि (प्राङ् १२) ।

संहिष ध [संहिष] धक् में निमल, एकत्रित होकर (भाषा १ ३ टी—यन ६१) ।

संहिय वैको संहिय = संहित (कृत्य भाट—पहारी २६) ।

संहिया की [संहिया] ? चिकित्सा यात्रि शास्त्र; 'चिकित्सासंहियामो' (स १०) । २ धक्कित क्य से युक्त क्य उपचारण 'धक्कितयुक्तुपचारकता' (संसेय ४२२) ।

संहिय की [संहिय] धक्की तद्व वीचय (संसेय ४) ।

सक वैको सग = सक (पण्ड १ १—यन १४) ।

सकय वैको सकय (यन) ।

सकय न [सकय] तापको क्य एक जलकरण (गिर ३, १) ।

सकय वैको सकय 'वेदमन्त्रेणु निणसकय' संस्थिता विदुषि' (गुण १७) ।

सकय ध [सकय] एक बाट कि सक (१ कर्) कोटी' (गुर ११ ४२) ।

सकय नि [सकय] विज्ञान, ज्ञानकार (गुर १ १४६, १२, १४) ।

सकय वैको सकय = सकय (पण्ड १ ४—यन ७) ।

सकय की [सकिय] प्रसिद्ध हाव (यन ११ गुण १२७ यन ८६) ।

सकय वैको स-कय = सकय ।

सकय धु [सकय] पत्नी (गुण १७ यण्ड १४१) ।

सकय वैको सकय = सक । सकयैको (स ७६२) ।

सकय वैको सकय = सकय ।

सकय धक् [सकय] सकय नमर् हावा । सकय सकय (हे ४ २१ प्राय गहा) ।

प्रति सकय सकयको सकयलो (भाषा १ २११) । सक सकयसिधय सकयिञ् (संसेय ११ गुर १ २१ ४ २२७ स ११४ संयोग ४ गुर १० ८१) ।

सकय धक् [सकय] बाधा प्रति करना । सकय (प्राङ् १२, भाषा १२२) ।

सकय धक् [सकय] यति करना, जाना । सकय (वि १ २) ।

सकय न [सकय] धक् (हे १ १४) ।

सकय नि [सकय] समर्थ, शक्ति-पुष्ट 'को सको केयसकिय' (विने १०२ हे २, २) ।

सकय वैको सकय = सक ।

सकय धु [सकय] ? सौम्य नामक प्रयम देवको क्य इन्द्र (अ २, १—यन ७४) ।

उत्ता गुण २६६) । २ कोटी की इन्द्र देव-पति (गुण) । ३ एक विद्यावरण (यन १२ ८२) । ४ धक्-विशेष (विने) । गुरु धु [सकय] इन्द्रवि (विने ४४) । धक् धु [सकय] सकय का एक जल-वर्षण (अ १०—यन ४८२) । सार न [सकय] एक विद्यावरण (सक) । संहार (सी) न [सकय] कोटी-विशेष (विने ४४) ।

विद्या न [सकय] विद्या-विशेष (स ४७७ ४ ११) ।

सकय धु [सकय] ? सक देव (गाम) । २ वि. कोय सक का सक (विने २१६४) ।

सकय धक् [सकय] सक देव (गाम) । २ वि. कोय सक का सक (विने २१६४) ।

सकय धक् [सकय] सक देव (गाम) । २ वि. कोय सक का सक (विने २१६४) ।

सकय धक् [सकय] सक देव (गाम) । २ वि. कोय सक का सक (विने २१६४) ।

सकय धक् [सकय] सक देव (गाम) । २ वि. कोय सक का सक (विने २१६४) ।

सकय धक् [सकय] सक देव (गाम) । २ वि. कोय सक का सक (विने २१६४) ।

सकय धक् [सकय] सक देव (गाम) । २ वि. कोय सक का सक (विने २१६४) ।

सकय धक् [सकय] सक देव (गाम) । २ वि. कोय सक का सक (विने २१६४) ।

सगडिभिम रेवो सगडिभिम = स्वडिभिम ।
सगडाइ पुं [राफ्टाड] राडा नय का
पुण्डिड मीरी धीर धरि लुनन का पिठा
(कुप ४४१) ।

सगडिया की [राफ्टिड] कोटी यारी
(का. किता १ १—पत्र ८—छाया १
१—पत्र ७४) ।

सगडी की [राफ्टी] यारी (छाया १ ७—
पत्र ११८) ।

सगण रेवो सगण = सगण ।

सगम रेवो सगम (कुप ४ १) ।

सगम न [रे] बडा बिघाड (रे ८ १) ।

सगार पुं [सगार] एक बकनती राडा (सम
८२; उत १७ ३३) ।

सगड रेवो सगड = सगड (छाया १
१६—पत्र २११; मरु, पत्र १ ११) मुर
१ १११; पत्र २११; लिखा १७) ।

सगसग मरु [सगसगाय] 'सग-सग'
प्राधान्य कला । बड सगसगत (पत्रम
४२, ११) ।

सगार रेवो सगार = सगार, सागर ।

सगार रेवो सगार = सगार ।

सगसस न [सकास] पास निन्द, समीप
(धीर मुता ४६२; ४८८ महा) ।

सगुण रेवो सगुण = सगुण ।

सगुण रेवो सगुण (स्वड १ ४—पत्र
७८) ।

सगुण वि [सगोत्र] समान पोटनभा
एक्योनीन (कम्य) ।

सगड न [रे] निन्द, समीप (रे ८ १) ।

सगोत्र रेवो सगुण (कुप २१७) ।

सगा पुं [सगत] रेवो का पावक-स्थान
(छाया १ २—पत्र १ ९, मरु, मुता
२११); रेवो रेवो सग (पु २८) ।
वड पुं [वड] कनड (रे ११ ११) ।
सामि पुं [सामिम] सग (उत २१४
६) । बड की [बड] रेवो रेवो
(उत ७२ = ६) ।

सगा पुं [सगा] १ मुक्ति मोड धर (धीर) ।
२ छोट, रकम (रेव) ।

सगा रेवो सगा = सगा ।

सगा रेवो सगा = स्वक (उत २ २१;
उत) ।

सगाड रेवो सगाड = सगाड ।

सगाड वि [रे] मुक्ति-प्राप्त (रे ८
४ ६) ।

सगाड रेवो सगाड = सगाड ।

सगीय वि [सगीय] स्वर्ग-सम्बन्धी (विदे
१८) ।

सगुण रेवो सगुण (उत १ ११ ६) ।

सगोफस पुं [सगोफस] रेव रेवता
(पत्र १) ।

सगप एक [कय] कला । सगप (बड) ।

सगप वि [सगप] प्रत्यक्षीय (मुप १ १
२, ११; विदे १२०८) ।

सपिण रेवो सपिण = सपिण ।

सपकसु } रेवो स-पकसु = स-पकसु ।
सपकसु }

सपिण रेवो सपिण = सपिण ।

सपिण रेवो सपिण = सपिण ।

सपिण रेवो सपिण = सपिण ।

सपी रेवो सपी = सपी (बर्गि ११; मरु—
रुड ६७) । वर पुं [वर] सग (विदि
४२) ।

सपयण रेवो सपयण = सपयण ।

सपय न [सत्य] १ पयार् भावत समुप-
कम (उत १०—पत्र ४४६, मुता ४४६
२ ४—पत्र १४८, स्वण २२, मरु १४
१७७) । २ सपय भावत । ३ सपय मुप ।

४ विद्यात (रे २ ११) । ५ वि. पयार्,
सप्या वास्तविक-सप्यपरकमे (उत
१० ४६; या १२, अ ४ १—पत्र १६१;
मुता) । ६ पुं सपय भावत (याका उत
१ २) । ७ विद्यात केन विद्यात (याका) ।

८ धरीपय का धरीय धरुत (सम २१) ।
९ एक बरिष् पुं (उत २११) । वर
न [पुर] धरत का एक प्राचीन नगर,
जो धारक 'सापोर' थाप से माराज्ड में
प्रसिद्ध है (ध ७, सपय ७) । डरी की
[पु] वरी धर (पत्र) । 'जिमि, जिमि
पुं [जिमि] मरवाय मरिष्पिक के पाड
पेडा से मुक्ति पनेवला एक मुपि यो रजा
समुपिवय का पुन या (संग संग २४) ।
पयार्पय न [पयार्] एता पूर्व-संग (सम

२१) । 'मामा की [मामा] कोडपुण की
एक फली (संग १४) । 'घाड वि [याविन]
सपय-कला (पत्रम ११ ११) । संच वि
[सपय] सपय प्रविद्याताता प्रविद्या-नगरिक
(उत ४ १११; मुता २८१) । सिरी की
[श्री] पयार् धरे की मरिष्पय पाविष्प
(विचार २१४) । सेण पुं [सेन] रेवत
वर्ग में होवेवला एक विनेव (सम १४४) ।
हामा रेवो मामा (वि ४४) । वार
रेवो वार (पाचा १ ८ १४ १
८ ७ ३) ।

सचड पुं [सत्यकि] १ प्राप्ती नाम में
बाएवला दीर्घकर होवेवला एक सामी-मुन
(अ १—पत्र ४४७; सम १४४, पत्र ४१) ।
२ विपय-मामत एक विचार (उत उर
७ १ ६) । ३ धीरपुण का संवन्धी एक
मरिष्प (धमि ४१) । सुप पुं [सुव]
ग्याण धी में मरिष्पय सड पुण (विचार
४०१) ।

सचकर वि [सत्यकर] सपय सपयव कने-
नासा, वेन-वेन की सचारी के निप रिता
वाता बगाना 'पहिमी संवययारे धरिष्पकाव
न सिरीय' (पर्मि १४, मरु ११;
पय ४४) ।

सचक सड [सड] रेवता । सचकड (रे ४
१०१ पत्र; सड) । कर्म, सचकडवड
(कुप १८) ।

सचय सड [सत्तापय] सपय सचयव
कला । सचयवड (मुता २६२) । कर्म,
'मरिष्पय सचयवड' वडुतरी ठेण रमिष्प
(मुत ८२) ।

सचयन न [सचयन] धरलोपन निरीपण
(मुता मुता २२६) ।

सचयय वि [सचय] सड (संग २४) ।

सचयिभ वि [सच] रेवता हामा, विनोविभ
(का २१४; ८ ६ मुर ४ २२४; पाय
मरा) ।

सचयिभ वि [च] मरिष्पय इड (रे ८
१७; मरि) ।

सचा की [सत्य] १ सपय वचन (पय
११—पत्र १७१) । २ धीरपुण की एक

बली इत्यममा (गुण २५७) । १ इन्द्राणी
(बज्रमय इत्यन-वर्णित) । मोक्ष वि
[मुखा] निष्कामा सत्य वे विना ह्युपा
युक्त वचन कथानेसाधित कथार (धर्म १) ।
संविष्ट वेधो संविष्ट = संविष्ट ।

संविष्टय वि [वे] सत्य] कथार कथार
(वे ५, १५) ।

संविष्टय दु [वे] संविष्टय] वाय-विष्टेय
(वचन १ २ १२३) । १ वेधो वक्ष्योक्त ।

संविष्टय वि [वे] पठित निर्मित (वे ५
१८) ।

संविष्ट वि [संविष्ट] पठित निर्मित (गुणा १) ।
संविष्टय वि [संविष्टय] १ स्वाधीन, स्व-वश
(अन १३६ टी। पुर १५ ५३) । २ न

संविष्टयुवार (छाया १) —न १३२ ।
दीप धमि ५१ प्रामु १७) । ३ गमि वि

[गमि] १ इन्द्रायुवार पठित कथनेसा
स्तेरै । की जी (गुणा २३३) । वारि

वारि वि [वारि] स्वच्छन्दे इन्द्रायु
वार विष्टय कथनेसा स्तेरै । की जी

(अ ११ या १६ नम १ १) ।

संविष्टय एक [इ] देवता (संविष्ट ११) ।
संविष्टय वि [वे] संविष्टय] पठित, पठित,
गुण १ १५ ५ ५३ । २ ३३

३५ । १५ ५ २२ । पुर १ २५१ । वरि
३७) ।

संविष्टय वि [संविष्टय] १ सत्य कथ-
नाया गुण (वचन, गुण २३) । २ पठित

वायिवाया (गुणा) । ३ सुवर्ण इत्यममा ।
४ वायि-गुण । ५ वायि-गुण (वे १ २५६) ।

संविष्टय वि [संविष्टय] मिश्री बक्षी सुवर्ण
हो वह २ बक्षी वाया । ३ सत्य वाया

वाया गुण सत्य (वे १ १५६) ।

संविष्टा की [संविष्टय] वक्ष्यविष्टेय
(गुण २ १ १५) ।

संविष्ट देवा संविष्ट = संविष्ट ।
संविष्ट देवा संविष्ट (पुर १२, २१) ।

संविष्ट देवा संविष्ट (विष्ट) ।
संविष्ट देवा संविष्ट = संविष्टेय ।

संविष्टा वि [संविष्ट] १ वक्ष्य विष्ट
वायिवाया । २ गुण देवता गुण-वाया
(वि ५११। वचन १५। वचन २ १५ २) ।

संविष्टय वेधो संविष्टय = संविष्टय ।

संविष्टय [संविष्ट] १ वायिवाया ।
२ वक्ष्य वायिवाया । वक्ष्य (अन २५,

२) संविष्ट (छाया १ ५—पठ १५८) ।
वक्ष्य संविष्टय (गुण १ ७ २७ वक्ष्य

२, १) वक्ष्य १५१ वक्ष्य २७) । वक्ष्य
संविष्टय (पुर २ १—पठ १५६) ।

संविष्टय [संविष्ट] १ वक्ष्य देवा । २
वक्ष्य वक्ष्य देवा । वक्ष्य, वक्ष्येति

(गुणा छाया १ ५—पठ १५२) । वक्ष्य
वक्ष्येति (वक्ष्य) । वक्ष्य संविष्टय

(वक्ष्य) । वक्ष्य संविष्टय वक्ष्येति (अ ५५-
म्या) । वक्ष्य संविष्टय वक्ष्येति (अन

५ वक्ष्य) । वक्ष्य वक्ष्य वक्ष्येति
(वक्ष्य) ।

संविष्टय [संविष्ट] वक्ष्य-विष्टेय (छाया १ १—
वक्ष्य २५, विष्टे २५५२; वक्ष्य १११ गुणा) ।

संविष्टय [संविष्ट] वक्ष्य-विष्टेय (गुणा) ।
संविष्टय [संविष्ट] वक्ष्य, वक्ष्य (छाया १

५—पठ १५१ गुणा १२२ १६७ वक्ष्य
५५ विष्ट) ।

संविष्टय [संविष्ट] वक्ष्य वक्ष्येति वक्ष्य
संविष्टय [संविष्टय] वक्ष्य वक्ष्येति वक्ष्येति

(अ १ ५ गुण ५, ११) वक्ष्य १६७ वक्ष्य
वक्ष्य) ।

संविष्टय दु [संविष्टय] वक्ष्य वक्ष्येति वक्ष्य
वक्ष्य (वक्ष्य १२) ।

संविष्ट देवा संविष्टय = संविष्टय ।
संविष्ट देवा संविष्ट (अन) ।

संविष्टय वि [संविष्ट] वक्ष्य देवा वक्ष्य
वक्ष्य देवा (वक्ष्य) वक्ष्य देवा ।

संविष्टय वि [संविष्ट] वक्ष्य देवा वक्ष्य
(वे १ १३५) ।

संविष्टय दु [वे] १ वक्ष्य वक्ष्येति । २ वक्ष्य,
वक्ष्येति । ३ वि वक्ष्य वक्ष्येति वक्ष्य देवा ।

४ वक्ष्य, वक्ष्य (वे ५७) ।
संविष्टय की [संविष्ट] वक्ष्य-विष्टेय वक्ष्येति

वक्ष्य वक्ष्येति वक्ष्येति वक्ष्येति
(छाया १ १—वक्ष्य १ ५) ।

संविष्टय [संविष्ट] वक्ष्य वक्ष्येति वक्ष्येति
संविष्टय [संविष्ट] वक्ष्य वक्ष्येति वक्ष्येति

संविष्टय वक्ष्य [संविष्ट + वक्ष्य] वक्ष्य वक्ष्येति
वक्ष्य देवा । वक्ष्येति (वा १५) ।

संविष्ट देवा संविष्टय = वक्ष्य (गुणा १३७) ।
संविष्टय वि [वे] वक्ष्य वक्ष्य, वक्ष्य (वे

५ १) ।

संविष्टय [संविष्ट] १ वक्ष्य वक्ष्येति वक्ष्य
वक्ष्येति । २ वक्ष्य वक्ष्येति वक्ष्येति वक्ष्येति

वक्ष्येति वक्ष्येति वक्ष्येति वक्ष्येति वक्ष्येति
(गुण ५ २६; वा २५) । ३ वक्ष्य वक्ष्येति

वक्ष्येति वक्ष्येति वक्ष्येति वक्ष्येति वक्ष्येति
(वक्ष्य १५ १३) । ४ वक्ष्य वक्ष्येति वक्ष्येति

(विष्टे १ ७७) । ५ वक्ष्य वक्ष्येति वक्ष्येति
वक्ष्येति वक्ष्येति (वे २ २६) ।

संविष्टय दु [संविष्ट] १ वक्ष्य-विष्टेय (अ १७६) ।
२ वि वक्ष्य-वक्ष्येति (वे २ २६ १२५) ।

संविष्टय दु [वे] वक्ष्येति (अन) ।
संविष्टय की [वे] वक्ष्येति वक्ष्येति (अन) ।

संविष्टय वक्ष्येति [वे] वक्ष्येति वक्ष्येति
वक्ष्येति वक्ष्येति (गुण २, १३) ।

संविष्टय वि [संविष्टय] वक्ष्येति वक्ष्येति
वक्ष्येति वक्ष्येति (वक्ष्य २, १३) ।

संविष्टय वक्ष्य [वे] वक्ष्य वक्ष्येति, वक्ष्येति
वक्ष्येति वक्ष्येति (गुण २, १३) ।

संविष्टय व [संविष्टय] वक्ष्य वक्ष्येति (वे १ १५)
गुणा) ।

संविष्टय वि [संविष्टय] १ वक्ष्येति वक्ष्येति
वक्ष्येति वक्ष्येति वक्ष्येति वक्ष्येति वक्ष्येति

वक्ष्येति वक्ष्येति वक्ष्येति वक्ष्येति वक्ष्येति
वक्ष्येति (अ १—पठ ५७२) । २ न

वक्ष्येति, वक्ष्येति वक्ष्येति वक्ष्येति (अन २५५,
वक्ष्येति १ ७ टी) ।

संविष्टय दु [संविष्टय] वक्ष्येति वक्ष्येति,
वक्ष्येति वक्ष्येति, वक्ष्येति वक्ष्येति (वक्ष्येति २ २६, वक्ष्येति वक्ष्येति २६) ।

संविष्टय वि [संविष्टय] वक्ष्येति वक्ष्येति वक्ष्येति
वक्ष्येति वक्ष्येति वक्ष्येति वक्ष्येति वक्ष्येति

वक्ष्येति वक्ष्येति वक्ष्येति वक्ष्येति वक्ष्येति
(अन १३ १७) ।

संविष्टय दु [वे] वक्ष्येति वक्ष्येति (अन १७६,
१७७) वक्ष्येति १२५) ।

संविष्टय की [वे] वक्ष्येति वक्ष्येति (विष्ट
११५) वक्ष्येति ७) ।
संविष्टय देवा संविष्टय (अन) ।

संविदा केो संविदा (हि १ १ १) कुमा।
संविदावाय पु [संविदावाय] कीर्ति के भरी
हुई पीछे कल-विरोध (अ २ ४—पत्र
८५)।

संविदा पु [संविदा] १ प्रेम शक्ति (प्रति २०
कुमा)। २ वृत्त लक्ष्य धारि किन्तु रत्न। ३
चिकित्सा, चिकित्सा (प्रति १ २ २)।
संविदा केो संविदा (वि ११ ४२)।
संविदा न [संविदावाय] मन्त्र धारि के
होकराव बाधा वृत्त धारि (प्रति ११)।

संविदावाय वि [वि] वरिदावाय (वि ८ १५)।
संविदावि वि [वि] १ विविदा। २ न.
प्राप्ति मन्त्र के लिए समीप-मन्त्र (वि ८
२)।

संविदावि वि [वि] पाठ कीका (वि ८ २)।
संविदा केो संविदा (उप)।

संविदावि वि [वि] १ संविदा। २ धारि,
गाथा हुआ। ३ धुनीत धनुष-धनुष (वि ८
४५)।

संविदा मन्त्र केो संविदावि (वि ८, ४५ टो)।

संविदावृत्त पु [वि] पत्र-वेद्य (वि १)।

संविदा वि [संविदा] १ नक्षत्र चिकित्सा (कमा
पत्र)। २ धोय बाधक (वि ८ ८—
पत्र ४३)। ३ न बोधा (वि ८, ४३, पत्र)।

४ पु वृद्ध-विरोध (पत्र १—पत्र ११)।
५ वरा धी [वराध] वीर्य की रक्षा
(पत्र ११ १—पत्र ४९६)। मन्त्र पु
[संविदा] मन्त्री की एक धारि (वि ८
८—पत्र ४३ पत्र १—पत्र ४४)।

संविदा धी [संविदा] धारि वृत्त
वस्तुनिष्ठता का एक भाग (१३)।

संविदा वि [संविदा] १ धोय, बाधक (कुमा)।
२ न, देवता कर्त। ३ ध्याय। ४
धन-वर्धन-विरोध (हि २ ४२)। देवी सुद्ध
गुणधु।

संविदा धी [वि] दृष्ट (वि ८ ६)।

संविदा सव = सव (वि १)। कल पु
[संविदा] धारि (वरा)। गयी धी [संविदा]
वस्तुनिष्ठता (पत्र १ १—पत्र ४३ वरा)।

संविदा धी [वि] एक वस्तु (अ २,
१—पत्र १२१)। संविदा धी [वि] धारि

कल-विरोध (वि ११)। संविदा पु
[संविदा] धारि वस्तु (वरा)। धारि (वि
२१)। वस्तु पु [वस्तु] धारि-विरोध
(पत्र १—पत्र २२)। धारि धी
[वस्तु] धारि-विरोध कल की एक धारि
(पत्र १—पत्र ४३)।

संविदा केो संविदा = संविदा (वि)। १ वि
[संविदा] संविदा, १० न वस्तुनिष्ठता
३ वस्तुनिष्ठता संविदा-विरोध (वि १
१२५ कमा २, ११ १६)। संविदा न
[संविदा] एक वस्तु (कमा २, ११)।

संविदा केो संविदा = संविदा (वि)।

संविदा केो संविदा = संविदा (वि)।

संविदा केो संविदा = संविदा (वि)।

संविदा केो संविदा = संविदा (वि)।

संविदा केो संविदा = संविदा (वि)।

संविदा केो संविदा = संविदा (वि)।

संविदा केो संविदा = संविदा (वि)।

संविदा केो संविदा = संविदा (वि)।

संविदा केो संविदा = संविदा (वि)।

संविदा केो संविदा = संविदा (वि)।

संविदा केो संविदा = संविदा (वि)।

संविदा केो संविदा = संविदा (वि)।

संविदा केो संविदा = संविदा (वि)।

संविदा केो संविदा = संविदा (वि)।

संविदा केो संविदा = संविदा (वि)।

संविदा केो संविदा = संविदा (वि)।

संविदा केो संविदा = संविदा (वि)।

संविदा केो संविदा = संविदा (वि)।

संविदा केो संविदा = संविदा (वि)।

संविदा केो संविदा = संविदा (वि)।

संविदा केो संविदा = संविदा (वि)।

संविदा केो संविदा = संविदा (वि)।

संविदा केो संविदा = संविदा (वि)।

संविदा केो संविदा = संविदा (वि)।

संविदा केो संविदा = संविदा (वि)।

संविदा केो संविदा = संविदा (वि)।

संविदा केो संविदा = संविदा (वि)।

संविदा केो संविदा = संविदा (वि)।

संविदा (वि १११ कमा ३१)। १
विदा-वस्तु (वरी १ २)। १ वस्तु-
वाय विदा का वस्तु (वरी २०)।

संविदा वि [संविदा] धारि वस्तु-वाय, धारि
(वि १ १—पत्र २ कमा ३१ की ३४
४१)। विदा की की [विदा]
विदा-वस्तु विदा-वस्तु विदा-वस्तु

विदा-वस्तु विदा-वस्तु विदा-वस्तु
विदा-वस्तु विदा-वस्तु विदा-वस्तु
विदा-वस्तु विदा-वस्तु विदा-वस्तु

विदा-वस्तु विदा-वस्तु विदा-वस्तु
विदा-वस्तु विदा-वस्तु विदा-वस्तु
विदा-वस्तु विदा-वस्तु विदा-वस्तु

विदा-वस्तु विदा-वस्तु विदा-वस्तु
विदा-वस्तु विदा-वस्तु विदा-वस्तु
विदा-वस्तु विदा-वस्तु विदा-वस्तु

विदा-वस्तु विदा-वस्तु विदा-वस्तु
विदा-वस्तु विदा-वस्तु विदा-वस्तु
विदा-वस्तु विदा-वस्तु विदा-वस्तु

विदा-वस्तु विदा-वस्तु विदा-वस्तु
विदा-वस्तु विदा-वस्तु विदा-वस्तु
विदा-वस्तु विदा-वस्तु विदा-वस्तु

विदा-वस्तु विदा-वस्तु विदा-वस्तु
विदा-वस्तु विदा-वस्तु विदा-वस्तु
विदा-वस्तु विदा-वस्तु विदा-वस्तु

विदा-वस्तु विदा-वस्तु विदा-वस्तु
विदा-वस्तु विदा-वस्तु विदा-वस्तु
विदा-वस्तु विदा-वस्तु विदा-वस्तु

विदा-वस्तु विदा-वस्तु विदा-वस्तु
विदा-वस्तु विदा-वस्तु विदा-वस्तु
विदा-वस्तु विदा-वस्तु विदा-वस्तु

विदा-वस्तु विदा-वस्तु विदा-वस्तु
विदा-वस्तु विदा-वस्तु विदा-वस्तु
विदा-वस्तु विदा-वस्तु विदा-वस्तु

विदा-वस्तु विदा-वस्तु विदा-वस्तु
विदा-वस्तु विदा-वस्तु विदा-वस्तु
विदा-वस्तु विदा-वस्तु विदा-वस्तु

विदा-वस्तु विदा-वस्तु विदा-वस्तु
विदा-वस्तु विदा-वस्तु विदा-वस्तु
विदा-वस्तु विदा-वस्तु विदा-वस्तु

विदा-वस्तु विदा-वस्तु विदा-वस्तु
विदा-वस्तु विदा-वस्तु विदा-वस्तु
विदा-वस्तु विदा-वस्तु विदा-वस्तु

समनुबन्ध वि [समनुबन्ध] संबन्ध, संजात
(पद्य १ १) ।

समनुवासक [समनु+वासय] १
शामय-मन करना । २ सिद्ध करना । ३
परिपक्व करना 'ध्यायते धर्मं समनुवासे-
नामि' (भाषा २ १ ३, १ २ ४ ४-
१ ३, ४ २ १ १ १) ।

समनुमद वि [समनु+शिष्ट] अनुमत्त अनुमत
(भाषा २ १ ४) ।

समनुमासक [समनु+आसय]
सम्बन्धीय शब्द, सम्बन्धी तर्क विधान ।
समनुवर्तमानि (गुण २ १४ १) ।

समनुसिद्ध वि [समनु+शिष्ट] सम्बन्धी तर्क
प्रियत (गुण) । देखो समनुमद (भाषा २
१ ४) ।

समनुश्रुति [समनु+श्रु] अनुमन
करना । समनुश्रोत (गद्य १) ।

समनुवागय वि [समनु+वाग] १ सम्बन्धित
कथित 'सतोऽनुवागमन्वागमन्वा' (पद्य १
१२) । २ वार्ता (गद्य) ।

समनुवाहक पुं [समनु+वाह] समानवन
(गद्य) ।

समनुवय देखो समनुवय (गद्य) ।

समनुवय देखो समनुवय (गद्य) ।

समनुवय देखो समनुवय (गद्य) ।

समनुवय देखो समनुवय (गद्य) ।

समनुवय देखो समनुवय (गद्य) ।

समनुवय देखो समनुवय (गद्य) ।

समनुवय देखो समनुवय (गद्य) ।

समनुवय देखो समनुवय (गद्य) ।

समनुवय देखो समनुवय (गद्य) ।

समनुवय देखो समनुवय (गद्य) ।

'अथो वि समनुवय
सद्वेष्टा सरोवराणु हेमन्तो ।

वर्षिणि शब्द कण्ठे
संयोगो वि पद्यार्थ'

(पा ७१) ।

समन्वय देखो समन्वय = समन्वय (वि ४ २८
गुण १ २८१; १९, २३) ।

समन्वय वि [समन्वय] सन्ध, सन्धिमन्त्र (पाद्य
अ ४ ४—पत्र २८३; प्राय ३३ १८२,
पौन) ।

समन्वय वि [समन्वय] प्रायिक 'वाङ्मनवावा
(पुत्र ३३१) ।

समन्वय वि [समन्वय] १ पूर्ण गुण
रिया हुआ (गुण ११३, गुण २९९) । २
गुण विना हुआ (गुण १९ २३) । ३

प्रसारित कथित किया हुआ (पद्य १२१) ।
समन्वय वि [समन्वय] पत्रित
(वि ३५, ७७) ।

समन्वय देखो समन्वय (गद्य ४२९) ।

समन्वय देखो समन्वय (गद्य ४२९) ।

समन्वय देखो समन्वय (गद्य ४२९) ।

समन्वय देखो समन्वय (गद्य ४२९) ।

समन्वय देखो समन्वय (गद्य ४२९) ।

समन्वय देखो समन्वय (गद्य ४२९) ।

समन्वय देखो समन्वय (गद्य ४२९) ।

समन्वय देखो समन्वय (गद्य ४२९) ।

समन्वय देखो समन्वय (गद्य ४२९) ।

समन्वय देखो समन्वय (गद्य ४२९) ।

समन्वय देखो समन्वय (गद्य ४२९) ।

समन्वय देखो समन्वय (गद्य ४२९) ।

समन्वय वि [समन्वय] विना हुआ (पद्य;
कण्ठ) ।

समन्वय सङ्ग [समन्वय + सङ्ग] सम्बन्ध
करना । समन्वय (गद्य ७७) ।

समन्वय वि [समन्वय] सम्बन्ध
धरित (वि १९, २३) ।

समन्वय पुं [समन्वय] निरुद्ध, पाद्य
(पद्य ३१ १७) ।

समन्वय वि [वि] विना हुआ, बर्ण हुआ
(पद्य ८९ ४७) ।

समन्वय वि [समन्वय] सम्बन्ध
धरित हुआ (गुण ४ ४ १४) ।

समन्वय वि [समन्वय] १ विना
करना । २ प्रतिज्ञा-सिद्धि करना । सम्बन्ध-
रिया सम्बन्धित (पाद्य) । ३ सङ्ग-
समन्वय (पाद्य) ।

समन्वय सङ्ग [समन्वय + सङ्ग] १ सङ्ग
करना । सम्बन्धित (पद्य ३२ १) ।

समन्वय सङ्ग [समन्वय + सङ्ग] २ सङ्ग
करना । सम्बन्धित सम्बन्धित (गद्य) ।

समन्वय सङ्ग [समन्वय + सङ्ग] ३ सम्बन्धित
करना । सङ्ग, सम्बन्धित (पद्य २१) ।

समन्वय वि [समन्वय] सम्बन्धित
गुण (गद्य ३४) ।

समन्वय पुं [समन्वय] सम्बन्धित (गद्य
४—पद्य ३२) ।

समन्वय सङ्ग [समन्वय + सङ्ग] ४ सम्बन्धित
करना । सम्बन्धित (गद्य ३१—
पद्य ७७) । ५ सम्बन्धित (गद्य ३४—
पद्य ३२) ।

समन्वय सङ्ग [समन्वय + सङ्ग] ६ सम्बन्धित
करना । सम्बन्धित (गद्य ३१—
पद्य ७७) । ७ सम्बन्धित (गद्य ३४—
पद्य ३२) ।

समन्वय सङ्ग [समन्वय + सङ्ग] ८ सम्बन्धित
करना । सम्बन्धित (गद्य ३१—
पद्य ७७) । ९ सम्बन्धित (गद्य ३४—
पद्य ३२) ।

समन्वय सङ्ग [समन्वय + सङ्ग] १० सम्बन्धित
करना । सम्बन्धित (गद्य ३१—
पद्य ७७) । ११ सम्बन्धित (गद्य ३४—
पद्य ३२) ।

समन्वय सङ्ग [समन्वय + सङ्ग] १२ सम्बन्धित
करना । सम्बन्धित (गद्य ३१—
पद्य ७७) । १३ सम्बन्धित (गद्य ३४—
पद्य ३२) ।

समन्वय सङ्ग [समन्वय + सङ्ग] १४ सम्बन्धित
करना । सम्बन्धित (गद्य ३१—
पद्य ७७) । १५ सम्बन्धित (गद्य ३४—
पद्य ३२) ।

समन्वय सङ्ग [समन्वय + सङ्ग] १६ सम्बन्धित
करना । सम्बन्धित (गद्य ३१—
पद्य ७७) । १७ सम्बन्धित (गद्य ३४—
पद्य ३२) ।

समन्वय सङ्ग [समन्वय + सङ्ग] १८ सम्बन्धित
करना । सम्बन्धित (गद्य ३१—
पद्य ७७) । १९ सम्बन्धित (गद्य ३४—
पद्य ३२) ।

सुपति २४। कुपय वं २२)। १ पदार्थ, चीज
बस्तु (सम १ टी घट ११४)। १ संकेत,
प्रमाण (सुपति २४, निघ १ प्राप वे १
१६)। १० समीचीन परिणति सुन्दर परि-
णाम। ११ व्यापार, रिवाज। १२ एकत्राप्य
(सुपति २६)। १ सामायिक संयम-विशेष
(विशे १४२१)। *कलेष्ट, क्लेश न [क्षेत्र]
कर्मोपस्थित भूमि मनुष्य-सोम, मनुष्य-क्षेत्र
(अप्य सम १८)। स्व, ज्ञान न कि [क्षेत्र]
समय का वाक्कार (बल १६ भा ४ २,
वि २०६)।

समय रेखो समय = सम-र।

समय } घ [समकम्प] १ पुनःपुनः एक
समय } घाय (अप २१६ टी विशे ११६१,
११६१)। सुर १ ४ महा मरुत ११ १)।
२ छद्म, साध (भा ११)।

समया रेखो सम-या।

समया घ [समया] पत्य, कज्योक्त (गुप्ता
१००)।

समर एक [सम्] गार करना। १ समरणीय
(अप २० गार एक १) समरियम्भ
(अप्य २८)।

समर रेखो सवर (वि १ २२८) वर । की,
टी (कुमा)।

समर दुन [समर] १ दुन कहाँ (वि ११,
४० जय ७२० टी, कुमा)। २ एक-विशेष
(विशे)। १ लोकार्णवा (जय अप्य
१ भा २६)। १ इक्षु वृ [दिल] वषणो-
रेष्ट का एक राजा (अ २)।

समर वि [समार] कामरैव-संक्रान्ती कायरेव
का (मन्त्रिण धारि) (अप ४४४)।

समरसुपु वि [समर्तु] लम्ब-कटो (अप
११)।

समरय न [समरय] लुपति गार (वर्धन २
प्य १६)।

समरसहस्र वृ [वि] बमल उन्नमला (वि
१, २२)।

समरसहस्र वि [वि] पिट, पिता हुप्य (अ २)।

समरी रेखो समर = उन्नर।

समरेपु रेखो समरसुपु (अ १—११ ४४४)।

समलंकर एक [समलम्प + क] विभूषित
करना। समलंकर (भाषा २, १२ २)।
संज्ञ समलंकरेणा (भाषा २ १२, २)।

समलंकार एक [समलम्प + क्यरय्]
विभूषित करना विभूषण-कृता। सम-
लंकर (वीप)। संज्ञ. समलंकरेणा
(वीप)।

समलंकर (घा) वि [समलंकर] विनिवृ-
त्ति (अभि)।

समलंकर घक [समा + की] १ संज्ञ
होना। २ कीन होना। ३ एक. प्राप्य
करना। समलंकर (भाषा ४७)। वृद्ध
समलंकर (वि १२ १)।

समलंकीय वि [समलंकीय] वक्षी तरह कीन
(वीप)।

समलंकीय वि [समलंकीय] वक्षीय (गुप्ता
२२)।

समलंकीय न [समलंकीय] सम्यक् प्रवर्तित
(अप्य १४०)।

समलंकीय की [समलंकीय] ऊपर रेखो
'की' विनि सुलीयें यहासमयगुहै इसे
'वर' (अप्य १४१)।

समलंकीय रेखो सम-लंकीय = सम-वर्तित।

समलंकीय रेखो सम-दे।

समलंकीय रेखा समोसर = सम-व + घ
(प्राप्य)।

समलंकीय रेखो समोसर (सुपति १११)।

समलंकीय रेखो समोसरिअ = समलंकीय
(वर्धन १)।

समलंकीय वि [समलंकीय] जानने योग्य
आत्म (भा ४)।

समलंकीय वि [समलंकीय] समलंकीय संक्रान्ति
का समलंकीय-संक्रान्ती (विशे १२२६, वर्धन
४८०)।

समलंकीय वृ [समलंकीय] १ संक्रान्ति-विशेष
गुप्त-गुप्ती धारि का संक्रान्ति (विशे २१००)।
२ संक्रान्ति (अप १६, २४) वर्धन ४८१
विशे ११६)। ३ वृद्ध, सुपुष्प (गुप्ता २
१ १२ वीप ४ ७) अणु २० टी विशे
२) धार २) विशे १२२१ टी)। ४ एक
करना 'का' टी संक्रान्ति-वर्धन (विशे

२१४१)। ५ वैन धन-धन विशेष वीप
धन-धन (अप १)।

समलंकीय घक [समलंकीय] १ शान्त होना।
२ संज्ञ होना। समलंकीय (टी) (मोह ६२)
समलंकीय (विशे २१ १)।

समलंकीय (टी) वि [समलंकीय] समलंकीय एक-
विशे (मोह ७०)।

समलंकीय घक [समलंकीय] 'सम' 'सम'
प्राप्य करना। वृद्ध. समलंकीय (अभि)।

समलंकीय रेखो सम-लंकीय।

समलंकीय रेखो मसप्य 'समलंकीय' सुपद-
रेखो वक्षि वं वसु' (गुप्ता ४ ८)।

समलंकीय वि [वि] १ वरुण गुप्त्य। २ निर्धर
(वि ८ २)। ३ न सप्रां (वि १ ८)।

समलंकीय वि [वि] १ सप्रां, वरुण
समलंकीय } (गुप्ता ७ वरुण २४) वसु
वे ८ ११ सुर १ ८ वरुण १२ १२४
विशे ४२) समलंकीय १४२) वरुण ११४)।

समलंकीय घक [समा + मि] प्राप्य करना।
समलंकीय (वि ४०१)। संज्ञ. समलंकीय
(वि ४०१)।

समलंकीय घक [समा + मस] गार-
न प्राप्य करना, वरुण मसप्य। समलं-
कीय (टी) (वि ४०१)। वरुण समलंकीय
(टी) (गार एक ११२)।

समलंकीय वि [टी] रेखो समलंकीय (अप—
मृच्छ २२८)।

समलंकीय की [समलंकीय] वीप का प्राप्य
वोने के लिए विना जाटा वीप-नरुण या
पद धारि (विशे ११६) वरुण २०) गुप्ता
११६)।

समलंकीय घक [समा + भासय्]
वर्धन करना, विनासा देना। समलंकीय-
(टी) (गार)। वरुण समलंकीय (अभि
२२२)। वरुण समलंकीय (टी) (गार—
मृच्छ ८१)।

समलंकीय वृ [समा + भास] गार-वर्धन (विशे
१२)।

समलंकीय घक [समा + भास] ऊपर रेखो
(वि ४०१)।

समलंकीय वि [समा + भास] प्राप्य में विना
धारि (अ १११) वरुण ४ ७) वरुण ११
२ ४ महा)।

समाधि वि [समाधि] किये गवाहा (भापु १७० म्हा कुमा गुर ४ ११४) सव)।

समाधाय वि [समाधाय] १ प्राय मित्रा हुवा । २ बाट (सव)।

समाहित एक [समाधि + स्था] कम् में रखवा भरीन रचना । अर्थात् समाहित-जमाय (सव ११२)।

समाहितु वि [समाधितु] पक्क च सुधी धियरति (भाषा २, २, १ १; २, ७ १ २)।

समाधितु वि [समाधितु] ध्यायित (सव ७२२ टी सुपा २ १)।

समाधिहिय केओ समाधिहिय = समर्थिक।

समाधियवि वि [समाधियवि] धाक-निष्ठ कुट्टे किया हुवा (सव ११ टी)।

समाधि वि [समाधि] एकव उपसत् (वदव)।

समाधु वि [हे] संभु, धर्मभु (समु २२२)।

समाधी [समा] १ बर्न बाए माल क समय (बी ४१)। २ कब समय (सम १७: ठा २ १—गव ४७ कम्)।

समाधम केओ समागम (धिय २ २) गड माली १२)।

समाध् एक [समा + गम्] १ लम्बे धावा । २ समाहर कला खलार कला । पंड समाध् (महा)।

समाध् वि [समाध] बाह्य सज्ज (स १७२)।

समाध् वि [समाध] कज्जल हुवा (म्हा)।

समाध् वि [समाध] केव किया हुवा (सि १ १)।

समाध् वि [समाध] व्याप (बीन गुर ४ २४१)।

समाध् वि [समाध] दण्डी एक समाध् १ धाधेय (सव ११) विचार ११)।

समाध् धक [समा + ध] बम होना, बमबा, धरीन होना । मुक ल्याध् (सुप १ १ १)।

समाध् वि [समाध] विनम (वव १)। समाध् वि [समाध] दुक, संहित (प्रोपा सुपा १ १)।

समाध् वि [समाध] १ धर्म, निमित्त (पम) । २ व्याप (सुपा १ १) । ३ धाधुन व्याधुन (हे ४ ४४४ गुर २ १७४)।

समाध् वि [समाध] व्याधुन बना हुक (स ११)।

समाध् वि [समाध] १ धावा हुकुम (सव १ २१ टी) । २ विचार धारि के उपसत् में किय हुए बोधन में बचा हुवा बहु बाय विचको निर्दोष में बाजे का संकल्प किया गया हो (सि २२१ २१)।

समाध् वि [समाध] धावा हुकुम (मि)।

समाध् वि [समाध] विवरण (सुप १४)।

समाध् वि [समाध] धावा हुकुम (मि)।

समाध् वि [समाध] धावा हुकुम (मि)।

समाध् वि [समाध] धावा हुकुम (मि)।

समाध् वि [समाध] धावा हुकुम (मि)।

समाध् वि [समाध] धावा हुकुम (मि)।

समाध् वि [समाध] धावा हुकुम (मि)।

समाध् वि [समाध] धावा हुकुम (मि)।

समाध् वि [समाध] धावा हुकुम (मि)।

समाध् वि [समाध] धावा हुकुम (मि)।

समाध् वि [समाध] धावा हुकुम (मि)।

समाध् वि [समाध] धावा हुकुम (मि)।

समाध् वि [समाध] धावा हुकुम (मि)।

समाध् वि [समाध] धावा हुकुम (मि)।

समाध् वि [समाध] धावा हुकुम (मि)।

समाध् वि [समाध] धावा हुकुम (मि)।

समाध् वि [समाध] धावा हुकुम (मि)।

समाध् वि [समाध] धावा हुकुम (मि)।

समाध् वि [समाध] धावा हुकुम (मि)।

समाध् वि [समाध] धावा हुकुम (मि)।

समाध् वि [समाध] धावा हुकुम (मि)।

समाध् वि [समाध] धावा हुकुम (मि)।

समाध् वि [समाध] धावा हुकुम (मि)।

समाध् वि [समाध] धावा हुकुम (मि)।

समाध् वि [समाध] धावा हुकुम (मि)।

समाध् वि [समाध] धावा हुकुम (मि)।

समाध् वि [समाध] धावा हुकुम (मि)।

समाध् वि [समाध] धावा हुकुम (मि)।

समाध् वि [समाध] धावा हुकुम (मि)।

समाध् वि [समाध] धावा हुकुम (मि)।

समाध् वि [समाध] धावा हुकुम (मि)।

समाध् वि [समाध] धावा हुकुम (मि)।

समाध् वि [समाध] धावा हुकुम (मि)।

समाध् वि [समाध] धावा हुकुम (मि)।

समाप्ती सक् [समा + ती] बे पाया ।
समाप्तेइ (विंते १३२३) ।

समागा देखो समाग = छद् ।

समागु (प्रन) देखो समं (हे ४ ४१७
कुमा) ।

समाइह सक् [समा + इह] जतना
मुसयाम । बह. समाइहमाय (पाषा १
६, २ १४) ।

समाइह सक् [समा + इह] पइए करण ।
छं. समाइहय (प्याषा १ २, १ १) ।

समाइहय न [समाइहय] पइए (यज) ।

समाइहिय वि [समाइहिय] करमाया हुमा
(मेइ ८६) ।

समाइस सक् [समा + इह] पइए
करा । छं. समाइसिख (पट) ।

समाइस देखो समापस (बाट—मावपी
४६) ।

समाभाषणया की [समाभाषण] सपात्र
भय से स्वायत (उत् २६ १) ।

समाधि देखो समाहि (अ १०—पत्र ४०१) ।

समापणा की [समापना] समाधि (विंते
१३१३) ।

समाभरिख वि [समाभरिख] पाषण्य-पुछ
(प्यु २३१) ।

समाइह दु [समाइह] १ समा परिण्य (उत्
१ १०; प्यु ५) । २ प्यु-मिन्न प्रत्यो
ना छुह छंछा । ३ हापी (पट) ।

समाय पु [समाय] सामाधिक संयम-विरोध
(विंते १४२१) ।

समाय देखो समजाय 'एते नन य सीया
पूरिखसमायवि इतिम्याछेवि' (मुपति १३;
यज) ।

समाय देखो समयं (अ २६, १—पत्र
१४) ।

समायण्य सक् [समा + फर्ण्य] मुनय ।
छं. समायण्यजय (पहा) ।

समायण्यजय [समायण्य] यण्य (बह) ।

समायण्यय वि [समायण्य] गुमा हुमा
(कज) ।

समायय सक् [समा + य] पइए करण
लोभर करण । समाययि (उत् ४ २) ।

समायय देखो समायाय (मि) ।

समायर सक् [समा + यर] मायरण
करा । समायर (उवां उव) समायेमि
(निहा ३) । छं. समायरियय (उवा) ।

समायरिय वि [समायरिख] मायिख
(पट) ।

समाया देखो समाया । छं. समायाय
(पाषा १ १ १४) ।

समायाय वि [समायाय] समात (उप
७२८ टी) ।

समायाय दु [समायाय] १ पाषण्य (विपा
१ १)—पत्र १२) । २ छपाचार (प्यु
१ २) । ३ वि पाषण्य करेबाला (संवि
३२) ।

समार सक् [समा + रण्य] १ छीक
करण दुस्त करना । २ करण बनना ।
समार (हे ४ ६३; महा) । मुक. समारप
(कुमा) । बह. समारत (पत्र १० ४) ।

समार सक् [समा + रण्य] प्रारंभ करण ।
समार (वह) ।

समार वि [समारिख] बहया हुमा,
'भइसमापीम बरुपीरिमे' (गुर २ ६६) ।

समारि सक् [समा + रण्य] १ प्राप्न
करा । २ विहा करण । समारिदेखा
(पाषा) । बह. समारिख समारिममाण
(पाषा) । प्रयो समारिदेखा (पाषा) ।

समारि दु [समारि] १ पर-परिगत
हिहा (पाषां पय १ १—पत्र ३; या
७) 'पतिनाकरो भवे समारि' (संवीप
४१) । २ प्रारंभ (कुमा) ।

समारण्य न [समारण्य] १ छीक करण,
समारण्य दुस्त करण 'करो विरु-
हण्य समाण्य बुधसकपयिमाय' (पत्र
११ १) । २ वि विषाक, कयि (कुमा) ।

समार देखो समाइह (गुर १ १ ४
७६२) ।

समार देखो समारि = समा + रण्य ।
समार देखो समायेमि समायेमि
समाइह (पुप १ ७, २, वि ४३; पट) ।

छं. समारण्य (वि ३६) ।

समारि वि [समारि] दुस्त किमा
हुमा (कु ११४) ।

समारइ सक् [समा + रण्य] पाठ्य
करा बहया । समारइ (मि वि ४७२) ।
बह. समारइ (प ११) । छं. समारइय
(पहा) ।

समारइय न [समारइय] पाठ्य
बहया (मुप २३१) ।

समारइ वि [समारइ] बहा हुमा (महा) ।

समारइ सक् [समा + रण्य] बहा हुमा ।
छं. समारिपि (वि ३६) ।

समारि देखो समारि = समा + रण्य
समारि देखो 'काम्' । समारि देखो समारि
(वीप पाषा २ १५, १८) । छं. समा-
रिदेखा, समारिदेखा (वीप पाषा २,
१५, १८) ।

समारि दु [समारि] पाठ्य, छपा
(संवीप ४) ।

समारि न [समारि] पाठ्य, छपा
(संवीप ४) ।

समारि वि [समारि] पाठ्य, छपा
(संवीप ४) ।

समारि सक् [समारि] पाठ्य, छपा
(संवीप ४) ।

समारि देखो समारि = समा + रण्य
समारि देखो 'काम्' । समारि देखो समारि
(वीप पाषा २ १५, १८) । छं. समा-
रिदेखा, समारिदेखा (वीप पाषा २,
१५, १८) ।

समारि दु [समारि] पाठ्य, छपा
(संवीप ४) ।

समारि न [समारि] पाठ्य, छपा
(संवीप ४) ।

समारि वि [समारि] पाठ्य, छपा
(संवीप ४) ।

समारि सक् [समारि] पाठ्य, छपा
(संवीप ४) ।

समारि देखो समारि = समा + रण्य
समारि देखो 'काम्' । समारि देखो समारि
(वीप पाषा २ १५, १८) । छं. समा-
रिदेखा, समारिदेखा (वीप पाषा २,
१५, १८) ।

समारि दु [समारि] पाठ्य, छपा
(संवीप ४) ।

समारि न [समारि] पाठ्य, छपा
(संवीप ४) ।

समारि वि [समारि] पाठ्य, छपा
(संवीप ४) ।

समारि सक् [समारि] पाठ्य, छपा
(संवीप ४) ।

समारि देखो समारि = समा + रण्य
समारि देखो 'काम्' । समारि देखो समारि
(वीप पाषा २ १५, १८) । छं. समा-
रिदेखा, समारिदेखा (वीप पाषा २,
१५, १८) ।

समाहित्वि [समाहित्व] कृष्टि (भाषा १ ८, १ २)।

समाहित्वि वि [समाहित्व] सम्पत् कपित (मृष १ १ २६ भाषा २, ११ ४)।

समाहुच (मय) नीचे देखो (नभि)।

समाहुच वि [समाहुच] कुत्सा हुधा पात्र रिठ (नार्य १ ३)।

समाह सक [समा + हा] स्वत्य करना 'सुदन्मण्डं समारेह' (संशोध ११)।

समि बी [शमि] देखो समी (मृगु पाद्य)।

समि } वि [शमिम्, क] १ राम-मुक्त।

समिभ } २ वृं वायु, मुनि (मुवा ४१६; १४२ उप ११२ टी)।

समिअ देखो सत = शान्त (सिदि ११ ४)।

समिअ वि [समित] सम्पत् प्रकृति करने-

वाला धारमल होकर यदि धारि करनेवाला

(अन उप १ ४ कय बीध अन मृष १

११ २ पर ७२)। २ राम-मावि से स्थित

(मृष १ १ ४)। ३ उपपन्न (मुक्त ६)।

४ सम्पत् कृत (मृष १ १ ४)। ५ सम्पत्

(अ २ २—पर २३)। ६ सम्पत् व्यवस्थित

(मृष २ १ ११)।

समिअ वि [सम्यक्च] १ सम्पत् प्रकृति

भाषा (अन २ १—पर १४)। २ मृषा

मुत्तर, रोमन समीचीन (मृष २ ५, ११)।

समिअ वि [शमित] शान्त किया हुआ

(विशे २४८८ धीर मृष २ १—पर

१४८ एण)।

समिअ वि [शमित] कम-मुक्त (भा २

१—पर १४)।

समिअ वि [समिअ] सम उप-देव-वर्द्धित

'समिअये' (मृष २ १—पर १४६)।

समिअ न [साम्य] समता ध्यावि का

मयम सम-अन (मृष १ ११, २, भाषा

१ ८ = १४)।

समिअ वि [समित] प्रकृतमल (पाया १

१—पर १२, मय)।

समिअ वि [समित] देखे के घाटा का बना

हुधा चक्र-विध मरुह (विद २४६)।

समिअ वि [सम्यग] मृषा ठाढ़ (भाषा

मृष २ १—पर १११)।

समिअ बी म ऊपर देखो (अन २ १—पर

१४ भाषा १ २, १ ४) 'समिअ' (भाषा १ २ ५, ४)।

समिअ बी [समिता] देखे का पात्र (पाया

१ ८—पर ११२; मुक्त ४ २)।

समिअ बी [समिअ, शमिअ, शमिता]

कमर धारि तक इन्हीं की एक सम्पत्तर

परिपु (अन १ १ टी—पर २ २)।

समिअ बी [समिति] १ सम्पत् प्रकृति

अन्योप-पूर्वक मयम-अण धारि किया (अन

१ घोमरा १ उक्त २ २, एण ४)।

२ समा परिपु मयि कर देखतोदेवि

देवसमिअ मयोवो' (विशे १११ टी उं

२३ टी)। ३ मृष, लड़ाई (एण ४)। ४

निष्ठर मिलन (मृष ४२)।

समिअ बी [सुमि] १ स्वरण। २ शाक

विशेष मनुसुति धारि (सिदि ५४)।

समिअ वि [समिअ] देखे के घाटे की

करी हुई लंबक धारि बलु (विद २ २)।

समिअ वि [समिअ] शीघ्र मयु की

एक जाति (अन ११ ११६)।

समिअ सक [सम् + ईह] १ धातोचना

करना, मुक्तोप-विचार करना। २ पर्यालोचन

करना चिन्तन करना। ३ धर्म की वृद्ध

देखना, निरीक्षण करना। समिअक (अन

२१ २३)। समिअक (मृष १ १

४ उक्त २ २ महा उप २३)।

समिअक बी [समाशा] पर्यालोचन (मृष

१ १ १ १४)।

समिअक वि [समाहित] प्रालोचित

(अन १ १११)।

समिअ देखो समे।

समिअक न [समीक्षण] कथोवा (अदि)।

समिअक वि [समिअ] समिअक (अदि)।

समिअक सक [सम् + ईह] चार्त वरु

के चक्रमय। समिअक (वि २, २३)। सक-

समिअक (मुवा १ ४)।

समिता देवा समिअ = क्षिति (अ १

२—पर १२; मय १ १—पर १ २)।

समिअ वि [ससुअ] १ पवित्र संघटिता

(वीध खाया १ १ टी—पर १)। २ मृष,

मृषा हुधा (मृष ११)।

समिअ बी [ससुअ] १ पवित्र संघटित।

२ मृष (वि १ ४४ पर मुवा लन ११३;

मृष १२८)। ३ वि [स] समुद्रिता

(मु १ ४६)।

समिर पुं [समिर] पवन वायु (अन १४६)।

समिरिअ } देखो स-मिरिअ = सयरी-

समिअ } चक्र।

समिअ बी [समिअ, सम्या] ग्रुप-मेलक

मृष की बंधने में दोनों धीर जाता जाता

सकरी का बीना (अन ११३३ मुवा २५०)।

समिअ देखो समिअ। समिअ (मृष)।

समिअ बी [समिअ] कष्ट, सकरी (अन

११ परम ११ ७९ विद ४४)।

समी बी [शमी] १ मृष विशेष धीर का

पक्ष (मृष १ २ २ १६ टी अन १ ११

टी बना १३)। २ शिवा विनी, फली

(शमी)। सकयन न [वि] धीर की पत्नी

रानी हुध का पन-मुद (मृष १ २, १ १६

टी ४६ १)।

समाअ देखो समाअ (मृष—मातवि २)।

समीअ वि [समीअ] समान किया हुआ,

'अ विवि घणनं घात तंवि समीअ' (मृष

१ १ २ ८ पर ७)।

समाअ वि [समीअ] वायु, मुत्तर,

रोमन (मृष—विद ४०)।

समीअ सक [सम् + इरप] प्रेरणा करना।

समीअ (भाषा १ ८ ८, १७)।

समार पुं [समार] बरन वायु (मय, मरु)।

समारम पुं [समारम] ऊपर देखा (मरु)।

समअ बयो समाअ। समीअ (मृष)।

समअ वि [समाअ] निम्न पाद (परम

१६ का महा)।

समाअ सक [सम + ईह] चार्त वायु

करना। मृष समीअम (अन १२ टी)।

सम हा बी [समाअ] दण्ड बांध (अन

१ ११ टी)।

समीक्षित मि [समीक्षित] छट्, बाधित (महा) ।

समीक्षित्य षेढो समिक्षित्य (अन १) ।

समुत्थापार दु [समुत्थापार] णमीपीन
धातुश्च (दि २ १४) ।

समुत्थय मि [समुत्थय] योग्य ज्येष्ठ (दि १ १ १) ।

समुत्थय मि [समुत्थय] १ वरित्त 'पुत्र-
पुत्रयो' (अन २ २५) । २ एकवित्त
(मि २ १२४) ।

समुत्थय मि [समुत्थय] जन्म-प्राप्त (पुपा ११४) ।

समुत्थय षेढो समुत्थय । कर्म 'वह दुष्टपाप
मोक्षो समुत्थय किमु उच्छ्रय' (अन १
१२) ।

समुत्थय षेढो समुत्थय (अन २ १ २५) ।

समुत्थय मि [समुत्थय] कष्ट ज्ञाता
हुवा (पु १४ ४२) ।

समुत्थय मि [समुत्थय] पठित्य उत्कर्ष
(अन २ १ २५) ।

समुत्थय एक [समुत्थय + कृ] १ उत्कर्ष
कृता । २ एक वर्ष करण । समुत्थय
(अन १ १—पन ११४) । समुत्थय (प्रा ११४)

समुत्थय मि [समुत्थय] उत्कर्ष (अन १
१—पन ११४) ।

समुत्थय न [समुत्थय] ज्ञाता (पुपा १४२) ।

समुत्थय मि [समुत्थय] ज्ञाता हुवा
(अन २ १४) ।

समुत्थय एक [समुत्थय + कृ] ज्ञाता ।
समुत्थय (अन १ १४) । न समुत्थय
(पुपा १४२) ।

समुत्थय न [समुत्थय] उत्कर्ष,
पठित्य (पु १४२) ।

समुत्थय मि [समुत्थय] उत्कर्ष कर
हुवा (दि १ १ २२) ।

समुत्थय एक [समुत्थय + कृ] उत्कर्ष
कर हुवा । समुत्थय (दि १ १४ ४२) ।

समुत्थय दु [समुत्थय] १ ज्ञाता, पठित्य (अन
११) । समुत्थय १ १४ टी नवीन ११४

पुनः पठित्य ११—पन २१४ पठित्य । २
पठित्य-विशेष (टी २२ अ ४ ४—पन
२१४) ।

समुत्थय (टी) मि [समुत्थय] उत्कर्ष
समुत्थय (अन—पन ११४) ।

समुत्थय दु [समुत्थय] उत्कर्ष (अन—
पन ११४) ।

समुत्थय मि [दि] उत्कर्ष (दि २ ११) ।

समुत्थय मि [समुत्थय] उत्कर्ष हुवा,
ज्येष्ठ उत्कर्ष हुवा (पन १२,
४४) ।

समुत्थय एक [समुत्थय + कृ] उत्कर्ष
कृता । न समुत्थय (पन १२,
४४) ।

समुत्थय मि [समुत्थय] ज्ञाता हुवा
(अन १२) ।

समुत्थय मि [समुत्थय] ज्ञाता हुवा
(प्रा ११४) ।

समुत्थय दु [समुत्थय] कर्म-विशेष
विशेष जिस समय धार्या देना कर्ता
धारि से परिणत होता है उस समय वह
धर्म प्रदत्तों को धार्य कर उन प्रदत्तों से
विशेष, कर्ता धारि कर्मों के प्रदत्तों की को
विशेष—विशेष कर्ता है वह से उत्कर्ष
धार्य हैं—विशेष, कर्ता, पठित्य वैशेष,
विशेष धार्य धार्य वैशेष (पन ११—
पन ४१४) पठित्य धारि मि १२) ।

समुत्थय न [समुत्थय] विगत
(मि १ १४) ।

समुत्थय मि [समुत्थय] उत्कर्ष
(पु ११ २५) ।

समुत्थय षेढो समुत्थय (अन १) ।

समुत्थय दु [समुत्थय] विगत पठित्य, उत्कर्ष,
पठित्य (अन २, ४—पन ११४, धारि) ।

समुत्थय एक [समुत्थय + कृ] उत्कर्ष
कृता, ज्ञाता । समुत्थय (पन १४२) ।

समुत्थय मि [समुत्थय] उत्कर्ष हुवा
(अन १ १४) ।

समुत्थय एक [समुत्थय + कृ] उत्कर्ष
कृता हुवा । समुत्थय (अन १ ४) ।

समुत्थय मि [समुत्थय] एक ज्ञाता पठित्य
मि पठित्य (मि ११४) ।

समुत्थय एक [समुत्थय + कृ] उत्कर्ष
कृता ज्ञाता । १ दुष्ट कृता । समुत्थय
(पु १ २ २ ११) । न समुत्थय
(पु २ १ ४) । एक समुत्थय
(पु २ ४ १) ।

समुत्थय मि [समुत्थय] उत्कर्ष
पठित्य (पन ११ ४) ।

समुत्थय षेढो [दि] उत्कर्ष (दि २ ११)
प १४) ।

समुत्थय एक [समुत्थय + कृ] उत्कर्ष
कृता, उत्कर्ष कृता । २ विशेष हुवा ।
समुत्थय (पन ११ १२) । न समुत्थय
(पु २ २ ११) ।

समुत्थय मि [समुत्थय] उत्कर्ष
हुवा । २ विशेष (पन १ ११) ।

समुत्थय न [समुत्थय] उत्कर्ष
(अन १) ।

समुत्थय मि [दि] उत्कर्ष, उत्कर्ष
हुवा । २ उत्कर्ष (पन १ ११) ।

समुत्थय मि [दि] उत्कर्ष, उत्कर्ष
हुवा । २ उत्कर्ष (पन १ ११) ।

समुत्थय (टी) मि [समुत्थय] उत्कर्ष
कृता (मि २ ४४) ।

समुत्थय मि [समुत्थय] उत्कर्ष
(अन ४ ४ १ पन—४४) ।

समुत्थय मि [समुत्थय] उत्कर्ष
(पु २, ११४ ४ १४) ।

समुत्थय दु [समुत्थय] उत्कर्ष
समुत्थय (अन—पन ११४) ।

समुत्थय मि [समुत्थय] उत्कर्ष
कृता (अन ४ ४ १ पन—४४) ।

समुत्थय एक [समुत्थय + कृ] उत्कर्ष
कृता । न समुत्थय (पन १०२,
१०४) ।

समुत्थय दु [समुत्थय] १ उत्कर्ष
१ मि, उत्कर्ष उत्कर्ष (मि १४४) ।
समुत्थय मि [समुत्थय] उत्कर्ष
(अन ४ ४ १) ।

समाविष्ट होगा अन्यथा नहीं । २ सीके

प्राज्ञहर्षं विन्देत् का पूर्ववर्णीय नाम (पञ्च ५१) सप्त (१२४)। देवी संयाजि।

संयाजि मि [संयाजि] देवी की प्राणतन्त्रावा प्राणसी (कुम्भ)।

संयाजरी की [संयाजरी] नीतिप्रिय वस्तु की एक जाति (जल ११ ११२; पुष्प ११ ११६)।

संयाजरी देवी संयरी = कलापरी (पञ्च)।

संयास देवी संग्रास = संयास (काश घटित १२१ ग्राह-पुष्प १२२)।

संयासय वि [संयासय संयासय] वृद्ध भिक्षुवासा (भय)।

संय्य देवी सञ्ज = संय्य; 'संय्यमनुति संय्यं भोक्तेष्वपारण्यो यद्यो देव' (वर्गीय १८)।

संय्यमय देवी सञ्जमय (वर्गीय १८)।

संय्य देवी संय्यम = संय्य (हि २ १२४ बह)।

सर संक [सु] १ सरता निवृत्तता। २ भवतन्त्रम कला साध्यव सेवा। ३ धनुषरूप कण्य। सरह (हि ४ २१४) संयोजा (जप २३)। ४ सरप्राभ (पञ्च २७) सरमञ्ज (मुष्ण ४१४)।

सर संक [सु] याव करण्य। सरह (हि ४ ७५ पुष्प १२) प्राप्ति। नह- सरत (पुष्ण २१४) सरमाप (छाया १ २-पञ्च ११२) पञ्च व ११५ मुष्ण ११६)। हक सरि सप (हि १७८)। ह. सपनीज, संरेभञ्ज, सरिपञ्च (ह. २७) बन्नी २; पुष्ण १ ७)। प्रयो संय्यति (पुष्प १ ५, १६)।

सर संक [स्वर] ध्वजान करता। सरह संति (हि ४१२)।

सर पुंन [सर] १ शरण्य 'नञ्जे सपति वरि सर्वति' (छाया १ १२-पञ्च ११३)। कुष्ण गुर १ २४१ स्वन १२)। २ वृक्ष विशेष 'यो बरवले (निमोहो) रक्षिषी तन्निचय नञ्जयो' (वर्गीय ६२ पञ्च १-पञ्च ११ (कुम्भ १)। ३ ध्वज-विशेष। ४ पाष की संय्य (विज)। पञ्चो धी [पञ्चो] लुह-विशेष, = पुष्प का पाह (पञ्च)। पञ्च न [पञ्च] पञ्च-विशेष (विदे २१३)। पाप न [पाप]

पञ्च (पुष्प १ ४ २ १३) 'सत्य पुंन [सत्य] पञ्च (मिषा १ २-पञ्च २४ पापः भीष)। सत्यपट्टी 'सत्यपट्टिया की [सत्यपट्टी सत्यपट्टि] १ पञ्चपट्टि पञ्चपट्टि। २ पञ्च कीचने के समय हाथ की रमा के लिए बोया जाता वर्मपट्ट-पञ्चके का कृष्ण (मिषा १ २-पञ्च २४ भीष)। 'सरि न [सरि] वण-पुञ्ज (विदि १ २२)।

सर पुंन [सर] कमपेय (कुष्ण-से १ ४१)। सर वि [सर] पञ्च-कर्त (पञ्च १ १ १)। सर पुंन [स्वर] १ नञ्जे-विशेष 'य' से 'पौ' तक के ध्वज (पञ्च २ २) विदे ४११)। २ वीथ ध्वज को ध्वनि धाराज नञ्ज (मुष्ण २३ कुष्ण)। ३ स्वर के धनुष का कलापन की कलापेवासा राज (सम ४६)।

सर पुंन [सरस] वज्राज वज्राज (से १ १ जगत् कम्य कुष्ण मुष्ण ११६)। पति की [पञ्च] वज्राज-पञ्च (अ २ ४-पञ्च ४१)। स्रज न [स्वर] कम्य पञ्च (प्राप्ति १ १११ कुष्ण)। सरपट्टिया की [सरपट्टि] वीथि-वज्र रक्षे हुए ध्वज वज्राज (पञ्च २ ५-पञ्च १२)।

सर देवी संयय = संय (पा ७१२)। विदु पुंन [स्वर] संय पञ्च का वज्र (गुर २ ७; १६ २४१)।

सरज की [संय] नदी-विशेष (अ ५, १-पञ्च १ ५ ती ११; कस)।

सरंग (भय) पुंन [सारङ्ग] ध्वज-विशेष (विज)।

सरंय पुंन [सारङ्ग] हाथ से बतनेवाले वर्य की एक जाति (पञ्च १ १-पञ्च ५)।

सररुस संक [सं + रक्ष] ध्वजों पर रक्ष करण्य। सररुस (पुष्प १ १ ४ ११ डि)।

सररुस वि [सररुस संरुस] १ रक्ष-वर्गी ध्वज-ध्वज, नील रौ (धोप २१८ विदे १ ४ हा १७७)। २ वि रजो-पुञ्ज (पाप ४)।

सररुस पुंन [सररुस] १ वृत्ति रज 'सररुसवि ररुस' (अ ५, १ ७)। २ भय (विदे १७-धोप ११६)।

सरग देवी संयय = संय (छाया १ १८-पञ्च २४१)।

सरग वि [सारङ्ग] रज-पुञ्ज से बना हुआ (धोप भाषि) (साधा २ १ ११ ३)।

सररुगस (भय) की [सारङ्गस] ध्वज विशेष (विज)।

सररु पुंन [सरट] इन्द्रास, विदीप (छाया १ ८-पञ्च १११ धोप ३२४; पुष्प २१७; से ८ ११; सप पु २१८ मुष्ण १७७)।

सररु } न [शङ्खट्ट, क] नञ्ज कल नञ्ज
सररुस } ध्वनि-गुह्यो न नञ्जो हा कोय
कल (विदे ४१५) साधा २ १ ८, ९ वि ८२ २२६)।

सरय पुंन [सारय] १ बाल रक्षा (साधा सम १ प्राप्ति ११६ कुष्ण)। २ शरण-स्नान (साधा कुष्ण २ ४२)। ३ गृह धाम्य स्वातः भित्तियररुप्यईवनिव विरत' (संयोज २१)। ४ वि [स्य] शरण-कर्त (पञ्च पञ्च)। प्राय वि [गति] शरणगत (प्राप्ति ५)।

सरय न [सरय] स्मृति याव (धोप ८) विदे २१८ महा हा २१२ धोप वि ९)।

सरय न [सरय] ध्वजान करण्य ध्वनि करण्य (विदे ४११)।

सरय न [सरय] भयन-पञ्च)।

सरयि पुंन [सरयि] १ मार्ग, रस्ता (पाप-मुष्ण २ कुष्ण २२) 'सरयो धरण्यो समय कश्चिपो' (वर्गी ७२)। २ पातवात स्वाप (पञ्च)।

सरय वि [सरय] शरण-योग्य, शरण क लिए धाम्यपणीय (अम १२३ पञ्च १ ८-पञ्च ७२ मुष्ण २११; ध्वज १२३ संयोज ४८)।

सरयि न [स] धोप, नञ्ज कृष्ण (से ८ १)।

सररु देवी संयय = संय (शाय)।

सररु देवी संयय (मुष्ण १८३)।

सररु देवी संयय = संय (अम शाय १ १-पञ्च ११ पञ्च १ १-पञ्च ७५ हा ७४२ विदे)।

सरी श्री [रे] गन्ध, हार (मुद्रा १११)।

सरीर पुन [शरीर] रेह, मय जु (सम १७) उवा कुमा नौ (१२)। कइ छे मये सरोय परणत्ता (स्यु १२)। नाम, 'नाम पुन नामन्' कर्म-विशेष शरीर क कारण-मुल कर्म (राज) सम १७)।

बंयन न [बनयन] कर्म-विशेष (सम १७)। 'संघाषण न [संघाषण] नाम कर्म का एक मोह (सम १७)।

सरीरि दु [शरीरि] नीज धारमा (पत्रम ११२)।

सरोस्य } दु [सरीस्य] १ सयं सयं (बा सरीस्य) ११ मूय १ २ २ १४)। २ सयं श्री सय्य ये वे बनेनामा प्रणी (सम १)।

सक्य } शैवो सक्य = स्व-नय।

सक्य शैवो सक्य = स्व-नय सक्य।

सक्यि दु [सक्यि] नीज माली (अ २ १—पत्र १८)।

सरोयव्य शैवो सर = य, स्यु।

सरोयव्य दु [रे] १ हय। २ बर क मत-प्रवाह, मोरी (रे व ४८)।

सरोय न [सरोय] कर्म पय (कुमा पत्र ४२, मुद्रा ११२, ११३, कुम २१८)।

सरोय न [सरोय] कर्म शैवो (प्राभा कुमा, कुम २ ४)।

सरोय न [सरोय] बड़ा चालाक (मुद्रा २१ मया)।

सक्य शैवो सक्य = स्वयं (राज)।

सक्य शैवो [रे] सेवा (रे व १)।

सक्य सक [रक्षय] प्ररंसा करना। सक्य (रे ४ ८८)। कर्म सक्यिन्ना (नि ११२)।

४ सक्यिन्ना (मुद्रा)। शैवो सक्य।

सक्य दु [रक्षय] १ पत्र (प्राभा पत्र कुम १४२)। २ एक सक्यिन्ना (मुद्रा ११७)।

सक्यय न [रक्षयन्] प्ररंसा करना (बा ११८ नि ११२)।

सक्यय दु [रे] मुकटी धारि का हाथ (रे व ११)।

सक्यय नि [रक्षयिन्] प्ररंसा (मुद्रा)। १११

सक्यिन्ना शैवो सक्य = स्वयं।

सक्यय न [रक्षयन्] चिकित्सा-शास्त्र—भाष्योक्त का एक भाग जिसमें धरुण धारि शरीर के कर्म नाय के सम्बन्ध में चिकित्सा का प्रतिपादन हो वह शास्त्र (पिया १ ७—पत्र ७३)।

सक्यय दु [रक्षयन्] १ सरी सवाई सय्या (मुद्रा १ ४ २ १ क्यु)।

२ पत्र-विशेष एक प्रकार की गत (नीक ११८, कर्म ४ ७३ ७४)। पुरिस दु [पुरि] २ ४ निवेद १२ बन्धन १६ भाष्योक्त। ३ प्रतिभासुदेव तथा ४ बन्धन ये ११ महापुरुष (संशोध ११)।

सक्य शैवो सक्य = स्वयं। सक्य (प्राभा २८)। सक्य सक्यमाण (पा १४१) सम्म ११८)। ४ सक्यिन्ना, सक्यिन्ना, सक्यिन्ना (प्राभा २८)। ५ सक्य (पा २ १ गुर ७ १०१ रयण १३)। पत्रम ८२ ७१ नि ११२)।

सक्यय न [रक्षयन्] कर्मा प्ररंसा (पा ११८)। ४ १ ११)।

सक्यय श्री [रक्षय] प्ररंसा (प्राभा १ १ १४)।

सक्यिन्ना शैवो सक्यिन्ना (मुद्रा)।

सक्यिन्ना पुन [सक्यिन्ना] पानी मत 'सक्यिन्ना ए सक्यिन्ना बंति नाय' (मुद्रा १ १२, ७ कुमा प्राभा १३)। 'जिहि दु [जिहि] सापर, सयुह (रे १ ६)। नाह दु [नाय] बही (पत्रम ६, ११)। 'जिह न [जिह] मुनि-निर्देश, बीजो से बहता करना (सम १ १—पत्र १४)। सयि दु [सयि] सयुह (पाय)। वाह दु [वाह] नेत्र (पत्रम ४२ १४)। हर दु [हर] बही (रे ६ ६४)। वाह गयी श्री [गयी] विजय-शेष-विशेष (राज) पाय १ ८—पत्र १२१)। जयन प [जयन] वैराग्य परत पर चतर विराग्य-विषय एक विराग्य नगर (६६)।

सक्यिन्ना श्री [सक्यिन्ना] महापुरुष बने नीज (सम १२२)।

सक्यिन्नाय नि [सक्यिन्नाय] व्यापित, कुमोय हय (पाय)।

सक्यिन्नाय [स्यु] सेवा सम्य करना। सक्यिन्ना (पत्र)।

सक्यय शैवो स-स्यु = स-सयण।

सक्यय दु [रक्षय] कर्मा प्ररंसा (मुद्रा १ ११ १२)। शैवो सक्येय।

सक्येय शैवो स-स्येय = स-सोह।

सक्येय शैवो स-स्येय = स-सयण।

सक्येय शैवो सक्येय = कोह (मुद्रा १ १ २२)।

सक्य पुन [रक्षय] १ सक्य-विशेष तोमर, धांग 'ययो कर्मा परणत्ता' (अ १ १—पत्र १४०)। २ शरीर में कुमा कुमा कीय शीर धारि (मुद्रा २, २ २ २ वंसा १ ११)। ३ प्राभा १२)। ४ पापानुष्ठान पाप-विना 'पापविनासक्य' (उवा मूय १ १२, २४)। ५ पापानुष्ठान से बनेनामा कर्म (मुद्रा १ १३, २४ वंसा १)। ६ पुन नयन का साय सेवा देनेवाले एक राजा का (पत्रम ४३ २)। ७ न सक्य-विशेष (विज)।

'ग वि [क] सम्यवाता कुल धारि सक्य से शीरित (पत्र २, १—पत्र १३)। ग न [ग] सक्यिन्ना जलकाय (मुद्रा २ २, ३७)।

सक्य पुनी [रे] हाथ से बनेनामे सय-नातोय बन्यु की एक नाथि (मुद्रा २, १ २३)।

सक्यय नि [रक्षयिन्ना] स्वय-मुक्त, जिसको स्वयं पैदा हुआ हो वह (साया १ ७—पत्र ११६)।

सक्य शैवो [सक्य] बुद्ध-विशेष (पाया १ ७ ६—पत्र ११६)। जय १ ११ ६)। कुमा बर्मा ११ मुद्रा २११)।

सक्य शैवो सक्य-ग = स्वयं-क स्वयं-न।

सक्य देवा सक्य-ग = स्वयं-नय।

सक्यय पुन [रक्षयिन्ना] भाष्योक्त का एक र्थ जिसमें स्वयं चिकित्सा न प्रतिपादन किया गया हो वह शास्त्र (पिया १ ७—७३)।

सक्य श्री [रक्षय] एक महीषी (दी १)।

सक्य नि [रक्षय] स्वय-शीरित (मुद्रा १२ १२२ मुद्रा २२७)। बड़ा धारि)।

सक्य शैवो सक्य = स + सक्य। सक्यिन्ना (पाय १३)।

यार (हुमा)। चरय न [चरण] सहार,
 सन पला मेबाय 'यमणमिहोहि भन
 सहारण' (स ८४)। 'ज पु [ज] १
 सबाय (हुमा) रिने। २ वि स्वाभाविक
 (बैस ४३)। जाय वि [जाव] एक
 साय जसप (छाया १ १—यज १ ७)।
 देव पु [देव] १ एक पाखन मारी-पुन
 (बर्गि ८१)। २ राजपुत्र नगर का एक
 राजा (जय १८८ ये)। देवा की [देवा]
 भोगवि-विशेष (बर्गि ८१)। देवी की
 [देवा] १ कर्तुर्बलवर्ती की माता (सम
 १२२ महा)। २ एक महोर्विध (ती २)।
 भस्मभारणा की [धमभारिणा] पत्नी
 फर्क (प्रति २२)। पैसुकिविज वि
 [पासुकिविज] बाव-मिह (मुया २२४
 छाया १ २—यज १ ७)। 'य रेको ज
 (बैस ४४४ राज)। यर वि [चर] १
 पहाय, माहाम्य-कर्ता। २ बयस होत।
 ३ पुनर (पाय ३२ २)। यज २
 गह—छा ११)। यरी की [चय]
 पत्नी, भार्य (हुमा १२१; स ८, ११)।
 यार रेको कार (पाय ४ १ १००)।
 राग वि [राग] राग-छाँव (पञ्च १४
 १)। १२ रेको कार (पञ्च २१ ७१)।
 सह रेका सहा = सहा (हुमा)।
 सहस्रिपाया की [ह] हूँ (बै ८, १)।
 सहस्रह पु [ह] हुक ऊपर पवि-विशेष (बै
 ११)।
 सहस्रार न [सहस्रार] विद्या की
 उतर येणि में स्थित एक विद्यापर-नगर
 (१६)।
 सहण य [ह] वह, साय में (पुन ३३
 य २२७)।
 सहण न [सहन] १ विविधा बर्ग। २
 वि कठिण सहन करनेवाला (स २१)।
 सहर पु [सहर] महल मन्त्री (पाय
 ३४३)। य य (है १ २११ बरह)।
 सहर वि [ह] माहाम्य-कर्ता वरुण न उरु
 कय न विना न भाया नातिवि तमि
 (अमा) मरुत मर्दि (बै ४१)।
 सहर वि [सहर] फल-मुक, मार्फक-ज
 १ ११ टी है। २१२ हुमा सज ११)।

सहस रेको सहस्स (या ४४ वि १२
 ११)। किरण पु [किरण] मूर्ध खि
 (सम्प ७१)। कल पु [कल] १ द्रव
 (हुमा ११)। २ चरण का एक जोड़ा
 (पञ्च २६ २१)। ३ कन्द-विशेष (विन)।
 सहसस्तार पु [सहसस्तार] १ बिहार किय
 बिना कला (पाया)। २ वाक्पिमा किया,
 मरुत्साय करना (भन २१ ७—यज १११)।
 ३ वि बिहार किय बिना कलेजला
 (पाया)।
 सहससि य यकल्या, शीघ्र, जल्दी गुण
 (पाय प्रा ७१)।
 सहसा य [सहसा] यकमान, शीघ्र, जल्दी
 (पाय प्रा १११ यवि)। बिहासिय
 न [विश्रसित] मरुत्साय की के यन्त्र-सं-
 मन प्रावि कीडा (उत ११ १)।
 सहसस पुन [सहस] १ संकल-विशेष य
 ती १। २ वि. हजार की संकलवाला
 (जी २० छा १ १ टी—यज १११, प्रा ४
 हुमा)। ३ यक, बहुत (कय पाय ४
 १ ११८)। किरण पु [किरण] १ मूर्ध,
 खि (हुमा १०)। २ एक राजा (पञ्च १
 १४)। कल पु [कल] द्रव बेवाविजि
 (कय ज ११ २१)। जयज नयण
 पु [नयन] १ द्रव (उज हम्बोर २;
 महा)। २ एक विद्यापर राज-कुमार (पञ्च
 २, १०)। पय य [पय] हजार बत
 नाता कय (कय)। पाय पुन [पाक]
 हजार कोपवि स बगता एक प्रहार ना ठेव
 (छाया १ १—यज ११ छा १ १—यज
 ११७)। रसि पु [रसि] मूर्ध खि
 (छाया १ १—यज १० यज ४३)।
 जयय पु [जयय] द्रव (बै १२२)।
 सिर वि [शिर] १ प्रभु मरुत्सा-
 नाता। २ पु पिण्ड (है १ ११८)। य
 रेको यज (य १, १ हुमा ११)। सा
 य [रास] हैमर-द्वार, धोक हजार
 (या १२) हा य [या] मरुत्साय य
 (हुमा २१)। दुर्त य [दुर्तय] १ हजार
 बार (मा ४ २ ११)। रेको सहस
 सदास।

सहससयन न [सहससयन] एक उपाय,
 धाम के प्रभु वेरोवाका बत (छाया, १ ८—
 यज १२२ यज उवा)।
 सहससार पु [सहससार] १ घाऊरी बेवसाक
 (यज १४ यज; यज)। २ घाऊरी बेवसोक
 का द्रव (य २ १—यज ८२)। ३ एक
 बेव-विमान (रोपेन ११२)। बर्गिसय पुन
 [बर्गिसय] एक बेव-विमान (यज १४)।
 सहा की [समा] सविष्ट परिपद (हुमा
 ४ १२१ २११)। मुया १८४)। सय वि
 [सय] सय मरुत्सा (पाय ४ १८२)।
 सहा रेको सहा = छाया (य २१)।
 सहाय रेको सहाय = स-यज।
 सहाय पु [सहाय] साहाय्य-कर्ता (छाया
 १ २—यज ८८ पाय ११ १ सज
 १ १ महा भन)।
 सहाय वि [साहाय्य] ऊपर रेको (सि
 १०० मुया २११)।
 सहायवा की [साहाय्य] मदर कलेजाली
 (उवा)।
 सहार रेको सहार = सह-कार।
 सहाय रेको सहाय = स-यज।
 सहास रेको सहस्स (मि)। कुतो य
 [दुस्स] हजार बार (य)।
 सहाय रेका सहा सय = सहा-यज।
 सहि वि [सहि] जिन दोस (पाय ४
 २ १)। रेको सह।
 सहि रेको मरी (हुमा)।
 सहि वि [साह] यज किय हुमा (बै १
 २२, बरसा १२१)।
 सहि न [सहि] १ युक्त, समन्वित (य
 हुमा मुया ११)। २ शिष्ट-युक्त (यज १
 २ २ २१)। ३ पु यजविज मह-विशेष
 (मा २ १—यज ७०)।
 सहि पु [सहि] पृथ-कारक हुमा
 येननाया (बै १ २१ पाय मुया १८८)।
 सहि यय सहि = सह वि।
 सहि रेको सह = सह।
 सहि य वि [सहय] १ पुनर वि-
 सहि य नाता। २ पाय ११ सुविनाया
 (बै १ २११, बै १ ११ यज २११)।

साधित्रिभ्यं वि [शाकुनिभ्यं] १ पक्षि-वाक्य
पक्षियों के वक्ता का कर्म करनेवाला (पण्य
१ १ २—पत्र २६ मय्यु १२६ टि विना
१ ८—पत्र ८९) । २ शाकुन-शास्त्र का
बानकार (मुना २६७ कुम्भ १) । ३ यौन
पक्षी द्वारा लिखर करनेवाला (मय्यु
१२६ टि) ।

साधय रेवो साउग (यव) ।

साउय वि [सायुप] धनुषवाता प्रणी
(अ २ १—पत्र ३८) ।

साउय वि [संकुल] व्याप्त भरपूर (पुर
१ १८३) ।

साउय वि [साकुल] धनुषवाता युक्त
व्याप्त व्यासः इक्षिमुसाउययो परिहर्ष
सोर्षि संवाट (पत्र १ २ १६७) ।

साउयि की [रु] १ बलाहक (भा २९६) ।
२ बल करवा (भा ६ १) । रेवो साउयि ।

साउय पु [रु] धनुषय, प्रेम (ह ८ २४
पत्र) ।

सायय रेवो साउयय । सम्यक् (अभि
१ २) ।

सायय न [साकय] धनोप्य नमरी (हक,
मुना १२ वि ६१) । पुर न [पुर]
वही धन (उ ७२८ टी) । पुरी की
[पुरी] वही (पत्र ४ ४) । रेवो
सायय ।

सायथा की [सायथा] धनोप्य नमरी
(पत्र २ १ सुमा १ ८—पत्र १११) ।

साययन न [साययन] कृत-विशेष (मरी
७१) ।

साउ रेवो साग (६ १, ११) ।

साउय न [साकेत] १ नगर-विशेष
धनोप्य (टी ११) । २ वि नृहल-धनवी ।
३ न, शयाकान-विशेष (पत्र ४) ।

साकय वि [साकय] १ इक्षि-कृत संकेत-
इक्षी । २ न प्रत्यक्षान का एक श्रेय
(पत्र ४) ।

साय पु [साक] १ इक्षि-विशेष (पत्र ४२
७ ३ १ २७) । २ लक्ष्मि-वत्त भावि
बाय साम की लक्ष्मि-वत्त (पत्र
११६) । ३ साक लक्ष्मी (पि १ २;
११६) ।

सागविभ्यं वि [शाकटिक] माहीन माही
पसा कर लिखर करनेवाला (पुर १९
२२१ उ २६२ उ २, १४ म्या १२) ।
सागय न [सागय] १ शोभन प्रामन
प्रयत्न धामन (मग) । २ प्रतिनि-युक्त-
माहर बहु-मल (मुना २२४) । ३ कुल
(कुमा) ।

सागर पु [सागर] १ समुद्र (पण्य १ १—
पत्र ४४ प्रायु ११४) । २ एक राज-मुद्र
(उ ६७७) । ३ राजा प्रत्यक्ष-मिह का
एक पुत्र (पत्र १) । ४ एक बलि-व्यापारी
(उ ६४८ टी) । ५ सावर्ण बलनेव राजा
बागुल के पुत्र नम कर्म-मुद्र (मग २४१) ।

६ पुन कृत-विशेष (हक) । ७ सम-परिवाण
विशेष बल-कोट्योति-वस्तो-म-परिमित कल
(नम ६; वी १६; पत्र २ ३) । ८ एक
वत्त विमान (मग २) । कृत पुन [साग]
एक वत्त-विमान (मग २) । वत्त पु
[साग] १ एक वत्त वाचाव (काठ) । २
एक व्याधिकाव नाम (उम पत्र राज) ।

विश्व पुन [विश्व] कृत-विशेष (हक)
वत्त पु [वत्त] १ एक वैत मुनि (मग
१२३) । २ यौनेव बलनेव का पुत्र-कर्म-
नाम (मग १२१) । ३ एक वेल्लि-मुद्र (महा) ।
४ एक सावर्ण का नाम (विना १ ७) । ५
इक्षि-वत्त की का एक पुत्र (महा ४४) ।
[वत्त की [वत्त] १ प्रयत्न बलनायकी
की दोहा-विशेष (मग १२१) । २ मयरा
विमलनायकी की दोहा-विशेष (विना
१२६) । [वत्त पु [वत्त] इक्षि-वत्त-
वत्त का एक पुत्र (महा) । वत्त पु [वत्त]
वैत की रत्तय विषय (महा) । वत्त
सावर = मावर ।

सागविभ्यं रेवो सागविभ्यं (वि २६८; पत्र
११२) ।

सागययन पुन [सागययन] धनय-परिमाण
विशेष बल-कोट्योति-वस्तो-म-परिमित कल
(का २, ४—पत्र ६ मग २ ३ १; १
११ उम वि ४४८) ।

सागर वि [सागर] १ सागर-कवि
भावि-वत्त । २ विशेष की वत्त करने
की शक्ति विशेष-वत्त बल (पत्र मग

मग १२) । ३ सागर-युक्त (मग ७ २—
पत्र २६३, उम ७२८ टी) । वत्त वि
[वत्त] बलनायका (पण्य १—पत्र
७२६) ।

सागार वि [सागार] गृह-युक्त, गृह-
(धामन) ।

सागारि वि [सागारि] रिक्त १
सागारि वि गृह का मासिक जगमग का
मासिक, साधु का स्थान दोहावा गृह-
शम्भार (वि ११ साधा २ २ १ ४,
मुप १ ६ १६ वीप ११६) । २ युक्त
मय बल मय की धनुषि, मयोन (मुप
१ ६ १६) । ३ गृह-वत्त से युक्त सागारि
वत्त-वत्त (साधा २ २ १ ४ २) । ४ न,
मैनुन (साधा १ ६, १ ९) । ५ वि,
शम्भार वत्त का जगमग के मासिक है
संभय वत्त-वत्त 'सागारि वि' 'मुने-वत्त'
(मग १६) ।

सागेय रेवो साकय = साकेत (साधा १
८—पत्र १११ उम ७२८ टी) ।

साह वत्त [साहय, साहय] वत्त का
विनाश करना । इह साहवत्त (विना १
१—पत्र १६) ।

साह पु [साह साह] १ शयन विनाश
(वि ११२१) । २ शयन जल-यय वत्त
वत्त (पत्र १८) । ३ वत्त काका-वत्त-वत्त
धनुषा धनो-वत्त (साधा मुना ११) ।

साहवत्त पुन [साहवत्त] वत्त काका (मुना
साहवत्त १२३) धन) ।

साहवत्त न [साहवत्त, साहवत्त] १ विनाश,
विनाश (वि १११६ उ ११६) । २ वत्त
(मुपवि ७२) ।

साहवत्त की [साहवत्त, साहवत्त] पत्र-वत्त
वत्त विनाश का कारण विनाश-कारण
(विना १ १—पत्र १६) ।

साहवत्त वि [साहवत्त साहवत्त] वत्त का
विनाश वत्त, विनाश (पुर १२, १; ६
७ ८) ।

साहवत्त की [साहवत्त] वत्त काका (वो-
कन) ।

साहवत्त रेवो साह = साह निर्विकल-वत्त-
वत्त (मुना ११) ।

२६ बी पैमा । १ घमा । ११ पिस्ता
सौसव का पेज । १२ पति-विरोध (हे १
२६) । 'स पु' [श] धर्म-योग (सुध
२ १, २६; भाषा १ २ ५ १) ।

सामाझ न [सामाधिक] संभव-विरोध
सम्भव सप्त-द्वय-विहित धर्मत्वान् (विदे
२ ६, २६) । २६ २६ २६ २६ २६ २६
पौष्ट नव) ।

सामाझ नि [सामाधिक] समाध ना
समुद्र है संभव सम्भवता सम्प (उत्त ११
२६) मुक्त ११ २६) ।

सामाझ नि [सामाधिक] धर्म-जल (मा
२६) ।

सामाझ पुं [सामाधिक] मन्त्राल् यज्ञोत्तर के
धर्म ना एक मुक्त निवेष्टे मन्त्रालिका
नदी के किनारे पर स्थित क्षेत्र में मन्त्राल्
यज्ञोत्तर को केन्द्रित हुआ था (कर्म) ।
कोी सामाघ = स्यामाक ।

सामाझि के को सामाझ = सामाधिक
(हस्त ११) ।

सामाझ के को सामाझ = समल 'को को हति
'संभव-सामाधिक-सामाधिक' (क्रम १
२) पुन २६०) ।

सामाझ पुन [सामाझ] एक क्षेत्र-विमल
(धन ११) ।

सामाझि नि [सामाधिक] १ संतिष्ठित
जिह्व-कर्ता नन्दीक मैरिष्ठ (विदे २६०६) ।
२ पुं, एक के समल प्रविशने के को ही एक
राति (धन १० अ १ १—पत्र ११६
ज्या धीका पत्र २ ५१) ।

सामाघ धक [सामाघ] मला होना ।
सामाघ, सामाघ, सामाघि (पत्र) । वक्र-
सामाघ (पत्र) ।

सामाघ के को सामाघ = स्यामाक (पत्र) ।

सामाघ पुं [सामाघ] संभव विरोध सामा-
धिक (विदे १५११ संभव ५५) ।

सामाघारि नि [सामाघारि] धाकण्ड
करैरावा (अ) ।

सामाघाधि के [सामाघाधि] हाड का
साधार—विना-नकार (नव १ १५) अ-
व ११६) ।

सामास के को सामास = स्यामाक ।

सामासि नि [सामासिक] समाध-संभवनी
(पुन १५०) ।

सामि } नि [सामि] १ बाक धनि
सामिध } पति । २ ईश्वर, मासिक (धन
२६) विपा १ १ टी—पत्र ११; उक्त मुमा
प्राम् २६) । धी पी (महा) । १ पुं प्र-
भवनाम् (मुमा १ १) २ १० मुमा ११) ।
५ धमा मुप । २ धर्मा पति (महा) ।
कुट्ट पुं [कुट्ट] ऐश्वर्य धर्म में उत्पन्न
एकधर्म के निर-र (पत्र ७) के को सामा-कोट्ट ।
त न [त] मासिक धर्मिक (धन
२६) ध २२) । पुर न [पुर] नगर-विशेष
(अ १६० टी) ।

सामिध नि [सामिध] बाक बनाया हुआ (हे
२ २१) ।

सामिध नि [सामिध] उत्पन्न किया हुआ
(मुमा ११) ।

सामिधि के [सामिधि] १ धर्म संघति । २
द्वि (प्रश्न हे १ ५५ मुमा) ।

सामिधे न [सामिधे] कल-समुद्र (धन
११ ध १११) ।

सामिधे न [सामिधे] १ दोर-विरोध
को कल दोर की एक शाखा है । २ पुं को
उक्त दोर में उत्पन्न (अ ७—पत्र ११) ।

सामिध के को सामि (पत्र २ १; मुमा
२६३, धि सत) । धी, धी (ध १ १) ।

सामिध के को सामिधे (ध १५; १५०
महा) ।

सामीर नि [सामीर] कवीर-संभवनी (पत्र) ।

सामुद्र पुं [सामुद्र] दुर्ग-विरोध वर दुर्ग
विरोध के वर की पटी है (साम) ।

सामुद्र नि [सामुद्र] संकुल-कारणा-
'सामुद्र-विमल-सुवर्ण' (धी) ।

सामुद्र के नि [सामुद्र] वस्तु की
एकल कठिण मानवता एक वर धीर
कला प्रमुखा (अ ७—पत्र ५१; विदे
२१६१) ।

समुद्राधि नि [सामुद्राधि] प्रमुद्रय का,
समुद्रय के संभव सम्भवता (सामा १
१६—पत्र १) ।

सामुद्राधि नि [सामुद्राधि] १ विना
संभवनी विना वे लब्ध (अ ५ १—पत्र
२१२ पुन २ १ २६) । २ विना, वीर
(मा ७ १ टी—पत्र २६१) ।

सामुद्र पुं [सामुद्र] दुर्ग-विरोध (हे
२ २६) ।

सामुद्र नि [सामुद्र] १ सुद्र
सामुद्र नि [सामुद्र] धर्मनी साध का (सामा १
७—पत्र १५५ धन १ २—पत्र २११
धन ३ ५) । २ न धर्म-विरोध (सुपनि
११६) ।

सामुद्रि न [सामुद्रि] १ साध-विरोध
करीर पर के विरोध का मुद्रासुत्र का धर्म-
नामा साध (मा १२) । २ करीर की रक्षा
धर्मि नि, 'सामुद्रि-विमल-सामुद्रि'
(संभव ५२) । ३ नि सामुद्रि साध का
माला (मुद्र १) ।

सामुद्राधि के को सामुद्राधि (उत्त १
१६) ।

साय के को साय = स्या, स्यादी + क ।
साय (भाषा २, १३ १) अस्या
(व २) ।

साय के को साय = साका 'मोक्ष' संभव
धर्मि न सामुद्राधि' (पत्र २ १—पत्र
११६; पत्र १—पत्र १५) ।

साय न [साय] १ मुक्त (मन्त्र ५५) । २
मुक्त का अर्थ-मुक्त कर्म (क्रम १ ११;
२६) । ३ एक क्षेत्र-विमल (धन १५) ।

साय नि [साय] मुक्त-सेवक स ही मुक्त
की उत्पत्ति मानवता (अ ७—पत्र ५२३) ।

साय पुं [साय] एक प्रविष्ट राजा
(कल) । (सार पुन [सौर] १ मुक्त
कोश (धन ५) । २ मुक्त का वर्ण (पत्र) ।

साय न [साय] पतिव्रत मुक्त (धन
१) । के को साय = सत ।

साय पुं [साय] एक का धर्म (विदे
५१६; पत्र ११ १; अ ७६५ टी) ।

साय नि [साय] १ महाराज के का एक
नगर । २ इर (हे ५, ११) ।

साय य [साय] १ सम्भव-धर्म साध
(पत्र ५५५ कर्म) । २ सत्य, सत्य (अ

(वि ७९) ।
सापनिग्यअ वि [संयमित] विषया वृत्त्या

स्वर शक [सारण] १ लोक करना दुपस्त
करना । २ प्रकृत करना, प्रविष्ट करना ।

छत्र धोर पृष्ठ के बीच की धवलावाला
बैन पुत्र (अथवा ११: १४) वृद्ध १ वन
४)।

साक्षि न [साक्ष्य] समल-कन्या (मुच
२ १ २ २१)।

सारक्ष्य देखो सारिष्य = सारक्ष्य (वदन्)।

सरोहि नि [सरोहिम्] सरोहि-कठौ (पि
७१)।

साक्ष पुं [साक्ष, शाक्ष] १ श्वीतिष्ठ महाश्व
विशेष (अ २ १—पत्र ७८)। २ वृत्र
विशेष साक्ष वा वेद (सम ११२ शीघ्र
मुवा)। ३ वृत्र वेद। ४ किता प्राकार
(मुवा ४६७)। १ एक राजा किता महापति
साक्षिरो य (पवि)। १ पवि-विशेष (पवृ
१ १ टी—पत्र १)। ७ पुन एक देव
विपान (सम ११)। श्वेत्युक्त न [कोष्ठक]
केन्द्र-विशेष (एन)। याहण, हाण
[याहन] एक सुप्रसिद्ध राजा (विहार
१११: हे १ २११ प्रसा पि २७४ बह
मुवा)।

साक्ष देखो सार = सार (मुवा १८४) एवा
१ १९—पत्र ११९)। इस पि [पित]
बार-मुक्त (एवा १ १९)।

साक्ष न [शाक्ष] वर, पुत्र 'मायामहानपि
३ नामोय सप्तमुक्त' (मुवा १८४)।

साक्ष पुं [शाक्ष] क्षमा, बहु कम नई (मोह
८८ शिर १८८८ धर्मि माट मुक्त १४)।

साक्ष पुं देखो साक्ष = (१): 'अस्य साक्ष
अपत्य': 'अतिशयोक्ते च वे साक्षे' (पण
१—पत्र ३०) अ ८—पत्र ४२६)। 'मैत्र
वि [वृ] श्रद्धावासा (एवा १ १
टी—पत्र ४१ धर्म)।

साक्ष देखो साक्ष = शाखा। गिह, घर न
[गृह] १ मित्त-रहित घर (निष्ठ ८)। २
वज्रवाला घर (एन)।

साक्ष देखो सारक्ष्य = शारीक (एवा १
१९—पत्र ११९)।

साक्ष्यस्य न [शाक्ष्यस्य] १ शीतिष्ठ
भन वा एक साक्ष-शोध। २ दुष्टी, जम
शोधना (अ ७—पत्र ११)।

साक्षि की [वि] सारिष्य मेवा (वि ८ २४)।
साक्षि की [वि] शीघ्री निम सी (वि ८
२९ मुत्र १२)।

साक्ष्य वि [साक्ष्य] धवलावला-मुक्त पाप
मुक्त (गठक एन)।

साक्ष्यन्याय पुं [शाक्षन्याय] वृत्र-विषय
(भम ८ १ टी—पत्र ११४)। देखो
सारक्ष्यन्याय।

साक्षि की [वि] सारिका मेवा (पत्र)।
साक्षि न [वि] १ वृत्र की बाह्य धाम
(निष्ठ १४)। २ नन्वी राजा (पत्र १)।
३ रस 'अप्यक्षत्रा' वा धवलावला वा शोध
वा पाप वा' (पत्रा २ ७ २ ७)।

साक्ष्य न [सारक्ष्य] कठो के समान एक
छत्र का कार्य (पवि)।

साक्षि की देखो साक्ष्य (वर्ग १ १७
मुवा)।

साक्षि नि [साक्ष्य] धवलावला-मुक्त, पवलो
(गठक मुवा २१)।

साक्षि जिवा की [शाक्षिजिवा] साक्ष्य
साक्ष्य की } कठौ कण्ठ धारि की
बनौ हर्ष मुक्ती (मुवा ४१ १४)।

साक्षि की [वि] सारिका मेवा (पाप)
साक्षि की } या रस देव २४)।

साक्ष की [साक्ष] १ गृह, घर। २ पवि-
रहित घर (मुवा ७ २८ टी)। ३ धर्म
विशेष (विम)।

साक्ष्य देखो साक्ष्य (एन)।

साक्ष्य देखो साक्ष्य (एन)।

साक्ष्य देखो साक्ष्य (एन)।

साक्ष्य देखो साक्ष्य (एन)।

साक्ष्य देखो साक्ष्य (एन)।

साक्ष्य देखो साक्ष्य (एन)।

साक्ष्य देखो साक्ष्य (एन)।

साक्ष्य देखो साक्ष्य (एन)।

के कथित—वास का शीघ्र धवलावला (एन
जवा)। रक्षित्य की [रक्षित्य] धम
का रक्ष्य करनेवाली की कर्म-शोपी
(वास)। याहण पुं [याहन] एक
सुप्रसिद्ध राजा (सम्मत ११७)। देखो साक्ष-
याहण। सक्षिपु पुं [साक्षिपु] धवला
की एक जाति (पण १—पत्र ४७)।
सिस्व पुं [सिस्व] मत्स्य-विशेष (पाप
११)।

साक्षि नि [शाक्षि] शोमेवाला (गठक
मुवा)।

साक्षि की [शाक्षि] वर वर कर्म-
'अहि' सुप्रसिद्ध वरमन्त्रि-महापति (मुवा)।

साक्षि देखो साक्षि (एन)।

साक्षि जिवा की [शाक्षिजिवा] वर वर कर्म-
'अहि' सुप्रसिद्ध वरमन्त्रि-महापति (मुवा)।

साक्षि देखो साक्षि (एन)।

साक्षि जिवा की [शाक्षिजिवा] वर वर कर्म-
'अहि' सुप्रसिद्ध वरमन्त्रि-महापति (मुवा)।

साक्षि देखो साक्षि (एन)।

साक्षि देखो साक्षि (एन)।

साक्षि देखो साक्षि (एन)।

साक्षि देखो साक्षि (एन)।

साक्षि देखो साक्षि (एन)।

साक्षि देखो साक्षि (एन)।

साक्षि देखो साक्षि (एन)।

साक्षि देखो साक्षि (एन)।

साक्षि देखो साक्षि (एन)।

साक्षि देखो साक्षि (एन)।

साक्षि देखो साक्षि (एन)।

(मनु) । ४ माया हनुम (पण्ड २, १—ग १ १ महा) । ५ प्राय निरहि-सायन-
नोर्बन्धनिपरिष्कार सायणं विपरिष्कार
मण्डपं (कुमर २१) । ६ वि प्रतिगारक
प्रतिगारन-कर्ता (सम् १ पण्ड २२) उचि
४८) । ७ प्रतिगार विपन्न प्रतिगारन क्रिया
याम वह (पण्ड २ १—पत्र ११) । ८ देवी
क्षी [इषा] शासन की प्रविष्टाक्षी रवी
(इषा) । नृप क्षी [सुरी] वही प्रपे (वैशा
१२) ।

सायण रौक्षी साययन (कम् २ २ ५
१४ ८ १ २१ ५, ११ १ ५ ५१ पत्र
२ ४०) ।

सायणा क्षी [सायना] छिन्ना (पण्ड २
१—पत्र १) ।

साययायन न [सायन] यायान (स
४११) ।

सायय वि [शायय] निय, प्रायनपर (मण्ड
पाण्ड ५० १ मुर १ १८० प्राय १४१) ।

सायय वृ [स्थायय] दिन का यायार (वि
२, १) ।

सायय वृ [सर्पय] सरल (याभा २ १ ८
१) । नायिका क्षी [नायिका] कन्-विरोध
(पत्रा २ १ ८ १) ।

सायय वृ [वि] कन्-विरोध का पैद कीछ
क्रिया, कपास (वि ८ २३) ।

सायय न [साययान] १ पुण-स्थान-
साययन २ विरोध, द्वितीय पुण-स्थान (कम्
८ ११ ११) । २ वि द्वितीय पुण-स्थान
में बजयान जीव (सम् ११ सम् २५) ।

सायि वि [सायिन्] पाय-उपयत्ना (छु
५) ।

सायि वृ (क्षी) वि [सायि वृ] रमण-कर्ता
क्रिया-कर्ता (मवि २१४) ।

सायि वृ सायि (विशा १ ७—पत्र
३३) ।

सायय यो माय (मुर १ १७५ १
१११ निरि १८६) ।

सायय न [भाग्य] ययु-यह (मुर १
११५) ।

सायय (या) रौक्षी सायय = ययु (मवि) ।

सायु क्षी [सायु] मायु पाय यया पत्नी
की माता (याम पत्र १७ ४ या १११) ।

सायु वि [सायु] ययु-यह मलय
(मुर १ ११० ज ७२० टी) ।

सायु क्षी [वि] ययु-यह माय-यही यय
की बनी हुई नरक्षी (पत्र) ।

साय वृ [कय-शास] कय ।
साय, साय (वि ४ २ उय कय महा) ।

साय, साय (महा) । ययि सायि, सायि
सायि-यामो (महा याभा १ ४ ४ ४) ।

यय सायैव सायैव (वि १८० कय
१ मुर १ ११२) । कय सायि-यय, सायि-यय
सायि-यय सायि-यय सायि-यय
(यय मुर १ ३ गुया २ ५, यय गुया
२११ साय ४२ यय) । यय सायि-यय
सायैव (यय) । यय-सायि (यय
महा) । क-सायि-यय, सायि-यय (यय
मुर १ १४४) ।

साय रौक्षी सयय = यय । क सायि-यय
(यय) ।

साय वृ [साय] १ छिन्न करना बनाना ।
२ यय में करना । साय, साय, सायि
(यय कय यय प्राय २० महा) । यय
सायि सायि सायि-यय (मुरि १२०
महा मुर ११ ८२) । कय सायि-यय
(मण्ड) । यय-सायि (महा) । क साय
यय सायि-यय सायि-यय (या ११
पत्र १७ १ मुर १ २८) ।

साय वृ [वि] १ यय-यय । २ यय-यय
यय । ३ यय-यय, यय की यय (वि ८
११) । ४ यय-यय (यय ४०) ।

साय (यय) यय सय = यय (वि ४
१११ गुया) ।

साय-यय } वृ [वि] मोयु, यय (वि
साय-यय } = २०) ।

साय-यय क्षी [साय-यय] यय-यय
(विशा १ ४—पत्र १८) ।

साय वि [साय-यय] यय-यय
यय-यय (यय १ ८ टी—यय
११५ कय यय २३ गुया ८० यय-यय
७ वि २) ।

साय वि [यय-यय] यय-यय
यय-यय (यय १ ८ टी—यय
११५ कय यय २३ गुया ८० यय-यय
७ वि २) ।

साय वि [यय-यय] यय-यय
यय-यय (यय १ ८ टी—यय
११५ कय यय २३ गुया ८० यय-यय
७ वि २) ।

साय वि [यय-यय] यय-यय
यय-यय (यय १ ८ टी—यय
११५ कय यय २३ गुया ८० यय-यय
७ वि २) ।

साय वि [यय-यय] यय-यय
यय-यय (यय १ ८ टी—यय
११५ कय यय २३ गुया ८० यय-यय
७ वि २) ।

साय वि [यय-यय] यय-यय
यय-यय (यय १ ८ टी—यय
११५ कय यय २३ गुया ८० यय-यय
७ वि २) ।

साय वि [यय-यय] यय-यय
यय-यय (यय १ ८ टी—यय
११५ कय यय २३ गुया ८० यय-यय
७ वि २) ।

साय वि [यय-यय] यय-यय
यय-यय (यय १ ८ टी—यय
११५ कय यय २३ गुया ८० यय-यय
७ वि २) ।

साय वि [यय-यय] यय-यय
यय-यय (यय १ ८ टी—यय
११५ कय यय २३ गुया ८० यय-यय
७ वि २) ।

साय वि [यय-यय] यय-यय
यय-यय (यय १ ८ टी—यय
११५ कय यय २३ गुया ८० यय-यय
७ वि २) ।

साय वि [यय-यय] यय-यय
यय-यय (यय १ ८ टी—यय
११५ कय यय २३ गुया ८० यय-यय
७ वि २) ।

साय वि [यय-यय] यय-यय
यय-यय (यय १ ८ टी—यय
११५ कय यय २३ गुया ८० यय-यय
७ वि २) ।

साय वि [यय-यय] यय-यय
यय-यय (यय १ ८ टी—यय
११५ कय यय २३ गुया ८० यय-यय
७ वि २) ।

साय वि [यय-यय] यय-यय
यय-यय (यय १ ८ टी—यय
११५ कय यय २३ गुया ८० यय-यय
७ वि २) ।

साय वि [यय-यय] यय-यय
यय-यय (यय १ ८ टी—यय
११५ कय यय २३ गुया ८० यय-यय
७ वि २) ।

साय वि [यय-यय] यय-यय
यय-यय (यय १ ८ टी—यय
११५ कय यय २३ गुया ८० यय-यय
७ वि २) ।

साय वि [यय-यय] यय-यय
यय-यय (यय १ ८ टी—यय
११५ कय यय २३ गुया ८० यय-यय
७ वि २) ।

साय वि [यय-यय] यय-यय
यय-यय (यय १ ८ टी—यय
११५ कय यय २३ गुया ८० यय-यय
७ वि २) ।

साय वि [यय-यय] यय-यय
यय-यय (यय १ ८ टी—यय
११५ कय यय २३ गुया ८० यय-यय
७ वि २) ।

साय वि [यय-यय] यय-यय
यय-यय (यय १ ८ टी—यय
११५ कय यय २३ गुया ८० यय-यय
७ वि २) ।

साय वि [यय-यय] यय-यय
यय-यय (यय १ ८ टी—यय
११५ कय यय २३ गुया ८० यय-यय
७ वि २) ।

साय वि [यय-यय] यय-यय
यय-यय (यय १ ८ टी—यय
११५ कय यय २३ गुया ८० यय-यय
७ वि २) ।

साय वि [यय-यय] यय-यय
यय-यय (यय १ ८ टी—यय
११५ कय यय २३ गुया ८० यय-यय
७ वि २) ।

साय वि [यय-यय] यय-यय
यय-यय (यय १ ८ टी—यय
११५ कय यय २३ गुया ८० यय-यय
७ वि २) ।

साय वि [यय-यय] यय-यय
यय-यय (यय १ ८ टी—यय
११५ कय यय २३ गुया ८० यय-यय
७ वि २) ।

साय वि [यय-यय] यय-यय
यय-यय (यय १ ८ टी—यय
११५ कय यय २३ गुया ८० यय-यय
७ वि २) ।

साय वि [यय-यय] यय-यय
यय-यय (यय १ ८ टी—यय
११५ कय यय २३ गुया ८० यय-यय
७ वि २) ।

साय वि [यय-यय] यय-यय
यय-यय (यय १ ८ टी—यय
११५ कय यय २३ गुया ८० यय-यय
७ वि २) ।

साम्राज्य] देवो ज्वर का दूध का घरे (घम १०)।

साम्राज्य न [साम्राज्य] छीक छह से बारह कण्टा टिकमा 'धक्कमे पक्कमे संकुचए बहारए कम्मसाइएकहुम' (भाषा १ = ८, १२)।

साम्राज्य न [स्वाम्राज्य] सहाय करना ज्वर करना (घम ११)।

साम्राज्य न [संहरण] संकोषन संवेदन (विशे १ १२)।

साम्राज्य न [संचारण] छीक छह बाण्ड किया हुआ (यवि)।

साम्राज्य न [स्वाम्राज्य] स्वभाव छिड़, मैसिक कुमारी (पा २२२, बरका कम्म मुना ४२१)।

साहि दु [शासित] बुझ पड़ (वाम, यण ज ३ १११)।

साहि दु [दे] १ ठक देत का सामन्त राजा 'जो धक्कस नाम बूझ'। छह जे सामन्त जे कम्मिछो मण्डलि' (मम)। २ देवो साही (वि ५, ६ से १२, १२)।

साहि (घम) देवो सामि = स्वामिन् (विम)।

साहि न [कथित, सासित स्वाकपाठ] बहा हुमा, जह प्रतिपाठि (मुना २०६ मुर १ २ ४ बरका वाद्य भाषा)।

साहि न [साधित] छिड़ किया हुआ निपाठित (संत ११, मुर ६ ६६, यवि)।

साहि न [साधिक] सविषय, साधिक (कम्म मुना २०६)।

साहि न [स्वाहित] स्वाहित से विच्छिन्न मित्र का धर्मि (मुना २०६)।

साहि न [साधिकारण] १ धर्मकारण-बुद्ध (मि १)। २ कम्महु कला मयकण (म ३-प ११२)।

साहि न [साधिकारण] धर्मिकरण बुद्ध, ठपेर धर्मि धर्मिकरणकाला (म ११ १-प ११२)।

साहि न [साहि न] देवो साहि न (घम)।

साहि न [साहि न] देवो साहि न (म ११, १ १-प ११२)।

साहि न देवो साहि न (म ११ मुना २ १ मय बुझ ११)।

साहि न देवो साहि न = कम्म।

साहि न देवो साहि न = वाप।

साहि न (घम) वि [कथित] कहेवाला (घम)।

साहि न [साहित्य] धर्मिकारण-काला (मुना १ २ ४२१)।

साहित्य न [दे] देवो साहि न = कम्म।

साहित्य न [साहित्य] साहित्य (घम)।

साहित्य न [साहित्य] साहित्य (घम)।

साहित्य न [साहित्य] साहित्य (घम)।

साहित्य न [साहित्य] साहित्य (घम)।

साहित्य न [साहित्य] साहित्य (घम)।

साहित्य न [साहित्य] साहित्य (घम)।

साहित्य न [साहित्य] साहित्य (घम)।

साहित्य न [साहित्य] साहित्य (घम)।

साहित्य न [साहित्य] साहित्य (घम)।

साहित्य न [साहित्य] साहित्य (घम)।

साहित्य न [साहित्य] साहित्य (घम)।

साहित्य न [साहित्य] साहित्य (घम)।

साहित्य न [साहित्य] साहित्य (घम)।

साहित्य न [साहित्य] साहित्य (घम)।

साहित्य न [साहित्य] साहित्य (घम)।

साहित्य न [साहित्य] साहित्य (घम)।

साहित्य न [साहित्य] साहित्य (घम)।

साहित्य न [साहित्य] साहित्य (घम)।

साहित्य न [साहित्य] साहित्य (घम)।

साहित्य न [साहित्य] साहित्य (घम)।

साहित्य न [साहित्य] साहित्य (घम)।

साहित्य न [साहित्य] साहित्य (घम)।

साहित्य न [साहित्य] साहित्य (घम)।

साहित्य न [साहित्य] साहित्य (घम)।

साहित्य न [साहित्य] साहित्य (घम)।

साहित्य न [साहित्य] साहित्य (घम)।

साहित्य न [साहित्य] साहित्य (घम)।

साहित्य न [साहित्य] साहित्य (घम)।

साहित्य न [साहित्य] साहित्य (घम)।

साहित्य न [साहित्य] साहित्य (घम)।

साहित्य न [साहित्य] साहित्य (घम)।

साहित्य न [साहित्य] साहित्य (घम)।

साहित्य न [साहित्य] साहित्य (घम)।

सिंहूरिम् वि [सिंहूरि] सिंहूर-मुक्त ।
इषा (य १) ।

2) 1

यश-कुमार (ज १८९६ ई) । १ एक राजा
(चरण २६) । ४ भावान् महावीर का एक

दुष्कारिणः [३८] चन्द्रमाला (विष्णु १५)।

पञ्चक पुं [पञ्चक] १ गृह की छत्र
पीठ की छत्र कहना। २ छत्र-विशेष
(विप)। सज न [सज] धातु-विशेष
पञ्चम उच्च-परी (महा)। देवो सीह।

सिद्ध पुं [सिद्ध] १ धर्म-विशेष सिद्ध
हीन लोकाधीन (क-पुर ११ २३ २०)।
२ दुष्टो, सिद्ध-हीन का विनाशी (वीर)।
औ 'सि' (वीर) छाया १ १—पञ्च १०)।

सिद्धिमा श्री [सि] सिद्धा, मोटी (पाम)।
सिद्धिणी श्री [सिद्धिनी] छत्र-विशेष (विप)।
सिद्धिमूर्त न [सिद्धिमूर्त] छत्र-विशेष
आदिन प्राप्ति की विशेषता—परिभाषा
(वीर १२)।

सिद्धा श्री [सिद्धा] बाहु रेश (पुन्य
सिद्धा १२० टी पञ्च ११२ १० विप
१०११)।

सिद्ध पुं [सिद्ध] होठ का छत्र नाम (वि
१ २०)।

सिद्धा पुं [सिद्धा] सिद्धा, सीका सीका,
उसी की बनी कोष्ठमुद्रा एक चीन की छत्र
में लटकायी जाती है और छत्रों चीन छत्र
की जाती हैं जिसे छत्रों चीन छत्रों न करें
और छत्र सिद्धी न जान (पञ्च ११ उपा
सिद्ध १) धातु ११ टी)।

सिद्ध पुं [सिद्ध] बरिष्ठ अधिकार 'कोर
अन्तरिम वरिष्ठसिद्धि' पर बरिष्ठ
(मुद्रा १)।

सिद्ध देवो सिद्धा (पञ्च ११ धातु ११
टी ४ २०१)।

सिद्धा को [सिद्धा] बरिष्ठ दुष्कृत 'सक-
सिद्ध' (ब १११)।

सिद्धिभ न [सिद्धिभ] अनुपम वे अन्त
पञ्चम (ब ११२)।

सिद्धिमा श्री [सिद्धिमा] ब्रह्म का
धर्म-विशेष (विप १००)।

सिद्धा पुं [सिद्धा] १ ध्यातु की ध्यातु
(ब १२१ धीन बरिष्ठ धातु—मुद्रा ११२)।
२ हाथी की सिद्धा 'पुन्यवर्धिसिद्धि'—
'सिद्धा' बरिष्ठ-विशेष 'सिद्धा' बरिष्ठ-
(उपि ११)।

सिद्धिमा श्री [सिद्धिमा, सिद्धिमा] उसी
की बनी हुई एक चीन को बरिष्ठ के काम
में जाती है (विप १२४)।

सिद्धा धन [सिद्धा] सीका पञ्च
ध्यातु करना। सिद्धा (ब १००—१२४)
सिद्धा सिद्धा (ब ११२) दुष्ट ४)।
सिद्धा सिद्धा (ब १००)। बरिष्ठ
सिद्धा सिद्धा (ब १००—मुद्रा १२४)
वि ११० पुन १ १४ १)। सिद्धा सिद्धा
(ब १००—मुद्रा २१)। सिद्धा सिद्धा (ब
११२)।

सिद्धा श्री सिद्धा। बरिष्ठ सिद्धा
(पञ्च २ १२)। सिद्धा (पञ्च
१२ २)।

सिद्धा वि [सिद्धा] सिद्धा-कर्ता, 'सिद्धा'
सिद्धा वं परिभाषा सिद्धा (देवा)।

सिद्धा पुं [सिद्धा] मुद्रा सिद्धा (मुद्रा
११)।

सिद्धा न [सिद्धा] १ ध्यातु पञ्च
(मुद्रा २१)। २ सीका, उपरिष्ठ (पुर ४,
११)। ३ ध्यातु पञ्च (विप १०१)।

सिद्धा देवो सिद्धा। सिद्धा (ब
११ १२४)। बरिष्ठ सिद्धा (मुद्रा
११२)। सिद्धा सिद्धा (मुद्रा
२ ४)।

सिद्धा वि [सिद्धा] सिद्धा केनामा
पञ्चम सिद्धा (ब ११)।

सिद्धा वि [सिद्धा] १ सिद्धा
मुद्रा, पञ्चम मुद्रा (ब ११२)। २ न
सिद्धा केना, ध्यातु करना ध्यातु (मुद्रा
२१)।

सिद्धा श्री [सिद्धा] १ उपा बरिष्ठ (मुद्रा
११)। २ देव का एक ध्यातु बरिष्ठ के
ध्यातु ध्यातु ध्यातु-विशेष, ध्यातु के
सक की ध्यातु केनामा छत्र, 'सिद्धा'
बरिष्ठ-विशेष (ब ११२) ध्यातु करना
ध्यातु)। ३ छत्र ध्यातु ध्यातु ध्यातु
सिद्धा ध्यातु सीका सिद्धा, उपरिष्ठ
(वीर ११ नडा मुद्रा ११०)। बरिष्ठ न
[सिद्धा] बरिष्ठ-विशेष 'सिद्धा' ध्यातु
ध्यातु बरिष्ठ (वीर ध्यातु मुद्रा १४)।
'बरिष्ठ न [सिद्धा] सिद्धा-ध्यातु (वीर)।

सिद्धा (ध्यातु) श्री [सिद्धा] ध्यातु-विशेष
(विप)।

सिद्धा न [सिद्धा] ध्यातु-विशेष
उपरिष्ठ केनामा छत्र (ब ११)।

सिद्धा धन [सिद्धा] सिद्धा पञ्च,
ध्यातु करना। सिद्धा (वि ११२)।
वि सिद्धा (विप ११२)। बरिष्ठ सिद्धा-
देवा (वीर)। सिद्धा सिद्धा-विशेष,
सिद्धा-विशेष, सिद्धा-विशेष (ब १२,
१—पञ्च ११; बरिष्ठ ध्यातु १ ४० टी)।
सिद्धा (ब ११) सिद्धा-विशेष (ब ११,
प्रक ११)।

सिद्धा न [सिद्धा] सिद्धा, ध्यातु,
विशेष (मुद्रा २ ११) ध्यातु ११)।
सिद्धा ध्यातु श्री [सिद्धा] ध्यातु केना
(मुद्रा १२०; उप ११ टी)।

सिद्धा वि [सिद्धा] सिद्धा मुद्रा
(ध्यातु पञ्च ११२; ध्यातु १ १—पञ्च
१ ११—पञ्च १११)।

सिद्धा वि [सिद्धा] सिद्धा मुद्रा,
ब्रह्म, सिद्धा (ध्यातु १ १४—पञ्च
१२०) ध्यातु)।

सिद्धा वि [सिद्धा] ध्यातु की
ध्यातु, ध्यातु (ब १११)।

सिद्धा श्री [सिद्धा] ध्यातु-विशेष (विप)।
सिद्धा देवो सिद्धा-विशेष (ब ११,
१४)।

सिद्धा श्री सिद्धा (उपा)।

सिद्धा देवो सिद्धा (उपा)।

सिद्धा देवो सिद्धा (उपा)।

सिद्धा वि [सिद्धा] १ ध्यातु बरिष्ठ (ब १,
२०; ध्यातु २१)। २ ध्यातु ध्यातु बरिष्ठ
(ब ४)।

सिद्धा पुं [सिद्धा] ध्यातु विशेष ध्यातु का
देव (ब १ २; पाम)।

सिद्धा न [सिद्धा] १ बरिष्ठ ध्यातु। २ वि,
सीका-मुद्रा लघु-मुद्रा (ध्यातु लघु ११,
वीर)। ध्यातु ध्यातु १ २१ १ ११
मुद्रा २)।

सिद्धा पुं [सिद्धा] बरिष्ठ, ध्यातु (ध्यातु
ब १२१ ध्यातु ४११)।

निरुद्ध (सम १२४ पृ ७) । ३ पाखरें
बधरेश का पूर्बमनीय नाम (पृ २
१२१) । बंधा की [बन्धन] एक
गुणधरिणी (इक) । २ एक राज-मन्त्री (ज
६५६ टी) । बहूत [बहुत] एक वैद
पुत्रि (कन्य) । गंधार [नगर] बैठाका
की बहिरा-मेली का एक निवासरूप (इक) ।
देवी नयर । निरुद्ध न [निरुद्ध] ।
बैठाका की बहिरा-मेली में स्थित एक
निवासरूप (इक) । निरुद्ध न [निरुद्ध] ।
बैठाका परत की बहिरा-मेली में स्थित
एक नगर (इक) । बैठाका की निरुद्ध
[निरुद्ध] एक गुणधरिणी (इक) । निरुद्ध
पु [बन्धन] निरुद्ध कीरुद्ध (कुमा) ।
ठाकी की [ठाकी] बृज-विरोध (कन्य) ।
बत्त पु [बत्त] ऐरावत बर में उत्पन्न
पौरवें विर-देव (पृ ७) । दाम न
[दामन] १ शोभावाली मन्त्रा (ज २) ।
२ बाणरुद्ध-विरोध (मन्त्र) । ३ पु एक
राजा (विवा १ ९—पृ १४) । दामरुद्ध
दामरुद्ध पुन [दामरुद्ध] १ शोभावाली
मन्त्रा (ज २) । २ एक देव
विमान (सम १२) । दामरुद्ध पुन
[दामरुद्ध] १ शोभावाली मन्त्रा (ज २) ।
बधरेश (कन्य) । देवी की
[देवी] १ देवी-विरोध (पृ १) । २ लक्ष्मी
(धर्म १४०) । देवी-निरुद्ध पु [देवी-
निरुद्ध] कन्येश (धर्म १४०) । निरुद्ध
पु [निरुद्ध] १ बाधन । २ वि. की दे
लघु (गुण २११ पृ १ टी) । नयर
न [नगर] बंधार देव का एक छतर
(कुमा) । प्यो लयर । निरुद्ध पु [निरुद्ध] ।
बाधन (पृ १४, १) । देवी निरुद्ध ।
पट्ट पु [पट्ट] नगर-देवी का नगर एक
राज-विह (गुण २११) । पयस्य पु
[पयस्य] परत विरोध (गुण २११) । पट्ट
पु [पट्ट] एक ब्रह्म देव ध्याता की
बन्धन (धर्म १२२) । पयस्य देवी
बाधन (धर्म १४) । पट्ट पु [पट्ट]
विद-नगर (कुमा) । प्यो दस । नूर पु
[नूर] नगर-देवी में होनेवाले छतर
बन्धन (पृ १४) । म देवी

मंद (उप १ ४४) । मई की [मई]
१ हनुमान-विवासर-राज की एक पत्नी
(पृ १ १) । २ एक राज-पत्नी (महा) ।
३ एक सारंग-कन्या (महा) । मंगल
पु [मंगल] स्थित पाठ का एक देव
(ज ७६ टी) । मंद वि [मन्] १
शोभावाली शोभा-पुत्र (कुमा) । २ ५,
मिह ब्रह्म । मन्त्र ब्रह्म । ४ विदुष । ५
विद मन्त्रेश । ६ पाल कुमा (है २
१२१ पृ) । मन्त्र न [मन्त्र] ।
बैठाका की बहिरा-मेली में स्थित एक
निवासरूप (इक) । महिष पुन
[महिष] एक देव-विमान (सम २७) ।
महिषा की [महिषा] एक गुणधरिणी
(इक) । माछ पु [माछ] एक प्रसिद्ध
नगर (गुण १४१) । माछपुर न [माछपुर]
एक नगर (गुण १४१) । पट्ट देवी कंट
(बद्ध) । पट्ट देवी कंटक (पृ १
१—पृ ७) । पट्ट पु [पट्ट] कीरुद्ध
बाधन (सम ७२) । बद्ध पु [बद्ध]
१ विरोध या विरोधियों के हनुमान का
एक उच्च धरमवाकर विह (मन्त्र सम
१२१ महा) । २ मन्त्र देवकी के हनुमान का एक पारिवारिक विमान (ज ८—पृ
४४०) । ३ एक देव-विमान (पृ १२
देव १४ धीर) । पट्टा की [पट्टा]
मन्त्रा देवी-मन्त्रा की उच्च-मेली (पट्ट
१) । बहिन न [बहिन] लक्ष्मी
देवकी का एक विमान (पृ १) । पट्ट
न [पट्ट] एक पद्या (पट्ट ४) । पट्टा
की [पट्टा] बृज-विरोध (पृ १—पृ
११) । पट्ट (पृ १) देवी मंद (महि)
पट्ट पु [पट्ट] एक राजा (पृ २,
१४) । पट्ट पु [पट्ट] पट्ट-विरोध (है १
१७: १२ टी) । बहिन न पु [पट्ट]
पट्ट ऐरावत बर में होनेवाले लक्ष्मी
विरोध (पृ ७) । बाध पु [बाध] १
एक प्रसिद्ध नगर (मिह ११) । २
राजा विद-पट्ट के लक्ष्मी का एक देव बहिन
(गुण १११) । लक्ष्मी की [लक्ष्मी]
पट्ट की लक्ष्मी पट्ट (गुण १४) ।
लक्ष्मी पु [लक्ष्मी] ऐरावत बर में

उत्पन्न बृज-विरोध (पृ ७) । "सेव पु
[सेव] एक राजा (ज ६५६ टी) । "सेव
पु [सेव] लक्ष्मी (पृ १७ ११) ।
सेव पु [सेव] मन्त्रा-पट्ट में होनेवाला
राजा (पृ १२४) ।
"सेव न पु [सेव न] एक देव
विमान (सम २७) । हर न [हर]
मन्त्र (पृ २५) । हर पु [हर] १
मन्त्रा-पट्टा का एक पुत्रि-पट्ट । २
मन्त्रा-पट्टा का एक बृज-पट्ट । ३
मन्त्रा (कन्य) । ४ मन्त्रा-पट्ट में पट्ट
उत्पत्ति का कन्य में उत्पन्न बर में विरोध ।
५ ऐरावत बर में वर्तमान मन्त्रा-पट्ट का कन्य
में उत्पन्न बर में विरोध (पृ ७: ज
६५६ टी) । ६ बाधन (पृ १७ १४
पृ) । हर वि [हर] की का हर
करेवाला (कुमा) । हर न [हर]
मन्त्र पट्ट (पट्ट) देवी पट्ट ।

सिरिख पु [सिरिख, धीयक] लक्ष्मी का
छोटा भाई कीरुद्ध का एक मन्त्रा
(पट्ट) ।

सिरिख न [सिरिख] लक्ष्मी-पट्टा (पृ ७१) ।

सिरिख पु [सिरिख] विद, मन्त्र, मन्त्र (पृ
१२) ।

सिरिख पु [सिरिख] पट्टा का पट्ट-पट्ट
(पट्टा ११ १२) ।

सिरिख वि [सिरिख] मन्त्र-पट्ट विरोध मन्त्र में
मन्त्र ही मन्त्र (पृ १२) ।

सिरिख देवी सिरि (पृ १२१) ।

सिरिख की [सिरिख] कन्य-विरोध (पृ
१६, १७) ।

सिरिख पु [सिरिख] देवी लोपा पट्टा (पृ
११) ।

सिरिख पु [सिरिख] देवी लक्ष्मी (पृ १२, १२) ।

सिरिख देवी सिरि-पट्ट ।

सिरिख पु [सिरिख] १ बृज-विरोध सिरिख
का पट्ट (सम १२१ है १ १ १) । २ न.
सिरिख का पुत्र (कुमा) ।

सिरी की [सिरी] १ लक्ष्मी कन्या (गुण
कुमा) । २ पट्ट बृज-विरोध विमान (गुण
कुमा) । ३ लक्ष्मी (पट्टा पट्टा) । ४

पु. = पुत्र । १ परव । १ पिबन्-पुत्र ।
११ मनुष्या-पुत्र । १८ बकरे का रोम ।
११ वि पिपा-पुत्र (पणु १४२) ।

सिद्धि पुं [दि] कुट्टुट् मुर्ध (दे ८ २८) ।

सिद्धि वि [रुद्धित] धर्मलपित (कुमा) ।

सिद्धि पुं [दि] स्तन वन (दे ८, ११
मु १ १ नाप पर रंया मुग १२
अब हम्परे १ सम्मत १११) ।

सिद्धि धी [शिम्बिनी] धन्व-विरोध
(पिप) ।

मिही (पप) धी [सिही] धन्व-विरोध
(पिब) ।

सी (स्य) धी [क्षी] धन्व-विरोध (पिप) ।
देखो सिरी ।

सीध घट [सध] १ पिवाह करना घेर
करना । २ बहना । ३ पोरित होना कुची
होना । ४ बहना पल्ल लगना । सीधह,
सीधति (वि ४८२; भा ४७४) क्या सीधति
घोष' (नि ८२) 'साधति य सधसंघाह
(मु १२ २) । पध साधति (पाप ३ ७
मुग ११ । कुत्र ११८) ।

सीध न [दि] सिस्वक मोम (दे ८ ११) ।

सीध वि [स्वाय] स्वकीय, निज का 'सीपा
स्वेस्साहसादण्डुण्ण' सीधोपिण्णा वेप
नेसा' (पम ११—पम १११) ।

सीध देखो सिध = सिध सीधाहीध (पम) ।

सीध पुं [साध] १ परध-विरोध ठंडा स्या
(अ १—पम २२; पम १) । १ दिव
मुदिन (म १ ४३) । १ छोट-बाल (पम) ।

४ ठंड, जाड़ा (अ ४ ४—पम २८७) धी
पम २८ २ १) । १ बन्ध-विरोध शाव
तारों का बाल मुड कर्म (पम १ ११
४२) । १ वि शयन ठंडा (पम, सी
पम १ १ टी—पम ४) । ७ पुं प्रथम
नरक का एक नरक-व्यस (दे ४४ ४) ।

८ धान-विरोध धानदिन का (संघ २८) ।

९ वि धनुस्त्र (मुग १ २ २, २१) ।

१० म. मुम (पापा) । पर न [गृह]
पमस्ये का बर्धन-विरोध बध पर, जहां न
बधु वि तर्क सी धनुस्त्रा हतो दे (पम १) ।

स्यावि [स्यार] धान्य फलसगा

(सीध लापा १ १ टा—पम ४) । परसह
पुं [परापह] खेत का सड़ना (उत २

१) । फास पुं [स्यरा] ठंड जाड़ा सीध

(पापा) । सीआ धी [भोता साता]
मधो-विरोध (इका अ १ ४—पम १११) ।

स्योधध पुं [स्योकर] १ बन्धना । २

छोटकाल दिव बधु (म १ ४३) ।

सीध देखो सीआ = सीधा । पसाय पुं

[पसाय] इह-विरोध जहां शावा मधो पहाड़

पर म पिच्छो है (अ २ १—पम ७२) ।

सीध देखो सीआ = सीधा (कुमा) ।

सीधउरय पुं [दि सीमाररु] धन्व-विरोध

'धन्वसीधउरय हवह धन्व जनासय म बोध ये'
(पणु १—पम १२) ।

सीअध म [सधन] हेलो (सम्मत १११) ।

सीअजय म [दि] १ धूप-गाथे धूप रोहने

का पात्र । २ शयनाय, मयल (दे ८ २२) ।

साभर पुं [सिभर] १ पल्ल म धिग जल

कुआर जल-कण (ह १ १८६ गडक कुमा

मणु) । २ पात्र, पत्र (ह १ १८६ ग्राह
म ४) ।

साअरि वि [साअरि] शोभ-पुत्र (पम) ।

सीअध पुं [सीअध] १ वरमान धनकीणी

बाध क शयें जिन-वेर (जम ४१ पवि) ।

२ इण्ड पुन-विरोध (मुग २ १) । १ वि

ठंडा (दे १ १) । मुग गडक सयल २३) ।

साअरिधा धी [साअरि] १ ठंडा धनप;

सीधति धनपेयें धिनधमि (जम १२—
पम १११) । २ मुआ-विरोध (पम) ।

साअरिध पुं [दि] १ दिवकाल का दुलिन ।

२ धन-विरोध (ह ८ २६) ।

सीआ धी [सीआ] १ एक मगन-य (पम

२३ १ २ १६) २ ईशान्याय-नामक

धुनिग मधिन-य (इक) ३ सजाना

इह को विपत्तिरो देहा (ह ४) । ४ नाव

परा का एक छिपर । ५ मा २१५ उ का

एक दु (इक) । ६ धिय दसक पर धुने

का । ७ मुमा दरी (अ ८—पम १११) ।
मु ८ न [मुग] एक वन (ह ४) ।

सीआ धी [सीआ] १ बन्ध-पुत्र, धन पध

(पम १ ८९) । २ बन्ध-समुद्र को

माहा का नाम (पम २ १८६ मम

१२२) । ३ साधन-मयित धन में हल

बलन से हतो मुनि-देहा (दे २ १ ४) ।

४ ईशान्याय नामक धुनिरो (उत ३९

१२ धेय ७२२) । ५ सीध ठा माव

बधु पत्नी का छिपर-विरोध (इक) । ७ एक

दिमुमा देखो सीध (अ ८) ।

सीआ देखो सि पग (कपा धीग सय

१२२) ।

सीआय देहा मगाण = शयण (दे २ ८९

म ७) ।

सीआर देखो सिभार (लापा १ १—पम

१११) ।

सीआय ध [सतप-गारिण] सैवानोम

७३ (कम १ २१) ।

सीआयेत धीन, आर देयो (वि ४८२;

४८८) । धी सा (मुग २ १—पम

२१) ।

सीआय घट [साधय] धिपिन करना,

सीपादेर विदार' (पणु १ २१) ।

सीआ धी [दि] म्मी निण्ठर वृष्टि (दे

८ १४) ।

साधय वि [साध] गिर परिपाव (म ८२) ।

साह धी [दि] सीरी निभ पि (नि ८०) ।

साउगाय वि [दि] मुगाव (८ ८ १४) ।

साहट न [दि] दिवकाल का दुलिन (पम) ।

माहट न [सीगाण] १ ठंडा तथा पध ।

२ धनुस्त्र वध ब्रह्म (मु १ २ २

२२ वि १११) ।

सीअन 'पा साउट' (पम) ।

साआन देहा स जाआ । पसाय पुं

[पसाय] इह-विरोध जहां ध्यात मध

पहाड़ म विराट दे (ह ८—पम १ ३) ।
१ २ पुं [साय] धन-विरोध (म ४—पम

१ ३) ।

सीआन धी [साय] १ एक मगन-य

(अ २ १—पम २३) २ एक वध २३

१ २) । २ तिर पति का एक दुट (अ

८—पम १२४) ।

माहधध धी [दि] माध, धा बंधन (विदर

१६) ।

सीछ देवो सीछ = सीछ (अ १ ४—पत्र १११)।

सीछा देवो सीमा = छेला कोछा (अ ५—पत्र ४११; ६—पत्र ४२४)।

सीछाब्जस देवो सोभाब्जस (गुण २ ३—पत्र २१)।

सीछोद् देवो सोओद् (अ २ ३—पत्र ७२)।

सीछोद्वा, देवो सीओभा (पत्र २ ४—सोछोवा) पत्र ११; सम ४७)।

सीछन न [सचन] सैचिय, प्रनतता (पंचा १२, ४६)।

सीछु देवा सीछु (लघा १ १९—पत्र २ ६ पत्र)।

सीभर देवो सीभर (आश कुमा) हे १ १८५ ब४)।

सीमर नि [स] सयान, गुण्य (अनु १११)।

सीमआ ओ [सीमम्] १ मर्यादा। २ प्रवृत्ति। ३ स्थिति। ४ धर्म। ५ सेवा, समन। ६ मर्यादोक्त पंथा (ब४)। देवो सीमा।

सीमर दु [सीमर] १ रत्न धर्मस्थली कर्म में उत्तम एक मुक्तकर पुत्र का नाम (पत्र ३ २३)। २ ऐश्वर्य क्षेत्र के धनी प्रतीय मुक्तकर (अनु ११३)। ३ नि मर्यादा-वर्ती (गुण २ १ १३)।

सीमन ४ [सीमन्] १ बालों में बगई हुई रेशा-विशेष (अ १ २; ब४अ अ ७२५ टी)। २ स्वर कर्म (ब४अ ४२)। ३ पत्र में लगी हुई मुक्ति का घट्टा सीमा बंध का पर्यंत मान (ब४अ २७३; २७४ अ ७२५ टी)। ४ सीमा का घट्टा, हवा 'एवो निच सीमो कुलात्त दुई कुंरिण' (ब४अ)।

सीमन पु [सीमन्] १ सीमा का घट्टा मान सीध का वर्तमान मान (ब४अ १६७ ४ २)। २ हृद (ब४अ ४४३)।

सीमन ब४ [स सीमास्वय] बेचप। संज्ञा सामिज्य (पत्र)।

सीमना, पु [सीमास्व] कर्म नरक-मुक्ति सीमना ५ का कला-नरक नरक-स्वाम (पत्र १ अ १ १—पत्र ११३; अ ६०)।

पत्र १ पु [पत्र] सीमनक नरकावास की पूर्ण तरफ स्थित एक नरकावास (देव २ १)। मरिगम पु [मरयम] सीमनक की उत्तर तरफ स्थित एक नरकावास (देव २ १)। त्रिदुष्ट पु [त्रिदुष्ट] सीमनक की दक्षिण दिशा में स्थित एक नरकावास (देव २ १)। त्रिदुष्ट पु [त्रिदुष्ट] सीमनक की दक्षिण तरफ का एक नरकावास (देव २ १)।

सीमंतय न [स] सीमंत—बाजों की रेखा-विशेष में पहना जाता धर्मकार-विशेष (अ ५, १२)।

सीमविम नि [सीमविम] बरिष्ठ विम (पत्र)।

सीमविपी ओ [सीमविपी] ओ भाटी मछिआ (पत्र; अ ७२८ टी) अमर १११ गुण ७)।

सीमर पु [सीमर] १ अष्टवर्ग में उत्तम एक मुक्तकर पुत्र (पत्र ३ २३)। २ ऐश्वर्य वर्ग का एक भागी मुक्तकर (अनु ११३)। ३ पूर्व-विशेष में वर्तमान एक भागी क्षेत्र (अनु)। ४ एक क्षेत्र पुत्र, जो कर्मण्य शुभस्थिति के पूर्व भाग में पुत्र से (पत्र २ १७)। ५ कर्मण्य सीमनपत्र की का मुक्त भागक (विचार १७)। ६ नि मर्यादा के बाण्ड करनेवाला मर्यादा का पालक (गुण २ १ १३)।

सीमा ओ [सीमा] देवो सीमाभा (पत्रा पा ११८ अ ४२)। कमा पत्र)। गार पु [गार] कलज-विशेष ब४अ का एक क्षेत्र (ब४अ १ १—पत्र ७)। घर नि [घर] मर्यादा बाण्ड (पत्रि हे १ ११४)। छ नि [छ] सीमा के पाण्ड का सीमा के निष्ठ वर्ती 'सीमला नरवहलो छरेवे सेवमात्रा' (गुण २२२ १२२ ४६३; ब४अ १९)।

सीर पु [सीर] हव निष्ठे सेव कोठे है (पत्र १११ १२ गुण ५६)। संवपत्र हावीर (ब४अ १९)। पारि पु [पारि] कलज ब४अ पत्र (पत्र २ ११९)।

पावि पु [पावि] ब४ (अ ६ २ १३ गुण)। सीमव पु [सीमव] हव के छरी हुई जयि की रेखा (अ)।

सीरि पु [सीरि] कलज, ब४अ (पत्र)। सीरि नि [स] निज 'सीरिओ निओ' (पत्र)।

सीछ ल४ [सीछम्] १ मर्यादा कला-प्राप्त बलाभा। २ पालन कला 'सीछेला सीलपुल्ल' (द्वि १६); 'समसीछ सीछ पञ्चमयकले' (पा १९)। देवो सीछव।

सीछ न [सीछ] १ विच का समान, 'सीत विचमहात्म्यकले' मर्यादा पूर्व (अ २२७ टी)। २ अष्टवर्ग (पा २२) २ १२४ ११९) का १९ द्वि १६)। ३ प्रकृति, स्वभाव 'सीम पमई' (पत्र)।

सीछसील (कुमा)। ४ सवाचार, ब४अ, उत्तम वर्ग (गुण ५ पा १४ १; पत्र २ १—पत्र ६६)। ५ बरिष्ठ वर्ग (अ २ १ ४)। ६ ब४अ (पत्र २ १—पत्र ६६)। ७ पु [सीछ] जयि प४अक का एक क्षेत्र (पत्र)। 'हृद नि [सीछ] सीछ-मूल (पत्र ७४४)। परिपर पु [परिपर] १ बाण्ड-स्वाम। २ बाण्ड (पत्र २ १—पत्र ६६)। मंद, 'ब नि [ब] सीछ-पत्र (पत्र, पत्र ७७७) पा १६)। 'अप न [अ] कलज-पत्र

पत्र मानक के पत्र में पत्र धर्मिणा पाणि पाण्ड (ब४)। सावि नि [सावि] सीछ से सीछेलाभा (गुण २४)।

सीछव एक [सीछम्] संवपत्र करण। कर्म, सीछव (ब४ १)।

सीछु न [स] कलज सीछ कर्म (अ ६, १३, पत्र)।

सीछ ल४ [सीछ] सीमा, किलार कलज, सीमा, धर्म, सीछिस्वामि (पत्र)। सीछ सीछिस्वय (ब ११)।

सीछना ओ [सीछना] सीमा, किलार (अ ६, २२८)।

सीछनी ओ [स] सीमा नदी (ब४अ)। देवो सिचिपो।

सीछणी ओ [सीछणी] सीमा-विशेष (पत्र सीमा) ५६६ टी नि ४६)। २ अ १ ११ टी)।

सावि देवो सिचिप (अ १४ २; २ ४ ७—पत्र ११३)।

सीस स [सिप्] १ नम करना हिसा करता । २ छेप करना बाकी रहना । ३ विरोध करना । सीसर (हे ४ २३६ पृ०) ।

सीस स [कमय] कड़ना । सीसर (हे ४ २ मरि) ।

सीस स [सास] बालु-विरोध सीसा (रे २ २०) ।

सीस रेबो सिसस = शिष्य (हे १ ४३ कुमां रे ४०; छाया रे ३—पत्र १ ३) ।

सीस पुन [शीपे] १ मलक माया (खण १ प्रायु ३) । २ लखक पुच्छा (पावा २ १ ८ १) । ३ कृष्ण-विरोध (सिप) । अ न [क] शिरकाण (बेछो ११) । "पहा [पटी] शिर की हड्डी (तंडु १०) । पक्षिपिअ न [अकम्पित] संकम-विरोध मालादा को भीखी बाब से जुले पर जो संकम सम्य हो वह (इक) । पक्षिअ सीन [पक्षिक] संकम-विरोध, रोप्यह मिश्रय को भीखी बाब से जुले पर जो वस्था सम्य हो वह (इक) । सी. आ (अ २, ४—पत्र ८६ सम २; मयु २२) । "पक्षिसिप न [पक्षिकिप] संकम-विरोध बुझिक को सीखी साब से जुले पर जो संकम सम्य हो वह (अ २ ४—पत्र ८६ मयु २२) । पूरा पूरय पु [पूरक] मलक का घामण्य (पजा तंडु ४१) । कयक, इरुय (मय) । पुन [कयक] अल-विरोध (सिप) । तब पु [तबठ] बने बने धारि से मलक को लपेटना (सम १) ।

सीस रेबो सास = शय्य ।

सीसक न [दे सीपेक] शिरकाण मलक का कनक (रे ८ १० से ११ १) ।

सीसम पुन [ज] सीसम का पाछ, मिश्रय (म १ ३१ सी) ।

सीसय रि [ज] बरक थंड (रे ८ १४) ।

सीसय न [मासक] रेबो सीस = छोव (महा) ।

सीसया थी [सिअया] सीसम का माछ (पण्ड १—पत्र ३१) ।

सीह रेबो सिप = शय्य (पत्र) ।

सीह पु [सिह] १ धावप बलु-विरोध कसरो मुग-पाव (पण्ड १ १—पत्र ७ प्रायु २१ १०१) । २ बल-विरोध सज्जने का पड़ (हे १ १४४ प्रम) । ३ तमि-विरोध मय से पांखी राति (विचार १ १) । ४ एक म्मुसर रेबोको-नामी धैन मुनि (मनु २) । ५ एक धैन मुनि, जो धार्य-धर्म के शिष्य थे (कम्य) । ६ समरान् महावीर का शिष्य एक मुनि (मय १२—पत्र ९८२) । ७ एक विचारपर साम्पल राजा (पत्रम ८ ११२) । ८ एक प सि-मुन (पुता २ २) । ९ एक रेव-विमान (सन १३ रेवेन १४) । १० एक धैन धाचार्य का खदीनअन नामक धाचार्य के शिष्य थे (एदि २१) । ११ छय विरोध (सिप) उर न [पूर] नगर-विरोध (पण्ड) । अंत पुन [अन्त] एक रेव विमान (सन १३) । कडि पु [कडि] रावण का एक योद्धा (पत्रम २१ २०) । कण्य पु [कणी] एक घन्टीय (इक) । कण्गा थी [कणी] बल-विरोध (पत्र ११ १) । कसर पु [कसर] १ पास्तल-विरोध जठिअ कमल (छाया १ १—पत्र १३) । २ मोरक-विरोध (अंत १; सिह ४८२) । गह पु [गति] धर्मवति तथा धर्मिताहून नामक इत्र का एक-एक लोक्मल (अ ४ १—पत्र १२०) । गिरि पु [गिरि] एक प्रसिद्ध धैन महवि (मन अ १२ टी पति) । गुहा थी [गुहा] एक चोर-गड्ढी (छाया १ १८—पत्र २३१) । गूड पु [गूड] विचार-बंद का एक चना (पत्रम २, ४१) । जस पु [जरास] मलक बल्लरी का एक वीर (पत्रम २ १) । जाय पु [जाय] विद्वज्जन, सिद्ध की कर्मा के मुख्य धाराज (मय) । जिओखिय न [जिओखिय] १ सिह की मति । २ ल-विरोध (अंत २८) । जसाइ रेबो जसाइ (पत्र) । जुषार न [जुषार] राज-हार, राज प्रभाव का दुष्प्र बलना (गुन ११६) । जय पु [जय] १ विचार-बंद का एक चना (पत्रम २, ४१) । २ हारिजे बल्लरी का जिउ का नाम (पत्रम ८, १४८) नारा रेबो जाय (पण्ड १

१—पत्र ४२) । जिओखिय, जिओखिय रेबो जिओखिन (पत्र २३१; अंत २८; छाया १ ८—पत्र १२२) । जिमाइ रि [जिमाइन] सिह को तब्ड रेवेनवाला (गुन १ ८ व टी) । जिमिअ थी [जिपया] मछ बल्लरी हाथ मगगर परंत पर बलनामा हुवा धैन मल्लर (टी ११) । पुच्छ न [पुच्छ] पुन-नर्म पोड को बमरी (मूर्धन ७३) । पुच्छन न [पुच्छन] पुन पिह का टोड़ना मि-काण (पण्ड २ ३—पत्र १३१) । पुच्छिय रि [पुच्छिय] १ जिपका पुन-पिह पीड़ दिया गया हो वह । २ जिपको कफरिका से बेकर पुन-पिह—निधन तक की बमरी उखाड़ कर सिह के पुच्छ के तुल्य की जाय वह (पीर) । पुय पु [पु] नगरी-विरोध बिजय-वीर को एक राजबान्ने (अ २ ३—पत्र ८; इक) । सुह पु [सुह] १ घन्टीय-विरोध । २ जमे रेवेनवालो मनुष्य-नाथि (अ ४ २—पत्र २२६ इक) । सय पु [सय] सिह-नर्म-सिह-नर्म सिह की तब्ड धाराज (पत्रम ४८ १२) । सय पु [सय] कबार सेठ के गुन बर्तन नगर का एक चना (मयु) । पाह पु [पाह] विचार-बंद का एक चना (पत्रम २, ४१) । पाहन पु [पाहन] रास-बंद का एक चना (पत्रम ३, २११) । पाहया थी [पाहया] धर्मिका रेबो (पत्र) । विक्मगाइ पु [विक्मगाइ] धर्मवति तथा धर्मिताहून नामक इत्र का एक-एक लोक्मल (अ ४ १—पत्र १२०; इक) । वाय पुन [वाय] एक रेव-विमान (मय १३) । सी पु [सी] भीखरे जिनेन का जिउ एक चना (मय २११) । २ अमरान् धर्मिताहून का एक कउवर (पत्र १२२) । ३ चना अलिख का एक पुन (मनु २) । ४ चना महादेन का एक पुन (रिवा १ २—पत्र ८६) । ५ रेवेन धन से जल एक जिनेन (पत्र) । ना ना थ [ना-ना] एक नवे (अ २ ३—पत्र ८) । पय-इ-न [पय-इ-न] जिहानाइन जिह की तब्ड बम। हर पावे का तरक

(अ ६, २—यम ३२६) तम ६ पञ्च

सुधाय न [वि] ब्रह्म के धामे का ठेका
कथ, कुनखी में 'मुकाम' (सिरी ४२४)।

सुधाम न [सुधाम] १ एक लोकालिक
देव-विमान (पत्र १६७)। २ वेदात्म परच
की दक्षिण ओरि में स्थित एक विद्यापर
नगर (इक)।

सुधिय रेवो सुधय (प्रति)।

सुधिय रेवो सुधीय (राज)।

सुधिय रेवो सुध = सुधन (पत्र;
सुधिय } दीप हे २ १ १ पत्र ४
सुधिय } ११; धातु १ २); सुधु
सुधियसकल' (पत्र २ ४६ कर्म-सम ४१
बर्ग ४२४)। ओ, एवो सुधियमाण एवो
धत्ताणो धापो कर्मो (पाठ ७)।

सुधीय वि [सुधीय] धम्मी तए बरीय
हुवा 'सुधीय' वा सुधियो (पत्र ७ ४२)।

सुधय रेवो सुध = सुध। बह सुधयसंत
(पा ४१४ बह १४६)।

सुधय रेवो सुध = सुध (हे २ १, पा २११
पा ११; ज १२ टी)।

सुधय न [सुधय] सुध (क्या; कुमा साने
११ धातु २ १४२)।

सुधय रेवो सुधय। कर्म, सुधयरीप्रति
(वि ११६, १४३)।

सुधिय वि [सुधिय] धम्मी तए बहा
हुवा प्रतिभावा 'उपो सुधयनरावन्ते न ते
सुधियमाधि सुधियेण यधयन्ते' तस्मिन्नि-
येवो वेतधो वासीततस्त्वो हापो ति होनु
धमयिन्त न हारकविमं यधो वासनेवो
(महा)।

सुधय (३) रेवो सण्ड = सुधय; सुधयनरिपो
(पाठ १२४)।

सुध रेवो सुध = सुध (डा १७२ स ५९
ज २, ७ कु ४३०; कुमा)।

सुधो [सुधो] १ धम्मी कति (डा १
१—पत्र १४९)। २ कर्माय धम्मा माय
सुधयि (१४)। ३ वि धम्मी कति को
माय (पात्रन)।

सुधो रेवो सुधय (क्या; कुमा दीप नुर
१, २०)।

सुधोभा ओ [सुधोभा] पथिय विदेह का एक
विजयसेन (इक)।

सुधिय रेवो सुधयि (दीप)। पुर न [पुर]
वेदात्म की उत्तर मणि में स्थित एक विद्या
नगर-नगर (इक)।

सुधय वि [सुधय] धम्मी तए विनयेवासा
(पत्र)।

सुधय वि [सुधय] १ धम्म परिपम स वासा
वा सके वेता सुध-धम्म (पोषना ७१)।

२ सुधीय (वेध १९१)।

सुधय वि [सुधय] १ धम्मी पतिवासा (अ
४ १—पत्र २ २; कु २)। २ सुधय।
३ धम्मी ४ सुधी (अ ४ १—पत्र २ २)
पात्र हे १ १७७)। ५ सुधु सुधय (पात्र
पत्र २४)।

सुधय वि [सुधय] सुध-यक, बीह (धम्मस
१२)।

सुधय वि [सुधय] सुध-वासा धम्म परिपम
से हो सके वेता (भाषा १ १ १)।

सुधयि वि [सुधयि] धम्मी कति (अ १६)।

सुधयि वि [सुधयि] सुध स धम्म कति
वासा (पत्र ११ २४)।

सुधयि सु [सुधयि] १ विन माध की
पुलिमा (अ २ २—पत्र २ ११)। २
यसुल का जखन (हे ८ १६)।

सुधयि वि [सुधयि] धम्मी वाणीवासा (पत्र)।

सुधयि वि [सुधयि] विन माध, विन माध,
सुधयि वि विन माध (अ १६ ११)।

सुधो रेवो सुध = सुधो (कुमा)।

सुधय सु [सुधय] एक मंत्री का नाम
(महा)।

सुधय सु [सुधय] धम्म सुध (कुमा)।
सुधय न [सु] १ धम्म-सुधय (हे ८, २१;
कथ)। २ वि विविध विन-रहित। ३

विधयि (हे ८ २६)।

सुधय रेवो सुधय (सुध १६१; स ८१)।

सुधय रेवो सुधय = सुधय (अ ४ १—पत्र
२ २)।

सुधय धक [प्र + ध] कितय। सुधय
(भाषा १२९)।

सुधय सु [सुधय] १ बाधुमार देवों के
द्वार सुधय के धरम-धर्म का धर्मवि

(अ २ १—पत्र १ २)। २ भारतवर्ष में
होनेवाला नववीं प्रतिवासुधय राजा (सम
१२४)। ३ राधय-नंद का एक राजा एक
सकृन्तवि (पत्र २, १९)। ४ नववीं
विनयेव के पिता का नाम (सम १२१)।
५ राजा वासि का छोटा भाई (पत्र २ ९
धे १ ४९ ४४ ३६)। ६ एक राजा का
नाम (सुध २ २१)। ७ न नवर-विनयेव
(अ १ १)।

सुध (पा) रेवो सुध = सुध (हे ४ १६९)।

सुधय वि [सुधय] धम्मी तए पिता हुवा
(धम्म ८ टी)।

सुधय ओ [सुधय] माध-नयो की एक
वाधि जो धम्मो धोवाला नृप गुप्तर बहालो
है (माध १)।

सुधय सु [सुधय] १ एक कुमर-कुल
(सम १२)। २ एक गुपेक्षित का नाम
(ज ३२८ टी)। ३ पुन सनकुमार देवलोको
का एक विमान (सम १२)। ४ मातक
नामक देवलोको का एक विमान (सम १७)।

५ वि गुप्तर धावावाला (जो १ १
महि)। ६ एक नगर का नाम (विना २ ८)।

सुधोसा ओ [सुधोसा] १ शिवरति नामक
धम्मवर्ष की एक पटपनी (अ ४ १—पत्र
२ ४)। २ शिवरतिनामक धम्मवर्ष की एक
पटपनी (अ ४ १—पत्र २ ४)। ३
सुधयर्ष की प्रतिष्ठ पेटा (पत्र २ २—पत्र
१४६; सुधा ४२)। ४ धाव-विनयेव (धम्म
४६)।

सुधय सु [सुधय] शिवरति बर्ग में धम्म
कुपरे विन-वेव (सम १२१)।

सुधयि न [सुधयि] १ धम्मवर्ष धम्म-
वा (क्या पत्र)। २ वि धम्मवर्ष
संपन्न (बह)। ३ धम्मो तए धम्मवर्ष
(पत्र ७२, १८ छाया १ १९—पत्र
२ २)।

सुधयि वि [सुधयि] १ धम्मवर्ष का
सुधयि २ वि धम्मवर्ष का सुधयि
(पत्र ६ १२, ४४ ३२; अ ४ २—पत्र
२ १)। ३ नृप (वीर) का नाम।

सुधिर न [सुधिर] धम्मवर्ष धम्म-
वर्ष का नाम (सुधा २ बहा धातु १२)।

सुसोइम नि [सुसोइम] शेरि (अ १ ४४)।

सुस नि [शोच] घन्योच करते योग्य 'गुण' से विपद्यार निरुपमते जे नय न कण्ठि' (भाषि १७)।

सुसा केओ सुस = पु।

सुसपिय न [सुसपिय] घासीनरि (छाया १ १—पत्र १६)।

सुसद दु [सुसद] एक विद्याधर-नरेश (पत्रम १ २)।

सुसस पु [सुसरास] १ एक किलेन का नाम (अ १ ६१ टी)। २ नि मरस्सी (भा ११)।

सुससा के [सुसरास] १ बीछवें निन रैन की मरता (अम १११)। २ एक राज पत्नी (अ २४९ टी)।

सुसद नि [सुसद] मुक से निचका लान हो चके रह (अ ८ १)।

सुसाइ नि [सुसाति] नराल बाधिआवा बाज (महा)।

सुजाय नि [सुम] घनामा घन्य वानकार (मिनि ६१ प्राप् ११; सुगा २८)।

सुजाय नि [सुजाय] १ सुनर बालि में ज्यार, कुतो बालयारी (अ ७२ टी)। २ घण्टी लख जलन सुनर कय से जलन (अ ४ २—पत्र २ घोष बोध १ ४ पत्र)। ३ क. सुनर कम (पात्र)। ४ दु. एक राज-नगर (विना २ १)। ५ पु. एक एक रैन-विमान (प्रेम २७१)।

सुजाया के [सुजाया] १ कलबाल धारि लोचाली की परधर्मों के नाम (अ ४ १—पत्र २ ४ इक)। २ राजा म अधिक की एक पत्नी (घंठ २४)।

सुसिद्धा के [सुस्येय] एक महासी राज कुमारी की रैन-पत्र की पुत्री की (पत्रि)।

सुसुचि के [सुसुचि] सुनर घुकि (सुवा १११)।

सुसद केओ सुसिद्धा (अम)।

सुसासि १ नि [सुसुय] घण्टी लख धेनिव (सुय १ २, २ २६)।

सुसासध नि [सुसासि] कुनु धरिण, बन्धन-विचारि (सुय १ २, २, २६)।

सुस पु [सुस] १ सुन, रनि। २ घाक कय देह। ३ रैन-विमान (हे २ ६४ प्राप्)। ४ पु. एक रैन-विमान (अम ११)। कय पुन [कय] एक रैन-विमान (अम ११)।

रैन-विमान (अम ११)। रैन-विमान-विमान (अम ११)। पत्रम पुन [पत्रम] एक रैन विमान (अम ११)।

अस पुन [अस] एक रैन विमान (अम ११)। अस पुन [अस] एक रैन-विमान (अम ११)।

रैन-विमान (अम ११)। रैन-विमान (अम ११)। रैन-विमान (अम ११)।

रैन-विमान (अम ११)। रैन-विमान (अम ११)। रैन-विमान (अम ११)।

रैन-विमान (अम ११)। रैन-विमान (अम ११)। रैन-विमान (अम ११)।

रैन-विमान (अम ११)। रैन-विमान (अम ११)। रैन-विमान (अम ११)।

रैन-विमान (अम ११)। रैन-विमान (अम ११)। रैन-विमान (अम ११)।

रैन-विमान (अम ११)। रैन-विमान (अम ११)। रैन-विमान (अम ११)।

रैन-विमान (अम ११)। रैन-विमान (अम ११)। रैन-विमान (अम ११)।

रैन-विमान (अम ११)। रैन-विमान (अम ११)। रैन-विमान (अम ११)।

रैन-विमान (अम ११)। रैन-विमान (अम ११)। रैन-विमान (अम ११)।

रैन-विमान (अम ११)। रैन-विमान (अम ११)। रैन-विमान (अम ११)।

रैन-विमान (अम ११)। रैन-विमान (अम ११)। रैन-विमान (अम ११)।

रैन-विमान (अम ११)। रैन-विमान (अम ११)। रैन-विमान (अम ११)।

रैन-विमान (अम ११)। रैन-विमान (अम ११)। रैन-विमान (अम ११)।

रैन-विमान (अम ११)। रैन-विमान (अम ११)। रैन-विमान (अम ११)।

रैन-विमान (अम ११)। रैन-विमान (अम ११)। रैन-विमान (अम ११)।

रैन-विमान (अम ११)। रैन-विमान (अम ११)। रैन-विमान (अम ११)।

रैन-विमान (अम ११)। रैन-विमान (अम ११)। रैन-विमान (अम ११)।

रैन (छाया १ १६—पत्र ११७)। १ घास-सुसिद्धा घास-विमान का विमान एक रैन-विमान (अम)।

सुसद पु [सुसद] १ घास, घास, सुसद सुसद (छाया १ १६—पत्र ११७)। २ घास-विमान (अम ११७)।

सुसिद्धा केओ सुसिद्धा (अम)।

सुस घक [सुस] घक करता। सुस (अ १ ११)।

सुसिद्धा नि [सु] १ घास-विमान (अम ११७)। २ घास-विमान (अम ११७)। ३ घास-विमान (अम ११७)।

सुस घक [सु] घास करता। सुस (अ १ ११)। २ घास-विमान (अम ११७)। ३ घास-विमान (अम ११७)।

सुस घक [सु] घास करता। सुस (अ १ ११)। २ घास-विमान (अम ११७)। ३ घास-विमान (अम ११७)।

सुस घक [सु] घास करता। सुस (अ १ ११)। २ घास-विमान (अम ११७)। ३ घास-विमान (अम ११७)।

सुस घक [सु] घास करता। सुस (अ १ ११)। २ घास-विमान (अम ११७)। ३ घास-विमान (अम ११७)।

सुस घक [सु] घास करता। सुस (अ १ ११)। २ घास-विमान (अम ११७)। ३ घास-विमान (अम ११७)।

सुस घक [सु] घास करता। सुस (अ १ ११)। २ घास-विमान (अम ११७)। ३ घास-विमान (अम ११७)।

सुस घक [सु] घास करता। सुस (अ १ ११)। २ घास-विमान (अम ११७)। ३ घास-विमान (अम ११७)।

सुस घक [सु] घास करता। सुस (अ १ ११)। २ घास-विमान (अम ११७)। ३ घास-विमान (अम ११७)।

सुस घक [सु] घास करता। सुस (अ १ ११)। २ घास-विमान (अम ११७)। ३ घास-विमान (अम ११७)।

सुस घक [सु] घास करता। सुस (अ १ ११)। २ घास-विमान (अम ११७)। ३ घास-विमान (अम ११७)।

सुस घक [सु] घास करता। सुस (अ १ ११)। २ घास-विमान (अम ११७)। ३ घास-विमान (अम ११७)।

सुस घक [सु] घास करता। सुस (अ १ ११)। २ घास-विमान (अम ११७)। ३ घास-विमान (अम ११७)।

सुस घक [सु] घास करता। सुस (अ १ ११)। २ घास-विमान (अम ११७)। ३ घास-विमान (अम ११७)।

सुस घक [सु] घास करता। सुस (अ १ ११)। २ घास-विमान (अम ११७)। ३ घास-विमान (अम ११७)।

सुस घक [सु] घास करता। सुस (अ १ ११)। २ घास-विमान (अम ११७)। ३ घास-विमान (अम ११७)।

बरा, कोई हुई बीज की प्राप्ति 'बराविबद्ध' शिवा मुनी' (पुपा ११७ कुप २ २ अमल १७२ कुमा १)।

सुदेसपिञ्ज वि [सुदेसपिञ्ज] शिवाय पावार की बीज करनेवाला (पण्ड २ १—पण १ १)।

सुदोष्य पुं [सुदोष्य] सुदोष के पिता का नाम। ठणप पुं [सुदोष्य] सुदोष के (अम १४२)। रेवो सुदोष्य।

सुदोजनि पुं [सुदोजनि] सुदोष (पाम)। सुदोष्य रेवो सुदोजन्य। पुच पुं [पुच] सुदोष (पुच ४४)।

सुपम पुं [सुपम] १ भगवान् महावीर का पट्टर पित्र्य (कुमा)। २ एक कैत मुनि (विपा २ ४)। ३ तीवरे बलशे के पुत्र—एक कैत मुनि (पञ्च २ १०३)। ४ एक कैत मुनि का सातवें बलशे के पूर्वज-जन्म में छ वे (पञ्च २ ११३)। ५ एक कैताचार्य 'तह' परमजगद्गुरु परमपुण्य 'व' अमर्य' (सार २२)। रेवो सुपम।

सुपा रेवो सुहा = सुपा (कुमा)।

सुप्य पुं [सुप्य] १ अष्टम्य के कबी रचने किशे के पूर्वज का नाम (अम ११४)। २ एक कैत मुनि (पञ्च २ २)। रेवो सुप्य।

सुपकलप रेवो सुपकलप (अम १५—पण १०८ १०७)।

सुपिरी की [सुपिरी] पण्डी तह नृप कमरावी की (पुपा २०६)।

सुपण पुं [सुपण] १ राजा राज के पण्डित एक विद्यावर शास्त्र राजा (पञ्च ५ ११३)। २ वि सुन्दर बीजवाला (पाम)।

सुनाम पुं [सुनाम] अमर्य का नपरी के राजा परमान का पुत्र (आमा १ १९—पण २१४)।

सुनिपुण वि [सुनिपुण] १ अष्टम्य सुम (अम ११४)। २ अति बहुर (पुच ४ १११)।

सुनिपुण वि [सुनिपुण] अतिरि पित्रि कृतवा (अम ११४)।

सुनिगल वि [सुनिगल] विर-स्वादी (पिरे ७६६)।

सुनिप्य वि [सुनिप्य] हृदि पिण्डवासा (पुपा ४६८)।

सुनिप्यरूप वि [सुनिप्यरूप] अष्टम्य लिप्य (पुपा ११३)।

सुनिमल वि [सुनिमल] अतिरि विमल (अम २१ १२)।

सुनिरूपि वि [सुनिरूपि] पण्डी तह उवाता हुमा (पुपा ४२३)।

सुनिभि वि [सुनिभि] अतिरि विमल (पुच १४ २०८ अ)।

सुनिप्युद्ध रेवो सुनिप्युद्ध (अ ४७)।

सुनिसाय वि [सुनिसाय] अष्टम्य तीरु (पुपा १७)।

सुनिस्मि वि [सुनिस्मि] अमर रेवो (रत १ २)।

सुनिस्स वि [सुनिस्स] विरुद्ध राहु रचित (पुपा १ ५)।

सुनीधिया की [सुनीधिया] सुन्दर नीधी—बल-प्रतिपत्ती की (कुमा)।

सुनेता की [सुनेता] पीरने बसुदेव की पटरानी (पञ्च २ १०९)।

सुन्न न [सुन्न] १ किन्धी (पुच १६ १४६)। २—रेवो सुन्न (अम १)। महा अम बाबा व १६ रंभा)। पत्तिया की [प्रत्यक्षा पत्तिया] एक कैत मुनि-रक्षा (अम)।

सुन्नार रेवो सुन्नार (पुपा ११४ अमि १२)।

सुन्नार रेवो सुन्नार (पुपा ११२)।

सुन्हा रेवो सुन्हा (वा १७ अमि)।

सुप ल [सुप] मार्ग का, लोचन का। सुप (अम)।

सुपुष्ट वि [सुपुष्ट] १ व्यास-मार्ग में स्थित। २ अति-गुरु (कुमा १ २८)। ३ अतिरि अति। ४ विरुद्धी लपना विधि पूर्वक की गई हो वह (कुमा २ ४)। ५ अमर्य महावीर के पाद लोका सेकरमुक्त पालेवा एक फल (पण १०)। ६ दीप-विद्या का बालकर पावन हो वह (विचार ४७३)। ७ भगवान् सुपुष्ट-मार्ग के पिता का

नाम (पुपा १२)। ८ भास्वर मात का लोकोत्तर नाम (सुन्न १ १६)। ९ पाप-विरोध (पाम)। १० अ. एक मन्त्र का नाम विपा १ २—पण ८८)। ११ पुन [सुप] एक देव विमान (अम १४—पण २१७)।

सुपुष्टि वि [सुपुष्टि] पण्डी तह अतिरि-प्रात (अम पाम)।

सुपुष्ट वि [सुपुष्ट] पण्डी तह पका हुमा (प्रापु १ २)। नाट—सुपुष्ट (१७)।

सुपुष्टाय वि [सुपुष्टाय] सुन्दर अनावाता (कुमा)।

सुपुष्टिपुष्ट वि [सुपुष्टिपुष्ट] १ सुन्दर पीठ व अतिरि की प्रात (पामा १ ५, २ ४)। २ पुं एक देव महि (अम)।

सुपुष्टिपुष्ट वि [सुपुष्टिपुष्ट] दो पण्डी तह हुमा हो वह (अम १४ ४२)।

सुपुष्टिपुष्टि वि [सुपुष्टिपुष्टि] सुन्दर अति पालवाता (पण्ड २ १—पण १२३)।

सुपुष्ट रेवो सुपुष्ट (पाम)।

सुपुष्ट पुं [सुपुष्ट] परब कबी (नाट कुप सुपुष्ट ११)।

सुपुष्ट वि [सुपुष्ट] १ सुन्दर कप से अति (पामा १ ५ १)। २ अमर्य पावेति (रत ४ १)।

सुपुष्ट रेवो सुपुष्ट (पाम)।

सुपुष्ट पुं [सुपुष्ट] १ एक विरय-शेख (अ २ १—पण ८)। २ पुं. एक देव-विमान (अम १४)।

सुपरिस्मि वि [सुपरिस्मि] सुन्दर संस्कारवाता (आमा १ ७—पण १११)।

सुपरिस्मि वि [सुपरिस्मि] पण्डी सुपरिस्मि तह विरुद्धी पट्टिया की गई हो वह (अम प्रापु १४)।

सुपरिस्मि वि [सुपरिस्मि] पण्डी सुपरिस्मि तह विरुद्धी (पाम)।

सुपरिस्मि वि [सुपरिस्मि] सुपुष्ट (अम ४२ २६)।

सुपरिस्मि वि [सुपरिस्मि] अतिरि पका हुमा (अम १ १४२)।

सुपरुष वि [सुपरुष] विरुद्धी कोर से लेने के आरम्भ किया हो वह (आमा १ १८—पण २४)।

सुर्जन्य वृ [सुजाण] प्रसन्न विप्र (वि २१) ।

सुनद वि [सुनद] शब्दी तच्छ ब्रह्मा हुया (अ) ।

सुनद वृ [सुनद] १ सोम-संत का एक राजा (पञ्च २, ११) । २ पक्षे बलदेव का पूर्व-कन्यी नाम (पञ्च २, १६) ।

सुनद्वि वि [सुनद्वि] धर्मिष्ठ बलवान् (पु १८) ।

सुनद्वि वि [सुनद्वि] धर्मि प्रभु (अ) ।

सुनद्वि वि [सुनद्वि] ज्ञान देवो (कृष्ण) ।

सुनाद वृ [सुनाद] १ एक राज-कुमार (बिपा १, १—पञ्च १, ३) । २ श्री अमिराज की एक कन्या (छाया १, ८—पञ्च १, ४) ।

सुनदि श्री [सुनदि] १ सुन्दर प्रजा (भा १४) । २ वृ पञ्च-प्रजा मण्ड के छात्र बीजा केनाभा एक राजा (पञ्च ८, ३) । ३ एक कन्या (महा) ।

सुम्भ वि [सुम्भ] १ छत्र, सेत (पुष्पा २, ६) । २ एक प्रकार की पत्थी (पञ्च ७, २) ।

सुम्भ न [सुम्भ] छत्री सेतवा (छन्दो २२) ।

सुम्भ वृ [सुम्भ] १ सुन्दर सुख (सम ४, १) । २ वि. सुम्भी सुन्दर-पुत्र (उत्तर १६, २८) । ३ छाया १, ३, ३) । ३ मनोहर, मनोज्ञ सुन्दर (छाया १, १२—पञ्च १, ४) ।

सुम्भिकल न [सुम्भिकल] सुन्दर (पुष्पा १२, ८) ।

सुम्भ श्री [सुम्भ] भारी महिला (रत्ना) ।

सुम्भ वृ [सुम्भ] १ भवनाथ पार्श्वनाथ का प्रथम पुत्र (अ ८—पञ्च ४, २६ सम १, ३) । २ भवनाथ नामनाथ का प्रथम पुत्र (सम १, २२) । ३ एक सुवर्ण (पञ्च १, ८२) । ४ न. भवनाथ का एक नेत्र (सम १, ८२) । ५ म. भवनाथ, कन्यास्य । ६ वि. पार्श्वनाथ नामिका प्रसन्न (कन्या भाग १, ४२, ४३) । ७ सोम वृ [सोम] भवनाथ पार्श्वनाथ का द्वितीय पुत्र (सम १, १) । ८ सुम्भ वृ [सुम्भ] पञ्च-वर्ण का एक राजा (पञ्च २, २६२) । देवो सुम्भ = सुम्भ ।

सुम्भकर व [सुम्भकर] बन्धु नामक बौद्धादिष्ट देवों का विमान (राज) । देवो सुम्भकर ।

सुम्भ वि [सुम्भ] १ भालव-जन्म (कन्या) । २ सोमनाथ-पुत्र बल्लभ जन-प्रिय (पुष्पा २) । ३ न. पञ्च-विशेष (सुम्भ २, ३) । ४ कर्म विशेष (सम १, ८२) । ५ कर्म विशेष (सम १, ८२) । ६ कर्म विशेष (सम १, ८२) ।

सुम्भ श्री [सुम्भ] १ सता-विशेष (पञ्च १—पञ्च १, ३) । २ सुम्भ नामक मुनेश्वर की एक पटवनी (छा ४, १—पञ्च २, ४) । ३ छाया २—पञ्च २, २२ इति ।

सुम्भ वि [सुम्भ] भाग्य-धारी विश्व भाग्य भव्या हो वह (उत्तर १, ११) ।

सुम्भ देवो सुम्भ (भाट—मालवी १, १८) ।

सुम्भ वि [सुम्भ] नवम-पुत्र (अ) ।

सुम्भ वृ [सुम्भ] १ इन्द्रा-पुत्र का एक राजा (पञ्च २, १६) । २ सुवरे बामुदेव का बलदेव का कर्म-पुत्र (सम १, २३) । ३ पुन. एक देव-विमान (देव १, २१) । ४ न. पञ्च-विशेष (उत्तर १, ११) ।

सुम्भ श्री [सुम्भ] १ सुवरे बलदेव की माता (सम १, २२) । २ प्रथम श्री-पुत्र मण्ड बलदेव की धर्म-महिषी (सम १, २२) । ३ बलि नामक द्रव्य के सोम धर्मि भारी लोक-पात्रों की एक-एक धर्म-महिषी का नाम (अ ४, १—पञ्च २, ४) । ४ सुतल्लव धर्मि द्रव्यों के नामनाथ नामक लोकपाल की एक-एक धर्म-महिषी का नाम (अ ४, १—पञ्च २, ४) । ५ प्रतिमा-विशेष एक वृत्त (अ ४, १—पञ्च २, ४) । ६ राज के धर्मि मण्ड की पत्नी (पञ्च २, १६) । ७ राजा कोष्ठिक की श्री (वीर) । ८ राजा कोष्ठिक की श्री (वीर) । ९ एक छत्री की (वीर) । १० एक सार्वभौम-पत्नी (बिपा १, १२) । ११ वन्द्य-विशेष विशेष यह हीन वन्द्य होय कहलाता है (इति) ।

सुम्भ देवो सुम्भ (अ १२, १—पञ्च २, २७) ।

सुम्भ वि [सुम्भ] शब्दो तच्छ भद्र हुया धरु, धरुवृत्त (अ) ।

सुम्भ श्री [सुम्भ] १ कैटव्य बलीश्वर की एक धर्म-महिषी (अ २, १—पञ्च १, ३) । २

एक विजय-सेन (अ २, १—पञ्च ८) । ३ पञ्च की एक पत्नी (पञ्च ७, ११) ।

सुम्भिय देवो सुम्भिय (उत्तर २, २१) । २ दे १, १७) ।

सुम्भिय वि [सुम्भिय] सुम्भ बलीश्वर-माता । श्री. रा (पुष्पा २, २८) ।

सुम्भिकल देवो सुम्भिकल (उत्तर १, १६) ।

सुम्भ वृ [सुम्भ] शब्दा लीकर (पुष्पा ४, २३, २४, २५) ।

सुम्भ वि [सुम्भ] धर्मि भवकर (पुष्पा २, २१) ।

सुम्भिय वृ [सुम्भिय] पञ्च का एक सुम्भ (पञ्च २, २१) ।

सुम्भ वृ [सुम्भ] १ भाटवर्ष में उत्पन्न छात्रा बलदेव की राजा (अ २, ४—पञ्च २, २६) । २ छात्रवर्ष के भारी सुवर्ण सुम्भ देव (सम १, २३) । भवनाथ भवनाथ का प्रथम भावक (विचार १, ७) ।

सुम्भिय वृ [सुम्भिय] विमोक्ष का एक पुत्र (पञ्च १, १६) ।

सुम्भो श्री [सुम्भो] धर्मोक्त में छन्दे भारी एक विष्णुमयी देवी (अ ८—पञ्च २, २७) ।

सुम्भोय न [सुम्भोय] बल विशेष पञ्चवर्ण वृ (छन्दो २, ८) ।

सुम्भ न [सुम्भ] पुत्र पुत्र (सम १, २१) । सर वृ [सर] कामदेव (रत्ना) ।

सुम्भ वृ [सुम्भ] १ पञ्च विम भवनाथ (सम ४, १) । २ देवत छत्र में होतेवाला बलदा सुम्भ देव (सम १, २३) । ३ एक वैन जगत्पति (महावि ४) । ४ वि. सुम्भ वृत्ति भाषा (पञ्च) । ५ वृ एक वैमिश्रिक विज्ञान (पुष्पा १, १२) ।

सुम्भ वृ [सुम्भ] देवत वर्ण में होने वाले प्रथम विमोक्ष (सम १, २३) ।

सुम्भोय श्री [सुम्भोय] १ भवनाथ भवनाथ की एक पत्नी (पञ्च १, ११) । २ पूर्ववर्तीय राजा विजयनाथ की पत्नी (पञ्च २, २२) ।

सुम्भ वृ [सुम्भ] शब्दा पञ्च (पुष्पा १, ११) ।

श्री [सुरिणी] शंका नदी (सण्) । तर्क
देखो अर्थ (सण्) । ताप पु [त्राय]
सकल सुखदाय (वी १२) । वारु न
[वारु] देवदार श्री लक्ष्मी (स ६ ३) ।
पंसी श्री [प्यसिनी] विद्या विरोध (पञ्च
७ ११७) । घणु, घणुह न [घणु] ।
इन्द्र-कन्य (कुमा सण्) । नर देखो पाइ
(प ७७) । नाह देखो पाइ (सण्) ।
पहु पु [पसु] इन्द्र, देव-पुत्र (मुपा २ २,
न १२२ वी सण्) । पुर न [पुर] देव
पुरे धर्मपत्नी स्वयं (पञ्च २ १ सण्) ।
पुरी श्री [पुरी] नदी धर्म (पाप कुमा) ।
[पिम्प पु [पिय] एक पत्र (संघ) । पंदी
श्री [पन्दी] देवी देव-श्री (वे ६, ५) ।
मलय न [मयन] देव-प्राधार (मय
सण्) । मंति पु [मान्त्र] इन्द्राणि
(मुपा १२६) । मन्दिर न [मन्दिर] ।
मन्दिर मन्दिर (कुप ५) । २ देव-स्निमान
(सण्) । मुषि पु [मुनि] नारायण मुनि
(पञ्च ६ न) । राम न [राम] ।
पवस का एक नक्षत्रा (पञ्च ५६, १७) ।
राम पु [राम] इन्द्र (मुपा ५२, सिरि
२५) । रिड पु [रिपु] देव दानव
(गाम) । ज्येष्ठ पु [ज्येष्ठ] स्वयं (महा) ।
ज्येष्ठ नि [ज्येष्ठि] स्वयं (पञ्च
१२८) । ज्येष्ठ देखो ज्येष्ठ (पञ्च ५२
१८) । यइ पु [पति] । इन्द्र देव-पुत्र
(पाप मुपा ५७ ५७ ५८ ५८ ५२) । २
इन्द्र नामक एक विद्यावर-नरेश (पञ्च ७
२७) । बण्ण पु [बण्ण] एक ब्रह्म विमान
(पञ्च १) । पयू देखो वडू (सि १८०) ।

बसा श्री [वणी] पुताग (पु ५५) ।
पर पु [पर] पञ्च देव (मय) । वरिदि
पु [वरन्] इन्द्र देव-पुत्र (भा ७) ।
वडू श्री [वपु] देवा-कुमार, देवी (कुमा) ।
वारण पु [वारण] ऐश्वर्य हस्ती (ज
२११ वी) । संगीत न [संगीत] नवर
किरोध (पञ्च ८ १८) । सरि श्री
[सरिन्] मधोको वदना नदी (पञ्च
का १६, मुपा १३, २८६) । सिद्धि पु
[सिद्धि] देव परीत (सण्) । सुंदर
पु [सुन्दर] एतद्विमान-नवर का एक

विद्यावर-नरेश (पञ्च ५ ५१) । सुंदरी
श्री [सुन्दरी] । देव-कन्य देवा-कुमा (पुर
११ ११२, मुपा २) । २ एक पञ्च-
पुत्री (पुर ११ १५१) । ३ एक पञ्च-कुमारी
(सिद्धि ३१) । सुपुद्ग श्री [सुपुद्ग] काम-
भेद (रमण १३) । सेज पु [रीज] देव-
परित (मुपा १३) । हथि पु [हथि] देव-
ऐश्वर्य हाथी (सं ६ ५) । उडू न
[मुपु] नर (गाम) । त्वपु पु [त्वपु]
एक भावक का नाम (ज्या) । त्वी श्री
[त्वी] पञ्चम नक्षत्र पर चतुर्वेदाधी एक
विद्या-कुमारी देवी (ठा-८—पञ्च ५३१ इफ) ।
रि पु [रि] पञ्चसंघ का एक राजा,
एक संकल्पति (पञ्च ५, २१२) । त्वपु
पु [त्वपु] स्वयं (पाप मुप १ ६, ८,
मुपा २६६) । त्विपु पु [त्विपु] इन्द्र
(ज १५२ वी) । त्विपु पु [त्विपु]
इन्द्र (सं १२, २६) । त्विपु पु [त्विपु]
नदी (मुपा ५६) ।

सुरइ श्री [सुरति] मुक्त (पण्ड १ ५—पञ्च
६८) ।

सुरप नि [सुरपति] मधोको तण्ड क्रिया
मुपा (पण्ड १ ५—पञ्च ६८) ।

सुरगया श्री [सुरगया] देव-कन्य (मुपा
२५६) ।

सुरगा श्री [सुरगा] सुरंग नदी के धीतर
का मार्ग (ज ५ २६; मण्ड मुपा ५२५) ।

सुरीग पु [सुरी] इन्द्र-विरोध विपु इन्द्र
सर्वज्ञता का पात्र (वे ८, १७) ।

सुरज्ज पु [सुर] बण्ण देवता (वे ५, ११) ।

सुइ पु [सुपु] एक भारतीय देव की
धामक कठिनाका के नाम से प्रसिद्ध है
(साम्पा १ १६—पञ्च २ ८; हे २, १७
निर २ २) ।

सुणुपर नि [सुणुपर] मुक्त वे करने योग्य
(ठा ५, १—पञ्च २१५) ।

सुरइ पु देखो सुरय (पञ्च १६ ८; सिरि
सुर १; प्राक् १२) ।

सुरभि पु [सुरभि] । बल्लव शत्रु । २
श्री की श्रिया (कुमा १५) । ३ नि मुक्त-
मुक्त मुपकी (मय १; पा ५६१ कण्ठ)

कुमा १५) । ४ पुन एक देव-विमान
(देव १५) । गंध नि [गंध] मुक्तवी
(धाम्पा) । पुर न [पुर] नवर-विरोध
(पञ्च) । देखो सुपुद्ग ।

सुरमजीव नि [सुरमजीव] मय्यय मनोहर
(पुर ३ ११३) ।

सुरमा नि [सुरमा] ऊपर देखो (मोय) ।

सुरय न [सुरय] मेकल श्री-संज्ञोप (पुर ११
२ पा १२२, काम ११६) ।

सुरयप न [सुरय] सुन्दर एत (मुपा १२७) ।

सुरयमा श्री [सुरयमा] सुन्दर रचना (मुपा
१२) ।

सुरस नि [सुरस] । सुन्दर रचना (साम्पा
१ १२—पञ्च १७५) । २ न, मुक्त विरोध
(वे १ १५) । जया श्री [जया] तुमजो-
मठा (वे ५, १५) ।

सुरसुर पु [सुरसुर] ध्वनि-विरोध 'सुर सुर'
भावना (मोय २५२) ।

सुरसुर मक् [सुरसुर] 'सुर सुर'
भावना करना । नक्. सुरसुरित (भा ७५) ।

सुरइ वक् [सुरमय] सुपुद्गल करना ।
सुरइ (कुमा प्राप् ९) ।

सुरइ पुन [सोरय] सुन्दर पञ्च नृप,
'पञ्चोपिध' मुपरी मालाई नक्षत्री पुण
विद्यासा (पञ्च १२१) ।

सुरइ पु [सुरय] साकेतपुर का एक राजा
(महा) ।

सुरइ पु [सुरभि] । बल्लव शत्रु (रंज
पाप, कण्ठ) । २ वीर माध (भा १) ।

३ इन्द्र-विरोध शत्रु पुत्र (धाम्पा २ १ ८
३) । ४ श्री की श्रिया (पण्ड १३; बर्मा
१२, पाप प्राप् ११८) । ५ न नाम-कर्म

का एक भेद, निष्कल जय प्रसिद्धी के शरीर
में मुक्त-वस्त्र होती है (कर्म १ ५६)

६ नि मुक्त-मुक्त (ज्या कुमा ११७
११६, सुर १, १८, हे २, १२१) । देखो
सुरभि ।

सुर श्री [सुर] मयिध पाक (वसा) । रस
पु [रस] वडू-विरोध (मोय) ।

सुरि पु [सुरम्] । इन्द्र देव-स्वामी (पुर
२ ११३) । मण्ड मुपा ५५) । २ एक

सुषम न [सुषर्ण] १ सोमा (अ ५ प्रामु २) कुप १ कुमा) । २ नि सुषर धरणाता (पुर १) । कुमार पुं [कुमार] मनवति यो की एक जाति (मयः सम ५१) । कुलप्राय पुं [कुलप्राय] एक हृद यदा वे कुलार्थकता नदी बहती है (अ २ १—पत्र ५२) । गार पुं [गार] सानी (शाय १ व—पत्र १४ उप ५ १२१) । सुदिपा की [सुदिपा] लता-विशेष (पत्र १०—पत्र ५२६) । गार देवा गार (गुफा १६२) । रेको सुयणा = सुबल ।

सुषम नि [सीयर्ण] सोने का बना हुआ (पुर ४) ।

सुषमाकुप की [हे] खनन करने का पात्र—पीटा घाति (पुर १४) ।

सुषण पुं [सुषण] एक विषय-योग (अ २, १—पत्र ८) ।

सुषण न [सुषण] सुन्दर वसन (मय) ।

सुषर (धन) रेको सुमर । सुषर, सुर्षरि सुर्षरि (सर्षि नि २२१) ।

सुषु रेको सुषु (प्रान) ।

सुषा पुं [सुषा] एक देव-विमान (सम १) ।

सुषा पुं [सुषा] १ सुन्दर वृष्टि (अ ५२) । २ अन्न-विशेष (नि) ।

सुषास्य रेको सुषासिणी (सर्षि नि २२१) ।

सुषास्य पुं [सुषास्य] एक राज-कुमार (विता २, ४) ।

सुषासिनी की [य सुषासिनी] विष्का पति जोतिव हो वह की (सिदि १२६) ।

सुषाह य [सुषाह] देवता की हविष घाति पात्र का मुक्त सम्पत्ति (सिदि १६०) ।

सुषाज्ज नि [सुषाज्ज] विशेष रूप से वर्णित (तनु १६) ।

सुषाज्ज नि [सुषाज्ज] वाष्पत बपुर (पत्र—पत्रा ६) ।

सुषाश्व नि [सुषाश्व] बन्धी तरह यात्र (अ गुफा ४) ।

सुषाश्व नि [सुषाश्व] बन्धी यात्राकार (पा १०) ।

सुषिउल नि [सुषिपुल] पति विरात (अ) ।

सुषिधम पुं [सुषिधम] मृदाभूत नामक इन्ध क हस्ति धर्म का धर्मपति (अ ५, १—पत्र ३ २ १६) ।

सुषिकलाय नि [सुषिकलाय] सुषिकल (पुर १ ६४) ।

सुषिका की [सुषिका, सुषिका] मेवा (अ ६०१ ६०२) ।

सुषिका की [सुषिका] लतन विद्या (प्रामु २१) ।

सुषिण रेको सुमिण (पुर १ १ १) महान् रम्य) । नु नि [य] स्वप्न-शास्त्र का वाक्पत्र (अ ५ ११६ पुर १० १८) ।

सुषिण्ड नि [सुषिण्ड] विषकुल लट (पा ७४) ।

सुषिणिस्त्रिय नि [सुषिनिस्त्रिय] बन्धी तरह निर्णीत (अ) ।

सुषिणिस्त्रिय नि [सुषिनिस्त्रिय] बन्धी तरह बन्धी इषा (पाया १ १—पत्र १२) ।

सुषिणीय नि [सुषिनीय] १ पक्षिण बुर किया हुआ (अ १ ५०) । २ अक्षय विषय-मुक्त (अ ६, २ १) ।

सुषिण न [सुषिण] १ अक्षय पोताभार । २ सदाचार बन्धी यात्रा (पुर १ २१) ।

सुषिस्थ नि [सुषिस्थ] पति विद्यायुक्त (सर्षि ४ प्रामु १२८ १६०) ।

सुषिस्थ नि [सुषिस्थ] अन्न रेको (पुर १ ५२ १२ १) ।

सुषिस्थ देवा सुषाहि (सम ४१) ।

सुषिभज नि [सुषिभज] विष्का विमान घमासान हो लक वह (अ ५, १—पत्र २६६) ।

सुषिभज नि [सुषिभज] बन्धी तरह पिबित (पाया १ १ ६—पत्र २) दीप धन) ।

सुषिभिद नि [सुषिभिद] पक्षिण यात्रा-विशेष (अ २ ११) ।

सुषिभज नि [सुषिभज] पति बपुर (गुफा १४) ।

सुषिभज नि [सुषिभज] बन्धी यात्रा, सुन्दर यात्रा (सिदि १६) ।

सुषिभज नि [सुषिभज] बन्धी यात्रा, सुन्दर यात्रा (सिदि १६) ।

सुषि नि [सुषि] स्वप्न-शास्त्र सोने की यात्रा (पाया १११ २ ६ १६) ।

सुषिरिष नि [सुषिरिष] बन्धी तरह पति सुषि (अ २ ६) ।

सुषिरिष नि [सुषिरिष] सुषि (गुफा ११०) ।

सुषिरिष नि [सुषिरिष] पक्षिण विषय (अ) ।

सुषिरिष नि [सुषिरिष] सुन्दर विद्यायात्रा (पुर १ ११४) ।

सुषिरिष नि [सुषिरिष] सम्पत्ति निर्णय (अ) ।

सुषिरिष लक [सुषि + विष] बन्धी तरह बन्धी कला । बन्धी सुषिरिष (अ) (अर्ध ११११) ।

सुषिरिष नि [सुषिरिष] बन्धी तरह विषय (पुर १ १११) ।

सुषिरिष पुं [वि] बन्धी यात्रा पुर (अ ६८) ।

सुषिरिष पुं [सुषिरिष] एक देव-विमान (सम १६) ।

सुषिरिषा की [सुषिरिषा] विद्या-विशेष (अ ७ ११०) ।

सुषिरिष पुं [सुषिरिष] १ नवनी जिन बन्धी (सम ८२) पति । २ पुं बन्धी जिन बन्धी (अ ६ २ ५ १—पत्र १४६) । ३ न यत्रय तथा सम्पत्ति का एक मान 'बन्धी' इन्ध निर्दिष्ट-नाम (अ ८ ४) ।

सुषिरिष नि [सुषिरिष] सुन्दर यात्रा-यात्रा, यात्रा (सम १२५ यात्रा १ अ ११ १ १११ १२) ।

सुषिरिष पुं [सुषिरिष] १ यत्रय का एक नाम (अ १२) । २ पुं, एक देव-विमान (सम १२) ।

सुषिरिष नि [सुषिरिष] सुन्दर यात्रा-यात्रा, यात्रा (सम १२५ यात्रा १ अ ११ १ १११ १२) ।

सुषिरिष नि [सुषिरिष] सुन्दर यात्रा-यात्रा, यात्रा (सम १२५ यात्रा १ अ ११ १ १११ १२) ।

सुषिरिष नि [सुषिरिष] सुन्दर यात्रा-यात्रा, यात्रा (सम १२५ यात्रा १ अ ११ १ १११ १२) ।

सुषिरिष नि [सुषिरिष] सुन्दर यात्रा-यात्रा, यात्रा (सम १२५ यात्रा १ अ ११ १ १११ १२) ।

सुषिरिष नि [सुषिरिष] सुन्दर यात्रा-यात्रा, यात्रा (सम १२५ यात्रा १ अ ११ १ १११ १२) ।

सुषिरिष नि [सुषिरिष] सुन्दर यात्रा-यात्रा, यात्रा (सम १२५ यात्रा १ अ ११ १ १११ १२) ।

सुषिरिष नि [सुषिरिष] सुन्दर यात्रा-यात्रा, यात्रा (सम १२५ यात्रा १ अ ११ १ १११ १२) ।

विद्यावर नये (पत्र ७ २६)। इत्यं तु
[इत्यं] एक चानुपार (अ १११)।

सुरियं तु [सुरियं] विमानेयक देव
विमान-विशेष (विशेष ११३)।

सुधो [सुधो] देवो (दुधा)

सुभा देवो सुगय (पत्र ८, १२७)।

सुसुप तु [सुसुप] वर-विशेष (हे २ ११३;
वर् १)। ज वि [ज] देव-विशेष में जगत्
(दुधा)।

सुसुप वि [सुसुप] धन्यत्वं देव-सुख (पत्र
१८ २३)।

सुसुपा [सुसुपा] एक इत्यादी (छाया
२—पत्र २३२)। देवो सुसुपा।

सुसुप तु [सुसुप]। सुसुप-विशेष के धर्म
विशेष का एक (अ १ १—पत्र २३)। २
सुसुप कः। ३ वि सुसुप कः। ४ सुसुप
(अः, अः)।

सुसुपा [सुसुपा]। सुसुप तथा प्रतिपत्त
नामक सुसुपा की एक एक धर्म-महिमी
(अ ४ १—पत्र २४)। २ सुसुप
नामक एक ही एक धर्म-महिमी (इह)।

३ एक विद्या-कुमारो देवी (अ ४ १—पत्र
११ १—पत्र १११)। ४ एक सुसुप
पत्नी (अ १२)। ५ सुसुप कः। ६ सुसुप
(अः)।

सुसुप तु [सुसुप]। देव-विशेष एक। १
उत्तम देव (गुण ११२)।

सुसुप तु [सुसुप]। इत्यं देव-पत्र (दुधा
२७ दुध २)।

सुसुप वि [सुसुप]। उत्तम धर्म
नामक (अवि १२२)।

सुसुपा वि [सुसुपा]। सुसुप तथा देव
(अः)।

सुसुपा वि [सुसुपा]। सुसुप तथा देव
(अः)।

सुसुपा वि [सुसुपा]। सुसुप तथा देव
(अः)।

सुसुपा वि [सुसुपा]। सुसुप तथा देव
(अः)।

सुसुपा वि [सुसुपा]। सुसुप तथा देव
(अः)।

सुसुपा वि [सुसुपा]। सुसुप तथा देव
(अः)।

सुसुपा की [सुसुपा]। सुसुप विमान की
प्रथम शिखा (अ १२)। २ सुसुपा
महावीर की एक धार्मिक विधान धर्म
धार्मिक कर्म में शीर्षक देव (अ १—पत्र
४२२, अ १४४)। ३ नाम धर्मक सुसुप
की अ (अ ४)। ४ सुसुप की एक धर्म
महिमी, एक इत्यादी (पत्र १ २, १२६)।

५ सुसुप के राजा सुसुप की पत्नी (अः)।
सुसुप देवो सुसुप (अ ४ ४)।

सुसुपा तु [सुसुपा]। सुसुपा नाम (दुधा
४४६)।

सुसुपा [सु]। सुसुपा धर्मक से विद्या
धर्म (अ ११)।

सुसुपा [सु]। सुसुपा धर्मक से विद्या
धर्म (अ ११)।

सुसुपा [सु]। सुसुपा धर्मक से विद्या
धर्म (अ ११)।

सुसुपा [सु]। सुसुपा धर्मक से विद्या
धर्म (अ ११)।

सुसुपा [सु]। सुसुपा धर्मक से विद्या
धर्म (अ ११)।

सुसुपा [सु]। सुसुपा धर्मक से विद्या
धर्म (अ ११)।

सुसुपा [सु]। सुसुपा धर्मक से विद्या
धर्म (अ ११)।

सुसुपा [सु]। सुसुपा धर्मक से विद्या
धर्म (अ ११)।

सुसुपा [सु]। सुसुपा धर्मक से विद्या
धर्म (अ ११)।

सुसुपा [सु]। सुसुपा धर्मक से विद्या
धर्म (अ ११)।

सुसुपा [सु]। सुसुपा धर्मक से विद्या
धर्म (अ ११)।

सुसुपा [सु]। सुसुपा धर्मक से विद्या
धर्म (अ ११)।

सुसुपा [सु]। सुसुपा धर्मक से विद्या
धर्म (अ ११)।

सुसुपा [सु]। सुसुपा धर्मक से विद्या
धर्म (अ ११)।

सुसुपा [सु]। सुसुपा धर्मक से विद्या
धर्म (अ ११)।

सुसुपा [सु]। सुसुपा धर्मक से विद्या
धर्म (अ ११)।

विमान-धर्म, धर्म-विशेष, विमान धर्म
कुम्भा धर्मो है (अ २ १—पत्र ८ १)।

सुसुपा की [सुसुपा]। सुसुपा धर्म
धर्मो है (अ २ १—पत्र ८ १)।

सुसुपा की [सुसुपा]। सुसुपा धर्म
धर्मो है (अ २ १—पत्र ८ १)।

सुसुपा की [सुसुपा]। सुसुपा धर्म
धर्मो है (अ २ १—पत्र ८ १)।

सुसुपा की [सुसुपा]। सुसुपा धर्म
धर्मो है (अ २ १—पत्र ८ १)।

सुसुपा की [सुसुपा]। सुसुपा धर्म
धर्मो है (अ २ १—पत्र ८ १)।

सुसुपा की [सुसुपा]। सुसुपा धर्म
धर्मो है (अ २ १—पत्र ८ १)।

सुसुपा की [सुसुपा]। सुसुपा धर्म
धर्मो है (अ २ १—पत्र ८ १)।

सुसुपा की [सुसुपा]। सुसुपा धर्म
धर्मो है (अ २ १—पत्र ८ १)।

सुसुपा की [सुसुपा]। सुसुपा धर्म
धर्मो है (अ २ १—पत्र ८ १)।

सुसुपा की [सुसुपा]। सुसुपा धर्म
धर्मो है (अ २ १—पत्र ८ १)।

सुसुपा की [सुसुपा]। सुसुपा धर्म
धर्मो है (अ २ १—पत्र ८ १)।

सुसुपा की [सुसुपा]। सुसुपा धर्म
धर्मो है (अ २ १—पत्र ८ १)।

सुसुपा की [सुसुपा]। सुसुपा धर्म
धर्मो है (अ २ १—पत्र ८ १)।

सुसुपा की [सुसुपा]। सुसुपा धर्म
धर्मो है (अ २ १—पत्र ८ १)।

सुसुपा की [सुसुपा]। सुसुपा धर्म
धर्मो है (अ २ १—पत्र ८ १)।

सुसुपा की [सुसुपा]। सुसुपा धर्म
धर्मो है (अ २ १—पत्र ८ १)।

सुसुपा की [सुसुपा]। सुसुपा धर्म
धर्मो है (अ २ १—पत्र ८ १)।

सुसुपा की [सुसुपा]। सुसुपा धर्म
धर्मो है (अ २ १—पत्र ८ १)।

सुप्रभ न [सुप्रण] १ सोना (घ ५० प्रायु २) इय १ कुया) । २ कि सुप्रभ वज्रजाला (घ १) । कुमार पुं [कुमार] भवकालि को की एक बालि (मय ८३) ।

सुप्रभपाय पुं [सुप्रभपाय] एक सुप्र यय वे सुप्रभेष्टा नदी बहते है (का २ १-पत्र ७२) । गार पुं [गार] घोती (साम्य १ ८-पत्र १४ ज ५ ३३३) । सुप्रिया की [सुप्रिया] लता-विशेष (पश्य १७-पत्र ५२६) । गार बेको गार (मुपा १६३) । बेको सुप्रिया = सुप्रल ।

सुप्रभ वि [सोयर्ण] कोने का बना हुआ (मुप्र ४) ।

सुप्रभाकुप की [हे] वलन करने का पान-घोटा घाति (मुप्र १४) ।

सुप्रय पुं [सुप्रय] एक विजय-शेन (अ २ १-पत्र ८) ।

सुप्रय न [सुप्रयन] सुप्र वचन (मय) ।

सुप्र (य) बेको सुप्र । सुप्रय, सुप्रयि सुप्र (यकि वि २२१) ।

सुप्रु बेको सुप्रु (प्राय) ।

सुप्रय पुन [सुप्रय] एक देव-विमान (मन १) ।

सुप्रस पुं [सुप्रय] १ सुप्र वृष्टि (वा ७६) । २ सुप्र-विशेष (विम) ।

सुप्रसयी बेकी सुप्रसिणी (कनीज १२३) ।

सुप्रसय पुं [सुप्रसय] एक राज-कुमार (विना २ ४) ।

सुप्रसिधी की [ह सुप्रसिनी] विरका पक्षी कोविट हो बर की (हिरि १२१) ।

सुप्रहा म [सुप्रहा] देवता को हविष घाति यन्त्र का एक प्रत्यय (हिरि १६०) ।

सुप्रहाज्यम वि [सुप्रहाज्य] विशेष रूप से जपित (तंजु १९) ।

सुप्रिमय वि [सुप्रिमय] धरुण वपुर (पद-उप ६) ।

सुप्रिय वि [सुप्रिय] धन्वी तरह ब्राह (का ५५ ४ ४) ।

सुप्रि वि [सुप्रि] धन्वी बालकर (वा २०) ।

सुप्रिठ वि [सुप्रिठ] धति विराज (उच) । सुप्रिठम पुं [सुप्रिठम] मृताकर नामक इय का हस्त रीत्य का धारिण (अ ५, १-पत्र ३ २ ६६) ।

सुप्रिठपाय वि [सुप्रिठपाय] सुप्रिठ (पुर ६ ६४) ।

सुप्रिठा की [सुप्रिठ, सुप्रि] मैना (उप ६०३ ६०३) ।

सुप्रिठा की [सुप्रिठा] उत्तम विद्या (प्राय ५३) ।

सुप्रि ठेको सुप्रिण (पुर ३ १ १ महा रण) । सु प्रि [सु] स्वप्न-शाक का नामकर (अ ५ १११ पुर १ १०) ।

सुप्रिण्ड वि [सुप्रिण्ड] विरुद्ध मृ (वा ७४) ।

सुप्रिणिधिय वि [सुप्रिणिधिय] धन्वी तरह भिर्सीत (म) ।

सुप्रिणिमिय वि [सुप्रिणिमिय] धन्वी तरह बनाया हुआ (साम्य १ १-पत्र १२) ।

सुप्रिणीष वि [सुप्रिणीष] १ धतिरूप इर किया हुआ (उच १ ४०) । २ धरुण विरुद्ध-मुक्त (वस ६, २ ६) ।

सुप्रिण न [सुप्रिण] १ धरुण मोवाकार । २ उवाकार धन्वी धारण (पुर १ २१) ।

सुप्रिण्ड वि [सुप्रिण्ड] धति विरुद्धाण्ड (धति ४ प्राय १२० ६ ६०) ।

सुप्रिण्डि वि [सुप्रिण्डि] ऊपर बेको (पुर १ ४२, १२ १) ।

सुप्रि वि बेको सुप्रिह (धम ४३) ।

सुप्रिमय वि [सुप्रिमय] विरका विद्या धन्याय हो मके बह (का ५, १-पत्र २६१) ।

सुप्रिमय वि [सुप्रिमय] धन्वी तरह विरिक्त (साम्य १ १ ६-पत्र ५ ६००) ।

सुप्रिमिध वि [सुप्रिमिध] धतिरूप धारणित (उच २ १३) ।

सुप्रियकरण वि [सुप्रियकरण] धति कुर (मुपा १५) ।

सुप्रियाय न [सुप्रिमान] धन्वी नाम, सुप्र वज्रकारी पश्चाई (हंजु १६) ।

सुप्रि वि [स्वप्न] स्वप्न-शोत छोले की धारणता (धोवमा १११ वे ८ १२) ।

सुप्रिधय वि [सुप्रिधय] धन्वी तरह धति सुप्रिध (का २ ६) ।

सुप्रिधय वि [सुप्रिधय] सुप्रिध (मुपा ११) ।

सुप्रिधिय वि [सुप्रिधिय] धतिरूप निरुधित (उच) ।

सुप्रिधयस वि [सुप्रिधयस] सुप्रि विरुद्धता (पुर ३ ११६) ।

सुप्रिधय वि [सुप्रिधय] धन्वी विरुधित (म) ।

सुप्रिधय एक [सुप्रि + विप्र] धन्वी तरह ध्याता कथा । धंज. सुप्रिधय (१५) (धर्म ११११) ।

सुप्रिधय वि [सुप्रिधय] धन्वी तरह विरुधित (पुर ३ १११) ।

सुप्रिधय पुं [सु] धन्वी विरुधित (का ६०) ।

सुप्रिधय पुन [सुप्रिधय] एक देव-विमान (धम १०) ।

सुप्रिधय की [सुप्रिधय] विरुद्ध-विशेष (पत्र ७ ११०) ।

सुप्रिधय पुं [सुप्रिधय] १ नवमी जिन भवकाय (धम ७४ पक्षि) । २ पुं की सुप्रि धन्वी (पश्य २ ५ टी-पत्र १६६) । ३ न राजन तथा लक्ष्मण का एक यान 'धन्वी' हव सुप्रिध-नामेष (पत्र ८ ४) ।

सुप्रिधय वि [सुप्रिधय] सुप्रि धारणता लक्ष्मण (धम १२५, का ६ ३३ ३३ धार् ११५, ३ १३) ।

सुप्रिधय पुं [सुप्रिधय] १ सुप्रिध का एक लीक (धंज) । २ पुं एक देव-विमान (धम १२) ।

सुप्रिधय वि [सुप्रिधय] धन्वी तरह विरुद्धता (पुर ६ १२५ मुपा २११) ।

सुप्रिधय की [सु] धन्वी लक्ष्मण (वे ४ १०) ।

सुप्रिधय बेका सुप्रिध (पत्र ७) ।

सुप्रिध [सुप्रिध] धन्वी नाम (वे २ ११५ धंज. मुपा) ।

सुप्रिध पुं [सुप्रिध] १ धन्वी-विशेष (वे ४ ११५ धंज. मुपा) ।

सुधो बैबी सुध (वध प्राप्ति) ।

सुध न [सुध] १ ठाका, ठाप्र (छि २) ।
२ रज्जु रखी । ३ यज-समाधि । ४ बाधार ।
५ यज वा कार्य (ह २ ७६) ।

सुधन रेगो सुध ।

सुधन रेगो सुधन (य २ १—१७ ७) ।

सुधन वि [सुधन] सुध, सुध (धं २ १०१) — सुध २०) ।

सुधमान रेगो सुध ।

सुधन पु [सुधन] १ धारण में उत्पन्न
बोध है निरंतर बुद्धिमान स्वामी (तो
व ३३) । २ दैत्य बर्त के एक योद्धा
निर्भर (य १२४) । ३ धरत निरंतर के
भार (१२२) । ४ एक दिन बुद्धि जो
दीर्घ काल के पूर्व जन्म में सुध से (व २
१२२) । ५ धरत बल के बर्त-पुत्र
(व २ २ १) । ६ यजमान पालक
वा पुत्र यावत् (य १) । ७ एक ज्योतिष्क
मोक्ष (य १) । ८ एक विद्वत् का नाम
(वा २ १३, २, य १) । ९ एक
दोष (य १) । १० वि. सुधन काला (व १३)
। ११ मित्र पु [नि] एक विद्वत् का
नाम (य १) ।

सुधया धी [सुधया] १ प्रयत्न करनेवाला
की बला (य ११) । २ एक दिन यावत्
(य १३, २०७) ।

सुधया धी [वि] यथा यथा (१० १०) ।

सुध रेगो सुध न वध न बर्त
विशेष बर्तितो न बर्तित (व ११४)
बर्तित । २ सुधिय (य ४ १२६) ।

सुधन वि [सुधन] धि-बर्त (य १२)
।

सुध निध वि [सुधन] धि-बर्त (य १२)
।

सुध न धी [वि] यथा-यथा (१० १०)
।

सुधन वि [सुधन] धि-बर्त (य १२)
।

सुधन वि [सुधन] धि-बर्त (य १२)
।

सुधपरिमादि वि [सुधपरिमादि] धि-बर्त
(य १२) ।

सुधपरिमादि वि [सुधपरिमादि] धि-बर्त
(य १२) ।

सुधपरिमादि वि [सुधपरिमादि] धि-बर्त
(य १२) ।

सुधपरिमादि वि [सुधपरिमादि] धि-बर्त
(य १२) ।

सुधपरिमादि वि [सुधपरिमादि] धि-बर्त
(य १२) ।

सुधपरिमादि वि [सुधपरिमादि] धि-बर्त
(य १२) ।

सुधपरिमादि वि [सुधपरिमादि] धि-बर्त
(य १२) ।

सुधपरिमादि वि [सुधपरिमादि] धि-बर्त
(य १२) ।

सुधपरिमादि वि [सुधपरिमादि] धि-बर्त
(य १२) ।

सुधपरिमादि वि [सुधपरिमादि] धि-बर्त
(य १२) ।

सुधपरिमादि वि [सुधपरिमादि] धि-बर्त
(य १२) ।

सुधपरिमादि वि [सुधपरिमादि] धि-बर्त
(य १२) ।

सुधपरिमादि वि [सुधपरिमादि] धि-बर्त
(य १२) ।

सुधपरिमादि वि [सुधपरिमादि] धि-बर्त
(य १२) ।

सुधपरिमादि वि [सुधपरिमादि] धि-बर्त
(य १२) ।

सुधपरिमादि वि [सुधपरिमादि] धि-बर्त
(य १२) ।

सुधपरिमादि वि [सुधपरिमादि] धि-बर्त
(य १२) ।

सुधपरिमादि वि [सुधपरिमादि] धि-बर्त
(य १२) ।

सुधपरिमादि वि [सुधपरिमादि] धि-बर्त
(य १२) ।

सुधपरिमादि वि [सुधपरिमादि] धि-बर्त
(य १२) ।

सुध पुन [सुध] १ एक देव-विमान (य
१०) । २ न नामक का एक देव, विशेष
उप से सुधन स्वर की प्राप्ति से वह बर्त
(य १००० य १ २६ ३१) । ३
सुधन सुध ।

सुधा धी [सुध] बर्तित धि-बर्त (य १,
१ १ १०) ।

सुधा बैबी सुध = सुधा (य १) ।

सुधाग न [सुधाग] सुधन स्वर
(य २) ।

सुधाग पुन [सुधाग] एक देव-विमान
(य २) ।

सुधाग न [सुधाग] सुधन स्वर
(य २) ।

सुधाग न [सुधाग] सुधन स्वर
(य २) ।

सुधाग न [सुधाग] सुधन स्वर
(य २) ।

सुधाग न [सुधाग] सुधन स्वर
(य २) ।

सुधाग न [सुधाग] सुधन स्वर
(य २) ।

सुधाग न [सुधाग] सुधन स्वर
(य २) ।

सुधाग न [सुधाग] सुधन स्वर
(य २) ।

सुधाग न [सुधाग] सुधन स्वर
(य २) ।

सुधाग न [सुधाग] सुधन स्वर
(य २) ।

सुधाग न [सुधाग] सुधन स्वर
(य २) ।

सुधाग न [सुधाग] सुधन स्वर
(य २) ।

सुधाग न [सुधाग] सुधन स्वर
(य २) ।

सुधाग न [सुधाग] सुधन स्वर
(य २) ।

सुधाग न [सुधाग] सुधन स्वर
(य २) ।

सुधाग न [सुधाग] सुधन स्वर
(य २) ।

सुसुभ नि [सुसुभ] १ बन्धी तरह गुना
 रूप १ २ बन्धी तरह ज्ञात (बन्धा १ १) ।
 १ पु बिद्यक पन्थ-विरोध (बन्धा १ १) ।
 सुसुभ } रेवो सुमग (संघि २ ६ १
 सुसुभ } १११ १२२) ।

से रेवो सेज = सेव । बह पु [पट]
 सेवाम्बर बैन (सम्पत् ११०) ।

से म [दे] इन प्रयो का सूचक प्रत्यय—
 १ नाथ का उपनाम । २ प्रसन्न (आ १
 १ बन्धा) । ३ प्रत्युक्त बल का परामर्श
 (उत् २ ४ ४ १) । ४ मनन्तरता (अ
 १ —पत्र ४२३) ।

से } सक [ही] सोना । सेह, सम्य
 सेम } (पह) ।

सेज एक [सिच्] सीपना । सेघर (ह
 ४ २१) ।

सेज पु [दे] गणपति कलेह (दे ४, ४२) ।
 सेज पु [सेय] १ करम करी वंश (सूय
 २ १ २) छाया १ १—पत्र १३) । २
 एक प्रथम मनुष्य-जाति 'ब्रह्मा मुनिना
 रिया के धने पाषाणमिश्र' (अ ७—पत्र
 १२१) ।

सेज पु [स्वेन्] पसीना (पा २७८) दे ४
 ४१ कुमा) ।

सेम पु [सक] सेल सीपना (दे १२, मा
 ७२२ देवा २१: प्रसि ११) ।

सेम न [भियस] १ सुय कथाए (मय) ।
 २ बर्ष । ३ मुक्ति मोक्ष (ह १ ३२) । ४
 नि धाति प्ररुल्य चरितय गुण 'भय संज
 योनि सेवा' (देवा = १४ कुमा १४ २६) ।
 ५ पु. बहोवर का सुवच सुवर्त (मुज १
 ११) ।

सेम नि [सिज] सकम कम्प-मुक्त (मय २,
 ७—पत्र २१४) ।

सम नि [रत्न] १ गुल्ल लज्ज (छाया १
 १—पत्र १३; मयि १३; उभ) । २ पु
 एक रत्न, कुमन-निकाय के अधिष्ठ पिता
 का रत्न (अ २, १—पत्र ४२) । ३ राज की
 पट-रत्न का प्रतिकृति (इक) । ४ धामन
 भन्ना कवि का एक राजा, जिसने मन्वान
 महावीर के पास सीखा सी की (अ ७—पत्र
 ११७)

४३ राम २) । ४८ पु [कट]
 भूतात्म नामक छत्र के मण्डि-नीय का
 प्रतिनिधि (अ २ १—पत्र १ २; इक) ।
 पह बह पु [पट] सेवाम्बर बैन बैन
 का एक सेवकाय (गुमा १४१ निव २२४३
 मर्मसं ११ २) ।

सेम नि [पन्थम्] धामापी भविष्य 'पम्
 र्ण नति केवलो सेवकासि नि सेमु नेव
 धामासपदेसेपु इत्थं ना भाव धामाहितमो
 किमुत्तए' (मय २ ४—पत्र २२१; अ
 १—पत्र ४२३ मय २१) । 'ऊळ पु
 [सुज] भविष्य क्रम (पत्र उठ २२ ७१) ।

सेजकर पु [भियस्कर] ज्योतिष्क प्रह-विरोध
 (अ २ १—पत्र ७८) ।

सेजंकर पु [भियस्कर] भेष-करण 'भेषत'
 का उच्चारण (अ १—पत्र ४२३) ।

सेजंर पु [सेवाम्बर] १ एक बैन सेवकाय
 (सं २, सम्पत् १२३ गुमा २११) । २ न
 कलेह बल (पत्र ११ १) ।

सेजंर पु [भियांस] १ एक राज-कुमार (बल
 १२) । २ बलुर्ष बापुदेव तथा बलदेव के पूर्व
 कर्म के बर्ष पुत्र—एक बैन मुनि (सम
 १२१ पत्र २ १०१) । रेवो सेजंर ।

सेजंर रेवो सेज = मयप (अ ४ ४—पत्र
 २१२) ।

सेजन् न [सेचन] एक सीपना (कुमा; मयि
 ४७ छाया १ ११—पत्र १८३ गुमा
 १ १) । यह पु [पय] सीक (छाया २,
 १ २) ।

सेजन्ना } पु [सचनक] १ राजा ज्योतिष्क
 सेजन्नाय } का एक हावा (उठ २१४ टी
 छाया १ १—पत्र २२) । २ नि. सीपने
 नामा (कुमा) । रेवो सेजन्नाय ।

सेजन्निव नि [सेचन्नाय] देवा योग्य, 'उ
 धिक्कटो सेचन्निवस बिबि' (सूय १ २, १
 ४) ।

सेजन्निवा की [सेचन्निव] कैक्यार्ष देव की
 प्राचीन राजवासी (बिहार २ पत्र १०३,
 इक) ।

सेजा की [भेवता] लहेतन (मुज १ १) ।
 सेजा रेवो सेजा (मय—सैठ २२) ।

सेजाल रेवो सेयाल = सेवाम (वे २ ११) ।
 सेजाल रेवो सेजाल = एम्प-कत ।

सेजाल पु [दे] १ पाव का मुचिपा । २
 लामिय करनेवाला पक्ष प्राणि (दे ४ २८) ।
 ३ कुचक, बेटी करनेवाला गृहस्थ (पाप) ।

सेजादी की [दे] इर्वा, दूब दूब (दे ८ २०) ।

सेजाकुम पु [दे] मनीषी की सिद्धि के लिए
 उच्छा नैत (दे ८ ४४) ।

सुसुभ ट [स्वरित] पसीना (मयि) ।

सेइया की [सेतिक्] पतिमा-विरोध,
 सेइया } दो प्रच्छि की एक नाव (सुनु २६
 सप ५ ११७ मय १२१) ।

सेज पुम [सेतु] १ बाँध पुल (सं १ १७,
 कुय २२ कुमा) । २ दासबान कियाटी
 बानसा । ३ कियाटी के पानी से सीपने योग्य
 बेल (पीप, छाया १ १ टी—पत्र १) ।
 ४ मार्ग (पीप छाया १ १ टी—पत्र १
 कम्प ४६) । 'मंच पु [बय] पुल बाँधना
 (सं १, १७) । यह पु [पय] पुसबाना
 मार्ग (सं ४ १८) ।

सेज नि [सेक] सचक सिपन करनेवाला
 (कम्प ८६) ।

सेजय नि [सेयक] सचा-बर्ता (कम्प ८६) ।

सेदुर रेवो सिदुर (मय संघि १) ।

सेंयप रेवो सिंयप (मिह ४६) ।

सेंय रेवो सिंम (उमा नि २१७) ।

सेमिय रेवो सिमिय (मय नि २१७) ।

सेबाय पु [ह] इट्ठी की धाराव (दे ४
 ४१) ।

सेबाय न [सेचनक] सिपन पिड़काय
 (बीर २७) । रेवो सेजन्नाय ।

सेबाय (मय) पु [सेचन] पन्थ-विरोध
 (मिह) । रेवो सेण = सेन ।

सेब न [सुय] सीतन उड्डातन (मय) ।

सेज रेवो सेजा । यह पु [पाव] बलित-
 स्वामी गृहस्थ (पत्र ४४) ।

सेजंमय रेवो सिजंमय (कम्प; बर्वा १
 १२) ।
 सेजंर पु [भियांस] १ ग्याधर्ष जिगदेव का
 नाम (सम ४४३ कम्प) । २ एक राज-कुम

विषये पण्डितान् ध्यातवान् को ब्रह्म-रूपं वे
द्वयं गच्छा कर्त्तव्यं वा (ब्रह्म सूत्र १.२) ।
१ मार्गशीर्ष मास का बौकोष्ठर नाम (गुप्त
१.१२) । ४ मन्मथ महावीर का पिता
रामा पिता (भाषा २.१३.१) । रेवो
सिद्धार्थ संस्कृत = योना ।

सेव्यस रेवो सेव्यस = सेव्य (पावन) ।

सेव्या की [शय्या] १ सेव विभोमा (वि १
२७० गुमा) । २ मकन बर, बसति जगन्म
(पत्र १.२२ गुप्त १.१३) । यर वु [यर]
गुह्यनामो जगन्मय का मरिचक साधु को
पुनो के लिए स्वात सेवनामा गुह्य (योग
२.२२ पत्र १.२२ वंका १० १०) । पाठ
५ [पाठ] शय्या वा काम करेवनामा
वाकर (गुमा २.२७) । रेवो सिद्धा ।

सेव्यारिभ न [वि] धर्मोत्थन द्विरोधे न
पूजना (वे ४१) ।

सेवि वु [४ अद्रिन्] बर्ष का मुक्ति
देव महाजन (वे ४२, सम २.१ छाया
१ १—पत्र १.१३ गुमा) ।

संविद्य न [वि] गुण-विशेष (पत्र १—पत्र
११) ।

संविद्या की [वि सेविता] शब्द विद्वत् नदी
(पत्रा २.१ ११) ।

सेवि की [मेवि] रेवो सेवी = सेवी (गुप्त
१.१० २.१११) ।

सहिषा, रेवो सेविता (पत्र २, १ १४
सेवी १ की १) ।

सेवी की [मेवी] १ पति (सम १.४२
गुमा) । २ पति (गुप्त) । ३ धर्मिक योग्य
श्रेष्ठपुत्री को एक नाम (गुप्त १.०१) ।
रेवो सजि ।

सेज वु [शयन] १ पश्चिम-पश्चिम (पत्र ३,
७१ वे ४० ५४ १ ७४) । २ विचार
वृत्त का एक रास (पत्र २, १३) ।

सेज रेवो सेज्य मण्डलपद्मो नदी मरति
महाई इत्यमर (भाषा २) ।

सेजा की [संजा] १ कन्या संन्यासकी
की माता (पत्र १.११) । २ बरकर, शिव
(गुमा) । ३ एक ब्रह्म ब्राह्मी, नौ बर्ष
ब्रह्मचर्य की बर्ष की (गुमा पत्र) । ४ ब्रह्म

बरकर विषये १ हाथी १ रास १ बोहे बीर
१२ व्यासे हों (पत्र २१ १) । जिय,
पी, पय वु [नी] सेना-पति बरकर
का मुक्ति "केलापिपी" काहे केतुल
विशेष गुरुदत्त (पत्र १ ७७) गुमा

१ बर्ष ५४ पत्र २४ २) । मुह
न [मुह] बह सेना जिसमें १ हाथी १
रास, २७ बोहे बीर ४२ व्यासे हो (पत्र
२१ १) । बह वु [पति] सेना का
मुक्ति सेना-नायक (गुमा पत्र १७ २
सम २७ गुमा २.११) । "हिबह वु
[विपति] बहो वृषीक शर्ष (गुमा ७१) ।
सेव्यस व [सैन्यपत्र] संवत्सरिक संवत्
का केतुल (गुमा बीर) ।

सेवि की [मेवि] १ पति । २ वृद्ध (गुमा) ।
३ कुलकार प्राणि मनुष्य-जाति (छाया १
१—पत्र १७) ।

सेविभ वु [मेवि] १ मन्त्र देव का एक
प्रकार रास (छाया १ १—पत्र ११ १७;
छा १—पत्र ४.१४ धर्म १.१४ उवाच दंत
पत्र २, १३ गुमा) । २ एक ब्रह्म मुनि
(गुमा) ।

सेविजा की [सेविज्य] एक ब्रह्म मुनि-रास
(गुमा) ।

सेविभा १ की [सेविज्य] कन्य का एक
सेविज्य १ मे (सिंह) ।

संविद्य रेवो सेविभ (पत्रोप १३) ।

सेविजा वु [सैनिक] बरकर विचार (पत्र
१०१) ।

सेवी की [मेवी] रेवो सेवि (गुमा छाया
१ १) ।

सेज रेवो सेज = शय्य (छाया १ ४—पत्र
१.४४ पत्र) ।

सेज रेवो सेज = शिव (गुप्त ११) ।

सेज (गुप्त) रेवो सेज = शिव (सिंह) ।

सेवुज वु [शत्रुज] एक प्रविष्ट बर्ष
(छाया १ ११—पत्र २.२१ दंत) ।

सेव रेवो सेज = शिव (वे ४ १४ लघु
१३) ।

सेज रेवो सेज = सेज (बीर २—पत्र २२) ।

सेज रेवो सेज = शय्य (वे १ १२ गुमा
छाया गुप्त १.२ ४ वि) ।

सेवक १ रेवो सेज (वे २, २४, २४; गुमा
सेज २) ।

सेज वु [शिव] शय्य-शिव, शिव (गुप्त १४) ।

सेमाजिमा की [शेफाजि] ब्रह्म-विशेष
(वे १ २११; ग्राह १४) ।

सेमुसी १ की [शेमुसी] यमा, बुद्धि (पत्र,
सेमुसी १ जग १.११ हाथी १४ २२) ।

सेम्ह वु [सेव्यम] कन्य, सेम्हा यमी
(ग्राह २२ वि २६७) ।

सेर नि [सेर] स्वकटी लघु लघु
(लघु ७७ वि ३७) ।

सेर नि [सर] शिवर (वे १ ७७ गुमा) ।

सेर वु [वि] सेर, पश्चिम-विशेष (सिंह) ।

सेरवी की [सरनी] की-विशेष, कन्य के
बार में धार विषय-मन्त्र करेवनाको लक्षण
की (गुमा) ।

सेरह वु [वि] धरत की एक कतम पति
(सम्य २.११) ।

सेरिय वु [वि] कुर्ष कुप, पाप्मी का शिव
(वे ४ ४४) ।

सेरिय रेवो सेरिह (गुप्त ४ ११; वे ४
४४ वु) ।

सेरिय की [वि] वाय-विशेष, "कर्मिक-
केपिपुत्र" (सम) ।

सेरिय वु [वि] कुल-विशेष (पत्र १—
पत्र १२) ।

सेरि वु की [सेरिय] श्रेष्ठ मन्त्रि (पत्र
१.७२ ७.४२ गत—गुप्त १.१३) । की
की (नाम) ।

सेरी की [वि] १ कन्यी प्राणि । २ कन्य
प्राणि (वे ४, ४७) । ३ कन्यी प्रजा
(सिंह १.११) । ४ कन्य-विशेष कन्यी
(पत्र) ।

सेरीस वु [सेरीस] एक बर्ष का नाम
(वी ११) ।

सेर वु [रीह] १ पर्वत पहाड़ (वे २, ११
प्राया गुप्त १ २२४) । २ वायु-रूप
(गुप्त १ ११) । ३ कन्य-विशेष कन्यी
(वे १ ११) । ४ वर वु [वर] लघु बर्ष-
नामा शिवी, शिवान्त (गुप्त १.४४) ।

माह न [गुह] पर्वत में बना गुहा वर
(गुमा) । जाया की [जाया] पर्वती

विसे मयमम् ध्वनिधन को द्यु-यय से
अथ पाछा कयमा बा (पम् पुत्र २१९) ।
१ मयमय मय का धोबोतर नाम (पुत्र
१ १६) । २ मयमम् मयबीर का पिता
यमा विचार्य (पात्र २ १६ १) । रेको
सिखस संभ्रम = मेराव ।

सेजस रेको संभ्रम = मेराव (आम) ।

सेजा की [शय्या] १ प्रम विद्वान् (पि १
१७० पुत्र) । २ मकल नद, नववि ज्ञानमय
(पुत्र १२२ गुह १ १२) । यर पुं [यर]
गुह-न्याय उपमय का मयिक वायु को
रखने के लिए स्वाम सेनपाला गुह्य (पुत्र
२४२ पत्र ११२ पत्रा १७ १७) । वाछ
पुं [पात्र] अथवा बा नाम करनेवाला
पात्र (पुत्र २४७) । रेको सिखा ।

सेजासिख न [रे] पन्थोम विरोधे में
सुलत (रेन ४१) ।

संदि पुं [द संदिम्] अथ का कुचिया
देव, मायन (रे ४२ तम २१) साबा
१ १—पत्र १६ पत्रा) ।

संदिम न [रे] एण-विरोध (पत्र १—पत्र
११) ।

संदिम की [रे संदिम] पत्र विद्वी नदी
(पात्र २ १ ११) ।

संदि की [संदि] रेको संदि = मेरी (पुत्र
१ १७ १ १६) ।

संदिवा, रेको संदिवा (पत्र २ १ २०
सेरी १ की १) ।

संदि की [संदि] १ वीच (पत्र १४२;
पत्र) । २ पत्रि (पत्र) । ३ पत्रिप योजन
पत्रागरी को एक गत (पत्र १७१) ।
रेको संदिम ।

संदि पुं [संदिम] १ वीच-विरोध (पत्र ८,
७६ १७ पत्र २ ७४) । २ पत्रावर
वत का एक पत्रा (पत्र ४, १२) ।

संदि रेको संदिम = पत्रावरको वतले वरवि
मयाई विपययई (पात्र १) ।

संदि की [संदि] १ कयन संभ्रमाली
की माता (पत्र १२१) । २ वरवर, वीच
(पुत्र) । ३ एक वीच बानी, को पत्रि
सुनय की वीच की (पत्रा वीच) । ४ वर

वरवर विसे १ हाथी १ रक २ बोई वीर
१२ पत्रा हो (पत्र २१ १) । पिय,
वी पय पुं [वी] केम-पिय, वरवर
का प्रथिमा [सेलासिखो] यई वेतुल
विरोध नुवयस (पत्र १ ७७ पुत्रा
१ यमवि ४२ पत्र २४ २) । सुह
न [सुह] वर रेको २ हाथी २
रक २ बोई वीर ४२ पत्रा हो (पत्र
२१ १) । वर पुं [पत्रि] सेला का
प्रथिमा सेला-नारक (कय पत्र १७ २
पत्र २७ पुत्रा २२) । विय पुं
[वियवि] वी पूर्वाध वर (पुत्रा ७१) ।

सेजासिख न [सेजासिख] केम-पिय सेम
का वेतुल (कय वीच) ।

सेम की [सेम] १ वीच । २ संदि (पत्र) ।
३ पुत्रावर धवि मयम-विय (पात्र १
१—पत्र १७) ।

सेमिख पुं [अविख] १ मय वत का एक
प्रथिमा यमा (पात्र १ १—पत्र ११ १७
४ १—पत्र ४२२, पत्र १२४) अथ वत
पत्र २, १२१ पुत्रा) । २ एक वीच पुत्रि
(कय) ।

सेमिमा की [सेमिमा] एक वीच पुत्रि-यमा
(कय) ।

सेमिमा २ की [सेमिमा] अथ का एक
सेमिमा ३ मेर (पत्र) ।

सेमिमा रेको सेमिमा (पत्रा १२) ।

सेमिमा पुं [सेमिमा] वरवर विपय (४
१४१) ।

सेमी की [सेमी] रेको सेमि (पत्रा साम
१ १) ।

सेम रेको सिम = वीच (पात्र १ —पत्र
१४१ वरवर) ।

सेम रेको सिम = वीच (पत्र १६) ।

सेम (पत्र) रेको सेम = वीच (पत्र) ।

सेम पुं [समुच्चय] एक प्रथिमा वरवि
(पात्र १ १६—पत्र २२१ वीच) ।

सेम रेको सेम = वीच (रे ४ १० स्वय
१६) ।

सेम रेको सेम = वीच (वीच २—पत्र २२) ।

सेम रेको सिम = वीच (रे १ १२ पुत्रा
कय पुत्र १२, १ ४६) ।

सेम १ रेको सेम (रे २ २२ वर पुत्रा
सेम १ पात्र २२) ।

सेम पुं [सेम] पुत्र-पिय, वीच (पात्र १४) ।

सेमासिमा की [सेमासिमा] वर-विरोध
(रे १ २२१ पात्र १४) ।

सेमुसी १ की [सेमुसी] वेला वीच (पत्र
सेमुसी १ पत्र १२१ वीच १४ २२) ।

सेम पुं [सेम] अथ वीच (पत्र २२१ वीच २४ २४) ।

सेरि [सेर] स्वय-पिय स्वय-पिय
(पत्र ७७ वीच १७) ।

सेरि [सेर] विपय (रे २ ७ पुत्रा) ।

सेर पुं [रे] वर, विय-पिय-विरोध (पत्र) ।

सेरी की [सेरी] वी-विरोध, पत्र के
वर में वरवर विपय-वरी करनेवाली स्वय
की (कय) ।

सेरि पुं [रे] वर की एक वरम वरि
(पत्र २२१) ।

सेरि पुं [रे] पुत्र वीच, पानी का वीच
(रे ४ ४४) ।

सेरि रेको सेरि (पत्र ४ ११ रे ८
४४ ८) ।

सेरि पुं [रे] वर-विरोध, वर-विरोध-
विपय-विपय (पत्र) ।

सेरिय पुं [रे] वर-विरोध (पत्र १—
पत्र १२) ।

सेरि पुं [सेरि] वीच, वीच (४
१७२ ७४२; पत्र—पुत्र १२२) । वी
की (पात्र) ।

सेरी की [रे] १ वीच वीच ११ । २ वर
पात्रि (रे ४ ४७) । ३ वर, पुत्रा
(पत्र १२८) । ४ वर-विपय वीच
(पत्र) ।

सेरीस पुं [सेरीस] वर वीच का वीच
(वी ११) ।

संदि पुं [संदि] १ वीच वीच (रे २ ११;
पात्रा पुत्र १ २२२) । २ वर-वर वर
(पत्र ११) । ३ वर-वर वर वर (रे
४ ४१) । वर पुं [वर] वर वर-
वर वर वीच वीच (पत्र १४२) ।

संदि न [संदि] वीच में वीच वीच वर
(कय) । वीच की [विय] वीच

सोमधिया बी [सोमधिय] मयधे-विरोध
(छाया १ १-पत्र १ ५)।

सोमग्रह रेवो सोअमद्र (वच २ ५)।

सोमाइ रेवो सुमाइ (उच २८ १ पत्रम
२९ ९ उ २५)।

सोमाइ (?) प्रक [प्र+स] पधरता
कैवडा। सोमाइइ (बात्ता ११६)।

सोभ रेवो साभ=मुन्। नऊ सोचंव,
सोभमाय (नाट=मुन्क २८१ छाया १
१-पत्र ४७)। छंऊ. सोचिऊय इधगाए
पाठेनमसिअरवणेण धीमन्धिओ पया' (उ
१६७)। छ साब (उभ)।

सोचिय नि [साचिव] मुद्र किमा हुपा
प्रधानिव (उ १८८)।

साब रेवो साच।

सोचं
सोबा रेवो सुज = पु।

सोच्य'।

सोचिय रेवो सोरिय (इक)।

सोचन्य } न [सीअन्य] सुननय यननया
सोचन } यननय (उच ७२८ टी मुर १,
११)।

सोच रेवो सोरिय = सीर्य (प्राङ १६)।

सोचन नि [शोच्य] मुद्रि-योग्य, शोकोय
(मुन १ टी)।

सोचन्य वु [वे] रनक बोवो (गाम)।
रेवो सुनन्य।

सोचिय रेवो सोचिय (कुंर १४)।

सोचिय नि [सोचिय] रेवो सोचिय = सीधिय
(कम्य धीय मोह १ ४ कम्य बाह ११)।

सोचिय नि [सोचिय] रेवो सोचिय = सीधिय
(कुमा ११ ४ १० १ ११ ७८ ८०)
प्राङ १६)।

सोच नि [साच] छन किमा हुपा (उच २९४
५, बात्ता १४७)।

सोचन्य
सोचु रेवो सङ = छ।

सोच नि [छोण] बास रच नयवाता
(गाम)।

सोचन नि [सोचन] निरुद्धि, निरुद्धि
(पत्र १ ४-पत्र ७८ धीय ठंउ २)।

सोमधिय नि [सोमधिय] १ धान-मासक।
२ कुतो से शिअर कलेनाता (उ २३१)।

सोमार रेवो सुणार (गा १११ नि १९
१३२)।

सोणि बी [सोणि] गदी कमर (कम्य उच
१३६)। सुसग न [सुसग] कदी-मुन
करवनी (धीय)।

सोणिअ वु [शोनिअ] कवाई (११ १२)।

सोणिअ न [शाणिव] चरिद, मुन (उच
प्रति)।

सोणिअ वु [शोणिअ] रछा बावो
(निद्र २८)।

सोणी बी [सोणी] रेवो सोणि (पत्र १
४-पत्र १८८ ६)।

सोणीअ रेवो सोणिय = सोणिय, 'मुद्रि
मंदपोखी मे छ छे छ पनक्य' (धापा १
८ ८ ८ नि ७९)।

सोणन न [स्यय] सोना सुनळ (प्राङ १
संधि २१)।

सोणन रेवो सुणन = सुणन (पत्र १८२१)।

सोणन रेवो सुणन = सुणन (संधि १४ प्राङ
१८० पा १ ७ काड १११)।

सोच न [सोच] कम, यवछेनिय (धापा,
रनक निद्र १८)।

सोच रेवो साच = सोचय (६ २ ६८ ना
४३१ से १ ४८ कुमा)।

सोचि रेवो सुचि = सुचि (वह; उच १४८
टी)।

सोचिय वु [सोचिय] रेवोमासी बाइछ
(निद्र ४१६, नाट=मुन्क ११४ प्राच)।

सोचिय नि [सोचिय] १ सुच-निमिष सुते
का बना हुवा (धीय ७८, धीय ७ ४)।
२ सुते क म्यापरी (धुनु १४६)।

सोचिय वु [सोचिय] धीनिय बन्नु-विरोध
(पत्र १-पत्र ४४)।

सोचियमई } बी [शुक्रिनायटी] केम्य
सोचियमई } रेवो बी प्राचीन राजवानी
(पत्र ६५)।

सोचि बी [रे] गरी (१ ८ ४४ पत्र)।

सोचिय वु [स्यसि] १ एक धन-विपन्न
(सोच १११)। २-रेवो सत्यि (संधि

२१ ना २४४ प्रति १२८; नाट=छना
१)।

सोचिय वु [स्यसि] १ योचियक प्र-
विरोध (ठा २, १-पत्र ७८)। २ न
शाक-विरोध एक प्रकार बी हृष्टि बनसवि
(पत्र १-पत्र १४)। ३-रेवो सत्यिअ
सोचियय = स्यसिअ (पत्र १ ४-पत्र
१८८ छाया १ १-पत्र १४)।

सोचाम वु [सोचाम] रेवो सोचामि
(इक)।

सोचामयो रेवो सोचामयो (पत्रम २१
८१)।

सोचामि वु [सोचामि] नमरेज के धरक-
सोय अर धरिपति (ठा २, १-पत्र
१ २)।

सोचामिणी रेवो सोचामिणी (नाट—
मातरी ८)।

सोचास वु [सोचास] एक पना (पत्रम
२२ ८१)।

सोच (सी) रेवो सचइ = सीच (पत्र ११ ९)।

सोपार } वु, न [सोपार, क] रेव-
सोपारय } विरोध (पत्रम ६८ १४ सुपा
२७४)। २ न नमर-विरोध (धार् १९
टी ११)।

सांभय नि [सीनय] मुन्क यमक कवि
अर काना हुवा ईय (पत्र ६)।

सोम धक [शुम] सोमना बनकन्या।
सोमनि (मुन्क १६) मुक, सोमिय, सोमियु
(मुन्क ११)। बधि सोमिचि (मुन्क
१६)। वक सोमय (छाया १ १-पत्र
२४ कम्य धीय)।

सोम एक [शोमय] सोमना सोम-मुद्र
कन्या। सोमय (मन)। वक सोमयय (पत्र
४६)। छंऊ सोमिया (कम्य)।

सोमना नि [सोमना] १ सोमनाता। २
सोमनाता (कम्य)।

सोभगा रेवो सोहमा (स्वय ४२)।

सोभय रेवो सोहय = सोमय (पत्रम ७८
१९ स्वय ४६)।

सोभा रेवो सोहा = सोभा (प्राङ १७) उच
२१ न कम्य मुन्क १६)।

सोराधिया की [सोराधिया] मपरी-विशेष (सुमा १ २-पत्र १ ४)।

सोमसु रेवो सोअमसु (वच २ ४)।

सोमाइ रेवो सुमाइ (उच २८ १) पत्र २६ ६; उच २४ १)।

सोमाइ (?) एक [प्र+स] पत्रणा फैला। सोमाइ (बात्ता १२६)।

सोभ रेवो सोअ = सुभ। बड़ सोचंत, सोभमान (मट—पुष्प २८१ एमा १ १—पत्र २७)। चंड. 'सोभिकण हलपय' पाठमसिंहारकेल पोमजिमी उमा' (उ २१०)। ४ साभ (उच)।

साधिय वि [साधित] सुध किया हुआ प्रशान्त (उ १४०)।

साभ रेवो साभ।

साभ |
साभा रेवो सुभ = सु।

साय्य |

सोभिय रेवो सोरियम (उच)।

सोभिय न [सोभिय] सुकका सकलप, सोभिय न समसली (उच ७२८ टी मुर २, ११)।

सोअ रेवो सोरिय = सोय (प्राठ १६)।

सोभिय वि [सोभिय] सुकि-सोभय सोभनीय (सुमा १ ६)।

सोभिय वु [वि] रवक पोली (पाम)। रेवो सुभमसु।

सोभिय रेवो सोभिय (कट्टर १४)।

साधीर वि [साधीर] रेवो साधीर = सोधीर (कम पोष मोह १ ४) कपु बाव ११)।

साधीर न [साधीर] रेवो साधीर = सोधीर (सुमा १ ४ ४ ४ १३ ७४ ८७) एक १६)।

साध वि [साध] सवत किया हुआ (उच २६४ टी, बात्ता १२७)।

साधिय रेवो साध = सध।

साध वि [साध] धातु रच नईवाला (पाम)।

साधिय न [वि सोनिय] निकटिक किाई (पह १ ४—पत्र ७८ टीप उचु २)।

सोणहिय वि [सोनिक] १ धान-नासक। २ कुत्तों से छिन्न करनेवाला (उ २२१)।

सोणार रेवो सुणार (बा १११ पि १६ १२२)।

सोपि की [सोपि] कटी कमर (कम उच १२१)। सुसग न [सूत्रक] कटी-नूत करणी (पौ)।

सोपिअ वु [शोानक] कट्टाई (रे १ १२)।

साधिय न [साधित] धिय, वृत्त (उच प्रवि)।

सोणिम वु की [शोकिम] रट्टा बाती (निक २८)।

सोपी की [सोपी] रेवो सोपि (पह १ ४—पत्र १८, २)।

सोपीअ रेवो साधिय = सोपिअ, 'मुंति मसपोपीम ल छरे स मसक' (भाषा १ ८ ८ २; पि ७१)।

सोण न [सय] सोना सुकई (प्राठ १ उचि २१)।

सोण रेवो सुण = सुम (पह बा ७२१)।

सोण रेवो सुण = सुमा (उचि १४ प्राठ १७; पा १ ७ काय ४११)।

सोच न [सोच] कम, मसकेलिय (भाषा, रया; निक १८)।

सोच रेवो सोभ = सोच (रे २ २८; का २४१; रे १ २८ सुमा)।

सोच रेवो सुचि = सुचि (बह उच १४८ टी)।

सोचिय वु [सोचिय] बेधामापी बहल (पिठ ४२६, मट—पुष्प ११४ प्राठ)।

सोचिय वि [सोचिय] १ सुक-निर्मित लुटे का बना हुआ (सोभिय ८६, सोभ ७ ४)। २ लुटे का बनायी (सुमा १४६)।

सोचिय वु [सोचिय] धीमिय कन्त-विशेष (पह १—पत्र ४६)।

सोचियमई की [सुचियमई] केक्य सोचियमई रेव की प्राचीन पनबानी (उच ४७)।

सोपी की [वि] नदी (रे ८, ४४ बह)।

सोसिय वु न [ससिय] १ एक बेन-विमान (कोच १११)। २—रेवो ससिय (उचि २१)।

२१; पा २४४ प्रमि १२८ मट—उच १)।

सोसिय वु [ससिय] १ क्वाचिय प्र-विशेष (उ २ १—पत्र ७८)। २ न शाक-विशेष एक प्रकार की हडि बतलति (पह १—पत्र १४)। ३—रेवो ससिय सोसियिय = ससिय (पह १ ४—पत्र १८; लाया १ १—पत्र २४)।

सोसाम वु [सोसाम] रेवो सोसामि (बह)।

सोसामि रेवो सोसामि (पत्र २६ ८१)।

सोसामि वु [सोसामि] नमरेक के घरव सोस का मसपति (उ २, १—पत्र १२)।

सोसामि रेवो सोसामि (मट—मावटी ८)।

सोसाम वु [सोसाम] एक उमा (पत्र २२ ८१)।

सोभ (सी) रेवो सय्य = सीव (पि ११ ५)।

सोपार } वु. न [सोपार, क] रेव-सोपारय } विशेष (पत्र २८ १४ सुमा २७२)। २ न मप-विशेष (पाम १६, टी ११)।

सोभिय वि [सोभिय] सुकभु लयक कवि का बनाया हुआ ईन (मट)।

सोभिय वु [सुभ] सोफा चमकता। सोनीत (सुभ १६) मूक, सोभिय, सोभिय (सुभ १६)। मवि सोभिय (सुभ १६)। बह. सोभिय (सुमा १ १—पत्र २४ कम दीन)।

सोभिय वु [सोभिय] सोभिय सोभिय-मुक करा। सोभिय (पत्र)। बह. सोभिय (पि ४६)। चंड साधिया (कम)।

सोभिय वि [सोभिय] १ सोभियला। २ सोभियला (कम)।

सोभिय रेवो सोभिय (सय ४२)।

सोभिय रेवो सोभिय = सोभिय (पत्र ७८ २६, सय ४२)।

सोभा रेवो सोभा = सोभा (प्राठ १७ उच २१ ८ कम सुभ १६)।

सोमिध देवो सोमिध = सोमिध (छाया १
१ टी—पत्र १)।

सोम दु [सोम] १ कश्च, यदि, एक ज्यो-
तिष्क महाह (छ २ १—पत्र ७७) विदे
१८६१ मठ)। २ भस्मना पामनेत्रक का
पात्रो मठवर (छ १ १ छ ८—पत्र
४२६)। ३ एक प्रसिद्ध क्षत्रिय-वंश (पत्र
१ २)। ४ कुरुवंशके धीर बभ्रुके का
पिता (छ १—पत्र ४४८ पत्र १
१८२)। ५ एक विधवार वर-पति को
ज्योतिष्क का स्वामी का (पत्र ७ ४३)।
६ एक ठेक का नाम (गुप्त २२७)। ७ एक
ब्रह्मण का नाम (छाया १ १९—पत्र
१२६)। ८ वयोरे, कश्चिन् सोमरेण तथा
सोमरेण के एक-एक लोकपाल के नाम (छ
४ १—पत्र २ ४ पत्र १ ७—पत्र
१२४)। ९ कला-सिन्धेय, लोकपाल। १०
उत्कल राज। ११ वसुध (पत्र)। १२ धार्म-
मुक्ति दूरि का एक शिष्य—राम मुनि
(कर्म)। १३ पुं. देव-विमान-विदेय (श्रेष्ठ
११३: १४१ १४२)। १४ वि श्रीतिष्ठन्,
मन्त्री (कर्म)। काश्यप पुं [काश्यप]
श्री लोकपाल का पात्रागण देव (अ ३
७—पत्र १२४)। माहज न [माहज]
कश्च-पहल (छ ४ १२६)। चंद प
[चन्द्र] १ देवता के न पलक लाते
विन-देव (छ १२३)। २ धार्मिक देवक
का देवता कर्म का नाम (पुत्र २१)। अरु
पुं [यरास] एक धना (पुत्र २ १३४)।
माह देवो माह (पत्र)। दत्त पुं
[दत्त] १ एक ब्रह्मण का नाम (छाया १
१९—पत्र १९४ २ एक वैद मुनि को उक्त-
बाहु-स्वामी का शिष्य का (कर्म)। ३ भवन्त
कश्चक स्वामी को प्रथम शिष्य-माहा वृत्त
(पत्र १२१)। ४ राजा कालीक का एक
परिचित (पिता १३—पत्र १)। ५ दत्त प
[दत्त] १ श्रीमन्मन्त्र लोकपाल का साक्षा-
त्क देव (अ ३ ७—पत्र १२३)। २
भवन्त पञ्चम को प्रथम शिष्य-पञ्चम वृत्त
(पत्र १२१)। मूह व [मूह] शीघ्र
देव की मुक्ति दूरि-माहरेण (टी १२,
अन्त ७३)। एवम एह व [मभ]

१ क्षत्रियों के लोकपाल का यदि पुत्र का
यदि का एक पुत्र (पत्र १ १ पुत्र
२१२)। २ छत्रहीन राजा की का एक वैद
पात्रों धीर धीकर (पुत्र ११३)। ३
वयोरे के सोम-लोकपाल का उत्पन्न-वंश
(छ १—पत्र ४२२)। मूह पुं [मूह]
एक ब्रह्मण का नाम (छाया १ १९—पत्र
१२६)। मूह न [मूहिक] एक कुल
का नाम (कर्म)। य न [क] एक गौ
की जीव पोष की राजा है (छ ७—पत्र
३२)। य का वि [य य] सोम-
राज कीनेत्रता (पत्र)। सिरि की [सि]
एक ब्रह्मणी (देव)। सुंदर पुं [सुन्दर]
एक प्रसिद्ध वैवाच्य तथा कश्चकार (सि
१४ अन्त ४४)। पुरि पुं [सुरि] एक
वैवाच्य पात्रागण-प्रकृत का कर्ता एक
वैवाच्य (पात्र ७)।

सोम नि [सीव] १ धीर, पुत्र (छ १
अ १२, ६—पत्र २७८)। २ धीर,
रौच-रहित (अ १२, १)। ३ प्रकृत
स्वामी (कर्म)। ४ प्रिय-करीन विद्वान्
वरौष धिक् मासुप हो वह। ५ मर्हद,
कुम्हार। ६ शाल धा-विवाहा (पोष २२)
का पुत्र १५ १२२)। ७ सोम-पुत्र
सीमन्त (अ २)। देवो सोमन्त।

सोमहज नि [हे] धोने की प्रारतलता (३
न ११)।

सोमगळ पुं [सीमङ्गळ] धीरिक् कर्तु की
एक कवि (अ १६, १२६)।

सोमर्षविप नि [स्वपनामिष्व स्वाप्ता-
मिष्व] १ धोने के बाद किया जाता प्रति-
कृत—धार्मिक-विदेय। २ स्वप्न-विदेय
में किया जाता प्रतिकृत (अ १—पत्र
३७२)।

सोमयस पुं [सीमनस] १ महाविष्णु-वंश
का एक वक्त्र-वर-वंश (अ २ ३—पत्र
१६३ अ २, अ ४)। २ अ वंश पर
पुत्रोत्पत्ता कृष्ण महिष देव (अ ४)। ३
वक्त्र का घटता पित (पुत्र १ १४) ४
पुं. लक्ष्मण-नामक देव का एक धीर
धार्मिक विद्वान् (अ ७—पत्र ४१७ धीर)।

२ एक देव-विवाह, कर्ता देविक-विवाह
(श्रेष्ठ १३७ १४१ पत्र १२४)। ३ धीर-
नर-वंश का एक वक्त्र (अ २ ३—पत्र
८)। ४ न देव-वंश का एक वक्त्र (अ २
३—पत्र ८)।

सोमयस न [सीमनस्य] १ कुम्हार मन
शीघ्र मन (एक कर्म)।

सोमयस की [सीमनस] १ यमु-पुत्र
विदेय, विदेय पृष्ठ धीर वसुधीप महाका
है (अ)। २ एक राजा की (अ)। ३
धीर-वंश का की एक वाली (अ ४)। ४
वक्त्र की धीरों पति (पुत्र १ १४)।

सोमयसि नि [सीमनसि] १ शीघ्र
महाका। २ प्रकृत मनका (कर्म)।

सोमयस देवो सोमयस = धीरकर्म (कर्म,
धीर)।

सोमगणिसय देवो सोमयसि (कर्म धीर-
का १ १—पत्र ११)।

सोमह देवो सोमयस (प्रकृत २ १ १)।

सोमहि नि [हे] कर्त, कर्त (अ १२)

सोमहि पुं [हे] एक कर्म (अ ४, ४३)

सोमा की [सोमा] १ शक के सोम धार्म
पात्रों लोकपालों की एक-एक पट्टनी का
अप (अ ४ १—पत्र २ ४)। २ कर्त
कितरे की प्रथम शिष्या (अ १२२ पत्र
१ ७—पत्र १२२)।

सोमा की [सीमा] नर विद्व (अ १—
पत्र ४७८ अ १ १—४६१)।

सोमान न [समान] मवान, मरुत (अ ४
४२)।

सोमानस व [सोमानस] कर्त देविक
विद्वान् (पत्र १२४)।

सोमर ३ देवो सुकुमार (पा १ ६४ व
सोमा ३ १२६ मै ७ वक्त्र मात्र है।

१७१) कर्मा प्रकृत २ १ १ कर्म)।

सोमगळ न [हे] माध (अ ४ ४४)।

सोमिध व [सोमिधि] धम प्रकृत कश्चक
(अ १३)।

सोमिध की [सुमिध] कश्चक की माता।

पुत्र पुं [पुत्र] कश्चक का 'वक्त्र-विदेय'
पुत्र (पत्र १ २०) सुव पुं [सुव]
यही सर्व (पत्र ७२ १)।

सोमिष्ठ पुं [सोमिष्ठ] एक ब्राह्मण (अंठ १)।

सोमिष्ठि देवी सोमिष्ठि = सोमिष्ठि (अ १२, ८८)।

सामसर पुं [सोमेश्वर] सोपपुत्र सोमनाम महादेव (सम्पत् ७३)।

सोम्य वि [सोम्य] १ रमणीय सुखर (वि १ २७)। २ ठंडा सोम्य (वि ४ ८)।

१ सोम्य प्रकृतिवादा, राष्ट्र स्वभाववाता (वि २, १६ विवे १७१)। ४ प्रिय-वर्णन विष्णु वर्णन प्रिय बने बहु। २ विवहा विष्णुवा सोम-वर्णा ही बहु। ६ यास्वर, कर्मिष्ठवा ७ पुं पुत्र प्रह। ८ शुभ प्रह।

१ श्रुत विष्णु सम एति। १ जुम्बर बुध। ११ शीत-विशेष। १२ सोम-रस पीनेवाता वाइष्ठ (माध)। देवी सोम = सोम्य।

सोमि (पा) य [स एव] बहो (माध १२१)।

सोमट्ट पुं [सोपपुत्र] १ एक भारतीय देव, सोम, काश्मिरावाइ (एक ही ११)। २ वि सोम देव का निवासी (भावक २१)। ३ न. जन-विशेष (विष्)।

सोमट्टिया की [सोपपुत्र] १ एक प्रकार की मिट्टी मिट्टीके (भावा २ १ ६ १ एव २, १ १८)। २ एक वैत पुनि-यावा (कर्म)।

सोमरम न [सोमर] गुण्य कुटुंब (विष् सोमरम १११ कुटु २२३) यदि उप सोमरम २८९ टी)।

सोमरम की [सोमरम] गुण्य देव की शरीर वाचा प्रकृत पात्र का एक मेर (विष् १७)।

सोमर देवी सोमरम (पद)।

सोमरिष्ठ न [सोमि] गुण्य, पराक्रम (प्राध ५३)।

सोमरिष्ठ न [सोमि] १ कुशावर्त देव की शरीर राजवासी (एक)। २ एक यज्ञ (विष् १ ८—पत्र ८२)। वृक्ष पुं [सोम] १ एक मष्मिष्ठार का पुत्र (विष् १ १—पत्र ४ विष् १ ८)। २ एक राजा (विष् १ ८—पत्र ८२)। पुर न [पुर] एक नगर

(विष् १ ८)। वडिष्ठराग न [वडिष्ठराग] एक उपाय (विष् १ ८—पत्र ८२)।

सोमस वि न [सोमस] १ संवत्-विशेष, सोमस, १६। २ सोमस संवत्वाता (मम ३४, १—पत्र २६४ २६४ अत्र; पुर १ ३२, प्राप् ७७; वि ४४१)। ३ वि सोमस १६ वां (यज)। म वि [स] १ सोमस १६ वां (साया १ १६—पत्र १६६ पुर १६ २२१ पत्र ४६)। २ वना ठार साय किर्तों के उपवास (साया १ १—पत्र ७२)। य म [क] सोमस का वपुः (यज ३१ १३)। विह वि [विह] बोलह प्रकार का (वि ४२१)।

सोमसिद्धा की [सोमसिद्धा] रस-मग्न-विशेष सोमस पर्वों की एक वाप (पुष्प १२२)।

सोमस देवी सोमस (माध ५६)।

सोमस्यवत्त पुं [सो] रंभ (वि ८, ४६)।

सोमसक [पत्र] वक्ता। सोमस (वि ४ २ वक्ता १२९)। वक् सोमस (विष् १ १—पत्र ४६)।

सोमसक [भिप] कंका। सोमस (वि ४ १४१ पद)। कर्म, सोमस्यवत्त (कुमा)।

साय सक [इर, सम् + इर] वेष्टण करता। सोमस (वक्ता १२९ माध ९६)।

सोम न [सो] मति (वि ८ ४४)। देवी सुस = सुस्य।

सोम वि [पत्र] पक्काया हुवा (जग विष् १ २—पत्र २७ १ ८—पत्र ८२, ८६)।

सोमिष्ठि वि [पत्र] १ पक्काया हुवा 'ईवाह सोमिष्ठि' (वीन)। २ न. पुन-विशेष (वीन)।

सोम देवी सुस = सुस्य। सोम, सोमिष्ठि (वि १ ४४ पत्र मति वि १२२)।

सोमकर्म } वि [सापकर्म] निमित्त-कारण सोमकर्म } व जो गृह का कम हो बने बहु कर्म बाहु, भाषण भावि (पुरा ४२२; ४२४)।

सोमविष वि [सोमविष] उपकर्म-मुक्त लक्ष्मी पुट (कर्म)।

सोमवत्त पुं [सोमवत्त] एक वृक्ष का गीन कला मयक (वह ३ ८; ८)।

सोमण न [स्वपन] शयन सोमा (अ ४ २१७)।

सोमण न [वि] १ वात-गृह, शम्पा-गृह रति मन्त्रि (वि ८ २८ स ३ १ पाप)। २ स्वप्न। १ पुं मल (वि ८ २८)।

सावण (पत्र) देवी सप्तपत्नी (अंठ)।

सायणिय वि [सोमिष्ठि] १ स्वाय-पालक कुत्तों को पावनाभा। २ कुत्तों के पिछार करनेवाला (पुष्प २ २ ४२)।

सोमया की [स्वापना] विद्या-विशेष (वि ८ ८)।

सोमय वि [सोमय] स्वर्ण-निमित्त सोने का (महा सम्पत् १७३)।

सोमयमस्त्रिमा की [वि] मधुमस्त्रिमा की एक वाति एक वृक्ष की शब्द की मक्की (वि ८, ४६)।

सोमयिष्ठि } वि [सोमिष्ठि] सोने का सोमयिष्ठि } गुण्य-वर्णन (प्रति ७; स ४२८)। पक्काया पुं [पर्वत] मेर पर्वत (पत्र २, १८)।

सोमयिष्ठि पुं [सोमयिष्ठि] नक्षत्रवादी। की, भा ३ (वह)।

सोमय न [वि] १ उपकार। २ वि, जगोय, स्वयं-स्वयं (वि ८, ४२)।

सोमयिष्ठि } वि [सोमयिष्ठि] १ मज्जतिष्ठ सोमयिष्ठि } वक्ता सोमयिष्ठि-माग्य भावि स्वतिष्ठ-वाचक (ठा ४ २—पत्र २१३ पत्र)। २ पुं ज्योतिष्क मज्जतिष्ठ-विशेष (अ २, १—पत्र ७८)। ३ सोमयिष्ठि कर्तु की एक वाति (पत्र १—पत्र ४२)।

सोमयिष्ठि पुं [स्वतिष्ठ] १ बाष्पि, एक मज्जतिष्ठ (वीन)। २ पुं, विष्णुयम मयक नक्षत्र पर्वत का एक पिछार (इक)। ३ पुं वक्ता-पर्वत का एक पिछार (पत्र)। ४ एक देव-विमान (विष् ४२१)। देवी सविष्ठि, साविष्ठि = स्वतिष्ठ।

सोमय देवी सोमय (अंठ १७ का २८ विरि ८११; मति)।

सोमयिष्ठि देवी सायणिय (साया १ १—पत्र ४२)।

सोमरिष्ठ देवी सायणिय = सोमरिष्ठ (पुष्प २, २ २८)।

साभिय षेखो सोहिअ = रोप्रिय (हत्या १
१ टी—पत्र १)।

साय वुं [सोम] १ पञ्च बाँद, एक ज्यो-
 तिक्य म्हापण्ड (अ २ ३—पञ्च ७७) विठे
 १ ३३ पड्ड)। २ भयसाजु पञ्चरत्नस्य का
 पाँचवाँ कसुकर (सम १३ डा ४—पञ्च
 ४२३)। ३ एक प्रसिद्ध कविमंथन (पद्य
 ३ २)। ४ कपुर्वा बहनेस घोर कलुसेस का
 सिठा (अ २—पञ्च ४७७ पद्य २
 १७२)। ५ एक विद्यावर नर-पति, जो
 ज्योतिषपुर का स्वामी था (पद्य ७ ४३)।
 ६ एक छंद का नाम (मुद्रा ३३७)। ७ एक
 ब्राह्मण का नाम (छाया १ १६—पञ्च
 १३६)। ८ पनोरेज, कवीन्द्र चौबर्सेज तथा
 ईश्वरदेव का एक-एक चौकपाल के नाम (अ
 ४ १—पद्य २ ४ पद्य १ ७—पद्य
 १३४)। ९ बहाम-विरोध सोमबता। १

प्रकाश एव। ११ धनुष (पक्ष)। १२ धार्मिक
 प्रसिद्धि धुरि का एक शिष्य—यैत्र मुनि
 (कथ)। १३ धृष्ट, वैचित्र्याल-विरोध (विश्व
 १११ १२४)। १४ वि. कीर्तिमान्,
 मण्डली (कथ)। अथर्व धुं [अथर्व]
 धीम बोधमान का पाश्चात्य देश (मन १
 ७—पत्र ११४)। गण्डव न [गण्डव]
 कथ—गण्डव (वि ४ १११)। अथर्व
 [अथर्व] १ ऐतरेय वेद में उत्तर भाग में
 शिव-वेद (कथ १११)। २ धार्मिक ईश्वर
 का पौधा कथ का नाम (कुप्र २१)। अथर्व
 [अथर्व] एक पद्या (सुर २ १४४)।
 पाइ देवा 'पाइ' (पत्र)। अथर्व
 [अथर्व] १ एक कथान का नाम (उत्तरा १
 ११—पत्र ११४) २ एक वैद्य मुनि, जो मन्त्र
 कथ—अथर्वी का शिष्य का (कथ)। ३ अथर्वान्
 कथकन स्वामीको प्रथम निष्ठा-कथा 'अथर्व'
 (मन १११)। ४ पद्या अथर्वीक का एक
 पद्योक्ति (विवा ११—पत्र १)। 'अथर्व'
 [अथर्व] १ धीम शिवक मोक्ष का नाम
 धार्मिक देश (कथ) २ ७—पत्र ११४)। २
 अथर्वान् अथर्वान् का प्रथम निष्ठा-कथा गुरु
 (मन १११)। नाहर्व [अथर्व] गुरु
 धी की गुरुकथ मन्त्रोक्ति-मुनि (ती १२,
 अथर्व ७२)। अथर्व 'अथर्व' [अथर्व]

१. ब्रह्मिणो के शोमरेण के मासि पुष्य वातु
 बहि का एक पुत्र (पत्र २० १ कुत्र
 २१२)। २. रेवती छात्राणी का एक कै
 व्याचार्य और रिकर (कुत्र ११३)। ३.
 नमरेण के शोम-शोकपाल के उत्ता-प-पत्र
 (छ १०—पत्र ४८२)। भूय पुं [भूयि]
 एक ब्राह्मण का नाम (शास्त्र ११—पत्र
 १२१)। भूय न [भूयिक] एक पुत्र
 का नाम (कर्म)। य न [क] एक योग,
 दो कौट शेष श्री छाया है (छ ४—पत्र
 ३३)। य वा हि [य वा] सोम
 रस पीनेवाला (पत्र)। सिते श्री [श्री]
 एक ब्राह्मणी (श्रव)। सुंदर पुं [सुन्दर]
 एक प्रसिद्ध वैशाचार्य तथा कर्मकार (संति
 ११ कुत्र ४४)। भुरि पुं [भुरि] एक
 वैशाचार्य, व्याकरण-शास्त्र का कर्ता
 वैशाचार्य (पात ७)।

सोम मि [सौम्य] १ धरौड, धनुष (अ १
मय १२ १—पत्र १००)। २ श्रीपय
पय-पट्टि (मय १२, १)। ३ प्रसन्न
स्वाय (कम)। ४ विज-परीत विस्का
वर्तन विज मानस हो वह। ५ मनीष,प
मुन्वर। ६ शाल बाह विस्का (पेनच २२)
कनः पुनः १८। १२२। ७ सोम-पुनः
सौम्य (अ १)। ८ सोम सामस।

સામશ્ય વિ [૨] બોલે જો ધારણતા (૨
 ન ૧૨) ।

सामंस्तु वं [सीमङ्गल] द्वितीय पञ्चमी
एक जगति (पृष्ठ १९ १२६)।

सामर्थ्यविषयं हि [स्थापनाभितक, स्थापना-
भितक] । शोले के वर्य क्रिया बाह्य प्रति-
क्रमण—प्राप्तिरूप-विशेषः । २ स्थापन-विशेष
में क्रिया बाह्य प्रतिक्रमण (हा १—पृ
१७६) ।

मोनगस नू [मोनस] १ यथादिष्ट-वर्ष
का एक बलकार-वर्ष (अ १ १—पत्र
११: सप्त १ २, पं ४)। २ उक्त वर्ष पर
खरोपाय एक बलिक रैय (पं ४)। ३
वध वा यज्जवा पित (मुपज १ १४) ४
नूय. सम्पन्नार नायक इय वा एक पारि
पारिक विमान (अ —पत्र ४१०: वीर)।

२ एक देव-विग्रह, छठवाँ देविक-विग्रह
(देखिए १३७-१४३ पृष्ठ १२४)। ३ मौन-
नस-पर्यंत का एक शिखर (अ २, ३—पृष्ठ
८)। ७ ल. मैक-पर्यंत का एक वन (अ २,
३—पृष्ठ ८)।

सोमणत न [सौमनस्य] १ सुन्दर मन्त्र
सुन्दर मन्त्र (सुन्दर मन्त्र) ।

सोमनसा की [सोमनसा] १ पम्पू-रुप
विशेष बिकसे बड़ हीन पम्पूरीन बक़्ता
है (१६)। २ एक राजबली (१६)। ३
सोमनस बल की एक वाली (जं ४)। ४
पक्ष की पाँचवीं राशि (संस्कृत १। १४)।

सोमयसिधेयं चि [सौमनस्यित] १ संयुक्त
मनस्यता । ३ प्रकृत मनसाया (कर्म) ।

सोमणस्तु देशो सोमणसु = श्रीमणस्तु (श्रमणः, प्रीतिः) ।

सोमजस्त्रिय देवी सोमजस्त्रिय (अष्टम दशक
कात्या १. १—पृष्ठ १३)।

सांख्यिकी सांख्यिकी (भाग २ : १ : १)

सोमहिं न वि० पुरा. पृष्ठ (वि. ५. ४३) ।

सामाजिक व [वि] पक्ष कषण (वि. व. ४५)।

सामा श्री [सामा] । ठाकुर के बीच पाणि
पाठों लोहपाणों की एक-एक पंखड़ी का
रूप (अ. ४ १—पं. २ ४) । २ पंखड़ों
जिनके की प्रथम टिप्पणी (अ. १३३: पं.
२) । ३ सोम लोहपाण श्री राजाश्री (अ.
१ ४—पं. १३३) ।

सोमा श्री [सौम्या] उत्तर विष्णु (अ १ —
पृष्ठ ४७५; अ १ १—४८१)।

सप्रमाणं च [श्मसान्त] मङ्गलं, मरणम् (दि. ४५) ।

सामाजस व. [सोमाजस] प्रत्यय द्वेवम्
विमान (पृ. १६४) ।

सोमर } देवो सुकुमार (पा १ उ व
सामाछ } १२५; मै ७; वरु प्राय १
१७१; क्मा प्राक २; १७५; ग्रि) ।

सामाजिक न [६] नाथु (दे. न, ४४) ।

सामिश्रितं च [सीमितं] एव भवति ॥ ११ ॥

समिति श्री [सुमित्रा] बरकल श्री राज्ञः ।
 पुत्र पुं [पुत्र] बरकल 'एमरोपिनि-
 पुता' (पद १० २०) सुत्र पुं [सुत्र]
 बरि मर्ल (पद ७२ १)

सोहा बी [सोमा] १ शीति कमज (वि १
४८) कुमा मुवा ११ रंघा) । २ धन
विरोध (निय) ।
सोहाव हक [सोघय] १ लका कपना ।
सोहावेह (घ ११२) ।
सोहाविम नि [सोभित] १ धाक कपना हुय
(घ १२) ।
सोहि बी [सुधि, सोधि] १ विमलता
(साय १ २-यत्र १ २ बंभोव १२) ।
२ पलोचना प्रामाणिक (बीम ७२)
७६७ धावा) ।
सोहि नि [सोचिम्] १ रुद्धि-कर्ता (बीम) ।

सोहि नि [सोभिम्] १ शोभोवावा (बंभोव
४८) कम्पु यधि) । बी 'णी' (मट—
रना ११) ।
साहि दुधी [वि] १ मृत मास । २ मज्ज
कम (वि ५, २८) ।
साहिम न [रु] १ पिष्ट धावा बावत धावि
कम कर्ण (पठ) ।
सोहिअ नि [सोमित] १ शोभा-पुछ (पुर १
७२) म्हाग बीम) मय) ।
सोहिअ नि [साधित] १ गुट भिमा हुय
(पण्ड २ १ मय) ।
सोहिअ बेको सोहय (मट—रुद्ध १ २) ।

सोहिर नि [सोमित] १ शोभोवावा (वा
४११) ।
सोहिस नि [सोभाय] १ शोभा-पुछ (वा
४४७) पुर १ ११) ४ १ वां हे २ १२६,
बंभ यधि) धल) ।
सीजरिअ बेको सोजरिअ = धीर्य (बंभ) ।
सीअ रअ न [सीम्ये] १ मुक्ता (ह १ १) ।
सीह बेको सउह = धीम (धिम २६ नाट—
बाधवी ११६) ।
स्स बेको स = स्स (वा २१६) ।
स्सास बेको सास = धाव (वा ४३६) ।
'स्सिरी बेको सिरी = बी (वा २७७) ।
'स्सअ बेको सेअ = स्वेअ (ममि २१) ।

॥ हय छिरियाइअसहमहज्जयाप्रीम सयाएइइअप्रीम
सतरीअइअयो ठरंयो सययो ॥

ह

ह हु [ह] १ अंश-स्वाधीय व्यापक कर्ण
विरोध (शाय प्रमा) । २ अ हल धर्मी का
पुचक धर्म्य—धुबोवावा 'से-मिन्नु पिआह,
से ह्य ह हं ठसपाएह' (धावा २ १ ११
१ २) नि २७२) । ३ विधाय । ४ धेय
मिन्नु । ५ निहह । ६ प्रसिद्धि । ७ पावपुद्धि
(ह २ २१७) ।
ह बेको हा = घ. (ह १ १७) ।
ह बी [हवि] १ हल बह माछ (वा २७) ।
ह य [हय] १ हल धर्मी का पुचक धर्म्य—
१ अंश (धवा) । २ धर्म्यवि (धवा २३) ।
हय दु [हय] १ शरीर-स्पर्श-पुचक किया बाता
लाव—सीवेव (ह १ १) ।
हिय ध. हल धर्मी का पुचक धर्म्य—१ धावी
का धावाग (ह ४ २८१ कुमा विम) । २
धवी का धावमल (घ १२२) धर्म्य
(७२) ।
हं बेको खंड (हम्योर १७) ।

हंडय बेको मंडय (वा १२२ नि १०८) ।
हंल बेको हंसा (बर्ध २ २ घय २६ कण)
कम्पु नि २७२) ।
हलक्य [हलो हय] ।
हंसा } बेको हय ।
हंसा य [हय] १ हल धर्मी का पुचक धर्म्य—
१ धर्म्यपुम स्तोभर (धवा बीम मय)
रुद्ध १४ धाय १६) छाया १ १—यत्र
७४) । २ कोमल धावमल (धय, धयु
१६ रुद्ध १४) बीम) । ३ धाव का
धावमल । ४ धर्म्यवाच्य । ५ धर्म्येण ।
६ धेय । ७ धर्म्येण (धवा) । ८ हंसा । ९
धर्म्यमा (धय) । १० धय (धवा) ।
हंलु नि [हय] १ धावमल (धवा धय
पठम २१ १२ ७१ १२ विसे १२१७) ।
हंलुल बेको हण ।
हंलिय ध. 'अहय कटो' हल धर्मी का पुचक
धर्म्य (ह २ १८१ कुमा धावा २ १
११ १) २ नि २७२) ।

हंलिय ध. हल धर्मी का पुचक धर्म्य—१
विषय, धेय । २ धर्म्य । ३ धर्म्यवाच्य ।
४ धर्म्य । ५ धय । ६ 'हो' 'अहय
कटो' (धवा ह २ १८) धय) ।
७ धावमल धर्म्य (निह २१) धर्म्य
(४) । ८ धर्म्येण (धवा १ १२ धय
१ १७) ।
हंलो बेको हंलो (पुर ११ २१४ धावा
धुम २ २, वी) ।
हंस बेको हंस = हंस (धय) ।
हंस दु [हंस] १ धर्म्य-विरोध (धवा १
१—यत्र २६ धय १ १—यत्र ८ कुमा
माहु ११ ११६) । २ धय, धोवी 'धय
धोवा धर्म्य हंसा वा' (धय १ ४ २,
१७) । ३ धर्म्य-विरोध (ह १ २६
धोवी) । ४ धर्म्य धि (धिरि २४७) । ५
धर्म्य-विरोध हंसधर्म्य नामक धय की एक-
वाचि (धय १—यत्र २६) । ६ धय का
एक धेय (धि) । ७ धर्म्यी धवा । ८

सोदा श्री [सोमा] १ सोपि कमक (घ १
४५) कुपा कुपा ११ रंभा) । २ पन्त
विरोध (विभ) ।

सोदाय सक [सोधय] सप कपना ।
सोदावेह (घ २११) ।

सोदायिष वि [शोपिष] साक कपस्य हुम
(घ १२) ।

सोदि श्री [गुदि, शोधि] १ निर्मलता
(साध १ ४-५४ १ २) संशोध १२) ।
२ प्रलोपना प्रलोपित (सोप ७२१)
५२५) धाया) ।

साहि वि [सोधिम्] सुदि-करी (सोप) ।

सोदि वि [सोमिम्] सोमनेनाता (संशोध
४५) कम्पु धनि) । श्री गी (गाट—
रता १३) ।

साहि दुधी [सि] १ मूठ कज । २ मतिप्य
कास (वे ८ २५) ।

सोदिम न [दि] गिट भाटा बापस्य धनि
कम पूर्ण (प २) ।

सोदिअ वि [सोमिअ] सोमा-पुछ (पुर १
७२ मगा धीम धय) ।

सोदिम वि [सोधिअ] सुय किमा हुम
(पण्ड २ १ म) ।

सोदिह देवा सोहद (ना—रुहु १ ६) ।

सोहिर वि [सोमिह] सोमनेनाता (पा
४११) ।

सोहिल वि [सोमायत्] सोमा-पुछ (पा
२४५) पुर १ ११ म १ ५ हे २ १५६
नंभ धनि; सण) ।

सोअरिअ देवो सोअरिम = सीर्य (पठ) ।
सोअरिअ न [सोअर्य] पुनपणा (ह १ १) ।
सोह देवो सउह = सीध (धनि २६ गाट—
पलवी ११६) ।

सउ देवो स = स (पा २१६) ।

सास देवो सास = पाव (पा ८५६) ।

*सिरी देवो सिरी = श्री (पा ६००) ।

*सउ देवो सउ = स्नेह (धनि २१) ।

॥ इय विरिआइसहस्रहृष्ययमि सधाराइसहस्रहृष्यलो
सधारीसहस्रो हरंभी समसो ॥

हृ

हृ दु [हृ] १ नठ-रसापीय मन्त्रन वण
विरोध (प्राफ प्राभा) । २ य धर धरों का
पुषक सम्पय—हृशोपय 'धे-जिल्लु विभाह,
वे हृह हृल्ल ससहृहृ (धावा २ १ ११
१ २, वि २७३) । ३ निवीह । ४ लेप
निष्ठा । ५ विहृह । ६ प्रविहृ । ७ पाल्लुहि
(हे २ २१७) ।

हृ देवो हृ = घ. (हे १ १७) ।

हृ श्री [हृवि] हृल्ल वध मारण (भा २७) ।

हृ घ [हृम्] हृल्ल धरों का पुषक सम्पय—
१ लेप (ज्या) । २ धासमसि (लज्ज २१) ।

हृद्य पु [दि] हृद्य-सर्व-पुर्वक किमा बावा
सपय—सीर्य (वे ८ ११) ।

हृदि घ. हृल्ल धरों का पुषक सम्पय—१ धरों
का पाहान (हे ४ २८१) कुमा विव) । २
धरी का धामल्ल (घ १२१) सम्पय
१७१) ।

हृह देवो हृह (हृमीर १७) ।

हृहय देवो हृहय (घ ११२) वि ३०५) ।
हृह देवो हृह (धर्म २ २ घय २६ सण
कम्पु वि २७४) ।

हृहय [हृहय] देवो हृहय ।

हृह घ [हृह] हृल्ल धरों का पुषक सम्पय—
१ धामपय स्वोभर (ज्या धीर मय
ठुहु १५ धसु १६ धामा १ १—प
७५) । २ कोसक धामल्ल (धम धसु
१६ ठुहु १७ धीर) । ३ धामय का
धामल्ल । ४ धामल्लारण । ५ धर्मल्ल ।

६ देव । ७ निरंठ (धम) । ८ हृह । ९
धामल्ल (धम) । १० धम (ज्या) ।

हृह वि [हृह] धामल्लारण (धामा मय
पय २१ १७ ७९ १७ विवे २६१७) ।

हृहय देवो हृहय ।

हृदि घ 'हृहय करो' हृल्ल धरों का पुषक
सम्पय (हे २ १८१) कुमा धावा २ १
११ १ २, वि २७३) ।

हृदि घ. हृल्ल धरों का पुषक सम्पय—१
विवाह वेद । २ विहृह । ३ पुराताप ।
४ विहृहय । ५ धम । ६ 'धो' 'हृहय
करी' (धम) हे २, १८१, प २, कुमा) ।
७ धामल्लारण सीर्यन (विह २१ धर्म ५४) ।
८ जयर्शन (धम १ १२) धमि
१ १७) ।

हृमो देवो हृमो (पुर ११ २१७ धावा
धम २ २, म १) ।

हृह देवो हृहय = हृहय (धम) ।

हृह दु [हृह] १ धिह-विरोध (धावा १
१—पय २१) पण्ड १ १—पय ८, कुपा
प्राधु ११ १६६) । २ दवक, दोरी 'धम-
नोवा हृहयि हृहय' (धम १ ४ २
१७) । ३ ध्यासि-विरोध (घ १ २७
धम) । ४ धुर्व धिह (धिरि २४७) । ५
मणि-विरोध हृहय धमल्ल रण की पण-
बाधि (पण्ड १—पय २६) । ६ धम का
एक वेद (विभ) । ७ धिहोरी राजा । ८

मम हसिहसि, हसिहसि (हे ४ २४४)।
 वक्र हणित (भाषा कुमा)। कनक हण्यु,
 हण्यिअमाय, हस्यस, हस्यमाय (धृप १
 २, २ ३, भा १४ सुर १ २६ विपा १
 २—पत्र २४ वि १४)। संक्र हठा,
 हवण, हवण हण्यु हसिकुल, हण्यिअ
 (भाषा प्रसू १४७ प्राक १४४ नाट)।
 हं हं हं, हणित (महा उप पृ ४८)।
 ह ह ह (से १ ३; हे ४ २४४
 भाषा)।

हय वक्र [म] मुनता। हयव (हे ४ ४८)।

हय नि [वे] वृ, प्रतिष्ठ (हे ४ ४६)।

हय वेको हण्य 'हयहण्यमलमारण—
 (पत्र ४ २३२)।

हय वेको घण = वन (पा ७१३) न १)।

हयन न [हयन] १ माण्य वन घण (मुपा
 २४३, छठ)। २ निमाठ (पण्ड २ ३—
 पत्र ४४८)। ३ वि वक्र-कठ। की जी
 (कुप २३)।

हयन नि [हय] विसर वन किया मया हो
 वह (पा २४) कुमा प्रसू १९; विग)।

हयन वेको हय = हय।

हयन नि [कुप] मुता हुमा (कुमा)।

हयन वेको हयिदि (पा ६९३)।

हयन नि [हय] वन करनेवाला (मुपा
 १ ७)।

हयिहसि [म] अहस्यहसि १ प्रतिवि
 हसिहसि। हेमता (पण्ड २ ३—पत्र
 १२२)। २ सर्वथा वन ठाह से (पण्ड ४
 ३—पत्र ४४८)।

हय नि [वे] घावरोप वाली वन हुमा (हे
 ४ ४४ घण)।

हय वृद्धि [हय] चिकु होट के की के वन
 वक्र, ठोरी ठोरी वाली (भाषा पण्ड १
 ४—पत्र ७८)। अ, म, संत संत पृ
 [म] हुमा, वनवसती का एक
 प्रसन्न वन, वन तथा वनवासवती
 व पृ (पत्र १ २४ १० १२१) ४०
 २६, २७, १४४ कुमा प्रसू वन १६
 १३, २६, २७)। ह, वन [ह]

नमर-विरोप (पत्र १ ११; १७ ११८)।
 व, संत वेको म (पत्र ४० २३
 ६ उप पृ १७९)।

हयना की [हय] १ ठोरी ठोरी वाली
 (पत्र ४)। २ वक्र-विरोप वाव-विरोप
 (वक्र)।

हय की [हय] वेको हय (वि ११८; १२६)।

हय वेको हय = हय।

हय वेको हय = हय (वि १२४ २९३)।

हयन वेको सचरि (वि २९४)।

हय नि [हय] हय-कठ (प्रा २)।

हय वेको हय = हय।

हय नि [वे] १ वक्र, वली करनेवाला (हे
 ४ ४६)। २ विवि वली (वक्र)।

हय वृद्धि [हय] १ हाव वरिपण
 हय वरिपण वन वक्र (कुमा १ ९
 भाषा क्य कुमा १ ९)। २ वृद्धि वक्र-
 विरोप (पत्र १ १०)। ३ वीरस वक्र
 का एक वरिपण। ४ हाव की वृद्धि (हे
 २ ४३ प्रा)। ५ एक वन मुनि (क्य)।

कय न [कय] नमर-विरोप (पाषा १
 १९—पत्र २२९ नि ४९१)। कय न
 [कय] हय-विरोप वक्र-विरोप (पत्र
 १ २ १७ ठ १ ४—पत्र १९२ पत्र
 १३ कय)। ठाह ठाह वृद्धि [ठाह]

हाव से ठाह (पत्र ४ ३६)। पण्ड
 विन कीन [पण्ड] वक्र-विरोप

वीरस वक्र-विरोप की वली वक्र से वक्र से वक्र
 को वक्र वक्र हो वह (कय)। पण्ड वक्र न
 [पण्ड] हाव से वक्र वक्र वक्र (हे
 ४ ७३)। माण्य न [माण्य] माण्य

विरोप (वीर)। लघु-वक्र न [लघु] १
 वक्र-वक्र न २ वीर (पण्ड १ ३—पत्र
 ४९)। सीस न [सीस] नमर-विरोप

(पाषा १ १९—पत्र २ ४)। वक्र न
 [वक्र] हाव का वक्र (पत्र)। पण्ड

वृद्धि [पण्ड] वेको ठाह (कय)। पण्ड
 वृद्धि [पण्ड] हाव का वक्र वक्र वक्र (हे
 १ १९ पत्र ४ ७३ कय)।

हय वक्र वृद्धि [हय] वक्र-विरोप

(पाषा १ १ २)।

हय वृद्धि [हय] हाव वक्र
 हाव वक्र का वक्र वक्र वक्र-विरोप
 (वि २७३ विपा १ ९—पत्र १९)।

हय वक्र वृद्धि की [वे] नम-वक्र, वक्र (हे
 ४ ९३)।

हय वक्र (पत्र) वेको हय (हे ४ ४४२ वि
 ४२६)।

हय वक्र न [हय] वक्र-वक्र (वक्र
 पत्र ४ १ पत्र ८१)।

हय वक्र वृद्धि [वे] १ वक्र के लिए हाव में वक्र
 वक्र वक्र। २ वक्र-वक्र वक्र हाव
 वक्र (हे ४ ७३)।

हय वक्र नि [हय] १ वक्र हाव वक्र।
 २ वृद्धि वक्र, वक्र (पण्ड १ ३—पत्र
 ४३)।

हय वक्र वेको वक्र-वक्र (वक्र)।

हय वक्र नि [वे] वक्र से हाव में वक्र वक्र
 (हे ४ ९३)।

हय वक्र नि [वे] हाव वक्र, हाव से
 हाव वक्र (हे ४ ९३)।

हय वक्र की [वे] वक्र-वक्र हाव में वक्र
 वक्र-विरोप (हे ४ ९३)।

हय वक्र न [वे] वक्र वक्र वक्र (हे ४ ९३)।

हय वक्र वृद्धि [हय] हाव वक्र हाव
 वक्र वक्र वक्र (विपा १ २—पत्र २९)।

हय वक्र न [वे] वक्र वक्र वक्र (वक्र)।

हय वक्र वक्र की [हय] हाव वक्र हाव
 वक्र हाव से वक्र हाव (पा १७६)।

हय वक्र वक्र वक्र वक्र वेको (पा २२६ २८१;
 पत्र ४९३)।

हय वक्र वृद्धि [हय] १ हाव (पा १ ९
 कुमा पत्र ८०)। वी, वी (सा १
 १—पत्र १९)। २ वृद्धि वक्र-विरोप (वी १४)।

आव वृद्धि [आव] हाव वक्र वक्र
 (वक्र १६)। कय, कय वृद्धि [कय]
 २ वक्र वक्र वक्र। २ वि वक्र वक्र

वक्र (कय ठ ४ २—पत्र २२९)।
 कय न [कय] वक्र हाव वक्र

(पत्र)। गुण्य वक्र वक्र न [गुण्य] वक्र
 हाव का वक्र विरोप (पत्र)। वक्र वक्र वक्र

[नाग] वक्र वक्र वक्र वक्र वक्र (वक्र
 १४८ वी घण)। वक्र वक्र वृद्धि [वक्र]

बीड छाडु-विरोध, हाथी को मारकर रखे
मांस से जीवन-निर्वाह करने के विधानपरमा
संयत्ती (वीर मूर्धनि ११) । नयपुर
देखो मामापुर (अधि) । पाछ दुं [पाछ]
भरान् महावीर के समय का पाछापुर का
एक राजा (कथ) । पिप्पसु की
[पिप्पसु] कमलवि-विरोध (कथ १४
११) । सुह दुं [सुह] १ एक कर्मायि ।
२ वि. कन्या निवासी मनुष्य (अ ४ २—
पत्र २२१) इह । रथय न [रथय] रथय
हाथी (वीर) । राय दुं [राय] रथय
हाथी (गुण ४२३) । वाउय दुं [वाउय]
महावत (वीर) । वाड देखो वास (कथ) ।
विजय न [विजय] विजय की चतर
वाँक का एक विचार-नगर (इह) । सीस
न [सीस] एक नगर जो राजा वनस्प
की राजधानी से (अ ४५५ टी) । सुंझिया
देखो सोझिया (पत्र) । सोड दुं
[सोड] सीसिय मनु-विरोध (पत्र ४
१—पत्र ४१) । सोझिया की [सुंझिया]
पायल-विरोध (अ २, १ टी—पत्र २३३) ।
हत्थियअन्नसु न [ह] वन प्रलोचन (वि
५ ११) ।
हत्थियअन्न वि [हत्थिय हत्थिय] हाथ का
हाथ-अन्नको (वि ४२४) ।
हत्थियअन्न न [हत्थियअन्न] मर-विरोध
हत्थियअन्न । (अ १—पत्र ४०४) गुर
हत्थियअन्न । १ १२२ महा पन्ना गुर
हत्थियअन्न । १ १४ गुर—उत्तु ७४
पत्र) ।
हत्थियदेखो देखो हत्थिय ।
हत्थियमसु दुं [ह] हत्थियदेखो देखाउ हाथी
(वि ५ ११) ।
हत्थियार न [ह] १ रुक्मिण, उग्र (बर्नर
१ २२ ११ ४ अधि) । २ गुन लता,
या उम्हिय धन्य करिय हत्थियार वि देन
कोर देखाउ मर हत्थियारअन्न (वि ११०
११) ।
हत्थियनिज न [हत्थियनीय] एक कैम-मुनि
गुन (कथ) ।
हत्थियय दुं [ह] पर-देह (वि ५, ११) ।
हत्थियनिज दुं [ह] देह (वि ५, १४) ।

हत्थुत्ता की [हत्थुत्ता] चतरपन्नमुको
मन्त्र (कथ) ।
हत्थुत्ता देखो हत्थ (हे २ ११४ बह) ।
हत्थोही की [ह] १ हत्तामर हाथ का
पायल । २ कृत-श्रम हाथ से दिना
कथा उपहार (वि ५ ७१) ।
हत्थेन दुं [ह] हत्थ-मर, पायल-मर
(वि १२५) ।
हत्थ देखो हत्थ = हत्थ (प्राग प्राग १२) ।
हत्थ दुं [ह] हत्थ का मन्त्र-मुनि (वि
हत्थ ४७१) ।
हत्थय दुं [ह] हाथ विमल (वि ५, १२) ।
हत्थि य [ह हाथि] १ देह । २ कृतपुत्र
हत्थी (प्राग ७३, पत्र २१, पत्र २१ गुर—
उत्तु १११ हे २, १२२) ।
हत्थार (पत्र) वि [हत्थारनीय] हत्थार, हत्थे
संयत्त रथनेवाता (वि) ।
हत्थार देखो मत्थार (वि १५५) ।
हत्थर स [हत्थ] वन कला । हत्थर (वि ४
२४४) गुण अधि १४ प्राग १५) ।
हत्थर स [हत्थ] जात । हत्थर (वि ४
११२) ।
हत्थर न [हत्थर] सीस-गुर (वि ४, ४१) ।
हत्थर देखो हत्थ = हत्थ ।
हत्थार देखो हत्थार (वि) ।
हत्थियार वि [हत्थियार] पत्र, कथा हत्थ (वि
७४१) ।
हत्थियार न [हत्थियार] गुर, प्रकाश, महत्त
(वि १२ पात्र, गुर ५, ११, पात्र २,
२, १ १) ।
हत्थियार दुं [हत्थियार] विमल की देखाउ
रथाम्भो का एक पुनःपन्न राजा (वी ४)
हत्थियार २५ वि) ।
हत्थ वि [हत्थ] वा पात्र कथ हो बह (वीर,
वि २, ११) महा । माअह दुं [माअह]
एक विचार-नगर (पत्र ११) । तस
वि [तस] निज (पत्र ११ ७४ पत्र
२ १ हे २ ४, २, १२२, उग्र) ।
हत्थ दुं [हत्थ] मर कोश (वीर से २, ११
गुण) । पत्र दुं [पत्र] पत्र-विरोध
मर के रथ विमल का राज (पत्र १७) ।
कथ कथ दुं [कथ] १ एक कर्मायि ।

२ वि. उग्र का निवासी मनुष्य (इह) अ ४
२—पत्र २२१) । १ एक कर्मायि देत (पत्र
२७४) । सुह दुं [सुह] १ एक कर्मायि
(इह) । २ एक कर्मायि देत (पत्र २७४) ।
हत्थ देखो हत्थ = हत्थ (महा अधि पत्र
४४) ।
हत्थ देखो हत्थ = हत्थ । पौडरीय दुं [पुण्ड
रीय] पौडरीय (पत्र ११—पत्र ५) ।
हत्थ देखो मय (पा १५) ।
हत्थमार दुं [हत्थमार] कथ का कथ
(पात्र) ।
हत्थर स [ह] १ हत्थ नगा, वीरना । २
प्रकाश कला, कृत कला । हत्थर (वि ४
२४४ पत्र, पत्र) । कथ, हत्थर, हत्थर,
हत्थर, हत्थर (वि ४ २४० पत्रना
१२७) । कथ, हत्थर (वि १२७) । कथ,
हत्थर, हत्थर (पा १ २, गुर १२,
१२१ गुण ११२) । कथ, हत्थर
(महा) । हेह हत्थर (महा) । क. हत्थर,
हेह (वि ४४४ ४४४) ।
हत्थर स [हत्थ] पत्र कथ देता । हत्थर
(वि ४ २ २) ।
हत्थर स [हत्थ] पायल कला । हत्थर (वि
४, ७१) ।
हत्थर दुं [हत्थर] १ महादेव लंकर (गुण १११
गुण बह) हे १ २१ पा १८५ ७४४) ।
२ कथ-विरोध (वि) । 'महादेव' [महादेव]
कथ-विरोध (वि ११) । महादेव की
[महादेव] वीर, पार्वती (गुण २१७) ।
हत्थर दुं [हत्थर] कथ, कथा कथ (वि ५,
११) ।
हत्थर देखो पर = गुर 'य वर पत्रि मा मय
पात्र एव मरग हरे' (पत्र १) । गुण
गुण १११ हे २ १४४) ।
हत्थर देखो पर = गुर । क. हत्थर (वि २,
१) ।
हत्थर देखो भर = मर (पत्र १ १४ गुण
४१२) ।
हत्थर वि [हत्थर] हत्थर-कथ (पत्र) ।
हत्थर वि [पर] पत्र कथ देता (पा ११४
१२२) ।

हरजरी [हरितीर्थ] १ हरें का वास।
हरजरी २ कम-विशेष हरें (पक्ष) हे १
२२ कुमा।

हरण न [हरण] १ कीनप्र (मुवा १८ ४१२
कुमा)। २ वि कीननेवाला (कुप्र ११४३
वर्गवि १)।

हरण न [महण] स्वीकार (कुमा)।

हरण न [स्मरण] स्मृति याच
‘मतिप्रमुचिप्रति कर्ममुपयं
यं नेतु मुह्य प्रमुच्येते।
तण्य निष्पण्य हण्ये स्मयति
ए ज्यो धर्म्म कुमिमा’
(पा २४१)।

‘हरण रेको सरण (पा २२० घ)।

हरण्यु पु [हरण्यु] सेज में भीम हुए थे
औ मासि के बाबों पर होता बच-विनु
(कम्प-वेद्य १०१; जी २)।

हरण रेको हरण (मन)।

हरण्युज मि [रे] १ स्मृत याव किया
हुमा। २ नाम के जरेय से किया हुमा (रे
न ७४)।

हरण पु [हर] बड़ा बहायुग हह (पाशा-
मन पण्य २ ३—पत्र १४६ पत्र १२
४४ ४६ हे २ १२)।

हरण्यु की [रे] मुक्त प्रवेग योग्य प्रसन्न
अन्ति प्रस्तावः।

‘विद्युत् न गानं पक्षि-
नूनं न मुण्येयं बहू ॥
मीनं न कया धीमिति
पाया मितवस्त हण्यु
(विने २ १४)।

हरण्युज न [हरण्युज] ‘हर हर’ पाशात्र
(पण्य १ १—पत्र ४२)।

हरण्युज नि [हारित] हराण्य हुमा निवभ
वपमन किया का हो बह (हे ४ ४ २)।

हरि पु [दि हरि] मुक्त, छोटा (रे ७ २६)।

हरि पु [हरि] १ विद्यादुसार-रेकों की रक्षण
रिया का हृष्ट (अ २ १—पत्र ८४)। २
एक महापुत्र (अ २ १—पत्र ७७)। ३
राम, देव-राज (कुमा-कुप्र २१ सम्पत्

२२९ मु ८६)। विष्णु श्रीकृष्ण (पा
४ १: ४११; मुवा १४१)। २ रामचन्द्र
(वि २ ११)। ३ सिंह मुक्ति (वि २ ११
कुमा-कुप्र १४६)। ४ बालर, कम्बर (वि ४
२२ ६ २२ वर्गवि २१ सम्पत् २२२)।
८ पक्ष मोक्ष (अ २ ११ टी टी वा कुप्र
२१ मुक्त ४ ६)। ९ पाठ के साथ बैत
श्रीआ सेनेवाला एक राजा (पत्रम ४३ ४)।
१ ज्योतिषशास्त्र-ग्रन्थ एक योग; ‘गुह्यरि
विदेह संविद्वारा’ (संशोध २४)। ११
छन्न का एक मेर (सिन्ध)। १२ खर खाँ।
१३ मेक मयूक। १४ बज्र। १५ सुदूर।
१६ बालु, पत्तन। १७ मन जमराज। १८
हृद, महादेव। १९ प्रजा। २ कण्य।
२१ बर्ग-विशेष। २२ समुद्र, मोर। २३
कोकिस कोकल। २४ भगु हारनायक एक
विज्ञान। २५ वीता रंध। २६ विस्मय बली।
२७ हृष्ट रंध। २८ वि वीत बर्णनाला।
२९ विस्मय बर्णनाला (हे १ १८)। ३
हृष्ट बर्णनाला ‘हरिमण्डितविष्णुसम्बर’
(बहनु १२)। ३१ पुन, महाविष्णु वरत
का एक शिखर (अ ८—पत्र ४१६)। ३२
विष्णुधर्म वरत का एक शिखर (अ ४ ६)।
३३ निषध वरत का एक शिखर (अ ८—
पत्र ४२४)। ३४ हरिवर्ग-दीन का
मनुष्य-विशेष (कम्प)। अर्द्ध पु [अर्द्ध]
स्वनाम प्रविष्ट एक राजा (हे २ ८७; पत्र;
पत्र कुमा)। अर्द्धण १ ‘अर्द्धण’।
बालन की एक वस्ति (वि ७ १४; पत्रका
गुप्र १६, १४)। २ पुं एक लक्ष का कनर
हृष्ट (मुवा ७७; पत्र)। रेको अर्द्धण।
अर्द्ध रेको अर्द्ध (संवि १०)। आठ
पुन [आठ] १ वीत बर्णनाली बगवान्-
विशेष इत्यादि (पाशा १ १—पत्र २४
जी १ पत्र १२२ कुमा-जट १४ ८ ११
७२)। २ पुं वरि-विशेष (हे २ १२)।
रेको आठ। एस पु [किरा] १ बसंत
(वीप ४६६; मुप २ १ पत्र)। २ एक
बह्मस मुनि (जट १२)। एसबल पु
[किरापन] बह्मसमुहोत्तराण एक मुनि
(जट जट १२ १)। एसिज नि
[किरीय] १ बह्मस-संस्करी। २ हरि

वेशन नामक मुनि का (जट १२)। कंसि
न [कंसिभु] नमस्-विशेष (टी २७)।
कंड पु [कान्त] विष्णु-कुमार रेकों की
रक्षण किया का हृष्ट (हृ)। कीनपाय,
कंडप्यपाय पु [अस्मापपाय] एक हह
(अ २ १—पत्र ७२; टी—पत्र ७३)।
कंता की [कान्ता] १ एक महा-नयो (अ
२ ३—पत्र ७२ सप २७ हृ)। २
महाहिसवान् वरत का एक शिखर (हृ)। अ
८—पत्र ४१६)। ‘कंसि पु [कंसि]
भारतीय देश-विशेष (कम्प)। कंसपक्ष रेको
एसपक्ष (कुपक्ष ११)। कंसि पु
[कंसि] एक बैत मुनि (भु १४)।
गोत्र न [गीत] छन्न का एक मेर (सिन्ध)।
गीय पु [गीय] रावल-वंश का एक
राजा (पत्रम ३, २६)। वंद पु [वन्द]
१ विद्याधर-वंश का एक राजा (पत्रम ३
४४)। २ एक विद्याधर-कुमार (महा)।
वर्ण पु [वर्ण] १ एक प्रसन्न बैत
मुनि (पुं १८)। २ रेको अर्द्धण (पाशु
१४२; स ४१६)। वयार न [नगर]
वेताञ्ज जो हरिण-वर्धित में स्थित एक
विद्याधर-नगर (हृ)। ताळ पु [ताळ]
दीप-विशेष (हृ)। रेको आठ। बास
पु [बास] एक बणिज का नाम (पत्रम १
७१)। धण्य न [धण्य] हृष्ट-बालु
(जट १२० टी)। ‘पुरे की [पुरे] हृष्ट
पुष्टि प्रमपकरी रस्ये (मुवा १११)। मह
पु [मह] एक मुनिवात बैत पापायें तथा
प्रकार (विद्य १४१ जट १ १६, मुवा १)।
‘मंथ पु [मंथ] बाल्य-विशेष नाका जम
(पा १७; पत्र १२९ संशोध ११)। ‘मिज
की [मिज] हृष्ट-विशेष (वी)। पक्ष पु
[पक्ष] बालर-वर्धित मुनीर (वि १ १६)।
बंस पु [बंस] एक मुनिवर्धित वरिच-मुन
(हृष्ट पत्रम २ ३)। वस्तः बास पु
[वप] १ पक्ष-विशेष (पाशु १९१ अ २
१—पत्र ९७ सप १२ पत्रम १ २ १ १)
हृ)। २ पुन, महाहिसवान् वरत का एक
शिखर (अ ८—पत्र ४१६)। ३ निषध वरत
का एक शिखर (अ २—पत्र ४२४ हृ)।
याहन पु [याहन] १ मनुष्य का एक

एजा (पञ्च १२, २) । २ कनोचर द्वीप के
मरुतर्ष का मरिचिका देश (जीव ३ ४) ।

सह देवो स्सह (धर्म) । सेज पुं [पिये]
१ कर्षा बलवर्षा एजा (धर्म १५ १२२) ।
२ मन्त्राद्य मन्त्रिणांजी का प्रथम भाग
(विचार १००) । स्सह पुं [सह] १
विद्युत्प्रसार-वेगों की मरिचिका देश का देश
(आ २ ३—पञ्च ८७ ६६) । मात्स्यज
पर्वत का एक शिखर (आ २—पञ्च ४२४) ।

हरि पुं [हरि] १ हृष्ट रंग, कर्ण-विशेष ।
२ वि हृष्ट रंगवत्ता (शायी १ १६ पञ्च
२२५) । ३ श्री एक महा-मयी (सप्त २०—
हृष्ट आ २ ३—पञ्च ७२) । ४ पञ्च धाम
की एक गुणवत्ता (आ ७—पञ्च १११) ।
पयाव, पयसाय पुं [पयाव] एक शब्द,
जहाँ से हरिपुत्र मयी निकली है (आ १—
पञ्च ७२ टी—पञ्च ७२) ।

हरि देवो हरि (सप्त वि १५ उत्तर १२,
१ ३) ।

हरिअ पुं [हरिअ] १ कर्ण-विशेष हृष्ट रंग ।
२ वि हृष्ट कर्णवत्ता (मौर्य खाना १ १
टी—पञ्च ८ ७—पञ्च १११ ४) ।
३ पुं एक धर्म मनुष्य-
जाति (आ १—पञ्च ११५) । ४ पुं
कनक-विशेष हृष्ट रंग छत्री (पञ्च
१—पञ्च ३ श्रीय पाप; पञ्च २ ३;
उत्तर १ ३) ।

हरिअ देवो हिअ = हृष्ट (पञ्च ५४) ।

हरिअ देवा मरिअ = मरिअ (पञ्च ६१२) ।
हरिअग ३ न [हरिअग] श्रीय धर्म के
हरिअय ३ पत्नी के बग हृष्टा भोग्य विशेष
(पञ्च २४१; मुञ्च २ टी) ।

हरिआ श्री [हारा] बुद्ध, बुद्ध कर्ण-विशेष
(मे ७ ११ ६ ११) ।

हरिआ देवो हरि (मुञ्च) ।

हरिआय देवो हरिआय ।

हरिआय श्री [हरिआय] बुद्ध बुद्ध

(हे ५ १५ पाप धर्म कर्ण, पञ्च ११) ।

हरिअस रयी हरिअस ।

हरिअस देवो हरिअस ।

हरिअस न [हरिअस] बुद्ध के

हरिअस पुं [हरिअस] कौटिल्य देश-मरिअ
कनक-विशेष (पञ्च १—पञ्च ११) ।

हरिअ पुं [हरिअ] १ हृष्ट मुन (मुञ्च) ।
२ हृष्ट का एक देश (विच) । पञ्च श्री
[पञ्च] बुद्ध नेत्रवत्ता श्री (कप्यु) । हरि
पुं [हरि] सिद्ध (उप २ २३) । हृष्ट पुं
[हृष्ट] मयी (हे ३ १५) ।

हरिअक पुं [हरिअक] पञ्च मरिअ (हे ३
१ कप्यु सत्त) ।

हरिअकस पुं [हरिअकस] श्रीय कनक के
पञ्च एक रंग मुनि (पञ्च २ २ २) ।

हरिअगमेस देवो हरिअगमेस (पञ्च ३
४) ।

हरिअ श्री [हरिअ] १ मारा हिरन हिरणी
(पाप) । २ कनक-विशेष (विच) ।

हरिअगमेस पुं [हरिअगमेस] एक के
पञ्च-विशेष का मरिअस देश (आ २, १—
१ २ मरिअ सत्त) ।

हरिआ देवो हारा (वि ३७४) ।

हरिअ पुं [हरि] कनका बना पञ्च-विशेष
(पञ्च १५ पञ्च ११६ संयोग ४१) । हे ८, ४
टी) । देवो हरिअस ।

हरिअग पुं [हरि] मनुष्य कर्ण-विशेष लक्ष्मी रंग
(हे ५, ११) ।

हरिअसपुत्र न [हरिअसपुत्र] कनक-विशेष
(पञ्च ५४ मरिअस) ।

हरिअ देवो हरिअ (उत्तर ११ ६) ।

हरिअ वि [हरिअ] भागवत्ता भोग्यवत्ता
(पा २, ४) ।

हरिअ मरिअ [हरिअ] बुद्ध होना । हरिअ
(हे ४ १११, मरिअ कप्यु) । हरिअस
कनका श्रीय-विशेष (संयोग ४६) ।

हरिअ मरिअ [हरिअ] हृष्ट के देश वारा करना
भीम-विशेष वि च हरिअ मुञ्च-विशेष बुद्धी
(मुञ्च १ २ २ १६) ।

हरिअ पुं [हरिअ] १ मुञ्च । २ पापक, प्रदीप,
मुञ्च (हे २ १ १) । मरिअ मुञ्च कप्यु । ३
पापक-विशेष (मौर्य) । ४ पुं [पुत्र]
एक रंग कनक (मुञ्च ११५) । ५ वि
[पुत्र] हृष्ट-मुञ्च (मात्र १३) ।

हरिअस पुं [हरिअस] कनक-विशेष एक
रंग (मुञ्च १ ५) ।

हरिअस वि [हरिअ] हृष्ट-विशेष (पञ्च
१ १ ७२) ।

हरिअस देवो हरिअस = हृष्ट-विशेष ।
हरिअस वि [हरिअ] हृष्ट-विशेष, कनक-
(मौर्य मरिअ महा सत्त) ।

हरि देवो हरि (मुञ्च १ ११, ५ ५) ।

हरिअ देवो हरिअ (मात्र १२) ।

हरिअ [हरिअ] एक मरिअ का कनक मरिअ—
१ मरिअ, विच । २ संयोग १ । ३ पुत्र कनक
(हे २ २ २ मुञ्च सत्त ४१) । वि ३३०) ।

हरिअ देवो हरिअ (पञ्च १ २२) ।

हरिअ श्री [हरिअ] विद्युत्, कनक-विशेष
(उत्तर १) ।

हरिअ मरिअ [हरिअ] मरिअ कनक (उत्तर—
मरिअ १७) ।

हरिअ न [हरिअ] हरिअ कनक के देश
(उत्तर मरिअ) । उत्तर पुं [मुञ्च]
हृष्ट कनका मरिअ कनक-विशेष मरिअ के
हृष्ट-विशेष (मुञ्च ११७, २१६) ।

हरिअ के उत्तर का भाग (उत्तर) । मरिअ
[हरिअ] कनक-विशेष (पञ्च ११७—पञ्च
१२६; हे २ १२) । मरिअ पुं [मरिअ]
कनक, पञ्च (पञ्च ११७ ६) ।

हरिअ वि [हरिअ] हरिअ हृष्ट कनक-विशेष
(आ २१) । हरिअ मरिअ (पञ्च ११६
पञ्च—पञ्च ४५ श्रीय कनक २२७) ।

हरिअ पुं [हरिअ] कनक पञ्च (पञ्च
१ २१ ७६, २६) ।

हरिअ देवो पञ्च = पञ्च (मुञ्च १११) । मरिअ
वि १ ३) ।

हरिअ (मा) देवो हरिअ = हृष्ट (पञ्च ११
मात्र—पञ्च ११) ।

हरिअस देवो हरिअस ।

हरिअ देवो हरिअ (हे १ ५५ मुञ्च
मरिअ) ।

हरिअ वि [हरिअ] मरिअ-विशेष कनक (हे
११) ।

हरिअ पुं [हरिअ] कनक-विशेष कनक-विशेष
(हे १५ पाप मुञ्च मुञ्च ५७ ११७)

हरिअ १५; मुञ्च ११२ हरिअ ४११ मरिअ
(२२) ।

हसिस्व (हि १ १९५) १९७ १९८ १९९) । कर्म. हसीपद, हसिज्ज, हसिभति (हि १ १९ १५२) । कङ्क हसंत, हसेंस, हसमाज (बीमा हि १ १९५) १८१ (नट्) । कङ्क हसिज्ज, हसीज्ज, हसीभमाज हसिज्जमाज हसिज्जमाज (हि १ १९ उप २१७ टी पु १५ १५) । संङ्क हसिज्ज, हसेज्ज, हसिज्जमाज हसिज्जमाज, हसेज्जमाज हसेज्जमाज, हसिज्ज (हि १ १९०) नि ५८५ ५८६) । हेङ्क हसिर्त्त हसेर्त्त (हि १ १९०) । ङ्क हसिज्ज हसेज्ज हसिज्ज (पञ्च २ २—पञ्च १९६, हे १ १९०) नट्; पञ्च १५ गट्—पञ्च १९५) ।

हस पञ्च [हस] हीन होमा कर्म होमा । हस (पञ्च २, २१) ।

हस पुं [हस] हस्य (उप १ ११ टी) ।

हसज्ज बीज [हसज्ज] हस्य हीनी (कर्म; कट १९, २१२ पञ्च १ न) । बी. पञ्च (उप २ २०२) ।

हसहस पञ्च [हसहसाय] १ प्रत्येक होमा । २ कुम्भक 'विमारणाय' (१) हस मोक्षकर्म कुम्भ हसहस (पुत्र १) । कङ्क हसहसि (समि १ १२) । संङ्क हसहसेज्ज (पञ्च) ।

हसाय यैको हास = हास्य । हसाय, हसानेह (हि १, १९६) ।

हसिम नि [हसिज्] १ निजम्ब कण्ठाज्ज निमा कर्म हो नट् (कर्म १११) । २ न. हास्य हीनी (उप २२४) ।

हसिम नि [हसिज्] हास्य-प्राप्त हीन (पञ्च २ २१) ।

हसिर नि [हसिज्] हास्य-प्राप्त होने की वाक्यप्रयोग (प्राप्त वा १०५ उप २०२ टी पु २ कुम्भ) । बी. 'ही' (नट्) ।

हसिरिया बी [हे] हस्य हीने (हि १९) ।

हस्य पञ्च [हस] कर्म हीना मूल होमा, बीज हीन्य । कङ्क हस्यमाज (पञ्च २ २१) ।

हस्य यैको हस = हस्य । हस्य (मात्वा १२०) । कर्म. हस्य (मात्वा १२०) हे ४ २५६) ।

हस्य न [हास्य] १ हीनी (मात्वा १ २ २, पञ्च ७२) माट—मुष्ण २२) । २ पुं म्हाज्जित नामक कर्म का वसिष्ठ विद्या का कर्म (अ २ १—पञ्च ५२) । गय न [गय] कर्म-विशेष (उ १ १) । २ ह पुं [रति] हस-विशेष म्हाज्जित-निकम्प का उत्तर विद्या का हस्य (अ २ १—पञ्च ५२) ।

हस्य नि [हस्य] १ नट्, बीमा (पुत्र १ १२) पञ्च २५) । २ नामन, धर्म (पञ्च) । ३ पञ्च बोधा (मग पञ्च २, १ ३) कर्म २, ८५) । ४ पुं. एक म्हावाता त्वर (पञ्च १९—पञ्च ५४६) निवे १ १८) ।

हस्यज्ज नि [हस्यज्] हस्य-कारक 'पेमहस्यको बुद्धवर्ग' (निज नट्) ।

हसिर यैको हसिर, 'हस-हसिरे लया ही' (कट ११ ४ कुम्भ ११ ४) ।

हसह २ प [हसह, हा] १ हस यौन का हसह २ सुखक प्रत्यय—१ पायर्त्त (पञ्च ७५) । २ कर्म, विद्या (सिदि ११२) ।

हसा पुं [हसा] १ पञ्चर्त्त कर्म की एक वादि (हि १ १२६) । २ प कर्म-सुखक प्रत्यय (सिदि १२५—७६०) ।

हा प [हा] हस यौन का सुखक प्रत्यय—१ विप्राय, कर्म (पुत्र १ २९; सत्य २० पा २१ ७२५ २१ मन्त्र २) । २ लोक विमर्षी । ३ पीडा । ४ कुम्भा, निम्बा (हि १ ९० २ २१०) । कर्म पुं [कर्म] हस्यम्भर (सिदि) । हस पुं [हस] नट् हीन (पुत्र २ १११) ।

हा लक [हा] १ व्याज करना । २ वदि करना । ३ बीजा करना हीन करना कर्म करना । हस (पञ्च) । कर्म हास्य, हास्य (कर्म) विप्राय (मणि), विप्राय (पञ्च १ ७) । कर्म-हास्य (सामा १ १ टी—पञ्च ७०) हीयमाज (कर्म) । कङ्क हाई (कर्म १ ११) । बिबा बिबाप (मात्वा १ ४ ४ १ नि २८०), हेङ्क हेबा (पुत्र १ १ १ १ उप १ १२),

हायाम, हेबाज (नि २५०) । ङ्क हेङ्क (स २६५ पञ्च १ २०) मन्त्र नः कर्म) । हा यैको मा—बी (नट्) ।

हाम यैको हा—सक । हाय हाम्य (पञ्च) । हाय क [हाय] मतिपार टप को उत्पन्न करना । हायज्ज (निज १५६) ।

हाम यैको माय = माय (सि ७ ५४५) ।

हाम यैको पाय = पाय (सि ७ २६) ।

हाम यैको माय = माय (सि १ १२) ।

हाड यैको माडा 'मृ नट् मृ नट् मृ नट् मृ नट्' ।

हास्य यैको हास्य (पञ्च) ।

हास्य यैको हास्य ।

हास्यि बी [हास्यि] कर्म का एक वेद (सिदि) ।

हास्यज्ज न [हे] उत्पन्न उत्पन्न (नट्) ।

हास्यज्जा बी [हे] मारोपणा का एक वेद, प्राक्कित-विशेष (अ २, २—पञ्च ११२, निज २) ।

हासि बी [हासि] कर्म कर्म (नट्) ।

हाम य [हे] हस लक, हस प्रकाश, पञ्च 'हाम मृ' (मन्त्र ४१) ।

हायन पुं [हायन] कर्म लक (बीमा सामा १ १ टी—पञ्च २०) ।

हायनी बी [हायनी] मनुष्य की हस याम्यो में कर्मों प्रत्यय (अ १ —पञ्च ११६, वृत् १) ।

हार लक [हारय] १ कर्म करना । २ हास्या पठन पाठ । हारय हारय (उप मन्त्र) । कङ्क हारय (पुत्र १५५) ।

हार पुं [हार] १ माता याम्यार वर की मोती यात्रि की माता (कर्म) यार १ २, कर्म कुमा मणि) । २ हारय, यारय (पञ्च १) । ३ हीन-विशेष । ४ मन्त्र-विशेष (बीमा १ ४—पञ्च ११०) । ५ हारय-कर्म 'मन्त्र-हार' (सामा १ २ ३ ६) । पुत्र पुं [पुत्र] मन्त्र-विशेष बोधा (मात्वा २, ६ १ १) । 'मन्त्र पुं [मन्त्र] हार-हीन का मन्त्रिणा एक वेद (बीमा १ ४—पञ्च ११०) । महासद पुं [महासद] हार हीन का एक मन्त्रिणा वेद (बीमा १ ४) । महावर पुं [महावर] हार-मन्त्र का एक

अधिष्ठायक देव [हारसमुद्र] हारवर-हारवर
(हार)महावर एव को देना अधिकृत्या
(बीज १ ४—पत्र ११७)। पर दु [वर]
१ हार-समुद्र का एक अधिष्ठाता देव। २
क्षीप-विशेष। ३ समुद्र-विशेष। ४ हारवर
समुद्र का एक अधिष्ठाता देव (बीज १ ४)।
वरमह दु [वरमह] हारवर-क्षीप का
एक अधिष्ठायक देव (बीज १ ४)।
वरमहाभ दु [वरमहाभ] हारवर
क्षीप का एक अधिष्ठाता देव (बीज १ ४)।
वरमहावर दु [वरमहावर] हारवर
समुद्र का एक अधिष्ठायक देव (बीज १ ४)।
वरायभास दु [वरायभास] १ एक क्षीप।
२ एक समुद्र (बीज १ ४)। वरायभास-
मह दु [वरायभासमह] हारवरभास-
क्षीप का एक अधिष्ठाता देव (बीज १ ४)।
वरायभासमहाभ दु [वरायभासमहाभ-
मह] हारवरभास-क्षीप का एक अधिष्ठायक
देव (बीज १ ४)। वरायभासमहावर दु
[वरायभासमहावर] हारवरभास-समुद्र
का एक अधिष्ठाता देव (बीज १ ४)।
वरायभासवर दु [वरायभासवर] हार
वरभास-समुद्र का एक अधिष्ठायक देव (बीज
१ ४—पत्र ११७)।
हार केही मार (शुभा १११; मणि)।
हारभ नि [हारभ] मार-क्या (पत्र १११)।
हारण नि [हारण] ऊपर केही, 'मन्त्र-
कर्मयोगक्ष हाण्यं कर्णं कुसुमाय' (पुष्प
२६२; बन्ध १ टी)।
हारय केही हार=हार्य। हारय (हे ४
११)। यदि हापितस्य (घ ११६)।
हारयिभ नि [हारयि] नाशित (कुमा गुप्ता
११२)।
हारयि नि [हे] विद्या बन्धु-विशेष (हे ५
११)।
हार येही धारा (कर्म या ७८२)।
हारि की [हारि] १ हार, पठक्य (ज ३
४२)। २ वरिष्ठ, श्रेष्ठ (गुप्ता १४४)। ३
ध्वज-विशेष (सिप)।
हारि नि [हारिन्] १ हण्ड-क्या (विदे
१२४४, कुमा)। २ मनोहर विराटर्षक
(पद्म)।

हारिख न [हारीव] १ गोत्र विशेष को
कौट्य गोत्र की एक शाखा है। २ पुत्री, उग्र
गोत्र में उत्पन्न (ज ७—पत्र १११; छिन्नि
४१ कर्म)। माझगारी की [माझगारी]
एक बैन मुनि-शाखा (कर्म)।
हारिख नि [हारिख] १ हाण हुमा, बहुत
भावि में पठकित (गुप्ता १६६ मङ्गा भावि)।
२ बीया हुआ पुत्राया हुआ (बन १ गुप्ता
१६६)।
हारिख नि [हारिचन्द्र] हरिचन्द्र का
हरिचन्द्र-कर्म का बनाया हुआ (पद्म)।
हारिया की [हारीया] एक बैन मुनि-शाखा
(पद्म)। केही हारिख-माझगारी।
हारियायन न [हारियायन] एक बोन
(कर्म)।
हारी की [हारी] केही हारि=हारि (ज
३ १२; गुप्ता १४४ सिप)।
हारोय दु [हारीस] १ मुनि-विशेष। २ न
गोत्र-विशेष (पद्म)। बीज दु [बन्ध]
ध्वज-विशेष (सिप)।
हारोस दु [हारोप] १ मनार्थ देश-विशेष।
२ नि, उग्र देश का निवासी (पद्म १—
पत्र १५)।
हास दु [हे हास] राजा शातवाहन माध-
यसतो का कर्ता (हे ५ ११; २ १६, या
१; बन्ध ४४)।
हास्य दु [हास्य] मरिच, हास (पाण्डु दु
४ ७ रंभा)।
हास्यह दु [हे] माझाकार, माधो (हे ५
७४)।
हास्यह दु की [हास्यह] १ बन्धु-विशेष,
ब्रह्मर्षि बान्धु (हे १ १; पाण्डु या
४२)। की कर्म (हे ५ ४४)। २ नीचिय
बन्धु विशेष (पद्म १—पत्र ४४)। ३
पुत्र, स्वारर विच-विशेष (बन १, १ ७-
पद्म २ ४)। ४ पुत्रकर्म का एक मुद्रा
(पद्म ११ ११)।
हासाहय की [हासाहय] एक धारीवर्क-
मालमुद्रिणी कुम्हारिण (पद्म १२—पत्र
१२६)।
हासिख केही हसिख=हासिक (हे १ १७-
पद्म)।

हासिख न [हासिय] एक बैन मुनि-पुत्र
(कर्म)।
हासिह दु [हारिन्] १ हस्ती के मुख्य रंप
पीला बल्ले (मनु १ ६ ज ४ १—पत्र
२६१)। २ नि पीला निचरा रंप पीला
हो वह (वण १—पत्र २३; सुप २ १
११ भय, धौन)। ३ पुत्र, एक बैन-निमान
(वेदेक ११२)।
हासिया की [हासिय] केही हसिख्या
(पद्म)।
हासुम नि [हे] बीज मत्त (हे ५ ११)।
हास सक [हापय] १ हानि करना। २
त्याग करना। ३ परित्यज करना। ४ क्षेप
करना 'भविष्यमानस्यारि हास्ये' (बन १)
हास्य (ज १ २३ छिन्नि २१ टी)। हास-
हन्ता (पद्म ८, ४१)। बह, हावित (विदे
२७४१)।
हाय दु [हाय] मुक्त का विकार-विशेष (पद्म
२ ४—पत्र ११२; मणि)।
हाय नि [हे] बंधन कुत्रायी देव से दौड़ने
वाला (हे ५ ७२)।
हाय केही माय=मय 'वैश्वदेव' (मनु
२४)।
हायन नि [हापन] हानि करनेवाला (हे २
१७५)।
हायिनि नि [हे] १ बंधन कुत्रायी। २
दीर्घ, लम्बा। ३ मन्वर। ४ विपत्त (हे ८,
७४)।
हास केही हस=हस्य। बह 'न हासमाया
नि विरं वरगा' (बन ७ २४)।
हास बह [हासप] हँसना। हास्य (हे
१ १४६)। कर्म हसीय, हासिग्य (हे
१ १२२)। बह, हासंत (वीज)। बह
हासिज्य (गुप्ता २७)।
हास दु [हास] १ हास्य हँसी (वीज) पद्म
२ ४२; ज १ ११ १३२)। २ कर्म
विचक वस्य से हँसी धारि वह कर्म
(कर्म १ २१ २७)। ३ धर्म-र-प्राप्त
रूप-विशेष (मनु १११)। कर नि [कर]
हास-भारक (गुप्ता २४१)। अरि नि
[अरि] बही (बन)।

हास वुं [हास] कर्म, हासि (वर्ष ११५४)।

हास केओ हरिस = हर्ष (वीर)।

हासिअर केओ हास-अर (पुत्र ७८)।

हासकृदय नि [हास्यकृदय] हास्य-कर्मक
कौमुद-कर्म (वर्ष १२)।

हासज नि [हासन] हासन कर्म-कर्मता
(वर्ष ७३ टी)। २ हास्य-कर्म (मात्रा २
१३, २)।

हासा की [हामा] एक केओ (महा)।

हामाविम नि [हासित] हंस्य हमा
हासिअ (वर्ष १२३ बह; कुमा ६
१ १२१)।

हासि नि [हासिअ] हास्य-कर्म (मात्रा २
१३, २)।

हासिअ नि [हास्य] हंस्ये योग्य, 'बहु-
मात्र्ये परं मा ह पुति बह्व्यसिधं कुम्भ' (वा १३ ३ ३ ३)।

'हासिअ केओ मासिअ = मासिअ (मात्र-
विह ११)।

हासीअ न [हे हास्य] हास, हीनी (३८
१२)।

हाहाअर केओ हाहा-अर 'हाहाअर-अर' (वर्ष १७ १)।

हाहा वुं [हाहा] कर्म केओ की एक बर्ष
(पुत्र ११ कुमा वर्ष ५८)। २ घ
विहाय हाहाअर शीकर्म (वर्ष ५८
७ १—वर्ष १२)। कर्म न [हाहा]

हाहाअर, एक-अर (हाहा १२—वर्ष
१३७)। कर वुं [कर] बहो (वर्ष
५८ केओ ११६)। मूल नि [मूल]

हाहाअर की मात्र (वर्ष ७ १—वर्ष
१२)। रप वुं [रप] हाहाअर (वर्ष,
पुत्र ११६ बर्ष)। हाहा [हाहा] कर्म-
विह 'हाहाअर' को बीपरी बर्ष के

कुने पर को रपमा मन्त्र हो बह (वर्ष)।

हाहाअर न [हाहाअर] कर्म-विह
'वर्ष' को बीपरी बर्ष के कुने पर को
बर्षमा मन्त्र हो बह (वर्ष)।

हि य [हि] इन धर्म के वृत्त धर्म—
धर्म-विह (वर्ष १२)। २ हि,
वर्ष (पुत्र ५ १७ कर्म)। ३ वर्ष,

हस वृत्त (वर्ष १२५ वृत्त)। ४ विहो।

२ वर्ष। ६ वर्ष। ७ शीक। ८ धर्म।

२ पाव-वृत्त (कुमा बर्ष ५ २४२

२१३ २ २४८ विह ६ २ २१७)।

हिम नि [हिम] १ मन्त्र छीय हमा
(हामा १ ११—वर्ष १२३ वर्ष ३, ७३
१ २ मुर १ १७३)। २ वीर, वो
हुसरी बर्ष के बर्ष नमा हो बह (मात्र,
६ १ १२८)। ३ विह, स्मृति (विह
४१३)। ४ पाव, बीप हमा 'हिमविम' (वर्ष)।

हिम न [हिम] १ मन्त्र कर्म। २
वर्ष, मन्त्र (वर्ष १ १)। वर्ष १३,
२१३ वर्ष ४ ४ टी—वर्ष २०३ वर्ष
१४)। ३ विह-कार कर्म-विह (वर्ष
१ २०३ २४ वर्ष १२३, ४२ वर्ष
१४)। ४ स्मृति विह (वर्ष ७८)।

कर नि [कर] १ विह-कर्म (वर्ष २)। २
वुं की कर्म (वर्ष १२)। ३ एक
वर्ष के वर्ष (वर्ष ३, २८)। कर नि [कर]

विह-कर्म (पु ४१३)। ४ वर्ष
केओ कर (वर्ष १३, २१)।

हिम केओ हिमय = हर्ष (६ १ २१३)

कुमा मात्रा कर्म)। 'हृद नि [हृद]
मन्त्र-विह (वर्ष ७३, २१)। हृद नि [हृद]

मन्त्र-विह (वर्ष ७३, २१)। हृद नि [हृद]
मन्त्र-विह (वर्ष ७३, २१)। २ विह के वर्ष
मन्त्र-विह (विह १२—वर्ष ११)।

हिम न [हिम] की (वर्ष १८ ४१)।

हिमवळ (वर्ष) केओ हिमय = हर्ष (कुमा)।

हिमिअ वुं [हिमिअ] वर्ष-वर्ष वर्ष के वर्ष
कर्म का वर्ष (वर्ष १ ४ १२)।

हिमिअ (वर्ष) केओ हिमय = हर्ष (६
हिमिअ ४ ४ १२ विह २१३, वृत्त)।

हिमय न [हिमय] १ मन्त्र-विह विह, मन्त्र
(६ १ २१३ स्मृति ११ कुमा, वर्ष ४
४२ वर्ष ४४)। २ वर्ष, बर्ष (६ ४
११)। ३ वर्ष (वर्ष)। वर्ष-विह नि [वर्ष-विह]

हिमय न [हिमय] १ मन्त्र-विह विह, मन्त्र
(६ १ २१३ स्मृति ११ कुमा, वर्ष ४
४२ वर्ष ४४)। २ वर्ष, बर्ष (६ ४
११)। ३ वर्ष (वर्ष)। वर्ष-विह नि [वर्ष-विह]

हिमय न [हिमय] १ मन्त्र-विह विह, मन्त्र
(६ १ २१३ स्मृति ११ कुमा, वर्ष ४
४२ वर्ष ४४)। २ वर्ष, बर्ष (६ ४
११)। ३ वर्ष (वर्ष)। वर्ष-विह नि [वर्ष-विह]

हिमय न [हिमय] १ मन्त्र-विह विह, मन्त्र
(६ १ २१३ स्मृति ११ कुमा, वर्ष ४
४२ वर्ष ४४)। २ वर्ष, बर्ष (६ ४
११)। ३ वर्ष (वर्ष)। वर्ष-विह नि [वर्ष-विह]

हिमय न [हिमय] १ मन्त्र-विह विह, मन्त्र
(६ १ २१३ स्मृति ११ कुमा, वर्ष ४
४२ वर्ष ४४)। २ वर्ष, बर्ष (६ ४
११)। ३ वर्ष (वर्ष)। वर्ष-विह नि [वर्ष-विह]

हिमय केओ हिमय = हर्ष 'कुमि वीर'
वर्षो मन्त्र-विह 'हिमयमन्त्र' (वर्ष ७१८
टी)।

हिमयमन्त्र नि [हिमयमन्त्र] मन्त्र-विह, विह-
कर्म (६ १ १)।

हिमा की [हिमा] कर्म-विह-
विह 'हिमा' कर्म-विह (वर्ष १२४)

हिम की [हिम] १ मन्त्र-विह। २ मन्त्र-
विह (वर्ष १२४)। ३ मन्त्र-विह (वर्ष १२४)

हिमय नि [हिमय] हिमय, हिमय-
विह (वर्ष ४ २८)।

हिमय नि [हिमय] हिमय, हिमय-
विह (वर्ष ४ २८)।

हिमय नि [हिमय] हिमय, हिमय-
विह (वर्ष ४ २८)।

हिमा य [हिमा] वर्ष कर्म (वर्ष ११,
वर्ष १२४)।

हिम वुं [हि] वर्ष, वर्ष (६ १ ४)।

हिम वुं [हिम] १ वर्ष-विह, वर्ष कर्म
वर्ष (वर्ष १२—वर्ष १२)। २ वर्ष, वर्ष
वर्ष (वर्ष १२—वर्ष १२)। ३ वर्ष, वर्ष
वर्ष (वर्ष १२—वर्ष १२)।

हिम वुं [हिम] वर्ष, वर्ष (६ १ ४)।

हिम वुं [हिम] वर्ष, वर्ष (६ १ ४)।

हिम वुं [हिम] वर्ष, वर्ष (६ १ ४)।

हिम वुं [हिम] वर्ष, वर्ष (६ १ ४)।

हिम वुं [हिम] वर्ष, वर्ष (६ १ ४)।

हिम वुं [हिम] वर्ष, वर्ष (६ १ ४)।

हिम वुं [हिम] वर्ष, वर्ष (६ १ ४)।

हिम वुं [हिम] वर्ष, वर्ष (६ १ ४)।

हिम वुं [हिम] वर्ष, वर्ष (६ १ ४)।

हिम वुं [हिम] वर्ष, वर्ष (६ १ ४)।

यस्य (उप ५३ महा)। संज्ञ हिङिय
(महा)। हिङ्ग [हिङ्ग] (महा)।

हिङ्ग नि [हिङ्ग] १ प्रमण करेनामा
(पंथा १० व)। २ पसनेनामा (मणु
१२६)।

हिङ्ग नि [हिङ्ग] १ परिप्रमण पर्यटन
(पमन २७ १० व ४२)। २ पमन मति
(ज १ १०)। ३ नि प्रमण-प्रति (२
१ १)।

हिङ्ग की [हिङ्ग] परिप्रमण पर्यटन
आनुषाङ्गयो द्विती राय-ननुकमाराय नि।
वास्तव्यि कई हुंटा न हुंटा यह कम्मर
(कर्म १९)।

हिङ्ग पुं [हिङ्ग] रायल का एक मुम्भ
(पमन २९, ३१)।

हिङ्ग नि [हिङ्ग] १ बहा हुआ बसित-
पद (महा १४)। जहाँ पर जाया गया हो
वह 'हिङ्गि यस्ते पाम' (महा ११)। २
न यदि मय, किहुर (छापा १ २—पम
१९४) योय २२४)।

हिङ्ग पुं [हिङ्ग] धात्वा नीन
कामापर मालेनामा धात्वा हिङ्ग (ज
२ २—पम ७७९)।

हिङ्गो न [हिङ्ग] १ खेल में पशुओं को रोक्ने
की धातव। २ खेल की रक्षा का कर्म (२
५, १२)।

हिङ्गो रेको हिङ्गो (उ २२१)।

हिङ्गो न [हिङ्ग] १ रक्षाधी रक्षामात्र।
२ खेल की रक्षा की धातव खेल में पशु
प्राप्ति को रोकने का कर्म (२ ३९)।

हिङ्गो न रेको हिङ्गो (२ १२)।

हिङ्गो पुं [हिङ्गो] कुल-विशेष (ज
१ ११ टी कुमा)।

हिङ्ग एक [हिङ्ग] स्वीकार करना, बहल
करना। हिङ्ग (प्राज्ञ ७)। बात्ता १२७)।
कर्म, हिङ्ग (बात्ता १२७)। संज्ञ
हिङ्ग (प्राज्ञ ७)। बात्ता १२७)।

हिङ्गो न [हिङ्गो] १ कुलगा। बह-
हिङ्गो (कर्म)।

हिङ्गो पुं [हिङ्गो] हिङ्गो कुलगा
दीक्षा (कर्म)।

हिङ्गो न [हिङ्गो] कुलगा दोमन
(कर्म)।

हिङ्गो न [हिङ्गो] एक पैर से चक्के की बात
कीक्षा (२ ५८)।

हिङ्गो न [हिङ्गो] १ बच करना। २ पीड़ा
करना। हिङ्ग, हिङ्ग (पाथा पम १२१)।

मुक्त, हिङ्ग (पाथा पम १२१)। यदि
हिङ्गो न [हिङ्गो] हिङ्गो (पि २२९)
पाथा पम १२१)। बह हिङ्गो (पाथा)।

३ हिङ्ग, हिङ्गो (उ २२५, पम १
१—पम २, २१—पम १ १ ज)।

हिङ्ग नि [हिङ्ग] १ हिङ्ग करेनामा हिङ्ग
(उप ५४, पम १ १—पम २, निरे
१७९)। पंथा १ २३ उ २२३; उ ५)।

प्यवाय प्यवाय न [प्रधान] हिङ्गो के
साम-मूल बहल प्राप्ति का बल (द्योय
पम)।

हिङ्ग रेको हिङ्गो (पम १ १—पम २)।

प्येहि नि [प्रधान] हिङ्गो को देखेनामा
(ठा २, १—पम १)।

हिङ्गो नि [हिङ्गो] हिङ्गो करेनामा
हिङ्गो (म, योय ५२२; उ १९
२२९ उ २२९)।

हिङ्गो न [हिङ्गो] हिङ्गो 'प्रतिपद' सन्
विवाय कर्मो (उप ४२)।

हिङ्गो नि [हिङ्गो] १ बच बात (उपा
महा प्राप्ति १४)। २ बच कर्म प्राप्ति से
नीय को की बादी पीड़ा, हिङ्गो (ठा ४
१—पम १८५)।

हिङ्गो की [हिङ्गो] मय का कर्म, 'मयपनि'
हर्षादि न क्युपरी केवि कुम्भटा' (मुपा
१२४)।

हिङ्गो नि [हिङ्गो] हिङ्गो-मात्र (पम)।

हिङ्गो न [हिङ्गो] मय-कर्म (पम १
१८)। बह १ १ टी)।

हिङ्गो की [हिङ्गो] बह-विशेष (पम)।

हिङ्गो पुं [हिङ्गो] मय, हिङ्गो-मात्र का निरासी
(पि)।

हिङ्गो की [हिङ्गो] एककी पीड़ा (२ १९)।

हिङ्गो की [हिङ्गो] रोय-विशेष, हिङ्गो (मुपा
२५९)।

हिङ्गो पुं [हिङ्गो] मय, काय (२ १२)।

हिङ्गो न [हिङ्गो] रोय-कर्म मय-कर्म (२
१८)।

हिङ्गो रेको हिङ्गो = हिङ्गो।

हिङ्गो रेको हिङ्गो।

हिङ्गो पुं [हिङ्गो] मय कर्म (पम)।
हिङ्गो (२ १८)। पम, प्रयो ११ नि
१२४)।

हिङ्गो म [हिङ्गो] धामादी कर्म (२ १८)।

हिङ्गो नि [हिङ्गो] धामादी कर्म (२ १८)।

हिङ्गो रेको हिङ्गो (मुप ४ २२५, महा मुपा
२५)।

हिङ्गो रेको हिङ्गो = हिङ्गो (ज २२५)।

हिङ्गो हिङ्गो नि [हिङ्गो] धामादी कर्म (२ १८)।

हिङ्गो रेको हिङ्गो (सिदि ७ ७ मुप १
१ टी)।

हिङ्गो रेको हिङ्गो (पम ५७)।

हिङ्गो पुं [हिङ्गो] १ एक विचार रात्रा
(पम १ २)। २ एक उच्च (वेणी
१७७)। ३ बस-विशेष (पम २८ १२)।

हिङ्गो की [हिङ्गो] एक उच्च की हिङ्गो
उच्च की बहल (हि ४ २२२)।

हिङ्गो न [हिङ्गो] बस-कर्म (२ १८)।

हिङ्गो नि [हिङ्गो] उच्च कर्म। 'उप-
प्राप्ति' धामादी प प्रम कि हि रे हि
(हि) (महा १२४)।

हिङ्गो न [हिङ्गो] प्रमण करना। हिङ्गो
(बात्ता १२७)।

हिङ्गो (म) रेको हिङ्गो (मि)।

हिङ्गो रेको मिण (या १२९)।

हिङ्गो (२) रेको हिङ्गो = हिङ्गो (मात्र-
विशेष) ३४ नाम १९, नि २२४) हि ४
११ कुमा प्राज्ञ १२४)।

हिङ्गो नि [हिङ्गो] १ बहल (२ १८)।
२)। २ मय-विशेष (२ १८)। ३ २
१२९ प्राज्ञ का १८५) ७२२ मुप २९,
२१) कुमा)। ४ हिङ्गो मात्र मात्र हिङ्गो
बहल हिङ्गो मे सती मयि न न मयि
मयि' (म १)।

हिङ्गो की [हिङ्गो] बहल, रात्रा (२ १८)।

सुप्रसिद्ध वैत शास्त्री तथा चण्डकार (वे च ७७ मुपा ११४) । १ विष्णु की पत्न्युषी
रताम्बी का एक वैत मुनि (सिंह ११४१) ।
आळ न [जाळ] मुसलमी भाषा (बीर) ।
विठ्ठल पुं [विठ्ठल] विष्णु की बीरुषी
रताम्बी का एक वैताचार्य (सिंह ११४१) ।
पुर न [पुर] एक विद्याभार-भार (रुक्) ।
मय वि [मय] घने का बना हुआ (मुपा
८८) । महिषर पुं [महिषर] मेघ परंत
(पञ्च) । माळिनी की [माळिना] एक
विष्णुभारती देवी (रुक्) । य पुं [य] एक
फलकृत माघ (मुस १ ११) । विमल पुं
[विमल] एक वैत शास्त्री (कुम्भा ११) ।
म पुं [म] बीवी नरक-मुषियों का एक
नरक-स्वात (निर १ १) ।

हेमन्त पुं [हेमन्त] १ श्रुत-विशेष मगधिर या
अपहृत तथा पोत या मुस महिषा (पाच धावाक
कम्प कुमा) । २ शीतकाल (वस १ १२) ।

हेमन्त वि [हेमन्त] हेमन्त ऋतु में उत्पन्न
(मुस १२—पञ्च २१६) ।

हेमन्तवि वि [हेमन्तवि] ऊपर देखो (कम्प
बीत या ११; राय १८) ।

हेमन्त वि [हेमन्त] हिम का, हिम-संबन्धी
(अ ४ ४—पञ्च २४७) ।

हेमन्त पुं [हेमन्त] १ वर्ष-विशेष, लोक-
हेमन्तय विशेष (रुक् सम १२; अ ४—पञ्च
२१६ १ अ १, १ टी—पञ्च १७)
पञ्च १ २ १ १) । २ हिमवत पर्यंत का
एक तिब्बत । ३ दूत-विशेष (रुक्) । ४ वि
हिमवत पर्यंत का (राय ७४ बीम) । ५ पुं
हिमवत धन का सम्यक्तात वैत (अ ४—पञ्च
१) ।

हेमन्त देखो ह्यम (संक्षि १७) ।

हर सक् [हर] १ देवता विशेषण कण्ठ ।
२ जायता धनोपलब्ध कला । ३ हरत
(विप) । ४ हरिजय (वर्गवि ४४) ।

हरिपु पुं [हरिपु] १ महिष नगा । २ त्रिभिन्न-
बाध-विशेष (वे च ४१) ।

हरिपण्यय पुं [हरिपण्यय] १ वर्ष विशेष,
एक पुष्पविष्णु (रुक् पञ्च १ २ १ १) ।
२ रथिन पर्यंत का एक तिब्बत । ३ तिब्बती
पर्यंत का एक तिब्बत (रुक् २१५) ।

हेरिपण्यय पुं [हेरिपण्यय] मुसलकार (वस
पु २१) ।

हेरमपय देखो हेरपण्यय (अ २, १—पञ्च
१७; पञ्च १७) ।

हरिपु पुं [हरिपु] पुन नर, नावुस (मुपा
४१४ २५१) ।

हरिपु पुं [हरिपु] विनायक फलेत (वे
८ ७२१ पञ्च) ।

हरपाल सक् [हर] कुछ कण्ठ मुष्ठा करवाता ।
हेमालीति (शास्त्र १ ८—पञ्च १४४) ।

हवा की [हवा] १ की की श्रुतार-रथको
कृता-विशेष (पाच) । २ धनार (पाच वे
१ १२) । ३ वायुवाय कण्ठ प्रयास सहाई,
वरता (सि १ १२) कम्प प्रवि ११ सि
१७४) ।

हवा की [वे हेला] वैत खेम्भा (वे न,
७१ कम्प प्रवि ११ सि १७४) ।

हवा की [वे हेला] एक राख की मयनी
(बीर १ टी—पञ्च ११) ।

हवा न [वे] सुत बीर (वे ८ ७२) ।
हवा की [वे] विद्या विष्णु (वे ८
७२) ।

हवा (पञ्च) य [हवा] सबी का धामनल
हवा (वे ४ ४२३ १७८, सि १ ७) ।

हवा (पञ्च) देखो हेम (सि ११६) ।

हवा पुं [हवा] स्वभाव धारत (पञ्च) ।
हसमप वि [वे] कण्ठ ऊंचा (पञ्च) ।

हवा की [हवा] धन-रथ (मुपा २४७; या
२७) ।

हसिम न [हसिम] ऊपर देखो (वे न १८
पञ्च १४ १; धीय महा धीय) ।

हसिम न [वे हसिम] रथित, नीलार
(पञ्च) ।

हसिमप वि [वे] पुष्प-रथ के धन वे रथित
धोर निरन्त, धन विष्णु निवाचक (वस १) ।

हवा पुं [हवा] १ एक रथ (पञ्च) ।
[विप पुं [विप]] एक विद्याभार रथ
(पञ्च १ २) ।

हा देखो ह्य=पु। होह, होयह, होय्य,
होयह होहो होहो होयहो (वे ४ १;
पञ्च; कम्प उच महा सि ४२५; ४७४) ।
होय होय होयह होयह, होय (वे १

१२४ १७७ नय प्राप्ति सि ४१६) ।

मुका होय्य, होय्य (कम्प प्राप्ति) । यदि
होय्य, होय्य होय्य होय्य होय्य होय्य

होय्य होय्य, होय्य (वे १ १६६
१६७ १६८) प्राप्ति सि ४२१) होय्य

(पञ्च) (वे ४ १८५) । कम्प होय्य,
होय्य, होय्य (पञ्च; सि ४७६) । वज्र,

होय्य होय्य (वे १ १८ ४ १२२,
१३२ कुमा सि ४७६) । संक्ष. होय्य,

होय्य होय्य, होय्य (वे १८५ १८६ कुमा) ।
होय्य होय्य (महा सि ४७६, कम्प) ।

होय्य होय्य (कम्प महा उच प्राप्ति १६,
११) ।

होय्य [होय्य] इन सबों का सूचक धर्म्य—१
विष्णु, धार्य (पाच नाट—मुष्प ११२) ।

२ सरोवर, धामनल (संक्षि ४७ उच १२७
टी) ।

होय्य वि [होय्य] होय्य-कर्म (पा ७७७) ।
होय्य देखो ह्य (विचार ४ ७) ।

होय्य पुं [होय्य] होय्य, होय्य (पाच) ।
होय्य देखो ह्य 'होय्य होय्य होय्य (मुपा
२७७ २७८) ।

होय्य पुं [होय्य] नील बीर की वस्तु (शास्त्र
१ २—पञ्च ८६ पिठ १५) ।

होय्य देखो ह्य=ह्य (पञ्च २७४ विचार
४१) ।

होय्य पुं [होय्य] १ वायुधन धारकों का
एक वर्ष, धर्म-विशेष वायुधन (वीर
धन ११ ६—पञ्च २१६) । २ न, पुष्प-
विशेष (पञ्च १—पञ्च ११) ।

होय्य पुं [होय्य] हवा धीय में वायु-धन
हवा धीय का प्रवेश (धन ११६) ।

होय्य सक् [होय्य] होय्य कण्ठ । ह्य
होय्य (टी न) ।

होय्य वि [होय्य] हवा धीय तथा
'धन-विशेष वायुधन' (धन ११६) ।

होय्य की [होय्य] वायु-विशेष महा-
कण्ठ, वज्र होय्य (पञ्च ४६) ।

होय्य न [वे] वज्र कण्ठ (वे ८ ७२, या
७७१) ।

इस कोष के विषय में कतिपय सुप्रसिद्ध विद्वान् और पत्रकारों के

कुछ अभिप्राय

A few Opinions of some Savants & Journalists regarding the PRĀKRIT DICTIONARY.

Prof Earnest Leumann (in the journal of Royal Asiatic Society London,
July 1924)

"During recent years several scholars in India have tried to bring out a Prākṛit Dictionary. However no one seems to have succeeded in publishing more than a small specimen. Only recently, towards the end of 1923, there has appeared a new start, which is no longer a simple specimen, but an elaborate first part comprising no less than 260 large size pages. In this volume all words beginning with vowels are included. And, if the following parts, which are to embrace the words beginning with consonants, carries on the Dictionary in the same line, it will be finished in about seven such parts and will contain nearly 2000 pages. On its completion Indian philology will certainly be congratulated from all sides, and Prākṛit literature, which is so immensely rich may then be studied as it ought to be in intimate connexion with Sanskrit lore, which has long possessed Lexicographic aids of all kinds.

The title of the forthcoming dictionary is *Pāṇa-sadda-mahānava*, "the great ocean of Prākṛit words. Its compiler is Pandit Hargovind Das T Sheth Lecturer in Prākṛit in the Calcutta University

The meaning of the words are given both in Hindi and in Sanskrit, and each entry is furnished with references to text passages. Sometimes also the text passages are fully quoted (forming generally a verse called *Gāthā* or *Āryā*).

Comprehensiveness and accuracy are the qualities most desired in a dictionary. As to the first quality I may mention that the texts worked up in the dictionary seem to number about 200 or more. Even in the first ten pages a full hundred titles are quoted. (*Acen*, *Aji*, *Apu*=*Anuyogadvāra-sūtra*, *Anis*=*Amākrīd-dāś*, *Abhi*, *Acā*=*Ācarāṅga*, *Acū*=*Acāra-cūlikā*, *Avā*=*Avasthā*, and others). And, as to the second quality it may be stated that in the reference mistakes are scarcely detectable. Also errors in the quoted editions are corrected, so early as the second entry of the first page we are for Pkt. *a*=Skt. *ā*, rightly referred to *Palma-cariya* 113, 14 where the edition has by mistake *Avirāho* instead of a *Virāho*.

Consequently I may be allowed to recommend Pandit Sheth's Prākṛit Dictionary to all Sanskrit scholars as well as to Sanskrit libraries—and, what will probably do more to secure the final success of the undertaking, to the Government authorities."

इस कोष के विषय में कतिपय सुप्रसिद्ध विद्वान् और पत्रकारों के

कुछ अभिप्राय

A few Opinions of some Savants & Journalists regarding the PRĀKRIT DICTIONARY.

Prof Earnest Leumann (in the journal of Royal Asiatic Society London,
July 1924)

"During recent years several scholars in India have tried to bring out a Prākṛit Dictionary. However no one seems to have succeeded in publishing more than a small specimen. Only recently, towards the end of 1923, there has appeared a new start, which is no longer a simple specimen, but an elaborate first part comprising no less than 360 large size pages. In this volume all words beginning with vowels are included. And, if the following parts which are to embrace the words beginning with consonants, carries on the Dictionary in the same line, it will be finished in about seven such parts and will contain nearly 2000 pages. On its completion Indian philology will certainly be congratulated from all sides, and Prākṛit literature, which is so immensely rich may then be studied as it ought to be, in intimate connexion with Sanskrit lore, which has long possessed Lexicographic aids of all kinds.

The title of the forthcoming dictionary is Pāla-sadda-mahagnavo, "the great ocean of Prākṛit words. Its compiler is Pandit Hargovind Das T Sheth Lecturer in Prākṛit in the Calcutta University.

The meaning of the words are given both in Hindi and in Sanskrit, and each entry is furnished with references to text passages. Sometimes also the text passages are fully quoted (forming generally a verse called Gāthā or Āryā).

Comprehensiveness and accuracy are the qualities most desired in a dictionary. As to the first quality I may mention that the texts worked up in the dictionary seem to number about 200 or more. Given in the first ten pages a full hundred Titles are quoted. (Acoṁ, Aji, Aṇu = Anuyogadvāra-sūtra, Anta = Anatkṛd-dasā, Abhi, Aca = Ācarāṅga, Aca = Acaṣṭra-sūtra, Ava = Avasthā, and others). And, as to the second quality it may be stated that in the reference mistakes are scarcely detectable. Also errors in the quoted editions are corrected, so early as the second entry of the first page we are for Pkt. a = Skt. ca, rightly referred to Pāṭma-sāriya 118, 14 where the edition has by mistake Avirāḥio instead of a Virāḥio.

Consequently I may be allowed to recommend Pandit Sheth's Prākṛit Dictionary to all Sanskrit scholars as well as to Sanskrit libraries—and, what will probably do more to secure the final success of the undertaking, to the Government authorities.

Sir George A. Grierson, K.C.L.E., PH.D, D LITT, LL.D.

"I must congratulate you on the success you have achieved in compiling this excellent book. I have already been able to make use of it and have found it a help in my work

Jainacharya Shri Vijayendra Sureshwarjee. Itihās-tattva mahodadhī

"A big dictionary named Pāṇi-sadda Mahapavā (पाणि-सद-महापर्व) is being composed and edited by Nyaya Vyakarana-tirtha Pandit Hargovind Daa Trikamchand Sheth, Prākṛit Lecturer, Calcutta University. Three of its parts have already been brought into light. On seeing these parts and the work done therein one cannot but say that it is excellent.

We cannot help saying frankly and impartially that amidst all dictionaries of the type in existence this Kośa takes its first place. In absence of such a good Prākṛit dictionary Prākṛit-scholars had great many difficulties. To remove them Pandit Hargovinddas has taken immense pains in producing this work and has put Prākṛit-scholars at large to great obligation. Pandit Hargovinddas deserves all honour for such a nice work.

We are conversant with Pandit Hargovinddas's vast knowledge and originality. It gives us a great pleasure to note that these two things in him have gone a great way to make the dictionary very valuable and useful. We can without the least hesitation, say that Pandit Hargovinddas can well stand in the category of high culture. × × × It is the duty of all scholars in the field of learning and specially that of Jain samaj to encourage by extending their helping hand towards such learned man rendering services to Jain literature and Jain Religion."

Dr. Giuseppe Tucci, Professor of Sanskrit, Rome University. "The Prākṛit Dictionary is very useful in my study.

Dr. M. Winternitz, Professor of Prague University. "Many thanks for the first two parts of the Prākṛit Dictionary which is very useful to me.

Dr. F. W. Thomas M.A. PH.D, Chief Librarian, India Office London. "I have myself consulted the book and found it useful. It is based upon a very large number of texts.

Prof. A. B. Dhruva, Pro Vice-Chancellor, Hindu University, Benares. "I have seen Mr. Hargovinddas Sheth's Prākṛit Dictionary. It represents a genuine attempt to supply a need which has long been felt and I am sure it will receive the appreciation which it so well deserves.

Dr. Sumit Kumar Chatterji M.A. D LITT, Professor of Calcutta University (in the *Calcutta Review* February and December 1924). The work is not a mere compilation of glossaries. It contains ample evidence of Pandit Sheth's wide reading in Prākṛit literature and of his vast labours in the field. ... It will be a very useful publication and no student of Prākṛit and of modern Indo-Aryan languages can afford to be without it. The work so far accomplished by Pandit Sheth, is an extremely laborious one requiring not only great scholarship, but also great patience. ... Pandit Sheth ought to receive entire support from all interested in Prākṛit and Jain studies.

----- Those who have had occasion to use this work and can testify to its excellence and usefulness will be pleased to see that it has received proper appreciation from competent scholars in the domain of Prākṛit and Indian Philology both in India and Europe. The Calcutta University can well be congratulated in possessing such an erudite scholar of Prākṛit in Pandit Hargovinddas.

Dr B. M. Barua, M.A. D. Litt., Professor of Pali, Calcutta University "I can quite understand that the task undertaken by you is a self imposed one and you are sure to render a permanent service in the cause of Indology by completing the same. A handy and at the same time comprehensive Prakrit dictionary has been a long felt desideratum. After going through the printed parts of your lexicon I find reasons to hope that your single-handed labour will go to remove it to a great extent. I have not seen elsewhere an attempt of this kind. What I sincerely wish is the consummation of the noble task you are engaged upon with the indefatigable zeal and unflinching devotion of a scholar like yourself who has been born and brought up in a religious tradition footing the culture of Prakrit languages."

Dr L. J. S. Taraporewala B.A., Ph.D. Bar-at-law Professor of Comparative Philology Calcutta University The author has already considerable reputation as a teacher of Prakrit in the University of Calcutta and also as a deep scholar in Jaina Literature and Philosophy. For many years he has had the preparation of a Prakrit Dictionary in contemplation that for that he set about a systematic course of reading in all the various branches of Prakrit Literature. As a result of this enormous amount of labour the Panditji has now given us the first three volumes of his Prakrit Dictionary.....To students of Prakrit this book will supply a greatly felt want and the work is very well done indeed for the general reader. In any case the work is a useful one and should help all earnest students.

Prof Vidhushekhar Bhattacharya, M.A. Principal Vishva Bhāratī Shānti Niketan, Bolpur (in the *Modern Review* April 1925).

The author hardly needs introduction to those who have acquaintance with Yasovijaya Jaina Granthamala. His present work is Prakrit-Hindi Dictionary. We extend our hearty welcome to it.

A Prakrit Dictionary of this kind was a desideratum and every Prakrit lover should feel thankful to Pandit Haragovindadas who has now supplied it. We have not the least doubt in saying that the students of Prakrit will be much benefited by it. It supplies Sanskrit equivalents so far as possible quotes authorities and gives references. The words are explained in Hindi, yet the language is so simple that it can be used by any one knowing some vernacular of northern India.

Indian Antiquary February 1925 This is the first part of a dictionary of the Prakrit language intended to be completed in four parts. It is a comprehensive dictionary of the Prakrit language giving the meaning of Prakrit words in Hindi. It provides at the same time the Sanskrit equivalents of the Prakrit words. The dictionary as a whole contains about seventy thousand words. The author Pandit Hargovinddas T. Sheth, Lecturer Calcutta University has taken care to support the meanings that he gives by quotations from the original sources giving complete references. It removes one of the desiderata for a satisfactory study of the vast Prakrit literature which still remains unexplored but inadequately by scholars Indian and European. It is likely to be of great assistance in promoting this desirable study. The author deserves to be congratulated upon the result of his labours in this good cause. The work is a monument of his learning and effort and it is to be hoped that this industry will be suitably rewarded to encourage him to go on with his work and complete it as originally projected in four parts.

Sir George A. Grierson, K.C.I.E., PH.D., D. LITT., LL.D.

I must congratulate you on the success you have achieved in compiling this excellent book. I have already been able to make use of it and have found it a help in my work.

Jainacharya Shri Vijayendra Sureshwarjee. Itihās tattva-mahodadhi.

"A big dictionary named *Pāṇi siddha-mahapāṇi* (पाणि-सिद्ध-महापाणि) is being composed and edited by Nṛaya Vyākaraṇa kīrtha Pandit Hargovind Das Trikamchand Sheth, Prākṛit Lecturer, Calcutta University. Three of its parts have already been brought into light. On seeing these parts and the work done therein one cannot but say that it is excellent.

We cannot help saying frankly and impartially that amidst all dictionaries of the type in existence this *Kośa* takes its first place. In absence of such a good Prākṛit dictionary Prākṛit-scholars had great many difficulties. To remove them Pandit Hargovinddas has taken immense pains in producing this work and has put Prākṛit-scholars at large to great obligation. Pandit Hargovinddas deserves all honour for such a nice work.

We are conversant with Pandit Hargovinddas's vast knowledge and originality. It gives us a great pleasure to note that these two things in him have gone a great way to make the dictionary very valuable and useful. We can, without the least hesitation, say that Pandit Hargovinddas can well stand in the category of high culture. x x x It is the duty of all scholars in the field of learning and specially that of Jain samaj to encourage by extending their helping hand towards such learned man rendering services to Jain literature and Jain Religion.

Dr. Giuseppe Tucci, Professor of Sanskrit, Rome University. "The Prākṛit Dictionary is very useful in my study."

Dr. M. Winteritz, Professor of Prague University. "Many thanks for the first two parts of the Prākṛit Dictionary which is very useful to me."

Dr. F. W. Thomas M.A., PH.D. Chief Librarian, India Office London. "I have myself consulted the book and found it useful. It is based upon a very large number of texts."

Prof. A. B. Dhruva, Pro Vice-Chancellor Hindu University Benares. "I have seen Mr. Hargovinddas Sheth's Prākṛit Dictionary. It represents a genuine attempt to supply a need which has long been felt and I am sure it will receive the appreciation which it so well deserves."

Dr. Sunil Kumar Chatterji, M.A. D. LITT. Professor of Calcutta University (in the Calcutta Review February and December 1944). "The work is not a mere compilation of glossaries. It contains ample evidence of Pandit Sheth's wide reading in Prākṛit literature and of his vast labours in the field. ... It will be a very useful publication and no student of Prākṛit and of modern Indo-Aryan languages can afford to be without it. The work so far accomplished by Pandit Sheth, is an extremely laborious one requiring not only great scholarship, but also great patience. ... Pandit Sheth ought to receive entire support from all interested in Prākṛit and Jain studies."

— Those who have had occasion to use this work and can testify to its excellence and usefulness will be pleased to see that it has received proper appreciation from competent scholars in the domain of Prākṛit and Indian Philology both in India and Europe. The Calcutta University can well be congratulated in possessing such an erudite scholar of Prākṛit in Pandit Hargovinddas.

बोय पु [बोय] एक देव का नाम (पद्म १८ १८)।
 बोरपछ बि [बे] वरल पुग (१७ =)।
 बोरमग न [ब्युपयमग] क्षिता प्राणिन्य (पद्म १ १—पद्म २)।
 बोरीओ बो [बे] १ बावण मास बो दूक बनुरीयो दिवि में होवेनाता एक जखर। २ बावण मास बी दूक बनुरीयो (१७ ८१)।
 बोरबिअ बि [ब्यपरोषि] जो मार माला मया हो बहु; 'सकारिता कुपमं हिमं विद्रव्य बोरोबो' (बन १)।
 बोस्की बो [बे] बई हो मरा हुषा बध (पद्म ८४)।
 बोख सक [गम्] १ मति करना, बहना। २ पुनारना पवार करना। ३ धिक्मण करना, उल्लंघन करना। ४ सक पुनरना पवार होना। बोख (शाह ७१ हे ४ १६२; मद्दा पर्यंत ७२४) 'काल बानई' (पुन २२४) बोसवि (बन्ना १४८ बरवि २१)। बड़ पोखंड पोखंड (पुगा न २१ २२ पद्म १ १४ वे १४ ७२ मुना २२४; वे १ १६)। बड़ पाखिऊ पाखंडा (महा पाव)। बड़ बोखेअव्य (वे १ १ सः ११)। प्रयो., बड़ पाखिवि, पाखिपंड (मुना १४; ना १४६ प १)। देवो पाखंड = ब्यवि + कम्।
 पाख देवो पाखंड = बे (१ १ २)।
 पाखट्ट सक [ब्युप + लुट्ट] क्षत्रिया। बड़ पाखट्टमात्र (धन)।
 पाखविअ बि [गमिव] पठिअविअ (बन्ना १४ गुग ११५ ना ११)।
 पाखिअ। बि [गण] १ पया हुषा (शाह वादीन १ ७७)। २ पुनरवा हुषा जो पवार हुषा हो बहु ब्यवीठ (पुन १ ११ मद्दा बन ११; नुर १ ११)। ३ पठिअ

उत्ताविअ (पाव; नुर १ १ कुन ४१ वे १ १४ ४८; ना १७ २१२; १४ हे ४ २२८ बुया मद्दा)।
 पोख सक [भा + मम्] ब्यामण करना। बोसइ (पद्मा ११४)।
 पोखइ पु [बोहाइ] देव-विशेष (स ८१)।
 पोहाइ बि [बोहाइ] देव-विशेष में बरान (स ८१)।
 पोवाळ पु [बे] कुन, बेन (१७ ७६)।
 पोसग पु [ब्युसग] परित्याग (विज २६ २)।
 पोसग } सक [पि + फस] १ विक्कता
 पोसट्ट } क्षिना। २ बड़ना। बोसगइ
 बोसट्ट (पद्म हे ४ ११२; प्राह ७६)।
 बड़ बोसट्टमात्र (मद्म प ८२)।
 पोसट्ट सक [बि + पसय] १ विनाग करना। २ बड़ना। बोसट्ट (पाता १४४)।
 पोसट्ट नि [पिअसित] निक्कअ-प्राप्त (हे ४ २१५; प्राह ७७)।
 पोसट्ट नि [बे] मर कर पानी क्रिया हुषा (१७ ८१)।
 पोसट्टिअ नि [पिअसित] निक्कअ प्राप्त (हुग)।
 पोसट्ट नि [ब्युसुव] १ पयिअक, पोहा हुषा (बन्ना कल बोब १ २ जत ११, ११ पावा २ ८ १ पावा १० १)।
 २ बरिप्पाअ-विठ हाक्यूक-बजिठ (पुन १ ११ १)। ३ नावोअर्य में लिअ (त्य ५, १ ११)।
 पोसमिय नि [ब्यपरासिअ] उपरविअ कान्ठ भिया हुषा पासिय बोसबिआ^० बरिप्पाअरु ४ उरीरी। वे पावा नावगा^० (स ६ टी—पद्म १७१)।
 पोसमर । सक [ब्युप + लुट्ट] बरिप्पाअ पासिर] करना क्षत्रिया। बोसोली, बरिप्पाअ, बोसोअवि (पद्म २१५ मद्म प

बीन) बोसिरेआ बोसिरे (वि २११)।
 बठ बोसिरन (कुन ८१)। बड़ पोसिअ, पोसिरिआ (पुन १ १ ७ वि २१२)।
 ह पासिरियव्य (पद्म ४१)।
 बोसिर बि [ब्युसमजैन] घोड़ेनाता (न ५ २६८)।
 बोसिरण न [ब्युसजैन] परित्याग (हे २ १७५; ना १२; पावक १७१; बोप ८१)।
 पासिरिअ देवो बोसट्ट (पद्म ४ २२ पर्यंत १ २१ मद्दा)।
 पोसअ नि [बे] उगुण-मठ (१७ ८१)।
 पोहिअ न [पहिअ] प्रवहण जहान नीरा (प ७४६)। देवो पाहित्य।
 बोहार न [बे] जल-बहन (१७ ८)।
 ब्युह पु [बे] निद्र, मडुअ (पद्म)।
 ग्रंथ देवो बह = कुन (शाह)।
 द्यत (पद्म) देवो पय = पय (हे ४ ११४)।
 द्यमास (पद्म) पु [क्यामीरा] १ टात। २ निन्ना। ३ विअ बिअन (प्राह ११२)।
 द्यगाल (पद्म) देवो पागल (शाह ११२)।
 प्राह (पद्म) पु [क्याहि] बंरहल ब्याअण
 धोर कोय ना कठो एक मुनि (प्राह ११२)।
 प्रास देवो पास = ब्यस (हे ४ ११६)। प्राह ११२; बड़; बुगो)।
 ब्य देवो द्य (हे ४ १८२ कया रस)।
 ब्र देवो पा = प (प्राह २६)।
 ब्यअ देवो पय = पय (हुग)।
 ब्यपसिअ देवो पयसिय = ब्यपसिअ (पवि १२४)।
 ब्याअ देवो पाय = ब्याअ (पा २)।
 ब्यापार देवो पाआ = ब्यापार (पा १६)।
 ब्यापुह देवो पापुह (पवि २४२)।
 ब्याहि देवो पाहि (पा ४४)।
 ब्यि देवो द्य (प्राह २६)।
 ब्य प [बे] बरीअन-गुअक ब्यमव (प्राह ८)।